दूरभाष : 73020 रजि० नं० db J.L./35

वर्ष 21 अंक 40, 24 पौष सम्वत् 2046 तदनुसार 4/7 जनवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

एकेश्वरवाद—

सुसंगत जीवन पथ— महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री सत्यसेन जी, वेद-दर्शनाचार्य, साधु-आश्रम, होशियारपुर

(पतांक से आगे)

नहीं, क्योंकि थोपी हुई बीज स्वभाव का अंग नहीं बनती और न ही वह टिकाऊ या स्थायी होती है। भय के या दबाव के हटते ही व्यक्ति फिर वहीं पहुंच जाता है।

धर्म किसी को अपनी इच्छा से ही सदाचारी, संयमी, सेवाभावी, प्रेमी बना कर संसार का सुख बढ़ाने के लिए प्रेरणा करता है। इसी लिए महाभारतकार श्री वेदव्यास जी ने कहा है—धारण, पालन के कारण ही धर्म को धर्म कहते हैं। धर्म से ही सारी प्रजा सुरक्षित है। जो मानव के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन को धारता है, संभालता है, व्यवस्थित करता है। वस्तुत: वही धर्म है[1]। मानव के जीवन विकास के लिए ही धर्म का विधान, उपदेश किया गया है या उस की आवश्यकता होती है। अत: जो विकास, सुरक्षा, व्यवस्था का कारण बनता है, वही वास्तव में धर्म है[2]। प्राणियों में परस्पर सौहार्द, स्नेह, सहयोग, सहानुभूति, समृद्धि की वृद्धि करना ही धर्म का अभिप्राय है। जो अहिंसा—मनसावाचा—कर्मणा दूसरों को कष्ट न देने की भावना से युक्त है, वस्तुत: वही धर्मयुक्त है।[3] हे जाजलि! वही धर्म को जानता है, जो सदा सब से मित्रता का व्यवहार करता है और मन, वचन एवं कर्म से सब की भलाई में लगा हुआ है[1]। अत: लोकहित और जीवनयात्रा को सरल-सुखी बनाने के लिए ही धर्म का विधान है, इस लिए जो दोनों लोकों के सुखों को साधे, वही धर्म है[2]। तभी तो तुलसीदास जी ने लिखा है—'परहित सरिस धर्म नहीं भाई।'

जैसे कि सामाजिकता के नाते हमारे आपस में माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, पुत्र, मित्र आदि के रूप उस के अनुरूप आचरण करने से ही सामाजिक, पारिवारिक सम्बन्धों के निर्वाह से परस्पर सद्भाव, सहयोग, स्नेह, विकास प्राप्त होता है तथा धर्म का फल सुख भी इसी स्थिति में प्राप्त होता है। मनुस्मृतिकार ने इस सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध के पालन को सब से बड़ा धर्म बताया है।[3]

बच्चों की उत्पत्ति और पालन के लिए माता-पिता अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जो कष्ट सहते हैं, उस ऋण से बच्चे सौ वर्ष में भी अनृण नहीं हो सकते।

> तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
> तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तप: सर्वं समाप्यते ॥2, 228॥

अत: माता-पिता और शिक्षकों के उपकार को ध्यान में रख कर उन को सदा सन्तुष्ट करने का प्रयास करें, क्योंकि उन का सन्तोष सभी प्रकार के तप की तरह लाभप्रद है।

> त्रिष्वप्रमाद्यन्नेतेषु त्रींल्लोकान्विजयेद् गृही।
> दीप्यमान: स्ववपुषा देववद् दिवि मोदते ॥232॥

किसी प्रकार के आलस्य के बिना इन तीनों के प्रति अपने कर्तव्य को पालता हुआ व्यक्ति यश को प्राप्त करता है और अपने जीवन को भी उज्ज्वल बनाता है।

> सर्वे तस्यादृता धर्मा यस्यैते त्रय आदृता:।
> अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफला: क्रिया: ॥234॥

जो इन तीनों का आदर करता है, वस्तुत: वही अपने धर्म का पालन करता है और जो इन का आदर नहीं करता, उसका अन्य सब निष्फल हो जाता है।

> यावत्त्रयस्ते जीवेयुस्तावन्नान्यं समाचरेत्।
> तेष्वेव नित्यं शुश्रूषां कुर्यात्प्रियहिते रत: ॥235॥

जब तक ये तीनों जियें, तब तक अन्य कुछ भी धर्म न करें। सदा उन की सेवा, आज्ञापालन और उन को प्रिय लगनेवाली बातों में लगा रहें।

> तेषामनुपरोधेन पारत्र्यं यद्यदाचरेत्।
> तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यो मनोवचनकर्मभि: ॥236॥

इन तीनों की सेवा के साथ मन, वचन, कर्म से परलोक साधक जो कुछ भी करे, वह उन को बता देना चाहिए।

> त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते।
> एष: धर्म: पर: साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥मनु० 2,237॥

इन तीनों की सेवा में ही व्यक्ति का सारा धर्म-कर्म आ जाता है और यही सब से बड़ा धर्म है, बाकी तो छोटे धर्म हैं।

यहां के वर्णन का विश्लेषण करने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि माता-पिता और आचार्य=पढ़ाने वाले शिक्षक आदि के प्रति अपना कर्तव्य अर्थात सम्बन्धियों के आपस के सम्बन्ध एवं व्यवहार सब से प्रमुख धर्म हैं। जिस से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि आचार=व्यवहार ही धर्म का पहला रूप और अभिप्राय है। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है—'यही माता, पिता का कर्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है, जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन, विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।' सत्यार्थ० समु० 2, पृ० 37

इसी भाव को सामने रख कर 'जगत सचाई सार' नामक कविता में कवि श्रीधर पाठक ने लिखा है—

> 'पुत्र, कलत्र, मित्र, बान्धव में
> फैला कर सच्चा आनन्द।
> काम जगत का करता है वह
> रहता है सुख से स्वच्छन्द ॥

ऐसे ही व्यसनों के त्याग की बात है, यतो हि व्यसनों के त्याग को व्यवहार में लाने पर ही कोई सुखी होता है। व्यसनों का त्याग एक धार्मिक व्यक्ति की विशेष पहचान है। जो भी व्यक्ति जिस किसी प्रकार के धूम्रपान, हर तरह के नशे, मांस, जुआ, व्यभिचार आदि को करता है। वह उतना-उतना उस के प्रभाव से उस के परिणाम का भागी होता है[1]। जिस से दुख, कष्ट, क्लेश, रोग और धन के नाश आदि ही सामने आते हैं। जैसे कि शराब के पीने से होने वाली गाली-गलौच, मार-पीट, लड़ाई-झगड़े, दुर्घटनायें और मौत आए दिन सामने आ रही है। इन व्यसनों के त्याग की बात व्यवहार में आने पर ही व्यक्ति व परिवार सुखी होता है। इस से भी यही सिद्ध होता है कि धर्म का आचरण से सीधा सम्बन्ध है। किसी धार्मिक व्यक्ति का महत्व उस के जीवन की शुद्धता से है।

1. धारणाद् धर्म इत्याहु धर्मेण विधृता: प्रजा:। य: स्याद् धारणसंयुक्त: स धर्म इति निश्चय: ॥ शां० 110, 10 कर्ण० 49, 50
2. प्रभवार्थाय भूतानां धर्म प्रवचनं कृतम्। (8) 49, 49
3. अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्। य: स्यादहिंसासंयुक्त:—

1. सर्वेषां य: सुहृन्नित्य सर्वेषाञ्च हिते रत:। कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ! 254, 9
2. लोकयात्रार्थमेवेह धर्मस्य नियम: कृत:। उभयत्र सुखोदर्क इह चैव परत्र च ॥251, 4 ॥ यही भाव वैशेषिक दर्शन में 'यतोऽभ्युदय नि:श्रेयससिद्धि: स: धर्म: 1, 1, 2 शब्दों द्वारा दर्शाया गया है।
3. यं माता पितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम्। न तस्य निष्कृति: शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥2,227॥

1. व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते। व्यसन्यधोऽधो व्रजति मनु० 7, 53

व्यसन करने वाला आए दिन डूबता जाता है।

(क्रमश:)

यह कैसी विडम्बना है?

ले० चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट मन्त्री (आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) जालधर

(गताक से आगे)

6 इधर नास्तिक लोगो की भी यही स्थिति है। वह यदि इतना आडम्बर नही करते हैं तो वह सब इसलिये कि उन्हे सही आध्यात्मिक व ईश्वरीय ज्ञान के बारे मे कोई जानकारी ही नही है। केवल नकारात्मिक रवैय्या बना कर अपने को सन्तुष्ट कर लेते हैं। उनके पास जन्म से पहले और मृत्यु के पश्चात् की किसी भी शका का समाधान नही है। बस रोटी, कपडा और मकान के भौतिकवाद मे फस कर इनके पास नैतिक, अनैतिक के भद का कोई कृत्रिम व अस्थाई समाधान चाहे हो, पर पूर्ण और स्थाई समाधान नही है। ठीक भी है भाति भाति के सैंकडो भगवानों (जीवित और मृत) व मजहबो व सम्प्रदायो ने जितना इन्सानियत और मानवता को धोखा, पाखण्ड, वहम और दारूण दुःख दिया है और दे रहे हैं, उससे तो कोई भी समझदार व्यक्ति यह ही निर्णय लेगा कि "बाज आये ऐसी मुहब्बत (आस्तिकता) से, उठा लो पानदान अपना।" तुम्हारे ऐसे ईश्वर और मजहब से, वैसे ही अच्छे। परन्तु भौतिकता के रोटी, कपडा, मकान को प्राप्त करके मर ही जाता है, तो "अच्छे और बुरे" काम करने का क्या तात्पर्य? किसी भी ढग से केवल खाओ, पीयो, मौज उडाओ और मर जाओ। नैतिक-अनैतिक, व अच्छे बुर का फिर भेद कैसा? क्यो? और किस लिये? फिर चोरी, यारी, मक्कारी करने का क्या औचित्य या अनौचित्य? यह भी तो फिर एक विडम्बना ही है?

7. समाजवाद का अति 'साम्यवाद' की चर्चा करने वाले का भी कुछ ऐसा ही हाल लगता है। जहा आध्यात्मिक व मानवीय भावनाओ की कोई कदर या आदर नही। यहा मनुष्य को केवल 'मशीन' की भाति ही बर्ता जाता है। ऐसी स्थिति में कुछ काल तक तो ऐसा सब कुछ चल सकता है, क्योंकि यह लोग उपरोक्त दर्शाई कथित आस्तिकता का शिकार होने के कारण विद्रोहित होकर उसे नकारते हैं, परन्तु उनका कालान्तर मे ऊब जाना फिर स्वाभाविक है और इसी कारण मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु विद्वतगण, देशों/क्षेत्रो को छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं और फिर आज जनता भी ऐसे समाजवाद के प्रति विद्रोह कर उठती है, जैसा कि आजकल के नास्तिक/साम्यवादी देशों मे प्रत्यक्ष दीख पडता है। वह देश ऐसे समाजवाद से छुटकारा पाने की नीति की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जहा "जड और चेतन" मे भेद नहीं। पर हमारे देश के ऐसे समाजवादी कहे जाने वाले नेतागण, बीमार होने पर, उन देशों मे जाकर इलाज कराने, इस आस्था से जाते हैं कि उस समाजवादी देश में ही उनका उपचार हो सकता है और शायद कही नही। क्या यह विडम्बना नही है?

8. अत अब मैं जो कहना चाहता हू, उपरोक्त सभी प्रकार के वाद-विवाद अथवा व्यक्ति मुझे भी इसी विडम्बना का पथिक कहकर चाहे पुकारें, पर यह विडम्बना नहीं अकाट्य सत्य है कि "समाजवाद" को "आर्य समाजवाद" बना दें। अमीर और गरीब, मालिक और मजदूर का अन्तर (कर्म सिद्धान्त के कारण) न मिटा है और न ही मिट सकता है (जीव कर्म करते मे स्वतन्त्र हैं पर फल भोगने मे कर्मफल प्रदाता ईश्वर के न्यायरूपी व्यवस्था मे परतन्त्र है)। अपने दिल को तसल्ली देने हेतु कुछ अल्प समय के लिये चाहे कुछ व्यवस्था सामाजिक रूप से कर ली जावे परन्तु स्वाभाविक रूप मे "अच्छे और बुरे" कर्मों का फल तो जन्माजन्मान्तर मे ईश्वर देता ही है। इसका सारा विधान महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा अनुवादित चारो वेदो की विधि से सूर्य समान स्पष्ट है कि वेदो मे जो कुछ ईश्वर ने सृष्टि के आदि काल मे चार ऋषियो द्वारा आकाशवाणी रूप मे मानवता का सम्पूर्ण विधान—(I) ज्ञान, (II) कर्म, (III) उपासना, (IV) विज्ञान, बीज रूप मे मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये दिया है वही मानवता और इन्सानियत का एकमात्र बुद्धिअनुकूल, सृष्टिक्रमानुकूल तार्किक, वैज्ञानिक व सार्वभौम्य "वैदिक धर्म" ही है, जिसमे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व ससार की सभी लौकिक व पारलौकिक सभी समस्याओ व शकाओ का समाधान है। "अच्छा" वह है जो वेदानुकूल व क्रम सृष्टिनुकूल है, तथानुकूल आचार-विचार और आहार-व्यवहार है और "बुरा" वह है जो इसके विपरीत करता है। अच्छा या बुरा बताने की कसौटी यह अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान "वेद" हैं। 'समाजवाद' का नारा कि 'ससार के मजदूरो एक हो जाओ' अस्थाई है जबकि 'आर्य समाजवाद' का नारा 'ससार के आर्य पुरुषो (श्रेष्ठ पुरुषो) एक हो जाओ' (आर्य का अर्थ गुणवाचक है, जातिवाचक नही), तभी सब ओर 'मनुष्यता' हेतु उन्नति सम्भव है। आर्य समाज सस्था इन्हीं वेदो का प्रचार और प्रसार कर रही है, जिसका तीसरा नियम है "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

आर्य समाज के 10 नियम हैं और इसके दूसरे नियम मे 'ईश्वर' की परिभाषा है—

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।"

स्वामी श्रद्धानन्द और रेम्जेमैक्डोनेल्ड

लेखक डॉ० धर्मपाल जी, प्रधान दिल्ली आ० प्र० सभा, दिल्ली

(गताक से आगे)

रेम्जे मैक्डानेल्ड ने महात्मा मुशीराम का जो चित्र खीचा है, वह आज इतने वर्षों बाद भी हमारे चक्षु-पटलो के सम्मुख साकार दीखता है—'एक उन्नत कार्य, दर्शनीय मूर्ति, प्रभावपूर्ण, सौंदर्य की प्रतिमा हमसे भेंट करने आती है। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा की प्रतिकृति घडने के लिए आदर्श के रूप मे इसका स्वागत करता है और मध्यकालीन रुचि का चित्रकार इसमे सन्त पीटर का रूप देखता है। महात्मा जी हमे नमस्कार करते हैं और उनके अभ्रक जटिल 'ओ३म्' नाम से अलकृत सादी साज सज्जा वाले कमरे मे प्रवेश करते हैं। जूते बाहर उतारकर हम प्रवेश करते हैं।' रेम्जे मैक्डानेल्ड ने गुरुकुल के एक-एक कलाप का अतिविशद चित्रण किया है। भोजन प्रक्रिया, सस्कृत मन्त्रो का पाठ उसे आह्लादित करते हैं। शिक्षनालय की परिक्रमा करते हुए वे कहते हैं—'सयंम सुव्यवस्था और प्रसन्नता है। उज्ज्वल चमकीले नयनो वाले बटु और प्रशान्त मुद्रा वाले बडे कुमार, कही मिटटी मे खिलौने बनाते हुए और कही मिलकर अपना पाठ दुहराते हुए, कही श्लोक पाठ करते हुए और कही अपने गुरुओ के व्याख्यान सुनते हुए श्रेणियो मे बैठे हैं।' यह विवरण नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालयो का भी स्मरण कराता है।

दोपहर बाद का भ्रमण, सध्या कालीन अग्निहोम तथा रात्रि मे शयनकालीन मन्त्रपाठ—सभी उन्हे सम्मोहित सा करते प्रतीत होते हैं। अपने लेख को उन्होने इस प्रकार समाप्त किया है—'मानो मैं स्वप्न मे से किसी को कहते सुनता हू—'हमे और कुछ नही चाहिए। हमे शाति से प्रभु का भजन करने दो।' स्वामी श्रद्धानन्द के सादा जीवन और उच्च विचारो ने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को अत्यधिक प्रभावित किया था। उसने केवल स्वामी श्रद्धानन्द से ही प्रेरणा नही ग्रहण की होगी, बल्कि उसने वहा के वातावरण और शिक्षा प्रणाली तथा ब्रह्मचारियों की सरल, विनीत, सौम्य मुद्राओ से एक नई सचेतना प्राप्त की होगी। पूर्वानुभव हमारे जीवन मे बार-बार स्मरण आते हैं। वे एक प्रकार की स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करते हैं। निश्चय ही गुरुकुल कागडी के अनुभव, ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को आने वाले समय मे भी गुदगुदाते रहेंगे। कही तो उसने सोचा होगा कि यदि श्रद्धानन्द राष्ट्रभक्तो का निर्माण कर रहे हैं तो इसमे बुरा क्या है। इसलिए उसने कहा था—वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल लेना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मागे, तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्ररणा करूगा।' अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पुनीत व्यक्तित्व और सार्वभौम जीवनदर्शन के प्रति इससे अच्छी श्रद्धाजलि क्या होगी। अपनो को तो अनेक प्रभावित कर लेते हैं पर जो विपरीत भाव लेकर आए, उसे प्रभावित कर सके वह महानतम है। ऐसे ही थे स्वामी श्रद्धानन्द, जिसने रेम्जे मैक्डोनेल्ड को इस प्रकार सम्मोहित किया था।

भारतीय स्वाधीनता सग्राम, शुद्धि आन्दोलन, दलितोद्धार, पाखण्ड खडन, हिन्दी प्रचार, समाज सगठन, पत्रकारिता तथा सत्साहित्य लेखक के क्षेत्र मे उन्होने जो कार्य किया उससे वह आज हमारे आदर्श पुरुष हैं। उस वीर, बलिदानी पुरुष को हमारी विनत श्रद्धाजलि।

सम्पादकीय :-

आर्यसमाज को बचाने के लिए एक सुझाव-2

पिछले अंक में मैंने यह सुझाव दिया था कि या तो सार्वदेशिक सभा अपने विधान के अनुसार न्याय सभा बनाए या वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष को यह अधिकार दे दिया जाए कि वह पांच निष्पक्ष सन्यासियों का एक न्याय मण्डल या न्याय सभा बना दे। न्याय सभा का एक विधान बना हुआ है और वह सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित हो चुका उसके अनुसार तीन प्रकार की न्याय सभाएं होंगी। सार्वदेशिक न्याय सभा, प्रान्तीय न्याय सभा और स्थानिक न्याय सभा। इसमें यह भी लिखा हुआ है कि न्याय सभा के सदस्य कौन हो सकते हैं। इन न्याय सभाओं के मूल भूत अधिकार क्या होंगे, इसमें सब कुछ दिया हुआ है। हमारे पूर्वजों ने दूरदर्शिता से काम लेते हुए और यह सोच कर कि किसी समय आर्य समाज में आपस में झगड़े हो सकते हैं न्याय सभा का विधान बनाया था और यह पहले बनती भी रही है। परन्तु पिछले तेरह चौदह वर्षों से कोई न्याय सभा नहीं बनाई गई। इस लिए आर्यसमाजों या प्रान्तीय सभाओं के सारे विवादों का निर्णय सार्वदेशिक सभा के अधिकारी स्वयं करते हैं। जिसका यह परिणाम है कि सार्वदेशिक सभा स्वयं विवादास्पद संस्था बनती जा रही है यह हमारी सर्वोच्च संस्था है। इसके अधिकार, सम्मान और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि इसे प्रत्येक प्रकार के विवाद से अलग रखा जाए। यह उसी स्थिति में सम्भव है यदि न्याय सभा बना दी जाए और आर्यसमाज के सब विवाद उसके पास जाएं और उसका न्याय अन्तिम होना चाहिए।

परन्तु सार्वदेशिक सभा कोई न्याय सभा नही बनाएगी। लग-भग तीन वर्ष पहले सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने एक प्रस्ताव भी पारित किया था कि न्याय सभा बनाई जाए। पंजाब में जो विवाद चल रहा था उसे समाप्त करने के लिए भी यह निर्णय लिया गया था कि न्याय सभा बनाई जाए। हम से कहा गया था कि हम मुकदमें वापिस ले लें और सार्वदेशिक सभा न्याय सभा बना देगी। हमने तो मुकद्दमें वापिस ले लिए परन्तु सार्वदेशिक सभा ने न्याय सभा नही बनाई। इसी लिए मैं कहता हूं कि वह अब भी नही बनाएगी।

इन परिस्थितियों में मेरा यह सुझाव है कि पांच निष्पक्ष सन्यासियों की एक न्याय सभा बना दी जाए। वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष उसके भी अध्यक्ष हों। आर्य समाज के सब विवाद वह चाहे सार्वदेशिक स्तर के हों या प्रान्तीय स्तर के, इस न्याय सभा के सामने जाने चाहिए। उस का जो भी निर्णय हो वह अन्तिम समझा जाना चाहिए उसको एक कार्यालय हो, जिसमें एक सचिव और उसके साथ एक क्लर्क काम कर सके और उसका सारा व्यय सार्वदेशिक सभा दे। इस न्याय सभा के द्वारा आर्य समाज की प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़ेगा। क्या हम नहीं देखते कि अकाल तख्त के जत्थेदार के हुकमनामा को सब सिख मानते हैं कोई उसकी अवहेलना नहीं कर सकता। नामधारी निरंकारी और राधा-स्वामी इन सब के अपने अपने गुरु है वह जो भी आदेश देते हैं सब मानते हैं कोई कारण नहीं कि आर्यसमाज में ऐसी व्यवस्था न हो यह काम सार्वदेशिक सभा नहीं कर सकती। क्योंकि उसके अधिकारी स्वयं पक्ष बन जाते हैं इस लिए वह न्याय नही कर सकते। पांच निष्पक्ष सन्यासी जिनका किसी आर्यसमाज या प्रान्तीय सभा से कोई सम्बन्ध न हो। यदि वह न्याय सभा बनाए और उसके निर्णय प्रत्येक आर्यसमाजी को मान्य हो तो इससे आम लोग भी आर्यसमाज का आदर करेंगे कि यह लोग अपने सन्यासियों के आदेश का पालन करते हैं।

पाठक गण! स्थिति अत्यन्त गम्भीर है आर्यसमाज में आपस के झगड़े बढ़ते जा रहे हैं यदि उन्हें रोकने का प्रयास न किया गया तो आर्य-समाज डूब जाएगा। आपस के झगड़े समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि एक ऐसा निष्पक्ष संगठन हो जो आर्य समाज के सब विवाद समाप्त कर सकें और आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बना सकें। मैंने अपना सुझाव आर्य जनता के सामने रख दिया है। सार्वदेशिक सभा से मुझे अभी भी आशा नही कि वह कोई न्याय सभा बनाए, इस लिए आवश्यक है कि पांच निष्पक्ष सन्यासियों की न्याय सभा बनाने के मेरे सुझाव पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाए। यदि कोई और महानुभाव इस विषय में अपना कोई और सुझाव दे सके तो हम उस पर भी विचार कर लेंगे परन्तु कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए।

—वीरेन्द्र

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति अंक

आर्य मर्यादा के द्वारा समय समय पर हम अपने दिवंगत नेताओं के विषय में आर्य जनता के सामने कुछ न कुछ प्रस्तुत करते रहते हैं। इससे पहले, लाला लाजपतराय जी, आचार्य रामदेव जी और स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में हम विशेषांक निकाल चुके हैं। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिवस 11 जनवरी को है। इस अवसर पर भी हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए एक विशेषांक निकाल रहे हैं। यदि कोई महानुभाव स्वामी जी महाराज के सम्बन्ध में अपने संस्मरण भेजना चाहें, भेज सकते हैं। 8 जनवरी तक पहुंच जाने चाहिए।

—वीरेन्द्र

दिवंगत आर्य समाजी

हम समय-समय पर आर्य समाज के दिवंगत नेताओं के विषय में तो कुछ न कुछ प्रकाशित करते रहते हैं। परन्तु हम यह भी आवश्यक समझते हैं कि जो कार्यकर्त्ता आर्य समाज की सेवा करते करते इस संसार से विदा ले चुके है। उनके विषय में भी जनता के सामने कुछ आना चाहिए ताकि उनकी याद किसी न किसी तरह बनी रहे। इस लिए आर्य भाईयों और बहनों से यह निवेदन है कि जिन दिवंगत आर्य समाजियों के विषय में उन्हें कुछ पता हो, वह उनके जीवन के सम्बन्ध में हमें लिख कर भेजें। हम उन्हें आर्य मर्यादा में प्रकाशित करेंगे, परन्तु यह 15-20 पंक्तियों से अधिक न होना चाहिए।

इस प्रकार हम उन दिवंगत आत्माओं को याद भी करेंगे और उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भी भेंट कर सकेंगे। यह आवश्यक है कि जो ऐसे लेख व पत्र हमें भेजे जाएं वह किसी न किसी आर्य समाज के मन्त्री या प्रधान से प्रमाणित अवश्य हों।

—वीरेन्द्र

आर० एस० एस० के साप्ताहिक पाञ्चजन्य में प्रकाशित ऋषि दयानन्द विषयक एक और भ्रमात्मक लेख

ले० श्री डा० भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द जीवन को लेकर देश की पत्र पत्रिकाओ मे कितनी भ्रमपूर्ण बातें प्रकाशित होती हैं, इसका अहसास शायद ही किसी आर्य समाजी नेता को होता होगा । यह कार्य मेरे ही जिम्मे आया है कि इन विवादास्पद तथा अलीक बातों को प्रश्रय देने वाले एव भ्रान्ति उत्पन्न करने वाले लेखन का मैं सटीक उत्तर दूं। गत दिनों दिल्ली के श्री वीरेन्द्र सिंह पमार ने मेरे पास पाञ्चजन्य साप्ताहिक के 14 मई 1989 के अक की एक कटिंग भेजी है। इस लेख का शीर्षक है—स्मर यज्ञ से निकली अमर यज्ञ की ज्वाला । इसके लेखक कोई भगवत नारायण त्रिपाठी नामक सज्जन हैं। सारा लेख ऋषि दयानन्द विषयक कपोल कल्पित बातों से भरा पडा है। लेखक ने जो बातें लिखी हैं उनका स्रोत क्या है, किस ग्रन्थ, पुस्तक या जानकारी के आधार पर उसने यह सब लिखा, इसे बताना उसने उचित नहीं समझा। शायद उसने सोचा था कि दयानन्द पर जो कुछ ऊटपटांग, ऊलजलूल लिख दिया जाये, उस पर टीका करने वाला है ही कौन ? लेखक की यह धारण बहुत कुछ सत्य ही है, क्योंकि आर्य समाज के क्षेत्र मे आज कल इतिहास के तथ्यपूर्ण दृष्टिकोण को उजागर करना भी अपराध माना जाता है।

अधिक भूमिका न बांध कर मैं परोपकारी के पाठकों को इस भ्रमोत्पादक लेख की कुछ हास्यास्पद अवधारणाओं से परिचित कराऊगा । लेखक कहता है कि "स्वामी दयानन्द हिन्दू धर्म के सचेतक तो बाद में बने, पहले वे भारतीय स्वतन्त्रता के लिये क्रान्ति का वातावरण सृजित करने के लिये उठ खडे हुए थे । "ऐसी बात वही कह सकता है, जिसने दयानन्द के जीवन का गम्भीर अनुशीलन नही किया हो। अन्यथा जो निष्कर्ष स्वामी जी के जीवन चरित को पढ कर निकलते हैं, वे इस प्रकार हैं—

(1) स्वामी जी ने मृत्यु पर विजय पाने, सच्चे शिव का साक्षात्कार करने एव संसार के दुखों से छूटने का उपाय जानने के लिये ही गृह त्याग किया था।

(2) पुन: उन्होंने योगाभ्यास किया और योग विद्या के रहस्यों को जाना।

(3) गुरु विरजानन्द से दीक्षित होने के पश्चात् उन्होंने आर्यावर्त के मत सम्प्रदायों और अनार्ष विचार-धाराओं पर आधारित पन्थों के उन्मूलन का व्रत लिया ।

(4) पश्चात् गंगा के तटवर्ती प्रान्तों मे भ्रमण करते हुए संध्या, अग्निहोत्र, गायत्री जप आदि वैदिक कर्त्तव्यकर्मों का उपदेश दिया ।

(5) हिन्दू धर्म का सचेतक बनने का प्रसग तो दयानन्द के जीवन में आया जब उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और उसके माध्यम से आर्यावर्तवासी आर्यों को सगठित करने का प्रयास किया ।

(6) क्रान्ति का वातावरण बनाने मे दयानन्द की भूमिका इतनी ही थी कि उन्होने भारतवासियों को स्वराज्य और स्वाधीनता का मूल मंत्र दिया। अगर लेखक यह मानता है कि स्वामी दयानन्द ने 1857 के काल में हाथ मे तलवार लेकर अग्रेज़ो से लड़ाई लडी, तो वह उसका शुद्ध भ्रम है।

श्री त्रिपाठी अपने लेख मे लिखते है कि वैशाख सवत् 1912 में नाना साहब ने स्वामी जी से भेंट की और उन्हें क्रान्तिपूर्व की घटनाओं की जानकारी दी। हमारा निवेदन यह है कि ऐसी बात वही लिखेगा जिसे आर्ष जीवन का क० ख० भी नहीं आता वैशाख 1912 में तो स्वामी जी उत्तराखण्ड के टिहरी तथा मीनगर (गढवाल) आदि स्थानों में भ्रमण कर रहे थे। उस समय न तो नाना साहब ही उत्तराखण्ड के इस अचल में आये और न ऋषि से ही उनकी भेंट हुई। इसी प्रसंग मे श्री त्रिपाठी ने ऋषि के मुख से यह वाक्य कहलाया है—वैसे तो मैं एक संन्यासी हूं। मुझे राज लिप्सा से सदा दूर रहना चाहिए किन्तु आज देश की स्थिति बता रही है कि देश के प्रत्येक संन्यासी को शस्त्र उठा लेना चाहिए।" लेखक के इस कथन में निम्न दोष हैं—

(1) स्वामी दयानन्द ने संन्यासी को शस्त्र उठाने का आदेश कहीं नहीं दिया और न खुद ने ही कभी शस्त्र उठाया। उन्होंने तो राव कर्ण सिंह जैसे आततायी से भी कहा कि यदि उन्हें लड़ने का शौक है तो जयपुर अथवा जोधपुर के राजाओं से युद्ध कर अपना शौक पूरा करे। यह अवश्य है कि देश के लिए शस्त्र उठाना क्षत्रियों का कर्त्तव्य है। स्वामी जी के समग्र उपदेशों में भी यही ध्वनि निकलती है।

श्री त्रिपाठी ने एक और कपोल कल्पित कथानक को स्वामी दयानन्द पर थोप दिया है। वह लिखता है कि 31 मार्च 1856 भरतगढ दुर्ग के कैलाश कक्ष मे एक बैठक हुई जिसमे स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त निम्न लोग उपस्थित थे (1) अजीमुल्ला खां (2) लखनऊ की बेगम जीनत महल (3) नाना साहब (4) तात्या टोपे (5) महारानी लक्ष्मी बाई (6) अवन्ति (7) बांदा का नवाब अलीबहादुर बाई (8) पटना के पं० दुबे (9) सागर के पटेल (10) शाहगढ नरेश (11) वकील उमेशचन्द्र बैनर्जी (कांग्रेस के प्रथम सभापति) लेखक के इस कथन को गप के सिवा और क्या कहा जा सकता है।

(1) प्रथम तो वह यह नहीं बताता कि भरतगढ कौन सा स्थान है? भरतपुर का नाम तो हमने सुना है । किन्तु भरतगढ की भौगोलिक स्थिति क्या थी ?

(2) उपर्युक्त 11 व्यक्तियों का इस स्थान पर 31 मार्च 1856 को एकत्र होना इतिहास के साथ अन्याय है। किसी इतिहास ग्रन्थ मे नही लिखा कि उपर्युक्त दिन ये 11 लोग किसी कल्पित भरतगढ़ मे एकत्र हुए थे।

(3) पटना के दुबे और सागर के पटेल कौन थे ? भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) के प्रथम सभापति ईसाई वकील व्योमेशचन्द्र बनर्जी उस मीटिंग में कैसे पहुच गये ? इस प्रकार की झूठी बातें लिखने मे इस लेखक को कोई सकोच नहीं हुआ । मार्च 1856 में तो ऋषि दयानन्द मुरादाबाद, सम्भल, गढमुक्तेश्वर और फर्रुखाबाद आदि स्थानों का भ्रमण कर रहे थे। वे इस भरतगढ में कैसे आ गये। 1856 का तो पूरा भ्रमण वृत्तान्त स्वयं ऋषि ने अपनी आत्मकथा में लिखा है।

लेखक का यह कथन भी असत्य और अलीक है कि स्वामी दयानन्द ने उक्त सभा की अध्यक्षता की थी। उन्होंने राजस्थान भ्रमण से पूर्व किसी भी राजपूत राजा से भेंट नहीं की। इन्दौर नरेश से उनकी मुलाकात भी कारणवश टल गई थी। एक और काल्पनिक बात श्री त्रिपाठी ने यहां लिखी है । उनके अनुसार राजा मर्दनसिंह ने इस सभा में कहा कि अंग्रेज 84 रूढ़ियों में सुधार करने के लिये राजाओं का समर्थन चाहते थे और इन 84 विषयों की रुचि अंग्रेज सरकार द्वारा आयोजित राजाओं की एक सभा में कलकत्ते में प्रस्तुत की गई थी। लेखक के इस कथन मे निम्न दोष हैं—

(1) वह यह नहीं बताता कि अंग्रेज लोग कौन से 84 सुधार करना चाहते थे।

(2) अंग्रेज सरकार द्वारा ऐसी किसी सभा बुलाने का समर्थन तत्कालीन इतिहास से नहीं होता।

(3) यदि थोडी देर के लिए मान भी लिया जाये कि अंग्रेज 84 रूढ़ियो का सुधार करना चाहते थे तो इसमें गलत क्या था। स्वामी दयानन्द तो सदा इस पक्ष मे रहे कि सामाजिक सुधार यदि विदेशी सरकार के द्वारा भी हों, तो वे स्वीकार योग्य हैं। उनके गुरु दण्डी जी ने तो मथुरा के अंग्रेज कलेक्टर से अनार्ष ग्रन्थो पर प्रतिबन्ध लगाने तक का अनुरोध किया था और खुद स्वामी दयानन्द ने गोवध रुकवाने के लिये अनेक बार गोरे शासकों से आग्रह किया था।

इसी बैठक मे स्वामी जी के मुख से यह कहलाया गया है कि नासिक मे रंगोजी बाबू और अजीमुल्ला से मेरी भेंट हो चुकी है। सच्चाई यह है कि स्वामी जी तो नासिक मे प्रथम और अन्तिम बार अक्तूबर 1874 मे गये थे और संघी अखबार पाञ्चजन्य का यह लेखक 1856 से पहले ही उन्हें नासिक की सैर करा बैठा। स्वामी जी की रंगोजी बाबू तथा अजीमुल्ला से कभी भी भेंट नही हुई।

झूठ बोलने या लिखने की कोई सीमा तो होती नहीं। अत: श्री त्रिपाठी आगे और भी मिथ्या बातें लिख कर दयानन्द की यशोगाथा को कालिमा युक्त करते गये। उनके लिखने का सार यह है कि— (क्रमश:)

आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय का टेलीफोन नं० अब बदल कर 73020 हो गया है। अंकित कर लें।

बाइबल में पशुबलि

श्री पं० वेद प्रकाश शास्त्री एम० ए० 4-E कैलाश नगर, फाजिलका (पंजाब)

इन्हीं बलिदानों से वह पवित्र हो जायेगा। बस खून छिड़का और पवित्र हुए।

इसके अतिरिक्त जब मांस, चर्बी आदि जलेंगे तो इनसे दुर्गन्ध ही निकलेगी, सुगन्ध नहीं परन्तु बाइबल कहती है, सुगन्ध वाला होगा—

"...होमबलि की वेदी पर जला देना,

जिससे वह यहोवा के सामने सुखदायक सुगन्ध ठहरे। वह तो यहोवा के लिए हवन होगा।"

निर्गमन 29 : 25

यदि आपने कोई पाप कर्म किया है तो प्रायश्चित के लिए बलि कीजिए और पाप से छुटकारा पाइए। कितना अच्छा उपाय है साथ ही सरल भी। दुष्कार्य करके प्रायश्चित हेतु बलि कर दिया और दुष्कार्य का प्रभाव दूर हो गया—

"पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित के लिए प्रतिदिन चढ़ाना और वेदी को भी प्रायश्चित करने के समय शुद्ध करना...और जो कुछ उससे छू जायेगा वह भी पवित्र हो जायेगा।"

निर्गमन 29 : 36,37

यह बलि का विधान केवल पर्वों या विशेष अवसरों के लिए ही नहीं अपितु नित्यकर्म (दैनिककृत्य) के रूप में भी इसका विधान किया गया है—

"जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़ाना होगा वह यह है, अर्थात् प्रतिदिन एक एक वर्ष के दो भेड़ों के बच्चे एक भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना...तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे।"

निर्गमन 29 : 38-42

बाइबल के अन्तर्गत लैव्यवस्था नामक पुस्तक में बाकायदा "होमबलि की विधि" शीर्षक से बलि की विधि समझाई गई है जिससे किसी को बलि करने में कठिनाई न हो—

"यहोवा ने मिलाप वाले तम्बू में से मूसा को बुला कर उससे कहा, इस्राएलियों से कह कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिए पशु का चढ़ावा चढ़ाए तो उसका बलिपशु गाय बैलों या भेड़-बकरियों में से एक का हो।

यदि वह गाय बैलों में से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए, कि यहोवा उसे ग्रहण करे। और वह अपना हाथ होमबलि पशु के सिर पर रखे और वह उनके लिए प्रायश्चित करने को ग्रहण किया जायेगा। तब वह उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लोहू को समीप ले जाकर उस वेदी की चारों अलंगों पर छिड़के जो मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर है। फिर वह होमबलि पशु की खाल निकाल कर उस पशु को टुकड़े टुकड़े करे तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रखें और आग पर लकड़ी सजा कर धरें और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चर्बी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजा कर धरें, और वह उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से धोएं तब याजक सबको वेदी पर जलाएं कि वह होमबलि यहोवा के लिए सुखदायक सुगन्ध वाला हवन ठहरे।"

लैव्यवस्था 1 : 1-9

इसके बाद 10 से 13 तक भेड़-बकरियों की बलि वर्णन है जिसको विस्तारभय उद्धृत नहीं किया गया तत् पश्चात् पक्षियों की बलि का विधान किया है—

"और यदि यहोवा के लिए पक्षियों का होमबलि चढाए, तो पडुकों वा कबूतरों का चढ़ावा चढाए। याजक उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका गला मरोड़ के सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए, और उसका सारा लोहू उस वेदी की अलग पर गिराया जाये और वह उसका ओझर मल सहित निकाल कर वेदी के पूर्व की ओर राख डालने के स्थान पर फेंक दे और वह उसको पंखों को बीच से फाड़े, पर अलग-अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रख कर जो आग पर होगी जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिए सुखदायक सुगन्ध वाला हवन ठहरे।"

लैव्यवस्था 1: 14-17 पृ० 144

इसी प्रकार मेलबलि की विधि, पापबलि की विधि, भांति-भांति के बलिदानों की विधि शीर्षकों के अन्तर्गत भेड़-बकरी, गाय-बैल एवं पक्षियों के बलिदान का विधान है।

लैव्यवस्था 3-7

पृष्ठ 152 पर "याजकों के संस्कार का वर्णन" शीर्षक में जहां याजकों को शुद्ध पवित्र करने के लिए नहलाने, शुद्ध वस्त्र पहनाने का वर्णन है वहां उन्हें पवित्र करने के लिए पशुबलि का भी उल्लेख किया गया है।

लैव्यवस्था 14 में कोढ़ी को शुद्ध करने के लिए भी पक्षी की बलि जल में करने के लिए कहा गया है और फिर पशुबलि के लिए आदेश दिया गया है। इस नियम से कोढ़ी कहां तक शुद्ध हो जाएंगे यह तो वही शुद्धकर्ता याजक अधिक जानते होंगे या वे कोढ़ी जो कोढ़ से शुद्ध हुए होंगे।

प्रमेह के रोगियों का शुद्धीकरण केवल दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चों की बलि देने से हो जायेगा। कितना सुन्दर उपाय है शुद्ध होने का।

"फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा कि इस्राएलियों से कहो कि जिस-जिस पुरुष को प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे"

लैव्यवस्था 15 : 1-2 पृष्ठ 164

प्रमेह रोगी जिस व्यक्ति या वस्तु को छू लेगा वह भी अशुद्ध माना जायेगा। प्रमेह रोगी रोग ठीक होने के बाद भी सात दिन के बाद बहते पानी में स्नान करने पर शुद्ध होगा लेकिन बलि आवश्यक है—

"आठवें दिन वह दो पडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे दें। तब याजक उनमें से एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि के लिए उसके प्रमेह के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित करे।"

लैव्यवस्था 15 : 14-15

बलिदान के लिए स्थान निश्चित किया गया है उसके अतिरिक्त अन्य स्थान पर बलिदान नहीं किया जा सकता—

"फिर यहोवा ने मूसा से कहा... जो बैल वा भेड़ के बच्चे, वा बकरी को, चाहे छावनी से बाहर घात करके, मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के निवास के सामने यहोवा को चढ़ाने के निमित्त न ले जाये, तो उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा और मनुष्य जो लोहू बहाने वाला ठहरेगा, वह अपने लोगों से नाश किया जाये।"

लैव्यवस्था 17 : 1-4

परमेश्वर इन दिए गए बलिदानों से बहुत प्रसन्न होता है—

"मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। जब तुम यहोवा के लिए मेलबलि करो तब ऐसा बलिदान करना जिससे मैं तुमसे प्रसन्न हो जाऊं।

लैव्यवस्था 19 : 4-5

दुधमुंहे पशुशावक भी बलि के योग्य हैं बस वे सात दिन के हो जाने चाहिए—

जब बछड़ा वा भेड़ बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी मां के साथ रहे, फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्यवाह चढ़ावे के लिए ग्रहणयोग्य ठहरेगा।"

लैव्यवस्था 22 : 27

नवजात बच्चे बिछुड़ने के बाद इन पशुओं का क्या हाल होता होगा, कैसे तड़पते होंगे? इसका पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। पर परमेश्वर यहोवा को इससे क्या? वह तो बलिदानों से खुश होता है तभी तो यह कहावत बन गई—'चिड़ी अपनी जान से जाए, खाने वालों को स्वाद न मिले।'

नाज़ीर के न्यारे रहने के दिन पूरे होने पर क्या व्यवस्था है, इसके सम्बन्ध में इस प्रकार उल्लेख मिलता है—

"और वह यहोवा के लिए होमबलि करके एक वर्ष का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची और मेलबलि के लिए एक निर्दोष मेढ़ा...ये सब चढ़ावे समीप ले जाये।"

गिनती 6 : 14-15 पृ० 198

इसी प्रकार गिनती 7 : 15-17 में भी पशुओं की संख्या का उल्लेख किया गया है। एनान के पुत्र अहीरा ने भी पशुबलि की भेंट की थी। गिनती 7 : 81-83 पृ० 202

"लेवियों के नियुक्त होने का वर्णन" प्रसंग में भी "तू लेवियों के लिए प्रायश्चित करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिए चढ़ाना।" इस प्रकार बलि की प्रेरणा दी गई है। गिनती 8 : 12 पृ० 203

यदि भूल से पाप हो जाये तो उसे दूर करने का कितना सरल उपाय है, एक बकरी चढ़ाइए और पाप से मुक्त हो जाइए। यानी पशु मारने में कोई पाप ही नहीं क्योंकि वह कृत्य परमेश्वर के नाम पर जो हुआ—

"फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए और याजक भूल से पाप करने प्राणी के लिए यहोवा के सामने प्रायश्चित करे, सो इस प्रायश्चित के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जायेगा"

गिनती 15 : 27-28 पृ० 214

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नमन उन्हें है मेरा

ले०—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

नव्य ऊषा की नवल रश्मि,
के सदृश विहंसते आते।
सत्य धर्म की भूमण्डल पर,
नव आभा बिखारते।
कोटि-कोटि जन के मानस का,
हरते गहन अंधेरा।
नमन उन्हें है मेरा॥

प्रभा प्रमण्डित प्रखर किरण,
रवि, ज्यों देती आलोक।
मुग्ध धरणि हो जाती त्यों,
जिनके कर्त्तव्य विलोक।
गूढ़ तिमिर को छिन्न-भिन्न
कर लाते नया सवेरा।
नमन् उन्हें है मेरा॥

मातृ भूमि के लिए सदा,
आगे बढ़ शीश चढ़ाते।
शत्रु सैन्य को रण कौशल,
से; जो हैं मार भगाते।
फोड़ डालते आंखें अरि की,
जिसने आंख तरेरा।
नमन उन्हें है मेरा॥

मानवता उत्थान हेतु ही,
जिनका जीवन अर्पित।
दीन दलित की सेवा में,
जिनका सर्वस्व समर्पित॥
जिनके पद तल पर ही लगता,
रहा सतत सद्गुण का डेरा।
नमन् उन्हें है मेरा॥

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा 1978 से आदरणीया श्रीमती कमला जी आर्य की प्रेरणा से आरम्भ की गई। इसकी व्यवस्थापिका श्रीमती सत्या शर्मा है। इनकी सहयोगी अध्यापिकाएं श्रीमती सुमन गर्ग, श्रीमती फूला गुप्ता, श्रीमती चन्द्रकान्ता तथा ऊषा कक्कड़ जी हैं। इनके भरसक प्रयत्न से दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर होने पर इस वर्ष परीक्षा में 652 छात्राओं ने परीक्षा दी।

प्रति वर्ष आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना की कोई न कोई छात्रा भारतीय स्तर पर प्रथमा, द्वितीया अथवा तृतीया आती रही हैं। इसके अतिरिक्त और भी इनाम प्राप्त होते रहे हैं।

इस वर्ष भी पहले की तरह तीन छात्राएं प्रथमा, तृतीया तथा पंचम स्थान पर रहीं। इसके अतिरिक्त 23 इनाम और भी प्राप्त हुए हैं।

प्रति वर्ष पारितोषिक समारोह करके बच्चों को इनाम दिए जाते हैं। भारतीय स्तर पर पहला, दूसरा या तीसरा इनाम प्राप्त करने वाली छात्राओं को चांदी का मैडल दिया जाता है जोकि पिछले वर्षों में आदरणीय श्रीमान् खुल्लर जी देते रहे हैं। इस वर्ष 11-11-89 को पारितोषिक समारोह मनाया गया जिसमे श्रीमान रणवीर भाटिया ने समारोह की अध्यक्षता की। तीनों छात्राओं को चांदी के मैडल श्रीमान कस्तूरी लाल जी धीर ने दिए।

मैडल प्राप्त करने वाली छात्राएं—

1. सोनिया—सत्यार्थ भूषण में प्रथम।
2. किरण—सत्यार्थ भूषण में पंचम।
3. रश्मि—सत्यार्थ विशारद में द्वितीय।
4. मुक्ता—धर्म प्रवेशिका में पंजाब स्तर पर प्रथम।

आदरणीया प्रिंसिपल श्रीमती कान्ता जी सूरी के प्रोत्साहन से पाठशाला दिन दुगुनी, रात चौगुनी उन्नति की ओर जा रही है। वह पढ़ाई करवाने के साथ साथ नैतिकता तथा आध्यात्मिकता की ओर भी बहुत रुचि रखती हैं।

गत दिनों आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) स्थापना दिवस समारोह बड़े समारोह से मनाया गया।

—कान्ता सूरी प्रिंसिपल

दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर का विद्यार्थी बलजीत सिंह जिसने अक्तूबर, 89 में दुंग्र (महाराष्ट्र) में हुई नैशनल बो बो चैम्पियनशिप में पंजाब का प्रतिनिधि किया।—हरबंस लाल तनेजा, प्रिंसिपल

अभिवादन का प्रतीक : नमस्ते

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने आर्य जाति को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से बांधने के लिए वेद और वेदांगों का सहारा लिया। उन्होंने निर्देश किया कि आपस में मिलने पर हम एक-दूसरे को नमस्ते कहें। अभिवादन का यही ढंग आदि-काल में सर्वत्र चलता था। सभी लोग इसे अपनाने में गौरव मानते थे। वेद शास्त्रों में सर्वत्र इसी का प्रयोग है। महर्षि ब्रह्मा से लेकर महर्षि जैमिनि पर्यन्त अभिवादन में सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होता था।

नमस्ते संस्कृत भाषा का शब्द है। इसीलिये एक-दूसरे का सम्मान करने की दृष्टि से इसी का प्रयोग होता था। इस पर आपत्ति करने का किसी ने साहस ही नहीं किया। इसके जन्म काल से आज तक इसके विरुद्ध किसी ने कोई शब्द नहीं कहा। छोटा अपने से बड़ों का आदर इसी शब्द से करता आया है। इसी शब्द को महर्षि दयानन्द ने अपनाने की अपील की।

नमस्कार या नमस्कारम् का शब्द भी प्रयोग होता था, परन्तु इन शब्दों का लोग भगवान् के पूजन में प्रयोग करते थे-आपस में इसका प्रयोग नहीं करते थे।

नमस्ते शब्द का प्रयोग करने का आदेश महर्षि दयानन्द जी ने क्यों दिया? क्योंकि उस समय राम-राम, जय सीताराम, जय कृष्ण आदि अनेकों प्रकार से आर्य लोग अभिवादन करते थे, जिन्हें दयानन्द जी ने अवैदिक समझ कर छोड़ दिया। महर्षि का एकमात्र लक्ष्य आर्य जाति को इसके प्राचीन धर्म तथा सामाजिक परम्पराओं पर लाना था।

नमस्ते शब्द के दो भाग हैं—नमः ते। संस्कृत के विद्वान् जानते हैं कि 'ते' शब्द का अर्थ है 'तुम्हारे लिये' या आदर में आप के लिए। इस प्रकार नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम आपके लिए नमः करते हैं। नमः सत्कार, श्रद्धा के साथ किसी-किसी के सम्मुख झुकना आदि के अर्थ में आता है। नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम एक-दूसरे का आदर करने के लिये झुकते हैं।

आर्य लोग अपने अभिवादन के समय अपने दोनों हाथ जोड़कर अपने हृदय के पास लाते हैं, अपना सिर झुकाकर नमस्ते शब्द का उच्चारण करते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति अपने हृदय, मस्तिष्क तथा हाथों की शक्ति से आगन्तुक का आदर करता है। कहने का तात्पर्य यह कि नमस्ते कहने वाला अपनी सम्पूर्ण शक्ति से आपके प्रति श्रद्धा प्रकट करता है।

सन् 1933 में जब शिकागो (अमरीका) में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तो उसमें सबसे पहले यही निर्णय किया गया कि सम्मेलन में भाग लेने वाले आपस में अभिवादन के लिए किस शब्द का प्रयोग करें। आर्य समाज की ओर से वेदों के विद्वान् पं० अयोध्या प्रसाद जी ने नमस्ते को प्रस्तुत किया उनकी बात सुनकर सभी लोगों ने इसे स्वीकार किया।

—मीरांपति

वसुधैव कुटुम्बकम्

ले० श्री मोहनलाल शर्मा 'रश्मि' फ्रीलैण्डगंज, दाहोद 389160

आदर्श यही अपनायें हम।
'वसुधैव कुटुम्बकम्'।
हम होंगे उतने ही महान्,
जितना ऊंचा आदर्श हमारा।
न भूल सकें ये बात कभी,
जीवन का यह दर्पण प्यारा।

कष्टों के स्वर जायें थम।
वसुधैव कुटुम्बकम्।
उच्चादर्श से कर सकते,
दैवी शक्तियों का विकास।
महान् कार्य करने का हम,
करते रहें सदा प्रयास॥

परोपकार करें हर दम।
वसुधैव कुटुम्बकम्।
यशोमय कीर्ति जगमगा उठे,
यह पंथ हमारा प्यारा हो।
जिससे चमके जीवनज्योति,
वह लक्ष्य हमारा प्यारा हो॥

पीड़ा जन की हर लें हम।
वसुधैव कुटुम्बकम्।
हम परोपकार करते जाएं,
यह चरम लक्ष्य जीवन का हो।
ऋषि मुनियों के आदर्शों का,
सच्चे दिल से पालन हो॥

ज्ञान-'रश्मि' से मिटे तम।
वसुधैव कुटुम्बकम्।

अभिनन्दन तेरा नव वर्ष

ले०—श्री राधेश्याम जी आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

दनुज वृत्ति की हटे कालिमा,
हो मनुजत्व प्रसार सुपावन।
जन-जन में नवजीवन आए,
हो व्यवहार मधुर मनभावन।
सारी वसुधा पर छा जाए—
सौम्य सुधा सा अतुलित हर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष॥

वैदिक धर्म ध्वजा लहराए,
भूमण्डल पर अमर अजेय।
ज्योति जले वेदों की फिर से,
वसुन्धरा पर अपराजेय।
जन-जन को हो मंगलदायक—
मानवता का शुचि उत्कर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष॥

सुखी तथा समृद्धिशील हो,
प्रगति पथों पर बढ़े स्वदेश।
गूंज उठे भू पर, अम्बर में,
ऋषियों का पावन उपदेश।
विश्व गुरु के पद पर फिर से—
बने प्रतिष्ठित भारतवर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष॥

(पृष्ठ 5 का शेष)

"नियत-नियत समयों के विशेष विशेष बलिदान" शीर्षक में भी भेड़ बकरियों के बलिदानों का वर्णन है। गिनती 28, 29, पृ० 235-238

बलि के साथ यहां पर मदिरा का भी उल्लेख किया गया है—

"मदिरा का यह अर्घ यहोवा के लिए पवित्र स्थान में देना।"

गिनती 28 : 7 पृ० 236

बलिदान के लिए उपयुक्त स्थान भी वह माना गया है जिसे यहोवा परमेश्वर चुन लेता है—

"जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा, वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिए भेड़-बकरियों और गाय-बैल फसह करके बलि करना।"

व्यवस्था विवरण 16 : 2

सैकड़ों एवं हजारों की संख्या में पशुबलि अपने आप में एक आश्चर्य है। जो पशु दूध एवं कृषि का आधार रहे हों उनको इस प्रकार मार देना तो अपराधपूर्ण कृत्य ही माना जायेगा वैसे भी उस समय तो बैलों से ही खेती होती होगी फिर इतनी बड़ी संख्या में मार देना अवश्य ही चिन्ता का विषय है—

"उस भवन की प्रतिष्ठा में उन्होंने एक सौ बैल और दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और फिर सब इस्राएल के निमित्त पापबलि करके इस्राएल के गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह बकरे चढ़ाए।"

एज्रा 6 : 17

"तब राजा समस्त इस्राएल समेत यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढ़ाने लगा। और जो पशु सुलेमान ने मेलबलि में यहोवा को चढ़ाए, बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें थीं : इस रीति से राजा ने सब इस्राएलियों समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की।"

राजा प्रथम 8 : 62-63

इसी प्रकार समूएल की पहिली पुस्तक 1 : 3, 25; 11 : 7, 15; 14 : 34; समूएल की दूसरी पुस्तक 6 : 13,17; राजाओं का वृत्तान्त-पहिला भाग 1 : 9, 19; 8 : 5; 9 : 25; 12 : 32; 18 : 33; 19 : 21; एज्रा 3 : 2-6; 6 : 9-10; 7 : 17, 8 : 35; 10 : 19; नहेमायाह 10 : 33 में भी पशुबलि का उल्लेख मिलता है जिनसे पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि उस समय पशुबलि पर कितना अधिक बल दिया जाता था और बलि दी भी क्यों न जाती क्योंकि यहोवा परमेश्वर के प्रसन्न होने का सर्वश्रेष्ठ उपाय भी तो यही था।

नोट—प्रस्तुत लेख के समस्त उद्धरण 'भारत लंका बाइबल समिति, ए/1, महात्मा गांधी मार्ग, बंगलौर-1 के प्रकाशित बाइबल से उद्धृत हैं।

वेद प्रकाश शास्त्री

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में 24-12-89 को प्रातः 8 बजे से 2 बजे बाद दोपहर तक बड़े समारोह से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के विशाल हाल में मनाया गया। प्रातः 8 बजे 25 कुण्डों में यज्ञ आरम्भ हुआ। एक सौ यजमान उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य श्री पं० श्यामसुन्दर जी स्नातक थे। पं० बालकृष्ण जी शास्त्री आर्य समाज जवाहर नगर तथा पं० राजेश्वर जी शास्त्री आर्य समाज फील्डगंज वेद-मन्त्र उच्चारण करते रहे। यजमानों को यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० श्यामसुन्दर जी स्नातक ने आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात् आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, दयानन्द माडल स्कूल, झुग्गी-झोंपड़ियों स्कूल के छात्रों ने अपने संगीत द्वारा स्वामी जी को श्रद्धांजलि भेंट की। 11 बजे प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल मालिक हीरो साईकल ने ओ३म् का ध्वज लहराया। जनता ने उन्हें मालाओं द्वारा सम्मानित किया। उसके पश्चात् श्रद्धांजलि समारोह श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा की प्रधानता में आरम्भ हुआ। जिसमें आदरणीय सुमना जी यति, प्रिंसिपल एस० सी० नन्दा, श्रीमती कमला जी आर्या, मंगल सैन जी वधवा, सत्या नन्द जी मुन्जाल, ज्ञान प्रकाश जी वर्मा, तुलसीदास जी जतवानी, स्नेह जी सूद, सरदारी लाल जी सहगल ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि भेंट की। डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के डॉ० राम अवतार ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाएं सुनाते हुए जनता से अपील की कि हमें उनके जीवन में प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि गुरुकुल को बनाने तथा उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए पंजाब ने बड़ा कार्य किया था, परन्तु अब वह कुछ पीछे हट रहा है। इसलिए पंजाब तथा विशेष रूप से लुधियाना की यह जिम्मेवारी बनती है कि वह पूर्व की तरह यत्नशील होकर गुरुकुल को उन्नति के पथ पर ले आवें। यदि यह अपने बालक नहीं भेज सकते तो निर्धन बालकों के लिये छात्रवृत्ति दान करें ताकि वहां बालक विद्या प्राप्त करके स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के अधूरे कार्य को पूरा करें। इस पर बहन कमला जी आर्या, यशवती जी भल्ला तथा श्री महेन्द्र प्रताप जी आर्य ने एक-एक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। अन्त में श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना की सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं का धन्यवाद किया जिन्होंने इसे सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। यजमानों का भी धन्यवाद किया गया जिन्होंने ठीक समय पर सपरिवार पधार कर कार्यक्रम चलाने मे सहयोग दिया। आर्य समाज रायकोट, साहनेवाल के अधिकारी विशेष रूप से इसमें शामिल हुए। शान्ति पाठ के पश्चात् सैकड़ो स्त्री-पुरुषो ने ऋषि लंगर में भोजन किया। इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए धन एकत्र करने में डी० राजेन्द्र कुमार जी, श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा, आयोध्या प्रशाद मल्होत्रा तथा अरुणकुमार सूद ने पूरा योगदान दिया। श्री ओ० पी० टण्डन, प्रिंसिपल आर्य स्कूल, ओम प्रकाश पासी, डॉ० मूलचन्द भारद्वाज, धानन राम गम्भीर, श्रवण कुमार बत्रा, विजय कुमार सरीन ने पूरा समय देकर इस सम्मेलन को सफल बनाया। श्री सतीश वर्मा, राजेन्द्र बत्रा, सुरेश गम्भीर, वेद प्रकाश महाजन तथा नवयुवकों ने पूरा सहयोग दिया।

—आशानन्द आर्य, महामन्त्री

जालन्धर में वेद प्रचार

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में 14 से 17 दिसम्बर तक स्व० गंगाराम जी की स्मृति में वेद प्रचार का आयोजन किया गया। प्रतिदिन आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री पं० धर्मदेव जी आर्य तथा प्रसिद्ध गायक श्री जगत वर्मा जी के उपदेश तथा भजन होते रहे। 17-12-89 को यज्ञ के यजमान दम्पति श्री सुरेश कुमार जी सुपुत्र श्री सरदारी लाल आर्य रत्न जी और श्री धर्मप्रकाश जी सुपुत्र श्री चमनलाल जी तथा मुख्तारे लाल बने। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० धर्म देव जी तथा अन्य स्त्री-पुरुषों ने उन्हें आशीर्वाद दिया। प्रातः 11 बजे से 2 बजे तक श्री गंगाराम श्रद्धाञ्जलि समारोह हुआ, जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज गढ़ा के प्रधान श्री कर्मचन्द जी माली ने की। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री बूटाराम जी प्रधान आर्य समाज गान्धी नगर, पं० अनन्त राम जी, श्री सन्त राम जी, श्री जमनादास जी, श्री मनोहर लाल डोगरा तथा गंगाराम प्राईमरी स्कूल के बच्चों ने स्वर्गीय गंगा राम जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट की तथा बहनों ने भी अपने भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा।

—सुरेश कुमार आर्य रत्न

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार, लुधियाना की गतिविधियां

1—स्त्री आर्य समाज की ओर से 23 दिसम्बर शनिवार के दिन श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडी धूम धाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता महात्मा सुमन' यति महाराज ने की। सभा के तीन विद्वान उस समय उपस्थित थे, श्री रामनाथ जी सिद्धान्त विशारद, श्री रामनाथ जी यात्री और श्री रघुवीर जी शास्त्री। यात्री जी ने अपने सुन्दर भजनों द्वारा तथा दूसरे विद्वानों ने भाषण द्वारा पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। महात्मा सुमना यति ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धा से पूरित थे अत: हमे प्रत्येक कार्य श्रद्धा से युक्त होकर करना चाहिए तथा राष्ट्र निर्माण मे पूरा-पूरा योग दें।

2—14 से 21 जनवरी 1990 तक स्त्री आर्य समाज की ओर से स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में विश्व शान्ति यज्ञ तथा गायत्री महायज्ञ होना निश्चित हुआ है। सभी बहनें बढचढ कर इस कार्य क्रम से भाग लें। —जनकरानी

मोगा में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस

23-12-89 शनिवार को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्री वैद्य तीर्थ दास जी प्रधान आर्य समाज मोगा की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक मनाया गया।

हवन यज्ञ के पश्चात् आर्य संस्थाओं के दसवी श्रेणी के विद्यार्थियों के वर्ग (क) मे और आठवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के वर्ग (ख) मे भाषण प्रतियोगिता हुई। आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की सयोगिता प्रथम और सीमा द्वितीय आई। श्री ओमेश सूद मथुरादास ऐंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल का विद्यार्थी तृतीय स्थान पर वर्ग (क) मे रहा। वर्ग (ख) मे आर्य गर्ल्ज स्कूल की कनिका प्रथम और नीलम द्वितीय रही। आर्य माडल स्कूल की कमल प्रीत तृतीय स्थान पर रही। 7-1 90 को स्कूल खुलने पर पारितोषिक दिये जायेंगे।

श्री महिन्द्र प्रताप जी सूद, श्री ओम प्रकाश जी वर्मा तथा मास्टर हरबंस लाल जी भूषण ने संक्षिप्त सी स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—प्रीतमदेव संयोजक

बवासीर की मुफ्त औषधि

हर प्रकार की बवासीर के रोगी हमारे यहां से मुफ्त औषधि मंगवा कर सेवन कर लाभ उठाएं। सेवन विधि बिल्कुल आसान है। केवल पांच खुराकों (एक कोर्स) से बवासीर जड़-मूल से नष्ट हो जाती है। यह औषधि श्री पवन कुमार आर्य—चिरंजी लाल आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट (कोप्रेटिव सोसायटी के पीछे) बरनाला, जिला संगरूर बिना मूल्य के वितरित करता है। डाक से मंगवाने वालों को डाक व्यय स्वयं वहन करना होगा। यह औषधि श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर से भी बिना मूल्य के प्राप्त की जा सकती है।

सुखदेव शास्त्री स० अधिष्ठाता
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल
करतारपुर—144801
(जालन्धर)

आर्य समाज गोनियाना मण्डी के समाचार

1. 25-11-89 को ट्रक यूनियन गोनियाना मण्डी ने हर वर्ष की भांति अपने कार्यालय मे श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी द्वारा हवन यज्ञ कराया। इस अवसर पर ट्रक यूनियन की ओर से 101/- (एक सौ एक) रुपया आर्य समाज मण्डी गोनियाना को एवं 101/- (एक सौ एक) रुपया वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिया।

2. 9-12-89 दिन शनिवार को श्री मनोहर लाल जी गोनियाना वालों ने अपने नए मकान में श्री ओम प्रकाश वानप्रस्थी बठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ कराया। इस शुभ अवसर पर एक सौ उन्नीस रुपये (119/-) आर्य समाज गोनियाना मण्डी एवं इकावन रुपये (51/-) आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जालन्धर प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

[illegible] : 73020

वर्ष 21 अंक 41, 1 माघ सम्वत् 2046 तदनुसार 11/14 जनवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

स्वामी स्वतन्त्रानन्द विशेषांक—

एक आदर्श संन्यासी

ले० श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष यति मण्डल व दयानन्द मठ दीना नगर

सन् 1925 मे जन्म शताब्दी मथुरा में हुई। उसी समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लाहौर में उपदेशक विद्यालय बनाने का निश्चय किया। इसका आचार्य पद ग्रहण करने के लिए सभा ने पूज्य स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज से प्रार्थना की। सभा अधिकारियों ने स्वामी जी महाराज से कहा, भोजन का प्रबन्ध हम करेंगे, इसे आप स्वीकार करने की कृपा करें। स्वामी जी महाराज ने कहा, मेरे भोजन का कोई प्रबन्ध न करें और स्वामी जी महाराज विद्यालय मे रहते हुए 12 वर्ष तक एक बार ही दोपहर भिक्षा का भोजन करते थे। प्रातः साय काल दूध आदि का कोई प्रबन्ध नहीं था कई वर्ष तक सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता भी रहे। शनिवार, रविवार को आर्य समाज के उत्सव भुगताने के लिए आर्य समाजों का प्रोग्राम बना लेते थे। एक बार स्वामी जी स्टेशन पर गये और पैसे देकर बाबू से कही का टिकट मागा, बाबू ने कहा स्वामी जी महाराज आपके पैसे कुछ कम हैं। स्वामी जी ने कहा, जहा का टिकट इतने पैसो से मिलता है वहा का दे दो। हम वहीं जाकर धर्म का प्रचार करेंगे। यह कितना ऊचा आदर्श है धर्म प्रचार का।

स्वामी जी महाराज दूसरो के किसी कार्य के लिए कहने की बजाए पहले स्वय उसको करते थे। उपदेशक विद्यालय के आरम्भ की एक घटना है—मलेरिया के दिन थे बहुत से विद्यार्थियो को ज्वर आ रहा था, जो स्वस्थ विद्यार्थी थे वे उन रोगी विद्यार्थियो की सेवा करते थे। समय पर दूध, खिचडी आदि देते और पात्र रोगियो के पास ही पडे रहते। इस प्रकार रोगियो के पास बहुत से जूठे बर्तन जमा हो गये। स्वामी जी महाराज रोगियो को देखने आय तो उनके समीप जूठी थालिया, गिलास-कोलिया पडी थी। स्वामी जी महाराज ने किसी विद्यार्थी को भी बतन उठाकर माजने को नही कहा। अपितु सारे बर्तन एकत्रित करके थोडी दूर पर स्नानागार और कुआ था वहा ले जाकर साफ करने लग गये। वहा पर बहुत से लोग स्नानादि करने आते थे। कई लोग और विद्यार्थी स्वामी जी को बर्तन साफ करते हुए देख रहे थे। कईयो ने आगे बढकर स्वामी जी महाराज से बर्तन लेने का यत्न किया कि हम साफ करेगे, किन्तु स्वामी जी ने उनकी एक न सुनी और बर्तन स्वय साफ करते रहे इस प्रकार सब बर्तन धो माज कर भोजनशाला मे रख दिये। उस दिन के पश्चात कोई पात्र कही पर जूठा न देखा गया। जो विद्यार्थी जिस रोगी को दूध दवा आदि देता तुरन्त उन बर्तनो को साफ करके उचित स्थान मे रख देता। यह था स्वामी जी महाराज का उपदेश देने का एक बहुत उच्चतम प्रकार, जो कभी निरर्थक नहीं जाता था।

जिन दिनो स्वामी जी महाराज वेद प्रचार अधिष्ठाता भी नही थे उन दिनो भी शनिवार इतवार को समाजो के उत्सव भुगताने प्राय. जाते थे। और कई बार स्वामी वेदानन्द जी भी साथ होते थे। सभा के भजनोपदेशक श्री भक्तराम जी ने अम्बाले के आसपास की एक आर्य समाज की घटना सुनाई। आर्य समाज के उत्सव पर कई उपदेशक और भजनीक पहुचे हुए थे। प्रात काल स्वामी जी महाराज ने उपदेश दिया, दोपहर तक अन्य व्याख्यान और भजन भी हुए। भोजन के समय एक आर्य सज्जन ने कहा, आप सब का भोजन मेरे घर पर होगा कृपा करके मेरे साथ चलिए। सभी उपदेशक तथा स्वामी जी महाराज उस व्यक्ति के साथ भोजन के लिए उसके घर पर पहुच गए। उस व्यक्ति ने भोजन के लिए सबको आसन पर बैठा दिया और सबके सामने थालियो मे थोडी थोडी सब्जी और एक एक फुलका रखकर कहा महाराज सब भोजन करो और फिर वह अन्दर घर मे चला गया हमने समझा और रोटी लाने गया है हमने एक एक फुलका खा लिया और शेष की इन्तजार करते रहे, किन्तु वह व्यक्ति लौट कर आया ही नही, हम सब थाडी देर बैठे रहे, हम उसके इस व्यवहार पर दुख और क्रोध था किन्तु स्वामी जी महाराज ने कहा कोई विशेष कारण हो गया होगा जिसस वह लौट कर नही आया कोई बात नही चलो सायकाल खा लेना इस प्रकार स्वामी जी महाराज ने हम सब को शान्त किया। उपदेशको ने स्वामी जी महाराज से निवेदन किया कि महाराज हम तो सायकाल खा लेगे किन्तु आप तो कल दोपहर तक भूखे रहेगे, क्योकि आप तो सायकाल भोजन नही करते। स्वामी जी ने कहा ऐसा होता है, कोई बात नही। कितनी सहनशीलता है सन्यासी की। एक 2 शब्द उपदेश दे रहा है।

स्वामी जी महाराज सन्यासी होते हुए बहुत बडे प्रबन्धक भी थे। सच्चाई के लिए किसी का लिहाज नही करते थे उनमे कठोरता भी थी और कोमलता भी बहुत थी। यदि कोई हृदय से अपने अपराध को मानकर क्षमा माग लेता तो उसके पश्चात् उसे कुछ नही कहते थे। उपदेशक विद्यालय मे एक विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी के सिर मे कुल्हाडी मारी प्राण घातक जख्म था उसके सिर मे। तुरन्त डाक्टरो को बुलाया गया और बहुत यत्न करने पर वह विद्यार्थी बच सका। मारने वाले को बुलाया और उससे पूछा तूने क्यो मारा वह विद्यार्थी रोने लगा और कहने लगा महाराज उसने मुझ मे ऐसी बात कह दी जिससे मुझे क्रोध आ गया और मैं अपने को सम्भाल नही सका। मुझे क्षमा करे मैं भविष्य मे ऐसी गलती नही करूगा। इससे आगे स्वामी जी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

एक आदर्श सन्यासी—स्वामी स्वतन्त्रानन्द

ले० श्री स्व० पंडित शिवकुमार जी शास्त्री दर्शन केसरीकाव्य व्याकरणतीर्थ

एक आर्य परिवार मे जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होने तथा आर्य सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त करने के कारण भी बाल्यकाल मे ही समस्त आर्य जगत के गणमान्य नेताओ के नाम और काम का पर्याप्त परिज्ञान था। पंजाब मे आने से पूर्व ही माननीय श्री म० कृष्ण जी, श्री आचार्य राम देव जी, श्री पंडित बुद्धदेव जी विद्यालकार, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री स्वामी वेदानन्द जी, श्री पंडित चमूपति जी आदि महानुभावो के विषय मे बहुत कुछ सुन रखा था। इन महानुभावो मे से सन् 1935 मे आर्य समाज काशी के महोत्सव पर केवल श्री पंडित बुद्धदेव जी विद्यालकार के ही दर्शन किये थे।

मैं अगस्त सन् 37 मे पहली बार गुरुकुल धाम जेहलम मे अध्यापनार्थ पहुचा। इसी वर्ष जब समाचार पत्रो मे लाहौर के उत्सव की चर्चा चली तो इस उत्सव मे आकर आर्य समाज के नेताओ के दर्शन करने एव उन के भाषण सुनने की उत्सुकता ने मुझे भी प्रेरित किया और मैं उत्सव के प्रथम दिवस ही जेहलम से लाहौर पहुच गया। उसी उत्सव मे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रथम बार दर्शन हुए। श्री स्वामी जी के विशाल डीलडौल का मेरे ऊपर प्रभाव हुआ। मैंने कार्यक्रम मे उन के भाषण का समय देखा और मैं उस पडाल मे उपस्थित रहा। पूज्य स्वामी जी महाराज नियत समय पर खडे हुए और मन्त्रोच्चारण प्रारम्भ किया। मन्त्र को सुनते ही मेरी श्रद्धा को आघात लगा। कारण यह था कि उच्चारण बहुत शिथिल था और मेरे ऊपर यह प्रभाव हुआ कि श्री स्वामी जी सस्कृत से अनभिज्ञ हैं और जब सस्कृत ही नही जानते तो वेद और शास्त्रो का क्या ज्ञान होगा। इसी अज्ञानता ने उन के भाषण को भी तन्मयता से न सुनने दिया और लगभग 15 मिनट बैठ कर मैं पडाल से चला गया। माननीय स्वामी जी के प्रति मन मे यह धारणा बन गई कि स्वामी जी को वैसे ही बडा रखा है, इन्हे आता जाता कुछ नहीं।

गुरुकुल जेहलम के आचार्य जी वर्तमान सभा प्रधान आस पास के कस्बो मे प्रचार की दृष्टि से एक मैजिक लालटेन ले आए थे। उस के लिए स्लाईडो की आवश्यकता थी। श्री मायुर शर्मा जी, जो उस समय मान्य स्वामी जी के मठ मे दीनानगर रहते थे कि "आर्य" सूचना छपी कि मेरे पास बहुत सी स्लाईडें हैं। जिन को चाहिए वे आधे मूल्य पर ले सकते हैं। इस सूचना के आधार पर श्री शर्मा जी से स्लाईडें लेने मैं दीनानगर गया। उस समय मठ मे दो तीन कमरे ही बने थे। पूज्य स्वामी जी कुटी के आगे की भूमि भी समतल न थी। मै जब वहा पहुचा तो स्वामी जी महाराज भी वही विद्यमान थे। साय समय था। पूज्य स्वामी जी खुरपा हाथ मे लिए काम कर रहे थे। मेरे एक चिर परिचित मित्र जो उस समय मठ मे रहते थे, हाथ मे फावडा लेकर स्वामी जी की कुटिया के आगे के आगन को समतल कर रहे थे। मैं भी इस प्रकार के श्रम का बहुत अभ्यस्त था। हाथ मे फावडा ले कर मैं भी अपने मित्र के साथ जुट गया। श्री स्वामी जी मेरे स्वास्थ्य और श्रम शीलता को देख कर बहुत प्रसन्न हुए और पर्याप्त देर तक मेरे तथा गुरुकुल के विषय मे बातचीत करते रहे।

मैं दूसरे दिन भी मठ मे रहा। मठ के नियमानुसार एक ब्रह्मचारी मध्याह्न के भोजन के समय भिक्षा लेने नगर मे गया और तब तक सभा के भजनोपदेशक स्व० मास्टर केसर चन्द्र जी और एक सज्जन और पहुच गए। भिक्षा आने पर श्री स्वामी जी ने सब को भोजन के लिए बुलाया। लकडी के एक पट्टे पर सब भोजन रख लिया और रोटिया बाटी तो सब के हिस्से मे दो दो आई। पूज्य स्वामी जी ने स्वय एक ही रोटी ली और एक शुद्ध पृथक रख दी। मैं जब अपनी दो रोटिया खा चुका तो स्वामी जी कहने लगे यह रोटी भी तुम्हारे लिये रखी है। ले लो। मैं भूखा तो रह गया था। पर मैंने सोचा कि स्वामी जी के इतने बडे शरीर मे एक रोटी से क्या बनेगा। यह रोटी तो इन्ही को खानी चाहिए। इसलिए मैंने कहा, मुझे नही लेनी, आप ही ले लीजिये। किन्तु मेरी "न" को सुन कर म० केसर चन्द्र जी ने कहा स्वामी जी मुझे दीजिये। स्वामी जी ने हसते हुए वह रोटी उन्हे दे दी। जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि श्री स्वामी जी एक समय ही भोजन करते हैं और अब कल 12 बजे ही भोजन करेंगे तो मेरे ऊपर इस बात का बहुत प्रभाव हुआ।

लगभग दो बजे जब मैं चलने को उद्यत हुआ तो पूज्य स्वामी जी के पास आया तो आश्चर्य से देखा कि श्री स्वामी जी एक विद्यार्थी को "साख्यतत्व कौमुदी" पढा रहे हैं। मैं चकित हो कर कि वे इस ग्रन्थ को क्या पढा रहे होंगे, सस्कृत तो जानते नही, थोडी देर सुनने बैठ गया। यह ग्रन्थ मेरा पढा हुआ था। श्री स्वामी जी के अध्यापन को सुन कर मैं अत्यन्त विस्मित हुआ और मैंने देखा कि श्री स्वामी जी का उस ग्रन्थ पर पूरा अधिकार है। थोडी देर मे पाठ समाप्त हुआ तो दूसरा विद्यार्थी एक आयुर्वेद का ग्रन्थ पढने आ गया। श्री स्वामी जी सस्कृत के उस ग्रन्थ को भी बडी निपुणता के साथ पढाने लग गए। मेरी आखें खुल गई और मैंने अपने पहले दृष्टिकोण को बदल कर यह निश्चय किया कि उच्चारण की शिथिलता श्री स्वामी जी की बडी आयु मे पढने के कारण है। कुछ उर्दू प्रारम्भ मे पढने और पजाब के वातावरण के कारण भी उच्चारण का परिमार्जन नही हुआ है।

मैं। जनवरी सन् 45 को सभा की सेवा मे आ गया। इस के पश्चात श्री स्वामी जी प्राय: उत्सवो पर मिल जाते। उन का यह स्वभाव था कि ज्यो ही कुछ समय मिलता वे अपने पास बुलवा लेते और सामान्य कुशल प्रश्न के पश्चात कोई न कोई सैद्धान्तिक चर्चा छेड देते। पूज्य स्वामी जी का ऋषिकृत ग्रन्थो सत्यार्थ प्रकाशादि पर पूर्ण अधिकार था। पृष्ठ और पक्तिया तक याद थी। वे प्राय. कहा करते थे, "आर्य समाज मे विद्वान भी ऋषि के ग्रन्थो को उस श्रद्धा से नही पढते कि हम अपने आचार्य के ग्रथ को पढ रहे हैं।"

श्री स्वामी जी की शास्त्रो मे अनोखी पैठ थी। वे नव्यन्याय के अवच्छेद काव्यच्छिन्न के जाल से भी घबराते न थे। उन्हे वेदो का भी पर्याप्त अभ्यास था। वे प्रात: किसी न किसी सहिता का पाठ ही किया करते थे। इस दिशा मे श्री स्वामी जी का जानने के लिए उन की पुस्तक "वेद की इयत्ता" जो उन्होंने अफ्रीका भ्रमण करते समय लिखी थी प्रसिद्ध है। वे एक क्षण भी कभी व्यर्थ न खोते थे। जीवन के अन्तिम दिनो मे जब नई दिल्ली मे 13 बारह खम्बा रोड मे रुग्ण पडे हुए थे तब भी कोई न कोई ग्रन्थ पढते ही रहते थे। रोग सम्बन्धी प्रश्न का सक्षिप्त उत्तर दे कर कोई न कोई शास्त्रीय चर्चा छेड देते थे। आर्य समाज के प्रचारको का उन्हे बहुत ध्यान रहता था। जिन दिनो वे दिल्ली में रुग्ण थे, मारीशस के एक प्रचारक भारत भ्रमण के लिए आए। श्री स्वामी जी ने मुझे सदेश भिजवाया कि मैं उन की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखू।

पूज्य स्वामी जी का जीवन एक अदभुत और आदर्श सन्यासी का जीवन था। सब कुछ करते हुए भी आसक्ति किसी वस्तु मे नाम को भी न थी। इतना भारीभरकम शरीर होते हुए भी आलस्य किंचित मात्र भी न था। एक बार श्री मा० पोखर मल जी के गाव के उत्सव से रात्रि को 12 बजे पूज्य स्वामी जी, प्रो० राम सिंह जी, श्री मा० राम नारायण जी और मैं एक बैल गाडी मे चले। मार्ग मे रेत होने के कारण अधिकाश मार्ग मे हमे पैदल ही चलना पडा। श्री स्वामी जी बडी प्रसन्नता से चलते चलते घटो सिख इतिहास सुनाते रहे। आगे चल कर तीन अथवा चार बजे हम एक धर्मशाला पर पहुचे और विश्राम की सोचने लगे तो हम लोग तो अभी करवट ही बदल रहे थे और स्वामी जी पडते ही खर्राटे लेने लगे। हम उन्हें कभी शानदार कोठियो मे सुन्दर पलग पर देखते थे तो दूसरे दिन ही आर्य समाज की छोटी सी कोठरी मे भूमि पर ही कम्बली बिछाये हुए और काली लोई ओढे हुए प्रसन्न वदन देखते थे। 12 बजे के भोजन के नियम के कारण बाहर बहुधा उन्हे भूखा रहना पडता था। पर उस समय भी वही प्रसन्न मुद्रा।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर सरकारी अवकाश की मांग

महान् स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक, भारतीय शिक्षा प्रणाली के सस्थापक, वैदिक सस्कृति के प्रणेता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए स्थानीय आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे एक समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह का आरम्भ यज्ञ से हुआ जिसमे वेद मन्त्रो का उच्चारण करके देश की एकता, प्रभुता एव अखण्डता के लिए आहुतिया दी गई। इस यज्ञ को आर्य समाज के पुरोहित प० सुन्दर लाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया तथा जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग किया।

मुख्य समारोह की अध्यक्षता आर्य युवक सभा के प्रधान श्री रोशन लाल शर्मा ने की। आर्य युवा नेता श्री शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि हमे महान् स्वतन्त्रता सेनानी श्रद्धानन्द तथा देश पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों पर गर्व है, जिनकी कुर्बानी के कारण आज हम स्वतन्त्र हैं।

एक सर्व-सम्मति मे पारित प्रस्ताव मे यह माग की गई कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर 23 दिसम्बर को प्रतिवर्ष सार्वजनिक अवकाश किया जाए। इस प्रस्ताव मे कहा गया कि आर्य समाज का यह मत है कि भारत जैसे विकासशील देश में छुट्टिया केवल राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त और 26 जनवरी को ही होनी चाहिए। यदि सरकार ऐसा करने मे असमर्थ है तो दोहरा मापदण्ड एव भेद-भाव समाप्त करके राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस पर भी अवकाश घोषित किया जाए।

आर्य युवक सभा पजाब के अध्यक्ष श्री रोशन लाल शर्मा ने घोषणा की कि यदि सरकार इस माग को स्वीकार नही करेगी तो इस सम्बन्ध मे कार्यवाही करने के लिए सभा की कार्य-कारिणी में कार्यक्रम निश्चित किया जाएगा।

—[illegible]

सम्पादकीय :—

मोही के निर्मोही को मेरा शत शत प्रणाम

11 जनवरी को श्रद्धेय श्री स्वामी स्वतन्त्रानंद जी महाराज का जन्म दिन है। यद्यपि उनका जन्म लुधियाना के समीप मोही नाम के एक गांव में हुआ था परन्तु वह अपना सारा जीवन भर निर्मोही रहे। किसी के साथ उनका ऐसा मोह न था जिसके कारण वह अपने जीवन के उद्देश्य को छोड़ सकें, मोही का भी एक इतिहास है। स्वामीजी महाराज के पिता जी उनके जन्म से बहुत पहले राजस्थान में मोही नाम के एक गांव में रहते थे वहीं रहते हुए उन्होंने बहुत कुछ राजस्थान की वीर गाथाएं भी सुनी थी उन पर उनका भी प्रभाव था जब वहां सेवा काल समाप्त हो गया तो उसके पश्चात् वह लुधियाना के इस गांव में आ गए और इसका नाम भी मोही रख दिया गया। यहीं स्वामी जी महाराज का जन्म हुआ। यहीं उनका पालन पोषण हुआ और फिर एक दिन वह इसी गांव को छोड़ कर चले गए और फिर वापिस नहीं आए। उन्होंने अपना घर-बार क्यों छोडा इसकी एक लम्बी कहानी है परन्तु एक सम्पन्न और समृद्ध परिवार को छोड़ जाना किसी के लिए भी आसान नहीं होता। स्वामी जी के पिता अपने बच्चों के लिए जो कुछ भी कर सकते थे, करते थे। उन्हें ऊंची से ऊंची शिक्षा भी देना चाहते थे और वह शिक्षा प्राप्त करते करते ही स्वामी जी महाराज कुछ साधु सन्तों के सम्पर्क में आ गए और इसके साथ उनके जीवन में कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि वह अपना घर बार छोड़ कर चले गए। उस समय तक उनका विवाह भी हो चुका था यद्यपि उनकी कोई सन्तान न थी परन्तु युवा पत्नी का आकर्षण भी उन्हें न रोक सका। उस समय तक स्वामी जी महाराज को यह भी पता न था कि उनसे बहुत पहले एक और युवक ने भी अपना घर इसी तरह छोड़ा था और जब आगे चल कर उन्हें उसी युवक के विषय में पता चला तो स्वामी जी महाराज ने अपने आपको महर्षि दयानन्द को समर्पित कर दिया और फिर अपने जीवन का एक-एक क्षण महर्षि की विचारधारा के प्रचार व प्रसार में लगा दिया।

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ था छोटी आयु में वह अपने घर में गुरुवाणी का पाठ भी सुना करते थे, उसने भी उन्हें प्रभावित किया था और जब उन्होंने महर्षि दयानन्द के विचारों को सुना तो वह इस परिणाम पर पहुंचे कि दोनों में अधिक अन्तर नहीं है। किसी ने उन्हें सुझाव दिया कि क्यों नहीं वह आर्य समाज के द्वारा अपने देश और समाज की सेवा करते। उस समय तक स्वामीजी महाराज के विचारों में क्रान्ति आ चुकी थी पहले वह ग्रंथ साहेब का पाठ किया करते थे फिर उन्होंने साथ-साथ गीता का पाठ भी प्रारम्भ कर दिया और कुछ समय के पश्चात् उन्होंने वेदों का अध्ययन भी प्रारम्भ कर दिया इस प्रकार उनका व्यक्तित्व दो नदियों का संगम बन गया गुरुवाणी और वैदिक विचार धारा। इन दोनों ने मिल कर हमें स्वतन्त्रानन्द दे दिया।

आर्य समाज के पिछले 100 वर्ष के इतिहास में कई उन महान् व्यक्तियों का जिकर आता है जिन्होंने आर्य समाज की सेवा के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया था और उनमें कई बड़े-बड़े सन्यासी भी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज, श्री नारायण स्वामी जी महाराज और कुछ अन्य भी थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की गणना उन्हीं सन्यासियों में होती है जिन्होंने अपनी अद्वितीय योग्यता, तप और त्याग से मानवता की सेवा की थी। यदि हम उनके विषय में कुछ लिखने लगे तो एक बहुत बड़ा ग्रंथ बन जाएगा। मेरे विचार में आर्य समाज में किसी दूसरे सन्यासी, नेता या उपदेशक ने देश देशान्तर में आर्य समाज का इतना प्रचार न किया होगा जितना कि स्वामी जी महाराज ने किया था वह बर्मा गए, मोरिशस गए, दक्षिण अफ्रीका गए, सींगापुर गए और कई दूसरे देशो में भी उन्होंने जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। अपने देश में तो उन्होंने कोई प्रान्त न छोड़ा था, जहा वह न पहुंचे हों। उन्हें जहां कोई बुलाता था, वह वहां पहुंच जाते थे और उनके जीवन के अन्तिम दिनों में स्थिति यह थी कि जितने निमन्त्रण उन्हें प्राप्त होते थे उन सब को पूरा करना उनके लिए सम्भव न होता था। कई बार सोचता हू कि कहीं उनकी अन्तिम बीमारी का कारण यही तो न था। उन्हें अपने आप पर इतना संयम था कि एक निश्चित कार्यक्रम में निश्चित समय के अनुसार उनकी प्रति दिन की जीवनचर्या चलती थी। वह दिन के बारह बजे के बाद भोजन नहीं किया करते थे, जिस दिन मिल जाए तो भोजन कर लिया करते थे, न मिले, न किया करते थे। कई बार भिक्षा मांग कर भी भोजन किया करते थे ऐसे सन्यासी बहुत कम मिलेंगे, जिन्होंने ऐसा कठोर जीवन व्यतीत किया हो जैसा कि श्री स्वामी जी महाराज ने किया था।

स्वामी जी ने अपनी गतिविधियां केवल धर्म प्रचार तक ही सीमित न रखी थीं। वह एक महान् देश भक्त थे इसलिए उन्होंने आजादी की लडाई में भी सक्रिय भाग लिया था। इसी संघर्ष में आकर उस समय की सरकार ने उन्हे पकड़ कर लाहौर के शाही किले में बन्द कर दिया था क्योंकि स्वामी जी महाराज का अपना जीवन संघर्षमय था। इसलिए जब एक बार लोहारु रियासत में धर्म प्रचार को रोकने का प्रयास किया गया तो स्वामी जी महाराज ने वहां जाकर भी सत्याग्रह किया था। वहां पुलिस की लाठियां खाकर वह पूरी तरह जख्मी भी हो गए परन्तु उस वक्त तक उन्होंने रियासत को न छोडा जब तक जिस उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह वहा गए थे, वह पूरा न हो गया।

स्वामी जी महाराज की दूसरी अग्नि परीक्षा 1939 में हैदराबाद में हुई जब वहां निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह शुरु हुआ। उसके सचालक महात्मा नारायण स्वामी जी थे परन्तु वह यह दायित्व उठाने को तब तक तैयार न हुए जब तक उन्होने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को अपना सहायक बनाने के लिए तैयार न कर लिया। यह सत्याग्रह लगभग छः माह चलता रहा और इतना समय स्वामी जी महाराज, महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ शोलापुर और हैदराबाद में ही रहे।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, स्वामी जी पर दो विचारधाराओं का प्रभाव था गुरुमत और वैदिक धर्म, वह दोनों में अधिक अन्तर न समझते थे। सिख इतिहास और गुरुवाणी का जितना अध्ययन उन्होंने किया था, बहुत कम व्यक्तियों ने किया होगा। वह चाहते थे कि सत्यार्थ प्रकाश के विषय में सिख जनता को जो भ्रान्तियां हैं, वह दूर हो जाएं। इसलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का पजाबी अनुवाद भी किया था। स्वामी जी महाराज का सबसे बड़ा स्मारक दीनानगर में दयानन्द मठ है जहां स्वामी जी के परम शिष्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी अपने महान् आचार्य के पद चिन्हों पर चलते हुए उनकी परम्पराओं को जीवित रख रहे हैं।

स्वामी जी के जन्म दिन पर मैं उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजली भेंट करते हुए परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हू कि मोही के इस निर्मोही ने अपने तप और त्याग से जो ज्योति जलाई थी वह सदा जलती रहे और हम सबका उसी प्रकार मार्ग दर्शन करती रहे, जिस प्रकार स्वामी जी महाराज अपने जीवन काल में करते थे।

—वीरेन्द्र

आवश्यक सूचना

हमें खेद है कि इस अंक में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन और विचारधारा से सम्बन्धित सारी सामग्री नहीं दे सके। इस लिए आर्य मर्यादा का अगला अंक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति अंक होगा।

—वीरेन्द्र

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

ले० श्री विद्याधर सिद्धान्त भूषण, साहित्यरत्न, उत्तर प्रदेश, भूतपूर्व मन्त्री हिमाचल सरकार. चम्बा, हिमाचल प्रदेश

पूर्ण प्रशासक एवं सच्ची निष्ठा की इम दिव्यमूर्ति ने आर्य जगत ही नहीं बल्कि देश विदेश का वह दिशा निर्देशन किया जो आज भी अपने आप मे एक मिसाल है। अग्रेजी प्रशासन काल में एक बार ऐसा अनुभव किया गया कि सत्यार्थ प्रकाश को जब्त किया जा रहा है, सब में चिन्ता का गहरा शोक व्याप्त हो गया कि अब क्या होगा ?

पू० स्वामी बहुत ही बुद्धिमान थे और प्रशासक एवं गम्भीर भी। वह इस स्वर को सुनकर बिल्कुल नही घबराए, और कुछ ही समय मे तमाम का तमाम सत्यार्थ प्रकाश कठस्थ कर डाला, तब अपने सर्व प्रिय साथी महाशय कृष्णजी को बताया कि अब अगर सत्यार्थ प्रकाश को जब्त भी कर लें तो कोई चिन्ता की बात नहीं है।

पू० स्वामी जी की स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी जिसकी कोई तुलना नहीं, एक बार जो स्थान या व्यक्ति उनसे मिल गया, उसकी शक्ल और नाम वह बिल्कुल भी नहीं भूलते थे।

वेद वेदांगो के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थ, गृह सूत्र एव इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित थे। अपने व्याख्यानों मे जिस भी ग्रन्थ का वह हवाला देते थे, अमुक ग्रन्थ, अध्याय, सूक्त, मंत्र तथा पंक्ति का भी जिक्र करते थे। और रोचकता इतनी रहती थी कि घण्टे भर का भाषण लगता था कि अभी कुछ ही समय हुआ हो।

स्वामी जी दिन में 12 बजे एक ही बार भोजन करते थे, मैंने कई बार देखा है कि अगर स्वामी जो को अपने निर्धारित समय पर भोजन नहीं मिला, तो वह अगले दिन अपने निर्धारित समय पर ही भोजन करते थे, उसके आगे पीछे बिल्कुल नही। ऐसा ही उनका नियम प्रातः जागने का भी था। धर्मशाला जिला कागडा में ब्र० सतपाल जी ने चारो वेदों का यज्ञ करवाया। सभा की ओर से प० शिवकुमार जी शास्त्री, पं० गुरुदत्त स्नातक तथा मुझे उपरोक्त यज्ञ के लिए भेजा, यज्ञ एक मास चला, यज्ञ की पूर्णाहुति के एक दिन पूर्व पूज्य स्वामी जी भी पधारे। श्रद्धावश मैंने आग्रह किया कि आपकी सेवा के लिए मैं यही आपके चरणों मे रहू। मुझे उनके प्रातः कालीन कड़े नियम का पूर्ण अभ्यास था। मैंने देखा कि ठीक चार बजे स्वामी जी अपने बिस्तर पर उठ कर बैठ गए।

सब से पूर्व इस दीर्घकाय दिव्यमूर्ति के दर्शन मैंने 1933 मे लाहौर में किए थे। दिन प्रतिदिन विलक्षण चरित्र के इस महान व्यक्तित्व का मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव बढ़ता गया।

एक बार लाहौर में पं० चमूपति जी एम० ए० का अपरेशन होना था, मेरा विनम्र स्वभाव देखकर वात्सल्य भाव से मुझे बुलाकर कहा "विद्या" तुमने प० जी की खेड़ा हस्पताल में सेवा करनी है। स्वामी जी प्रायः हर रोज पं० जी को देखने हस्पताल आते थे, और मझे प्रतिदिन उनका आशीर्वाद मिलता था।

स्वामी जी का जीवन कठोर तपस्या एव नियमितता का एक मुजस्समा था उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनाएं मुझे याद हैं।

देश के स्वातन्त्र्य संग्राम में उन्होंने अनेकों काम बड़ी विलक्षणता एवं अत्यन्त कुशलता के साथ सम्पन्न किए। उसी कड़ी की जिन्दा मिसाल हैदराबाद का सत्याग्रह भी है। निज़ाम हैदराबाद की ओर से यहां के हिन्दू समुदायो पर नित नए अत्याचारो की सख्या दिन प्रति दिन बढ़ने लगी, आर्य जगत के मूर्धन्य नेताओं की मीटिंगो ने भी जोर पकड़ा और निज़ाम के तानाशाही रवय्ये पर चिन्ता व्यक्त की गई। निश्चय हुआ कि अपने अधिकारों के लिए सत्याग्रह किया जाए और इस सत्याग्रह की बागडोर स्वामी जी के सशक्त हाथो में सौंपी जाए। स्वामी जी ने चन्द ही दिनों में सब व्यवस्था कर डाली। निज़ाम की सीमांओं से लगे शोलापुर में अपना हैडक्वार्टर नियुक्त कर अपनी रणनीति का दुदुंभि बिगुल बजा दिया। और आर्यजगत से हर सम्बन्ध में पुर जोर अपील भी कर दी।

मैं उस समय दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के अन्तिम वर्ष में था (यह विद्यालय भी पू० स्वामी जी की ही देन था) हम आठ सहपाठी थे, हमें आदेश हुआ कि परीक्षाओं के तुरन्त बाद सत्याग्रह सम्बन्धी प्रचार के लिए देश के कोने-कोने मे फैल जाओ। चुनांचे 12 फरवरी 1939 को पंजाब के प्रथम जत्थे के रूप में हमे लाहौर के हजारों नर नारियों को हैदराबाद सत्याग्रह के लिए विदा किया, न जाने इस कदर अदम्य उत्साह हम में था कि जिन्दगी की और कोई तमन्ना इस के सामने हेय थी देहली, आगरा, झांसी, भोपाल, नागपुर तथा बम्बई आदि महानगरों में प्रचार करते हुए हम लगभग 12, 13 दिनों में पू० स्वामी जी के पास शोलापुर में पहुंचे, और एक दो दिनों के बाद हमें फिर माई सारे प्रैजीडेन्सी में तुगभद्रा के इलाके में भेज दिया गया।

इस ओर हम प्रचार में अधिक सफल नहीं हुए क्यों कि हम एक दूसरे की भाषा बोली नहीं समझते थे, चुनांचे हम आठों स्नातकों ने 12 मार्च 1939 के रायचूर जिलामें सत्याग्रह कर दिया, हमें वहां पर मारा पीटा गया चक्की पिसवाई गई उस समय वहां की अदालत ने हमें अढ़ाई दो साल की बामुशक्कत सजा सुनाई।

निज़ाम के अत्याचारों से सहमी जनता ने भीतर और बाहिर से इतना साथ दिया कि थोड़े ही अर्से में लगभग 40,000 सत्याग्रहियों ने निज़ाम की तमाम जेलें भर दी। स्व० बापू जी के हस्तक्षेप करने पर सरदार पटेल जी ने पू० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के मशविरे से निज़ाम को विवश कर दिया कि वह स्वामी जैसे आर्य नेताओं से क्षमा याचना करे। निज़ाम आर्यों के संगठन एवं अदम्य उत्साह को देखकर पहले ही सहम चुका था, आर्य जगत के लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आगे निज़ाम हैदराबाद को घुटनें टेकने पर विवश होना पड़ा और 17 अगस्त 1939 को आर्य सत्याग्रहियों ने इस महान विजय पताका को अपने अपने हाथों में लहराते हुए और इकबाल साहब का यह पद गाते हुए अपने अपने घरों को प्रस्थान किया।

इकबाल तेरे इश्क ने सब बल दिए निकाल,
मुद्दत से आरजू थी कि सीधा करे कोई।

अलौकिक संन्यासी की लौकिकता

लेखक—श्री स्वर्गीयपंडित रणवीर सिंह जी शास्त्री

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का नाम लेते ही उन की वह विशालकाय मूर्ति एकदम आंखों के आगे आ खड़ी होती है जिस से उन के बल, तेज, निर्भीकता तथा सात्विकता की छाया किसी दर्शक पर तुरन्त पड़ती थी। उन का शास्त्र ज्ञान गम्भीर तथा स्मरण शक्ति अद्भुत थी। इन सब विशेषताओं के साथ ही उन की लौकिकता सभी के लिए विशेष आकर्षण का कारण थी। एक उच्चकोटि के तपस्वी तथा वीतराग संन्यासी में धर्म एवं लौकिकता का सामंजस्य सम्भवत: अन्यत्र कदाचित ही देखने को मिले।

उन का स्वभाव था कि वे जब भी किसी स्थान पर जाते तो प्राय: सभी परिचितों से मिलने एवं उन का कुशल क्षेम जानने का यत्न करते थे। लोक व्यवहार में उन का अनुभव पराकाष्ठा को पहुंचा हुआ था। उन के भक्तजन प्राय: अपनी समस्याओं में भी उन का परामर्श प्राप्त करने को उत्सुक रहते थे और पारिवारिक समस्या चाहे छोटी हो या बडी, उस के विषय में उन का परामर्श पूर्णतया लक्ष्यभेदी होता था। इसी लिए सब लोग अपनी समस्याओं तथा कठिनाईयों के लिए उन के साक्षात्कार की प्रतीक्षा करते रहते थे। उन से मिल कर यही अनुभव होता था, मानों अपने परिवार के किसी बुजुर्ग से मिलने का आनन्द प्राप्त हो गया हो। कई बार यह ख्याल होता था कि जो व्यक्ति स्वयं कभी गृहस्थ रहा, परिवार से जिस का कभी कोई सम्पर्क या सम्बन्ध नहीं रहा, उस को घरेलू मामलों पर ऐसा प्रभुत्व कैसे प्राप्त हुआ ? संस्थाओं के संचालन में तो वह बहुत ही निपुण थे और एक सिद्धहस्त प्रबन्धक तथा व्यवस्थापक के रूप में लब्ध प्रतिष्ठित थे। हैदराबाद सत्याग्रह का संचालन उस की नीतिकता, प्रबन्ध पटुता तथा अथक कर्मठता का ज्वलन्त प्रमाण है।

धर्म के सम्बन्ध में भी उन की व्यावहारिकता विलक्षण थी। एक बार मैंने स्वयं भटिण्डा की ओर से कुछ लोगों को हुक्का पीने की सलाह देते हुए सुना और कारण यह बताया कि हुक्के के प्रचार से सिख मत का प्रचार-अनुत्साहित होता है। कई बार युवकों को मुस्लिम लड़कियों से विवाह करने की प्रेरणा देते हुए कहा करते थे, शुद्धि करने की क्या आवश्यकता है, जब घर में आ गई तो स्वयं ही शुद्ध हो गई। एक बार रोहतक के किसी गांव में गए हुए थे, वहां पता चला कि बंगाल में कोई साधु रहता है। उस से मिलने गए तो वह अनपढ़ साधु स्वयं ऊंचे तख्त पर बैठ गया और स्वामी जी महाराज को जमीन पर बैठाया। यह बात साथी भक्तजनों को बहुत बुरी लगी परन्तु स्वामी जी ने उन्हें संकेत से मौन कर दिया। बाहर आकर चर्चा होने पर स्वामी जी ने कहा कि हम साधुओं की बातों में आप लोगों को दखल नहीं देना चाहिए।

कुछ लोगों को स्वामी जी का स्वभाव बड़ा ही रूखा एवं परूष सा प्रतीत होता था, परन्तु उन के निकट सम्पर्क रखने वाले जानते हैं कि उन के स्वभाव में कितनी मृदुता, सहानुभूति तथा आत्मीयता का अजस्र स्रोत विद्यमान था। उन के भक्त परिवारों के स्त्री बच्चे उन से सदा अपने परिवार के ही बुजुर्ग जैसा नाता समझते थे। इसी लिए उन के निधन से जहां आर्य जगत को भारी क्षति हुई, वहां सैंकड़ों परिवारों ने यह अनुभव किया, मानों उन का अपना ही कोई बुजुर्ग उन से छिन गया। स्वामी जी के लोकोत्तर धनिमत्व की यह लौकिकता सदा उन के भक्त जनों के स्मृति पटल पर अंकित रहेगी।

पूज्य चरण श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की याद

ले०—श्री प० कपिलदेव जो आर्य ससद सदस्य (रोहतक)

कभी-कभी जीवन मे ऐसी घडी आती है कि—चाहे कितनी ही कडवी बात हो वह कह देनी चाहिये । आर्य समाज के धनी धोरियो मे अपने महान पुरुषो की स्मृति रक्षा के लिए उनकी याद मे कुछ न कुछ किया ही है केवल मात्र श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही ऐसे हैं, जिनकी याद मे आर्य समाज ने कुछ नही किया । न उनका आज तक ठीक ढग का कोई जीवन चरित्र छपा है, न ही उनका कोई अन्य ढग का स्मारक बन पाया है ।

उनकी स्मृति रक्षा के लिये जो प्रयत्न होने चाहिये थे—वे न के बराबर हैं । उनके दो बडे स्मारक हैं । एक है दीनानगर का दयानन्द मठ । जो पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की देख रेख मे बडे अच्छे तरीके से चल रहा है । दूसरा है—दयानन्द मठ रोहतक । कहने को वहा बहुत कुछ है । पर है कुछ नही । पहले श्री स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी और फिर श्री स्वामी सोमानन्द जी तथा ब्रह्मचारी कृष्ण से जो सेवा बन पडनी थी करते रहे । वानप्रस्थी रामपत जी साल भर ऋषिलगर चलने लायक अन्न एकत्र करके लाते रहे, जिससे ऋषि लगर वर्ष पर्यन्त चलता रहता था । वहा बहुत कुछ किया जा सकता है ।

पहले पहल पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के दर्शन गुरुकुल भैसवाल के उत्सव पर किये थे । उस समय मैं 15 वर्ष का था तथा गुरुकुल मे सातवी श्रेणी मे पढता था । श्री स्वामी जी की सेवा का कार्य मेरे जिम्मे था । अनेक बार देखने का अवसर मिला । जितना ही उनके निकट रहने का अवसर मिलता था—उतनी ही श्रद्धा बढती थी । उनके निकट रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति—यही समझता था कि वे उससे ही सबसे अधिक प्रेम करते हैं । उनका व्यवहार ही इतना ममतामय था ।

हैदराबाद सत्याग्रह के समय 1939 मे दो महीने का कारावास की सजा काट कर मैं निजामाबाद मे मनमाड पहुचा । उन्होंने आज्ञा दी कि—जब तक सत्याग्रह समाप्त नहीं होता यही मनमाड कैम्प मे रहकर सत्याग्रहियो के लिये जाने वाले और जेल से वापिस आने वाले सत्याग्रहियो की सेवा करनी है । इस प्रकार चार-पाच महीने निरन्तर उनकी आज्ञाओं का पालन करने का अवसर मिला । उन दिनो श्री स्वामी जी नगे पैर रहते थे । हजामत नहीं बनवाते थे । जमीन पर सोते थे । हाथ पर रख कर खाना खाते थे । रात मे 11 बजे सोकर प्रात, 4 बजे उठ जाते थे । उन दिनो श्री स्वामी जी घोर तप कर रहे थे ।

उन्ही दिनों प० बुद्धदेव जी विद्यालकार 400 (चार सौ) सत्याग्रहियो को लेकर मनमाड पहुचे थे और उन्हें औरङ्गाबाद सत्याग्रह करना था । श्री स्वामी जी महाराज ने उनके साथ आये सत्याग्रहियो की सेवा—सुश्रुषा मे कसर नही उठा रखी । देखने वाले श्री स्वामी जी की महत्ता देख कर श्रद्धावनत हो जाते थे ।

उन्ही दिनो महाशय कृष्ण और उनके जत्थे के 700 (सात सौ) सत्याग्रहियो पर मुकददमा चल रहा था । उनके जत्थे में रोहतक जिले के बुटाना गाव के सत्याग्रही श्री सुनहरासिह का बलिदान हो गया था । श्री स्वामी जी मनमाड से औरङ्गाबाद गये थे । मैं भी उनके साथ था । जब श्री स्वामी जी औरङ्गाबाद स्टेशन से उतर कर जेल की तरफ जा रहे थे तो हजारो मनुष्य सडक के दोनो ओर खड होकर उनके दर्शन कर रहे थे—और कह रहे थे "देखो सत्याग्रह जा रहा है' यही सत्याग्रह नवाब हैदराबाद की रियासत मे हजारो आदमियो को जेल जाने के लिये भेज रहा है । जब श्री स्वामी जी जेल पहुचे तो उनकी महाशय कृष्ण जी और जेल मे बन्द प्रमुख व्यक्तियो से घण्टों बात हुई । मैं जेल मे अनेको रोहतक के सज्जनो से मिला । श्री स्वामी जी ने महाशय कृष्ण और उनके जत्थे के सत्याग्रहियो का मुकददमा ऐसे ढग से लडा कि सत्याग्रह समाप्त होकर सारे जेल के बन्दी छूट कर घर पहुच गये । परन्तु निजाम सरकार उस जत्थे को कैद की सजा न सुना सकी ।

जेल से छूट कर आये हुए हिसार जिले के मिलकपुर गाव के श्री मातूराम का शरीरान्त मनमाड मे हो गया । श्री स्वामी जी महाराज ने श्री मातूराम के दाह सस्कार की समुचित व्यवस्था की तथ उनके पारिवारिक जनो को सदेश भेजा ।

अगस्त मास मे श्री स्वामी जी महाराज, महात्मा गाधी के बुलावे पर मनमाड चले गये । वहा से नवाब के साथ समझौता होने पर ही लौटे । जब सब सत्याग्रही जेलो से छूटकर मनमाड कैम्प से होकर घरो को लौट नही गये तब तक हमे कैम्प छोडने की आज्ञा नही मिली । सितम्बर मास मे हम हैदराबाद से रोहतक लौटे ।

स्वर्गवास से कुछ पहले मैंने श्री स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की कि मैं उनका जीवन चरित्र लिखना चाहता हू । श्री स्वामी जी ने कहा, "श्रावण मास मे दीनानगर दो महीने के लिये आ जाओ । जो पूछना चाहो, पूछ लेना, वही बैठ कर लिख लेना ।' परन्तु यह नही हो सका ।

मोही के निर्मोही

ले०—आचार्य श्री जगदीश, दयानन्द सस्कृत विद्यालय, दयानन्द मठ दीनानगर

पंजाब के लुधियाना जिले को यह गौरव प्राप्त है कि इस ने भारत देश की आजादी के लिए यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय जी को जन्म दिया है । शास्त्रार्थ समर के अजयी विजय योद्धा आर्य गौरव स्वामी दर्शनानन्द जी को जन्म देने का स्वाभिमान भी इसी जिले को प्राप्त है । लोह लेखक, स्वाधीनता सेनानी, ओजस्वी वक्ता स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का जन्म स्थान भी इसी जिले मे हैं । इसी जिले के मोही गाव मे एक श्री पतूही जी निवास करते थे । पतूही जी के घर मे जन्म लिया एक होनहार बाल श्री अर्जुन सिह ने, अर्जुन सिह के घर पैदा हुए श्री गगन सिह, गगन सिह से हुए श्री सगत सिह, सगत सिह से हुए श्री बहाला सिह जी, बहाला सिह से श्री ज्ञान सिह, ज्ञान सिह से हुए श्री भगवान सिह । इन्ही भगवान सिह के घर ही मोही के निर्मोही, सन्त सिपाही, लोह पुरुष, श्री केहर सिह ने जन्म लिया जोकि आगे चलकर स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज कहलाए । यह सन्त वि० सवत 1934 के पौष मास की पौणमासी को अपनी माता समाकौर की कोख से जन्मे । कारण वशात माता चल बसी नानी माननीया महाकौर ने लालन पालन किया ।

होनहार वीरवान के होत चिकने पात । पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के बारे क्या लिखू ? बडे ही दुर्भाग्य की बात है, मैंने उन्हे देखा नही परन्त कार्य से कारण का पता लग जाता है । पुत्र से पिता का पता लग जाता है, शिष्य से गुरु का पता लग जाता है । स्वा० जी महाराज के परम शिष्य श्री स्वा० सर्वानन्द जी महाराज के साथ रहते मेरे को 20 वर्ष हो गए हैं । महाराज जी का रहन सहन, खान पान, पुत्रैष्णा, लोकैष्णा, वितैष्णा इत्यादि विषयो से रहित है । शिष्य जिनके ऐसे हैं, उनके गुरु कैसे होगे । लीजिए सप्रमाण उनके व्यक्तित्व का अध्ययन कीजिए ।

1 मारीशस का राजनीतिक एव सामाजिक महत्त्व समझने वाले सब से पहले भारतीय नेता थे स्वामी जी महाराज ।

2 मारीशस का सप्रमाण इतिहास एव भूगोल लिखने वाले सर्वप्रथम भारती गवेषक स्वामी जी ही थे ।

3 भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे सत्याग्रहियो से युद्ध बन्दियो जैसा व्यवहार करो, यह माग अग्रेजी सरकार से करने वाले सर्वप्रथम राष्ट्रीय नेता स्वामी जी ही थे ।

4 आर्य नेताओ मे एव साधु समाज मे सब से ज्यादा कारागार स्वामी जी को ही मिला ।

5 स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज को सर्वाधिक साधु व उपदेशक दिए थे ।

6 मारीशस मे हिन्दी को शिक्षा सस्थाओ राज काज मे एव दैनिक जीवन मे स्थान दिलाने का आन्दोलन स्वामी जी ने ही किया था ।

कहा तक लिखें, वह एक सच्चे सन्त थे, कुशल सेनानी थे । सच्चे समाज सुधारक और अद्वितीय नेता थे । वह हर बात म लासानी थे । और उनकी हर बात बेजोड होती थी । वे मठ रूप एक कल्प वृक्ष लगा गए । मेरे जैसे पता नही कितनो ने इस वृक्ष के फल खाए और खा रहे हैं और आगे भी इस प्रकार खाते हुए अपने जीवनो को सफल बनाया, बना रहे हैं और बनायगे। उनका सारा जीवन वेद प्रचार, शुद्धी प्रचार, देशोद्धार और मानव जाति की सेवा म बीता । हैदराबाद सत्याग्रह का कुशलतापूवक सचालन और लोहारु म धर्म प्रचार के लिए हसन हसने शरीर पर लाठी प्रहार सहन किस का स्मरण नही । उन का सारा जीवन बलिदानी जीवन था । अन्त मे भी वह धर्म जाति देश के लिए अपना बलिदान दे गए । वह ज्योति स्तम्भ थे और आज भी उनका जीवन मानव मात्र का ज्योति प्रदान करने वाला,नया उत्साह देने वाला परमात्मा उन जैसा तेजस्वी प्रतापी, बहादर, निर्भीक, निर्मोही, सच्चा साधु, प्रकाड विद्वान, अडिग नेता पुन आर्य समाज को प्रदान करे हम निश्चय स कह सकते हैं कि इन जैसा विद्वान, बलवान, त्यागी, तपस्वी, कर्मठ, नियमो मे अटल और व्यवहारिक उपदेशक आय सन्यासियो मे ढूढ से भी नही मिल सकता । किसी ने ठीक ही कहा है—

नजर को रोशनी दे जा,
वह जलवे और होते हैं ।
जिन्हे आता है जल मरना,
पतगे और होते है ।।

गुरुवर स्वामी स्वतंत्रानन्द जी

ले०—श्री स्वामी सोमानन्द जी दयानन्द मठ—दीनानगर

(1) घटना भारत विभाजन से पूर्व की है। आर्य समाज स्यालकोट (पंजाब) की स्वर्णजयन्ती मनाई जा रही थी। वक्ताओं का नाम बोलने का विषय तथा समय श्यामपट पर लिखा हुआ था। पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज से पूर्व एक प्रसिद्ध भजनोपदेशक बोल रहा था। वह बोलते-बोलते पच्चीस मिनट अधिक ले गया। पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज ने पौन घंटा उपदेश करना था किन्तु समय शेष रह गया था बीस मिनट। अतः पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज ने बीस मिनट ही उपदेश देकर कहा कि जो समय मुझे बताया था तदनुसार भाषण समाप्त कर रहा हूं। यह सुनकर प्रधान तथा मंत्री ने कहा कि महाराज आप पच्चीस मिनट और बोलिये। परन्तु पूज्यवर श्री आचार्य जी यह कहकर बैठ गये कि नियम पालन करने के लिए बनाये जाते हैं तोडने को नहीं।

(2) दूसरी घटना है इन्दौर नगर की। पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा की प्रार्थना पर एक मास का समय प्रदान किया था। सेवक भी साथ था। इन्दौर पहुंचने पर एक प्रतिष्ठित आर्य पुरुष ने पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज से भोजन करने की प्रार्थना की, पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज ने स्वीकार कर ली। मैंने उस आर्य पुरुष को बता दिया कि भोजन 12 बजे करवा देना पश्चात् नहीं करते, यह अवश्य ध्यान रखना। वह विश्वास दिलाकर चला गया। परन्तु वह साढ़े बारह बजे कार लेकर आया, मैंने कहा अब तो नहीं करेंगे। इस पर वह स्वयं जाकर कहने लगा, महाराज थोड़ी सी देर हुई है। भोजन न करना तो अच्छा नहीं है। इस पर पूज्यवर श्री स्वामीजी महाराज ने हस कर कहा कि कोई भोजन को कहकर मुकर जाए तो क्या अच्छी बात है। यह सुनकर वह सज्जन भूल अनुभव करके मौन हो गया और अभिवादन करके चला गया। पश्चात् आयंजन समय का पालन दृढ़ता से करने लगे।

(3) तीसरी घटना भारत विभाजन के पश्चात् रोहतक नगर की है। उन दिनों नगर में एक योगी आये हुए थे। उनकी समाधि लगाने की चर्चा चल रही थी। योजनानुसार उसने नगर के दुर्गा मन्दिर के अन्दर एक स्थान में चारों ओर और ऊपर भी शीशे लगा मिट्टी से बन्द करके समाधि के लिये एक चौखटा बनवा कर उसमे समाधि लगाई। नगर के सहस्रों नर, नारी दर्शन करने जाने लगे। मेरा भी विचार जाने का था। उसी समय दयानन्द मठ में पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज पधारे। एक आर्य सज्जन ने कहा महाराज आप भी समाधि देखने चलिये। पूज्यवर श्री आचार्य जी ने कहा मेरा जाना ठीक नहीं, पाखंड को प्रोत्साहन मिलेगा। लोग प्रमाण देंगे कि आर्य समाज के संन्यासी भी दर्शन करने जाते हैं। इस प्रकार अन्ध परम्परा चलने लगती है। दूसरे दिन ही योगी की पोल खुल गई जब दम घुटने पर उसने संकेत करके चौखटे के एक कोने में सुराख करवाया। बात यह थी कि उस तथाकथित योगी ने एक सज्जन को प्रलोभन दिया था कि लाऊड स्पीकर से प्रचार करने, शामियाने लगाने आदि का व्यय करके मेरी समाधि का प्रबन्ध कर दो और जो चढ़ावे आदि से आय हो वह सब आपकी होगी परन्तु पाखंड की पोल खुलने से उस सज्जन को घाटे का सौदा रहा।

तीसरे दिन वही आर्य सज्जन मठ में आये और मुझे कहने लगे कि पूज्य स्वामी महाराज बड़े दूरदर्शी हैं। ऐसे अवसरों पर आर्यों का दर्शक बनकर जाना पाखंड को ही प्रोत्साहन देना है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के चरणों में

ले०—श्री [illegible] जी शास्त्री दयानन्द मठ कार्यालय, दीनानगर

स्वामी जी महाराज आर्य समाज के उन चोटी के संन्यासियों में थे जिन्होंने आर्य समाज की शक्ति और उसके प्रचार को सुदृढ़ करने में दिन-रात एक कर दिया। सच्चे अर्थों में वे परिव्राजक थे। उनके शिष्य बताते हैं कि स्वामी जी महाराज वहां सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाया करते थे। तो उनकी सिद्धान्तों को समझाने की शैली कुछ ऐसी थी कि वह तत्काल हृदय पटल पर अंकित हो जाती थी। गहरे से गहरे विषय को सरल बनाकर समझाने की विशेषता तो एक निराली ही थी। स्वामी जी महाराज नियम और समय के बहुत ही पक्के थे। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कभी-कभी मठ में विद्यार्थियों को कहते हैं कि बीमारी ज्यादा खाने से होती है, न खाने से नहीं। इसी नियम के स्वामी जी महाराज पक्के थे। एक बार स्वामी जी रेवाड़ी में ठहरे थे और स्कूल, कालेजादि में उनके कई भाषण हुए थे। एक दिन भाषणों में बहुत समय लग गया और 12 से ऊपर समय हो गया। भोजन के लिए प्रार्थना की तो उत्तर मिला हम तो दिन के बारह बजे से पहले-पहले भोजन करते हैं। विलम्ब हो जाने पर दूसरे दिन ही नियमानुसार भोजन करते हैं। कभी-कभी जीवन में ऐसे क्षण आते हैं कि—चाहे कितनी ही कड़वी बात क्यों न हो, कह दी जाती है।

आर्य समाज के धनी लोगों ने अपने महान् पुरुषों की स्मृति रक्षा के लिए उनकी याद में कुछ न कुछ किया ही है। केवल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही ऐसे हैं। जिनकी याद में आर्य समाज की सभाओं ने कुछ भी नहीं किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को छोड कर शायद किसी भी सभा के कार्यालय में स्वामीजी महाराज का चित्र भी शायद ही मिले, स्मारक बनाना तो दूर की बात रही। उनके दो बड़े स्मारक हैं—एक दयानन्द मठ दीनानगर, जो आज भी उनके परम शिष्य पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की छत्रछाया मे दिन दूना रात चौगुना उन्नति कर रहा है। दूसरा है, दयानन्द मठ रोहतक।

प्रत्येक सम्प्रदाय के बड़े लोग उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनके चरणों में बैठना अपनी शान समझते थे। सर छोटू राम तो उनके अनन्य श्रद्धालु थे। जब स्वामी जी शाही किला लाहौर में शाही कैदी बनकर यातनाओं का सामना कर रहे थे तो सर छोटूराम जी तथा अन्य बड़े लोगों ने इन्हें मुक्त कराने के लिए पूरा जोर लगाया और अन्त में सरकार को मजबूर कर दिया कि वह आर्यों में महान् ईश्वर भक्त नेता को मुक्त कर दे। तब श्री स्वामी जी दीनानगर नगरपालिका की सीमा के अन्दर सीमाबद्ध कर दिये। पुलिस विभाग ने उन पर विश्वास किया और कभी भी उन्हें पुलिस थाना में उपस्थिति के लिए नही बुलाया। वह निर्भीक संन्यासी और सच्चे ईश्वर भक्त थे। ईश्वर पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। तदनुसार उनकी दिनचर्या और सभी कार्य होते थे। आर्य जाति के वह सच्चे सेनानी और धर्म रक्षक थे। हैदराबाद सत्याग्रह का संचालन उनके नेतृत्व में होने के कारण ही आर्यों की विजय पताका लहराई।

महात्मा गांधी जी ने इन्हें गुप्त बन्धुओं के द्वारा सत्याग्रह बन्द करने का संदेश भेजा कि अब स्वयं सेवकों की न्यूनता से आर्य समाज को कठिनाई न हो। पूज्य स्वामी जी ने इसका उत्तर दिया था कि इतनी शक्ति लगाकर भी मनोरथ सिद्ध न कर पाये तो हम अन्य उपायों से स्वसिद्धि प्राप्त करेंगे किन्तु कार्य अधूरा न छोड़ेंगे। सत्य है—"कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयं।" आर्यों का ध्येय था जिसे कोई शक्ति पराजित न कर सकती थी। यही सच्चा आर्यत्व है जो हमें पूज्य स्वामीजी महाराज के सन्निध्य में बैठे हुए उनके शिष्य पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के सन्निध्य से प्राप्त हुआ है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महाराज ने कुछ भी नहीं कहा, कितनी क्षमा शीलता है सन्यासी की।

लाहौर छावनी आर्य समाज में उत्सव के समय मे सर्व धर्म सम्मेलन रखा हुआ था। सभी लोग पर्याय से अपने-अपने मजहब धर्म की विशेषताओं का प्रतिपादन कर रहे थे। मुस्लमान भी अपनी बारी में बोल चुके थे। किन्तु अन्त में उन्होंने फिर समय मांगा जबकि सम्मेलन का समय समाप्त हो चुका था। स्वामी जी महाराज के इन्कार करने पर मुस्लमान फसाद करने पर तैयार हो गये। स्वामी जी महाराज ने खड़े हो कर कहा समय नहीं मिलेगा। बहुत हल्लागुल्ला होने लगा, स्वामी जी महाराज ने बड़ी ऊंची आवाज से लोगों को सम्बोधन करके कहा सम्मेलन समाप्त हो गया सब लोग यहां से चले जाएं। स्वामी जी महाराज के स्वभाव मे भय के लिए, अनियम के लिए, असत्य के लिए कोई स्थान नहीं था। उनका जीवन एक खुली किताब थी उसे किसी ओर से भी देखें पूर्णता मिलेगी। जिस अर्थ और काम ने बड़े बडो का धैर्य हिला दिया है वे स्वामी जी महाराज के चाकर थे। हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता में स्वामी जी महाराज के धैर्य, उनके तप, उनकी सूझ-बूझ का भी एक भाग है।

स्वामी जी महाराज ने एक दिन बातचीत करते हुए सुनाया था कि सत्याग्रह के समय कार्य की इतनी भीड़ थी कि एक बार तीन रात तक सोने का समय नहीं मिला चौथी रात्रि में निद्रा ने दबा लिया और थोड़ी देर सोना पड़ा। स्वामी जी के स्वभाव में निंदा और स्तुति ये दोनों नहीं थी। अपने किये काम कभी जितलाते नहीं थे कि हमने ये काम किया है। बड़ी से बड़ी गर्मी में उन्होंने कभी हाथ में पंखा नहीं लिया। पसीने को परने से पूछ लिया करते थे। शीत काल में कभी भी अग्नि नहीं तापी और न कोई गर्म कपडा पहना। शिमला जाएं चाहे श्रीनगर जाएं रात्रि को अपने एक कम्बल में ही सोते थे। एक बार मठ में एक निर्मला साधु आया जो बहुत तपस्वी था सर्दी के दिनो में एक चद्दर में ही सोता था, दिन में उसी चद्दर को शरीर में लपेट लेता था। यह साधु प्रायः स्वामी जी महाराज के पास बैठा रहता था और रात्रि में स्वामी जी महाराज की कुटिया में चट्टाई पर चद्दर ओढ़ कर सो जाता। उसने मठ निवासियो से कहा मैं बहुत साधुओं, महन्तों, मण्डलेश्वरों के समीप रहा हूं वे लोग थोड़ी देर के बाद कह देते हैं कि जाओ अपना काम करो, यहां बैठे हो। किन्तु मैंने स्वामी जी महाराज जैसा कोई महात्मा नहीं देखा। इनके पास कोई बैठा रहे या चला जावे, ये कभी कुछ नहीं कहते उनके जीवन में कुछ ऐसी बातें होती हैं जो दूसरों से छुपा कर रखनी पड़ती है किन्तु स्वामी जी महाराज का तो एक ही जीवन है जिसमें छुपाने की कोई बात ही नहीं। स्वामी जी महाराज के इस प्रकार के जीवन को देखकर वह एक कट्टर आर्य समाजी बन गया और जहां कहीं जाता है आर्य समाज का यशोगान करता है, और आर्य समाज का वैदिक धर्म का प्रचार करता है। स्वामी जी महाराज के सम्पर्क में जो भी आया वह स्वामी जी महाराज का श्रद्धालु बन गया। और प्रत्येक अपने वार्तों ने, लोगों से यही कहा स्वामी जी मुझ से बहुत प्यार करते हैं। सबको स्वामी जी महाराज उचित ठीक परामर्श देते थे और मनुष्य मात्र के हित की कामना करते थे। इसाई और मुस्लमान भी उनके पास बैठते और अपने जीवन के बारे में परामर्श लेते। एक बार मुस्लमानों के एक नेता मुजफ्फरशाह ने कहा कि काश! ऐसा महात्मा इस्लाम में होता तो बहुत बड़ा ऊंचा स्थान पाता। स्वामी जी महाराज का जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए मार्ग दर्शन की एक खुली किताब है। प्रभु आर्य समाज को इस प्रकार के अनेक सन्त प्रदान करें, जिससे आर्यों तथा उनके द्वारा मनुष्य मात्र का कल्याण हो सके।

एकेश्वरवाद—

सुसंगत जीवन पथ—महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री भद्रसेन जी, वेद-दर्शनाचार्य, साधु-आश्रम, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

धर्म का संयम एक प्रमुख अंग है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है[1]—थोड़ा पढ़ा हुआ सदाचारी, बहुत अधिक पढ़े हुए कदाचारी से श्रेष्ठ है। इसी लिए ही भारतीय परम्परा में कदाचारी होने से रावण निन्दित है और कदाचारी के पूजा-पाठ, जप-तप निरर्थक कहे हैं[2]।

शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में आता है। जैसे कि कर्मकाण्ड(=पूजा-पाठ, जप-तप, मन्त्र-तन्त्र), विश्वास, सिद्धान्त, आचार, स्वभाव आदि। इन में से आचरण ही धर्म का प्रमुख अर्थ है, अन्य कर्मकाण्ड आदि अच्छे आचरण की प्रेरणा देने के लिए ही होते हैं। जैसे कि सड़क के बोर्ड किसी की चाल को सुरक्षित बनाने के लिए होते हैं। मनुस्मृति आदि शास्त्रों में 'आचारः परमो धर्मः' 1, 108=आचार को सब से श्रेष्ठ धर्म कहा है, वहां अनेकत्र धर्म शब्द का प्रयोग इस अर्थ किया गया है। जैसे कि—

महर्षि मनु ने सत्य, प्रिय वाणी को सब से पुराना धर्म कहा है3। इस से भी (अर्थात वाणी के सही प्रयोग से भी) यही सिद्ध होता है कि धर्म अच्छे आचरण का नाम है तथा इस प्रकार के धर्म पालन से ही सभी सुखी होते हैं। तभी तो कहा जाता है—'तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजे चहुं ओर'। अतः धर्म का आधार ही ऐसा रूप है, जिस के सम्बन्ध में सभी धर्म एकमत हैं। धर्म के धृति, क्षमा, दम आदि दस लक्षण4 हैं।

प्रत्येक सदा सत्य और प्रिय कल्याणकारक बोले (काणे को काणा और मूर्ख को मूर्ख आदि) अप्रिय सत्य भी न बोले और जिस मिथ्या भाषण से दूसरा प्रसन्न हो, उस को भी न बोले। वस्तुतः बोल-चाल के सम्बन्ध में यह एक परखा हुआ सनातन धर्म है।

आचरण से ही सम्बन्ध रखते हैं। इसी लिए इन को सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनिक आचार कहा जाता है[1]।

इसी दृष्टि से ही महर्षि दयानन्द की निम्न पंक्तियां विशेष पठनीय हैं—

'जो पक्षपात रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है, उसी का नाम धर्म और इस से विपरीत जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण, सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहण रूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं।' सत्यार्थ० 3, 52

'रक्षक—हम तुम से पूछते हैं धर्म और अधर्म व्यवहार ही से होते है या अन्यत्र? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्माधर्म होते है। जिस-जिस व्यवहार से दूसरों की हानि हो वह-वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो वह-वह धर्म कहाता है[2]।' गोकरुणानिधि: पृ० 11-12

1. सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः।
   नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी ॥2, 118॥
2. वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
   न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ॥2, 97॥
   आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।
   वेदादि धर्मग्रन्थ और उन से होने वाला कर्मकाण्ड भ्रष्ट को पवित्र नहीं करता।
3. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
   प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥4, 138॥
4. धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
   धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्, ॥962॥
   इन दसों की विस्तृत व्याख्या के लिए—'सरस-सुखी जीवन' देखिए।

1. आचारश्चैव शाश्वतः 1, 107
   चतुर्भिरपि चैवैतैर्नित्यम् मनु० 6, 91
   योगदर्शन 2, 30-32 में इन धर्म लक्षणों को ही यम-नियम के नाम से पुकारा है तथा इन को सार्वभौम महाव्रत कहा है।
2. तुलनीय संक्षेपात्कथ्यते धर्मो जनाः किं विस्तरेण वः।
   परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ 102 पंचतन्त्र—3, पृ० 44 मोतीलाल संस्करण 1969
   वैष्णव जन तो तेने कहिए
   जो पीर पराई जाने रे।
   पर दुख कातर कोय पर
   उपकार करे

आर०एस०एस० के साप्ताहिक पाञ्चजन्य में प्रकाशित दयानन्द विषयक एक भ्रमात्मक लेख

ले० श्री डा० भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

(1) स्वामी दयानन्द भरतगढ की इस सभा मे दिये गये अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् नाना साहब ने उनसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के यज्ञ की तारीख निश्चित करने का निवेदन किया और स्वामी जी ने यह कह दिया कि आजादी की यह लडाई 31 मई 1857 को आरम्भ हो जानी चाहिए। इस लेखक को यह पता नहीं कि 1857 के विद्रोह को आरम्भ करने की तिथि का निश्चय करने में ऋषि दयानन्द की कोई भूमिका ही नहीं थी। यह सारा कार्य तो विद्रोही नेताओं ने पारस्परिक विचार विमर्श के पश्चात् किया था।

(2) इस लेखक के अनुसार मानसरोवर के तट पर वट वृक्ष की छाया में स्वतन्त्रता संग्राम को आरम्भ करने का निर्णय स्वामी जी की अध्यक्षता मे लिया गया। लेखक का यह कथन मजाक की हद तक पहुच गया है। स्वामी जी का मानसरोवर जाना अज्ञात जीवनी के समर्थकों की तिकड़ी (प० दीनबन्धु, योगी सच्चिदानन्द और श्री आदित्य पाल सिंह) ने तो माना है किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन के अन्वेषक और लेखक पं० लेखराम, पं० देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, प० भगवद्दत्त, पं० युधिष्ठिर मीमासक आदि ने कहीं नही लिखा कि स्वामी जी कभी मानसरोवर भी गये थे। मानसरोवर के किनारे का वह कौन सा वट वृक्ष था जिसके नीचे बैठ कर दयानन्द ने क्रान्तिकारियों की यह सभा बुलाई अनर्गल लिखने की भी कोई सीमा होती है, किन्तु आलोच्य लेखक की कलम तो सर्वथा निरकुश ही हो गई।

(3) श्री त्रिपाठी का खड़ा किया एक तमाशा और देखें=स्वामी दयानन्द ने अपने कमण्डल में मानसरोवर का पावन जल मगाया, वेद मन्त्रों से उसका स्तवन किया और नाना साहब का इस जल से अभिषेक किया।" सघी लेखक के अतिरिक्त भला ऋषि चरित को विकृत करने की हिमाकत और कौन कर सकता है? तभी तो मानसरोवर के जल को पवित्र मानना, वेद मन्त्र पढ़ कर उसे पवित्र करना तथा नाना साहब पर उसका सिंचन करना जैसी मिथ्या बातें ऋषि दयानन्द पर थोपने मे इस लेखक को थोड़ी भी लज्जा नही आई। प्लास्टिक की कुप्पियों में गंगा जल के जलूस निकालने वाले सघी और विश्व हिन्दू परिषद के लोग यदि स्वामी दयानन्द को भी अपनी पौराणिक आस्थाओं में लपेट लें तो आश्चर्य ही क्या? सच तो यह है कि दयानन्द न तो कभी मानसरोवर गए, न उन्होंने किसी नदी, सरोवर या तालाब के जल को धार्मिक दृष्टि से पवित्र माना, न वेद मन्त्र पढ कर ऐसे किसी जल का स्तुति पाठ किया और न नाना साहब के माथे पर ही उसे छिड़का।

(4) लेखक कहता है कि यह सब कुछ करने के पश्चात् स्वामी जी ने नाना को विद्रोह का प्रधान सेनापति नियत किया और दक्षिण भारत की गति विधि का नायक रगोजी बापू तथा उत्तर का विद्रोही कार्यविधि का संचालक अजीमुल्ला को बनाया। इन सब मूर्खतापूर्ण बातो पर कुछ टिप्पणी करना भी समय और शक्ति का अपव्यय करना है। ईश्वर ऐसे नादान लोगों के हाथो से ऋषि जीवन को विकृत होने से बचाये तथा आर्य समाजियों को साहस दें कि वे ऋषि जीवन की रक्षा करने मे सक्षम हो।

'धर्म तो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों अर्थात् सब मनुष्य मात्र का एक ही है।'

सत्यार्थ० 5, पृ० 116

'(प्रश्न) आर्यावर्त्त देशवासियों का आर्यावर्त्त देश से भिन्न-भिन्न देशों में जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नहीं? (उत्तर) यह बात मिथ्या है, क्यों कि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषणादि आचरण करना है, वह जहां कहीं करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट नहीं होगा और जो आर्यावर्त्त में रह कर भी दुष्टाचार करेगा, वही अधर्म और आचार भ्रष्ट कहावेगा।'

सत्यार्थ० 10, 225

'जो मनुष्य देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर मे जाने-आने में शंका नहीं करते, वे देश-देशान्तर के अनेक विध मनुष्यों के समागम रीति-भान्ति देखने अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण कर बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर हो के बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।' 10, 226

(क्रमशः)

पंजीकरण : 73020 रजि० न० [illegible]

वर्ष 21 अंक 42, 8 माघ सम्वत् 2046 तदनुसार 18/21 जनवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

स्वामी स्वतन्त्रानन्द विशेषांक—
स्वामी जी का एक ऐतिहासिक लेख
श्रद्धामय जीवन के चमत्कार

संग्रहकर्ता—श्री प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन को यजमान माना गया है। यह आलंकारिक भाषा है [illegible] में जब तक यजमान पत्नी न हो तब तक यजमान को यज्ञ करने का अनधिकार है। [illegible]

जब मन यजमान है तो यजमान की पत्नी भी वैसी होगी। इस प्रश्न के उत्तर में ब्राह्मणकार श्रद्धा को पत्नी मानते हैं। जिस प्रकार बाह्य यज्ञ यजमान तथा यजमान पत्नी से होता है। इसी प्रकार मनुष्य जो भी कर्म करता है वह कायक, वाचक, मानसिक किसी प्रकार के हों जिस कर्म मे श्रद्धा होगी वही ठीक होगा और जिस में श्रद्धा न हो वह ठीक न होगा। पाठकों ने देखा व सुना होगा कितने ही श्रद्धालु [illegible] जी की विकट यात्रा वृद्ध अवस्था मे करते हैं उस का मुख्य कारण उन की श्रद्धा है। लोग काशी मे जा कर करवत लेते थे उन का कारण श्रद्धा ही था। जिस कर्म मे और उस कर्म के करने मे उसे जो दुख होता है वह सुख रूप प्रतीत होता होता है। साधारण कष्ट तो एक ओर रहे वह जान देने मे भी प्रसन्नता अनुभव करता है। इस विषय में पंडित लेख राम जी, हकीकत राय, उनताला के दुर्ग पर शक्तावत और चूडावत, जापान, रूस युद्ध में रुधिर से इतिहास लिखने वाले योद्धा, देहली पर जब भरतपुरियों ने आक्रमण किया तब पारबरिया जाट, कन्हैया लाल इत्यादि ज्वलन्त उदाहरण हैं।

इसी विषय में पाठकों की भेंट आर्य समाज की दो घटनाएं रखना चाहता हूं जिस से मैं अपने भावों को ठीक ठीक बता सकूंगा कि श्रद्धामय व्यक्ति किसी प्रकार अपना काम करता है।

1924 मे मैं मोरिशस द्वीप में गया। मेरे जाने से पूर्व स्वर्गीय डाक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी वहां काम करते थे। मुझे वहां बुलाने वाले भी वही थे। वहां की जनता उन को डाक्टर बारह बजे नाम से बुलाती थी। मेरे जाने से पहले की एक घटना है। मोरिशस मे एक स्थान का नाम "वकुपा" है। वह समाज अच्छे समाजों मे से एक था। उसी समाज मे एक सभासद पर दोषारोपण हुआ कि वह व्यभिचारी है। डाक्टर जी ने एक कमेटी निर्णयार्थ बना दी उस कमेटी ने व्यवस्था दी कि घटना सत्य है और वह व्यक्ति दोषी है। इस पर समाज का साधारण अधिवेशन बुलाया गया ताकि विचार किया जावे कि उस दोषी को क्या दण्ड दिया जाए। उस समाज ने यह निश्चय किया कि आर्य समाज का प्रत्येक सभासद (स्त्रीया भी सभासद थी) उस दोषी व्यक्ति के सिर मे एक जूता मारे। मैंने सुना कि उस को यही दण्ड दिया गया और उस ने स्वीकार किया। यह तो मैंने सुना था किन्तु जब मैं वहां था उस समय एक सभासद पर फिर दोष लगा। वह भी सिद्ध ही गया। उस सभासद को पृथक किया गया। एक मास के पश्चात वह मेरे पास आया और कहने लगा, मुझे सभासद बना लें और आर्य समाज का जो दण्ड है मैं लेने को तैयार हूं, उसे भी वही दण्ड दिया गया और सभासद बना लिया गया।

एक और समाज है उसका नाम "लाबुरदोने" है। यह भी बडी समाजो मे है। उस समाज के एक सभासद ने जूआ (द्युत) खेला। दूसरे सभासद ने देख कर समाज में सूचना दी। उस निर्णय मे सभासदों ने मुझे भी बुलाया था। वाद विवाद के पश्चात् निश्चय हुआ ताश के पत्तों की माला बना कर वह गले मे डाले और प्रत्येक सभासद के गृह से चावल मांग कर लावे। उसने इसे स्वीकार किया। जब भिक्षा मांगने गया तो महाशय ठाकुर के गृह पर एक फ्रेंच जो शूगर मिल में अफसर था ने देखा और ठाकुर से पूछा कि यह क्या है। उन्होंने जूआ खेलने की बात बता दी। उसे विश्वास न हुआ। अत वह दूसरे दिन मेरे पास आया और वही बात मुझसे पूछी। मैंने उसे जब सारी बात बताई तो उसने प्रश्न किया कि आप उस कार्यवाही मे उपस्थित थे। मैंने उत्तर हां मे दिया। उसने मुझे कहा मुझे आप पर विश्वास है इसलिए मान लेता हूं परन्तु मेरी समझ मे नहीं आता कि यह दण्ड इसने प्रसन्नता से कैसे मान लिया। मैंने उस समय भी उसे समझाया कि यह तो श्रद्धा की बात है और साथ ही उसे "वकुपा" वाली बात बताई। तब उसने कहा था यदि आर्य समाज आचार विषयो मे यह कार्य कर सकता है तो हमे इसके सामने झुकना होगा। इन दोनो घटनाओ से मैं यह समझता हूं कि इन सज्जनों को धर्म पर श्रद्धा थी। जिस समय श्रद्धा न हो उस समय यह भाव नही होता। मुसलमानो के लिए जूआ और शराब वर्जित है। क्या यह सत्य नहीं कि जूआ और मद्यपान इनमे है? अभी अलजमीयत ने लिखा था कि सर आगा खां की पार्टियो मे शराब दी गई और मुसलमानो ने भी पी। यदि उन्हें धर्म पर श्रद्धा होती तो यह न होता। इसी प्रकार अन्य स्थानो पर भी विचार किया जा सकता है।

मन में उत्साह उसी समय होता है जब मन मे श्रद्धा हो। इसलिए आवश्यकता श्रद्धा की है। वह भी अंधश्रद्धा न हो यह ध्यान रखने की बात है अन्यथा हानिकारक होगी।

अब आर्य समाजी कहलाने वाले लोग आत्म निरीक्षण करके स्वयं निर्णय दें कि उनमे अन्य लोगो से क्या कोई चारित्रिक विशेषता है?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के इस अत्यन्त प्रेरणादायक लेख से अनुप्राणित होकर आर्यों को अपने आर्य नाम को सार्थक करना चाहिए। अपने अतीत के गौरव की रक्षा करने के लिए वेद मर्यादा का जीवन मे पालन करना होगा।

तप, त्याग, विद्या, बल और सहिष्णुता का रूप—स्वामी स्वतन्त्रानन्द

ले०—श्री स्वामी ईशानन्द जी महाराज

रुग्णावस्था के समय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार नई देहली की कोठी मे ठहरे थे। वहा श्री स्वामी ईशानन्द जी उनकी सेवा मे निरन्तर रहे। उस समय स्वामी जी महाराज से प्रार्थना करने पर कुछ घटनायें बताईं, उनको स्वामी ईशानन्द जी ने लिख लिया पाठको की जानकारी के लिए इसे उपयोगी समझते हुए नीचे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज तपस्या मे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती से द्वितीय स्थान पर आते हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन को उन्होने अपने जीवन उत्थान मे प्रमुखता दी थी। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द गंगोत्तरी के उद्गम से कलकत्ता तक पैदल विचरे, यथोचित भिक्षा से जीवन निर्वाह किया। सात वर्ष तक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी गंगा तट पर विचरे। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास मे जिन भी स्थलो का उल्लेख मिलता है, वे सारे ही स्थान स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने देखने की उत्सुकता में 11 वर्ष तक भ्रमण किया इसमें उन्हें जो कठिनाई उठानी पडी तथा तपस्या करनी पडी वह उनके जीवन मे उनकी उत्कर्षता का परिचायक है। ऋषि दयानन्द के समान ही बरफ मे रहे, तथा एक लंगोटी मे, पुस्तकें साथ नहीं रखते थे।

शारीरिक शक्ति का परिचय उनका लाहौर मे देखने को मिला। रंगीला रसूल के प्रकाशक श्री राजपाल को जब एक मुसलमान ने छुरा मारा, तब वहा गली मे स्वामी सत्यानन्द जी और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दोनो भी उपस्थित थे किन्तु इस अप्रत्याशित घटना के होने की किसी को भी सम्भावना न थी। रक्त रंजित छुरे को लेकर जब वह भाग रहा था स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही थे, जो अपनी वीरता को प्रकट करने हेतु उस घातक पर लपके और कलाई इस जोर से पकडी कि छुरा वही उससे छूट कर धरती पर आ गिरा। उन्होंने घातक का हाथ छोडा ही नही। जहा यह उनको अन्याय को न सहने की ओर इंगित करता है, वहा उनकी निडरता का एक ज्वलन्त प्रमाण भी है।

आध्यात्मिक साधना भी स्वामी जी महाराज की अतुलनीय थी। वैराग्य मे साधना जोर पकडती ही हैं। इस साधना से उन्हें आन्तरिक ज्ञान हो जाता था। एक बार वे रुग्ण हुए। डाक्टरो ने स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से कश्मीर जाने का परामर्श दिया। मैं उनके साथ जाने वाला था किन्तु स्वामी जी ने वहा जाने का विचार छोड दिया और अपनी आन्तरिक अभिज्ञ से निर्णय लेकर जीवन की इच्छा छोड दी। एव अपनी दैनन्दिनी मे अपने भावी मृत्यु का उल्लेख कर लिया।

श्री महाशय कृष्ण जी ने उन्हें इस केन्सर से छुटकारा पाने हेतु बम्बई जाने का परामर्श दिया, स्वामी जी महाराज को बचने की आशा तो न थी किन्तु श्री महाशय जी को यह कहकर अपने शिष्टाचार का परिचय दिया कि महाशय जी! जब मैंने 1910 से आपकी बात का उल्लघन नहीं किया, तब अब अन्तिम काल मे आपका वचन कैसे टालू, वे बम्बई चले गए।

सूक्ष्म शरीर स्वामी जी महाराज का अति बलवान् था। उसी के बल पर वे अपने कार्यक्षेत्र मे आगे बढते थे। आपके पिता सरदार भगवान सिंह जी सूबेदार मेजर पद से जब मुक्त हुए, तो बडौदा मे उन्हे चीफ इन कमाण्डर बनाया गया। नासिक मे कुम्भ था, स्वामी जी का नाम केहरसिंह था, साधुवेश में प्राणपुरी बन चुके थे और साधुओं की मण्डली मे रहने लगे थे। पिता जी ने कुम्भ मे अपने पुत्र केहरसिंह के आने की सम्भावना मे अपने अधीनस्थ व्यक्तियों को आदेश दिया था कि इस फोटो वाला युवक यदि साधु मण्डली में मिल जावे तो उसे रोक लेना। एक व्यक्ति ने फोटो से केहरसिंह (प्राणपुरी) को पहचान लिया और सारी ही मण्डली को रोक लिया। इस मण्डली में कोई भी साधु पैसा नहीं छूता था। अत: उस व्यक्ति ने आश्वासन दिया कि टिकिट खरीद कर आप लोगों को दे दिया जायेगा। जब पिता सरदार भगवानसिंह जी आये, तो पुत्र को देखकर और अलग ले जाकर कहा मैं तुम्हें जमादार पद अधिष्ठित करना चाहता था। पर स्वामी जी ने उत्तर दिया आप मुझे सरदार बनाना चाहते हैं। मैं बहुत बडा सरदार बनूंगा। पिता की इच्छा वहा (बरमा) में भेज कर पुत्र की शादी करने की भी थी। पर उनकी उस आशा पर तुषारापात ही हुआ।

स्वामी जी (प्राणपुरी जी) देवी देवताओं को नहीं मानते थे। इस प्रकार की शिक्षा उन्हें किसी ने दी थी। उनको स्वत: आत्मा से ही ऐसा बोध था। साधु मण्डली को जब देवी देवताओं पर इनकी अनास्था का पता चला उन्होंने यह कह कर उपेक्षा कर दी कि प्राणपुरी को स्वतन्त्र ही रहने दो, इस प्रकार स्वतन्त्र कहते-कहते उनका नाम स्वतन्त्रानन्द पड गया, स्वतन्त्रानन्द किसी गुरु द्वारा विधिवत् दिया गया नाम नहीं है।

कारण शरीर के उत्कर्ष की साक्षी मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने प्रात: 3 बजे से 5 बजे के काल का उल्लघन नही होने दिया। जाडा हो, गरमी हो, वर्षा हो, वे जहा भी उपासना में बैठते थे, वहा से इधर उधर न होते थे।

जि० लुधियाना के ग्राम मोही निवासी बचपन में अपने नानका भताला ग्राम मे उदासी साधु श्री विशनदास जी से पढे और विशनदास जी की गद्दी के महन्त्ता को पढाते समय उन पर इस शिष्य की बुद्धि की अच्छी छाप पडी थी। प्रच्छन्न रूप से श्री विशनदास जी आर्य समाजी थे और चाहते थे कि देश मे आर्यसमाज का प्रचार हो। गीता को स्वामी (प्राणपुरी=केहर सिंह) ने 15 दिन मे कण्ठस्थ कर लिया था। बुद्धि तीव्र एव स्वच्छ थी। पूर्णानन्द जी से स्वतन्त्रानन्द जी प्राणपुरी के रूप में जब कभी भी उनके पास गए यही प्रेरणा मिली कि आर्य समाज का काम करना है। प्राणपुरी उत्तर देते—मैं आर्य समाजी नहीं बनूंगा। मेरा उनसे मेल नही खायेगा। तब विशनदास जी उदासी ने उन्हें सत्यार्थप्रकाश, संस्कार-विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढने को दिए और आज्ञा दी कि आर्य समाज का काम करना है। प्राणपुरी जी ने कूबरावा गाव में उन्हें पढने के बाद अपने आत्मा के अनुकूल पाया। इस प्रकार आर्य समाज मे दीक्षित हुए थे। यह सब घटनाए 1906 से 1909 की हैं। इन 4 वर्षों मे यहा आर्य समाज की भावनाओ मे खूब दीक्षित होकर आर्य समाज का कार्य करने का ही दृढ निश्चय कर लिया। कूबरावा ग्राम ही मे एक हिन्दी पाठशाला चलाई। आर्य समाज की स्थापना की यह स्थान सिक्खों के बाहुल्य से पूर्ण है। सिक्खों का ग्रन्थ साहब स्वामी जी को कण्ठस्थ था। उनसे कोई सिख भिड नहीं पाता था। सिक्ख उनके कृतज्ञ हैं कि वे हमें समय-समय भटकते मार्ग से बचाते थे।

स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज का पहला उत्सव मोगा मे देखा था और स्वय अपना पहला भाषण सिरसा मे किया था।

श्री डा० चिरंजीव भारद्वाज आर्य समाजी अफ्रीका में अपने प्रैक्टिस के लिये गये हुए थे आर्य समाज के कार्य को पर्याप्त प्रगति दी। जब वे वृद्ध हो गए तो उन्होंने श्री महाशय कृष्ण जी से निवेदन किया—"कोई आर्य समाज का ऐसा साधु भेजिए जो मेरे कार्य को आगे बढा सके।" उस समय महाशय जी की दृष्टि भारतीय आर्य समाज के साधुओं में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर ही पडी। और परिणामस्वरूप स्वामी जी अफ्रीका चले गए। प्रचार किया किन्तु आंखों से अन्धे ही गए और भारत में लौट आए। चिकित्सा कराई, ठीक हो गए पर ऐनक लगानी पडी। फिर अपने गुरु श्री विशनदास जी उदासी से योग सीखा योग काल में सर्वथा अन्न छोड दिया था। 20 आमलक प्रात:काल करते। 20 दोपहर को और 20 ही साय को। आमलक के पश्चात् एक सेर दूध में 1 छटांक घी ग्रहण करते थे। इस प्रकार तीन सेर दूध और 3 छटांक घी लिया करते थे। ऐसा करते करते स्वप्न मे काम देव का वश दीखता। स्वामी जी महाराज को आश्चर्य हुआ कि योग साधना से तो शान्ति होनी चाहिए, उत्तेजना क्यों है वे गुरु विशनदास जी के पास गए और अपनी कथा सुनाई। गुरु जी ने सब कुछ सुनने के पश्चात् घृत में दोष पाया, जो किसी कामुक के घर से लेकर उपयोग किया जाता था। दूध तो स्वामी विशनदास जी की गोशाला का ही बरता जाता था और कार्यकर्ता भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के प्रति आस्थावान् थे। अत दूध सम्बन्ध में तो विचार की सम्भावना ही न थी। इसके पश्चात् घी मे परिवर्तन किया गया और योग साधना आगे चली।

पिता श्री भगवान् सिंह जी को अन्त में अपने पुत्र के लिए कहना ही पडा कि पुत्र केहरसिंह ने जो कहा था—"पिता जी! मैं एक बडा सरदार बनना चाहता हू, ठीक सिद्ध हुआ।" स्वामी जी पंजाब में कहीं व्याख्यान दे रहे थे। पिता जी भी उधर से कहीं चले जा रहे थे, रुक कर सुनने लगे। प्रतीत हुआ—हो न हो यह केहरसिंह ही हो। स्वामी की दृष्टि भी पिता जी पर पडी। उन्होंने एक व्यक्ति को संकेत किया—झट एक तरफ जाओ और झट वाले व्यक्ति को रोके रक्खो। व्याख्यान समाप्ति पर पिता-पुत्र की भेंट हुई और पिता जी ने पुत्र से कहा—मुझे आज वह बात याद आ रही है, जब तूने कहा था, मैं छोटा सरदार नहीं, बडा सरदार बनना चाहता हू, ठीक निकली। मुझे इस बात की बडी प्रसन्नता है।

स्वामी जी प्रत्येक कुम्भ पर जहा कहीं भी वह भरता था। अवश्य पहुचते थे। वहां उनके पुराने साधु भी मिलते थे, जिनकी मण्डली मे वे प्राणपुरी के रूप मे रहा करते थे। किन्तु विचार भेद के कारण जब स्वामी जब मण्डली से निकल आए, वे तो उनके लिए कुम्भ के मेलों में उनकी पंगत में बैठकर उनके साथ भोजन करना आवश्यक था। कई प्रभावित पुराने साथी अपनी पंगत में बैठकर ही भोजन करने का आग्रह स्वामी जी से करते, किन्तु स्वामी जी इस आशय से कि कोई ऐसा व्यक्ति भी पंगत में ही जिस को ग्राम में मेरा भोजन करना खटक जावे और मुझे बीच में उठना पडे, यह अशोभनीय होगा। अत: वे पहले ही सावधान होकर सब साधुओं की उपस्थिति में अड़े खड़े भोजन करते रहे। जब अनेक कुम्भ इस प्रकार के इसी तरह बीत गये। तब प्रबन्धकर्ताओं ने व्यवस्था की कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पंगत में ही भोजन करें, और कोई भी साधु इस पर टीका टिप्पणी न करें।

सम्पादकीय :–

आर्य समाज का राजनैतिक पक्ष

आर्य समाज राजनीति में सक्रिय भाग ले या न ले, यह विषय बहुत समय से विवादास्पद बना हुआ है। प्राय: देखा गया है कि जब यह कहा जाता है कि आर्य समाज को राजनीति मे किसी न किसी रूप मे सक्रिय भाग लेना चाहिए तो आर्य समाज का नेतृत्व उसका विरोध करता है। यदि विरोध न करे तो ऐसी स्थिति पैदा कर देते हैं कि आर्य समाज राजनीति से दूर रहे। फिर कहते हैं कि राजनीति मे सक्रिय भाग लेना हो तो उसी राजनीति मे लें, जिसका आर्य समाज का नेतृत्व समर्थन करता हो। वह दूसरो को राजनीति के विषय मे कुछ कहने की कोई अनुमति नही देते। परन्तु स्वय समय समय पर ऐसे वक्तव्य देते रहते हैं, जिनके परिणाम दूरगामी हो सकते हैं। उन्हें कोई रोकने वाला नही कि वे क्या कर रहे हैं।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में हैदराबाद मे आर्य समाज के दो सम्मेलन हुए हैं—एक प्रान्तीय सभा की ओर से और एक सार्वदेशिक सभा की ओर से। दोनों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से आर्य समाज का जो पक्ष जनता के सामने रखा है उस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। विशेषत: आर्य समाज का वह राजनैतिक पक्ष, जो सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन से रखा गया था। कहते हैं कि बड़े-बड़े वकीलो ने बैठ कर आर्य समाज के राजनैतिक पक्ष का एक चार सूत्रीय कार्यक्रम बनाया था। मुझे यह मालूम नहीं कि वे वकील महानुभाव कौन थे। जो भी थे, उनके विषय में कह सकता हू कि या तो उन्हें राजनीति का पता नही या आर्य समाज का पता नही। जो चार सूत्रीय कार्यक्रम बनाया गया है। उसके अनुसार—

1 संविधान के अनुच्छेद 370 और 29 30 को हटाया जाए।

2. नैतिक शिक्षा को भारतीय शिक्षा प्रणाली मे मुख्य विषय के रूप मे जोड़ा जाए।

3 सभी भारतवासियों के लिए एक समान कानून बनाया जाए।

4. गौ-हत्या बन्द करने के लिए कानून बनाया जाए।

सार्वदेशिक सभा ने पिछले दिनो अपना एक त्रिसूत्रीय क्रान्तिकारी कार्यक्रम घोषित किया था। उनके अनुसार गौ हत्या बन्द करने के अतिरिक्त एक कार्यक्रम शराबबन्दी का भी था और एक अग्रेजी के स्थान पर राज प्रबन्ध मे हिन्दी को लागू करने का भी था। हैदराबाद मे जो चार सूत्रीय कार्यक्रम बनाया गया है। उसमे शराबबन्दी और अग्रेजी हटाने की माग को क्यो नही सम्मिलित किया गया, यह समझना कठिन है। सम्भवत: आर्य समाज के नेतागण शराबबन्दी और अग्रेजी हटाने को अब अधिक महत्त्व नही देते।

परन्तु मुझे तो इस चार सूत्रीय कार्यक्रम के उस अग पर आपत्ति है, जिसमें यह माग की गई है कि सविधान के अनुच्छेद 29-30 को हटाया जाए। यह माग पंजाब, जम्मू-कश्मीर और नागालैंड—इन प्रान्तों के हिन्दुओं के धार्मिक एव सास्कृतिक हितो पर कुठाराघात [illegible] हो सकता है। आज भी पजाब में आर्य समाज को यदि यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी शिक्षा संस्थाओं मे हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बना सकता है तो वह अनुच्छेद की धारा 29-30 के अनुसार ही है। यदि ये दोनो अनुच्छेद समाप्त कर दिए जाए तो पजाब, जम्मू-कश्मीर और नागालैंड में हिन्दी और सस्कृत का गला घोट दिया जाएगा। उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 29-30 के आधार पर ही आर्य समाज को पजाब में एक अल्पसख्यक सस्था घोषित किया था। देहली मे भी आर्य समाज ने अपने आपको एक अल्पसख्यक सस्था घोषित करने के लिए न्यायालय का सहारा लिया था, परन्तु वहा उनकी यह माग स्वीकार न की गई। हम पजाब मे यह अधिकार लेने मे सफल हो गए थे और जो प्रस्ताव हैदराबाद सम्मेलन मे पारित हुआ है। यदि सरकार उसे स्वीकार कर ले तो हम अपनी सस्थाओ मे हिन्दी के माध्यम से अपने बच्चो को शिक्षा न दे सकेगे। आवश्यकता यह थी कि इस सम्मेलन मे यह प्रस्ताव भी पारित किया जाता कि जिस प्रकार उत्तर प्रदेश मे उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाया गया है, उसी प्रकार पजाब मे भी हिन्दी को दूसरी राजभाषा बनाया जाए। यह तो किया नही गया और हिन्दी को जो थोडा-बहुत महत्त्व अनुच्छेद 29 30 के द्वारा मिला है। वह भी समाप्त करने की माग को गई है। किसी आर्य सम्मेलन में इस प्रकार का दायित्वहीन प्रस्ताव पास नही किया गया। जिन महानुभावो ने यह प्रस्ताव पेश किया और जिन्होने पारित किया, उन्होने यह सोचने और समझने का प्रयास नही किया कि इसका परिणाम कितना भयकर और दूरगामी हो सकता है। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि राजनीति के विषय मे आर्य समाज का कोई निश्चित मत नही है। इसके नेतागण तो यह कहते रहते हैं कि आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग नही लेना चाहिए, परन्तु स्वय कई बार ऐसी राजनैतिक घोषणाए करते हैं। जो आर्य समाज के लिए कई प्रकार की कठिनाइया पैदा कर सकती हैं। जो प्रस्ताव हैदराबाद मे पारित हुआ है वह पजाब, जम्मू-कश्मीर और नागालैंड के हिन्दुओ के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। जिन्होंने यह प्रस्ताव पेश किया था उन्होने सम्भवत यही समझा कि इस देश मे केवल मुसलमान ही रहते हैं। उन पर प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता है। वे यह भूल गए कि तीन प्रान्त ऐसे भी हैं कि जहा हिन्दू अल्पसख्यक हैं। उनके हितो की रक्षा करना भी आर्य समाज का कर्त्तव्य है। पजाब मे तो हिन्दी की रक्षा के लिए सार्वदेशिक सभा ने ही सत्याग्रह किया था। परन्तु सत्याग्रह करने और कराने वाले चले गए, अब वे रह गए है जिन्हे यह चिन्ता नही कि जो कुछ वे कर रहे हैं इसका परिणाम क्या होगा ?

प्रश्न फिर वही उठता है कि आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नही। यदि लेना चाहिए तो देश के सामने जितनी समस्याए हैं, उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहिए और यदि वे समझते हैं कि आर्य समाज को राजनीति मे नही पडना चाहिए तो फिर उन्हे भी अपनी जुबान बन्द रखनी चाहिए। और ऐसे निर्णय नही लेने चाहिए, जो आर्य समाज के अपने हितो के लिए कुठाराघात बन सके, जैसे कि उन्होंने हैदराबाद मे किया है।

—वीरेन्द्र

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की विचार वाटिका

संग्रहकर्ता—प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु, अबोहर, फिरोजपुर

देव की महिमा—"सच्चिदानन्द स्वरूप स्वय भू: परमेश्वर की इस दिव्य सृष्टि में विविध प्रकार की विचित्रताओं का समावेश है नभतल स्पर्शी हिमाच्छादित उत्तग शिखरों वाले भूधर सिंधु की ओर दौड़ती हुई सरितायें, विस्तृत वसुन्धरा पवन और गगन, नाना प्रकार की औषधियों, विविध प्रकार के मनुष्य, विभिन्न भाषायें और यह विशाल ब्रह्माण्ड यह सब अपनी सत्ता के द्वारा उस अद्भुत देव की महिमा प्रकट कर रहे हैं। (आर्य समाज के महाधन से")

जीवन क्या है ?—"उत्पत्ति और विनाश, जन्म और मृत्यु, प्रकाश और छाया की भान्ति सदा साथ साथ रहते हैं। जीवन के सौन्दर्य की पराकाष्ठा मरण में है। यदि पुरुष पुष्पित हो कर झड़े नहीं, धान खेत में पक कर कटे नहीं तो उन का होना किस काम का? जीवन का सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है जब वह मरण किसी जीवन के लिए होता है। प्रभु स्वयं निरपेक्ष परोपकार कर रहे हैं करुणानिधान भगवान के अनन्त करुण कण अनवरत इस सृष्टि में बरस रहे है। जगत के सभी पदार्थ परोपकार का परस्पर की सहायता का उत्सर्ग और बलिदान का संदेश सुना रहे है।" (आर्य समाज के महाधन से)

सुख दुख—"उन्नति और अवनति का जोड़ा है। चक्रवत् सुख और दु:ख आते रहते हैं। मनुष्य जान बूझ कर भी कुकर्मों में फंसता है और जब ईश्वरीय न्याय उसे दु:ख देते हैं तब रोता है।" (आर्य समाज के महाधन से)

परम धर्म—"जो आर्य समाजी वेद का पाठ नहीं करता वह आर्य ही नहीं है।"

मन की शुद्धि—"जिस का अपना मन शुद्ध है उस का कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता!"

साधक का संसार—"श्री स्वामी सोमानन्द जी संचालक सेवा आश्रम नूरगढ़ हरियाणा को उपदेश देते हुए स्वामी जी ने कहा, "तेरा संसार उतना ही है जितना तेरी साधना में साधक है।"

शुचिता—"जिस प्रकार प्रतिदिन स्नान करना अत्यन्त आवश्यक है इसी प्रकार जूतियों की सफाई भी अत्यन्त आवश्यक है।"

उपदेशक कैसे हों ?—"उपदेशक आत्मविश्वासी हों जिन के जीवन ईर्ष्या-रहित हों और धर्म परायण हों, वह अपना निर्वाह स्वतन्त्रता से करने वाले हों और अपना संगठन बनाना चाहते हों और स्वयं दूसरों की आज्ञा मानते हों। उन के सामने उदाहरण आचार्य, महर्षि, योगी परोपकारी, धर्म परायण दयानन्द का ही हो।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेखमाला प्रथम भाग पृष्ठ 207)

वाणी का व्यवहार—"यदि आप किसी के साथ उत्तम वाणी का व्यवहार करते है तो उसे प्रसन्नता होती है। यदि अभद्र वाणी का प्रयोग होता है तो विशेष व्यक्ति का विशेष अवस्था के अतिरिक्त, उस का कुप्रभाव भी सिद्ध है।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेखमाला प्रथम भाग पृष्ठ 73)

सहनशीलता—"उपदेशकों का, जिन में संन्यासी आदि भी आ जाते है, तो यह कर्त्तव्य है किन्तु जीवन को आदर्श बनाने के लिए साधारण जनता को भी सहनशीलता का अभ्यास करना चाहिए। इस से उसे अधिक सुख मिलेगा।" (द्रष्टव्य वेद-पथ मासिक अक्तूबर 1949 पृष्ठ 98)

संन्यासी—"संन्यासी की भावना विश्व कल्याणी होती है। संसार में दुखी जीवों को देख कर उनके हृदय में करुणा की सरिता स्रवित होती है। उन की दृष्टि प्रान्त देश और महादेश की सीमायें लांघ कर विश्व की परिधि में घूमती है। उन के आगे जाति, वर्ण या समुदाय का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। वे सम्पूर्ण प्राणियों में अपनी आत्मा का दर्शन करते हैं। उन का जीवन अपने लिये नहीं विश्व के लिए होता है। लोगों को सत्पथ में प्रवृत्त करना, धर्म मार्ग पर दृढ़ करना काम होता है। वे किंचित काल के लिए भी किसी का अनिष्ट नहीं सोच सकते।" (आर्य समाज के महाधन से)

आर्य सन्यासी की पहचान—"अन्याय व अत्याचार आग बन कर बरस रहे हों और एक आर्य सन्यासी उन्हें देखता रहे, यह असम्भव है। (आर्य समाज के महाधान से)

ऋषि जीवन से एक शिक्षा—"काशी शास्त्रार्थ में महर्षि के अनादर करने वालों में श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी भी एक थे। किन्तु हरिद्वार के कुम्भ पर हम महर्षि को उन के साथ इस प्रकार देखते हैं, मानों काशी में कुछ हुआ ही न था। .. ..महर्षि ने क्रोध को भली प्रकार जीत लिया था!" (द्रष्टव्य "वेद पथ" मासिक अक्तूबर 1950 ई० पृष्ठ 97)

वह समय दूर नहीं—"वह समय दूर नहीं जब ऋषि दयानन्द का ही अनुकरण होगा।" (द्रष्टव्य आर्य मासिक माघ सं० 1989 पृष्ठ 423)

बलिदान—"पीड़ितों का परित्राण करना, अन्याय का दमन करना, धर्म की रक्षा करना, शक्ति का उपयोग करना है। संसार शक्तिशालियों का है यहां निरन्तर संघर्ष चल रहा है। इस में जो शक्तिशाली है वे ही बच पाते हैं। शरीर का सौन्दर्य और सुख शक्ति है। जो शरीर रोगी है उस में न शान्ति। सहिष्णुता तो उस में होती ही नहीं। दूसरे का उपकार क्या करेगा स्वय अपने लिये ही भार स्वरूप होता है परन्तु जिन के पास शक्ति है, जिन की देह बलवान है, शरीर से हृष्ट पुष्ट हैं वे अपनी शक्ति का दोनों प्रकार से उपयोग कर सकते हैं। वे अपने बल से किसी को पीड़ा भी दे सकते हैं और बचा भी सकते हैं। इस में प्रथम मार्ग दुर्जनों का है। उन की शक्ति "परेषां परिपीडनाय" होती है। सज्जनों की सरणि सदा दुर्जनों से विपरीत होती है। उनका बल ही क्यों सर्वस्व पर रक्षणार्थ होता है। उन की विभूतियां परोपकाराय होती है।" (आर्य समाज के महाधन से)

वीरता—"वीरता मनुष्य को कर्त्तव्यारूढ़ करती है और भीरुता कर्त्तव्य से विमुख करने का साधन है। वीर व्यक्ति विघ्न बाधाओं को हटा कर सफलता के दर्शन करता है, भीरू मनुष्य विघ्न बाधाओं के सम्मुख आने पर घबरा कर धर्म, पथ छोड़ कर अधर्म पथ गामी हो जाता है।" (स्वतन्त्रानन्द लेख माला पृष्ठ 4)

विश्व शान्ति—"विश्व शान्ति उत्तम भावों से ही प्राप्त होगी। "आचार: परमोधर्म:" का आश्रय लेना पड़ेगा आत्म रक्षा की बलवती भावना भी जागृति करनी होगी अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति इतना आचारवान दृढ़ प्रतिज्ञ और शक्ति सम्पन्न होकि किसी को अत्याचार करने का साहस ही न हो पावे।" (स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 95)

मन की वाटिका—"अपने मन में सदैव अच्छे विचारों की वाटिका लगाओ तो अच्छे विचार ही आमोद प्रमोद के हेतु तुम्हारी हृदयरूप वाटिका में आते जाते रहेंगे और यदि वहां तुम कुविचार का कूड़ाकरकट जमने दोगे तो वहां उन्हीं का ढेर लगेगा।" (हैदराबाद सत्याग्रह के दौरान महाराष्ट्र मे दिये गए एक उपदेश से)

मानव धर्म—"पंथों के भेदों को दूर कर एक सूत्र में लाने का एक मात्र सर्वोत्तम उपाय जो वेद में लिखा है, "मनुर्भव" वह सर्वश्रेष्ठ तथा कल्याणकारी है" (स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 94)

मित्रता—"परिचित को कष्ट के समय छोड़ना नहीं चाहिए। उसे छोड़ना कृतघ्नता है।"

कैसे शुद्धि करें ?—"जब कोई सज्जन वैदिक धर्म को ग्रहण करता है तो उस पर यूं ही सदेह न किया जाए तथा उस के साथ सार्वजनिक रूप से खान पान किया जावे। जिस से उस को यह अनुभव न हो कि वह अकेला है, उस का कोई साथी नहीं है।" (आर्य मुसाफिर उर्दू मासिक फरवरी 1931 से)

तब छुरे चलाते हैं—"मुसलमान मौलवी पहले लिखते हैं। उत्तर लिखा जाने पर न्यायालय में जाते हैं और फिर छुरे चलाते हैं।" (आर्य मुसाफिर उर्दू फरवरी 1931 से)

हमारा प्यारा आर्य समाज—"हमारा मुख्य काम है कि हम आर्य समाज की सेवा करें ? आर्य समाज की उन्नति के लिए जो कुछ हम से हो सकता है हम करेंगे, परन्तु इस के साथ प्रत्येक आर्य की उन्नति चाहते हैं और दुनियां के अत्याचार मिटा कर सुख और शान्ति की स्थापना करना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने हमें ऐसा करने का आदेश दिया।" (स्वतन्त्रानन्द लेख माला पृष्ठ 223)

लेख द्वारा प्रचार—"जो लेख द्वारा प्रचार है वह अधिक स्थाई होता है। यह निर्णीत सिद्धान्त है।" ("ग्राम प्रचार" लेख मासिक आर्यलाहौर माघ 1990 पृष्ठ 407)

लेखनी का कार्य—"आर्य समाज ने यह काम किया है। परन्तु जो कुछ किया है वह पर्याप्त नहीं है। जो भावानुभाव लिखने का सामर्थ्य रखते हैं उन को इसी काम पर लगा देना चाहिए। उन का मुख्य काम लिखना ही हो अन्य काम गौण हों। (द्रष्टव्य आर्य मासिक में ग्राम प्रचार लेख पृष्ठ 407 माघ 1990 का अंक)

ऋषि भक्ति से शून्य कौन—"जो प्रचार करते समय दु:ख से डरता है वह ऋषि भक्ति से शून्य प्रतीत होता है।" (आर्य मासिक माघ 1990 पृष्ठ 411)

प्रोग्राम वाले उपदेशक—"प्रोग्राम के उपदेशक ग्रामों के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है।" (आर्य मासिक माघ सम्वत् 1990 पृष्ठ 411)

गोरक्षा व भारत सरकार—"यदि भारतीय सरकार अंग्रेजी ढर्रे पर ही चलती रही तो भारतीय संस्कृति और वैदिक सभ्यता के प्राण गौ जाति के ह्रास और विनाश में भारत देश का सर्वनाश निश्चित है। ऐसी भीषण अवस्था में भारतीय जनता और भारत सरकार में टक्कर होनी रुक नहीं सकती आज हम स्वराज्य प्राप्त कर चुके है किन्तु दो कार्य अभी शेष है गोरक्षा और वैदिक धर्म से जाने वाले द्वार को बन्द करना तथा आने वाले द्वार को खोलना।" (स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 120)

संस्कृत—"जैसे उस समय बूढे बूढे आर्य समाजियों ने देवनागरी लिपि और भाषा सीखी थी, उसी प्रकार इस समय प्रत्येक आर्यनर नारी को संस्कृत सीखने का प्रयत्न करना चाहिए। और आशा है यदि आर्य समाज इस विषय को अभी अपना ले तो दक्षिण भारत शीघ्र ही हमारा साथी हो जायेगा और वह दिन दूर न रहेगा जब हम ऋषि स्वप्न को पूरा कर सकेंगे कि प्रत्येक आर्य को सस्कृत सीखनी चाहिए।" (स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 128)

प्रान्तीयता का रोग—"जो लोग भाषावार प्रान्तों की मांग कर रहे हैं, वे देश के लिए हानिकारक है, उन्नति के बाधक हैं, राष्ट्रीय भावना के द्वेषी हैं। प्रत्येक भारतीय को उन का विरोध करना चाहिए ताकि देश का संगठन दृढ़ हो सके। भारत को जब जब पराजित होना पड़ा, तब तब प्रान्तीय भेदों के कारण ही पराजित होना पड़ा था। अब भी यही भाषा भाव प्रबल हो गया तो पुन: वैसी अवस्था होने की सम्भावना हो सकती है।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 174)

स्वराज्य रक्षा के साधन—"महर्षि ने जिस प्रकार स्वराज्य प्राप्ति के साधन लिखे हैं उसी प्रकार स्वराज्य रक्षा के साधन भी लिखे हैं। ये साधन हैं सत्य, धर्म परायणता, न्याय-प्रियता धन का असोभ, ब्रह्मचर्य, सदाचार आदि।" (प्रतिनिधि गुजराती पत्रिका दिसम्बर 1949 ई० पृष्ठ प्रकाशित स्वामी जी के लेख "ऋषिना सिद्धान्तोनो विजय")

स्वराज्य के पश्चात—"स्वराज्य मिलने के पश्चात प्रजा में गुणों की वृद्धि की अपेक्षा अवगुण अधिक देखने में आते हैं। साधारण कर्मचारी भी धन बटोरने में संलग्न है। घूस, भ्रष्टाचार, काला बाजार ये तो सामान्य बात हो गई है। सत्य के स्थान पर असत्य की प्रधानता है। झूठ, भ्रष्टाचार, घूस से कोई भी प्रजा नष्ट हो जाती है। त्याग, संयम, सदाचार इससे प्रजा आगे बढ़ती है। इसीलिए आर्यों का यह परम कर्त्तव्य है कि ऋषि के आदेश को मान कर अपना जीवन उन्नत बनावें और चोर बाजार, भ्रष्टाचार, घूस के विरोध में आवाज उठावें।" (द्रष्टव्य प्रतिनिधि गुजराती पत्रिका दिसम्बर 1949 पृष्ठ 3-4 पर प्रकाशित स्वामी जी के लेख "ऋषिना सिद्धान्तोनो विजय" से)

जहां यह अवस्था हो—"व्यापारी ब्लैक मार्केट करते हैं, अफसर रिश्वतखोर हैं, ठेकेदार सरकारी कामों मे गड़बड़ करते हैं, स्कूल मास्टर ट्यूशन लेने के लिए लड़कों को पढाने से कतराते हैं, विद्यार्थी भी अध्यापकों को अपमानित करते हैं और पढने से कतराते है। घर में मा बाप सन्तान से दुःखी हैं और सन्तान मा बाप को कोसती है। स्त्री और पुरुष की घर में तकरार होती है। जहां यह अवस्था हो वहां शान्ति कैसे हो?" (डाक्टर साईदास जी करतारपुर के ट्रैक्ट (वचनामृत से)

हमारा व्यवहार—"अब भारत स्वतन्त्र है, स्वतन्त्रता प्राप्त भारत में ठगी का व्यापार शोभा नहीं देता। अब देश में सत्य का व्यवहार होना चाहिए। जैसे वैश्यों को सत्य का व्यवहार करना चाहिए वैसे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेख माला पृष्ठ 198)

चोर बाजारी—"आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे ऋषि के आदेश को मानकर अपने जीवन को उन्नत बनाते और दिखाते हुए इस चोर बाजारी और अन्याय के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करें। "कार्य वा साधयेयं देह वा पातयेयम्" की दृढ़ धारण कर के इस क्षेत्र में आयें।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 125)

भ्रष्टाचार निवारण—"क्या इस अवस्था में आर्य समाज को चुप बैठना चाहिए? मेरी सम्मति में आर्य समाज को भ्रष्टाचार निवारण में लगना चाहिए पर इसके साथ एक बात और है। आर्य समाज के सदस्य, वे चाहे प्रजा में हों चाहे राज्य कर्मचारियों में हों, उन में यह दोष न हो। यदि उनमें है तो प्रथम आर्य समाज को ठीक करना होगा। यदि आर्य समाजी दोष रहित हैं तभी भ्रष्टाचार निवारण में सफल हो सकते हैं।" (द्रष्टव्य स्वतन्त्रानन्द लेखमाला पृष्ठ 104)

वीर पूजा व सन्तान का निर्माण—"समाज की सन्तानें अपने वीर पुरुषों की गौरव गाथा सुन कर तदनुरूप बनने की चेष्टा करती हैं। एवं उस प्रकार के यशस्वी पुरुषों का—वीरों की परम्परा का लोप नहीं होता। इसके विपरीत यदि समाज उन महाधनों को भुला देता है तब वह आदर्शहीन हो जाता है। उनकी सन्तानों के आगे उत्तम आदर्श नहीं होता, पूर्वजों की गौरव गाथा का उनमें मान नहीं होता और वह आदर्शहीन साधारण व्यक्तियों की नाई बन जाते हैं। अन्त मे परिणाम यह होता है कि जाति है व समाज का इतिहास नष्ट हो जाता है और उसके साथ ही उनका गौरव, ज्ञान और सत्ता भी। (आर्य समाज के महाधन की भूमिका से)

स्त्री शिक्षा—"कन्याओं के भावों के विकास को जिस प्रकार स्त्रियां समझ सकती है, पुरुष नहीं समझ सकते। इसलिए कन्याओं की शिक्षा का सब प्रबन्ध स्त्रियों के हाथ में ही होना चाहिए। ताकि कन्याएं भविष्य मे अच्छी गृहिणी और माताएं हो सकें।" (राजस्थान मे गुलाब देवी अभिनन्दन ग्रंथ मे प्रकाशित उनके लेख से।)

स्त्रियों की रक्षा—"जो स्त्रियों का अपमान सहता है वह जीवित होते हुए भी मरा हुआ है।"

संसार वीरों का—"यह संसार रोने के लिए नहीं जैसी परिस्थिति हो उसका दृढ़ता से सामना करो।" (रिफार्मर 10-4-1955 से)

आगे बढ़ो—"देखो आर्यों। मैं एक बात बता देता हूं। तुम आगे बढ़ो। यदि तुम आगे नहीं बढ सकते तो मैं इसको पाप तो नहीं समझता परन्तु पीछे एक तिल भी न हटना। यह भी थोड़ी वीरता नहीं। (गांधी मैदान दिल्ली में दिये गए एक भाषण से)

अटल निश्चय-"जो निश्चय किया है करते चलो संसार की निन्दा स्तुति की ओर ध्यान न दो।"

कर्त्तव्यनिष्ठ बनो—अपने कार्य में प्रत्येक व्यक्ति चोर भी हो सकता है।"

स्वास्थ्य—"श्री स्वामी जी ने 18-11-1919 को मम्बास (अफ्रीका) से एक पत्र श्री पडित राम चन्द्र जी सिद्धान्त शिरोमणी के नाम लिखा। उस पत्र का कुछ भाग सर्वहितकारी होने के कारण यहां दिया जाता है। "सब से प्रथम बात यह है, आप अपने शरीर को अच्छा बनाने का भरसक प्रयत्न करें। आप का शरीर पूर्ववत दृढ होना आवश्यक है। उसका साधन समय पर भोजन करना और उचित भोजन करना है। यदि आप ने अपने शरीर को ठीक न बनाया तो आप चाहे वैराग्य कहें अथवा सेवा भाव में निमग्न कहे अथवा कोई अन्य नाम रख लें किन्तु धर्म की दृष्टि से शास्त्र मर्यादा से वह अविद्या ही है।"

यदि स्वास्थ्य चाहो—स्वामी जी कहा करते थे कि जो व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है वह यौवन मे खूब खावे और अच्छी प्रकार भागे दौड़े, परिश्रम व व्यायाम करे। जब बुढ़ापा आवे तो खाने की मात्रा कम करता जाये, धीरे चले, थोड़ा सोये तथा चिन्तन करे। स्वस्थ रहने का यही राज मार्ग है।

—लौह पुरुष के साभार

नवांकोट अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य युवक सभा नवांकोट अमृतसर के तत्वावधान में हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस 24-12-89 को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पंडित बनारसी लाल जी आर्य रत्न ने हवन यज्ञ कराया। डॉ० प्रकाश चन्द्र जी प्रधान आर्य समाज नवांकोट ने मुख्यातिथि श्री एस० एस० तनेजा का स्वागत किया। श्री सुरजीत कुमार जी दु:खी ने बड़े सुन्दर ढंग से मंच संचालन किया। इस अवसर पर श्री डा० हरभगवान् आर्य, श्री अविनाश जी सम्पादक हिन्द समाचार, श्री इन्द्रपाल आर्य, श्री रमेश चन्द जी शृंगारी, श्री लक्ष्मण दास जी तिवारी तथा बच्चों ने भजनों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि भेंट की। सारा कार्यक्रम श्री बालकृष्ण तथा श्री बजाज जी की देख रेख में सम्पन्न हुआ।

—पंडित बनारसी लाल आर्य रत्न

परमहंस स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती महाराज जी

ले० श्री पं० महेन्द्रकुमार जी शास्त्री

वैदिक संस्कृति से संस्कृत इडा माता की प्रेरणा से निर्मोह, त्याग, तपस्या, कर्मठता, ओजस्विता, निर्भीकता, सहिष्णुता, अध्यात्मिकता के मुक्ताओ के चयन करने वाले परमहंस।

निज शरीर आत्मा और समाज तथा राष्ट्र के नियन्त्रण तथा सुरक्षा के लिए प्रतिक्षण कटिबद्ध रह कर सतपथ का दर्शन कराने वाले स्वामी।

मानव आत्मा के जन्मसिद्ध अधिकार स्वतन्त्रता के ध्येय की सिद्धि के लिये अहर्निश मन वचन कर्म से श्रम मे निरन्तर आनन्दानुभूति करने वाले स्वतन्त्रानन्द।

सरस्वान्, भास्वान्, भगवान् के आत्म स्रोत्र से निःसृत तपः पूत आदिजन मानस में प्रादुर्भूत वरदा वेद माता सरस्वती का अवगाहन करने वाले सरस्वती।

आर्यावर्त के लाखो आर्य मन्मथ मनों मे अभिनन्दित होकर विराजमान महाराज।

ऐसे महाराज के चरणो मे रहकर सौभाग्य से यदा कदा श्रुत एव दृष्ट तथा व्यवहृत घटनाए जो स्मृति पटल पर सदा अंकित रहेगी उनमे से सर्वजन हिताय कुछ प्रस्तुत कर रहा हू।

(1) आर्य कहने का हमे अधिकार कैसे ?

सन् 1943 मे दयानन्द उपदेशक विद्यालय से ग्रीष्मावकाश के समय महाराज के दर्शनार्थ दयानन्द मठ दीनानगर गया। वहा ब्राह्ममुहूर्त मे आचार्य प्रवर के साथ भ्रमणार्थ समय मे मैंने जिज्ञासा प्रकट की कि आर्य के शास्त्रानुमोदित लक्षण जब तक हममे नही तो हम आर्य क्यो कहे ?

"गुरुदेव जी ने कहा बाबू जी जिस प्रकार मनुष्य मे मनुष्य के पूर्ण लक्षण न होते हुए भी हम अपने आप मनुष्य का व्यवहार करते हैं उसी रूप मे जितने अंश मे हममे आर्यत्व है उतने अंश मे आर्य कहना चाहिये।"

(2) बड़े यदि कार्य नहीं करेंगे तो छोटे कहाँ से सीखेंगे

उसी दिन मध्याह्नत्तर 4 बजे वाटिका मे पहुचा, जाते ही सामने सूखे पेड़ के तने को पकड़कर महाराज जी हिला रहे थे।

विनम्र भावना से मैंने कहा आश्रमवासी हम लोग पर्याप्त संख्या मे हैं इसको खोदकर निकाल देते हैं ?

"महाराज जी ने कहा कि यदि मैं स्वय काम नही करूगा तो तुम लोग कैसे सीखोगे, किसी को शिक्षित करने के लिये व्यवहार की शिक्षा देना आवश्यक है। बड़े यदि कार्य नहीं करेंगे तो छोटे कहा से सीखेंगे।"

(3) हम तो पके फल हैं तुम्हें अभी पकना है

उसी दिन सायकाल भोजन करने के उपरान्त महाराज जी से जानना चाहा—महाराज! आपने भोजन नहीं किया ? उत्तर मिला हम तो पके फल हैं तुम लोगो को अभी पक कर दायित्व सम्भालना है अतः युवको को दोनों समय अवश्य ही भोजन करना चाहिये। तभी बलिष्ठ शरीर बनेगा। बलिष्ठ शरीर रूपी साधन साधना की भट्ठी में तप कर ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है। हमको अब अधिक चिन्तन करना होता है। अतः हमे एक समय का भोजन ही पर्याप्त होता है। योग मे अधिक भोज की आवश्यकता नही।

(4) साधु को स्वाद नहीं पेट भरना होता है

सन् 1945 आर्य महाविद्यालय किरठल के उत्सव के पश्चात् स्वामी जी महाराज से मैंने अपने गाव पधारने को प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार करने पर गाव मे उनके साथ गया। मैं घर पर मध्याह्न का भोजन परस रहा था। भोजन की सामग्री मे अचार भी रखा था। महाराज जी ने पहले ग्रास मे आचार की एक पूरी फाक ले ली और दूसरे ग्रास मे दूसरी, इस पर मैंने यह समझकर कि महाराज जी को आचार अधिक रुचिकर हैं अत और आचार ले आया और मैंने दो फाक और थाली मे परोस दी। महाराज जी ने पूर्व की भांति उनको भी एक ग्रास मे क्रमशः ग्रहण कर लिया और उसके पश्चात् खीर, हलुआ, शाक आदि का सम्मिश्रण करके उपयोग किया। इस पर मुझ से न रहा गया नटखट बच्चे की भांति पूछ ही बैठा—महाराज ? इस तरह तो सारा भोजन बेस्वाद हो गया ? उत्तर मिला "साधु को स्वाद नहीं पेट भरना होता है" इससे अन्न के तथा अन्नदाता के प्रति आसक्ति नहीं पनपती।

(5) अध्यार्योदुर्बलेन्द्रियैः

सन् 1947-48 में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से अलवर, भरतपुर और गुड़गाव मे शुद्धि का कार्य कर रहा था इसी सन्दर्भ में स्वामी जी से मार्ग दर्शन के लिए 13 बारह खम्बा रोड नई दिल्ली मे महाराज जी की सेवा में उपस्थित हुआ। उन्हें नमस्ते किया देखते ही महाराज ने कहा कमजोर हो गये। मैंने निवेदन किया कि कार्याधिक्य एव भोजन निश्चित समय पर न होने से स्वास्थ्य ठीक नहीं। गुरुदेव ने कहा देखो तुम शरीर का विशेष ध्यान रखो गृहस्थ का दायित्व भी तुम्हारे ऊपर है। गृहस्थी के लिये आवश्यक है कि शरीर हृष्ट पुष्ट हो। गृहस्थ (अधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः) दुर्बल इन्द्रियो से धारण नही किया जा सकता।

(6) थके नहीं अके नही छके नहीं

सन् 1951 मे आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस दरियागज दिल्ली के अधिष्ठाता का कार्यभार सम्भाला। स्वर्गीय लाला नारायणदत्त जी ने स्वामी जी को मेरी नियुक्ति की सूचना दी। तो स्वामी जी महाराज लाला जी की मोटरकार से आर्य अनाथालय में पधारे। मैंने महाराज जी से कहा आचार्य जी आपने मुझे उपदेशक बनाया और अब मैंने यह प्रबन्ध का दायित्व ले लिया है। आप मुझे इस सम्बन्ध में शिक्षा दीजिए क्यों कि आप केन्द्रिय अनाथालय रावी रोड के प्रधान रहे हैं। गुरुदेव ने उपदेश दिया कि संस्था सचालन, परिवर्धन करने में कार्यकर्ताओ को अधिक से अधिक कार्य करने पर भी थकान अनुभव नही करनी चाहिये। दूसरे किसी के पास कार्यार्थ बार बार जाने पर भी यह सोचकर कि कई-बार जाना पड़ गया तो अकना नहीं चाहिये। तीसरे संस्था के साधन पर्याप्त हो गये हैं अतः यह सोचकर छकना नही चाहिये, सन्तोष नही करना चाहिए। अन्यथा संस्था का विकास अवरुद्ध हो जायगा। इसलिये पजाबी की कहावत है कि—थके नही, अके नही, छके नही, इसे अपनाओ।

(7) कार्यकर्त्ता का भी दिल है

सन् 1952 मे स्वामी जी महाराज आर्य समाज दीवानहाल के उत्सव मे पधारे। उत्सव के पहले ही दिन अगले दिन के लिये मैंने महाराज से गृह पवित्र करने के लिये भोजनार्थ आमन्त्रण की प्रार्थना की उनकी स्वीकृति मिल गई। दूसरे दिन रविवार के दिन ऋषि लगर था। प्रातःकाल के प्रोग्राम मे महाराज जी पधारे। प्रोग्राम के समापन पर मैं स्वामी जी से गृह पर चलने के लिये प्रार्थना करने को मच पर गया तो वहां उपस्थित समाज के अधिकारियों ने कहा स्वामी जी महाराज ऋषि लगर में पधार कर यहीं भोजन ग्रहीत करें। स्वामी जी ने कहा मुझे पूर्व इसकी कोई सूचना न थी, आज का भोजन तो महेन्द्र कुमार के गृह पर है। इस पर अधिकारियों ने कहा उन्हें हम कह देते हैं स्वामी जी भोजन लगर में करेंगे। तो तुरन्त स्वामी जी महाराज ने कहा "कार्यकर्त्ता का भी दिल होता है" उन्हें दुःख होगा अब तो मैं उन्ही के गृह पर भोजन करूगा।

(8) हम धन के मोह से प्रभु गोद को क्यों छोड़ें

श्री प० ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक पू० पू० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी जी के साथ बहुत बड़ी धन राशि लेकर हैदराबाद सत्याग्रह की व्यवस्था के लिए जा रहे थे। रेल के सारे दिन की यात्रा से पण्डितजी ने इस धन की सुरक्षा के लिए रात्रि को एक स्टेशन पर ही विश्राम करना था। इस पर पण्डित जी ने स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की, महाराज जी कुछ घण्टों के लिए आप इस राशि को सम्भाल लें मैं फिर सम्भाल लूगा स्वामी जी ने उसे ले लिया। पण्डित जी सो गये। स्वामी जी ने उस विपुल राशि को चिप्पी (कमण्डल) में रख कर स्टेशन के सींखचे पर लटका दिया और स्वय भी सो गये। स्वामी जी के खर्राटों की आवाज सुनकर पण्डित जी यकायक जगे और देखा कि स्वामी जी गहरी नींद में हैं। तुरन्त स्वामी जी को जगाया और कहा महाराज जी राशि कहां है। स्वामी जी ने सींखचे की ओर इशारा किया और कहा वह टगी है। पण्डित जी बोले स्वामी जी इतनी बड़ी राशि को वहां रखा है। उत्तर में महाराज ने कहा घर बार, धन-दौलत, माता-पिता, भाई-बन्धुओं का मोह छोड दिया। कार्याधिक्य के कारण दिन भर व्यस्त रहना होता है रात्रि को शयन के समय प्रभु की प्राप्ति होती है "हम धन के मोह से प्रभु की गोद क्यों छोडें।"

(9) रोग न था

महाराज जी ने एक बार बताया कि कई बार रोग नहीं होता और भ्रांति में रोग समझ कर औषधि का उपचार किया जाता है। उसमे हानि होती है। इस सन्दर्भ मे उन्होंने कहा कि जब मैं उदासी सन्त था और लोग मुझे बाल्टी वाला कहा करते थे। उस समय मण्डली के साथ गुजरात जिले के एक गांव के बाहर ठहरना पड़ा। उस स्थान पर एक देवी अपनी पुत्रवधू को लेकर आई और कहने लगी, पुत्र का विवाह हुए 10 वर्ष हो गये बहू को पुत्र नहीं हुआ। स्वामी जी महाराज ने बुढ़िया को राख की चुटकी दी और कहा इसको दूध में डाल कर दे देना और बहू को एक वर्ष तक खूब [illegible] खिलाना प्रभु अवश्य कृपा [illegible] करेंगे। मण्डली के साथ घूम कर लौटते समय महाराज फिर [illegible] ठहरे।

(क्रमशः)

आर्य समाज क्या करे

ले०—श्री अशोक आर्य एम०ए०बी०एड० (टंकारा)

आर्य समाज एक जागरूक संस्था है। संसार के प्रत्येक प्रश्न को, समस्याओं को अपने सैद्धान्तिक विचार के मापदण्ड पर तोल कर चुनौती देने वाली एक वैचारिक संस्था है। आर्य समाज के पास उत्तरों और समाधानों की कमी नहीं है। संसार के प्रत्येक प्रश्न का अन्तिम उत्तर आर्य समाज की महान् सम्पत्ति है। आर्य समाज के पास धुरंधर विद्वान्, अर्थशास्त्री, आचार्य, पुरोहित, वेद, दर्शन, उपनिषदों के प्रकाण्ड पंडित और तत्ववत्ता हैं।

इन सबके होते हुए भी आर्य समाज की कमजोरी के बारे में प्रायः आर्य पत्रिकाओं में चर्चा अबाध गति से, बिना किसी रोक-टोक से होती देखी जाती है। उनके कारणों की भी चर्चा होनी अनिवार्य है।

—आजादी मिलने के चालीस वर्षों बाद भी आर्यों की सन्तान इतिहास की पुस्तकों में "आर्य बाहर से आये हैं" पढ़ रही है।

—महर्षि के द्वारा स्थापित "गौरक्षिणी सभा" के होते हुए भी देश में हर सुबह आंख खुलने के साथ ही 35 हजार गाय कट जाती हैं।

—संसार को गुरुकुल प्रथा की देन देने वाला आर्य समाज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में भी पिछड़ गया है।

—आर्य समाज के विचारक संसार में क्रान्ति ला सकते हैं। देश को दिशा बोध देकर परिवर्तन ला सकते हैं।

—हमें विचारना होगा हमारे देश में लाखों लोगों का धर्म परिवर्तन किया जा रहा है और हम देखते ही रह जाते हैं।

—आर्य समाज आज अगर थोड़ा-बहुत जिन्दा है तो वह श्रेय उन बलिदानियों को ही है जिन्होंने अपने मिशन की खातिर अपना तन-मन-धन लगा दिया। आर्य समाज इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में बेजोड़ कार्य करता रहा है लेकिन उनके इतिहास को देश की आम जनता जानती नहीं है।

—तनिक सोचिये आर्यो! इस देश पर अगर विधर्मियों का फिर से शासन आ गया तो आर्यसमाज की प्रत्येक शक्ति को नष्ट कर दिया जाएगा और उनके लक्षण उक्त समस्याओं में दिखाई देते हैं। आज संस्कृत की क्या दशा है? क्यों संस्कृत को मिटाया जा रहा है। आर्य समाज के तपस्वियों, विद्वानों, उपदेशकों के विचार को केवल आर्य समाज की चार दीवारों में ही बन्द रहना पड़ता है। क्या सरकार सुनती है हमारी बातें?

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें केवल एक ही उपाय मिलता है। आर्य समाज के पास अपना शासन हो। ग्राम पंचायत से लेकर संसद् आर्यों से खचाखच भरा हो और यह असम्भव नहीं है। महर्षि ने भी जैसा राजा वैसी प्रजा की घोषणा की थी। आगामी राज्य विधानसभा एवम् पंचायतों में आर्य प्रतिनिधि खड़े होने चाहिए। यही अन्तिम उपाय है।

महर्षि दयानन्द वचनामृत—9

1. अपनी आत्मा की रक्षा के लिये धर्म से डर कर धर्म में सदा रहना चाहिये।

2. जन्म के समय सब मूर्ख होते हैं।

3. बिना पूछे कोई नहीं जानता इसलिये विद्वानो से पूछो।

4. कोई विद्वान् मूर्ख स्त्री अथवा अनपढ़ के साथ विवाह न करे और इसी प्रकार विदुषी स्त्री किसी मूर्ख पुरुष के साथ विवाह न करे। किन्तु मूर्ख मूर्खा से और विद्वान् मनुष्य विदुषी स्त्री से सम्बन्ध करे।

5. विद्वानों को चाहिये कि सब के प्रश्नों को सुन के यथावत् उनका समाधान करें।

6. युद्ध की सामग्री बहुत रखनी चाहिये।

7. जब तक पक्षपात रहित समग्र विद्या को जाने हुए धर्मात्मा विद्वान् राज्य के अधिकारी नहीं होते हैं तब तक राजा और प्रजाजनों की उन्नति भी नहीं होती है!

8. जो विद्वान् देश-देश, नगर-नगर द्वीप-द्वीप, गाव-गाव और घर-घर में सत्य का उपदेश करते हैं, वे सबके सत्कार करने योग्य होते हैं।

9. जो विद्वान् और न्यायाधीशों के साथ राजधर्म को प्राप्त करते हैं वे प्रजाजनों मे आनन्द को अच्छे प्रकार देने वाले होते हैं।

10. जो मनुष्य सब मनुष्यों के लिये मित्रभाव से सत्य का उपदेश करते व धर्म का उपदेश करते हैं वे परम सुख को देने वाले होते हैं।

11. मनुष्यों को चाहिये कि जितना सामर्थ्य हो सके उतने से बहुत मित्र करने को उत्तम यत्न करें परन्तु अधर्मी दुष्ट जन मित्र न करने चाहिएं और दुष्टों में मित्रपन का आचरण करना चाहिये, ऐसे हुए पर शत्रुओं का बल नही बढता है।

12. जो मनुष्यों की बुद्धि को उत्तम रक्षा से बढ़ा कर पाप कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न करता है वही सभी को सुख पहुंचा सकता है।

13. मनुष्यों की यही महिमा है जो श्रेष्ठों की पालना और दुष्टों की हिंसा करना।

14. यही विद्वानों का प्रशंसा करने योग्य काम है जो पाप का खण्डन और धर्म का मण्डन करना, किसी को दुष्ट का संग, श्रेष्ठ जन का त्याग नहीं करना चाहिये।

15. जो मनुष्य प्रजा की रक्षा करने मे अधिकार पाये हुए हैं वे धर्म के साथ प्रजा पालने की इच्छा करते हुए उत्तम यत्नवान् हों।

-संकलनकर्ता—
मांगे राम आर्य, प्रधान
आर्य समाज, अहमदनगर
(महाराष्ट्र)

आर्य समाज नवांशहर की गतिविधियां

1. आर्य समाज नवांशहर की ओर से पारिवारिक सत्संगों की लड़ी बड़े उत्साहपूर्वक चल रही है। दिनांक 31-12-89 रविवार साढ़े दस बजे से 12 बजे तक पारिवारिक सत्संग एवम् हवन यज्ञ आदरणीय डा० परशोत्तम देव जी के निवास स्थान मोहल्ला भुच्चरां में सम्पन्न हुआ। पं० देवेन्द्र कुमार जी प्रधान आर्य समाज नवांशहर ने प्रार्थना करवाई एवम् परिवार को आशीर्वाद दिया। श्रीमती प्रेमलता जी भुच्चर ने एक वेद मन्त्र का अर्थ करके प्रवचन दिया।

2. दिनांक 4-1-90 वीरवार बोध चार आर्य डी० ए० एन कालेज आफ एजूकेशन नवांशहर के होस्टल मे हवन यज्ञ का आयोजन किया गया 13-1-90 शनिवार लोहड़ी का पर्व आर्य समाज की ओर से डा० आसानन्द आर्य बाल मन्दिर में आयोजित होगा। सभी आर्य जन बढ़ चढ़ कर इस पर्व में सम्मिलित होने का कष्ट करें।

3. आर्य बाल विद्या मन्दिर नवांशहर की लड़कों की टेबल टैनिस की टीम जिला भर में विजयी रही। और लड़कियों की टेबल टैनिस की टीम रनर्ज अप रही। आर्य समाज की ओर से इन बच्चों को सम्मानित किया जायेगा।

—सुरेन्द्र मोहन तेजपाल,
मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमन्दां, जालन्धर में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बडी श्रद्धा व उल्लास से समारोहपूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम लगभग एक सप्ताह, 1 जनवरी से 7 जनवरी तक चलता रहा। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी, व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री विजय जी शास्त्री ने अपने भजनों व प्रवचनों द्वारा वेद की अमृत वर्षा की। इस उपलक्ष्य मे प्रतिदिन सुबह हवन यज्ञ श्री विजय शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न होता रहा। स्थानीय लोगों में इस उत्सव के लिए काफी उत्साह देखा गया। इन दिनों वेद कथा सुनने के लिए काफी लोग रात्रि को आर्य समाज में पहुंचते रहे हैं।

7 जनवरी 1990 को समारोह का शुभारम्भ प्रातः 10 बजे हवन यज्ञ से हुआ। श्री पं० मनोहर लाल जी, व विजय जी शास्त्री द्वारा यह यज्ञ सम्पन्न कराया गया। श्री सुशील कुमार जी व श्री यशपाल जी इस अवसर पर यज्ञ के यजमान बने।

इसके बाद अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई। जिसके अध्यक्ष नगर के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता कामरेड ससार चन्द जी भू० पू० एम० सी० थे।

इस अवसर पर श्री जगत वर्मा बाबू बूटा राम जी, प० अमर नाथ जी, व श्रीमती कौशल्या देवी जी ने भजनों द्वारा जनता को मुग्ध किया। श्री विजय जी शास्त्री ने अपने ओजस्वी प्रवचन द्वारा सभी श्रोताओं को मोहित कर स्वामी जी को श्रद्धाजलि भेंट की। इसी प्रकार श्री हरबंस लाल जी शर्मा, श्री विजय सेठी, श्री कर्मचन्द जी माली, मोहिन्द्र सिंह के० पी० व कामरेड ससार चन्द जी ने भी अपनी-अपनी श्रद्धांजलि स्वामी जी के चरणों में अर्पित की।

इस अवसर पर श्री हरबन्स लाल जी शर्मा उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री कमल किशोर जी को एक कम्बल व एक सौ रुपये देकर सम्मानित किया। श्री कमल जी ने श्री हरबन्स लाल जी का धन्यवाद व आभार प्रकट किया व यह सब कुछ आर्य समाज के प्रचारार्थ देने की घोषणा कर दी।

ध्वजारोहण श्री विजय जी सेठी (प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन, जालन्धर) ने किया। बाद मे डॉ० ज्ञानचन्द जी (प्रधान आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दां) ने सभी लोगों का सहयोग के लिए धन्यवाद किया। ऋषि लंगर के साथ समारोह की समाप्ति हुई।

—फकीर चन्द

आर्य समाज फोकल प्वाइंट लुधियाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

8, 9, 10 दिसम्बर 1989 को आर्य समाज फोकल प्वाइंट का वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। जिसमे सभी स्थानीय आर्य समाजो के अधिकारी तथा जिला आर्य सभा के सभी अधिकारी उपस्थित थे। रविवार अन्तिम दिन समाज मे यज्ञशाला का शिलान्यास समाज के संरक्षक श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल ने किया। याद रहे इस समाज की स्थापना मुन्जाल साहब ने ही की थी। ध्वजारोहण संरक्षक श्री हरबन्स लाल जी डल ने किया। समाज प्रधान शिवदयाल टुटेजा की अपील पर श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल ने 5100/- रुपये यज्ञशाला के निर्माण के लिए भेंट किये तथा डल साहब ने 10 बोरी सीमेंट भेंट किया। इनके अलावा और भी बहुत सज्जनो ने बहुत कुछ दान दिया। श्री रोशन लाल जी शर्मा ने युवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवको को कार्य क्षेत्र मे आगे लाना चाहिए। डॉ० एस० बी० बाम्बिया जी ने भी अपने प्रभावशाली ओजस्वी वक्तव्य को प्रस्तुत किया। श्री महेन्द्र पाल जी व्यास ने सभी को आर्य सिद्धान्तो पर चलने के लिए तेजतरार शब्दो में ललकारा। आर्य वानप्रस्थाश्रम से स्वामिनी मीरा यतिजी पधारी थी। जिनका तीनों दिन प्रभावशाली व्याख्यान होता रहा। उत्सव के यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० राजेश्वर जी शास्त्री थे। जिन्होंने बड़ी योग्यता से यज्ञ का संचालन किया। यज्ञ पर भाषण भी देते रहे। सभी यजमानों को आशीर्वाद मीरा जी यति ने दिया। कई बहिनों और भाइयों तथा बच्चो के भजन भी हुए। समाज के मन्त्री बलदेव राज तथा कोषाध्यक्ष के० एन० भाटिया और प्रधान शिवदयाल टुटेजा ने यज्ञशाला का निर्माण शिवरात्रि तक हो जायेगा, ऐसी आशा व्यक्त की। स्टेज के संचालक समाज के प्रधान तथा सहायक प० राजेश्वर जी शास्त्री थे। अन्त में प्रधान जी ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया, पश्चात् सभी ने बड़े प्रेम से ऋषि लंगर का प्रसाद ग्रहण किया।

—शिवदयाल टुटेजा—प्रधान

आर्य समाज अजमेर का निर्वाचन

आर्य समाज अजमेर का 107वां वार्षिक निर्वाचन 7-1-90 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री आचार्य दत्तात्रेय प्रधान और रासा सिंह उप-प्रधान निर्वाचित हुए।

आगामी वर्ष के लिये सर्वसम्मति से श्री दत्तात्रेय जी आर्य प्रधान, श्री रासा सिंह जी उप-प्रधान, श्री वेदरत्न जी आर्य मन्त्री चुने गये। इसके अतिरिक्त ठा० प्रेमसिंह जी व प्रो० कृष्णराव जी वाजपेई, दयानन्द कालेज के आचार्य डा० दिनेश सिंह जी, क्षेत्रीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के आचार्य श्री रामपाल सिंह जी, प्रो० जी० एम० जोशी, दयानन्द शोध संस्थान के अध्यक्ष डा० बाबूराम जी शास्त्री, ले० कर्नल प्रभाकर जी आदि समस्त अन्तरंग सदस्य चुने गये। प्रचार उपसमिति व धर्म शिक्षा उपसमिति का गठन भी किया गया।

—वेदरत्न आर्य, मन्त्री

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिन

आज 11-1-90 को हवन यज्ञ के पश्चात् आर्य वानप्रस्थ आश्रम, गुरुकुल बठिण्डा में श्री निरंजन लाल जी आर्य, मानसा मण्डी वालों की प्रधानता में स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन मनाया गया। श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने पूज्यवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन सम्बन्धी सेवाओं का वर्णन करते हुए और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के फील्ड मार्शल के रूप में सफलता दिलाने की इनके तप और त्याग की घटनाओं को बताते हुए उनके चरण-चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 21 अंक 43, 15 माघ सम्वत् 2046 तदनुसार 25/28 जनवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

एकेश्वरवाद—

सुसंगत जीवन पथ— महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री भद्रसेन जी, वेद-दर्शनाचार्य, साधु आश्रम, होशियारपुर

गताक से आगे

'जिस जिस कर्म से जगत् का उपकार हो वह कर्म करना और हानिकारक छोड देना ही मनुष्यो का मुख्य कर्तव्य है।' 10, 225

'सज्जन लोगों को राग, द्वेष, अन्याय, मिथ्याभाषण दि दोषों को छोड, निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनता को धारण करना, उत्तम आचार है और यह भी समझ लें कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है, जब हम अच्छे कर्म करते हैं, तो देश देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने मे कुछ भी दोष नही लग सकता। दोष तो पाप के करने में है।' 10, 226-7

'परोपकार करना धर्म और पर-हानि करना अधर्म कहाता है'

11, 345

महर्षि की इन्हीं भावनाओ को ध्यान में रख कर आर्यसमाज ने अपने सिद्धान्तों और प्रचार में जप-तप, तीर्थ-स्नान-यात्रा आदि कर्मकाण्ड की अपेक्षा सत्य व्यवहार और जनसेवा, समाज सुधार पर अधिक बल दिया है। गीता में अपने कर्तव्यकर्मों के द्वारा ही निस्तारे की बात का प्रतिपादन किया गया है[1]। इस से भी धर्म=अच्छे आचरण के रूप में ही हमारे सामने आता है। इसी की पुष्टि करते हुए श्रीधर पाठक ने 'जगत सचाई सार' मे लिखा है—

'जो तन मन से करता है श्रम,
उचित रीति से चलता है।
सारी वसुधा का क्रम-क्रम से,
सर्वस उस को मिलता है।
हाथ पैर और आख, कान,
बुद्धि से काम जो लेता है।
जीवन का सुख पाता है, वह औरो
को सुख देता है॥'

इस सारे विवेचन से स्वत स्पष्ट हो जाता है, कि धर्म आचरण का नाम है, न कि कर्मकाण्ड का। कर्मकाण्ड तो व्यक्ति को प्रेरणा देने के लिए ही होता है, पर आज कर्मकाण्ड पर अधिक बल देने से उस का व्यापार के रूप मे फैलाव खूब हो रहा है, पर धर्म का फल सुख पुनरपि सामने नहीं आ रहा है। कर्मकाण्ड एक प्रकार से व्यापार का रूप धारण कर रहा है। अत धर्म का फल सुख प्राप्त करने के लिए हमे अच्छे आचरण—सत्य, स्नेह, सयम, ईमानदारी की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी लिए तो कहा जाता है—

यही है इबादत, यही है दीनो इमा।
इन्सान के काम आए इन्सा॥

4. सभी महापुरुषों का सम्मान—

ससार में समय-समय पर अनेक विशेष व्यक्ति हुए, जिन्होंने मानव जाति को सुखी, समृद्ध, विकसित बनाने के लिए सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और भौतिक विज्ञान आदि के क्षेत्र में अपने-अपने समय एव स्थान पर विशेष कार्य किया। जिस भी व्यक्ति ने जिस भी क्षेत्र मे जैसा योगदान दिया, वह तदनुरूप सम्मान का पात्र है। अपने-अपने समय, स्थान और क्रम पर उन-उन व्यक्तियो का वह विशेष योगदान आज के इस विकसित रूप को यहा तक पहुचाने मे सहयोगी बना। जैसे कि जार्ज स्टीफैंसन तथा जेम्स वाट द्वारा आविष्कृत इन्जन चाहे आज की रेलगाडी मे कार्य नही कर रहा। वह चाहे अब पुरातत्त्व की ही वस्तु है, पुनरपि आज के विकसित इन्जनो के विकास मे उस के योगदान को भुलाया नही जा सकता। जार्ज का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा, वह अब अनुकरणीय न होने पर भी कभी यन्त्र विज्ञान के आविष्कार के विकास क्रम मे सहयोगी बना था, अत वह अविस्मरणीय है।

ऐसे ही धार्मिक क्षेत्र मे आज 25 सौ या 19 सौ या 14 सौ वर्ष पूर्व अपने क्षेत्र मे तत्कालिक दृष्टि से जिन्होने विशेष योगदान दिया। अपने समय पर उस क्षेत्र की उन परिस्थितियों मे मानव समाज की सेवा की, उस सेवा के कारण वे सदा स्मरणीय रहेगे। उन का वह योगदान आज की परिस्थिति मे अब चाहे किसी अश मे अनुकरणीय न हो, क्योंकि आज की स्थिति मे अनुकरणीय का निर्णय तो आज की स्थिति के अनुरूप ही होगा। जैसेकि आने-जाने के लिए हम आज के विकसित वाहन को ही पसन्द करते और लेते हैं, न कि प्राचीन को। ऐसे ही चिकित्सा आदि क्षेत्रो में भी सभी विकसित को ही पसन्द करते हैं। अत जिस भी महान व्यक्ति ने जिस भी क्षेत्र मे जिस समय जैसा योगदान दिया, उस योगदान के कारण तदनुरूप वह सदा ही स्मरणीय रहेगा। जैसे कि मध्यकाल मे यज्ञो मे अनेक प्राणियो की बलि दी जाने लगी थी। तब जैन और बौद्ध धर्म के प्रवर्तकों ने अहिंसा का प्रचार किया। ऐसे ही उन दिनो वर्णों के भेदभाव के कारण अनेक प्रकार के स्पृश्यास्पृश्य, ऊच नीच के व्यवहार प्रारम्भ हो गए थे। ऐसी स्थिति मे इन दोनो ने मानव जाति की एकता की बात प्रचारित की।

जिस महापुरुष ने जितने तप तप कर जैसे—कैसे कष्ट सह कर, अभावो मे निर्वाह करते हुए भी जितनी शिक्षा, योग्यता अर्जित की तथा अपनी अर्जित शिक्षा एव योग्यता से मानव जाति का हितसाधक कार्य जितने सयम के साथ किया। वह महापुरुष अपने सयम और कार्य के कारण तदनुरूप सत्करणीय है। वस्तुत जनता को जितना लाभ हुआ, यह बात जहा महत्त्व की है, वहा सेवा करने वाले ने कितने सयम से सेवा की यह भी एक विशेष चीज है, क्योंकि विकार के अवसर आने पर भी जो अपने आप को भ्रष्ट नही होने देते, वे और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं[1] और इस दृष्टि से विशेष अनुकरणीय हैं।

इसी सारे भाव को सामने रख कर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने 'प्रणति' कविता मे कहा—

'नमन उन्हे मेरा शतबार!
सूख रही है बोटी-बोटी,
मिलती नही घास की रोटी,
गढते हैं इतिहास देश का सह कर कठिन क्षुधा की मार।

नमन उन्हें मेरा शत बार!
अर्द्ध नग्न जिन की प्रिय माया,
शिशु विषण्ण मुख जर्जर काया,
रण की ओर चरण दृढ जिन के मन के पीछे करुण पुकार।

नमन उन्हें मेरा शत बार!
जिनकी चढती हुई जवानी,
खोज रही अपनी कुरबानी,
जलन एक जिन की अभिलाषा, मरण एक जिनका त्योहार।

नमन उन्हें मेरा शत बार!
दुखी स्वय जग का दुख लेकर,
स्वय रिक्त सब को सुख देकर,
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उन का आहार।

नमन उन्हें मेरा शतबार।
वीर तुम्हारा लिये सहारा,
टिका हुआ है भूतल सारा

---

1. स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि
लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धि यथा विन्दति
तच्छृणु॥ 18, 45॥
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिद
ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति
मानवः॥ 18, 46॥

1 विकारहेतौ सति न विक्रियन्ते,
येषा चेतासि त एव धीरा।
न्याय्यात्पथ प्रविचलन्ति पद
न धीरा॥ नीतिशतक 84
और इसी दृष्टि से ही मनु ने 'विषयेष्वप्रसक्तिश्च' 1, 89 मे सयम को शासक की एक विशेष खूबी बताया है।

(क्रमश)

सरकार की आरक्षण नीति

ले०—श्री सुशील कुमार जी शर्मा, बस्ती दानिशमन्दां, जालन्धर

सरकार की आरक्षण नीति के विषय में अभी हमारी सभा ने कोई निर्णय नहीं लिया। श्री सुशील कुमार शर्मा ने अपना दृष्टिकोण इस लेख में प्रस्तुत किया है। यदि कोई और महानुभाव भी अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहे तो हम वह भी प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक

सरकार की आरक्षण नीति आजकल हमारे देश मे चर्चा का विषय बनी हुई है। आरक्षण नीति का औचित्य? यह विषय महत्त्वपूर्ण तथा विचारणीय है केन्द्र में नेशनल फ्रंट सरकार की स्थापना होते ही प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह ने यह घोषणा की थी कि उनकी सरकार आरक्षण नीति को जारी रखेगी। गत दिवस संसद् में इस आशय का बिल निर्विरोध पास भी हो चुका है, जिसके अन्तर्गत आरक्षण नीति को दस वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है। इसके साथ साथ ही उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार इत्यादि कई राज्यों मे वहां के विद्यार्थियों तथा आरक्षण नीति विरोधियों ने इसके विरुद्ध अभियान चलाया हुआ है। कई स्थानों से हिंसा तथा यातायात के साधनों में अवरोध पैदा करने के समाचार मिले हैं। आरक्षण विरोधी इस बात की मांग कर रहे हैं कि आरक्षण नीति को तुरन्त समाप्त कर दिया जाये और सबको बिना किसी भेद-भाव या पक्षपात के नौकरियों तथा शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के समान अवसर प्रदान किए जाएं। यह आन्दोलन किस स्तर तक पहुंचा है और कितना सफल होगा, यह कहना तो अभी कठिन है, लेकिन आरक्षण विरोधियों की यह मांग निश्चित रूप से न्यायोचित है। सरकार को चाहिए कि वह मानवीय समानता के आधार पर तथा देश में फैली हुई गम्भीर आर्थिक विषमताओं को देखते हुए इस नीति पर पुनर्विचार करे। यह ठीक है कि दुर्भाग्यवश पिछली कई सदियों तक हमारे समाज में बहुत सी जातियों तथा वर्गों के साथ सामाजिक तथा आर्थिक स्तर पर अन्याय हुआ है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि अब वही अन्याय अन्य वर्गों के साथ जारी रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के कुछ वर्षों तक सम्भव है कि इस नीति का कोई औचित्य रहा हो, लेकिन अब इस तरह इसका लगातार जारी रहना अन्याय से अधिक और कुछ नहीं। भेदभावपूर्ण सामाजिक तथा आर्थिक अन्याय से समाज की विभिन्न जातियों तथा वर्गों में परस्पर द्वेष, वैमनस्य तथा विरोध उत्पन्न होता है। जब तक समाज में किसी भी जाति या वर्ग के साथ किसी भी रूप में अन्याय जारी रहता है तब तक उस समाज मे शान्ति स्थापित नहीं हो पाती। ऐसे राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीयता कर्त्तव्य तथा मानवीय मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना विकसित नहीं होती। अन्याय से ईमानदार, शान्तिप्रिय तथा कानून का सम्मान करने वाले नागरिकों में असन्तोष व निराशा फैलती है, जिससे गैर कानूनी तथा भ्रष्ट साधनों को अपनाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है। दुःख तो इस बात का है कि इस नीति का अन्धाधुन्ध अनुसरण करते हुए बहुत सी राज्य सरकारों ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा निश्चित की गई आरक्षण की सीमा शर्मनाक हद तक पार कर दी है। कई राज्यों में अस्सी या नब्बे प्रतिशत तक स्थान आरक्षित कर दिए गये हैं। बाकी बचे हुए चंद स्थान या तो भारी रकमों से या फिर उच्च अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञों के प्रभाव से हथिया लिए जाते हैं। एक सामान्य व्यक्ति के लिए बेबसी के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता।

भारतीय संविधान में एक ऐसे कल्याणकारी राज्य को स्थापित करने की कल्पना की गई है, जिसमे सबके लिए न्याय, स्वतन्त्रता और समानता हो। नागरिकों को राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय प्राप्त हो। लेकिन आज हमारे राष्ट्रीय जीवन का ढांचा इस प्रकार बन चुका है जिसमें एक सामान्य नागरिक के लिए न्याय की सम्भावना बहुत कम है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर अन्याय, अत्याचार और शोषण—यह है आज का सामान्य जीवन। शासन तन्त्र में फैला हुआ भ्रष्टाचार, लटकाव की प्रवृत्ति, रिश्वतखोरी, दलालों, भाई भतीजावाद इन सब कारणों से लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। नागरिकों को न्याय दिलवाने तथा उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए यह सम्भव नहीं होता कि वे न्यायालय तक पहुंच कर न्याय प्राप्त कर सकें। आर्थिक या अन्य किसी अयोग्यता के कारण आज भी करोड़ों नागरिक न्याय से वंचित रह कर अन्याय को सहन करने पर मजबूर हैं। लोगों को अन्याय तथा शोषण से बचाने के लिए कानून तो बहुत बनते हैं, लेकिन सत्य यह है कि शोषण अबाध जारी है। कौन नहीं जानता कि आज भी एक मजदूर या कर्मचारी को अधिक वेतन पर हस्ताक्षर करवा कर उसे कम वेतन दिया जाता है? सार्वजनिक संस्थाओं में ऐसे हजारों कर्मचारी कार्य कर रहे हैं जिनकी सेवाएं आठ या दस साल के बाद भी नियमित नहीं की गई हैं। जिससे नौकरी अन्य सुविधाओं से वंचित रहने के अतिरिक्त उन्हें आधे से भी कम वेतन दिया जाता है और साथ-साथ अफसरशाही के हाथों शोषण का भी सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त न्यायालयों में न्याय की सुस्त प्रक्रिया न्याय के उद्देश्य को ही समाप्त कर देती है। एक तरफ हमारे देश में करोड़ों लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी बेरोजगारी और बेकारी से जूझ रहे हैं। मानसिक उत्पीड़न और तनाव का शिकार हैं और उस पर यह अन्यायपूर्ण आरक्षण नीति का जारी रहना घोर अन्याय नहीं तो और क्या है? यदि सरकार आर्थिक या सामाजिक रूप से पिछड़े हुए लोगों की कोई विशेष सहायता करना चाहती है तो अवश्य करे लेकिन ऐसा करते समय जातीय आधार पर भेदभाव क्यों? गरीबी, बीमारी और बेकारी की कोई जाति नहीं होती और न ही यह किसी जाति विशेष की समस्या है। एक अयोग्य विद्यार्थी आरक्षण की सीढ़ी पाकर ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच जाता है और दूसरी ओर एक गरीब, योग्य और मेधावी छात्र बेकारी से जूझ कर हार जाता है। एक बात सदैव याद रखी जानी चाहिए कि संविधान के अन्तर्गत हमें एक ऐसे समाज की स्थापना करनी है, जिसमें प्रत्येक नागरिक के लिए चाहे वह किसी जाति, धर्म या वर्ग विशेष से सम्बन्ध रखता है, बिना किसी भेदभाव या पक्षपात के न्याय हो। मानवीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में न्याय हो यही आज समय की मांग है। सरकार की आरक्षण नीति ऐसे समाज के निर्माण में असफल रही है। इससे सामाजिक असमानता जातिवाद और वर्गवाद को बढ़ावा मिला है। इस नीति से लाभ उठाने के लिए अल्पसंख्यक समुदायों में वृद्धि हुई है। यह नीति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा मानवीय मूल्यों और सिद्धान्तों के विरुद्ध है। इसके अन्तर्गत अपेक्षित किए गये उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया जा सका है। इसलिए इस नीति को अविलम्ब समाप्त करके प्रतिस्पर्धा और योग्यता के आधार पर समान रूप से सबको आगे आने का अवसर मिलना चाहिए, तभी सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना सम्भव होगी और राष्ट्र का समुचित विकास प्रारम्भ होगा।

परमहंस स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती महाराज जी

ले० श्री पं० महेन्द्रकुमार जी शास्त्री

(गतांक से आगे)

देवी को सन्तों के दर्शन करने की अगाध श्रद्धा थी, दर्शनार्थ डेरे पर आई तो स्वामी जी को देखते ही पहचान गई कि वही सन्त हैं। तुरन्त घर वापिस लौट कर पौत्र को गोदी में ले, पुत्र और पुत्रवधू को कुछ ही समय में ले आई। सबने प्रणाम किया, देवी ने शिशु को महाराज जी के चरणों पर रख कर कहा भगवान्। आपकी कृपा से मुझे पौत्र के दर्शन हुए। महाराज ने उत्तर दिया—राख की चुटकी केवल विश्वास के लिए थी, बहू रानी को रोग न था अपितु खुराक की कमी थी वह मिल गई और आपकी कामना पूर्ण हो गई।

(10) ये सभी चले गए मैंने भी जाना है

सन् 1954 की बात है गोरक्षा आन्दोलन को जीवन देने के लिए स्वामी जी महाराज ने शरीर की ओर ध्यान न किया और साथ नियुक्त कर्मचारी ने भी ध्यान न दिया। रुग्ण हो गये, दिल्ली पधारे, मैं भी दर्शनार्थ गया। चरणों में प्रणाम कर चारपाई के बराबर नीचे बैठ गया। महाराज जी स्वयं बोले श्री लाला नारायण दत्त जी, श्री बाबा गिरधारसिंह जी जिनके साथ कार्य करने में आनन्द आता था ये सभी चले गये अब मैंने भी जाना है। फिर आपसे मार्ग दर्शन मिलेगा स्वामी जी ने कहा नहीं कुछ दिनों की यात्रा है वह पूर्ण होने जा रही है।

(11) जिसकी बात कभी नहीं टाली अन्तिम समय में भी टाल नहीं सकता

दूसरे दिन मुझे दोपहर बाद महाविद्यालय किरठल के उत्सव पर जाना था अतः प्रातः स्वामी जी की सेवा में उपस्थित होकर जाने की सूचना दी। महाराज जी ने कहा मुझे भी कल बम्बई जाना है। केवल इसलिए कि "जिसकी बात कभी नहीं टाली अब अन्तिम समय में भी टाल नहीं सकता" शरीर का कार्य तो समाप्त हो गया है अब शायद फिर न मिल सकूंगा। तुम जाओ विद्यालय का कार्य भी आवश्यक है। इस प्रकार शरीर छोड़ने से पूर्व ज्ञान होते हुए भी महाराज जी की ओजस्विता गम्भीरता सदा की भांति मुख-मण्डल पर विराजमान थी। महाप्रयाण की तैयारी कर चुके थे। जिसके मिलना था उसका साक्षात्कार कर मिले थे और जिन-जिन को कुछ आदेश देना था दे चुके थे। ऐहिक कार्यकलाप समाप्त कर मोक्षधाम के पथिक बने। उस कर्मयोगी को परम तत्त्व के दर्शन करते पर न मोह न शोक था केवल प्रभु पावन अंक में बैठ कर शाश्वत शान्ति अपना कर शान्त हो जाना था बस शान्त हो गये।

उनके शिष्य एवं भक्त जनों की एक लम्बी शृंखला है। उनके सरल जीवन की सरस अनेकों शिक्षाप्रद घटनाएं हैं। सभी को चाहिए कि आर्य मर्यादा के माध्यम से उनको प्रकाशित करा भविष्य में उनके वृहद् जीवन चरित्र के निर्माण में सहयोगी बने। जिससे मां भारती की भावी सन्तति अपने जीवन ज्योति से आलोकित कर श्रेय के मार्ग का अनुसरण कर लाभान्वित हो।

सम्पादकीय :—

हमारा गणतन्त्र दिवस

प्रति वर्ष 26 जनवरी को सारे भारत देश में गणतन्त्र दिवस बड़े समारोह से मनाया जाता है और इस वर्ष भी मनाया जा रहा है। भारत की राजधानी दिल्ली और भारत के दूसरे नगरों में इसकी तैयारी बड़े उत्साह के साथ की जा रही है। 26 जनवरी के दिन का वैसे हमारे इतिहास में बहुत बड़ा महत्त्व है। 26 जनवरी 1930 को भारतीयों ने रावी नदी के किनारे एक विशाल सभा में भारत को आजाद कराने का प्रण लिया था और उसके बाद से आजादी की लड़ाई निरन्तर लड़ी जा रही थी। इस लिए भारतीयों के दिल में इस दिन का महत्त्व बहुत बढ़ गया था। इस प्रकार संघर्ष करते-करते 15 अगस्त सन् 1947 को भारत आजाद हो गया। फिर 26 जनवरी 1949 को आजाद भारत का संविधान बना और 26 जनवरी 1950 को यह संविधान विधिवत भारत में लागू हुआ। अर्थात् इस दिन भारत में जनतन्त्र (गणतन्त्र) आरम्भ हुआ। जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों ने भारत की बागडोर अपने हाथ में सम्भाली और भारत गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के बाद आगे बढ़ने लगा। भारत का निर्माण आरम्भ हुआ। भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करनी आरम्भ की। अब भारत का धन भारत में लगने लगा, विदेशी लुटेरों से पीछा छूटा। बड़े-बड़े बान्ध, कल-कारखाने बनने लगे, चारों ओर सड़कों का जाल बिछने लगा, यातायात के साधन बढ़ने लगे। देश फिर से कुछ आत्म निर्भर होने लगा। जहां अंग्रेजों के काल में साधारण सी सूई भी विदेशों से मंगवाई जाती थी वहां अब प्रत्येक उपयोगी वस्तु भारत में ही बनने लगी। कृषि और उत्पादन के क्षेत्र में भी भारत आत्म निर्भर होने लगा और प्रत्येक वर्ष आगे ही आगे बढ़ता गया। अब स्थिति यहां तक बन गई है कि भारत बहुत-सी वस्तुओं को विदेशों में निर्यात करने लगा है। देश की रक्षापंक्ति भी बड़ी मजबूत बन गई है। भारत ने अग्नि जैसे परीक्षण भी किए हैं विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत अब कई बड़े देशों की पंक्ति में आकर खड़ा हो गया है। परन्तु कुछ विदेशी ताकतों से भारत की यह उन्नति देखी नहीं जा रही। वह भारत में फिर से विघटन पैदा करना चाहते हैं। जिन लोगों ने मिल कर आजादी की लड़ाई लड़ी थी, आज वह अपने आपको एक दूसरे से अलग समझने लगे हैं। भारत में जातिवाद, प्रान्तवाद, समुदायवाद की प्रवृत्ति पनपने लगी है। धर्म के नाम पर इस धर्म निर्पेक्ष राज्य में राजनैतिक दल बनने लगे हैं। राजनीति का स्वरूप भी बदलता जा रहा है। अब जात-बिरादरी और धर्म के नाम पर वोटें मांगी जाने लगी हैं और चारों तरफ पार्टीबाजी का बोल बाला होता जा रहा है।

हमने आजादी प्राप्त करने के लिए बहुत बड़े-बड़े बलिदान दिए थे। इस आजादी के पौधे को हमने खून से सींच कर प्रफुल्लित किया। आज फल खाने का समय आया तो हमने छीना-झपटी शुरू कर दी। आज गद्दी प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े अत्याचार किए जा रहे हैं। बेकसूर लोगों का कत्ले आम किया जा रहा है। आज कहीं खालिस्तान की मांग की जा रही है। कई प्रान्तों को भारत से अलग करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।

आज जनता में कुछ जागृति पैदा हुई है और उसने पिछले कई वर्षों से चले आ रहे शासन में परिवर्तन कर दिया है परन्तु विदेशी ताकतों की गतिविधियां भी पहले से तेज हो गई हैं। पंजाब और जम्मू कश्मीर की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। कई स्थानों पर भारत के तिरंगे झण्डे के स्थान पर 26 जनवरी को अपने झण्डों को सलामी देने की बात कही जा रही है। जिससे ऐसा लगता है कि कुछ लोग एक बार फिर भारत को टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं। जो आज नई सरकार बनी है उसके सामने अब कई नई-नई प्रकार की समस्याएं खड़ी हो रही हैं। देश में जो लोग अराजकता पैदा कर देना चाहते हैं उन्हें नई सरकार कैसे सम्भालती है। विघटनकारी, मजहबीजनूनी तत्त्वों और भ्रष्टाचारी तत्त्वों से यह सरकार कैसे निपटती है यह आज देखी जाने वाली बात है। परन्तु सरकार के साथ-साथ देश भक्त जनता का भी कर्त्तव्य बनता है कि वह विघटनकारी अलगाववादी, देश द्रोही और भ्रष्टाचारी तत्त्वों को देश में पांव न पसारने दे और देश रक्षार्थ डट कर इनका मुकाबला करे। जनता के सहयोग के बिना सरकार इस कार्य में सफल न हो सकेगी।

26 जनवरी का राष्ट्रीय पर्व मनाते हुए प्रत्येक भारतीयों का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने देश की सेवा व रक्षा का व्रत ले। निश्चय करे कि जिस देश की मिट्टी से हमारा शरीर बना है और जहां से हम अन्न जल तथा जीवन यापन के दूसरे साधन प्राप्त कर रहे हैं और जिसके पदार्थों को प्राप्त करने पर हम उसके ऋणि हैं उस मातृ भूमि के ऋण को चुकाने के लिए उसकी रक्षार्थ यदि हमें अपने प्राण भी देने पड़ें तो उससे भी पीछे न हटना चाहिए। देश की एकता के सूत्र में पिरोये रखने के लिए प्रत्येक जागरूक भारतीय को प्रयत्न करना चाहिए। केवल 26 जनवरी को तिरंगा झण्डा लहरा कर या दिल्ली में एक विशेष शोभा यात्रा निकाल कर या हथियारों आदि की प्रदर्शनी करके हम यह न समझें कि हमने गणतन्त्र दिवस माना लिया है। बल्कि इस दिन को मनाते हुए इस देश की रक्षा का व्रत लें और देश को एकता के सूत्र में बान्धे रखने के लिए निरन्तर प्रयास करें। यह काम केवल सरकार का ही नहीं जनता (प्रजा) का भी है। इस लिए हम सबका यह कर्त्तव्य है कि हम गणतन्त्र दिवस के महत्त्व को समझें और तदनुसार कार्य करें।

—सह-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

आपकी सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा अब धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर रहा है। देश के बाहर की आर्य प्रतिनिधि सभाएं इसे समय-समय पर मंगवाती रहती हैं और इसमें प्रकाशित करने के लिए अपने लेख आदि भेजती रहती हैं। अपने देश में भी दूर-दूर से आर्य समाजें अपनी गतिविधियों के विवरण इसमें प्रकाशित करने के लिए भेजती हैं और कई प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक अपने लेख भेजते हैं। इस प्रकार इस पत्रिका का स्तर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। परन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि पंजाब की आर्य समाजों की ओर से इसे वह समर्थन नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिए। प्राय: सब आर्य समाजें दो-दो तीन-तीन से अधिक इसकी प्रतियां नहीं मंगवाते। कुछ शिक्षा संस्थाएं अधिक मंगवाती हैं और कुछ नहीं मंगवातीं। इसलिए आपसे यह प्रार्थना है कि प्रत्येक आर्य समाज कम से कम पांच प्रतियां अवश्य मंगवाए। जो उससे अधिक मंगवा सकें वह अधिक मंगवाएं। इस पत्रिका में जो लेख होते हैं उनके द्वारा आप आर्य समाज का प्रचार कर सकते हैं। जो पत्रिकाएं आप मंगवाएं उन्हें लोगों को पढ़ने के लिए नि:शुल्क दे सकते हैं। प्रचार का यही साधन होता है। इस समय इसका वार्षिक शुल्क केवल तीस रुपए है। बड़ी-बड़ी आर्य समाजों को एक वर्ष में प्रचार के लिए डेढ़ सौ रुपया व्यय करना कठिन न होना चाहिए। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज की ओर से आर्य मर्यादा की अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर प्रचार के लिए लोगों में नि:शुल्क बांटने की योजना बनाएं।

भवदीय

रणवीर भाटिया	वीरेन्द्र
महामन्त्री	प्रधान

शिवरात्रि विशेषांक

प्रति वर्ष की भान्ति इस बार भी आर्य मर्यादा साप्ताहिक का शिवरात्रि पर्व के अवसर पर 18 फरवरी को एक बृहद विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। जिसमें भिन्न-भिन्न विद्वानों के सारगर्भित लेख व कविताएं प्रकाशित की जा रही है। इसके साथ ही कुछ विज्ञापन भी गत वर्ष की भान्ति दिए जाएंगे। हमारी सभी लेखको से प्रार्थना है कि वह शीघ्र अतिशीघ्र अपने अमूल्य लेख व कविताएं हमें भेज दें। ताकि समय पर उन्हें प्रकाशित किया जा सके हमारी सभी आर्य समाजों, व शिक्षा संस्थाओं व अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह इस अंक के लिए अपने अधिक से अधिक आर्डर तथा विज्ञापन स्वयं भी भेजें और दूसरों से भी भिजवा कर कष्ट करें। एक पृष्ट का विज्ञापन शुल्क केवल मात्र 250 रुपये होगा। आधे पृष्ठ का विज्ञापन भी स्वीकार होगा। सभी आर्य बन्धु विज्ञापन भेज कर अपनी इस धार्मिक पत्रिका को अपना सात्विक सहयोग देकर धर्म लाभ उठावें।

—रणवीर भाटिया (सभा महामन्त्री)

रामजन्म भूमि और आर्यसमाज का दृष्टि कोण

ले० श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

हिन्दू स्वभाव से ही मूर्तिपूजक हैं और इस्लाम का अर्थ ही है बुतशिकनी मूर्ति को तोडना। पैगम्बर साहब ने काबा के धर्मस्थान पर रक्खी विभिन्न देवताओ की मूर्तियो को वहा से हटवा दिया। अब वहा केवल संग असवद ही रह गया है, जिसे हज के समय प्रत्येक हाजी मुसलमान चूमता है। हिन्दुओं के मंदिर निर्माण की कोई सीमा नही, गली-गली, चौराहों, रास्तों, पेड़ो के नीचे, पर्वतों की चोटियों पर गुफाओं, खेतों और खलिहानों में उसने मदिर बनाये और बनाता जा रहा है। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने हनुमान की एक विशाल पर्वतकाय प्रस्तर मूर्ति बनवाई है और उसके निर्माण पर लाखों रुपये भी खर्च किये हैं। मुसलमान की बुतशिकनी की भी कोई इन्तिहा नहीं, उसने हिन्दुओ के मठों, मन्दिरों, धर्मस्थानों और पूजा-स्थलो पर स्थापित मूर्तियों को तोड़ा, उनको धराध्वस्त किया। शायद वह समझता था कि ऐसा करने से ही दुनिया से मूर्तिपूजा हटाई जा सकेगी किन्तु मूर्ति बनाना इन्सानी फितरत है, उसे तोड़ना मनुष्य की जहालत का सूचक है।

स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण भिन्न प्रकार का है। न वे मूर्तिपूजक हैं और न मूर्तिभंजक। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि सृष्टि के विधाता परमात्मा की कोई मूर्ति बनाना सम्भव ही नहीं है। वे इस बात के भी पक्ष मे नही थे कि बने बनाये मदिरों को ध्वस्त किया जाय। जब फार्रुखाबाद के कुछ अति उत्साही आर्यसमाजियो ने उनसे अनुरोध किया कि वे यदि अंग्रेज हाकिम को इशारा भर कर दें तो सड़क के बीच बनी देवता की मढिया हटाई जा सकती है, तो स्वामीजी का स्पष्ट उत्तर था कि मैं तो लोगों के हृदय मे बसी जड़पूजा की भावना को हटाना चाहता हू, मदिरों से मूर्तियों को हटाने मे मेरी कोई रुचि नहीं है।

अवतारवाद के सिद्धान्त के पनपने के पश्चात् ही राम, कृष्ण आदि अवतारी पुरुषों के मंदिर बने। भारत मे मूर्ति-पूजा का चलन जैनों से आरम्भ हुआ। उनके विचारानुसार उनके पूज्य तीर्थंकर ही परमात्मा हैं और उनकी धातु या प्रस्तरनिर्मित मूर्तियों की ही पूजा होनी चाहिए। सनातनधर्मियों ने जैनियों के ही अनुकरण पर चौबीस या दस अवतारों की कल्पना की। तत्पश्चात् राम, कृष्ण आदि के मंदिर बने और उनकी षोडशोपचार, साडम्बर पूजा-अर्चा का आरम्भ हुआ।

वर्तमान मे अयोध्या स्थित राम-जन्मभूमि का विवाद देश के सभी प्रबुद्ध नागरिकों का ध्यान आकृष्ट किये हुए है। भारत के लगभग सभी प्रमुख धर्म-स्थल इस्लामी कट्टरता के शिकार हुए हैं। काशी मे विश्वनाथ के मंदिर को तोड़कर ज्ञानवाणी मस्जिद बनाई गई। जब औरंगजेब ने विश्वनाथ के मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया तो पुजारियों ने शिव प्रतिमा को कुए मे फेंक दिया और अपने भक्तों में प्रचारित किया कि विश्वनाथजी म्लेच्छ के दर्शन नहीं करना चाहते, अत: अपनी इच्छा से ही कूप में प्रविष्ट हो गये हैं। मूर्तियों और उनसे सम्बद्ध चमत्कारों का कोई अन्त नहीं है। ये चमत्कार दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं और अच्छे खासे समझदार लोग भी इन पर सहज भाव से विश्वास कर लेते हैं। मथुरा में कृष्ण जन्मस्थान का मोहल्ला कटरा केशवदेव कहलाता है। वहां भी एक विशाल मस्जिद बनाई गई। सेठ बिड़ला ने इसके पीछे कृष्ण की जन्मस्थली का पुनर्निर्माण कराया और उसे एक भव्य स्मारक रुप दिया।

किसी महापुरुष के जन्मस्थान को ऐतिहासिक दृष्टि से सुरक्षित एव सरक्षित करना शासन का कर्तव्य है। यही कारण है कि महात्मा गांधी के पोरबन्दर स्थित जन्मस्थल, प० नेहरू के जन्म-स्थान आनन्द भवन आदि को ऐतिहासिक महत्ता प्रदान कर उन्हे सर्वसाधारण के लिये दर्शनीय बनाया गया है। राम और कृष्ण तो करोड़ो भारत-वासियों के लिये आदर, प्रेरणा, सम्मान और श्रद्धा के पात्र हैं, अत: यदि उनके जन्मस्थान को ऐतिहासिक स्मारक के रूप मे विकसित किया जाय तो इसमे कुछ भी अनुचित नही है।

जैसा कि मैं निवेदन कर चुका हूं, आर्यसमाज मूर्तिपूजा का विरोधी है, अत: वह किसी स्थान या जड़वस्तु को परमात्मा का प्रतीक मान कर उसकी उपासना करने का समर्थन नहीं कर सकता। हिन्दू मदिरों में प्रचलित जड़-प्रतिमाओं की पूजा-अर्चा वैदिक मन्तव्यों के नितान्त विपरीत है। अयोध्या में भगवान् रामचन्द्र के जन्मस्थान पर अनेक बार मंदिर बने और उतनी ही बार बुतशिकन मुसलमानों द्वारा तोड़े गये। यह स्थान विगत कई शताब्दियों से दोनों सम्प्रदायों के बीच वादविवाद और अभियोग का एक अहम मुद्दा बना हुआ है। सोचना चाहिए कि आर्यसमाज का इसके बारे में क्या दृष्टिकोण हो सकता है।

प्रथम तो भारतवर्ष में जितने धर्म-स्थानों को मध्यकाल मे इस्लाम के आक्रमणकारियों ने दूषित और नष्ट किया उनके बारे में एक श्वेत पत्र बनाने का यत्न होना चाहिए। यह तो सर्वथा असम्भव ही है कि अब तक जितने धर्मस्थान आततायियों के द्वारा भ्रष्ट किये गये हैं वे सभी अपने उसी पूर्व रूप को प्राप्त कर सकेंगे। अजमेर का प्रसिद्ध पुरातत्त्वस्थल अढ़ाई दिन का झोंपड़ा किसी समय जैनमतावलम्बियों की पाठशाला रही होगी, आज वह मुसलमानों के अधिकार में है। दिल्ली में कुतुबमीनार के समीप की कुव्वत इस्लाम नामक मसजिद भी किसी हिन्दू मंदिर को ध्वस्त कर उसके पत्थरों से ही निर्मित हुई है। ऐसे स्थानों की गणना करना भी असम्भव है और यह दिवास्वप्न ही है कि ये सभी धर्मस्थान पुन: हिन्दुओं के अधिकार में आ जायेंगे और वहां पुन: उसी प्रकार की पूजा-अर्चा आरम्भ हो जायगी।

आज अयोध्या स्थित रामजन्मभूमि का विवाद प्रत्येक भारतवासी को आन्दोलित कर रहा है। राजनैतिक पार्टियां इसे अहम मुद्दा बना रही हैं और जन-सामान्य की भावनाओं को भड़का रही हैं। उधर सरकार ने इस सारे विवाद को न्यायालय के सुपुर्द कर दिया है और बड़ी मासूमियत से कह रही है कि दोनों पक्षों को न्यायालय के फैसले को स्वीकार कर लेना चाहिए। किन्तु क्या स्वयं सरकार ने ही अतीत काल मे साम्प्रदायिक मुद्दों से जुड़े संवेदनशील प्रश्नों पर अदालत के फैसलों को स्वीकार किया? शाहबानो को गुजारा भत्ता देने के मामले में सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को न केवल ठुकराया बल्कि सविधान में ही सशोधन तलाकशुदा मुसलमान महिलाओं के भरण-पोषण के लिये उत्तरदायी व्यक्ति को तो सर्वथा मुक्त ही कर दिया। एक बात यह भी है कि बृहत् मानवसमूहों की भावनाओं से जुड़े प्रश्नों पर अदालती फैसले थोपना कभी-कभी हानिकारक सिद्ध होता है। अच्छा तो यही रहता है कि आपस की सूझ-बूझ और सुलह सफाई से ऐसे पेचीदे सवालों का उत्तर खोजा जाय।

शायद आम हिन्दू या आम मुसलमान की ऐसे विवादास्पद प्रश्नों को लेकर निजी दिलचस्पी नही होती। भारत के गांवों, कस्बों और शहरों में बसने वाले आम मुसलमान को बाबरी मस्जिद से क्या लेना देना? वह तो अपने जुमे या ईद की नमाज समीपवर्ती मस्जिद में पढ़ कर ही अपने आराध्य की उपासना कर लेता है। यही बात हिन्दुओं के लिये भी कही जा सकती है। किन्तु आर्यसमाज से तो कुछ अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण की आशा करनी चाहिए। यदि अयोध्या के रामजन्मभूमिस्थल को एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दिया जाता है, तब तो आर्यसमाज उसका समर्थन करेगा। अन्यथा यदि देश के अन्य लाखों मदिरों की भांति इसे भी केवल मूर्तिपूजा का ही अड्डा बनाया जाता है तो कम से कम आर्यसमाज तो इस कार्य को जड़-पूजा को बढ़ावा देना ही मानेगा। भारत की कांग्रेस सरकार सदा से ही अपनी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कुख्यात रही है। उसके नेतागण हिन्दुओं को तो शान्ति, सौमनस्य, भ्रातृभाव और साम्प्रदायिक सौहार्द की सीख देते हैं, किन्तु सैयद शहाबुद्दीन और अब्दुला बुखारी जैसे धर्मान्ध फिर्कापरस्तों की नाक में नकेल डालने की जुर्रत उनमें नहीं है।

अब रामजन्मभूमि का मसला विश्व-हिन्दू परिषद् ने अपने हाथ मे लिया है। इस संस्था का इरादा विवादास्पद स्थान पर 25 करोड़ की लागत का एक भव्य मदिर बनाने का है। इसके शिलान्यास की तिथि निश्चित कर दी गई है और दुनियां भर के हिन्दुओं से अनुरोध किया गया है कि लाखों की सख्या में ईंटें इस मंदिर के निर्माण के लिए भेजें। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार हनुमानजी ने राम-नाम अंकित कर पत्थर की शिलाओं को तैरा दिया था और लंका तक पुल का निर्माण किया था, (श्री रघु प्रताप ने सिंधु तरे पाषाण) उसी भांति राम-नाम अंकित पत्थरों की विधिवत् पूजा होगी, तत्पश्चात् उन्हें समारोह पूर्वक भेजा जायेगा। क्या आर्यसमाज भी ऐसे शिलापूजन का समर्थन करेगा, क्या वह भी 25 करोड़ की लागत से बनने वाले राम मदिर को सैद्धान्तिक दृष्टि से ठीक मानता है?

जैसा कि मैं लिख चुका हू, आर्य-समाज के नेताओं से हम कुछ अधिक विवेक तथा तर्कयुक्त दृष्टिकोण की अपेक्षा रखते हैं। आर्यसमाज हिन्दुओं के अंधविश्वासों से भरे विशाल महासागर मे डूबने के लिए अस्तित्व मे नहीं आया है उसकी अपनी एक परम्परा है, उसका प्रत्येक समस्या पर सूझ-बूझ से युक्त निजी दृष्टिकोण होता है। वह न तो गतानुगति का ही अनुकरण करता है और न हिन्दुओं की प्रत्येक मूढ आस्था एवं अंध-आस्था का ही पोषण करता है। रामजन्मभूमि के पुनरुद्धार में उसका सहयोग कैसे रहे, यह तो सोचने की बात है, वह तो स्वयं अपने संस्थापक ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान का भी उद्धार नहीं कर सका, वह स्थान भी एक जैनी भाई के कब्जे में है।

हमारे हिन्दू भाईयों की भी एक खूबी है। वे किसी सार्वजनिक प्रश्न पर एक मत होना और उसके लिये संघर्ष करना तो जानते ही नहीं। हिन्दुओं में ही पं० कमलापति त्रिपाठी जैसे भी हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

"विश्व के आर्य समाज सेवी" के प्रकाशन की योजना

ले० श्री डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार, 1/116 फूलबाग, पंतनगर—263 145, नैनीताल उत्तर प्रदेश

इस समय देश-विदेश में लगभग 5500 आर्यसमाजें तथा 2000 से अधिक आर्यशिक्षण-संस्थाएं हैं। इनसे समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षणालयों के संस्थापकों तथा आर्यसमाज को एक विश्वव्यापी आन्दोलन का रूप प्रदान करने वाले संन्यासियों, महात्माओं, विद्वानों, नेताओं, प्रचारकों, उपदेशकों, शास्त्रार्थमहारथियों, लेखकों, दानवीरों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का परिचय समग्र रूपमें किसी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं है। परिणामत: अधिकांश आर्यजनों, विशेषकर नई पीढ़ी, को उनके नामों की भी जानकारी नहीं है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वयोवृद्ध स्नातक तथा "आर्यसमाज का इतिहास" के लेखक एवं प्रधान संपादक डॉ० सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने इस अभाव को अनुभव किया और इसकी पूर्ति के लिए आर्य-स्वाध्याय केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित "आर्य समाज का इतिहास" के सातवें भाग में इन सबके सचित्र परिचय प्रस्तुत करने की योजना बनाई। इसके लिए सामग्री एकत्र करने का प्रयास किया गया तथा कुछ परिचय सामग्री भी तैयार करवाई गई। परन्तु वह सामग्री इतनी अधिक थी कि उसे इतिहास संबंधी अन्य सामग्री के साथ इस भाग में सम्मिलित करना संभव नहीं हो सका। इतने पर भी यह सामग्री पूर्ण नहीं थी। अभी देश-विदेश में आर्यसमाज की तन-मन-धन से सेवा करने वाले सैंकड़ों आर्यों के जीवन-परिचय संकलित करने की आवश्यकता थी, ताकि सब नहीं, तो कम से कम अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व के आर्य नर-नारियों का जीवन-वृत्त प्रकाश में लाया जा सके।

इस कार्य की व्यापकता एवं उपादेयता को दृष्टि में रख कर डॉ० सत्यकेतु जी ने यह विचार बनाया कि "आर्य परिचायिका" या "विश्व के आर्यसमाज-सेवी" नाम से एक या अधिक खण्डों में पृथक ग्रन्थ तैयार किया जाय। अपने इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने मुझे इस ग्रन्थ के लेखन एवं संपादन का दायित्व वहन करने के लिए लिखा। यह कार्य वस्तुत: अत्यन्त श्रम-साध्य एवं व्यय-साध्य है, फिर भी उनकी सतत प्रेरणा से इस ग्रन्थ के लेखन, संपादन आदि का दायित्व मैंने इस विश्वास के साथ स्वीकार कर लिया कि मुझे इस समस्त कार्य में उनका तथा आप सबका सर्व-विध सहयोग प्राप्त होगा।

हार्दिक दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि अब जब मैं इस पत्र के माध्यम से आपसे सहयोग की मांग कर रहा हूं, श्रद्धेय डॉक्टर साहेब हमारे बीच नहीं हैं। 16 मार्च 1989 को एक कार दुर्घटना में उनका स्वर्गवास हो गया। परन्तु उनके द्वारा संकलिपत एवं उन्हीं की प्रेरणा से आरंभ किये गये उक्त कार्य को पूरा करने के लिए मैं कृतसंकल्प हूं। मेरा प्रयास रहेगा कि "विश्व के आर्यसमाज-सेवी" नामक यह ग्रन्थ उनकी इच्छा के अनुरुप तैयार होकर प्रकाशित हो सके, यही संपूर्ण आर्यजगत् की उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। यह कार्य आप सबके सक्रिय सहयोग से ही संभव हो सकेगा।

यद्यपि उपलब्ध सामग्री के आधार पर लेखन—कार्य शुरू कर दिया गया है, तथापि प्रथम कार्य अद्यतन एवं अधिक से अधिक सामग्री संकलित करने का है, जिसमें समस्त आर्य नर-नारी निम्न रूपों में अपना योगदान कर सकते हैं—

1. अपना विस्तृत परिचय भेजें, जिसमें निम्न तथ्यों को सम्मिलित किया गया हो—

नाम, जन्मतिथि एवं जन्मस्थान, पिता का नाम, शिक्षा का विवरण, कार्य एवं व्यवसाय, आर्यसमाज के कार्य-कलापों/गतिविधियों से किस रूप में संबद्ध हैं। कालक्रमानुसार विस्तृत विवरण, कृतियां पुस्तकों का नाम, प्रकाशन वर्ष, प्रकाशक एवं प्रतिपादित विषय, प्राप्त पुरस्कार/सम्मान का विवरण आदि।

परिचय—सामग्री के साथ ग्लेज्ड पेपर पर बना पासपोर्ट आकार का फोटो भी भेजा जा सकता है। फोटो के पीछे प्रेषक अपना नाम व पता अवश्य लिख दें।

2. आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले अपने परिवार के सदस्यों, परिचितों, सहयोगियों तथा अपने क्षेत्र की आर्यसमाजों-गुरुकुलों-आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं के संस्थापकों, आर्य विद्वानों लेखकों, शास्त्रार्थमहारथियों, संन्यासियों वानप्रस्थियों, एकनिष्ठ ब्रह्मचारियों, आर्यनेताओं, कर्मठकार्यकर्त्ताओं, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वाले आर्य—सत्याग्रहियों उपदेशकों एवं प्रचारकों से उनकी सचित्र परिचय-सामग्री भिजवाएं उनके पते भी सूचित कर दें, ताकि आवश्यकता होने पर उनसे पत्र-व्यवहार किया जा सके।

3. अपने क्षेत्र के उपर्युक्त वर्ग के उन आर्यजनों के विषय में उपलब्ध प्रामाणिक जानकारी भेजे, जिनका संपूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा और जिन्होंने आर्यसमाज के कार्यकलापों को आगे बढ़ाया, पर वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। यह सामग्री पत्र/पत्रिका/ग्रन्थ में हों तो उसकी एक प्रति भेज दें या उसमें से संबद्ध सामग्री की प्रतिलिपि करके भेज दें।

4. आपके क्षेत्र की आर्यसमाज/आर्यप्रतिनिधि सभा/शिक्षण संस्थाओं ने कोई ऐसी स्मारिका/पुस्तक प्रकाशित की हो, जिसमें उपर्युक्त लोगों के परिचय हों तो उसकी एक पति (मानार्थ) भिजवा दें। उसमें समाविष्ट परिचय-सामग्री को अद्यतम अवश्य कर दें। यदि आपके निजी पुस्तकालय में इस प्रकार की कोई सामग्री हो तो सूचित करें, ताकि आवश्यकता होने पर उसे आप से मंगवाया जा सके। उपयोग के बाद इसे वापस कर दिया जायेगा।

5. आर्यसमाज के किसी भी विद्वान, प्रचारक, संन्यासी, दानी, कर्मठ कार्यकर्ता आदि का परिचय इस ग्रन्थ में सम्मिलित होने से न छूटे, इसके लिए यह आवश्यक है कि देश-विदेश की आर्यसमाजों, जिला उप प्रतिनिधि सभाओं, आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारी अपने-अपने नगर/क्षेत्र के प्रत्येक सक्रिय प्रमुख आर्यजन को अपना सचित्र परिचय सामग्री अपने स्तर पर तैयार करके भिजवाए।

आर्थिक सहयोग—इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के निर्माण से संबधित विविध कार्यों के लिए प्रचुर धनराशि अपेक्षित होगी। जिसकी पूर्ति आपके सहयोग से ही सभव है। आप सहयोग-राशि के रूप में यथाशक्ति धन देने तथा अपने इष्ट, मित्रों, परिचितों, आर्यश्रेष्ठियों, आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं को भी इसके लिए प्रेरित करने का कष्ट करें।

आशा है इस समस्त कार्य में आर्य जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। सामग्री भेजने एवं पत्राचार का पता ऊपर लिखा गया है।

(पृष्ठ 4 का शेष)

जो यों तो तिलक लगाते हैं, पूजा पाठ में घण्टों खराब करते हैं, किन्तु रामजन्मभूमि विवाद में वे हिन्दुओं के आन्दोलन को कुचलने के लिए इस वृद्धावस्था में भी लगोटा कस कर तैयार बैठे हैं। हिन्दुओं में नम्बूदरीपाद और हीरेन मुखर्जी जैसे साम्यवादी हिन्दू भी हैं जो जन्मना ब्राह्मण हैं, किन्तु अपने मार्क्सवादी मुखौटे के कारण प्रत्येक उस चीज से नफरत करते हैं, जिसके साथ हिन्दुओं की आस्था या विश्वास जुड़ा है। इन धर्म को अफीम बनाने वालों के लिये न तो इस्लाम अफीम है और न ईसाइयत। अगर इन्हें किसी आस्था से परहेज है तो वह इस देश मे ही जन्मी, फलीफूली और बढी आर्यधर्म और भारतीयता की आस्थाओं से ही है, जिन्हें देश का बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू धर्म या हिन्दू विश्वास कह कर पुकारता है।

परन्तु क्या रामजन्मभूमि के मामले में सारा सनातनी जगत् भी एक ही बोली बोल रहा है? नहीं। अभी कुछ दिन पहले एक बड़ी मजेदार खबर पढ़ने को मिली। जहां विश्वहिन्दू परिषद् ने राम मंदिर की स्थापना और उसके प्रथम चरण के रूप में शिलान्यास का आयोजन 1989 वर्ष के ही किसी आगामी मास में करना निश्चित किया तो उधर सनातन धर्मसभा के दिल्ली स्थित नेताओं ने एक वक्तव्य देकर कहा कि विश्वहिन्दू परिषद् द्वारा घोषित तिथि तक सूर्य दक्षिणायन ही रहेंगे और कोई भी धार्मिक कृत्य सूर्य के दक्षिणायन में रहते नहीं किया जा सकता। उन्होंने तो यहां तक धमकी दी है कि यदि नवम्बर 1989 में शिलान्यास आदि का कोई कृत्य किया गया तो वे अपने महावीर दल की सेना को लेकर उस शिलान्यास कार्यक्रम को ही नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। लगता है कि रावण की सेना तो जब आयेगी तब आयेगी अब तो राम की सेना के ही कुछ बिगड़े दिमाग लोगों ने इस आयोजन को नष्ट करने के मंसूबे बांध लिये हैं। क्या यह सनातनी आक्रोश बूटासिंह की शह से तो नहीं दिखाया जा रहा है।

जो कुछ भी हो, हमें सनातनधर्म सभा या महावीर दल के इस रवैये से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। कारण कि सनातनी हिन्दू तो सदा ही मुहूर्त, ज्योतिष और दिशाशूल का गुलाम बना हुआ है। मंदिरों की स्थापना की तो बात ही क्या, उसके मान्य फलित ज्योतिष के आचार्यों ने तो जूआ खेलने, चोरी करने, यहां तक कि वारांगना को कृतार्थ करने तक के मुहूर्त निकाल रखे हैं। फिर भला यदि सनातनी नेताओं ने दक्षिणायन में राम मंदिर के शिलान्यास पर आपत्ति की हो तो आश्चर्य ही क्या? खैर, यह झगड़ा उनके ही घर का और वे ही इसे सुलझायेंगे। अभी तो इन विश्व हिन्दूवादियों के मान्य चारों शंकराचार्यों की भी रामजन्मभूमि के बारे में कोई स्पष्ट सम्मति सामने नही आई हैं। तब भला आर्यसमाज को ही क्या उतावली पड़ी है कि वह इसके लिये अपना सिर खपाये।

मेरे विचार से आर्य समाज को अपनी एतद्विषयक धारणा निम्न बिन्दुओं के रूप में व्यक्त करनी चाहिये।

1. रामजन्म स्थान को ऐतहासिक स्मारक के रूप में स्थापित या विकसित किया जाये।

2. इसके लिये जहां पारस्परिक सुलह-सफाई से काम लिया जाये, वहां अनावश्यक तुष्टिकरण को हरगिज सहन न किया जाये।

3. शिलापूजन तथा इसी प्रकार की अन्य मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को निरुत्साहित किया जाये।

4. मुहूर्त आदि को लेकर बखेड़ा करने वाले पौराणिकों का पूरा पर्दाफाश किया जाये।

—दयानन्द शोधपीठ
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी महोत्सव सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 29 30 और 31 दिसम्बर 1989 को विनायकनगर (केशवार्य महाविद्यालय) हैदराबाद के विशाल प्रांगण में बड़ी सज धज एवं उत्साह पूर्ण वातावरण में हैदराबाद सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रद्धा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत के वीतराग सन्यासी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

स्वामी सुमेधानन्द जी, पं० राजगुरु शर्मा तथा महान वेदज्ञ विद्वान पं. पृथ्वी राज तथा पं० विश्वमित्र ने यज्ञानुष्ठान का संचालन किया। गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली और दयानन्द आर्य विद्यालय मद्रास के छात्र व ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ एवं मन्त्रोच्चारण किया तथा मधुर भजन गाये।

श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ध्वजारोहण किया। समारोह से दो दिन पूर्व ही हैदराबाद पधारने वाले आर्यनेताओं से स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रो० शेर सिंहजी पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, पूज्य पाद स्वामी सर्वानन्द महाराज, पं० क्षितीश वेदालंकार, सांसद तथा अ० भा० किसान सभा के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी विकल, श्री छोटूसिंह एडवोकेट आदि उल्लेखनीय है।

पहले दिन ही सम्मेलन के शुभारम्भ के समारोह में प्रतिनिधियों की उपस्थिति पन्द्रह हजार तक थी, जिसमें आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व महाराष्ट्र के विभिन्न ग्रामीणांचलों से स्वतंत्रता सेनानी व आर्यजन लगभग सात हजार प्रतिनिधि पधारे थे तथा विदेश के कौने कौने से लगभग पांच हजार प्रतिनिधि आए इनके अतिरिक्त हैदराबाद नगर व सिकन्दराबाद के हजारों नवयुवक और आर्यबन्धु व असंख्य महिलाएं सम्मेलन के त्रि-दिवसीय सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित रहे।

आर्य सेवा दल शिविर :

सम्मेलन के आरम्भ होने के दस दिन पूर्व दिनाक 19 दिसम्बर 89 से 28 दिसम्बर तक दस दिन सनातन धर्म सभा (बेगम बाजार) में आर्य सेवा दल शिविर का संचालन हुआ, जिसमें प्रदेश के विभिन्न स्थानों के आर्य समाजों से लगभग पांच सौ आर्य नवयुवक सम्मिलित हुए। इस शिविर में प्रतिदिन प्रात: प्रभात फेरी और प्रात: व सांय हवन यज्ञ व भजन, विभिन्न आर्य विद्वानों के प्रवचन, आर्य समाज के विद्वानों का प्रशिक्षण, अनुशासन इत्यादि कार्यक्रम संचालित किये गये. जो अत्यन्त सफल रहा। इस शिविर के संचालन में सर्व श्री पं० विश्वामित्र आर्य, शताब्दी समारोह के स्वागताध्यक्ष नारायण स्वामी वानप्रस्थी डॉ० सूर्यनारायण, डॉ० नन्दनम् सत्यम् सैनिक वेंकटेशम, प० लक्ष्मण आर्य, ए० रामाराव और श्रीमती त्रिभुवनादेवरी आदि का विशेष योगदान रहा है। शिविर के समापन पर सभी शिविरार्थियों को आकर्षक प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

अर्द्ध शताब्दी महोत्सव मनाने के उद्देश्य

1. सन् 1938-39 के आर्य सत्याग्रह एवं धर्म युद्ध के अमर शहीदों के प्रति श्रद्धांजली समर्पित करना और कुर्बानियों से प्रेरणा ग्रहण करना एवं युवापीढी व आर्य समाजियों में नवस्फूर्ति का संचार करना और संगठन को सुदृढ़ करना है।

2. आर्य समाज का लक्ष्य सामाजिक, धार्मिक सुधार करना तथा सांस्कृतिक अभ्युत्थान करना मात्र नहीं अपितु राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़कर समसामयिक समस्याओं पर चिन्तन मनन कर और राजनीतिक नेताओं का मार्ग दर्शन करना तथा राष्ट्र की अखंडता की रक्षा करना भी है। सन् 1938-39 में जो समस्याएं विद्यमान थी, आज भी वे विषम समस्याएं राष्ट्र, के सम्मुख मुंह-बाहे खड़ी हैं। उस समय फासिष्ट केवल एक मीर उस्मान अली खां था, परन्तु आज अनेकों मीर उस्मान खां पैदा हो गए है जिनके पीछे साम्राज्य वादी और अलगाववादी शक्तियां सक्रिय रुप से क्रियाशील है। जो देश की एकता, अखंडता तथा स्वतंत्रता को चुनौतियां दे रही है। देश के सीमा प्रांतों में जैसे पंजाब और जम्मू-कश्मीर में वे अलगाव वादी शक्तियां प्रत्यक्ष रूप से उभर कर आ रही हैं। यह कठिन है कि देश में कहां ऐसे विघटनकारी तत्व फैले हुए नहीं हैं। आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य जहां वैदिक ज्ञान-विज्ञान का प्रचार करना था, वहीं देश की अखडता एवं स्वाधीनता को बरकरार रखना अपना धर्म समझता है। उसने 1938-39 में फासिष्ट निजाम के खिलाफ लड़ कर विजय श्री प्राप्त की थी आज भी आर्य समाज ऐसे अराजक तत्वों के साथ अपने प्राण प्राण के साथ मोर्चा लेना चाहता है और राष्ट्र के अस्तित्व की रक्षा करना चाहता है।

3. तानाशाही निजाम सरकार के विरुद्ध आर्य समाज ने जो धर्मयुद्ध लड़ा था, उसमें आर्यों की आत्मोत्सर्ग की घटनाएं उनके भौतिक शरीरों से बहाया खून देश के प्रत्येक आर्य समाजी को शक्ति दे इसी उद्देश्य से हमने आर्य सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी महोत्सव मनाने का संकल्प लिया गया। यह समारोह, पहले तो शोलापुर में करने का निर्णय लिया गया था परन्तु स्थानीय आर्य समाज ने इतने विशाल सम्मेलन को मनाने से अपनी असमर्थता प्रकट की थी तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की 14 अक्तूबर 1989 की साधारण सभा ने हैदराबाद में 29, 30 तथा 31 दिसम्बर 1989 को आयोजित करने का आदेश दिया, तदनुसार त्रि-दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में आर्य नेताओं के उद्गार

पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव

सम्मेलन के मुख्य संयोजक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने सम्मेलन के शुभारम्भ समारोह के अवसर पर अपने विषय प्रवेश भाषण में कहा :

हैदराबाद रियासत में आसिफुद्दौला का वारिश और अंतिम सातवां निजाम मीर उस्मान अली खां सन् 1911 में सिंहासनारूढ़ हुआ जिसमें ब्रिटिश शासकों के समस्त दुर्गुणों के अतिरिक्त साम्प्रदायिक मतान्धता, क्रूरता और स्वार्थपरता आदि उसे विरासत में मिले थे। प्रथम विश्व युद्ध 1914-1918 के समय से अपने ब्रिटिश आकाओं को अपार धन देकर हजारों लोगों की बलि पशुओं के समान युद्ध की अग्नि में झोंककर और अनेक युद्ध के लिए अस्त्रास्त्र और अनेक साज समानों से मदद करके, उनकी अनुकम्पा और उसने शाही उपाधियां "हिज एक्जाल्टेड हाइनेस-फेथफुल अलाई आफ" दि ब्रिटिश गवर्नमेंट प्राप्त की थी। इन उपाधियों को प्रदान करते हुए जार्ज पंचम ने अपने दिनांक 24-6-1918 को लिखे पत्र में निजाम को विश्व के मुसलमान शासको में "सिर-मौर" और भारतीय मुसलमानों का "आपद श्रेष्ठ बंधु" घोषित किया था। फलत: निजाम के मन में धार्मिक उन्माद और भारतीय मुसलमानों के नेतृत्व की महत्वाकांक्षा जागृति हुई। कुरेशी खानदान और खलीफा खानदानों से अपने रिश्ते नाते जोड़कर विश्व के मुस्लिम समुदाय की सहानुभूति प्राप्त कर ली। उसी धर्मान्धता से प्रेरित होकर उसने निजाम राज्य की 90 प्रतिशत हिन्दुओं की भाषाओं को एवं संस्कृतियों को अपमानित करते हुए दस प्रतिशत मुसलमानों के प्रयोजनों के लिए उर्दू माध्यम से उस्मानिया विश्वविद्यालय का संचालन और समस्त भारत देश को दारुल इस्लाम बनाने के दुस्साहसिक प्रयासों का चक्र चलाया गया। "फूट डालो-शासन करो" ब्रिटिश कूटनीति का अनुसरण करके निजाम विश्व का एक साम्प्रदायिक शक्ति का केन्द्र बिन्दु बनने का प्रयास किया। ऐनुलमलिक नामक सिद्धान्तानुसार राज्य के साधारण मुसलमान से लेकर फकीर तक अपने आपको शाही शासक मानने लगा था। निजाम ने मजलिस इत्तहादुल मुस्लिम जैसी साम्प्रदायिक संस्थाओं की स्थापना के लिए प्रोत्साहित किया।

ऐसे धर्मान्ध फासिस्ट व निरंकुश शासक से यदि किसी संगठन ने लोहा लिया था तो वह केवल आर्य समाज ही था। अनेकों कष्ट बाधा और जेल की निर्मम यातनाएं सहकर त्याग व बलिदानों के द्वारा आर्य समाज ने अदम्य साहस एवं राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। सन् 1938-39 का आर्य सत्याग्रह आंदोलन व धर्म युद्ध आर्य समाज के इतिहास में एक अविस्मरणीय स्वर्णिम अध्याय हैं। आज का यह सम्मेलन उन्हीं स्मृतियों का ताजा उदाहरण है।

पूज्य पाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज :

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने भाषण में धर्म की सविस्तार व्याख्या करते हुए आर्य समाज की श्रेष्ठता सिद्ध की। उन्होंने कहा आर्य समाज की आध्यात्मिक विकास में जहां सहायक है वहां अनुपम देश भक्ति से भी ओतप्रोत है। आर्य समाज भारतीय समाज में यह अपेक्षा करता है कि वह सक्रिय होकर देश की आध्यात्मिकता अखण्डता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाये।

लुधियाना में गणतन्त्र दिवस

आर्य युवक सभा की ओर से आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 26 जनवरी, 1990, शुक्रवार को प्रात: 8-30 बजे से 10-30 बजे तक एक समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समारोह का आरम्भ यज्ञ से होगा, जिसकी अग्नि श्री प्रेम वर्मा, प्रिंसीपल प्रेम माडल हाई स्कूल प्रज्वलित करेंगे।

मुख्य समारोह की अध्यक्षता श्री रोशन लाल शर्मा, प्रधान आर्य युवक सभा करेंगे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री नन्द लाल आहूजा, प्रधान, पंजाब प्रदेश फ्रिडम फाईटर्ज एसोसिएशन होंगे। श्री रणवीर जी भाटिया, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, डा० धर्मवीर शास्त्री, एम० ए० पी० एच० डी०, कामरेड हंस राज जी भी समारोह को सम्बोधित करेंगे। श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक व स्कूल के बच्चे तथा वेद प्रचार भजन मण्डली द्वारा देश भक्ति के गीतों का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा।

नवांशहर में मकर संक्रान्ति पर्व

रविवार दिनांक 14-1-90 आर्य समाज नवांशहर की ओर से आर्य समाज मन्दिर में मकर संक्रान्ति का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सर्व प्रथम हवन यज्ञ एवम सत्सग हुआ।

हवन यज्ञ के पश्चात् नवांशहर नगर पालिका के कार्यकारी श्री डी० डी० सिंगला की अध्यक्षता में उत्सव का शुभारम्भ हुआ। पण्डित देवेन्द्र जी ने मुख्यातिथि का स्वागत किया एवम् आर्य समाज मन्दिर के भवन के पीछे बड़े नाले के सम्बन्ध में इस भवन को आने वाली कठिनाइयो के बारे मुख्यातिथि को परिचित कराया। श्री डी० डी० सिंगला जी ने आश्वासन दिया कि इस बारे में नगरपालिका योग्य कारवाई करेगी।

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मन्त्री आर्य समाज ने मकर सक्रान्ति पर अपने विचार रखे और बताया कि आर्य समाज की ओर से मनाये जाने वाले पर्वों में इसका एक विशेष स्थान है।

तब मन्त्री महोदय ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सभी आर्य समाजो को गर्म कपड़े, कम्बल, जर्सिया आदि निर्धन तथा गरीबी की रेखा से निचले परिवारों मे बाटने के लिए निर्देश दिया। उनके निर्देशानुसार आज यहा आर्य समाज नवाशहर की ओर से 50 नये कम्बल, 50 नयी जर्सिया तथा 50 पुरानी जर्सियां वितरण की जा रही हैं। तब मुख्यातिथि ने अपने कर कमलो से इन गर्म कपडो का वितरण किया। समाज मन्दिर खचाखच भरा हुआ था।

मन्त्री महोदय ने इस कार्य के लिये उन सभी दानी महानुभावों की सूची पढ़ कर सुनाई, जिन्होंने इस कार्य के लिए आर्थिक सहायता दी थी। विशेष तौर पर श्री के० के० सैगर, श्रीमती आदर्श भल्ला, श्री अशोक कुमार चोपड़ा, श्री राजेन्द्र कुमार प्रेमी ने क्रमश 1100/रु०, 500/रु०, 500/रु०, 300/रु० की राशि दान के रूप में दी। आर्य समाज की अन्तरग सभा के कई सदस्यो ने इस कार्य के लिए सौ सौ रुपए दिये।

डी० एस० एम० गर्ल्स कालेज W. L. आर्य गर्ल्स स्कूल तथा डा० आशानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर की छात्राओ ने ग्रुप सौंग पेश किये।

अन्त मे ऋषि लगर प्रारम्भ हुआ जो साय चार बजे तक चलता रहा। लगर के लिये सारी सब्जी की व्यवस्था सब्जी मण्डी के आढती श्री सुदर्शन शर्मा ने की। आर्य समाज की ओर से उनका धन्यवाद किया गया। लगर का प्रबन्ध श्री केशवानन्द कालिया तथा श्री अनिल कुमार जी की देखरेख मे हुआ।

—सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मन्त्री
आर्य समाज नवांशहर

आर्यसमाज तिगांव (फरीदाबाद) का उत्सव

फरीदाबाद (हरियाणा)। यहा से 10 कि० मी० दूर हरियाणा के प्रसिद्ध गाव तिगाव के मझावली मोडस्थित महर्षि दयानन्द विद्या मदिर में आर्य समाज के तीसरे वार्षिक उत्सव में फरवरी मे शिवरात्रि के अवसर पर 19 से 25 तारीख तक सामवेद पारायाण यज्ञ का आयोजन होगा। ज्ञात हुआ है कि इस अवसर पर आर्य साहित्य प्रदर्शनी जिला स्तरीय आर्य सम्मेलन आर्य समाज के सिद्धान्त इतिहास और वर्तमान कार्यक्रमो से सम्बन्धित भिन्न प्रदर्शनी आदि विविध कार्यक्रम आयोजित होंगे। कार्यक्रमो की पूर्णाहुति 24, 25 फरवरी को विशेष उत्सव के रूप मे बडी धूम-धाम से होगी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध और सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर 'हस' श्री बृजपाल शर्मा 'कर्मठ', श्री भाग चन्द आर्य, श्री आर्य वीर 'भल्ला', श्री सत्य देव 'स्नातक' आदि विद्वानों के अतिरिक्त अनेको केन्द्रीय और राज्य स्तरीय राजनैतिक नेता एव सामाजिक कार्यकर्त्ता भाग लेने हेतु विशेष रूप से पधार रहे है। इस कार्यक्रम के सयोजक और स्थानीय आर्य समाज के प्रधान प० देवी राम आर्य जनता से इस कार्यक्रम मे अधिक से अधिक सख्या में पधारने की अपील करते हुए सफल बनाने की प्रार्थना की है।

राजकोट में योग शिविर सम्पन्न

राजकोट दिनाक 8-1-90 आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, राजकोट के तत्त्वावधाव मे 10 दिन का योगप्रशिक्षण शिविर का आयोजन दर्शन योग विद्यालय के आचार्य पूज्य स्वामी श्री सत्यपति जी अध्यापक ज्ञानेश्वर जी आर्य और ब्रह्मचारी अर्जुनदेव वर्णी ने इस योग शिविर का मार्गदर्शन और सचालन किया।

दस दिन के इस शिविर मे शिविरार्थियो को अष्टाग योग का मार्गदर्शन, जीव ईश्वर प्रकृति का ज्ञान, कर्म, उपासना पद्धति और योग का प्रशिक्षण और योग मे आने वाली बाधाओ से प्रशिक्षित कराया गया।

शिविर के समापन प्रसग पर आयोजित सभारभ मे शिविरार्थिओ ने दुर्गुणों का त्याग करना और सद्गुणो को धारण करना इस विषय मे अनेको प्रकार की प्रतिज्ञायें ली।

राजकोट जिला के ससद् सदस्य श्री शिवलाल भाई वेकरीया ने इस प्रसग पर उपस्थित रहकर शिविरार्थिओं को इस प्रकार की सुन्दर प्रवृत्ति करने पर धन्यवाद दिया।

आर्य समाज के प्रधान श्री पोपटभाई चौहान ने सभारभ में आभार विधि की।

सभा सचालन आर्य समाज के मन्त्री महोदय श्री रणजीत सिंह परमार ने किया।

—हरकान्त भाई

आर्य लेखक कोश के प्रकाशन में सहयोग दें।

आर्य समाज के विख्यात विद्वान् तथा शोध निर्देशक डा० भवानी लाल भारतीय ने अपने 20 वर्षों के घोर परिश्रम से ऋषि दयानन्द से लेकर आज तक के डेढ हजार आर्य लेखको विद्वानो पत्रकारो, शोधकर्मियों, कवियो तथा साहित्यकारो का एक विशाल विवरणात्मक कोश तैयार किया है। छपने पर इसकी पृष्ठ सख्या 700 के लगभग होगी तथा इसमे बहुमूल्य सामग्री का सग्रह रहेगा। मैं इस प्रान्त की प्रत्येक आर्य समाज से अपील करता हू कि डा० भारतीय द्वारा सम्पादित इस कोश के अग्रिम ग्राहक बनने हेतु उन्हे 100 रु० अग्रिम मूल्य के रूप मे प्रेषित करने की कृपा करें। प्रकाशित होने पर कोश का मूल्य अधिक हो सकता है। किन्तु छपने पर यह ग्रन्थ आर्य साहित्य मे सर्वथा अद्वितीय होगा और पाठक इस ग्रथ के लेखक को साधुवाद देगे।—लेखक का पता

प्रो० भवानीलाल भारतीय
कोठी न० 41, सैक्टर 15 ए०
चण्डीगढ़—160015

अमृतसर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस परम्परागत ढग से बडी श्रद्धा और उल्लास के साथ आर्य नेता वैद्य विद्यासागर जी की अध्यक्षता मे 24-12 89 रविवार 10 बजे से दोपहर 12-30 बजे तक मनाया गया, जिसमे वैदिक गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की छात्राए व अध्यापिकाए, श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राए व अध्यापिकाए और शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए।

मुख्य प्रवक्ता के अतिरिक्त श्री दीवान चमन लाल, श्री ओम प्रकाश भाटिया, श्री श्याम लाल, श्री रमेश चन्द्र आदि ने भी श्रद्धाजलि देते हुए स्वामी जी के आदर्शों को कायम रखने की प्रेरणा दी। इसी बीच डा० राजा राम शास्त्री ने अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मल जी को श्रद्धाजलि देते हुए प्रभावशाली ढग से हिन्दू, सिख एकता और साम्प्रदायिकता की भावना समाप्त करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बिस्मल तथा उनकी माता जी के पद-चिन्हो पर चलने की भी अपील की। इसके पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने सभा को सम्बोधित किया। शान्ति पाठ के बाद यज्ञशेष वितरित किया गया।

—प० पवन त्रिपाठी

आर्य समाज मखू का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मखू फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव 24-12-89 रविवार को निम्न प्रकार सर्व सम्मति से हुआ।

1. प्रधान-श्री भगतराम कटारिया।
2. उप-प्रधान—श्री सोहनलाल शर्मा।
3. मन्त्री—श्री ठाकुर दास धवन।
4. उपमन्त्री—श्रीकृष्ण मनचन्दा।
5. कोषाध्यक्ष-श्री हंसराज आहूजा
6. परामर्शदाता—श्री कुन्दनलाल आहूजा तथा श्री बलबीर कुमार।
7. सदस्य—श्री अरायती राम, श्री राम पाल, श्री केवल कृष्ण, श्री मदन लाल बेदी।

जालन्धर में मकर संक्रान्ति

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर, जालन्धर मे 14-1-90 रविवार प्रातः 7-30 बजे से 9 बजे तक मकर सक्रान्ति पर्व समारोह से मनाया गया, जिस मे उपस्थिति काफी अच्छी थी। जिसमे सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार पर्व-पद्धति से यज्ञ किया गया। समाप्ति पर रेवड़ियो आदि का यज्ञशेष बाटा गया और शान्ति पाठ के साथ कार्यवाई समाप्त की गई।

—मुलखराज आर्य

हकीकतराय बलिदान दिवस एवम् बसन्त मेला

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति एवम् आर्य समाज सरोजिनी नगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान मे धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस एवम् बसन्त मेला रविवार 4 फरवरी 1990 को प्रात. 8-30 बजे से दोपहर 1-30 बजे तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात. 8-30 बजे से 9-30 बजे बृहद यज्ञ पण्डित हुकमचन्द वेदालकार सम्पन्न कराएगे। 9-30 बजे से 10-00 बजे तक श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन होंगे। 10-00 बजे से 12-00 बजे तक स्कूलो के बच्चो का मनोरजक कार्यक्रम होगा, जिसमे धर्मवीर हकीकत राय की जीवनी पर भाषण, कविता, भजन आदि प्रस्तुत करेंगे। 12-00 बजे से 1-00 बजे तक श्रद्धाजलि सभा होगी, जिसमे पण्डित सतीश वेदालकार, श्री यशपाल सुधाशु, श्री यशपाल शास्त्री, श्री डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली सभा व श्री सूर्यदेव मन्त्री दिल्ली सभा आदि महानुभाव पधारेंगे।

—रोशनलाल गुप्ता, मन्त्री

दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द दिवस

11-1-90 को आर्य समाज में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया सर्वप्रथम प्रभात फेरी निकाली गई सांय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक विचार सभा हुई जिसमें भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला प्रिंसिपल नन्दकिशोर जी ने कहा कि स्वामी जी जब एक बार कोई नियम बना देते थे तो उसपर दृढ़ रहते थे परन्तु आज आर्य समाज के सदस्यों में देखा जाता है कि स्वयम् नियम बनाते हैं और स्वयम् तोड़ देते हैं स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि यदि आज स्वामी जी होते तो पंजाब की वर्तमान समस्या आज को कब की समाप्त हो गई होती अन्त में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कहा कि स्वामी जी जैसा निडर निर्भीक और स्पष्ट वक्ता मिलना कठिन है वे केवल मात्र सन्यासी ही नहीं थे वह राजनीतिज्ञ भी उच्चकोटि के थे।

—रघुनाथ सिंह

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के निर्णय

रांची, स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची के प्रधान पं० जगमदत्त शर्मा के सभापतित्व में गत दिनों सम्पन्न हुई कार्यकारिणी की बैठक में बिहार, बंगाल, उड़ीसा और मध्यप्रदेश के 22 जिलों को मिला कर पृथक् झारखण्ड राज्य की मांग को अव्यवहारिक बताते हुए छोटा नागपुर एवं संथाल परगना के 12 जिलों का पृथक् छोटा नागपुर राज्य बनाने की मांग का समर्थन किया है। सभा की दृष्टि में प्रस्तावित पृथक् छोटा नागपुर राज्य आर्थिक दृष्टि से देश का उन्नत राज्य होगा।

दूसरे प्रस्ताव में बिहार सरकार की उर्दू सम्बन्धी नीति का विरोध करते हुए इसे वोटों की राजनीति से अभिप्रेरित बतलाते हुए इससे बिहार के किसी भी तबके की जनसंख्या को किसी भी प्रकार के लाभ को सन्देहास्पद बतलाया गया है।

तीसरे प्रस्ताव में भारत सरकार की वर्तमान आरक्षण नीति जिसके कारण विशेष वर्गों को ही नौकरी देने की व्यवस्था है, उसका विरोध करते हुए सरकार से अनुरोध किया गया है कि ऐसे वर्गों में योग्यता पैदा करने के लिए उन्हें भोजन आवास के साथ-साथ विश्वविद्यालयस्तर तक की शैक्षिक एवं तकनीकि शिक्षा निःशुल्क व्यवस्था की जाये।

चौथे प्रस्ताव में दूरदर्शन पर अंग्रेजी के बढ़ते हुए अनावश्यक प्रयोग की निन्दा करते हुए राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया गया है कि वे महत्त्व पूर्ण सार्वजनिक कार्यक्रमों के अवसर पर राष्ट्र भाषा हिन्दी का ही प्रयोग करें।

—शास्त्री पं० गोविन्द प्रसाद आर्य, सह मन्त्री

सोनीपत में संक्रान्ति महोत्सव सम्पन्न

आर्य वीर दल सोनीपत [illegible] एवम् हिन्दू [illegible] सोनीपत के तत्वावधान में [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] सोनीपत) की [illegible] में [illegible] [illegible] सोनीपत में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संक्रान्ति यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सुशीला अरोड़ा, [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] आर्य, [illegible] जी, [illegible] आर्य ([illegible] हिन्दू दल), हरिचन्द स्नेही ([illegible] आर्य वीर दल), [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] एवम् श्री [illegible] आर्य ने संक्रान्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि घर-घर में वेद वाणी का प्रसार एवम् प्रचार हो ताकि अन्धविश्वासों को दूर किया जा सके। [illegible] [illegible] को [illegible] के लिए प्रोत्साहित किया गया।

—[illegible]

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

दूरभाष : 73020

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 21 अंक 44, 22 माघ सम्वत् 2046 तदनुसार 1/4 फरवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है

ले०—श्री पं० सत्य व्रत जी सिद्धान्तालंकार

वेद विषयक हमने जो लेख लिखे हैं उनका मुख्य-लक्ष्य आर्य समाज के तीसरे नियम को समझने का यत्न करना है। आर्य समाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब 'सत्य'-विद्याओं का पुस्तक है" इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का 'अदिति'-शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। 'अदिति' के लिये ऋग्वेद (1. 89. 10) में निम्न मन्त्र है :

> अदितिः द्यौ अदितिः अन्तरिक्ष
> अदितिः माता स. पिता स पुत्रः।
> विश्वेदेवाः अदितिः पञ्चजना
> अदिति जात अदिति जनित्वम्॥

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि संसार में जो कुछ है, वह 'अदिति' है। 'अदिति'—शब्द 'दिति' से बना है। जो 'दिति' न हो वह 'अदिति' होगा। 'दिति'—शब्द 'दो. अवखण्डने' धातु से बना है। 'दिति' का अर्थ है—'खंडित' 'अदिति' का अर्थ हुआ—'अखंडित'। खंडित का अर्थ है—एक से दो, दो से तीन, तीन से चार—इस प्रकार बटते जाना, अखंडित का अर्थ है—सदा-सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम 'विज्ञान' कहते हैं, वह सब 'दिति' के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी सत्य माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते असत्य हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। और सब-कुछ 'अदिति' है, जो जात या जनित्व है, वह सब 'अदिति' है, तो वेद भी 'अदिति' है, सत्य भी 'अदिति' है, वेद-ज्ञान भी 'अदिति' है। वेद-ज्ञान को 'अदिति' कहने का अर्थ हुआ 'अखंडित'-ज्ञान, ऐसा जो [illegible] एक बना रहता है, कभी [illegible] सदा एक, सनातन। [illegible] 'अदिति'-ज्ञान के लिए ऋग्वेद (8. 18. 6) में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है।

> अदितिर्नो दिवा पशु अदितिर्नक्त
> अद्वया
> अदिति. पात्वंहस सदावृधा॥

इस मन्त्र में 'अदिति' के लिए 'अद्वय' तथा 'सदावृध' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'अद्वय' का अर्थ है—जो दो न हों, 'सदावृध' का पद-च्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं—'सदावृध'—अर्थात्, जो सदा बढ़ता, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे, बटता रहे, इसका दूसरा अर्थ है—सदा अवृध, तो सदा एक रहे, एक से दो, दो से तीन न हो, नित्य सनातन, एक रूप में बना रहे। इस प्रकार वेद ने ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है—'अदिति' 'सदावृध' तथा 'सदा+अवृध'। 'अदिति' वह ज्ञान है जो सदा एक रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते, 'सदावृध' वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल यह, बढ़ेगा तो बदल कर ही तो बढ़ेगा—यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा में 'विज्ञान' कहते हैं, यह ज्ञान सदा+अवृध' वह ज्ञान है जिसे हम पहले 'अदिति' कह आये हैं—सत्य-ज्ञान, अखंडित ज्ञान, एक ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय-ज्ञान कहते हैं। भौतिक-ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, सदावृध रहता है, बदलता रहता है, यह भौतिक विज्ञान है, इसका गुरु-शिष्य-परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है, आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, 'अदिति' या 'अद्वय' है, एक सदा-सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है। संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह सत्य है, सत्य-ज्ञान' है। 'सत्य' सदा एक रहता है, अखंडित रहता है, वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा 'अद्वय' है, अदिति' है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है, और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा 'द्वय' होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसल्मान हो, यहूदी हो, पादरी हो सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं, सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो द्वेष भी करो, सब कहेंगे कि परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर पर अपकार भी करो। ये तथा इस प्रकार के अनेक ऐसे आधार भूत तत्त्व हैं जिन्हें 'अद्वय'—अर्थात् उनमें दो पक्ष नहीं हो सकते—ऐसा सब-कोई कहते हैं। अगर 'अदिति' का अभिप्राय 'अद्वय' है, तो वेद ने इस शब्द को उक्त मन्त्र में 'सदावृध'—शब्द के साथ जिसका अर्थ है—सदा वर्धमान, सदा बदलने वाला—रखा ? 'वर्धमान' तो वह तत्त्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा, बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है कल वैसा नहीं है, अर्थात् पहले जैसा नहीं है। बीज या जो विचार बदलता रहेगा वही तो बढ़ेगा। वेद के एक साथ 'अद्वय' तथा 'वर्धमान' को जोड़ देना एक रहस्य की बात है। इस रहस्य को खोलने का कुछ प्रयत्न हम पहले कर चुके हैं, कुछ अब प्रयत्न करेंगे। यजुर्वेद के 40वें अध्याय में 'विद्या' तथा 'अविद्या'—इन दो शब्दों का उल्लेख करते हुए लिखा है

> अन्यदाहु विद्यया, अन्यदाहु.
> अविद्यया।
> इतिशुश्रुम धीराणां येनस्तद्
> व्याचचक्षिरे॥
> विद्यां च अविद्यां च यस्तद् वेद
> उभय सह।
> अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्यया
> अमृत अश्नुते॥

वेद के ये दोनों मन्त्र विलक्षण हैं। इनमें से पहले का अर्थ तो स्पष्ट हो गया अक्षर-ज्ञान तथा पढ़ने लिखने को हम 'विद्या' कहते हैं, वेद का कहना है कि 'विद्या' तथा 'अविद्या' के ये अर्थ नहीं हैं। इतना ही नहीं, इन शब्दों के यथार्थ-अर्थ बतलाते हुए वेद का कहना है कि 'अविद्या' रूपी-विद्या से मनुष्य मृत्युजय बन जाता है, मृत्यु को जीत लेता है, परन्तु 'विद्या'-रूपी-विद्या से तो वह अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। वेद की यह विलक्षण घोषणा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक तथा लौकिक शब्दावली में जमीन-आस्मान का अन्तर है। उक्त घोषणा से स्पष्ट है कि वेद यहां भौतिकवाद तथा भौतिक विज्ञान को 'अविद्या' कह रहा है क्योंकि औषधि आदि भौतिक औषधियों से उसी प्रकार के भौतिक साधनों से जीवन को दीर्घ किया जा सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है, मृत्यु समुद्र को तरा जा सकता है, किन्तु अमरत्व तो सिर्फ अध्यात्मवाद तथा अध्यात्म-विज्ञान से ही प्राप्त होता या हो सकता है। तभी कहा—'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा'—और आगे कहा—'विद्यया अमृत अश्नुते।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहाता है जब वह 'वर्धमान' हो, आगे आगे बढ़े। आज का वैज्ञानिक-जगत् इसीलिए श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल वही परीक्षण तथा खोज करते-करते गलत मान कर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान रुक जाये, किसी जगह आकर खड़ा हो जाये, तो वह फैंक देने लायक होगा। परन्तु हमारी यह बात सिर्फ भौतिक विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। आध्यात्मिक तत्त्व सदा 'अद्वय', 'वर्धमान' होता हुआ भी 'अवर्धमान' होता है। हिंसा' से शुरु कर मनुष्य 'अहिंसा पर आकर रुक जाता है, 'असत्य' से शुरु कर 'सत्य' की खोज में भटकता है, चोरी-डाके-'स्तेय' से चलता-चलता शान्ति-सन्तोष—'अस्तेय' को जीवन का लक्ष्य बनाता है।

(क्रमशः)

हिन्दी बनाम अंग्रेजी—अंग्रेजी देश की जनता की भाषा नहीं ?

ले० प्रो० चन्द्रप्रकाश जी आय, अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
दयालसिंह कालेज, करनाल

अंग्रेजी पिछले 200 वर्षों से इस देश मे पढाई जा रही है परन्तु दो से चार प्रतिशत लोग ही इसे अब तक जान पाए हैं। इससे देश की सांस्कृतिक एव आर्थिक सम्पदा का भारी अपव्यय हुआ है। यदि हम अंग्रेजी वर्चस्व के सामाजिक एवं आर्थिक कुप्रभाव का विश्लेषण करे तो इसके परिणाम भयावह है। देश के अधिकाश लोग अपनी बौद्धिक एव मानसिक क्षमता का उपयोग नही कर पाए हैं क्योकि वे अंग्रेजी नहीं जानते। कुछ विशिष्ट गिने चुने व्यक्ति ही समाज में उच्च पद प्राप्त कर लेते हैं। पब्लिक स्कूल एवं अंग्रेजी में शिक्षा कुछ लोगो तक ही सीमित है। अंग्रेजी के कारण देश के सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों मे भारी असमानता फैली है। अध्येताओं का कहना है कि अंग्रेजी के कारण देश मे वर्गप्रभुता तथा पूंजीवाद को बढावा मिला है, नगर और ग्राम के लोगो में विभाजन हुआ है। अधिकांश नौकरिया अंग्रेजी पढे लिखे शिक्षित शहरी लोगों को प्राप्त होती हैं जिससे ग्रामीण जनता पिछड़ रही है। देखें :—'दी ट्रिब्यून'', चण्डीगढ 30-3-88, 25-4-88 'पालिटिक्स आफ इगलिश।

अंग्रेजी का इस देश की सामाजिक एवं सास्कृतिक परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नही है। इससे एक विशेष वर्ग को प्रोत्साहन मिला है। अंग्रेजी प्रतिष्ठा या जड़प्न का प्रतीक हो गई है आकड़े यह बताते हैं कि अल्पसख्यक सम्पन्न वर्ग ही चिकित्सा, इन्जीनियरिग, प्राविधि, प्रशासनिक तथा शिक्षा आदि सेवाओं के उच्च पदों पर अधिकार किए हुए हैं, इसके विपरीत देश की 96% जनता के बच्चो की शिक्षा माध्यमिक स्तर पर ही समाप्त हो जाती है।

स्कूल स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर पर सैकड़ों हजारों विद्यार्थी अंग्रेजी में फेल होते हैं। छात्र वर्ष का अधिकाश समय अंग्रेजी पढ़ने में लगाते हैं फिर भी परीक्षा मे अंग्रेजी का डर बना रहता है। केरल देश का सर्वाधिक पढ़ा-लिखा प्रदेश माना जाता हैं, किन्तु वहां भी अंग्रेजी अध्ययन के जो दुष्परिणाम सामने आए हैं वे चौंका देने वाले हैं। एक अध्ययन—'फैक्टर्स रिलेटिंग टू अन्डर अचीवमेंट इन इगलिश—इन दी स्कूल्ज ऑफ केरल'—ले० मर्सी अब्राहम—(इंडियन बुक क्रानिकल नई दिल्ली जुलाई 16/1979) के अनुसार अंग्रेजी के कारण राष्ट्र की मानवीय एव बौद्धिक क्षमता का भारी अपव्यय हुआ है। यद्यपि यह अध्ययन केरल तक सीमित है परन्तु यह स्थिति पूरे भारत पर लागू होती है।

जब केरल की यह स्थिति है तो देश के अन्य प्रदेशों का तो कहना ही क्या ? यहा तक कि बंगाल मे जिसे देश का सबसे जागरूक प्रान्त कहा जाता है और जो कभी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गढ़ था वहा भी बच्चे अंग्रेजी को भली भान्ति नही समझते। एक अध्ययन के अनुसार 'इंगलिश एजुकेशन इन इंडिया एक्सपेसियली इन दी कन्टेक्स्ट आफ बगाल-ले० के. के. चटर्जी (इंडियन बुक क्रानिकल 1 मई 77) कलकत्ता जैसे महानगर में अंग्रेजी जानने का अर्थ कुछ शब्दों तक सीमित है।

यदि केरल और बंगाल जैसे प्रान्तों में अंग्रेजी अध्ययन की यह दशा है, तो देश के अन्य प्रान्तों में अंग्रेजी शिक्षा के विषय में कहना ही क्या ? हरियाणा का उदाहरण दिया जा सकता है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड (भिवानी) द्वारा प्रकाशित मैट्रिक परीक्षा परिणाम गजट, मार्च 1981 (भाग दो पृष्ठ 1630), मार्च 1982 (भाग तीन पृष्ठ 1081) की पास% तालिका के अनुसार दसवीं में अंग्रेजी में फेल होने वाले विद्यार्थियों की सख्या सर्वाधिक है। दशक के अन्त में स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि 1988 की दसवी परीक्षा में छात्र अंग्रेजी में भारी सख्या में अनुतीर्ण हुए जिसके कारण बोर्ड को निर्णय लेना पड़ा कि अंग्रेजी मे पास होना अनिवार्य नहीं।

यह तो रही स्कूल स्तर की बात। कालेज एव विश्वविद्यालय स्तर पर भी अधिकांश छात्र अंग्रेजी मे फेल होते हैं। विद्यार्थी सारा साल अंग्रेजी पर लगाते हैं, अंग्रेजी मे ट्युशन भी पढ़ते हैं। फिर भी परिणाम निराशाजनक होते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की 1981-82 की स्नातक कक्षाओं के परिणाम यही दर्शाते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अप्रैल 1982 के रिजल्ट गजट (I) प्री-यूनिवर्सिटी, पृष्ठ 219 (II) बी० ए०/बी० एस० सी०-I पास कोर्स, पृष्ठ 166 (III) बी० ए०/बी० एस० सी०-III पृष्ठ 166 की पास% तालिका के अनुसार इन परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम 44% से 53% तक रहे हैं। दशक के अन्त में कालेजों में स्थिति यहां तक आ गई है कि कक्षाओं में वही अध्यापक सफल हैं जो अंग्रेजी को हिन्दी माध्यम से पढ़ा सकते हैं जबकि अंग्रेजी के लिये अन्य विषयों की तुलना में पीरियड भी अधिक दिए जाते हैं। ग्यारहवीं तथा बारहवीं हिन्दी (कोर) के लिए 3-4 पीरियड दिए जाते हैं जबकि अंग्रेजी (कोर) के लिए 8-9 पीरियड प्रति सप्ताह दिए जाते हैं। आज से 20 वर्ष पूर्व भी जब लगभग पूरे पंजाब तथा हरियाणा में पंजाब यूनिवर्सिटी का क्षेत्राधिकार था, अंग्रेजी की यही स्थिति थी।

पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित प्री-यूनिवर्सिटी (ह्यूमेनिटिज) रिजल्ट गजट, अप्रैल 1973, पृष्ठ 886-87 के अनुसार 1969 से 1973 तक की प्री-यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम क्रमश: 49%, 48%, 53%, 57% तथा 54% रहे हैं। यह उस वक्त की बात है। आज तो स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वर्ष 1988-89 से पंजाब के सभी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्ययन अनिवार्य विषय के रूप में समाप्त कर दिया गया है। उससे अधिक पंजाब, हरियाणा में अंग्रेजी की स्थिति के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं।

इस प्रकार देश तथा देश की जनता एवं विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा के भयानक परिणाम हुए हैं। अंग्रेजी देश में आर्थिक एवं सामाजिक विषमता का कारण बनी है, एक वर्ग विशेष के प्रभुत्व का कारण बनी है, फिर भी यह कहा जाता है कि हिन्दी लोगों पर थोपी जा रही है। स्थिति सर्वथा विपरीत है। वास्तव मे अंग्रेजी देश पर लादी गई है। अंग्रेजी के लगातार प्रयोग ने हिन्दी के राष्ट्रभाषा, देश की सम्पर्क भाषा बनने के मार्ग मे रोड़ा अटकाया है।

यह भी कहा जाता है कि हिन्दी भारतीय भाषाओ पर हावी हो रही है, हिन्दी के कारण देश की अन्य भाषाओं का विकास रुक जाएगा। वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। हिन्दी के विकास में भारतीय भाषायें बाधक नहीं हैं जितनी अंग्रेजी। हिन्दी का भारतीय भाषाओं से टकराव नही है अपितु वे इसके विकास में सहायक हैं, इसीलिए त्रिभाषा फार्मूला राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने हारा है। यह विद्यार्थियों के लिए बोझ नही है। केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी० आई० आई० एल०) मैसूर द्वारा किए गए एक अध्ययन 'दी लेंगुएज लीड, पृष्ठ 129 के अनुसार भारत जैसे विशाल, विविध भाषायी देश के लिए अनेक भाषाओं का अध्ययन आवश्यक एवं अनिवार्य है। आवश्यकता है आज त्रिभाषा फार्मूले को दृढ़ता से लागू करने की

विज्ञान एवं तकनीकी साहित्य के सदर्भ में भी हिन्दी पर दोष लगाया जाता है कि उसमें विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य का अभाव है परन्तु यहा भी अंग्रेजी आड़े आ रही है। अंग्रेजी जानने वालों का ही विज्ञान एवं तकनीकी पर एकाधिकार बना हुआ है। जनसाधारण विज्ञान के लाभों से वंचित है। राष्ट्रीय विज्ञान, तकनीकी एवं विकास अध्ययन संस्थान द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण (इकोनोमिक टाइम्स नई दिल्ली 20/1/89) के अनुसार कृषि को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में विज्ञान एवं तकनीकी का लाभ आम जनता तक बहुत कम पहुंचा है। विद्यार्थी अंग्रेजी भी नहीं समझ पाते ऐसी स्थिति में युवा पीढ़ी के लिए अंग्रेजी के सहारे विज्ञान के गूढ़ विषयों को समझ पाना अत्यन्त कठिन हो गया है क्यों कि अंग्रेजी उनकी व्यवहार की भाषा नहीं है। वे जबरदस्ती उसको पढ़ रहे हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी हमारे देश में सर्वोच्च कोटि का वैज्ञानिक कार्य नहीं हो पाता क्यों कि उसका माध्यम अंग्रेजी है। मौलिक अनुसन्धान अंग्रेजी या विदेशी भाषाओं में नहीं हो सकता। इसके लिए हमें रूस और चीन की तरह अपनी भाषाओ को अपनाना होगा।

अंग्रेजी देश की भाषा नही है। इसका पठन-पाठन उद्देश्यविहीन है। यह देश की परम्पराओ से जुड़ा हुआ नहीं है इसका अध्ययन इसके पढ़ने वालों की व्यवहार की भाषा के साथ जुड़ा हुआ नहीं है और साहित्य रचना भी इसमें नहीं हो सकती। साहित्य रचना या तो मातृभाषा या फिर राष्ट्रभाषा में हुआ करती है। किसी विदेशी या बाहरी भाषा में हम मौलिक लेखन नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में अंग्रेजी का अध्ययन राष्ट्र के भाषाई, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक लक्ष्यों से जुड़ा हुआ नहीं है।

इसके विपरीत हिन्दी जनता की भाषा है। वह देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं से जुड़ी हुई है। यह फिल्मों की भाषा है, देश की सर्वाधिक प्रचलित फिल्में हिन्दी में ही होती है। हिन्दी रेडियो की भाषा है, आकाशवाणी के गानों की भाषा है। यह दूरदर्शन की भाषा है, दूरदर्शन के सर्वाधिक लोकप्रिय धारावाहिकों की भाषा है। रामायण की भाषा क्या थी ? हिन्दी-अंग्रेजी क्यों नहीं ? क्यों कि वह जनता की भाषा नहीं देश की सांस्कृतिक एवं भाषाई परम्परा से जुड़ी हुई नही दूरदर्शन के अन्य महत्वपूर्ण धारावाहिक सीरियल की भाषा हिन्दी ही क्यों चुनी गई ? क्यों कि देश की अधिकांश जनता इसको समझती है।

अत: यदि हम हिन्दी को देश की जन-जन की सम्पर्क भाषा बनाना चाहते हैं तो हमें सभी स्तरों पर- सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक आदि स्तरों पर हिन्दी को अपनाना होगा। हिन्दी का विरोध राष्ट्र का विरोध है। हिन्दी का टकराव भारतीय भाषाओं से नहीं है, उसका विरोध अंग्रेजी के साथ है और वह भी राष्ट्रभाषा के प्रसंग में भाषा के रूप मे नहीं। यदि हम 1857 से लेकर 1947 तक देश की आजादी की लड़ाई लड़ सकते हैं और देश को स्वतन्त्र करा सकते हैं, तो क्या आज हम अपनी भाषा को जनता की भाषा को, भारत की भाषाओं को नहीं अपना सकते ?

(आर्य वीर, बिजय से साभार)

सम्पादकीय :—

आर्य समाज और साम्यवाद

संसार के राजनैतिक मानचित्र में कुछ ऐसा परिवर्तन हो रहा है, जिस के लिए कुछ समय पहले कोई भी तैयार न था। साम्यवाद आन्दोलन के नेता लेनिन ने 1920 मे पहली बार रूस मे साम्यवादी साम्राज्य की स्थापना की थी। उस के बाद धीरे-धीरे साम्यवाद का क्षेत्र बढ़ता गया। और एक समय वह आया जब आधा यूरोप उस के प्रभाव के नीचे आ गया। ऐशिया में चीन, जोकि सबसे बड़ा देश है, साम्यवादी बन गया। यूरोप मे रूस और ऐशिया मे चीन— इन दोनों का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और आज संसार मे कोई भी देश ऐसा नहीं, जहाकि लोग साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित न हुए हों। मजदूर और किसान विशेषतः इस से प्रभावित होते हैं और यही दोनों वर्ग प्रत्येक राजनैतिक सत्ता का आधार होते हैं। दूसरी तरफ अमेरिका, बर्तानिया, फ्रांस, जर्मनी और अन्य कई देश पूजीपति सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था का समर्थन करते रहे हैं। इस प्रकार संसार मे दो शक्तिया आपस मे टकरा रही है और यह आशा की जा रही थी कि सम्भवत इन में से समाजवादी शक्तिया अधिक प्रभावशाली बन जाए।

परन्तु पिछले दो वर्षों में ऐसी स्थिति पैदा हुई है कि यूरोप मे विशेषतः साम्यवाद का विघटन प्रारम्भ हो गया है। जो देश कल तक साम्यवादी समझे जाते थे आज उन सब देशों मे एक ऐसी क्रान्ति आई कि साम्यवादी राजनैतिक व्यवस्था को समाप्त किया जा रहा है। यूरोप की सब से बड़ी शक्तिशाली राजनैतिक पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी समझी जाती थी। आज उसका अस्तित्व भी संदिग्ध हो गया है और अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यूरोप में जो परिवर्तन आ रहा है उस का एक परिणाम सम्भवत यह भी हो कि संसार मे साम्यवाद ही समाप्त हो जाए। यदि रूस मे साम्यवादी राज्य व्यवस्था न चल सकेगी तो किसी और देश में कैसे चलेगी। इसी लिए मैं समझता हू कि साम्यवाद का भविष्य अत्यन्त धूमिल है यद्यपि अभी यह कहना भी कठिन है कि उसके बाद स्थिति क्या बनेगी। इस बात से भी इन्कार नही किया जा सकता कि पूजीवादी राज्य व्यवस्था भी सर्व साधारण को स्वीकार नही। उसके विरुद्ध भी समय-समय पर विद्रोह की भावना पैदा होती रहती है। जब साम्यवाद के महान् नेता कामरेड लेनिन ने पूजीवाद के विरुद्ध अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया था तो उसका एक कारण यह भी था कि वे यह कहते थे कि पूजीवाद मानव के शोषण का एक साधन बन जाता है इस लिए इसे समाप्त करना आवश्यक है। यह कहना कठिन है कि यदि साम्यवाद समाप्त हो जाएगा तो गरीब जनता पूजीवाद को स्वीकार कर लेगी। जो शोषण पूजीवाद मे होता है, वह समाजवाद मे नहीं होता। फिर भी इसके पश्चात् स्थिति क्या बनेगी। इसके विषय मे कुछ कहना कठिन है।

प्रश्न किया जाएगा कि जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उसका आर्य समाज से क्या सम्बन्ध है। मैंने इस लेख का शीर्षक 'आर्य समाज और समाजवाद' रखा है तो इस लिए कि मैं चाहता हू कि संसार मे जो नई क्रान्ति आ रही है। आर्य समाज उस की तरफ भी ध्यान दे और फिर सोचे कि जो नई दुनिया अब बनेगी, उस में आर्य समाज के लिए क्या स्थान होगा। हमारी कठिनाई यह है कि हमने अपना क्षेत्र इतना सीमित कर लिया है कि हम यह सोचते ही नही और देखते ही नहीं कि हमारे घर से बाहर क्या हो रहा है।

इस समय आर्य समाज यद्यपि दूसरे कई देशों मे अपने ढग से काम कर रहा है परन्तु उसे अपने प्रेरणा स्रोत अर्थात् भारत से किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिल रहा। न भारत की आर्य समाज उन का मार्ग प्रदर्शन कर रही है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का हृदय कितना विशाल था और वे कितने दूरदर्शी थे, यह अनुमान हम इस से लगा सकते हैं कि उन्होंने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का मन्त्र हमारे कानो मे फूका था। आर्य समाज के उन्होने जो दस नियम बनाए थे, उन मे एक नियम यह भी था कि "संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।" वे ऐसे व्यक्ति आर्य समाज के लिए तैयार करना चाहते थे, जो इस देश की सीमाओ से बाहर जा कर वैदिक धर्म का सदेश दे सकें। इसके लिए उन्होने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को विद्या प्राप्त करने के लिए इग्लैंड भेजा था। तात्पर्य यह है कि महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण बहुत विस्तृत था। यदि आज जीवित होते तो वे अवश्य सोचते कि यदि संसार मे साम्यवाद समाप्त हो रहा है तो उसका स्थान कौन सी विचार धारा लेगी। और सभव है, वे उसी प्रकार का एक सम्मेलन करते जैसा कि एक बार उन्होंने देहली दरबार के समय किया था। वे पहले आर्य समाज के बुद्धिजीवियो को एकत्र करते और उन से कहते कि संसार मे जो परिवर्तन आ रहा है, उस के विषय मे सोचो कि आर्य समाज मानव को कौन सी दिशा दिखा सकता है। उसके पश्चात वे एक और बड़ा बुद्धिजीवी सम्मेलन बुलाते और वहा इस पर विचार करते।

परन्तु आज आर्य समाज मे एक भी व्यक्ति ऐसा नही, जो इन समस्याओ के विषय मे सोच सके। पिछले दिनो देहली मे आर्य समाज के बुद्धिजीवियो का सम्मेलन हुआ था। वहा उन समस्याओ पर विचार अवश्य किया गया था। जो आज आर्य समाज के सामने है। परन्तु वह केवल विचार ही हो कर रह गया उससे आगे कुछ नही हुआ, उसका एक कारण यह है कि आर्य समाज का वर्तमान नेतृत्व इन गम्भीर समस्याओ पर विचार करने को तैयार नही कि वे इन समस्याओ को समझ सके। आर्य समाज के बुद्धिजीवियो के सामने एक समस्या रखना चाहता हू। वह यह कि साम्यवाद की समाप्ति के साथ संसार में जो पतिवर्तन आएगा। क्या उस मे आर्य समाज महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर संसार को कोई नया रास्ता दिखाया जा सकता है। मैं जानता हू कि मुझे इसका कोई उत्तर न देगा। परन्तु मैंने इस विषय मे जो कुछ सोचा है उसे आर्य जनता के सामने अवश्य रखना चाहता हू। वह क्या है? यह आगामी अक मे प्रस्तुत करूगा।

—वीरेन्द्र

स्वामी श्रद्धानन्द का स्मारक खतरे में है

अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कई स्मारक हैं। परन्तु आज मैं उनके उस विशेष स्मारक की ओर आर्य जनता का ध्यान दिलाने लगा हू जो उनकी तपो भूमि थी और जिसके कारण उनका नाम दुनिया के कोने-कोने तक पहुचा है। मेरा अभिप्राय गुरुकुल कागड़ी की उस पुण्य भूमि से है, जहा गगा के पास स्वामी जी महाराज ने गुरुकुल कागड़ी की आधारशिला रखी थी। आज उस पुण्य भूमि को देखने वाला कोई नही। गगा की लहरें उसकी भूमि को खा रही हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ समय के पश्चात् उस भव्य भवन को भी जो वहा खड़ा है, गगा अपनी गोदी में ले लेगी। मैं और आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान स्वनामधन्य श्री पडित हरबन्स लाल जी शर्मा पिछले दिनों इसे देखने गए थे। बहुत कुछ गगा खा चुकी है और ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत जल्दी स्वामी जी की अन्तिम निशानी भी समाप्त हो जाएगी। उस भवन मे आज भी कुछ उन लोगो के पत्थर लगे हैं जिन्होंने इस गुरुकुल को बनाने के लिए दान दिया था। अब वे पत्थर भी निकाले जा रहे हैं, दरवाजे और खिड़किया भी निकाल कर ले गए हैं। परन्तु अधिक खतरा तो गगा की तरफ से है, जो उसकी जमीन को खा रही है।

इसकी रक्षा कौन करेगा? किसी समय गुरुकुल कागड़ी के प्रबन्ध का सारा भार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब पर था, अब वह तीन सभाओ पर है इसलिए यह सस्था एक अनाथ सस्था बनती जा रही है सम्भवत यही कारण है कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की अन्तिम निशानी भी जा रही है। मैं इसे आर्य समाज का परम दुर्भाग्य समझता हू। आज स्थिति ऐसी बन गई है कि जिस सस्था पर हम कभी गर्व किया करते थे, आज उसे नही बचा सकते। मैं यह सारी स्थिति जनता के सामने इसलिए रख रहा हू कि अभी भी यदि हम सब मिल कर इस सस्था को बचा सकें तो यह केवल आर्य समाज पर ही नहीं सारे देश पर उपकार होगा। यदि हम कुछ न कर सके तो इतिहास हमे कभी क्षमा न करेगा।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा का 18 फरवरी का अंक ऋषिबोध विशेषांक होगा।

एकेश्वरवाद—

सुसंगत जीवन पथ— महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री भद्रसेन जी, वेद-दर्शनाचार्य, साधु-आश्रम, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

होते तुम न कहीं तो, कब का उलट गया होता संसार।

नमन तुम्हें मेरा शत बार।

चरधूलि दो, शीश लगा लूं,

जीवन का बल तेज जगा लूं,

मैं निवास जिस मूक स्वप्न का, तुम उस के सक्रिय अवतार।

नमन तुम्हें मेरा शत बार

विविध क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य करने वाले महापुरुषों के अनेक प्रेरणाप्रद प्रसंग हैं। जो कि आज भी अनुकरणीय हैं। जैसे कि—

एक पत्नी के व्रत को पालने वाले श्रीराम पिता की आज्ञा को पूर्ण करने के लिए माता कैकेयी के कहने पर चौदह वर्ष वन-वन भटकते रहे। वनवास के बाद लोकापवाद से सती सीता को पुनः वन में भिजवा कर अपने राजापन को ही श्रीराम ने निभाया, पर राजा होते हुए भी दूसरा विवाह नहीं किया। अपने ऐसे विविध गुणों के कारण ही श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलवाए।

महान त्यागी पन्ना धाई ने अपने प्राणप्रिय जिगर के टुकड़े को उदयसिंह के स्थान पर रख कर बनवीर के क्रोध का शिकार बनवा दिया।

महाराणा प्रताप ने जंगलों की खाक छानने पर भी दूसरों की तरह अकबर से सन्धि न करके स्वाधीनता के दीपक को हर स्थिति में प्रज्वलित किया। और उस भामाशाह को कौन भूल सकता है, जिस ने राणा प्रताप के विचलित मन को आश्वस्त करने के लिए अपनी सारी सम्पत्ति महाराणा के चरणों में रख दी।

वीरवर शिवा जी ने अपने सैनिकों द्वारा प्रस्तुत शत्रु की युवा बेटी को अपने अन्तःपुर में न रख कर सम्मान सहित उसके घर पहुंचवाया।

मद-भूजन की इच्छा का ध्यान रखते हुए अपना महल टेढा बनवाने वाले ईरान के राजा नौ शेर वां।

बिना किसी भेदभाव को सामने रखे नार्वे के धनपति नोबेल ने अपनी सारी सम्पत्ति किसी भी क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वालों के लिए अर्पित कर दी।

ऐसे ही संसार के इतिहास की यह अपने आप में अनोखी घटना है कि एक पठित इक्कीस वर्षीय युवक सच्चे शिवदर्शन और अमरता की चाहना से घर-बार छोड़ता है। चौदह वर्ष लगातार भटकने के बाद मथुरा में गुरुवरजी से पहुंचता है, फिर गुरु की प्रेरणा से उस के जीवन का कांटा ही बदल जाता है। और तब उस ने लम्बे समय से चले आ रहे विविध भावना भरे, साहित्य का आलोडन कर के जन कल्याण के लिए 'सुसंगत जीवनपथ' प्रशस्त किया। जो कि जीवन्त, व्यावहारिक, तर्कसंगत और शास्त्रसम्मत भी है। इस कार्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती जहां आज स्मरणीय हैं, वहां अपने अनेकविध विचारों से अनुकरणीय भी हैं।

महापुरुषों द्वारा विविध क्षेत्रों में किए गए महान कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महर्षि ने अपनी रचनाओं में उस-उस योगदान और गुण के कारण उन की प्रशंसा की है। बिना किसी यथार्थ के, केवल पराएपन की घृणा या ईर्ष्या से किसी भी महापुरुष की निन्दा करने वालों को महर्षि ने आड़े हाथों लिया है और इस कारण से भी पुराणों को पसन्द नहीं किया।

इस सम्बन्ध में यहां यह बात विशेष चर्चा के योग्य है, क्योंकि यह आम धारणा है कि महर्षि दयानन्द ने सब का खण्डन ही किया है। वस्तुतः महर्षि जब सच्चे गुरु के माध्यम से सच्चे शिव दर्शन की खोज के लिए निकले, तो उन्हों ने लगातार चौबीस वर्ष इस मे लगाए। इस लम्बे (1846-70) समय में हजारों ग्रन्थों को पढ़ा और सैंकड़ों विद्वानों, साधुओं, योगियों, महन्तों का सम्पर्क किया। तब महर्षि ने यह अनुभव किया कि अधिकतर के विचार असम्बद्ध, असंगत, असम्भव हैं, और जनता को बहका कर भुलावे में रख रहे हैं। इसी दृष्टि से सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने उन सब की समालोचना की। जिस का आधार केवल सत्य और असत्य को स्पष्ट करना मात्र है। इस भाव का महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अनेकधा संकेत किया है और इस बात से सम्बद्ध कुछ वाक्य इस रचना के प्रारम्भ में उद्धृत हैं। महर्षि ने जिस भी महापुरुष की जो भी अच्छाई अनुभव की, उस की उन्होंने भरपूर प्रशंसा की।

महर्षि दयानन्द ने अपनी रचनाओं में जहां प्रसंगवश अनेक महापुरुषों का सम्मानपूर्वक स्मरण किया है, वहां बहुत सारे स्थलों पर अनेक महापुरुषों की महिमा का भी संकेत किया है। जैसे कि—

क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय विद्वान्—सत्यार्थ० समु० 1, पृ० 13

ऐसा ब्रह्मा से ले के आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है। पृ० 32

भारत वर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि—3, 70

जिस पुरुष वा स्त्री की विद्या धर्म वृद्धि और सब संसार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करे। जैसे पञ्च शिखादि पुरुष और गार्गी आदि स्त्रियां हुई थीं। 5, 122

श्री कृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे—7, 163

जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा से ऋग्, यजुः, साम और अथर्व का ग्रहण किया। ...वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। 7, 175

आर्यावर्तीय अर्जुन तथा महाराजा युधिष्ठिर आदि—8, 194

जो श्री रामचन्द्र जी से दक्षिण में युद्ध हुआ—8, 194

ब्रह्मा का पुत्र विराट्, विराट् का पुत्र मनु, मनु के मरीच्यादि दश, उनके स्वायम्भुवादि सात राजा और उन के सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यावर्त के प्रथम राजा हुए, जिन्हों ने यह आर्यावर्त बसाया। 8, 195

शुकाचार्य ने पिता से एक प्रश्न पूछा कि आत्मविद्या इतनी ही है वा अधिक? व्यास जी ने—10, 225

श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पाताल में अश्वतरी अर्थात् जिस को अग्नियान कहते हैं। उस पर बैठ के उद्दालक ऋषि को ले आये थे। 10, 226

(क्रमशः)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों को सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते!

आपका ध्यान हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 17-12-89 की प्रस्ताव संख्या 9 की ओर दिलाना चाहते हैं। इसके अनुसार सब आर्य समाजों को कार्यवाही करनी चाहिए। जिन आर्य समाज मन्दिरों में इस समय कोई शिक्षा संस्था चल रही है और वह आर्य विद्या परिषद् से सम्बन्धित नहीं है, उन आर्य समाजों को सभा को सूचित करना चाहिए और इसी के साथ सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया है उसे क्रियान्वित करने के लिए जो कार्यवाही आर्य समाज करे उससे भी अवगत कराया जाए। यह अत्यन्त आवश्यक है कि जो प्रस्ताव अन्तरंग सभा पारित करती है सब आर्य समाजें उसके अनुसार आगे कार्यवाही करें। जिस प्रस्ताव की ओर ऊपर हमने आपका ध्यान दिलाया है, वह निम्नलिखित था—

"सभा प्रधान जी ने बताया कि कुछ आर्य समाजों के भवनों में माडल स्कूल, प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल तथा कालेज चल रहे हैं। अमृतसर आर्य समाज का झगड़ा भी आर्य मन्दिर में चल रहे स्कूल और कालेज के कारण ही है। इसी प्रकार का विवाद मोगा में भी खड़ा हो गया है। मैं समझता हूं कि किसी भी आर्य समाज मन्दिर में स्कूल का चलना अनुचित है। इससे आर्य समाज को लाभ के स्थान पर हानि हो रही है। न तो स्कूलों से इस समय आर्य समाजी विचारधारा के विद्यार्थी ही निकलते हैं, न ही आर्य समाज को इसका कोई आर्थिक लाभ होता है। इसलिए जिन आर्य समाज मन्दिरों में स्कूल चल रहे हैं उन्हें अपने स्कूलों के लिए आर्य समाज मन्दिर से अलग भवन बनाना चाहिए और इसके साथ ही जो स्कूल वह चला रहे हैं उसका सम्बन्ध आर्य विद्या परिषद् पंजाब के साथ होना चाहिए।

विचार विमर्श के बाद सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि किसी भी आर्य समाज के भवन में कोई भी स्कूल न खोला जाए और जो स्कूल समाज के भवन में चल रहे हैं उनके लिए अलग भवन बनाये जाएं। इसके साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि किसी भी आर्य समाज से सम्बन्धित कोई भी स्कूल चाहे वह आर्य माडल स्कूल हो, प्राइमरी स्कूल हो, हाई स्कूल या कालेज हों, उसे आर्य विद्या परिषद् के साथ सम्बन्धित किया जाए। जो आर्य समाजें इसके लिए तैयार न हों वह अपने स्कूल कहीं और ले जाएं और आर्य समाज मन्दिर को खाली कर दें।

भवदीय

रणबीर भाटिया
महामन्त्री

वीरेन्द्र
प्रधान

आहार विहार एवं व्यवहार ही स्वास्थ्य का मूल कारण

लेखक—श्री विजय कुमार शास्त्री, आर्य समाज श्री गंगानगर (राजस्थान)

निरन्तर काम करते रहने से हमारी शरीर की शक्तियाँ खर्च होती हैं। स्वस्थ रहने के लिए इस कमी को पूरा करना आवश्यक है। इसके लिए भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन के लिए आवश्यक चीज है—(1) प्रोटीन (2) शर्करा (3) चिकनाई (4) खनिज लवण (5) विटामिन (6) जल। उपरोक्त चीजें सब प्रकार की सब्जियों, फल, अनाज, दालें, दूध में पाये जाते हैं। मांसाहारी भोजन में इनमें से कई तत्व बिल्कुल नहीं है। कुछ परिमाण मे हैं और कुछ आवश्यकता से अधिक जो पाचन क्रिया को प्रभावित करते हैं। ऐसे में शाकाहारी ही सम्पूर्ण भोजन है। शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन की तुलना मे पौष्टिक एव स्वास्थ्य के लिए अधिक उपयुक्त है। ये विचार न सिर्फ पूर्व बल्कि पश्चिमी सभ्यता के वैज्ञानिकों, दार्शनिको एव चिकित्सको के हैं इसकी पुष्टि निम्न बातो से स्पष्ट है—अण्डे-मास व मछलियो को खाने से कौन कौन से रोग उत्पन्न होते हैं, इस पर भारतीय डा० तथा विदेशी डाक्टरो का सफल परीक्षण—

A Great Medical authority Dr. E. V. Me Collum warns.

अण्डो से अतड़ियो मे सड़ान :—अण्डो में शक्तिदायक तत्व-कार्बोहाइड्रेट्स व विटामिन 'सी' बिलकुल भी नही होते तथा कैलशियम, लोहा, विटामिन 'बी' कम्पलैक्स, भी न के बराबर पाए गए हैं। इस कारण पेट मे सड़ान पैदा करता है।

'आज तो विज्ञान द्वारा भली-भान्ति सिद्ध हो चुका है—"प्रत्येक अण्डे मे जीव है।"

प्रत्येक अण्डे मे प्राय: 1500 सूक्ष्म छिद्र स्वास क्रिया के लिए पाए गए हैं जो सूक्ष्मदर्शी यन्त्रो द्वारा आसानी से देखे जा सकते है अण्डे के अन्दर रहा जीव हमारी व आपकी तरह इन सूक्ष्म-छिद्रों के माध्यम से आक्सीजन अन्दर ग्रहण करता है और कार्बनडायक्साइड बाहिर छोड़ता है। सास लेने की यह क्रिया सिर्फ जीवधारियो मे ही पाई जाती है—सिद्ध हुआ अण्डे मे स्वतन्त्र जीव है। यदि अण्डे को हवा मिलनी बन्द हो जाए तो वह जीव मर जाता है और अण्डे में से बदबू आने लगती है।

"मास से पाचन-क्रिया बर्बाद"

मासाहार-पाचन तन्त्र के अवयवो को बिगाड़ देता है, क्यो कि मास मे तेजाबी तत्त्व अधिक होता है इस कारण वह-आमाशय के मुह के क्षार युक्त थूक को (क्षार को) क्षार युक्त (अल्काइन) से तेजाबी बना देता है और मनुष्य का हाजमा खराब हो जाता है। हाजमा खराब सैकड़ो रोगों की जड़ है। अत: स्वस्थ रहने के लिए मांस कभी न खाना चाहिए।

"मास खाने से गुर्दों मे पथरी एव मछली मास खाने से टी० बी० बढ़िया"

(The Times of India, new delhi, November 1, 1985)

"Prof V. Ramalinga swamy Chief The India Council of Madical Research new delhi" की गम्भीर चेतावनी मांसाहार-सैकड़ो रोगो की जड़ है, डा० रामलिंग स्वामी जी ने कहा, मांस व शराब-भारत के सर्वनाश का कारण बना। प्रो० रामलिंग स्वामी जी ने कहा—भारत वासियो के लिए यूरोप, अमेरिका आदि पश्चिमी देशो के खान-पान की अधाधुन्ध नकल करके अपने खान पान मे मास-शराब आदि का प्रयोग करना सर्वथा अनुचित है। अब तो बहुत सारे पश्चिमी देशों ने यह अच्छी तरह से समझ लिया है कि बकरे का या सूअर का या गाय का मांस अथवा किसी भी प्रकार का सामिष आहार (अण्डे, मछली, मास का भोजन) स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है, आज मैडिकल साइस ने अण्डे-मछली, मास का अन्तड़ियो के रोगों के साथ गहरा सम्बन्ध बताया है। पश्चिम मे शाकाहार बढ़ता जा रहा है जब कि भारत मे घटता जा रहा है। यह दुर्भाग्य का तथा बड़े खेद का विषय है।

भारत वासियो को अपने स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हुए मासाहार का त्याग कर शाकाहार को अपनाना चाहिए अन्यथा भारत का सर्वनाश निश्चित है। इस भारत देश के अन्दर रोजाना 8-10 गौए काटी जाती है एव उस मास को हम विदेश भेजते हैं और बदले मे हमे तेल मिलता है—एक दीन हीन गाय कहती है—"दातो तले तृण दाबकर है दीन गायें कह रही—हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही। हमने तुम्हे मा की तरह है दूध पीने को दिया। देकर कसाई को हमे तुमने हमारा वध किया। सरकार को भी इस ओर विशेष देने की आवश्यकता है। शाकाहारी भोजन पचाने में शरीर के पाचन तन्त्र पर उतना जोर नही पड़ता न ही उतना समय लगता है जितना कि मास को पचाने मे। आपका स्वास्थ्य आपके हाथ मे है—सोच विचार कर आहार कीजिये एव स्वास्थ्य को निरोग बनाइए।

दिवंगत आर्य समाजी
श्रीमती कौशल्या देवी पंडित

आर्य समाज की कर्मठ कार्यकर्त्री, धुन की धनी, बेहद परिश्रमी, लगन तथा अपने ध्येय को समर्पित जालन्धर की श्रीमती कौशल्या देवी पडित सर्व-साधारण मे माता जी के नाम से विख्यात थी।

सदैव उज्ज्वल सफेद वस्त्र धारण करने वाली आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी के दर्शन मात्र से हृदय शान्त हो जाया करता था। प्रतिदिन नियम से हवन करना तथा स्वाध्याय करना माता जी की दिनचर्या का मुख्य अग था। 1947 मे लाहौर (पाकिस्तान) से जालन्धर आने के पश्चात् जीवन के अन्त समय तक वह ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर की आर्य समाज मे प्रधाना के पद पर सुशोभित रही। हिन्दी, उर्दू, गुरमुखी तथा अग्रेजी इन चारो भाषाओं की ज्ञाता थी। स्थानीय सरकारी हाई स्कूल मे अध्यापन कार्य करते हुए हिन्दी तथा इतिहास उनके प्रिय विषय थे। बड़े आत्मविश्वास तथा ओजस्वी वाणी में हजारो श्रोताओ की उपस्थिति मे धारा प्रवाह बोला करती थी तो श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो उठते थे। जालन्धर की मान्या स्वर्गीय डा० विद्यावती तथा श्रीमती लक्ष्मी सौंधी जैसी महिलाओ के साथ मिलकर रचनात्मक कार्यो मे बढ़चढ़ कर भाग लिया करती थी। पूज्य माता जी का विश्वास था कि वैदिक धर्म के प्रचार तथा प्रसार मे शिक्षण सस्थाए महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। अपने इसी ध्येय की पूर्ति के लिये सेवानिवृत्ति के पश्चात् माताजी ने एक पाठशाला का सचालन बड़ी सफलतापूर्वक किया। धर्म शिक्षा तथा चरित्र निर्माण उनकी पाठशाला के मुख्य विषय थे। अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे माता जी ने एक बड़ी राशि बैंक मे फिक्स Deposit करवा दी थी। उनके आदेश के अनुसार प्रति वर्ष इस राशि के ब्याज से निर्धन किन्तु योग्य विद्यार्थियो की सहायता के लिये ट्रस्टी प्रयत्नशील रहते हैं। ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर की आर्य समाज की यज्ञशाला आज भी पूज्य माता जी की दानशीलता का प्रमाण है।

वैदिक धर्म के प्रति सच्ची आस्था का प्रेरणा स्रोत उनका वजीराबाद (पाकिस्तान) का वह आर्य समाजी परिवार था, जिसमे वह ब्याह कर आई थी। परिवार के मुखिया स्वर्गीय पडित बासीराम जी स्थानीय आर्य समाज के प्रधान थे। माता जी के देवर स्वर्गीय पडित जयचन्द गुरुकुल कागड़ी के प्रथम स्नातक थे।

इस प्रकार की असाधारण प्रतिभा-वान्, शान्त तथा सौम्य नारी को नमन करने हेतु उनकी स्मृति मे यह आलेख अर्पित है।

(माता कौशल्या जी का जन्म 10-1-1897 निधन 7-10 82 को हुआ।)

—कमला शर्मा
19W F अली मुहल्ला,
जालन्धर

मण्डी डबवाली में मकर संक्रान्ति

श्री लाला दीवानचन्द जी सिगला ने प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी 14-1-90 को मकर सक्रान्ति पर मण्डी डबवाली मे अपने परिवार मे श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा से अपने परिवार मे हवन यज्ञ कराया। इस अवसर पर श्री लाला दीवान-चन्द जी सिगला मण्डी डबवाली ने (1125/-) एक हजार एक सौ पच्चीस रुपये पजाब परिवार शहीदी फड मे और (101/-) एक सौ एक रुपये गौ-शाला मण्डी डबवाली को दान दिया। और अन्त मे सब भाई-बहिनों का मिठाई एव चाय से सत्कार किया।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर का उत्सव

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव 12 से 18 फरवरी 1990 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महा-उपदेशक श्री प० निरन्जन देव जी इतिहास केसरी श्री रामनाथ जी यात्री श्री राम जी तथा वीरेन्द्र कुलदीप साथी पधार रहे है।

—मूलराज

पारायण यज्ञों के विषय में

ले० श्री जगदीश जी व्याकरण दर्शन साहित्याचार्य दयानन्द मठ दीनानगर

श्री रासासिंह जी ने अपनी पत्रिका आर्य पुनर्गठन मे वेद पारायण यज्ञ का विरोध किया है और यज्ञ कराने वालो के लिए बडी कटुभाषा का प्रयोग किया है कि ये यज्ञ कराने वाले लोग आर्य समाज को गुरुडम मे लपेट रहे हैं। और छद्मवेशी और धर्म ध्वजी है। वेद पारायण यज्ञ चतुर वेद यज्ञ ऋग्वेद यज्ञ गायत्री यज्ञ कराते हैं। और मोटी-मोटी राशियां ली जाती हैं।

समाधान—वेद पारायण यज्ञों में वेदपाठ होता है। इससे लोगों की वेद में श्रद्धा बढती है। वेद की रक्षा होती है। वेद के क्रय विक्रय की मांग बढती है। पाठ करने का अभ्यास होता है। वेदपाठ पुण्य है अपराध नही।

वेद पाठ के साथ घृत-सामग्री की आहूति दी जाती है। इससे वायुमण्डल की शुद्धि और अनेक रोगों का निवारण होता है। अन्न फल-फूल, साक-सब्जी की पैदावार बढती हैं तथा इन सब के रोग दोषों का निवारण होता है। इस प्रकार यज्ञ के वर्णातीत लाभ होते हैं। इन पारायण यज्ञों के दो ही अंग हैं, वेद पाठ और आहूति।

इसमे वेद विरुद्ध, धर्म विरुद्ध, आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध कुछ भी नहीं हैं। अपितु धर्म आस्तिकता श्रद्धा तथा वेद की मान्यताओं को बढ़ावा मिलता है और विद्वानों का सत्कार होता है।

आक्षेप—लोक कल्याण, विश्व शान्ति आदि मोहक उद्देश्य भी उद्घोषित किये जाते हैं। फिर लोगो को यजमान बनाने के लिए उत्प्रेरित कर मोटी-मोटी रकमें भी ली जाती हैं।

समाधान—मनुष्य की पहले भावना बनाती है फिर उसके अनुसार कर्म करता है और जिस भावना से कर्म करना है वैसा ही उस कर्म का प्रभाव होता है। यदि कोई विश्व मे शान्ति हो, इस भाव से यज्ञ करता है तो इसमें क्या दोष है। एक व्यक्ति प्रातः उठ कर जिस मार्ग से गुजरता है तब ससार का भला हो ये शब्द कहता जाता है, दूसरा प्रातःकाल उठकर जिस मार्ग से गुजरता है लोगों को गन्दी-गन्दी गालिया देता जाता है। लोगों के मनों पर इन दोनों का प्रभाव पृथक्-पृथक् होता है। मनुष्य जिस बात को सुनता है उसका मन पर अच्छा या बुरा प्रभाव होता है और उस पर विचार भी करता है। एक उपदेष्टा शब्द ही तो बोलता है, गुरु शिष्य के लिए शब्दों का उच्चारण करता है, बोलने कहने से सुनने वालो को वैसा ही ज्ञान होता है और भावना बदलती है। आर्य समाज वेद-प्रचार लोगो के भावों को बदलने के लिए ही तो करता है। आर्य अपने प्रत्येक उत्सव यज्ञादि के पश्चात् शान्ति पाठ करते हैं। क्या इसका कोई लाभ नही है, नही है तो यह व्यर्थ हो जाता है। सब कार्यों मे भाव की ही प्रधानता होती है। भावना ही कार्यों का अच्छा या बुरा बनाती है।

ससार का भला हो, सारे विश्व मे शान्ति हो यदि इस भावना से यज्ञ अथवा अन्य कोई कर्म जो किया जाता है तो इससे अवश्य ही संसार का हित होता है।

आर्य समाज के सभी कार्यों में ससार का भला हो, संसार में शान्ति हो और इससे सब लोग सुखी रहें। सभी कार्यों में यही भावना ओतप्रोत है। वेद पारायण यज्ञों में भी यही भावना है।

आक्षेप—बड़ी-बड़ी राशियां ली जाती है, वेद पारायण यज्ञों में।

समाधान—जिस बात, जिस कार्य से लोग प्रभावित हों उसके लिए लोग धन देते हैं। जिस बात से लोग प्रभावित हो वहां कोई कुछ नहीं देता। मनुष्य समाज में श्रद्धा आदर के भाव हैं, जिससे मनुष्य कुछ करना चाहते हैं। मानसिक सन्तोष और शान्ति के लिए। आर्य समाज जो कुछ कहता है वह सब सत्य है ठीक है किन्तु केवल इतना ही पर्याप्त होता तो लोग अन्य मतों में क्यो जाते। (अन्य मतों के धर्म स्थान जनता से भरे हुए हैं। और आर्य समाज मन्दिरों मे जो रौनक है हम देखते ही हैं। इसी लिए आर्य समाज के हितचिन्तकों को चिन्ता है। जिसका प्रकाश व्याख्यानों लेखों में प्राय आजकल होता रहता है। और आप श्री रासासिंह जी भी करते रहते हैं। केवल इन वेद पारायण यज्ञों में रोनक दिखती है। इन यज्ञो ने ही श्रद्धालु आर्य नर नारियों तथा अन्य लोगो को थामा, रोका हुआ है। इन यज्ञों को बन्द कर दे तो जो थोड़ी रोनक वह भी न रहेगी। जो लोग आर्य समाज की मन्यताओं से दूर रहते हैं, वे लोग भी इन पारायण यज्ञों में बड़ी श्रद्धा से सम्मिलित होते हैं, तथा आर्य समाज के समीप आ जाते हैं। उनका भय और द्वेष दूर हो जाता है। पाकिस्तान बनने से पूर्व लाहौर, आर्य समाज का बडा केन्द्र होता था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय गुरुदत्त भवन मे था। इस सभा के पास उपदेशकों और भजनिकों की एक बडी संख्या थी। जिनके द्वारा उस समय के बडे पंजाब और पंजाब के बाहर के प्रान्तों मे वैदिक धर्म का प्रचार होता था, कराची, बम्बई, कलकत्ता तक की आर्य समाजों के उत्सव तथा शास्त्रार्थ इस सभा के उपदेशकों द्वारा होते थे। आर्य समाज के शिरोमणि विद्वान वैदिक सिद्धान्तों के पूर्ण ज्ञाता पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज जो उपदेशक विद्यालय के आचार्य थे। स्वामी वेदानन्द जी 'तीर्थ', पं० बुद्धदेव जी वेदलंकार, प० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति, पं० सुखदेव जी 'वेदालकार' दर्शनाचार्य, प० ईश्वरचन्द्र जी दर्शानाचार्य ये सभी विद्वान गुरुदत्त भवन तथा लाहौर में रहते थे। महर्षि के अनन्य भक्त प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जो प्राचीन व्याकरण के अद्भुत विद्वान् थे। अपने विद्यार्थियों सहित रावी नदी के समीप अपने आश्रय मे निवास करते थे।

लाहौर आर्य समाज का वार्षिक उत्सव गुरुदत्त भवन के विशाल मैदान मे हुआ करता था। इन सभी विद्वानों के व्याख्यान उपदेश होते। और गुरुदत्त भवन की यज्ञशाला में प्रति वर्ष वेद पारायण यज्ञ नियम पूर्व होता था। यदि वेद पारायण यज्ञ का करना सिद्धान्त विरुद्ध होता तो वे विद्वान जो वहीं रहते थे-उसे तुरन्त बन्द करने का आदेश देते और फिर किसी को वेद पारायण यज्ञ करने का साहस न होता।

उपरोक्त बातों से यह प्रमाणित होता है कि वेद-पारायण यज्ञ, गायत्री यज्ञ करना किसी भी दशा में आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध अथवा धर्म विरुद्ध,काल विरुद्ध नहीं है।

संस्कार विधि में महर्षि ने यज्ञ कुण्ड का परिमाण लिखा है, यदि एक लाख आहूति देनी हो, 50 हजार आहूति देनी हो 25 हजार देनी हो, तो इतना-इतना बड़ा यज्ञ कुण्ड बनायें किन्तु यह नही लिखा कि इतने बड़े यज्ञ कुण्ड में किन मन्त्रों से कौन सा यज्ञ कर सकेंगे। किसी यज्ञ का नाम और उसकी विधि भी नहीं लिखी। किन्तु सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में ऋषि लिखते हैं कि अग्नि होम के प्रत्येक मन्त्र को पढ़कर एक-एक आहूति देवें। और जो अधिक आहूति देनी हो तो विश्वानि देव.. इस मन्त्र से और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहूति देवें।

जब महर्षि स्वयं लिखते हैं कि गायत्री मन्त्र से आहूति देवें, तो आप श्री रासा सिंह जी गायत्री-यज्ञ करने वालों को तथा वेद-पारायण-यज्ञ करने वालों को गालियां देते हैं अर्थात् उनके लिए अत्यन्त घृणित शब्दों का प्रयोग करते हैं, क्या ये अपराध तथा पाप नहीं है। गायत्री-यज्ञों, वेद पारायण यज्ञों के विरुद्ध लिखने का अधिकार आप (रासा सिंह जी) को नहीं है। आपकी यह अनाधिकार चेष्टा है। आप यह लिख सकते थे कि वेद-पारायण यज्ञों के विषय में आर्य विद्वानों तथा आर्य सभाओं को विचार करना चाहिए कि ये वेद पारायण-यज्ञ, गायत्री-यज्ञ उचित है कि नहीं। उचित बात न लिख कर आप स्वयं ही निर्णायक बन गए इसमें आपकी शोभा नहीं है, क्योंकि यह आपका विषय नहीं है। यह तो आर्य समाज के बड़े विद्वानों तथा आर्य सभाओं का विषय है।

जब तक कोई बड़े यज्ञ की सुगम विधि लोगों के सामने न रखी जावे तब तक लोग इन वेद पारायण-यज्ञों को ही करें। इन्हें बन्द करने का एक मात्र उपाय यह है कि यज्ञ प्रेमियों को किसी बड़े और सुगम विधि वाले यज्ञ की विधि बताई जाये। जिसमें इसी प्रकार जन समुदाय सम्मिलित हो सके। और लोगों को सन्तोष और शान्ति की प्राप्ति हो तथा लोग अपने आपको धन्य समझें।

देश की अजादी वीरों की बदौलत !

ले०—कवि श्री कस्तूर चन्द जी घनसार, पीपाड़ शहर

छब्बीस जनवरी आती है,
भारत का गौरव उमड़ाये !

(1)

याद दिलाती उन वीरों की, देश हितार्थ प्राण दिये !
हंसते-हंसते फन्दा फांसी का, अपने गले में डाल लिये !!
न घबराये, मुस्कराये थे, सौभाग्य अपना जाना था !
भारत मां के बड़े लाडले, पहने आजादी बाना था !!
गैरों आगे रहे कड़कते, अपना खून दिखाये !
छब्बीस जनवरी आती है, भारत का गौरव उमड़ाये !!

(2)

अपना वतन देश है प्यारा, जिसमें शासन चलते थे !
सभी गुलामी करते आगे, परवश जिन पर पलते थे !!
राजा थे भारत के सारे, बड़े सलामी भरते थे !
आन-शान गौरवता सारी, गई चली सब डरते थे !!
जगे वीर-वीरता लेकर, आजाद क्षेत्र में आये !
छब्बीस जनवरी आती है, भारत का गौरव उमड़ाये !!

(3)

कर्णधार भारत के नेता, गौरव लेकर खड़े हुए !
भारत के हित प्राण दिया था, अभिमान भरके बड़े हुए !!
लोकमान्य तिलक गोखले, लाला लाजपत राय बड़े !
जवाहर, बापू, गांधी नरवर, गौरव को लेकर रहे खड़े !!
बड़े सुभाष, वीर सावरकर, अपना सुरक्षा बताये !
छब्बीस जनवरी आती है, भारत का गौरव उमड़ाये !!

( )

भगतसिंह, बिस्मिल, लाहिड़ी, चन्द्रशेखर मक्कुम पाण्डे !
खुदीराम, बालकृष्ण हरि चाफेकर, महादेव थे रानाडे !!
कृष्णा प्रसाद, दुर्गयचन्द, ऊधमसिंह, महावीर !
सुखदेव, शिवराम, राजगुरु, शहीद कल्याण सुधीर !!
भारत मां के प्यारे थे यह, धन्य गोद में जन्म पाये !
छब्बीस जनवरी आती है, भारत का गौरव उमड़ाये !!

(5)

दयानन्द के सैनिक सुआर्य, प्रथम क्षेत्र में उतरे थे !
आर्यवर्त्त का गौरव लेकर, तनिक न समझे खतरे थे !!
देशोत्थान हुआ था तबसे, छूटी गुलामी जारी थी !
तो भी पूछ लघु हो बैठे, न आर्य सुमति किनारी थी !!
'घनसार' सदा पछताता है, आर्य सुलक्षण लाये !
छब्बीस जनवरी आती है, भारत का गौरव उमड़ाये !!

बसन्त पंचमी का पर्व

ले० श्री वेद मित्र हापुड़ वाले वैदिक प्रचार मंडल, अम्बाला छावनी

बहुत कम व्यक्तियों को पता है कि बसन्त पंचमी एवं आर्य समाज स्थापना दोनों एक साथ पड़ते हैं क्योंकि आज के दिन ऋषि दयानन्द ने एक ऐसे मानव वर्ग को आर्य बनाने वाले सर्वहितकारी संगठन को जन्म दिया आर्य बनना ही सत्य सनातन धर्म है। जिसे सभी ने अपनाया परन्तु आर्य समाज शब्द से चिढ़ते रहे, यह कटु सत्य है कि महात्मा गांधी जी भी ऋषि के सिद्धान्तों में विश्वास रखते थे परन्तु ऋषि का अनुयायी कहने पर झिझकते थे। ऋषि ने हर क्षेत्र में वह कार्य किया दूसरा क्या करेगा। स्वराज्य शब्द सत्यार्थ प्रकाश में 50-55 बार आया तथा स्वदेश स्वभाषा तथा स्वलिपि शब्द भी आये। स्वदेश वस्तुओं का उपयोग सत्यार्थ प्रकाश में है इस प्रकार आर्य समाज व आर्यों के लिए बसन्त पंचमी का महत्व और भी बढ़ जाता है।

आर्य समाज इस दिन को अज्ञानान्धकार मिटाने के त्योहार के रूप में मनाता है जबकि भारत वर्ष में इसे सरस्वती पंचमी के नाम से भी पुकारा जाता है। भारत वर्ष में 6 ऋतुयें होती हैं परन्तु अन्य 5 में वह उल्लास नहीं होता जो इस बसन्त ऋतु में होता है। इस ऋतुराज की भी संज्ञा दी जाती है। शीत से तंग व्यक्ति भी अपने अन्दर चेतना पाते हैं भूमि में सर्वत्र रस आने से नर नारियां भी उमंग रस में भर जाती हैं।

यजुर्वेद के 13वें अध्याय के मंत्रों में कितना सुन्दर चित्रण है—इस बसन्त में वायु मधुर सुगन्धित चलता है नदियां सुगन्धित पानी वाली बहती हैं। औषधियों में सर्वत्र गन्ध भरा होता है, रात और उषा काल माधुर्य बखेरते हैं और तो और पृथ्वी का कण-कण मधुरता से ओतप्रोत हो जाता है आकाश में सर्वत्र सुगन्ध व्याप्त रहती है। वृक्षलतायें जहां मधु से परिपूर्ण होकर मधुमक्खियों को मधु प्रदान करती है वहां सूर्य की किरणें भी वनस्पति जगत से माधुर्य उठाकर मधुभानु बन जाता है। गऊओं के दूध में मिठास आ जाता है इस प्रकार चाहूं ओर प्रसाद का वातावरण से मनुष्य मधुर बन जाता है।

बालहकीकत राय का बलिदान भी इस दिन के साथ जुड़ा है। जिसने ईश्वर को साक्षी मानकर अपने शब्दों को अदालत में स्वीकार किया तथा लाहौर के शालीमार बाग में वह वीर सत्य का पुजारी फांसी पर लटका दिया गया। आज की बसन्त पंचमी हिन्दुओं को चेतावनी देने वाली है तथा गुरुतेगबहादुर ने तो कहा कि सिख अपने को हिन्दू कहें तथा गुरुनानक तो वैदिक तथा वेद भक्त थे, हिन्दू थे। उन्होंने हिन्दुओं के हितों के लिए कार्य किया।

आर्य वीरो! बसन्त पंचमी विश्व को आर्य बनाने का पावन संदेश लाई है। अब हमें धर्म सम्बन्धी कामना करनी चाहिए तथा आर्य समाज के इस विशाल संगठन में जो शिथलता आई है उसे दूर करने का सकल्प लें तो हमें खुशी होगी तथा महाकवि शंकर के शब्दों में खुशी से गा सकते हैं—

कट गये कटीले कपट जाल के फंदे
खुल गये लोक लीला के गोरख धन्धे।
भ्रम सागर में गिर गये गपोड़ी गन्दे
परमार्थ को समझे स्वार थके बंदे।
विपरीत मतों का घोर घमंड घटाया
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया
फल खाते हैं लाखों फल खाने वाले
पय पीते हैं वारुणी उड़ाने वाले
बन गये जनी जंगलों में जाने वाले
छूटे छल बल से चाप कमाने वाले
शुभ समाचार का शंख निशंख बजाया है,
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया है।

लुधियाना में गायत्री यज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार का वार्षिक महायज्ञ जोकि स्वामी सुमनानंद की अध्यक्षता में चल रहा था। प्रभु की अपार कृपा से निर्विघ्न समाप्त हो गया।

पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक की वेदकथा का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। बहन जनक जी तथा सेठी जी के भजनों ने इसमें चार चांद लगा दिये। यज्ञ की समाप्ति पर शुद्ध घी का मोहन भोग बांटा गया।

—जनक रानी

मानव सेवा आश्रम में बसन्त पंचमी

मानव सेवा आश्रम रुड़की मार्ग छुटमलपुर (सहारनपुर) में माघ सुदी पंचमी बुधवार 31-1-90 को बसन्त पंचमी का पर्व बड़े समारोह से मनाया गया। इससे तीन दिन पूर्व गायत्री महायज्ञ चलता रहा। 31-1-90 को पूर्णाहुति के पश्चात् वृहद भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैंकड़ों स्त्री, पुरुषों व बच्चों ने प्रीतिभोज किया। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा।

—पथिक

आर्यसमाज के लिए एक चुनौती

ले० श्री पं० वेदप्रकाश जी शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिलका, पंजाब

हम लेखक के इस विचार से सहमत नहीं हैं कि सार्वदेशिक सभा ने जो अभियान प्रारम्भ किया है उस की आवश्यकता नहीं है। परन्तु धर्म-परिवर्तन के विरुद्ध भी अभियान प्रारम्भ करने के विचार से सहमत हो आर्य समाज को इधर भी अनुरूप ध्यान देना चाहिए।

—सम्पादक

'आर्य मर्यादा' साप्ताहिक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा तीनों उद्देश्यों को लेकर आन्दोलन के लिए चेतावनी के सबंध में सम्पादकीय प्रकाशित हुआ है, जिससे सभी आर्यबन्धु परिचित हैं। वास्तव में इसमें तन-मन-धन सभी का अपव्यय अधिक है लाभ कम, क्योंकि ये शर्तें मानना और लागू करना सरकार के अधीन है। सरकार इतनी जल्दी स्वीकार कर ले, सम्भव नहीं प्रतीत होता। यह पहले किए गए आन्दोलन से विदित है।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य है शुद्धि का आन्दोलन पुनः तेज करना और शुद्ध हुए लोगों को संरक्षण देना। वस्तुतः आर्य समाज का यह कार्य अब शिथिल होता जा रहा है जिसका लाभ अब ईसाई, मुसलमान ही नहीं अपितु सिख भी उठा रहे हैं।

श्री ओंकेकार चौधरी द्वारा लिखित एक लेख "धर्मान्तरण का अटूट सिलसिला" शीर्षक से सरिता के अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित हुआ है जो आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन के प्रति शिथिलता का प्रतीक अवश्य है। सिखों द्वारा हरिजनों को शुद्ध करके अपने मत में दीक्षित किए लोगों पर प्रकाश डालते हुए लेखक लिखता है—

"पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, गाजियाबाद, बुलन्दशहर व बिजनौर जिलों में अब तक धर्मान्तरण के लिए लगभग 20 शिविरों का आयोजन उत्तर प्रदेश सिख मिशन कर चुका है। इनमें लगभग ढाई हजार स्त्री पुरुषों व बच्चों ने अमृत चखकर सिख धर्म स्वीकार किया है। इनमें से 90% हरिजन और बाकी गूजर व अन्य जाति के लोग हैं।"

"26 जनवरी 1989 को मेरठ जिले की मवाना तहसील के गांव गंगला हरेरू में धर्म परिवर्तन हेतु पहला शिविर लगाया गया। इसमें 290 हरिजनों ने अमृत चखकर धर्मान्तरण किया।"

"27 मई 1989 को हापुड़ के गुरुद्वारे में 85 हरिजनों ने धर्मान्तरण किया। इनमें स्त्री और बच्चे भी थे।"

"12 जून 1989 को मवाना के निकट रहावती गांव में जोड़े मेले के अवसर पर लगे धर्मान्तरण शिविर में तीन जिलों के 53 व्यक्तियों ने सिख धर्म स्वीकार किया। इनमें 16 हरिजन मेरठ जिले के अमेठी गांव के थे"

इस प्रकार के धर्मान्तरण से आर्य समाज तो बेखबर है ही, अन्य हिन्दु संगठन जो हिन्दुत्व की रक्षा का दम भरते हैं, वे भी सोये पड़े हैं या इस ओर से बिल्कुल ही उदासीन हो चुके हैं। इस संबध में लेखक लिखता है—

"आश्चर्य की बात तो यह है कि इतने बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण जारी है, परन्तु न सरकार इस दिशा में कुछ कर रही है और न ही हिन्दुधर्म के मठाधीश। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ डा० हेडगेवार की जन्म शताब्दी मनाने में व्यस्त है और हैदराबाद आन्दोलन छेड़ने वाले आर्य समाजियों को भी फुरसत नहीं है।"

अध्यापन कार्य छोड़कर आर्य राष्ट्र की स्थापना करने वाले स्वामी अग्निवेश को भी लेखक ने सचेत किया है जिन्होंने बड़ी ही उमग एवं उत्साह के साथ वेद प्रचार के लिए सन्यास लिया था, परन्तु राजनीति ने अब उन्हें भी कहीं का न रखा। लेखक लिखता है—

"पदयात्राएं करके सतीप्रथा व साम्प्रदायिकता खत्म करने का बीड़ा उठाने वाले स्वामी अग्निवेश भी खामोश हैं।"

आज धर्माचार्य भी धर्म रक्षा के प्रति उदासीन है। वे भी अब जयजयकार वाले स्थानों पर ही पहुंचते हैं। दूसरी बात यह भी है कि वे इस ओर ध्यान भी क्यों दें क्योंकि वे हरिजनों को सवर्णों की अपेक्षा हीन समझते हैं। सरकार यदि नियम न बनाती तो संभवतः उन्हें मंदिरों मे ही प्रवेश न करने देते। शंकराचार्य जैसी महान् हस्तियां भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहीं। इनके संबंध में लेखक लिखता है—

"धर्माचार्य और शंकराचार्य यथार्थ दूर बैठे अनर्गल प्रलाप में व्यस्त हैं। इनमें से किसी ने भी जाकर हरिजनों से यह नहीं पूछा कि आखिर उन्हें कष्ट क्या है?"

अतः ऐसी विशेष परिस्थितियों में सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित आन्दोलन की अपेक्षा शुद्धिआन्दोलन कहीं अधिक रचनात्मक, महत्वपूर्ण एवं श्रेयस्कर प्रतीत होता है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का काफी प्रचार है फिर भी इस प्रकार धर्मपरिवर्तन होता रहे, यह स्थानीय आर्य समाजों, आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं सार्वदेशिक सभा के प्रमाद का ही परिचायक है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संदेश देने वाला आर्य समाज आखिर आज सुप्त क्यों है? क्या आर्य समाज आज इस कार्य को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करेगा? अस्तु।

कपड़ा मार्कीट बठिण्डा में वृहद् यज्ञ

15-1-9 प्रात: 9 बजे थोक क्लाथ मर्चेंट्स ऐसोसीएशन बठिण्डा ने अपनी कपड़ा मार्कीट में श्री ओम-प्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा से हवन यज्ञ कराया। इस अवसर पर (101/-) एक सौ एक रुपया आर्य वानप्रस्थ आश्रम को Association की ओर से दान दिया गया तथा इस यज्ञ में भाग लेने वाले यजमान श्री रामजी दास जी तलवण्डी वालों से भी (101/-) एक सौ एक रुपया आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिया। Association की ओर से बड़े पैमाने पर सबके लिए (छोटे, बड़े, अमीर, गरीब) लंगर द्वारा शुद्ध देसी घी का खाना (हलवा, पूरी, सब्जी) खिलाया गया।

महात्मा दयानन्द जी महाराज की पुण्य तिथि

आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल एवम् हिन्दू मंच के तत्त्वावधान में महात्मा दयानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्य तिथि महावीर मन्दिर सिक्का कालोनी सोनीपत में मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति आर्य वीर दल) के ब्रह्मत्व में किया गया। इस अवसर पर पूज्यपाद महात्मा जी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। स्वदेव महात्मा दयानन्द जी की अन्तिम इच्छा वेद प्रचार के प्रसार एवम् उनके आदर्शों पर चलकर मानव चोले को सफल बनाने का संकल्प लिया गया।

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषि-बोध-उत्सव का पावन पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पुण्य बोधस्थली एवं जन्मस्थान टंकारा में दिनांक 22-23-24 फरवरी 90 शुक्र-शुक्र व शनिवार को भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है।

सामवेद पारायण यज्ञ शुभारम्भ—17 फरवरी, शनिवार प्रात: 8 बजे।

महायज्ञ के ब्रह्मा—आचार्य ओम्-प्रकाशजी शास्त्री।

सामवेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति—23 फरवरी शुक्रवार-प्रात: 11 बजे।

शोभा यात्रा—दि० 23 फरवरी दोपहर 12 बजे से।

श्रद्धाञ्जलि सभा—दिनांक 23 फरवरी को रात्रि 9 बजे से 12 बजे तक।

उत्सव की समाप्ति—दिनांक 24 फरवरी, शनिवार रात्रि 11 बजे।

इस पुण्यावसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ... विदुषी, पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्रीमती ...वती, श्रीमती स्नेहलता ..., सुश्री प्रतिभा पण्डित, आर्य वीर दल ..., आर्य कन्या विद्यालय ...-नगर-... एवं पोरबन्दर, उपदेशक विद्यालय टंकारा के स्नातक व ब्रह्मचारीगण अपने विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा उत्सव की शोभा में अभिवृद्धि करेंगे।

उत्सव के आकर्षण—प्रभात फेरी, पारायण यज्ञ, प्रतियोगिता सम्मेलन, वेद सम्मेलन, संस्कृति रक्षा सम्मेलन, देश रक्षा सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन, दीक्षा सम्मेलन, श्रद्धाञ्जलि सभा आदि।

आशा है आप इस पवित्र अवसर पर अपने गुरु की जन्म तथा बोध भूमि में पधार कर तीर्थ यात्रा का लाभ प्राप्त करके अपने जीवन को कृतार्थ करेंगे।

—रामनाथ सहगल, महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष [illegible] अंक 45, 29 माघ सम्वत् 2046 तदनुसार 8/11 फरवरी 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है

ले०—श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार

(गतांक से आगे)

पर चोरी-जमाखोरी या अब्रह्मचर्य और दुराचार में भटकता-भटकता 'ब्रह्मचर्य' तथा 'सदाचार' को परम-श्रेय समझने लगता है। भौतिक-तत्त्व जब तक 'वर्धमान' तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने श्रेय को नहीं पकड़ता। जब जीवन के 'वर्धमान' तत्त्व 'अवर्धमान' हो जाते हैं, जब वे हिंसा से अहिंसा, असत्य से सत्य, स्तेय से अस्तेय, अब्रह्मचर्य, परिग्रह से अपरिग्रह तक पहुंच जाते हैं, तब मनुष्य 'अद्वय' 'अदिति' 'अवर्धमान', एक-सनातन को देखता है। इसी 'अद्वय', 'अदिति', 'अवर्धित' सत्य का वर्णन वेद में है। हमारे कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि वेद में सिर्फ अध्यात्मवाद का वर्णन है, भौतिकवाद या विज्ञान का वर्णन नहीं है। भौतिकवाद बढ़ता जायेगा, बढ़ते-बढ़ते उसकी सीमा भी कभी-न कभी आयेगी। वृक्ष ऊंचा जाता है, परन्तु कहीं तो बढ़ना रुक जाता है। 'वर्धमान' जब 'अवर्धमान' हो जाता है, तब वही 'अद्वय' हो जाता है, 'अदिति' हो जाता है। भौतिकवाद जहां रुक जाता है और जहां रुक जाता है, वहां और वहीं अध्यात्मवाद शुरू ही जाता है। इसी को ऋग्वेद में 'अद्वय' 'अदिति' या 'सदावृध' से सदा+अवृध कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं ज्ञान या तो 'वर्धमान' होगा या 'अवर्धमान' होगा। 'वर्धमान' ज्ञान भौतिक है, तर्क-वितर्क पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है, बदलता रहेगा, 'अवर्धमान' ज्ञान आध्यात्मिक है, स्थिर है, सनातन है, एक, अद्वय है, अदिति है, बदलता नहीं। क्योंकि वेद मनुष्य-मस्तिष्क की खोज नहीं, ईश्वरीय [illegible] ने उसे 'अद्वय' तथा 'अदिति' कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा परमेश्वर दोनों हैं—इसलिये ज्ञान को वेद में 'सदावृध:' कहा है। 'सदावृध:' के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका अर्थ सदा, सर्वदा उत्तरोत्तर दूसरा बदलनेवाला अर्थ होता है, जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय ज्ञान के लिये होता है, तब इसका अर्थ 'सदा-अवृध', सदा एक रहनेवाला, कभी भी न बदलने वाला, 'अद्वय', 'अदिति', 'अवर्धमान' अर्थ होता है। जैसे 'विद्या' तथा 'अविद्या' वेद के विलक्षण शब्द हैं, वैसे 'सदावृध:' भी वेद का विलक्षण शब्द है जो 'सदावृध:' के रूप में भौतिक-विज्ञान के लिये प्रयुक्त हुआ है, और 'सदा+अवृध:' के रूप में ईश्वरीय-ज्ञान या वेद के लिये प्रयुक्त हुआ है।

मुण्डकोपनिषद् में इसी बात की चर्चा करते हुए कहा है. 'द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च'। 'परा' क्या है? 'यया तदक्षर अधिगम्यते सा परा'—अर्थात् जिस विद्या से अक्षर-ब्रह्म का ज्ञान होता है वह परा-विद्या' है, अर्थात् 'आध्यात्मिक-विद्या'। इस कथन से स्पष्ट है कि जिस विद्या से क्षर-प्रकृति के विषयों का ज्ञान होता है 'अपरा-विद्या' है। अर्थात् 'भौतिक-विद्या'। यजुर्वेद के 19वें अध्याय के 77 वें मन्त्र में इसी भाव को 'सत्य' तथा 'अनृत'—इन शब्दों से व्यक्त किया गया है। वहां कहा है: 'दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापति:। अश्रद्धां अनृते अदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापति: ॥'—संसार की सब वस्तुओं को देखकर प्रजापति ने उन्हें दो भागों में विभक्त कर दिया—'सत्य' तथा 'अनृत'। 'सत्य' में सब को स्वाभाविक रूप में श्रद्धा होती है, 'अनृत' में सब को स्वाभाविक रूप में अश्रद्धा होती है। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेद ने 'विद्या' 'सत्य' तथा 'पर' का एक रूप बनाया है तथा 'अविद्या', 'अनृत' एवं 'अपरा' का दूसरा रूप बनाया है। यजुर्वेद में 'विद्या' तथा 'अविद्या'—इन दोनों की महिमा का बखान है—'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा'—'अविद्या' से मृत्यु को तरा जाता है। इससे स्पष्ट है कि टर्मिनोलोजी में 'अविद्या' का अर्थ निरक्षता या अज्ञान नहीं है। तो फिर वेद में 'अविद्या' का क्या अर्थ है? हमारी दृष्टि में वेद में 'अविद्या' का अर्थ भौतिकवाद या भौतिक-विज्ञान है। भौतिक-आविष्कारो से मनुष्य ससार की सब सुख-सुविधाओ को भोगता हुआ, यन्त्रों तथा औषधियो के आविष्कारो से दीर्घ एव स्वस्थ जीवन की प्राप्ति कर सकता है जिसे वेद ने 'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा' कहा है। हमारा कथन है कि वेद मे भौतिकवाद या वर्तमान-विज्ञान को वह उच्च स्थान नही दिया गया जो अध्यात्मवाद को दिया गया है। भौतिक ज्ञान दिनोदिन बदलता रहता है, 'वर्धमान' है, इसलिये वेद ने 'अविद्या', 'असत्य', तथा 'अपरा' विद्या कहा है, आध्यात्मिक-ज्ञान सदा एक रहता है, 'अवर्धमान' है, इसलिये वेद ने उसे 'विद्या', 'सत्य' तथा 'परा' विद्या कहा है। इसका यह अर्थ नही है कि वेदो में भौतिक-विज्ञान का सर्वथा अभाव है वेदो मे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनो विद्याये है, परन्तु मुख्यत: आध्यात्मिक विद्या ही है क्योंकि वही सत्य है, सनातन है, सब देश-काल में एक ही बनी रहती है।

हमारा मुख्य कथन यह है कि वेदो का मुख्य-विषय अध्यात्मवाद है, भौतिकवाद या भौतिक विषयों का वेदों में गौण रूप से वर्णन पाया जाता है, इसीलिये वेदों में दो विद्याओं का उल्लेख पाया जाता है—'द्वे विद्ये वेदितव्ये'—दो विद्याओं को जानना चाहिये—'विद्या' तथा 'अविद्या', 'सत्य' तथा 'अनृत', 'परा' तथा 'अपरा'। जो कुछ हम लिख रहे हैं यह बात ऋग्वेद (1. 164. 139) तथा अथर्ववेद (9. 10. 18) के निम्न मंत्र से और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

> ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्
> देवा: अधिविश्वे निषेदु:।
> य. तत् न वेद किं ऋचा करिष्यति य
> इत् तत् विदु त इमे समासते ॥

ऋचाओं का स्थान परम अक्षर परमात्मा-देव में है, अर्थात् ऋचाओं में वर्णन परम ब्रह्म परमात्मा देव का है और उसी अध्यात्म का वर्णन अन्य देवताओ के रूप मे किया गया है। जो इस रहस्य को नहीं जानता वह वेद की ऋचाओ से क्या पा सकेगा? जो यह जानता है कि वेद मे अध्यात्म-विद्या है वह मनुष्य को अध्यात्म की ओर ले जाता है कि वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं।

उक्त विवरण मे हम लिख आए है कि वेद मे उदाहरणरूप मे भौतिक विज्ञान के उल्लिखित ऐसे स्थान हैं जिन से सिद्ध होता है कि पृथिवी गोल है। इस प्रकार आय गौ: पृश्निरक्रमीदसदन मातर पुर,। (यजु० 3 6) से सिद्ध होता है कि पृथिवी सूर्य के गिर्द चक्र लगाती है तथा आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो (यजु 33-43) से ज्ञात होता है कि लोकलोकान्तर आकर्षण शक्ति से परस्पर बन्धे हैं। परन्तु इन मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ ही उचित है। इन मन्त्रों का अर्थ है कि वह अपने जीवन में खिचा-खिचा उस से आरम्भ होकर उसी के गिर्द चक्र काटता है जैसे पृथिवी सूर्य के गिर्द चक्र काटती है। इसी भावना को मूल में रखते हुए हम वेद को ईश्वर-प्रदत्त मानते हैं।

हमने इस लेख माला मे कई बातो को जगह जगह दोहराया है। इस दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है। इस लेख माला से किसी को भ्रान्ति न हो। इसे स्पष्ट करना है। इसलिए इस लेख माला के मुख्य मुद्दों को लिखकर मैं इसे समाप्त कर रहा हू इस लेख माला मे मैंने जो लिख रखा है, में कुछ नवीनता है। इसलिए

(शेष 7 पर)

कुछ ऐतिहासिक घटनाएं

ले०—श्री मनीराम जी आर्य प्रधान आर्य समाज अहमद नगर

सुधन्वा राजा के साथ (जो बौद्धमत का अनुयायी था) शकराचार्य का शास्त्रार्थ हुआ, इसमे प्रतिज्ञा यह हुई थी कि यदि शकराचार्य पराजित हुए, तो उन्हे बौद्धमत स्वीकार करना होगा। बौद्ध पडित वेदो की निन्दा करते हुए कहते थे कि वेदो के बनाने वाले भाड, धूर्त और राक्षस हैं। झूठे दोष वेदो पर लगाते हैं। यदि महीधर की तरह वेदो का अर्थ किया जावे, तो बौद्धो के आक्षेपो को अवकाश मिलता है। 'गभ' शब्द को 'भग' से बदल कर महीधर ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है। शतपथ ब्राह्मण मे इसके अर्थ प्रजा, राष्ट्र या श्री के किये गये हैं। शोक है कि आजकल के शास्त्री लोग भी महीधर के अर्थों को मानते हैं। 'अश्व' शब्द के अर्थ शतपथ के प्रमाण से यदि 'अग्नि' के किये जायें जिसको कि महीधर ने मल्हेरुल मे घसीटा है, तो बौद्धो के आक्षेप वेदो पर से दूर हो जाते हैं और यदि हठ से महीधर जैसे अनार्य टीकाकार का पक्ष किया जाये तो बौद्ध लोगों के आक्षेप कैसे दूर हो सकते हैं। बुद्धिमानो को इस पर विचार करना चाहिये, क्योंकि महीधर के जैसे मनमाने अर्थ करने के कारण वेद ईश्वर से विमुख तीर्थंकर और केवल स्वभाव मानने वाले मत पैदा हो गये।

सुधन्वा राजा शास्त्रार्थ मे हार गया और उसने वेद मत को स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् शकराचार्य बुद्ध गया मे गये। जोकि आजकल हिन्दुओ का तीर्थ है, वास्तव मे यह बौद्ध लोगो का एक पवित्र स्थान था। अब तक भी बहुत सी मूर्तिया जिनको हिन्दू पूजते हैं, वहा बौद्धो की हैं।

वहा का राजा कट्टर बौद्ध था, वर्णाश्रम व्यवस्था को वहराजा नहीं मानता था। इस राजा को भी जीत कर शकराचार्य ने वैदिक धर्म का अनुयायी बनाया। बौद्धमत का अब ह्रास होने लगा। अब इसका कुछ आकार बदल कर जैनमत का प्रारम्भ हुआ। जैन लोग केवल युक्तिवादी थे और कृमि-कीटो के रक्षक होने के कारण मनुष्यो पर वे अधिक दया का प्रयोग नहीं करते थे। बुद्ध और जैनमतो के फैलने से क्षात्र धर्म को बहुत हानि पहुची।

अतः पश्चात् विक्रम, भर्तृहरि, शालिवाहन और भोज आदि बहुत से राजा हुए। इसी समय मे कालिदास पडित हुआ। ग्वालियर के भिंड नामी नगर मे मिश्र लोग रहते हैं, उनके पास सजीवनी नाम की एक पुस्तक है, उसमें महाभारत के विषय मे ऐसा लिखा है कि व्यास ने पहिले एक हजार श्लोक बनाए, फिर उसके बाद व्यास के शिष्यों ने एक हजार के 6 हजार कर दिये। इसके बाद फिर भरती पर भरती होती चली गई। जिस समय जैनमत उन्नति पर था, उस समय केवल ब्रह्मवैवर्त और वायु पुराण आदि दो तीन पुराण मालूम थे। आजकल कहने को तो केवल 18 ही पुराण हैं, किन्तु यह निश्चय करना कठिन है कि वास्तव मे कितने पुराण हैं और इनमें क्या-क्या भर घसीटा है। यवनी भाषा न बोले, जैन मन्दिर मे न जावें, इस प्रकार कट्टरपन के सैंकडो श्लोक बन गये हैं। हवन या उपासना करने के स्थान, जिनका नाम देवालय या देवस्थान था, अब मूर्तियों के स्थान बन गये। लोग ईश्वर के स्थान मे मन्दिरों मे रखी हुई मूर्तियो की पूजा करने लगे। जैनियो के मन्दिरो की मूर्तियों को भी देवता समझ कर पूजने लगे और जैनियो के देवालयो में मूर्तिया बिठा कर गपोडे हाकने लगे और भांति-भांति के हवनकुण्डो से लोगों को मूर्तियो का चमत्कार दिखलाने लगे। लोग भी आज की भाति चतुर न थे, इसलिए पुजारियों के फंदे मे फसने लगे।

अब पुजारी, बैरागी और गोसाई आदि का जोर बढ चला, तब यह कहने लगे कि 18 पुराण सत्यवतीसुत व्यास ने बनाये हैं, इस प्रकार अनार्ष ग्रन्थों का प्रचार और आर्ष ग्रन्थो का लोप होता गया। जड मूर्तियो में प्राण-प्रतिष्ठा करने लगे और प्रतिष्ठामयूख और प्रतिष्ठा भास्कर आदि ग्रन्थ बना डाले जिनमे प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों के नमूने देखिये—

"प्राण इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु, इन्द्रियाणीहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु"।

इस प्राण-प्रतिष्ठा के गपोडे को आर्य शास्त्रो से सहारा कहा मिल सकता है। चारो वेदो की सहिता में कहीं एक मन्त्र भी प्राण-प्रतिष्ठा का नहीं मिलता। इस प्रकार के कल्पित मन्त्र पौराणिक समय मे लोगो ने गढ़ लिये और कहने लगे कि प्राण-प्रतिष्ठा से मूर्ति मे पूजा का अधिकार पैदा हो जाता है। मालूम होता है कि यह मूर्ति-पूजा जैनमत वालों से हम में घुस आई है और इसको सहारा देने के लिये पुराणो मे इसका वर्णन किया गया है।

अवतारो का वर्णन भी पुराणों में ही मिलता है। हरिवंश मे नृसिंहावतार की कथा है। अवतारो की कथाओ और मूर्ति-पूजा के प्रचार से लोगों की मनन शक्ति दूर होकर मन का झुकाव कर्म-मार्ग की तरफ हो गया। मनमाने व्रत, उपवास, उद्यापन आदि लोग करते हैं। ऐसे कामों से शारीरिक स्वास्थ्य की हानि और रोगों की वृद्धि होती है, इसके अतिरिक्त इन बखेडों से शैव, वैष्णव, वल्लभाचारी और रामानुजी आदि अनेक प्रकार के सम्प्रदाय उत्पन्न होकर आपस में विरोध बढता गया और जड़ मूर्तियों के आगे दाल-भोग रखने, उन्हें सुलाने और रासलीला करने आदि बाल क्रीडाओं से वैदिक धर्म की निन्दा होती है और देश के प्रत्येक प्रान्त मे पाप की वृद्धि होती है। ऐसी और भी बहुत सी हानियां मूर्ति-पूजा से होती हैं। मन्दिरों मे पुजारी लोग वैसा ही प्रसाद देते हैं, जैसी कि उनको दक्षिणा मिलती है। इसलिये मन्दिर क्या हैं, मानो सेठ लोगो की दुकानें हैं। पुजारी लोग अपने स्वार्थ के लिये आलस्य और मूर्खता को बढ़ाने वाले बहुत से नये वाक्य बना कर लोगों को फसाते हैं। बहुत से वाक्यो को अपनी इच्छा के अनुसार जोड मेल कर दिया है। कहते हैं कि—

पठतव्यस्तदपि मर्तव्यं दन्तकटाकटेति किं कर्तव्यं।

प्रातःकाले शिव दृष्ट्वा सर्वं पाप विनश्यति॥

1. पढ कर भी जब मर जाना है तो दन्त कटाकट करने की क्या आवश्यकता है।

2. यदि प्रातःकाल उठकर शिवलिंग का दर्शन करें तो सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

वाह! क्या पुरुषार्थ है। ज्ञान के बिना भोग पुरुषार्थ और आनन्द नही है, परन्तु जहा ऊपर कही हुई भाति पुरुषार्थ की समझ है, तो वहा भागवत् जैसे पुराणों का जोर क्यों न होगा। यथार्थ विद्याओ के पठन-पाठन एकतरफ हटा कर पुराणों के केवल सुनने मे सारे महात्म्य लाकर धर दिये हैं। प्रत्येक पुराण की समाप्ति पर उसके सुनने से क्या-क्या लाभ होंगे, इसके मनमाने फल वर्णन किये हैं।

इस प्रकार धर्म बुद्धि बिगड जाने से लोग निर्बल और कायर हो गये, तभी तो ऐसी भ्रान्ति मे फस गये कि नवग्रहों मे हमारी हानि होगी। इसी आधार पर फलित ज्योतिष का आडम्बर फैला कर तदनुसार नवग्रहों के जाप के मन्त्र बनाये थे। इन मन्त्रो के अर्थों का इन कामो के साथ कोई भी सम्बन्ध नहीं जिनके करते समय कि उनका प्रयोग किया जाता है, इस विषय पर कभी किसी ने विचार नहीं किया। उदाहरण के लिए एक ही (शन्नोदेवी) मन्त्र को देखिए। इसको शनैश्चर देवता का मन्त्र ठहराया है और ज्योतिषी जी महाराज ने अपना पेट पकाया है। इसी प्रकार सम्प्रदायी लोगों ने तन, मन, धन गोसाईं जी के अर्पण कर ऐसे-ऐसे उपदेशों से भोले-भाले लोगो के मन भ्रष्ट कर दिये।

पाठक! यहां भली-भांति विचार कीजिये प्रमाज्ञान क्या है और भ्रान्तिज्ञान क्या है? देखिये जो वस्तु जैसी हो, उसका वैसा ही ज्ञान प्रमाज्ञान कहलाता है।

प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्यायः।

प्रमाणों से अर्थों की परीक्षा करना न्याय कहलाता है। इस वाक्य की कसौटी पर लगा कर सच-झूठ की परीक्षा कीजिये।

हमारे आई आलसी लोग कुछ करते हैं, यह हम सबका दुर्भाग्य है। हमारे भरतखण्ड देश से वेदों का बहुत सा धर्म लुप्त हो गया है और रहा-सहा हम लोगों के प्रमाद से नष्ट होता जा रहा है और उसकी जगह पाखण्ड, अनाचार और दम्भ बढ़ता जा रहा है। सदाचार और सच्चाई से हम दूर होते जा रहे हैं। तभी तो हम सबकी दुर्दशा हो रही है। इसमें आश्चर्य ही क्या है? सनातन आर्ष ग्रन्थ वेदादि को छोडकर पुराणो मे लिपट रहे हैं और उनकी कल्पित और असम्भव गाथाओं को अपना धर्म समझ रहे हैं। यदि मुझसे कोई पूछे कि इस पागलपन का कोई उपाय भी है या नहीं? तो मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ है तथापि इसका उपाय हो सकता है। यदि परमात्मा की कृपा हुई तो रोग असाध्य नहीं है। वेद और 6 दर्शनों की सी प्राचीन पुस्तकों के भिन्न-भिन्न भाषाओ में अनुवाद करके सब लोगो को जिससे अनायास प्राचीन विद्याओं का ज्ञान प्राप्त हो सके, ऐसा यत्न करना चाहिए और पढ़े-लिखे विद्वान् लोगों को सच्चे धर्म का उपदेश करने की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए और साथ-साथ मे आर्य समाजकी स्थापना करके तथा मूर्ति-पूजादि अनाचारों को दूर करके एव ब्रह्मचर्य से तप का सामर्थ्य बढा कर सब वर्णों और आश्रमों के लोगों को चाहिये कि शारीरिक और आत्मिक बल को बढ़ावें तो सुगमता से शीघ्र लोगों की आंखें खुल जावेंगी और यह दुर्दशा दूर होकर सुदशा प्राप्त होगी। मेरे जैसे एक निर्बल मनुष्य के करने से यह काम कैसे हो सकेगा, इसलिए आप सब बुद्धिमान् लोगो से आशा रखता हू कि आप मुझे इस शुभ काम मे सहायता देवें।

(उपदेश मंजरी से साभार—महर्षि दयानन्द सरस्वती का तेहरवां व्याख्यान)

टिप्पणी—यदि आर्य समाज के सभी धुरधर वैदिक विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदेशानुसार एकजुट होकर कार्य करेंगे तो उन्हें अपने वाछित कार्य मे सफलता हो सकती है अन्यथा नहीं। ऋषि का उपदेश और सुझाव सब आर्यों के लिये शिरोधार्य होना चाहिए। यदि हम पाखण्डों और अनाचारों को दूर करके ईश्वरीय ज्ञान वेद का सारे विश्व में प्रचार और प्रसार करना चाहते हैं। मुझे आशा है कि आर्य विद्वान् अपना मिथ्या अभिमान त्याग कर ऋषि की आज्ञा का पालन करेंगे। मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हू कि आजकल हमारे विद्वान् जो छोटे-बड़े ग्रन्थ लिख रहे हैं वह कभी भी प्रामाणिक कोटि में नहीं आ सकते क्योंकि ऋषिमुनियों द्वारा ग्रन्थ सदा प्रामाणिक रहेंगे। यह सत्य है, असत्य नहीं। साधारण विद्वान् और ऋषि में बहुत भारी अन्तर है। इति शुभम्।

सम्पादकीय :—

आर्य समाज और साम्यवाद—2

आज कल पाश्चात्य जगत में जो हलचल पैदा हो रही है उसकी ओर हमारा ध्यान नहीं जा रहा उसका एक कारण यह भी है कि भारत से बाहिर जो आर्य समाजें या आर्य समाजी हैं उनके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। मैंने पिछली बार लिखा था कि जब महर्षि दयानन्द ने कहा था—कृण्वन्तो विश्वमार्यम, तो उनके सामने आर्य समाज का एक ऐसा विस्तृतरूप था जिसके द्वारा वह वैदिक सिद्धान्तों को संसार के कोने कोने तक पहुचाना चाहते हैं। थोड़े ही समय मे उन्होने जो कुछ किया था उसका ही यह परिणाम था कि अमेरिका मे एक दार्शनिक एण्ड्रयूज जैक्सन ने कहा था कि भारत में आर्य समाज के रूप मे एक ऐसी अग्नि प्रज्वलित हो रही है जिसका प्रकाश ससार के कोने-कोने मे पहुचेगा और जितने पाखण्ड हैं वह उसमे जल कर भस्मीभूत हो जाएंगे। फ्रांस के एक दार्शनिक रोमां रोला ने भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि भेंट की थी। यह सब इसलिए हुआ था कि पाश्चात्य विद्वान् यह समझते थे कि आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जिसके द्वारा ससार में एक नए युग का प्रादुर्भाव हो सकता है जिन पाश्चात्य दार्शनिको ने महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की थी उनमे से किसी ने भी महर्षि से भेंट की होगी केवल उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होने यह सब कुछ लिखा था। इसका अभिप्राय मैं यही लेता हू कि महर्षि दयानन्द सारे ससार को आर्य समाज की लपेट में लेना चाहते थे। जिन वैदिक सिद्धान्तो का उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और अपने दूसरे ग्रन्थों मे विवेचन किया है वह केवल भारत वासियों के लिए ही न था, न केवल हिन्दू जाति के लिए था वह क्या चाहते थे इसका कुछ अनुमान हम आर्य समाज के छठे नियम द्वारा समझ सकते हैं। जिसमे उन्होंने लिखा—"ससार का उपकार करना समाज का मुख्य उद्देश्य है"

तात्पर्य यह है कि महर्षि दयानन्द बहुत दूरदर्शी थे। इसलिए वह अपने देश से बाहिर की दुनिया को भी समझने का प्रयास करते थे। उन्होने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को उच्च शिक्षा के लिए इंगलिस्तान भेजा था तो वह भी इसीलिए उनके द्वारा वह अपनी विचारधारा को दूसरे देशों तक पहुचाना चाहते थे। जो लोग आज अंग्रेजी भाषा के अध्ययन पर आपत्ति करते हैं उन्हें यह न भूलना चाहिए कि महर्षि दयानन्द जी ने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था तो केवल इस लिए वह समझते थे कि विदेशियो तक अपने सिद्धान्त को पहुचाने के लिए यह आवश्यक है कि कोई व्यक्ति उनकी भाषा मे ही उनसे बात करे। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा संस्कृत के महान् पण्डित थे और इंग्लिस्तान मे अंग्रेजी के द्वारा कुछ और शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वह इस योग्य हो गए थे कि महर्षि का सन्देश उन लोगों तक पहुचा सकें जिन्होंने पहले उसे न सुना था। इसी से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि महर्षि दयानन्द अपनी विचारधारा को केवल भारत तक ही सीमित न रखकर सारे ससार तक पहुचाना चाहते थे।

परन्तु आज यह सब चौपट हो गया आर्य समाज के नेता अपने देश की समस्याओं पर विचार नहीं करते वह दूसरे देश की समस्याओं पर क्या विचार करेंगे। यदि उनमें यह सूझबूझ होती कि वह ससार के विस्तृत मानचित्र को देख सकें तो उनका ध्यान आवश्य योरुप के उन देशो की तरफ अवश्य जाता जिनमे [illegible] समाप्त हो रहा है। रूस, पोलैण्ड, हगरी, रोमानिया, जर्मनी और दूसरे कई योरुपीय देशों में आज कल अपूर्व हलचल ले रही है। पुरानी राजनैतिक व्यवस्था समाप्त हो रही है और उसका स्थान नई विचारधारा ले रही है। जिसे हम आज तक साम्यवाद या कम्यूनिज़्म कहते रहे वह आज योरुप मे समाप्त हो रहा है। किसी दूसरे देश की बात क्या कहे रूस मे भी कि उसका सबसे बड़ा केन्द्र था उसे समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रश्न किया जायेगा कि यह सब सब क्यो हो रहा है और उसका स्थान अब कौन सी राजनैतिक व्यवस्था लेगी? हमारे देश मे भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। आज वह भी सोच रहे हैं कि अब वह क्या करें। क्या आर्य समाज के नेतृत्व ने कभी यह भी सोचा है कि ऐसी स्थिति मे आर्य समाज को क्या करना चाहिए? एक स्थान खाली हो रहा है उसे कौन भरेगा, इस पर आज सारे ससार मे विचार हो रहा है। मैं तो समझता हू कि आर्य समाज के पास इस समस्या का एक समाधान है और वह है—वर्ण व्यवस्था। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज के बुद्धिजीवी बैठ कर इस समस्या पर विचार करें। हमारे ही देश मे जो व्यक्ति आज तक साम्यवाद की ओर झुक रहे थे उनके सामने भी अब यह प्रश्न है कि इसके बाद क्या करें? क्योकि जहा से साम्यवाद प्रारम्भ हुआ था वही उसकी अर्थी उठ रही है। क्या ऐसी स्थिति मे आर्य समाज ही ससार के सामने इसका कोई विकल्प प्रस्तुत कर सकता है यह एक प्रश्न है जिस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। परन्तु कौन करेगा? आर्य समाज के नेतृत्व के पास तो इसके लिए न समय है न उनमे यह सूझ-बूझ है कि ससार मे जो इतना बड़ा सकट पैदा हो रहा है उसका क्या समाधान हो सकता है, इस पर विचार करें। हमारे अपने देश मे यदि आर्य समाज का महत्त्व समाप्त हो रहा है तो उसका एक कारण यह भी है कि देशवासियो के सामने जो समस्याएं आज पैदा हो रही हैं आर्य समाज उनका कोई ऐसा समाधान प्रस्तुत नही कर रहा। महर्षि दयानन्द जी ने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक तीनो प्रकार की समस्याओ का समाधान हमारे सामने रखा था। उनका सत्यार्थ प्रकाश उन सब समस्याओ का एक समाधान है। क्या उसमे साम्यवाद का भी कोई विकल्प है? मैं समझता हू कि है और वह हम आज ससार के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं परन्तु करेगा कौन?

—वीरेन्द्र

शिवरात्रि आ रही है

23 फरवरी को शिवरात्रि का पर्व है। यह पर्व आर्य समाज के लिए एक बहुत बड़ा महत्त्व रखता है। हम प्रति वर्ष शिवरात्रि को ऋषि बोधोत्सव के रूप मे मनाते हैं। मैं पजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारियो से निवेदन करना चाहता हू यह इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव पहले की तरह बड़ी धूमधाम से मनाए। इसे केवल प्रमुख आर्य समाजों मे भाषण प्रतियोगिता ही का रूप देने का प्रयास न किया जाए बल्कि युवको और महिलाओ को विशेष रूप से इसके साथ सम्बन्धित किया जाए। सभी आर्य समाजें स्थानीय विद्वानो के सहयोग से अपनी-अपनी आर्य समाजो को इस पर्व को मनाते हुए इस अवसर पर साहित्य भी वितरित करें। इस प्रकार का सभा के पास बहुत सा साहित्य है जो इस अवसर पर वितरित किया जा सकता है। आर्य मर्यादा का इस सम्बन्ध में विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है, जैसा कि प्रति वर्ष किया जाता है। इसलिए 18 व 25 फरवरी का अक ऋषिबोध विशेषाक होगा। इस विशेषाक की अधिक से अधिक प्रतिया मगवाकर बाटी जा सकती हैं, जिसका मूल्य केवल मात्र दो रुपये होगा। इसके साथ ही सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज अतीत की उपलब्धिया तथा भविष्य के प्रश्न व्यवहार भानु, आर्यों का आदि देश, सगठन मे ही शक्ति है, वेद और उनका प्रादुर्भाव, वेद पुष्पाञ्जलि, ओमकार स्तोत्र, सकीर्तन भजन आदि पुस्तकें प्रचुर मात्रा में सभा कार्यालय मे उपलब्ध हैं। इनका मूल्य भी बहुत कम है। यह साहित्य सभा से शीघ्र मगवाएं और ऋषिबोधोत्सव पर अपनी आर्य समाज की ओर से नि शुल्क वितरित करें ताकि ऋषि बोधोत्सव का एक सार्थक रूप जनता के सामने आ सकें।

—वीरेन्द्र

वर्तमान शिक्षा प्रणाली

ले० श्री सूर्य प्रकाश शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज धूरी

शिक्षा मनुष्य को अज्ञानता से मुक्त करती है। निरक्षर को साक्षर बनाती है। मानव को अन्धकार से निकालकर प्रकाश दिखलाती है। वह मनुष्य के नेत्रो के सम्मुख छायी धुन्ध को साफ कर उसे जीवन को सम्पूण रुप से देखने की प्रेरणा देती है।

भारत विद्या दान का केन्द्र माना जाता था। आश्रमो, मन्दिरो, मठो, गुरूकुलो मे ज्ञान की गगा बहती थी। आचार्य गुरू देवता के समान पूज्य थे। जिस प्राणी को जीवन मे गुरू नही मिलता उसका जीवन कभी भी सुखी नहीं होता। गुरू महिमा उस जमाने मे बहुत महत्त्व रखती थी। सत कबीर ने भी कहा था—

कबीरा ते नर अन्ध हैं जो गुरू
को कहते और
हरि रूठे गुरू ठौर है गुरू
रूठे नहीं ठौर।

धीरे धीरे गुरू का महत्त्व घटता चला गया। कचन जैसी विद्या की दलाली करने वाले निकम्मे अध्यापकों के हाथ आ गई। आश्रमों मे मिलने वाला ज्ञान बाटो और हाटो मे बिकने लग गया। शिक्षा प्रणाली दूषित हो गई। वतमान शिक्षा प्रणाली मे अनेकों दोष हैं जिसका सुधार अनिवार्य है।

महगाई—वर्तमान शिक्षा प्रणाली महगी बहुत है। निर्धन मा बाप अपने बच्चो को पढाने मे असमर्थ हैं क्योंकि शिक्षण केन्द्र शिक्षा के अड्डे न होकर व्यापार के अड्डे है। विशेष रुप मे छोटी छोटी दुकानो के रूप मे चलनेवाली सस्थाए नहीं व्यापार के अड्डे हैं। इनमे अध्यापक नही बसते व्यापारी बसते है। वह गुणी नही बल्कि शिक्षा के ऐजन्ट हैं। धन की बहती गगा मे हाथ धोने के लिए निकम्मा अध्यापक कहता है—

बिकने लगी शिक्षा शक्ति है तो
क्रय करो,
यदि शुल्क आदि न दे सको तो
मूर्ख रहकर जगत मे मरो।"

शिक्षण सस्थाओ की फीसें, विश्व विद्यालय के दाखले इतने ज्यादा हैं कि गरीब मा-बाप उसे देने मे असमर्थ हैं। यदि स्वतन्त्र गणराज्य भारत की भावी आशायें इस शिक्षा रूपी पुण्य प्रसाद से वचित रह गई तो भारत सरकार का सुनहरा भविष्य धूमिल हो जाएगा। भारत सरकार का कर्त्तव्य है कि निधन बालक बालिकाओ की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाये तथा स्कूलों और कालिजों में मासिक शुल्क कम रखा जाए ताकि विद्यार्थी मण्डल लाभ उठा सके।

धार्मिक शिक्षा का अभाव—वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे धर्म की शिक्षा तो नाम मात्र की भी नही। छोटी छोटी श्रेणियों मे भी काम वासना से युक्त विषय पढाए जाते है। धर्म का नाम ही नही। विद्यार्थी से पूछो कि अभिनेता कौन है? अभिनेत्री कौन है तो इन सब बातो का उत्तर वे दे जायेंगे मगर यदि उनसे पूछा जाए कि राम, कृष्ण बुद्ध गुरू गोबिन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती कौन है? इन सारी बातों से वे अनभिज्ञ है। धार्मिक शिक्षा विद्यार्थियों के चरित्र को ऊचा उठाती है। इस लिए धर्म की शिक्षा अवश्यमेव होनी चाहिए।

हस्त कार्य का अभाव—वर्तमान शिक्षा सस्थाए तथा विश्वविद्यालय क्लर्क बनाने के कारखाने है। दफ्तर मे 100 रुपए की क्लर्की उन्हें भाती है। परन्तु हस्त काय के प्रति उन्हे घृणा है कितने आश्चय की बात है। 100 रु० का क्लर्क 300 रु० कमाने वाले मोची से बूट पालिश करवाता है।

7 तारिख की सन्ध्या को जेब में पैसा नही यह सब मेरी शिक्षा का दोष है। गाधी जी ने 1937 में वारधा मे कहा था कि भारत की शिक्षा प्रणाली के ढाचे को बदलो। क्योंकि भारत के नगर ग्रामीण जनता के लिए ब्लाटिंग पेपर बनकर उसको चूसते जा रहे हैं, नगर आबाद हो रहे हैं। ग्राम बरबाद हो रहे हैं। हिन्द का सत्यानाश हो रहा है। यदि भारत की स्वतन्त्रता को स्थायी रखना है तो बालको को हाथ का काम सिखलाया जाए। आज हम भारत की सरकार से नम्र निवेदन करते हैं कि स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है तो हस्त कार्य प्रत्येक हिन्द के विद्यार्थी के लिए स्कूल कालिजो मे अनिवार्य विषय हो।

गुरु सम्मान का अभाव—वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुरु का सम्मान नहीं है। गुरु कहता हैं कि मैं पैसे लेता हू तो पढाता हू। शिष्य कहता है मैं पैसे देता हू "तू नहीं तो और सही।"

एक समय था जबकि शिष्य गुरु के आश्रम मे पढने जाता था वे बिक जाते थे श्रद्धा के द्वार पर परन्तु आज गुरु जाता है शिष्य के घर पर पढ़ाने और बिक जाता है चन्द चादी के टुकड़ों पर। ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके भाग्य की लाटरी निकलने वाली है। सत्य तो यह है कि कचन जैसी विद्या कोयले की दलाली करने वाले निकम्मे अध्यापकों के हाथ में आ गई है। आज का विद्यार्थी व्यापारिक कला के क्षेत्र में दक्ष हो चुका है, और अध्यापक भी बहती गगा मे हाथ धोना चाहता है। अत गुरु और शिष्य का सम्बन्ध अच्छा नही। लालची गुरु लोभी चेला दोनो ठेलम ठेला" यह भी जमाना था जब शिष्य गुरु का मान करते थे। वह आज नहीं। सत्य तो यह है कि अब गुरु भी है। वह नाम के गुरु हैं आंखों देखते सचमुच ... है। गुरु की गुरुताई ने ऐसा बड़ा धोखा है कि गुरु शिष्य दोनों दबे जा रहे हैं। दोनों एक अचलभारी नाव पर बैठे हैं, पता नहीं नाव कब ले डूबे।

अनुशासन—हीनता—आज की शिक्षा प्रणाली में अनुशासन-हीनता विद्यार्थी का धन्धा बन गया है। नियम के विरुद्ध चलना रिवाज दिखाई देता है। मास्टर जी भले ही श्रेणी मे मास भर टर-टर करते रहे उन्हें तो अपने कागज की नौका बनाने से ही समय नहीं मिलता। अक्ल के अन्धे और गाठ के पूरे शिष्य से अगर पूछा जाए कि कागज की नौका पार हो जाएगी, उत्तर मिलेगा नही। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे अनुशासन हीनता के कारण ही नित्य विश्वविद्यालयों मे हड़तालें होती दिखाई देतीहैं। नगरो मे उपद्रव मचते हैं। अनिश्चित काल के लिए विश्वविद्यालय बन्द हो जाते हैं।

सैनिक शिक्षा की कमी—वर्तमान परिस्थिति मे जबकि सीमाओं पर हर समय दुश्मन दनदनाते दिखाई देते है, इस बात को ध्यान में रखकर कहना पड़ेगा कि सैनिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। ताकि मेरे देश के युवक आने वाले समय के प्रखर पहरेदार बन जाए। मेरे देश की हर बहन हरशरण कौर बनकर, झासी की रानी बन कर आगे बढ़े। देश का हर नवयुवक हरि-सिंह नलवा बन कर आगे बढ़े। यह तभी सम्भव हो सकता है जब शिक्षण सस्थाओं में सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो।

निरुद्देश्य शिक्षा—बिना उद्देश्य के जीवन की गाडी नही चला करती। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे विद्यार्थी मण्डल अध्यापक वग तुच्छ से उद्देश्य को लेकर पढ़ते पढ़ाते हैं। अध्यापक पापी पेट की खातिर पढाते हैं, बालक प्रमाण पत्र के लिए पढते हैं। माता पिता इस ... कि पढ लिख जाएगा तो कुछ ... की सेवा कर जाएगा। लड़की को इस लिए पढाते हैं कि ... मिल जाएगा। यह सारे उद्देश्य तुच्छ हैं। शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास का होना चाहिए।

जिस देश मे प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की कमी हो, धर्म कर्म का शिक्षा में स्थान न हो, परीक्षा अस्तव्यस्त हो, पाठ्यक्रम का जीवन से सम्बन्ध न हो, ऐसी शिक्षा प्रणाली मे परिवर्तन की आवश्यकता है। आज का भारतीय जन्म रक्त जाती से तो चाहे भारतीय हो पर व्यवहार से पूरा अग्रेज है। भारतीयों के विशिष्ट गुण उसमे चाहें या न हों पर अग्रेजी सभ्यता का चस्का अवश्य होगा। इसलिए शिक्षा प्रणाली को अवश्य बदलना चाहिए। आज मानसिक शिक्षा की नहीं, शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता है। मानसिक शिक्षा केवल कागजी घोड़े दौड़ाना है पर आज श्रम शिक्षा की आवश्यकता है। पढे लिखे बेकार नजर आते हैं, अनपढ़ कारगुजार नजर आते हैं।

भारत की शिक्षा प्रणाली के आधार पर श्रमिक कार्य को पढे लिखे स्नातक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। शिक्षा वह है जो जीविका पैदा करे। दास- बनाने वाली शिक्षा नहीं वह दासता की जजीरें हैं। इस कमी की पूर्ति के लिए नवीन उद्योग-शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था करनी होगी जब स्थान-स्थान पर उद्योग का मन्त्र जपा जाएगा बेकारी की समस्या न रहेगी। पारिश्रमिक शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो जाएगा। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो नित नवीन नूतन साधनों के अतिरिक्त श्रम साध्य साधनों का उपभोग करा सके। इसलिए तो गुप्त जी कहते थे—

सबसे प्रथम कर्त्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में, शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज सब क्लेश मे। शिक्षा जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है, हीरा बनाती कोयले को धन्य शिक्षा धन्य है।

अमृतसर में शोभा यात्रा

प्रति वर्ष की भाति इस बार भी अमृतसर में ऋषि बोधोत्सव दिनांक 22-2-90 गुरुवार को मनाया जा रहा है। इस उत्सव के उपलक्ष्य मे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली जा रही है, जिसमें अमृतसर के जिले भर की समस्त आर्य समाजें एवम् शिक्षण सस्थाए शामिल होंगी।

—राकेश मेहरा

शुभ विवाह

श्रीमती एवं श्री प० ... हंस, सुपुत्र पूर्वक प्रचारक आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर (... में) के सुपुत्र अरविन्द कुमार हंस का शुभ विवाह कुमारी वीना सुपुत्री श्रीमती एव श्री ... के साथ 20 जनवरी 1990, शनिवार के दिन बी. पी. 21/9 भार्गव नगर जालन्धर में वैदिक रीति अनुसार शुभ आशीर्वाद के सम्पन्न हुआ है।

आर्य मर्यादा परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई दी गई।

एकेश्वरवाद—

सुसंगत जीवन पथ—
महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री महसिंह जी, वेद-दर्शनाचार्य, साधु-आश्रम, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

जब महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था उस में सब भूगोल के राजाओं को बुलाने को निमन्त्रण देने के लिए भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव चारों दिशाओं में गये थे। 10, 226

देखो! काबुल, कन्धार, ईरान, अमेरिका, यूरोप आदि देशों के राजाओं की कन्या गान्धारी, माद्री, उलोपी आदि के साथ आर्यावर्त्त देशीय राजा लोग विवाह आदि व्यवहार करते थे। 10, 233

जब रघुगण राजा थे तब रावण भी यहां के अधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया तो उस को रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उस के भाई विभीषण को राज्य दिया था। स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा—11, 236

जैसे मुसलमानों की बादशाही के सामने शिवाजी, गोविन्दसिंह जी ने खड़े हो कर मुसलमानों के राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया। 11, 237

सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब इन के सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज्यभ्रष्ट हो कर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्ध्यश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे हैं। वैसे स्वायम्भुवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति, महाभारत आदि ग्रन्थों में लिखे हैं। 11, 237

मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी सी वेद व्याख्या देखकर मुझ को विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर उधर आर्यावर्त्तीय लोगों की की हुई टीका देख कर कुछ यथा तथा लिखा है। 11, 238-9

इस से तो सायणाचार्य ने 'सूर्य' अर्थ किया है सो अच्छा है। 11, 239

देखो! एक 'गोल्डस्टकर' (गोल्डस्टकर) साहब, पैरिस अर्थात् फ्रांस देश निवासी अपनी "बायबिल इन इण्डिया" में लिखते हैं कि सब विद्या और भलाइयों का भण्डार आर्यावर्त्त देश है—11, 239

"दारा शिकोह" बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं। 11, 239

देखो! काशी के "मानमन्दिर" में शिशुमारचक्र को कि जिस की पूरी रक्षा भी नहीं हो रही है, तो भी कितना उत्तम है जिस में अब तक भी खगोल का बहुत सा वृत्तान्त विदित होता है। 11, 239

देखो! जो कोई भी उत्तम ब्राह्मण वा साधु न होता तो वेदादि सत्यशास्त्रों के पुस्तक स्वर सहित का पठन पाठन जैन, मुसलमान, ईसाई आदि के जाल से बच कर आर्यों को वेदादि सत्यशास्त्रों में प्रीतियुक्त वर्णाश्रमों में रखना ऐसा कौन कर सकता है, सिवाय ब्राह्मण साधुओं के? 11, 242

बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्राविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़ कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेदमत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है, इन को किसी प्रकार हटाना चाहिए। शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे, परन्तु जैनमत के भी पुस्तक पढ़े थे और उन की युक्ति भी बहुत प्रबल थी। 11, 249-50

वहां उस समय सुधन्वा राजा था, जो जैनियों के ग्रन्थ और कुछ संस्कृत भी पढ़ा था।

यद्यपि सुधन्वा जैनमत में थे तथापि संस्कृत ग्रन्थ पढ़ने से उन की बुद्धि में कुछ विद्या का प्रकाश था। 11, 250

शंकराचार्य के तीन सौ वर्ष के पश्चात् उज्जैन नगरी में विक्रमादित्य राजा कुछ प्रतापी हुआ, जिस ने सब राजाओं के मध्य प्रवृत्त हुई लड़ाई को मिटा कर शान्ति स्थापना की। तत्पश्चात् भर्तृहरि राजा काव्यादि शास्त्र और अन्य में भी कुछ कुछ विद्वान् हुआ। उस ने वैराग्यवान् हो कर राज्य को छोड़ दिया। विक्रमादित्य के पांच सौ वर्ष के पश्चात् राजा भोज हुआ। उस ने थोड़ा सा व्याकरण और काव्यालङ्कारादि का इतना प्रचार किया। पृ० 259

राजा भोज के पास जो कोई अच्छा श्लोक बना कर ले जाता था उस को बहुत सा धन देते थे और प्रतिष्ठा होती थी। उस के पश्चात् राजाओं और श्रीमानों ने पढ़ना छोड़ दिया। 11, 260

राजा भोज के राज्य में व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय और शिवपुराण किसी ने बना कर खड़ा किया था, उस का समाचार राजा भोज को विदित होने से उन पण्डितों को हस्त छेदनादि दण्ड दिया और उन से कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे, ऋषि मुनियों के नाम से नहीं। 261

ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़ के वैदिक धर्म विहीन होके भ्रष्ट हो जायेंगे। इस से विदित होता है कि राजा भोज को कुछ कुछ वेदों का संस्कार था। 11, 261

राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्हों ने घोड़े के आकार एक यान यन्त्रकलायुक्त बनाया था जो कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घंटे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि मनुष्य के चलाये कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। 261

जब संवत् 1914 के वर्ष में तोपों से मारकर मन्दिर मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दीं तब मूर्ति कहां गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा। 282

जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। 282

शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्य और व्यासोक्त ग्रन्थों को देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। 11, 289

जब व्यास जी ने वेद पढ़े और पढ़ा कर वेदार्थ फैलाया इस लिये उन का नाम "वेद व्यास" हुआ। क्योंकि व्यास कहते हैं आर पार की मध्य रेखा को अर्थात् ऋग्वेद के आरम्भ से लेकर अथर्ववेद के पार पर्यन्त चारों वेद पढ़े थे। और शुकदेव तथा जैमिनि आदि शिष्यों को पढ़ाये भी थे। 11, 290

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उस का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिस में कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया ऐसा नहीं लिखा—पृ० 301

देखो! गार्गी आदि स्त्रियां और छान्दोग्य (8, 2) में जानश्रुति शूद्र ने भी वेद "रैक्यमुनि" के पास पढ़ा था। पृ० 302-3

नानक जी का आशय तो अच्छा था। समु० 11, पृ० 323

यह सच है कि जिस समय नानक जी पंजाब में हुए थे उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से सर्वथा रहित मुसलमानों से पीड़ित था। उस समय लोगों को बचाया। 11, 324

नानक जी ने कुछ भक्ति विशेष ईश्वर की लिखी थी उसे करते आते तो अच्छा था। पृ० 325

(क्रमश)

जालन्धर में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आ० स० मु० गोविन्दगढ़ जालन्धर की ओर से प्रति माह पूर्णमाशी को परिवारों में हवन यज्ञ होता होता है। गत पूर्णमाशी को श्रीमती आशा अग्रवाल जी के निवास स्थान पर यज्ञ हुआ। उन्होंने करतारपुर के छात्रों को मूंगफली रेवड़ी आदि भेजी एवं दान दिया। श्रीमती कान्ता जी बेरी के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग में माननीय मीरा यति जी ने अपने प्रवचनों से जनता को लाभान्वित किया।

31 जनवरी को वसन्त का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें प० सालिगराम जी पराशर, ब्रह्मचारी राकेश शर्मा जी, करतारपुर के छात्र श्री विमल कुमार आर्या ने वसन्त के ऊपर अपने अपने विचार दिए। श्री राजेन्द्र कुमार जी ने अपने सुन्दर भजन सुनाए। श्री बूटा राम जी ने भी वसन्त पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज सैक्टर 22, चण्डीगढ़ का वार्षिकोत्सव

आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज सैक्टर 22 का वार्षिकोत्सव दिनांक 24 फरवरी, शनिवार से 26 फरवरी, 1990 सोमवार तक समारोह पूर्वक मनाना निश्चित हुआ है। ऋषिबोध उत्सव (शिवरात्री) के शुभ पर्व पर शुक्रवार 23 फरवरी, को ऋषि लंगर होगा। सोमवार 19 फरवरी से वीरवार 22 फरवरी तक कथा होगी।

विशाल नगर कीर्तन 22 फरवरी 1 बजे आर्य समाज मन्दिर सैक्टर 22 से चलेगा।

—प्रेमचन्द मनचन्दा, मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल

ले० श्री छत्रसिंह अध्यापक विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

स्वामी जी पूर्णत गुरुकुल को समर्पित थे। One thing at a line. एक समय पर एक काम। उनका सोना जागना, चलना, फिरना, पढना-लिखना, खाना-पीना हसना-रोना, सोचना-विचारना, नहाना धोना, सब कुछ गुरुकुल के हित मे होता था। अपने कर्मचारियो और ब्रह्मचारियो की सेवा मे लगे रहते थे। हमेशा उनके दु.ख सुख के लिए विचारते रहते थे। उनके गुरुकुल मे उनके रहते किसी प्रकार का भेद-भाव नही होता था। कोई कर्मचारी अपने को असहाय नही समझता था। सब लोग बडे प्रेम से मिल-जुलकर अपनी पूरी शक्ति और लगन से गुरुकुल की सेवा मे लगे रहते थे। ब्रह्मचारियो को शुद्ध, निर्विकार, ताजा, पुष्टिकारक, सात्विक भोजन मिलता था। आवश्यक दूध, घी, मक्खन और फल भी मिलता था। बच्चो का नहाना-धोना खेलन-कूदना, पढना, सोना व्यवस्थित और सुविधा जनक था। प्रात चार बजे ब्रह्मचारी ताजे पानी मे स्नान किया करते थे। इससे उन्हे जाडो मे कठिनाई महसूस नही होती थी। गुरुकुल परिसर मे कही वातावरण दूषित नही होता था। सब कुल वासियो का खान पान सात्विक होता था, धूम्रपान वर्जित था, अण्डे मास, शराब का सवाल ही नही उठता।

शुद्ध आचार-विचार वाले, सात्विक भोजन को ही अन्त. दिल से पसन्द करने वाले ब्राह्मणवृत्ति के अध्यापक हुआ करते थे। उनका एक मात्र कार्य पढना लिखना ही होता था। वह भी अध्यापन की अपनी सारी शक्ति गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के लिए ही लगाते थे। उनके समय और कार्य का मूल्याकन स्वामी जी उनको किसी प्रकार की आर्थिक कमी या किसी आवश्यक सुविधा से वचित नही रखते थे। इसी लिए अध्यापक को अपनी आर्थिक स्थति मजबूत करने के लिए ट्यूशन या अन्य किसी प्रकार का काम नहीं करना पडता था।

स्वामी जी के समय मे चोरी, बेईमानी नही होती थी। सभी कर्मचारी ईमानदारी से गुरुकुल की सेवा मे रत रहते थे। इसलिए गुरुकुल की आब-हवा रख-रखाव, व प्रबन्ध को देखकर, प्रभावित होकर दानी लोग दान देते थे। गुरुकुल मे परिसर के लोग पानी कि अभाव से पीडित नही रहते थे। चौबीस घण्टे निरीक्षण का काम बहुत ही समझदारी से होता था। गुरुकुल मे कितनी सफाई होगी, कितनी फुलवारी महकती होगी कि मधुमक्खियाँ भी गुरुकुल की ऊची इमारतो पर अपने छत्ते लगा लेती थी। उससे सारा गुरुकुल कितना मधुमय हो जाता होगा।

गुरुकुल परिसर मे वही व्यक्ति रहते थे जो केवल गुरुकुल सेवा में होते। वे गुरुकुल वातावरण को दूषित करने वाले, जातिवाद, क्षेत्रवाद पर अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति करने वाले गुरुकुल मे नही रहते थे। गुरुकुल पूर्णरूप से स्वस्थ था। रोग के कीटाणुओ से मुक्त था जो उस गुरुकुल के शरीर का रक्त चूसकर सुखा देते न गुरुकुल की आत्मा पर आघात कर सकते थे। वह स्वावलम्बी सस्था देश को और दुनिया को स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाती थी। आत्म सयमी, सुयोग्य, समर्पित, काम, क्रोध, लोभ अहकार, आलस्य, ईर्ष्या द्वेष से मुक्त अध्यापको के सरक्षण मे समय-समय पर सरस्वती यात्राए हुआ करती थी। गुरुकुल के होनहार विद्यार्थी अपने देश के कोने कोने मे घूमकर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर सकते थे। आजकल तो रेडियो, टी० वी० ऐसे सचार माध्यम हैं जिसके द्वारा हमारा प्रदर्शन बडा सुन्दर हो सकता है। बाहरी प्रदशन के साथ साथ हमे अपने इस गुरुकुल को पूर्णत स्वस्थ बनाना पडेगा, सुगन्धमय बनाना होगा, व्यवस्थित बनाना पडेगा। इसके लिए हमे थोडा प्रयास करना पडेगा, थोडा व्यय करना पडेगा। खर्च के लिए अभी मैं समझता हू। हमारे आर्य समाज मे ऐसे धनी व्यक्ति होगे जो गुरुकुल की उन्नति के लिए अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं। विद्यार्थियो की फीस बढाई जा सकती है। ब्रह्मचारियो का हिसाब-किताब, आश्रम, भण्डार सब कुछ विद्यालय मे आचार्य के अन्डर मे सिर्फ एक दो क्लर्क ही काम को कर सकते हैं। आश्रम-अध्यक्ष अच्छा हो भोजन-भण्डार का भण्डारी अच्छा हो एक डाक्टर योग्य, सेवाभाव, समर्पित भाव से काम करने वाले सहायक-मुख्याधिष्ठाता या मुख्याधिष्ठाता सिर्फ कृषि, गुरुकुल के मकान, फार्मेसी आदि को देखे। भोजन भण्डार मे ही अपनी चक्की हो, वहीं पर खाद्य पदार्थों, बच्चो के लिए आवश्यक कपडा आदि हो, दर्जी, नाई, धोबी बहुत ही अच्छे हो, बच्चो के पैसे का इस्तेमाल और किसी पद में नहीं। आचार्य, मुख्याध्यापक, आश्रम अध्यक्ष, भण्डारी, डाक्टर, अध्यापक, कम्पाउडर, अधिष्ठाता, पाचक और दो तीन चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी, दो क्लर्क मिलकर गुरुकुल को चलायें, खेती से पैसा आये, मकानों का पैसा आये, दुकानों का पैसा आये, फार्मेसी से आये, दान से आये। सभा जिम्मेदार अधिकारी पूर्ण निगरानी रखें तो गुरुकुल एक वर्ष में ही अपना असली रुप धारण कर सकता है। आध्यात्मिक विभाग को पुराने गुरुकुल में ले जाया जा सकता है। वहा गगा योजना का कोई कार्यालय खुलवा दिया जाय। सरकारी कर्मचारी-अधिकारी वर्ग के आने जाने से वहा का रास्ता ठीक हो जायेगा अपनी सुरक्षा के लिए उन्हें खाद बनाना पडेगा। इस तरह हमारी भूमि सुरक्षित हो जायेगी। हम फिर से वहा गुरुकुल का कोई भाग चला सकते हैं।

फिलहाल हमें उत्सव से पहले-पहले आश्रम को पुष्पित करना ही उसके लिए क्यारियों की सुरक्षा के लिए हमें सुन्दर जाली लगानी होगी। जिससे फूल पौधे बच्चो की पहुच से दूर रहें। आश्रम की शोभा, पवित्रता पहला असर डालती है। बच्चों का मन भी प्रसन्न रहता है। कुछ सात्विक भी हो विद्यालय के द्वार को सुन्दर रूप देना होगा, प्रवेश मार्ग को सुन्दर बनाना होगा विद्यालय का आगन सुन्दर बनाना होगा। विद्यालय को विद्या-मन्दिर बनाना होगा। एक क्लर्क केवल पुस्तकालय और बच्चो की स्टेशनरी आदि देने के लिए ही हो। विद्यालय का हाल डेकोरेटेड हो। प्रेरणादायक चित्र, आदर्श वाक्य, वेद मत्र विद्यालय की दीवारो पर सुन्दर तरीके से लिखे हो। आश्रम की दीवारो पर लिखे हों, विद्यालय के प्रवेश द्वार पर लिखे हो। प्रवेश मार्ग पर जगह-जगह खम्भो पर लिखे हों। विद्यालय की अपनी बाउण्डरी हो, खेल के मैदान, खेलने, दौड लगाने आदि के लिए तैयार और सुविधाजनक हो प्रात. विद्यालय की प्रार्थना मे सब अध्यापक, विद्यालय के कर्मचारी, विद्यालय के अधिकारी अनिवार्यत रूप से उपस्थित हो। आधे घण्टे कम सामूहिक प्रोग्राम सगीत के साथ आराम से बैठकर हाल मे किया जाए। भर ही प्रातः काल का यज्ञ में न होकर विद्यालय की प्रार्थना समय मे ही हो। विद्यालय शीघ्र ही प्रारम्भ हो शुरुआत प्रतिदिन अच्छी प्रकार से हो। कार्य पूरी निगरानी मे हो।

महात्मा मुन्शीराम जी और आचार्य रामदेव जी ने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से लाए गए दान के द्वारा गुरुकुल में भवन बनवाये लेकिन बडे दुर्भाग्य की बात है। आज हम उन्हें सम्भाल नहीं रहे। ऊपर छत टपकती रहती है भवन गिर सकता है लेकिन उसे ठीक नहीं करवाया जा सकता क्योंकि वह हमारा नहीं है। गुरुकुल का है, हमें तो सिर्फ अपने उदर पूर्ति के लिए गुरुकुल से जुडे हैं जो कुछ साधन हमारे पास हैं वे धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। चोरी हो जाते हैं। आगे हमें कौन दाम देगा। इसलिए गुरुकुल के प्रेमियों बैठकर सोचो, स्वामी जी की आत्मा हमे क्षमा नहीं करेगी। अभी समय है हमारे जीवित रहने का। अभी हम आर्य समाज को, गुरुकुल को जीवित रख सकते हैं। अब भी कुछ कर सकते हैं। स्वामी जी की आत्मा तू अमर है तू अपने इस गुरुकुल को मिटता हुआ नहीं देख सकती। तू अनेक भेष बनाकर आ। यदि नहीं आ सकती है तो अपने किसी प्रतिनिधि को भेज जो गुप्त रूप से समय-समय पर आकर गुरुकुल के कोने-कोने को देखे गुरुकुल के हर आदमी की आवाज को सुनें समझें, गुरुकुल बच्चो को देख-के कम, कैसे स्नान करते हैं उन्हें क्या कष्ट होता है। कैसे, क्या खाते हैं। कब पढते हैं क्या पढते हैं। कितना सोते हैं। कितना खेलते हैं। उनको कैसे संरक्षण मिल रहा है।

वाह रे महात्मा मुन्शीराम तूने क्या सपना साकार किया। कैसे तू अपना लक्ष्य प्राप्त किया। तूने फिर क्यो नही गुरुकुल के लिए दोबारा जन्म लिया। परमात्मा ने तुझे कौन सा इससे बडा काम सौंप दिया? हे महान आत्मा हमे शाक्ति दे हम तेरे इस कार्य को आगे बढाकर देश की और दुनिया की सेवा कर सकें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का पत्र इन्द्र जी के नाम—

ओ३म् गुरुकुल

26-12-59

मेरे प्यारे पुत्र,

कल के पत्र मे अपनी हार्दिक इच्छा का एक भाग प्रकाशित कर चुका हू। इस भाग पर हरिश्चन्द्र तथा डा० सुखदेव जी से बातचीत हो चुकी है कि आज अपना सारा तात्पर्य तुम्हारे सामने रखना चाहता हू। इस विषय मे किसी से न बात करता हू न करूगा।

मैंने देखा कि गुरुकुल का काम कितना महान है उतना ही महान बलिदान चाहता है। कि जिस मनुष्य का कोई भी सांसारिक व पारमार्थिक अन्य सम्बन्ध हो, उसके लिए गुरुकुल की रक्षा करना तथा उसे उन्नत करना कठिन है। यही कारण है कि केवल विवाहित पुरुष ही यहा पूरा लाभ नहीं पहुचा सकते, प्रत्युत वे परिवार-हीन पुरुष भी जिनको कोई और लगन हो।

वे लोग यहां की सहायता मे पूर्णतया कृतकार्य नहीं हो सकते। गुरुकुल के चलाने के लिए अन्य योग्यताए भी चाहिए। किन्तु सबसे बड़ी योग्यता यह होनी चाहिए कि यहां के ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त यहां के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता की दृष्टि में और कोई बडे से बडा आत्मिक उद्देश्य भी कुछ मूल्य न रखता हो।

अब प्रश्न यह है—क्या तुम्हारी रुचि विवाह की ओर है? यदि है तो मैं जानता हू कि जो चित्त तुम्हे मिला है उसके अनुसार तुम्हारे प्रेम का बडा भाग उधर चला जाएगा। गुरुकुल को गृहपति बनने के लिए आवश्यक है कि गुरुकुल के माता-पिता, [illegible]. धर्म-पत्नी——सबके स्थान में समझा जाए। क्या इस कठिन आत्म समर्पण का दृढ भाव तुम्हारे अन्दर है? यदि है तो गुरुकुल बडा भाग्यशाली होगा। यदि न हो, तब भी गुरुकुल तुम्हारे सदाचार तथा उच्च भावों का अभिमान तो कर रहा है।

मेरे प्यारे पुत्र! अपने अन्दर के भाव तुम्हारे सामने रख दिए हैं। यदि तुम इस कठिन प्रश्न पर विचार करके किसी परिणाम पर शीघ्र ही न पहुच सकते हो तो मुझे तार दे देना कि मैं अभी दिल्ली न जाऊं।

तुम्हारा सदैव सन्तुष्ट पिता

मुन्शीराम।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

31-1-90 को बस्ती जोधेवाल लुधियाना मे वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में पारिवारिक सत्संग हुआ यज्ञ श्री रूपलाल जी शर्मा ने करवाया यज्ञ की अध्यक्षता स्वामी सुमनावति जी ने की, मुख्य वक्ता श्री डा० धर्म वीर जी शास्त्री एम० ए० पी० एच० डी० रहे। श्री प० सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री वेद प्रवक्ता ने भी अपने विचार रखे। इस सत्संग में जोधेवाल बस्ती के सभी नवयुवकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और वह इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए।

इसी प्रकार का एक पारिवारिक सत्संग इससे पूर्व गली न०-5 बाजवा नगर लुधियाना में श्री प० सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री के निवास स्थान पर हुआ। इसका भी सारे मोहल्ले में बहुत प्रभाव रहा। वेद प्रचार मण्डल प्रति माह दो-तीन पारिवारिक सत्संग भिन्न-भिन्न मोहल्लों मे वेद के प्रचार व प्रसार के लिए कर रहा है। यह क्रम निरन्तर जारी रहेगा।

मतवाल चन्द
अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल

लुधियाना में गणतन्त्र दिवस सम्पन्न

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में राष्ट्रीय पर्व गणतन्त्र-दिवस के उपलक्ष्य मे एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के आरम्भ मे देश की एकता और अखण्डता के लिए यज्ञ किया गया, जिसमे श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाल शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की।

कामरेड हंसराज प्रधान, डा० अम्बेदकर प्रधान महासभा तथा डा० धर्मवीर शास्त्री सहायक महासचिव, आर्य युवक सभा पंजाब ने अपने ओजस्वी सम्बोधनमे देश को आजाद कराने के लिए आर्य समाज के योगदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज राजनैतिक नेता सत्ता की लालसा मे वोटों के लिए जनता मे फूट डाल रहे हैं किन्तु हम देश की आजादी की रक्षा के लिए हर सम्भव बलिदान देगें।

श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं वेद प्रचार भजन मण्डली आर्य गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल के बच्चो ने देशभक्ति के गीतो का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर 23 दिसम्बर को महान स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान-दिवस के उपलक्ष्य मे सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की माग की गई।

—महेन्द्र प्रताप आर्य, प्रधान

1990 को स्वामी दयानन्द स्मृति मेला

महर्षि दयानद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर की दिनांक 28-1-90 की कार्यकारिणी की बैठक में दिनाक 27, 28, 29 सितम्बर, 1990 को जोधपुर में स्वामी दयानद स्मृति मेला अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस बैठक मे गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी, दयानगर के स्वामी सुमेधानद जी सरस्वती, दयानद शोध-पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल जी भारतीय भी उपस्थित थे। इस आयोजन का विशाल पैमाने पर मनाने और इस अवसर पर वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन और सस्कृति रक्षण सम्मेलन रखने का निर्णय लिया गया। सभी कार्यकर्ताओ ने एक जुट होकर इस विशाल मेले को सफल बनाने का सकल्प लिया।

मन्त्री
महर्षि दयानद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर

यज्ञ एवम् सत्संग का आयोजन

आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल एवम हिन्दू मच सोनीपत के तत्वावधान मे 28 1 1990 को श्रद्धेय महात्मा प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की जयन्ती पर श्री ज्ञान चन्द जी मुञ्जाल (उपप्रधान आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत) के निवासस्थान 99 एल माडल टाऊन सोनीपत मे यज्ञ एवम् सत्सङ्ग का आयोजन किया गया।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसे विस्तार से लिखना पड़ा और किसी को कोई भ्रान्ति न हो। इस लिए निम्न पायन्ट दोहरा रहा हू।

(क) इस लेख-माला मे हमने जो दिशा अपनायी है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है जिसके निम्न कारण हैं।

(ख) वेद ने विद्या के दो भाग किये हैं—'परा-विद्या' तथा 'अपरा विद्या'। 'द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च'। 'परा-विद्या' वह है जो 'सांसारिक-विद्या से, भौतिक-विज्ञान' से परे है, 'अपरा-विद्या' वह है जो इधर की, ससार की विद्या है—पदार्थ विद्या है भौतिक विज्ञान। इस प्रकार वेद ने 'अपरा' या सांसारिक विद्या को भी विद्या का नाम दिया है।

(ग) 'परा' तथा 'अपरा' की तरह वेद में दो अन्य शब्द भी ध्यान देने योग्य है जिनका प्रकृत विषय के साथ सम्बन्ध है। ये शब्द हैं—'अविद्या' तथा 'विद्या'। वेद की शब्दावली में 'अविद्या' का अर्थ अज्ञानता या निरक्षरता नहीं है। यजुर्वेद में लिखा है 'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्यया अमृतं अश्नुते'—अविद्या से मृत्यु को तर कर विद्या से अमृत प्राप्त होता है। इस कथन से स्पष्ट है कि वेद की शब्दावली में 'अविद्या का अर्थ भौतिकवाद या वर्तमान-विज्ञान के भौतिक-साधनों से दीर्घ जीवन प्राप्त होता है, औषधि आदि के द्वारा [illegible] प्राप्त किया जा सकता है, मृत्यु-भय लाकर तरा जा सकता है, परन्तु अमरता तो अध्यात्मवाद से ही प्राप्त हो सकती है। इस कथन से स्पष्ट है कि वेद मे 'परा' विद्या से अध्यात्मवाद तथा 'अपरा' विद्या से भौतिकवाद अभिप्रेत है।

(घ) जैसे वेद ने ज्ञान के 'परा'-विद्या तथा 'अपरा'-विद्या—ये दो भाग किये हैं वैसे ही यजुर्वेद ने इन्ही भावों को प्रकट करने के लिये दो अन्य शब्दों का प्रयोग किया है—वे हैं 'सत्य' तथा 'अनृत'। 'अनृत'—शब्द का अर्थ है—जो 'ऋत' न हो वह 'अनृत'। 'ऋत' का अर्थ है—'सत्य'। ऋत च सत्य चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत—इस मन्त्र मे 'ऋत' और 'सत्य' का एक साथ प्रयोग किया गया तो यजुर्वेद के जिस मन्त्र का हमने निर्देश किया है वह है 'दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापति'। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'परा' 'विद्या' 'सत्य इन तीन एकार्थक शब्दो का एक ग्रुप है, 'अपरा' 'अविद्या' 'अनृत इन तीन एकार्थक शब्दो का ग्रुप है। इसी लिए इस लेख माला से स्पष्ट है कि 'परा' 'विद्या' 'सत्य'—ये एकार्थक शब्द अध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं, 'अपरा' 'अविद्या' 'अनृत' ये तीनों एकार्थक शब्द भौतिकवाद या भौतिक विज्ञानों का प्रतिनिधित्व करे अध्यात्मवाद नित्य है, सनातन है, सत्य है, अपरिवर्तनशील है, स्थिर है, भौतिकवाद जिसकी उपज भौतिक विज्ञाने हैं अनित्य है, बदलता रहता है, वेद की परिभाषा में अनृत है, परिवर्तशील है, अस्थिर है।

इसी विचारधारा के आधार पर हम कहते हैं, "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।" भौतिक विज्ञान बदल सकता है, अध्यात्म विज्ञान बदल नहीं सकता क्योंकि वह 'सत्य' है।

श्री राम प्रसाद जी सग्गड़ को भ्रातृशोक

आर्य समाज लुधियाना के प्रसिद्ध व वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्रीराम प्रसाद जी सग्गड के छोटे भाई श्री लक्ष्मण दास जी का गत दिनों देहावसान हो गया। अभी कुछ थोडा समय हुए उनको पुत्रवधु का भी देहावसान हो गया था। इस प्रकार उनको गत दिनो में दूसरी बार यह वियोग दु:ख प्राप्त हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगतात्मा को सद्गति प्रदान करे और श्री सग्गड जी को यह सदमा सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से दिवंगतात्मा को श्रद्धाञ्जलि भेन्ट करता हू।

—रणवीर भाटिया
सभा महामन्त्री

कठुआ में गायत्री यज्ञ

28 जनवरी, 1990 को आर्य समाज कठुआ (जम्मू) मे गायत्री महायज्ञ किया गया। यह महायज्ञ "काश्मीर में शान्ति" हेतु कठुआ के वयोवृद्ध आर्य समाजी नेता हैदराबाद के सत्याग्रही व स्वाधीनता सेनानी पण्डित छज्जूराम जी भगत की प्रेरणा से किया गया जिसमें शहर के गणमान्य नागरिक भी सम्मिलित हुये। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प० छज्जूराम जी ने की।

इस अवसर पर प्रधान आर्य समाज कठुआ श्री भारतभूषण जी महाजन एडवोकेट ने काश्मीर के हालात पर जबरदस्त चिन्ता व्यक्त की और जोरदार अपील की कि सरकार हालात पर फौरन काबू पाये।

—"सुरेन्द्र" मन्त्री

पं० मनोहर लाल जी को भतीजे का शोक

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता प० मनोहर लाल जी, आर्य मुसाफिर के नौजवान भतीजे (बबू) की पिछले दिनों मृत्यु हो गई थी। वह पिछले 7-8 मास से गुर्दा रोग से पीड़ित थे। काफी ईलाज के बाद भी अकाल मृत्यु ने आ घेरा। पिछले दिनों 31 जनवरी को उनका अंतिम शोक दिवस सम्पन्न हुआ इस अवसर पर यज्ञ किया गया यज्ञ के बाद दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु चरणो में प्रार्थनायें व दिवंगत आत्मा की श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री यमुना दास जी को पुत्र शोक

आर्य जगत को बडे दुख से सूचित किया जा रहा है कि आर्य समाज कबीर नगर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री यमुनादास जी के बडे सुपुत्र श्री सोमनाथ जी, जो कि सरकारी नौकरी मे कार्यरत थे, अचानक दिल का दौरा पडने से30 1 90 को असामयिक मृत्यु का शिकार हो गये हैं। उनका अन्तिम शोक दिवस 9 फरवरी 1990 को दोपहर । बजे उनके निवास स्थान (जो कि आर्य समाज कबीर नगर के पास ही है) कबीर नगर जालन्धर मे सम्पन्न होगा।

गुरुकुल आश्रम आम सेना का वार्षिकोत्सव

आपके प्रिय गुरुकुल का 22वा वार्षिक महोत्सव माघ पूर्णिमा फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रथमा, द्वितीया, शुक्र, शनि, रविवार तदनुसार 9, 10, 11 फरवरी 1990 को अत्यन्त समारोह के साथ मनाया जायेगा।

इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी प्रसिद्ध वैज्ञानिक पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी, पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी (हरिद्वार), प० देवपाल जी दीक्षित, श्री प० गोविन्द प्रसाद जी, माता कौशल्या देवी (रायपुर) प० रमेशचन्द्र जी प्रधान म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा, इंजिनियर प्रियव्रत दास जी भुवनेश्वर, श्री मोहनलाल गुप्ता, श्री गुलाबचन्द जी बन्सल श्री विश्वनाथ शास्त्री भिलाई, श्री प० कमल नारायण जी पुरोहित (रायपुर), श्री दाताराम आर्य भजनोपदेशक (राजस्थान) आदि विद्वान् साधु सन्यासी पधार रहे हैं।

—धर्मानन्द सरस्वती

शुद्धि के समाचार

गत दिनो आर्य समाज सीतापुर में यज्ञ के पश्चात् आदिवासी इसाई बने 507 लोगो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर तथा श्री प्रेम प्रकाश पुरी द्वारा भेजे गए वस्त्र उन सभी शुद्ध लोगो मे बाटे गए। इस शुद्धि के कार्य मे सीताराम केहरी, स्वामी सेवानन्द, श्री वेद पाल जी, श्री वान प्रस्थी धर्म मुनि जी ने भी सहयोग दिया। इसी प्रकार इसी आर्य समाज में 474 इसाईयों को शुद्ध किया गया। ग्राम अजबा (सीतापुर) में यज्ञ के पश्चात 666 ईसाईयो को शुद्ध किया गया और उन्हे वस्त्र बाटे गए। इस प्रकार शुद्धि का कार्य निरन्तर चल रहा है। दानी महानुभाव वस्त्र आदि भेज कर सहयोग दे रहे हैं।

—स्वामी सेवानन्द

सेवा में,

श्री डायरेक्टर महोदय, दूरदर्शन केन्द्र जालन्धर

सादर नमस्ते!

सेवा में निवेदन है कि 20 12-89 का ज्ञान विज्ञान के बारे में टीमों के साथ प्रश्न-उत्तर प्रोग्राम चल रहा था जिस मे प्रश्न यह था कि परमात्मा ने आदमी कब बनाए और इन्हें बनाने में कितने वर्ष हो गए हैं। टीम ए ने उत्तर दिया था कि पचास हजार वर्ष हो गए हैं। और उसको कहा गया ए टीम का उत्तर ठीक है, इसे नम्बर दे दिए जावें।

कृपया आप यह बतावें कि रामायण काल को भी लाख वर्ष हो चुके हैं। क्या उस समय आदमी नहीं थे? यदि रामायणकाल में आदमी थे, तो आप ही बतावें कि पचास हजार वर्ष वाला प्रश्न कहां तक उचित है? वेद जिसको सारी दुनिया नतमस्तक मानती है, उसके अनुसार परमात्मा ने सृष्टि की रचना की थी, उसकी गणना आज एक अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 (उनचास) हजार 90 (नब्बे वर्ष) हो चुके हैं। कृपया आप यह बतावें कि डेढ़ अरब पहले उत्तर के अनुसार कोई आदमी नहीं था। इतने समय तक आदमी के बिना ही सृष्टि थी?

कृपया इसका उत्तर देवें,

धन्यवाद सहित

—[illegible] आर्य

कार्यकर्ता प्रधान

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर

जालन्धर

—श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा ... प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर ... जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 21 अंक 49, 28 फाल्गुन सम्वत् 2046 तदनुसार 8/11 मार्च 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

एक महान् व्यक्तित्व

धर्मवीर पण्डित लेखराम आर्यपथिक

—ले० श्री रोशन लाल शर्मा लुधियाना

संसार की उन्नति का इतिहास सदा ही महापुरुषो की जीवन-गाथाओ से तैयार होता रहा है। जिन महानुभावो ने धर्म, जाति व राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया, यहा तक कि अपने धार्मिक सिद्धातो की रक्षा के लिए अपने प्राणो तक की आहुति देने मे भी संकोच नही किया, उनकी धर्म के प्रति लगन ने उनके विचारों के प्रसार के लिए बिजली से भी बढ़कर कार्य किया। प्रत्येक जीवित समाज व राष्ट्र अपने जीवन का प्रमाण इस प्रकार के बलिदानों के रूप मे ही प्रस्तुत किया करता है।

जिस समाज ने जितने अधिक बलिदान किये, उतना ही स्वर्णिम इतिहास उस समाज का बनता चला गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक ज्योति से भारत वर्ष मे फैले अन्धकार को दूर किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अभूतपूर्व बलिदान के बाद वैदिक प्रकाश को विश्व मे फैलाने के लिए आर्य जाति को विधर्मी होने से बचाने के लिए पण्डित लेखराम जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। यहा तक कि उन्होने 6 मार्च, 1897 ई० को सन्ध्या वेला मे अपने प्राणो का बलिदान देकर अपने सिद्धातो की सत्यता को प्रकट किया।

जिस प्रकार सूर्य भौतिक प्रकाश से भौतिक जगत को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार से प० श्री लेख राम जी ने अपनी बुद्धि के प्रकाश से परिपाटियो Traditions को उज्ज्वल बनाया। "महाजनो येन गत स पन्था" मार्ग वही है जिस पर बड़े आदमी चलते है। इस विषय मे अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि लोग फैली की निम्न पंक्तियां याद रखने योग्य हैं —

Lives of great men, all reminds us We can make our lives sublime And departing leave behind us Footprints on the sands of time

महान् पुरुषो का जीवन हमको यह स्मरण दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते है और मरने के बाद संसार-सागर के काल रूपी रेतले तट पर पदचिन्ह छोड सकते हैं, जिनका दूसरे लोग अनुसरण कर सकें। प० लेख राम जी का जीवन इस कसौटी पर पूरा उतरता है।

श्री पण्डित जी का जन्म 8 चैत्र सम्वत् 1915 विक्रमी शुक्रवार के दिन पण्डित तारा सिंह जी के घर सैयदपुर ग्राम तहसील चकवाल, जिला जेहलम में हुआ था। पाचवें वर्ष में आपको विद्या प्राप्ति के लिए फारसी-भाषा के विद्यालय मे बैठाया गया। पन्द्रह वर्षों तक लेख राम एक सामान्य विद्यार्थी थे तथापि लेख राम पढने लिखने मे अधिक उत्साही थे और उनकी स्मरणशक्ति दूसरों से बढ चढ कर थी 17 वर्ष की आयु मे आप पेशावर मे पुलिस मे भर्ती हुए। उन दिनो मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी हिन्दुओ (विशेष कर आर्य समाज) के विरुद्ध बड़े विषैले लेख प्रकाशित किया करते थे और आर्यों के विरुद्ध कई पुस्तकें भी लिख चुके थे। जब पण्डित जी ने उन पुस्तको को पढा तो आपने उन पुस्तको का युक्ति-युक्त एव सतोषजनक उत्तर देने के लिए निश्चय कर लिया। इस शुभ कार्य की पूर्ति के लिए 16 मई 1889 को आप अजमेर मे सेठ फतेह मल की वाटिका मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मिले। वहा आपने उनके उपदेशामृत का पान किया जिससे आपके सब सशय निवृत्त हो गए।

महर्षि के प्रथम एव अन्तिम दर्शन करने के पश्चात आप पेशावर मे आ गए। बाद मे नौकरी से त्याग पत्र देकर लाहौर पहुच गए। कुछ समय तक आप फिरोजपुर मे 'आर्य गजट' के सम्पादक बनकर आर्य समाज की सेवा करते रहे तथा उसके बाद आप आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक बन गए।

पण्डित जी ने छोटी-बडी 33 पुस्तकें लिखी। आपको छ भाषाओ हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी एव गुरमुखी का ज्ञान तो था ही, किन्तु अंग्रेजी न जानते हुए भी आपने अनेक अंग्रेजी पुस्तको के प्रमाण दिए। आपकी लेखन शैली बहुत रोचक और सर्व-प्रिय है। इसके साथ ही उनकी रचनाओ का प्रत्येक शब्द सच्चे हृदय से निकलता हुआ है और वह पाठको के हृदय एव मस्तिष्क पर आश्चर्य-जनक प्रभाव डालता है।

मुसलमान जब आपकी पुस्तको का उत्तर न दे सके तो उन्होने न्यायालयो के द्वार खटखटाए। दिल्ली के तत्कालीन श्री मुख्यायुक्त कैपटन डेविस ने अपने निर्णय मे लिखा था—"प० लेखराम की कथन शैली ऐसी अनोखी है कि वह कभी भी स्वत दूसरो पर अपेक्षा नही करते और उत्तर भी इतने उचित होते है कि कानून के पंजे मे आना तो दूर रहा, हर न्याय प्रिय व्यक्ति को इनकी प्रशसा करनी पडती है। मैं विश्वास करता हू कि पण्डित लेखराम के विरुद्ध कोई भी अभियोग सिद्ध नही किया गया। अत अभियोग को भारतीय दण्डविधान की धारा 203 के अनुसार खारिज करता हू।" इसी प्रकार पजाब पुलिस के सुपरिटेन्डैंट साहब ने कहा था कि प० लेख राम अपने धर्म का उत्साह से भरपूर रक्षक नजर आता है।"

आप एक महान तपस्वी और त्यागी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक के रूप मे आपको 25 रुपए मासिक मिलते थे। जब आपका विवाह हुआ तो सभा ने स्वय 30 रुपए मासिक कर दिए। 28 6 1895 ई० को आपने अपने जीवन का 2000 रुपए का बीमा करवाया। तब श्री महात्मा मुन्शी राम (स्वामी श्री श्रद्धानन्द जी सरस्वती) ने आपके 35 रुपए मासिक कर दिए। जब यह समाचार आपको मिला तो आपने लिखा कि मेरी पत्नी एव माता जी के लिए 30 रुपए मासिक ही पर्याप्त है। मुझे भोजन आर्य समाजो से मिल जाता है। अत मुझे वेतन वृद्धि स्वीकार नही। जहा आप आर्य समाज के प्रचार के कार्य के लिए जाते थे और वहा यदि आपका कोई निजी कार्य होता था तो उस स्थान का मार्ग व्यय सभा से या आर्य समाज से नहीं लेते थे। आज के उपदेशको के लिए आपका जीवन अनुकरणीय है।

प० लेख राम जी को मुसलमान या ईसाईयो से शास्त्रार्थ की कोई सूचना मिलते ही वे वहा अवश्य पहुच जाते थे। यदि प्रतिनिधि सभा की ओर से

(शेष पृष्ठ 7 पर)

धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षार्थ हैदराबाद में-आर्य सत्याग्रह

ले० श्री लक्ष्मण आर्य 'विद्यावाचस्पति' प्रधान, आर्यसमाज वरंगल (आन्ध्र)

(गतांक से आगे)

वरिष्ट अधिकारियों का ध्यान प्रतिबन्धों की ओर आकर्षित किया। साथ ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली ने भी हैदराबाद के शासन पर इस काल का दबाव डाला कि राज्य के अन्य धर्म बिलंबियों के समान ही आर्य समाजियों को भी अपने धार्मिक कार्यों में पूर्ण स्वतन्त्रता दे किन्तु इन औचित्यपूर्ण मांगों की न केवल उपेक्षा की गई किन्तु प्रतिबन्धों को अधिक तीव्र एव कठोर बनाया जाने लगा। राज्य के पुलिस विभाग के अन्याय अत्याचार के विरोध प्रदर्शन के लिए हैदराबाद दिवस मनाया और अपनी गत मांगों की पुनरावृत्ति करते हुए सामूहिक रूप से आर्य समाज के कार्यों, उत्सवों तथा प्रचारकों पर लगाए गए सभी बन्धनों के प्रति अपना रोष प्रकट किया किन्तु शासन के उच्चाधिकारियों ने आर्य समाज के इस विरोध प्रदर्शन की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं बल्कि हैदराबाद की पुलिस सात दिन इस चिन्ता मे रहने लगी कि आर्य समाजियों को कब और किस प्रकार से जाल में फंसाया जाए। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए पुलिस ने साम्प्रदायिक दंगों को अपना शस्त्र बनाया जिससे गुल बर्गा, हैदराबाद के धूलि पेठ श्री नायक राव के निवास स्थान, उदगीर आदि अनेक स्थानों पर धावा बोल दिया। अनेक आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं की हत्या भी की। इस प्रकार आर्यों के विरुद्ध पुलिस और हुकूमत के निरन्तर बढ़ते हुए अन्याय तथा अत्याचार से प्रोत्साहित होकर राज्य भर के जिलों, तालुकों और गांवों में मुसलमान गुण्डों ने भी रक्तपात तथा लूटमार मचा दी। आर्य प्रतिनिधि सभा इन सब का अपने उचित अधिकारों की ओर निरन्तर हुकूमत का ध्यान आकर्षित करती रही किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली स्वयं निजाम, उनके राजनैतिक विभाग के मन्त्री और अन्य उच्चाधिकारियों का ध्यान इन अत्याचारियों की ओर आकर्षित करती रही किन्तु अत्याचार और अन्याय तीव्र होते ही गए कम नहीं हुए। अन्ततः इसके सिवाय और कोई मार्ग ही नहीं रह गया कि संगठित रूप से हैदराबाद राज्य के मुकाबले की तैयारी की जाये। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से विचार विनिमय करके आर्य रक्षा समिति की स्थापना की और हैदराबाद में 1938 में सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। इस सत्याग्रह में भारत के विभिन्न प्रांतों से आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता सत्याग्रह करके जेलों में गए। उसका विवरण निम्न प्रकार रहा—इस सत्याग्रह का सर्वप्रथम महात्मा नारायण स्वामी जी ने 20 सत्याग्रियों के साथ सत्याग्रह किया और उन सब को 2 वर्ष का सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया दूसरे डिक्टेटर श्री कुंवर चान्द करण शारदा 5 मार्च को अपने कुछ साथियों के साथ गुले बर्गा मे गिरफतार कर लिए गए। तीसरे सर्व अधिकारी श्री लाल खुशहाल चन्द्र जी 154 साथियों के साथ सत्याग्रह किया। चौथे सर्वअधिकारी श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी थे इनके जेल जाने से पहले ही हैदराबाद की स्थिति डावाडोल होने लगी और उसने समझौते का प्रयत्न प्रारम्भ किया किन्तु मुसलमानों की संख्या मजिलि इत्तेहादुल मुसलीमन के दबाव के कारण हुकूमत ने अपना प्रयत्न अधूरा ही छोड़ दिया। अतः आर्य सत्याग्रह का शंखनाद कर पुनः वेग के साथ चल पड़ा। और धुरेन्द्र शास्त्री जी ने 530 साथियों के साथ गुलबर्गा में सत्याग्रह करके दो-दो वर्ष का सश्रम कारावास पाया। पांचवें सर्वाधिकारी श्रीयुत वेद व्रत जी छठा सर्वाधिकारी श्री महाशय कृष्ण तथा सातवें अधिकारी श्री ज्ञानेन्द्र जी ने क्रमशः अपने-अपने अनेक साथियों के साथ सत्याग्रह किया। इन अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त नेताओं के अलावा हैदराबाद राज्य के आर्य समाज नेताओं के डिक्टेटरशिप में बड़े-बड़े जत्थे जेल गये, जिनमें सर्व श्री शेष राव जी, दत्तात्रय प्रसाद दिगम्बरराव लातूर, शंकर राव पटेल, निवर्ती रेड्डी, गणपति राव आदि उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार अब तक 28000 सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया था। जिनमें लगभग पांच हजार हैदराबादी सत्याग्रही थे। इसके अतिरिक्त हैदराबाद के अनेकों आर्य वीरों ने भूमिगत रह कर सभाएं कीं, साहित्य व कर पत्रों द्वारा आर्य सत्याग्रह के महत्त्व को युवकों प्रचार कर सत्याग्रह में भाग लेने की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दिया है। इससे दक्षिण केसरी वीर विनायक राव जी 'विद्यालंकार' बारटला ने आठवें सर्वाधिकारी निर्वाचित होकर घोषणा करके अपने साथ एक हजार हैदराबादी सत्याग्रहियों को ले जायेंगे। 21 जुलाई 1939 को उन्हें सत्याग्रह करना था किन्तु 17 जुलाई 1939 को हैदराबाद की हुकूमत ने शासन सुधार की घोषणा कर दी। अनेक संस्थाओं पर तथा जेलों में आर्य जनता पर तथा सत्याग्रहियों पर पुलिस की उपस्थिति में ही मुसलमान गुण्डों ने ने आक्रमण किए और उन्हें घायल भी किया। जेलों में सत्याग्रहियों के साथ बड़ी कठोरता की जाती थी। उन्हें नाना प्रकार से त्रस्त किया जाता था और कई घण्टों तक भूखा-प्यासा रखा गया, मार-पीट तो साधारण बात थी रामचन्द्रराव नामक सत्याग्रही ने केवल 'वन्देमारतम्' कहा तो उन्हें बेहोश होने तक निर्दयता से पीटा गया। तब से श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी नाम से प्रसिद्ध हो गए और वे ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वरिष्ट उप प्रधान पद पर कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त 13 अक्तूबर 1938 को हैदराबाद के लौहपुरुष युवक हृदय सम्राट् पं० नरेन्द्र जी को गिरफ्तार करके हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत के अण्डमान मन्ननूर (कालापानी) जेल भेज दिया। इन अत्याचारों का यह परिणाम हुआ कि सत्याग्रह की समाप्ति तक लगभग पचीस, तीस आर्य सत्याग्रही जेलों में जेलरों के अत्याचार के कारण शहीद हुए। इस प्रकार निजाम के अत्याचार पूर्ण व्यवहार के बावजूद एक भी सत्याग्रही उत्तेजन नहीं हुआ और न उसने अपने अहिंसा के मार्ग को छोड़ा। इस पर राष्ट्रपिता गान्धी जी ने भी स्वीकार किया कि आर्य समाजी सच्चे वीर सत्याग्रही ही हैं। अन्त में शहीदों के खून ने रंग दिखाया है तो हैदराबाद की सरकार को झुकना पड़ा। यहां उल्लेखनीय है कि आर्य सत्याग्रह को राजनीतिक दृष्टि से इतना महत्त्व प्राप्त हुआ कि इंग्लैण्ड की विधान सभा में भी इसके बारे प्रश्न उठे। फलस्वरूप 7 अगस्त 1947 को आर्य समाज की सभी मांगों को सरकार ने स्वीकार किया और सत्याग्रह बन्द करने की घोषणा की गई। किन्तु निजाम मे 20 अगस्त 1939 को चन्द मुसलमान गुण्डों ने श्री राधा कृष्ण जी की हत्या कर दी।

परन्तु आर्य समाजियों ने शांति से काम लिया और स्थिति को बिगड़ने न दिया। इस प्रकार का शांतिपूर्ण तथा अहिंसामय आर्य सत्याग्रह में हैदराबाद के अनेकों आर्यवीरों ने मातृभूमि तथा स्वधर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए तन, मन, धन अर्पण किया था। इस आर्य सत्याग्रह अर्द्ध-शताब्दी के सुअवसर पर हमारे प्रिय नेतागण सर्व श्री दक्षिण केसरी वीर विनायकराव जी 'विद्यालंकार' बारटला, हैदराबाद के लौह पुरुष युवक हृदय सम्राट् पं० नरेन्द्र जी, भाई बंसीलाल जी, भाई श्यामलाल जी बंसीलाल व्यास जी जैसे सभी शहीदों की पावन स्मृति में सजल नयनों से श्रद्धासुमन समर्पित करता हूं। आज भी देश में गोवधनिषेध, नशाबन्दी तथा अंग्रेजी बहिष्कार जैसे आन्दोलन अपने सम्मुख चुनौतियों के रूप में है। देश, धर्म, संस्कृति तथा भाषा की एकता एवं अखंडता का प्रश्न आज आर्य सेनानियों के सम्मुख विद्यमान है। ऐसे विकट समय पर फिर से हमें कमर कस कर हुंकार में आना है। संघर्ष का बिगुल बजाना है। ऐसा करने से ही उपर्युक्त शहीदों की पावन स्मृति में सच्ची श्रद्धांजली होगी।

शिवरात्रि तथा महर्षि दयानन्द की गूंज

शिवरात्रि का पर्व आर्य समाज बस्ती टैंकां वाली फिरोजपुर में बड़ी धूम धाम तथा श्रद्धा से मनाया गया। दिनांक 19-2-90 से 22-2-90 तक सामवेद शतकों द्वारा यज्ञ हुआ तथा 23-2-90 का पूर्ण आहूति डाली गई और उस दिन कार्यक्रम 8 बजे से 11.30 बजे तक प्रातः हुआ। जिस में युग परिवर्तक स्वामी दयानन्द की जय तथा वैदिक संस्कृति पर भजन तथा उपदेश हुये। श्री देश राम पाल तथा पं० मनमोहन शास्त्री जी, श्री चौथ राम ने महर्षि के जीवन तथा उनके कार्य तथा शिक्षाओं पर सुन्दर विचार रखे और कार्यक्रम की रौनक को सुशोभित किया। आर्य अनाथालय के अधिष्ठाता श्री पी० डी० चौधरी ने आश्रम के बच्चों तथा अधिकारियों सहित पूरा सहयोग देकर अपने धर्म प्रेम का परिचय दिया। मन्दिर श्रद्धालुओं से खचा खच भरा हुआ था और सभी ने बहुत आनन्द प्राप्त किया। शिवरात्रि के पर्व का सारा खर्चा स्त्री समाज टैंकां वाली की ओर से किया जाता है जिन में श्रीमती वेद चौधरी, राम प्यारी शर्मा तथा प्रकाश कुमारी सुन्दरा व निर्मल कोछड़ सराहनीय हैं।

—सत्य पाल शर्मा, मन्त्री

चण्डीगढ़ में ऋषि बोधोत्सव व वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर—22 चण्डीगढ़ में दिनांक 23-2-90 से 25-2-90 तक श्री प्रधान इन्द्र राज शर्मा की अध्यक्षता में मन्दिर के प्रांगण में ऋषि बोधोत्सव एवं वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 22-2-90 नगर में भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई। जिसमें चण्डीगढ़ की सभी आर्य समाजों, सभी शिक्षण संस्थाओं एवं भजन मंडलीयों ने भाग लिया। ऋषिबोधोत्सव पर ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया जिसमें 300 धर्म प्रेमियों ने ऋषि लंगर किया। दिनांक 24-2-90 से 26-2-90 तक वार्षिक उत्सव का भी आयोजन किया गया जिसमें निम्न वक्ताओं के प्रवचन एवं मनोहर भजन हुए प० मदन मोहन विद्या सागर (हैदराबाद), प० ओम प्रकाश आर्य (करनाल) इतिहास केसरी प० निरंजन देव जी, बहिन मीरायति (वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर) बहिन शकुन्तला आर्या (दिल्ली) भजनोपदेशक व सतपाल पथिक (अमृतसर) प० राम नाथ यात्री। चण्डीगढ़ की जनता ने काफी धर्म लाभ उठाया एवं इन दोनों उत्सवों की सराहना की गई।

—ओम प्रकाश [illegible], मन्त्री

सम्पादकीय—

पण्डित लेखराम का बलिदान दिवस

आर्यसमाज के इतिहास में पं० लेखराम जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। आर्य समाज का प्रचार करते करते उन्होंने फाल्गुण सुदि तृतीया संवत् 1953 तदानुसार 6 मार्च 1897 को रात्रि दो बजे अपने नश्वर शरीर को वैदिक धर्म पर बलिदान कर दिया था। प्राण त्यागने से पूर्व तक उनकी चेतना में तनिक भी अन्तर नहीं आया था। वह बराबर ओम् विश्वानि देव सवितु... और गायत्री मन्त्र का निरन्तर पाठ करते रहे। उस समय उनको न घर वालों की चिन्ता थी न घातक से कोई द्वेष था न मौत का कोई डर था यदि कुछ चिन्ता भी थी तो केवल आर्य समाज की थी। उन्होंने उस समय कहा था कि मेरे मरने के बाद आर्यसमाज के लेखन (तहरीर) का काम बन्द न होना चाहिए।

इस प्रकार उन्होंने वैदिक धर्म पर बलिदान होकर शहीदों की पंक्ति मे अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया। कहा जाता है कि जब इस शहीद की अर्थी उठी तो लाहौर के बाजार बन्द हो गए और 30,000 से भी अधिक लोग इस अमर शहीद की अर्थी के साथ साथ चल रहे थे। उनके बलिदान ने एक बार सारे आर्य जगत को झंझोड कर रख दिया था।

पं० लेखराम आर्य समाज में धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्य पथिक के नाम से जाने जाते हैं। वे पंजाब के जेहलम जिसके एक प्रसिद्ध गांव सैदपुर में एक सारस्वत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। उनके पितामह महता नारायण सिंह पंजाब के सिख कालीन विप्लव के वीर योद्धा थे और कई संग्रामों में उन्होंने हाथ दिखाए थे। उनके पुत्र महता तारा सिंह के घर मे प० लेख राम ने 8 सौर चैत्र सवत् 1915 विक्रमी को शुक्रवार के दिन जन्म लिया था। वे बाल्यकाल से ही भावुक और धार्मिक प्रवृत्ति के थे। अपने चाचा गण्डारामजी उन्होंनि बहुत प्रेरणा दी थी। उन्हें बाल्यकाल में केवल उर्दू और फारसी की शिक्षा मिली थी। सवत् 1932 में वह अपने चाचा गण्डाराम जी की सहायता से पेशावर पुलिस में सारजेण्ट के पद पर नियुक्त हो गए। परन्तु फिर भी उनकी धर्म जिज्ञासा में कोई अन्तर न पड़ा बल्कि वह और बढ़ती गई। उन्हें यहां मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का अवसर मिला जिससे उन्हें ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की स्थापना का पता चला। इसके उन्होंने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को डाक से मंगवा कर पढ़ना आरम्भ कर दिया। इससे उनके विचार सर्वथा बदल गए। और वह आर्य समाजी बन गए तथा सर्वप्रथम उन्होंने पेशावर में आर्य समाज की स्थापना की। 17 मई 1880 को वह एक माह की छुट्टी लेकर अजमेर पहुंचे और ऋषि दयानन्द जी महाराज के दर्शन किए तथा उनसे जीव-ब्रह्म आदि के सम्बन्ध में कई प्रश्न किए स्वामी जी के उत्तर से बहुत प्रभावित हुए।

अजमेर से लौट कर उनको रात दिन धर्म प्रचार की ही धुन लगी रहती थी और 24 जुलाई .884 को उन्होंने इसके लिए पुलिस की नौकरी छोड़ दी। अब वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में स्थान स्थान पर आर्य समाज का प्रचार करने लगे। उनके लेखबद्ध प्रचार व पुस्तक निर्माण का सूत्रपात उनके मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक कादियां (जि० गुरदासपुर) के निवासी मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के साथ संघर्ष से हुआ था। कुदियान आर्य मुसाफिर तथा अन्य कई पुस्तकें उन्होंने लिखी थी। मिर्जा ने जो पुस्तकें लिखी थी और उनमें जो आक्षेप आर्य समाज पर लगाए थे उनका उत्तर पण्डित लेखराम जी ने बड़ा युक्तियुक्त दिया था। मिर्जा ने घोषणा की थी मेरे पास ईश्वर के दूत सन्देश लाते हैं और मैं अलौकिक चमत्कार दिखा सकता हु और जिस व्यक्ति को मृत्यु के लिए मैं परमात्मा से प्रार्थना करूंगा वह एक वर्ष के भीतर मर जाएगा। पं० लेखराम जी ने उसके इस आह्वान को स्वीकार किया परन्तु मिर्जा ने कई बहाने बनाकर बात को टाल दिया। पण्डित स्वयं कादियां पहुंचे और मिर्जा को निरुत्तर कर दिया और साथ ही उसके चमत्कारों की पोल भी खुल गई।

पण्डित लेखराम जी में वैदिक धर्म की रक्षा और प्रचार का इतना उत्साह था कि वे जहां कहीं भी किसी के वैदिक धर्म त्याग या शास्त्र का समाचार सुनते तो सौ काम छोड़ कर बिजली के समान शक्ति लगा देते थे। उनकी युक्तियां अकाट्य थी बड़े बड़े मौलवी और पादरी उनके सामने आकर निरुत्तर हो जाते थे। 36 वर्ष की आयु में ज्येष्ठ संवत 1950 में लक्ष्मी देवी के साथ उनका विवाह हुआ वह अनपढ़ थी पण्डित जी ने उसे पढ़ाने का प्रयास किया एक पुत्र भी हुआ परन्तु डेढ़ वर्ष आयु में ही उनका बेटा सुखदेव जालन्धर में मृत्यु को प्राप्त हो गया। परन्तु पुत्र का वियोग भी उन्हें प्रचार के कार्य से विचलित नहीं कर सका।

नवसस्येष्टि (होली)

हम प्रति वर्ष नव सस्येष्टि (होली) का पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं। यह पर्व हमें पवित्र करने वाले तथा एक दूसरे के साथ जोडने वाले होते हैं और सभी के मनों में एक उत्साह तथा उल्लास भरने वाले होते हैं। होली का पर्व भी अन्य पर्वों की भान्ति सारे भारत देश में मनाया जाता है। छोटे बड़े सभी नाचते-गाते और रंगो को एक दूसरे के ऊपर बखेरते हैं। फाल्गुण सुदि पूर्णिमा को यह पर्व मनाते हुए गावों मे सायकाल के समय लकडी पत्तों आदि के बहुत ढेर बना कर उनमें अग्नि प्रदीप्त करके जहां वह खेल-कूद आदि करते हुए खुशिया मनाते हैं वहां नव अन्न जो किसानों के खेतों में तैयार हो रहा होता है उसके सीटे उस अग्नि में भून कर बड़े चाव से खाते है जिन्हे होले या होलक कहा जाता है चने के बूटों को अग्नि में भून कर अक्सर खाया जाता है जो बहुत रुचि कर व शक्ति देने वाले होते हैं।

भारत कृषि प्रधान देश है इस लिए इसके कई पर्व कृषि के साथ सम्बन्धित होते हैं। होली के अवसर पर भी कनक, चने, जौं तथा अन्य कई फसलें खेतों में लहरा उठती हैं। खेतों की हरियाली को देख कर किसान प्रसन्नता मे झूम उठता है। और इस पूर्णिमा को एक यज्ञ करते हुए उसमें नवशस्य अन्न की आहूतियां देता है। होली की अग्नि यज्ञ का ही एक रूप है। आज उस सामूहिक यज्ञ ने केवल प्रथा का रूप धारण कर लिया। होली से दूसरे प्रात: हम फाग (दुल्हदी) का पर्व मनाते हैं। इस पूर्णिमा की रात्रि में होली का पर्व मनाते हुए हमने जो आनन्द प्राप्त किया था हम उस आनन्द को फिर सबमें बाट देना चाहते हैं। रंग-गुलाल आदि लेकर टोलियां बना कर अपने मित्रों तथा सहयोगियों से गले मिलते हैं। अपने सभी गिलेशिकवे समाप्त करके पिछली बातों को भूल कर फिर वर्ष भर के लिए सुखद वातावरण लेते हैं। कुछ समय तक होली के पर्व को बहुत महत्त्व दिया जाता रहा है। परन्तु धीरे-धीरे इसका स्वरूप बदलता गया और रग गुलाल के स्थान पर लोग एक दूसरे पर किचड आदि भी फैंकने लग गए जहा इस पर्व पर एक दूसरे से स्नेह बढ़ता था वहां कई बार आपस में वैर-विरोध भी बढ़ने लग गया और इसके साथ ही इस पर्व का महत्व भी कम होता चला गया।

इस पर्व के साथ भक्त प्रह्लाद की घटना को भी जोड़ दिया गया है। कहा जाता है कि दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने परमेश्वर प्रेमी पुत्र प्रह्लाद को सजीवदाह करने के लिए अपनी मायावी भगिनी होलिका द्वारा चिता चढाई गई थी उसने सोचा था कि होलिका अपनी राक्षसी माया (हथकण्डों) से प्रह्लाद को जलवा कर आप चिता में से बच कर सुरक्षित निकल आएगी। किन्तु परमात्मा की असीम कृपा से प्रह्लाद का तो कुछ नहीं बिगडा परन्तु होलिका उस चिता में भस्मसात् हो गई और उसी दिन से होलिका राक्षसी के दाह और भक्त प्रह्लाद के सुरक्षित बच जाने के उपलक्ष्य में ही उत्सव मनाया जाना प्रचलित हुआ। इस पौराणिक कथा से भी हमें शिक्षा मिलती है ईश्वर विश्वासी का कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। परन्तु सच्चाई यह है कि इस पर्व का सम्बन्ध होलिकादाह से नहीं हैं बल्कि भारत की उस प्रसिद्ध फसल से है जैसे आषाढी के नाम से जाना है और जो इस अवसर पर खेतों में लहलाती हुई, हरियाली स्नेह और परिपक्वता का सन्देश देती है और जो जन-जन में एक उत्साह पैदा कर देती है।

इस लिए आओ नवसस्येष्टि (होली) के स्वरूप को समझते हुए उसे हरियाली स्नेह और प्यार का प्रतीक मान कर आपस के सब मत भेद भुला कर एक दूसरे के गले मिलते हुए, छोटे-बडे के भेद को समाप्त करके अपने सठगन का परिचय दें और देश को इन पर्वों से एकता के सूत्र में बान्धने का प्रयास करें।

—सह-सम्पादक

पण्डित जी ने अपने आचार्य महर्षि दयानन्द का प्रमाणिक जीवन चरित्र लिखने का बीडा उठाया और उनके जीवन की घटनाओ को एकत्रित करने के लिए वह स्थान-स्थान पर घूमने लगे और साथ साथ वैदिक धर्म का प्रचार भी करते रहे। मोहम्मदी लोग पण्डित जी से बहुत द्वेष करते थे उन्होंने पण्डित जी पर मिर्जापुर, प्रयाग, लाहौर, मेरठ, दिल्ली और बम्बई की फौजदारी अदालतों में दिल दुखाने और अश्लील लिखने के अभियोग भी किए थे परन्तु वह सब अभियोग सुयोग्य न्यायधीशों ने बिना किसी सुनवाई के ही खारिज कर दिए थे क्योंकि उन पर कोई भी बनाया आक्षेप मुस्लमान सिद्ध न कर सके। इसके बाद मुस्लमान उन्हें वध करने की धमकियां देने लगे परन्तु पण्डित जी अभय होकर अपना कार्य करते रहे। अन्त मे एक काला गठीले वदन का नाटा मुस्लमान युवक उनके पास शुद्ध होने के बहाने से आया। पण्डित जी शुद्धि के लिए प्रत्येक क्षण तैयार रहते थे उन्होंने प्रेम पूर्वक उसे अपने पास बैठाया और सारा दिन साथ लिए घूमते रहे। कई हितैषियों ने पण्डित जी को उस युवक के हाव भाव देख कर सावधान भी किया परन्तु पण्डित जी ने इस ओर ध्यान न दिया। 6 मार्च 1897 को सायं काल के समय इस दुष्ट मुस्लमान ने पण्डित जी के पेट में छुरा घोंप कर और उसे घुमाकर अतड़ियों को काट दिया जिससे पण्डित जी अपना नश्वर शरीर छोड़कर सदा के लिए अमर हो गए। पण्डित लेखराम के कार्य और बलिदान को आर्य समाज कभी भूल न सकेगा। आओ उनके जीवन से आज हम भी वैदिक धर्म का प्रचार करने की प्रेरणा लें।

—सह सम्पादक

एकेश्वरवाद–
सुसंगत जीवन पथ–
महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० श्री भद्रसेन जी, वेद दर्शनाचार्य, साधु आश्रम, होशियारपुर

(शेष जो छपने से रह गया था)

मानव जाती की समानता

सामाजिक व्यवहार में सभी को समानता का अवसर मिलना चाहिए। जिस से सभी को प्रगति का अवसर प्राप्त हो सके। इस से सामाजिक समानता के कारण जहां समाज को सभी का सहयोग प्राप्त होगा, वहां समाज इस से अधिक सुखी हो सकेगा।

वस्तुत: मानव समाज की स्थिति हाथ की अंगुलियों की तरह है। जैसे हर व्यक्ति के अपने हाथ की पांचों अंगुलियां भिन्न-भिन्न आकार, परिमाण की होती हैं। उन का स्थान और क्रम भी परस्पर भिन्न होता है, अत: उन की कार्य करने की शक्ति मे भी स्पष्ट भेद प्राप्त होता है। इन पांचों अंगुलियों में से कोई छोटी होती है, तो कोई बड़ी, कोई मोटी है, तो कोई पतली। परन्तु जब कार्य करने का अवसर आता है, तो कार्य के अनुरूप वे पांचों संगठित हो जाती हैं। लिखते समय उन का संगठन अलग ढंग से होता है, तो किसी चीज को उठाते हुए या पकड़ते समय उन का विन्यास भिन्न प्रकार का होता है। रक्षा के समय उन का सामञ्जस्य अपने ढंग से होता है। भिन्न-भिन्न आकार, प्रकार की होती हुई भी पांचों अंगुलियां इकट्ठी हो कर उस-उस कार्य मे भाग लेती हैं। तब ये आपस के सारे भेदभाव, रूप आदि को भूल कर संगठित हो जाती हैं। मानव समाज के सामाजिक कार्यों में भी सभी वर्गों की तरह यही स्थिति होनी चाहिए।

समान सामाजिक भावना के विपरीत जब कोई संकीर्ण दृष्टिकोण रखता है[1], तब वह किसी विशेष वर्ग को अपनाता है या अधिक अच्छा मानता है। इस से परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और विरोध का व्यर्थ-विवाद या दूरी ही बढ़ती है। अन्यथा सभी के प्रति समान सामाजिक भावना रखने से सभी के साथ अपनेपन और समानता की भावना उभरती है।

महर्षि दयानन्द के इस विषय में ये विचार बहुत ही स्पष्ट हैं। तभी तो लिखा है—

'एक मनुष्य जाति में (को) बहका कर, विरुद्ध बुद्धि करा के, एक दूसरे को शत्रु बना, लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहि: है। भूमिका पृ० 6

जिस से मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं। भूमिका पृ० 2

चारों वर्णों को परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दु:ख, हानि, लाभ में ऐकमत्य रह कर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन का व्यय करते रहना।

चतुर्थ समु० पृ० 100

जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा।'अनुभूमिका-1,पृ०235

मानव समाज मे स्त्री-पुरुष की स्थिति—ऊपर के विवेचन से जहां यह स्पष्ट हो जाता है कि सारे मनुष्यों की एक ही जाती है, वहां यह भी स्पष्ट होता है, कि मानव जाति के स्त्री और पुरुष समान अंग हैं, इन के शरीरों में सामान्य सा भेद है। अत: नर और नारी दोनों ही समान रूप से मानव समाज के सदस्य हैं तथा दोनों ही एक दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं।

'दोनो हैं बराबर - कम न ज्यादा'।

इसीलिए दोनों के लिय सामान्य रूप से शास्त्रों में मानव, मनुष्य, इन्सान आदि एक ही शब्द और एक ही व्यवस्था का निर्देश किया जाता है। नर-नारी अर्थात दोनों के सहयोग से ही जाति का लक्षण चरितार्थ होता है[1], अत: दोनों एक ही जाति के अंग हैं[2]। दोनों के लिए समान रूप से प्रयुक्त मानव, मनुष्य वाचक शब्द का मूल, मनु मन है। जोकि विचारशीलता के भाव को प्रकट करता है। इस लिए विचारशीलता, सामाजिकता और आकृति के अनुरूप प्रत्येक शरीर में विद्यमान नेत्र, कर्ण प्रभृति, इन्द्रियां, तथा रस, रक्त, मांस आदि धातुओं और हृदयगत (जिजीविषा, जिज्ञासा, स्नेहाभिलाषा सदृश) भावनाओं की समानता से सभी महिलाओं एवं मर्दों की एक ही जाती है। इस में लिंग, भाषा, धर्म क्षेत्र, वर्ग से कोई भेद नहीं आता। इसीलिए किसी के चेहरे से किसी कल्पित तथा कथित जाति (हिन्दु मुसलिम या ब्राह्मण, अब्राह्मण) का बोध नहीं होता। स्त्री-पुरुष इस के दो स्पष्ट भेद हुए भी, ये दोनो एक-दूसरे के आपूरक ही हैं। इन की पूर्णत: स्वतन्त्रसत्ता नहीं है, क्योंकि ये परस्पर के सहयोग के बिना अलग-अलग अपने जैसे को जन्म देने में सर्वथा असमर्थ हैं। यदा-कदा लिंग-परिवर्तन की प्रकाश में आने वाली घटनाओं से भी यही प्रमाणित होता है कि नर-नारी स्वतन्त्र जातियां नहीं हैं।

पालतू एवं वन्य पशु, पक्षियों की तरह मनुष्यों में कोई प्राकृतिक पहचान (केवल एक-दो इन्द्रियों को छोड़ कर) पृथक-पृथक नहीं होती। जिसके आधार पर गाय, भैंसवत् मनुष्यों में अलग-अलग जातियां मानी जा सकें। हां, कुछ वर्गों ने अपनी पहचान बनाने की जो भी कोशिश की है, वह अधूरी, एकांगी, अस्थायी और परिवर्तनशील है। प्रदेश, रंग, खान-पान, रहन-सहन और माता-पिता का देह पर प्रभाव होता है। जिस से पहाड़ी, मैदानी जैसा सामान्य सा भेद होता है। इसी को आनुवंशिक संस्कार या प्रभाव कह सकते हैं। पर नर-नारी इन सामान्य भेदों के कारण इन में से कोई ऊंचा या नीचा नहीं। अत: योग्यता, कर्म, गुण के आधार पर ही किसी की उच्चता की पहचान की जानी चाहिए, न कि नर या नारीपन के कारण।

वस्तुत: स्त्री-पुरुष मानव समाज के दो महत्त्वपूर्ण अंग हैं। दोनों का अपने-अपने स्थान और क्षेत्र में अपना-अपना महत्त्व है तथा दोनों ही एक दूसरे के पूरक और सहायक हैं। दोनों को समान रूप से एक दूसरे की अपेक्षा होती है, क्योंकि एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा, नीरस ही होता है[1]। संचालन और जीवन विकास एक दूसरे के सहयोग से ही सम्भव होते हैं। तभी तो युवावस्था में समान रूप से दोनों एक दूसरे को चाहते हैं और एक दूसरे को प्राप्त करके अपने आप को पूर्ण एवं कृतकृत्य मानते हैं। अत: कोई भी पक्ष इस स्थिति में एक दूसरे पर अहसान नहीं करता, वे समान रूप से जीवन साथी हैं। जहां तक कार्य, उत्तरदायित्व और व्यावहारिकता की बात है, वहां नारी का योगदान माता के रूप में एक प्रतिष्ठित स्थान रखता है। अत: एक नारी का माता के रूप में भारतीय साहित्य, संस्कृति, धर्म में गौरव पूर्ण और प्रथम स्थान है[2]।

---

1. अयं निज: परो वेति गणना
लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु वसुधैव
कुटुम्बकम् ॥ 53, हित० मित्र-
लाभ: ॥

यह अपना है और वह पराया है, ऐसा भेदभाव तथा घृणा, ईर्ष्या का व्यवहार छोटे दिल के कारण ही होता है। बड़े दिल वाले तो सारी धरती को अपना कुटुम्ब मानते हैं।

1. भावोऽनुवृत्तेरेव हेतुत्वात् सामान्यमेव (जाति:) वैशेषिक 1, 2, 4 अर्थात् एक सी आकृति होने से या (समानप्रसवात्मिका जाति: न्याय 2, 2, 68) जिन के जन्म की प्रक्रिया समान है, वे एक ही जाति में आते हैं और इसी का सूक्ष्मभाव है कि जो अपने समान को जन्म दें।

2. जातिं तु बादरायणोऽविशेषात्, तस्मात् स्त्र्यपि प्रतीयते जात्यर्थस्याविशिष्टत्वात् मीमांसा 6, 1, (3) 8 अर्थात् स्त्री और पुरुष की एक ही जाति है क्यों कि नारी और नर के जन्म की प्रक्रिया, आकृति आदि जाति लक्षण एक से इन में चरितार्थ होते हैं। फलोत्साहाविशेषात्तु मीमांसा 6, 1, 13 स्त्रीऔर पुरुषों में अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों में समान रूप से फल की आकांक्षा और करने में उत्साह होता है।

1. स नैव रेमे तस्मादेकाकी न रमते, स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ संपरिष्वक्तौ स इममेवात्मनं द्वेधाऽपातयत्, तत: पतिश्च पत्नी चाभवतां तस्मादिदमर्धबृगलमिव। बृहदारण्यक उप० 1, 4, 3 = उस का दिल न लगा, क्योंकि अकेले का दिल नहीं लगता, इस लिए उसने दूसरे की इच्छा की। वह इतना था, जितने स्त्री-पुरुष मिले हुए हों। उसने अपने इस शरीर को दो टुकड़ों में पटक दिया अर्थात अपनी इस भावना को दो रूपों में बांटा, जिस से पति और पत्नी बने। अत: ये दोनों अर्ध बृगल=चने या सीप के आधे दल (भाग) की तरह होते हैं।

2. 'मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद'

यह शतपथ ब्राह्मण 14, 5, 8, 2 का वचन है। वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिस के माता और पिता धार्मिक और विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश, उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम और उन का हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।' सत्यार्थ० समु० 2, पृ० 21

मातापिता, सीताराम सदृश समस्तपदों में नारीवाचक शब्द प्रथम रखा जाता है। मनुस्मृति में रिश्ते-नाते की महिमाओं की चर्चा करते हुए कहा है—

पितुर्भगिन्यां मातुश्च ज्यायस्यां
च स्वसर्यपि।

मातृवद् वृत्तिमातिष्ठेन्माता ताभ्यो
गरीयसी ॥ 2, 133 ॥ >

पुनरपि अधिकतर धर्मों और शास्त्रों में नारियों के प्रति अनेक तरह का अन्यायथुक्त व्यवहार का वर्णन मिलता है। ऐसे ही पारस्परिक परम्परा में भी ऐसे अनेक व्यवहार मिलते हैं। जैसे कि बहुपत्नी प्रथा[1], पर्दाप्रथा वैराग्य के नाम पर केवल नारी की ही निन्दा तथा उस को नरक का द्वार तक कहा जाता है[2]। जब कि वैराग्य की दृष्टि से दोनों एक दूसरे के लिए राग के रूप हैं। नारी शरीर को पापों का फल मानना, महिलाओं को पापयोनि कहना[1]। पति के मारने-पीटने का अधिकार मानना या इस बात को बुरा न समझना[2], ससुराल में दासी जैसी स्थिति या कारा-वास जैसे विवशता भरे जीवन की मान्यता। विधवाओं को[3] अपमानित करना, बुरा समझना, अपशकुन मानना, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में उन के भाग ग्रहण को अच्छा न मानना। नारियों को (उनके उद्धारक) धार्मिक अधिकार न देना[4], तो कहीं सभी तरह के विकास के आधारभूत शिक्षा जैसे उत्तम साधन से वंचित रखने की बात है। सती के नाम पर जिन्दा जलाने का विधान करना, इस का समर्थन करना, इस बात को अच्छा मानना। जब दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से पतिव्रत्य पारस्परिक विश्वास का आधार है, तो यह आव-श्यक नियम दोनों तरफ समान रूप से लागू होना चाहिए[1]। वस्तुत: सारा भेदभाव नारी को हलका समझने के कारण ही है[2]। तभी तो आज दहेज प्रथा, बलात्कार, अपहरण खुले आम चलते हैं और ऐसा अन्याय करनेवाले सिर उठा कर जी रहे हैं।

आश्चर्य और दुख की बात तो यह है कि जो धर्म और व्यक्ति अकारण ही नारी की निन्दा करते हैं और सामान्य या शिष्टाचार भी नारी के प्रति नही निभाते। स्पष्ट रुप से अन्याययुक्त व्यवहार की बातें करते हैं, उन धर्मों, शास्त्रों, विद्वानों, सन्तों का नारियां ही अधिकतर सम्मान तथा समर्थन करती हैं और हर तरह से उन को सहयोग देती हैं। यह आत्म गौरव के अनुभव या आत्महीनता का कितना विचित्र रुप है ? कि जो अकारण केवल नारी होने मात्र से अपमान करे, उस का फिर आदर क्यों किया जाए ? ऐसों को महत्त्व किस लिए दिया जाए ? ऐसे धर्मों और शास्त्रों के प्रति नारियों का मोह या लगाव क्यों ? वस्तुत: नारी वर्ग के प्रति होने वाले अन्याय, अत्याचार, उपेक्षा की दृष्टि से नारी वर्ग को विशेष विचार करना चाहिए। नारी वर्ग में अपने प्रति सम्मान की भावना और आत्म विश्वास आने पर ही इन समस्याओं का समाधान हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नर-नारी की समानता को ध्यान में रख कर ही ये पंक्तियां लिखी है—

'इस लिये आठ वर्ष के हो तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियो को लडकियों की पाठशाला में भेज देवें।

3, 38

कन्याओं का भी यथायोग्य सस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात् अपनी पाठशाला में भेज दें।39

कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री रहें।

सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मानव-मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है।

पृ० 69

इस लिये स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिये। (पूर्व०) क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें ? (उत्तर०) अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्—अर्थात् स्त्री यज्ञ मे इस मन्त्र को पढे 14, पृ० 70

भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरु अविद्वान् हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे फिर सुख कहा ?

पृ० 71

लड़का लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता-विवाह करना कभी विचारें तो भी लडका लडकी की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिए क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता ? और सन्तान उत्तम होती है। अप्रसन्नत के विवाह नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्य का है। पृ० 77

< बुआ, मासी और बड़ी बहन के प्रतिमाता जैसा व्यवहार, सम्मान करना चाहिए। पुनरपि माता का स्थान एवं गौरव इन सब से ऊंचा है। ऐसे ही पुरुषों की तुलना में—

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवे-णातिरिच्यते ॥ 2, 145 ॥

दस उपाध्यायों के तुल्य एक आचार्य, और सौ आचार्यों के तुल्य पिता और माता पिता की अपेक्षा हजार गुणा अधिक गौरव से युक्त होती है अर्थात माता का कार्य और प्रभाव इन सब से श्रेष्ठ है।

यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते—मनु० 5, 56 पूज्या भूषितव्याश्च—5, 55 तस्मा-देता: सदा पूज्या:—5, 59 इत्यादि श्लोकों में नारी के प्रति सम्मान की भावना दर्शाई है। जायेदस्तम् ऋ० 3, 53, 4=पत्नी ही गृहस्थ जीवन की धुरी है (=गृहिणी गृहमुच्यते 146 पंचतन्त्र—3, पृ० 64) बिन घरनी घर भूत का डेरा। गृहा वै पत्न्यै प्रतिष्ठा शतपथ 3, 3, 1, 10

अयज्ञो वा ह्येषयोऽपत्नीक: तै० ब्रा० 3, 3, 1=बिना पत्नी के पति यज्ञ का अधिकारी नहीं है।

1. अनेक शास्त्रों में एक पुरुष के लिए अनेक पत्नियों का विधान और वर्णन मिलता है। जैसे कि श्रीकृष्ण जी की 16 हजार पत्नियों या दासियों का। जैनों में शान्तिनाथ, कुन्थनाथ की 64 हजार पत्नियों का। राजाओं के लिए बहुत सारी पत्नियों को वैध मानना। मुसलमानों के लिए चार पत्नियों तक के विधान को कुरानसम्मत मानना। आश्चर्य तो यह है कि आज भी ऐसी बातों को अनुपयुक्त नहीं समझा जाता।

2. द्वारं किमेकं नरकस्य ?—नारी, शंकर प्रश्नोत्तरी=नरक का एकमात्र द्वार नारी ही है। 'नारी की झाई परत, अन्धा होत भुजंग। उन की का गति, जो नित नारी के संग ॥'

1. मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्यु: पापयोनय:।

स्त्रियो वैश्यस्तथा शूद्रा:—गीता 1, 32 में स्त्रियों, वैश्यों और शूद्रों को पापयोनी कहा है। अर्थात् इन का इस रुप में जन्म किन्हीं पापों के कारण है, अत: ये हल्के हैं। तुलसी रामायण में भीलनी (शबरी) के मुख से कहलवाया गया है-अधमाधम अधम ते अधम नारी नश्यन्ति स्त्रीनायका:=जहां महिला नायक, राजा, शासक होती है, वे नष्ट हो जाते हैं।

2. ढोल, गंवार, शूद्र नारी।
ये सब ताडन के अधिकारी ।।

यह भावना समाज में आज भी प्रचलित हैं।

3. विधवापन यदि दुर्भाग्य है, तो यह भाव दोनों पर लागू होना चाहिए। पुनर्विवाह की शर्त भी दोनों पर लागू होनी चाहिए। सामाजिक असुरक्षा तथा आर्थिक परावलम्बन की दृष्टि से भारत में नारी को यह अवसर पहले मिलना चाहिए। हां, जब अपने कर्मों से ही किसी का काल आता है, तो पति की मृत्यु के लिए पत्नी को ही क्यों कोसा जाता है ?

4. अमन्त्रिका तु कार्येयं स्त्रीणामावृद-शेषत: मनु० 2, 66=बालिका के जातकर्म, नामकरण आदि संस्कार बिना मन्त्रों के होने चाहिये।

जैनशास्त्र के अनुसार 'न स्त्री मोक्षमेति=स्त्री मोक्ष को प्राप्त नहीं करती।

वैवाहिको विधि: स्त्रीणां संस्कारो वैदिक: स्मृत:।
पतिसेवा गुरौ वासो गृहार्थोऽग्नि-परिक्रिया ॥ मनु० 2, 67 ॥

विवाह संस्कार की धार्मिक विधि ही नारियों का वेदानुसार कर्मकाण्ड है। पति सेवा ही उन का शिक्षा के रूप में विद्यालय में पढ़ना या वास है और घर का कार्य ही धार्मिक पूजा-पाठ है अर्थात् इन से भिन्न, उन्हें कुछ भी नहीं करना चाहिए। नास्ति स्त्रीणां क्रियामन्त्रैरिति-धर्मे व्यवस्थिति: मनु० 9, 18 यह धार्मिक व्यवस्था है कि नारियों का वेदमन्त्रों से कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। यहीं 9, 13 से 46 तक में भी नारियों के प्रति काफी उपेक्षा दर्शाई है।

स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुति-गोचरा—भागवत

स्त्रीशूद्रयोस्तु सत्यामपि ज्ञानापे-क्षायां—वेदे अधिकार: प्रतिषिद्ध: सायण तै० सं० भाष्यभूमिका। बृहदारण्यक उप० 6, 4, 19 के भाष्य में आचार्य शंकर ने—(दुहितु: पाण्डित्यं गृहतन्त्र विषयमेव वेदेऽनधिकारात्) नारी का वेद पढने का अधिकार स्वीकार नहीं किया।

1. अन्यो अन्यस्याव्यभिचारो भवेदा-मरणान्तिक: एष धर्म: समासेन ज्ञेय: स्त्रीपुंसयो: ॥ 9, 101 ॥

2. 1984 में पाकिस्तान में इस्लामी राज्य के नाम पर नारियों की आधी गवाही, मार देने पर पुरुष की अपेक्षा आधा मूल्य आदि प्रचारित किया गया।

1985 में शाहबानो को न्यायालय द्वारा गुजारा भत्ता लेने का अधिकार मिलने पर 'शरीयत' के नाम से कितना शोर मचा ? तीन बार तालक-तलाक कह कर तलाक का एक तरफा अधि-कार ?

माडल टाऊन में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 23-2-90 को ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस महान् पर्व के शुभावसर पर प्रात:काल वेदपाठ आदि का विशेष आयोजन किया गया था। सायंकाल 4 से $6\frac{1}{2}$ बजे तक विशेष कार्यक्रम चलता रहा। इतिहास वेत्ता श्री जगन्नाथ जी ग्रोवर एवं वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी सच्चिदा नन्द जी सरस्वती ने अपने हृदयस्पर्शी प्रवचनों से महर्षि की देन की गम्भीर चर्चा की। अन्त में मंत्री जी ने आये हुए जनसमुदाय एवं विद्वानों के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर जलपान का सुप्रबन्ध किया गया था।

आवश्यकता निराशा की नहीं दृढ़ संकल्प की है

ले० श्री आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद

(गताक से आगे)

इस रोजगार मे आर्य युवक-युवतियो को लिया जाए।

हमारी तीसरी योजना स्वास्थ निर्माण की हो। व्यायामशालायें, शारीरिक व्यायाम व शारीरिक आसनो के प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाए। जनता मे प्रातः शीघ्र उठने का आन्दोलन चलाया जाय। इन केन्द्रो मे किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव न बरता जाय।

भारतीय खेलो को व भारतीय कुश्ती पर बल दिया जाए। शाकाहार निर्व्यसनी बनने के आन्दोलन छेड़ें जाए।

आर्य समाज जनता मे बुराईयों के विरूद्ध आन्दोलन करे। सरकारों से न उलझे, अच्छे मनुष्य बनाने का उद्देश्य, स्वस्थ्य युवकों का निर्माण, गोकृषि पर आधारित व्यावसाय को प्रोत्साहन और सस्कृत और वेदों का प्रचार यही हमारा ध्येय और उद्देश्य हो।

इस प्रकार सस्कृत और संस्कृति प्रचार का कार्य दूसरा बच्चों और युवको के स्वास्थ निर्माण का कार्य तीसरा गोपालन व कृषि व अन्न वितरण की व्यवस्था इन तीनो उद्देश्यों को लेकर यदि हम पूरी सक्रियता और स्थापित शान्त भाव से जुटे रहे तो हम सशक्त वैदिक सस्कृति की आधारशिला कर सकते हैं। इसके आधार पर सत्य व्यवहार, न्याय पक्षपात रहितता और सभी से मित्रता का व्यवहार हो।

हिन्दी भाषा या राजनीतिक पदलिप्सा, भारत की राजनीतिक समस्याओ मे उलझना या हिन्दू सगठन राम जन्म भूमि विवाद आदि मे उलझकर अपने ही पैरों पर व मौलिक सिद्धान्तो पर कुठराघात न करें। सस्ती लोकेष्णा व भ्रष्ट उपायों से अपनी सस्था को मठ न बनावें। नित नये चेहरे नया खून नवोन्मेष लिए कार्यकर्ताओ को कार्य करने का अवसर दें।

यही वह मार्ग है जिसके माध्यम से ससार मे वैदिक व्यवस्था व सिद्धान्तों को फैलाना चाहते थे। हमारे बुद्धिजीवी जन व कार्यकर्ता व शीर्षस्थ नेताओ से हमारा निवेदन है कि—वे सभ्य उपायों द्वारा पारस्परिक विचार विनिमय व सरल शुद्ध नीती से अपने विवादों को आर्योचित ढंग से सुलझावें।

जो वयोवृद्ध हैं उनके अनुभवों का और उनकी प्रतिष्ठा को रखते हुए लाभ भी उठाना पितृयज्ञ का अंग है।

प्रधान कोई भी बने या मंत्री कोई बने इस बात पर न झगड़कर योजनाओं, कार्यक्रमो के लिए वातावरण बनायें और हर आर्य यह सोचे कि मैं कितना ऋषि ऋण उतार रहा हूं? तो विवाद बीभत्स रुप नही लेंगे।

हम किसी व्यक्ति से नही अपितु सार्वदेशिक सभा के सभी मान्य सदस्यों से अपील करते हैं कि आर्य जगत् को नई दिशा व प्रेरणा देने के अपने दायित्व पर विचार करें और हिम्मत व साहस से आर्य समाज के विराट् रथ को सही मार्ग पर लाकर खड़ा करे। जिससे आर्य जनता को किसी के नाम से रोना न पड़े बल्कि वे पूर्ण श्रद्धा से आपकी सेवाओ की सराहना करें।

हमें विश्वास है कि—सभी आर्य जन इस योजना पर सामूहिक चर्चा करें और एक गतिशील स्थाई मार्ग पर चले जिससे हम अपने महान उद्देश्य "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम को साकार कर सकें।

किसी भी समस्या पर विचार करते समय यदि हम राग द्वेष से बचकर तथा व्यक्तिगत दोषारोपण से बचकर शुद्ध हित भावना से विचार करें तो समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

प्रत्येक आर्य, आर्य संस्था व आर्य समाज व प्रातीय एव सार्वदेशिक सगठन इस योजना को आधार बना इसमें आवश्यक व उचित संशोधन परिवर्धन कर विचार करें और प्रस्तावों व व्यक्तिगत पत्रों द्वारा तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं में अपने विचारों की अभिव्यक्ति द्वारा एक अच्छे हितावह वातावरण का निर्माण कर अपने ही मुख पर अपने हाथो से लगाई जा रही कालिख वाली प्रवृत्ति से बचकर इस पवित्र संगठन के गौरव की रक्षा करें और मिलजुलकर एक गतिशील रचनात्मक शुद्ध वातावरण की ओर अग्रसर हों। व्यक्तिगत आरोपो प्रत्यारोपों से दूर संस्था के सामूहिक हित पर विचार करने से अवश्य ही प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।

यज्ञकी होरी

रचयिता श्री कवि कस्तूर चन्द जी "घनसार"
पीपाड़ शहर (राज०)

बसन्त होलिका समय सुहाना,
सरस भरी ऋतु है प्यारी !

(1)

हर्षोल्लास रहा जन-जन में, उमंग ओज सब मे दरशे।
नूतन नवरस पत्ते-पत्ते में, पराग अलीगण है परसें॥
वनोपवन, लहराता सुन्दर, पिक, शुक, केकी केल करें।
बसन्त राग-गायक नित गाते, सभी हर्षयुत मेला करें॥
यज्ञ कर यजमान बने जन, देहें आहुती नर-नारी।
बसन्त होलिका समय सुहाना, सरस भरी ऋतु प्यारी॥

(2)

फसल सभी पक जाती है तब, कृषिक रांग में रंग जाते।
नूतन-अन्न-भरे घर अन्दर, गीत-मनोहर मिल गाते॥
मिले परस्पर विशद-भाव को, मित्र सनेही प्रेम करें।
हर्ष-हर्ष आर्य मन्दिरों में, जाते वैदिक नेम करें॥
वेद-मन्त्र ध्वनि अति शोभित, सुखद-सुगन्ध बहारी।
बसन्त होलिका समय सुहाना, सरस भरी ऋतु प्यारी॥

(3)

वैदिक-वेता आते-पुर-पुर, वैदिक धर्म बताने को।
वहां हमारे सृष्टि आदि का, भूला-लक्ष जगाने को॥
बता गये जो पोल-खोल के, वही दयानन्द आया था।
सबको सत्य सन्देश सुना कर, वैदिक यज्ञ सिखाया था।
गुरुकुल रहा सनातक पढ़ते, तेज-रूप ब्रह्मचारी।
बसन्त होलिका समय सुहाना, सरस भरी ऋतु प्यारी॥

(4)

"सम्यञ्चोऽग्नि सपर्यत" सभीये, यज्ञ करे घर घर-घर में।
व्याधि हरे सब सुखद सुगन्धी, ओज-तेज हो नर-नर में॥
यज्ञ, का होरी नाम किया ध्वंस, होरी मनाते मन मानी।
ये विधि वेद-युक्त सब भूले, होली हुड़दंग न जानी॥
वेद-विद्या बिन भूल गये हैं, बसन्त ऋतु की गति सारी।
बसन्त होलिका समय सुहाना, सरस भरी ऋतु प्यारी॥

(5)

पुर-पुर में जाते ब्रह्मवेता, घर-घर वैदिक मन्त्र जपे।
घर-घर हवन करें मिल सारे, घर-घर वेता देव तपे॥
सादर-साथ नमस्ते बोले सादर-मान बढ़ायें सब।
होरी का यज्ञ रूप बता कर, "घनसार" प्रभु यश गायें सब॥
अरे! याद कर-पथ-संभालो, चले आर्य नर-बलिहारी।
बसन्त होलिका, समय सुहाना, सरस भरी ऋतु प्यारी॥

गत दिनों आर्य सीनियर सै० स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक समारोह के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने कर कमलों से स्कूल के वीरेन्द्र ब्लाक का उद्घाटन किया। इस अवसर पर दिए गए चित्र में मध्य में श्री वीरेन्द्र जी के साथ विद्यालय के प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा, मैनेजर श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, प्रिंसीपल राम कुमार जी शर्मा आदि दिखाई दे रहे हैं। इस अवसर पर 5100/- रु० की थैली श्री वीरेन्द्र जी को भेन्ट की गई।

शास्त्री नगर में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर जालधर मे 23-2-90 को प्रातः साढे सात बजे से साढे नौ बजे तक शिवरात्रि का महोत्सव तथा बोध उत्सव श्री राम लुभाया नन्दा जी की अध्यक्षता में बडी धूम धाम से मनाया गया यज्ञ हवन के पश्चात पंडित सोहन लाल जी कालड़ा के प्रभावशाली उपदेश तथा श्री महिन्द्र पाल जी के भजन हुए।

इसके साथ ही 22-2-90 को जालंधर में कम्पनी बाग से जो शिवरात्रि का जलूस निकाला गया उसमें आर्य समाज शास्त्री नगर की ओर से दो ट्रालीयां भी शामिल हुई थी।

25-2-90 को एक निर्धन देवी वीनारानी सुपुत्री स्व० पृथ्वीराज का पूर्ण वैदिक रीति से विवाह श्री ओमप्रकाश जी नारंग ने मन्दिर में करवाया। और भोजन तथा लड़की को कपड़े बर्तन और बिस्तर और सूट आर्य समाज की ओर से दिये गये जिस पर 4000 रु० आर्य समाज ने खर्च किया।

आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य युवा महासम्मेलन, तालकटोरा इन्डौर स्टेडियम में उत्साह पूर्वक भव्यता से संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली के स्कूलों, आर्य वीरों व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा दिखाए गए शानदार प्रदर्शनों की सभी ने भूरि भूरि प्रशंसा की व करतल ध्वनि द्वारा उनका उत्साहवर्धन किया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री एस० आर० शर्मा, विकास आयुक्त, दिल्ली प्रशासन ने शस्त्र संचालन में कन्या गुरुकुल नरेला को प्रथम, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश को द्वितीय तथा गुरुकुल गौतम नगर को तृतीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। योगासन में राजकीय बाल मा० विद्यालय चौण्डा को पहला, गुरुकुल गौतम नगर को दूसरा, डी० सी० आर्य सी० सै० स्कूल लोधी रोड को तीसरा पुरस्कार प्रदान किया। पी० टी० प्रदर्शन में बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर तथा डी० एल० भल्ला डी० एन० माडल स्कूल झण्डेवालान को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिये गये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज सीमाओं पर हमारी स्वतन्त्रता व अखण्डता को चुनौती दी जा रही है। आर्य वीरों व स्कूल के बच्चों ने शानदार व भव्य प्रदर्शन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने आगे कहा कि आज समय की मांग को देखते हुए स्कूल व कालेजों में छात्रों की विशेष ट्रेनिंग व हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि देश की रक्षा में वे आवश्यकता पड़ने पर सहयोग दे सकें।

सभा प्रधान श्री डा० धर्मपाल जी और सभा महामन्त्री श्री सूर्य देव जी ने प्रेरक उद्बोधन द्वारा बच्चों का मार्ग प्रशस्त किया।

स्त्री आर्य समाज गोविन्दगढ़ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज गोविन्द गढ जालन्धर का वार्षिकोत्सव 19 से 25 फरवरी तक बड़े समारोह से मनाया गया। अथर्ववेद पारायण यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती नरेन्द्र जी आर्या, दिल्ली रही जिसकी पूर्णाहुति 25-2-90 को प्रातः 9 बजे डाली गई जिसमें सैंकड़ों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया। श्रीमती कमला आर्या (लुधियाना) ने वेद पाठ किया। श्री पं० हरवंश लाल जी शर्मा ने ध्वजारोहण किया।

इस अवसर पर आचार्य नरेश जी गुरुकुल करतारपुर तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी विमल प्रकाश आदि, श्री वीरेन्द्र कुलदीप साथी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प० धर्मदेव जी आर्य कार्यालयाध्यक्ष, श्री सालिगराम जी पराशर श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा प्रिंसिपल दोआबा कालेज जालन्धर, श्री प० भूदेव जी शास्त्री, श्री ब्र० नरेन्द्र जी शास्त्री श्री ब्र० राकेश जी शास्त्री, श्रीमती कमला जी आर्या (लुधियाना) श्री मती कमला शर्मा, श्री नरेश जी मन्त्री आ० स०, श्री चतुर्भुज जी मित्तल, तथा दूसरे कई महानुभावों तथा बहनों ने भजनो तथा प्रवचनों द्वारा अपने-अपने विचार रखे। 23-2-90 को शिवरात्रि का पर्व भी मनाया गया।

श्रीमती नरेन्द्र जी आर्या ने स्त्री आर्यसमाज की ओर से श्री राम प्रताप जी प्रधान आर्य समाज, श्री नसीबचन्द जी भारद्वाज, श्रीमती कमला आर्या (लुधियाना) श्रीमती कौशल्या (रैय्या मण्डी) को सम्मानित किया तथा बच्चों को पारितोषिक दिए इससे पूर्व महा गायत्री यज्ञ 14 जनवरी से 12 फरवरी तक किया गया था। 25-2-90 को ऋषिलंगर दोपहर दो बजे से साढे चार बजे तक चलता रहा। उपस्थिति बहुत अच्छी रही सभी बहनों और भाईयों ने इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

—कृष्ण कोछड़ मन्त्री

महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा का वार्षिक उत्सव

महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा का वार्षिक उत्सव गत दिनों बड़े उत्साह से मनाया गया। इस कार्य क्रम की अध्यक्षता श्री अश्वनी कुमार जी शर्मा प्रिंसिपल दोआबा कालेज जालन्धर ने की। श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने आधुनिक साज से इस कार्यक्रम को और भी रोचक बनाया। श्री अश्वनी कुमार, श्री सुखदेव वर्मा, व स्कूल के स्टॉफ ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। मंच का संचालन स्कूल के प्रिंसीपल श्री पृथ्वी राज जिज्ञासु ने किया। बच्चों का कार्यक्रम देखने योग्य था जिसमें फैंसी ड्रैस, मोनो ऐक्टिंग, सर्किट, गिद्धा व भंगड़ा आदि थे। कार्यक्रम के अन्त में अध्यक्ष महोदय ने स्कूल व स्टाफ की प्रशंसा की और बच्चों व स्टाफ में पुरस्कार वितरित किए गए हर प्रकार सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—प्रि० पृथ्वी राज जिज्ञासु

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कोई आक्षेप होता तो आपका उत्तर होता था कि मुझे शास्त्रार्थ के दिनों का कोई पैसा मत देना, अर्थात् मासिक नियत राशि से काट लेना। सभा के अधिकारियों को चुप कराने का उनका अचूक साधन था।

3 मार्च सन् 1935 ई० के "प्रकाश" लाहौर में आर्य समाज लुधियाना के तत्कालीन मन्त्री बाबू राम जी गुप्ता ने पण्डित जी के सम्बन्ध में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य एक घटना को प्रकाशित कराया—अपने बलिदान से 4 मास पूर्व लुधियाना समाज के उत्सव पर पण्डित जी के पेट में ऐसी जोर की पीडा हुई कि उनको उत्सव मण्डप छोडना पड़ा। चिकित्सार्थ आए डाक्टरों ने उस वीर पुरुष को अत्यन्त व्याकुल देखा, व पता चला कि व्याकुलता उन्हें शारीरिक पीड़ा के कारण नहीं है, बल्कि उन्हें यह विचार पीड़ित कर रहा है कि जो मुसलमान व्याख्यान सुनने आये हैं वे सब निराश होकर लौट जाएंगे। डाक्टरों ने इन्जैक्शन द्वारा उन्हें व्याख्यान देने योग्य कर तो दिया परन्तु वहां दिया गया उनका व्याख्यान अभूतपूर्व था। व्याख्यान क्या था सिंह-गर्जना ही थी।

पण्डित लेखराम जी का सबसे महान् कार्य ऋषि दयानन्द के जीवन चरित की खोज करना व लिखना रहा है। सभा ने इस कार्य के लिए आपको ही उपयुक्त समझा और इस गुरुतर कार्य को करते-करते ही आपने मृत्यु का वरण किया। ऋषि जीवन के साथ आपका यशस्वी नाम सदैव अमर रहेगा।

आपकी हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचाने की लगन व धुन कितनी पक्की थी, वह उपर्युक्त घटना से पता चलता है। आप कहीं से प्रचार करके लौटे तो महात्मा जी ने कहा कि "मुस्तफाबाद से तार आया है कि वहां पर पांच हिन्दू मुसलमान बनने लगे हैं। किसी उपदेशक को भेजो। आपको यह भी सूचना दी गई कि आपका पुत्र रोगग्रस्त है, आप जाकर उसकी देखभाल करें। तब पण्डित जी ने कहा—"मैं हकीम संतराम को तार देता हूं, वे वहां चले जाएंगे। ऐसे अवसर पर मेरा मुस्तफाबाद जाना अति आवश्यक है। मुझे अपने एक पुत्र से हिन्दू जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं।

श्री पण्डित जी निर्भयता के अवतार थे। एक बार जब पेशावर आर्य समाज के सदस्य वहां के तहसीलदार को आर्य समाज का प्रधान बनाने लगे तो आपने उनकी उपस्थिति में कहा था कि "यह मांस खाते हैं और शराब पीते हैं, ऐसा व्यक्ति प्रधान नहीं होना चाहिए।" आप में एक दो गुण नहीं थे, अपितु-बहुत सी विशेषताए थीं जिन्होंने आपके नाम व काम को चार चांद लगा दिए। यदि संक्षेप में उसकी महत्ता का वर्णन करना हो तो यूं निवेदन किया जा सकता है। आप साधारण मानव नहीं, अपितु देवता थे। अपने गुणों के कारण ही जहां पर आप स्वयं उन्नति के शिखर पर पहुंच गए वहां आपने वैदिक धर्म की जड़ें भी पाताल तक पहुंचा दीं।

6 मार्च 1897 को जब श्री पण्डित जी मुलतान में आर्य समाज के उत्सव से वापिस आकर लाहौर पहुंचे तो एक नीच, अधम एव अन्ध-विश्वासी व्यक्ति ने छल-कपट से आपके निवास स्थान पर आकर आपके पेट में छुरा घोंप दिया। जिसके कारण आपकी आंतड़ियां बाहर निकल आईं। श्री पडित जी को हस्पताल ले जाया गया। छुरा लगने के पौने दो घण्टे के पश्चात् डाक्टर साहिब आये और निरन्तर दो घण्टों तक पण्डित जी की कटी हुई आंतों को सीते रहे। डाक्टर पैरी आश्चर्य चकित थे कि दो घण्टों तक जिसके अन्दर से रक्त बहता रहा हो वह कैसे जीवित रह सकता है। 1-30 बजे रात्रि तक पण्डित जी सचेत रहे और वेद-मन्त्र उच्चारण करते रहे। मृत्युशय्या पर पड़े हुए आपने यह नहीं कहा कि मेरे पीछे मेरी माता जी धर्मपत्नी को दुःख न होने देना। यदि कोई अन्तिम आदेश दिया तो यही और केवल यही कि 'आर्य समाज द्वारा लेखन कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।'

प्यारे वीर! यदि कई बार मानव शरीर धारण करके आपके चरणों में सिर कटायें तो भी हम आपके ऋण से उऋण नही हो सकते।

परम पिता से हम प्रार्थना करते हैं कि श्री पण्डित जी के पद-चिन्हों पर चलने और उनके अन्तिम आदेश का पालन करने की शक्ति भी हमें प्रदान करें।

गुरुकुल आश्रम आम सेना का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल का 22वां महोत्सव पू० स्वामी सत्य प्रकाश जी की अध्यक्षता में 9 से 11 फरवरी 90 को अत्यन्त समारोह के साथ सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा गुरुकुल सम्मेलन अत्यन्त सफल रहे इसकी अध्यक्षता श्री मित्रसेन आर्य रोहतक ने की।

11 फरवरी को खरियार रोड़ में नव निर्मित आर्य समाज मन्दिर का उद्घाटन श्री रमेश चन्द्र जी श्री वास्तव प्रधान मध्य प्रदेश आर्य प्र० सभा की अध्यक्षता में स्वामी सत्य प्रकाश जी ने किया। इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति एव आर्य विद्वान उपस्थित थे। श्री स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयास से अल्प समय में गुरुकुल ने जो चतुर्दिग उन्नति की है इससे सभी अत्यन्त प्रभावित थे।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आय समाज शहीद भगतसिंह नगर जाल धर का 7वा वार्षिको सव बडी धूमधाम से मनाया गया।

12 फरवरी स प्रति दिन प्रात चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ हुआ जिस की पूर्णाहूति 18 फरवरी प्रात 9 बजे डाली गई प्रति दिन रात्री 8 बजे से 9 30 बज तक श्री राम नाथ जी यात्री के भजन तथा प० निरजन दव जी इतिहास केसरी की वेद कथा कालोनी के सारे मोहल्लो मे होती रही 17 फरवरी शनिवार को 1 30 बजे ध्वजारोहण श्री महात्मा आय भिक्षु जी ने किया और 2 बजे श्रीमती कमला जी आर्या की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन हुआ जिसमे महात्मा आय भिक्षु, प० सुभाष जी शास्त्री, श्री प० सालिगराम राम जी पराशर तथा श्रीमती कमला जी आय ने अपने अपने विचार रखे। रविवार को महा मा आय भिक्षु जी का उपदेश हुआ और 11 बजे शिव मुनि जी की अध्यक्षता मे राष्ट्र निर्माण सम्मेलन हुआ जिम मे श्री डा० राम अवतार जी प्रो०, ब्रह्म दत्त जी शर्मा, वीरेन्द्र जी कुलदीप पार्टी के भजन तथा आय भिक्षु जी, सुभाष जी शस्त्री, श्री आनन्दसागर जी आय आदि ने अपने अपने विचार रखे। दूरदशन की टीम भी पधारी हुई थी उपस्थति बहुत अच्छी थी और अन्त मे राष्ट्र निर्माण के लिए एक प्रस्ताव भारत स कार को भेजा गया।

मुल्खराज आर्य

गिदड़बाहा में ऋषि बोध पर्व

स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे आय समाज व स्त्री आर्य समाज की ओर से ऋषि बोध पर्व 25 .. 90 रविवार को साय 2 से 4 बजे तक बडी धूमधाम से मनाया गया। आचार्य सत्यप्रिय जी हिसार ने विस्तार से ऋषि जीवन पर अपने विचार रखे। श्री सुशील अग्रवाल जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डी० ए० वी० स्कूल व आर्य पुत्री पाठशाला के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किए। आर्य समाज का हाल स्त्री, पुरुषों और बच्चो से भरा हुआ था। जनता ने आय समाज को पुष्कल दान दिया। कार्यक्रम से प्रभावित होकर अनेक लोगो ने आर्य समाज के नियमित कार्यक्रमो मे भाग लेते रहने का वचन दिया।

—मदनलाल आर्य, मन्त्री

पर्व सूचि 1990

आर्य समाज के 1990 के पर्वों की सूची, जो इस वर्ष आने वाले हैं।

होली (नव सस्येष्टि) रविवार 11 3 90
आर्य समाज स्थापना दिवस मगलवार 27 3 90
राम नवमी मगलवार 3-4 90
हरि तृतीय मगलवार 24 7-90
श्रावणी उपाकर्म सोमवार 6 8 90
श्री कृष्ण जन्माष्टमी मगलवार 14 8-90
विजय दशमी शनिवार 29 9 90
गुरु विरजानन्द दिवस मगलवार 2-10-90
महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस गुरुवार 18-10-90
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस रविवार 23 12 90

—रणबीर भाटिया
सभा महामन्त्री
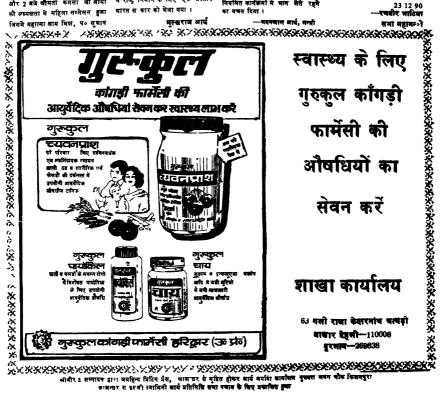
वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

टेलीफोन 72030 रजि० न० Pb/JL 55

वर्ष 21 अंक 50 5 चैत्र 2046 तदनुसार 15/18 मार्च 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

पण्डित गुरुदत्त जी की पुण्य शती पर—

कुशाग्र बुद्धि महान् मेधावी पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी जी

ले० श्री प० धर्म देव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य समाज में अनेकों विद्वान संन्यासी और महात्मा हुए हैं जिनका आर्य समाज के इतिहास मे महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु प० गुरुदत्त विद्यार्थी उन सब में कम आयु के विद्वान हैं जिन्होंने अपनी छोटी सी आयु मे आर्य समाज में पदार्पण किया और केवल 26 वर्ष की आयु में ही वह अपनी धाक सभी के मन पर बैठा कर अपनी जीवन यात्रा समाप्त करके संसार से चल गए। 26 अप्रैल 1864 को उनका जन्म हुआ और 19 मार्च 1890 को लगभग 26 वर्ष की अल्प आयु मे यक्ष्मा रोग से उनका देहावसान हो गया। 19 मार्च 1990 को उनको हमसे विदा हुए 100 वर्ष व्यतीत हो गए हैं। अर्थात एक शताब्दी बीत गई है।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी महान प्रतिभा शाली और कुशाग्र बुद्धि थे वह पुस्तक को इतने तन्मय होकर पढते थे कि एक बार पढ लेने पर ही उन्हे वह कंठस्थ हो जाती थी उनका संस्कृत अर्बी, अंग्रेजी, भौतिक विज्ञान, रसायन, गुणभशास्त्र, शारीरिक विज्ञान, ज्योतिष गणित, दर्शन और भाषा विज्ञान जैसे विभिन्न शास्त्रों पर उनका एक सा अधिकार था। उनके गम्भीर अध्ययन को देख कर सुनने वाले अक्सर चकित रह जाते थे। उस कम आयु के मुनिवर गुरुदत्त के पास बैठ कर स्वामी अच्युतानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द, स्वामी स्वात्मानन्द तथा स्वामी महानन्द यह चार सन्यासी घण्टो शास्त्रीय चर्चा और वार्तालाप करते थे। यह सन्यासी शंकर वेदान्त के अनुयायी थे, परन्तु पण्डित गुरुदत्त जी ने इनसे रात दिन शास्त्र चर्चा करके उन्हें वेद प्रतिपादित त्रैतवाद का पथिक बना दिया और यह चारो सन्यासी वैदिक धर्मानुयायी बन कर आर्य समाज का प्रचार करने लगे।

एक समय था जब प० गुरुदत्त विद्यार्थी नास्तिकता की ओर चल पड़े थे और पाश्चात्य विद्वानो की पुस्तको को पढ कर ईश्वर मे आस्था खो बैठे और जो गुरुदत्त अनिश्वरवाद पर ऐसे तर्क पेश करता था कि बड़े बड़े विद्वान भी उसके तर्कों के आगे चुप हो जाते थे। वही नास्तिक गुरुदत्त 1883 मे जब लाहौर से अजमेर जाता है और महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु का अन्तिम दृश्य देखता है तो वह वहा से महान आस्तिक बन कर आता है। क्योंकि उन्होने महर्षि के जब उस अन्तिम दृश्य को देखा जिसमे वह समाधि लगा कर ईश्वर से वार्तालाप करते हुए अपनी इच्छा से एक लम्बा श्वास लेकर स्वयमेव शरीर छोड जाते हैं तब गुरुदत्त यह दृश्य देखता रह जाता है, तब गुरुदत्त ने कहा कि यह ईश्वर है क्योंकि महर्षि ने अन्तिम समय मे उन्ही की इच्छा से शरीर छोड़ा है। बस इसी घटना से नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक गुरुदत्त बन गया उन्होने अजमेर मे उस दिन संकल्प लिया था

(शेष पृष्ठ 6 पर)

गरीबी निवारण करें

ले०—श्री धर्मविज्ञान जी मुनि, आर्य-वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

वर्तमान भारत की प्रमुख आर्थिक समस्या का समाधान निम्न मन्त्र मे देखा जा सकता है।

पृणीयाद् इन् नाधमानाय तव्यान्,
द्राघीयासम् अनु पश्येत पन्थाम्।
उ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा, न्यम्
अन्यम् उप तिष्ठन्त राय ।

ऋग्वेद 10 11-75

अन्वय तव्यान् नाधमानाय पृणीयात् इत्, द्राघीयासम् पन्थाम् अनु पश्येत । हि, रथ्या-इव चक्रा आ वर्तन्ते उ, राय अन्यम् अन्यम उप तिष्ठन्त ।

अर्थ अतिशय अवृद्ध (1) याचक के लिए पूर्ति कर ही, (2) दीर्घतम पथ का अनु दर्शन करें। क्योकि जैसे रथ के चक्र आ-वृत्ति करते हैं ही (वैसे) धन अन्यान्य का उप-स्थान करते हैं।

सम्पत्ति किसी के पास स्थिर नही रहती है। साहित्य मे लक्ष्मी को 'चपला' कहा भी है। अत सम्पन्न व्यक्ति को चाहिए कि सम्पत्ति (धन-धान्य, बल, ज्ञान, कुटुम्ब, पद आदि) का अभिमान न करे। हम ससार मे देखते ही हैं कि सम्पन्न व्यक्तियो द्वारा ही ससार मे अनाचार, अत्याचार और अन्याय होता है और निर्धन, निर्बल, एकाकी, मूर्ख, छोटे लोगो पर ही अन्याय होता है।

मन्त्र की तीसरी और चौथी पक्ति मे कहा है कि सम्पत्ति अस्थिर होती है। रथ के चक्र की तरह वह ऊपर-नीचे, आगे पीछे चली जाती है। 'पचतन्त्र' मे विष्णुमित्र ने भी कहा है,

दान भोगो नाश तिस्रो, गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर् भवति ।

वित्त की तीन गतिया है, दान, भोग और नाश। सम्पत्ति का स्वय भोग करिए, या उसका दान करिए। स्वय भोग करना और दान करना, दोनो कम मनुष्य कर सकता है। जो व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का न तो दान करता है, न स्वय भोग करता है, उसके धन का नाश अवश्य होगा। पड पड गल जाएगा। या चोर चुरा लेगा। या डाकू, जबरदस्त व्यक्ति ले जाएगा। इसलिए वह सम्पन्न व्यक्ति जिसके पास अपने भोग से अधिक सम्पत्ति है, उसका दान करे।

अभावग्रस्त की सहायता करने की प्रवृत्ति मनुष्यो मे साधारणतया पाई जाती है। थोडा बहुत देने की प्रवृत्ति प्रत्येक मनुष्य मे है। विपद्ग्रस्त की सहायता नि स्वार्थ भाव से करना ही मनुष्यत्व है। हम रे पास भूखा आ जाए, तो हम उसे भोजन कराकर सन्तुष्ट होते हैं। कपडा भी देते हैं। पैसा भी देते हैं। कुछ विद्वान लोग विद्या भी देते हैं। कुछ महानुभाव, नि स्वार्थ भाव से सगठन भी करते हैं। धन्य हैं वे पुरुष जो जाति, धर्म, राष्ट्र के लिए अपने तन, मन, धन के साथ साथ प्राण भी अर्पित कर देते हैं। देश, काल और प्राणी की आवश्यकता को दृष्टि मे रखकर दिया गया दान, सहायता उचित समझी जाती है। मनु ने ब्रह्म के दान को श्रेष्ठ कहा है,

सर्वेषाम् एव दानाना, ब्रह्मदान विशिष्यते ।
वार्य् अन्न-गो मही वासस् तिल काञ्चन सर्पिषम् ।

जल, अन्न, गाय, भूमि, वस्त्र, तिल (या तैल), सुवर्ण, घृत, आदि पदार्थों के दान की अपेक्षा ब्रह्म (ज्ञान) का दान सर्वोत्तम है। किसी व्यक्ति को एक दिन भोजन करा देने से उसकी एक दिन की क्षुधा शान्त होगी। भूख तो प्रतिदिन लगती है। प्रतिदिन तो एक ही व्यक्ति को नही खिलाया जा सकता। साधारणतया जब एक भिखारी शीघ्र ही दूसरी बार आ जाए तो कहा जाता है कि महाराज, आप कल भी आए थे, कोई काम करिए।

अत वेद कह रहा है कि तुम ही उसके लिए दीर्घकालिक योजना बनाओ ताकि वह अपनी आवश्यकता स्वय पूरी कर ले। उसके लिए अपना धन लगाइए। चाहे तो कुटीर उद्योग खोल या खुलवा दीजिए। तेल के कोल्हू, कागज या स्याही का निर्माण, खादी कातना बुनना, आदि। आजकल सरकार की ओर से फल सब्जियो को डिब्बा बन्द करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। विधवा महिलाओ को सिलाई की मशीन ले दीजिए। बेंत की कुर्सियो, आदि का बुनना सिखाया जाता है। गाय या भैंस खरीदवा दीजिए। ऑटो रिक्शा या साइकिल-रिक्शा दिलवा दीजिए। इससे भी बडी योजनाए बनाइए। कल कारखाने खोलिए। उन कारखानो का उद्देश्य स्वय की कमाई न हो, निधनो को अधिकतम रोजगार और मजदूरी मिले। लाभ हानि रहित के सिद्धान्त के आधार पर का खाने खोलिए।

गरीबो को रोजगार मिलने से उनकी गरीबी दूर होती है। वे निश्चित और सुखी होते हैं जैसे जैसे परिवार बढता है, आमदनी भी बढने लगती है।

तब स्वाभाविक रूप से गरीबो के हृदय मे उस सम्पन्न, परोपकारी व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता उत्पन्न होती है। उसके हृदय से शुभकामना फूट पडती है कि इस परोपकारी दयालु की सम्पत्ति खूब बढे। वे चाहते हैं कि यह कारखाना या कुटीर उद्योग या रोजगार का यह अवसर सदा बना रहे, उनकी आजीविका चलती रहे। यह सम्पन्न परोपकारी व्यक्ति उन जैसे लोगो की सदा सहायता करता रहे। वे लोग अपने अन्त करण से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उस परोपकारी, दयालु, धार्मिक पुरुष को सदा सुखी और सम्पन्न रखे। यह प्रार्थना उन्ही व्यक्तियों के लिए है जो उदार हैं, परदु खकातर हैं। वे दु खी के दु.ख को समझते हैं और उन्हे सुखी बनाने का यत्न सम्पूर्ण हृदय से, मन और आत्मा से करते हैं।

'नाधमानाय द्राघीयासम् अनु पश्येत पन्थाम्' का यह भाव है कि अभावग्रस्त के अभाव को दूर करने के लिए दीर्घकालिक योजना बनाकर उनके जीवन-भर की समस्या का समाधान करें।

सम्पन्न व्यक्ति को भगवान् तृप्त इसलिए करे कि वह याचको की उन्नति मे अपनी सम्पत्ति लगा दे। जो सम्पन्न व्यक्ति याचको की उन्नति मे अपनी सम्पत्ति, उनके लिए दीर्घकालिक योजना हेतु, लगाते हैं उनको भगवान् और अधिक देता है। साथ ही इस प्रकार की प्रार्थना कि दाता का भण्डार कभी खाली न रहे ताकि वे अपनी सम्पत्ति बाटने से न हिचकिचाए, याचक लोग भी करते हैं। यह प्रार्थना, पूजीपति-दृष्टिकोण से सर्वथा विपरीत है पर यह यज्ञिय भावना से सर्वथा अनुकूल है।

भाव : हे प्रभो! आप दयालु, न्यायकारी, ऐश्वर्यवान् और सर्वशक्तिमान् हैं। आप सकल जगत् की सम्पत्ति के अधिष्ठाता हैं। जो परोपकारी, धार्मिक सज्जन अपनी सम्पत्ति से, गरीबों के लिए अल्पकालिक या दीर्घकालिक योजना बनाकर उनकी सहायता करते हैं, आप उन्हे पुष्ट और सन्तुष्ट करते हो। विवेकी, दयालु भक्त जन लक्ष्मी का स्थानान्तरण अपनी इच्छा से उचित स्थान पर स्वय करते हैं। इसी से वे सन्तुष्ट रहते हैं आपकी कृपा हम सब पर भी बनी रहती है। आपकी असीम कृपा से हम सब—धनी और निर्धन—सुखी, प्रसन्न और आनन्दित हैं। हे ईश्वर! प्राणिमात्र का उपकार करना और उपकार करने वाले प्राणी को पुष्ट और सन्तुष्ट रखना आपका स्वभाव है।

जिस प्रकार आपने समस्त भोग्य पदार्थ दया-दृष्टि से प्राणिमात्र के लिए रखे हैं वैसे ही आपके मार्ग का अनुसरण करते हुए, यह सम्पन्न व्यक्ति भी निःस्वार्थ उपकार वृत्ति से हम गरीबों पर उपकार कर दुःख दूर कर रहा है और इस दानवृत्ति से परम सन्तुष्ट है। अत: आप इसकी सम्पत्ति को पुष्ट कीजिए। क्योंकि यह आपसे जो कुछ पाता है उसे अपने पास नहीं रखता, आगे वितरण कर देता है। आप द्वारा प्राप्त सम्पत्ति का सही सदुपयोग है कि उसका आगे वितरण कर दिया जाए।

समर्पित हैं श्रद्धा सुमन

ले० —श्री जयप्रकाश शर्मा 'जय'
18-आदित्य सदन, अशोक रोड, नई दिल्ली 110001

श्री चन्द्रभान जयन्ती पर,
समर्पित हैं श्रद्धा सुमन।
इस आर्य पुरुष की स्मृति मे,
आओ करें शान्ति का मिल हवन।
ये मानवता की मूरत थे,
सज्जनता की थे परिभाषा।
जो आया इनके द्वार दु खी,
वो गया सुखी सग ले आशा।
हे आर्य धर्म के उद्धारक,
वेदोपदेश के महापुञ्ज।
तुम तन से बासन्ती चन्दन थे,
महकाया तुमने आर्य कुञ्ज।
चिन्तन तेरा हिमालय था,
हृदय तेरा देवालय था।
व्यक्तित्व था जैसे गगा जल,
कृतित्व था जैसे विध्याचल।
तुम आर्य धर्म के लिए जिए,
दयावान रहे दु खियो के लिए।
दे दे निज पुण्य की आहुतिया,
शुद्धिया करी सत्सग किए।
आर्य धर्म प्रचार विदेशो मे भी,
इस आर्य दूत ने फैलाया।
वेद मन्त्रों को यज्ञों मे पढ,
ध्वज ओ३म् का ऊचा लहराया।
हे ज्ञान के सागर सुधी साधक,
तेरी गूजे आज भी मन्त्र लहरी।
कर्मकाडी रहे सदा जीवन मे,
रहे आर्य समाज के तुम प्रहरी।
स्मृति पर आपकी गूजें गूजें,
केसर बरसेगा और चन्दन।
तेरे जन्मदिन पे हैं ऋषिमुनि,
जन जन करेगा मन से नमन्।
श्रद्धेय शिरोमणि पण्डित जी,
अपने भक्तो पर उपकार करो।
जयन्ती की पावन बेला पर,
श्रद्धाजलि 'जय' की स्वीकार करो।

सम्पादकीय—

आर्य साहित्य के प्रचार की आवश्यकता

जब हमें यह सोचने लगते हैं कि आर्य समाज में शिथिलता क्यों आ रही है तो उसका हमें एक कारण यह भी दिखाई देता है कि आज के आर्य समाजी अपने साहित्य का उतना स्वाध्याय नहीं करते जितना पहले किया करते थे। आज भी आर्य समाज में उच्चकोटि के लेखकों की कमी नहीं है। साहित्य भी कई प्रकार का प्रकाशित होता रहता है। परन्तु उसको पढ़ने वाले उतने नहीं मिलते जितने पहले हुआ करते थे। आज से पच्चास-साठ वर्ष पहले आर्य समाज का प्रचार या तो बड़े-बड़े विद्वान् करते थे या उनके लिखे साहित्य के द्वारा हुआ करता था। यही एक कारण था कि मुसलमानों की ओर से तथा इसाईयों की ओर से आर्य समाज के विरुद्ध जो प्रचार होता था उसका जन साधारण पर कोई प्रभाव न होता था। प्रत्येक आर्य समाजी एक चलता फिरता साहित्य हुआ करता था। प्रत्येक आर्य परिवार में सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त आर्य समाज का बहुत सा साहित्य होता था। मेरे विचार में आर्य समाज का प्रचार जितना छोटे-छोटे ट्रैक्टों द्वारा हुआ उतना बड़ी-बड़ी पुस्तकों द्वारा नहीं हुआ था। यह बात नहीं की बड़ी-बड़ी पुस्तकों को लोग नहीं पढ़ते थे, लोग उन्हें भी पढ़ते थे। जिसे हम आर्य साहित्य कहते हैं उसका भी बहुत प्रचार होता था। आर्य समाज के उत्सव जन साधारण के लिए एक बहुत बड़े आकर्षण का कारण हुआ करते थे। उसके जो बड़े-बड़े विद्वान् भाषण दिया करते थे वह बहुत प्रभावशाली होते थे। हजारों लोग उन्हें सुनने आते थे। कई भजनोपदेशक विशेष रूप से कई लोगों के आकर्षण का कारण हुआ करते थे। इस प्रकार आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ करता था।

आज स्थिति बदल रही है लोगों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। साहित्य अब लोग उतना नहीं पढ़ते जितना की पहले पढ़ा करते थे। इसका एक परिणाम यह भी है कि आज हमें अपने सिद्धान्तों के विषय में भी पता नहीं होता। पहले तो बड़े-बड़े शास्त्रार्थ भी हुआ करते थे परन्तु अब वह नहीं होते। यही कारण है कि आर्य समाज में शिथिलता आ रही है। इसे रोकने का एक साधन यह भी है कि आर्य समाज के साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार किया जाए।

हम देखते हैं कि इसाई अपनी बाईबल सोसायटी की तरफ से कई प्रकार का सस्ता साहित्य प्रकाशित करते हैं। मुसलमान भी अपना सस्ता साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी भी सिख साहित्य प्रकाशित कर रही है। आर्य समाज का साहित्य कुछ कम प्रकाशित हो रहा है। आर्य समाज में आज भी कई बड़े-बड़े विद्वान् लेखक बैठे हैं, जो कुछ न कुछ लिखते रहते हैं परन्तु पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आर्य समाज को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। विशेष कर आर्य समाजों के अधिकारियों को पुराने अधिकारियों की तरह स्वयं भी स्वाध्याय करना चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए। आर्य समाज के कुछ मौलिक सिद्धान्त हैं। जिनके विषय में प्रत्येक आर्य समाजी को कुछ न कुछ अवश्य पता होना चाहिए। जहां तक सम्भव हो, सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका का पाठ तो प्रत्येक आर्य समाज में होना चाहिए। इसके साथ ही जो साहित्य भिन्न-भिन्न आर्य संस्थाएं या प्रतिनिधि सभाएं प्रकाशित करती रहती हैं उसका भी प्रचार होना चाहिए।

मैं पंजाब की आर्य समाजों से विशेष रूप से कहना चाहता हूं कि उन्हें विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए। जिन परिस्थितियों में हम आज पंजाब में रह रहे हैं यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी धार्मिक विचारधारा की ओर विशेष ध्यान दें। आज सारी अकाली राजनीति उनके धर्म के आधार पर ही चल रही है और यही कारण है कि सिखों में अपने धर्म के लिए इतनी श्रद्धा है कि वह इसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। कुछ ऐसी प्रवृत्ति हमें भी आर्य समाजियों में पैदा करनी चाहिए।

आज की परिस्थितियों को देखते हुए हमें अपने प्रचार का ढंग भी कुछ बदलना पड़ेगा। जो खण्डन-मण्डन पहले चलता था। अब वह न चल सकेगा इस लिए प्रचार का अब हमारे पास एक ही साधन रह जाता है कि हम अपने साहित्य के द्वारा अपनी विचारधारा का प्रचार करें। लोगों को पता होना चाहिए कि वैदिक धर्म में क्या-क्या विशेषताएं हैं। इस लिए पंजाब की सब आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा यह निवेदन है कि वह सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य का जनता में अधिक से अधिक प्रचार करें। साप्ताहिक आर्य मर्यादा प्रत्येक आर्य परिवार में पहुंचना चाहिए। इसका वार्षिक चन्दा कोई अधिक नहीं है। हमें धर्म प्रचार के लिए इतना तो त्याग करना ही चाहिए। तीस रुपया वार्षिक देना कोई अधिक नहीं है। वर्ष भर में साहित्य प्रचार के लिए इतना तो खर्च किया ही जा सकता है। यह आर्य समाज के अधिकारियों का कर्त्तव्य है कि वह आर्य मर्यादा और सभा के दूसरे साहित्य के द्वारा आर्य समाज का दृष्टिकोण दूसरों तक पहुंचाने का प्रयास करें। आज केवल बातें करने से काम न चलेगा कुछ करके दिखाना पड़ेगा। इसके लिए आवश्यक कि हम अपने साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार करें।

वीरेन्द्र

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी की स्मृति में

यह वर्ष पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी की पुण्य शती का वर्ष है। पंडित जी का आर्य समाज के इतिहास में अपना एक विशेष स्थान है। जब हम महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल पर दृष्टि डालते हैं तो जो व्यक्ति उस समय स्वामी जी महाराज के जीवन और शिक्षाओं से प्रभावित हुए थे उसमें एक पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी भी थे। अपने समय में वह एक योग्य विद्वान् समझे जाते थे। जब वह कालेज में पढ़ते थे वहां भी उन्होंने अपने लिए एक विशेष स्थान बनाया हुआ था। कहा जाता है कि वह किसी भी परीक्षा में कभी दूसरे स्थान पर नहीं आए सदा ही प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान पर आते रहे। वह यदि चाहते तो उस समय भी सरकार की सेवा में अपने लिए एक विशेष स्थान प्राप्त कर सकते थे। परन्तु जब उनका सम्पर्क महर्षि दयानन्द सरस्वती से हुआ विशेष रूप से उनके अन्तिम दिनों में तो उससे पंडित गुरुदत्त जी के जीवन का कांटा ही बदल गया। वह नास्तिक से आस्तिक हो गए क्योंकि उन्होंने महर्षि को अन्तिम समय में देखा था कि वह किस प्रकार मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं और यह जानते हुए भी कि मृत्यु उनका दरवाजा खटखटा रही है तब भी वह जरा भी विचलित नहीं हुए। मृत्यु से संघर्ष में ही उन्होंने अपने प्राण छोड़ दिए और पंडित गुरुदत्त जी खड़े यह सब कुछ देखते रहे। इसका उनके जीवन व मन पर जो प्रभाव पड़ा उसी के कारण ही वह महर्षि के भक्त बन गए और उसी कारण उन्होंने अपना बाकी सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत कर दिया।

डी० ए० वी० आन्दोलन को जिन तीन महापुरुषों ने प्रारम्भ किया था उनमें महात्मा हंसराज जी और लाला लाजपतराय के अतिरिक्त तीसरे गुरुदत्त विद्यार्थी थे। आज डी० ए० वी० आन्दोलन एक विशाल रूप धारण कर चुका है। परन्तु प्रारम्भ में इसका बीज बोने में और अपने परिश्रम से इसे खड़ा करने में सबसे अधिक योगदान पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का था। उन्होंने इसके लिए जहां जनमत तैयार किया वहां धन संग्रह में भी अपना पूरा समय दिया था। वह इसके लिए सारे पंजाब और पंजाब से बाहर भी स्थान स्थान पर घूमे।

आज जबकि आर्य समाज में कुछ शिथिलता आ रही है और भविष्य के लिए भी कई प्रकार के प्रश्न किए जा रहे हैं, ऐसे समय में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम अपने पूर्वजों की ओर देखें और यह समझने का प्रयास करें कि उन्होंने आर्य समाज के लिए क्या कुछ किया था। पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। पंडित गुरुदत्त जी, पंडित लेखराम जी, लाला लाजपतराय जी, महात्मा मुन्शी राम जी, महात्मा हंसराज जी, यह सब आर्य समाज की वह विभूतियां हैं जिन्होंने अपने प्राण देकर भी आर्य समाज को जीवन दिया। अपने तप और त्याग से उन्होंने आर्य समाज को अपने पांव पर खड़ा किया। देश के इतिहास में आर्य समाज को जो गौरवमय स्थान प्राप्त है वह बहुत कुछ पंडित गुरुदत्त जी जैसे महापुरुषों के कारण ही है। उनकी इस पुण्य शती के अवसर पर उनको श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए हम परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि वह हमें ऐसी शक्ति व योग्यता प्रदान करें कि हम पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी जैसे महापुरुषों के पद्चिन्हों पर चलते हुए और उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए अपने देश, जाति, धर्म और समाज की सेवा उसी प्रकार करें जिस प्रकार उन्होंने की थी।

इतिहास में कुछ व्यक्ति इसी प्रकार अपने लिए जगह बना जाते हैं जिस प्रकार छोटे से जीवन में पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी बना गए हैं। वह ऐसी जगह बना गए हैं जिसे उनसे कोई भी नहीं छीन सकता। जो जगह वह अपने लिए बना गए हैं, हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि वह सुरक्षित रहे और वह केवल उसी स्थिति में रह सकती है यदि हम पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी के जीवन को समझते हुए जिस प्रकार उन्होंने अपने देश, धर्म और समाज की सेवा की थी उसी प्रकार हम भी करें। यही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—वीरेन्द्र

गुरु-विभा—गुरुदत्त

ले० श्री देवनारायण भारद्वाज रंढोपुर नई बस्ती आजमगढ़ (उ० प्र०)

दयानन्द की दीप शिखा से, जो दीपक जलकर आया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है॥
धन्य तुम्हारा कुल सरदाना, लिया पहनवाना मरदाना।
पैतृक परम्परा से सीखा, देश-धर्म पर शीश चढाना।
बाल्यकाल मे लगा सुहाना, तारा मण्डल का मुस्काना।
तारो के टिम-टिम प्रकाश मे, प्रभु की छविलख जो इठलाना।
वर बुद्धि विवेचन का गुण, जिसने बचपन से पाया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है।
निज जन्म भूमि मुल्तान छोड़, तुम पढने को लाहौर गए।
पाकर सर्वोच्च प्रथम श्रेणी, विज्ञान-ज्ञान सिरमौर भए।
विज्ञान और अंग्रेजी पढ़, मन के हो ढीले डोर भए।
आस्तिकता का त्याग मधुर पथ, वे नास्तिकता की ओर गए।
अपने उत्तम छात्र-काल में, प्रिय आर्य समाज सुहाया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है।
विषाक्रान्त ऋषि की सेवा मे, मुनिवर अजमेर पहुंचते हैं।
मित्रता मृत्यु से देख वहा, ऋषि की आभा वे गहते है।
उस अन्त विदा की वेला मे, प्रभु से महर्षि जी कहते हैं।
दयानन्द की दिव्य वार्ता, सुनकर वे सहमे रहते हैं।
लख दयानन्द निर्वाण दृश्य, निज नास्ति भाव बिसराया है।
जिसने गुरु विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है।
स्नातकोत्तर तक शिक्षा पाकर, प्राध्यापक का पद पाते हैं।
आर्य सगठन, वेद-शोध हित, वे इसको भी ठुकराते हैं।
वेदो का अर्थ बोधने को, वे अष्टाध्यायी पढ जाते हैं।
सुन्दर वैदिक मैगजीन की, आंग्ल पत्रिका छपवाते हैं।
अन्तर्राष्ट्रीय सस्थानों तक, विज्ञान-वेद पहुंचाया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है।
गुरु दयानन्द की सस्मृति में, शिक्षा सस्थान बनाते है।
साईंदास-लाजपत पाकर, श्री हंसराज खिल जाते हैं।
आर्य समाज सगठन प्रयाण, जीवन-प्राण वही बन जाते हैं।
यो हर क्षण रह वे कार्य व्यस्त, क्षय रोग ग्रस्त हो जाते हैं।
छब्बीस वर्ष का नव यौवन, हंस कर श्रुति भेंट चढाया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है।
लो एक शताब्दी बीत गई, बहु सदिया आगे आयेंगी।
गुरुदत्त तुम्हारी कीर्ति कथा, नव युवको से कह जायेगी।
आर्य जनो की नई पीढिया, तेज तुम्हारा अपनायेंगी।
जब आर्य वीर दल युवको मे, गुरु की कृतिया मुस्कायेंगी।
गुरुदत्त तुम्हारे वन्दन मे, यह गीत देव ने गया है।
जिसने गुरु-विभा बिखेरी है, गुरुदत्त वही कहलाया है॥

भिन्न-भिन्न आर्य समाजों मे शिवरात्रि का पर्व मनाया गया।

आर्य समाज दलड़ी गेट नाभा मे 23-2-90 को शिवरात्रि का पर्व ऋषि बोधोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया। इसके साथ ही भाषण प्रतियोगिता भी हुई विजेता छात्रो के पारितोषिक दिए गए।

—प्रताप चन्द

आर्य समाज राम कोट (लुधियाना) मे ऋषि बोधोत्सव 24-2-90 शनिवार को प्रात हवन यज्ञ के बाद मनाया मनाया गया जिसमे बडी सख्या मे श्रद्धालुओ ने भाग लिया और ऋषि का गुण गान किया।

—अशोक कुमार

4—आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर मे ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूमधाम से गत दिनो सम्पन्न हुआ। प्रात प० मनीषी देव शास्त्री व प्रिंसिपल सत्यपाल जी ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। धर्म प्रेमी सज्जनो मे ऋषि लगर वितरित किया गया।

—राकेश कुमार

5—आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट (पजाब) मे शिवरात्रि महोत्सव गत दिवस दि० 23-1-90 को आर्य समाज मदिर फरीदकोट मे प्रात बृहद यज्ञ हवन के पश्चात् मन्दिर के मध्य चल रहे डी० ए० वी० क० विद्यालय के छात्र छात्राओ ने देश भक्ति के गीत, सामाजिक और आध्यात्मिक गीत प्रस्तुत किए।

दादा गुरु विरजानन्द की जन्म भूमि करतारपुर के लिए अपील

महर्षि दयानन्द के परमगुरु दण्डी विरजानन्द की जन्मस्थली करतारपुर (जालन्धर) आर्यों का एक विशेष तीर्थ और गुरुधाम है। यह वही परम पुनीत पुण्यभूमि है जिसकी रज मे लोट-लोट कर, दादा गुरु विरजानन्द ने वृजलाल के नाम से अपने बाल्यकाल की अठखेलिया कीं, जिसके पवित्र आंचल मे गुरुवर ने अपना बचपन सम्भाला। महर्षि दयानन्द और उनके परम गुरु का एक विशेष ध्येय था। प्राचीनतम वैदिक शिक्षा का प्रचार तदनुरूप उनके सदुद्देश्य को मूर्त रूप देने के लिए सन् 1970 मे चार ब्रह्मचारियों के साथ इस ट्रस्ट ने गुरुकुल की स्थापना की। आज बढते-बढते ब्रह्मचारियो की सख्या 120 हो गयी है गत वर्ष तक यह सख्या केवल 65 थी। अत स्वभाविक है कि सख्या वृद्धि के साथ खर्च भी बढा है और आवास स्थान की भी आवश्यकता हुई है वर्तमान मे स्मारक ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं।

1. श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल (कक्षा 4 से 10 तक गुरुकुल कांगड़ी पाठ्यक्रम)

2. श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय (प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री)

3. गौशाला (ब्रह्मचारियों के शुद्ध दुग्ध व घृतादि के लिए)

4. महात्मा प्रभु आश्रित यज्ञशाला (जहा ब्रह्मचारी दोनों समय सन्ध्या-यज्ञ करते हैं)

5. पुस्तकालय एव वाचनालय।

6. विधर्मियों द्वारा उत्पीड़ित परिवारो से आए छात्रो के पूर्ण सरक्षण एव सुविधाए।

7. वेद प्रचार।

8. स्मारक भवन का प्रबन्ध देख रेख।

ये सब कार्य ऋषिमिशन के अग हैं। ब्रह्मचारियो से भोजन-दुग्ध-आवास-शिक्षा आदि का कुछ नही लिया जाता है इन सब कार्यों पर वर्त्तमान मे 34-35 हजार रुपए प्रति मासिक आता है। जिनकी आय का साधन केवल दान ही है। ब्रह्मचारियो की बढती सख्या के साथ आवास के लिए 6 कमरों तथा फ्लश-बाथरूम निर्माण की योजना बनायी गयी है। बरामदे सहित एक कमरे की औसत लागत 25000 रुपए है। इन सब योजनाओं को कार्य रूप देने के लिए न्यूनतम दो लाख रुपए की आवश्यकता है। अतः अधिकाधिक सहयोग देकर ऋषिमिशन मे अपना सहयोग अवश्य दें।

आपसे पुनः सानुरोध निवेदन है कि अपनी आर्य समाज, शिक्षण सस्थान, अपने प्रभावी अन्य क्षेत्र उद्योग सस्थान व अपनी ओर से इन कार्यों में आर्थिक सहयोग करना न भूलें। 5000/- रुपए या अधिक दान देने वाले दाताओं के नाम शिलापट्ट पर अंकित कराए जाएंगे।

विशेष—इस ट्रस्ट को दी गई राशि आयकर आयुक्त के पत्र न० जे० यू० डी० एल० ट्रस्ट 6188 तारीख 12-7-89 के अनुसार धारा 80 जी के अधीन कर मुक्त है।

शिव मुनि वानप्रस्थी—
संचालक
हरिवंश लाल शर्मा—
प्रधान
चतुर्भुज मित्तल—
मन्त्री

आर्य लेखक कोश के लिए आर्य जगत् से अपील

आर्य जगत् को यह प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के विख्यात शोध कर्त्ता विद्वान् डा० भवानी लाल भारतीय आर्य समाज के लगभग 1000 लेखकों, साहित्यकारों, कवियो और विद्वानों का परिचय तथा उनकी साहित्य साधना का एक विशाल परिचय तथा उनकी साहित्य साधना का एक विशाल परिचयात्मक ग्रन्थ आर्य लेखक कोश के नाम से तैयार कर रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण सदर्भ ग्रन्थ को शीघ्र ही मुद्रण के लिये प्रेस मे दिया जा रहा है। इसमें पर्याप्त धन व्यय होगा और यह महत् साहित्यिक अनुष्ठान आर्य जनों के सहयोग एव सहायता से ही पूरा होगा। देश के प्रत्येक आर्य एव आर्य समाज से मेरी अपील है कि वह भारतीय जी को इस उत्तम कार्य मे पूर्ण आर्थिक सहयोग दें। इस ग्रन्थ का अग्रिम मूल्य 100 रु० अविलम्ब भारतीय जी को भेज दें ताकि वर्षान्त तक ग्रन्थ छपते ही यह उनकी सेवा में भेजा जा सके। आर्य समाजें अधिक सहायता न्यूनातिन्यून 1000 रु० भेजें, ताकि सहस्र बजट का यह ग्रन्थ शीघ्र पाठकों को प्राप्त हो सके।

निवेदक :

सुमेधानन्द
मन्त्री, वैदिक यतिमण्डल,
दयानन्द मठ चम्बा (हि०प्र०)

स्वामी सर्वानन्द
प्रधान वैदिक यतिमण्डल,
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी—आर्य समाज का जाज्वल्यमान नक्षत्र

ले० श्री डा० धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली आ० प्र० सभा नई दिल्ली

मानवता की सेवा के लिए, मानव-मूल्यो की स्थापना के लिए, सत्य के प्रचार के लिए तथा असत्य के विनाश के इस पृथ्वी पर अनेक महापुरुषो ने सत्यकार्य किया। यह नियम है जब-जब सामाजिक जीवन मे विकृति आ जाती है, उसकी निष्कृति के लिए सदात्मा पुरुष के मन मे हूक सी उठती है और वह मैदान मे कूद पडता है। यह नियम सृष्टि के आदि से है। प्रारम्भिक युग के ऋषियो मुनियो ने सांसारिक सुख भोगों को त्याग कर निरन्तर तपस्या के बल पर ऐसी शक्ति अर्जित की जिससे वे ससार के सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य कर सकें। ऐसे महापुरुषों को अपने जीवन मे अभावो का सामना करना पडा, विरोध भी सहने पडे, जीवित रहते डण्डे भी सहने पडे और कभी कभी तो किसी आततायी के हाथो बलिदान भी होना पडा। परन्तु उन लोगों की वाणी कभी नहीं मरती, जो केवल अपने लिए जीवित नहीं रहते, बल्कि दूसरो के लिए जीते हैं, जो लोग केवल अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहते। अपितु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति मानते हैं। महापुरुषों की वन्दना करने लगें तो अनेक पृष्ठ लिखे जाएगे।

यहा पर एक ऐसे महामना महानुभाव के कृतित्व का विश्लेषण अपेक्षित है जो मात्र छब्बीस वर्ष की आयु मे ऐसे महत्कार्य कर गया, जिन्हें कोई विलक्षण मेधा का व्यक्ति ही कर सकता है। बीस इक्कीस वर्ष की आयु तो अल्हडता तथा अबोधता की आयु ही मानी जाती है इस महापुरुष को मात्र पाच छ या अधिकतम सात वर्ष ही तो मिले, काम करने के लिए। इन स्वल्प वर्षों मे ही, अपने जीवन की पूर्णता की कोटि तक समुन्नत कर गया। एक "लिली" का फूल केवल एक दिन के लिए खिलता है तथा उसी दिन मुरझा जाता है, परन्तु दुनिया उसे याद करती है। दूसरी ओर "ओक" का वृक्ष तीन सौ वर्ष तक रहता है, पर क्या कोई उसे प्रशसा की दृष्टि से देखता है। वह तो मात्र ईंधन या अधिक हुआ तो इमारती लकडी के रूप मे ही प्रयोग में लाया जाता है। मनुष्य के जीवन की पूर्णता का आकलन भी इसी प्रकार दिनों की संख्या से नहीं, अपितु उसके जीवन [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

प० गुरुदत्त विद्यार्थी मात्र 19 वर्ष की आयु मे आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के प्रतिनिधि बनकर लाला जीवनदास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास उन दिनो गए थे, जब वे मृत्यु शैय्या पर थे। उनका सारा शरीर फफोलो से सूजा था, पर फिर भी उनका मुख मण्डल शान्त एव प्रसन्न मुद्रा मे था। उस समय का गुरुदत्त के ऊपर जो प्रभाव पडा, बस वह उत्तरोतर बढता ही गया। विज्ञान का तार्किक छात्र गुरुदत्त उस दिन अविचल ईश्वर भक्त बन गया। वह प्रभुनिष्ठ हो गया। वह प्रभुमय हो गया। ऋषिवर दयानन्द के अन्तिम शब्द "हे दयामय! तूने अच्छी लीला की।" आजीवन उस भक्त गुरुदत्त के कानो मे गूजती रही।

गुरुदत्त ने अजमेर लौटकर लाहौर में डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना मे प्राणपन से योगदान किया। उनकी इच्छा वेद, वैदिक साहित्य और सस्कृत साहित्य की शिक्षा प्रणाली मे सदैव वरीयता देने की रही थी। पर वह ऋषिवर दयानन्द का शिष्य, वैदिक धर्म का अनुयायी यहीं तक न रुका। उसने अपनी सारी शक्ति वेदप्रचार, आर्ष पद्धति से सस्कृत शिक्षण तथा वेद के वैज्ञानिक अर्थ करने पर केन्द्रित कर दी। वे कहा करते थे कि मैं ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिख रहा हू। जब कुछ मित्र पूछते कि कहा लिख रहे हो, तो उन्हे उत्तर मिलता—"अपने जीवन मे उसे क्रियात्मक रूप में लिख रहा हू।" सचमुच धर्म के प्रचार और ऋषिऋण से मुक्त होने के लिए वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना उसने प्रारभ कर दिया था। जिन लोगो ने उस ज्ञानी आत्मा का सान्निध्य प्राप्त किया है, उनका कहना है कि जब वे "वैदिक मैगजीन" को लिखाने बैठते थे तो कई कई दिन तक वे घर से बाहर भी न निकलते थे। जब वे पढने लगते तो बिना विश्राम किए, बिना सोए कई कई दिन पढते रहते थे।

पडित जी ने वैदिक शब्दो की जो वैज्ञानिक व्याख्या का कोष तैयार किया था। उसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तको मे सम्मिलित किए जाने का गौरव मिला था। टर्मिनोलो जी ऑफ वेदाज ने ब्रिटेन और जर्मनी के भाष्यकारों को चकित कर दिया था। दो उपनिषदों का उन्होने ऐसा मार्मिक अनुवाद किया था, जिसे उनकी मृत्यु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के बाद विश्वधर्म सम्मेलन मे पढा गया। "वैदिक सज्ञा विज्ञान" शीर्षक लेख आर्य पत्रिका मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था, जो बाद मे पुस्तक रूप मे प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का समर्पण वाक्य द्रष्टव्य है—"अपने समय के अद्वितीय विद्वान स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्मृति मे उनके एक सच्चे तथा श्रद्धावान प्रशसक गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा समर्पित।" यह समर्पण भाव उनके दयानन्द निष्ठ होने का कितना सुन्दर उदाहरण है।

पडित जी ने सामान्य जीवन के नियमों का अतिक्रमण किया और उन्हें क्षयरोग ने दबोच लिया। इस प्रकार के अतिक्रमणों से लोहे का शरीर भी अस्तव्यस्त हो सकता है। जवानी मे पडित जी का शरीर सुडौल व पुष्ट था, परन्तु ईश्वरीय नियमो के उल्लघन ने उसे शिथिल कर दिया। गुरू के बिना प्राणायाम का जो शरीर पर प्रभाव पडता है, वही उनके साथ भी हुआ। आर्यसमाज की आशाओ का केन्द्र, वह होनहार नवयुवक ऋषि दयानन्द का सच्चा अनुयायी छब्बीस वर्ष की स्वल्पायु मे इस लोक से प्रयाण कर गया।

वह वीर बालक वैदिक धर्म के लिए, वैदिक मान्यताओ के लिए अपने को बलिदान कर गया। उसके बलिदान शताब्दी दिवस पर हमारा कर्त्तव्य है कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हम अपने को इसी प्रकार समर्पित करने का व्रत लें।

निर्माता व दाता-हव्यदातये

ले०—श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी आर्य कुटिया धूरी

हव्य दातये (सामवेद) भगवान जीव के कल्याणार्थ केवल सृष्टि के आरम्भ मे ही वेद ज्ञान देकर शान्त नही हो जाते, अपितु उसके निरन्तर दान के भण्डारे चल रहे हैं, ससार झोलिया भर रहा है, परन्तु लोगे कितना? वह तो थकता ही नही। पाठको! हम लेते लेते मर जायेगे, किन्तु भगवान् देते ही रहेगे। भगवान् अन्न, दूध औषधि ही नही "प्राण" भी दे रहे हैं, यहीं तक नही अपना प्रेम भरा आत्मा मे उपदेश भी दे रहे हैं। आपके पास जल है तो किसी प्यासे को पानी पिला दो, अन्न हैं तो, भूखे को रोटी खिला दो, क्योकि अन्न दान तो जीवन दान है। वैसे दान अनेक प्रकार का है जैसे वस्त्र दान, विद्यादान, अभय दान आदि 2। बन्धुओ! जब धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, वायु ने प्राण देने से इन्कार नही किया, और सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नही किया, तो तू कृपण किस लिये? दाता का दान सदैव नि स्वार्थ होना चाहिए, जैसे गाय का बछडे को दूध पिलाना।

2. भगवान प्रात दे रहे हैं, साय दे रहे हैं। सूर्य समुद्र से जल लेकर मेघ द्वारा सर्वत्र बरसाता है, बरसा हुआ जल अन्न फल आदि उत्पन्न करता हुआ, पुन. भागा 2 समुद्र को प्राप्त करके ही शान्ति लेता है, ऐसे ही दाता का दान फलता फूलता पुन: दाता को आकर ही प्राप्त हो जाता है। ससारी लोग मित्र चाहते हैं, दाता को मित्रों की क्या कमी? जिसके अधिक मित्र होंगे नि:सन्देह धर्म मे उसकी ही विजय होगी, जिसकी विजय उसका "यश" ससार गाता है, अत: दान देकर "यश" कमाओ। दान देने से कीर्ति होगी और जीवन देने से "कीर्तन"।

3. दान उसी से मागा जाता है, जिसके पास कुछ देने को हो भिखारी से मागता है कौन? और वह देगा क्या? हे ईश्वर। तू तो सब कुछ दे रहा है, क्योकि तू सब हितकारी है, परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हम लेने के लिये आपके पास नही पहुचते, अपितु भिखारियो से ही माग बैठते हैं। भिखारी से नही दाता से मागते हैं, दाता, दाता से नही, दाताओ के "दाता" से मागते हैं? मागने का स्थान एक देने वाला एक परन्तु लेने वाले अनेक हैं। पिता जी! जो योगी को चाहिए वह तेरे पास है, जो अमीर को चाहिए वह भी तेरे पास है, जो गरीब को चाहिये वह भी तेरे पास है अर्थात चीटी से हाथी पर्यन्त जिसको जो वस्तु चाहिये, वह सब तेरे पास है, क्योकि तू सभी एश्वर्यों का निर्माता और दाता है, भिखारी तो दाता के दान का अनुमान भी नहीं लगा सकते।

4. दान तन, मन और धन से दिया जाता है, जब तन दे दिया, तो मन और धन जायेंगे कहा? दान कितना है महत्व इस बात का नही, महत्व इस बात का है कि दान कितनी "श्रद्धा" से दिया गया है। दान बसाने के लिये होता हैं, उजडो को बसाना नगो को कपडा देना, भूखो को रोटी देना और प्यासो को पानी पिलाना, मानो जीवन दान "दाता" का दायित्व है। अकेला खाने वाला पाप खाता है "केवलाघो भवति केवलादि" दाता बाट कर ही खाता है। पिता जी! मैं तो तेरे दर का भिखारी बनूगा, मैं नही जाऊगा किसी और से मागने। मुझे क्या पता देने वाले का स्वभाव कैसा है?" मैं मागू कपडा वह देवे थपडा" मैं मागू रोटी वह देवे सोटी, तो क्या होगा मेरे भगवान्? और मुझे एक दो वस्तुए नहीं चाहिए, मुझे तो बहुत कुछ चाहिए, क्या मैं घर-घर के धक्के खाऊ? यदि सारी दुनिया से भी माग लू फिर भी प्राण रूपी "जीवन" मागने के लिये तेरे दर पर आना पडेगा। मैं क्यों न वहा से सौदा लू? जहा से सभी कुछ मिल सकता हो, मैं क्यो स्थान-स्थान पर मागता फिरू? मैं तो उससे मागूगा, देने वाले भी जिससे मागते हैं और जो देकर भूल जाता है मेरे भगवान्। भिखारी हू तेरे दर का, भिक्षा लेकर जाऊगा, मैं तेरा हू तू मेरा है, रख चाहे मार।

दिवंगत आर्य समाजी—

श्रीमती सन्ती देवी जी—रामां मण्डी (बठिण्डा)

(1) स्वर्गीया श्रीमती सन्तीदेवी जी के पति महाशय रौनक सिंह जी को 1909 ई० में पटियाला केस में पकड़ कर जेल भेज दिया गया—घर में अति गरीबी थी कमाई का कोई भी साधन न रहा—उस समय सब से सस्ता अनाज जौं होता था—श्रीमती सन्ती देवी के बड़े भाई और आर्य समाज रामांमण्डी के संस्थापक भगत किशना मल जी इनके खाने के लिए जौं लाकर देते—जौं पिसाने के लिए भी पैसा न था—इसलिए उन्हें अपने हाथ से जो चक्की में पीस कर गुजारा करना पड़ा। यह बड़ा महान् तप था—

(2) आप स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की बड़ी भक्त थी। जब तक जीवित रही (निधन तिथि 25-10-45) अपने हाथ से सूत कात कर उस सूत से कपड़ा बनवा कर स्वामी जी महाराज को पहनने के लिए देती रही।

(3) आर्य समाज के उत्सवों पर जो उपदेशक व संन्यासी आते उन्हें अपने घर बुला कर अपने हाथ से खाना बना कर बड़ी श्रद्धा से खिलाया करती—इससे उन्हें विशेष प्रसन्नता होती।

(4) अपने पहले पुत्र को पढ़ने के लिए गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में भेजा। मृत्यु समय अपने दोनों पुत्रों को कहा कि अपने पिता की सेवा करते हुए आज्ञा का पालन करना इनका आर्य समाज के कार्यों मे सदा सहयोग देना।

श्री म० रौनक सिंह जी आर्य रामांमण्डी

स्वर्गीय श्री महाशय रौनक सिंह जी को प्रेरणा अपने साले भक्त किशना मल जी के जीवन से मिली—कुछ समय पश्चात् स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज (जब वह आर्य समाज के क्षेत्र में नहीं आए थे) अपने घर पर काफी समय रख कर आर्य समाज का साहित्य पढ़ने को दिया—उनके तप त्याग-सचाई का भी इनके ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा-महाशय रौनक सिंह जी और इनकी पत्नी स्वर्गीय श्रीमती सन्ती देवी जी (निधन तिथि 25-10-45 ई०) स्वामी जी महाराज की बड़ी श्रद्धा से गुरु रूप में मानने लग गए—श्री महाशय रौनक सिंह जी ने आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि दान दी और अपने गुरु स्वामी स्वतन्त्रानन्द आर्य हाई स्कूल के लिए सात बीघा भूमि दान दी—श्री महाशय रौनक सिंह जी 1909 ई० में पटियाला केस में बन्दी बना कर पटियाला जेल में भेजे गए फिर 1939 ई० में 63 वर्ष की आयु में हैदराबाद सत्याग्रह में शामिल होकर श्री महाशय खुशहाल चन्द जी के साथ जेल गए फिर 1957 ई० में 82 वर्ष की आयु में पहले अपने पुत्र ओम् प्रकाश आर्य को हिन्दी सत्याग्रह में जेल भेजा और स्वयं भी जेल गए। अपने पुत्र ओम प्रकाश आर्य को (मृत्यु के समय) यह आदेश दिया कि 60 वर्ष की आयु के बाद वह वानप्रस्थी बन कर बाकी सारी आयु समाज की सेवा करें। उन्होंने आर्य समाज के हर कार्य में परिवार सहित सदा पूरा योगदान दिया और 88 वर्ष की आयु में 15-2-1963 ई० में उन का निधन हुआ। एक बार ऐसा समय भी आया था कि इनका बरादरी से बहिष्कार किया गया—

दिवंगत आर्य समाजी—

आर्य समाज बठिण्डा के निम्नलिखित आर्य सज्जनों का निधन हो चुका जो मेरी जानकारी में है—मैं केवल उनके नाम लिख रहा हूं।

श्री बसी लाल जी, श्री चौधरी मिड्डूमल जी श्री लाला रामजी दास जी, श्री महाशय किशोरी लाल जी, श्री भाई इन्द्र सिंह जी, श्री डा० भगवान राय जी, श्री महाशय ज्ञान प्रकाश जी, श्री डा० विद्या सागर जी, श्री काला राम जी—श्री पं० श्रीराम जी शर्मा।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि मैं महर्षि दयानन्द के अधूरे काम को पूरा करने का प्रयास करूंगा। इसके पश्चात् जब गुरुदत्त जी लाहौर में आए तो वह आर्य समाज के प्रचार और प्रसार में बड़ी दृढ़ता से लग गए। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को 18 बार पढ़ा क्योंकि वह महर्षि दयानन्द को सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से और समीप से देखना चाहते थे। उन्होंने लिखा कि मैंने 18 बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और प्रत्येक बार के अध्ययन में मुझे इस ग्रन्थ से नवीनतम भाव एवं विचार ही मिले।

महर्षि की मृत्यु के बाद 8 नवम्बर 1883 को उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए जो सभा लाहौर में बुलाई गई थी उसमें यह निश्चय किया गया कि महर्षि दयानन्द की स्मृति को चिरस्थाई बनाए रखने के लिए एक महाविद्यालय की स्थापना की जाए। इसी के फलस्वरूप दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज स्थापित किए जाने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ। 1885 में बी० ए० पास करने के पश्चात् प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी पंजाब प्रान्त में कालेज के पक्ष में वातावरण बनाने के तथा धन संग्रह के लिए दृढ़ता से लग गए और उन्होंने अन्य सहयोगियों के सहयोग स पर्याप्त धन एकत्र कर लिया। 1886 में श्री गुरुदत्त जी ने भौतिक विज्ञान से एम० ए० परीक्षा सर्वोच्च स्थान पर रह कर उत्तीर्ण की और इसके बाद गवर्नमैंट कालेज लाहौर में विज्ञान के सहायक प्रोफेसर नियुक्त हो गए और अगले वर्ष प्रो० मिस्टर ओमन के छुट्टी चले जाने पर आपको उनके स्थान पर प्रोफेसर बना दिया गया आप पढ़ाते गवर्नमैंट कालेज में थे परन्तु आप का हृदय डी०ए०वी० कालेज की उन्नति में ही लगा। रहता था।

उन दिनों विदेशी भारतीय संस्कृति और धर्म पर निरन्तर कुठाराघात कर रहे थे उनके लेखों व ग्रन्थों का उत्तर उनकी भाषा में देना अत्यन्त आवश्यक था। इस लिए प० गुरुदत्त जी ने 1887 में 'वैदिक मैगज़ीन' नाम का एक पत्र छापना आरम्भ किया और उसके माध्यम से विदेशी लेखकों के युक्ति-युक्त उत्तर देना आरम्भ कर दिया। भाव यह है कि प० गुरुदत्त जी ने वेद और वैदिक धर्म पर आक्षेप करने वालों के थोथे और भ्रममूलक विचारों का अपने साहित्य द्वारा युक्ति-युक्त उत्तर देकर उस समय आर्य समाज की बहुत बड़ी सेवा की थी।

इस प्रकार प० गुरुदत्त जी रात दिन आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिए लगे रहे। वह प्रचार के लिए जहां-तहां आर्य समाज के उत्सवों आदि पर उपदेशों के लिए भी पहुंचते रहे। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि जिन आयु में लड़के अक्सर अल्हड़ होते हैं और धर्म-कर्म के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते उस 19, 20 वर्ष की आयु में गुरुदत्त एक ऐसा नौजवान था जो धर्म के सम्पूर्ण तत्व को जानता था और 20 वर्ष से लेकर 26 वर्ष की युवा अवस्था में उसने आर्य समाज का वह कार्य किया जिसे आर्य समाज कभी भी भुला नहीं सकेगा। कार्य आधिक्य के कारण ही वह अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान न दे सके और यक्ष्मा जैसी भयंकर बीमारी का शिकार हो गए जो अन्त में उनकी जान लेवा बन गई।

उनकी मृत्यु के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लाहौर में अपने मुख्य कार्यालय के भवन को उनका स्मारक बनाते हुए उसका नाम गुरुदत्त भवन रख दिया। देश के विभाजन के पश्चात् 1947 में यह कार्यालय जालन्धर में आ गया परन्तु क्योंकि सभा को लाहौर वाले विशाल का भवन का कोई क्लेम नहीं मिला इसलिए सभा ने एक छोटे से भवन में अपना कार्यालय जालन्धर में आरम्भ कर दिया। अब धीरे-धीरे फिर जालन्धर में भी गुरुदत्त भवन बनना आरम्भ हो गया है। अब इसका कुछ स्वरूप भी प० गुरुदत्त जी के अनुरूप बनने लग गया है आशा है कुछ समय में ही सारा भवन बन कर तैयार हो जाएगा और लाहौर वाला गुरुदत्त भवन तो नहीं बन सका परन्तु फिर भी एक विशाल भवन अवश्य बन जाएगा जो सदा प० गुरुदत्त जी की याद दिलाता रहेगा।

और प० गुरुदत्त जी। विद्यार्थी की पुण्य शती मनाते हुए उनके जीवन से आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा लें ताकि आर्य समाज आज फिर उस महत्व पूर्ण स्थान को प्राप्त कर सके जो उसे प० गुरुदत्त जी काल में प्राप्त था।

आर्य समाज बंगा में ऋषिबोध उत्सव

दिनांक 25-2-90 दिन रविवार को आर्य समाज बंगा मे ऋषि बोधत्सव बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया गया। श्री धर्म वीर शास्त्री होशियारपुर एव श्री सत्य देव जी सरल फगवाड़ा निवासी ने महर्षि स्वामी दयानन्द, आर्य समाज और आर्य समाज द्वारा किए गए वेद प्रचार, सुधार और जन मानस में आई शुद्ध धार्मिक क्रांति पर सारगर्भित व्याख्यान दिए। प्रोग्राम प्रातः $7\frac{1}{2}$ बजे से 12 बजे दोपहर तक चला। नौजवानों ने बड़ा उत्साह दिखाया। उपस्थिति बहुत अधिक थी। 12 बजे शांति पाठ के पश्चात् प्रसाद और चाय वितरण की गई इसके पश्चात् ऋषि लंगर लगाया गया जो सायं 4 बजे तक खूब चलता रहा। लगभग 300 व्यक्तियों ने इकट्ठे पंक्ति बद्ध बैठकर भोजन किया। नवयुवकों ने इस बात का दृढ़ संकल्प किया कि प्रति वर्ष इस प्रकार ऋषिबोधोत्सव मना कर लंगर लगाया जाएगा। इससे पूर्व 4-2-90 को हकीकत राय बलिदान दिवस भी मनाया गया था। जिसमें सैंकड़ों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया।

—[illegible]

आर्यसमाज मन्दिर बलाचौर का उद्घाटन

बलाचौर में श्री गुरदेव सिंह जी धीमान के प्रयास से कई वर्ष हुए आर्य समाज की स्थापना हो गई थी परन्तु वहां आर्य समाज का भवन नहीं था। अब एक दानी ने 4 मरले भूमि दान में दे दी। जिस पर अब भवन बन गया है। जिसका उद्घाटन 11-3-90 को होगा।

इस अवसर पर श्री प्रो० [illegible] जी होशियारपुर, श्री [illegible] जी पराशर जालन्धर, श्री पं० रामनाथ जी शास्त्री भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य कई विद्वान् उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। कार्यक्रम 8-3-90 से 11-3-90 तक [illegible] पधार कर लाभ उठाएं तथा सहयोग दें।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार के 64 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आठ दिवसीय कार्यक्रम श्री रणवीर जी भाटिया प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में 18 फरवरी रविवार को आरम्भ हुआ। प्रतिदिन आर्य समाज से प्रातः 6.00 बजे प्रभात फेरी आरम्भ होकर गली-गली एवं नगर-कीर्तन करती हुई, लुधियाना के विभिन्न क्षेत्रों में पारिवारिक सत्संग के रूप में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर वेद-मनीषी श्री हरबंस लाल जी महता को लखनऊ से वेद कथा के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया था उन्होंने पारिवारिक सत्संगों में वेद की वाणी को बहुत ही रोचक व सरल ढंग से जनता तक पहुंचाया। जनता पर उनके प्रवचनों का विशेष प्रभाव पड़ा और जनता के विशेष आग्रह पर एक दिन में तीन-तीन बैठकों को आयोजित किया गया।

19 फरवरी को प्रातः 7 बजे से 8.30 बजे तक श्री रणवीर जी भाटिया शाहपुर रोड पर सायंकाल 3.00 से 5.00 बजे तक श्री तेलू राम जी बोहरा महावीर जैन कालोनी, सुन्दर नगर, 20 फरवरी को प्रातः काल श्री मतवाल चन्द्र जी सुरेन्द्र नगर, लुधियाना के स्थान पर, रात्रि को 7बजे से 8.30 बजे तक श्री अनिल जी सांभा 102 डी० किचलू नगर, लुधियाना के निवास स्थान पर, बुधवार प्रातः को श्री वीरेन्द्र जी डींगरा करीमपुरा, लुधियाना, वीरवार प्रातः काल श्री कृपा राम जी इकबाल गंज लुधियाना, रात्रि 7.00 बजे से 8.30 बजे श्री चानन राम जी गम्भीर प्रधान—आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना के निवास स्थान पर, शनिवार रात्रि 7.00 बजे से 8.30 बजे तक श्री सत्येन्द्र मोहन मेहता म० न० 58-सी० माडल टाऊन एक्सटेंशन के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संगों में वेद-प्रचार भजन-मण्डली द्वारा एवं हरबंस लाल जी महता ने वेद-वाणी से लुधियाना की जनता को प्रभावित किया।

ऋषि बोधोत्सव पर शोभा-यात्रा—शिव-रात्रि के उपलक्ष्य में 21 फरवरी को श्री शिवरात्रि महोत्सव कमेटी के द्वारा निकाली गई शोभा-यात्रा में आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, आर्य युवक सभा किदवई नगर, आर्य समाज किदवई नगर ने चार झांकियां भेजकर अपना योगदान दिया। आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार की यज्ञ करती हुई झांकी ने एक अच्छा दृश्य प्रस्तुत किया तथा जनता ने सराहना की।

ऋषि-बोधोत्सव—23 फरवरी को प्रातः 6.00 बजे आर्य महर्षि दयानन्द बाजार से प्रभात फेरी आरम्भ हुई जो कि चौड़ी सड़क, डिवीजन न० 3, बैंजमन रोड से होती हुई सी० एम० सी० चौक पर पहुंची जहां आर्य समाज किदवई नगर के कार्यकर्ताओं ने जोकि नगर-कीर्तन करते हुए वहां पहुंचे थे, आर्य नेताओं का स्वागत किया। उसके पश्चात् दोनों आर्य समाजों की प्रभात फेरी कीर्तन करती हुई आर्य समाज किदवई नगर पहुंची।

ऋषि-बोधोत्सव का मुख्य समारोह यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री रणवीर जी भाटिया महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की।

इस अवसर पर श्री सत्यानन्द जी मुंजाल उपप्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने ध्वजा-रोहण किया। समारोह को बलराज जी भजनोपदेशक, श्री विजय कुमार जी शास्त्री तथा वेद-मनीषी श्री पं० हरबंस लाल महता ने सम्बोधित किया। विभिन्न वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला तथा उपस्थित जनता ने इनके मिशन को पूरा करने का संकल्प किया।

महिला-सम्मेलन—शनिवार को प्रातः काल 6.30 से 8.30 बजे तक एक विशेष बैठक हुई, जिसमें यज्ञ, वेद-प्रचार भजन-मण्डली के भजन और पं० हरबंस लाल महता का प्रवचन हुआ। सायंकाल 3.00 से 5.00 बजे तक महिला-सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी सुमनायति ने की तथा महिलाओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया। पं० हरबंस लाल जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि महिलाओं को आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए क्योंकि महर्षि दयानन्द का नारीजाति पर एक बहुत बड़ा उपकार है।

मुख्य समारोह—वार्षिकोत्सव का मुख्य समारोह 25 फरवरी को आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना में आयोजित किया गया। हॉल को ओ३म् की झण्डियों से मानो सजाकर बहुत सुन्दर ढंग से सजाया था। महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, शहीदे-आजम भगत सिंह के बड़े चित्र जनता के लिए विशेष आकर्षक थे। इस अवसर पर जन-कल्याण की भावना से 11 (ग्यारह) हवन कुण्डों पर हवन किया गया जिसमें 35 दम्पति परिवारों ने यजमान-पद को सुशोभित किया।

इस समारोह में आए हुए आर्य नेताओं एवं विद्वानों का आर्य समाज के अधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा पुष्प-मालाओं द्वारा स्वागत किया गया, सबसे पहले श्री० एस० सी० नन्दा प्रिन्सीपल आर्य कालेज ने ध्वजारोहण किया। वेद-प्रचार भजन-मण्डली, आयुष्मान् वरुण कुमार, आयुष्मती पंकज तलवार ने अपने भजनों के द्वारा जनता को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। इस समारोह को अनिरुद्ध कुमार शास्त्री पुरोहित—आर्य समाज माडल टाऊन, डा० के० पी० सिंह अध्यक्ष सर्जरी-विभाग-दयानन्द हस्पताल लुधियाना, श्री हरबंस लाल जी महता ने सम्बोधित किया।

आर्य समाज की गतिविधियों का विवरण करते हुए आर्य समाज के महामन्त्री श्री रोशन लाल शर्मा ने कहा कि जनता की भलाई के लिए आर्य समाज में असहाय लोगों की सहायता के लिए निर्धन-सहायता-निधि, निःशुल्क औषधालय, पुस्तकालय तथा अन्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि युवकों को रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करने के लिए, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनमत तैयार करने तथा जनता को देश की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु तैयार करने के लिए समय-समय पर समारोह एवं विचार-गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है।

इस समारोह में श्री हरबंस लाल शर्मा प्रधान संस्कृत विद्यालय करतारपुर, श्री सत्यानन्द जी मुंजाल उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० के० पी० सिंह अध्यक्ष सर्जरी विभाग दयानन्द हस्पताल लुधियाना, श्रीमति इन्दु पुरी जी मोगा को उनकी कर्तव्य-परायणता, धर्मनिष्ठा तथा समाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणवीर भाटिया तथा अन्य पदाधिकारियों ने उन्हें शाल और अभिनन्दन-पत्र भेंट करके सम्मानित किया। ऋषि-लंगर के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के जन-सम्पर्क तथा वेद-प्रचार के सारे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य समाज के सभी अधिकारियों व मान्य सदस्यों ने तन, मन धन से पूर्ण सहयोग दिया। स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, लुधियाना, आर्य युवक सभा लुधियाना तथा जिन महानुभावों ने विशेष रूप से इस समारोह को सफल बनाने के लिए कार्य किया है वे हैं सर्वश्री आर्य समाज के प्रधान-रणवीर जी भाटिया, उप प्रधान-ज्ञानी गुरदयाल सिंह जी आर्य, औषधालय के मैनेजर-श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला, कोषाध्यक्ष-श्री बलदेव राज सेठी, उपमन्त्री-श्री जगजीवन पाल जी सूद, उपप्रधान-श्री मदन मोहन जी चड्ढा, उपप्रधान-श्री देवराज जी आर्य, उपमन्त्री-श्री कुलदीप जी आर्य; बाल कृष्ण जी सूद, सुरेश जी चड्ढा, श्री महेन्द्र प्रताप जी आर्य, श्री लक्ष्मण दास जी आदि-आदि।

मैं उन लोगों का भी हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिनका इस समारोह को सफल बनाने में किसी प्रकार का भी सहयोग चाहे वह गुप्त रूप से था मिलता रहा। मैं आर्य समाज के पुरोहित श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री, (शिक्षा-शास्त्री) साहित्य-रत्न तथा श्री प० राजेश्वर जी शास्त्री का भी आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने सारे कार्यक्रम को सफल बनाने में दिन-रात एक कर दिया। श्री प्रेमसिंह जी का भी मैं विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूं, जिसका अतिथि-सेवा व अन्य कार्यों में योगदान सराहनीय था।

कठूआ में ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 23-2-90 शुक्रवार को आर्य समाज मन्दिर कठूआ में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रातः 5.30 बजे प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें श्री रामायण प्रचार समिति राजबाग (कठूआ), महाशय नौजवान सुधार सभा, महावीर ड्रामाटिक क्लब, आर्य सभासदों के अलावा नगर के गणमान्य सज्जनों ने भी उत्साह से भाग लिया। नगर के भिन्न-भिन्न वार्डों व भिन्न-भिन्न गलियों से गुजरकर प्रभातफेरी वापिस आर्य समाज आकर समाप्त हुई। प्रातः 10-00 बजे हवन आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता श्री विद्याभानु जी शास्त्री थे जो जम्मू से पधारे थे। उन्होंने अत्यन्त सरल एवं मृदु भाषा में महर्षि जी की बोध कथा को प्रस्तुत किया। इनके अलावा श्री वी० पी० धीर प्रिंसीपल डी० ए० वी० कठूआ, मा० हरीश चन्द्र 'चिंगारी' व डी० ए० वी० के दो विद्यार्थियों कीर्ती भूषण व मनित ने भी सत्य और प्रकाश के प्रतीक महर्षि जी के जीवन पर विचार प्रकट किये।

श्री कालीदास व० श्री मदन लाल के भजन हुए। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा। —सुरेन्द्र

लुधियाना मे प० लेखराम दिवस

आर्य समाज हबीबगज लुधियाना मे शहीद लखराम दिवस 6 3 90 मगलवार को प्रात 8 30 से 11 बजे तक बड समारोह से मनाया गया । समारोह की प्रधानता श्री ज्ञानचन्द जी ने की । हवन यज्ञ के पश्चात् आर० बी० स्कूल की छात्राओं ने सुन्दर गीत प्रस्तुत किए । जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री आशानन्द जी आर्य ने प० लेखराम जी को श्रद्धांजलि भेंट की श्री जोगिन्द्र कुमार और हरीचन्द ने भी अपने विचार रखे । प्रसाद वितरण के पश्चात् कार्यवाई समाप्त की ।

र—[illegible] कुमार आर्य

बठिण्डा में ऋषि बोधोत्सव

आय समाज मन्दिर बठिण्डा मे ऋषिबोध उत्सव पर अथर्ववेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया । है इस महायज्ञ की ब्रह्मा डा० प्रज्ञा देवी जी पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी अपने ब्रह्मचारिणी मण्डल सुश्री सुमित्रा जी, सुश्री हेमलता जी सुश्री भारती, जी व सुश्री ज्योति के साथ रही । 20 फरवरी 1990 की प्रात से प्रारम्भ कर 25 फरवरी 1990 दिन रविवार को इस यज्ञ की पूर्णाहुति हुई ।

—राजेन्द्र कुमार मन्त्री

गायत्री महायज्ञ

हिन्दू मच सोनीपत के तत्त्वावधान एवम् आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल तथा वत् जिन्दा कल्याण रामलीला क्लब सोनीपत के सहयोग से सोनीपत में तपोमूर्ति महात्मा दयानन्द जी महाराज की पुण्य स्मृति में तीसरा गायत्री महायज्ञ आचार्य रविदत्त जी गौतम शास्त्री, साहित्याचार्य वेदोपदेशक के ब्रह्मत्व एवम स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज के सरक्षण में दिनाक 9 4 1990 से 15 4 1990 तक आयोजित किया जाएगा ।

आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल लुधियाना के समाचार

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल लुधियाना ने एन० एस० एस० के सहयोग से इंटर मौरल कम्पीटिशन ऐनुअल स्पोर्टस व एथलैटिक्स मीट 1989 90 का समारोह एस० डी० पी० कालेज फार वूमैन के खिलाड़ खेल मैदान मे दिनांक 15 फरवरी 1990 वीरवार को प्रात 9-30 बजे से साय तक आयोजित किया गया । इस पाठशाला के बच्चे अपनी पाठशाला के खेल का मैदान न होने के बावजूद भी खेलने का भरसक प्रयास कर आगे बढ़े हैं । [illegible] हुई खेल टीम की तरह [illegible] जाए । इस समारोह में अपनी पाठशाला के बच्चों के अतिरिक्त सरगोधा खालसा सी० सै० स्कूल लुधियाना, सरगोधा खालसा—[illegible] एजुकेशन स्कूल तथा एस० डी० कालेज फार वूमैन लुधियाना ने भाग लिया कुमारी सोनिया बलोरिया आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल लुधियाना सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित की गई । कुमारी सुनीता चौहान आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल लुधियाना [illegible] रही । कुमारी [illegible] बैडमिंटन में [illegible] । श्रीमती सुरिन्द्र कौर जो कि [illegible] [illegible] । उन्होंने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया । [illegible] [illegible] श्रीमती [illegible] [illegible] को जाता है ।

—[illegible]

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 1, 19 चैत्र सम्वत् 2047 तदनुसार 29मार्च/1 अप्रैल 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रनामक डा० नैल्सन मण्डेला का स्वागत

डर्बन के आर्य समाज मन्दिर में पं० नरदेव वेदालंकार की अध्यक्षता में हिन्दुओं, मुस्लमानों और इसाईयों का समारोह ।

(आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त पत्र द्वारा)

दक्षिण अफ्रीका में अपनो स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले नेता डा० नैल्सन मण्डेला पिछले दिनों 26 वर्ष जेल में रहने के पश्चात् रिहा कर दिए गए । सारे संसार में उनको रिहाई का स्वागत किया गया है इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका की जनता ने हर्षोल्लास के साथ अपने इस महान् नेता का स्वागत किया । दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का एक विशेष स्थान है वहां के आर्य समाजियों ने वहां की जनता की सेवा के द्वारा लोगों पर जो प्रभाव डाला है उसका यह परिणाम है कि जब कभी आर्य समाज की ओर से कोई विशेष समारोह होता है तो भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी उसमें सम्मलित होते हैं ।

डा० नलशन मण्डेला की रिहाई पर जहां दक्षिण अफ्रीका के भिन्न भिन्न शहरों में कई संस्थाओं की ओर से उन्हें बधाई देने और उनका स्वागत करने के समारोह किए गए वहां आर्य समाजियो ने भी डर्बन में अपने आर्य समाज मन्दिर में 21 फरवरी 1990 को एक बहुत बड़ा समारोह किया गया । आर्य समाज के यशस्वी नेता श्री पं० नरदेव जी वेदालकार ने इस अवसर पर एक विशाल हवन यज्ञ का आयोजन किया इस अवसर पर इसाई, मुस्लिम सिख और दूसरे कई मताबलम्बियों के प्रतिनिधि भी इसमें सम्मलित हुए और उन सबने आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री राम भरोसे को बधाई दी उन्होंने आर्य समाज मन्दिर में एक ऐसा समारोह किया है जिससे दक्षिण अफ्रीका की जनता बहुत प्रभावित है । इस अवसर पर श्री पं० नरदेव जी वेदालंकार ने यज्ञ के जल सिचन मन्त्र द्वारा बताया कि वेदों में जो मन्त्र दिए गए हैं उनका वास्तविक अर्थ क्या है और वह किसी विशेष समुदाय के लिए नही मनुष्य मात्र के लिए है । वेद प्रजातन्त्र का उपदेश देते हैं इस लिए वेदों में जो कुछ भी लिया गया है वह प्राणी मात्र लिए है ।

इस अवसर पर प० नरदेव जी वेदालंकार ने अथर्व वेद के कुछ मन्त्रों की व्याख्या भी की और कहा कि वेदों का उपदेश सारे प्राणी मात्र के लिए है और उसमें विशेष रूप से यह कहा गया है कि सब व्यक्ति चाहे वह किसी भी देश में रहते हों भाई भाई की तरह रहें और ससार में आज जो हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ रही है वह वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध है । श्री नरदेव वेदास्लंकार ने यह भी कहा है कि आज कल संसार में हिसा का जो वातावरण पैदा हो गया है उसे दूर करने लिए राष्ट्र नेता डा० नैल्सन मण्डेला जैसे व्यक्ति ही कुछ कर सकते है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री शिशुपाल राम भरोसे ने (पूजनीय प्रभु गीत गाते हुए बताया कि आर्य समाज और वैदिक धर्म यह मानव समाज को एक ही दृष्टि से और एक जैसा देखते है औग सब के कल्याण की कामना करते है, उन्होंने डा० नलशन मण्डेल का बहुत धन्यवाद किया उन्होंने मानवता की रक्षा के लिए इतना बड़ा त्याग किया है कि 26 वर्ष जेल मे बिता दिए है । इस अवसर पर कुछ और महानुभावो ने भी अपने विचार प्रकट किए और आर्य समाज के 10 नियमो की प्रशंसा करते हुए कहा कि इनमे कोई भी ऐसी बात नही जिस पग किसी को अपत्ति हो । श्री इस्माईल मीर ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा किआज संसार में यदि कोई व्यक्ति है जो वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर रहा है तो वह है डा० मण्डेला । जो उस अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहे है जो अफ्रीका की जनता के साथ किया गया है । कुछ और महानुभावों ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रकट किए और अन्त में अफ्रीका के राष्ट्रीय गान के साथ यह समारोह समाप्त हुआ ।

स्त्री-शिक्षा की समस्यायें

ले०—श्री सूर्य प्रकाश शास्त्री 'आर्य समाज धूरी'

प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा शिखर पर पहुंची हुई थी मध्यकालीन युग में स्त्री शिक्षा निम्न पड गई। इस का कारण स्त्रियों की कुछ समस्याए हैं जो कि निम्नलिखित प्रकार हैं—

(1) संकीर्ण और संकुचित विचारधारा—

हमारे देश की अधिकाश जनता अत्यन्त संकीर्ण विचारधारा की है। आज जबकि ससार में स्त्री शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है, तब भी देशवासी परम्परागत रूढ़ियों से जकडे हुए हैं। वे स्त्रियो को केवल घर की चारदीवारी मे काम करने वाली मशीन मानते हैं। प्रत्येक भारतीय स्त्री को केवल दासी मात्र मानता है। अत: उसके अनुसार स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करने की कोई आवश्यकता नही है।

कुछ लोगों के विचारानुसार, स्त्रियों को शिक्षा देने का अर्थ उन्हे चरित्रहीन और अनैतिक बनाना है। इस प्रकार की विचारधाराए स्त्री-शिक्षा के मार्ग मे बाधा का काम करती है।

(2) जनसाधारण का अशिक्षित होना—

एक निरक्षर व्यक्ति शिक्षा के महत्त्व को भली प्रकार नहीं समझ सकता। उसके लिए शिक्षा व्यर्थ की है, शिक्षा का सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य भी होता है, यह बात उसके मस्तिष्क से परे की वस्तु है। हमारे देश की 83 प्रतिशत जनता निरक्षरता के अन्धकार मे पडी हुई है, जिनमें पुरुषों की सख्या पर्याप्त है। अत: ऐसी दशा मे भारतीय जनता को स्त्री के महत्व को समझाना अपने प्रयासों को व्यर्थ करना है।

(3) अल्प आयु में विवाह—

हमारे देश के अधिकांश हिन्दू और मुसलमान आज भी धार्मिक परम्पराओं का कट्टरता से पालन करते हैं। आज भी बहुत से हिन्दू कन्याओ का शीघ्रता से विवाह करने के पक्ष मे हैं। मुसलमानो में भी बाल-विवाह एक धार्मिक क्रिया के रूप मे माना जाता है। परिणामस्वरूप कानून का उल्लघन करके प्रतिवर्ष हमारे देश में गांवों मे अल्प आयु में ही बालिकाओं का विवाह कर दिया जाता है। अत: जो आयु बालिकाओं के पढ़ने-लिखने की होती है, वह विवाह के द्वारा अल्प आयु में ही समाप्त कर दी जाती है। दूसरे मां-बाप कन्या की शादी की अधिक चिन्ता करते हैं, शिक्षा की ओर तो उनका ध्यान ही नहीं जाता।

(4) पर्दा-प्रथा—

पर्दा-प्रथा हिन्दू और मुसलमान दोनों में प्रचलित है। पर्दा जो कुछ भी समाप्त हुआ है, वह केवल नगरों तक ही सीमित है, ग्रामीण समाज आज भी अपने को पर्दा प्रथा में जकड़े हुए हैं। अत: पर्दा-प्रथा में विश्वास करने वाले मां-बाप अपनी कन्याओं को स्कूल में भेजना पसन्द नही करते।

(5) शिक्षा के प्रति अनुचित विचारधारा—

कुछ व्यक्ति शिक्षा को उपयोगिता के दृष्टिकोण से देखते हैं, उनके अनुसार लडकों को शिक्षा केवल उच्च पद प्राप्त करने के लिए ही दी जानी चाहिए और कन्याओं को शिक्षा केवल इसलिए दी जानी चाहिए कि उन्हें वर अच्छा मिल सके। अत: इस प्रकार की विचारधारा के अभिभावक अपनी कन्याओं को उस समय तक ही पढ़ाते हैं जब तक कि उनकी शादी कहीं से पक्की न हो जाये। शादी पक्की होते ही वे कन्या को स्कूल से बुला लेते है। यदि कन्या की बिना पढ़ाये ही शादी पक्की होने की सम्भावना है तब तो कन्या को पढ़ाने का प्रश्न ही नही उठता।

(6) ग्रामीण क्षेत्रों का पिछड़ा होना—

हमारे देश की अधिकांश जनता ग्रामीण क्षेत्रों मे निवास करती है, परन्तु दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि गांवों की दशा इतनी अविकसित है कि अनेक ग्रामों में प्राथमिक विद्यालय भी नहीं हैं। जिन क्षेत्रों में बालकों की शिक्षा का ठीक प्रकार से प्रबन्ध नही हो पाता वहां बालिकाओं के लिए स्कूलों की कल्पना करना ही व्यर्थ है।

(7) आर्थिक समस्या—

देश की निर्धनता स्त्री-शिक्षा के मार्ग में प्रमुख रूप से बाधक है। भारतीय ग्रामीण अभिभावक निर्धनता से बुरी तरह ग्रस्त हैं वे भरपेट भोजन ही कठिनाई से प्राप्त कर पाते हैं। यदि कुछ पैसा बचता भी है तो वे लडकियों की अपेक्षा लड़कों की शिक्षा पर पहले ध्यान देते हैं। लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था करना भारत के सामान्य नागरिक की सामर्थ्य से परे है। दूसरे परिवार की आय बढ़ाने के लिए स्त्रियों को अपने पति या मां-बाप के साथ खेत आदि पर काम करना पड़ता है। अत: उनके पास पढ़ने लिखने के लिए समय ही नहीं रहता है।

(8) अध्यापिकाओं का अभाव—

बालिका विद्यालयों में पूर्व के समान आज भी प्रशिक्षित अध्यापिकाओं का अभाव बना हुआ है। इनके प्रमुख कारण स्त्री प्रशिक्षण केन्द्रों का अभाव अध्यापन व्यवसाय का अनाकर्षक होना तथा अल्प वेतन है। हमारे देश में बहुत से पढ़े लिखे स्त्रियों से नौकरी कराना अपमान समझते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहन-सहन की असुविधा के कारण कोई स्त्री वहां जाने की कल्पना भी नहीं करती है।

(9) सरकार का उदासीन दृष्टिकोण—

यह सत्य है कि अंग्रेज सरकार स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन थी, परन्तु वर्तमान सरकार को भी स्त्री शिक्षा पर जितना ध्यान देना चाहिए उतना नहीं है। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान सरकार की नीति ब्रिटिश सरकार के पद्-चिन्हों पर चल रही है। लड़कों की शिक्षा और स्कूलों पर सरकार अधिक धन व्यय करती है। और लड़कियों पर कम। फलस्वरूप स्त्री-शिक्षा का पर्याप्त विकास नहीं हो पाता है।

(10) शिक्षा में अपव्यय—

शिक्षा में अपव्यय बालिकाओं में बालकों से कही अधिक है। अनेक कारणों से बालिकाओं को बीच में से ही स्कूल छोड़ कर घर बैठना पड़ता है कुछ लड़कियां केवल प्राथमिक विद्यालय तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाती है और कुछ को विवाह के पश्चात अपनी इच्छा के विरुद्ध पतिदेव की आज्ञा के कारण पढ़ना-लिखना छोड़ना पड़ता है।

(11) बालिकाओं के लिए अलग विद्यालयों का अभाव—

प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक बालिकाओं के लिए विद्यालयों का अभाव है। अनेक गांव तो ऐसे हैं जहां बालकों तक के लिए स्कूल नहीं हैं। प्राथमिक स्तर तक बालक और बालिकाएं साथ-साथ पढ़ सकते हैं, परन्तु माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के लिए अलग स्कूलों की परम आवश्यकता होती है। अनेक अभिभावक सह-शिक्षा के विरोधी होने के कारण अपनी कन्याओं को लड़कों के स्कूल में नहीं भेजना चाहते। परन्तु दूसरी ओर बालिकाओं के लिए अलग स्कूल का भी अभाव बना हुआ है, अत: अनेक कन्याओं को अपनी इच्छाओं के विरुद्ध घर ही बैठना पड़ता है।

(12) दोषयुक्त प्रशासन—

स्त्री शिक्षा के प्रशासन का भार प्राय: समस्त राज्यों में पुरुष वर्ग के ऊपर है। यह दोष बहुत बड़ा दोष है क्योंकि पुरुष वर्ग स्त्री शिक्षा के प्रति कोई विशेष रुचि नहीं दिखाता तथा न उनकी समस्याओं को भली प्रकार समझने का प्रयत्न करता है। विद्यालयों का निरीक्षण करने के लिए स्त्री निरीक्षिकाओं का भी अत्यधिक अभाव है। इन सब समस्याओं के कारण आज भी स्त्री शिक्षा कोई इतनी उन्नत नहीं हो सकी जितनी कि होनी चाहिए थी।

आर्य समाज हमारा

रचयिता—श्री राधेश्याम जी आर्य 'विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना' सुलतानपुर

नव जागृति का रहा प्रणेता पाखण्डों के गढ़ का जेता।
वेदों का पावन-प्रकाश जो जगती के जन-जन को देता।
वही क्रांति दर्शी इस युग का प्राणों से भी प्यारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

अन्यायों से जो लड़ता है वेदों का प्रचार करता है।
प्रेम, दया मानवता की शिक्षा जगती को देता है।
वही धरा पर खुशहाली का लगा रहा अब नारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

जगती के जन श्रेष्ठ बनें सुख-समृद्धि वितान तने।
घनीभूत हो इस धरती पर सत्य-धर्म के मेघ घने।
दलितों तथा शोषितों को दें रहा सत्य सहारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

स्वतन्त्रता का कर उद्घोष मिटा गुलामी का सब दोष।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का किया धरित्री पर है घोष।
नया समाज बनाएंगे हम कण-कण ने ललकारा है।
आर्य-समाज हमारा है।

सम्पादकीय—

आर्य समाज के सामने एक और समस्या आने वाली है

भारत सरकार के गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने पिछले दिनों यह घोषणा की थी कि भारत सरकार ने अपनी जनगणना की तैयारी आरम्भ कर दी है। यह अगले वर्ष किसी समय शुरू होगी। प्राय: 12 वर्ष के बाद जनगणना होती है। इस अवसर पर सारे देश की जनगणना की जाती है। इसलिए इसमें कुछ समय अवश्य लग जाता है परन्तु उसकी तैयारी पहले से ही आरम्भ कर दी जाती है और भारत सरकार ने वह आरम्भ कर दी है।

जब कभी जनगणना होती है तो आर्य समाजियों के सामने यह समस्या खड़ी हो जाती है कि वह अपने आपको क्या लिखवाएं, आर्य लिखवाएं या हिन्दू लिखवाए। पिछली जनगणना के समय भी यही प्रश्न सामने आया था और इस पर आर्य समाजियों में मत-भेद था। कुछ का कहना था कि हमें इस समय अपने आपको हिन्दुओं से अलग नहीं करना चाहिए। इस समय हिन्दु संगठन की अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु कई कहते थे कि हम हिन्दु नहीं हैं, आर्य हैं, इसलिए हमें अपने आपको केवल आर्य ही लिखवाना चाहिए। स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश त्यागी ने उस वक्त यह सुझाव दिया था कि हम अपने आपको आर्य हिन्दु लिखवाएं। उनका भी यही कहना था कि मुस्लमान भी अपने आपको संगठित कर रहे हैं। सिख और इसाई भी ऐसा ही कर रहे हैं। ऐसे समय में आर्य समाज को कोई ऐसी कार्यवाही नही करनी चाहिए जिससे यह भावना पैदा हो कि आर्य समाजी अपने आपको हिन्दुओं से अलग समझते हैं। ऐसा न हो कि हिन्दुओं में आपस में मत-भेद पैदा हो जाए जिससे सनातन धर्म एक तरफ हो जाएं और आर्य समाज दूसरी तरफ।

आज स्थिति पहले से भी गम्भीर है इसलिए इस समस्या पर अभी से बैठ कर विचार करने की आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हम देख रहे हैं कि पिछले चुनाव से इस बार भारतीय जनता पार्टी को जो सफलता मिली है उसका एक कारण यह भी था कि उसने हिन्दुत्व के नाम पर वोट मांगे हैं। पिछले कुछ समय से हिन्दुओं में यह भावना पैदा हो रही है कि अल्पसंख्यकों की तुष्टिकरण की नीति पर चल कर हिन्दुओं के साथ अन्याय कर रही है। राम जन्मभूमि का जो प्रश्न सामने आया है और वहां मन्दिर बनाने का मुस्लमानों की ओर से जो विरोध किया गया है उसका भी हिन्दुओं पर प्रभाव पड़ा है। कश्मीर में आजकल जो कुछ हो रहा उसकी भी अवहेलना नहीं की जा सकती। इन सब घटनाओं का यह परिणाम है कि हिन्दुओं में यह भावना पैदा हो रही है कि अपने ही देश में उन्हें न्याय नहीं मिल रहा और सरकार की तुष्टिकरण की नीति देश की एकता के लिए घातक सिद्ध हो रही है। हिन्दु अब पहले से अधिक यह अनुभव करने लगे हैं कि यह देश उनका है और इस देश की संस्कृति वही है जो उनकी प्राचीन संस्कृति है। इसलिए अपने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए हिन्दुओं को अपना संगठन प्रभावशाली बनाना चाहिए।

महाराष्ट्र में जो शिव सेना बनाई गई है उसका तो जय घोष ही यह कि—"गर्व से कहो हम हिन्दु हैं।" हमारे ही देश में कुछ नारे वह भी हैं जो धर्म निर्पेक्षता की आड़ में हिन्दुओं को कमजोर करना चाहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दुओं के सामने कई प्रकार की समस्याए खड़ी हो रही हैं। यदि आर्य समाज यह कहे कि हमारा इन समस्याओं से कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि हम आर्य हैं तो वह देश की बाकी जनता से कट जाएगे। दूसरी ओर हम यह भी कई बार कह चुके हैं कि हम आर्य समाजी हैं और हिन्दु धर्म या हिन्दु जाति के नाम पर बहुत कुछ वह भी कहा और किया जाता है जिससे हम सहमत नहीं हैं। इसलिए हम आज तक अपने आपको उन बातों से दूर रखते रहे हैं जिनका हिन्दुओं से विशेष सम्बन्ध समझा जाता है। अब जो स्थिति पैदा हो रही है उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता हैं। विशेष रूप से हमें यह भी सोचना चाहिए कि जनगणना में हमने क्या लिखवाना है। एक निर्णय लेने के पश्चात् उसका प्रचार भी होना चाहिए। कई लोग उस पर आपत्ति कर सकते हैं लेकिन सबसे आवश्यक बात यह कि हम बैठ कर इस पर विचार तो करें।

हमारे सामने समय-समय पर कई समस्याएं आती हैं जिन पर आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने आना चाहिए परन्तु हम उन पर विचार नहीं करते। जनगणना के समय हमारे सामने जो कठिनाई आ सकती है उसकी तरफ मैंने आर्य जनता और आर्य समाज के नेतृत्व का ध्यान दिलाया है। इस पर आगे कुछ करना या न करना यह उनका काम है। हम उस कठिनाई को अनुभव कर रहे हैं जब चारों तरफ से यह आवाज उठेगी कि केवल हिन्दु ही लिखवाया जाए। यदि आर्य समाज का यह सामूहिक निर्णय हो तो उस पर भी किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु कुछ निर्णय तो होना चाहिए। अभी समय पड़ा है हमें इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। इसी लिए मैंने आर्य जनता का ध्यान इस ओर दिलाया है।

—वीरेन्द्र

दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज

पाठक गण आज के आर्य मर्यादा में दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की गतिविधियों के विषय में कुछ समाचार पढ़ेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब यह परम सौभाग्य है कि विदेशों में जो आर्य समाजी और आर्य समाजें काम कर रही हैं उनका आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ सम्पर्क बना रहता है। इस लिए वह समय समय पर अपने समाचार हमें भेजते रहते हैं और हम भी अपनी ओर से उन्हें कुछ न कुछ साहित्य और दूसरी चीजें भेजते रहते है। इस प्रकार विदेशों में काम करने वाले आर्य समाजियों के साथ हमारा सम्पर्क बना हुआ है। परन्तु यह अत्यन्त निराशा जनक स्थिति हैं कि विदेश प्रचार के लिए हमें जो कुछ करना चाहिए हम वह नहीं कर रहे। इस समय दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, कनेडा, पूर्वी अफ्रीका, फीजी, मौरीशस, अमेरिका और कई दूसरे देशों में आर्य समाजी अपने अपने ढग से काम कर रहे हैं। परन्तु उन्हें यह शिकायत रहती है कि अपने देश से उन्हे कोई सहायता नही मिलती अपने ढंग से वह जो कुछ कर सकते हैं करते रहते हैं।

दूसरी संस्थाएं विदेशों मे अपना अपना प्रचार कई ढगों से करती हैं। उनके विदेश प्रचार के विभाग बने हुए हैं। जिनके द्वारा वह विदेशों मे काम करने वाले अपने कार्यकर्ताओं को धर्म प्रचार कार्य मे सहयोग देते रहते हैं। परन्तु हमारा कोई ऐसा विभाग नहीं है। इसलिए विदेश प्रचार के लिए जो कुछ होना चाहिए वह नही हो रहा। आज तक दक्षिण अफ्रीका एक प्रकार से हमारे देश से कटा रहा। अब वहा नई स्थिति पैदा हो रही है उस देश के राष्ट्र नेता डा० मण्डेला के जेल से बाहिर आ जाने के कारण वहा एक राष्ट्रीय सरकार बनने की सम्भावना पैदा हो गई है। वहां के आर्य समाजी इस स्थिति को समझते हैं। इसी लिए उन्होंने डा० नैलसन मण्डेला का अपने आर्य समाज मन्दिर में बुला कर स्वागत किया। इसका प्रभाव वहा की जनता पर भी पड़ा है। यदि आर्य समाज जनता के साथ इसी प्रकार अपना सम्पर्क बना कर रखे तो उसका क्षेत्र बहुत बढ़ सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने दक्षिण अफ्रीका के आर्य भाईयों और बहनों को बधाई देती है कि उन्होंने अपने देश से इतने दूर रहते हुए भी अपने धर्म प्रचार का काम नहीं छोड़ा। हमारी शुभ कामनाए उनके साथ हैं और सदा रहेंगी।

—वीरेन्द्र

राम नवमी आ रही है

तीन अप्रैल को राम नवमी है। कृष्ण जन्माष्टमी और राम नवमी हमारे यह ही ऐसे पर्व हैं जो सब हिन्दुओं को मिल कर मनाने चाहिए। हमारे महापुरुषो में श्री राम और श्री कृष्ण दो ऐसी विभूतियां हैं जिन पर हम जिनता गर्व करें, थोड़ा है। हम इसे हिन्दु जाति का दूर्भाग्य समझते हैं कि इन दोनों महापुरुषों के उज्ज्वल पक्ष को इतना जनता के सामने नही रखा जाता जितना कि धूमिल पक्ष को। विशेषकर श्री कृष्ण के विषय मे जो कुछ लोग कहते रहते हैं वह कई बार इतना आपत्तिजनक होता है कि हम उसे कई बार सह सकते हैं और न सुन सकते हैं परन्तु फिर भी हमे वह सब सहन करन पड़ता है।

आर्य समाज ने धर्म प्रचार और देश रक्षा के लिए जो कुछ किया है वह हमारे इतिहास का एक गौरवमय अध्याय है। मैं यह समझता हू, राम नवमी और कृष्ण जन्माष्टमी यह दोनो त्योहार आर्य समाज को अच्छी तरह से मनाने चाहिए और इस अवसर पर अपने इन दोनो महापुरुषों के उज्ज्वल चरित्र को देशवासियो के सामने रखना चाहिए। इस बार राम नवमी 3 अप्रैल को मनाई जा रही है। उस दिन सब जगह अवकाश होगा। जहा-जहा भी सम्भव हो सके आर्य समाज मन्दिरों में राम जन्मोत्सव बड़े समारोह से मनाया जाए और उसमें मर्यादापुरुषोत्तम राम के जीवन की वह घटनाए जनता के सामने रखी जाएं जो हम सबके लिए प्रेरणादायक हो। इस प्रकार हमें यह पर्व विशेष रूप से मनाना चाहिए।

—वीरेन्द्र

राष्ट्र भाषा हिन्दी के साथ भेदभाव क्यों

ले० श्री प्रो० अमरनाथ मन्त्री आर्य समाज समराला लुधियाना

हिन्दी हम भारतीयों की राष्ट्र भाषा होने के साथ-साथ हमारी सम्पर्क भाषा भी है। यह एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता की सूत्रधार अभी हित है। संविधान में जहां सिंधी सहित पन्द्रह भारतीय भाषाओं को उपयुक्त स्थान उपलब्ध है वहां हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में विशेष स्थान प्रदत्त है क्योंकि देश में यही भाषा सर्वाधिक 43% लोगों द्वारा प्रयुक्त की जा रही है। सन 1965 में पार्लियामेंट ने स्पष्ट रूप में प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय व राज्य सरकारों को निर्दिष्ट किया था कि सारे सरकारी कार्य हिन्दी में किये जाएं तथा जहां दक्षिणी प्रान्तों में अभी हिन्दी अधिक नहीं पनपी थी वहां अंग्रेजी भी साथ प्रयोग की जा सकती है। जहां घनी जनसंख्या वाले प्रान्तों (उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, देहली तथा हरियाणा) में इसे राज्य भाषा स्वीकार करके समस्त कार्य हिन्दी में किए जाने लगे, तथा शिक्षण संस्थानों में शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी बन गया वहां हिमाचल प्रदेश, चण्डीगढ़ व पंजाब सहित अन्य प्रान्तों में भी विकसित होने लगी। परन्तु खेद का विषय है कि 1-11-66 से पूर्व जहां सच्चर फार्मूले (तीन भाषायी) के अधीन पंजाब में पंजाबी के साथ हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी (छात्र-छात्रों की स्वेच्छा थी कि एक प्रथम भाषा तथा दूसरी द्वितीय भाषा के रूप में पढ सकते थे), वहां तदुपरान्त हिन्दी के साथ सौतेली मां तुल्य व्यवहार किया जाने लगा तथा इसका पंजाब में पतन होने लगा। हालांकि वास्तविकता यह है कि आज भी पंजाब की 47% जनता जो अधिकतर नगरों में निवास करती है हिन्दी का प्रयोग निजी कार्यों में करती है। विशेषतया पठानकोट, होशियारपुर अमृतसर, लुधियाना, जालन्धर, राजपुरा, पटियाला, बटाला, अबोहर, मलोट, फाजिलका, खन्ना, नंगलटाऊनशिप, मोगा तथा केन्द्रीय प्रदेश पंजाब की राजधानी चण्डीगढ़ आदि में परन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि छात्र-छात्राओं को सरकारी विद्यालयों में हिन्दी माध्यम अपनाने का अधिकार नहीं। यह कैसा अन्याय! यह देश की स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्रता कैसी, जहां नागरिकों को मातृभाषा में अध्ययन की अनुमति भी उपलब्ध न हो।

फिर कितने आश्चर्य का विषय है कि भारतीय भाषाओं की जननी व हमारी संस्कृति की प्रतीक संस्कृत को तो मानो हमारी पंजाब सरकार पूर्णतया नष्ट करने पर तुली हुई है। उदाहरणार्थ यदि किसी विद्यालय या महाविद्यालय में संस्कृत अध्यापक की पोस्ट खाली होती है तो उसके स्थान को अन्य विषयों में बदल दिया जाता है। यह संस्कृत भाषा के साथ-साथ अध्ययनाभिलाषियों के साथ अन्याय नहीं तो और क्या है?

इसके अतिरिक्त पंजाब में नवीन शिक्षा प्रणाली के 1986 में लागू होने पर जहां 123 सरकारी सैकण्डरी स्कूलों व 66 प्राईवेट स्कूलों को सीनियर सैकण्डरी में परिवर्तित किया गया वहां गत वर्षों में 183 अन्य सरकारी हाई स्कूलों को सीनियर सैकण्डरी में पदोन्नत किया गया, वहां प्रत्येक विद्यालय में अंग्रेजी पंजाबी, इतिहास गणित, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र विषयों की लैक्चरर पोस्टें दी गई, वहां भी हिन्दी राष्ट्र भाषा के साथ भेदभाव किया गया है। यह कितनी विडम्बना है कि जहां अन्य प्रान्तों विशेषतया दक्षिणी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग लोग भरसक मात्रा में करने लगे हैं, पंजाब सरकार, शिक्षा विभाग पंजाब तथा पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड इसे अधिकतर समाप्त करने की प्रक्रिया में सतत संलग्न दर्शित होते हैं। यह अन्याय कब तक चलता रहेगा तथा सहन किया जाएगा?

अतएव माननीय राज्यपाल पंजाब, चीफ सैक्रेट्री पंजाब सरकार, शिक्षा सैक्रेट्री पंजाब, निर्देशक शिक्षा विभाग पंजाब व विभिन्न विश्वविद्यालयों (पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़, पंजाबी यूनिर्सिटी पटियाला, गुरुनानक यूनिवर्सिटी अमृतसर आदि) के उपकुलपतियों तथा पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से अनुरोध है कि वे अधीनस्थ सभी विभागों, विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों व विद्यालयों तथा शिक्षा बोर्ड को निर्दिष्ट करें कि पंजाबी के साथ साथ हिन्दी का भी प्रयोग किया करें ताकि हिन्दी को पंजाब में खोई हुई प्रतिष्ठा उपलब्ध हो। इस हेतु निम्न कतिपय पग उठाने की चेष्टा करें।

शिक्षा विभाग को निर्दिष्ट करें कि हिन्दी की पोस्टें प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्य रूप से निर्धारित करें तथा हिन्दी भाषा की उन्नति हेतु उपयुक्त व्यवस्था करें विशेषतया सारे महाविद्यालयों व सीनियर सैकण्डरी विद्यालयों में हिन्दी प्राध्यापक तुरन्त नियुक्त करें ताकि छात्र-छात्राएं राष्ट्रभाषा हिन्दी का ज्ञान उपयुक्त विधि से अर्जन करके देश के अन्य भागों के विद्यार्थियों के समान केन्द्रीय व्यवस्था में योगदान दे सकें।

इसके अतिरिक्त हिन्दी के विकास हेतु समय-समय पर गोष्ठियों का आयोजन किया जाए तथा हिन्दी व संस्कृत के ख्याति प्राप्त योग्य अध्यापकों, साहित्यकारों, समालोचकों विद्वानों तथा कवियों को यथायोग्य सम्मानित किया जाए ताकि प्रोत्साहित होकर वे राष्ट्र भाषा की उन्नति में उपयुक्त योगदान प्रदान कर सकें।

यदि उपयुक्त समय में उपयुक्त कतिपय वाञ्छनीय पग उठाए जाएं तो राष्ट्रभाषा का केवल पंजाब में द्रुत गति से विकास ही नहीं होगा अपितु पंजाब रूपी समाज एवम् राष्ट्र का कल्याण भी निश्चित रूप से सम्भव अभीहित है।

सत्य शिव कौन?

रचयिता—श्री कवि कस्तूर चन्द जी घनसार पीपाड़ शहर-राजस्थान

मानुष का शिव एक प्रतिमा बनाया शिव,
सिर पर धार एक गंगा की बहाई है।

गले में भुजंग भूत अंग भस्म रमा रखी,
गिरिजा स्वयंभी को पास में बिठाई है।

कैलाश के पति शिव, रची राजधानी शिव,
गजानन, कार्तिक सो परिवार रहाई है।

पता नहीं कैलाश पे, है के कभी लोप भये,
है तो कभी आते वे, बात असंभव पाई है।

ऐसा शिव होता नहीं, शिव सत्य सनातन,
अजर अमर एक, रहा अविनाशी है।

अङ्ग रङ्ग बिना रहा, अभङ्ग अलेप नित्य,
न्यायि, निराकार अज स्वयं प्रकाशी है॥

सच्चिदानन्द, रहा अमल सुअनुपम,
रज, शुक्र बिन रहा सर्व सुख राशि है।

वही दयानन्द पाया, खोज खोज खोज कर,
सर्वेश्वर देखा घट-घट के निवासी हैं।

पुराणिक पोप, सब भ्रममें उतार दिया,
देह धारी शिव मान, मानता बढ़ाई है।

वही शिव देहधारी, उसी शिव हेतु नित्य,
ओम् ओम् बोल शिव समाधि लगाई है।

वही शिव सत्य ज्ञान, होता नहीं देह धारी,
देह धारी शिव नहीं, भ्रम में रहाई है।

सृष्टि के रचाने वाला, शिव अविकारी रहा,
जाना ऋषी दयानन्द अचल, अचाई है।

पाहन प्रतिमा वाला शिव भ्रमवादी मानें,
सत्य शिव भूल गये, सृष्टि को रचाता है।

अनन्त विविध भांति, रचना रचाई शिव,
जगत् नियन्ता देव, परम-विधाता है।

वही शिव ज्ञान स्वामी दयानन्द ऋषी आज,
वेदों का प्रचार कर, शिव दरशाता है।

पोल को बताई ऋषि खोल-खोल भ्रम सब,
"घनसार" जाना शिव, कविता बनाई है।

अमर शहीद लेखराम

ले० डा० [illegible] जी साधु आश्रम (होशियारपुर) 146021

आर्य समाज के गौरव पूर्ण इतिहास में आर्य प्रचारक पं० लेखराम जी का जीवन और कार्य एक अमिट अध्याय है। इससे परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि श्री लेखराम पहले पुलिस में कार्य करते थे। परिवार के संस्कारों और एक मित्र से प्राप्त प्रेरणा के कारण धार्मिकता की ओर प्रवृत्त हुए। यह प्रवृत्ति पुन: वेदान्त के रंग में रंग गई। इसी मध्य एक लेखक की किताबें पढ़ते हुए ऋषि दयानन्द का परिचय प्राप्त हुआ। सत्य के जिज्ञासु लेखराम ने ऋषि के ग्रन्थ मंगवा कर पढ़े। शास्त्रों के प्रमाणों से परिपुष्ट और तर्क संगत ऋषि के विचारों का लेखराम पर पूर्ण प्रभाव हुआ। अजमेर जा कर ऋषि से अपनी बची-खुची शंकाओं का समाधान पूछा। समाधान से सन्तुष्ट हो कर एक दिन पुलिस कार्य से त्यागपत्र दे दिया और अपना सर्वस्व ऋषि के मिशन को समर्पित कर दिया। अपनी श्रद्धाञ्जलि ऋषि के प्रति चरितार्थ करने के लिए आर्य समाज के प्रचार कार्य में जुट गए। साधारण सी शिक्षा होने पर भी, अपने स्वाध्याय के बल पर पं० लेखराम ने 'कुलियाते आर्य मुसाफिर' के माध्यम से प्रमाणित कर दिया कि एक श्रद्धालु लगनशील शिष्य किस प्रकार कहने के लिए विवश कर देता है—

'लहराएगी-लहराएगी खेती ऋषि दयानन्द की'।

कोई खेती तभी लहराती है, जब अच्छे बीज को तैयार कर खेत में बीज के उसकी सम्भाल की जाती है। ठीक इसी प्रकार महर्षि के विचारों की खेती को लह-लहराने के लिए अमर शहीद लेखराम ने प्रथम महर्षि के विचारों के बीज को बांटा और फिर उनको संकलित, स्पष्ट रूप देकर जन-जन तक पहुंचाने का अनथक प्रयत्न किया। इसी दृष्टि से अमर शहीद ने अपनी वसीयत की।

आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं का विशेष कर्त्तव्य हो जाता है कि उस वसीयत को साकार करते के लिए आगे आयें। जैसे कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास 'वेद की कुञ्जी' इसको इसके बिना न तो प्रथम समुल्लास समझ में आ सकता है और न ही वेद का सुसंगत रूप सामने आ सकता है। क्योंकि—

यह एक सर्वमान्य बात है कि वेद संसार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तकें हैं और वेद ही भारतीय धर्म, साहित्य का मूल स्रोत है। वैदिक वाङ्मय तो वेद के अन्त:बाह्य स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए ही बनाया गया है।

जब एक वेदप्रेमी श्रद्धा से भर कर वेद का अध्ययन करता है, तो वह वेद पढ़ कर कई बार उलझन में पड़ जाता है, कि वेदों में कहीं अग्नि को, तो कहीं इन्द्र को लक्ष्य में रखकर सैंकड़ों मन्त्र आते हैं, किसी प्रकरण में सोम के या वरुण, विष्णु आदि के गीत हैं। इनको वहां देवता भी कहा है। इतिहास में भी यही पढ़ाया जाता है, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र आदि की स्तुति —प्रार्थना भी पढ़ी हैं।

इस असमञ्जस में प्रश्न उभरता है कि वास्तविक बात क्या है? ऐसी स्थिति में प्रथम समुल्लास वेद के पाठक के हाथ में कुञ्जी देता है कि यदि तुम इससे वेद के रहस्य का ताला खोलोगे, तो अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकते हो, अन्यथा अन्धेरे में ठोकरें ही खाओगे।

महर्षि दयानन्द ने यहां स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि अग्नि, सूर्य, सोम आदि वेदों में जहां ईश्वर वाचक मिलते हैं, वहां भौतिक पदार्थों और जीव आदि के लिए भी आए हैं। कहां किसके वाचक हैं? इसी की 'कुञ्जी-प्रथम समुल्लास है। अमर शहीद की वसीयत को साकार करने के लिए यह आवश्यक है कि हम ऐसी गांठों को खोलने का प्रयास करें। अपने शहीदों के प्रति श्रद्धाञ्जलि का वास्तविक अर्थ यही है कि उनकी तरह उस कार्य को आगे बढ़ायें। तभी यह कहा जा सकता है कि अनुयायियों ने 'जड़ को सींचा है' पत्तों को पानी नहीं दिया।

महर्षि दयानन्द वचनामृत—८

(1) परमात्मा की उपासना के बिना कोई योगी नहीं हो सकता है।

(2) योग बल से विद्याबल की उन्नति हो सकती है और तभी अविद्या-रूपी अन्धकार का विध्वंस हो सकता है।

(3) योग विद्या के बिना कोई भी मनुष्य विद्वान नहीं हो सकता।

(4) बुद्धि के बिना कोई भी सुख को नहीं बढ़ा सकता।

(5) विद्या और आरोग्यता के बिना कोई भी मनुष्य निरन्तर कर्म करने में समर्थ नहीं हो सकता।

(6) यज्ञ की वेदों में बड़ी भारी महिमा बतलाई गई है, इसके बिना सब अधूरा है।

(7) पवन के साथ मेघ के जल को छिन्न-भिन्न करने वाला सूर्य समस्त पदार्थों के रस को खींचता है।

(8) जैसे जड़ के रूपादि गुण हैं और चेतन के ज्ञानादि गुण जड़ में नहीं हैं वैसे चेतन में इच्छादि गुण है और रूपादि जड़ के गुण नहीं हैं।

(9) प्रजन-जिससे मनुष्यों की बढ़ती होती है, जिसमें बहुत मनुष्य रमण करते हैं, इससे जन्म को "प्रजन" कहते हैं!

(10) जिससे मनुष्यों का जन्म और प्रजा में वृद्धि होती है, और जो परम्परा से ज्ञानियों की सेवा से ऋण अर्थात् बदले का पूर्ण करना होता है, इससे "प्रजनन" भी धर्म का हेतु है, क्योंकि जो मनुष्यों की उत्पत्ति भी नहीं होतो धर्म को ही कौन करे। इस कारण से भी धर्म को ही प्रधान जानो।

(11) जहां एक मनुष्य राजा होता है वहां प्रजा ठगी जाता है और उसके पदार्थों की हानि होती है, इसलिए एक को राजा कभी नहीं मानना चाहिए, किन्तु धार्मिक विद्वानों की सभा के आधीन ही राज्य प्रबन्ध होना चाहिए।

(12) जिस राज्य में मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते हैं, वही देश सुखयुक्त होता है।

(13) किसी एक मूर्ख वा लोभी को भी सभाध्यक्षादि उत्तम अधिकार न देना चाहिए।

(14) सत्यधारी विद्वान् ही "देव" कहाते हैं। और असत्यवादी "अदेव" अर्थात् "असुर"।

(15) राष्ट्र पालन का नाम "अश्वमेध" है।

संकलन कर्त्ता—मांगे राम आर्य अहमदनगर (महाराष्ट्र)

डा० सत्यकेतू जी की पुण्य तिथि

प्रख्यात इतिहासकार, मूर्धन्य साहित्यकार व आर्य विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की प्रथम पुण्य तिथि पर 16 मार्च को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा मे उनके भव्य व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्य जगत के सम्पादक सुप्रसिद्ध पत्रकार पं० क्षितीश वेदालंकार व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने डा० सत्यकेतु के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० साहब को जब भी हम स्मरण करते हैं तो हमें एक नई ऊर्जा प्राप्त होती है। उन्होंने आगे कहा कि डा० सत्यकेतु द्वारा 7 खण्डों में लिखित आर्य समाज का इतिहास आर्य जगत की एक अमूल्य धरोहर है।

श्री सुभाष जी विद्यालंकार तथा प्रो० वेद व्रत जी ने भी डा० सत्यकेतु जी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की विवेक प्रकाशन ने उनकी स्मृति में 1000 रुपये का पुरस्कार प्रति वर्ष किसी अध्यापक को देने की घोषणा की।

अमृतसर में शिवरात्रि पर्व मनाया गया।

आर्य सभा जिला अमृतसर की ओर से हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य में 20-2-90 को अमृतसर के विशाल मैदान गोलबाग से शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा गोलबाग से चलकर हाल गेट, आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, कटरा जैमल सिंह शास्त्री मार्कीट, गुरु बाजार, मजीठा मण्डी, दाल मण्डी, से होकर चौंक शक्ति नगर में समाप्त हुई। जिले भर की सभी आर्य समाजें एवम् आर्य समाज से समंबधित शिक्षा शिक्षाओं शोभा यात्रा में भाग लिया हैं। शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य, डाक्टर देवव्रत महाजन प्रधान लारेंस रोड, श्री लक्ष्मीधर जी प्रधान आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द एवम् डाक्टर प्रकाश प्रधान आर्य-समाज नवां कोट किया।

23-2-90 को ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य में जिला भर की आर्य समाजों की ओर से आर्य समाज नवां कोट में 9 बजे से एक बजे तक विशेष आयोजन किया गया है।

लुधियाना में वेद परायण यज्ञ

18 मार्च रविवार को हरपाल नगर लुधियाना में प्रात: 8बजे से 2बजे बाद दोपहर तक वेदपरायण यज्ञ बड़े समारोह से आयोजन किया गया—यज्ञ के ब्रह्मा पं० बालकृष्ण जी शास्त्री तथा पं० सुरेश कुमार जी शास्त्री थे। उन्होंने वेद मन्त्रों की सुन्दर व्याख्या की। श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने यज्ञ की महिमा पर [illegible] प्रकाश डालते हुए जनता से अनुरोध किया कि वह अपने घरों में प्रति दिन यज्ञ करें।

इस अवसर पर हजारों बहन भाईयों ने यज्ञ में आहुतियां डाली इस यज्ञ में हिन्दू, सिख, आर्य समाजी, सनातन धर्मी जैनी, सभी श्रद्धा से भाग लेते हैं हजारों लोगों ने लंगर में प्रीतिभोज किया।

—आत्मानन्द आर्य, यज्ञ प्रबन्धक

कर्तव्यनिष्ठ-दृढव्रती श्री रामनाथ सहगल

ले० श्री क्षितीश वेदालकार सम्पादक आर्य जगत दिल्ली

जिला सरगोधा के राझियावाला ग्राम (अब पाकिस्तान) मे 13 मार्च 1926 को जन्मे श्री रामनाथ सहगल के पिता ग्राम की कृषि छोडकर भेरा मे आकर व्यवसाय करने लगे थे। 5 वर्ष की आयु मे श्री सहगल कृपाराम ऐग्लो सस्कृत हाई स्कूल भेरा मे प्रविष्ट हुए और दसवी कक्षा उत्तीर्ण करने तक वही पढते रहे। कालान्तर मे उन्हे पजाब नैशनल बैंक रावलपिन्डी मे नौकरी मिल गई तो वे वहा आकर रहने लगे। रावलपिन्डी मे श्री सहगल किसी प्रकार श्री पिशोरी लाल प्रेम, जो भारत विभाजन के उपरान्त ददाहू (रेणुका) सिरमौर मे स्थापित हो गये, के सम्पर्क मे आए। वे उन्हे रावलपिन्डी आर्य समाज मे ले गये। श्री प्रेम की सरलता, सच्चरित्रता, सत्यवादिता, स्वाध्याय शीलता एव निष्ठा से श्री सहगल बहुत प्रभावित हुए। श्री प्रेम की प्रेरणा से श्री सहगल आर्य वीर दल मे जाने लगे और कुछ दिनो बाद ही उन्हे "नगर नायक" और समय समय पर गुरुकुल रावलपिन्डी मे लगने वाले आर्य वीर दल के शिविरो का सयोजक बना दिया गया। रावलपिन्डी आर्य समाज मे स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेशो का उन पर प्रभाव पडा। कालान्तर मे वे आर्य समाज रावलपिन्डी के मन्त्री बना दिये।

श्री प्रेम न केवल उन्हे स्वाध्याय के लिये पुस्तकें देते थे, अपितु समय समय पर जीवन मे उनका मार्गदर्शन भी करते रहते थे। श्री प्रेम ने उनसे कहा कि वे निर्वाचन के पक मे कभी न फसे। अपने 50 वर्ष के सामाजिक जीवन मे वे कभी भी और किसी भी पद के निर्वाचन मे प्रत्याशी नही बने। श्री प्रम ने उन्ह सावधान किया कि स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी सस्था का सदस्य अथवा पदाधिकारी न बने। श्री सहगल ने कभी किसी सस्था सिद्धि का साधन नही बनाया। भारत विभाजन के अवसर पर पजाब मे हुए साम्प्रदायिक दगो के समय रावलपिडी मे हिन्दुओ की सहायतार्थ जो शिविर स्थापित किया गया था, श्री सहगल उनके सयोजक बनाये गये। जब तक वे रावलपिन्डी मे रहे शिविर का सुचारु रूप से सचालन करते रहे। इसके लिए तत्कालीन पजाब नेशनल बैंक के निर्देशक श्री केशवचन्द्र ने उनको सम्मानित किया था। विभाजनोपरान्त श्री सहगल का परिवार दिल्ली आ गया और तब से वे दिल्ली मे समाज सेवारत हैं।

श्री रामनाथ सहगल आर्य समाज क्षेत्र के कुशल, साहसी तथा समर्पित जीवन वाले उत्तम कार्यकर्ता हैं। आर्य समाज का कार्य उनकी रग रग मे समाया हुआ है। आर्य समाज के सब क्षेत्रो मे उनकी गति तथा विकास है। बडे से बडे महासम्मेलनो से लेकर छोटे से छोटे सामाजिक कार्य मे भी उनकी कार्यकुशलता व कर्मठता के दर्शन होते हैं। ऐसे निष्काम कार्यकर्ता आर्य समाज के क्षेत्र मे बहुत कम मिलेंगे जो प्रत्येक समय सामाजिक कल्याण की भावना से ही कार्य करते हो। वे आर्य समाज की सेवा से शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से जुडे हुए हैं। आर्य समाज का कोई प्रशिक्षण शिविर हो, योग शिविर हो या फिर सेवा केन्द्र हो, सभी स्थानों पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अपने इन विशिष्ट गुणो के कारण ही वे आर्य समाज व डी० ए० वी० शैक्षणिक जगत की अनेक सस्थाओ के आधार स्तम्भ हैं।

जब कभी भी किसी डी० ए० वी० शैक्षणिक सस्था का किसी सामाजिक सस्था को किसी भी प्रकार की विषम परिस्थितियों मे से गुजरना पडता है तो श्री सहगल उसे उभारने के लिये अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। कौन सा ऐसा सामाजिक कार्य है जिसमे उनका प्रतिबिम्ब न उभरता हो। अपनी इस सूझ बूझ, अनुभव, कार्य-कुशलता तथा श्रद्धापूर्वक काम करने की नीति के द्वारा ही वे बडे से बडे सम्मेलनो को भी बडी सरलता से उनकी सफलता तक पहुचा देते हैं। अपने मिलनसार व्यक्तित्व, व्यवहार कुशलता, वाकपटुता, सरल हृदयता, हसमुख स्वभाव व नियमबद्धता के द्वारा वे और भी अधिक सुचारू रूप से सम्पूर्ण सामाजिक क्षेत्र को गति व सामर्थ्य प्रदान करते रहते हैं।

(क्रमश:)

आर्य समाज कब तक सोता रहेगा ?

ले० प्रो० महादेव जी होशियारपुर

प्रिय पाठको ! आर्य मर्यादा में कुछ समय पूर्व सभा के प्रधान जी ने इस चर्चा को प्रारम्भ किया था। अत: यह विशेष प्रसन्नता की बात है, कि उन्होंने इस चर्चा के अनेक पक्षो पर विस्तृत प्रकाश डाला। इसका पहला लाभ यही होगा, सभाप्रधान जी के सक्रिय होने से उनके सहयोगी भी कटिबद्ध होगे। जो कि पजाब की प्रमुख समाजो के अधिकारी हैं। उन सब के सक्रिय होने से ही समस्या का समाधान हो सकता है।

आर्य समाज एक प्रचारात्मक सगठन है। अत: प्रचार के कार्य से उपराम होना ही आर्य समाज का सोना है। जैसे कि एक सोने वाला जागते समय किए जाने वाले कारोबार को नही करता। ऐसे ही आर्य समाज अपने प्रचार के कार्य को पहले जैसे करता था, वैसे नही कर रहा। पहले आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य प्रचार की धुन मे लगा रहता था। उन दिनो आर्य समाज के पास न प्रचार की सुविधा थी और न ही इस के लिए विशेष धन था। आज पहले की अपेक्षा अच्छे भवन, सुविधायें और धन है।

उन दिनो के आर्य समाज के सदस्य सदा प्रचार की योजना में तत्पर रहते थे। तब मध्यकाल के आर्यों ने सोचा कि चार-चार आने इकट्ठे करके हम थोडा प्रचार करने मे सक्षम होते हैं। अत: आय के सुनिश्चित स्रोतो को खोजा जाने लगा और अनेक नगरो की आर्य समाजो ने आर्य समाज मन्दिरो के साथ दुकानें बनानी शुरू की। जैसे-जैसे आय के सुनिश्चित स्रोत मिलने शुरू हुए, वैसे-वैसे ही प्रचार की भावना मन्द होती चली गई और अधिकतर का ध्यान दूसरे धर्म स्थानो की तरह आर्य समाजो को भी चिप्स, सगमरमर से सजाने और धन सग्रह की ओर होने लगा। बडे-बडे नगरो मे अनेको ऐसी आर्य समाजें हैं, जिनकी मासिक आय अब हजारो मे है, पर कोई विरली ऐसी आर्य समाज होगी, जो इस आय का अधिक भाग प्रचार पर खर्चती हो।

एक बार मैंने एक आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग मे कहा—आप के पास भवन पर्याप्त है और आप भी अच्छी है। आप के नगर में सस्कृत महाविद्यालय है, जहा प्रति वर्ष दो, चार आर्य विद्यार्थी आते ही रहते हैं। उनको आप अपने यहा ठहराने की व्यवस्था करें या उनके लिए आने-जाने की व्यवस्था जुटायें। जिससे वे प्रशिक्षित विद्यार्थी जब यज्ञ के अवसर पर समवेत स्वर मे वेद मन्त्रो का उच्चारण करेंगे। तो सत्सग की शोभा बढ़ेगी तथा प्रचार भी होगा। आर्य समाज से प्रोत्साहन एव सम्मान प्राप्त करके ये अपने भावी जीवन मे आर्य समाज के सहायक सिद्ध हो सकते हैं, पर इस ओर ध्यान नही दिया गया।

आर्य समाज का जो अधिकारी निर्वाचित होता है। एक तरह से वह अन्य सदस्यो को विश्वास दिलवाता है, कि हम आर्य समाज के कार्य का उत्तर-दायित्व स्वीकार करते हैं। साप्ताहिक सत्सग के माध्यम से जहा हम आर्य समाज के सदस्यों से परिचित होते हैं, वहा उनके विचारो को सुदृढ भी करते हैं। उत्सव, पारिवारिक सत्सग के द्वारा हम नयो से सम्पर्क करते हैं।

आज की बदलती परिस्थितियों मे भी ये पहले वाले ढग जहा सहयोगी हैं, वहा नए आ रहे साधन भी यथा-शक्ति अपनाए जा सकते हैं। आज के वातावरण मे सब से अधिक उपयोगी हम अपने सम्पर्क मे आने वालो से वार्तालाप और पुस्तक भेंट है। हा, पुस्तकें जहा 40, 50 पृष्ठ की स्थूल अक्षरो मे छपी हो, वहा उनका अपेक्षित और शैली मे होना भी जरूरी है पजाब की वर्तमान स्थिति मे तो यह साधन अधिक सहायक है। आर्यसमाज के अधिकारी अपने यहा पुरोहित अवश्य रखें और उससे विशेष सम्पर्क रखें। आज के व्यस्त जीवन मे प्रोत्साहित, सम्मानित होकर पुरोहित अधिक सहायक हो सकता है और तभी वह सफल हो सकता है।

वैदिक नैष्ठिक मण्डल

दिनाक 15-2-90 को पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा एव आदेश पर "वैदिक नैष्ठिक मण्डल" का गठन किया गया। जिससे सर्व-सम्मति से अधोलिखित पदाधिकारियों का चुनाव हुआ।

1. सरक्षक—डा वामदेव जी आचार्य,
2. अध्यक्ष—ब्र० कृष्णदेव नैष्ठिक,
3. उपाध्यक्ष—ब्र० शरतचन्द्र „
4. मन्त्री—ब्र० जीवर्धन „
5. उपमन्त्री—ब्र० जयबन्धु „
6. कोषाध्यक्ष—ब्र० मोहनकुमार नैष्ठिक।

—[illegible]

आर्य समाजों के संक्षिप्त समाचार

आर्य समाज समराला (लुधियाना) में ऋषि बोधोत्सव गत दिनों बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर श्री अमर नाथ जी तावरा द्वारा भजन उपदेशक एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ।

बुडलाढ़ा मंडी जिला बठिण्डा में पारिवारिक सत्संग 18-3-90 को श्री मेघराज जी गोयल बुडलाढ़ा के घर पर हुआ। जिस में ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी का प्रवचन हुआ।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 12-3-90 से 17-3-90 तक श्री पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज की कथा होती रही। जिसमें नगर निवासियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

आर्य समाज बैंक फील्डगंज लुधियाना में पंडित लेखराम जी अमर शहीद का बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर श्री डा० बाल कृष्ण जी शास्त्री व स्वामी सुमनायति जी बहन कमला आर्या, प० सुन्दर लाल जी ने अपने विचार रखे। शास्त्री, श्री रोशन लाल शर्मा, श्री रणवीर जी भाटिया, श्री आशानन्द जी आर्य ने अपने विचार रखे।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे आयोजित अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता में अखिल भारतीय वाद विवाद प्रतियोगिता तथा अखिल भारतीय श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम के विद्यार्थियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

धूरी में श्री कर्मचन्द जी बांसल तेल वालों के घर 4 मार्च से प्रथम अप्रैल 1990 तक चतुर्वेद परायण यज्ञ श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी द्वारा कराया जा रहा है।

आर्य समाज दीनानगर (गुरदासपुर) में गत दिनों पंडित लेखराम बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। जिसमें श्री राम किशन जी वानप्रस्थ, श्री प्रिंसिपल धर्मराज जी व अन्य कई विद्वानों ने श्री पंडित जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में धर्मवीर पण्डित लेखराम जी का बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। जिस में स्वामी सुमनायति जी व श्री रोशनलाल जी शर्मा, तथा अन्य कई सज्जनों ने पंडित जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में 8-4-90 रविवार को सायं तीन बजे श्री पंडित हरबंस लाल जी की अध्यक्षता में आर्य समाज का स्थापना दिवस बड़े समारोह से मनाया जा रहा है।

वैदिक साधनाश्रम तपोवन में 25 अप्रैल से 29 अप्रैल तक वार्षिक महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले यज्ञ के ब्रह्मा मथुरा के आचार्य श्री प्रेम भिक्षु जी होंगे। तथा योग संचालक श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती होंगे। मुख्य प्रवक्ता आचार्य शिवाकांत उपाध्याय तथा श्री राम प्रसाद जी वेदालंकार होंगे।

आर्य समाज केन्दुआ बाजार पोस्ट कुल्टी बर्दवान का वार्षिकोत्सव 15 से 19 मार्च तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर नालंदा के डाक्टर श्री देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी व श्री महेन्द्रपाल जी आर्य श्री ठाकुर इन्द्र देव सिंह जी व श्रीमती विद्यावती जी पटना ने अपने अपने विचार रखे।

गुरुकुल कालवा के अनुभवी स्नातक आचार्य अखिलेश्वर जी ने सोनीपत यज्ञ समिति द्वारा आयोजित अथर्ववेद महापारायण यज्ञ में वैदिक प्रवचनों द्वारा हजारों नर-नारियों को प्रभावित किया।

भार्गव नगर में ऋषि बोध उत्सव

आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में 18 फरवरी से 25 फरवरी 1990 तक शिवरात्रिमहोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ 18 फरवरी तक रात्रि को स्वामी सच्चिदानन्द जी दिल्ली वालों के प्रवचन तथा श्री जगत वर्मा जी के भजन होते रहे। 23 फरवरी को संगीत सम्मेलन सम्पन्न हुआ इसकी अध्यक्षता स्वामी सच्चिदानन्द जी ने की तथा मंच संचालन माननीय श्री बनवारी लाल जी आर्य रत्न उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया। इसमें कई प्रसिद्ध संगीतज्ञों ने भाग लिया। 24 फरवरी को महिला सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रि० श्रीमती हर्ष आरोड़ा जी ने की। 25 फरवरी 1990 को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सच्चिदानन्द जी ने यजमान दम्पतियों के आशीर्वाद दिया ध्वजारोहण पं० हरीचन्द जी गढ़ा, ने किया भारी वर्षा होने के बावजूद भी लोगों में भारी उत्साह था। अन्त में ऋषि लंगर वितरित किया गया।

इस महोत्सव में जिन महिलाओं तथा नवयुवकों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया। हम उन सब का आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर की तरह से हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

—चमन लाल प्रधान

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का पालन

ले०—श्री मनमोहन कुमार जी आर्य देहरादून

महर्षि दयानन्द जी ने पूना प्रवचन के तीसरे 'धर्माधर्म' विषयक व्याख्यान में वेदशालायें खोलने, वेदाध्ययन कराने का सत्परामर्श दिया था। रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत) द्वारा प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन) ग्रन्थ में ऋषि के इन मन्तव्यों पर पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी ने जो सम्पादकीय टिप्पणी दी है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसे उद्धृत किया जा रहा है :—

"यही आदेश ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियों को अन्यत्र भी बहुधा दिया है और अंग्रेजी, फारसी की पाठशालायें खोलने को मना किया है (द्र० ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन पृष्ठ 42, 259, 501, 629, 635, 684, 781 आदि सस्क० 3...) परन्तु आर्य समाज ने ऋषि दयानन्द के इस महान् आवश्यक आदेश का उल्लंघन किया और कर रहा है। इसका फल आर्य समाज के नाश के अतिरिक्त कुछ न होगा।"

उक्त सम्पादकीय टिप्पणी सम्पादक की हार्दिक वेदना प्रकट करती है। विगत वर्षों में आर्य समाज ने कई बड़े कार्यक्रम, समारोह, सम्मेलन आयोजित किये हैं। कहा एव माना जाता है कि यह समारोह किये गये कार्यों की समीक्षा एवं भविष्य की योजना निर्मित करने के उद्देश्य से किए जाते हैं। इन समारोहों एवं सम्मेलनों में यह बात कभी प्रमुखता से दृष्टिगोचर नहीं हुई कि ऋषि के शिक्षा विषयक इन विचारों के प्रकाश से हमने कोई सार्थक निर्णय लिया हो। आज भी पत्र-पत्रिकाओ मे अनगणित लेख आर्य समाज के उत्थान को दृष्टिगत कर लिखे गए एवं प्रकाशित हो रहे हैं, परन्तु यह विषय सर्वथा अस्पर्श्य हुआ है।

आज आर्य समाज मे ऐसे विद्वान् जो संस्कृत अथवा वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता हैं, गिनती के हैं। प्राय: बड़े-बड़े आर्य नेताओं, उपदेशकों को संस्कृत का समुचित ज्ञान नहीं है। संस्कृत के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था न होन के कारण ही आर्य समाज का वैदिक एवं इतर साहित्य लोकप्रिय नहीं हो पा रहा है। आगे चलकर स्थिति और प्रतिकूल एव अप्रिय होगी। इस पृष्ठ-भूमि में उक्त सम्पादकीय मनोवेदना यह सन्देश देती है कि हम भावी सम्मेलनों/कार्यक्रमों में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों की ओर वर्तमान में किये जा रहे कार्यों की समीक्षा करें जो जो कार्य महर्षि के मन्तव्यों के अनुकूल नही हैं उन्हें सुधारा जाये अथवा बन्द कर दिया जाये। सभी आर्य बन्धुओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से यह लेख प्रस्तुत है।

॥ आर्य समाज बनाया ॥

रचियता—श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिल्ली

धन्य धन्य ऋषि दयानन्द हमें सत्य मार्ग दरशाया था।
चैत्र सुदी प्रतिपदा दिवस को आर्य समाज बनाया था।
इस भव्य भूमि भारत मे अज्ञान तिमिर का डेरा था।
मतमतान्तर पाखण्डों का छाया घोर अंधेरा था।
था वातावरण अशान्त ऋषि ने वेद सूर्य चमकाया था।
चैत्र प्रतिपदा दिवस ऋषि ने आर्य समाज बनाया था ॥1॥

आर्य जाति की दशा देख कर ऋषि राज अति चिंतित थे।
फंसे हुए पाखण्डों में सब वेद ज्ञान से वंचित थे।
वेद ईश्वरी ज्ञान मानवों के उर में बिठलाया था।
चैत्रसुदी प्रतिपदा दिवस को आर्य समाज बनाया था ॥2॥

भूले भटके भोले जन आकर अपव्यय धन करते थे।
हृदय की सूखी खेती पर वर्षा के लिए तरसते थे।
शुष्क मरुस्थल में आकर सुखशान्त प्रसून खिलाया था।
चैत्र सुदी प्रतिपदा दिवस को आर्य समाज बनाया था ॥3॥

दिशाभ्रान्त यात्रियों को सच्चा रास्ता बतलाके गये।
ज्ञान कर्म, भगती करने का सारा महत्व समझाके गये।
स्वयं किया विषपान देश को वेदामृत पिलाया था।
चैत्र सुदी प्रतिपदा दिवस को आर्य समाज बनाया था ॥4॥

अर्बन एस्टेट जालन्धर में आर्य समाज की स्थापना

जालन्धर की प्रसिद्ध आबादी अर्बन एस्टेट फेज़-I में श्री किशोरी लाल जी भोला के प्रयत्नों से गत दीपावली के दिन 29-10-89 को आर्य समाज की स्थापना कर दी गई। इस आबादी मे कई आर्य समाजी परिवारों ने अपनी अपनी कोठिया बना रखी है परन्तु उन्हें एक दूसरे का पता नहीं था, श्री भोला जी ने सभी परिवारों से मिल कर आर्य समाज का गठन कर दिया जिसका चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

1. श्री किशोरी लाल भोला—प्रधान
2. श्री वीरेश भगत—मन्त्री
3. श्री जगदीश राज गुप्ता—उपप्रधान
4. श्री ओम प्रकाश शर्मा—उपप्रधान
5. ,, सुभाष चन्द्र भारद्वाज—उपप्रधान
6. ,, साधू राम—उपमन्त्री
7. ,, जगदीश नारायण मेहता—कोषाध्यक्ष
8. ,, सतपाल सागड़—आडीटर
9. श्रीमती उत्तरा कुमारी—अन्तरंग सदस्य
10. ,, कन्ता भगत अन्तरंग सदस्य
11. श्री चन्नन सिंह अन्तरंग सदस्य

—वीरेश भगत मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय सादर नमस्ते

आर्य मर्यादा का ऋषिबोध (शिवरात्रि) विशेषांक पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इन भव्य विशेषांक को खोलकर लेखों के शीर्षक एवं लेखकों के नाम पढ़कर प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। अतः इसे आद्योपान्त पढ़ने का शुभ सकल्प स्वतः मन में हो गया। आपका सम्पादकीय विशेष प्रेरणादायक है।

महर्षि दयानन्द का जीवन संसार के महापुरुषों में अद्वितीय एवं उत्कृष्ट है, एवं ऋषिबोध विशेषांकों में जो आर्य जगत की अनेक प्रकाशन संस्थाएं कर रही हैं, आपका विशेषांक भी अद्वितीय, अनुपम एवं उत्कृष्ट है।

इस सुन्दर, ज्ञान वर्धक प्रेरणादायक, संग्रहणीय एवं अनुपम प्रकाशन के लिए कोटिशः धन्यवाद। दि० 27-3-90 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नववर्षारम्भ हो रहा है, कृपया इस अवसर भी एक विशेषांक किसी अप्रकाशित अथवा अप्राप्त कृति की आर्य जनता को भेंट दें।

भवदीय

मन मोहन कुमार आर्य

196/II चक्कूवाला देहरादून-245001

शुभ सूचना

'काश गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक बिशन स्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मैजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1) रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50) रु० में सौ प्रति भेजी जायेगी।

वेद प्रचारक मण्डल

60/13, रामदास रोड़, दिल्ली

आर्य समाज प्रीत नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज प्रीत नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 13 मार्च से 18 मार्च तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की वेद कथा तथा श्री रामनाथ जी यात्री के भजनोपदेश निरन्तर होते रहे। ध्वजारोहण सभा के उप प्रधान श्रीहरवंस लाल जी शर्मा ने अपने कर कमलों से किया। उत्सव में श्री डाक्टर वेदी राम जी श्री पंडित निरन्जनदेव जी, श्री शालिग राम जी पाराशर, श्री आचार्य नरेश जी करतारपुर तथा अन्य कई उपदेशकों ने भाग लिया। 18-3-90 को बृहद ऋषि लंगर हुआ। जिसमें सैंकड़ों लोगों ने प्रीति भोज किया।

—डाक्टर सुखदेव—प्रधान

श्रीवीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

रजि० नं० P.b/J.L. 55
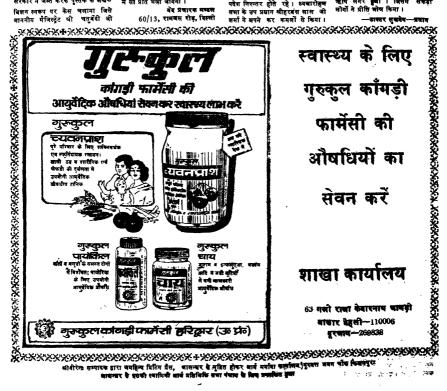
वर्ष 22 अंक 2, 26 चैत्र सम्वत् 2047 तदनुसार 5/8 अप्रैल 1990 दयानन्दाब्द 164 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

आओ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का स्वाध्याय करें—

अथ वेदानां नित्यत्व विचार:

ईश्वरस्य सकाशाद्वेदानामुत्पत्तौ सत्यां स्वतो नित्यत्वमेव भवति तस्य सर्वसामर्थ्यस्य नित्यत्वात् ॥

॥ भावार्थ ॥

अब वेदों के नित्यत्व का विचार किया जाता है सो वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं इससे वे स्वत: नित्यस्वरूप ही हैं क्योंकि ईश्वर का सब सामर्थ्य नित्य ही है।

अत्र केचिदाहु: । न वेदानां शब्दमयत्वान्नित्यत्वं संभवति । शब्दो ऽनित्य: कार्य्यत्वात् । घटवत् । यथा घट: कृतोऽस्ति तथा शब्दोऽपि । तस्माच्छब्दानित्यत्वे वेदानामप्यनित्यत्वं स्वीकार्य्यम् । नैवं मन्यताम् । शब्दो द्विविधो नित्यकार्यभेदात् । ये परमात्मज्ञानस्था: शब्दार्थसंबन्धा: सन्ति ते नित्या भवितुमर्हन्ति । ये ऽस्मदादीनां वर्त्तन्ते तु कार्य्याश्च कुत: । यस्य ज्ञानक्रिये नित्ये स्वभावसिद्धे अनादी स्तस्तस्य सर्वं सामर्थ्यमपि नित्यमेव भवितुमर्हति । तद्विद्यामयत्वाद्वेदानामनित्यत्वं नैव घटते।

॥ भावार्थ ॥

प्र०—इस विषय में कितने ही पुरुष ऐसी शंका करते हैं कि वेदों में शब्द छन्द पद और वाक्यों के योग होने से नित्य नहीं हो सकते जैसे बिना बनाने से घड़ा नहीं बनता इसी प्रकार से वेदों को भी किसी ने बनाया होगा, क्योंकि बनाने के पहिले नहीं थे और प्रलय के अन्त में भी नहीं रहेंगे इससे वेदों को नित्य मानना ठीक नहीं है। उ०—ऐसा आपको कहना उचित नहीं क्योंकि शब्द दो प्रकार का होता है एक नित्य और दूसरा कार्य्य इनमें से जो शब्द अर्थ और संबन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य ही होते हैं और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं वे कार्य होते हैं क्योंकि जिसका ज्ञान और क्रिया स्वभाव से सिद्ध और अनादि है उसका सब सामर्थ्य भी नित्य ही होता है इससे उसकी विद्या स्वरूप होने से नित्य ही है क्योंकि ईश्वर की विद्या अनित्य कभी नहीं हो सकती।

किं च भो: सर्वस्यास्य जगतो विभागं प्राप्तस्य कारणरूपस्थितौ सर्वस्थूलकार्य्याभावे पठनपाठनपुस्तकानामभावात्कथं वेदानां नित्यत्वं स्वीक्रियते। अत्रोच्यते। इदं तु पुस्तकपत्रमसीपदार्थादिषु घटते तथास्मत् क्रियापक्षे च नेतरस्मिन्। अत: कारणादीश्वरविद्यामयत्वेन वेदानां नित्यत्वं वयं मन्यामहे। किं च न पठनपाठनपुस्तकानित्यत्वे वेदानित्यत्वं जायते। तेषामीश्वरज्ञानेन सह सदैव विद्यमानत्वात्। यथास्मिन्कल्पे वेदेषु शब्दाक्षरार्थसंबंधा: सन्ति तथैव पूर्वमासन्नग्रे भविष्यन्ति च। कुत:। ईश्वरविद्याया नित्यत्वादव्यभिचारित्वाच्च। अतएवेदमुक्तमृग्वेदे। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयदिति। अस्यायमर्थ:। सूर्यचन्द्रग्रहणमुपलक्षणार्थं यथा पूर्वकल्पे सूर्यचन्द्रादिरचनं तस्य ज्ञानमध्ये ह्यासीत्तथैव तेनास्मिन्कल्पेपि रचनं कृतमस्तीति विज्ञायते। कुत:। ईश्वरज्ञानस्य वृद्धिक्षयविपर्ययाभावात्। एवं वेदेष्वपि स्वीकार्य्यं वेदाना तेनैव स्वविद्यात: सृष्टत्वात् ॥

॥ भावार्थ ॥

प्र०—जब सब जगत् के परमाणु अलग-अलग होके कारणरूप हो जाते हैं तब जो कार्य रूप सब स्थूल जगत् है उसका अभाव हो जाता है उस समय वेदों के पुस्तकों का भी अभाव हो जाता है फिर वेदों को नित्य क्यों मानते हो।

उ०—यह बात पुस्तक पत्र मसी और अक्षरों की बनावट आदि पक्ष में घटती है तथा हम लोगों के क्रिया पक्ष मे भी बन सकती है वेद पक्ष में नही घटती। क्योंकि वेद तो शब्द अर्थ और संबन्ध स्वरूप हीं हैं मसी कागज पत्र पुस्तक और अक्षरों की बनावट रूप नहीं हैं यह जो मसी लेखनादि क्रिया है सो मनुष्यों की बनाई है इससे यह अनित्य है और ईश्वर के ज्ञान में सदा बने रहने से वेदों को हम लोग नित्य मानते हैं इससे क्या सिद्ध हुआ कि पढ़ना पढ़ाना और पुस्तक के अनित्य होने से वेद अनित्य नहीं हो सकते क्योंकि वे बीजांकुरन्याय से ईश्वर के ज्ञान मे नित्य वर्तमान रहते हैं सृष्टि के आदि में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है और प्रलय में जगत् के नहीं रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है। इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं। जैसे इस कल्प की सृष्टि में शब्द अक्षर अर्थ और संबन्ध वेदों में हैं इसी प्रकार से पूर्व कल्प में थे और आगे भी होंगे क्योंकि जो ईश्वर की विद्या है सो नित्य एक ही रस बनी रहती है उनके एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेकर चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की है कि इनमें शब्द अर्थ संबंध पद और अक्षरों का जिस क्रम से वर्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है। क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है उसकी वृद्धि क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती इस कारण से वेदों को नित्यस्वरूप ही मानना चाहिये ॥

न च वेदानां नित्यत्वे व्याकरणशास्त्रादीनां साक्ष्यर्थं प्रमाणानि लिख्यन्ते। तत्राह महाभाष्यकार: पतंजलिमुनि: ॥ नित्या: शब्दा नित्येषु शब्देषु कूटस्थैरविचालिभिर्वर्णैर्भवितव्यमनपायोपजनविकारिभिरिति। इदं वचनं प्रथमाह्निकमारभ्य बहुषु स्थलेषु व्याकरणमहाभाष्येऽस्ति। तथा श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्य: प्रयोगेणाभिज्वलित आकाशदेश: शब्द:। इदम्। अ इउण् सूत्रभाष्ये चोक्तमिति। अस्यायमर्थ:। वैदिका लौकिकाश्च सर्वे शब्दा नित्या: सन्ति। कुत:। शब्दानां मध्ये कूटस्था विनाशरहिता अचला अपायाया अनुपजना अविकारिणो वर्णा: सन्त्यत:। अपायो लोपो निवृत्तिरग्रहणम्। उपजन आगम:। विकार आदेश: एते न विद्यन्ते येषु शब्देषु तस्मान्नित्या शब्दा: ॥

॥ भावार्थ ॥

यह जो वेदों के नित्य होने का विषय है इसमें व्याकरणादि शास्त्रों का प्रमाण साक्षी के लिए लिखते हैं इनमे से जो व्याकरण शास्त्र है सो संस्कृत और भाषाओं के सब शब्द विद्या का मुख्य मूल प्रमाण है उसके बनाने वाले महामुनि पाणिनि और पतञ्जलि हैं उन का ऐसा मत है कि सब शब्द नित्य हैं क्योंकि इन शब्दों में जितने अकारादि अवयव हैं वे सब कूटस्थ अर्थात् विनाश रहित हैं और वे पूर्वापर विचलते भी न हों उनका अभाव व आगम कभी नहीं होता तथा कान से सुनकर जिनका ग्रहण होता है बुद्धि से जो जाने जाते हैं जो वाक् इन्द्रिय से उच्चारण करने से प्रकाशित होते हैं और जिनका निवास का स्थान आकाश है उनको शब्द कहते हैं। इससे वैदिक अर्थात् जो वेद के शब्द और वेदों से जो शब्द लोक मे आये हैं वे लौकिक कहाते हैं वे भी सब नित्य ही होते हैं क्योंकि उन शब्दों के मध्य में सब वर्ण अविनाशी और अचल हैं तथा इनमे लोप आगम और विकार नहीं बन सकते इस कारण से पूर्वोक्त शब्द नित्य हैं ॥

(क्रमश:)

व्याख्यानमाला—30

सुखी गृहस्थ के लक्षण

—ले० श्री सत्यदेव राज जी शास्त्री अधिष्ठाता
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

वयांसि पशवश्चैव भूतानि च जनाधिप।
गृहस्थैरेव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठो गृहाश्रमी ॥1॥

हे राजन्! ये गृहस्थी ही हैं जो पशु-पक्षी तथा अन्य प्राणियों की पालना करते हैं। अतएव गृहस्थी अन्यों (ब्रह्मचारी-वानप्रस्थी-सन्यासी) की अपेक्षा ज्येष्ठ है।

न्यायार्जितधनस्तत्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः।
श्राद्धकृत्सत्यवादी च गृहस्थोऽपि विमुच्यते ॥2।

न्याय से धन कमाने वाला, तत्व ज्ञान में निष्ठा रखने वाला, अतिथियों की सेवा करने वाला, पितरों के प्रति श्रद्धायुक्त कर्म करने वाला एवं सत्यवादी गृहस्थी भी मुक्त हो सकता है।

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥3॥

जैसे नदी नाले समुद्र मे जाकर स्थान पाते हैं वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थियों के यहा ही स्थान प्राप्त करते हैं।

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः ॥4॥

जैसे वायु का आश्रय लेकर सब जीव जन्तु जीवित हैं वैसे ही गृहस्थी मनुष्य का आश्रय लेकर सब आश्रम जीवन धारण करते हैं।

यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही ॥5॥

ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम वाले सदा गृहस्थी के अन्न दान से ही पालन किये जाते हैं इसीलिए गृहस्थ आश्रम सब आश्रमों से बड़ा है।

स संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखञ्चेहेच्छता नित्यंयोऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः ॥6॥

नित्य सुख तथा अक्षय स्वर्ग चाहने वाले प्रबल मनुष्य द्वारा ही वह गृहस्थ आश्रम प्रयत्नपूर्वक धारण करने योग्य है कमजोर इन्द्रियों वाले पुरुषों को गृहस्थ में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा।
एते गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥7॥

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी, और सन्यासी ये चार आश्रम गृहस्थ आश्रम से पैदा हुए अलग-अलग आश्रम हैं।

सर्वेषामपि चैतेषां वेद स्मृतिविधानतः।
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान्बिभर्ति हि ॥8॥

वेद और स्मृतिओं के विधान से इन सबमें से गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि वह अकेला ही इन तीनो आश्रमों का भरण पोषण करता है।

अस्ति पुत्रो वशे यस्य भृत्यो भार्या तथैव च।
अभावे सति सन्तोषः स्वर्गस्थोऽसौ महीतले ॥9॥

पुत्र जिसके वश मे है, भार्या और सेवक भी जिसके वश में रहते हैं, अभाव मे भी जो सन्तोष रखता है, ऐसा गृहस्थी पृथ्वी पर रहता हुआ भी स्वर्ग में रहता है।

अतिथिबालकः पत्नी जननी जनकस्तथा।
पञ्चैते गृहिणा पोष्या इतरे च स्वशक्तितः ॥10॥

अतिथि, बालक, पत्नी, माता तथा पिता इन पाचों का पालन पोषण करना गृहस्थी का कर्तव्य है और शेष की पालना भी अपनी शक्ति के अनुसार अवश्य करनी ही चाहिए।

मातरं पितरं पुत्रं दारानतिथिसोदरान्।
हित्वा गृही न भुञ्जीयादेकाकी तु कदाचन ॥11॥

माता, पिता, पुत्र, पत्नी, अतिथि और भाई इनको छोड़कर गृहस्थी कभी अकेला भोजन न करे।

विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यञ्चामृतभोजनः।
विघसं भुक्तशेषन्तु यज्ञशेषमथामृतम् ॥12॥

पाप रहित भोजन करने वाला सदा अमृत भोजन करता है। पाप रहित भोजन से बचा हुआ तो यज्ञ शेष अथवा अमृत होता है।

गृहस्थं हि सदा देवाः पितरोऽतिथयस्तथा।
भृत्याश्चैवोपजीवन्ति तान्भरस्व महीपते ॥13॥

हे राजन्! देवता, पितर, अतिथि और सेवक सदा गृहस्थी का खाते हैं। इसीलिए आप इन सबका भरण पोषण करें क्योंकि आप भी गृहस्थी हैं।

अतिथिः पूजितो यस्य गृहस्थस्य तु गच्छति।
नान्यस्तस्मात्परो धर्म इति प्राहुर्मनीषिणः ॥14॥

जिसके घर का अतिथि पूजा सत्कार पाकर जाता है उससे बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है ऐसा विद्वान कहते हैं।

पात्रन्त्वतिथिमासाद्य शीलाढ्यं यो न पूजयेत्।
स दत्त्वा दुष्कृतं तस्मै पुण्यमादाय गच्छति ॥15॥

शीलवान एवं पात्र अतिथि को पाकर जो पूजा नहीं वह अतिथि उसे अपने पाप देकर और उसके पुण्य लेकर चला जाता है।

देवैश्चैव मनुष्यैश्च तिर्यग्भिश्चोपजीव्यते।
गृहस्थः प्रत्यहं यस्मात्तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही ॥16॥

देवता, मनुष्य, पशु-पक्षी प्रतिदिन गृहस्थ से जीविका पाते हैं इसलिए गृहस्थ आश्रम सबसे बड़ा है।

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेव च ॥17॥

सद्गृहस्थी को चाहिए कि वह ब्रह्म मुहूर्त में जागकर धर्म का चिन्तन करे, शारीरिक क्लेशों के मूल कारणों के बारे विचार करे तथा वेदों के तत्त्व का अवगाहन करे।

तप्त्वा तपस्वी विपिनेक्षुधार्तो,
गृहं समायाति सदाऽन्नदातुः।
भुक्त्वा स चान्नं प्रददाति तस्मै,
तपो विभागं भजते हि तस्य ॥18॥

जंगल में भूखा तपस्वी तप करके जब अन्न देने वाले गृहस्थी के घर में आता है वह उसके घर मे अन्न खाकर उसे अपने तप का भाग देता है और उसकी सेवा करता है।

सुविप्रपादोदककर्दमानि सुवेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि।
स्वाहास्वधाकारनिरन्तराणि स्वानन्दतुल्यानि गृहाणि तानि ॥19॥

पवित्र ब्राह्मणों के चरणों के जल के कीचड़ वाले, वेद शास्त्र की ध्वनि से युक्त, स्वाहा और स्वधाकार के शब्दों से निरन्तर पूर्ण जो गृहस्थियों के घर होते हैं वे ब्रह्मानन्द के समान सुख देने वाले होते हैं।

वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणा,
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अकुत्सिते कर्मणियः प्रवर्तते,
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।20॥

रागी अर्थात् विषयी मनुष्यों को जंगल में भी रागादि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसके विपरीत घर में ही पांचों इन्द्रियों पर संयम रख कर तप करने वाला जो मनुष्य शुभ कर्म में प्रवृत्त होता है ऐसे राग रहित पुरुष का घर ही तो तपोवन है।

स्वकर्मधर्मार्जित जीवितानां स्वेष्वेव दारेषु सदा रतानाम्।
जितेन्द्रियाणामतिथिप्रियाणां गृहेऽपि मोक्षः पुरुषोत्तमानाम् ॥21॥

अपने धर्म कर्म द्वारा जीविका को अर्जित करने वाले सदा अपनी स्त्रियों में ही अनुरक्त रहने वाले, अतिथियों से ही प्यार करने वाले इन्द्रियों को जीतने वाले उत्तम पुरुषों का मोक्ष घर में भी हो सकता है।

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता न दुर्भाषिणी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिचाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्ठान्नपानं गृहे,
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥22॥

आनन्द से परिपूर्ण घर, पढ़े लिखे पुत्र, मधुर भाषिणी पत्नी, पवित्र मित्र से धर्म से कमाया हुआ धन, अपनी स्त्री में ही अनुराग, आज्ञा पालक सेवक, अतिथि सत्कार, शिव पूजन, घर में मधुर (मीठा) अन्न पान, साधु की संगति जिस गृहस्थ के घर में निरन्तर ऐसा क्रम चलता है वह गृहस्थ आश्रम धन्य है।

मानुष्यं वरवंशजन्म विभवो दीर्घायुरारोग्यता,
सन्मित्रं सुसुतः सती प्रियतमा भक्तिश्च नारायणे।
विद्वत्त्वं सुजनत्वमिन्द्रियजयः सत्पात्रदाने रतिः,
ते पुण्येन बिना त्रयोदश गुणाः संसारिणां दुर्लभा ॥23॥

मनुष्य होना, श्रेष्ठ कुल में जन्म होना, धन का होना, लम्बी आयु और स्वास्थ्य का होना, सच्चा मित्र, सच्चा पुत्र, सती नारी तथा भगवान् में भक्ति का होना, विद्वत्ता, सज्जनता, इन्द्रियों का जीतना एवं सत्पात्र में दान देने का स्वभाव ये तेरह गुण पुण्य के बिना सांसारिकजनों (गृहस्थियों) के लिए दुर्लभ होते हैं।

सम्पादकीय—

बचो ! बचो ! इस्लाम के इन ठेकेदारो से

धर्मनिरपेक्षता क्या है ? इसकी आज तक व्याख्या नहीं हुई लेकिन धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदार प्राय: यह समझते हैं कि जो हिन्दुओं को गालियां दे वही धर्मनिरपेक्ष हैं। ऐसे लोगों को हर तरह से प्रोत्साहित किया जाता है। और उन्हें वहां पहुंचाया जाता है जहां उनके लिए कोई जगह नहीं होती।

जनता दल एक नई पार्टी बनी है उसकी यह कोशिश रहती है कि अपने साथ अधिक से अधिक उन लोगों लेकर चलें जो अपने आपको धर्मनिरपेक्ष कहते हों, चाहे वह चोर डाकू ही क्यों न हों लेकिन वह धर्मनिरपेक्ष अवश्य होने चाहिए अर्थात् जो हिन्दुओं को और हिन्दू धर्म को खूब गालियां देते हों।

एक नया उदाहरण मेरे इस विचार की पुष्टि करता है। आजकल राज्यसभा के लिए नए सदस्यों का चुनाव हो रहा है। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने राज्य सभा के लिए अपने उम्मीदवार मनोनीत किए हैं। जनता दल ने उत्तर प्रदेश का एक मौलवी इसके लिए मनोनीत किया है। उसका नाम है मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी। उसकी सिफारिश सम्भवत: दिल्ली के शाही इमाम ने की है और जनता दल के प्रधान श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह शाही इमाम के बहुत श्रद्धालु हैं। इसलिए मौलाना बुखारी की सिफारिश को वह रद्द नहीं कर सके। और अब्दुल्ला खान आजमी को जनता दल की ओर से राज्यसभा के लिए मनोनीत कर दिया गया है।

लेकिन यह अब्दुल्ला खान है कौन ? कहते हैं कि यह बरेली के उन मौलवियों में से है जो जगह जगह घूम कर इस्लाम का प्रचार करते हैं। उनमें से कुछ उच्चकोटि के वक्ता हैं। जब भाषण देते हैं तो लोगों पर जादू करते हैं और जहां तक इस व्यक्ति अर्थात अब्दुल्ला खान आजमी का सम्बन्ध है उसके भाषणों के कैसेट भी बने हुए हैं। जो बिकते भी हैं और इस्लाम के प्रचार के लिए मुफ्त भी बांटे जाते हैं।

यह मौलवी साहब जिन्हें जनता दल ने राज्य सभा के लिए मनोनीत किया है किस तरह के भाषण देता है नीचे प्रस्तुत कर रहा हूं। यह सब दिल्ली के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक "टाईमज़ आफ इंडिया" ने प्रकाशित किए हैं और उसने यह प्रश्न भी किया है कि ऐसे व्यक्ति को जनता दल की ओर से राज्यसभा का उम्मीदवार क्यों मनोनीत किया गया है।

मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी ने अपने एक भाषण में कहा है—

न घबराओ मुसलमानो खुदा की शान—बाकी है
अभी इस्लाम जिन्दा है अभी कुरान—बाकी है
यह काफिर क्या समझते हैं जो अपने—दिल में हंसते हैं
अभी तो करबला का आखिरी मैदान—बाकी है

और फिर वही मौलाना कहते हैं कि—

"राजनीति का इस्तेमाल हम धर्म के लिए करेंगे। राजनीति का इस्तेमाल हम कौम के लिए करेंगे"

देश के सबसे बड़े न्यायालय सुप्रीमकोर्ट के बारे में यह साहब कहते हैं

"हम किसी अदालत के आदेश के पाबंद नहीं हैं। हाई कोर्ट तो क्या यदि सुप्रीम कोर्ट भी इस्लामी कानून के खिलाफ कुछ कहेगा तो हम उसे भी जूते की नोक पर रख देंगे।"

इस्लाम और हिन्दू धर्म, इन दोनों में तुलना करते हुए मौलवी खान कहता है,

"यह इस्लाम था जिसने हिन्दू लड़कियों को जीवित दबा देने का रिवाज खत्म किया था। और यह इस्लाम था जिसने सतीप्रथा खत्म की थी। हिन्दू अपनी विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं देते और यदि सुबह किसी विधवा की शक्ल देख लें तो उसे अपशकुन समझते हैं। लेकिन इस्लाम ने उन्हें सम्मान दिया।"

जिन दिनों इंदिरा गान्धी जीवित थी यह मौलवी कहा करता था कि "एक विधवा दिल्ली में भी रहती है। कई लोग सुबह इसके दर्शनों के लिए जाते हैं। जब एक विधवा लोगों में परमिट और लाईसैंस बांटती है तो उसके दर्शन करना बुरा नहीं समझा जाता। लेकिन एक कुंवारी लड़की के दर्शन करना ठीक नहीं समझा जाता। इस्लाम इस तरह की दोगली नीति की अनुमति नहीं देता।"

महिलाओं के लिए समान अधिकारों की मांग करने वालों की आलोचना करते हुए मौलाना अब्दुल्ला ने कहा।

"जो लोग औरतों के लिए ये अधिकार मांगते हैं वह न केवल यह चाहते हैं कि यह आई० ए० एस० में भर्ती हो जाएं बल्कि वह यह भी चाहते हैं कि यह विमान चालक भी बनें। वह इन्हें बाल कटी कबूतरी बनाना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं "कि यह औरते टैडी पैंट पहनें"

और फिर इस मौलवी ने यह भी कहा है कि

"यदि ये लोग चाहते हैं कि स्त्रियों और पुरुषों के बराबर के अधिकार हों तो फिर पुरुषों को भी हर रोज एक बार खाना पकाना चाहिए और एक बार औरत को पकाना चाहिए। यदि औरत एक बच्चा पैदा करती है तो उसके पति को भी उसी तरह एक बच्चा पैदा करना चाहिए। ऐसी स्थिति में दोनों के बराबर के अधिकार होंगे।"

हिन्दुओं और मुसलमानों में जो अन्तर है उसका उल्लेख करते हुए मौलाना कहता है—

"आप लोगों ने महात्मा गांधी को मारा। आपने इन्दिरा गांधी को मारा। जब कोई हिन्दू मर जाता है उसकी लाश गंगा में फैंक दी जाती है। वह बहती हुई पाकिस्तान चली जाती है। लेकिन जब एक मुसलमान मरता है तो उसे इसी देश की मिट्टी में दफना दिया जाता है। फिर कहा जाता है कि मुसलमान इस देश के वफादार नहीं हैं।"

और फिर वह कहता है "भारत माता के असली सपूत तो मुसलमान हैं बाकी सब कपूत हैं। जो लोग मुसलमानों के विरुद्ध यह प्रचार करते हैं कि वह इस देश के वफादार नहीं हैं उनमें से कई गरीब लड़कियों की गरीबी का अनुचित लाभ उठाते हैं। इन लड़कियों को दिन में अपनी प्राईवेट सैक्रेटरी बनाते हैं और रात को इन सीताओं की इज्जत लूटते हैं।"

यह है वह मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी जिसे जनता दल ने अपनी ओर से राज्यसभा के लिए मनोनीत किया है। जो लोग अपने आपको धर्मनिरपेक्ष कहते हैं वह प्राय: आंख के अंधे और कान के बहरे होते हैं। उन्हें जो भी कमियां नजर आती है केवल हिन्दुओं में नजर आती है। किसी दूसरे में नहीं। जो व्यक्ति यह कहता है कि अभी तो करबला का आखरी मैदान बाकी है वह तो राष्ट्रवादी है और यदि कोई हिन्दू रामभूमि की बात कर दे तो वह साम्प्रदायिक है। कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना नए सिरे से फिर क्यों तेज हो रही है। इसका उत्तर बहुत आसान है। इसके लिए या तो मौलवी अब्दुल्ला खान जैसे लोग जिम्मेदार हैं या जनता दल जैसी पार्टियां जो अब्दुल्ला और शाही इमाम जैसे लोगों को संरक्षण देती हैं।

—वीरेन्द्र

जन कल्याण समिति

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यकारिणी ने अपनी बैठक दिनांक 21 मार्च 1990 को यह निर्णय लिया है कि हमारे जो भाई काश्मीर और पंजाब से अपने घरों को छोड़ कर और उग्रवादियों द्वारा पीड़ित हो कर इधर उधर भटक रहे हैं उनकी सहायता के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपनी ओर से जो कुछ कर सकती है उसे करना चाहिए। विशेषकर उनकी निम्नलिखित तीन आवश्यकताएं हमें पूरी करनी चाहिएं। पहली यह कि जिनके पास अपनी लड़कियों के विवाह करने के लिए साधन नहीं हैं उनकी सहायता की जाए। दूसरा यह कि जो व्यक्ति बीमार हैं और अपना इलाज नहीं करा सकते उनकी सहायता की जाए। तीसरा यह कि जिन बच्चों की शिक्षा आगे जारी रखने के लिए माता पिता के पास साधन नहीं हैं उनकी सहायता की जाए। इस कार्यक्रम को आगे ले जाने के लिये यह आवश्यक है कि सब आर्य समाजें समय समय पर सभा को सूचित करती रहें कि ऐसे कौन से परिवार हैं जिन्हें सहायता की आवश्यकता है। जो परिवार सीधे सभा को सहायता के लिए लिखना चाहें वह भी लिख सकते हैं। प्रत्येक परिवार की ओर से सहायता के लिए सभा को जो भी पत्र आए वह उनकी स्थानीय आर्य समाज के प्रधान या मंत्री द्वारा प्रमाणित होना चाहिए। इन की सहायता कैसे करनी है इस पर विचार करने और अन्तिम निर्णय लेने के लिए निम्नलिखित महानुभावों की एक जन कल्याण समिति बनाई गई है जो प्रार्थना पत्र समय समय पर आएगे उन पर विचार करके जो सहायता करनी है वह यह समिति किया करेगी। इसके साथ यह समिति इन पीड़ित भाईयों की सहायता के लिए और भी साधन जुटाने का प्रयास करती रहेगी। निम्नलिखित महानुभाव इसके सदस्य होंगे—

1—पंडित हरबंस लाल जी शर्मा—अध्यक्ष,
2—पंडित ब्रह्मदत्त जी शर्मा—सदस्य,
3—श्री रणवीर भाटिया—महामन्त्री,
4—श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न—सदस्य,
5—श्री डाक्टर के० के० पसरीचा—सदस्य,
6—श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट—सदस्य,
7—श्री राम सुभाया जी नन्दा—सदस्य
8—श्रीमति कृष्णा कोछड़ जी—सदस्य,
9—श्रीमती कमला आर्या—संयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से यह प्रार्थना है कि अपने क्षेत्र में जो ऐसे परिवार हो जिनकी हम सहायता कर सकें उन का पता कर के सभा को सूचित करें और यदि किसी के पास किसी परिवार की ओर से कोई प्रार्थना पत्र आए तो उसे सभा को भेज दिया जाए।

—वीरेन्द्र (सभा प्रधान)

हिन्दु नहीं आर्य

—ले०श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

जिस प्रकार हमारे देश का नाम आर्यावर्त से भारतवर्ष तथा भारतवर्ष से हिन्दुस्तान और अन्त में हिन्दुस्तान से इण्डिया तक पहुंचा है, ठीक इसी प्रकार हमारा नाम भी आर्य से हिन्दु तथा हिन्दु से 'काला आदमी' तक पहुंचा है। यद्यपि हमें काले आदमी के नाम से पुकारने वाली रक्तवर्ण धारी जाति यहां से जा चुकी है और उसके जाने के पश्चात् यह शब्द एक प्रकार से शब्द मात्र ही रह गया है। किन्तु इसी प्रकार बलात् हमारे ऊपर लादा जाने वाला हिन्दु शब्द अभी यहां उपस्थित है तथा हमें इस प्रकार से चिपट चुका है कि कालान्तर में यदि इस शब्द के छूट जाने की कोई आशा हो भी तो भी हम स्वयं इसे छोडने के लिए किसी प्रकार तैयार नहीं।

जब से महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने यह प्रचार किया कि हम लोग हिन्दू नहीं आर्य हैं। हम आर्यों की सन्तान हैं और हमारे देश का नाम आर्यवर्त है, तभी से आर्य समाज विरोधी विचार धाराओं को आन्दोलित करने के लिए सनातन धर्म सभाओं आदि की स्थापना करके 'हम हिन्दु हैं' इत्यादि बातों की पुष्टि के लिए भांति-भांति के प्रयत्न किए जा रहे हैं, तथा यह युक्ति दी जाने लगी है कि हम इसलिए हिन्दु हैं क्योंकि हिन्दुओं की सन्तान हैं अर्थात् हमारे पिता-पितामह भी हिन्दु थे। यह विचार कदापि नहीं किया जाता कि जब हमारे ऊपर यह शब्द लादा गया था, तब हमारे देश में अविद्या का प्रकोप था। अत: हम वास्तविकता को न खोज सकें यदि किन्हीं महानुभावों ने ऐसा प्रयत्न किया भी हो तो वह अपनी अशक्तता के कारण इस स्थापना का निवारण न कर सके। फलत: हमें इस विदेशी देन को आभूषण समझ धारण किए रहना पड़ा। परन्तु वर्तमान समय में जबकि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने इस रहस्य का उद्घाटन कर ही दिया तो हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम वास्तविकता की खोज करें और अपने स्वरूप को पहचानें।

जिस समय विदेशिओं ने हिन्दु शब्द को हमारे ऊपर थोपा था, उस समय हममे न तो इतना साहस ही था और न योग्यता थी कि इस प्रस्थापना का विरोध करते, फलत: इस विदेशी देन को हमने अपना सौभाग्य या दुर्भाग्य समझ कर ग्रहण कर लिया तथा कुछ पीढियों के पश्चात् हम अपने सही नाम को भूल गए। परन्तु अब जबकि हम स्वतन्त्र हैं, हमारा देश स्वतन्त्र है और हमारी बुद्धियां स्वतन्त्र हैं तो हमें स्वतन्त्रतापूर्वक तथ्य की खोज करना तथा सत्य को मानना चाहिए। हमारी सम्मति में तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा ही उद्यत रहना चाहिए।

हिन्दु शब्द के पक्षपातियों का कहना है कि हम लोगों को विदेशियों ने सिन्धु नदी के निकट रहने के कारण हिन्दु नाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि उनकी भाषा में 'स' के स्थान पर 'ह' का प्रयोग होता था। हमारा कहना है यदि 'स' को 'ह' होकर कोई परिवर्तन होना था तो सिन्धु नदी को हिन्दु नदी होना चाहिए था और सिन्धु प्रान्त को हिन्दु प्रान्त होना चाहिए था। यह सब तो हुआ नहीं—हम हिन्दु हो गए, जबकि हमारे आर्य में 'स' है ही नहीं, जिसे उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुसार 'ह' का रूप हो जाना था। यह तो ठीक वही बात हुई कि 'मूल' तो रहा आम का और लगे 'बबूल' अर्थात् सिन्धु नदी सिन्धु नदी ही रही और सिन्धु प्रान्त सिन्धु प्रान्त ही रहा। सिद्धान्तानुसार 'स' का 'ह' दोनों में से किसी भी शब्द में नहीं हुआ अपितु आर्य का हिन्दु हो गया और इस युक्ति को जो बालू की दीवार है, लौह दुर्ग समझ कर प्रस्तुत किया जाता है। पता नहीं भाषा शास्त्र के किस सूत्र के आधार पर यह भाषा विज्ञान का सिद्धान्त निश्चय किया गया है। ऐसी बातें वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे बुद्धि तथा ज्ञान का अजीर्ण हो गया है।

यदि हम सिन्धु नदी के तट पर रहने से हिन्दु कहलाये तो उससे पहले क्या कहलाते थे? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिस पर विचार न करना सर्वथा मूर्खता होगी। यदि उससे पहले हम आर्य कहलाते थे तो भी हमें इस पराये लबादे को उतार कर अपनी ही वस्तु को अपनाना शोभा देता है, क्योंकि वह अपनी वस्तु इसकी तुलना में अत्यन्त मूल्यवान् है अत: हिन्दु शब्द के पक्ष मे दी जाने वाली युक्ति सर्वथा निस्सार है।

दूसरी युक्ति जो हिन्दु शब्द के पक्ष मे दी जाती है, वह यह है कि हिं-हिंसा तथा दु-दूर अर्थात् जो हिंसा से दूर हों, वह हिन्दु। परन्तु यह शब्दार्थ भी मनगढ़न्त है, इसकी सत्यता के लिए कोई प्रमाण नहीं। इसका खण्डन भी इस प्रकार सहज ही में हो जाता है कि हिं-हिंसा तथा दु-दूसरों की अर्थात् जो दूसरों की हिंसा करे, वह हिन्दु। अब बताइये कि यदि उपर्युक्त अर्थ ठीक है तो हमारा किया अर्थ ठीक क्यों नहीं? यदि यह अशुद्ध है तो वह भी अशुद्ध। एतदर्थ यह युक्ति भी सार हीन ही है।

तीसरी युक्ति है कि हिमालय से हिन्दु 'कुमारी' अन्तरीप तक जितना प्रदेश है, उसके रहने वाले हिन्दु। हिमालय का 'हि' तथा इन्दु का 'न्दु' लेकर हाथी का सिर और मनुष्य के शरीर द्वारा जिस प्रकार गणेश की उत्पत्ति बतलायी जाती है, ठीक उसी प्रकार यहां भी कलम चलाने का प्रयत्न किया गया है। भला कौन बुद्धिमान् इन बातों को मानेगा? यह तो वहीं बात हुई 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा।'

एक चौथी युक्ति इसके पक्ष में श्री पं० दीनानाथ जी शास्त्री द्वारा "वैदिक धर्म" जोलाई 1951 ई० के अंक में प्रस्तुत की गई थी और वह थी ऋग्वेद 1/64/27 व अथर्व 9/10/5 का मंत्र जिसके दो भागों में से प्रत्येक का पहला शब्द लेकर हिन्दु शब्द बनता है अर्थात् प्रथम पाद का 'हि' तथा द्वितीय पाद का 'दू'। परन्तु कम से कम हमारी समझ में यह नहीं आता कि शास्त्री जी के कथनानुसार यदि इस प्रकार हिन्दु शब्द बन जाता है तो मन्त्र के शेष भाग का क्या उपयोग रहा तथा इतनी बड़ी रचना क्यों रची गयी? यदि उक्त मन्त्र से केवल हिन्दु शब्द की प्रस्थापना ही अभिप्रेत थी तो या तो दोनों पादों के प्रथम शब्द 'हि' तथा 'दू' पर ही बस कर देना था या फिर सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ हिन्दु शब्द का समर्थक और परिभाषा प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए था। ये बात ऐसी है नहीं अपितु यह मन्त्र एक विशेष अर्थ रखता है, स्थानाभाव के कारण जिसे यहां नहीं दिया जा सकता अतएव यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस मन्त्र से हिन्दु शब्द की सिद्धि नहीं होती।

उपर्युक्त युक्तियों के खण्डन के पश्चात् हमें आशा करनी चाहिए कि पाठक किसी भी प्रकार अपने को हिन्दु मानने को तैयार न होंगे। अब यदि कुछ शेष रहता है तो वह यह कि हम जब इतने लम्बे समय से हिन्दु कहलाते आए हैं तो अब नाम परिवर्तन से क्या लाभ? इसके लिए इतना ही उत्तर पर्याप्त है कि मार्ग भूला हुआ कोई व्यक्ति यदि ठीक मार्ग आने के लिए कहे कि अब इतनी देर से इसी मार्ग पर आ रहा हूं तो अब उस मार्ग पर जाने से क्या लाभ? तो थोड़ी बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी ऐसे व्यक्ति को मूर्ख के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहेगा, परिणामत: 'जहां नेत्र खुले वहीं दिन निकला' की लोकोक्ति के अनुसार ठीक मार्ग पर आ जाना ही श्रेयस्कर है।

इतने लेख के पश्चात् अब पाठकों के विचारार्थ आर्य शब्द की पुष्टि में भी कुछ लिखना अनिवार्य हो जाता है। आर्य शब्द के अर्थ 'ऋ गतौ' धातु से निष्पन्न होने के कारण गतिशील, प्रगतिशील, श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी आदि होते हैं। वेद तथा वेदानुकूल साहित्य से हमें जो कुछ उपलब्ध हुआ है, उसमें से थोड़ा सा पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है।

यथा :—बिजानीह्यार्यान्ये च दस्यव:। ऋ०1/51/8 तथा आर्यावृता विसृजन्तो अधिक्षमि। ऋ०10/65/11 आदि वेद वाक्यों में सत्य, अहिंसा, पवित्रतादि उत्तम बातों को धारण करने वालों को आर्य कहा गया है तथा निरुक्त में भी 'आर्य: ईश्वर पुत्र:' है आर्य ईश्वर पुत्र को कहते हैं, ऐसा पाया जाता है। गीता में—

कुतस्त्वा कश्मलमिदं
विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकी—
र्तिकरमर्जुन। अध्या० 2/2॥

इस श्लोक द्वारा युद्ध के समय कायरता को प्राप्त हुए अर्जुन की वृत्ति को अनार्यों की वृत्ति कहा है, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि आर्य उत्तम वृत्ति वाले अर्थात् श्रेष्ठ लोग कहलाते हैं। विदुर नीति के—

आर्य कर्माणि रज्यन्ते भूति
कर्माणि कुर्वते।
हितं च नाभ्यसूयन्ति पण्डिता
भरतर्षभ्॥ 1/30॥

इस उद्धरण में अत्यन्त धार्मिक मनुष्य को आर्य कहा गया है तथा चाणक्य नीति में भी—

अभ्यासाद्धार्यते विद्या कुलं
शीलेन धार्यते।
गुणेन ज्ञायते त्वार्य: कोपो
नेत्रेण गम्यते॥

अभ्यास से विद्या, सुशीलता से कुल, गुण से आर्य और नेत्र से क्रोध का ज्ञान होता है।

इसके अतिरिक्त महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र, अमर कोष तथा बौद्ध दर्शनों इत्यादि में से अनेकानेक प्रमाण देकर आर्य शब्द की महानता सिद्ध की जा सकती है, किन्तु हिन्दु शब्द की महानता के कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं। भले ही पक्षपात से खींचतान कोई कितनी ही कर ले।

(क्रमश:)

कर्तव्यनिष्ठ-दृढ़व्रती श्री रामनाथ जी सहगल

ले०—श्री क्षितीश वेदालंकार सम्पादक आर्य जगत दिल्ली

मनीषी शुभ बुद्ध के धनी श्री सहगल कुशल संगठनकर्ता हैं। कोई भी समस्या कितनी ही जटिल क्यों न हो, वे उसका समाधान प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। यही कारण है कि आरम्भ में एक साधारण क्लर्क के रूप में पंजाब नेशनल बैंक में प्रविष्ट होने वाले सहगल जी, वहां से प्रबन्ध के पद से कार्य मुक्त हुए चालीस वर्ष तक बैंक की सेवा में रहते हुए न केवल बैंक की अपितु बैंक कर्मचारियों की भी अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। आरम्भ में वे बैंक कर्मचारियों के संगठन में सक्रिय रहे और कर्मचारियों को अनेक प्रकार से लाभान्वित किया। तदन्तर वे पंजाब नेशनल बैंक अधिकारी वर्ग के संगठन के संस्थापक अध्यक्ष और प्रगति में सहायक बने। बैंक में कार्यरत रहते हुए भी वे अनेक सामाजिक सांस्कृति एवं शैक्षिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

उन्होंने 1973-75 में मेरठ, अम्बाला, कानपुर और दिल्ली में आर्य समाज शताब्दी समारोहों का संयोजन किया। इसके अतिरिक्त 1983 में अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का भी कुशल संयोजन इन्हीं के बस का था इस सम्मेलन की अध्यक्षता, श्रीमती इन्दिरा गांधी ने की थी। इसमें लगभग पांच लाख ऋषि भक्तों ने भाग लिया था। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधा कृष्णन ने कार्य कुशलता की सराहना की। सन् 1973 में आर्य प्रादेशिक सभा के वाराणसी शताब्दी समारोह के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद तथा उपराष्ट्रपति श्री बी० डी० जत्ती ने भी उनकी सराहना की। परोपकारिणी सभा के प्रधान ने श्री सहगल को आर्य समाज के क्षेत्र में की गई उनकी सेवाओं के लिए पदक प्रदान किया। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के शताब्दी समारोहों में रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त ने उनको सम्मानित किया।

श्री सहगल ने 1978 में नैरोबी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में तथा 1980 में लन्दन में सम्पन्न सार्वभौम आर्य महासम्मेलन में भारत से जाने वाले एक सौ प्रतिनिधियों का नेतृत्व किया। अप्रैल 1989 में चण्डीगढ़ की डी० ए० वी० संस्थाओं की ओर से चमनलाल डी० ए० वी० सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, पंचकुला के वार्षिक समारोह में उन्हें स्थानीय डी० ए० वी० के प्रसिद्ध नेता जस्टिस पी० सी० पंडित द्वारा स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया। श्री सहगल ने पिछले 45 वर्षों में जो आर्य समाज का कार्य किया है, उसके लिए श्री जस्टिस पी० सी० पंडित ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा संचालित अनेक विद्यालयों के अवैतनिक प्रबन्धक के रूप में वे कई वर्षों से कार्यरत हैं। बैंक की सेवा से मार्च 1986 में कार्य मुक्त होने के उपरान्त वे सम्प्रति निम्न संस्थाओं को अवैतनिक रूप से अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं—

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मन्त्री, श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मन्त्री डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के मन्त्री, आर्य समाज "अनारकली" के मन्त्री, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, नई दिल्ली के अध्यक्ष, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष, वेद प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्यन लीग की परिषद के सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सदस्य, श्रीमती परोपकारिणी सभा के ट्रस्टी, "आर्य जगत्" साप्ताहिक के मुद्रक प्रकाशक, "शुद्धि समाचार" मासिक मुद्रक प्रकाशक, डी० ए० वी पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ, आर० के० पुरम, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, एन० आई० टी० फरीदाबाद, दयानन्द माडल स्कूल, एवं दयानन्द माडल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली आदि के प्रबन्धक तथा डी० ए० वी० बेचड़ा के प्रधान हैं।

उनका अपना व्यक्तिक जीवन बड़ा सादा और सरल है। प्रातः काल ब्रह्ममूहर्त में निद्रा त्यागने से लेकर रात्रि में निद्रा की गोद में जाने तक उनका प्रत्येक क्षण समयबद्ध कार्यक्रम में सुचालित रहता है उनकी जीवन संगिनी श्रीमती कमलेश सहगल, सुपुत्र श्री अजय सहगल तथा पुत्रवधु श्रीमती रीटा आदि उनके कार्य में सदा सहायक रहते हैं। जिन जिन संस्थाओं से वे सम्बद्ध हैं उनके कार्यकर्ताओं से भी स्नेह पूर्वक कार्य लेने की कला उन्हें आती है।

उनके पैंसठवें जन्म दिवस पर प्रभु से उनके सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना है।

आर्य समाज रामामण्डी (जि० बठिण्डा) के दिवंगत् आर्य सज्जन

श्री भगवान दास जी—आप आर्य समाज एवं श्री स्वतन्त्रतानन्द आर्य हाई स्कूल के प्रधान रहे—जब आप का विवाह हुए कुछ मास ही थे—तब 1939 ई० में हैदराबाद सत्याग्रह में जेल गए—इसके बाद 1957 ई० में भी हिन्दी सत्याग्रह में कई मास जेल काटी 1980 ई० से आपने आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल बठिण्डा में रह कर आश्रम की सेवा की और 1988 ई० में आप का निधन हुआ

2. **श्री महाशय निहाल चन्द जी**—नगर निवासी आपको महाशय जी कह कर बुलाते थे—आर्य समाज के कार्यों में बहुत समय देते थे अनथक कार्यकर्ता थे—आप स्थानीय आर्य संस्थाओं के प्रधान मन्त्री रहे। 1939 ई० में श्री म० कृष्ण जी के जत्थे में शामिल होकर हैदराबाद जेल गए 1957 ई० में हिन्दी सत्याग्रह में चण्डीगढ़ रह कर सत्याग्रहियों की व्यवस्था आदि करने में योगदान दिया। 1989 ई० में 103 वर्ष की आयु में निधन हुआ।

3. **श्री बलराज जी वेदी**—आपने दयानन्द उपदेशक विद्यालय में शिक्षा पाई—आर्य समाज के प्रचार की बड़ी लग्न थी—मृत्यु से कुछ समय पूर्व आपने अपने निजि सामान की वसीयत करते हुए सब कुछ आर्य रामा मण्डी को दान कर दिया।

4. **श्री महाशय ज्ञान प्रकाश जी**—आप का पहला नाम गेंदाराम था—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं० मुनीश्वर देव जी ने यह नाम बदल कर ज्ञान प्रकाश रख दिया—आपने एक विधवा देवी (जिसके पास एक पुत्री थी) को अपनी पत्नी बनाया—और उसके पास जो पुत्री थी—उस को गुरुकुल देहरादून की स्नातिका बनाया—आपने एक बालक का 14 वर्ष का इकट्ठा खर्च देकर किसी एक बालक को गुरुकुल कांगड़ी पढ़ने के लिए भेजा—पटियाला स्टेट मे सब से पहले जब रामा मण्डी में आर्य स्कूल खोला गया (सम्भवत सम्वत् 1986 बिक्रमी में) तब इस दण्ड में आप को कैद भी भुगतनी पड़ी।

5. **मास्टर पूर्ण चन्द जी**—आपका जन्म जैन परिवार में हुआ—रामांमण्डी के आर्य स्कूल में आप सम्वत् 1987-88 बिक्रमी में अध्यापक नियुक्त हुए वहां स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी महाराज प्रायः आते ही रहते थे—महाशय रौनक सिंह जी आर्य के घर स्वामी जी ठहरे थे—वहां उनकी बात स्वामी जी से हुई तब से मास्टर जी उनके पक्के भक्त बने—बाकी सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगाया आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्तार आम रहे—अति सादा जीवन था अनथक कार्यकर्ता थे—उनका निधन दयानन्द मठ दीना नगर में हुआ।

6. **स्वामी नन्दलाल जी**—एक बार आप रमते रमते रामामण्डी आए और आर्य स्कूल के विद्यार्थियों को शिक्षा देने लगे—कई वर्ष वह आर्य स्कूल में ही पढ़ाते रहे। आर्य समाज के पर्वों पर अपने गले में ढोलक डाल कर प्रभात फेरी करना चिमटा खड़तालों से गाते गाते मस्त हो जाते—आर्य समाज के प्रचार की बहुत धुन थी—कई वर्ष पढ़ा कर यहां से चले गए—उनका निधन लुधियाना में हुआ। इनके अतिरिक्त नीचे लिखे आर्य समाज रामामण्डी के कार्यकर्ता सदस्य जो अब हम से सदा के लिए जुदा हो गए भू० पू० प्रधान—(1) श्री देसराज जी, (2) श्री डा० आत्मा राम जी (3) श्री देव राज जी (4) श्री परमानन्द जी (5) श्री आत्मा राम जी।

सदस्य एवं कार्यकर्ता

(6) श्री मास्टर मुकंदी लाल जी, (7) श्री म० तिलक राम जी (8) श्री प० कर्मवीर जी संस्कृत व्याकरण के विद्वान् और गुरुकुल पोठोहार के स्नातक (9) श्री पं रविदेव जी शास्त्री गुरुकुल पोठोहार के स्नातक संन्यासी बनने पर स्वामी सुव्रतानन्द बने (10) श्री शादी राम जी (11) श्री नानक चन्द जी (12) श्री कृष्ण चन्द जी (13) महाशय रामरत्न जी (14) वैद्य भाग चन्द जी (15) लाला जी मुकंद लाल जी (16) हकीम खुशी-राम जी (17) श्री मेलू राम जी पोस्ट-मास्टर (18) महाशय किशोर चन्द जी पटवारी (19) श्री मास्टर हकूमत राय जी (20) श्री महाशय तिलक राम जी पक्का (21) श्री मोहर सिंह जी (22) श्री सुखदेव जी उर्फ घीसा राम जी (23) श्री राम चन्द्रजी (24) श्री बलदेव राज मित्तल (15) सुच्चाराम जी (26) श्री रामेश्वर दास जी (27) श्री लाल चन्द जी।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

पंजाब के राज्यपाल को पत्र

श्री रोशन लाल जी शर्मा प्रधान जी आर्य युवक सभा लुधियाना ने निम्नपत्र गत दिनों पंजाब के राज्यपाल को लिखा।

माननीय राज्यपाल, पंजाब,
चण्डीगढ़।

मान्यवर महोदय,
सादर नमस्ते।

हिन्दी हम भारतीयों की राष्ट्र-भाषा होने के साथ-साथ हमारी सम्पर्क भाषा भी है। यह एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता की सूत्रधार अभीहित है। संविधान मे जहां सिन्धी सहित पन्द्रह भारतीय भाषाओं को उपयुक्त स्थान मिला है, वहां हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है क्योंकि देश मे यही भाषा सर्वाधिक 43 प्रतिशत लोगों द्वारा प्रयुक्त की जाती है। सन् 1965 में पार्लियामैंट ने स्पष्ट रूप में प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय व राज्य सरकारों को निर्दिष्ट किया था कि सारे सरकारी कार्य हिन्दी में किए जाएं तथा जहां दक्षिणी प्रान्तों मे अभी हिन्दी अधिक नहीं पनपी थी वहां अंग्रेजी के साथ-साथ प्रयोग की जा सकती है।

जहां घनी जनसंख्या वाले प्रान्तो (उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली तथा हरियाणा) में इसे राज्य भाषा स्वीकार करके समस्त कार्य हिन्दी मे किए जाने लगे तथा शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी बन गया, वहां हिमाचल, चण्डीगढ़ व पंजाब समेत अन्य प्रान्तों में भी विकसित होने लगी, परन्तु खेद का विषय है कि 2-11-66 (नवम्बर, 1966) से पूर्व सच्चर फार्मूले (तीन भाषायी) के अधीन पंजाब में पंजाबी के साथ हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी (छात्र-छात्रों की स्वेच्छा थी कि एक प्रथम भाषा तथा दूसरी द्वितीय भाषा के रूप मे पढ़ सकते थे) वहां तदुपरान्त हिन्दी के साथ सौतेली मां के तुल्य व्यवहार किया जाने लगा तथा इसका पंजाब में पतन होने लगा। हालांकि वास्तविकता यह है कि आज भी पंजाब की 47 प्रतिशत जनता जो अधिकतर नगरों में निवास करती है, निजी रूप में हिन्दी का प्रयोग करती है। विशेषतया पठानकोट, होशियारपुर अमृतसर, लुधियाना, जालन्धर, राजपुरा, पटियाला, बटाला, अबोहर, मलोट, फाजिलका, खन्ना, नगल टाऊनशिप, मोगा तथा केन्द्रीय प्रदेश पंजाब की राजधानी चण्डीगढ़ आदि में) परन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि छात्र-छात्राओं को सरकारी विद्यालयों में हिन्दी माध्यम अपनाने का अधिकार नहीं, यह कैसा अन्याय। यह देश की स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्रता कैसी, जहां नागरिकों को मातृभाषा में अध्ययन की अनुमति भी उपलब्ध न हो।

फिर कितने आश्चर्य का विषय है कि भारतीय भाषाओं की जननी व हमारी संस्कृति की प्रतीक संस्कृत को तो हमारी सरकारी पूर्णतया नष्ट करने पर तुली हुई है। उदाहरणार्थ यदि किसी विद्यालय या महाविद्यालय में संस्कृत अध्यापक की पोस्ट खाली होतीहै तो उसके स्थान पर अन्य व्यक्ति भेजने के बजाय उस पोस्ट को अन्य विषयों में बदल दिया जाता है। यह संस्कृत भाषा के साथ-साथ संस्कृत अध्ययनाभिलाषियों के साथ अन्याय नहीं तो और क्या है। फिर पंजाब में नवीन शिक्षा-प्रणाली के 1986 में लागू होने पर जहां 123 सरकारी सैकेण्डरी स्कूलों व 66 प्राइवेट स्कूलों को सीनियर सैकेण्डरी स्कूलों में परिवर्तित किया गया, वहां गत वर्षों में 33, 50 और 100 (183) अन्य सरकारी हाई स्कूलों को सीनियर सैकेण्डरी स्कूलों में पदोन्नत किया गया। वहां जहां प्रत्येक विद्यालय में अंग्रेजी, पंजाबी, इतिहास, गणित अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र की पोस्टें दी गई, वहां हिन्दी भाषा के साथ फिर भेदभाव किया गया है। यह कितनी विडम्बना है कि जहां अन्य प्रान्त विशेषतया दक्षिणी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग भरसक करने लगे हैं वहां पंजाब सरकार, शिक्षा-विभाग पंजाब तथा पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड इसे अधिकतर समाप्त करने की प्रक्रिया में सतत् सलग्न हैं। यह अन्याय कब तक सहन किया जाएगा।

अतः हम आर्य युवक पंजाब, आपसे अनुरोध करते हैं कि :—

1—हिन्दी की पूर्व प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करें तथा तुरन्त अपने अधीनस्थ सभी विभागों, विश्वविद्यालयों व शिक्षा बोर्ड को निर्देश देवें कि पंजाबी के साथ साथ हिन्दी का भी प्रयोग करें।

2 -शिक्षा-विभाग को निर्दिष्ट करें कि हिन्दी की पोस्टें प्रत्येक विद्यालय में निर्धारित व अनिवार्य करे तथा हिन्दी भाषा की उन्नति हेतु उपयुक्त व्यवस्था करे। विशेषतया महाविद्यालयों व सीनियर स्कूलों में हिन्दी प्राध्यापक तुरन्त नियुक्त किए जाएं ताकि छात्र-छात्राए राष्ट्रभाषा का ज्ञान उपयुक्त विधि से अर्जन करके देश के अन्य भागों के विद्यार्थियों के समान केन्द्रीय व्यवस्था में योग दान दे सकें।

3—पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड व विश्वविद्यालयों को निर्देश दीजिए कि वे हिन्दी को शिक्षा का तथा परीक्षा का माध्यम बनाने के साथ-साथ इसका अध्ययन व अध्यापन भी अनिवार्य करें।

4—पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड तथा विश्वविद्यालयों को आदेश दिया जाए कि हिन्दी में वार्षिक परीक्षाओं में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लेने वाले छात्रों को छात्रवृतियां प्रदान करें।

5—संस्कृत के भी पढ़ाने की उचित व्यवस्था की जाए।

6—हिन्दी विकास हेतु गोष्ठियों का आयोजन किया जाए तथा हिन्दी व संस्कृत के ख्याति प्राप्त योग्य अध्यापकों, साहित्यकारों, समालोचकों तथा कवियों को यथायोग्य सम्मानित किया जाएं ताकि प्रोत्साहित होकर वे राष्ट्र-भाषा की उन्नति में उपयुक्त सहयोग प्रदान कर सकें।

हम आर्य युवक पंजाब, आपके अनुग्रहीत होंगे यदि उपर्युक्त कतिपय (वांछनीय एवं समयानुकूल व्यवस्था सम्पन्न) कदम उठाए जाएं। इसी में हम सबका तथा राष्ट्र का कल्याण निहित है।

शुभ कामनाओं सहित।

भवदीय
रोशन लाल शर्मा—प्रधान

शारीरिक, आत्मिक और समाजिक उन्नति के सुनहरी नियम

—लेखक स्व० श्री ठाकुर दत्त जी शर्मा वैद्य भूषण

(1) शारीरिक उन्नति के दस सुनहरी नियम

(1) हमेशा व्यस्त रहो। बेकार मन में विकार पैदा होता है। अपना काम मन लगा कर स्फूर्ति से करो। जो समय बचे वह ईश्वर भजन, परोपकार और घर में बाल-बच्चों को कुछ सिखाने में लगाओ।

(2) यदि आपका काम अधिक बैठने का है तो व्यायाम आपको नित्य अवश्य करना चाहिए। व्यायाम ऐसा करो जिससे सारे शरीर के अंग हिल जावें और रीढ़ में लचक अवश्य पैदा हो जैसे योग के आसनों से होती है।

(3) खुशी सब दुःखों का नाश करती है। दुःख-सुख में, हानि-लाभ में मन को अधिक दुःखी या फूलने न देना चाहिए।

झूठ, क्रोध, शोक, चिन्ता, दुःख, द्वेश, ईर्षा, घृणा, झुंझलाहट, हठ, चोरी, धोखेबाजी आदि जो मन के विकार हैं उनसे स्वास्थ्य व आयु कम होती है और कई रोग भी हो जाते हैं।

(4) अपना शरीर, कपड़े, रहने का स्थान और आसपास की वस्तुए स्वच्छ रखनी चाहिएं। मल मूत्र का समय पर त्याग करो इनको या दूसरे प्राकृतिक वेग जैसे डकार जम्हाई, अंगड़ाई, आंसु, छींक, खांसी, हवा आदि को भी न रोकना चाहिए।

(5) खाना भूख होने पर, मन खुश करके चबा-चबा कर खाना चाहिए। आरम्भ और अन्त में 3 आचमन करें। पानी पीने की आवश्यकता हो तो खाने के बीच थोड़ा सा पीना चाहिए। तीन घन्टे के पश्चात् इच्छानुसार पी सकते हैं, परन्तु पानी धीरे-धीरे पीना चाहिए।

(6) हमारी इन्द्रियां मन के अधीन हैं। परन्तु मन अनुचित मार्ग पर डाल देता है, यदि बुद्धि से काम न लिया जाए। बुद्धि से विचार कर इन्द्रियों से काम लेना चाहिए बुराईयां बुद्धि को भी निकम्मा कर देती हैं। सीमा से परे न हो, अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग न करो।

(7) शरीर के सारे अवयवों की शक्ति की नींव हमारे शरीर का वह द्रव है जो कि सन्तान के लिए है। इसकी 25 वर्ष तक पूर्ण रक्षा करें और बाद में भी नियम से बरतें। इसकी रक्षा के लिए भी व्यायाम आवश्यक है।

(8) नशीले पदार्थ जैसे शराब, भांग, चर्स, अफीम, गांजा आदि से बिलकुल दूर रहना चाहिए। चाय, काहवा, तम्बाकू भी नशा करने वाले हैं इनसे दूर रहना भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

(9) मांस, मछली, अण्डा मनुष्य के प्राकृतिक भोजन नहीं हैं फिर भी इनका अधिक प्रचलन हो गया है, परन्तु इनका सेवन न करना शारीरिक व मानसिक उन्नति का कारण है।

(10) ऐसे समय सोओ कि प्रातः सूर्योदय से पहले उठ बैठो। दिन को सोना आवश्यक नहीं। प्रातः उठ कर मुंह हाथ साफ करके रात के ढके हुए पानी को हथेली पर डाल-डाल कर 8 घून्ट पीकर थोड़ा टहल कर शौच जाओ। इसके पश्चात् दातुन आदि, व्यायाम, मालिश, स्नान आदि अपने नित्य-क्रम पूरे करके, अपनी पूजा पाठ करके, प्रातः का जलपान करके काम में लगो। (क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी पहुंचो

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने तप और त्याग से महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार बनाने के लिए गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना की थी। वहां सर्व प्रथम यह गुरुकुल आरम्भ किया गया था बाद मे उस स्थान को छोड़ दिया गया था और हरिद्वार के समीप ही जगह मिल जाने के कारण, जहा इस समय गुरुकुल है वहा गुरुकुल का भवन बना दिया गया था। अब पुराने गुरुकुल की स्थिति बड़ी सोचनीय हो गई है। वह बिल्डिंग अब गिरने लग पड़ी है उसकी भूमि धीरे धीरे गंगा की लपेट में आ रही है। मैंने कई प्रतिष्ठित आर्य बन्धुओं तथा संन्यासियों से इस बिल्डिंग तथा भूमि की रक्षार्थ बात-चीत की है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी भी मेरे साथ उस भूमि और बिल्डिंग को देखने वहा गए थे जिसके दरवाजे खिड़कियां तक-तक लोगों ने उतार ली हैं।

हमने निश्चय किया है कि इस पुण्य भूमि की बिल्डिंग में पुन गुरुकुल आरम्भ किया जाए और इस भूमि के गंगा के कटाव को रोकने के लिए वहा बान्ध बनवाया जाए। हम यह भी चाहते हैं कि इस गुरुकुल से पुन वही पुराने तपस्वी और योग्य स्नातक निकलें जैसे पहले निकला करते थे। वहा स्वामी श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना कर दी जाए। इसके लिए हमें सुयोग्य कार्यकर्ताओं और पढ़ाने वाले सुयोग्य अध्यापको की आवश्यकता पड़ेगी। इस लिए हमने निश्चय किया है कि 12 अप्रैल को प्रात 10 बजे गुरुकुल कांगड़ी के यज्ञ के पश्चात् वहा से पुराने गुरुकुल को देखने के लिए पुण्य भूमि में चला जाए ताकि सभी मिल कर यह निश्चय कर सकें कि इस भूमि की कैसे रक्षा की जा सकती है। इस सारे कार्य पर जिसमे गंगा के बहाव को पुण्य भूमि की तरफ आने से रोकने के लिए बान्ध बनाना भी सम्मिलित है के लिए करोड़ो रुपये की आवश्यकता होगी।

मेरी सभी आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक संख्या मे गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर 12-13-14 अप्रैल 1990 को हरिद्वार पहुचे और 12 अप्रैल को हमारे साथ पुण्य भूमि देखने भी चलें। ऐसा तभी हो सकेगा यदि आर्य बन्धु वहा 11 अप्रैल की रात्रि तक या 12 अप्रैल को प्रात गुरुकुल पहुंच जाए।

—हरवंशलाल शर्मा (सभा उपप्रधान)

आर्य प्रतिनिधि सभा आतंक-पीड़ितों की सहायता करेगी

जालन्धर, 28 मार्च—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने आज एक बयान मे कहा कि कश्मीर और पंजाब मे बहुत से लोग अपने घरो से बेघर हो गए हैं और गम्भीर आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इनमे से ऐसे परिवारो की आर्थिक सहायता करने का फैसला किया है जो अपनी बेटियो की शादी करने की सामर्थ्य नही रखते इसी प्रकार सभा उन लोगो की आर्थिक सहायता करेगी जो उपचार आदि कराने की सामर्थ्य नही रखते।

सभा ने ऐसे परिवारो के जो आर्थिक रूप मे कमजोर हैं लड़को व लड़कियो को अपनी पढ़ाई जारी रखने मे आर्थिक सहायता देने की भी योजना बनाई है। वह सभी भाई जिन्हे ऐसी सहायता की आवश्यकता हो, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर को अपनी स्थानीय आर्य सभाओ के द्वारा जो उपरोक्त सभा से सम्बद्ध हों याचिकाएं भेजें।

आर्य समाज बठिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस

25 3-90 रविवार को सप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आर्य समाज बठिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया जिसमे श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी ने आर्य समाज क्या है? इसकी स्थापना क्यों की गई? और आर्य समाज ने अपने 115 वर्षों में अब तक क्या किया? तथा आर्य समाज स्थापना दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए।

27-3 90 तथा 28 3 90 को दो पारिवारिक सत्संग भी हुए यह श्री चमन लाल जी मित्तल तथा श्री सुभाष चन्द्र जी गोयल के निवास स्थान किए गए।

पंजाब प्रान्तीय विचार गोष्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान मे पंजाब प्रान्तीय विचार गोष्ठी दिनांक 22 4 90 रविवार को प्रात 11 बजे सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में हो रही है। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज को क्या करना चाहिए और विशेष कर प्रदेश की राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नही और यदि लेना चाहिए तो किसी रूप मे? इस विषय पर विचार किया जाएगा।

कई महानुभावो की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों, पर यह दबाव डाला जा रहा है कि वह प्रान्त की राजनीति मे सक्रिय भाग लें, यह एक ऐसा विषय है जिस पर बैठ कर सम्मिलित रूप से ही कोई निर्णय लिया जा सकता है। इसलिए सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी अपनी आर्य समाज के तीन वरिष्ठ सदस्य इस गोष्ठी मे अवश्य भेजें। जो आप की आर्य समाज का दृष्टिकोण इस अवसर पर यहां रख सकें।

यदि आप अपने सदस्यों के पहुचने की सूचना हमे पूर्व दे सकें तो भोजन आदि की व्यवस्था करने मे सुविधा रहेगी।

रणबीर भाटिया — सभा महामन्त्री

वीरेन्द्र — सभा प्रधान

कोटि—कोटि प्रणाम

रचयिता—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिर खाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे मर्यादाओं के अनुरक्षक।
सत्य धर्म के थे प्रणेता मानवता के बने सुरक्षक।
विप्र धेनु-सुर सन्त जनों को किया तुम्हीं ने निर्भय।
दूर किया सारी धरती की दानवता, अन्याय-अनय।
निर्बल को दे नया सहारा नव युग का आह्वान किया।
जन जन में जागृति ला करके चेतना का अनुदान दिया।
स्थापित कर मानवता का अनुपमेय सा मेरुदण्ड।
मार गिराया समस्त राक्षसो को, जो थे अति तीव्र उद्दण्ड।
रावण जैसे असूरो का वध करके, भू उद्धार किया।
वैदिक पथी बना कर सबको जगती का उपकार किया।
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा महिमण्डल सारा, हे राम।
आज तुम्हारे जन्मदिवस पर युग के कवि का कोटि प्रणाम॥

लुधियाना में शहीद भक्तसिंह बलिदान दिवस

लुधियाना 23 मार्च, को आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से महान क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता-सेनानी, शहीद-ए-आजम भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए श्रद्धाजलि समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का आरम्भ यज्ञ से किया गया। इस यज्ञ मे 20 महानुभावो ने यजमान पद को सुशोभित किया। यह यज्ञ प० सुन्दर लाल शास्त्री, पुरोहित-आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने सम्पन्न कराया। मुख्य समारोह की अध्यक्षता आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाल शर्मा ने की श्री सुनील मेहरा, स्वामी सुमनायति, प० सुन्दर लाल जी शास्त्री, श्री प० राजेश्वर जी शास्त्री, श्री प० वेद प्रकाश जी शास्त्री तथा श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक ने शहीद-ए आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जी के क्रान्तिकारी कार्यों व जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज बंगारोड फगवाड़ा की गतिविधियां

गत दिनों फरवरी माह मे आर्य समाज बंगरोड फगवाड़ा मे शिवरात्रि का उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर डा० वेदी राम जी का प्रभावशाली उपदेश हुआ।

मार्च माह मे प० लेख राम जी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री प० निरञ्जन देव जी ने प० लेख राम जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके बलिदान का वर्णन किया।

27 मार्च को आर्य समाज का स्थापना दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। महर्षिदयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना क्यो की? इस विषय पर विद्वानो ने अपने विचार रखे इसके साथ ही नव संवत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए नव वर्ष की बधाई सब को दी गई।

—देशबन्धु चोपड़ा—मन्त्री

चमड़ी रोगियों के लिए फ्री कैम्प

नवा शहर मे प्राय, आखों के कैम्प कई सस्थाए लगाती रहती हैं। परन्तु इस इलाका मे चमडी रोगो का कोई माहिर या विशेषज्ञ डाक्टर न होने के कारण मरीजो को बडी कठिनाई उठानी पडती है। इस लिए आर्य समाज नवाशहर ने 25-3 90 को आर्य समाज मन्दिर मे चमडी रोगियों के के लिए एक फ्री कैम्प लगाया। इस कैम्प मे डा० जे० के० बजाज M B B S M D Skin L V D Specialist ने लगभग 276 रोगियो का निरीक्षण किया। कैम्प प्रात 10 बजे से साय 6 बजे तक चलता रहा। आर्य समाज नवा शहर की ओर से फ्री दवाइयां भी रोगियो को दी गई आर्य समाज की ओर से 26 3 90 तथा 28-3-90 को दो पारिवारिक सत्सग भी किए गए।

—सुरेन्द्र मोहन

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव

आपको यह सूचित करते हुए हमे प्रसन्नता हो रही है कि गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी गुरुकुल कागडी हरिद्वार का 90वा वार्षिकोत्सव 9 अप्रैल से 14 अप्रैल 1990 तक उत्साह पूर्वक आयोजित हो रहा है।

इस समारोह मे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, वक्ता एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं जो अपने मधुर प्रवचनो एव गीतो से हमारा मार्ग दर्शन करेंगे।

गुरुकुल कांगडी हरिद्वार इस शुभ अवसर पर आपको सपरिवार आमन्त्रित कर रहा है। आप अपने इष्ट मित्रो एव स्नेही जनो के साथ पधार कर लाभान्वित होंगे।

पुन आपको सादर आमन्त्रित करते हुए—

वीरेन्द्र सेठराम
सहा० मुख्याधिष्ठता

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से 25 3 90 रविवार को साय 3 बजे से 5 30 बजे साय तक श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा के घर माली गज मे पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया यज्ञ लुधियाना के प्रसिद्ध विद्वान प० मोल कृष्ण जी शास्त्री ने कराया आदरणीय डा० सुन्दर लाल शास्त्री, प० सत्येश्वर जी, श्री राम नाथ जी, श्री धर्मदेव शास्त्री जी ने यज्ञ कराने मे उन्हें सहयोग प्रदान किया यजमान श्री सतीश जी वर्मा सपरिवार तथा श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा का सारा परिवार था यज्ञ के पश्चात सत्सग की कार्यवाई आदरणीय सुषमा जी यति की प्रधानता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्रीमती कमला आर्या और श्री कृपा राम जी आर्य के भजन हुए, श्री भवन सेन जी शास्त्री, और श्री महेन्द्र पाल जी स्याल ने भी अपने विचार रखे।

—आशानन्द आर्य महामन्त्री

पारितोषिक वितरणोत्सव

दिनांक 22 3-90 को आर० के० आर्य कालेज नवाशहर का पारितोषिक वितरणोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के [illegible] ने पारितोषिक वितरण किये। [illegible] कालेज की [illegible] का [illegible] किया। [illegible] छात्राओं [illegible] आगे बढ़ने और [illegible] के शिखर पर [illegible] प्रोत्साहित किया।

प्रधान श्री [illegible] आर० के० आर्य कालेज की ओर से 5100/- तथा डी० एम० एस० आर्य कालेज की ओर से 3100/- रु० की थैली भेंट की गई। कालेज की ओर से प० [illegible] जी की [illegible] सेवाओं को [illegible] रखते हुए [illegible] कर कमलों से उन्हें सम्मानित किया।

सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

रजि० नं० P.b/J.L. 55

वर्ष 22 अंक 3, 3 वैशाख सम्वत् 2047 तदनुसार 12/15 अप्रैल 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कब और कैसे हुई ।

लें० स्वर्गीय श्री पण्डित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी

महात्मा मुंशी राम जी को गुरुकुल की स्थापना के लिये 30 हजार रुपये एकत्रित करने में लगभग 9 मास लगे। आप ने यह यात्रा 26 अगस्त सन 1898 के दिन आरम्भ की। उस दिन आप जालंधर में अपने मकान में न ठहर कर उसके सामने सड़क के दूसरी पार बने हुई आर्य समाज मंदिर में ठहरे। इस दौरे के सिलसिले में आप ने पंजाब के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में भी व्याख्यान दिये और धन संग्रह किया। आप जहां कहीं गये वहां आर्य जनता ने आप का हार्दिक स्वागत किया और यथाशक्ति धन दिया। लोगों के लिये गुरुकुल की बात बिल्कुल नई थी। देश के कई भागों में दुर्भिक्ष पड़ा हुआ था और उस समय जनता में शिक्षा के लिए अधिक दान देने की प्रवृत्ति भी उत्पन्न नहीं हुई थी तो भी मध्यम श्रेणी की जनता से नौ मास के समय में 30 हजार रुपये की राशि एकत्र हो गई इसे बहुत महत्वपूर्ण समझा गया। इसी भावना से प्रेरित हो कर आर्य जनता ने लाला मुंशी राम जी को महात्मा पद से विभूषित किया। उस समय आप वकालत को तिलांजलि दे चुके थे और प्रेस और अखबार का काम भी कर्मचारियों पर डाल चुके थे।

जब गुरुकुल खोलने के लिए आवश्यक धन राशि इकट्ठी हो गई तब यह प्रश्न उठा कि गुरुकुल कहा खोला जाये ? इस विषय में पंजाब के आर्य जनों में भी कई मत थे। कुछ आर्य नेता जिन में लाल रला राम तथा राय ठाकुर दत्त धवन मुख्य थे, यह चाहते थे, कि गुरुकुल कहीं लाहौर अथवा अमृतसर के पास ही खोला जाये। श्री हरगोविन्दपुर के आर्य पुरुषों ने यह प्रस्ताव किया कि यदि वहां गुरुकुल खोला जाये तो वे लोग आवश्यक भूमि दे देंगे। नूरमहल के लाला जगन्नाथ जी ने तो अपने कारखाने मे ही गुरुकुल खोलने की बात पेश कर दी थी। परन्तु महात्माजी का गुरुकुल के खोलने में पहले से यह विचार था कि वह किसी नदी के तट पर एकान्त स्थान में स्थापित हो। वे अपनी भावना का आधार निम्नलिखित वेद मन्त्र को बतलाया करते थे—

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रोऽजायत ॥—यजुर्वेद

मनुष्य पहाड़ों की उपत्यकाओं और नदियों के संगमों पर गुरुकुल से बुद्धि प्राप्त कर के विद्वान बनता है। महात्मा जी का सकल्प था गुरुकुल ऐसे ही स्थान पर बनाया जाए शुभ संकल्पों की पूर्ति में परमात्मा सहायक होते हैं। इसे ईश्वरीय प्रेरणा ही कहना चाहिए कि जिला बिजनौर के नजीबाबाद नगर के निवासी मुंशी अमन सिह जी के मन में यह प्रेरणा हुई कि वे गंगा तट पर बसे हुए अपने कांगड़ी ग्राम को गुरुकुल को दे दें। गुरुकुल के लिए कांगड़ी को दान कराने में बिजनौर जिले के जिन आर्य पुरुषों ने महात्मा जी की सहायता की उन में से नहटौर के चौधरी चुन्नी सिह जी, जिला सहारनपुर के बाबू मिट्ठन लाल खन्ना राजपुर नवादे के चौधरी फतेहसिह जी और बिजनौर के चौधरी शेरसिह जी प्रमुख थे।

मुंशी जी ने महात्मा जी को पत्र लिख कर अपने सकल्प की सूचना दी। प्यासे को मानो पानी मिल गया। महात्मा जी अभी चन्दे का दौरा कर ही रहे थे कि उन्हें मुंशी जी का पत्र मिला। वे दौरे को कुछ दिनों के लिए स्थगित कर हरिद्वार गए और गंगा के उस पार जा कर कांगड़ी की भूमि को देखा। वह स्थान उन्हें गुरुकुल के लिये आदर्श प्रतीत हुआ कांगड़ी गांव हिमालय की शिवालक धारा के नीचे बसा हुआ है। जो उसकी भूमि है। उस की भूमि एक ओर पर्वत को छूती है तो दूसरी ओर गंगा की नील धारा का स्पर्श करती है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थान की स्वीकृति हो जाने पर गांव से दूर गंगा के तट पर 1901 में गुरुकुल के छप्परों का निर्माण आरम्भ हो गया। यों तो गुरुकुल की स्थापना गुजरांवाला में 16 मई 1900 ई० को ही हो गई थी। वहां 20 बालक गुरुकुल में प्रविष्ट हो चुके थे। इन बीस मे ही महात्मा जी के दोनो पुत्र भी थे।

1902 के फरवरी मास में गंगा तट के घने जंगल को साफ कर के कुछ छप्पर तैयार हो गए थे। फलत: 4 मार्च 1902 के दिन महात्मा जी गुजरांवाला जा कर गुरुकुल में विद्यमान ब्रह्मचारियों को कांगड़ी ले गए और उन थोड़े से फूंस के छप्परों और 24 ब्रह्मचारियों के साथ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का सूत्रपात हुआ।

व्याख्यानमाला—31

गृहस्थ नरक कब बनता है ?

—ले० श्री सुखदेव राज जी शास्त्री अधिष्ठाता
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्य यथाऽरण्यं तथा गृहम् ॥1॥

माता जिसके घर में नहीं, स्त्री कठोर बोलने वाली है, उसको जंगल में चले जाना चाहिए उसके लिए जैसा जगल वैसा घर।

यत्र नास्ति दधिमन्थनघोषो यत्र नो लघुलघूनि शिशूनि।
यत्र नास्ति गुरुगौरवपूजा तानि किं वत गृहाणि वनानि ॥2॥

जिन घरों मे दही मथने का शब्द नहीं, छोटे-छोटे बच्चे नहीं, जहां गुरुजनों की पूजा नहीं उत्तर दो वह घर अथवा जगल है ?

न विप्रपादोदकपंकिलानि न वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि।
स्वाहास्वधाकारविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि ॥3॥

जिन घरों में ब्राह्मणों के चरणों के जल का कीचड़ नहीं, जहां वेद शास्त्रों के पाठ का घोष नहीं होता, जिस घर में स्वाहा और स्वधा (पितृपूजा) शब्द नहीं होता वे घर श्मशान के समान होते हैं।

विधिना खलु वञ्चिता वयं विपरीतं वटवे न शक्नुमः।
अपि भैक्ष्यमकिञ्चनत्वतो धिगिदं जन्म निरर्थकं गतम् ॥4॥

विधि ने हमें ठग लिया (जो हमें गृहस्थी बना दिया), अब हम इससे पार भी नहीं पा सकते। इस अकिचनता से तो भिक्षा कर लेना अच्छा है। धिक्कार है कि यह जन्म निरर्थक चला गया।

निःस्वो भवेद्यदि गृही निरयी स नूनं,
भोक्तुं न दातुमपि यः क्षमतेऽणुमात्रम्।
पूर्णोऽपि पूर्तिमभिमन्तुमशक्नुन्यों,
मोहेन शं न मनते खलु तत्र तत्र ॥5॥

यदि गृहस्थी वास्तव में ही निर्धन है तो वह अवश्य ही स्वयं भोग करने अथवा दूसरों को देने के लिए किञ्चित् मात्र भी समर्थ नहीं है। परन्तु जो मनुष्य धर्म से पूर्ण होता हुआ भी मोह वश गार्हस्थ्य धर्म की पूर्ति नहीं करता वह मनुष्य कभी भी कल्याण नहीं पा सकता।

क्रोशन्तः शिशवः सवारि सदनं पंकावृतञ्चांगणं,
शय्या दंशवती च रूक्षमशनं धूमेन पूर्णं गृहम्।
भार्या निष्ठुरभाषिणी प्रभुरपि क्रोधेन पूर्णः सदा,
स्नानं शीतलवारिणा हि सततं धिग्धिग्गृहस्थाश्रमम् ॥6॥

बच्चे चीख चिल्ला रहे हैं, घर में पानी बिखरा हुआ है, आंगन में कीचड़ है, बिस्तरों में खटमल हैं, भोजन रूखा है, घर धुएं से भरा है, पत्नी कठोर बोलने वाली है, मालिक सदा क्रोध में भरा रहता है, लगातार ठण्डे जल से स्नान करना पड़ता है ऐसे गृहस्थ आश्रम को धिक्कार है।

तावद्विद्याऽनवद्या गुणगणमहिमा रूपसंपत्तिशौर्यं,
स्वस्थाने सर्वशोभा परगुणकथने वाक्पटुस्तावदेव।
यावत्याकाकुलाभिः स्वगृहयुवतिभिः प्रेषितापत्यवक्त्रात्,
हे बाबा नास्ति तैलं न च लवणमपीत्यादिवाचां प्रचारः॥7॥

भोजन बनाने में व्याकुल अपने घर की स्त्रियों द्वारा भेजे गए बच्चे के मुख से हे बाबा ? तेल नहीं, नमक नहीं इत्यादि वचनों का जब तक उच्चारण होता है तब तक विद्या सुन्दर है, गुणों की महिमा है, रूप सम्पत्ति और शूरता अपने स्थान पर शोभा देती है और तब तक ही दूसरों द्वारा गुण कथन में चतुरता रहती है।

आश्रमेषु यथोक्तेषु यथोक्तं ये द्विजातयः।
वर्तन्ते सयतात्मानो दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥8॥

यथोक्त आश्रमों मे समस्त चित्र रहते हुये जो ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र अपने-अपने आश्रमानुकूल कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। वे ही लोग महान् कठिनाइयों को पार करते हैं।

हंसराज दिवस पर प्रधानमन्त्री मुख्य अतिथि

डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प्रो० वेद व्यास जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने 28-3-90 को प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से भेंट कर उन्हें 15-4-90 को तालकटोरा इनडोर स्टेडियम नई दिल्ली में मनाये जाने वाले महात्मा हंसराज दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित करने की प्रार्थना की। प्रधानमन्त्री ने इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

प्रतिनिधि मंडल ने जम्मू कश्मीर की वर्तमान दुखद एवं भयावह स्थिति पर भी विचार विमर्श किया और उन्हें सूचित किया कि प्रबन्धकर्त्री समिति तथा प्रादेशिक सभा ने भी कश्मीरियों की सहायतार्थ अनेक पग उठाये हैं और दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों में उनके भोजन, वस्त्र तथा निवास की व्यवस्था की है।

प्रधानमन्त्री महोदय के सुझाव पर समिति तथा सभा ने जम्मू में एक सहायता शिविर स्थापित करने का भी निश्चय किया है,

—[illegible]

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी का भूत और भविष्य

जिस संस्था का नाम गुरुकुल कांगड़ी है, उसके दो विभाग हैं। एक गुरुकुल महाविद्यालय दूसरा गुरुकुल विश्वविद्यालय। बहुत देर से यह दोनों विभाग चल रहे हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के समय से ही यह व्यवस्था थी कि जब गुरुकुल का वार्षिकोत्सव हुआ करता था तो उसी के साथ वेदारम्भ संस्कार होता था और दीक्षान्त समारोह भी होता था। जो विद्यार्थी वेदारम्भ संस्कार के द्वारा गुरुकुल में प्रवेश करते थे वह चौदह वर्ष वहां रहने और अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् दीक्षान्त समारोह के बाद गुरुकुल से विदा लेते थे। क्योंकि वह चौदह वर्ष तक अपने आचार्य और दूसरे अध्यापकों के संरक्षण और नियन्त्रण में रहते थे। इसलिए वह जब स्नातक बनकर गुरुकुल से बाहर निकलते थे तो वे न केवल अपना नाम पैदा करते थे अपितु उस गुरुकुल का भी नाम चारों तरफ गुंजाते थे जहां उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। मुझे वह दिन भी याद हैं जब आर्य समाज के उपदेशक यह गीत गाया करते थे कि—

> आएंगे खत अरब से जिनमें यह लिखा होगा,
> कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी हल-चल मचा रहा है॥

इसमें सन्देह नहीं इस गुरुकुल से जो स्नातक शिक्षा प्राप्त करके निकला करते थे, वह अपनी योग्यता से जनता पर ऐसी धाक बैठाया करते थे कि लोग गुरुकुल में अपने बच्चे भेजने में गर्व अनुभव किया करते थे। यह ही नहीं बल्कि देश विदेश के बड़े-बड़े विद्वान और नेता इस गुरुकुल को एक आदर्श संस्था समझ कर कहा करते थे कि महात्मा मुन्शीराम जी ने शिक्षा का एक ऐसा परीक्षण किया है जो पहले किसी ने न किया था। महात्मा मुन्शीराम या स्वामी श्रद्धानन्द यही कहा करते थे कि मैं वही कुछ कर रहा हू जो हमारे ऋषि-मुनि किया करते थे और उसके बाद जो महर्षि दयानन्द जी ने हमें मार्ग दिखाया है। जो पहला गुरुकुल था और जिसके अतीत को हम आज याद करते हैं वही वह गुरुकुल था जिसने श्री पण्डित इन्द्र विद्या वाचस्पति, पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, आचार्य प्रियव्रत, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, पं० विश्वनाथ जी, आचार्य रामनाथ जी, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार और बहुत से दूसरे बड़े-बड़े विद्वान पैदा किये हैं।

परन्तु यह अतीत की बात है आज का गुरुकुल वह नही रहा जिसने ससार में अपना नाम पैदा किया था और मुझे यह कहने मे भी कोई संकोच नहीं कि जिस रूप में आज गुरुकुल को हम देख रहे हैं, उसे देख कर कई बार सिर लज्जा से झुक जाता है। मैंने ऊपर लिखा है कि गुरुकुल के उत्सव पर दो समारोह हुआ करते थे, वेदारम्भ संस्कार और दीक्षान्त समारोह। परन्तु तीन वर्ष हुए जब दीक्षान्त समारोह तो हुआ था परन्तु वेदारम्भ संस्कार नहीं हुआ था। इस बार जो उत्सव हो रहा है उसमें वेदारम्भ सस्कार तो हो रहा है परन्तु दीक्षान्त समारोह नहीं हो रहा। यदि यही स्थिति रही तो और दो-चार वर्ष बाद इस गुरुकुल में न वेदारम्भ सस्कार होगा न दीक्षान्त समारोह होगा।

वह दिन गुरुकुल के इतिहास में अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण दिन था जिस दिन इसे सरकार की देख-रेख में एक विश्वविद्यालय बना दिया गया था। उसी दिन से इसका पतन शुरू हो गया था और आज स्थिति यह है कि यहा गुरुकुल का नाम तो है परन्तु गुरुकुल का काम कहीं नहीं। हम यह भी कह सकते हैं कि गुरुकुल का शरीर तो दिखाई दे रहा है परन्तु उसकी आत्मा उस मे से निकल चुकी है। कहने को तो आर्य समाज की एक सस्था है परन्तु आर्य समाज इसमें कहीं दिखाई नहीं देता।

यह है गुरुकुल का भूत और वर्तमान। असली प्रश्न यह है कि इसका भविष्य क्या होगा? यह ऐसी समस्या है जिस पर आर्य जगत को गम्भीरता पूर्वक बैठ कर विचार करना चाहिए। अगर मेरा यह सुझाव आर्य जगत के नेता मानने को तैयार हों तो मैं उन्हें कहूंगा कि उन्हें अपना सारा ध्यान गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की तरफ देना चाहिए। आज जगह जगह माडल स्कूल खोले जा रहे हैं। लोग उनमें अपने बच्चों को भेजने के लिए ललायित रहते हैं। एक एक बच्चे पर हजारों रुपया खर्च हो जाता है परन्तु फिर भी लोग अपने बच्चे वहां भेजते हैं। क्यों न हम बच्चों के गुरुकुल को उसी प्रकार का एक आदर्श विद्यालय बनाएं जहां लोग अपने बच्चे भेजने में गर्व अनुभव करें। जहां तक गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय का सम्बन्ध है, इसका नाम बदल देना चाहिए। क्योंकि गुरुकुल की यहां कोई भी बात नजर नहीं आती। यह विश्वविद्यालय रहे परन्तु इसे स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम के साथ न जोड़ा जाए। देश के दूसरे बड़े विश्व विद्यालयों की तरह यह भी चलता रहे परन्तु इसके साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिस गुरुकुल को स्थापित किया था और जिसे चलाने के लिए पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, आचार्य राम देव जी, आचार्य अभय देव जी, आचार्य प्रियव्रत जी और आचार्य सत्यव्रत जी ने अपना जीवन दिया था, वह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अब नहीं रहा। इस लिए हमें इस पर विचार करना चाहिए कि इस विश्वविद्यालय का क्या किया जाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कई कालेज हैं। सभा के मुख्यालय के आर्य कालेज में चार हजार लड़के पढ़ते हैं। तथा मथुरा के कालेज में दो हजार से ऊपर लड़के हैं। इस प्रकार और भी हमारी कई संस्थाएं हैं जिनमें हजारों लड़के पढ़ते हैं। परन्तु इस गुरुकुल में सम्भवत: 700 से अधिक विद्यार्थी नहीं हैं। इस लिए इसे विश्वविद्यालय कहना ही इस शब्द का अपमान करना है।

हमें यह भी देखना चाहिए कि वहां किस प्रकार की शिक्षा दी जाती है और वहां से किस प्रकार के स्नातक निकलते हैं। आज इसकी स्थिति निराशा जनक है। इस लिए आर्य जगत के नेताओं को और इस विश्वविद्यालय के कर्णधारो को मेरा यह सुझाव है कि इस विश्वविद्यालय का नाम बदल दिया जाए क्योंकि स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ यह बहुत बड़ा अन्याय है कि उनके नाम के साथ कोई ऐसी संस्था जुड़ी हो जिसमें उनके द्वारा बताई गई शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित करने के लिए कुछ भी न किया जा रहा हो। आर्य समाज के नेताओं का कर्त्तव्य है कि वह इस पर विचार करें कि इस सस्था का क्या करना है। इसका अतीत अत्यन्त गौरवमय था, वर्तमान अत्यन्त निराशाजनक है, भूत क्या होगा यह कोई नहीं जानता।

वीरेन्द्र

गुरुकुल के स्नातकों को कुल पिता श्री स्वामी श्रद्धानन्द का उपदेश

पुत्रो! आज मैं तुम्हें उन बन्धनो से मुक्त करता हू, जिस के अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिये आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बन्धन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बन्धन बाध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हू इन बन्धनों का पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नही इसीलिए ये बन्धन और भी कड़े हैं। यह बन्धन उन उपनिषद वाक्यों मे वर्णित है जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि मे प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि हो कर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूं।

पुत्रो! परमात्मा सत्य स्वरूप है। उस के प्यारे बनने के लिये अपने जीवन को सत्य स्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारीवाणी में तुम्हारी क्रिया में सत्य हो। धर्म मर्यादा का उल्लघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अन्त:करण ही है। बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वह तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलायेगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो। स्वाध्याय से कभी मुख न मोडो। वह तुम्हें प्रमाद से बचायेगा।

जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है उसे अपने हृदय से पूछो? यह तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दाक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुम से केवल एक ही दक्षिणा मांगता हू। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो, जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पडे।

तुम मे से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उन से मैं कहता हू कि पाचो यज्ञो के करने मे कभी प्रमाद न करना। माता पिता, आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता है। इन की सदा सुश्रुषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बडे उदार और निरभिमनी थे। वे कभी पूर्णतया दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि हो कर मैं तुम्हे कहता हू कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड दो। इस ससार की अधियारी मे किसी को अपना ज्योति स्तम्भ बनाओ। पढा पढ़ाया कुछ अश तक पथदर्शक होता है, पर सच्चे पथ दर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम ससार में छोड जाते हैं। वे जीवन समुद्र मे ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी सत्यावादी और पक्षपात रहित महापुरुषों के, पथ पर चलो चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक।

यह तो सभी ससार जानता है कि तुम इस योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारा देह बना है, जिस की गगा का तुम ने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने ससार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भूमि भारत मे रहते हुए तुम उस के यश को उज्जवल करोगे इस की मुझे पूरी आशा है। इस के साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुम ने दूसरा जन्म लिया है उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने सक्षेप से उन वाक्यों का साराश सुना दिया है जो कि सहस्त्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूजते रहे हैं। इन्हे गुरुमंत्र समझो और अपना पथ दर्शक बनाओ।

इस के अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मैं तुम से गुरु दक्षिणा नहीं मांगता। गुरु दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मागना मेरा धर्म नहीं। मैं तुम से यह भी नहीं पृछता कि तुम्हारे राजनीतिक सामाजिक या मानसिक विचार क्या क्या हैं? मैं केवल तुम से यही पूछता हू कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं या नहीं? स्मरण रखो यह ससार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना समाज के नियम पद्दलित करने योग्य हैं? यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलंबन है तो मुझे न कोई चिन्ता है और ना ही कुछ मांगना है। (यह उपदेश कुलपति ने दूसरे दीक्षान्त संस्करण में 28 मार्च 1914 ई०. को दिया था)।

हम में देश भक्ति की कमी क्यों है?

ले०—श्री आचार्य देवशर्मा जी 'अभय' विद्यालंकार

श्री अभय जी का यह लेख 1-4-1938 को लिखा गया था उस समय देश आजाद नहीं हुआ था परन्तु आज भी यह बहुत ही महत्त्व पूर्ण है।

—सम्पादक

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।
अथर्व 12-1-12

ऋषि दयानन्द के जीवन से और वेद के उपदेश के अनुसार जिस देश भक्ति के गुण का मैं इस महीने के लिये उल्लेख करना चाहता हूं, वह ऐसा गुण है जिसकी कि इस देश के (भारतवर्ष के) लोगों में विशेष कमी है इस लिए जैसे कि प्रत्येक अन्य वैदिक धर्म के अंग में आर्य सामाजिक पुरुषों को अग्रणी होना चाहिये वैसे ही इस देशभक्ति के अत्यावश्यक गुण के विस्तार में भी आर्य समाजी भारतवासियों को विशेषतया पथ-प्रदर्शक का काम करना चाहिए' यदि हम इस बात को समझेंगे तो हममें प्रत्येक व्यक्ति अपने में देशभक्ति का गुण लाने का शीघ्र प्रबल यत्न करेगा।

यह लिखने की जरूरत नहीं कि क्योंकि अभी तक आर्य समाज भारत देश तक ही परिमित है और इस देश के सभी लोगो ने अभी तक देशभक्ति को अच्छी तरह नहीं सीखा है, अत: स्वभावत: मैं इस लेख में भारत देश की भक्ति का वर्णन करूंगा। इससे पाठक यही समझें कि मैं यह लेख भारतवासी वैदिक धर्मियों को दृष्टि में रखकर लिख रहा हूं, यद्यपि सामान्यतया कहा जा सकता है कि अन्यदेशों में उत्पन्न होने वाले वैदिक धर्मियो को भी इन्हीं वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार अपनी देश माता की सेवा करनी चाहिए और इस महान धर्म का पालन करते हुए सामाजिक सुख सम्पत्ति बढ़ा कर वैयक्तिक सुख सम्पत्ति भी पाकर कृतकृत्य होना चाहिये।

हम मे देशभक्ति की कमी क्यों है? इसका कारण यही समझ में आता है कि हमने अपने हृदय को फैलाया नहीं हैं, अपना दृष्टिकोण विस्तृत नहीं किया है। मैं चाह करता हूं कि हर एक भारत वासी अपने विशाल घर को देखे और वहां अपनी वेदोक्त माता का दर्शन करे। यदि मैं आपसे आपका घर पूछू तो शायद आप अपने छोटे से चार दीवारी से घिरे हुए घर की तरफ इशारा करेंगे। और दो चार भाई बहिनों की जननी को माता कह कर बतलायेंगे परन्तु हमें इससे ऊपर उठना है और उठकर जिस अपने विशाल घर की वन्दनीय माता को देखना है वह कुछ और है। इसके लिए अपने हृदय को दूर तक विस्तृत कीजिये, दिल को खोल दीजिये। यदि आप इस असली माता को देखना चाहते हैं तो ऐसा ही करना होगा। तब आप देखेंगे कि हमारा विस्तृत घर वह है जो कशमीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से काम रान तक फैला है, जिसमें कि पंजाब, संयुक्त प्रान्त, बंगाल, मद्रासादि प्रान्त ऐसे हैं जैसे कि एक घर के कई कमरे होते हैं। इस घर में दो चार नहीं किन्तु 35 करोड़ बहिन भाई बस रहे हैं। क्या आपने अब अपनी माता को देखा? इस 35 करोड़ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख व ईसाई आदि भाई बहिनों की जननी अपनी वृद्धा माता को पहचाना? यह वह माता है जिस की सेवा के लिए यदि जरूरत हो तो हमें अपनी दो चार भाई बहनों की माता को त्याग देना चाहिए और अपने क्षुद्र घर का बलिदान कर देना चाहिए। यह वह माता है जिसे अभी तक न पहचानने और अतएव उसकी सेवातत्पर न होने के कारण हम अनगिनत दु:ख और विपत उठा रहे हैं और दुनियां में महापतित दु:खागार बने हुए हैं और जिसकी एक मात्र सेवा से ही फिर हमारा उद्धार हो सकता है। *यही सेवा किये जाने योग्य और बन्दना किये जाने के योग्य हमारी माता है।* "वन्दे मातरम्" की पवित्र ध्वनि उठाकर देश भक्त लोग इसी माता को नमस्कार करते हैं। आइये वैदिक धर्मी बन्धु गण! हम इस माता के आगे सिर झुकायें और वेद के शब्दों में अनुभव करें—

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।
अथ० 12-1-12 "यह मातृभूमि मेरी माता है और मैं इस विस्तृत पृथ्वी का पुत्र हूं"।

यह अथर्ववेद के प्रसिद्ध पृथ्वी सूक्त का एक वाक्य है, जो कि इतना स्पष्ट है कि एक संस्कृत न जानने वाला भी इसका अर्थ समझ सकता है। इस सूक्त में मातृभूमि विषयक बड़ा ज्ञान सिखा हुआ है परन्तु हम तो यदि केवल इस एक वेद वाक्य को ही अपनालें और इससे यह समझ जावें कि यह भूमि हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं तो हम कुछ न कुछ बन जावें। हर एक भारतवासी को अपना भाई समझने लगें। जैसे कि अपने माता पिता गुरु परमात्मा आदि के प्रति हमारे कर्त्तव्य हैं वैसे ही इस देश माता के प्रति भी अपने आवश्यक कर्तव्यों को समझने लगें, और इसकी सेवा के लिये अपना सब कुछ अर्पण करने को भी तैयार हो जावें। तब हमें समझ में आवे कि तिलक महाराज जैसे हमारे दिवंगत भाई किसकी सेवा में अपना जीवन अर्पण कर गये और गांधी जी जैसे हमारे वर्तमान भाई किस पवित्र काम के लिए हमें बुला रहे हैं।

माता की दु:खित दशा ही इन हमारे माननीय भाइयों को क्षणभर भी चैन नहीं लेने देती; जरा इस अपनी जननी की दशा अपनी आंखा से देखो। जिस माता के पुत्र ही अपनी मां को न जानते हों उसकी कैसी दशा होगी? भगवान ही उसका मालिक है। अन्य सब देशवासी अपनी देश माता को तो जानते हैं, इसी लिए अन्य त्रुटियों के होते हुए भी वे सुखी हैं। हम क्या करें। हमारी माता के सुपुत्र दादा भाई, तिलक, गोखले, दास, मोतीलाल, लाजपतराय आदि हमें मार्ग दिखाने का यत्न करते हुए गुजर गये। इस समय भी माता का ऐसा लाल विद्यमान है जिसका कि नाम जब तक यह जगत है अमर रहेगा। परन्तु तो भी हमें सफलता क्यों नहीं मिली? इसका कारण यही है कि हम में से अभी बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने अपनी माता को नहीं समझा है हमने मुख से "वन्दे मातरम्" की काफी चिल्लाहट मचाई है पर दिल से उस माता की वन्दना नहीं की हैं। नहीं तो हम में इतनी फूट नहीं रह सकती थी। आइए! आज से हम अपनी माता को अपने दिल में बिठालें, इसके सामने अपने अन्य सब छोटे छोटे स्वार्थों को त्याग दें और मिलकर राष्ट्रीय आज्ञा के पालन करने में लग जावें तब देखेंगे कि पैंतीस कोटि की इस जननी को क्या संकट रह सकता है।

इस मातृ सेवा के कार्य में सब से अधिक कर्तव्य आर्य समाज का है क्योंकि आज से बहुत पहले एक ऋषि ने अपनी इस माता की दु:खावस्था देखी थी और फलत: आर्य समाज को जन्म दिया था। उसे उस गुलामी के पूरे राज्य के जमाने में भी अपने चक्रवर्ती राज्य की याद आया करती था। उसने देखा कि मां के दोनों हाथ बन्धे हुए हैं, न केवल वह के मुख में कपड़ा ठूसा है परन्तु उसकी छाती पर शत्रु पांव रखे खड़ा है। "यह देश विदेशों से पादक्रांत हो रहा है"। उसने माता के बन्धन छुड़ाने का मौलिक उपाय करने के लिये इस संस्था की स्थापना की थी। ऐसा हम आज कह सकते हैं। उनका पूरा उद्देश्य तो माता को बन्धन से छुड़ाकर उसे स्वतन्त्र कर उसकी दुनियां में प्रतिष्ठा स्थापित करना और उसके पास उसके पुराने ऋषि मुनियों से संचित जो वैदिक धर्म का खजाना है दुनियां को देकर शान्ति फैलाना था। पर हमने अब तक क्या किया हैं? अभी तक तो माता को बन्धन से भी मुक्त नहीं किया है। बन्धन से मुक्त ही नहीं, बहुतों ने तो अभी उसके दर्शन भी किये हैं। वैदिक धर्मियों के सामने कितना भारी काम है। हम अभीतक चाहे कहीं अपना मन भटका रहे हों पर समय आ गया है कि हमें मातृ सेवा के लिये अपना पूरा ध्यान देना चाहिए। यह हमारा पहला कार्य है।

इस लिए इस महीने माता के दर्शन अवश्य कर लीजिये।

उसकी दुखित दशा को देखकर अपने कर्तव्य निश्चित कर लीजिये। जरा देखिए कि यदि माता स्वाधीन होती तो भी उस की सेवा शुश्रूषा की सतत आवश्यकता थी परन्तु अब जब कि उसकी यह हालत है तब तो हमें अन्य सब काम छोड़ कर इसमें लगना चाहिए। माता के प्रति अपने कर्तव्यों को हम पूरा नहीं कर रहे हैं इसी कारण हम इतने विपद्ग्रस्त हैं। यह आप विचारेंगे तो पता लगेगा कि हमारा इस माता के प्रति कितना भारी कर्तव्य है। इसका बिना उद्धार किए सचमुच हमारे सब काम रुके पड़े हैं।

माता की मूर्ति यदि आपको दिखाई दे गई है तो इसे बार बार विचार कर हृदय में स्थिर कर लीजिये। फिर जब कभी विदेशी वस्त्र पहनने का या कोई अन्य राष्ट्रीय पाप करने का प्रलोभन उपस्थित हो तब जरा इस माता का स्मरण कर लिया कीजिये। यदि कभी माता के लिए धन देने, मन देने, या तन तक देने में हिचकिचाहट होवे तब आचार्य दयानन्द के यह शब्द कानों में गूंजने दिया कीजिये कि "माता की छाती पर शत्रु पैर रखे हुए हैं"। और उन बातों का क्या कहना है तब तो मरना भी आपको बड़ा आसान प्रतीत होगा। स्वदेशी वस्त्र पहनना या चरखे के लिये समय निकालने की तो शिकायत रह ही नहीं सकती, तब तो आप आसानी से ऐसे ऐसे घोर तप भी कर लेंगे कि सब दुनियां देख कर चकित होगी। बस केवल एक बार माता को देखने की देर है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी को देश विदेश के महान् नेताओं की श्रद्धांजलि

हमारे देश में जो सत्यव्रत के ग्रहण करने के अधिकारी हैं एवं इस व्रत के लिये प्राण देकर जो पालन करने की शक्ति रखते हैं, उनकी संख्या बहुत ही कम होने के कारण हमारे देश की इतनी दुर्गति है। ऐसी अवस्था जहां है वहां स्वामी श्रद्धानन्द जैसे इतने बड़े वीर की इस प्रकार मृत्यु से कितनी हानि हुई होगी इसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इसके मध्य एक बात अवश्य है कि उनकी मृत्यु कितनी ही शोचनीय हुई हो किन्तु इस मृत्यु ने उनके प्राण एवं उनके चरित्र को उतना ही महान् बना दिया है।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन भी शानदार था और मृत्यु भी शानदार। जब तक जीवित रहे, शहीद का जीवन व्यतीत करते रहे। मृत्यु ने उनकी शहादत में चार चांद लगा दिये। ऐसे लोग हुए हैं जिनका जीवन शहीद का था किन्तु उन्हें शहीद की मृत्यु प्राप्त नहीं हुई। ऐसे भी हुए हैं जिनकी मृत्यु शहीदों की थी परन्तु जिनका जीवन शहीदों का नहीं था। पण्डित लेख राम की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी यह श्रेय प्राप्त है कि वे जीवन की दृष्टि से भी शहीद थे और मृत्यु की दृष्टि से भी। ऐसी महान आत्मा की मृत्यु पर कौन अपनी श्रद्धा भेंट न करेगा।

—महात्मा गांधी

स्वामी जी आर्य समाज के सम्मान की रक्षा के लिए प्रतिपल आग में कूदने को तैयार रहते थे। 1907 में जब अंग्रेज सरकार की आर्य समाज पर वक्र दृष्टि थी और उसे वह एक विद्रोही संस्था समझती थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज लाहौर के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर आर्य समाज और राजनीति के विषय में अपना भाषण दिया था। आप ने बताया कि शुद्ध राजनीति धर्म का एक अंग है। फिर 1909 में जब पटियाला सरकार ने अपनी रियासत के समस्त छोटे-बड़े आर्यसमाजियों को इस आधार पर कि आर्य समाज एक विद्रोही दल है, जेल में डाल दिया था। वह गुरुकुल से आकर पटियाला में डेरा डाल कर बैठ गये। उसने निर्दोष आर्य समाजियों की मुकद्दमे की पैरवी करने की अनुमति प्राप्त की। 1919 में जब मार्शल-ला के कारण पंजाब की जनता भयभीत और सहमी हुई थी और सरकार बाहर से किसी को पंजाब में प्रवेश न करने देता था स्वामी श्रद्धानन्द ने गिरफ्तार लोगों के पीड़ित परिवारों की सहायता का काम सम्भाला। इसके लिए उन्होंने पूरे पंजाब का दौरा किया और निराश जनता को आशा का संदेश दिया। 1919 में ही जब महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की घोषणा की तो वह उस सत्याग्रह में कूद पड़े और 30 मार्च को जब गांधी जी के आदेश पर दिल्ली में अभूतपूर्व हड़ताल हुई और पुलिस की गोली से एक हिन्दू और एक मुसलमान शहीद हुआ तो उन्होंने उस आन्दोलन का संचालन अपने हाथों में ले लिया।

—स्व० महाशय कृष्ण

स्वामी श्रद्धानन्द जी ज्ञानी और महात्मा हैं। उनका जीवन तथा प्राणोत्सर्ग धर्म और देश के लिए हुआ। मैं उस महान आत्मा के प्रति कृतज्ञता-पूर्वक अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।

—चक्रवर्ती विजयराघवाचार्य

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल चाहे तो मैं उस भव्यमूर्ति श्रद्धांजलि की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा।

—रैम्जे मैकडॉनल्ड

मैं अपने को इस बात से गौरवान्वित समझता हूं कि मुझे श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर दिया गया है। मुझे तो स्वामी जी के अनेक गुणों में उनका असीम साहस सबसे अधिक आकर्षक लगा है। शारीरिक मानसिक सामाजिक और अध्यात्मिक साहस से वे जन्म से मृत्यु तक कार्य करते रहे। उनका सात्विक हठ बहुत ही प्रिय था। उनका सारा जीवन वीरोचित था और अन्त में भी उन्हें वीरगति ही मिली। ऐसे ही महापुरुष हमारे देश का सिर इस गिरी अवस्था में भी उन्नत किए हैं।

—श्री प्रकाश

उस साल 1926 के आखिर में हिन्दुस्तान में एक भारी दुखद घटना से अन्धेरा छा गया। इस घटना में हिन्दुस्तान भर घृणा व रोष से कांप उठा। स्वामी श्रद्धानन्द को एक मजहब के अन्धे ने कत्ल कर दिया। जिस पुरुष ने गोरखों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उनकी गोलियों का सामना किया था उसकी ऐसी मौत। करीब-करीब आठ वर्ष पहले उन्होंने दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दुओं और मुसलमानों के एक बहुत बड़े जन समूह को एकता का और भारत वर्ष की आजादी का उपदेश दिया था। उस विशाल भीड़ ने हिन्दू मुसलमानों की जय के नारों से उनका स्वागत किया था और मस्जिद के बाहर

(शेष पृष्ठ आठ पर)

जिला सभाओं के अधिकारियों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कुछ वर्ष हुए वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने के लिए तथा पंजाब में आर्य समाजों के कार्य को सुचारू रूप से उन्नत करने के लिये जिला सभाओं का निर्माण किया था। जिला सभाओं के कार्य को संविधानिक रूप देने के लिये जिला सभा का विधान भी बनाया था। हमारे पास कुछ जिलों से यह शिकायतें पहुंची थी कि जिला सभाओं के अधिकारी विधान की परवाह न करके अपनी इच्छानुसार कार्य करते हैं। सभा की अन्तरंग सभा दिनांक 17-12-89 में जिला के विधान जो कि स्व० श्री रामचन्द्र जी जावेद द्वारा बनाया गया था को आधार मान कर संशोधित करने के लिए उपसमिति का गठन किया था। इसलिए उस उप-समिति ने अपनी बैठक 30-3-90 में जिला सभाओं का विधान पारित कर दिया है। इस लिए आप सब से निवेदन है कि जिस जिला में जिला आर्य सभा कार्य कर रही है वह इस विधान के अनुसार ही अपना कार्य आगे बढ़ायें तथा अपने निर्वाचन जुलाई मास तक इस विधान के अनुसार करके सभा को सूचित करें। जिन जिलों में जिला सभा नहीं है। वहां पर सभा शीघ्र संयोजक नियुक्त करके जिला सभा का गठन करेगी। विधान निम्न प्रकार है—

—रणबीर भाटिया
महा मन्त्री

जिला आर्य सभाओं का विधान

मुख्य कार्यालय—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन जालन्धर

1. नाम—इस सभा का नाम जिला आर्य सभा होगा।

2. कार्यालय—जिला के केन्द्रीय स्थान पर इस का कार्यालय होगा।

3. उद्देश्य—इस सभा के उद्देश्य निम्नलिखित होंगे—

(क) जिला की आर्य समाजों को संगठित करना।

(ख) जिला की आर्य समाजों को शिथिल न होने देना तथा सब समाजों को प्रगतिशील करना।

(ग) जिला में जिन नगरों और ग्रामों में आर्य समाजें नहीं है उनमें समाजों की स्थापना करना।

(घ) जिला की आर्य समाज के प्रचार का प्रबन्ध करना तथा समय समय पर सम्मेलन करना।

4. जिला में आर्य शिक्षण संस्थाओं का एक एक हैड (मुखिया) भी जिला सभा का सदस्य होगा। जिला की प्रत्येक आर्य समाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित हो उसके प्रधान मन्त्री व कोषाध्यक्ष इस सभा के सदस्य होंगे।

5. समाजों के चुनाव सम्पन्न हो जाने के पश्चात प्रति वर्ष जुलाई मास में प्रत्येक जिला की आर्य सभा का चुनाव हुआ करेगा।

चुनाव बहुमत से हुआ करेगा और जिस प्रकार इसके सदस्यों का बहुमत चाहेगा, पर्ची द्वारा हाथ खड़ा करके या सदस्यों का विभाजन करा के चुनाव करा लिया जाएगा।

6. अधिकारी—इस सभा के निम्नलिखित अधिकारी होंगे—

एक प्रधान, दो उप प्रधान, एक मन्त्री, दो उपमन्त्री और एक कोषाध्यक्ष

7. अधिकारियों के अधिकार व कर्तव्य वही होंगे जो आर्य समाज के उप नियमों मे समाजों के अधिकारियों के हैं।

8. इन जिला सभाओं की आय के दो साधन होंगे—

(क) जिला की प्रत्येक समाज अपनी अपनी जिला सभा को अनिवार्य रूप से कम से कम पच्चीस रुपये वार्षिक देगी। यह राशि सम्बन्ध शुल्क समझी जाएगी और इसके बिना किसी समाज के प्रतिनिधि जिला समाजों के चुनावों में भाग नहीं ले सकेंगे।

(ख) दान द्वारा।

9. यह जिला आर्य सभायें अपने कार्यालय में अपने जिला की समाजों उनकी स्थिति तथा सम्पत्ति का पूरा विवरण रखेंगी।

10. किसी भी जिला सभा में विरोध उत्पन्न हो जाने अथवा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाने पर कि जिसे सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य समाज और सभा के लिए हानिकारक समझे ऐसी जिलासभा को अपनी अन्तरंग सभा से निर्णय ले कर भंग कर सकेगी और उसके स्थान पर एक तदर्थ समिति नियम कर सकेगी।

11. जिला समाजों के विधान की स्वीकृति तथा उसमे परिवर्तन का अधिकार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा को होगा।

12. आरम्भ में प्रत्येक जिला सभा के गठन के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग एक एक संयोजक नियत करेगी।

13. दो मास के भीतर अन्तरंग सभा की कम से कम एक बैठक आवश्यक होनी चाहिए तथा उसकी कार्यवाही सभा को भेजी जाये।

"हैदराबाद के लौह पुरुष" युवक हृदय सम्राट

पण्डित नरेन्द्र जी

ले० श्री लक्ष्मण आर्य, प्रधान, आर्य समाज वरंगल, (आन्ध्र प्रदेश)

प० नरेन्द्र जी का जन्म 15 अप्रैल 1907 श्री राम नवमी पुनीत पर्व के दिन हुआ था तथा निधन 24 सितम्बर 1976 को हुआ था। इस बार 3-4 90 मगलवार श्री राम नवमी के पुनीत पर्व के दिन उनका पुनीतजन्म दिन को दृष्टि मे रखकर उनकी पावन स्मृति में यह लेख लिखा गया।

हैदराबाद आर्य जगत के एक वरिष्ट आर्य नेता एव हैदराबाद के लौह पुरुष युवक हृदय सम्राट पंडित नरेन्द्र जी (स्वामी सोमानन्द सरस्वती) निष्कलंक देश भक्त, स्वातन्त्रता सेनानी, त्यागमूर्ति, धर्म तथा राजनीतिक के धुरी थे। आप उच्चकोटि के सरल, सुबोध आकर्षक एव तर्क युक्त शैली के लोक प्रिय निडर तथा स्पष्ट वक्ता थे। निजाम के काल मे आप इत्तेहादुल मुसलमान के नेता नवाब बहादुर यारजग के नवाब थे। आपके भाषणों मे जादू का प्रभाव था। आप मुर्दो मे मे जान फूकते थे। युवकों में स्वाभिमान, देश भक्ति जगाते थे। युवकों मे उत्साह भरते थे और अत्याचारों से पीड़ित युवक जीने-मरने को तैयार हो जाते थे। आप के भाषणो से प्रभावित होकर प० जवाहर लाल नेहरू जी ने स्वयं कहा था—"जनता पर कट्रोल करने में यह छोटा सा व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली है।"

प० नरेन्द्र जी ने अपने साथियों सहित बहादुर यारजग द्वारा चलाये जा रहे तबलीक कार्यों को रोक दिया और शुद्धि का कार्य प्रारम्भ कर दिया एक ओर बहादुर यारजग घूम-घूम कर भाषणों और अन्य प्रलोभनों द्वारा मुसलमानों को भड़काते और हिन्दुओं को आतंकित कराते थे तो दूसरी ओर पडित जी उन्हीं स्थानों पर जाकर उनके द्वारा बनाये गये वातावरण को समाप्त करते। आपके इन कार्यों को देखकर निजाम ही हुकूमत परेशान हो गई थी और धर्मान्ध मुसलमान घबरा गये थे। पडित जी के भाषणों पर प्रतिबन्ध लगाये गये। इतना ही नहीं पडित जी को कई बार जेल भेजा गया और जेल में अमानुषिक अत्याचार किये गये। यहां तक कि एक बार पंडित जी को हैदराबाद राज्य के 'अंडमान' मन्नूर (काले पानी जेल) भी भेज दिया गया। वहां आप एक वर्ष, पांच मास, सात दिन नजर बन्द रह कर भी अपने पत्रों द्वारा देश के नाम सन्देश देने का प्रयत्न करते रहे। प्रसन्नता की बात है कि इसके पुनीत स्मारक में मन्नूर के आसपास आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश द्वारा एक भव्य भवन का निर्माण किया गया और उसका उद्घाटन 13, 14 तथा 15 अप्रैल 1990 में होने की सभावना है। इस भवन में में आदिवासियों के लिए विद्यालय, चिकित्सालय की व्यवस्था की जाने की योजना है। 1945 में गुलबर्गा आर्य सम्मेलन के अवसर पर अत्याचारी पुलिस अधिकारियों द्वारा पंडित जी तथा दक्षिण केसरी वीर विनयराव विद्यालंकार आदि को पुलिस स्टेशन बुलाकर उनकी मार-पीट की गई, जिससे पंडित जी मूर्छित हो गये और पांव की हड्डी टूट गयी।

आर्य समाज के गौरवमय इतिहास में हैदराबाद राज्य का आर्य सत्याग्रह सग्राम 1938-39 अपना एक विशिष्ठ स्थान रखता है। इस संग्राम में आर्य समाज की विजय हुई है। इस घटना चक्र की सफलता का श्रेय महर्षि दयानन्द के मानस-पुत्र पं नरेन्द्र जी को ही था क्योंकि इस सत्याग्रह में आपने अद्भुत कार्य कुशलता से आन्दोलन का संचालन किया था। हैदराबाद राज्य में आर्य समाजों की स्थापना से लेकर आर्य जनों को जागृत करना, धर्म के लिए बलिदान होने की प्रेरणा तथा सत्याग्रह आन्दोलन की भूमिका तैयार करना एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति से ही सम्भव था।

पंडित जी सदा हमारे इतने निकट रहे कि आप की खूबियां हम परख ही नहीं सकते। आपकी परख तो दूर रहने वाले अच्छी तरह कर सकते हैं। मुझे तो केवल पंडित जी के व्यक्तित्व को देखकर यजुर्वेद का मंत्र स्मरण हो आता है।

ओं प्रेताजायता नरइन्द्रो व शर्मयच्छतु।

अग्वान: सन्तु बहवो अनाधृष्या यथासथ॥

"हे वीर नेता पुरुषों आगे बढ़ो, विजय प्राप्त करो। ईश्वर का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रकृति तथा वास्तविकता पर आयोजित विद्वत् गोष्ठी

पजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द शोध पीठ के द्वारा आयोजित वैदिक आख्यान विषयक विद्वानों की दो दिवसीय गोष्ठी गत दिनों विश्वविद्यालय के भव्य गांधी भवन में सम्पन्न हुई। वैदिक मंगलाचरण के पश्चात् शोध सहायिका डा० वसुन्धरा रिहानी ने आगत अतिथि विद्वानों का स्वागत करते हुए आशा प्रकट की कि यह विद्वत् समुदाय वेद वर्णित विभिन्न आख्यानों की वास्तविकता का पता लगा पायेगा। अपने प्रास्तविक भाषण में शोध पीठ के विगत अध्यक्ष तथा वर्तमान प्रोफेसर डा० भवानीलाल भारतीय ने अपने प्रास्तविक भाषण में वेदाध्ययन में उपस्थित होने वाली समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया तथा निरुक्त, ब्राह्मण, मीमांसा आदि के शास्त्रीय प्रमाणों से सिद्ध किया कि वेदों में आपातत: प्रतीत होने वाले आख्यान वास्तविक न होकर प्राकृतिक तथ्यों, घटनाओं तथा अन्य शाश्वत सत्यों का आलंकारिक वर्णन ही करते हैं। वेद व्याख्याकार ऋषियों ने प्ररोचना और अपने कथ्य को सुगम बनाने के लिए ही इन आख्यानों का सहारा लिया है। मनु ने स्पष्ट घोषित किया है कि—

सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्

वेद शब्देभ्य: एवादौ पृथक् सस्थाश्च निर्ममे॥

अर्थात् लोगों ने व्यक्तियों, पदार्थों, स्थानों आदि को जो नाम दिए गये वे वेदों में वर्णित पदों को लेकर ही दिये गये हैं। अत: वेद में उल्लिखित राम, सीता, अयोध्या, दशरथ आदि नामों तथा तत्सम्बद्ध कथाओं की वास्तविकता को समझने की आवश्यकता है। वे अवान्तर कालीन व्यक्तियों या स्थानों के नाम नहीं हैं। गोष्ठी का उद्घाटन डी०ए०वी० कालेज चण्डीगढ़ के प्राचार्य श्री कृष्णसिंह आर्य ने किया। त्रिसत्रीय इस गोष्ठी की अध्यक्षता सर्व श्री डा० सुधीरकुमार गुप्त, डा० कृष्ण लाल (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने की।

निम्न विद्वानों ने अपने शोध पत्र पढ़े—

प्रो० कृष्णलाल (दिल्ली) शुन:शेप आख्यान की समीक्षा।

डा० सुरेन्द्र कुमार (झज्जर) विष्णु का विक्रमण और ओर वामन की कथा।

डा० विक्रम कुमार (चण्डीगढ़) वैदिक आख्यान : एक समीक्षा।

डा० ब्रजबिहारी चोबे (होशियारपुर) माइथोलोजी और आख्यान।

डा० धर्मानन्द (होशियारपुर) वेदों में आख्यानों की स्थिति।

डा० मानसिंह (शिमला) यास्कीय निरुक्त और वैदिक आख्यान।

डा० श्रद्धा चौहान (जोधपुर) सोमभृत गायत्री।

डा० भारतभूषण (कांगड़ी) वैदिक आख्यानों का स्वरूप।

प्रो० धर्मवीर (अजमेर) इन्द्र गृत्समद उपाख्यान।

डा० सुरेन्द्र मोहन मिश्र (कुरुक्षेत्र) ऋग्वेद वर्णित भृगु उपाख्यान।

डा० वसुन्धरा रिहानी (चण्डीगढ़) इन्द्र दध्यङ् आख्यान की समीक्षा।

डा० फतहसिंह (दिल्ली) उर्वशी पुरूरवा कथा की वास्तविकता।

डा० मैथिली प्रसाद भारद्वाज (चण्डीगढ़) ऋग्वेद के आख्यानों का नृतात्विक अध्ययन।

डा० जयदत्त उप्रेती (अल्मोड़ा) वैदिक आख्यानों की वास्तविकता।

डा० नरसिंह पण्डा (चण्डीगढ़) वैदिन आख्यान : एक समीक्षा।

डा० सुधीर कुमार गुप्त (जयपुर) वैदिक आख्यान और वास्तविकता।

अपने समापन भाषण में डा० भवानीलाल भारतीय ने विवेचनीय विषय का समाहार करते हुए स्पष्ट किया कि महर्षि दयानन्द ने मन्त्र संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों की पृथकता स्पष्ट कर दी है। ब्राह्मण ग्रंथों में जो उपाख्यान आये हैं वे भी मन्त्र गत तथ्यों का ऋषियों के द्वारा किया गया विस्तार या उपबृंहण ही है। वस्तुत: इन तथा कथित आख्यानों की ऐतिहासिकता किसी भी प्रकार सिद्ध नहीं होती और नित्य घटनाओं और प्राकृतिक तथ्यों को ही इन्द्रवृत्र जैसे उपाख्यानों में दिखाया गया है। गोष्ठी को सफल बनाने में विभाग के कर्मिष्ठ- सर्वश्री बलेन्द्रसिंह, फौजासिंह, तथा होशियारसिंह का प्रशंसनीय सहयोग रहा। इस सारस्वत सत्र को सुचारु रूप से सम्पन्न करने के लिए पंजाब विश्वविद्यालय ने सात हजार रुपयों का अनुदान दिया।

लुधियाना में आ० स० स्थापना दिवस

27 मार्च को श्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना द्वारा 'आर्य समाज स्थापना-दिवस' एवं नवसम्वत् शुभारम्भ के उपलक्ष में एक समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह की अध्यक्षता स्वामी सुमनायति ने की। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री रणबीर जी भाटिया महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कहा कि आज से 115 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की महर्षि दयानन्द ने मातृ शक्ति का उद्धार, विधवा उद्धार, अछूतोद्धार, अनाथोद्धार; वेद-प्रचार के महान् कार्य करते हुए उन्होंने जो देश सेवा की वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

इस समारोह को श्री रोशन लाल जी शर्मा महामन्त्री, राजेश्वर शास्त्री, महेन्द्र प्रताप आर्य, पं० सुन्दर लाल शास्त्री, डा० मूलचन्द भारद्वाज ने भी सम्बोधित किया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए स्वामी सुमनायति ने भी राष्ट्र-भाषा हिन्दी को बढ़ावा देने, गोहत्या को बन्द करने की मांग की।

— रोशन लाल शर्मा

जालन्धर में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में 8-4-90 को श्री हरवंश लाल जी शर्मा उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, श्री जगन्नाथ जी ग्रोवर, श्री प्रो० वेदव्रत जी मेहरा, प्रो० राम अवतार जी श्री राम चन्द जी श्री नरेन्द्र जी शास्त्री श्री डा० ज्ञान चन्द जी, श्री बलदेव राज जी तथा आर्य समाज के प्रधान श्री सेठी ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार रखते हुए सुझाव दिए की हमें पहले से भी अधिक सक्रिय होकर कार्य करना चाहिए और जिस उद्देश्य के लिए महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी उसे पूरा करने का प्रयास करना चाहिए।

अन्त में सभी उपस्थित सज्जनों को जलपान कराया गया इस अवसर पर जालन्धर की लगभग सभी आर्य समाजों के सैंकड़ों स्त्री पुरुष उपस्थित थे सभी ने प्रेमपूर्वक जल-पान किया।

—वीरेन्द्र बक्शी

बंगा में स्थापना दिवस

आर्य समाज बंगा में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम एवं उत्साह से मनाया गया। प्रोग्राम 10 बजे प्रातः शुरू हुआ। सब से पहले मुख्य अतिथि पंडित धर्म वीर जी शास्त्री साधु आश्रम होशियारपुर ने ध्वजा रोहण किया इसके पश्चात हवन यज्ञ किया गया। श्री शादीलाल महेन्द्र मन्त्री आर्य समाज बंगा द्वारा आर्य समाज की स्थापना, उद्देश्य एवं आर्य समाज द्वारा किए जा रहे और किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया। महर्षि दयानन्द निःशुल्क सिलाई स्कूल की छात्राओं द्वारा शिक्षाप्रद भजन गाए। तदानन्तर मुख्य वक्ता श्री धर्म वीर शास्त्री का बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जिस में श्री शास्त्री जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना, वेद प्रचार, विधवा विवाह, जातपात उन्मूलन एवं देश के स्वतन्त्रता अन्दोलन में आर्य समाजियों द्वारा किए गए बलिदानों की चर्चा की। जिसका जनता पर बड़ा मार्मिक प्रभाव पड़ा श्री शास्त्री जी ने बतलाया कि इस दिन प्रभु ने संसार में सृष्टि की रचना की और इसी दिन महाराजा बिक्रमादित्य ने बिक्रमी सम्वत् चालू किया और इसी दिनवसंवत्सर के दिन महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने लोगों को इसवी सन् छोड़ कर देशी बिक्रमी सम्वत अपनाने का आग्रह किया।

शत शत वन्दन है

ले० श्री राधेश्याम जी आर्य 'विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

शोणित से है लिखा हुआ जिसका स्वर्णिम इतिहास।
'जलियांवाला बाग' हमारा लिए शहीदों का विश्वास॥
अमर सपूतों के बलिदानों की जो अमिट कहानी।
जिसका कण कण गौरव-अन्वित जो मानी, अभिमानी॥
स्वतन्त्रता के पुण्यपर्व की जो निर्भय निर्माता है।
भारत मां का अनुपमेय निश्चय ही भाग्यविधाता है,।
मातृभूमि हित मर मिटने का जो देता पावन संदेश।
जिसके बलिदानों से अपना धन्य हुआ प्यारा स्वदेश॥
ऊधम सिंह जैसे सेनानी जिसकी लाज बचाते है।
अरि से ले प्रतिशोध सदा भूमण्डल को दहलाते है॥
वही हमारा 'जलियांवाला भारत का अभिमान है।
महिमण्डल में जिसकी गरिमा रहती सतत महान है॥
अपराजेय शहीदों का है छिपा जहां अतुलित गौरव।
शौर्य-पराक्रम त्याग भरा है बलिदानी वीरों का वैभव॥
ब्रिटिश गोलियों से निर्भय हों बिना शस्त्र के ही सत्वर।
सीना तानदिया आगे बढ़ बन साहस की मूर्ति प्रखर॥
मां के अमर सपूतों को इन युग-युग का वन्दन अभिनन्दन।
जिससे मिटता रहा युगों से क्रूर गुलामी का कटु क्रन्दन॥

वर्षा यज्ञ का आयोजन

पर्यावरण अनुसन्धान एवं संवर्द्धन न्यास संस्थान अजमेर द्वारा दिनांक 5 मई 1990 से 9 मई 1990 तक वैदिक रीति से वर्षा यज्ञ का आयोजन कराया जा रहा है। यह डा० प० हरप्रसाद शर्मा, भूतपूर्व प्राचार्य संस्कृत कालेज, अलीगढ़ द्वारा सम्पन्न होगा।

इस यज्ञ में विगत यज्ञ की सफलता को आधार मान कर यज्ञ और वर्षा के सम्बन्धों का अध्ययन किया जायेगा। अध्ययन हेतु पर्यावरण मंत्रालय, विज्ञान तकनीकी मंत्रालय, मौसम विभाग, भारत सरकार के वैज्ञानिकों तथा अन्य बुद्धि जीवियों को निमंत्रित किया गया है।

इस अध्ययन में आपके विचारों एवं सुझावों के साथ आप भी सादर आमंत्रित हैं।

—जगमोहन कौशिक

24 पसन्द नगर ग्राम कोटड़ा पुष्कर रोड़ अजमेर

(पृष्ठ 6 का शेष)

आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम्हारी भुजाएं शक्तिशाली हों, जिससे तुम लोभ शत्रु से कभी परास्त न हो सको।

सचमुच आपके जीवन क्रम को देखते हुए कहा जा सकता है कि आपके साथ यह मंत्र सार्थक होता है। आपकी राणा प्रताप सी देश भक्ति, वीर शिवाजी की सी निर्भिकता, पंजाब केसरी की सी वक्तृत्व शक्ति बन्दा बैरागी सी कष्ट सहिष्णुता देश को उन्नति पथ पर आरूढ़ कराने में और भी अधिक सहायक सिद्ध हुई। जीवन एक पर्वतारोहण है। कठिन श्रृंखलायें बाधक रूप में सामने आती हैं, पर यथार्थ आनन्द प्राप्त करता है। एक अंग्रेजी कवि ने कहा भी है—

"Life is an up hill Journey
And at the top lies glory"

परन्तु ऐसे दुर्गम मार्गों में अधिकतर यात्री हार मान कर बैठ जाते हैं और जो हिम्मत करता है बाजी मार ले जाता है।

पंडित जी हमारे दिलों पर अनेक यादगारें छोड़ गये हैं, जो कभी मिट नहीं सकेंगी। इन शब्दों के साथ उनकी पावन स्मृति में सजल नयनों से श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूं।

आर्य समाज स्थापना दिवस

27-3-90 मंगलवार आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस प्रातः साढ़े सात से साढ़े नौ बजे तक श्री राम सुभाय. नन्दा प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में मनाया गया जिसमें श्री महिन्द्र पाल मकजीक के भजन हुए और प्रोफैसर ओम प्रकाश जी मारंग का प्रभावशाली भाषण हुआ।

—गौतम दास

दीनानगर में स्थापना दिवस

27-3-90 को आर्य समाज दीना नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया सर्व प्रथम प्रभात फेरी निकाली गई सांय समाज मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिस में भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने आर्य समाज की स्थापना के बारे में ऋषि दयानन्द जी का क्या उद्देश्य था पर वक्तव्य दिए।

जालन्धर में राम-नवमी पर्व

3 4-90 को आर्य समाज ऋषि कुज पक्का बाग जालन्धर मे "राम नवमी" का पर्व एवम आर्य समाज स्थापना दिवस ' का 115वा पर्व बडे उत्साह से मनाया गया । समारोह का आरम्भ वैदिक यज्ञ से प० धर्म देव जी ने किया जिसमे बडी श्रद्धा से नर नारियो ने आहुतिया डाली जो सैण्कडो की सख्या मे यहा उपस्थित थे ।

समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान चौ० ऋषिपालसिह एडवोकेट जो पजाब सभा के मन्त्री और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के उपमन्त्री हैं, ने की । विशेष वक्ता आर्य जगत् के विद्वान प० सत्यदेव विद्यालकार एवम विदुषी बहन प्रिंसीपल सन्तोष जी सूरी थे जिन्होने इन पर्वों के महत्व पर प्रकाश डाला । मनोहर भजन देश भक्ति, और विश्व शान्ति के बहन कमला शर्मा एवम् बहन सुशीला भगत व नरेन्द्र शास्त्री ने गाये ।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे चौ० ऋषि पाल सिह एडवोकेट ने बताया कि श्री राम और श्री कृष्ण हमारी वैदिक सस्कृति के प्रकाश स्तम्भ हैं । आर्य समाज इन महापुरुषो के 'चित्र' की नही चरित्र की पूजा करता है । भारत भूमि पर ससार मे सब से अधिक महापुरुषो ने जन्म लिया यह हमारे लिये गौरव की बात है । आज विश्व भर मे 5000 आर्य समाजें इन महापुरुषो द्वारा वेद मार्ग पर चल कर बनाई मर्यादाओं का प्रचार व प्रसार कर रही हैं । कोषाध्यक्ष श्री आर० पी० मित्तल एडवोकेट ने जलपान से सब का स्वागत किया, और श्री लाल चन्द मेहरा एडवोकेट मन्त्री आर्य समाज ने सभी आर्य नर नारियो का धन्यवाद किया ।

(पृष्ठ 5 का शेष)

गलियों मे उन्होंने उस छाति को अपने खून की एक सम्मिलित मोहर लगा दी थी और अब अपने ही देश भाई द्वारा मारे जाकर उनके प्राण पखेरू उड गए । हत्यारा यह समझता था कि वह एक ऐसा अच्छा काम कर रहा है जो उसे बहिश्त को ले जाएगा ।

विशुद्ध शारीरिक साहस का किसी भी अच्छे काम में शारीरिक कष्ट सहने और मृत्यु तक की भी परवाह न करने वाली हिम्मत का मैं हमेशा से प्रशसक रहा हू । स्वामी श्रद्धानन्द मे उस निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी । लम्बा कद शाही शकल सन्यासी के वेश मे बहुत उमर हो जाने पर भी बिलकुल सीधी चमकती हुई आँखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली चिड़चिड़ाहट या गुस्से की छाया का गुजरना, मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हू ? अक्सर वह मेरी आँखों के सामने आ जाती है ।

—जवाहर लाल नेहरू

मेरा सदेश यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द एक अत्यन्त प्यारा हृदय रखते थे । जब कभी गरीबो दुखियों और पतितों के साथ उस सहृदय के अपील की जाती तो वह अपील उनके लिए अजेय हुआ करती थी । इसलिए जब-जब बलिदान जयन्ती आए तब-तब उनके समस्त सच्चे प्रेमियों का ध्यान गरीबो की ओर जिन्हें वह प्यार करता था, जाना चाहिए और उन्हें भी परमात्मा के बच्चे समझना चाहिए ।

—सी० एफ० एण्ड्रयूज

इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि हमारे अजेय स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू जाति तथा हिन्दुस्तान की बलिवेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी । उनका सम्पूर्ण जीवन और विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू जाति के लिए एक स्पष्ट सदेश देती है । हिन्दू राष्ट्र के प्रति हिन्दुओं का क्या कर्त्तव्य है इसे मैं स्वामी जी के अपने शब्दों में ही रखना चाहता हू । सन् 1926, 29 अप्रैल के लिबरेटर पत्र में वह लिखते हैं । "स्वराज्य तभी सम्भव हो सकता है, जब हिन्दू इतने अधिक सगठित और शक्तिशाली हो जाए कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सकें ।

—वी० डी० सावरकर

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

हिन्दु नहीं आर्य—2

—ले० श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

(गतांक से आगे)

पाठक गण ! आर्य शब्द की महत्ता सिद्ध हो जाने के पश्चात् अब केवल मात्र यह सिद्ध करना शेष रह जाता है कि हमारा पूर्व नाम आर्य है, सो उसके लिये देखिये।

आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्तं विदुर्बुधा : ॥ । ॥
सरस्वतिदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
त देवनिर्मितं देशमार्यावर्तं प्रचक्षते ॥ 2 ॥

(मनु० 2/22/17)

अर्थात् उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व तथा पश्चिम में समुद्र और पश्चिम में सरस्वती (अटक) नदी, पूर्व में दृषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पर्वत से निकल कर आसाम व बंगाल के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम में होकर पूर्व के समुद्र (बंगाल की खाड़ी) में मिली है, जिसे ब्रह्मा पुत्र कहते हैं। हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण ओर पहाड़ों के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितना देश है, उस सम्पूर्ण को आर्य्यावर्त इसलिए कहते हैं कि यह देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्य जनों के निवास करने से आर्य्यावर्त कहलाया।

प्रिय पाठकगण ! इन श्लोकों में आर्य्यावर्त की जो सीमा वर्णन की गई है, उससे सिद्ध होता है कि यह हमारा देश आर्य्यावर्त है तथा आर्यों के रहने से इसका नाम आर्य्यावर्त हुआ अर्थात् हम इस देश में निवास करने वाले लोग आर्य हैं तब क्यों न हम अपने आपको आर्य कहें और विदेशियों की देन "हिन्दु" शब्द को अपने ऊपर लादे रहें ? हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट, विराट का मनु, मनु के मरीच्यादि दश, इनके स्वायम्भवादि राजा और उन की सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा हुए हैं।

(सत्यार्थ प्र० समु० 8

महाराजा रामचन्द्र इक्ष्वाकु वंश में हुए, जिनका प्रमाण हमारे लिए विशेष कर माननीय है। महाराजा राम आर्य थे अत उनकी सन्तान होने से हम भी आर्य हैं। इसमें प्रमाण :—

सर्वदाभिगता सद्भि समुद्र इव सिन्धुभि :।
आर्य सर्वसमश्चैव सर्व प्रिय दर्शन : ॥

(वाल्मीकि रामा० 1/1/16)

श्री राम चन्द्र जी सदा सत्पुरुषों के सहयोग में इस प्रकार वर्तमान रहते थे, जैसे समुद्र नदियों से मिला रहता है वह आर्य थे, समदृष्टि रखते थे तथा सब के प्रिय थे। कोई व्यक्ति का हीन तथा बुद्धि का [illegible] होगा, जो इनके प्रमाणों के होते हुए भी यह कहे कि हम आर्य नहीं हिन्दु हैं।

सन् 1875 ई० के जुलाई मास के प्रथम पक्ष में पूना नगर में धर्माधर्म विषय पर भाषण करते हुए युग प्रवर्तक जगद् गुरु भगवान दयानन्द जब प्राण प्रतिष्ठा के मर्मों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे तो प्रसंग वश भूल से उनके मुख से यह शब्द निकल गये कि "इसका विचार हम हिन्दुओं को" तब उन्होंने इस पर अत्यन्त पश्चाताप किया, क्योंकि वह जानते थे कि हमारा नाम हिन्दु नहीं अपितु आर्य है। "हिन्दु" यह शब्द तो हमारी भाषा का भी नहीं अपितु यावनी भाषा का है तथा हमारे ऊपर बलात् लादा गया है, एतदर्थ महर्षि दयानन्द ने पश्चाताप करते हुए कहा—"नहीं नहीं मैं भूला हम आर्यों को..........।" आगे उन्होंने वेदादि सद्ग्रन्थों के प्रमाण प्रस्तुत करके आर्य शब्द की पुष्टि की। उस समय आजकल की जैसी भी जागृति नहीं थी, जिसके कारण सभी वैदिक धर्मी अपने आपको हिन्दु शब्द से ही सम्बोधित होने देते थे, फलत स्वामी जी का भी वैसा ही अभ्यास बना हुआ था अत: उनके मुख से हिन्दु शब्द ही निकला। वेदादि ग्रंथों के अध्ययन ने उस अशुद्ध धारणा के अभ्यास को तोड़ने में सच्चे हितैषी का कार्य किया और ऋषि ने अपनी भूल को स्वीकार करते हुए यह बतलाया कि हमारा नाम हिन्दू कदापि नहीं अपितु आर्य है।

स्वामी जी ने आगे कहा "हिन्दु शब्द का उच्चारण मैंने भूल से किया, क्योंकि हिन्दु यह नाम हमको मुसलमानों ने दिया है, जिसका अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है। सो मैंने मूर्खता से उस शब्द को स्वीकार किया था, हमारा असली नाम तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है।"

(महर्षि दयानन्द के व्याख्यान धर्माधर्म विषय उपदेश मञ्जरी)

स्वामी जी के भाषण से जो उपर्युक्त उद्धरण हमने प्रस्तुत किया है, उससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द जैसा वेदज्ञ विद्वान् तथा योगी पुरुष जिसे भारतीय ही नहीं अपितु अनेक विदेशी निष्पक्ष-विचारक भी आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ विभूति तथा युग-निर्माता के नाम से पुकारते हैं, वह एक तथा स्वजाति के प्रति हिन्दु नाम प्रयोग कर जाने मात्र की अपनी भूल को अपनी मूर्खता [illegible] कर स्वीकार करता है, यद्यपि वह प्रयोग जान-बूझ कर नहीं अपितु अभ्यास तथा वातावरण से [illegible] संस्कारों के [illegible] हुआ था। [illegible] लोग [illegible] है, [illegible] इस हिन्दु नाम [illegible] [illegible] स्वीकार [illegible] किये हुए हैं—केवल इस लिए छोड़ने को तैयार नहीं कि दीर्घकाल से धारण किये रखने से अभ्यस्त हो गये हैं। साथ ही विशेषता यह है कि उसे भूल भी स्वीकार करने को तैयार नहीं अपितु उसे स्वच्छ तथा सुन्दर सिद्ध करने के लिए अनेक निरर्थक तथा काल्पनिक प्रमाण देने को उद्यत हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द ऐसा न करके स्पष्ट कहते हैं "हमारा असली नाम तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है" साथ ही वेद का प्रमाण देते हैं।

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् शाको भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन।

(ऋ० 1/51/8)

तथा [illegible]—

"[illegible]:"

पाणिनीय अष्टाध्यायी का यह सूत्र उच्चारते तथा कहते हैं "भाईयों ! दस्यु अर्थात् अव्रतधारी लोगों के साथ लड़ने वाले हम व्रतधारी आर्य हैं, सो स्मरण रहे।

(महर्षि दयानन्द के व्याख्यान धर्माधर्म वि० उप० मञ्जरी)

स्वामी जी के एक और भाषण का उद्धरण हम यहां प्रस्तुत करते हैं, जो उन्होंने इतिहास विषय पर बोलते हुए कहा था। अभी जिस पाणिनीय सूत्र को हम ऊपर दे चुके हैं, उसी को उपस्थित करके ऋषि ने कहा—"ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम आर्य-स्थान अथवा आर्य-खण्ड होना चाहिए, सो उसे छोड़कर न जाने हिन्दुस्थान यह नाम कहा से निकला ? भाई श्रोतागण ! हिन्दु शब्द का अर्थ तो काला, काफीर, चोर इत्यादि है, और हिन्दुस्थान कहने से काले, काफिर, चोर लोगो की जगह अथवा देश ऐसा अर्थ होता है। भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यों ग्रहण करते हो ? और आर्य अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिजात इत्यादि और आवर्त कहने से ऐसों का देश अर्थात् आर्यावर्त का अर्थ "श्रेष्ठों का देश" ऐसा होता है। तो ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यों नहीं स्वीकार करते, क्या तुम अपना मूल का नाम भी भूल गए ?" [illegible] करने के पश्चात् महर्षि ने [illegible] होकर आगे कहना प्रारम्भ किया "[illegible] वह [illegible] तुम [illegible] की स्थिति देखकर किसके हृदय को क्लेश ना होगा ? ऐसे ही जो होगा। अस्तु सज्जन गण !" अब हिन्दु [illegible] और आर्य आर्यावर्त इन नामों का अभिमान [illegible] इन [illegible] हुए, तो [illegible] न होना [illegible] ऐसी [illegible] मेरी प्रार्थना है।"

स्वामी जी महाराज के भाषण के उपर्युक्त [illegible] फिर हृदय पर हाथ रख कर कह तो दीजिये कि सत्यता किधर है ? हां, यदि आपने यही निश्चय किया हुआ है कि "चाचो गाफिल हों मगर घर ही का माल अच्छा है" तो दूसरी बात है। लपेटे रहिये इन हिन्दुत्व के दुशाले को, परन्तु यह ध्यान रहे कि माल घर का नहीं है, यह तो विदेशी कम्पनी का उत्पादन है, जिसके क्रय करने के कारण अपना द्रव्य तो लुटा ही— किन्तु अब भी यदि इसका प्रयोग ना छोड़ा तो गौरवमय अतीत से जोड़ने वाली राष्ट्रीय भावना भी विलुप्त हो जायेगी और कुछ काल के पश्चात् हमारे ऊपर वही कहावत लागू होगी "दोनो दीन से गये पाण्डे, हलुवा भये न माण्डे" अर्थात् कृत्रिमता तो एक दिन नष्ट होगी ही वास्तविकता से क्यों हाथ धोते हो ? चेतो तथा अपने नाम के आर्य होने का एक और प्रमाण लो। देखो काशी में विश्वनाथ मन्दिर के द्वार पर ही एक शिला पर जो दीवार में लगी है, यह वाक्य खुदा है— आर्येतरस्य प्रवेशो निषिद्ध :" अर्थात् आर्यों के अतिरिक्त अन्य लोगों का प्रवेश (भीतर मन्दिर में जाना) निषिद्ध (मना) है। अब आप स्वय निर्णय कर लें कि सत्यता क्या है ? और हमें किस पक्ष को अपनाना चाहिये ? साथ ही सकल्प मन्त्र को भी दृष्टिगत रखना होगा। प्रत्येक सस्कार में आपके घरों में जिस को पण्डित जी "आर्यावर्तेक-देशान्तर्गते............" कह कर बोला करते हैं "हिन्दुस्थानकदेशान्तर्गते" नहीं।

हमने ऊपर जो भी उद्धरण प्रस्तुत किये हैं, वह सभी ऐसे हैं कि जिनमें आर्य समाजी तथा सनातनी सभी लोग आस्था रखते हैं। इनके अतिरिक्त भी जब तक भारत में भारतीयों का राज्य रहा तब तक के समस्त ग्रन्थों में जो संस्कृत भाषा में हैं चाहे वह धर्म-विज्ञान के ग्रन्थ हों या इतिहास के— यदि कहीं एतद्विषयक वर्णन पाया जाता है तो वहां हमारा नाम आर्य ही मिलता है। [illegible] भारत में लिखे जाने वाले [illegible] के [illegible] पूर्व के ग्रन्थों तथा तुलसी [illegible] [illegible]

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

इस घर को आग लग गई घर के चिराग से

क्या अब आर्य समाज के इतिहास का अन्तिम युग शुरू हो चुका है ? यह प्रश्न इसलिए पैदा हो रहा है क्योंकि देश के भिन्न भिन्न प्रान्तो मे आर्य समाजी आपस में उलझ रहे हैं। जिस सगठन और अनुशासन के आधार पर आर्य समाज यहा पहुचा था, वह प्राय: समाप्त हो रहा है। प्रत्येक सस्था मे ऐसा समय आता है जब विघटनकारी शक्तिया अधिक प्रभावशाली हो जाती हैं, परन्तु साथ ही कुछ वह व्यक्ति भी होते हैं जो उन विघटनकारी शक्तियो को चलने नहीं देते। आज आर्य समाज मे कोई ऐसा व्यक्ति नही, जो इस स्थिति को सम्भाल सके। आज आर्य समाजी आपस में लड रहे हैं। मेरे पास प्राय सब प्रान्तो से ऐसी सूचनाए आती रहती हैं जिनसे पता चलता है कि आर्य समाज के सगठन में विघटनकारी शक्तिया बहुत अधिक प्रबल होती जा रही हैं। इस समय स्थिति यह है कि उत्तर प्रदेश मे दो स्पष्ट धडे बन चुके हैं। पिछले कई वर्षों से जिस तरह वहां चुनाव होते रहे हैं उस पर कई लोगो को आपत्ति हो रही है। मेरे लिए यह कहना कठिन है कि जो महानुभाव आपत्ति कर रहे हैं उनका पक्ष ठीक है या उनका जिनके विरुद्ध यह आपत्ति की जा रही है। मैंने तो केवल एक स्थिति बताई है कि वहा दो स्पष्ट धडे बन चुके हैं। इसमे कुछ राजनीति भी अपना काम कर रही है। पहले जो अधिकारी हैं उनके विषय मे कहा जाता है कि उनका काग्रेस के अधिकारियो से विशेष सम्बन्ध था। इसलिए वह पहले जो कराना चाहते थे, करा लेते थे। अब उत्तर प्रदेश मे जनता दल की सरकार बन गई। इसलिए जिन आर्य समाजियो का सम्बन्ध जनता दल से है वह अपनी योजना बना रहे हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि वहा शीघ्र ही कोई बडा टकराव होगा।

आज राजस्थान से एक बहुत बडा परिपत्र मुझे मिला है जिसमे वहा की आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो के विरुद्ध कुछ लिखा गया है। जो आरोप लगाए गए हैं वह कहा तक ठीक हैं मेरे लिए यह कहना मुश्किल है। परन्तु मैं एक वास्तविक स्थिति आर्य जनता के सामने रख रहा हू कि किस प्रकार प्राय सभी प्रान्तो मे विघटन हो रहा है और आज आर्य समाज मे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो इसे रोक सके। एक पत्र कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का भी आज प्राप्त हुआ है। वहा दक्षिण के चार प्रान्तों के प्रतिनिधियों की एक बैठक हो रही है। वह अपनी एक अलग सभा बनाने पर विचार कर रहे हैं। जो विषय सूची है इस बैठक की उसमे एक विषय यह भी है कि जो कुछ सार्वदेशिक सभा कर रही है उस पर विचार किया जाए। मुझे यह मालूम नही कि सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध उन्हे क्या शिकायत है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है किसी न किसी कारण वह सार्वदेशिक सभा से असन्तुष्ट हैं और वह अब अपनी एक अलग सभा बनाने की सोच रहे हैं।

आन्ध्र प्रदेश में जो स्थिति है उसका पता हमे पिछले दिनो उस समय लग गया था जब हैदराबाद सत्याग्रह की अर्ध शताब्दी मनाने के लिए वहा दो सम्मेलन हुए थे। एक प्रान्तीय सभा की ओर से दूसरा सार्वदेशिक सभा की ओर से। इसके अतिरिक्त वहां कुछ सम्पत्तियो को बेचने पर भी आर्य समाजी आपस में उलझ रहे थे और एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे थे। आज भी वहा वैसी ही स्थिति है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दौलत राम जी वढेरा के कुछ पत्र भी मुझे प्राप्त हुए हैं। यह उन पत्रों की प्रतिलिपिया हैं जो उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को लिखे हैं। इन पत्रो को पढ कर पता चल जाता है कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर लोगो मे कितना असन्तोष है। बिहार में भी स्थिति ऐसी ही है। वहा भी आर्य समाज दो धडो में बट चुका है। दूसरे प्रान्तों मे भी जो कुछ हो रहा है वह अत्यन्त शोचनीय है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न पैदा होता है कि जो कुछ आर्य समाज में आज हो रहा है, क्या उसे रोकने वाला कोई नहीं है ? यदि नही है तो क्या आर्य समाज बच सकेगा ?

आर्य समाज के इतिहास में कोई भी ऐसा समय न आया होगा जब इसके बड़े बड़े नेताओं मे आपस में मतभेद न हुए हो। परन्तु वह अपने मतभेदो का कभी भी सार्वजनिक प्रदर्शन न करते थे। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा की पिछली बैठक मे जो कुछ हुआ उससे भी पता चल जाता है कि स्थिति क्या बनती जा रही है। एक भव्य भवन को आग लग जाए और जो लोग उस मे रह रहे हो वह बाहर निकल कर उसे एक तमाशा समझ कर देख हो, कोई भी उस आग को बुझाने को तैयार न हो तो वह भवन आखिर जल राख ही होगा, उसे कोई बचा नहीं सकता। यह अत्यन्त ही शोचनीय स्थिति है जो आज पैदा हो गई है। मैं जो कुछ लिख रहा हू कई महानुभावो को इस से भी शिकायत होगी परन्तु मैं यह भी जानता हू कि प्रत्येक सस्था के इतिहास मे एक समय वह भी आता है जब कुछ साफ साफ बातें करनी पडती हैं। यह एक कर्त्तव्य बन जाता है, उस सस्था को बचाने के लिये। यदि हम बैठे रहे और तमाशा देखते रहे तो न आर्य समाज रहेगा और न हम रहेंगे। मैंने जो कुछ ऊपर लिखा है उस से यह स्पष्ट जाता है कि यह बीमारी केवल एक प्रदेश में नही सारे देश मे फैल चुकी है। जिस सस्था मे अनुशासन न रहे वह एक दिन भी नहीं चल सकती। अनुशासन का आधार उसके नेताओ पर होता है यदि वह अपनी कार्य प्रणाली से और अपने व्यवहार से अपने विषय मे यह धारणा पैदा कर दें कि स्वय वह सब कुछ कराते हैं, तो अनुशासन नही रहता। क्या कारण है कि इससे पहले कभी भी आर्य समाज की ऐसी शोचनीय स्थिति न बनी थी जो आज बन गई है ? अभी भी समय है कि इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाए। मैं यह मानने को तैयार नही कि अब आर्य समाज मे कोई ऐसा व्यक्ति नही रहा जो इस समस्या को समाप्त नही कर सकता। आज भी ऐसे व्यक्ति हैं परन्तु वह कुछ नही कर रहे। मैं यदि यह लेख लिख रहा हू तो केवल इस लिये कि जो सो रहे हैं शायद उन्हे जगा सकू। यह जानते हुए भी मैं सब कुछ लिख रहा हू कि सम्भवत. कुछ लोग यह भी कहेंगे कि सब से पहले वीरेन्द्र जी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही होनी चाहिए क्योंकि वह आर्य समाज को बदनाम कर रहा है। लेकिन मैं यह भी जानता हू कि कई बार राख के नीचे जो चिंगारी जलती रहती है वह ऊपर से नजर नहीं आती। परन्तु जब राख हट जाती है। और जब वह भडकती है तो बडे बडे भवनो को भी राख बना कर रख देती है यही स्थिति आर्य समाज की है और मैं अपना यह कर्त्तव्य समझता हू कि आर्य समाज के नेताओ को झझोडू क्योंकि —

हर दर्द मन्द दिल को रोना मेरा रुला दे,
बेहोश जो पडे हैं यह शायद उन्हें जगा दे ॥

वीरेन्द्र

आर्य समाज के समाने एक प्रश्न

22 अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधियो की एक गोष्ठी सभा कार्यालय जालन्धर मे हो रही है। इस मे इस विषय पर विचार किया जाएगा कि पजाब की राजनीति मे आर्य समाज को सक्रिय भाग लेना चाहिए या नही। यह एक अत्यन्त गम्भीर विषय है जिस पर बहुत सोच विचार कर ही हमे कोई निर्णय लेना चाहिए। इसके दो पक्ष हैं, कुछ व्यक्ति वह भी है जो कहते है कि हमे राजनीति मे भाग लेना चाहिए और कुछ वह भी हैं जो कहते है कि नही लेना चाहिए। हम प्राय इन विषयो पर विचार करने का कष्ट नही करते। मेरे विचार मे यह आर्य समाज की कमजोरी है। हमे बैठ कर इस विषय पर अच्छी प्रकार विचार विमर्श करना चाहिए। एक दूसरे की बात सुननी चाहिए और जो भी अन्त मे निर्णय ले उसके अनुसार आगे कार्यवाही करनी चाहिए। राजनीति मे आर्य समाज सक्रिय भाग ले या न यह अत्यन्त गम्भीर विषय है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यह फैसला किया है कि पजाब मे आर्य समाज के प्रतिनिधियो की एक गोष्ठी द्वारा किसी निर्णय पर पहुचा जाए। इस प्रकार की गोष्ठिया कई बार ऐसी सस्थाओ मे एक नया जीवन पैदा कर देती हैं। आर्य समाज के इतिहास का वह एक अत्यन्त उज्जवल समय था जब आर्य समाजी आपस मे बैठ कर भिन्न भिन्न समस्याओ पर विचार किया करते थे आज वह प्रथा समाप्त हो चुकी है। फिर भी हम पजाब मे इस प्रथा को जीवित करना चाहते हैं। इसलिए इस गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जो आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि इस गोष्ठी मे भेजेंगी मेरा उनसे यह निवेदन है कि वह अपने प्रतिनिधियो को इस विषय मे पूर्ण अधिकार दे कर भेजे ताकि हम किसी निर्णय पर पहुच सकें।

वीरेन्द्र

शारीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति के सुनहरी नियम

—लेखक स्व० श्री ठाकुर दत्त जी शर्मा वैद्य भूषण

(गतांक से आगे)

(2) आत्मिक उन्नति के दस सुनहरी नियम

(1) प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् सूर्योदय से पहले उठो। और कोई अच्छा सा भजन पढ़ो या मन्त्र पढ़ो और परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद करो और प्रार्थना करो कि दिन भली प्रकार व्यतीत हो।

(2) शौच आदि कार्यों से निवृत होकर स्नान करके संध्या, हवन या पूजा पाठ या जैसे भी आप अपने परमेश्वर को स्मरण करते हों, वैसा करें।

किसी अच्छी धार्मिक पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए अर्थात् स्वाध्याय अवश्य नित्य करना चाहिए। इससे विचार पवित्र रहते हैं।

(3) आपका जो व्यवसाय है उसको सच्चाई से पूरा करो। किसी को धोखा देने का प्रयत्न न करो। किसी के अधिकार को छीनने का विचार न करो।

(4) काम से निवृत होकर अच्छे समाज में या अपने कुटुम्ब मे, खुशी में समय व्यतीत करो। मन को बुद्धि की सहायता से वश में रखो। बुराइयों से बचे रहो।

(5) गृहस्थ को अपनी आयु और बल के अनुसार भोगो। अपनी शक्तियों की रक्षा करो।

(6) सच बोलना, क्रोध न करना, भूल से किए अपराध को क्षमा करना, इन्द्रियों को वश में रखना, सफाई रखना, सोचविचार कर दूरदर्शिता से सब काम करना, विद्या अभ्यास करना, नम्रता, अहिंसा अर्थात् किसी को न दुखाना, कठोर वचन न बोलना सदाचारी होकर जो स्वयं को बुरा लगता है दूसरे के लिए भी बुरा समझना, दूसरे की स्त्री, धन, भूमि को छीनने का विचार भी न करना, वह सब धर्म के चिन्ह कहे हैं। जितना कोई इनका ध्यान रखे उतना ही वह आत्मिक तौर पर उच्च होता है।

(7) प्रभु की सृष्टि की सेवा और उसकी भलाई में जो समय लगे वही प्रशंसनीय है, परन्तु कोई भी नेकी का कार्य करते हुए अहंकार मन में न लाना चाहिए। प्रभु का धन्यवाद करें कि आपको ऐसी सामर्थ्य दी। नम्रता बड़े पुरुषों का आभूषण है।

(8) वेद मत्र, गीता, महाभारत, रामायण के श्लोक, शास्त्रों के सूत्र, दूसरे धर्म की पुस्तकों के उत्तम श्लोक महात्माओं के वचन, किसी भी देश के नेक पुरुषों के परामर्श, जो अच्छे लगें उनको याद रखो या लिख कर रखो और कभी-कभी उनको पढ़ो। इससे मार्ग अधिक साफ होता है। अच्छे-अच्छे भजन, गीत, छन्द परिवार मे बैठकर पढ़ने से सबको बड़ी शान्ति मिलती है।

(9) सत्संग मनुष्य को ऊंचा उठाने का महत्त्वपूर्ण ढंग है, बूढ़ों, साधु सन्यासियों के पास बैठने, धार्मिक सभा, समाजों, में जाने से अवश्य लाभ होता है। समय न मिले तो भले पुरुषों की लिखी हुई पुस्तकें और जीवन चरित्र पढ़ना भी उनका सत्संग ही है।

(10) मनुष्य जैसे अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाता जाता है वैसे ही वह लोभी होता जाता है। काम, क्रोध व लोभ को भगवान् कृष्ण नर्क द्वार कहते हैं। सादगी सर्वदा खुशी का कारण है।

सबका भला करो भगवान्,
सबका सब विधि हो कल्याण।

(3) सामाजिक उन्नति के दस सुनहरी नियम

(1) सब मनुष्य सर्व व्यापक प्रभु के अमर पुत्र हैं। किसी से भी अकारण घृणा नहीं करनी चाहिए। सब भाई-भाई हैं।

(2) जो हम अपने लिए पसन्द नहीं करते वह दूसरों के लिए भी नहीं करना चाहिए। हम नहीं चाहते कि हमको कोई अपशब्द कहे तो हम दूसरों को क्यों कहें। ऐसे हर बात को समझो।

(3) हर मनुष्य को अपनी ही उन्नति की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। अपने समीपवर्ती दूसरों की उन्नति की चिन्ता करनी चाहिए, दूसरों की उन्नति देख कर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

(4) सभ्य घरानों का ही आपस में प्रेम हो सकता है इसलिए हर एक को अपना गृहस्थ अच्छा बनाने का यत्न करना चाहिए। घर के सब स्त्री पुरुषों का परस्पर प्रेम हो। लड़ाई झगड़े की नौबत न आवे। छोटे बड़ों का आदर करें और आज्ञाकारी हों।

(5) जो लोग अपना स्वार्थ त्याग कर तन, मन, धन दूसरों की भलाई के लिए लगा देते हैं वह देवता कहलाते हैं। जो लोग अपना स्वार्थ भी रखते हैं और तन, मन, धन जहां तक बन पड़े दूसरों की भलाई में लगाते हैं वह नेक मनुष्य हैं, परन्तु जो अपना स्वार्थ ही रखते हैं दूसरों के कष्ट की परवाह नहीं करते उनको राक्षस कहते हैं।

(6) भगवान् कृष्ण ने निम्नलिखित गुण देवताओं के कहे हैं—

(1) निडरता, (2) शरीर और मन को स्वच्छ रखना, (3) सब काम बुद्धिमत्ता से करना, (4) दान देना, (5) अपने मन को वश में रखना, (6) यज्ञ करना, (7) अच्छी धार्मिक चारित्रिक पुस्तकें पढ़ना (8) अपने कर्त्तव्य को पूरा करने में कष्ट को सह सकना, (9) नम्रता का बर्त्ताव करना, (10) अहिंसा अर्थात् किसी को कष्ट न देना, (11) सच्चाई पर स्थिर रहना, (12) क्रोध न करना (13) अपनी सब प्रकार की वस्तुओं को आवश्यकता पड़ने पर परित्याग करना, (14) मन को शान्त रखना, (15) निन्दा न करना, (16) सारे प्राणियों पर दया करना, (17) लोभ न करना, (18) लज्जा, (20) उचित व्यक्तित्व रखना, (21) भूल से हुए अपराध को क्षमा करना, (22) किसी से बैर न रखना, (23) अहंकार न करना।

(7) भगवान कृष्ण ने राक्षसों के यह अवगुण कहे हैं—

(1) दम्भ अर्थात् बनावट से संसार को ठगना, (2) अहंकार, (3) अभिमान, (4) क्रोध, (5) कठोरता, हर समय लड़ाई झगड़े को तत्पर, (6) मूर्खता, (7) नेकी बदी को न समझना, (8) शौच का न ध्यान करना, (9) चरित्र हीनता, (10) सच्चाई से दूर, (11) (11) सृष्टि के रचयिता ईश्वर को न मानना, (12) लालच, (13) वासना, (14) धोखे से धन एकत्र करना, (15) धोखे से किसी को भी नीचा दिखाना अथवा मारना, (17) हर प्रकार के भोगों में लगे रहना, (17) दिखलावे की पूजा पाठ या यज्ञ करना, (18) शास्त्रों को न पढ़ना, न उनको मानना, (19) बड़ों का आदर न करना, (20) घर में लड़ाई झगड़े रखना, (21) धरोहर में चोरी, (22) नशों का सेवन, (23) भक्षाभक्ष का विचार न करना।

(8) जिस सभा, सोसाइटी, समाज से आपका सम्बन्ध है उसके नियमों का पालन करना चाहिए और सबके साथ धर्मानुसार न्याय और प्रेम प्रीति का बर्त्ताव करना चाहिए। सच्ची बात मानना और अपनी भूल को स्वीकार करना उदार हृदय का चिन्ह है।

(9) कभी दो मनुष्यों या कुटुम्बों में किसी कारण से आपस में कोई लड़ाई झगड़ा हो जावे तो उसको बढ़ाने का नहीं समाप्त करने का पूरा यत्न करना चाहिए।

(10) यदि कोई किसी के अधिकार को छीनने का ध्यान न करे तो संसार सुखी हो जावे। धन, स्त्री, भूमि के लिए ही सब छोटे बड़े झगड़े होते हैं।

आर्यसमाज अहमदगढ़ को एक और आघात।

पिछले पांच वर्षों में आर्य समाज अहमदगढ़ को कई आघात लगे। आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व आर्य समाज में दैनिक यज्ञ के संस्थापक महाशय गुरुदत्त जी खुराना का स्वर्गवास हुआ। उसके बाद आर्य समाज के अनथक और कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री ईशरदास जी आर्य का निधन हुआ। उसके बाद श्री हेमराजजी सल्ल का स्वर्गवास हुआ। इन सदमों से अभी उभरे भी नहीं थे कि आर्य समाज के एक और दानवीर और यज्ञ के प्रति समर्पित श्री टेक चन्द आर्य का 29-3-90 की शाम को लगभग 5 बज कर 45 मिन्ट पर हृदय गति रुक जाने से दुकान पर बैठे बैठे स्वर्गवास हो गया। आप पिछले सात आठ वर्ष से दैनिक यज्ञ के प्रति समर्पित थे। उनके पास जो भी दान की इच्छा लेकर जाता, खाली नहीं जाता था। उनके निधन से आर्य समाज अहमदगढ़ एक ऐसे व्यक्ति से वंचित हो गया है, जिसकी कमी पूरी होनी सम्भव नहीं।

—ओम प्रकाश शास्त्री

अम्बाला छावनी में शिलान्यास समारोह

वैदिक प्रचार मंडल 72-बी गोबिन्द नगर अम्बाला छावनी के तत्वावधान में शिलान्यास समारोह दिनांक 6-5-90 को बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रो० उत्तम चन्द 'शरर' ब्रह्मचारी राम प्रकाश जी तथा भजनोपदेशक धर्मपाल शर्मा तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी पधार रहे हैं शिलान्यास माननीय बनारसीदास गुप्त उप मुख्यमन्त्री हरियाणा सरकार द्वारा सम्पन्न होगा। आप सब आमंत्रित हैं।

कृपा अधिक से अधिक संख्या में पधारें।

—वेद मित्र हरपुर, मंत्री

पं० रुद्र दत्त शर्मा का निधन

अमृतसर से श्री पं० मनीषिदेव शास्त्री ने सूचना दी है कि अमृतसर के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री पं० रुद्रदत्त जी शर्मा का 1-4-90 को देहली में स्वर्गवास हो गया। उनके चले जाने से जो क्षति हुई है वह पूरी होनी कठिन है।

26 अप्रैल जन्म दिवस पर—

अद्भुत प्रतिभावान पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

—श्री मनमोहन कुमार आर्य 195 ब्लाक चक्खुवाला देहरादून

यह वर्ष पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी के बलिदान का शताब्दी वर्ष है। 26 अप्रैल, 1864 को मुल्तानगर पाकिस्तान में पंडित जी का जन्म हुआ था। कैसा संयोग है कि 26 अप्रैल जन्में इस वैदिक संस्कृति के अनुरागी ऋषि भक्त का जीवन भी मात्र 26 वर्ष का ही था।

पण्डित जी जन्म काल से ही मेधावी थे। विद्यार्थी जीवन में ही इन्होंने ने नये-नये कीर्तिमान स्थापित किये। सन् 1886 में पं० गुरुदत्त जी ने एम. ए. की परीक्षा दी और उसमें वे बी. ए. की तरह सर्वप्रथम रहे। एम. ए. में उनका विषय पदार्थ-विज्ञान (Physics) था। एम. ए. में उन्होंने इतने अंक प्राप्त किये जितने इतने पूर्व किसी विद्यार्थी ने प्राप्त नहीं किये थे। इन्होंने नया कीर्तिमान स्थापित किया था। आश्चर्य तो यह था कि अध्ययन के दिनों में आर्यसमाज के कार्यक्रमों एव उत्सवों में भी जाते रहे थे। इनके सहपाठियों ने इन्हें कभी परीक्षा के विषयों की पुस्तकें पढ़ते नहीं देखा था। यह पं० जी की अद्भुत प्रतिभा का ही उदाहरण है।

दो तीन वर्ष पंडित जी ने गवर्नमैंट कालेज, लाहौर में साइंस के प्रोफैसर के रूप में अध्यापन का कार्य भी किया। यह पहले भारतीय थे जिनको यह पद प्राप्त हुआ था, इससे पहले यहां के सब प्रोफैसर अंग्रेज ही थे। पंडित जी ने अनुभव किया कि विज्ञान के प्रोफैसर के रूप में सेवा के कारण वैदिक धर्म प्रचार एवं योगाभ्यास में बाधा आ रही है अतः सेवा से त्यागपत्र दे दिया। पण्डित जी को अतिरिक्त सहायक कमिश्नर पद पर नियुक्ति हेतु प्रस्ताव प्राप्त हुआ। दिनांक 12 अक्तूबर, 1887 को लाहौर के जिलाधीश ने इन्हें एतदर्थ बुलाया, परन्तु पण्डित जी ने उक्त प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए जो त्याग का उदाहरण पंडित जी के जीवन में दिखाई देता है उसकी उपमा अन्य ऋषि भक्तों में कदाचित ही दृष्टिगोचर होती है।

प्रायः देखा गया है कि विज्ञान के विद्यार्थी अध्यात्म से अरुचि रखते हैं। ईश्वर की सत्ता में इन लोगों का विश्वास प्रायः नहीं होता। पं० गुरुदत्त भी ईश्वर की सत्ता के प्रति पूर्ण आस्थावान नहीं थे। अजमेर में ऋषि दयानन्द जी के अत्यन्त प्रभावशाली मृत्यु दृश्य को देखकर इनके हृदय में ईश्वर की सत्ता के प्रति अटूट विश्वास जाग्रत हुआ। इस घटना ने इनके जीवन को नयी दिशा दी। इसके पश्चात् का इनका जीवन महर्षि दयानन्द जी के अपूर्ण करने के संकल्प एव उसके कार्यान्वियन में ही व्यतीत हुआ।

अजमेर से लाहौर पहुच कर पंडित जी ने स्वामी दयानन्द जी के शिक्षा विषयक विचारों को कार्यान्वित करने में लाला लाजपतराय एवं महात्मा हंसराज आदि महापुरुषों के साथ मिलकर दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना से आरम्भ किया। इसकी सफलता के लिए इन्होंने रात्रि-दिवा अनथक परिश्रम किया। स्थान-स्थान पर प्रवचनों से जनता में जागृति उत्पन्न हुई और कुछ काल ही में पर्याप्त द्रव्य एवं धन-संग्रह हो गया। दुःख है कि डी. ए. वी. कालेज मे ऋषि आज्ञा के अनुकूल संस्कृत को प्रमुख स्थान न मिलने के कारण इन्हें कालेज से विरत होना पड़ा। कालान्तर में पंडित जी ने एक 'उपदेशक श्रेणी' खोली और अष्टाध्यायी पढना आरम्भ किया। इसमें छोटी बड़ी आयु के सभी विद्यार्थी आते थे। इस श्रेणी के एक विद्यार्थी गुरुदत्त जी के मित्र एकस्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर महोदय भी थे। पण्डित जी संस्कृत का उद्धार कर इसे जन सामान्य की भाषा बनाकर, वेदादि आर्षग्रन्थों को लोकप्रिय कर, चहु दिशाओं में वैदिक धर्म की पताका फहराना चाहते थे। काल को पण्डित जी का यह विचार स्वीकार नहीं था। इससे पूर्व की यह कार्य आगे बढ़ता, वेदों एवं आर्ष ग्रन्थों का अनुरागी यह जीवन हमसे छिन गया। मात्र 26 वर्ष की ही वय पण्डित जी की थी। इस अल्प जीवन काल में पण्डित जी ने प्रवचनों, लेखन आदि के माध्यम से वैदिक धर्म की जो सेवा की वह अकथनीय है। पण्डित जी का सृजित साहित्य सम्प्रति अप्राप्य है। बलिदान शताब्दी वर्ष के अवसर पर उनका समस्त अप्राप्य साहित्य ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित किया जाना चाहिए। पण्डित जी के 127वें जन्म दिवस पर उनके निर्मल, निःस्वार्थ एवं त्यागपूर्ण जीवन का स्मरण करते हुए उनके अपूर्ण कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प सभी आर्यबन्धुओं को लेना चाहिए। यही उनके जन्म दिवस एव बलिदान शताब्दी वर्ष में उनको श्रद्धांजली होगी।

महर्षि बाल्मीकि प्रतिष्ठा दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्य महोदय, सादर नमस्ते !

महर्षि बाल्मीकि के विषय में सन्त बाल्मीकि के नाम से एक फिल्म बनाई गई है, जिस पर हमारे बाल्मीकि भाइयों को बहुत अधिक आपत्ति है। उनका कहना है कि इसमें महर्षि बाल्मीकि के जीवन को एक ऐसे विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे उनका बहुत अधिक अपमान है। इसलिए वह यह आन्दोलन कर रहे हैं कि यह फिल्म दिखाई नहीं जानी चाहिए। आर्य समाज को भी उनकी इस मांग का समर्थन करना चाहिए। हमारे बाल्मीकि भाई हिन्दू समाज का ही एक अंग हैं और महर्षि बाल्मीकि के लिए हम सबके हृदय में बहुत मान सम्मान और श्रद्धा है। इसलिए मेरा आप से यह निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजें रविवार 22 अप्रैल को अपने सत्सग में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करें।

"महर्षि बाल्मीकि का हमारे इतिहास मे एक विशेष स्थान है। वह केवल हमारे आदि कवि ही न थे हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत भी थे। रामायण महाकाव्य के द्वारा उन्होने हमारी प्राचीन संस्कृति का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। उन्हें कभी भी नहीं भूल सकते। उनकी गणना सदा ही हमारे देश के उन महापुरुषों में होती रही है जो हम सबके लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। महर्षि बाल्मीकि यदि रामायण के द्वारा भगवान् राम का चरित्र हमारे सामने न रखते तो हमे पता न चलता कि श्री राम कौन थे, भगवती सीता कौन थी? रामायण काल मे क्या कुछ हुआ था। इसलिए महर्षि बाल्मीकि का हम पर जो ऋण है वह हम किसी भी तरह नहीं उतार सकते। आर्य समाज के लिए यह अत्यन्त चिन्ताजनक स्थिति है कि जो व्यक्ति सन्त बाल्मीकि नाम की एक फिल्म के द्वारा महर्षि बाल्मीकि के विषय में कुछ ऐसी बातें जनता के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जो सर्वथा निराधार हैं। इसलिए यह आर्य समाज पंजाब सरकार और भारत सरकार दोनों से माग करती है कि इस फिल्म को दिखाने की अनुमति न दी जाए। भविष्य मे भी किसी भी ऐसी फिल्म को अनुमति नहीं होनी चाहिए जिसके द्वारा हमारे महापुरुषों का विकृत रूप जनता के सामने रखा जाए।"

यह प्रस्ताव निम्नलिखित महानुभावो को भेजा जाए—

1. श्री प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
2. श्री गृहमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
3. श्री सूचना व प्रसारण मन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
4. श्री राज्यपाल पंजाब चण्डीगढ़

—वीरेन्द्र, प्रधान

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टेल्को, बिरसा नगर जमशेदपुर का वार्षिकोत्सव 27, 28 एवं 29 मार्च को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर टेल्को के दुर्गा पूजा मैदान में बने सुन्दर पडाल के अन्दर प्रातः हवन यज्ञ; तत्पश्चात धार्मिक गोष्ठी तथा संध्या एवं रात्रि में विभिन्न सम्मेलन आयोजित किए गए।

आर्यसमाज सोनारी का उत्सव

आर्य समाज सोनारी टाटानगर एवं डी० ए० वी० विद्यालय सोनारी टाटानगर का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से 23 एवं 24 मार्च को मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी महाराष्ट्र, डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी, नालन्दा एवं श्री उदयवीर जी आर्य भजनोपदेशक मथुरा के पुरोगम होते रहे।

आर्य समाज हावड़ा का उत्सव सम्पन्न

27 मार्च से 1 अप्रैल तक पश्चिमी बंगाल के हावड़ा नगर मे स्थानीय आर्य समाज का 68वां वार्षिकोत्सव बड़े धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी अरुणानन्द (बगाल), डा० महावीर जी शास्त्री (हरिद्वार) डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा) दिनेश दत्त आर्य भजनोपदेशक (बिजनौर) प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, कलकत्ता, पं० ओ३म् प्रकाश विद्यावाचस्पति हावड़ा के पुरोगम होते रहे। इस अवसर पर बंगला भाषा मे प्रकाशित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का विमोचन एवं आर्य समाज हावड़ा द्वारा संचालित वैदिक उपदेशक विद्यालय के छात्रों का दीक्षान्त समारोह भी सम्पन्न हुआ।

दिवंगत आर्य समाजी—

महान् समाज सेविका बहन लक्ष्मी देवी आर्या

बहन लक्ष्मी देवी आर्या जो आरम्भ से ही स्वतन्त्रता संग्राम एवं आर्य समाज की धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रही हैं, का निधन एक सौ एक वर्ष की अवस्था में दिनांक 4-21-1990 को प्रातः लगभग दो बजे हो गया उनका अन्त्येष्टि संस्कार आचार्य बलदेव 'नैष्ठिक' गुरुकुल कालवा की देखरेख में पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार उनके जन्मस्थान में किया गया अन्त्येष्ठि संस्कार में गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारी गण, दयानन्द मठ के श्री मामचन्द्र जी आर्य, रोहणा ग्राम के श्री दरियाव सिंह जी, श्री सूरजमल जी, आर्य समाज रोहणा के सदस्य गण एवं गांव के अन्य व्यक्ति अत्यधिक सख्या मे उपस्थित थे तदोपरान्त उनके घर में यज्ञ किया गया। गांव में इतने उत्तम ढंग का प्रथम वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार देखकर लोग बड़े प्रसन्न हुए।

बहन लक्ष्मी देवी का समस्त जीवन समाज सेवा के लिये तन मन व धन से समर्पित रहा। वह समाज सेवा के लिए इस वसुधरा पर आई और अन्तिम श्वास तक समाज सेवा करती रही। स्वतन्त्रता संग्राम में एक कर्मठ कार्यकर्त्री के रूप मे उसने महात्मा गांधी के साथ मिल कर काम किया। स्वतन्त्रता संग्राम मे वह हरियाणे की प्रथम महिला थी। इस निमित्त भारत के राष्ट्रपति एव हरियाणे के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री बंसीलाल जी के द्वारा विशेष पदक से सम्मानित की गई। हिन्दुस्तान पाकिस्तान विभाजन के समय मुसलमानों ने अनेक आर्य (हिन्दू) युवतियों को रख लिया था। उस समय बहन जी बहनों का जत्था बना कर पाकिस्तान गई थी एव उन बहनों को अपनी संरक्षता प्रदान कर उन्हें वापिस भारत में उनके माता-पिताओं को सौंप दिया था। इसी प्रकार कैरो सरकार की पुलिस ने ग्राम जायसी (गोहाना) में आर्य (हिन्दू) बहनों के साथ अनेक प्रकार के पैशाचिक दुराचार किये जिसकी जांच के लिये स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने बहनों की एक समिति बनाई जिसका प्रधान न्यायधीश बहन जी को ही बनाया गया था। बहन जी ने बड़ी कुशलता के साथ इस उत्तरदायित्व को निभाते हुए आर्य (हिन्दू) बहनों को न्याय प्रदान करवाया। इस प्रकार अन्य अनेक कार्यक्रमों में इस देवी ने अपनी भूमिका निभाकार हरियाणा एवं देश की बहनों के नाम को ऊंचा कर दिया है। आर्य समाज के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, गो रक्षा सत्याग्रह आदि कार्यों में बहनों की तरफ से अग्रणी रही एव सैकड़ों व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान कर तैयार किया। इन सभी कार्यों में तन मन से ही नहीं बल्कि धन देकर भी सहयोग दिया एवं अन्यों से भी दिलवाया।

बहन जी ने अपनी समस्त चल तथा अचल सम्पत्ति को (जिस में 40 एकड़ जमीन दो मकान) गुरुकुल एव अन्य शिक्षण सस्थाओं, भूमि रहित किसानो तथा हरिजनों को सहर्ष दे दिया।

बहन जी का सारा जीवन त्यागमय रहा। वह अपने हाथ से कते हुए सूत के कपड़े बनाकर पहनती रही। इस प्रकार समस्त स्वावलम्बी जीवन स्वय सेवक बन कर साधिका के रूप मे व्यतीत करती हुई यह महान् विभूति अमर पद को प्राप्त कर गई।

कहा भी है 'कीर्तिर्यस्य स जीवति'

इस प्रकार बहन जी का सारा जीवन विशेष कर महिलाओं के लिये विशेष शिक्षाप्रद रहेगा।

—आचार्य बलदेव नैष्ठिक
गुरुकुल कालवा

जयपुर में शताब्दी समापन समरोह

जयपुर 7 अप्रैल 1990। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में में 18, 19, 20 मई 1990 को जयपुर में राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का शताब्दी समारोह आयोजित किया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अध्यक्ष श्री छोटूसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न बैठक में सर्व सम्मति से प्रो० नैतिराम शर्मा को समारोह का स्वागताध्यक्ष एवं श्री सत्यव्रत सामवेदी को संयोजक बनाया गया।

राजस्थान महर्षि दयानन्द का प्रमुख कार्य क्षेत्र रहा है और राजस्थान की धरती महर्षि की निर्माणस्थली है। इसलिए आर्य जगत के लिए यह समारोह विशेष आकर्षण का विषय बन गया है।

इस समारोह में देश विदेश के हजारों आर्य परिवारों ने सम्मलित में होने की सूचना भेजी है।

इस समारोह को सफल बनाने के लिए आर्य जगत के मनीषी, संन्यासी आर्य नेता तन-मन धन से जुट गए हैं।

यह समारोह परम्परागत शताब्दी समारोहों से हट कर है। प्रयास किया जा रहा है कि महर्षि के राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को पूरा करने के लिए समारोह में रचनात्मक कार्यक्रम तैयार किया जाये।

धर्मानुगोगच्छति जीव एकः

रचयिता : श्री हरवंस लाल जी हंस सम्मन

कर गये सारे किनारे रिश्तेदार अपने।
छल बल से गिरा गये मंझधार अपने।
होने को तो यू हो गये बेकरार अपने।
निकले सारे ही झूठे हर बार अपने।
चलना सम्भल कर न गिरना कहीं पर यह दुनियां है सुन्दर सुहानी।
विषयों के मद में अगर खो गया तो रहेगी न तेरी निशानी।
इस लिए कहूं कहीं रुकना नहीं।
कहीं धोखे का खेल देख फंसना नहीं।
इसमें तेरी भलाई कर्म सुधार अपने।
ऋषि देकर गये हैं सुविचार अपने॥ कर गये..
कोई आ रहा है कोई जा रहा है यह दुनियां भी है एक मेला।
आते वक्त भी है आता अकेला तो जाते समय भी अकेला।
यहां बैठा जो पांव को पसार करके।
अन्त को वो गया है बाजी हार करके।
स्वर्ग धाम जाने के कर आसार अपने।
नेक बन करके यह दिन गुजार अपने॥ कर गए..
फानी जहां से तेरी प्रीति गहरी अमर मीत को है भुलाया।
सच्चा सहाई धर्म अन्त वेले है मेधावियों ने बताया।
तूने उनकी तो बात कभी मानी नहीं।
तभी सुलझी अभी तक कहानी नहीं।
करनी की औषध से कष्ट निवार अपने।
चुन चुन कर के दूषणों को मार अपने॥ कर गए..
तुम संग मरेंगे तेरे संग जियेंगे जिन्होंने था गीत गाया।
उन सबने मिल कर के सच्ची कहें "हंस" बुद्धू तुझे है बनाया।
कोई इनमे से साथी तुम्हारा नहीं।
देंगे तिनके बराबर सहारा नहीं।
नकली साथी बनते हैं हजार अपने।
सच्चे साथी फकत किरदार अपने॥ कर गये..

(पृष्ठ 2 का शेष)

इत्यादि में भी हमारा नाम आर्य का अपभ्रंश "आरज" ही मिलता है। पुराणों में भी आर्य शब्द का वर्णन और विवेचन पाया जाता है, तब हम किस प्रकार से यह मानें कि हमारा नाम हिन्दू है।

लगभग सात सौ वर्ष पुरानी राजतंरगिणी नामक एक पुस्तक में — जो कल्हण नामक कश्मीरी ब्राह्मण ने लिखी थी—हिन्दू शब्द अवश्यमेव पाया जाता है, जिससे स्पष्ट विदित होता है कि परतन्त्रता के पश्चात् ही यह शब्द हमारे ऊपर थोपा गया। विदेशियों के आक्रमण तो इससे भी शताब्दियों पूर्व हमारे ऊपर होने प्रारम्भ हो गये थे तथा इस पुस्तक के लेखनकाल में तो हम सर्वथा परतन्त्र हो ही चुके थे। एक बात यह है कि हिन्दू शब्द हमारी भाषा का भी तो नहीं। बड़ी खोज करने के पश्चात् पता चला है कि यह फारसी भाषा का शब्द है तथा गयासुल्लुगात में—जो फारसी भाषा का शब्द कोष है—इसके अर्थ काला, काफीर, चोर, बदमाश, बटमार, मस्सा तथा छछून्दर लिखे हैं। उर्दू की करी मुल्लुगात (शब्द कोश) में भी फारसी का शब्द बतलाकर इसके उपर्युक्त अर्थ ही लिखे गये हैं। ऐसी दशा में उत्तम (आर्य) नाम को छोड़ कर इस पतितावस्था के द्योतक हिन्दू नाम को धारण करना बुद्धिमानी की बात नहीं है।

यह है कि आदि सृष्टि से लेकर अब तक का हमारा इतिहास आर्य शब्द से सम्बन्धित है। यदि हम हिन्दू शब्द को चिपटे रहते हैं तो जिस उद्देश्य को सामने रखकर हमें इस नाम से पुकारा जाना प्रारम्भ किया, उसमें हमारे विरोधी विदेशियों को तो सफलता मिलती है और हमारे ऊपर यह कहावत चरितार्थ हो जाती है कि—

कौम की तारीख से, जो बे-खबर हो जाएगा।

आदमीयत को वो, रफ्ता-रफ्ता खर हो जाएगा।

ऐसी अवस्था में न हमारे सामने कोई आदर्श होगा और न हमारी सन्तानें [illegible] का [illegible]। अतः हमारा हित इसी में है कि हम सावधान हो जावें, अतीत की ओर दृष्टिपात करें और उससे शिक्षा ग्रहण करें तथा प्रगति पथ पर बढ़ चलें।

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में

प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश एक जून 90 से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी विज्ञान, समाज शास्त्र, आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी, माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा पांच तथा प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा 10 उत्तीर्ण होना आवश्यक है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें या पत्राचार करें।

आचार्य

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल,
करतारपुर
जिला—जालन्धर 14480 (पंजाब)

शास्त्री नगर में राम नवमी

3-4-90 को राम नवमी के उपलक्ष में आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर की ओर से 4 झांकियें सजा कर राम नवमी के जुलूस में शामिल हुए। पहली झांकी में श्री [illegible] जी प्रधान, श्री [illegible] मन्त्री, श्री तरलोक जी कोषाध्यक्ष और प्रोफेसर नारंग जी की अध्यक्षता में नर और नारियां यज्ञ हवन करते हुए जा रहे थे। सब झांकियों पर ओ३म् के झण्डे और माटो लहरा रहे थे।

दूसरी झांकी में करतारपुर गुरुकुल के ब्रह्मचारी अपने मधुर भजनों से लोगों का मन मोह रहे थे।

तीसरी झांकी में देवियां और बच्चे ओ३म् और गायत्री मन्त्र का जाप कर रहे थे।

चौथी झांकी में बूढ़े और बच्चे ओ३म् का जाप करते जा रहे थे। जगह जगह पर आर्य समाज अमर रहे, महर्षि दयानन्द की जय हो, ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे, के नारे लग रहे थे। आर्य समाज का साहित्य भी जगह-जगह पर बांटा जाता रहा, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से लिया गया था। लगभग 3 हजार पुस्तकें लोगों में बांटी गई जिसका लोगों पर बहुत अच्छा असर हुआ।

आर्य पुत्री पाठशाला तलवण्डी साबो में

प्रवेश शुरू

आर्य पुत्री पाठशाला तलवण्डी साबो (भटिण्डा) में हवन यज्ञ करने के पश्चात् नया दाखला शुरू किया गया। श्री प्रेम नाथ जी मैनेजर पाठशाला ने पत्नी सहित यजमान बन कर श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी द्वारा यज्ञ करा कर दाखला शुरू किया। यह पाठशाला कई वर्षों से बन्द हो गई थी, अब पुनः जारी की गई है। आर्य विद्या परिषद पंजाब गुरुदत्त भवन जालन्धर से सम्बन्धित है।

—ओम प्रकाश वानप्रस्थी

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का वार्षिक चुनाव 15-4-90 रविवार को सांय 2 बजे हुआ। निम्न प्रकार अधिकारी चुने गए।

1. प्रधान श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल।
2. कार्यकर्ता प्रधान—श्री मुल्कराज जी आर्य
3. मन्त्री रणजीत सिंह आर्य
4. उपमन्त्री—श्री सुखदेव राज जी
5. कोषाध्यक्ष—श्री राजेश प्रेमी जी
6. पुस्तकाध्यक्ष—श्री आचार्य नरेश जी शास्त्री
7. अन्तरंग सदस्य—श्री ओम प्रकाश जी धीर, श्री अश्विनि कुमार चड्ढा, श्री देवीदयाल अरोड़ा, श्री श्रीमती अनु आर्या।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज गढ़शंकर (होशियारपुर) का वार्षिक चुनाव 15-4-90 को प्रातः 10 बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् निम्न प्रकार हुआ।

(1) प्रधान—श्री रमेश चन्द्र जी जी बब्बर
2. उपप्रधान—श्री सत्यपाल सोंधी
(3) मन्त्री—श्री डा० ओम प्रकाश जी।
(4) उपमन्त्री—श्री मदन बिहारी जी त्रिपाठी
(5) प्रचार मन्त्री—श्री विनीत कृपाल जी
(6) कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्र पाल जी [illegible]
(7) पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र भाटिया

वैदिक यतिमण्डल की बैठक

वैदिक यतिमण्डल के सभी माननीय यतियों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि यतिमण्डल की बैठक दिनांक 26-27-28 मई को आर्य समाज मन्दिर आबू पर्वत, जिला-सिरोही (राजस्थान) में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर वहां आर्य समाज का उत्सव एवं श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के संरक्षण में आर्य गुरुकुल का शुभारम्भ भी होगा।

दिल्ली से अहमदाबाद जाने वाली रेल में आबू रोड स्टेशन पर उतर कर बस द्वारा आबू पर्वत जाया जा सकता है। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने प्रस्ताव किया है कि जो यति मार्ग व्यय वहन न कर सकें। उन्हें मार्ग व्यय भी दिया जाएगा। कृपया अवश्य पहुंचे। धन्यवाद।

—सुमेधानन्द
मंत्री, वैदिक यतिमण्डल
दयानन्द मठ, चम्बा

लुधियाना में राम नवमी

3 अप्रैल को आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में राम नवमी के पर्व पर एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ किया गया जो कि पं० सुन्दर लाल शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। इस यज्ञ में जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री रणबीर भाटिया महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कहा कि भगवान् रामचन्द्र के आदर्श पितृ भक्ति, आदर्श भाई, आदर्श पति के आदर्श पर चलते हुए अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। हमें एक ईश्वर पूजा, को ही जीवन में अपनाना चाहिए। अन्ध विश्वास [illegible] का परित्याग करना चाहिए।

शील श्रेष्ठ

—श्री देव नारायण भारद्वाज
जगन्नाथ निवास रेवोपुर नई बस्ती, आजमगढ़ (उ० प्र०)

अत्यन्त पुरातन है प्रसंग, अब तक जो भुला नहीं जाती।
नृप ब्रह्मदत्त के शासन में, जब हर्ष भरी थी काशी।
बोधि सत्व थे राज पुरोहित, उत्तम ब्रह्मदत्त राजा के।
थे बोधि सत्व में गुण अनेक, तो पूज्य बने वे राजा के॥

शास्त्र ज्ञान के परम पुरोधा, मृदु रूपवान थे भारी थे।
सुन्दर आकर्षक बोधि सत्व, दानी श्रेष्ठ सदाचारी थे।
राजा की श्रद्धा थी अटूट, अनुराग भरी निष्ठा अनन्य।
राजा पुरोहित के वन्दन से, वह सदा स्वयं को करें धन्य॥

राजा अधिकारी दरबारी, सब बोधि सत्व का मान करें।
उनका व्यक्तित्व भव्य कह कर, नित नित उनका सम्मान करें।
दिन एक पुरोहित राज सभा, सम्मेलन से लौट रहे थे।
रत्न एक जब राज कोष से, उठा चले थे बिना कहे थे॥

कोषाध्यक्ष दंग स्तम्भित, था देखा उन्हें अपेक्षा से।
उठा रत्न दो दिवस दूसरे, ले चले पुरोहित स्वेच्छा से।
अनदेखी कोषाध्यक्ष करी, रह गये विचारे हृदय थाम।
दो बार रत्न की चोरी की, कर गये पुरोहित घृणित काम॥

फिर दिवस तीसरा जब आया, राज सभा का हुआ विसर्जन।
राज कोष से पुनः पुरोहित, ले चले उठा मुट्ठी भर धन।
थे मुट्ठी में बहु रत्न बन्द, हो गये पुरोहित भी बन्दी।
यह चोर पुरोहित है अपना, इसकी निष्ठा नहीं सुनंदी॥

कोषाध्यक्ष बुलाये सैनिक, पकड़ो इनको लेकर आओ।
होगा निर्णय न्यायपीठ में, तुम वहीं पुरोहित को लाओ।
लेकर पैदल राज मार्ग से, राजा सम्मुख किया उपस्थित।
पूर्ण पुरोहित की चोरी का, अभियोग कर दिया सब वर्णित॥

हो उठे कुपित राजा न्यायी, नहीं पुरोहित, ये महा चोर।
शील दो इसको दण्ड अभी, है सौम्य भेष में भ्रष्ट चोर।
हे राजन् मैं चोर नहीं हूं, हो गम्भीर पुरोहित बोले।
सचमुच कर रहा परीक्षण था, गुण कौन अपने मम तोले॥

राजन् शत मेरे शंका थी, गुण कौन हमारा प्रेय बना।
मृदु रूप योग्यता या भाषा, गुण कौन हमारा श्रेय बना।
सदाचार या शील हमारा, गुण कौन आपको भाया है।
मेरे किस गुण ने आज तलक, हे राजन् तुम्हें लुभाया है॥

शील भरा व्यवहार मानव का, जो सभी गुणों से ऊपर है।
करें प्रतिष्ठा जिसकी [illegible], गुण श्रेष्ठ शील का भूपर है।
कर सके नहीं मेरी रक्षा, मेरी विद्या या ज्ञान रूप।
[illegible] शील श्रृंगार सदा, जब सभी बने जीवन अनूप।

(रजि० नं० P.b/J.L.55) 20 अप्रैल 1990
Post in N.D.P.S.O. 22 अप्रैल 1990

भारतीय जनगणना सोचनीय

भारत वर्ष मे हर 12 वर्ष पश्चात् जनगणना प्रथा को जीवन मिलता आ रहा है, अब जनगणना का समय निकट है। विदेशी साम्राज्यों की पराधीनता से पूर्व (देश) भारत नाम से पुकारा जाता आ रहा है।

मुस्लिम राज्य म भारत को हिन्दुस्तान के नाम स सम्बोधित किया जाने लगा, और आर्य जाति हिन्दू जाति नाम से पुकारी जाने लगी, अंग्रेजी शासन काल मे अंग्रेजी भाषा अनुसार भारत इण्डिया (India) नाम से प्रभावित हुआ, भारत मे बस रही जातियां—हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई अपनी अपनी जाति नाम पर सुशोभित रहे।

राष्ट्रीय स्वाधीनता के पश्चात राजनैतिक दलवाद दृष्टि अल्प संख्यक जातिया ने साम्प्रदाय् भाव, अपनी अपनी संख्या बढाने मे, (धर्मनिर्पेक्ष) राज्य सिद्धान्तिक लाभ उठाया। अब वह समय बीत चुका है—भारतीय प्रजा दृष्टिकोण—अब दूरदर्शन पर राष्ट्र भारत नाम म सम्बोधित होता है—इस भाव दृष्टि राष्ट्रीय जीवन को सिद्धान्तिक रूप से प्रगति की ओर ले जाने हेतु जनगणना मे भी सुधार हो। जिस प्रकार राष्ट्र-भारत नाम से प्रभावित हो रहा है—इसी प्रकार हिन्दू शब्द के अनुवाद पर भी गम्भीरता से दृष्टि डालते हुए कि भारतीय संस्कृति हिन्दू शब्द पर क्या भाव रखती है—और (आर्य शब्द) जनगणना दृष्टि कैसे स्थान ले, जबकि महाभारत काल मे वर्तमान दूरदर्शन मंच पर प्रचलित महाभारत—महाराजा धृतराष्ट्र जी को आर्य पुत्र से सम्बोधित करता है इसलिए अनुरोध है कृपया हिन्दू शब्द, आर्य शब्द, आपसी भेद तुलना, प्रति भारतीय धार्मिक संस्था व विद्वानों को आमन्त्रित किया जाए, विचार विमर्श निर्णय पश्चात निश्चित शब्द को जाति से जोडा जाए—प्रचारार्थ जनगणना के समय से पूर्व समूचे भारत में प्रकाशित हो—आर्य शब्द का महत्त्वपूर्ण स्थान है, भारतीय संस्कृति में।

—गोवर्धन दास (आर्य), नाभा पंजाब 147201

रायकोट में रामनवमी

जिला आर्य युवक सभा लुधियाना के द्वारा 3-4-90 को राम नवमी के पर्व पर प्रातः 7-30 बजे से 12-00 बजे तक बीबी लक्ष्मी देवी सत्संग भवन, ठठेरा मुहल्ला, रायकोट में भव्य समारोह का आयोजन किया गया।

यह समारोह यज्ञ से शुभारम्भ किया गया तथा इसकी अध्यक्षता श्री किशन चन्द गुप्ता ने की। समारोह में मुख्य अतिथि श्री रोशन लाल शर्मा, प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब थे।

इसके अतिरिक्त श्री वेद प्रकाश शास्त्री लुधियाना, प० जगत वर्मा भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, प० राजेश्वर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, लुधियाना, प० नारायण दास रायकोट ने भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्त में ऋषि लंगर हुआ।

—अशोक भारद्वाज

लुधियाना में दूसरा पारिवारिक सत्संग

1-4-90 रविवार सायं 3 बजे से 5 बजे तक श्री ओमप्रकाश मल्होत्रा मकान B-I-1382 कूचा चानन राम मैनी महर्षि दयानन्द मार्ग सिविल लाइन्स लुधियाना के गृह पर हुआ। हवन यज्ञ में मुहल्ले के सैंकड़ों नर-नारियों ने आहुति डाली तथा सत्संग में श्रद्धापूर्वक भाग लिया। यज्ञ के बाद सत्संग की कार्यवाही श्रीमती यज्ञवति जी चड्ढा की प्रधानता में हुई। बहन कमला जी आर्या, बहन आशा जी गम्भीर, श्री कृपा राम जी आर्य ने प्रभु भक्ति के गीतों द्वारा खूब प्रचार किया। प० रामकृष्ण जी शास्त्री ने वेद पूजा, प्रभु भक्ति, वैदिक धर्म की विशेषताओं पर एक प्रभावशाली उपदेश दिया। जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल वर्मा, श्री मूलचन्द भारद्वाज तथा समारोह की अध्यक्षा बहन यज्ञवति जी चड्ढा ने प्रेरणा की कि हर मुहल्ले में ऐसे यज्ञ तथा सत्संग होने चाहियें। अगला सत्संग आर्य समाज फील्डगंज के प्रधान श्री चानन राम जी गम्भीर के गृह पर होगा।

—आनन्द आर्य

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 73020   रजि० नं० P-b/J L. 55

वर्ष 23 अंक 5, 17 वैशाख सम्वत् 2047 तदनुसार 26/29 अप्रैल 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

आर्यसमाज अब किसी दूसरी राजनैतिक पार्टी के हाथ में खेलने को तैयार नहीं

अब—समय आ गया है कि जब आर्यसमाज अपना एक राजनैतिक संगठन बनाए

पंजाब प्रांतीय आर्य समाज गोष्ठी का निर्णय

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

> यह सम्मेलन पंजाब की हिन्दू जनता के विशेषकर और दूसरे अल्प संख्यकों से भी अनुरोध करता है कि वह अपने सब मतभेद मिटा कर अपने संगठन को सुदृढ़ करें और पंजाब मे अकाली साम्प्रदायिकता जो परिस्थितियां पैदा कर रही है उन का सामना करने के लिए संगठित हो जाए। वह समय आ गया है जब यह स्पष्ट कर दिया जाए कि हम किसी भी राजनैतिक पार्टी के हाथ मे खेलने को तैयार नही। जो हमारे हितो की रक्षा करेगा हम उसका साथ देंगे। जो हमारा विरोध करेगा। हम उस का विरोध करेंगे।

धर्म निरपेक्षता, साम्प्रदायिक सद्भावना, व प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली स्वतन्त्र भारत की संवैधानिक व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांत रहे हैं। इसी कारण पिछले चालीस वर्षों में हमारे देश ने इतनी प्रगति की है। पंजाब निवासियों के लिए यह शोचनीय स्थिति है कि समय समय पर इस राज्य में कुछ साम्प्रदायिक तत्व अपनी गतिविधियों से ऐसा वातावरण पैदा करते रहते हैं जिस के कारण भिन्न 2 सम्प्रदायों में अशान्ति और मनमुटाव पैदा हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति पिछले चालीस वर्षों में कई बार पैदा हुई है। अकाली दल एक साम्प्रदायिक संस्था है जो केवल एक विशेष सम्प्रदाय के हितों की रक्षा के लिए काम करता चला आ रहा है। इस का धर्म और इस की राजनीति एक दूसरे के साथ साथ चलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। राज्य की राजनैतिक और साम्प्रदायिक परिस्थितियां भी इसी प्रकार प्रभावित होती रहती हैं।

1977 में आपात कालीन स्थिति समाप्त होने के पश्चात् जब नये चुनाव हुए थे, तो पंजाब की हिन्दु जनता ने सद्भावना का परिचय देते हुए अपना पूरा समर्थन अकाली दल के उम्मीदवारों को दिया था। जिस का यह परिणाम हुआ कि न केवल अकाली दल पंजाब विधान सभा मे सब से बड़ा दल बन गया था लोकसभा मे भी पहली बार इसके प्रतिनिधि निर्वाचित हो कर गए थे और इस के दो सदस्य केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में ले लिये गए थे। पंजाब के हिन्दु अल्पसंख्यक यह समझ रहे थे कि इस के पश्चात अकाली दल भी कुछ सद्भावना का परिचय देगा परन्तु पिछले कुछ वर्षों में जो कुछ हुआ है, उसे देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि अकालियों की मनोवृति मे कोई अन्तर नहीं आया। वह न केवल आतंकवाद का समर्थन करते हैं, उसे प्रोत्साहन भी देते हैं। यह देखकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस परिणाम पर पहुंची है कि जब तक पंजाब के अल्पसंख्यक विशेष कर हिन्दू अपने आप को संगठित नहीं करते उस समय तक उनका भविष्य धूमिल रहेगा। अकाली राजनीति साम्प्रदायिक राजनीति है। उसका उत्तर उस की भाषा मे ही दिया जा सकता है। हम यह भी अनुभव करते है कि पिछले चालीस वर्षों मे न कांग्रेस ने हिन्दुओं के साथ न्याय किया है और न अकाली दल ने। इस का सब से बड़ा कारण यह है कि हम संगठित नही हुए हैं। कभी हम किसी पार्टी के पीछे भागते हैं, कभी किसी के। और हर पार्टी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये हम प्रयोग कर के हमारे हितो का बलिदान कर देती है। यदि यह स्थिति इसी प्रकार रही, तो पंजाब मे हिन्दुओं का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। आज उन्हें यह भी अधिकार नहीं कि वह अपने बच्चो की शिक्षा के माध्यम का स्वयं निर्णय कर सकें। सरकारी हिन्दु कर्मचारी व अधिकारी भी अपने आप को सुरक्षित नहीं समझते। देहात मे रहने वाले हरिजनों पर भी जो अत्याचार होते हैं, उन्हें रोकने की कोई कोशिश नहीं की जाती। इन सब समस्याओं का केवल यह समाधान है कि पंजाब के हिन्दूओं का एक संगठन हो और वह दूसरे अल्प संख्यकों के साथ मिल कर अपने भी और उन के भी हितो की रक्षा कर सकते हैं। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब की हिन्दू जनता से विशेष कर और दूसरे अल्पसंख्यकों को यह अनुरोध करता है कि वह अपने सब मतभेद मिटाकर अपने संगठन को सुदृढ करें। और पंजाब में अकाली साम्प्रदायिकता जो परिस्थितियां पैदा कर रही है उनका सामना करने के लिए संगठित हो जाए। समय आ गया है जब यह स्पष्ट कर दिया जाए कि हम किसी भी राजनीतिक पार्टी के हाथ मे खेलने को तैयार नही है। जो हमारे हितो की रक्षा करेंगे, हम उन का साथ देंगे। जो हमारा विरोध करेगी हम उस का विरोध करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष रूप से यह अनुभव करती है कि सब से पहले आर्य समाजियों को अपना एक राजनीतिक संगठन बनाना चाहिये। सब राष्ट्रवादी शक्तियों के साथ मिलकर पंजाब मे विघटनकारी तत्वों के प्रयास विफल कर दें। यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी वर्ग को यह आदेश देता है कि वह इस सम्मेलन के इस निर्णय पर विचार करें और इस नये संगठन की रूपरेखा व घोषणा पत्र तैयार कर के तीन मास के अन्दर प्रान्तीय आर्य सम्मेलन बुलावें। जहां इस योजना का अन्तिम रूप दिया जा सके।

आर्य लेखक कोश : एक महत्त्वाकांक्षी योजना

आर्यसमाजें इस सारस्वत यज्ञ में सहयोग करें

ले० —श्री प्रो० भवानी लाल जी भारतीय

पं० लेखराम ने अपनी मृत्यु शैया से आर्य जाति को जो अपना अन्तिम संदेश दिया था वह इस प्रकार था— आर्य समाज में तकरीर और तहरीर का काम कभी बन्द नहीं होना चाहिए। का अर्थ व्याख्यान और तहरीर का अर्थ लेखन कार्य से लिया जाता है। यह कौन नहीं जानता कि आर्य-समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द स्वयं एक लेखक तथा सफल साहित्यकार थे। उन्होंने अपने स्वल्प जीवनकाल में छोटे और बड़े 32 ग्रन्थ लिखे तथा पाण्डुलिपियों का एक बड़ा भण्डार अप्रकाशित ही छोड़ गये। ऋषि दयानन्द के इस लेखन कार्य का अनुकरण उनके परवर्ती आर्य विद्वानों और लेखकों ने भी किया। आर्य समाज के 115 वर्ष के जीवनकाल में हजारों लेखकों ने अपनी अनुपम विद्वत्तापूर्ण कृतियों के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि की है। आर्य समाज का यह साहित्य शास्त्रीय भी है और लौकिक भी है। उसमें उपदेशात्मकता भी है और पाठक को रसबोध कराने की शक्ति भी है।

ऋषि दयानन्द के परवर्ती जिन लेखकों ने आर्य साहित्य की अभिवृद्धि में अपना योगदान किया है उनमें सर्वश्री प० भीमसेन शर्मा, पं० तुलसी राम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, प० लेखराम, पं० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० राजाराम, प० आर्यमुनि, महात्मा नारायण स्वामी, पं० गगाप्रसाद उपाध्याय आदि ऐसे अनेक नाम लिए जा सकते हैं। वर्तमान काल के जीवित आर्य लेखकों की सख्या भी बहुत बडी है। सबके नामो की गिनाना भी सम्भव नहीं है।

आर्य लेखक कोश की योजना

कई वर्ष पूर्व मेरे मन में आर्य समाज से जुडे लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों तथा शोधकर्मियों का जीवनवृत तथा कार्यवृत्त एकत्र करने का विचार आया। मैंने आर्य समाज के साहित्य का अध्ययन तो विगत आधी शती के दीर्घकाल में इतने मनोयोग-पूर्वक किया है कि अत्यन्त विनम्रता के साथ मैं यह कहने का साहस कर सकता हूं कि आर्य लेखकों, उनके जीवनवृत्त तथा उनकी कृतियों की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी शायद ही किसी को हो। गत 20 वर्षों से तो मैं निरन्तर आर्य समाजी लेखकों का परिचय तथा उनके ग्रन्थों का विवरण एकत्र करता रहा और उसे व्यवस्थित करता रहा। अन्तत: मैंने इन सारे लेखकों के इतिवृत्त को जब अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया तो यह लेखक सूची लगभग 1500 तक पहुंच गई। पहले तो मेरे मन में विचार आया कि आज आर्य समाज में अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त प्राय: है। आज के आर्य समाजी पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त, पं० तुलसी राम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द आदि साहित्यकारों के नाम तक मे अपरिचित हैं, उनके साहित्य से परिचित होना तो सर्वथा अकल्पनीय ही है। अत: इस स्थिति में मेरे द्वारा तैयार किये गये इस आर्य लेखक कोश का क्या महत्व है और इसे छपाने में भी किसकी रुचि होगी। प्राय: भवभूति के शब्दों में यही सोचकर मन को सन्तोष देता था कि—

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्ययम् निरवधि विपुला च पृथ्वी ॥

मेरे जीवनकाल में न सही बाद में तो मेरा कोई समानधर्मा, आर्य समाज के साहित्यिक इतिहास में रुचि लेने वाला उत्पन्न होगा ही, क्योंकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी पर्याप्त विस्तृत है। मेरे द्वारा संचित दुर्लभ पुस्तकों की भांति लेखक कोश की मेरी यह पाण्डुलिपि भी पड़ी रहेगी और यदि कभी किसी ने उसकी उपयोगिता को समझा, तो वह उसे प्रकाशित भी करायेगा।

किन्तु मेरे मन में एक आशा का भाव भी अचानक जागृत हुआ। मैंने 8 वर्षों तक दयानन्द शोधपीठ पजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करने के पश्चात् 30 अप्रैल 1988 को इस महत्वपूर्ण पद से अवकाश ले लिया। ध्यातव्य है कि समस्त भारत के 150 विश्वविद्यालयों मे अकेला पंजाब विश्वविद्यालय ही एक मात्र ऐसा विद्यापीठ है। 1976 से दयानन्द शोध पीठ Dayanand Chair for Vedic Studies स्वतन्त्र रूप से ऋषि दयानन्द और उनके वैदिक सिद्धान्तों पर उच्चस्तरीय शोधकार्य करा है। मेरे आठ वर्ष के अल्पकालीन अध्यक्षकाल में लगभग 20 शोधार्थियों ने दयानन्द और वैदिक विचारधारा को शोधकार्य के लिए के लिए चुनकर पी० एच० डी० की उपाधि ग्रहण की है। शोधविषयक परामर्श लेने वालों की तो यह स्थिति है कि भारत ही नहीं, अन्य देशों के शोध विद्वान् भी प्रत्यक्ष या पत्राचार द्वारा मुझसे परामर्श लेते हैं। दयानन्द पीठ तो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी है, किन्तु वहां की स्थिति यह है कि आज दो वर्ष से इस पीठ के प्रोफेसर का पद रिक्त पड़ा है और इसे भरा नहीं जा रहा है। एक बार तो स्थिति यहां तक आ गई थी कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दयानन्द प्रोफेसर के पद को सर्वथा समाप्त ही कर दिया गया, किन्तु जब मैंने आर्य समाजी पत्रों में इसका विरोध किया और नवभारत टाइम्स के चण्डीगढ़ स्थित संवाददाता ने राधेश्याम शर्मा को हरयाणा के तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल से टेलीफोन पर सम्पर्क कर इस पद को समाप्त करने के होने वाले परिणाम और प्रतिक्रिया की जानकारी देने का आग्रह किया तो मुख्यमन्त्री जी द्वारा इस पद को यथावत् रक्खा गया। तथापि इस पद का रिक्त रखा जाना, चिन्तनीय है। आर्य समाज के उन नेताओं को तो इस स्थिति का ज्ञान भी नहीं है जबकि हरयाणा में ही आर्य समाज को सर्वाधिक प्रभावपूर्ण माना जाता है।)

यह सब लिखने का प्रयोजन यह बताना है कि पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्दशोधपीठ आज देश का एक मात्र ऐसा प्रमुख शोधसस्थान है जहां विश्व-विद्यालय स्तर पर ऋषि दयानन्द विषयक शोधकार्य होता है। कहने को तो गुरुकुल कांगड़ी भी आर्य समाज का विश्वविद्यालय है, किन्तु वहां के बारे में जितना कम कहा जाय उतना ही अच्छा है। महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय रोहतक तो केवल M. D. University ही है, क्योंकि इस विश्व-विद्यालय के केवल नाम में ही 'महर्षि दयानन्द' (यह भी नहीं केवल M. D.) शब्द जुड़े हैं।

मैं पुन: प्रकृत विषय पर आता हूं। 60 वर्ष की आयु पूरी कर मैंने उक्त पद से विधिवत् अवकाश तो ले लिया किन्तु मुझे पुन: स्वल्प वेतन पर 3 वर्ष के लिए प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर लिया गया। यह अवधि भी अगले वर्ष 30 अप्रैल को समाप्त हो जायेगी। अब मुझे विश्वविद्यालय ने निवास की सुविधा भी नही दी है। अस्तु। गत वर्ष मेरे मन में विचार आया कि यदि परमात्मा ने कुछ जीवन और दिया है तो आर्य लेखक कोश को छपाने का उद्योग किया जाये। जब वैदिक यंत्रालय के प्रबन्धक से इस ग्रन्थ की छपाई पर आने वाली लागत पूछी तो पता चला कि 700 पृष्ठों का यह ग्रन्थ पचास हजार में छप सकता है। मेरे जैसे मसिजीवि के लिए इतनी बड़ी राशि उपलब्ध करना भी एक समस्या थी।

प्रकाशन समस्या का समाधान कैसे हो?

अन्तत: मैंने निश्चय किया कि क्यों न इस ग्रन्थ के अग्रिम ग्राहक बनाये जायें और प्रत्येक व्यक्ति से 100 रु० अग्रिम मूल्य के रूप में लिए जायें। यदि 500 व्यक्ति भी 100 रु० की राशि दे दें तो ग्रंथ का छपना शक्य हो जावेगा। ईश्वर की कृपा से आर्य समाज में मेरा परिचय का दायरा भी बहुत विस्तृत है। जम्मू से लेकर मद्रास और पोरबंदर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य बन्धु मेरे प्रति सम्मान भाव रखते हैं। फिर एक बात यह भी ध्यान में आई कि मेरे इस ग्रंथ में दिवंगत लेखकों के साथ-साथ जीवित, समकालीन लेखकों का भी विवरण दिया गया। अत: ऐसा हर लेखक भी इस ग्रंथ को लेना पसन्द करेगा ही। इस विचार से मैंने अपने साथी लेखकों को एक मुद्रित विज्ञप्ति भेजी और उनसे अनुरोध किया कि वे 100 रु० अग्रिम भेज कर इस कार्य में मेरा सहयोग करें। ग्रन्थ छपते ही मात्र 100 रु० में ही वह उन्हें भेज दिया जायेगा। यदि आज के पुस्तक प्रकाशन की स्थिति को ध्यान में रखा जाये तो इस ग्रन्थ का 500 रुपया मूल्य भी रखा जा सकता है। किन्तु यह तो ऐसा प्रकाशक ही कर सकता है जो स्वयं अपनी पूंजी इसमें लगाये और 400-500 प्रतियां ही बेच कर लाखों के वारे-न्यारे कर ले। इस ग्रन्थ से धनोपार्जन मेरा लक्ष्य नहीं है, मेरी इच्छा तो ग्रन्थ को प्रकाशित करने की ही है।

मेरी आर्थिक सहयोग के लिए अपील और उसकी प्रतिक्रिया

मैंने ग्रन्थ हेतु अग्रिम राशि भेजने के लिए व्यक्तियों की ही भांति संस्थाओं से भी आग्रह किया। मेरा विचार था कि यदि देश की लगभग 5 हजार आर्य समाजों में से पचास आर्य समाजें भी मुझे 1000 रुपया दे दें तो इस प्रकार 50 हजार की राशि सहजतया एकत्र हो जाएगी और व्यक्तियों से मात्र 100-100 रुपये लेने की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह लिखते हुए खेद होता है कि अनेक आर्य समाजों को पृथकश: लिखने पर पर भी मुझे कोई आशा-जनक सहयोग नहीं मिला। इसके विपरीत दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष, यतिमण्डल के प्रधान वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुण्य कार्य में 2 हजार की राशि भेंट की। मैंने प० युधिष्ठिर जी मीमांसक से तो मात्र 100 रु० भेजने के लिए ही निवेदन किया था, कि, किन्तु एक लेखक ही समझता है। उन्होंने तत्काल एक हजार रुपये भेज दिये। दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी से मैंने 100 रु० मांगे तो उन्होंने 250 रु० भेजे।

मेरा निवेदन

1. देश की यदि 50 आर्य समाजें भी प्रत्येक 1000 रुपये भेज दें तो मेरा कार्य अत्यन्त सहज हो जायेगा। यह राशि दान रूप में न होकर अग्रिम मूल्य के रूप मे ही है। क्योंकि ग्रन्थ छपने पर इतने ही मूल्य की प्रतियां मैं उन समाजों को भेज दूंगा।

2. मैंने जिन-जिन आर्य लेखकों तथा स्वपरिचित आर्य बन्धुओं को 100 रुपये भेजने के लिए लिखा है, वे बिना विलम्ब किये यह राशि भेज दें। बूंद-बूंद एकत्र करने से समुद्र भरता है। इसी न्याय से पर्याप्त लोगों की राशियां आई हैं और आ रही हैं। आर्य लेखकों से विशेष निवेदन है, क्योंकि छपने पर सम्भवत: ग्रंथ का मूल्य बढ़ सकता है।

3. मैंने स्वयं निश्चय किया है कि कुल लागत मूल्य में जितनी राशि कम पड़ेगी उसे मैं स्वयं येन केन प्रकारेण पूरा करूंगा, क्योंकि जब ग्रंथ छापने का निश्चय कर ही लिया तो उसे पूरा होना ही है। मेरा दृढ़ संकल्प है कि आगे मुझे आर्य समाजों के उत्सवों में जो भेंट, दक्षिणा आदि मिलेगी, वह भी इसी कार्य में लगाऊंगा।

अत: निवेदन है कि आर्य समाज की सभा संस्थायें इस पवित्र सारस्वत यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। पुस्तक केवल 2000 का ही संस्करण छपेगा। जो पहले अग्रिम मूल्य दे देंगे उन्हें तो अवश्य ही मिल जायेगा। इसके द्वितीय संस्करण छपने की तो कोई आशा ही नहीं है। सहायता राशि इस पते पर भेजें—

डा० भवानी लाल भारतीय
कोठी नं० 41 सैक्टर 15 A,
चण्डीगढ़ 160015

सम्पादकीय—

इस घर को आग लग गई इस घर के चिराग से—2

पिछले लेख में मैंने बताया था कि किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रान्तो मे आर्य समाज के झगड़े बढ़ रहे हैं और अनुशासन होनता आ रही है। परन्तु सबसे अधिक शोचनीय स्थिति यह है आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा का वर्चस्व समाप्त हो रहा है। कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और कई दूसरे प्रान्तो मे यह भावना पैदा हो रही है कि आर्य समाज में अनुशासन और नियन्त्रण रखने के लिए सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को जो कुछ करना चाहिए था वह नहीं कर रहे। सार्वदेशिक सभा की गत अन्तरग सभा मे जो कुछ हुआ उसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्थिति किस प्रकार एक अत्यन्त निराशाजनक रूप धारण कर रही है। यदि आज दक्षिण भारत की चार प्रान्तीय सभाए यह विचार कर रही हैं कि वह क्यो न अपनी एक अलग सभा बना लें, इसी प्रकार किसी संस्था का सगठन विघटन मे बदल जाता है। इस समय जो निराशा कई प्रान्तीय सभाओं मे पाई जा रही है वह सार्वदेशिक सभा के कई सदस्यो मे भी पैदा हो रही है। सार्वदेशिक सभा के दो भू० पू० प्रधान मान्यवर श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभ दास और माननीय श्री डा० दुखन राम जी वर्तमान स्थिति से अत्यन्त दुखित है। उनके जो विचार हैं कि यह स्थिति क्यो पैदा हो गई है? वह यदि मैं आर्य जनता के सामने रखू तो जो निराशा इस समय है वह और भी गहरी हो जाएगी। इसी सदर्भ मे मैं एक और विशेष बात की ओर भी आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू। पिछले कुछ समय से श्री भगवान देव सार्वदेशिक सभा के प्रधान के विरुद्ध बहुत कुछ लिख भी रहे हैं और प्रकाशित भी कर रहे हैं। कई बार सोचता हू कि यह युद्ध क्या किसी प्रकार समाप्त नही हो सकता? इसका प्रभाव आर्य समाज की प्रतिष्ठा पर बहुत ही बुरा पड रहा है। मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हू कि श्री भगवान देव सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी के विषय मे जो कुछ लिखते हैं मैं उससे सहमत नहीं हू। विशेष कर यह कई ऐसे शब्द स्वामी जी के विषय मे लिखते हैं जो मेरे विचार मे उन्हे नहीं लिखने चाहिए। परन्तु दूसरी तरफ हम इस तथ्य से भी इन्कार नहीं कर सकते कि श्री भगवान देव जी के साथ विश्वासघात किया गया है। उन्हे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में बुला कर उनसे वह सब कुछ लिखवा लिया है जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी चाहते थे और और उन्होने लिख दिया। उसके साथ यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिए था परन्तु हुआ यह कि श्री भगवान देव को छ वर्ष के लिए आर्य समाज से निष्कासित कर दिया गया है। उसका उत्तर वह अब अपने लेखों के द्वारा दे रहे हैं। वह खोज करके कुछ ऐसे दस्तावेज ला रहे हैं जिनका सार्वदेशिक सभा के पास कोई जवाब न होगा। केवल यह कह देने से तो अब काम न चलेगा कि भगवान देव जी कह रहे हैं वह निराधार है। वह जो कुछ कह रहे हैं उसके प्रमाण मे सरकारी कागजात पेश कर रहे हैं। इस लिए फिर वही प्रश्न पैदा होता है जो मैंने कुछ समय पहले किया था कि अब आर्य समाज मैं वह कौन सी संस्था है जो आपस के मतभेद समाप्त करा सके, आज कोई भी नहीं। ऐसी निराशाजनक और सोचनीय स्थिति तो कभी भी पैदा न हुई थी कि आर्य समाज में आपस के झगड़े समाप्त करने वाली कोई संस्था न हो। सार्वदेशिक सभा के विधान मे इसके लिए एक न्याय सभा का प्रावधान भी है परन्तु पिछले 15 वर्षों से कोई न्याय सभा नहीं बनाई गई। क्यो नहीं बनाई गई? इसका उत्तर आर्य जनता को मिलना चाहिए। और यदि नहीं बनाई गई और कोई व्यक्ति सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो पर कोई आरोप लगाता है जैसा कि श्री भगवान देव लगा रहे हैं, या जो कुछ श्री भगवान देव कह रहे हैं वह ठीक है या गलत, इसका निर्णय कौन करे। परन्तु सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा जब चाहे जिसके विरुद्ध जो प्रस्ताव पारित करना चाहे कर देती है। उसी के आधार पर कभी वीरेन्द्र को निकाल दिया जाता है, कभी श्री भगवान देव को निकाल दिया जाता है। जो महानुभाव इस प्रकार के प्रस्ताव पारित करते हैं उनका कोई अधिकार नही कि वह फैसला करें कि अपराधी कौन है और कौन नहा। यह अधिकार केवल न्याय सभा का है परन्तु वह न्याय सभा नही बना रहे। इसी से पता चल जाता है कि उनकी नियत क्या है और आज यदि सारे प्रान्तो में एक निराशाजनक वातावरण पैदा हो रहा है तो केवल इसलिए कि आज आर्य समाज में कोई ऐसा व्यक्ति नही रहा जो इस आग को बुझा सके जिसमे आर्य समाज जल रहा है।

मैंने लेख तो लिख दिया कि कोई ऐसा व्यक्ति नही जो इस आग को बुझा सके परन्तु मेरे इस विचार से कई आर्य भाई सहमत न होंगे। मै स्वय भी अनुभव करता हू कि कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो इस किश्ती को डूबने से बचा सकते हैं लेकिन वह कुछ कर नही रहे। मेरा सकेत वैदिक यति मण्डल की ओर है वह कर सकते हैं लेकिन कुछ नही कर रहे। यह स्थिति और भी अत्यन्त निराशाजनक है। वह कर सकते हैं लेकिन नही कर रहे यह क्यो? इस विषय मे आगामी अंक में अपने विचार प्रस्तुत करूगा।

—वीरेन्द्र

पंजाब के आर्य समाजियों के सामने एक नई चुनौती

आज के आर्य मर्यादा में उस गोष्ठी की कार्यवाही प्रकाशित की जा रही है जो 2? अप्रल को जालन्धर में हुई थी। जिसमे यह विचार किया गया था कि आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नही इसके विषय मे सार्वदेशिक सभा को कोई सम्मेलन करके किसी निश्चय पर पहुचना चाहिए था परन्तु वह तो कुछ नही कर रही। ऐसी स्थिति मे प्रान्तीय सभाओं को स्वय यह फैसला करना पडेगा कि वह क्या करें। सारे देश मे जो स्थिति पैदा हो रही है आर्य समाज उससे आख बद करके नही बैठ सकता। उसका कुछ कर्तव्य भी है और दायित्व भी। इन परिस्थितियों मे क्या करना चाहिए इस विषय में विचार कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु यदि हम बैठ कर आपस में कोई विचार ही न करें तो गाडी आगे कैसे चलेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बधित आर्य समाजो के अधिकारी व प्रतिनिधि महानुभावों ने 22 अप्रैल को इस विषय मे विचार किया। लगभग दो सौ महानुभाव इसमे सम्मिलित हुए। मैं उन सबका आभारी हू कि उन्होने इस गम्भीर विषय पर बैठ कर विचार किया। हम अभी किसी अन्तिम निर्णय पर नही पहुचे। इसके बाद एक और सम्मेलन होगा। उसमे आगे इस विषय पर फिर विचार किया जाएगा। सारी स्थिति को देखते हुए और अपने दायित्व को समझते हुए ही हम किसी निर्णय पर पहुच सकते हैं।

इस सम्मेलन मे एक प्रस्ताव पारित किया है जो इसी अंक के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया जा रहा है। मेरा पंजाब के सभी आर्य भाईयो और बहनो से यह अनुरोध है कि वह इस प्रस्ताव को पढे और सम्मेलन में जो विचार दिए गए थे वह भी प्रकाशित किए जा रहे हैं उन्हें भी पढे और उन्हे पढ कर अपने विचार हमे भेजें। हम उन्हें आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर देंगे। हम चाहते है कि इस गम्भीर विषय मे वाद विवाद के पश्चात ही कोई निर्णय लिया जाए

वीरेन्द्र

महान् विभूतियों के पत्रों में शिक्षा-विषयक कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां

ले०—श्री डा० कमल पुजाणी जामनगर (गुजरात)

मनीषियों के पत्र साधारण मनुष्यों के पत्रों की अपेक्षा विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। इसी कारण ये पत्र प्रकाश में आते हैं और प्रकाशन के पश्चात साहित्य की स्थायी निधि में वे सम्मिलित हो जाते हैं।

हिन्दी में अब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ इत्यादि अनेक मनीषियों के पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों में धर्म, समाज, सुधार, शिक्षा आदि अनेक विषयों के सम्बन्ध में मननीय एवं मर्मस्पर्शी टिप्पणियां प्राप्त होती हैं। यहां हम उन पत्रों में प्राप्त शिक्षा-विषयक टिप्पणियों पर संक्षिप्त प्रकाश डाल रहे हैं।

शिक्षा के मुख्य दो उद्देश्य माने जाते हैं—

(1) जीवकोपार्जन तथा

(2) जीवनोत्कर्ष।

हमारे देश के अधिकांश विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आज भी लार्ड मैकोले की शिक्षा-पद्धति प्रवर्त्तमान है जो शिक्षितों को बेकार और कंगाल बनाकर देश में निराश का वातावरण निर्मित करती है।

अत: यह शिक्षा-पद्धति उपर्युक्त प्रयोजनों की पूर्ति के लिए असमर्थ प्रतीत होती है।

'शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही हो सकती है'—ऐसा स्पष्ट मंतव्य आज से सौ साल पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सेठ निर्भयराम को लिखे एक पत्र में व्यक्त किया था। उस पत्र की महत्वपूर्ण टिप्पणी यहां हम प्रस्तुत करते हैं।

'...आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन संस्कृतरूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है।... यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला खोली है।

(ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र (और विज्ञापन, भाग-2' पृ० 501)

इसी प्रकार महर्षि ने अपने एक अन्य पत्र में परीक्षा-पद्धति की उत्तम व्यवस्था की ओर इंगित करते हुए लिखा था—

'...और प्रति मास संस्कृत की परीक्षा अन्य पंडितों के द्वारा हुआ करे। और वे प्रश्नोत्तर के कागजात हमारे पास भेजे जाया करें।'

(वही पृ० 502)

वर्तमान शिक्षा-विदों के लिए ये दोनों टिप्पणियां मननीय हैं। प्रथम टिप्पणी शिक्षा के माध्यम का निर्देश करती है और दूसरी परीक्षा के प्रबन्ध का।

शिक्षा केवल आजीविका का साधन नहीं है, किन्तु चरित्र-निर्माण अथवा व्यक्तित्व-विकास का सर्वोच्च सोपान भी है। शिक्षा के इस उज्ज्वलतम हेतु का उद्घाटन स्वामी विवेकानन्द ने सन् 1895 ई० में लिखे अपने एक पत्र में किया था। अपने प्रिय शिष्य आलासिंगा को अमेरिका से लिखित उस पत्र का प्रारम्भिक अंश इस प्रकार है—

"प्रिय आलासिंगा,

हम लोगों का कोई 'संघ' नहीं है और न हम कोई 'संघ' बनाना ही चाहते हैं। पुरुष व महिला जो कोई भी जो कुछ शिक्षा प्रदान तथा प्रचार करना चाहें, उन कार्यों की पूर्ति के लिए वे सम्पूर्ण स्वतन्त्र हैं..."

"मेरा मूलमन्त्र है—व्यक्तित्व का विकास प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा उपयुक्त बनाने के सिवा मेरी और उच्चाकांक्षा नहीं है। ..

पत्रावली, भाग 1, पृ० 391)

इस पत्रांश में हमें 'मनुस्मृति' के प्रसिद्ध श्लोक 'एतद्देश प्रसूतस्य स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

शिक्षा की सफलता अध्ययन एवं अभ्यास पर निर्भर है। 'करत-करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान' कहावत इसी तथ्य को पुष्ट करती है। स्वामी रामतीर्थ ने अपने 27 सितम्बर, 1894 के पत्र में भी इसी तथ्य की ओर संकेत किया था—

'...यह चित्त अभ्यास करते करते से वश में आता है। अच्छे, उत्तम पुस्तक वासिष्ठ आदिक ऐसे समय पर विचारने चाहिए।...'

(राम पत्र, भाग-11, पृ० 144)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि मनीषियों के पत्रों में शिक्षा-सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण टिप्पणियां बिखरी पड़ी हैं। इन टिप्पणि से शिक्षा के अनेक पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है अत: ये टिप्पणियां वर्तमान शिक्षा के स्वरूप-निर्धारण से अपना पृथक् महत्व रखती हैं।

1, सिद्धार्थ ऐनाक्षेण्ट्स,
जामनगर—361008 (गुजरात)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूचि

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली	ग्यारह भाग	मूल्य 66-00
सत्य की मंजिल सेवा की राह	लेखक श्री शादी राम जोशी	,, 20-00 रु०
स्वामी स्वतन्त्रानन्द ग्रन्थ माला	,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज	,, 16-00 ,,
अमृत पथ	,, पंडित दीना नाथ—सिद्धान्ता-लंकार	,, 6-00
व्यक्ति से व्यक्तित्व	,, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु	,, 20-00
तत्वमसि	,, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	,, 40-00
संध्या अग्निहोत्र	,, श्री सत्यकाम विद्यालंकार	,, 25-00 ,,
संस्कार विधि	,, — —	,, 8-00 ,,
नित्यकर्म विधि:	,, — —	,, 3-00 ,,
आर्यों का आदि देश	,, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	,, 2-00 ,,
आर्य समाज अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न	,, डा० भवानी लाल भारतीय	,, 10-00 ,,
पंजाब का आर्य समाज	,, प्रि० राम चन्द्र जावेद	,, 4-00 ,,
सत्यार्थ प्रकाश	,, स्वामी दयानन्द जी महाराज	,, 12-00 ,,
बलिदान जयन्ती	,, — —	,, 4-50 ,,
आर्य समाज का इतिहास छ: खण्ड	,, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार	,,675-00 ,,
सिख तुष्टीकरण की राजनीति	,, अरुण शोरी	,, 2-00 ,,
वेद और उनका प्रादुर्भाव	,, महात्मा नारायण स्वामी	,, 7-60 ,,
व्यवहारभानु:	,, स्वामी दयानन्द जी महाराज	,, 1-00 ,,
दि पुष्पांजलि	,, श्रीमती पुष्पा महाजन	,, 2-00 ,,
आर्य कीर्तन भजनावलि	,, — —	,, 1.00 ,,
वेद और आर्य समाज	,, स्वामी श्रद्धानन्द	,, 1-00 ,,
ओंकार स्तोत्र		,, 0-75 ,,
निजाम की जेल में	,, क्षितिश वेदालंकार	,, 20-00 ,,
The Storm in Punjab	,, —do—	
Swami Shardhanand	,, K.N. Kapoor	,, 5-00 ,,
Glimpses from Satyarth Parkash	,, D.N. Vasudeva	,, 3-00 ,,
Social Reconstruction by Buddha and Dayananda	,, Ganga Parshad Upadhyays	,, 2-25 ,,
ਜਨਮ ਸਾਖੀ	,, ਪਿੰਡੀ ਦਾਸ ਤ੍ਰਿਆਠੀ	,, 2-00 ,,
ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦਾ ਇਕ ਦਰਸ਼ਨ	,, ਆਚਾਰੀਆ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਸਿੰਘ ਆਜ਼ਾਦ	,, 2-00 ,,
ਸਿੱਖ ਗੁਰੂ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਿਧਾਂਤ	,, ਸਵਾਮੀ ਸਵਤੰਤ੍ਰਾਨੰਦ ਜੀ	,, 2-50

नया नंगल में आर्य समाज स्थापना दिवस

गत दिनों आर्य समाज नया नंगल (रोपड़) में आर्य समाज का स्थापना दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। इससे पूर्व विश्व शान्ति यज्ञ किया गया और इस अवसर पर श्री डा० उमेश कुमार जी शास्त्री चण्डीगढ़ और श्री प० जीवानन्द जी शर्मा पुरोहित का प्रभावशाली प्रवचन। सैकड़ों की संख्या में आर्य बन्धुओं व बहनों ने इसमें भाग लिया।

—सुभाष चन्द्र मन्त्री

आर्य समाज गढ़शंकर का चुनाव नहीं हुआ

निवेदन है कि आर्यमर्यादा अंक 22-4-90 में जो आर्य समाज गढ़शंकर के चुनाव की सूचना छपी है वह निराधार है। 15-4-90 को आर्य समाज गढ़शंकर का कोई चुनाव नहीं हुआ। इस आर्य समाज के प्रधान पूर्ववत श्री वेद प्रकाश जी बेदी, मन्त्री श्री जगदीश सिंह जी, कोषाध्यक्ष सूबी कमल शामा जी ही हैं।

—जगदीश सिंह
मन्त्री

क्या आर्यसमाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए ?

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधि इस विषय में क्या कहते हैं :—

'22 अप्रैल को जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधि महानुभावों की एक गोष्ठी आयोजित की गई थी। इसमें लगभग 200 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। आर्य समाज और राजनीति इस विषय पर लगभग 25 महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जो आर्य जनता की जानकारी के लिए नीचे दिए जा रहे हैं—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रणबीर जी भाटिया ने सारी स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कुछ समय हुआ जब हमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ था कि आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं ? इस विषय पर अपनी सभा के विचार हमें भेजें। इसलिए आज की यह सभा इसी बात को सामने रख कर बुलाई गई है। इसके साथ ही पंजाब की वर्तमान स्थिति अत्यन्त गम्भीर रूप धारण करती जा रही है। उस पर भी हमें विचार कर लेना चाहिए। इसलिए जो महानुभाव आज यहां आए हैं, वह सारी स्थिति को सामने रख कर इस विषय में अपने-अपने विचार पेश करें।

सर्वप्रथम श्री बाल मुकन्द जी जालन्धर ने कहा कि देश की स्थिति गम्भीर रूप धारण कर रही है और आज कोई भी ऐसी पार्टी नहीं है जो इस समय केवल देश के हित को सामने रख कर काम कर रही हो। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि आर्य समाज को अपनी एक राजनीतिक पार्टी बनानी चाहिए, जो आर्य समाज व देश के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व कर सके और उनके हितों की रक्षा कर सके।

श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ जालन्धर ने कहा कि आर्य समाज को क्रियात्मक रूप से राजनीति में भाग लेना चाहिए, जैसे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है, और आर्य समाज को अपनी विचारधारा के अनुसार देश की राजनीति को भी प्रभावित करना चाहिए।

श्री कुन्दन लाल जी पटियाला ने कहा कि राजनीति में आर्य समाज को अवश्य ही भाग लेना चाहिए परन्तु जो पार्टी बनाई जाए वह आर्य समाज से अलग रहे। लेकिन आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार ही वह अपनी राजनीति को चलाए।

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न जालन्धर ने कहा कि जो कुछ महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास में लिखा है और जो राजनीति के सम्बन्ध में वेदों में लिखा है उसके अनुसार अब हमें अपना कार्य-क्रम बनाना चाहिए और राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए आर्य समाज में अखिल भारतीय स्तर पर एक राजनीतिक सभा का गठन होना चाहिए जो आर्य समाज की नीति के अनुसार काम करें।

श्री मनोहर लाल जी तलवाड़ा ने कहा कि इस समय स्थिति गम्भीर है दूसरे राजनीतिक दल आर्य समाज के सहारे ही चल रहे हैं और वह इसका श्रेय भी स्वय ही ले रहे हैं। देश की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। हिन्दुओं की और हिन्दू धर्म की रक्षा कोई नहीं कर रहा। इसलिए आर्य समाज को सामने आकर अपने देश का सही नेतृत्व करना चाहिए।

श्री चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट ने कहा कि वह इससे सहमत नहीं हैं कि हमें राजनीति में भाग लेना चाहिए। क्योंकि हम भी राजनीति में आकर अन्य राजनीतिक लोगों की तरह से ही भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाएंगे। आर्य समाज अपने वास्तविक उद्देश्य को नहीं छोड़ सकता। यह एक ऐसा विषय है जिसका अन्तिम निर्णय सार्वदेशिक सभा ही ले सकती है। इसलिए पहले उससे पूछना चाहिए कि वह क्या चाहती है।

श्री डाक्टर ज्ञान चन्द जी जालन्धर ने कहा कि आर्य समाज को अपनी धर्म नीति और वेद प्रचार के लिए और अधिक सक्रिय होने के लिए राजनीति में अवश्य भाग लेना चाहिए।

श्री ओम प्रकाश जी इन्दु फगवाड़ा ने कहा कि राजनीति हमारे लिए आवश्यक नहीं है। इस विषय में अन्तिम निर्णय हमारे केन्द्र को करना चाहिए। इसके साथ ही इस विषय में पहले हम अपनी नीति को स्पष्ट करें। तभी इसी विषय में कुछ विचार किया जा सकता है।

श्री मूलचन्द जी भारद्वाज ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा और राजार्य सभा यह तीन प्रकार की सभाएं होनी चाहिएं। राजार्य सभा बनाने से पहले हमें धर्मार्य सभा और विद्यार्य सभा को ही सफल बनाने का प्रयास करना चाहिये।

श्री रोशनलाल जी शर्मा लुधियाना ने कहा कि आर्य समाज देश की राजनीति को अवश्य प्रभावित कर सकता है। परन्तु यह भी देखना चाहिए कि क्या हम राजनीति को स्वच्छ रख सकेंगे। हमें पहले अपने आपको शक्तिशाली बनाना चाहिए।

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट जालन्धर ने कहा कि आर्य समाज को सक्रिय करने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सगठन में राजार्य सभा बनाने का विधान है। सभा के विधान की धारा 32 को पढकर सुनाते हुए उन्होंने बताया कि हमें राजार्य सभा अवश्य ही बनानी चाहिए। क्योंकि हम आज की राज-नीति पर अपना सीधा प्रभाव नही डाल रहे। इसलिए हमें राजनीतिक समस्याओं पर विचार करना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि आज पंजाब व जम्मू कश्मीर व देश के दूसरे भागों में क्या हो रहा है। इसलिए हमें अपनी राजनीतिक पार्टी अवश्य बनानी चाहिए।

श्री अमृत लाल जी बाजाज एडवोकेट जालन्धर ने कहा कि सभा को राजार्य सभा अवश्य बनानी चाहिए। ऋषि दयानन्द ने राजार्य सभा की व्यवस्था की है। आर्य समाज ने पहले भी कई बार देश को राजनीतिक रूप में बहुत कुछ दिया है और उसकी रक्षा की है। कोई कारण नहीं कि अब आर्य समाज मौत हो कर बैठा रहे।

श्री शादी लाल जी महेन्द्रु बंगा ने कहा कि हमें राजनीति में अवश्य ही भाग लेना चाहिए। राजनीति की की शुद्धि के लिए भी आज हमें आगे आना चाहिए। इसमें बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को हम तभी रोक सकेंगे यदि हम राजनीति में सक्रिय भाग लेंगे।

श्री अमृत लाल जी गुलाटी फगवाड़ा ने कहा कि जो कुछ भी करना है हमें आर्य समाज के मंच से ही करना चाहिए। देश की जो आवश्यकताएं हैं, हम उनकी अवहेलना नहीं कर सकते। जो समय के अनुसार नही चलते वह पिछड़ जाया करते हैं।

श्री बलदेव राज जी विज दीनानगर ने कहा कि हमें राजार्य सभा की अति आवश्यकता है। आर्य समाज के कार्य को सक्रिय करने के लिए और राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के लिए हमें इस का गठन आवश्य करना चाहिए।

श्री वेदप्रकाश जी मेहता पटियाला ने कहा कि राजनीति जीने के लिये है। मरने के लिये नहीं। राजनीति के बिना गुजारा नहीं। आर्य समाज को अपने में विश्वास पैदा करना चाहिए।

श्री चमन लाल जी अमृत ने कहा कि हमें अपने संगठन को शक्तिशाली बनाना चाहिए। स्वामी विरजानन्द, श्रद्धानन्द जी और महर्षिदयानन्द जी महाराज सभी ने राजनीतिक कार्यों में भाग लेने की प्रेरणा दी है। इसलिए हमें अकालियों की तरह अपनी राजनीतिक पार्टी अवश्य बनानी चाहिए। हमें हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठे रहना चाहिए।

श्री राम लुभया जी नन्दा जालन्धर ने कहा कि हम राजनीति की अवहेलना नहीं कर सकते। जो स्थिति पैदा हो गई है और आगे हो सकती है उसके लिये भी हमें राजनीति मे अवश्य सक्रिय भाग लेना चाहिए। परन्तु हमारी पार्टी के सदस्य को किसी दूसरी पार्टी के सदस्य से श्रेष्ठ होना चाहिए।

सत्यपाल जी उप्पल सगरूर ने कहा कि हमे अपना राजनीति के सगठन अवश्य बनाना चाहिए। और हमें ऐसी शक्ति पैदा करनी चाहिए कि हम पंजाब की समस्याओं का कोई समाधान ढूढ सकें।

श्री वीरेन्द्र जी सरीन नवाशहर ने कहा कि अब समय आ गया है कि आर्य समाज पूरी शक्ति से आगे बढ़े।

श्री अमरनाथ जी तलवाड़ा ने कहा कि हमें राजनीति में अवश्य ही सक्रिय भाग लेना चाहिए। दूसरी पार्टियां आज आर्य समाज की अवहेलना कर रहीं हैं। उस का एक ही उत्तर हैं कि हम भी अपनी राजनीतिक पार्टी बनाएं।

श्री बृज शर्मा पक्का बाग जालन्धर ने सुझाव दिया कि पूर्ण सहमति से ही हमें राजनीति के सम्बन्ध में कोई पग उठाना चाहिए।

श्री लक्ष्मीकांत श्रीधर अमृतसर ने कहा कि हमें राजनीति में अवश्य भाग लेना चाहिए। हम पिछड़ गए हैं जब तक राज्य सत्ता हमारे पास नही है उस समय तक हम कुछ नहीं कर सकते।

श्री रामनाथ जी शर्मा अमृतसर ने कहा कि हमें राजार्य सभा अवश्य बनानी चाहिए। परन्तु यह भी देखने की आवश्ययता है कि क्या किसी ऐसी संस्था को चलाने के लिए हमारे पास जनशक्ति है।

श्री चिरजीलाल जी धूरी ने कहा कि समय आ गया है कि अब आर्य समाज आगे आ कर जनता का नेतृत्व करे। और अपना एक राजनीतिक संगठन बनाए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

केवल पांच वर्षों के अल्पकाल में कैसे समस्त आर्य सन्तान—'हिन्दु' को संगठित कर देश को आर्यावर्त बना पाएं ?

एक व्यापक योजना

[लेखक—श्री भोलानाथ दिलवरी, पूर्व प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर।

आर्य सन्तान—हिन्दु की वर्तमान संख्या 70-75 करोड़ है। बहुसंख्यक हैं। परन्तु मत-मतान्तरों में बुरी तरह बन्टे होने से दीन-हीन मृत प्रायः से बने हुए हैं। अल्पसंख्यकों ने इनका जीना दूभर कर रखा है। यहां तक कि इनकी मान्यताओं को पैरों तले रौंद रहे हैं। गो वध जारी है। हमारे पूज्य श्री राम—श्री कृष्ण जी के जन्म स्थानों पर अधिकार जमा रखा है और छोड़ने को तैयार नहीं। इनके हौसले इतने बढ़ गए हैं कि वह अब देश को खण्ड-खण्ड करने के लिए जोर-शोर से प्रयत्नशील हैं। एक बार तो बटवारा भी कर चुके हैं। कारण स्पष्ट है कि आर्य सन्तान-हिन्दु संगठित नहीं। इनमें एक सच्चे 'आर्य' धर्म पर आस्था नहीं, फिर एक भाषा और भावनात्मक एकता कैसे हो।

आज से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व महर्षि ने इनके इस रोग का निदान कर इनमें एकात्मता लाने का प्रयत्न आरम्भ किया था। और मृत्यु पर्यन्त इस महत कार्य में जुटे रहे। महर्षि एक थे परन्तु अब तो हम उनकी मानस सन्तान 'आर्य' डेढ़-दो करोड़ हैं। हमारी अनेक वृहद संस्थाएं भी हैं। यदि हम आलस्य प्रमाद छोड़ उनके कार्य को दिलो-जान से, लक्ष्य तक पहुचाने के लिए अग्रसर हो जावें तो कोई कारण नहीं कि कुछ ही काल में सफल मनोरथ न हों। महर्षि ने आर्य सन्तान में एकात्मता लाने के लिए स्पष्ट शब्दों में कहा था 'पाण्डया जी, जब तक आर्य सन्तान (हिन्दू) एक धर्म, एक भाषा, एक भावना में बंध नहीं जाते अर्थात् हर दृष्टि से आर्य नहीं बन जाते, तब तक इस देश का पूर्ण कल्याण न हो पायेगा।' मानना होगा यह ऋषि वाक्य एक ध्रुव सत्य है। आर्यो! आओ एक जुट हो—दिलोजान से अपने सब साधन एकत्रित कर समस्त आर्य सन्तान-हिन्दु मात्र में एकात्मता लाने का संकल्प लें, क्रियाशील हो जावें।

मेरी योजना—वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रख मैंने बड़ी गम्भीरता से ऋषि भावना को कार्य रूप देने की एक योजना विचारी है। यदि हम आर्य मिलजुल कर संगठित रूप से इसे कार्यान्वित करें तो कोई कारण नहीं कि केवल पांच वर्ष के अल्पकाल में ही समस्त आर्य सन्तान हिन्दु मात्र मे आर्यत्व का बीजारोपण न कर पावें। इससे इनमें निश्चय ही भावनात्मक एकरूपता आ जावेगी। देश सच्चे अर्थों मे 'आर्यावर्त' बन जावेगा। फिर आर्य-राज्य बनने मे क्या देर लगेगी।

एकात्मता लाने के लिए शिक्षा और प्रचार दो बड़े साधन हैं।

1. शिक्षा के लिए हमें भावी पीढ़ी में अपनी शैक्षिक संस्थाओं-स्कूलों आदि में धार्मिक शिक्षा का समुचित सख्त प्रबन्ध करना होगा। इस विषय में डी० ए० वी० संस्था कुछ ध्यान दे रही हैं उसे और प्रभावी बनाना होगा। एवं अन्य स्कूलों में प्रचलित करना होगा।

2. दूसरा बड़ा साधन 'व्यापक प्रचार' का है। वास्तव में इसके द्वारा ही केवल पांच वर्ष के अल्पकाल में ही समस्त हिन्दु मात्र में 'आर्यत्व' लाया जा सकता है।

(क) समस्त आर्य मात्र में आर्य चेतना लानी :

पूर्व से आर्य समाज का प्रचार प्रायः उपदेशकों द्वारा ही हुआ करता था, उस समय दूसरा विकल्प भी नहीं था। अब स्थिति बदल गई है : प्रथम तो उपदेशक प्रायः समाप्त हैं। आगे कोई बनना भी नहीं चाहता। यदि कोई बनेगा भी तो वह बड़ा बोझल सिद्ध होगा।

उपदेशकों के विकल्प रूप में हम वीडियो (वी० सी० आर०) प्रणाली से बड़े प्रभावशाली रूप में कार्य ले सकते हैं। इसके द्वारा अच्छे-अच्छे सुन्दर-सुन्दर प्रोग्राम तैयार करवा और उनके कैसेट तैयार करवा एक ही समय में अनेक स्थानो पर लाखों व्यक्तियों में प्रचारित कर सकते हैं। इस प्रणाली द्वारा आर्य-महापुरुषों की जीवन झांकियां, नाटक, वैदिक धर्म संस्कृति सम्बन्धी अनेकों कार्यक्रमों को तैयार कर इनके कैसेटों को बहुत कम खर्च पर स्थान-स्थान पर पहुंचाया जा सकता है। इन्हें आर्य समाजों, स्कूलों, कालेजों, गली मुहल्लों, गांव-गांव में हिन्दुओं की अन्य संस्थाओं द्वारा भी प्रचारित किया जा सकता है। मजे की बात यह है कि ऐसे प्रोग्रामों को देखने के लिए बाल-वृद्ध, स्त्री पुरुष स्वयंमेव खींचे चले आवेंगे। केवल जनता में सूचना खूब प्रभावी ढंग से देनी होगी।

(ख) एकात्मता दृढ़ करने हेतु कुछ 'उद्घोष :

एकात्मता के भाव की ओर भी दृढ़ भूमि करने के हेतु कुछ उद्घोष मैंने विचारे हैं इनमें से कोई भी प्रोग्राम अनुसार प्रारम्भ में, मध्य में एवं अंत में बोले बुलाए जा सकते हैं। (ऐसे और भी प्रभाव-उत्पादक उद्घोष सोचे जा सकते हैं) :

1. श्री राम चन्द्र जी, श्री कृष्ण चन्द्र जी 'आर्य' थे। हम उनकी संतान होने के नाते आर्य हैं।

2. आर्य संस्कृति एवं धर्म की रक्षा करना हम 'आर्यों' का परम धर्म है।

3. आर्य-सनातन धर्म ही सत्य सनातन धर्म है।

4. आओ, सच्चे अर्थों में आर्य बनें, आर्यधर्म का प्रचार करें।

5. आर्य समाज हिन्दुओं का सबल अभिन्न अंग है—अटूट भाग है।

6. आर्य समाज हिन्दुओं का सैनिक अंगरक्षक है।

7. आर्य संस्कृति की रक्षा करना आर्य समाज का परम धर्म है।

8. आर्य समाज का स्रोत स्वयं परमात्म देव है।

9. आदि में परमात्म देव द्वारा 'चार वेद' महर्षियों पर अवतरित हुए।

10. वेद-ज्ञान द्वारा आर्यों ने सब मनुष्यों को सभ्य बनाया, आग जलानी सिखाई।

11. सब ज्ञान-विज्ञान आर्यों द्वारा भूमण्डल में प्रचारित हुए।

12. पुरातत्व ऐतिहासिक तथ्यों ने प्रमाणित कर दिया है कि आर्यों का समस्त भूमण्डल पर अखण्ड चक्रवर्ती राज्य महाभारत काल तक रहा।

13. सब भाषाओं की जननी 'संस्कृत' भाषा सिद्ध हो चुकी है।

14. पूर्व काल मे सब भूखण्डों मे आर्य-संस्कृति—इसके देवी देवता पूजे जाते थे।

(ग) बहुत कम खर्च पर कार्य हो सकता है :

आर्य समाज मे बड़े-बड़े त्यागी, विद्वान्, शिक्षा-शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी विद्यमान हैं। आर्य स्कूलों, कालेजों के अध्यापक, कलाकार, लड़के लड़किया इस कार्य में विशेष रुचि से कार्य करेंगे। इस प्रकार हर प्रकार के कलाकार बिना खर्च उपलब्ध हो जावेंगे।

(घ) इस योजना का सुचारु रूप से चलाने के लिए 10-15 लाख की धनराशि एकत्रित करनी होगी। मैं इस कार्य में एक लाख रुपया तो अर्पित कर दूंगा और भी 5-6 लाख एकत्रित कर दूंगा। सब प्रान्तीय आर्य सभायें, वे आर्य समाजें इस कार्य में योगदान देंगी। बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं से पर्याप्त धन मिल सकता है। इस उद्योग के लिए जो संस्था बने, उसकी ओर से 20 रु०, 25 रु०, 100 रु० की रसीदें छपवा आर्य समाजों को अपने-अपने क्षेत्र में धन संग्रह के लिए दी जावें।

(च) हमारे प्रचार के माध्यम—हमारे पास 5000 तो आर्य समाजें हैं। 500 के लगभग डी० ए० वी० संस्थायें हैं। 1000 के करीब हिन्दु आर्य स्कूल होंगे। लगभग एक सौ गुरुकुल होंगे। इनके माध्यम से इनके ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों में प्रचार हो सकता है। सनातन धर्म संस्थाओं, विश्व हिन्दु परिषदों, आर० एस० एस० की हजारों शाखाओं द्वारा सारे हिन्दु क्षेत्रों में प्रचार किया जा सकता है। ध्यान रहे हमारे पास सन्यासियों का एक यतिमण्डल भी है। इसमें 70-80 सन्यासी हैं, जिन्हें स्थान-स्थान पर भेज प्रचार-कार्य मे सहयोग लिया जा सकता है और भी अनेकों प्रचार माध्यम् सोचे जा सकते हैं।

कोई भी 'आर्य सभा' इस कार्य को स्वतन्त्र रूप में अपने हाथ में ले सकती है।

डी० ए० वी० संस्था तो इसे बड़ी सुगमता से करने में सक्षम हो सकती है।

कुछेक आर्य सज्जन इस समय फिल्म उद्योग में बहुत ऊंचे चढ़े हुए हैं, उनसे हर प्रकार का सहयोग लिया जा सकता है।

(पृष्ठ 5 का शेष)

श्री ओम प्रकाश जी महाजन लुधियाना ने कहा कि आर्य समाज एक शक्तिशाली संस्था रही है और आज की परिस्थितियों की यह मांग है कि वह इस संकट में अपने देशवासियों का नेतृत्व करे।

श्री ओम प्रकाश जी गुलाटी ने कहा कि हम राजनीति को अपने जीवन से अलग नहीं कर सकते। परन्तु सक्रिय पग उठाने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि हम इसमें किस प्रकार से सफल हो सकते हैं।

श्री ओम प्रकाश जी आर्य खरड़ ने कहा कि हमें राजार्य सभा बनाने की बजाये अपने संगठन को शक्तिशाली बनाना चाहिए। उसके पश्चात ही किसी और तरफ ध्यान देना चाहिए।

श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा जालन्धर ने कहा कि पहले आवश्यकता अपने संगठन को शक्तिशाली बनाने की है। यह उसी स्थिति में सम्भव है यदि हम पहले अपने आप को आर्य समाजी बनाएं। और अपने जीवन में आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार ही कार्य करें। तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा सफल हो सकता है। आज हमारे परिवारों में यज्ञ नहीं होता। हमें यज्ञ की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए न कि राजनीति की ओर।

अन्त में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा कि यह प्रश्न अत्यन्त गम्भीर है कि हमें राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं? एक ही गोष्ठी में इस विषय में कोई अन्तिम निर्णय नहीं लिया जा सकता। जिन महानुभावों के विचार आज हम ने सुने हैं उन पर आगे सोचने के लिए एक और सभा बुलाई जाए। जिसमें कुछ और अधिक व्यक्ति बुलाए जाएं ताकि हम इस विषय में कोई अन्तिम निर्णय ले सकें। इसलिए जो महानुभाव आज यहां पधारे हैं उन्हें चाहिए कि वह अपनी अपनी आर्यसमाज में इस विषय पर पर विचार करें। ताकि हम इस समस्या के सभी पक्ष आर्य जनता के सामने रख सकें। और इस विषय में कोई अन्तिम निर्णय ले सकें। अन्त में सभाप्रधान जी ने एक प्रस्ताव इस सम्बन्ध में प्रस्तुत किया जिसे सभी ने सर्व-सम्मति से पारित कर दिया। जो इसी अंक के प्रथम पृष्ठ पर दिया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द और अन्य ग्रहों पर मनुष्यादि सृष्टि

ले०—श्री मनमोहन कुमार जी आर्य देहरादून

सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने अन्य ग्रहों एवं उपग्रहों (सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्र) में मनुष्यादि सृष्टि पर प्रकाश डाला है। उक्त प्रकरण उन्हीं के शब्दों में उद्धृत है—

प्रश्न—सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है, वा नहीं?

उत्तर—ये सब भूगोल लोक हैं और इनमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती हैं, क्योंकि—

एतेषु हीदम् सर्वं वसु हितमेते हीदम् सर्वं वासयन्ते तद्यदिद सर्वम् वासयन्ते तस्माद्वसव इति ॥ शत० कां० 14। (प्रपा० 6। ब्रा० 7। कं० 4)॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु नाम इसलिए है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। जिस लिए वास के निवास करने के घर हैं, इसलिए इनका नाम 'वसु' है। जब पृथ्वी के समान सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं, पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह है? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है? इसलिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।'

चन्द्र आदि अन्य ग्रहों एवं उपग्रहों पर मनुष्यादि प्राणियों की उपस्थिति के सम्बन्ध में जो वैज्ञानिक प्रमाण सद्यः उपलब्ध हैं उनसे इन लोकों में मनुष्यादि की उपस्थिति का कोई संकेत उपलब्ध नहीं हुआ है। एक स्थानीय विद्वान श्री ईश्वर दयालु आर्य एतद्विषयक महर्षि के विचारों का उनके समस्त ग्रंथों से संकलन कर निष्कर्ष निकाले हैं। उनके अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त अन्य ग्रंथों में व्यक्त महर्षि के विचार चन्द्र आदि लोकों में मनुष्यादि की उपस्थिति स्वीकार नहीं करते। श्री ईश्वर दयालु जी का मत है कि इस सौर मण्डल में पृथ्वी पर ही मनुष्यादि प्रजा की सृष्टि है। चन्द्र आदि अन्य लोक मनुष्यादि प्राणियों से शून्य हैं। इनका यह भी मानना है कि सभी सौर मण्डलों में सभी सूर्य परिमाण की दृष्टि में समान हैं एवं उनके ग्रह, उपग्रहों की संख्या एवं परिमाण हमारे सौर मण्डल के समान है। श्री आर्य जी के विचार वेद मन्त्र 'सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत...' से साम्य रखने के कारण माननीय हो सकते हैं। श्री ईश्वर दयालु जी ने इसी विषय पर एक विस्तृत पुस्तक लिखी है जिसमें सभी वेदादि ग्रंथों से अपनी मान्यता के पक्ष में प्रमाण दिए हैं। उनका मानना है कि पुस्तक के प्रकाशन से एतद्विषयक सभी भ्रांतियां दूर हो जायेंगी। उनकी यह पुस्तक वर्षान्त तक प्रकाशित होने की आशा है।

पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों में मनुष्यादि की सृष्टि की सम्भावना पर निम्न वैज्ञानिक सिद्धान्त भी निर्णयार्थ सहायक हैं—

सूर्य तापी उर्जा का अजस्र स्रोत है। सभी ग्रहों एव उपग्रहों की सूर्य से दूरियां भिन्न-भिन्न हैं। इन दूरियों से ग्रहों के तापमान पर प्रभाव पड़ता है। जो ग्रह या उपग्रह पृथ्वी की तुलना में सूर्य के समीप है वहां पर तापमान पृथ्वी की तुलना में अधिक होगा। जो पृथ्वी की तुलना मे अधिक दूरी पर वहां का तापमान कम होगा। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर जो तापमान है उस मे मनुष्यादि प्राणियों की सृष्टि सम्भव है। उससे बहुत अधिक या बहुत कम तापमान वाले स्थानों पर सृष्टि सम्भव नहीं है। इससे यह सम्भावना व्यक्त होती है कि केवल पृथ्वी पर ही मानवीय सृष्टि है।

उड़न तस्तरियों के उदाहरणों से अन्य लोकों में सृष्टि की सम्भावना प्रतीत होती है। जिन उड़न तस्तरियों का वर्णन मिलता है उनकी पुष्टि नहीं हो पाई है। यदि यह सत्य होती तो निश्चय ही अन्य लोकों के मनुष्य यहां के मनुष्यों से सम्पर्क कर यहां की भाषा, ज्ञान, संस्कृति आदि अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त करते। परन्तु अभी तक ऐसा नहीं हुआ। यदि उड़न तस्तरियों की बात स्वीकार कर ली जाए तो यह भी सम्भावना हो सकती है कि यह अन्य सौर मण्डलों से पृथ्वी सदृश ग्रहों से आई हों जिससे एक सौर मण्डल में एक ही ग्रह पर मनुष्यादि सृष्टि की बात ही प्रकट होती है।

चन्द्र आदि अन्य लोकों में मनुष्यादि प्राणियों की सृष्टि पर आर्य विद्वानों ने अत्याल्प लिखा है। सत्य के निर्णयार्थ यह लेख प्रस्तुत है। सभी विद्वान् इस सम्बन्ध में स्वविचारों की जानकारी दें, यह इच्छा है।

पता : 196-II, पुष्पकुलासा,
देहरादून-248001

वानप्रस्थ आश्रम का निरूपण

वानप्रस्थ आश्रम तो श्रम के उपशमनार्थ है। गृहस्थ के कार्य बाहुल्य और अनेक प्रकार के भार से आक्रान्त होने के कारण जो थकावट हो गई थी, उसको शांत करने के निमित्त इस आश्रम का वेदों में विधान है। अधिक विचार विस्तार से पूर्व पठित शास्त्र के अभ्यास में जो शिथिलता आ गई थी, पुनः उसके जागृत करने के निमित्त मनुष्य इस आश्रम को ग्रहण करता है। गृहस्थ में विचित्र-विचित्र चित्तवृत्ति के के उत्थान से ईश्वरोपासना में जो त्रुटि आ गई थी, उसे सम्भालना और पूर्ण करना इसी आश्रम का काम है। पूर्व विषय भोग जन्य वासनाओं की जो समय-समय पर स्मृति होती रहती थी, उसका निरोध करना इसके ही अधिकार में है।

गृहस्थ से निकलते समय वनस्थ होने की इच्छा से जो प्रतिज्ञा करता है, उसका पालन करना यथा शक्ति उसका काम हो जाता है, वह प्रतिज्ञा यह है—प्रतिदिन अग्निहोत्र, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, सत्संग, एकान्त सेवन, अतिथिसत्कार, वाक्संयम, व्यर्थवाद और चिन्तात्याग, मिताहार, अधिक भ्रमण से विराम, नियत समय पर समीप आने वाले पुरुषों का अध्यापन कर्म अथवा उपदेश करना होता है। स्थिति का स्थान पवित्र, वृक्ष तल या नदी तट, शुद्ध वस्त्र ही होना चाहिए। सिर पर केश हों या न हों, यथा रुचि है। वनस्थ की प्रवृत्ति सब प्रकार दिखावट और बनावट की न हो।

क्या इन चार आश्रमों का निर्माण मनुष्य मात्र के लिए है? यह नियम नहीं हो सकता है, न हुआ और न होगा। कारण यह है कि सांसारिक व्यामोह का बन्धन बड़ा ही प्रतिबन्धक है। वही स्त्री व पुरुष आगे बढ़ता है, जिसका विचार और अपने कल्याणार्थ अपने मन में संस्कार हो। पांच यज्ञों का विधान गृहस्थ में तो मुख्य रूप से है, वनस्थ में आकर गौण हो जाता है, कारण इसका धनाभाव है। ब्रह्मयज्ञ-वेदों के प्रचार से ईश्वरोपासना, और आस्तिक भाव को जमाना, देवयज्ञ-शिक्षा द्वारा अच्छे पुरुषों की सहायता से अग्नि, विद्युत् जलादि के गुणों का आविष्कार करना, पितृयज्ञ-कार्य करने में चतुर, प्रत्येक कर्म में निपुण, मनुष्यों की उन्नति का ध्यान, अतिथियज्ञ-विद्वान मनुष्यों के द्वारा उपदेश के प्रकार को प्रचलित करना और उनका सत्कार, बलिवैश्वदेव यज्ञ-मनुष्यों की सन्तान और उनके साथ सम्बन्ध रखने वाले पशुओं को बलवान्, सुडौल और उपकारी बनाना, इस यज्ञ के द्वारा ही होता है और इसी से सुख प्राप्त होता है। इन सब कार्यों को पूरा करने के लिए ब्राह्मण विद्या से, क्षत्रिय राज शासन नियम से, वैश्यवर्ग धन, और शूद्रवर्ग अनुष्ठान से इनको बढ़ाने में यत्न करते थे। सबसे सबका प्रेम था, अन्यायपूर्वक किसी को किसी से भीति न थी, उस समय शास्त्र के विपरीत जगत में कोई भी रीति न थी।

(वीतराग महात्मा श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज कृत 'सन्मार्ग दर्शन' से साभार।)

प्रेषक—मांगेराम आर्य, प्रधान
आर्य समाज, अहमद नगर,
(महाराष्ट्र)

सम्पादक के नाम पत्र :

विशेषांक संग्रहणीय रहा

आर्य मर्यादा का 'आर्य समाज स्थापना दिवस विशेषांक' प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक है। आर्य समाज का दिग्दर्शन के नाम से यह अंक काफी ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय है। इस अंक के सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। आर्य समाज के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। जिससे और भी ज्ञान वृद्धि हुई। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए इस अंक के लेखक तथा आप बधाई के पात्र हैं।

—राम कुमार आर्य,
गोहाना (सोनीपत)

वार्षिक चुनाव

स्त्री आर्यसमाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव 21-3-90 को श्रीमती परमेश्वरी देवी की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

1. संरक्षिका—श्रीमती लज्जावती भारद्वाज, श्रीमती परमेश्वरी देवी, श्रीमती लाजवन्ती अग्रवाल।
2. प्रधाना : श्रीमती कृष्णा कोछड़।
3. उप प्रधाना : कान्ता अरोड़ा, प्रकाश शर्मा, आशा अग्रवाल।
4. मन्त्राणी : श्रीमती संतोष धवन।
5. उप मन्त्राणी : आनन्दपुरी, तथा रक्षा गांधी।
6. कोषाध्यक्ष : सुष्मा नागपाल।
7. उपकोषा अध्यक्ष : राज शर्मा।
8. वस्तु भण्डार : लाजवन्ती अग्रवाल, आनन्दपुरी, रक्षा गांधी।
9. लेखा-जोखा निरीक्षका: श्रीमती कृष्णा कोछड़।
10. अंतरंग सदस्य : ज्ञान देवी सूद, दयावंती, वेद सेठी, सत्या कोहली, सरला महता, कांता बेदी।

आर्यसमाज फाजिलका का चुनाव

आर्य समाज फाजिलका का वार्षिक चुनाव 1990 91 के लिए निम्न प्रकार हुआ।

सरक्षक—श्री गिरधारी लाल नागपाल।

प्रधान—श्री सुभाष चन्द्र जसूजा एडवोकेट।

उपप्रान—श्री बनवारी लाल अनेजा एडवोकेट। तथ श्री चौधरी शिव चन्द।

महामन्त्री—मास्टर मूल चन्द वर्मा।

उपमन्त्री—मास्टर रामलालार्य।

प्रचार मन्त्री—श्री वेद प्रकाश शास्त्री।

कोषाध्यक्ष—श्री बनवारी लाल मूना।

आडीटर=श्री विद्यासागर भुसरी एडवोकेट।

—मास्टर मूलचन्द वर्मा
महामन्त्री

आर्यसमाज धूरी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज धूरी का वार्षिक चुनाव 8 अप्रैल 1990 को हुआ। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से श्री चिरजी लाल जी को प्रधान चुना। अन्तरग सभा और कमेटियां निम्न लिखित प्रकार से बनी।

प्रधान—श्री चिरजी लाल जी।

उपप्रधान—श्री रामदेव जी बहल।

उपप्रधान—श्री जसबीर रत्न जी।

मन्त्री—श्री श्याम लाल जी आर्य।

उपमन्त्री एवं पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री प्रह्लाद कुमार।

कोषाध्यक्ष—श्री सतीश पाल जी आर्य।

सदस्य—श्री लछमन दास जी श्री डा० सन्त राम जी, श्री प्रतिज्ञा पाल जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी।

आर्य कालेज प्रबन्धक कमेटी

प्रधान—श्री डा० सन्त राम जी।

उपप्रधान—श्री जसबीर रत्न जी।

मैनेजर—श्री श्याम लाल जी आर्य।

सदस्य—श्री चिरजी लाल जी, श्री रामदेव जी बहल, श्री सतीश पाल जी आर्य, श्री वीरेन्द्र कुमार जी।

यश चौधरी माडल स्कूल

प्रधान—श्री चिरजी लाल जी।

उपप्रधान—श्री श्याम लाल जी आर्य।

मैनेजर—श्री सतीश पाल जी आर्य।

सदस्य—श्री प्रह्लाद कुमार जी, श्री जसबीर रत्न जी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी।

दयानन्द स्पोर्टस क्लब

प्रधान—श्री अशोक कुमार जी।

उपप्रधान—श्री रघुनाथ शर्मा जी

उपप्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार जी

मैनेजर—श्री श्याम लाल जी आर्य।

स्त्री आर्य समाज

प्रधाना—श्रीमति रुक्मिनी देवी जी।

मन्त्राणी—श्रीमति कृष्ण आर्या जी

कोषाध्यक्षा—श्रीमति मधुरानी जी

सूर्य प्रकाश शास्त्री, प्रभाकर

लुधियाना में बैशाखी पर्व पर बृहद् यज्ञ"

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे बैशाखी पर्व पर बृहद्यज्ञ किया गया जिसमें श्री रमन कुमार आर्य, श्री विश्वजीत आर्य सपरिवार एव बहन सरिता जी यजमान बने। यह यज्ञ प० सुन्दर लाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया और श्री राजेश्वर जी शास्त्री व श्री रोशन लाल जी शर्मा महामन्त्री ने अपने विचार रखे और जलियां वाले बाग के शहीदों को श्रद्धाञ्जलि भेंट की।

14 अप्रैल को—डा० बाबा भीम राव जी अम्बेडकर जयन्ती के उपलक्ष मे एक समारोह किया गया। यज्ञ के यजमान श्री रोशन लाल जी शर्मा सपत्नीक बने और श्री प० राजेश्वर जी शास्त्री व श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 6, 31 वैशाख सम्वत् 2047 तदनुसार 10/13 मई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

सत्यार्थ प्रकाश सर्वांग-धर्म शास्त्र

ले० स्व० डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

स्व० श्री डा० सत्य केतु जी ने आर्य समाज का इतिहास लिख कर आर्य समाज की जो सेवा की है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी थोड़ी है। इसी इतिहास के प्रथम भाग में सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में उन्होंने जो लिखा पाठकों के लाभार्थ हम नीचे दे रहे हैं। इसको पुस्तकाकार मे वैदिक संस्थान नजीबाबाद बिजनौर (उ० प्र०) ने भी प्रकाशित किया है।

—सह सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थो मे वेद भाष्य के बाद सत्यार्थ प्रकाश का सर्वाधिक महत्व है इसे सच्चे अर्थों में धर्मग्रन्थ कहा जा सकता है, एक ऐसा धर्मग्रन्थ, जो सर्वाङ्ग पूर्ण है। ईसाई बाईबिल को अपना धर्मग्रन्थ मानते हैं और मुसलमान कुरान को। पर आर्य समाज के लिये सत्यार्थ प्रकाश उन अर्थों मे धर्मग्रन्थ नही है, जैसे ईसाई और मुसलमानो के लिये बाईबिल और कुरान हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदो को ईश्वर कृत, अपौरुषेय अनादि, अनन्त और स्वत: प्रमाण मानते थे। आर्य समाज भी वेदों को इसी रूप में स्वीकार करता है। उसके धर्मग्रन्थ वेद ही हैं। पर आर्य धर्म मे यह परम्परा रही है कि वेदो की शिक्षाओ तथा मन्तव्यो को प्रतिपादित करने के लिये समय-समय पर मुनियो व विद्वानों द्वारा स्मृति ग्रन्थों व धर्मशास्त्रों की रचना की जाय। मनुस्मृति इसी प्रकार का ग्रन्थ है। सम्पूर्ण धर्म एव धर्म का मूल स्रोत वेद है, यह स्वीकार कर मनुस्मृति में उस धर्म का प्रतिपादन किया गया है, जो वेदानुकूल है। इसी लिये यह माना जाता रहा है कि मनु ने जो कुछ कहा है, वह औषधियो की भी औषध है (यत्किञ्चिन्मनुरवदत् तद् भेषजं भेषजतायाः)। देश और काल के अनुसार मनुष्यों के आचरण तथा समाज के संगठन के सम्बन्ध में जो धर्म हो स्मृतियों तथा धर्मशास्त्रो द्वारा उन्हीं का प्रतिपादन किया जाता है। नयी परिस्थिति मे क्या बात धर्मानुकूल है और कौन सा व्यवहार मनुष्यो के लिये समुचित है, स्मृतिया तथा धर्मशास्त्र यह भी प्रतिपादित करते हैं। अरब लोगो ने जब सिन्ध को अपने अधीन कर हिन्दुओ को बलपूर्वक मुसलमान बनाना, स्त्रियों को अपहरण करना और उनके साथ बलात्कार करना प्रारम्भ किया तो एक नयी स्मृति की रचना की गई जिसमे बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये व्यक्तियो की शुद्धि कर उन्हें फिर से हिन्दू धर्म मे सम्मिलित करने की व्यवस्था की गयी। देवल स्मृति की रचना एक विशेष परिस्थिति में हुयी थी, पर उस द्वारा समस्या का जो समाधान किया गया था, वह वेदानुकूल था। इसी कारण देवल मुनि की कृति को स्मृतिग्रन्थ की स्थिति प्राप्त हुयी। अन्य भी अनेक स्मृतिग्रन्थ देश और काल की विशेष परिस्थितियो मे निर्मित हुए थे। इस कारण अनेक विषयो के सम्बन्ध में जहां उनसे अनेक विध मतभेदों की सत्ता है, वहा साथ ही कतिपय ऐसे मन्तव्य भी उनमें पाये जाते हैं, जिन्हें अविकल रूप से वेदानुकूल नही कहा जा सकता। मनुस्मृति इसका अपवाद है, यद्यपि बाद के समय में उसमें भी अनेक ऐसी बातें प्रक्षेप के रूप में सम्मिलित कर दी गयी हैं, जो वेदविरुद्ध हैं। इसी प्रकार जो अनेक सूत्र ग्रन्थ प्राचीन समय में लिखे गये, उनमें गृहस्थ आश्रम, धार्मिक कर्मकाण्ड, विधि-विधान आदि के ऐसे नियम प्रतिपादित हैं, जो धर्म के अङ्ग हैं और प्राय: वेदानुकूल भी हैं। इसलिये उन्हें धर्मशास्त्रो के अन्तर्गत गिना जाता है। पर इन स्मृतियो तथा धर्मसूत्रों की प्रामाणिकता उसी अंश तक है, जिस अंश तक वह वेदविरुद्ध न हो। यही कारण है, जो इन्हें स्वत: प्रमाण न मानकर परत: प्रमाण माना जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सत्यार्थप्रकाश को इन स्मृतिग्रन्थों तथा धर्मशास्त्रो के वर्ग में ही रखा जाना उपयुक्त है। उसकी प्रामाणिकता वेदो पर आधारित होने के कारण ही है। उसमे जो मन्तव्य व विचार प्रतिपादित किये गये हैं, वे वेदो के अनुकूल हैं। उनका निरूपण करते हुए महर्षि ने युक्ति और तर्क के क साथ-साथ वेदो के प्रमाणा का भी आश्रय लिया है। पर अन्य स्मृतियो तथा धर्मशास्त्रो की तुलना मे सत्याथ प्रकाश अत्यधिक उत्कृष्ट है, क्योकि उसमे जिस धम का प्रतिपादन किया गया है, वह सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। मनुस्मृति के समान उस मे अभी कोई प्रक्षेप भी नहीं हुए हैं, यद्यपि उसके प्रथमसंस्करण मे लेखक पण्डितों ने कुछ प्रक्षेप समाविष्ट कर दिये थे। प्राचीन शास्त्रो मे धर्म का यह लक्षण किया गया है जिससे अभ्युदय (सांसारिक उन्नति) और निश्रेयस (मोक्ष) की सिद्धि हो, वह धर्म है" (यतोऽभ्युदयनि. श्रेयस्‌सिद्धि: स धर्म.)। धर्म द्वारा मनुष्यों को ऐसा मार्ग प्रदर्शित किया जाना चाहिये, जिससे कि वे अपनी सांसारिक उन्नति व विकास कर सकें, पर उसे ही मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य न मान कर मोक्ष प्राप्ति के चरम उद्देश्य को भी दृष्टि मे रखें और उस तक पहुचने के लिये प्रयत्न भी करें। अत. धर्मग्रन्थ के लिये यह आवश्यक है कि उस द्वारा लौकिक अभ्युदय तथा मोक्ष दोनो के उपाय प्रतिपादित किये जायें। संसार में सम्भवत: कोई भी अन्य ऐसा धर्मग्रन्थ नहीं है (चाहे वे कुरान और बाइबिल सदृश ईश्वरीय माने जाने वाले धर्मग्रन्थ हो और चाहे वेदों पर आधारित स्मृतिग्रन्थ अथवा भी मद्भगवद्गीता सदृश प्राचीन भारतीय शास्त्र) जिसमें कि धर्म के इन दोनो (अभ्युदय और नि श्रेयस) का इस प्रकार अविकल रूप से प्रतिपादन किया गया हो, जैसा कि सत्यार्थप्रकाश मे है। इसी कारण हमने इसे सर्वाङ्ग सम्पूर्ण धर्म शास्त्र कहा है'

मनुष्य के अभ्युदय (लौकिक उन्नति) के लिये यह आवश्यक है कि वह सदाचारी हो, उसका आचरण धर्मानुकूल हो, इन्द्रियो पर उसका वश हो और वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिये तत्पर रहे। सदाचरण क्या है, इन्द्रियो को कैसे वश मे रखा जा सकता है, और कौन से ऐसे धार्मिक अनुष्ठान हैं जिन्हे सम्पादित करना सब मनुष्यो के लिये आवश्यक है। धर्मग्रन्थ मे इन सब का प्रतिपादन किया जाना चाहिये। पर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी भी है। वह समाज मे उत्पन्न होता है और समाज मे रह कर ही जीवन व्यतीत करता है। उसके सामाजिक व सामुदायिक जीवन के अनेक रूप हैं, परिवार, बिरादरी, ग्राम, राज्य आदि। परिवार का अंग होने के कारण प्रत्येक मनुष्य के पारिवारिक जनो—माता-पिता, भाई-बहन, सन्तान आदि के अनेकविध सम्बन्ध होते हैं, जिनके परिणामस्वरूप उसके इन सबके प्रति अनेकविध कर्त्तव्य भी हो जाते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य किसी ग्राम एव राज्य का भी सदस्य होता है और इस कारण ग्राम के अन्य निवासियो तथा राज्य के अन्य नागरिको के साथ उसका सम्बन्ध रहता है और उनके प्रति भी उसके अनेकविध कर्त्तव्य हो जाते हैं। मनुष्य को अपने इन सब प्रकार के कर्त्तव्यों का भी सम्यक प्रकार से बोध होना चाहिये। धर्मग्रन्थ के लिये यह भी आवश्यक है कि वह मनुष्यो के सामूहिक जीवन विषय इन कर्त्तव्यो का भी बोध कराये। सामाजिक या सामुदायिक जीवन के अन्य भी अनेक रूप हैं, अन्य भी अनेक प्रकार से मनुष्य एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखते हैं। शिक्षा-काल मे गुरू और उसके शिष्यो मे सम्बन्ध होता है।

(क्रमशः)

उत्तम खेती [कृषमित् कृषस्व]

लेखक—श्री प्रा० महादेव साधु आश्रम होशियारपुर

(गतांक से आगे)

हम जब सत्संग में पहुंचे तो भजन हो रहा था। उसके बाद प्रो० मानवेन्द्र जी मंच पर पधारे और उन्होंने अर्थ और कृषि पर भाषण दिया। प्रथम—जीवन में अर्थ के महत्व को स्पष्ट किया। जिस का सारांश था कि अर्थ का अर्थ है=धन, सम्पत्ति क्योंकि "अर्थ्यते प्राप्यते इति अर्थः" जिसके द्वारा जरूरत की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। यह ठीक है कि धन बहुत महत्वपूर्ण है, पर यह सब कुछ नहीं है। आज के युग को आर्थिक युग कहा जाता है, "यतो हि आज रिश्तेदारियां मित्रताएँ" धर्म आदि भी अर्थ से जुड़ कर रह गए हैं। तभी तो कहा जाता है "सर्वेगुणा कांचनमाश्रयन्ति" और आज यह तो सबसे बड़ा रुपया" एवं प्रत्यक्ष ब्रह्म बनता चला जा रहा है। प्रत्येक कार्य को करते हुए अधिकतम का ध्यान अर्थोपार्जन की ओर ही रहता है।

ऐसी स्थिति में यह विचारना आवश्यक हो जाता है कि अर्थोपार्जन के क्या क्या उपाय हैं तथा वैसे हमारे यहां प्राचीन साहित्य में वैश्य वर्ग को धनोपार्जन का केन्द्र बिन्दु माना गया है। पशु पालन, कृषि, व्यापार, व्याज, उद्योग आदि धन कमाने के तरीके ही उसके धंधे बताये गए हैं। इनमे कृषि और पशु पालन एक दूसरे से जहां जुड़े हुए हैं, जहां ये दोनों ही व्यापार और उद्योग के मुख्य स्रोत है। आज के युग में अन्यों की अपेक्षा में जहां मौलिक एवं भलाई भरे कारोबार हैं, वहां ये ईमानदारी से जीवन जीने के सहारे भी बन सकते हैं। कृषि शब्द कृष (विलेखने =खोदना) धातु से बना है, खोदना खेती का एक हिस्सा है। ऐसे ही खोद कर खदानों से खनिज, धातुएं निकलती है। विलेखन से एक बात यह भी सामने आती है, कि जैसे लिखते समय कच्चे विचारों को पक्का रूप देते हैं। ऐसे ही चक्की, शैलर वाले और हलवाई आदि अपने उद्योग धंधे से कच्चे को पक्का रूप देने से कृषि शब्द से पुकारे जा सकते हैं और फसल का पकना भी यही याद दिलाता है। तभी तो कहा जाता है—"उत्तम खेती, मध्यम व्यापार"। ऋग्वेद के एक मन्त्र में इस सारे रहस्य को उडेलते हुए ही कहा है—"कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व" 10-34-131 कि यदि तुम धन की मौज लेना चाहते हो तो कृषि को सम्मानपूर्वक अपनाओ। क्योंकि इसी में शुद्ध, पौष्टिक सुस्वादु पदार्थ देने की शक्ति है और यहीं दाम्पत्य जीवन का स्नेह एवं विश्वास उपलब्ध होता है। सर्वश्रेष्ठ वेद का भी सन्देश है। कृषि शब्द की विस्तृत व्याख्या, बेरोजगारी का हल आदि बातों पर भी प्राध्यापक महोदय ने बहुत अच्छा प्रकाश डाला।

इस भाषण में कृषि के वास्तविक योगदान की महिमा सुनकर मैंने अपने मन में दृढ़ निश्चय किया कि मैं सम्मान के साथ कृषि कार्य को अपनाऊंगा। इन्हीं भावनाओं से भर कर जब मैं परीक्षा के पश्चात यहां आया तो यहां अपने स्कूल के साथियों को उदास अनुभव किया। जबकि स्कूल के दिनों में ये सब फुटबाल टीम के उत्साही साथी थे। कई दिनों की बातचीत में जब मैंने इनको कुरेदा तो पता चला कि स्कूल पढ़ाई के साथ ही साथ घरेलू कार्य करने के कारण अंक कोई बहुत अच्छे नहीं आए। अत: आई०टी०आई० में प्रवेश नहीं मिला। कालेज की मंहगी पढ़ाई इनके वश की बात नहीं थी। नौकरी ढूंढते हुए एक वर्ष बीत गया, मजदूरी के अतिरिक्त कोई कार्य हाथ नही लगता। गांव के वातावरण में मैट्रिक ही बहुत अधिक मानी जाती है, अत: ऐसी स्थिति में मजदूरी करते हुए झिझक अनुभव होती है। अत: खाली होने के कारण लड़कियों की तरह शर्मीले, गुमसुम बनने के सिवाये इन को कुछ नहीं सूझता था, क्योंकि खुल कर बातें करें तो लोग कहते—देखो, जवान खाली घूम घूम कर दिन बिता देते हैं और कोई काम भी नहीं करते उस पर बेशर्म हो कर बातें भी बनाते हैं।

इन्हीं दिनों हमारे घर कर्मवीर जी आए और उन्होंने मेरे पिता जी के माध्यम से पंचायत को तैयार किया कि ग्राम में सिलाई स्कूल खोला जाए। इसमें सिलाई सिखाने के लिए एक महिला समीपवर्ती नगर की आर्य समाज भेजेगी और उसके वेतन की व्यवस्था भी वही करेगी। ग्राम पंचायत तैयार हो गई तब उसके दो दिन बाद ग्राम में एक आयोजन हुआ। जिस में पंचायत के सदस्य ग्राम के लोग और आर्य समाज के प्रतिष्ठित सदस्य भी उपस्थित हुए। इस अवसर पर कर्मवीर जी ने प्रा. मानवेन्द्र जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। जब मुझे इस बात का पता चला तो मैं अपने साथियों को ढूंढ ढूंढ कर इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित होने के लिए कहा। प्रा० मानवेन्द्र जी ने बड़ा प्रेरणादायक एक छोटा सा भाषण दिया। जिसने "सोने में सुहागे" वाली उक्ति को चरितार्थ किया। मेरे सभी साथियों पर भी इसका मनोहर प्रभाव हुआ।

सोमेश—भूपाल, ऐसे अनोखे प्राध्यापक का कुछ तो आभार होगा। [illegible] और भी अच्छा होगा। सौरभ और गौरव ने भी इस बात का अनुमोदन किया।

इस प्रस्ताव पर भूपाल ने थोड़ी देर याद करने के बाद कहा—प्राध्यापक महोदय ने अपने भाषण में बताया था, कि मैं और आप सब जीना चाहते हैं और इसीलिए जीवन से प्यार करते हैं तथा इस की प्रवृति के लिए हाथ पैर मारते हैं। इसके लिए जहां स्वास्थ्य शिक्षा आपस का सहयोग आदि चाहिए वहां आर्थिक कारोबार भी बहुत जरूरी है। आज तो सब कुछ इस से जुड़कर रह गया है। हमारा यह समारोह भी इसी दृष्टि से हो रहा है। जब हम कारोबार की बात करते हैं तो स्पष्ट होता है कि हर व्यक्ति के लिए अपने जीवन को बनाए रखने के लिए और कुछ नहीं तो रोटी कपड़ा और मकान बहुत जरूरी है। यह तीनों जीवन की प्रारम्भिक जरूरतें हैं। छान्दोग्य उपनिषद में एक कथा आती है।

एक बार सारी इन्द्रियों में विवाद छिड़ गया और प्रत्येक दूसरों से अपने आप को अच्छी कहने लगी। जब वे आपस में कोई फैसला न कर सकी तो वे सारी प्रजापति के पास गई और अपना झगड़ा बताया। प्रजापति ने उन की बातें सुन कर कहा कि तुम सारी क्रमश: एक एक वर्ष के लिए शरीर को छोड़ कर चली जाओ। जिस के जाने पर शरीर जीवित न रहे वस्तुत: वहीं इन्द्रिय सब से श्रेष्ठ है। यह स्वत: सिद्ध हो जाएगा। यह कसौटी सभी इन्द्रियों को पसन्द आई और अपनी अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगी।

सब से पहले वाणी गई और उसने एक साल बाद लौट कर देखा कि उस के बिना भी गूंगों की तरह शरीर जीवित है। शेष सारी इन्द्रियां अपना अपना काम कर रही हैं। अत: वह शर्मसार होकर अपनी जगह चुपचाप दुबक गई। इस के बाद आंख चली गई, जब उसने एक वर्ष के पश्चात आ कर देखा कि "आंख के बिना अन्धा [illegible]" बाकी सभी अपना कार्य करती ही रही हैं। [illegible] लज्जित होकर रह गई कि अंधों की तरह शरीर की सारी व्यवस्था चल रही है। फिर कान गए, उन्होंने गया साल आ कर देखा, बहरों की तरह शरीर चल रहा है। अत: शर्मिन्दी होकर चुपचाप बैठ गई। इस प्रकार शरीर के अंगों में प्राणों की बारी आई, पर जब प्राण जाने की तैयारी ही करने लगे तो उनके साथ ही सारी इन्द्रियां [illegible] [illegible] एकदम इन्द्रियां हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी कि महाराज आप न जाइए आप के जाने की तैयारी करते ही हमारी जान निकलने लगी। आप ही सब से सर्वश्रेष्ठ हैं। आप के कारण ही हमारी सत्ता है। हमारे बिना शरीर को कुछ कष्ट तो होता है, पर किसी रूप में भी चल नहीं सकती। अत: हर तरह से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आप ही हैं।

इस आख्यान का यही अभिप्राय है कि इन्द्रियों की तरह जीने के लिए जितने अंश में जो भी बात उपयोगी और अनिवार्य है वही जीवन के लिए आवश्यक है। उस उस की उपयोगिता के अनुसार जीवन में उस उस को उतना उतना महत्त्व देना चाहिए।

यह ठीक है कि हम इस समय एक गांव में बैठे है और यहां की दुकानें या कारीगर विश्वकर्मा की तरह हैं जो कि कई तरह की चीजों को बेचते हैं या बढ़ाई लौहार राज का काम एक एक ही व्यक्ति करता है पर यह एक सचाई है कि हर एक हर काम में एक साथ होशियार नहीं हो सकता। इसीलिए गांवों के इन लोगों में भी परिवर्तन आ रहा है।

(क्रमश:)

भूल सुधार

आर्य मर्यादा के अंक 6 दिनांक 6 मई 1990 के पृष्ठ सं० 6 पर शीर्षक में आर्य समाज शब्द में भूल से कन्या स के स्थान पर श पर लग गया जिस से साधारण शब्द बन गया। यह शब्द समाज है। इसी प्रकार अन्तिम पृष्ठ पर आत्माराम में के स्थान पर भूल से अमृतराम छप गया। पाठक भूल सुधार कर लें।

—सह-सम्पादक

सम्पादकीय—

मानव जीवन में यज्ञ का महत्त्व

अनन्त काल से हमारे देश में, मानव जीवन में, विशेषकर सार्वजनिक जीवन में यज्ञ का एक विशेष महत्त्व रहा है। एक प्रकार से मानव जीवन का आधार ही यज्ञ रहा है। जब हम अपने प्राचीन काल के इतिहास को पढ़ते हैं वह रामायण काल का हो या महाभारत काल का या इन दोनों से भी पहले का हो। उसमें यज्ञ का एक विशेष स्थान है। उस समय राजा महाराजे भी यज्ञ के बिना कोई काम आरम्भ नहीं किया करते थे। सम्भवतः यही हमारे देश की सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक उन्नति का एक कारण था। परन्तु समय बदलता गया और उसके साथ-साथ परिस्थितियां भी बदलती गई। ज्यों-ज्यों हम अपने धर्म से दूर होते गए तो यज्ञ में भी हमारी श्रद्धा कम होती गई और फिर वह समय भी आया जब यज्ञ का एक विकृत रूप जनता के सामने रखा गया। हमारे शास्त्र इसकी अनुमति नहीं देते। परन्तु कुछ पाखण्डियों ने यह कहना शुरू कर दिया कि वेदों में पशु बलि का भी प्रावधान है। इसके आधार पर कई पाश्चात्य साहित्यकारों ने यह लिखना शुरू कर दिया कि प्राचीन समय में हमारे देश में यज्ञ में पशुओं की बलि दी जाती थी। इस प्रकार और भी कुछ निराधार बातें हमारे देश और समाज में भी धर्म के विरुद्ध दुनिया में फैलाई गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पहली बार इस मिथ्या प्रचार का खण्डन करना आरम्भ किया। उन्होंने हमें बताया कि वास्तव में यज्ञ क्या है और क्यों करना चाहिए ? और कैसे करना चाहिए ? उन्होंने उस मिथ्या प्रचार का खण्डन किया जो यज्ञ के सम्बन्ध में हमारे विरोधी किया करते थे। आर्य समाज की स्थापना के बाद यज्ञ का वास्तविक स्वरूप जनता के सामने आने लगा और इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि वेदोक्त प्रणाली के अनुसार यज्ञ करने का एक अभियान हमारे देश में शुरू हो गया। आर्य समाजी अपनी अपनी आर्य समाजों में और परिवारों में तो यज्ञ करवाते ही थे, इन्हें देखकर हमारे सनातनी धर्मी भाई और दूसरे लोग भी यज्ञ करवाने लग गए। अब स्थिति यह है कि पाश्चात्य देशों में भी यज्ञ पर अनुसंधान शुरू हो गया है और वह लोग जानना चाहते हैं कि यज्ञ का मनुष्य के शरीर पर, उसके मन पर उसके मस्तिष्क पर और उसके चारों तरफ के वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।

पिछले दिनों केरल में एक बहुत बड़ा यज्ञ किया गया उसे देखने और उस के विषय में अनुसंधान करने के लिए पाश्चात्य देशों से कई विज्ञानिक वहां पहुंचे थे। वह यह जानना चाहते थे कि उस यज्ञ से जो वातावरण बनता है उसका मनुष्य जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और उसके चारों तरफ जो वनस्पति होती है उस पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है। मनुष्य के बाहर के शरीर पर और अन्दर के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के अनुसंधान के लिए वह लोग इस यज्ञ में पहुंचे थे। कहते हैं कि अन्तिम दिन उस यज्ञ में बहुत देर तक एक विशेष प्रकार का घी डाला गया था जो कई प्रकार की औषधियों से तैयार किया गया था और अन्त में उस यज्ञ के लिए जो यज्ञशाला बनाई गई थी उसी स्थिति में अग्नि के अर्पण कर दी गई। जो वैज्ञानिक बाहर से आए थे वह अपने साथ अनुसंधान के लिए जो यन्त्र लाए थे वह कई करोड़ रुपये के थे। वह धार्मिक दृष्टिकोण से यज्ञ की प्रक्रिया को जानने में इतने इच्छुक न थे कि जितने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से। यह यज्ञ 9 दिन तक चलता रहा।

एक और यज्ञ अजमेर में भी किया है जिसे वृष्टि यज्ञ का नाम दिया गया है। एक डॉक्टर हरप्रसाद शर्मा ने यह यज्ञ करवाया। और कहते हैं कि उसकी समाप्ति पर वहां पर वर्षा शुरू हो गई। यह जो कुछ भी मैं लिख रहा हूं समाचार पत्रों में प्रकाशित सूचनाओं के आधार पर लिख रहा हूं। वास्तविक स्थिति क्या है मैं यह नहीं कह सकता। लेकिन इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि जो लोग कल तक यज्ञ के विषय में यह सोचते थे कि इसके द्वारा केवल घी ईंधन सामग्री और इस प्रकार की चीजें अग्नि में नष्ट कर दी जाती हैं, वह भी अब यह सोचने पर विवश हो रहे हैं कि दूषित वातावरण को शुद्ध बनाने के लिए यज्ञ ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य जीवित रह सकता है और अपनी प्रगति कर सकता है। परन्तु जिस बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है वह यह है कि पाश्चात्य देशों में तो यह यज्ञ के प्रति आस्था बढ़ रही है परन्तु हमारे देश में जनता का ध्यान अभी तक उतना इस ओर आकृष्ट नहीं हुआ जितना कि होना चाहिए था। यज्ञ एक ऐसा कार्य है जिसमें आर्य समाज अपना विशेष योगदान दे सकता है। वह कैसे दे सकता है इस पर आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

डाक्टर दुःखनराम चले गए

आर्य समाज के संगठन का एक प्रतिभाशाली स्तम्भ गिर गया। डाक्टर दुःखन राम जो लगभग चार वर्ष तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान रहे हैं। आर्य समाज के उन नेताओं में से एक थे, जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। वह एक कर्मठ निष्ठावान आर्य समाजी थे और अपना सारा जीवन उन्होंने आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत किया था। बिहार में विशेष रूप से उन्होंने आर्य समाज के प्रचार के लिए जो कुछ किया वह स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। वह एक नेत्र चिकित्सा के विशेषज्ञ थे। भारत के पहले राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें अपना विशेष चिकित्सक नियुक्त कर रखा था। इसी के साथ वह पटना विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे हैं। बिहार में तो जनता उनकी पूजा करती थी और वह केवल इस लिए कि वह अपने दिल से जनता की निष्काम सेवा किया करते थे। उन्हें महर्षि दयानन्द में बहुत बड़ी श्रद्धा थी और आर्य समाज के कार्यक्रम में वह बहुत रुचि लेते थे। वास्तविक स्थिति तो यह है कि बिहार में आर्य समाज का जो प्रचार हुआ था उसका श्रेय बहुत कुछ डाक्टर दुःखन राम को ही जाता है। आज वह हमारे बीच में नहीं रहे। अब उन की आयु भी लगभग 92 वर्ष की हो गई थी। इस लिए वह सक्रिय रूप से तो अब काम न कर सकते थे परन्तु घर में रहते हुए भी वह बिहार की आर्य जनता का जो मार्ग दर्शन कर सकते थे करते थे; उनके जाने से आर्य जगत में एक ऐसा स्थान खाली हो गया है जिसे भरना अत्यन्त कठिन हो गया है। हमारे लिए यह सोचनीय तथ्य है जिसे स्वीकार करना पड़ेगा कि जो पुराने पुराने आर्य समाजी जा रहे हैं उनका स्थान लेने वाला उन जैसा कोई और पैदा नहीं हो रहा। बिहार में नेता तो और भी कई पैदा होते रहे हैं और आगे भी होंगे परन्तु दुःखन राम जैसा कोई न होगा। मैंने उन्हें एक बार पंजाब में आने का निमन्त्रण दिया था। जब वह सार्वदेशिक सभा के प्रधान थे और वह जालन्धर आए भी थे। इस प्रकार जहां वह जा सकते थे, जाया करते थे परन्तु अब तो वह चले गए। केवल उनकी याद ही बाकी रह गई है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि डाक्टर दुःखन राम की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और हम जो उनके पीछे रह गए हैं वह हमें इस योग्य बनाए कि हम उनके पद चिन्हों पर चल सकें।

—वीरेन्द्र

एक और साथी चला गया

लुधियाना के श्री डा० मूलचन्द जी भारद्वाज का अचानक देहावसान हो जाने से पंजाब के आर्य समाज में एक ऐसा स्थान खाली हो गया है जिसे भरना कठिन होगा। वह आर्य समाज के एक अनथक कार्यकर्ता थे और उनमें आर्य समाज के लिए जो लगन थी वह बहुत कम लोगों में मिलती है। वह एम०बी० कालेज लुधियाना के प्रिंसिपल और आर्य समाज मण्डी बाग बजानचियां के प्रधान थे। परन्तु कुछ समय से उन्होंने विशेष रूप से अपना सारा जीवन आर्य समाज के अर्पण कर रखा था। लुधियाना में आर्य समाज का ऐसा कोई भी समारोह न होता था जिस में वह सक्रिय भाग न लेते थे। अभी उनके जाने का समय भी न था। किसी को भी यह पता न था कि वह इतनी जल्दी हमारे बीच में से चले जाएंगे। परन्तु जन्म और मृत्यु इन दोनों में हम कुछ भी नहीं कर सकते। जो परमात्मा को स्वीकार होता है वही होता है और उसको हमें सिर झुका कर मानना पड़ता है। न जाने परमात्मा ने श्री मूलचन्द जी भारद्वाज को हम से क्यों छीन लिया। वह तो चले गए परन्तु जो सेवा वह आर्य समाज और उसके द्वारा जनता की किया करते थे उसे लोग देर तक याद करते रहेंगे और हम उन्हें कभी भुला न सकेंगे। परमपिता परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि वह डा० मूलचन्द जी भारद्वाज की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार को उनके इस वियोग को सहन करने की शक्ति दें।

—वीरेन्द्र

कल्याण का मार्ग

ले०—प्रो० ओम प्रकाश जी नारंग एम०ए० जालन्धर

स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददता, अघ्नता, जानता संगमेमहि ॥

शब्दार्थ—स्वस्तिपन्थाम (स्वस्ति अर्थात कल्याण के पथ पर) अनुचरेम (चलें)। सूर्याचन्द्रमसाविव (सूर्य और चन्द्रमा की भांति) पुनर्ददता (फिर से देने वाले अर्थात ली हुई वस्तुएं वापिस लौटाने वाले) अघ्नता (न मारने वाले) जानता (ज्ञानी बने) संगमेमहि (मिल कर चलें अर्थात परस्पर संगठित होवें)।

भावार्थ—हे प्रभो! हम लोग स्वस्ति के पथ पर सूर्य और चन्द्रमा की भांति चलें। ली हुई वस्तुएं लौटाने में संकोच न करें, मन वचन और कर्म से किसी को दुःख न पहुंचायें, कर्मों की गहन गति को समझने के लिए गहरी सूझबूझ से काम लें और परस्पर मिल कर चलें अर्थात् संगठन शक्ति को बनाये रखें।

व्याख्या—अब प्रश्न यह पैदा होता है कि स्वस्ति अर्थात कल्याण का मार्ग है क्या? शास्त्रकार कहते हैं कि मनुष्य के सामने दो रास्ते खुले हैं। (1) श्रेय मार्ग अर्थात निवृत्ति मार्ग। (2) प्रेय मार्ग अर्थात प्रवृत्ति मार्ग। दृष्टांत से ऋषियों ने ऐसा बताया है कि प्रेम-मार्ग अर्थात प्रवृत्ति मार्ग का प्रारम्भ बड़ा भव्य और मनोरम होता है परन्तु ज्यों ज्यों मनुष्य आगे बढ़ता जाता है इसमें कठिनाइयां, उलझनें और समस्यायें आती जाती हैं और अन्त में मनुष्य ऐसे निर्जन मरुस्थल में पहुंच जाता है जहां पर सिर पटक कर मर जाने के सिवा कोई चारा नहीं रह जाता। इसके विपरीत निवृत्ति मार्ग का प्रारम्भ बड़ा दुर्गम और कठिनाइयों से भरपूर होता है, परन्तु ज्यों ज्यों मनुष्य आगे बढ़ता जाता है। अन्त में यही मार्ग मनुष्य को मोक्ष धाम की ओर ले जाता है। यह तो हुआ श्रेय-मार्ग और प्रेय मार्ग इन दोनों मार्गों के स्वरूप का संक्षिप्त भेद चित्रण। परन्तु देखना यह है कि ये मार्ग हैं क्या? प्रेय मार्ग है—भोग विलास और स्वार्थ का मार्ग। यह बात स्वतः सिद्ध है कि भोग विलास तबाही और बरबादी का मार्ग है। भर्तृहरि ने कहा है—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।

कहने का अर्थ यह है कि संसार में आज तक भोगों से इन्द्रियों को तृप्त करने वाला व्यक्ति पैदा नहीं हुआ, हां भोग से रोग अवश्यमेव पैदा होता है। जिन व्यक्तियों, जातियों अथवा समुदायों ने भोग विलास को जीवन का लक्ष्य बनाया, उन का सर्वनाश हो गया। इतिहास के पन्ने इस की गवाही देते हैं कि भोग विलास का अन्त बर्बादी के सिवा कुछ भी नहीं। किसी ने ठीक ही कहा है—

"नाश न कर विलास में यौवन भरी जवानियां।"
विषयों में पड़कर हुई तबाह राजों की राजधानियां।"

शराबखाना शराब के बारे में अकबर इलाहबादी का यह शेयर कितना मार्मिक है।

गलासों में जो डूबे
फिर न उभरे जिन्दगानी में।
हजारों बह गए
इस बोतल के पानी में ॥

अब दूसरी कड़ी स्वार्थ की है। वैसे तो सारा विश्व ही स्वार्थमय है। गोस्वामी तुलसी दास जी का कहना है—

'सुर नर मुनि जन की यह रीति।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीति ॥'

बृहदारण्यक-उपनिषद में महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी धर्म पत्नी मैत्रयी को भी ऐसा ही उपदेश देते हैं।

वास्तव में हम सब लोग स्वार्थ की डोर से आपस में बंधे हुए हैं। स्वार्थ के मिलन में सुख संतोष और आनन्द है और स्वार्थों के टकराव में कलह, क्लेश और लड़ाई झगड़ा है। स्वार्थों के टकराव से तंग आकर एक दिलजले ने क्या खूब कहा है—

छिप छिप के जो मिलते थे
अब मिलने से छिपते हैं।
इक वो भी जमाना था,
इक यह भी जमाना है।
ए दिल कहां ले जाऊं,
अब कौन ठिकाना है।
अपने न हुए अपने,
ये कैसा जमाना है ॥

परन्तु बुद्धिमानों का मत है कि स्वार्थ तीन प्रकार के होते हैं। उत्कृष्ठ, मध्यम और निकृष्ठ। निकृष्ठ प्रकार के स्वार्थ शरीर और शरीर से सम्बन्ध रखते हैं। मध्यम कोटि के स्वार्थ मन और मन पर आधारित हैं, जबकि उत्कृष्ट कोटि के स्वार्थों का सम्बन्ध आत्मा और आत्मा से होता है। जो लोग केवल उन्हीं को अपना मानते हैं जिन के साथ उन का खून का रिश्ता होता है वे निकृष्ट कोटि के स्वार्थी हैं। उनका अपना बेटा, अपना भाई, अपना सगा सम्बन्धी यदि किसी दुख से ग्रस्त हो तो उन्हें भी दुख पहुंचता है, परन्तु इस श्रेणी से बाहर उनकी रुचि नहीं। मध्यम कोटि के स्वार्थी उन लोगों से भी प्रेम और लगाव रखते हैं जिनके साथ उनके विचार मिलते हैं। वे उनके सुख-दुःख में सम्मिलित होते हैं और यदि उनका कोई ऐसा सहयोगी भी बीमारी या दुर्घटना का शिकार होता है तो उनके मन को आघात पहुंचता है. परन्तु उत्तम कोटि के स्वार्थी तो प्राणी मात्र को अपना मानते हैं। ठीक ही कहा गया है—

'खंजर चले किसी पे
तड़पते हैं हम अमीर।
सारे जहां का दर्द
हमारे जिगर में है ॥

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जब लोग निकृष्ट कोटि के स्वार्थों को जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं तो वही कुछ होता है जो आज भारत में हो रहा है। महंगाई, भ्रष्टाचार, धोखा धड़ी, चोर बाजारी, खाने पीने की चीजों में मिलावट इत्यादि अनेकों ही मानसिक अथवा सामाजिक रोग निकृष्ट कोटि के स्वार्थों की ही उपज हैं।

अब आइये जरा दूसरे पक्ष पर दृष्टिपात करें अर्थात श्रेय मार्ग पर विचार करें। त्याग, तपस्या और बलिदान के मार्ग को श्रेय-मार्ग कहते हैं। हवन यज्ञ में दो शब्द मुख्य हैं। (1) "स्वाहा" जो दो शब्दों सु (उत्तम) और आहा (परित्याग) के मेल से बना है और (2) 'इदं न मम' अर्थात यह मेरा मेरा नहीं है। साथ ही अनेक मंत्रों के अन्त में प्रयोग की जाने वाली यह उक्ति भी प्रसिद्ध है—'इदमग्नये इदं न मम' अर्थात यजमान, घृत आदि सुगन्धित पदार्थ अग्नि में डाल कर बार बार यह कहता है कि हे अग्नि! यह तेरा भाग है मेरा नहीं। जब त्याग भावना की आंखों से देखें और कल्पना के कानों से सुनें तो यह पायेंगे कि अग्नि भी अपनी भाषा में कुछ बोल रही है। वह कह रही है इदं वायोः इदं न मम' अर्थात वह इन पदार्थों को सूक्ष्म करके वायु में मिला देती है। इसी प्रकार वायु कहती है—इदं मेघस्य इदं न मम' अर्थात वह वे सब वस्तुएं बादलों के हवाले कर देती है। बादल वर्षा के रूप में उन्हें फिर धरती पर बरसाते हैं, मानो वे कह रहे हैं कि 'इदं पृथिव्या इदं न मम'। इस प्रकार प्रकृति का यह परोपकार-मय चक्र निरन्तर चलता रहता है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं—हे अर्जुन! इस संसार में मेरा परोपकार का चक्र निरन्तर चल रहा है। जो व्यक्ति अपनी शक्ति के माध्यम से इसे आगे चलाने में अपना योगदान नहीं देता। वह बहुत बड़े पाप का भागी है। पथिक जी ने इस पद में इस भावना का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है—

अकेले ही जो खा-खा कर
सदा गुजरान करते हैं।
यूं भरने को दुनिया में
पशु भी पेट भरते हैं।
पथिक जो बांट कर खाये
उसे इन्सान कहते हैं।

उपनिषद् में एक बड़ी सुन्दर कथा आती है—एक बार देवता, मनुष्य और असुर बारी बारी प्रजापति के दरबार में आत्म ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने गए। सब से पहले असुरों की बारी आई, प्रजापति ने कहा—'द'। वे नमस्कार करके चलने लगे तो प्रजापति ने पूछा—'तुमने क्या समझा है।'

वे बोले महाराज! आपने कहा है दया करो।

फिर मनुष्यों की बारी आई और प्रजापति ने फिर 'द' कहा। जब वे नमस्कार करके चलने लगे तो प्रजापति ने पूछा—'तुमने क्या समझा है? तो उन्होंने कहा—महाराज आप ने कहा है 'दान करो'। (क्रमशः)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून

देहरादून तपोवन में एक वर्षीय 16 मई 1990 से 15 मई 1991 तक योग प्रशिक्षण शिविर—स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर के प्रारम्भ में स्वामी सत्यपति जी व ब्रह्मचारी आचार्य ब्र० अर्जुन देव जी 16 मई से 15 जून 1990 (एक मास) तक रहेंगे और बाकी समय में शिविर का संचालन आचार्य ब्र० आनन्द प्रकाश जी करेंगे।

इस शिविर के योगदर्शन एवं अन्य दर्शनों का अध्ययन कराया जाएगा इसके साथ संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान भी कराया जाएगा। इस में स्त्री-पुरुष सभी भाग ले सकते हैं

स्त्री ब्रह्मा बभूविथ

प्रा० श्री कमलेश जी, आचार्या साधु आश्रम (होशियारपुर)

मानव सेवा आश्रम में महिला सत्संग का एक विशेष आयोजन था। जिसमें सुवर्णा प्राध्यापिका को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। सत्संग की संयोजिका ने कहा—आज कुछ विशेष विचार-विमर्श के लिए यह आयोजन हो रहा है, अतः यह प्रवचन रूप में नहीं होगा। इसकी पृष्ठभूमि यह है, कि छुटमलपुर की दो स्नातिकायें, इन के प्रशिक्षण महाविद्यालय से प्रशिक्षण लेकर आई हैं। उन्हीं के अभिभावकों के अनुरोध पर कुछ विशेष जानकारी के लिए प्राध्यापिका को यहां आमन्त्रित किया है। अतः आइए। चर्चा को प्रारम्भ करें।

सुलोचना—जब से मेरी बेटी आप के यहां से प्रशिक्षण लेकर आई है, तब से उस के हर व्यवहार में विशेष आत्म-विश्वास दिखाई देता है। यह सब आप ने क्या सोच कर, कैसे किया ?

सुनयना—मेरी बेटी बात बात में "स्त्री ब्रह्म बभूविथ' का संकेत करती है। इस के इस गुरुमन्त्र का क्या स्वारस्य है ?

प्राध्यापिका—अपने दादा जी की प्रेरणा से ही मेरे विचारों में परिवर्तन आया है। प्राध्यापिका पद प्राप्त करने के बाद उन्हीं के अनुरोध पर मैंने अपने अध्यापन और गृहस्थ में इस मूलमन्त्र पर विशेष विचार किया। जिसके कारण अपने सम्पर्क में आने वाली हर महिला और विशेषतः छात्राओं को इस मूलमन्त्र के स्वारस्य से परिचित कराती हूं। आप दोनों ने प्रश्न उठाती या नहीं, पुनरपि मैंने इसी मूलसूत्र पर इस सत्संग में चर्चा करनी थी।

अतः सभी महिलाओं से अनुरोध है, कि कुछ देर अपना सारा ध्यान इस ओर लगायें। 'स्त्री ब्रह्म बभूविथ' ऋग्, 8, 33, 19 मन्त्र का अन्तिम भाग है। यह अपने आप में एक पूर्ण वाक्य है, क्योंकि 'एकतिङ् वाक्यम्' के अनुसार क्रियापद से ही वाक्य पूर्ण होता है। निरुक्तकार यास्क के अनुसार सत्त्व-प्रधानयुक्त क्रियापद को किसी बात का प्रत्यक्ष रूप में वर्णन करने वाला मानना चाहिए।

अतः इस मन्त्रांश का अर्थ है—नारी तुम ब्रह्मा हो, अर्थात् महान हो। यहां पहला शब्द है—स्त्री, जो कि प्रसिद्ध है। स्त्री के प्रति समाज में जो भावना है, उस की तुम सब भुक्तभोगी हो और साहित्य में नारी का जैसा चित्रण है। यह तुम सब प्रायः सुनती और पढ़ती रहती हो। और न ही इन दोनों की चर्चा का इस समय समय है। स्त्री शब्द स्त्यै और स्तृ धातु से बन सकता है। इन दोनों धातुओं के अर्थों की गहराई में जाने पर इस सीमित समय में मूल बात अधूरी रह जाएगी।

मेरी दृष्टि से इन के आधार पर शिष्टाचार का ध्यान रखने वाली लज्जाशील नारी ही स्त्रीवाच्य है। ब्रह्मा शब्द चाहे सृष्टि के स्रष्टा के लिए प्रसिद्ध होने से निर्माता का वाचक है। ऐसे प्रसंग के अनुरूप यह अनेक अर्थों में आता है। जिस का वर्णन 'ब्रह्मदर्शन' वेदवाणी नवम्बर 88 में देख सकते हैं। जो कि बृहधातु से बनता है और जिस का सामान्य अर्थ बड़ा है। अर्थात् नारी एक निर्मात्री होने से बहुत बड़ी है। अतएव माता के रूप में उसका उच्चतम स्थान है।

इस बढ़ती गम्भीरता में सभी को सजग करने के लिए सुवर्णा ने अनुमति लेकर पूछा, कि ब्रह्मा के बड़े अर्थ को सुनकर मुझे एक चीज याद आ रही है। क्योंकि भारतीय भावना के अनुसार नारी का भोजनालय से विशेष सम्बन्ध है और इस मौसम में बड़े भी बड़े बहुत पसन्द किए जाते हैं। क्या वही बड़ा ही ब्रह्मा का सामान्य अर्थ है या यहां और कोई स्वारस्य है।

इस उपहास को सरस बनाते हुए संयोजिका ने कहा, हमने आज भोजन में बड़ों का विशेष प्रबन्ध किया है।

प्रा०—सुवर्णा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा तूने मेरी बड़ी सहायता की। सम्भवतः इस सत्संग में स्त्री के ब्रह्मापन को दर्शाने के लिए यह रुचिकर 'बड़ा' बहुत अधिक सहायक हो। हर पाक कला विशेषज्ञ अच्छी प्रकार से जानती है कि वही बड़ा बढ़िया होता है, जिस की दाल अच्छी, स्वच्छ, पूरी भीगी हुई, खूब पिसी, उचित तली हुई हो और फिर यथार्थ क्रम से उछाल कर यथासमय दही में डाला गया 'बड़ा' ही स्वादु, रुचिकर होता है। जैसे कि बड़ा के बनाने वाले सारे के सारे यह प्रक्रिया अपनाते हैं, पर सब के बड़े एक जैसे रोचक नहीं होते। इस भेद का कारण कहीं न कहीं किसी कमी का रह जाना है। जो भी इन सभी पहलुओं पर पूरा ध्यान देता है। उसी के हाथ में विशेषता आती है। उसी का 'बड़ा' अच्छा, स्वादु, रुचिकर होता है, जो उस की बनावट अर्थात् सारी प्रक्रिया के प्रति सजग होता है, क्योंकि हर नगर में बड़ा बनाने वाले तो बहुत होते हैं पर प्रसिद्ध दो चार के ही होते हैं।

ठीक इसी प्रकार वह स्त्री ब्रह्मा कहला सकती है, जो माता के कर्त्तव्य के प्रति अथ से इति तक सजग होती है। हम सब इस भोज्य 'बड़ा' की प्रक्रिया पर जितना-जितना ध्यान देंगी। उतना-उतना सरलता से 'स्त्री ब्रह्मा बभूविथ' के मूलसूत्र को समझ सकेंगी। यह बड़ा शब्द प्रत्यय की दृष्टि से स्त्री लिंग है, उसकी स्वादुता, रूपता, आकर्षकता, गुणवता आदि अनेक सादृश्य स्त्री के समान सामने आते हैं।

इस ब्रह्मा के भाव को सामने रख कर के ही मैं हर नारी से कहती हूं, कि अपने अन्दर आत्म विश्वास को उभारिए। यतो हि तुम महान हो, रचयित्री—निर्मात्री हो, फिर आत्म-हीनता का अवसर या प्रसंग कैसे और क्यों ?'

जहां तक यह प्रश्न है, कि मेरे अन्दर ये विचार कैसे जागे ? जैसे कि मैंने पहले भी कहा है कि मेरे दादा जी ने महर्षि दयानन्द के विचारों के आधार पर नारी जीवन के हर पहलू पर दिशा निर्देश किया। दादा जी ने मुझे एक पुस्तक 'नारी जीवन' दी। जो कि मानव सेवा आश्रम, छुटमलपुर (सहारनपुर) से प्रकाशित है। जिस में नारी के ब्रह्मापन को चरितार्थ करने के लिए पूरी प्रक्रिया दर्शाई गई है अर्थात् नारी जीवन के आरम्भ से ब्रह्मापन की प्राप्ति तक की कैसी गतिविधि होनी चाहिए, इस की महर्षि दयानन्द के वाक्यों सहित पूरी प्रक्रिया है। जैसे कि गर्भ-काल, शिशु की संभाल, उसका पालन-पोषण, शिक्षा, उस की पढ़ाई, पाठय-क्रम, दिनचर्या, वाग्दान, विवाह निर्णय, परिवार संचालन आदि किस-किस ढंग से हों। ये सारी बातें महर्षि-दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के द्वितीय-तृतीय और चतुर्थ समुल्लास में बड़े विस्तार के साथ बताई हैं और विशेष बात तो यह है कि यह सारी चर्चा वहां संवाद शैली में प्रस्तुत करके विविध प्रसंगों के साथ सरल-सरस बनाने का प्रयास किया गया है। मेरी दृष्टि से आर्यसाहित्य में अपने आप में अनूठी रचना है। वस्तुतः इस का पूरा आस्वादन तो पूरी तरह से पुस्तक पढ़ने के पश्चात् ही अनुभव किया जा सकता है।

अतः 'गागर में सागर भरने' के अनुरूप हम यह कह सकते हैं, कि नारी कैसे महान है या कैसे महान हो सकती है ? की पूरी प्रक्रिया, रूपरेखा, योजना 'नारी जीवन' के अध्ययन से सामने आ सकती है।

हां, जहां तक मूलमन्त्र की बात है, इस सम्बन्ध में मेरा विचार है कि प्रत्येक महिला को इस को अपना मूल-मन्त्र मानना चाहिए।

लुधियाना में परिवारिक सत्संग

29-4-90 रविवार को जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से तीसरा परिवारिक सत्संग श्री चानन-राम जी गम्भीर उप प्रधान जिला आर्य सभा के गृह करीमपुरा में सायं 3 बजे से 6 बजे तक बड़े समारोह से हुआ जिसमें मुहल्ले के सैकड़ों परिवार तथा जिला आर्य सभा के अधिकारी शामिल हुए। बृहद यज्ञ के पश्चात् श्री कृपा राम जी आर्य के सुरीले भजन हुए जिलासभा के महामन्त्री आशानन्द आर्य ने यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए जनता से अनुरोध किया कि हमें अपने घरों में प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए और ऐसे सत्सगों का आयोजन करना चाहिए। कुमारी सुनीता आर्या, बहन बाला गम्भीर, बहन सुनीता सेठ ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए। प्रसिद्ध विद्वान् पं० बालकृष्ण जी शास्त्री ने अपने भाषण में विस्तारपूर्वक बताया कि यदि तुम अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हो तो वेद के मार्ग पर चलो।

गौरक्षा की ओर ध्यान दें

ले०—श्री अशोक आर्य एम० ए० टंकारा (गुजरात)

जिस गौ के लिए महाराजा दिलीप ने अपने प्राणों की बाजी लगाई थी, महाराजा प्रताप ने छब्बीस वर्षों तक जंगलों में भटकना स्वीकार किया था। वीर हकीकत जैसे बच्चों ने अपने शरीर का बलिदान कर दिया था। बन्दा वैरागी ने लोहे की दग्ध सलाखों से बोटी बोटी करवाई और जिस गौ के लिए शिवाजी ने तलवार उठाई थी। चितौड़ की सोलह हजार रानियों ने अपने प्राण दे दिए और प्यारे ऋषियों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। तो क्या उसी गौ का अपमान आर्य वीर सहन कर सकता है ? अगर संसार में सुख व शान्ति का साम्राज्य लाना है तो गौ वध बन्द करना होगा और यह कार्य बिना संगठित हुए करना आसान नहीं होगा। गौ वध निषेध होगा इस आशा के लिये ही आर्य समाज एवं अन्य सेवा भावी-देश प्रेमी संस्थायें स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रसर हुई थी। आर्य समाज विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करता हुआ आगे आने का प्रयास कर रहा है, आर्य समाजी भाई-बहन यह जानते होंगे। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने एक संस्था (सभा) स्थापित की थी नाम था गौरक्षिणी सभा। मेरे प्यारे आर्यो ! क्या हम उस सभा के कार्यक्रम में कुछ आगे बढ़े हैं। आर्य समाज के पास दानी महानुभावों की कमी नहीं वे अगर चाहें तो एक अकेले धनपति आर्य सज्जन गौशाला खोल सकते हैं अगर अकेला व्यक्ति कर सकता है तो हम सब आर्य मिलकर अनेक गौशालाएं स्थापित कर संस्कृति रक्षक बन सकते है। आर्य समाज का आधार चारों वेदों दर्शनों, उपनिषदों एवम् ऋषि मुनियों के आप्त वचनों पर है। संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद जिसमें परम पिता परमेश्वर हमें आदेश देता है। "मैं हरेक बुद्धिशाली मनुष्य को कहता हूं कि यह गौ रूद्र (15 वर्ष की अवस्था वालों) की मां है, वसु (36 वर्ष की अवस्था वालों) की पुत्री है तथा आदित्य (48 वर्ष की अवस्था वालों) की बहिन समान है। यह गौ दूध, दहीं, घी, मक्खन आदि अमृत का खजाना है।

इस लिए इस निरपराध, मारने के अयोग्य गौ को तूं मारना नहीं।"

—ऋग्वेद 3, 101, 15

सज्जन आर्य पुरुषो ! वेदों की जय ऋषि दयानन्द की जय सार्थक करने हेतु गौशाला अनिवार्य है। बहुत सा कार्य आर्य समाज करता है। हमारे देश के अन्दर प्रातः आंख खोलते ही 35 हजार गायें कट जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम महर्षि दयानन्द की इस सभा को कार्यान्वित करें। आर्य समाज की बहुत सारी सम्पत्ति, शक्ति व समय अपनी अपनी समाजों को विभिन्न प्रकार से सजाने में ही लग जाती है। अब कुछ समय के लिए पक्के भवनों के निर्माण करने का विचार छोड़ कर रचनात्मक दिशा में अग्रसर होना चाहिए जिसमें गौ रक्षा का प्रश्न महत्त्वपूर्ण है।

आर्य समाज शास्त्रार्थ का युग लायें

जब आर्य समाज के पास तार्किक, तपस्वी विद्वान्, ओजस्वी वक्ता थे वह युग आर्य समाज का शास्त्रार्थ युग कहलाता था। आज फिर से वह युग लाने में आर्य समाज को शास्त्रार्थी तैयार करने होंगे। आज भी पुराण धर्म की आलोचना, ढोंग और पाखंड का खंडन करना आवश्यक है, आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भी यही था। वर्तमान में आर्य सभा सदस्यों की ऐसी करुण दशा है कि वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध अगर कोई उसे प्रश्न करे तो वह उत्तर देने में असमर्थता प्रगट कर देता है। इससे आर्य समाज की छवि उभरनी मुश्किल हो जाती है उन्हें चाहिए कि स्वाध्याय तो निरन्तर करें ही साथ साथ मूलतम शास्त्रों का भी ज्ञान रखें। एक सुन्दर उदाहरण पेश करता हूं आप की समाज में कोई विधर्मी आवें और ईश्वर एक देशी है। ऐसा कहकर उदाहरण दें कि जैसे अगरबत्ती एक जगह होती है फिर भी उस की सुगन्ध चारों ओर फैल जाती है उसी प्रकार परमेश्वर एक जगह रहता हुआ भी हर जगह कार्य करता है तो आप क्या उत्तर देंगे ? अगर हमने न्याय दर्शन पढ़ा होगा तो तुरन्त ही उत्तर दे सकते हैं। यह उदाहरण इस लिए दिया कि आज के पौराणिक विद्वान आर्य समाज का साहित्य को पढ़ कर सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थों का अध्ययन कर प्रश्न करता है। अब हम आर्य समाजी चार दिवारों में बन्द, 20 मिन्ट सत्संग आदि करके अपने अपने घर चले जाते हैं फिर किसी प्रकार का स्वाध्याय नहीं करते। तो इस दशा को सुधारने के लिए स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ानी चाहिए। स्वाध्याय के लिए आर्य प्रकाशकों को चाहिए कि वे आर्य समाज के पुराने लेखकों के ग्रन्थ पुनः प्रकाशित करें जो सिद्धान्तों में निष्णन्त बनाते हैं।

विश्व को महर्षि का सन्देश

ले०—श्री हरवंश लाल "हंस" लन्दन भूतपूर्व प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ सदियों से सोने वालो ! मैं तुम्हें जगाने आया हूं।
ईश्वर की बनाई कविताएं मैं तुम्हें सुनाने आया हूं॥
आलोकित कर दे जगति को तम नष्ट करे जो पल भर में।
तूफानों से भी बुझ न सके, वो दीप जलाने आया हूं॥
ओ सदियों से सोने वालो......

ऋषियों के पावन सपनों का बन जाए भारत इच्छा है।
उनके उपवन में आशा के वो फूल खिलाने आया हूं॥
ओ सदियों से सोने वालो......

जिस अमृतधारा को पीकर प्रत्येक अमर हो सकता है।
उस अमृतधारा को पीकर दुनियां को पिलाने आया हूं॥
ओ सदियों से सोने वालो......

जिस शक्ति के आगे कोई संसार की शक्ति टिकती नहीं।
उसके ही द्वारा दुष्टों का संसार मिटाने आया हूं॥
ओ सदियों से सोने वालो......

सत् ज्ञान की ज्योति के द्वारा अज्ञान अन्धेरा दूर करूं।
गुरु परम "हंस" को वचन दिया था कलाम निभाने आया हूं।
ओ सदियों से सोने वालो......

बन्द कराओ ये कुरीतियां

ले०—श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग

बेशक कोई बुरा कहे हमको कहनी बात सांच है॥
मिले धार्मिक शिक्षा यह सन्तान बिगड़ने न पाये।
इसीलिए आर्य विद्यालय कन्या गुरुकुल खुलवाये॥
आज वहां छात्र छात्राएं घुंघरू बांधे करें नाच है।
हमको कहनी बात सांच है॥1॥

है यह नाच मगर कहता गरबा गुजरात प्रान्त।
पिता सामने पुत्री नाचे क्या वैदिक सिद्धान्त है।
है हठधर्मी नहीं मानते करते रहते तीन पांच है।
हमको कहनी बात सांच है॥2॥

अगर नाच रंगों में आर्यो वृथा समय गंवाओगे।
वैदिक नाव भंवर में डूबे कैसे इसे बचाओगे॥
शिक्षा ऋषि ने पढ़ो पढ़ाओ सत्यार्थ प्रकाश जांच है।
हमको कहनी बात सांच है॥3॥

बन्द कराओ यह कुरीतियां रहो नहीं चुपचाप है।
मौका पाकर डस जाएगा आस्तीन का सांप है॥
नहीं किसी का भी डर करना नहीं सांच को कहीं आंच है।
हमको कहनी बात सांच है॥4॥

विषयायुक्त नाच और गाना सदाचार को खोवेगा।
जो इसमें आनन्द मग्न है नैया वही डुबोवेगा॥
ये तन के उजले मन के काले बेशक करलो खूब जांच है।
बेशक हमको बुरा कहे हमको कहनी बात सांच है॥5॥

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला (नैनीताल)

इस आश्रम की स्थापना म० नारायण स्वामी ने 1620 में की थी। यह स्थान हिमालय की पहाड़ियों के बीच में नदी के किनारे अति रमणीक स्थान में स्थित है। इस आश्रम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र की बुराईयों को दूर करना था। यहां बैरागी अपनी दूषित मनोवृत्ति को लेकर आते थे तथा कन्याओं के व्यापार का केन्द्र था। म० नारायण स्वामी ने ग्राम-ग्राम में प्रचार करके इस दूषित मनोवृत्ति को दूर किया।

पहाड़ी मार्ग नैनीताल से 14 मील, अल्मोड़ा 18 मील, रानीखेत 14 मील है।

म० नारायण स्वामी ने आर्य प्रति० सभा की स्थापना की तथा 5 वर्ष मंत्री पद पर रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रति० सभा की भी स्थापना की तथा सभा के 14 वर्ष प्रधान तथा मन्त्री पद पर रहे। आपने प्रयास करके फर्रुखाबाद में गुरुकुल की स्थापना की जो बाद में गुरुकुल वृन्दावन महाविद्यालय के नाम से विख्यात हुआ—राम गढ़ में निवास के समय बहुत सी पुस्तकों को लिखा जिनमें कर्तव्य दर्पण आत्म दर्शन, विद्यार्थी जीवन रहस्य, ईश-केन, कठ, माण्डूक्य, मुण्डको, तैत्तिरीय उपनिषदें मुख्य हैं।

मथुरा में दयानन्द जन्म शताब्दी 18 फरवरी से 26 फरवरी तक 1928 में मनाई गई थी। उसका समस्त भार व श्रेय म० नारायण स्वामी को ही था। 2 वर्ष पूर्व 1926 में गुरुकुल वृन्दावन में शताब्दी कार्यालय खोला गया तब केवल 4 रु० दस आने की संस्था कर्जदार थी। शताब्दी का कार्य अत्यन्त सफलतापूर्वं सम्पन्न हुआ।

मथुरा में दयानन्द जन्म शताब्दी 18 फरवरी से 26 फरवरी तक 1928 में मनाई गई थी। उसका समस्त भार व श्रेय म० नारायण स्वामी को ही था। 2 वर्ष पूर्व 1926 में गुरुकुल वृन्दावन में शताब्दी कार्यालय खोला गया तब केवल 4 रु० दस आने की संस्था कर्जदार थी। शताब्दी का कार्य अत्यन्त सफलतापूर्वं सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद सत्याग्रह। निजाम राज्य में हिन्दुओं को स्थान-स्थान पर अपमानित होना पड़ता था जब सभी तरह हताश हो गए तब यह भार म० नारायण स्वामी के ऊपर डाला गया। शोलापुर में मुख्य कार्यालय बनाकर म० नारायण स्वामी सर्वप्रथम हैदराबाद सत्याग्रह के मुख्य सेनापति बने तथा शोलापुर से हैदराबाद की तरफ प्रस्थान करके जेल यात्रा की।

जेल यात्रा जाने से पहले 24000 बालन्टीयरों की नामावली शोलापुर कार्यालय में आ गई। प्रथम म० नरायण स्वामी, दूसरे कुंवर चान्द करण शारदा, तीसरे खुशहालचन्द्र (आनन्द-स्वामी) चौथे राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, पांचवें स्वामी स्वतन्त्रानन्द डिक्टेटर नियुक्त हुए। जेल जाने से पूर्व 41 हजार रु० स्टेट बैंक में सत्याग्रह के नाम से जमा करा दिये। इस प्रकार म० नारायण स्वामी ने हजारों सत्याग्रहियों के साथ जेल में महान कष्ट उठाये। साढ़े छः माह बाद स्वतंत्र हुए। इसमें 26 सत्याग्रहियों का बलिदान हुआ। 1944 में जब सिन्ध की मुसलिम लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी लगाने की घोषणा की तब म० नारायण स्वामी सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तकें लेकर कराची पहुंचे मगर लीगी सरकार को गिरफ्तार करने की हिम्मत नहीं हुई। रुग्ण अवस्था में म० नारायण स्वामी में कितना मनोबल था उसका वर्णन कठिन है।

महात्मा नारायण स्वामी के 1347 में स्वर्ग सिधारने के पश्चात् रामगढ़ आश्रम की शोचनीय अवस्था हो गई। वेद मित्र तिवारी वालों के 4 कमरे नष्ट हो गए तमाम आश्रम जीर्ण अवस्था में है। भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इसके जीर्ण उद्धार में सहयोग दे। इस कार्य के लिए महात्मा नारायण स्वामी आश्रम जीर्णोद्धार कमेटी स्थापित करके महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला में (बड़ोदा बैंक में) खाता खोल दिया है। वर्ष में तीन योग साधना शिविरों का कार्यक्रम बनाया गया है। प्रथम मई में, दूसरा जून में, तीसरा सितम्बर में योग साधना शिविर लगेगा।

15 मई से 22 मई 1990के शिविर में सम्मिलित होने वाले साधक पत्र द्वारा सूचना दें। निवास तथा भोजन व्यवस्था है। यह स्थान दिल्ली हल्द्वानी बस से बरेली से हल्द्वानी तक बस से या ट्रेन से हल्द्वानी से रामगढ़ तल्ला को प्रातः 7 बजे 12 बजे तथा 6 बजे बसें चलती हैं। जो आश्रम के निकट यात्रियों को उतारती हैं।

स्वामी सोमानन्द
वेद प्रचारक मण्डल 3016 रानी-बाग रोड़, करोल बाग नई दिल्ली-4

देश को भावी खतरों से बचाने के लिए पूर्वाग्रहों को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस आई० आपस में मिल जाएं

दिल्ली 22 अप्रैल, आर्य समाज पंखारोड़, दिल्ली के उत्सव पर आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि 17 जुलाई, 1986 को आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला था। और उन्हें पंजाब व काश्मीर के मामले पर एक ज्ञापन दिया था। पुनः 2 सितम्बर 1986 को प्रधान मन्त्री से मिले थे और उनसें मांग की थी कि—

(1) संविधान में संशोधन करके गुजरात, राजस्थान, पंजाब और जम्मू काश्मीर के पूरे सीमा क्षेत्र में सुरक्षा पट्टी बनाई जावे।

(2) भू० पू० 41 लाख सैनिकों को सुरक्षा पट्टी में बसाया जावे ताकि राष्ट्र द्रोही तत्व सीमा पार करके भारत में न घुस पावें।

(3) धारा 370 अस्थायी है, उसे तुरन्त समाप्त किया जावे।

(4) पंजाब व काश्मीर में पांच साल तक चुनाव न कराए जावें।

स्वामी जी ने कहा उस समय प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने इन प्रस्तावों पर सहमति प्रकट की थी और अपने 26 सितम्बर 1986 के पत्र द्वारा उन्होंने हमें लिखा था कि 'सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा पट्टी का विषय विचाराधीन है। इस मामले में सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अन्तिम निर्णय लिया जाएगा।'

स्वामी जी ने कहा विरोधी दलों के दबाव के कारण बाद में उन्होंने इस राष्ट्रीय महत्त्व के प्रस्तावों को छोड़ दिया। यदि राजीव गांधी ने उस समय अपने दल के प्रबल बहुमत से संविधान में संशोधन करके सुरक्षा पट्टी का निर्माण कर लिया होता तो आज पंजाब व कश्मीर में खतरों का जो अखाड़ा बन गया है, वह न बनता और कांग्रेस को शायद सत्ता से अलग भी न होना पड़ता।

स्वामी जी ने कहा श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह के सहयोगी पार्टियों में कुछ पूर्वाग्रह है और वर्तमान प्रधान केवल कुर्सी के लिए बड़ी से बड़ी भूल कर सकते हैं। वह अब्दुल्ला बुखारी जैसे साम्प्रदायिक तथा सिमरनजीत सिंह मान तथा कुछ अन्य नेताओं के दबाव में फंसकर राष्ट्रहित मुद्दे पर दृढ़ता से निर्णय लेने मे असमर्थ हो गए हैं।

स्वामी जी ने देश को भावी खतरों से बचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस आई० से पूर्वाग्रह छोडकर आपस में मिलकर देश की बागडोर सम्भालने की अपील की और विश्वास प्रकट किया कि यह दोनों ही पार्टिया देश को बचाने में सक्षम हैं।

उठो आर्य वीरो

लेखक—श्री मोहन लाल शर्मा 'रश्मि'
907/ए, फ्रीलैण्ड गंज, दाहोद (गुजरात)

अब वही सत्य का प्रकाश जगमगा दो।
उठो आर्य वीरो ! अब ये अन्धेरा भगा दो ॥
हमें आज फिर से समय ने पुकारा।
यह कह करके "क्या फर्ज है तुम्हारा" ॥
एक होने की फिर से अब आई घड़ी।
देखते किस कदर हम पे आंखें गड़ी।
सोये हुओं को चलो फिर से जगा दो।
उठो आर्य वीरो ! ये अन्धेरा भगा दो।
कुचाली यहां फिर से हैं लगे सर उठाने।
बता दो उन्हें हम भी कुछ बैठे हैं ठाने ॥
ये ध्वजा ओम् की कहीं झुकने न पाए।
शंख नाद वेदों का अब रुकने न पाए ॥
राष्ट्र सेवा में "रश्मि" सब शक्ति लगा दो।
उठो आर्य वीरो ! अब ये अन्धेरा भगा दो ॥

प्रवेश आरम्भ

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की जन्म भूमि, एवं बोध स्थली में गत 25 वर्षों से श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमे नए सत्र हेतु छात्रो का प्रवेश 1 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। छात्रो को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा, निवास, वस्त्र, भोजन, पाठ्य पुस्तके व लेखन सामग्री प्रदान की जाती है। भोजन में दूध एवं घी की उत्तम व्यवस्था है। प्रवेश के इच्छुक 16 से 20 वर्ष आयु के अविवाहित, मैट्रिक अथवा समकक्ष, निर्व्यसनी छात्र विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र (निःशुल्क) निम्न पते पर व्यवहार करके मंगवा सकते हैं।

विद्याभास्कर ओमप्रकाश शास्त्री एम. ए
प्राचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय,
टंकारा जिला राजकोट (गुजरात)।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत का तृतीय वार्षिकोत्सव दिनांक 7 व 8 अप्रैल को कालोनी मे ही बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमे आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा व्यायाम प्रदर्शन का विशेष रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूज्य श्री स्वा० नित्यानन्द जी सरस्वती, आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री, प्रो० वेदसुमन जी, डा० धर्मेन्द्रदास जी, पानीपत के उपायुक्त मान्य श्री विजय कुमार जी, मान्य श्री अमरनाथ जी एस० डी० एम० पानीपत, कु० भूपेन्द्र सिंह जी आर्य, डा० दर्शन लाल जी आजाद, श्री चमन लाल जी आर्य, डा० महेन्द्र रत्न, बालकृष्ण छाबड़ा, पं० नारायण दास जी आर्य, प्रि० स्वर्णकान्ता जी गुप्ता, श्रीमती विद्यावती सिंगला, राजरानी मित्तल, अनिता गुप्ता, शशी अग्रवाल, प्रभुदयाल गुलाटी आदि विद्वान् नेताओं ने पधार कर वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान अपने प्रवचनों द्वारा किया।

—जगदीश चन्द्र बसु

श्रीमती लज्जावती भारद्वाज का निधन

स्त्री आर्य समाज गोबिन्द गढ़ जालन्धर की संरक्षिका श्री प० किशन चन्द व स्व० प० मुरारी लाल जी की बहन, श्री प० हरबंसलाल जी शर्मा की बुआ बहन लज्जावती जी भारद्वाज का 30-4-90 को यू. के. मे अपनी सुपुत्री व दामाद के पास निधन हो गया। बहन लज्जावती का जालन्धर की आर्य महिलाओं में अपना विशेष स्थान था। आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर से उनका विशेष सम्बन्ध था। वह एक धार्मिक विचारों की महिला थी उनका जीवन बड़ा सादा व सात्विक था। वह बड़ी मिलनसार और सबका सम्मान करने वाली महिला थी। उनके सुझाव आर्य समाज के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होते थे। उन्होंने अपने भाई प० किशन चन्द जी आर्य और प० मुरारी लाल जी की भांति आजीवन आर्य समाज की सेवा की। उनके चले जाने से स्त्री आर्य समाज गोबिन्द गढ़ की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद् गति प्रदान करे और उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति दे। इनका अन्तिम शोक दिवस आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर में 10 मई 1990 को सायं 4-30 से 6 बजे तक मनाया जाएगा।

—अरविन्द आर्य

तलवाड़ा में वेद प्रचार

आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप जिला होशियारपुर में 21-4-90 से 23-4-90 तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् ब्र० आर्य नरेश के प्रभावशाली प्रवचन और प्रसिद्ध गायक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन हुए। नगर के सैंकड़ो नर नारियो ने इस अवसर पर पहुंच कर धर्म लाभ उठाया।

—मनोहर लाल शर्मा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 7, ज्येष्ठ 7 सम्वत् 2047 तदनुसार 17/20 मई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

सब विद्याओं का स्रोत वेद है

श्री वरुणानन्द जी एम. ए. एम. ओ. एल.

अखण्ड ब्रह्मचारी, साक्षात् कृतधर्मा महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की नींव रखते हुए सबसे मुख्य और प्रथम निम्नलिखित महावाक्य कहा है—

'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।'

परम गुरु परमेश्वर ने संसार का मंगल-कामना से सब विद्यानिधान वेदों का प्रकाश आदि सृष्टि में किया, मनु भगवान् ने वेदों की महिमा गाते हुए कैसा सुन्दर कहा है—

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः॥ (12।64)

सब संसार-निवासी प्राणियों की सच्ची आंखें उनकी भौतिक आंखें नहीं, मनुष्य-पितर और सब देवताओं की सच्ची आंख तो अमर वेद है। वेद अप्रमेय, अपौरुषेय और अनादि हैं।

प्राचीन काल में भारत सब विद्याओं का भण्डार था। यहां आकर बाहर वाले नाना विद्याओं को सीखकर जाते थे। वात्स्यायन ने इस तथ्य को स्पष्ट शब्दों में कहा है। इन सब विद्याओं को 32 भागों में बांटा गया था और इसके अतिरिक्त 64 कलाएं भी प्रचलित थीं। परन्तु यह मानना ही पड़ता है कि इन सब विद्याओं तथा कलाओं का मूल वेद माना जाता था। यह बात हम भावावेश से ही नहीं कह रहे प्रत्युत विदेशी विद्वानों ने भी ऐसा माना है। पहले हम कौटिल्य अर्थशास्त्र का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं—

न वेदबाह्यमस्ति शास्त्रम्, किंचिदन्यत् हि विद्यते।
निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्॥

अर्थात्—वेद ही सर्वोपरि एक शास्त्र है, इससे भिन्न दूसरा कोई शास्त्र नहीं, क्योंकि सभी शास्त्र नहीं, क्योंकि सभी शास्त्र इस अनादि वेद से ही निकले हैं।

अब आप विदेशी विद्वानों के विचार भी इस विषय में देखिए। श्री William Ward लिखते हैं—

"The original work, Chatushashti Kala Nirnya, is said to have been drawn from the original Veda."

अर्थात् वात्स्यायन विरचित 'चतुःषष्टि कला' निर्णय नामक पुस्तक का मूल वेद है।

ज्योतिष विद्या (Astronomy) के विद्वान् आर्यभट्ट अपने ग्रन्थ 'आर्यभट्टीय', में जो 423 शक संवत् में लिखा गया था, लिखते हैं कि 'ज्योतिष विद्या का प्रचार वेद से निकालकर ही लोगों में किया गया है।'

श्री Voltaire नाम के एक फ्रांस निवासी फिलासफर को जब यजुर्वेद की एक प्रति भेंट की गई, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और झट कहने लगे कि 'It was the most precious gift for which the West had ever been inbedted to the East.' अर्थात् यह भेंट इतनी अमूल्य है कि इसके लिए पश्चिम सदा भारत का ऋणी रहेगा।

हाय! कितने दुःख की बात है कि विदेशी लोग तो वेद की महिमा समझें और आज हम वेद से मुंह मोड़ कर बैठे हुए हैं।

इसी प्रकार Leon Delbos ने कहा है:—

'There is no monument of Greece or Rome more precious than the Rig Veda.'

अर्थात् यूनान और रोम ने कोई ऐसा स्थायी अमूल्य ग्रन्थ (कृति) नहीं दिया, जितना कि ऋग्वेद है।

प्रो. Max Muller ने साफ कहा और माना है कि

'In the history of the world, the Vedas fill a gap which no literary work in any other language could fill.'

अर्थात्—विश्व के इतिहास में किसी भी भाषा में ऐसी पुस्तक नहीं मिलती, जो वेदों के समान उस न्यूनता को पूरी कर सके। मैक्समूलर तो यह भी घोषणा कर रहा है कि संसार में जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है, अपने पूर्वजों का सम्मान चाहता है, मानवता का सच्चा तथ्य जानना चाहता है और जो अपनी बुद्धि को विकसित करना चाहता है उसके लिए आवश्यक है कि वह वैदिक साहित्य का अध्ययन करे। उसके अपने शब्द ये हैं—

'I maintain that every body who cares on himself, on his ancestors, on his history, on his intellectual development a study of Vedic literature is indispensable.

वेदों की इस महिमा को मूढ़ भारतीय न जान सके और जो पराए थे उन्होंने कितनी महिमा गाई—जब यह बात हम सोचते हैं तो हृदय विदीर्ण हो जाता है। आर्यसमाज का इतना धन एकत्रित हुआ, परन्तु वेद की पूजा में कितना व्यय हुआ—यह जनता जानती है।

वास्तव में बात यह है कि हमने वेदों को अपनाया नहीं। ऋषि दयानन्द के सारे जीवन का सार एक था और वह था—वेदों की महिमा बताना।

यहां लघुकाय लेख में सारी विद्याओं की सूची देकर और उनकी वेद-मूलकता सिद्ध करना असम्भव है। एक-एक विषय पर स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखा जा सकता है। अतः यहां केवल वेदवाणी के एक-दो वाक्यों को ही पाठकों के सामने रखा जायेगा और उससे सारी अमूल्य अनादि वेदवाणी की महत्ता ज्ञात हो जावेगी।

आयुर्वेद—चिकित्सा शास्त्र वेद से लिया गया—इस पर स्वयं सुश्रुत तथा चरक में वेदों की उपजीव्यता को स्वीकार किया है।

'इह खल्वायुर्वेदो नाम यदुपांगमथर्ववेदस्य अनुत्पाद्यैव प्रजाः श्लोकशतसहस्रमध्यायसहस्रं च कृतवान् स्वयंभूः।

अर्थात्—यह सम्पूर्ण आयुर्वेद नामक शास्त्र अथर्ववेद का उपांग है। इसको स्वयम्भू ने एक लाख श्लोकों में एक हजार अध्यायों में सृष्टि के प्रारम्भ में विस्तारसहित लिखा।

वेदों मे शल्य-शास्त्र (Surgery) तथा चिकित्सा के मन्त्र भरे पड़े हैं, इसमे निम्नलिखित प्रमाण ध्यान देने योग्य हैं—

'Verses on medicines, Hygine and Surgey etc. lie scattered through out the Vedas. The Rig Veda mentions the names of a thousand and one medical drugs. Indeed the rudiments of Embryology, Midwifery, Child managemant and Sanitation were formulated in the age of the Vedas and Brahmanas. But the Vedic Aryans had a regular armoury against pain and suffering which is in no way inferior to our present day Materia Medica.'

ये वाक्य श्री कुन्जलाल भिषक्रत्न ने अपने सुश्रुत के अंग्रेजी अनुवाद में कहे हैं। संक्षेप में इसका तात्पर्य यह है कि वेदों में चिकित्सा शास्त्र का पूर्ण वर्णन है। उसमें शल्यविद्या भी छिपी है। वर्तमान काल का चिकित्सा शास्त्र उससे किसी भी बात में बढ़कर नहीं।

इसके अतिरिक्त गणित विद्या, ज्योतिष, पृथिवी और सूर्यादि मण्डलों का आकर्षणानुकर्षण (Gravitation), अर्थशास्त्र (Economics), नीति शास्त्र (Polity), रसायनशास्त्र (Chemistry) दर्शन (Philosophis) स्थापत्य कला (Architect) आदि अनेकों ज्ञात अज्ञात विद्याओं का स्रोत वेद है।

(क्रमशः)

उत्तम खेती [कृषमित् कृषस्व]

प्रा० श्री भद्रसेन जी, डाकघर साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

रोटी-कपड़ा और मकान से जुड़े हुए सारे कार्य हाथों से होते हैं। हाथों से काम करने से कोई हल्का दीन हीन नहीं हो जाता। एक तो ये काम ऐसे है, जिन की सबको सबसे पहले जरूरत होती है, इनके बिना किसी की भी जीवन गाड़ी नहीं चलती और इनसे सबका भला ही होता है। जब किसी का इनसे बुरा नहीं होता है तो फिर हाथ का काम पाप या हल्का कैसे हो सकता है। अपितु हाथ के इन कार्यों को करते हुए करने वालों में गौरव की भावना होनी चाहिए कि हम ऐसा कार्य कर रहे हैं, जिस की सब को जरूरत है तथा ये सबकी पहली जरूरतें हैं। शिक्षित होने का यह अभिप्राय तो नहीं कि हाथ से काम न किया जाए। पढ़ाई से तो कार्य करने का ढंग और लाभ स्पष्ट होता है।

हम सब अपने रोज के जीवन मे रोटी, कपडा, मकान, वाहन और अनेक तरह के यन्त्र बरतते हैं। जब ये चीजे हमारे लिए उपयोगी हैं तो फिर इन को बनाने और ठीक करने वाले हल्के कैसे हुए? वस्तुत: जो जितनी ईमानदारी से अधिक से अधिक के भले का कार्य करता है, वह उतना ही महान है। उदाहरण के लिए वस्त्र केवल सर्दी गर्मी से ही नहीं बचाते, वे हमारी नग्नता, बेशर्मी को भी ढकते हैं। इसी लिए ही सामाजिक जीवन मे इनका बहुत महत्त्व है। सभ्यता सौंदर्य देने वाले वस्त्र किसी न किसी की मेहनत से बन और सिल कर सामने आते हैं।

हां, आज हम महिला सिलाई केन्द्र का उद्घाटन कर रहे हैं। भारतीय परम्परा में नारी को घर की जिम्मेवारी दी गई है। घरेलू कार्य के साथ घर बैठे ही बैठे सिलाई का काम किया जा सकता है। घर की पहरेदारी के साथ घर का धन बचता है और आर्थिक स्वावलम्बन आता है। सिलाई भी एक कला है, जीवन मे कभी भी यह विशेष सहारा हो सकती है और साथ ही साथ घरेलू कार्य भी चल जाता है। अत: नारी के लिए यह "एक पंथ दो काज" हो जाता है। वस्त्र जीवन की जरूरी जरूरत है तो ऐसे कार्य को गौरव के साथ एक गुण मान कर अपनाना चाहिए। इस तरह के हस्तकला के कार्य से ही आज के भारत की बेरोजगारी हल हो सकती है।

इस समारोह के बाद में अपने मित्रों से मिला और उनके सामने एक प्रस्ताव रखा कि मैं आप की सहायता करना चाहता हूं। आप सब अपने अपने मन में सोचें कि प्राध्यापक मानवेन्द्र जी की प्रेरणा के अनुसार जिसको जो हस्तकला का कार्य पसन्द हो, उसके लिए वह तैयार हो जाए। मैंने अपने पिता जी से बातचीत कर ली है, मैं अपनी जमीन में से कुछ जगह देता हूं, तुम में से एक पशु पालन का धंधा अपनाए। उस का दूध हम सब के घरों में जायेगा। शुरू में दो दुधारू पशु खरीदने के लिए पैसे भी मैं ही उधार दूंगा। हमारे खेतों में बारह मास चारे की भी व्यवस्था होगी यह सारा पैसा दूध के माध्यम से ही काटा जाएगा, अन्त में पशुओं वाली जगह भी उसके नाम बेच दी जाएगी। तभी गोपाल ने कहा—यह काम मैं लेता हूं और अपने नाम को चरितार्थ करने का भी यह एक अवसर है।

यह ठीक है कि कार्य सीखने पर शुरू में पैसा नहीं मिलता। इस के लिए मैं अपने खेतों मे एक बाग लगाना चाहता हूं। मैंने अपने प्राध्यापक से अपने खेतों की देख भाल करा ली है। उन की योजना के अनुसार यह कार्य चलेगा, शुरू मे आधा दिन बाग के लिए कार्य। जब बाग तैयार हो जाएगा तो एक व्यक्ति मेरे साथ इस में हिस्सेदार बन सकता है।

बाग के साथ मैं सब्जी उत्पादन केन्द्र भी शुरू करूंगा। उस में एक मेरा भागीदार बन सकता है। सब्जियों के साथ उनके बीजों के व्यवसाय का कार्य भी किया जाएगा। अत: एक साथी इस कार्य के लिए भी चाहिए ही। ये दोनों कार्य लाभ के आधार पर हिस्सेदारी के होंगे। हां, जिन्हें कोई हस्तकला सीखनी हो, वे आधा दिन बाग आदि में कार्य कर सकते हैं। इस तरह से आमों के आम गुठलियों के दाम की बात हो जाएगी। हमारी यह योजना आपस के सहयोग और विश्वास से बड़ी अच्छी चल रही है। सभी हर तरह से सन्तुष्ट हैं।

जब मैं कृषि में स्नातक हो कर लौटा, तो तब तक मेरे कुछ साथी अपना अपना कारोबार सीख कर अच्छे होशियार हो गए। तब कर्मवीर जी से सभी का विशेष सम्पर्क हुआ। कर्मवीर जी की विशेष योजना के अनुसार सड़क के किनारे हम ने यह कार्यशाला और दुकान बना ली। यह सारा कार्य बड़ी अच्छी प्रकार से चल रहा है। सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप बेरोजगारी के हल के लिए भी यथाशक्ति अपना योगदान दे रहे हैं।

आसपास के ग्रामों की इच्छा का ध्यान रखते हुए इस वर्ष से हम सिलाई केन्द्र को भी गांव के अन्दर से हटाकर यहां ले आए हैं। वर्ष में कम से कम दो बार प्रा० मानवेन्द्र जी यहां आते हैं। हम सब के कार्य की वे देखभाल करते हैं। प्रगति के लिए प्राय: कोई न कोई उनसे हमें सुझाव भी मिलता है। हम सब मिल कर उन के विचारों को सुनने का भी आयोजन करते हैं। इस से हम सबका आपस में सहयोग और विश्वास भी खूब बढ़ता है। हमारे परस्पर के सद्भाव एवं संगठन की सफलता को देख कर अन्यत्र भी इस प्रकार की व्यक्तिगत या सामूहिक योजनाएं प्रारम्भ हो रही हैं।

सोमेश—मित्र सुभाष तुम से यह सब सुन कर बहुत ही अच्छा लगा कि तुमने एक पंथ दो काज के अनुसार यहां अपने आप को आर्थिक दृष्टि से समर्थ बनाया है। यहां इसके साथ अनेकों का भला करके दूसरों को भी राह दिखाई। अच्छा धन्यवाद, फिर कभी पुन: बैठेंगे।

स्वर्ग बनाओ घर को

रचयिता—श्री हरबंस लाल जी "हंस" [illegible]

स्वर्ग समान बनाना घर को बच्चों का कोई खेल नहीं।
नर्क समान है वो घर जिसमें प्यार नहीं और मेल नहीं॥

उमड़ पड़ेगा प्यार का सागर जब हुए एक के दिल में।
एक दूसरे के हमदर्दी होंगे फिर मुश्किल में।
नफरत ईर्ष्या काला मुंह कर जाय [illegible] में।
प्रेम के आगे द्वेष घृणा की चलनी सकेगी [illegible] नहीं॥
नर्क समान है वो घर जिसमें......

राम सिया ने प्रेम से, जग को अद्भुत पाठ सिखाया।
बिछुड़ गए पर एक दूसरे को न कभी भुलाया।
[illegible] न सकेगा प्यारा पावन अमर दिया चमकाया।
हुए [illegible] से भी परीक्षा हुये कहीं पर फेल नहीं॥
नर्क समान है वो घर जिसमें......

कृष्ण रुकमणी ने भी कैसा सच्चा आदर्श दिखाया।
रहे मुहब्बत के संग जग में जीवन अमर बनाया।
वो जिनसे सम्पर्क के कारण अर्जुन ने यश पाया।
समझा राज उन्होंने था दीपक बिन बाती तेल नहीं॥
नर्क समान है वो घर जिसमें......

मस्त बहारों से खाली जो वो कोई गुलजार नहीं।
आभा आकर्षण न जिस में वो हीरों का हार नहीं।
स्वर्ग धाम का प्रेम आत्मा "हंस" जिसे स्वीकार नहीं।
उस गृहस्थ की तीन काल में ठीक चलेगी रेल नहीं॥
नर्क समान है वो घर जिसमें......

श्रीमती उर्मिल भाटिया का देहावसान

स्त्री आर्य समाज बरनाला (संगरूर) की मन्त्री, श्री यशपाल जी भाटिया भू. पू. हैडमास्टर गान्धी आर्य हाई स्कूल बरनाला की धर्म पत्नी का 30-3-90 को हृदय गति रुक जाने से करनाल में अपने सुपुत्र के पास देहावसान हो गया। उनके अन्तिम शोक दिवस में करनाल तथा बरनाला के बहुत से प्रतिष्ठित आर्य स्त्री पुरुषों ने भाग लिया और उन्होंने श्रद्धान्जलियां भेंट की। उनके सुपुत्र श्री डॉ० रवि भाटिया और अशोक भाटिया ने निम्न संस्थाओं को दान दिया।

आर्य समाज अर्बन ऐस्टेट करनाल 501 रु०, श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल 501 रु०, स्त्री आ. स. अर्बन स्टेट 101 रु०, रघुनाथ मन्दिर 201 रु०, केन्द्रीय आर्य सभा करनाल 101 रु०, आर्य समाज दयालपुरा करनाल 101 रु०, आर्य युवक दल करनाल 101 रु०, स्त्री आर्य समाज सदर बाजार करनाल 101 रु० भाटिया सभा दिल्ली 101, आ. स. बरनाला 101, दयानन्द माडल स्कूल बरनाला 101, आर्य माडल स्कूल बरनाला 101, गौशाला बरनाला 101, गीता भवन बरनाला 101, श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला पांच हजार रुपया छात्रवृत्तियों के लिए, गान्धी आर्य हाई स्कूल बरनाला 2500 रु० छात्र वृत्तियों के लिए, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को 1100 रु० दान दिया।

सम्पादकीय—

मानव जीवन में यज्ञ का महत्त्व 2

इसी लेख माला के पिछले लेख में मैंने लिखा था कि कई पाश्चात्य वैज्ञानिक यह अनुसंधान कर रहे हैं कि मनुष्य के शरीर पर यज्ञ का क्या प्रभाव पड़ता है? इसी के साथ वह यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि वनस्पति पर भी इसका क्या प्रभाव पड़ता है? इसे देखने के लिए पिछले दिनों केरल में एक बहुत बड़ा यज्ञ किया गया था। यज्ञ के नाम पर हमारे देश में बहुत कुछ होता है। जब हम यज्ञ की बात करते हैं तो उसका यह अभिप्राय नहीं कि वही यज्ञ होता है, जो हम आर्य समाज में करते हैं। कई व्यक्ति केवल अग्नि प्रज्वलित करने और उसमें थोड़ी सी सामग्री डालने और दो चार मन्त्र पढ़ने को ही यज्ञ कह देते हैं। हमारे सनातनधर्मी भाई जो यज्ञ करते हैं वह हमारे यज्ञ से पूर्णतया भिन्न होता है, जो यज्ञ केरल में किया गया है, और फिर [illegible] में किया गया है, वह कई दिन तक चलता रहा और उसमें कई मन घी और सामग्री डाली गई। जो वैज्ञानिक बाहर से आए थे, वह यही जानना चाहते थे कि इस प्रकार के यज्ञ का मनुष्य के जीवन पर और उसके शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है। जो भाई हरिद्वार गए हैं उन्होंने वहां देखा होगा कि वहां एक गायत्री नगर है, वहां भी यज्ञ होता है और इस बात का अनुसंधान किया जाता है कि गायत्री के यज्ञ द्वारा मनुष्य के शरीर और मस्तिष्क पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है? वहां भी कई डाक्टर रहते हैं, जो यज्ञ के पश्चात् उन व्यक्तियों के शरीरों को देखते हैं, जो उस यज्ञ में सम्मिलित होते हैं, इस प्रकार यज्ञ पर कई प्रकार के परीक्षण होते रहते हैं।

परन्तु हमारे देश में यज्ञ प्रणाली को पुनर्जीवित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को मिलना चाहिए और उसके पश्चात् आर्य समाज को। कहने को तो यज्ञ पहले भी होते थे, परन्तु उन्हें यज्ञ कहना यज्ञ का अपमान करना है। क्योंकि उनमें पशुबलि भी होती थी, और इसके साथ ही बहुत कुछ वह भी होता था, जो किसी यज्ञ में नहीं होना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने एक नया रास्ता दिखाया और बताया कि मनुष्य के जीवन को उन्नत करने के लिए उसके 16 संस्कार होने चाहिएं। प्रत्येक संस्कार एक प्रकार का यज्ञ ही होता है और इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति के लिए पंच महायज्ञ करने भी आवश्यक बताए गए हैं। इसलिए हम कई बार कहते हैं कि मनुष्य का जीवन यज्ञमय होना चाहिए। अर्थात् जिस प्रकार हम सब कुछ यज्ञ में समर्पित कर देते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने जीवन को अपने देश, धर्म और समाज की सेवा के लिए समर्पित कर देना चाहिए।

यज्ञ प्रणाली को पुनः जीवित करने का श्रेय यदि आर्य समाज को मिलता है तो यह भी देखना चाहिए कि आज यज्ञों के प्रति जनता की रुचि कम हो रही है या बढ़ रही है? मैं तो यह भी [illegible] हूं कि आर्य समाज के प्रचार का एक मात्र साधन [illegible] आज हमारे पास वह पुराने वक्ता नहीं हैं, जिन्हें सुनने के लिए हजारों की संख्या में लोग आया करते थे। न ही [illegible] होते हैं जैसे पहले हुआ करते थे। इस स्थिति में यह आवश्यक है कि यज्ञ को लोकप्रिय बनाया जाए। जिस प्रकार हमारे सिक्ख भाई अपना प्रत्येक समारोह अपनी गुरुवाणी पाठ से आरम्भ करते हैं, इसी प्रकार [illegible] यज्ञ का इतना प्रचार कर देना चाहिए कि केवल आर्य समाजी ही नहीं, प्रत्येक हिन्दू चाहे वैयक्तिक रूप में या सामूहिक रूप में [illegible] यज्ञ से ही प्रारम्भ करे। मैंने यह भी देखा है कि यज्ञ में आहुति [illegible] के लिए [illegible] आते ही हैं कई सिक्ख भी आते हैं। इस प्रकार [illegible] एक यज्ञ होता है तो वह आर्य समाज के प्रचार का एक साधन बन जाता है। इसलिए यज्ञ को प्रोत्साहन देकर हम इसे अपने प्रचार का साधन बना सकते हैं।

परन्तु इसके लिए यह भी आवश्यक है कि यज्ञ को ऐसा माध्यम बनाया जाए जिसके द्वारा साधारण व्यक्ति भी प्रचार करा सके। यज्ञ तो [illegible] कई आर्य समाजी करते हैं और कराते हैं, परन्तु आर्य समाज में भी कुछ व्यक्तियों ने यज्ञ को धन बटोरने का एक साधन बना लिया है। वह ऐसे यज्ञ करते हैं, जो साधारण व्यक्तियों के लिए कराने सम्भव नहीं। उनके एक यज्ञ पर कई-कई हजार रुपये व्यय हो जाता है। इसका यह परिणाम है कि यज्ञ की जो सर्वप्रियता होनी चाहिए, वह नहीं हो रही। हमारे सामने केवल एक ही उदाहरण

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का निधन

आर्य समाज के एक और वीतराग वीर सन्यासी इस संसार से चले गए। वह वास्तव में एक सच्चे सन्यासी थे। हमारे शास्त्रानुसार सन्यास लेने और सन्यासी कहलाने का अभिप्राय यही होता है कि जो पुत्रैषणा, वित्तैषणा, और लोकैषणा इन तीनों को त्याग करके अपने आपको मानव मात्र की सेवा में लगा दे। श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी के विषय में कहा जा सकता है कि वह इस कसौटी पर पूरे उतरते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में ही नहीं अपितु वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में व्यतीत कर दिया। अपने लिए उन्होंने कुछ नहीं बनाया और अपना सर्वस्व गुरुकुल घरौण्डा के लिये दे दिया। वह संस्कृत के महान् पंडित थे, जब कभी वह बोलते थे, ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे कोई शेर दहाड़ रहा हो, पंजाब विशेष रूप से उनका ऋणी है, क्योंकि पंजाबी सूबा के विरोध में उन्होंने भी अनशन किया था। वह किसी से डरते नहीं थे। न उन्हें कभी कोई लालच होता था, न किसी की खुशामद करते थे। इसलिए मैंने लिखा है कि एक वास्तविक सन्यासी इस संसार से चला गया है। यदि आर्य समाज को अपने सन्यासियों पर गर्व रहा है, तो बहुत कुछ स्वामी रामेश्वरानन्द जैसे सन्यासियों के कारण ही।

वह तो चले गए अपने पीछे अपनी याद छोड़ गए, बहुत देर तक आर्य समाज उन्हें याद करता रहेगा। क्योंकि उन्होंने आर्य समाज की जो सेवा की थी, वह निष्काम भाव से की थी। किसी अधिकार या पदवी के लिए नहीं। हमें वह एक रास्ता दिखा गए हैं, यदि हम उस पर चल सकें, तो यही श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

—वीरेन्द्र

एक और समाज सेविका चल बसी

आजकल बहुत कम ऐसे व्यक्ति व महिलाएं मिलती हैं जिनके दिल में आर्य समाज के लिए वैसी श्रद्धा व सेवा की भावना होती है जैसी की जालन्धर की स्त्री आर्य समाज की प्रमुख सदस्या व अधिकारी श्रीमती लज्जावती भारद्वाज में थी। उनका सारा जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पित था। वह तन, मन, धन से आर्य समाज की सेवा किया करती थी। उनके हृदय में आर्य समाज के लिए एक तड़प थी। ऐसी विदुषी व कार्यकर्त्ता बहन का चला जाना आर्य समाज के लिए दुःखदायी है। इसके साथ ही मृत्यु तो वैसे सभी की होती है परन्तु उनका देहावसान भी अपने देश से बहुत दूर ब्राऊन कास्टर (यू० के०) में हुआ। वह वहां अपनी सुपुत्री के पास गई हुई थी। उनके चले जाने का हम सबको बहुत दुःख है। उन्होंने अपने देहान्त से पूर्व अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि उनके बाद आर्य समाज की सेवा होती रहे। ऐसी बहनें और भाई आजकल बहुत कम मिलते हैं। वह तो चली गई परन्तु एक ऐसी जगह खाली कर गई जिसे भरना आसान न होगा। हम सब विवश हैं और इसमें कुछ भी नहीं कर सकते। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को शान्ति प्रदान करे और हमें यह शक्ति व प्रेरणा दे कि हम श्रीमती लज्जावती जी भारद्वाज की अन्तिम इच्छा को पूर्ण कर सकें।

—वीरेन्द्र

है, जहां यज्ञ को वास्तव में जनता का यज्ञ और जनता के लिए ही बनाने का प्रयास किया गया था। वह था जो यज्ञ श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने चम्बा में किया था। चार मास तक एक करोड़ गायत्री मन्त्रों की आहुतियों से वह यज्ञ किया गया। मैं उसे चमत्कार समझता हूं। आज के युग में और आज की परिस्थितियों में ऐसा यज्ञ करना सम्भव दिखाई नहीं देता। स्वामी सुमेधानन्द जी ने यह करके दिखा दिया। उसी के साथ यह प्रश्न भी उठा कि यदि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज इतना बड़ा यज्ञ कर सकते हैं, तो छोटे स्तर पर ऐसे यज्ञ क्यों नहीं हो सकते हैं? यह उसी स्थिति में सम्भव है, यदि कोई संस्था इस विषय में आर्य समाज का नेतृत्व करे। वर्तमान परिस्थितियों में इसे आज एक आन्दोलन कहें या अभियान कहें? आर्य समाज में यह आवाज उठनी चाहिए कि यदि आर्य समाज को बचाना है, तो यज्ञ को प्रभावशाली बनाने और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। पाश्चात्य वैज्ञानिक आज यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि यज्ञ का मनुष्य जीवन पर और उसके शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है? तो कोई कारण नहीं कि आर्य समाज जिसने यज्ञ प्रणाली को पुनर्जीवित किया था, वह इस ओर ध्यान न दें और मानव के उत्थान का इसे साधन न बनाएं।

—वीरेन्द्र

दिवंगत आर्य समाजी—

पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी

लेखिका—सरस्वती देवी जी आर्या धर्मपत्नी स्व० रामकृष्ण दास जी (आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

पूज्य महात्मा जी का जन्म 1 जनवरी 1898 योगीवाला (पाकिस्तान) में हुआ था। आप का पूर्व नाम आशानन्द था। अपने चाचा ऋजुराम जी द्वारा धार्मिक प्रेरणा तथा स्वामी सर्वदानन्द जी की दीक्षा पर वैदिक धर्म प्रचार का दृढ़ सकल्प लिया। उनके परिवार में चार पुत्र एक पुत्री, पुत्र बधुयें, दामाद, पौत्र, पौत्रियां तथा पू० माता जी (उनकी धर्म पत्नी) हैं। सब ही सब प्रकार से सुशिक्षित तथा सम्पन्न हैं। सभी वैदिक धर्म के अनुयायी और यज्ञ प्रेमी हैं। उनके छोटे भाई श्री बिहारीलाल जी आजकल 'आर्य भिक्षु' के नाम से वानप्रस्थी महात्मा हैं और रोहतक साधना आश्रम में कार्य भार सम्भालते हैं। पुत्रों के नाम श्री जैमिनि जी, बलदेव जी, महावीर जी तथा विश्वबन्धु हैं। पुत्री सुवीरा है। अपनी धर्म पत्नी की स्वीकृति से सन् 1945 में उन्होंने वानप्रस्थ में प्रवेश किया। उस समय उन की आयु लगभग 48 वर्ष होगी तथा एक पुत्र व पुत्री अविवाहित थे। तीन पुत्रों के विवाह हो चुके थे लेकिन पौत्र अभी हुआ नहीं था। किसी ने कहा अभी वानप्रस्थ लेने में देरी है, आयु भी पचास वर्ष की नहीं हुई है तो उस तप और त्याग की दिव्य मूर्ति का सरल सा उत्तर था "मैं अपने गृहस्थ के 25 वर्ष पूरे कर चुका हूं, मेरा विवाह कुछ शीघ्र हो गया था" पूज्या माता जी के विषय में कहा करते थे इस 'देवी' ने बहुत सहयोग दिया है, मुझको।

वह जब गृहस्थ में थे तब भी मोह माया से ऊपर ही रहे। बाहर के कार्यों में ही अधिक व्यस्त रहते थे। गांव में सब उन्हें मन्त्री जी के नाम से जानते थे। गांव के जितने भी झगड़े व समस्यायें होती थीं उन्हें वह शांत भाव से सुलझाया करते थे। सभी को उनका न्यायोचित उत्तर मान्य होता था। वानप्रस्थ लेने के पश्चात वह गुरुकुल तुगलकाबाद की देख रेख करते थे, वहीं हमारे पूज्य पिता जी—श्वसुरजी (श्री ला० बुद्धिप्रकाश जी) से भेंट हुई। वह स्वामी जी के सरल स्वभाव पर मुग्ध हो गए और उनसे नए बांस आर्य समाज में आने का आग्रह किया, जिसे पूज्य स्वामी जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस समय पिता जी आर्य समाज नये बांस के प्रधान थे। उस समय से अन्तिम समय तक पूज्य स्वामी जी का नए बांस आर्य समाज में निवास का मुख्य स्थान था। पूज्य स्वामी जी का यहां आने के बाद कार्य-क्षेत्र दिनों दिन बढ़ता गया।

हमको कारण वश सन् 1955 में घर छोड़ना पड़ा। उस समय मेरी तीन पुत्रियों के विवाह हो चुके थे। चार पुत्रियां हमारे साथ थीं। तब से अन्तिम समय तक पूज्य पिता (स्वामी जी) की छत्र छाया हमारे साथ रही। हम जहां भी रहे, जैसे भी रहे, दुःख से अथवा सुख से उन की स्नेह वर्षा और आशीर्वाद हमें सदैव मिलते रहे, और वे सदा ही हमारे पास आते रहे। जब जब भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पता नहीं कौन सी अज्ञात शक्ति उनको लाकर हमारे सामने खड़ा कर देती और हम फिर सब दुःख भूल कर उनके आदेशों का पालन करने में लग जाते।

यज्ञ मय जीवन—उन में यज्ञ के लिए असीम श्रद्धा थी। उनका जीवन यज्ञ-मय था। अपने जीवन-काल में अनेकों ही यज्ञ कराये उन्होंने। उन की यज्ञ-शैली में कितनी मधुरता थी, कितनी सरलता! जिस समय यज्ञ कराने यज्ञवेदी पर बैठ जाते उस यज्ञशाला के चारों ओर का वातावरण कितना सुखद और शांतिमय होता, यह अनुभव की ही वस्तु थी। उनके यज्ञ में आहुति देने का सबको पूरा अधिकार था पर "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" के अनुसार वे जितने नम्र थे जितने ही अनुशासन की पालना में कठोर! उनका नियम कोई भंग न कर सकता था। बिना यज्ञोपवीत के किसी को आहुति देने का अधिकार वे नहीं देते थे। एक बार की बात है। हमारे यहां यज्ञ करा रहे थे। सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति थी। उन का पौत्र और पौत्री दोनों आहुति देने बैठे। यज्ञोपवीत नहीं था, फिर पिता जी (महात्मा जी) बिना पूछे तो आहुति देने की आज्ञा ही नहीं देते थे। दोनों बच्चे बिचारे शर्म से पानी-पानी हो गए फिर भी पिता जी ने कहा—आज दण्ड स्वरूप तुम को उपवास रखना होगा।' यह भी उन की विशेषता, सबसे समान व्यवहार, जिस में अपने और पराए के भेद के लिए कहीं कोई अवसर न था।

यज्ञ के लिए उन के पास आने वाला कभी निराश नहीं लौटा। वह कहते थे यज्ञ मेरी खुराक है। यज्ञ करने में मुझे कभी थकावट नहीं आती। कभी कभी तो उनको दिन में चार चार प्रोग्राम करने पड़ते थे। उन्होंने कभी नहीं कहा कि मेरी शक्ति से बाहर है। यही सबसे बड़ा कारण था जिसने उन्हें शीघ्र थका दिया।

जब कभी हमारे यहां आते तो बड़े थके होते। मैं उनसे कहती—पिता जी अब आप आराम करें, इतनी भाग दौड़ के लिए अब आपका स्वास्थ्य आज्ञा नहीं देता। उनका छोटा सा उत्तर होता—"पुत्री! मेरे भाग्य में आराम नहीं, इतनी दूर दूर से जो आशा लेकर आते हैं उन्हें निराश नहीं लौटाया जाता।" दूसरों के समय का विशेष ध्यान रहता, उन्हें। जिन्हें समय दिया होता वहां समय पर पहुंचना उनकी विशेषता थी। कभी कभी तो इतना थके होते कि उन को देखने में लगता कि उठने की भी शक्ति नहीं है। ऐसी स्थिति में भी कर बद्ध प्रार्थना और अनेक अनुनय विनय पर ध्यान न देकर वहां पहुंच जाते जिन महानुभावों को समय दिया होता। उन का उत्तर था—"मैं यहां आराम करूं जो आयेंगे वह परेशान होंगे। उन्होंने अपनी परेशानी को नहीं, सदा दूसरों की परेशानियों व दुःख को देखा।

उनके यज्ञ में कहीं आडम्बर नहीं था। यथा शक्ति सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा देते थे। एक अत्यधिक निर्धन परिवार था जो सवा लाख गायत्री की आहुतियों से यज्ञ करना चाहता था। उस परिवार को केवल दो जौ की आहुति से यज्ञ पूरा करने की प्रेरणा दी। कितनी सरलता, कैसी सात्विकता!

आहार व्यवहार

खान पान भी उनका अत्यन्त सादा था। जो भी मिलता उनके लिए वही अमृत था, चाहे अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल। प्रातः यज्ञ के पश्चात् अगर दो फुलके और एक गिलास लस्सी मिल जाती तो कहते यह मेरा पूरा भोजन है, पूरे दिन के लिए। कभी उन्होंने फलों या मेवों की आवश्यकता नहीं व्यक्त की, और न उस सरल आत्मा के लिए किसी को समय का ध्यान था। अब भी जो मिला वही उचित था। जब वह पूर्ण स्वस्थ रहे तब पचता रहा "प्रतिकूल भोजन" को भी अनुकूल ही समझते रहे। कभी कभी कहते—मैं तो पत्थर भी पचा लेता हूं। लेकिन कितनी बार यह सब सम्भव था? अब उनको असमय पर तथा प्रतिकूल भोजन मिलने से वह अस्वस्थ हो जाते। मैंने कितनी ही बार प्रार्थना की, आप अपने भोजन में सावधानी बरतें। आपके इतने अधिक काम शेष हैं और आपका स्वास्थ्य यह आज्ञा नहीं देता कि जो भी मिले खाने को वही ठीक है। उस पर उन का उत्तर होता "मैं उन गृहस्थियों पर भार नहीं बना जो हम को बुलाते हैं। उन की अपनी भी तो सुविधाएं हैं।"

वह सदा दूसरों के दुःख सुख को ही अपना दुःख और सुख समझते थे। उनके जीवन की एक घटना इस प्रकार है कि एक बार वह हमारी समाज में यज्ञ करा रहे थे। उन दिनों एक माता जी ने उनसे भोजन की प्रार्थना की, दूसरे दिन के लिये उन्होंने स्वीकार कर ली। लेकिन दैव वशात् वह माता उस दिन भूल गई और घर चली गई। जब वह चली गई तो एक दूसरी बहिन ने तथा मैंने बहुत कहा कि उनके घर भोजन आप कल कर लेना आज हमारे साथ चलें। वह शायद भूल गई हैं। लेकिन वे तो महान थे, न—"बोले मैं स्वयं चला जाऊंगा। जो भी रूखा सूखा होगा इस भिखारी को मिल जायेगा। हम भिखारियों को क्या संकोच? वहां जा कर झोली फैला दी भिक्षा मिल जाएगी।" और सचमुच वह वहां पर चले गए स्वयं, और जो भी मिला भोजन कर आए। आज के दिन इतनी महत्ता किस में है। कोई दूसरा होता उनके स्थान पर तो अपना अपमान समझ कर उनके दुबारा बुलाने आने पर भी न जाता। (क्रमशः)

बुद्धिजीवी सम्मेलन

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशान्त वेदालंकार ने आज यहां बताया कि उनके पास सैकड़ों पत्र आये हैं जिन में 30 सितम्बर, 1989 को दिल्ली में हुए सम्मेलन में व्यक्त विचारों को क्रियान्वित करने की प्रगति पर प्रश्न किये गये हैं।

डा० प्रशान्त वेदालंकार ने बताया कि अभी उक्त सम्मेलन में व्यक्त विचारों को संकलित व सम्पादित करने का कार्य चल रहा है। ये विचार शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इनके प्रकाशित होने पर इन्हें क्रियान्वित करने की शीघ्र ही योजना बनायेंगे। डा० प्रशान्त वेदालंकार ने यह भी बताया कि जयपुर में 20-5-1990 को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी समापन समारोह में भी बुद्धिजीवी सम्मेलन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने संयोजक की उपस्थिति में कार्यकर्ता के रूप सम्मेलन रखे हैं।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
712, कमलानगर, दिल्ली—110007

टेलीफोन नम्बर बदला

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का टेलीफोन नम्बर बदल गया है।

अब घर का नम्बर	59746
कार्यालय सभा प्रधान जी	57867
... ...	57868
सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन का नम्बर	73020 हो गया

है सभी बन्धु अंकित कर लें।

कश्मीर की कहानी—इतिहास की जुबानी

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ।

कश्मीर एक बार राष्ट्रीय समस्या बन गया है। इसलिए उसके पिछले इतिहास को समझने की कोशिश नहीं की जा रही। कोई कहता है कि यह भारत और पाकिस्तान के बीच झगड़ा है और कोई कहता है कि यह दो कौमों में है आज कश्मीर में एक वर्ग वह भी है जो यह कहता है कि यह एक इस्लामी देश है इसलिए इसका विलय पाकिस्तान के साथ होना चाहिए। 1947 में भी कुछ लोगों ने ऐसा ही कहा था। उस समय पाकिस्तान ने कुछ कबाइली लुटेरे कश्मीर में भेजे थे। आज वह बंदूक और बम भेज रहा है और वह कश्मीरियों से कह रहा है—

चढ़ जा बेटा सूली पर
भली करेंगे राम।

आज कश्मीर की सारी लड़ाई केवल इस दृष्टिकोण के आधार पर लड़ी जा रही है कि यह एक इस्लामी देश है लेकिन इतिहास इसका प्रतिवाद कर रहा है। मैं 1819 के बाद के इतिहास की बात नहीं कर रहा जब महाराजा रणजीत सिंह ने राजा गुलाब सिंह को कश्मीर में भेजा था और उसने अहमद शाह अब्दाली को पराजित करके कश्मीर के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। इतिहास कहता है कि अकबर ने 1586 में कश्मीर पर आक्रमण किया था और उस पर कब्जा कर लिया था। 1819 में कुछ कश्मीरी महाराजा रणजीत सिंह के पास गए और उनसे कहा कि उस समय के मुस्लिम शासक उन्हें बहुत तंग कर रहे हैं। महाराजा रणजीत सिंह ने अपने एक जरनैल राजा गुलाब सिंह को कश्मीर में उस समय की हिंदु जनता की रक्षा के लिए भेजा। उन्होंने ने कश्मीर को उस समय के मुस्लिम शासकों के पंजे से छुड़ा लिया और उसके साथ कश्मीर में न केवल मुस्लिम शासन समाप्त हो गया उसके कुछ देर बाद वहां डोगरा वंश का शासन शुरू हो गया। और वह 1949 तक रहा जब महाराजा हरिसिंह सत्ताच्युत हुए। इसलिए यदि जम्मू कश्मीर सही अर्थों में मुस्लिम शासन के अन्तर्गत रहा है तो 1586 से लेकर 1819 तक अर्थात् केवल 233 वर्ष। इस अवधि में ही कश्मीर जो एक हिन्दू देश था एक मुस्लिम देश बना दिया गया। लेकिन कश्मीर का इतिहास तो महाभारत काल से जोड़ते हैं। इतिहास के इस पहलू की ओर जाने से पहले मैं पाठकों को यह भी बताना चाहता हूं कि कश्मीर जो एक हिन्दू देश था मुस्लिम बाहुल्य वाला कैसे बन गया। इस्लाम को हमारे देश में आए लगभग 12 सौ वर्ष ही हुए हैं। सातवीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम नाम का एक अरब हमारे देश में आया था उन दिनों सिंध भी भारत का ही क्षेत्र था मुहम्मद बिन कासिम पहले सिंध में पहुंचा वहां लूटमार शुरू की। उस समय साथ उसने वहां इस्लाम का नाम लेने वाला कोई नहीं था। इतिहास यह भी कहता है कि तीसरी शताब्दी में महाराजा अशोक ने कश्मीर पर अपना शासन स्थापित कर दिया था। यदि कश्मीर में बुद्ध धर्म का प्रचार हुआ तो वह भी महाराज अशोक के कारण यदि सहाब आज कश्मीर का भाग है और वह बुद्ध धर्म का एक केन्द्र रहा तो वह भी केवल इसलिए कि सम्राट् अशोक के कारण सारा कश्मीर बुद्ध धर्म के प्रभाव में आ गया था।

प्रश्न किया जाएगा कि यदि कश्मीर वास्तव में एक हिन्दू देश था जहां सम्राट् अशोक शासन करते रहे और उनके बाद ललितादित्य नाम का हिन्दू राजा राज्य करता रहा है तो फिर यह एक मुस्लिम देश कैसे बन गया। इसका उत्तर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दिया है। वह कश्मीरी होने पर बहुत गर्व किया करते थे। जब वह जेल में बंद रहते थे अपनी बेटी इन्दिरा को वहां से पत्र लिखा करते थे जिनमें वह विश्व के इतिहास के विभिन्न पक्ष अपनी बेटी के सामने रखा करते थे ताकि उसे भी दुनिया के इतिहास का कुछ पता रहे। पंडित जवाहर लाल ने स्वयं कभी यह नहीं कहा था कि उनके बाद उनकी बेटी देश की प्रधानमन्त्री बने लेकिन वह शुरू से ही अपनी बेटी को अपने देश की बड़ी-बड़ी जिम्मेवारियां सम्भालने के लिए तैयार कर रहे थे। इसलिए वह इन्दिरा को जेल से पत्र लिखा करते थे। जिनमे विश्व के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएं इन्दिरा के सामने रखा करते थे। इसी तरह के एक पत्र में उन्होंने कश्मीर का उल्लेख करते हुए बताया था कि वहां अब मुस्लमानों का बहुमत क्यों है ? उन्होंने लिखा था—

"कश्मीर में बहुत देर तक हिन्दुओं को जबरदस्ती मुस्लमान बनाने का दौर चलता रहा है जिसके कारण 95 प्रतिशत हिन्दुओं ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था यद्यपि उनमें से कुछ ने अपने पहले हिन्दू रीति-रिवाज नहीं छोड़े थे। 19वीं शताब्दी के बीच उस समय के हिन्दू शासक ने यह महसूस किया कि जो लोग जबरदस्ती मुस्लमान बनाए गए थे उनमे से कई हिन्दू धर्म में वापिस आना चाहते हैं। उस राजा ने अपने कुछ प्रतिनिधि बनारस के पंडितों के पास भेजे उनसे यह पूछने के लिए कि जो हिन्दू मुस्लमान बन गए हैं क्या वह पुनः हिन्दू धर्म में वापिस आ सकते हैं। बनारस के पंडितों ने इसकी अनुमति देने से इन्कार कर दिया" यदि उस समय वह पंडित यह गलती न करते तो आज कश्मीर में ऐसे हालात पैदा न होते जो हम देख रहे हैं। इसीलिए तो मैं कहता हूं कि—

लम्हों ने खता की थी
सदियों ने सजा पाई है।

लेकिन कश्मीर की कहानी तो बहुत लम्बी और दिलचस्प है। हजारों वर्ष पुरानी है। इसे सुनने के लिए पाठक अगले अंक की प्रतीक्षा करें।

तीर्थराम बन गए रामतीर्थ

ले०—श्री नारायण भारद्वाज जगन्नाथ निवास रंगोपुर नई बस्ती, आजमगढ़

लाहौर नगर के कालिज में, था छात्र एक प्रतिभा शाली।
उसकी उत्तम थी बुद्धि प्रखर, वह प्रगतिवान मेधा वाली ॥
बुद्धि कुशाग्र करे प्रभावित, अध्यापक सहपाठी गण को।
प्रधानाचार्य भी नहीं बचे, करें गर्व पा छात्र सुमन को ॥

बुद्धि छात्र की भायी उनको, सो किया मनोहर कुछ निश्चय।
हो चयन प्रशासन के पद पर, जब छात्र प्रगति का हो संचय।
था उच्च प्रशासन सेवा में, हो सफल छात्र ये तीर्थराम।
होकर ऊंचा अधिकारी वह, हो पदासीन वह करे नाम।

जब इस निश्चय का समाचार, पा गया छात्र वह तीर्थराम।
गुरु प्रधान के निकट पधारे, वे किए बिना कुछ भी विराम।
बोले बड़े नम्र शब्दों में, मैंने अपनी यह ज्ञान फसल।
है लिखी लाभ को नहीं करी, मिल कर बांटे में बने सफल।

चाह नहीं मैं अधिकारी हूं, सेवा ही मुझको प्रेरक है।
सेवा करने मैं आया हूं, मुझको बनना बस सेवक है।
अधिकारी या अध्यापक में, मैं चयन करूं अपनी इच्छा।
मुझको शासन अधिकारी से, विद्यालय अध्यापक अच्छा।

प्रधानाचार्य जी का निश्चय, उनके निर्णय से हार गया।
बन कर प्राध्यापक धरती का, सचमुच हल्का हो भार गया।
वन में जाकर जीवन पल्टा, तीर्थ राम से रामतीर्थ हो।
वेदान्त पुष्प की ज्योति जला, धरा करी ज्यों स्वर्गतीर्थ हो।

वन पर्वत सरिता की धारा, हिंसक शेरों से गले मिले।
जिस ओर गए शिव स्वामी जी, उस ओर राम के दीप जले।
आडम्बर पाखण्ड मिटा कर, अध्यात्म पन्थ विकसाया था।
धर्म गगन से धूम्र हटा कर, वेदान्त नखत मुसकाया था।

कल्याण का मार्ग

ले०—प्रो० ओम प्रकाश जी नारंग एम०ए० जालन्धर

(गतांक से आगे)

तीसरे नम्बर पर देवता लोग उपस्थित हुए तो प्रजापति की ओर से उसी 'द' का प्रयोग किया गया और उनसे भी वैसा ही प्रश्न पूछा गया, किन्तु उनका उत्तर पहले से भिन्न था। उन्होंने कहा महाराज! आपने कहा है 'दमन करो'। अब जरा सूक्ष्म दृष्टि डालें तो पता लगेगा कि असुर मनुष्य और देवता मनुष्यों की तीन श्रेणियां हैं जो व्यक्ति सिर से लेकर पैर तक स्वार्थ में रत हैं, वह असुर हैं। ऐसे लोगों के लिए प्रजापति का आदेश दया 'है'। गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपने सुप्रसिद्ध दोहे में यही दर्शाया है—

दया धर्म का मूल है,
पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये,
जब लगि घट में प्राण॥

अर्थात असुर जब दया वृत्ति धारण करते हैं तो वे मनुष्यों की कोटि में आ जाते हैं। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनका अपनों का एक दायरा बना रहता है। ऐसे लोगों के लिए प्रजापति का उपदेश यह है कि इन अपनों के दायरे के बाहर भी लोग बसते हैं जिन्हें भूख-प्यास सताती है और उनके प्रति हमारा मानव के नाते कुछ कर्त्तव्य है। इस लिए अपनों के दायरे से बाहर निकल कर दान करना चाहिए अर्थात अपने और पराये का भेद को त्यागकर कुछ देना चाहिए

तीसरी श्रेणी देवताओं की है। धर्मात्मा, परोपकारी, विद्वान और दानवीर लोगों के लिए देवता शब्द प्रयोग किया गया है। जब मनुष्य परोपकार करने लगता है, या ज्ञानी और विद्वान बन जाता है तो सहसा उनमें अहंकार का उदय हो जाता है। शायद यह प्रसिद्ध लोकोक्ति इसी बात को दर्शाती है—'तप से राज, राज से नरक'।

त्याग के बाद तपस्या की बारी आती है। त्याग अति उत्तम भावना है जिसके बिना मनुष्य ऊंचा नहीं उठ सकता, परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। तपस्या का अर्थ है—हमे साधना के लिए गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, मुश्किलों और मुसीबतों से जूझने के लिए अपने दिल, दिमाग और शरीर को सबल बनाना है। तपस्या के बिना त्याग अधूरा रहता है इससे अगली सीढ़ी बलिदान की है। यह ठीक है कि बलिदानी कोई विरला ही होता है, परन्तु वे संस्थाएं और राष्ट्र की उन्नति करते हैं जिनमें समय-समय पर बलिदानी मनुष्यों का प्रादुर्भाव होता है। आज हम आजाद देश की हवा में सांस इसलिए ले रहे हैं कि हजारों लोगों ने आजादी प्राप्ति के लिए भीषण बलिदान किए। उन्होंने हंसते हंसते फांसी के फन्दे चूमें, भूख-हड़तालें करके जेलों में प्राण दिए और तूफानों से टकराकर भी अपने संकल्प पर अडिग रहे।

मन्त्र के अगले पद में यह कहा गया है कि हम लोग त्याग, तपस्या तथा बलिदान के मार्ग पर सूर्य और चन्द्रमा की तरह बढ़ते रहें। सूर्य ने तो कभी आराम के लिए प्रार्थना-पत्र नहीं भेजा, जबकि हम लोग कई प्रकार की छुट्टियां लेने के अतिरिक्त हड़तालों से भी संकोच नहीं करते। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं—

'हानि-लाभ जीवन-मरण यश-अपयश विधि हाथ'।

अर्थात जो कुछ धन, ऐश्वर्य, सुख-सम्पत्ति, यश और बल हमें प्राप्त हैं, वह समाज रूपी ईश्वर की ही देन है। इस लिए हमें 'पुनर्ददता' होना चाहिए इन वस्तुओं को समाज को अर्पित करने में संकोच नहीं करना चाहिए। आगे हमें 'अघ्नता' पर विचार करना है। इसका अर्थ है कि हमें किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए और न ही किसी से जबरदस्ती उसका अधिकार छीनना चाहिए। मन्त्र के अन्तिम पद में कहा गया है—'संगमेमहि' अर्थात् हम लोग मिल कर चलें। इसका भाव यह है कि हम लोग अपनी संगठन शक्ति को बढ़ायें। परस्पर प्रेम भावना से अपनी जन-शक्ति को बढ़ाना अत्यावश्यक है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का यह मन्त्र कितना मार्मिक है—

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं
वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे
संजानाना उपासते॥"

हिन्दी कविता में इसका अनुवाद इस प्रकार है—

प्रेम से मिलकर चलें,
बोलें, सभी ज्ञानी बनें,
पूर्वजों की भांति हम
कर्तव्य के मानी बनें।

अन्त में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि

"एक दीप दूसरा जलायें,
ऐसे अगणित होवें।
एक-एक कर जागे जनता,
ज्ञान ज्योत के द्वारा॥"

सत्यार्थ प्रकाश सर्वांग-धर्म शास्त्र

ले० स्व० डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

(गतांक से आगे)

मनुष्य आर्थिक उत्पादन अकेले नहीं करता। उद्योगपति, शिल्पी और श्रमिक सब परस्पर सहयोग से सम्पत्ति का का उत्पादन करते हैं, और परस्पर सहयोग से ही उत्पन्न-सम्पत्ति का तथा उपभोग किया जाता है। विश्व या सम्पूर्ण मानव समाज भी एक विशाल समुदाय है, जो बहुत से छोटे-बड़े राज्यों में विभक्त है। इन राज्यों में भी परस्पर सम्बन्ध होता है। सामाजिक व सामुदायिक जीवन में मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों का स्वरूप ऐसा होना चाहिये, जो सब के लिये हितकर हो। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः उसका हित-कल्याण इन सम्बन्धों के धर्मानुकूल व समुचित होने पर ही निर्भर करता है। इस दशा में एक आदर्श व सर्वाङ्ग-सम्पूर्ण धर्मग्रन्थ के लिये यह आवश्यक है कि उस द्वारा न केवल मनुष्यों के व्यक्तिगत सदाचरण व उत्कृष्ट जीवन के नियमों का प्रतिपादन किया जाय अपितु साथ भी यह भी बताया जाय कि समाज में रहता हुआ मनुष्य अपने सभी अन्य मनुष्यों के साथ किस प्रकार ऐसे बरत सकता है या ऐसे सम्बन्ध रख सकता है, जो न्याययुक्त और धर्मानुकूल हों और जिनसे केवल उसका अपना ही हित न होकर सबका हित सम्पादित होता हो। सत्यार्थप्रकाश ही एक ऐसा धर्मग्रन्थ है, जिसमें जहां मनुष्य की वैयक्तिक उन्नति, सदाचार-मय जीवन तथा अभ्युदय का मार्ग स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है, वहां साथ ही वे सब व्यवस्थायें भी स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं, जिनके द्वारा मानव समाज सामुदायिक जीवन के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति करता रह सकता है। अन्य कोई भी ऐसा धर्मग्रन्थ नहीं है, जिसमें मनुष्य के व्यक्तिगत अभ्युदय और सामाजिक हित-कल्याण का इतने विशद रूप से निरूपण किया गया हो, जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश में है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, मनुष्य के लिए सांसारिक अभ्युदय आवश्यक है, पर वह उसका परम लक्ष्य नहीं हो सकता। परम लक्ष्य निःश्रेयस् या मोक्ष की प्राप्ति है अतः धर्मग्रन्थ में उन उपायों व साधना का भी निरूपण किया जाना चाहिये, जिनसे मनुष्य इस परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। निः-श्रेयस् की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य को सृष्टि के तत्वों एवं स्वरूप का यथार्थ ज्ञान हो। सत्यार्थ प्रकाश में इस सब विषय का भी विशद् रूप से प्रतिपादन किया गया है।

सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य के व्यक्तिगत तथा सामाजिक हित-कल्याण के लिये मानव जीवन को चार आश्रमों में और मानव समाज को चार वर्णों में विभक्त किया गया है। इसी को वर्णाश्रम व्यवस्था कहते हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास—ये चार आश्रम हैं। मनुष्य अपना व्यक्तिगत अभ्युदय तभी कर सकता है, जबकि वह क्रमशः चारों आश्रमों के धर्मों का पालन करे। ब्रह्मचर्य आश्रम में मनुष्य अपने शरीर, मन और आत्मा की शक्तियों का विकास करता है। उसे तपस्या का जीवन बिताना होता है और संसार के भौतिक सुखों तथा भोग-विलास से पृथक रहकर ज्ञानोपार्जन में ही अपना सब ध्यान लगाना होता है। गृहस्थ आश्रम में मनुष्य आर्थिक उत्पादन करता है और सांसारिक सुखों का भोग करता है, पर उसे अपना सम्पूर्ण जीवन सम्पत्ति के उपार्जन तथा सुख-भोग में ही नहीं बिता देना है। पच्चीस वर्ष गृहस्थ रह कर उसे वानप्रस्थ हो जाना चाहिये। वानप्रस्थ आश्रम स्वाध्याय के लिये है और उसमें रहते हुए मनुष्य को इन्द्रियजयी होकर सबके प्रति मैत्री तथा करुणा की भावना रखते हुए सबके हित कल्याण के लिये प्रयत्न करना चाहिये। मानव जीवन का अन्तिम आश्रम संन्यास है। "जो ब्रह्म-ज्ञानी हो और जिससे दुष्ट कर्मों का त्याग किया जाय, वह उत्तम स्वभाव जिसमें हो, वह संन्यासी कहाता है।" क्योंकि मनुष्य का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है अतः संन्यास आश्रम में प्रवेश कर वह सब प्रकार के दुष्ट कर्मों का त्याग कर उत्तम स्वभावयुक्त हो जाता है और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति करता है, जिससे कि मोक्ष का मार्ग उसके लिये प्रशस्त हो जाता है। मानव-जीवन के इन चारों आश्रमों का और उनमें मनुष्यों के कर्त्तव्यों का सत्यार्थ प्रकाश में विशद् रूप से प्रतिपादन किया गया है। मनुष्य जिस आश्रम में हो, उसके कर्त्तव्यों या धर्मों का वह विधिवत् व निष्ठापूर्वक पालन करता चाहिये, इसी में उसका हित है। आश्रम धर्म का पालन करके ही मनुष्य ऊंचा उठ सकता है और अपने व्यक्तिगत तथा सामुदायिक हित-कल्याण में समर्थ हो सकता है।

(क्रमशः)

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती : एक परिचय

ले० डॉ० शिवकुमार जी शास्त्री महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती का जन्म आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के एक ग्रामीण परिवार में हुआ। शैशवावस्था में ही माता-पिता का साया सिर पर से उठ गया। दादी ने ही पालन-पोषण किया। 15 वर्ष की अवस्था में गृहत्याग कर आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त हुए।

अनेक संस्कृत विद्यालयों में विद्वानों के श्रीचरणों में बैठकर विद्याभ्यास किया और वैदिक वाङ्‌मय के अधिकारी विद्वान् बने।

सन् 1929 में घरौण्डा (करनाल) में गुरुकुल की स्थापना की और राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान में योगदान दिया।

1935 में महात्मा गान्धी द्वारा संचालित आन्दोलन में और 1939 के हैदराबाद सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अंग्रेजी सरकार का विरोध करते हुए पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ देहरादून की जेल में अमानवीय यातनाओं को सहते हुए देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी उठती हुई जवानी को होम दिया।

सन् 1957 में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री सरदार प्रताप सिंह कैरों ने हिन्दी आन्दोलन को कुचलने के लिए दमनचक्र चलाया तो स्वामी जी महाराज ने जबरदस्त विरोध किया, परिणामस्वरूप कई मास तक नजरबन्दी की सजा भुगती।

सन् 1961 में जब अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने पंजाबी सूबा की मांग को लेकर स्वर्ण मन्दिर अमृतसर में भूख हड़ताल शुरू की तो स्वामी जी महाराज ने देश की अखण्डता के लिए, पंजाबी सूबा के विरोध में 16 अगस्त 1961 से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के निर्देशन में आर्य समाज दीवानहाल में अवाधी अनशन किया, जिसे तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू के लिखित आश्वासन पर समाप्त किया।

सन् 1962 में करनाल संसदीय क्षेत्र से लोकसभा के लिए भारी बहुमत से निर्वाचित हुए। संसद् में जाकर स्वामी जी ने अभूतपूर्व कार्य किया, वह किसी से छिपा नहीं। हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए सदा संघर्ष करते रहे। सन् 1963 में तत्कालीन गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक सह-भाषा के रूप में रहने के विधेयक की होली जला कर राष्ट्रभक्तों के स्वाभिमान को झकझोर दिया।

सांसद् रहते हुए गो वध के विरोध में लोकसभा के प्रांगण में 15 दिन का अनशन प्रारम्भ कर गोरक्षा आन्दोलन का सूत्रपात किया और अन्तिम क्षण तक दिल्ली के तिहाड़ कारागार में रहकर संघर्ष करते रहे।

श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने आर्य जाति की रक्षा, स्वतन्त्रता एवं अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया। गुरुकुल प्रणाली को प्रचलित कर महर्षि दयानन्द एवं प्राचीन शिक्षा पद्धति के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। जीवन भर अज्ञान एवं अन्याय का विरोध करने के लिए लड़ते रहे। अपने शिष्यों को योग्यतम विद्वान् बना कर आर्य समाज की भरपूर सेवा की। भूयश्च शरदः शतात्। वेद की इस सूक्ति को जीवन में चरितार्थ किया।

श्री स्वामी जी मंगलवार 8 मई 1990 को सायंकाल 5-15 पर इस नश्वर शरीर को छोड़कर हमें अपने दायित्वों का भान कराते हुए सदा-सदा के लिए हमसे विदा हो गए।

उनके अन्तिम संस्कार के अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, डॉ० धर्मपाल, डॉ० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० वेदव्रत विद्यालंकार, आचार्य हरिदत्त शास्त्री, श्री सिंगला, डॉ० देवव्रत के अतिरिक्त हरियाणा विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष चौधरी वेदपाल सिंह एवं घरौण्डा तथा निकटवर्ती नगरों-ग्रामों के गण्यमान्य व्यक्ति सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित थे।

भारतीय संसद् में लगा यंत्र: अनुवाद यन्त्र एवं गुरुकुल घरौण्डा युग-युगान्तरों तक उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखेगा।

स्वतन्त्रता सेनानी, हिन्दी-हिन्दुस्तान के प्रबल समर्थक गोरक्षा आन्दोलन के सूत्रधार, भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाले, पूर्व सांसद, भूयश्च शरदः शतात् के नारे को जीवन में चरितार्थ करने वाले श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के प्रति दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हमें इतनी योग्यता, क्षमता और शक्ति प्रदान करे जिससे हम श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के बताए हुए श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने में समर्थ हो सकें।

वैवाहिक आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गत दिनों से एक समाज कल्याण विभाग खोला हुआ है। इसके अन्तर्गत आर्य परिवारों के विवाह योग्य लड़के व लड़कियों के सम्बन्ध करवाए जाते हैं। इसलिए नीचे विवाह योग्य कुछ लड़के-लड़कियों का विवरण दिया जा रहा है। इच्छुक महानुभाव सीरियल नम्बर देकर सभा कार्यालय से इस विषय में सम्पर्क करें।

1. आर्य परिवार, आयु 32 वर्ष, कद 5 फुट 9 इंच, रंग गोरा, शरीर सुडौल, कनेडा में 9 साल से निवासी वेतन तीस हजार, विधुर जिसकी धर्मपत्नी का कुछ समय हुए निधन हुआ है, के लिए वधु चाहिए।

2. श्री सुरेश चड्ढा, आयु 29 वर्ष, आय दो हजार रुपए मासिक, कद 5 फुट 7 इंच, आर्य परिवार के लिए वधु चाहिए।

3. श्री सुरेन्द्र कुमार अहिन्दु, कद 5 फुट 6 इंच, रंग गदमी, योग्यता बी. एस. सी., वेतन चार हजार रुपए मासिक आर्य परिवार के लिए वधु चाहिए।

4. आयु 32 वर्ष, कद पांच फुट छः इंच, रंग गोरा, खत्री परिवार, मासिक आय तीन हजार, तलाकशुदा के लिए वधु चाहिए।

5. श्री रविभूषण एम. ए., एल. एल. बी., आयु तीस वर्ष कद पांच फुट आठ इंच, रंग साफ, ब्राह्मण परिवार के लिए सुयोग्य वधु चाहिए।

6. श्री राजीव कुमार, आयु 27 वर्ष, कद पांच फुट 11 इंच, प्राइवेट सर्विस, मासिक वेतन 16 सौ रुपए, वधु चाहिए।

7. सुनील कुमार शर्मा, आयु 27 वर्ष, कद पांच फुट आठ इंच, योग्यता बी. काम. के लिए बी. ए. पास वधु चाहिए।

9. आयु 27 वर्ष, रंग सांवला, योग्यता मैट्रिक कद पांच फुट छः इंच, अपना मकान, जनरल स्टोर, गुलाटी परिवार के लिए वधु चाहिए।

9. वीरेन्द्र आयु 29 वर्ष, कद पांच फुट साढ़े आठ इंच, योग्यता बी. ए., रंग गोरा, आय चार हजार मासिक, आर्य परिवार को वधु चाहिए। बी. ए. पास हो।

10. गौतम कुमार, आयु 29 वर्ष, कद पांच फुट सात इंच, आय 25 सौ रुपए मासिक, योग्यता मैट्रिक, आर्य परिवार के लिए सुयोग्य वधु चाहिए।

डा० दुःखनराम के निधन पर शोक

रांची। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध 92 वर्षीय वयोवृद्ध नेता डा० दुःखन राम के असामयिक निधन पर श्रद्धानन्द रोड पर स्थित आर्य समाज मन्दिर में छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची जिला आर्य सभा और आर्य समाज रांची द्वारा संयुक्त रूप से एक शोक सभा का आयोजन डा० प्रभु नारायण विद्यार्थी के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ।

सभा में पं० जय मंगल शर्मा और दया राम पोद्दार ने उन्हें आर्य समाज कुलभूषण बतलाते हुए बहुमुखी प्रतिभा का स्वामी बतलाया। डा० दुःखन राम सन् 1924 ई० में आर्य समाज के सदस्य बने। 1950 ई० से 1977 ई० तक वे बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के यशस्वी प्रधान रहे। उनके संरक्षण में बिहार में आर्य समाज आन्दोलन ने सफलता के नए आयाम स्थापित किए। बिहार विश्व विद्यालय के कुलपति के रूप में प्राप्त समस्त वेतन के 72 हजार रुपये में शेष रकम मिलाकर 1 लाख 25 हजार रुपये के दान द्वारा अपनी जन्म भूमि सहसराम में यज्ञशाला, अतिथिशाला, विवाहशाला पुस्तकशाला और कन्याशाला का निर्माण उन्होंने करवाया। मारीशस में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज सम्मेलन के सफल आयोजन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। देश के सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक के रूप में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा अतिरिक्त भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद और डा० राधाकृष्णन के आंखों की सफल चिकित्सा के लिए देश उनका आभारी है। 1962 ई० में सरकार ने उन्हें पद्मभूषण प्रदान किया। निधन के पूर्व दिनों तक वे दो घंटे चिकित्सा कार्य करते थे। उनके निधन से आर्य समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। सभा में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोक सन्तप्त परिवार को दुःख में धैर्य प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई।

स्वामी रामेश्वरानन्द का निधन

दिल्ली 10 मई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी और स्वतंत्रता सेनानी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का 8 मई को 5 बजे घरौण्डा (करनाल) में 101 वर्ष की वर्ष की आयु में निधन हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आनन्दबोध स्वामी सरस्वती ने अपने शोक संदेश में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी संस्कृत तथा वैदिक साहित्य के उद्भट विद्वान थे। सन् 1962 में वह लोक सभा के सदस्य बने थे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, पंजाब हिन्दी आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में वह कई बार जेल गए थे। पंजाबी सूबे के विरोध में उन्होंने 16 दिन का अनशन किया था।

गुरुकुल घरौण्डा की पवित्र भूमि पर वैदिक रीति से वेद मन्त्रों की ध्वनि के साथ सायंकाल 3 बजे पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पं० सच्चिदानन्द शास्त्री मंत्री सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल, केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री पं० शिवकुमार शास्त्री और हजारों आर्य जन तथा स्वामीजी के अनुयायी वहां उपस्थित थे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की सार्वदेशिक सभा के खिलाफ याचिका रद्द

श्री रामचन्द्र राव कल्याणी ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश के प्रधान की हैसियत से गतदिनो मे 25 8 89 को सिविल कोर्ट हैदराबाद मे यह अस्थाई स्थगन आदेश प्राप्त किया था कि उनकी सभा को भग करके तदर्थ समिति बनाने से सावदेशिक सभा और सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को प्रतिवादी बनाया।

इस केस में माननीय न्यायधीश श्री विनोद कुमार देश पाण्डेय ने दोनो पक्षो द्वारा प्रस्तुत तथ्यो को गम्भीरता पूर्वक सुनने के बाद सत्यासत्य का निर्णय करने हुए 30 मार्च 1990 के अपने आदेश मे इस स्थगन आदेश को रद्द करते हुए तथा याचिका को खारिज करते हुए कुछ मुख्य टिप्पणियां इस प्रकार की।

1 दोनो पक्षो के तथ्यों से ऐसा लगता है कि वादी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश के प्रधान तथा प्रतिवादी न० 2 "स्वामी आनन्दबोध सरस्वती" के बीच मुकाबले की भावना है। जबकि ऐसा कोई भी तथ्य सामने नहीं आया जिससे यह साबित होता हो कि प्रतिवादी न० 2 "स्वामी आनन्दबोध सरस्वती" सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए योग्य नही हैं।

2. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभी राज्य स्तरीय प्रतिनिधि सस्थाओ की नियमक सस्था है, जिसमें नि:सन्देह वादी अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश भी शामिल है।

3. आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश को भग करके तदर्थ समिति बनाने सम्बन्धी स्वामी जी के अनुमानित दौरे का जिक्र करते हुए माननीय न्यायधीश ने टिप्पणी करते हुए कहा कि सस्था के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, अपने निजी हितो को नहीं।

सार्वदेशिक सभा की केन्द्रीय कानूनी समिति, श्री नन्दकिशोर सिंह एडवोकेट आन्ध्र-प्रदेश का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने अदालत मे इस मुकदमे की पैरवी की।

स्व० लज्जावती जी का अन्तिम शोक दिवस

आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर में 10-5-90 वीरवार को माता लज्जावती जी भारद्वाज का अन्तिम शोक दिवस मनाया गया जिन का निधन 30-4-90 को डाऊनकास्टर (यू. के.) मे अपनी सुपुत्री वेद कुमारी जी और जामाता श्री देवदत्त जी वोहरी के पास हो गया था। उनके अन्तिम शोक दिवस मे जालन्धर की सभी आर्य समाजो की बहिने तथा भाई सम्मिलित हुए। उनके सुपुत्र श्री वेद प्रकाश जी भारद्वाज और भतीजे श्री हरवंस लाल जी शर्मा यज्ञ के यजमान बने। बृहद यज्ञ के पश्चात श्री नरेश जी शास्त्री गुरुकुल करतारपुर, श्री प० धर्म देव जी कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्रीमति कमला आर्या (प्रधाना), श्री नरेश कुमार जी मन्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ, श्री प० मनोहर लाल जी आर्य, श्री ब्रह्म दत्त जी शर्मा सभा उप प्रधान, श्री सालिग्राम जी पराशर तथा अन्य कई बन्धुओ ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया। वह एक धर्म निष्ठ कर्तव्य परायण एव आदर्श महिला थी। उनको एक बार मिलने वाला व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था।

सैंकडो स्त्री पुरुषो ने इस शोक सभा मे भाग लिया। श्री हरबंस लाल जी शर्मा ने आए हुए सभी सज्जनों का धन्यवाद किया और इस अवसर पर अपने परिवार की ओर से 1100 रुपये गुरुकुल करतारपुर, 1100 रुपये आर्य समाज गोबिन्दगढ और 500 रुपये आर्य समाज को दान दिया।

मन्त्री मनोनीत

श्री भूषण कुमार जी शास्त्री एक कर्मठ उत्साह सेवी तथा लगनशील कार्यकर्ता हैं। जिनको आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर का मन्त्री मनोनीत किया गया है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

व्याख्यानमाला-32

सन्तोष जिनके पास है, उस सम धनी जग में नहीं

लेखक—श्री सुखदेव राय शास्त्री, अधिष्ठाता श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर।

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥1॥

सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त शान्त चित्त वाले सज्जनों को जो सुख होता है धन के लोभी और (धन की खोज मे) इधर उधर दौड़ने वालो को वह सुख कहां।

सर्वत्र सम्पदस्तस्य सन्तुष्टं यस्य मानसम्।
उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतैव भूः ॥2॥

जिसका मन सन्तुष्ट है उसे सब जगह सम्पत्तियां प्राप्त होती हैं। जिसने जूता पहन रखा है उसके लिए सारी पृथ्वी चमड़े से घिरी है।

अकिञ्चनस्य दान्तस्य शान्तस्य समचेतसः।
सदा सन्तुष्टमनसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥3॥

अकिञ्चन, इन्द्रिय निग्रही, शान्त, समान चित्त वाले और सन्तुष्ट मन वाले की सब दिशाएं सदैव सुखपूर्ण होती हैं।

आत्माऽधीनशरीराणां स्वपतां निद्रया स्वया।
कदन्नमपि मर्त्यानाममृतत्वाय कल्पते ॥4॥

स्वाधीन शरीर वाले, सुख की नींद सोने वाले मनुष्यों के लिए अपुष्टकारी अन्न भी अमृत समान होता है।

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलनम्रताम्।
अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद्बहु ॥5॥

दूसरों को बिना पीड़ा पहुंचाए दुष्टों के आगे बिना नतमस्तक हुए सज्जनोचित मार्ग पर चलते हुए यदि थोड़ा भी मिले वह भी बहुत है।

यो मे गर्भगतस्यापि वृत्तिं कल्पितवान्प्रभुः।
शेषवृत्तिविधाने च स किं सुप्तो न वा मृतः ॥6॥

जिस प्रभु ने गर्भ के अन्दर रहते हुए भी मेरी आजीविका का प्रबन्ध किया है। जन्मोत्तर शेष आजीविका प्रदान करने मे भी वह भगवान् न सोया है न मरा है।

अकिञ्चनोऽप्यसौ जन्तुः साम्राज्यसुखमश्नुते।
आधिव्याधिविनिर्मुक्तं सन्तुष्टं यस्य मानसम् ॥7॥

जिसका मन आधियों और व्याधियों से रहित होकर सदा सन्तुष्ट रहता है। वह जीव चाहे कितना भी अकिञ्चन क्यों न हो, वह साम्राज्य के तुल्य सुख भोगता है।

धनुर्वत्सस्य गोपस्य स्वामिनस्तस्करस्य च।
पयः पिबति यस्तस्या धनुस्तस्येति निश्चयः ॥8॥

(यह पूछा जाए कि) गऊ बछड़ की है, ग्वाले की है, स्वामी की है, या चोर की है (तो उत्तर होगा कि) गाय निश्चयेन उसी की है जो उसका दूध पीता है वह चाहे उक्त चारो मे से कोई भी क्यों न हो।

अतो नास्ति पिपासायाः सन्तोषः परमं सुखम्।
तस्मात्सन्तोषमेवेह परं पश्यन्ति पण्डिताः ॥9॥

जीवन का कोई अन्त नहीं सन्तोष ही परम सुख है इसलिए पण्डित लोग सन्तोष को ही परम सुख मानते हैं।

[illegible] ॥10॥

सैकड़ो गऊओं में से एक-साथ का दूध, [illegible] अन्न [illegible] से [illegible] भाग और [illegible] से भी वस्त्र का एक भाग ही मनुष्य की [illegible] होती है शेष तो [illegible] दूसरे की [illegible] है।

[illegible] ॥11॥

तृष्णा से विकल किए गए मनुष्य के लिए श्री कोश [illegible] भी पूरे नहीं होता, सन्तुष्ट मनुष्य हाथ में आए धन को भी आदर की दृष्टि से नहीं देखता।

वृत्त्यर्थं नातिचेष्टेत सा हि धात्रैव निर्मिता।
गर्भादुत्पतिते जन्तौ मातुः प्रस्रवतः स्तनौ ॥12॥

जीव जब गर्भ से बाहर आता है माता के स्तनों से तभी दूध निकलने लगता है। अतएव आजीविका के लिए बहुत प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि आजीविका तो परमात्मा ने पहले ही बना रखी है।

येन शुक्लीकृता हंसाः शुकाश्च हरितीकृताः।
मयूराश्चित्रिता येन स मे वृत्तिं विधास्यति ॥13॥

जिसने हंसों को सफेद बनाया, तोतों को हरा बनाया और मोरों को चित्र विचित्र बनाया है वही मेरी आजीविका को बनाएगा।

अधोऽधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते।
उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति ॥14॥

नीचे की ओर देखते हुए किस मनुष्य की (महिमा) नहीं बढ़ती ऊपर ऊपर देखते हुए तो सभी निर्धन हो जाते हैं।

अर्थात विनम्र मनुष्य गौरवशील होता है और गर्वोन्मुख मनुष्य को तिरस्कार का पात्र बनना पड़ता है।

विश्वम्भर भर त्वं मां विश्वस्माद्वा बहिः कुरु।
उभयोर्यद्यशक्तोऽसि त्यज विश्वम्भराभिधाम् ॥15॥

समस्त विश्व का पोषण करने वाले परमात्मन् या तो आप मेरा पोषण (आजीविका का प्रबन्ध) कर या संसार से बाहर कर। आप यदि दोनों काम करने में असमर्थ हैं तो अपना विश्वम्भर नाम छोड़ दो।

सन्तोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।
सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः ॥16॥

सुख चाहने वाला मनुष्य परम सन्तोषी होकर संयतचित्त हो जाये क्योंकि सुख का मूल सन्तोष है और दुःख का मूल असन्तोष है।

आपदर्थे धनं रक्षेन्महतां कुत आपदः।
कदाचित्कुपितो दैवः सञ्चितमपि नश्यति ॥17॥

विपत्ति के लिए धन बचाना चाहिए परन्तु महापुरुषों को विपत्तियां कहां? यदि कहीं विधाता कुपित हो जाए तो इकट्ठी की हुई सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। अतः सन्तोष में ही परम सुख है।

सन्तोषैश्वर्यसुखिनां दूरे दुर्गतिभूमयः।
भोगाशापाशबद्धानामवमानः पदे पदे ॥18॥

सन्तोष रूपी धन से सुखी पुरुषों से दुर्गतियां दूर ही रहती हैं। इसके विपरीत भोग के आशा रूपी फन्दे में बंधे हुए पुरुषों का पग-पग पर अपमान होता है।

य इमामखिलां भूमिं शिष्यादेको महीपतिः।
तस्याप्युदरमेकं वै किमिदं त्वम् प्रशंससि ॥19॥

जो राजा एक होता हुआ भी सारी भूमि पर शासन करता है उसका भी एक ही उदर होता है अर्थात भोग तो सीमित ही है अतः राजा के ऐश्वर्य की तुम क्या प्रशंसा करते हो?

यस्येयमवनी कृत्स्ना [illegible] नृपः।
तुल्याश्मकाञ्चनो यश्च स कृतार्थो न [illegible] ॥20॥

जो राजा सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन करता है वह कृतार्थ नहीं होता अपितु जिस मनुष्य के लिए स्वर्ण और पत्थर समान है वही कृतार्थ होता है।

यदृच्छालाभतुष्टस्य तेजो विप्रस्य वर्धते।
[illegible] ॥21॥

यथेष्ट लाभ से सन्तुष्ट रहने वाले ब्राह्मण का तेज बढ़ता है [illegible] असन्तोष के कारण इस प्रकार कम हो जाता है जिस प्रकार पानी [illegible]।

सम्पादकीय—

कश्मीर की कहानी—इतिहास की जुबानी (2)

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

इससे पहले कि मैं कश्मीर का प्राचीन इतिहास पाठकों के सम्मुख रखूं मैं उस सन्धि का भी उल्लेख कर देना चाहता हूं जो अंग्रेज व राजा गुलाब सिंह के बीच हुई थी जिसके अन्तर्गत अंग्रेज ने कश्मीर पर अपना अधिकार छोड़ दिया था और जम्मू व कश्मीर का क्षेत्र राजा गुलाब सिंह के हवाले कर दिया था। इस समझौते से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि डोगरा खानदान ने किसी मुसलमान शासक से दान के रूप में यह रियासत हासिल न की थी बल्कि महाराजा रणजीत सिंह की सेनाओं ने पठानों को पराजित कर इस पर कब्जा किया था।

1819 से लेकर 1846 तक कश्मीर सिखों के हाथ में था। 1842 में फिर कुछ विद्रोही लोगों ने सिर उठाया। इस पर लाहौर की सिख सरकार ने फिर राजा गुलाब सिंह को वहां भेजा उन्होंने विद्रोह को दबा दिया व अंत में उनका अंग्रेज के साथ समझौता हो गया और वह जम्मू कश्मीर के शासक बन गए फिर अंग्रेज ने महाराजा रणजीत सिंह के उत्तराधिकारियों को पराजित कर पंजाब पर कब्जा कर लिया। उन्होंने राजा गुलाब सिंह से लड़ना उचित न समझा इसलिए दोनों के बीच एक सन्धि हो गई राजा गुलाब सिंह को जो क्षेत्र दिया गया था उसके बदले उन्होंने अंग्रेजों को 75 लाख रुपया नानक शाही देने का वायदा किया। 50 लाख उसी समय देने थे। जब इस सन्धि पर हस्ताक्षर किए थे। 25 लाख बाद में देने थे। इसके अलावा राजा गुलाब सिंह ने अंग्रेजों की प्रभुसत्ता स्वीकार करते हुए उन्हें एक घोड़ा, 12 बकरियां, 12 बकरियों के ऊन कश्मीरी पशमीने की नर्म चादरें देने का वायदा किया था। साथ ही यह वायदा भी किया कि राजा गुलाब सिंह व उनका खानदान अंग्रेज का वफादार रहेगा। अंग्रेज ने राजा को यह विश्वास दिलाया कि वे राजा के खानदान और उसकी रियासत की हर तरह से रक्षा करेंगे इस सन्धि पर 16 मार्च 1846 को अमृतसर में हस्ताक्षर किए गए।

मैं इससे पहले लिख चुका हूं कि अकबर ने 1546 में कश्मीर पर कब्जा कर लिया था लेकिन 1819 में महाराजा गुलाब सिंह ने कश्मीर को मुसलमान शासकों के पंजे से आजाद करा लिया। इसके बाद 1819 से 1948 तक यानि 129 वर्ष डोगरा खानदान जम्मू कश्मीर पर शासन करता रहा। मगर 1947 में पाकिस्तान न बनता और वे अपने कबायली लुटेरे कश्मीर न भेजता तो आज भी जम्मू कश्मीर पर डोगरा खानदान का शासन होता और अगर इस खानदान का शासन न होता और जम्मू-कश्मीर में भी दूसरी रियासतों की तरह लोकतन्त्र के ढंग की सरकार होती तो यह यकीन से नहीं कहा जा सकता कि वह बहुत शेख अब्दुल्ला की सरकार होती। शेख अब्दुल्ला ने 1947 में एक राष्ट्रवादी बनकर पण्डित जवाहर लाल नेहरू व दूसरे कांग्रेसी नेताओं की सहानुभूति हासिल कर ली और आखिर में भी मेहर चन्द महाजन को जम्मू कश्मीर के प्रधानमन्त्री के पद से हटा कर स्वयं अपनी रियासत के प्रधानमन्त्री बनने में सफल हो गए। शेख अब्दुल्ला के सामने उस समय तीन निशाने थे। पहला था मेहर चन्द महाजन को हटाना। दूसरा महाराजा हरि सिंह को हटाना और तीसरा स्वयं जम्मू और कश्मीर का शासक बनना। शेख अब्दुल्ला इन तीनों में सफल हो गए और इसके बाद उन्होंने आंखें दिखानी शुरू कर दी। मैं इसे इतिहास की विडम्बना कहता हूं कि हालात ने आखिर ऐसा रूप धारण किया कि जिस जवाहर लाल नेहरू ने अपने सबसे बड़े व नजदीकी साथी सरदार वल्लभ भाई पटेल के परामर्श की भी उपेक्षा करके शेख अब्दुल्ला को जम्मू व कश्मीर की राजगद्दी पर बैठाया था वही जवाहर लाल नेहरू आखिर शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार करने के पर विवश हो गए। उनके सामने उस समय दो ही रास्ते थे। एक निजि मित्रता का दूसरा देश हित का। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने देश के हित पर निजि मित्रता को कुर्बान कर दिया और शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिया। शेख उस समय आजाद कश्मीर की बातें करने लगा था। पण्डित जवाहर लाल ने मौलाना आजाद व रफी अहमद किदवई को श्रीनगर भेजा कि वह शेख को समझाएं। लेकिन उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ गईं। उन्होंने शेख को दिल्ली बुलाया ताकि वहां बैठ कर बात हो सके। लेकिन वह इसके लिए भी तैयार न हुआ। इसी के साथ केन्द्रीय सरकार को यह सूचना भी मिल गई थी कि पाकिस्तान से भी कुछ लोग श्रीनगर आकर शेख से मिल रहे हैं। शेख उस समय भी पाकिस्तान के साथ विलय के लिए तैयार न हुआ था। व: आजाद कश्मीर चाहता था। पाकिस्तान इसके लिए तैयार हो रहा था। भारत सरकार ने आखिर में देश का हित इसी में समझा कि शेख अब्दुल्ला को पदच्युत करके गिरफ्तार कर लिया जाए उस समय तक महाराजा हरि सिंह भी अपना राज छोड़ चुके थे। उनके स्थान पर युवराज कर्ण सिंह सदरे-रियासत बन चुके थे। पंडित जवाहर लाल ने अपना एक प्रतिनिधि कर्ण सिंह के पास भी भेजा और उनसे कहा कि शायद शेख अब्दुला के खिलाफ कार्यवाही करनी पड़े। वह भी सहमत हो गए और आखिर जुलाई 1953 की रात को शेख अब्दुल्ला गिरफ्तार कर लिए गए। उस दिन पाकिस्तान से एक विशेष व्यक्ति ने गुलमर्ग में शेख से मिलना था और उस मुलाकात में यह फैसला होना था कि शेख कश्मीर की आजादी की घोषणा कर दें। भारत सरकार को इसका पता लग चुका था। इसलिए शेख के गुलमर्ग पहुंचने से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया। और बख्शी गुलाम मुहम्मद को जम्मू कश्मीर का मुख्यमन्त्री बना दिया गया। उस समय उन्हें प्रधानमन्त्री कहा जाता था।

पाठकगण मैंने आपके सम्मुख कश्मीर की उस राजनीति का चित्र रखा है जो अकबर के जम्मू व कश्मीर के कब्जे के बाद बनती व बिगड़ती रही है लेकिन कश्मीर का वास्तविक इतिहास तो इससे बहुत प्राचीन है हजारों वर्ष पुराना वह एक धारा की तरह बहती रही है। वह क्या थी वह अगले लेख में प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ग्राहकों की सेवा में

आर्य मर्यादा के पाठकों को यह जान कर हर्ष होगा कि सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य मर्यादा में जम्मू कश्मीर का वह इतिहास देना आरम्भ कर दिया है जिसे कम ही लोग जानते हैं। वास्तविक तथ्यों पर आधारित इस लेख माला को निरन्तर प्रकाशित किया जा रहा है इस लेख माला का यह दूसरा लेख है। एक लेख गत अंक 20-5-90 में प्रकाशित हो चुका है। मेरी सभी उन ग्राहकों से प्रार्थना है जिनकी तरफ आर्य मर्यादा का दो वर्ष से अधिक शुल्क शेष है और दो बार पत्र लिखने पर जिन्होंने अभी तक शुल्क नहीं भेजा वह शीघ्र अतिशीघ्र अपना पिछला शुल्क सभा कार्यालय में भेज दें अन्यथा उनके नाम ग्राहकों में से काट दिए जाएंगे। जो एक बार न भेज सकें वह किस्तों में भेज सकते हैं और सभा को लिख सकते हैं कि हम किस्तो मे शुल्क की राशि भेज देंगे। ऐसी अवस्था मे उनको आर्य मर्यादा भेजना बन्द नहीं किया जाएगा।

शुल्क भेजना प्रत्येक ग्राहक का अपना नैतिक कर्त्तव्य है। प्रत्येक ग्राहक को पता होता है कि उसने कब से शुल्क नहीं भेजा। यदि वह शुल्क भेजने में असमर्थ है तो उसे लिख देना चाहिए कि उसकी पत्रिका बन्द कर दें वह आगे शुल्क नहीं भेज सकेगा। परन्तु ग्राहक कई 2 वर्ष तक न पत्र बन्द करने के लिए लिखते हैं और न ही शुल्क भेजते हैं। सभा इस लिए पत्रिका भेजती रहती है कि पाठक आर्य मर्यादा पढ़ना चाहता है परन्तु किसी कारण से शुल्क नहीं भेज सका आगे भेज देगा। परन्तु यदि वह नहीं भेजता तो हमें पत्रिका विवश होकर भेजना बन्द करनी पड़ती है। इस-लिए यदि आपने अपना शुल्क न भेजा हो तो आप शीघ्र शुल्क भेज दें और पत्र भी लिख दें ऐसा न हो शुल्क न आने के कारण हमें आपको आर्य मर्यादा भेजना बन्द करना पड़े।

—सह-सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश सर्वांग-धर्म शास्त्र

ले०—स्व० डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

(गतांक से आगे)

भौतिक क्षेत्र में मनुष्य बहुत उन्नति कर चुका है। भौतिक विज्ञानों के विकास के कारण उसके हाथों में ऐसे साधन आ गये हैं, जिसका उपयोग कर उसका जीवन सांसारिक दृष्टि से बहुत सुखी हो सकता है। पर जहां तक मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, उस में अभी कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। वह अब भी ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, दर्प आदि का शिकार है और अपने स्वार्थ साधन के लिये तत्पर रहता है इसका कारण यही है कि उसके सम्मुख निःश्रेयस् प्राप्ति आदर्श नहीं है और वह भौतिक सुखों की प्राप्ति को ही जीवन का चरम लक्ष्य समझता है। संसार में आज भी सर्वत्र हिंसा और अशान्ति का वातावरण है, उसका यही कारण है। इसी के परिणाम स्वरूप मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में भी शान्ति और सन्तोष का अभाव है। मानव जीवन की इस गम्भीर समस्या के समाधान का एक सशक्त साधन आश्रम धर्म का पालन है, क्योंकि उसके द्वारा एक उच्च आदर्श मनुष्य के सम्मुख सदा उपस्थित रहता है। वह केवल अपने लिये ही नहीं जीता अपितु अपने जीवन का उपयोग दूसरों के सुख एवं हित-कल्याण के लिये करता है। गृहस्थ आश्रम में उसकी शक्ति अपने परिवार के लिये प्रयुक्त होती है और वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमों में सब मनुष्यों तथा प्राणिमात्र के हित-कल्याण के लिये है। उसके ममत्व तथा आत्म-भाव का क्षेत्र निरन्तर विस्तृत होता जाता है। गृहस्थ आश्रम में वह तभी सुख अनुभव करता है, जब उसकी पत्नी तथा सन्तान भी सुखी हों, क्योंकि उसके ममत्व तथा आत्मभाव का क्षेत्र केवल अपने तक ही सीमित न रहकर अपने परिवार तक विस्तृत हो गया होता है वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमों मे आत्मभाव का क्षेत्र अधिक विस्तृत होने लगता है और मनुष्य न केवल सब मनुष्यों मे ही अपितु प्राणिमात्र मे आत्मभावना विकसित कर लेता है। ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, दर्प, स्वार्थ आदि मे ऊचा उठने का यही उपाय है। इसी से मानव समाज का कल्याण सम्भव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में आश्रम धर्म का विशद् रूप से प्रतिपादन कर मनुष्यों को वह मार्ग प्रदर्शित कर दिया है, जिस पर चल कर वे लौकिक अभ्युदय के साथ-साथ निःश्रेय की ओर भी अग्रसर हो सकते हैं।

सामुदायिक अभ्युदय तथा सामूहिक हित-कल्याण के लिये सत्य सनातन वैदिक धर्म में वर्णव्यवस्था का विधान किया गया है। वर्ण चार हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जिस प्रकार शरीर के विविध अङ्ग एक दूसरे पर आश्रित होते हैं, उसी प्रकार समाज के ये चारों अग परस्पर विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक होते हैं। वर्ण विभाग का आधार जन्म न होकर गुण, कर्म और स्वभाव है। सब मनुष्यों की क्षमता, योग्यता, प्रवृति तथा स्वभाव एक सदृश नहीं होते। उनकी प्रवृति मे भी अन्तर होता है।

मनुष्य शूद्र होते हैं, क्योंकि शैशव की दशा मे उनके गुण आदि अविकसित दशा मे रहते हैं। पर ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए शिक्षा प्राप्त करने के अनन्तर उनकी प्रवृत्तियों तथा क्षमता, बल आदि गुणों का विकास होने लगता है और वे अपने गुण तथा स्वभाव के अनुसार ब्राह्मणादि वर्ण प्राप्त करते हैं। प्रत्येक वर्ण के अपने-अपने कर्म हैं। यदि सब मनुष्य अपने-अपने वर्ण के धर्म का पालन करते रहें, तब समाज का उन्नति पथ पर आरूढ़ रहना सुनिश्चित है। वर्णों में न कोई छोटा है, न बड़ा है, न कोई नीच है, न कोई उच्च है। सब एक दूसरे के पूरक हैं। समाज में बुद्धिजीवी भी चाहियें, वीर योद्धा एवं प्रशासक भी, उद्योगपति-शिल्पी-व्यापारी और कृषक भी तथा श्रमजीवी भी। उनमें विरोध की कोई गुञ्जायश ही नहीं है, बशर्ते कि सब अपने-अपने स्वधर्म का पालन करें और केवल अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न होकर सबको उन्नति समझें। वर्ण-विभाग केवल इस कारण है, क्योंकि मनुष्यों की प्रवृत्ति, क्षमता और स्वभाव में भेद है और साथ ही मनुष्यों के सामूहिक हित के लिए विविध प्रकार के गुण, कर्म, स्वभाव वाले मनुष्यों का परस्पर सहयोग से कर्म करना और प्रीतिभाव से एक साथ रहना आवश्यक है। पर समाज का सगठन न्याय पर आधारित होना चाहिये। ऐसे समाज का निर्माण कर सकना तभी सम्भव है, जब सब मनुष्यों को शिक्षा प्राप्त करने और अपनी क्षमता तथा गुणों के विकसित करने का समान अवसर प्राप्त हो और साथ ही अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप कार्य तथा सामाजिक स्थिति प्राप्त करने का भी पूरा-पूरा अवसर हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वर्ण-व्यवस्था का जो रूप प्रतिपादित किया है, सामाजिक न्याय की पूर्ण रूप से स्थापना उसी के द्वारा हो सकती है।

न्याय पर आधारित समाज के निर्माण के लिये वर्णाश्रम धर्म का अविकल रूप से पालन आवश्यक है। इसी तथ्य को दृष्टि में रखकर महर्षि ने पठन-पाठन विधि, ब्रह्मचर्य का पालन, वयस्क आयु में विवाह, स्त्री-पुरुष का परस्पर सम्बन्ध, पिता-पुत्र और गुरु-शिष्य में सम्बन्ध, विविध वर्णों का पारस्परिक व्यवहार, शूद्रों के प्रति वृति, छुआछूत और भक्ष्याभक्ष्य आदि विविध विषयों पर विशद रूप से प्रकाश डाला है। सामुदायिक जीवन का सर्वोच्च रूप राज्य है। राज्य संस्था ही सर्वोच्च समुदाय है। अन्य सब समुदायों को नियन्त्रण में रखना राज्य-संस्था का महत्त्वपूर्ण कार्य है। मनुष्यों का हित-कल्याण प्रायः राज्य-संस्था पर निर्भर करता है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ में राजधर्म का भी विशद् रूप से निरूपण किया है। राज्य क्या है? उसका शासन किस प्रकार किया जाना चाहिए? शासन-शक्ति का प्रयोग किस प्रकार और किसके द्वारा किया जाना उचित है? न्याय व्यवस्था का क्या रूप हो? कर कौन-कौन से लिये जावें, दण्ड-विधान का क्या स्वरूप हो। किन दिशाओं में युद्ध किया जाए और राज्य के संविधान व शासन-पद्धति का क्या रूप हो?

—इन सब बातों के मूल सिद्धान्तों का भी सत्यार्थ प्रकाश में निरूपण कर दिया गया है। यथार्थ बात यह है कि मनुष्यों के वैयक्तिक तथा सामूहिक हित-कल्याण के लिये जो कुछ भी आवश्यक है, वह सब सत्यार्थ प्रकाश में प्रतिपादित है, क्योंकि वह सब का धर्म अंङ्ग है। अन्य कोई भी धर्मग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें धर्म के अंङ्गों का इतने विशद् एवं स्पष्ट रूप से निरूपण किया गया हो।

पर मानव जीवन का लक्ष्य केवल व्यक्तिगत या सामूहिक हित-कल्याण ही नहीं है। उसका चरम लक्ष्य निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति है, जिसके लिये सृष्टि के सब तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान अनिवार्य है। आंखों से दिखाई देने वाले व इन्द्रिय-गोचर इस जगत से परे भी कोई सत्ता है या नहीं, स्थूल शरीर से भिन्न क्या ऐसी भी सत्ता है, शरीर के विनाश के साथ जो नष्ट नहीं हो जाती और इस चर-अचर जगत् का कोई नियन्ता व सञ्चालक है या नहीं—ये तथा ऐसे कितने ही प्रश्न हैं, जो विचारशील मनुष्यों के सम्मुख उपस्थित होते रहते हैं। इनका समुचित उत्तर पाकर ही मनुष्य मोक्ष के लिए प्रयत्नशील हो सकता है। यदि मनुष्य यह मानने लगे कि इस स्थूल शरीर के अतिरिक्त आत्मा की सत्ता है ही नहीं, शरीर के साथ ही जीव का भी अन्त हो जाता है, न कोई परलोक है और पुनर्जन्म होता है तो जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण वही हो जाएगा, जो चार्वाकों का था। उनका कहना था कि जब शरीर के भस्म हो जाने पर जीव का पुनरागमन होता ही नहीं तो धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि का विवेक ही व्यर्थ है। अतः मनुष्य को केवल भौतिक सुख-साधन में ही तत्पर रहना चाहिए। पर सनातन वैदिक धर्म के अनुसार पुनर्जन्म, परलोक, जीवात्मा आदि की भी सत्ता है और मनुष्य को भौतिक व सांसारिक अभ्युदय के साथ-साथ निःश्रेय की प्राप्ति के लिये भी प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य प्रकृति, जीवात्मा और ईश्वर के सम्बन्ध में सही-सही ज्ञान प्राप्त करें। सत्य ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव ही नहीं है (ऋते ज्ञानान्न मुक्ति)। इस तथ्य को दृष्टि में रखकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के स्वरूप का विशद् रूप से प्रतिपादन किया है और साथ ही मोक्ष प्राप्ति के उपायों पर भी प्रकाश डाला है। इस प्रकार महर्षि द्वारा विरचित सत्यार्थ प्रकाश एक सर्वाङ्ग-सम्पूर्ण धर्मग्रन्थ की स्थिति प्राप्त कर लेता है, क्योंकि उसमें अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों के साधन उपदिष्ट हैं।

महात्मा गौतम बुद्ध एक महान् धर्म सुधारक थे। धर्म के क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने किये, उनसे इन्कार नहीं किया जा सकता। पर उन्होंने दार्शनिक प्रश्नों की उपेक्षा की। ईश्वर है या नहीं? जीवात्मा का क्या स्वरूप है? सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई? ऐसे प्रश्नों पर विचार करने की उन्होंने कोई आवश्यकता नहीं समझी। उनका कथन था कि मनुष्य के हित-कल्याण के लिए सदाचरण ही पर्याप्त है, दार्शनिक प्रश्नों के जाल में फंसना उसके लिए निरर्थक है। इसी कारण उन्होंने अष्टाङ्गिक आर्य मार्ग का प्रतिपादन किया। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् विचार और सम्यक् ध्यान, धर्म के ये आठ अंग हैं जिन्हें महात्मा बुद्ध सदाचरण के लिए आवश्यक मानते थे और जिनका पालन कर मनुष्य दुःखों से बचा रह सकता है। (क्रमशः)

आर्यो ! आओ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्", ऋषि मनोरथ को कार्य रूप दें।

समस्त आर्यों को एक आवश्यक सुझाव

समस्त आर्य बंधुओं, एवं आर्य बहनों, समाजों, संस्थाओं से निवेदन है कि "प्रभु प्रार्थना" काल में निम्न भावों को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें, ताकि समस्त आर्य संतान हिन्दू मात्र में आर्यत्व जाग्रत कर एकात्मता का भाव उत्पन्न कर सकें। इस प्रकार सच्चे अर्थों में "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" की वेद-आज्ञा और महर्षि की हार्दिक अभिलाषा को पूर्ण करने की ओर पग बढ़ा, कर्तव्य निभायें। देश को फिर से "आर्यावर्त" बना सच्चा "आर्य-राज्य" बना पाएं।

प्रार्थना के भाव—

हे परमपिता, आप की महान कृपा से हमें आर्य कुल में जन्म मिला। इस नाते आप ने हमें 'सत्य सनातन वेद ज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते हैं कि—

1. हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे समस्त आर्य संतान हिन्दू मात्र को जाग्रत कर उन में एकात्मता, सत्य-सनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

2. आप की आज्ञा "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" तन, मन, धन से पालन करेंगे।

3. सर्वप्रथम अपने देश को फिर से सच्चे अर्थों में "आर्यावर्त" बना स्वच्छ "आर्य राज्य" स्थापित करेंगे।

4. समस्त संसार में वेद ज्ञान, आर्य संस्कृति फैला भूमण्डल पर पूर्व काल की भांति चक्रवर्ती "आर्य-राज्य" स्थापित करने की ओर अग्रसर होंगे।

प्रभो ? हमें इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए शक्ति दो। हम आप को विश्वास दिलाते हैं एव प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान कर दृढ़ता से मुकाबला करेंगे।

नोट—क्या हम में यह शब्द-संकल्प बोलने बुलवाने का भी साहस नहीं रहा ? यदि नहीं तो हम निश्चय ही मृत हैं।

—भोलानाथ दिलावरी अमृतसर

रायगढ़ व सरगुजा में पादरियों की 'समानांतर सरकार' चलती है

रायपुर। छत्तीसगढ़ अंचल में बढ़ती ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों का अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहां के दो पिछड़े जिले सरगुजा और रायगढ़ में जितना विदेशी धन आता है, उतना राज्य के अन्य किसी जिले में नहीं आता। रायगढ़ जिले के जशपुर तहसील की आबादी मात्र ढाई लाख है, जिसमें कि 10 हजार आदिवासी ईसाई बन चुके हैं। कुनकुरी तहसील में एशिया का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा चर्च है। बलाक स्तर से लेकर बी० डी० ओ० कार्यालय तक अपनी घुसपैठ रखने वाले इन चर्चों के पादरियों ने इन दोनों जिलों में एक 'समानांतर सरकार' बना रखी है, जो किसानों को खाद, बीज, ऋण देने से लेकर वे सारे काम करती है जो सरकार की योजनाओं के तहित होते चाहिए।

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

वनवासियों के धर्मांतरण से लेकर क्षेत्र में अपना 'प्रभाव' स्थापित करने तक के मुद्दों में इन मिशनरियों को पूर्व की इंका सरकार में अर्जुन सिंह और अजीत जोगी का किस तरह खुला संरक्षण मिला यह किसी से छिपा नहीं। और यह इसी संरक्षण का परिणाम है कि झारखण्ड आन्दोलन में राज्य के जिन दो जिलों को अलग करने की मांग उठ रही है वे रायगढ़ व सरगुजा ही है।

इन मिशनरियों के पादरी साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति अपनाकर इतने 'तावतवर' हो चुके हैं कि जिला प्रशासन के आला-अफसर भी इनके किसी 'आदेश' को 'संविधान' के आदेश के बराबर ही मानते हैं। बिना सहायता के, भोपाल, और दिल्ली से दिल्ली तक इंका शासन में इन पादरियों के इस तरह 'कनेक्शन' थे कि किसी आला-अफसर का कैरियर' इस बात पर निर्भर करता था कि पादरी उसके 'ग्रीन कार्ड' का स्विच 'आन' करते हैं या 'रेड कार्ड' का।

क्लासियस एक्का को मिले अर्जुन सिंह के संरक्षण का तो जिकर करने की अब कोई जरूरत नहीं रही। 'ग्राम निकासे की सरकार मध्यप्रदेश सरकार का नारा देने वाली सरकार ने ग्राम विकास का सही मायने में कितना ध्यान दिया इसका विश्लेषण करने की जरूरत नहीं, सिर्फ इतना बता देना काफी है कि ग्रामीण युवकों से रोजगार देने के नाम पर 7 करोड़ रुपए ठगने वाले एक्का को गत विधानसभा चुनाव में इंका ने अपना अधिकृत प्रत्याशी बनाया।

इंका के शासनकाल में इन मिशनरियों के 'विकास' पर अगर नजर डालें तो आंकड़े चौंकाने वाले हैं। तीस वर्ष पहले तक अकेले रायगढ़ जिले में 33 चर्च, 60 पादरी, 74 सिमैनरियन, 15 धर्म समाज, 41 ब्रदर, 13 हायर सेकेन्डरी स्कूल, 19 युवती प्रशिक्षण केन्द्र, 212 बालवाड़ी, 22 ईसाई किसान संघ, 21 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और 21 कुष्ठ उपचार केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र बालवाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र, बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र आदि का पूरा ताना-बाना है। और लगभग ऐसी ही स्थिति सरगुजा जिले में भी है।

पिछली इंका सरकार ने सारी व्यवस्था व कार्यपालिका को किस तरह इन मिशनरियों की बहुलीय में बांध दिया था इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखने को मिला। सन् 1985 में जब सरगुजा के जिला पुलिस अधिक्षक ने सात पादरियों के देश निकाला के आदेश जारी कर दिए लेकिन उन पर अमल नहीं हुआ। इन पादरियों पर धन का लालच देकर वनवासियों का धर्मान्तरण कराने का आरोप था। सन् 85 तक ये पादरी भारत में 41 वर्षों से रह रहे थे। ये पादरी हैं लकवेरस्ट्रेटी (67), लुईस डी रेवर, (76), जाक सोमर्स (69), काई गेटर (65) तथा श्रीमती एस० जे० गेटर (64), तथा दो अन्य। इन पादरियों के देश निकाले के आदेश का क्या हुआ ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है वे आज भी भारत में ही हैं। हां, लेकिन यह आदेश जारी करने वाले पुलिस कप्तान का क्या हुआ, उन्हें इंका का कोप भाजन बन स्थानातरण सहित अनेक विभागीय त्रासदियों के दौर से गुजरना पड़ा।

इन पादरियों को अर्जुन सिंह का कितना समर्थन था इसका एक और उदाहरण दे देना जरूरी है कि अर्जुन सिंह समर्थित-इंका नेता श्रीमती इंदिरा अयंगार ने मध्यप्रदेश क्रिश्चियन एसोसिएशन के बैनर तले इस 'देश निकाले' के आदेश का कड़ा विरोध किया था। ये वही इन्दिरा अयंगर हैं जिन्होंने अमरीकी अरिजोना विश्वविद्यालय के जरिए यूनियन कार्बाइड से पैसा लिया था, और इसका भण्डाफोड़ होने पर भोपाल के गैस पीड़ित के बीच चलाए जा रहे अपने कार्यक्रम को बंद कर दिया था।

(स्वदेश पत्र 5 मई से साभार)

दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़

1989-90 के शिक्षा वर्ष में डा० भवानी लाल भारतीय, भारतीय के निर्देशन में निम्न शोधार्थियों ने शोध उपाधि (पी० एच० डी०) प्राप्त की।

डा० श्रीमती कमला—ऋग्वेद में नारी। डा० सुरेन्द्र कुमार—वैदिक आख्यानों का विकास क्रम। डा० सतीश चन्द्र शर्मा—मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति का तुलनात्मक अध्ययन। डा० वेदपाल शास्त्री—स्वामी दयानन्द के साहित्य में राजनीतिक विचार। डा० देवेन्द्र नाथ शास्त्री—याजुष सूक्ति विमर्श। डा० रामकृष्ण आर्य—स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों में विवेचित आर्थिक विचार। डा० कर्म सिंह शास्त्री—स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों में विवेचन षड्दर्शनों के संदर्भ।

इन शोधार्थियों की मौखिक परीक्षा क्रमशः डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० सुधीर कुमार गुप्त, डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा, डा० शिव सागर त्रिपाठी, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा तथा डा० राम प्रताप वेदालंकार ने ली। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि डा० देवेन्द्रनाथ शास्त्री 70 वर्षीय वयोवृद्ध शोधार्थी हैं और डा० रामकृष्ण आर्य कोटा के एक खाद कारखाने में श्रमिक हैं। सभी शोधार्थियों को हार्दिक बधाई।

—गजेन्द्र सिंह
कार्यालय अधीक्षक

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना की साधारण सभा डा० मूलचन्द जी भारद्वाज की मृत्यु पर बड़े दुःख से शोक प्रकट करती है। इस दुःख में आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना की सभा दुःखी परिवार से सहानुभूति प्रकट करती है। डा० मूलचन्द जी भारद्वाज परोपकार की मूर्ति के साथ-2 आर्यसमाज के सच्चे सिपाही तथा आदर्श शिष्य थे जिनके पद चिन्हों पर प्रभु हम सब को चलने की शक्ति दे। हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें व अपने चरणों में निवास दें और उनके समस्त परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

आपके दुःख में दुःखी
सावित्री देवी मंत्री

पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी

लेखिका—सरस्वती देवी जी आर्या धर्मपत्नी स्व० रामकृष्ण दास जी
(आर्यवानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर)

(गतांक से आगे)

वह सच्चे अर्थों में साधु थे, स्वादु नहीं थे। उन्हें स्वाद से कोई प्रयोजन नहीं था। वह तो शरीर रूपी गाड़ी को चलाने के लिए ही भोजन की आवश्यकता समझते थे, जिससे वे यज्ञमय जीवन बिताते हुए समाज सेवा कर सकें। उनके जीवन की एक और घटना मुझे याद आती है। जंगपुरा आर्य समाज में यज्ञ करा रहे थे। भोजन जिन यजमान महोदय के घर था उन्होंने अत्यन्त प्रेम श्रद्धा से भोजन बनाया। उन्होंने सीमियां बनाई थीं, लेकिन चीनी डालना भूल गई। पू० स्वामी जी महाराज भोजन करके समाज आ गए जब घर के व्यक्ति खाने बैठे तो पता चला सीमी फीकी हैं। बहुत दुःख हुआ, वे समाज गए। पू० पिता जी से इस भूल के लिए क्षमा याचना की वे मुस्काते बोले—'तो क्या हुआ? इसमें क्षमा-याचना की क्या बात?' मैं कभी उनसे नमक के लिए पूछ लेती तो उनका सरल-सा उत्तर होता—'पुत्री! अधिक पड़ा निकाला नहीं, कम पड़ा तो डाला नहीं' ऐसा था उनका संयमी जीवन।

भोजन की तरह वस्त्रों में भी सादगी थी। अपने वस्त्रों की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता था। फटे हैं या नये उनके लिए एक समान थे। प्रैस तो शायद ही कभी उनके वस्त्रों पर हुई हो, ध्यान नहीं आता। इतने फटे-फटे वस्त्र होते जिनकी वह मुरम्मत कराते थे। मैं कभी-कभी कहती—'पिता जी, यह वस्त्र तो किसी गरीब को देदें इतना फटा है इसकी सिलाई भी नहीं हो सकती।' तो उनका उत्तर होता—'देने के लिए तो मेरे पास नए वस्त्र बहुत हैं, यह तो मुझे ही शोभा देते हैं।' और सचमुच वह नए वस्त्र दे दिया करते थे। भोजन वस्त्र के सम्बन्ध में उनकी मान्यता थी—'हम साधुओं को क्या चाहिए? रूखा सूखा भोजन, साफ वस्त्र—नये हों या फटे, इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता।' मातृ भाषा हिन्दी से उनको विशेष प्रेम था। हिन्दी के लिए जो भी उनके सम्पर्क में आते सभी को प्रेरणा देते थे। सन् 1954 में अफ्रीका गए थे। वहां से दो तीन विद्यार्थियों को साथ लाये। यहां पर उन्हें गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। उन्हें वर्षा भी दिया तथा हिन्दी और संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा भी दी। सन् 1957-58 में पंजाब में हिन्दी आन्दोलन में भाग लिया और इसी प्रकरण में आमरण-उपवास प्रारम्भ कर दिया। कारण सरकारी सैनिकों ने यज्ञ वेदी का अपमान किया था—उसी के प्रतिकार स्वरूप यह व्रत रखा और कहा जब तक अपनी भूल नहीं मानेंगे मेरा व्रत चलेगा। शरीर रहे या न रहे। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। इस प्रकार 52 दिन में उनका व्रत पूरा हुआ। वे जिस कार्य का निश्चय करते, उससे उन्हें हटाने की शक्ति किसी में नहीं थी।

दया और परोपकार की साक्षात् मूर्ति

वे दया की साक्षात मूर्ति थे, प्राणि मात्र के लिए उनके हृदय में दया और अगाध स्नेह भरा था, कोई भी असहाय हो, रोगी हो, निर्बल हो, कितना भी दीन-हीन हो वहां पहुंच जाते और यथा शक्ति सबकी कठिनाइयों को दूर करने का पूरा प्रयत्न करते। उन्हें सूचना मिले किसी की अस्वस्थता की तो अपने स्वास्थ्य को न देख, उसके प्रति संवेदना और सहानुभूति प्रकट करने अवश्य जाते। यज्ञों के द्वारा उन्हें जो भी दक्षिणा मिलती उससे भी बड़ा यज्ञ वह उस आय से करते थे कितने ही गरीबों, असहायों, विधवाओं, ब्रह्मचारी विद्यार्थियों को वह मनीआर्डर भेजते थे। अपने ऊपर तो ध्यान नहीं आता, उन्होंने कभी कुछ भी खर्चा किया हो। हां, 600 रु० के मनीआर्डर प्रति मास भरवाते थे। उन्हें संसार में दुःखी जीवों को सुखी देखने की चिन्ता थी। अन्तिम समय में भी उनको अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं थी, थी तो केवल उन गरीब और असहायों की जिन्हें वे धन राशि भेजा करते थे। उनके मुख-मण्डल पर एक विचित्र प्रकार की सन्तुष्टि का पावन प्रकाश था, विषाद की तो एक रेखा तक न थी। शरीर से अस्वस्थ होने पर भी मन और आत्मा से वे पूर्ण स्वस्थ थे। उन्हें आभास हो गया था कि अब उनका अन्तिम समय निकट है। हमें भी कई बार कह दिया करते थे कि अब [illegible] हुई है—यहां तक कि नवम्बर 1970 के मनीआर्डर के पैसे असहायों को भेज रहे थे तो उन्होंने अन्त में सबको यह शब्द लिखवाए कि 'यह राशि मेरी अब अन्तिम भेंट समझना आगे 'प्रभु इच्छा' यदि मुझे सामर्थ्य देंगे तो सेवा करूंगा।

कतिपय प्रेरक संस्मरण

उनके चिन्तन की गहनता और व्यक्तित्व की महानता का प्रकाशक अनेक संस्मरण हैं:—

मेरे पास एक कम्बल था जो जगह-जगह से कुछ फट गया था। उसके लिए मैंने पू० पिता जी से प्रार्थना की इसको किसी को दे देना। मैंने उसे आलस्य वश ठीक भी नहीं किया ऐसे ही दे दिया सोचा जो लेगा वह स्वयं ही ठीक-ठाक कर लेगा।

कुछ दिन पश्चात् पू० पिता जी के दर्शन हुए तो उन्होंने हंसते हुए बताया पुत्री तेरा कम्बल तो मैंने ठीक करा कर अपने लिए रख लिया है जिससे तेरी याद रहे। वे अपना नया कम्बल किसी को दे आये थे। मुझे अपने ऊपर कितनी ग्लानि हुई और कितनी शर्म आई, वह लिख नहीं सकती।

उन दिनों मेरे पतिदेव कुछ अधिक चिन्ता-ग्रस्त रहने लगे थे। इसी बीच जब पू० पिता जी के दर्शन हुए तो उन्होंने कहा "लाला जी, आप बाजार से एक किलो मटर लाए, दाने निकाल रहे हैं उसमें कुछ दाने खराब हैं आपका ध्यान बार-बार उन खराब दानों पर जा रहा है और कह रहे हैं कि मटर वाले ने कितनी खराब मटर दे दी। लेकिन इसके विपरीत जो अच्छे-दानों का ढेर है उस पर ध्यान नहीं जाता। कितना गूढ़ रहस्य छिपा है इसमें! यही हाल हमारे जीवन का है। जो सुख सुविधायें भगवान ने हमको प्रदान की हैं उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। जो अभाव हैं या अभाग्य वश जो आपको कुछ थोड़ी सी प्रतिकूलता मिली है उसी को सोच सोच कर अपने को चिन्ताग्रस्त बना लेते।

वे कहा करते थे—"पुत्री, जो हो दुख उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करो जो हो रहा है उसके लिए भी 'धन्यवाद करो' और जो होगा उसके लिये भी 'धन्यवाद करो' उस प्रभु का हर दशा में धन्यवाद करो। वह जो करता है। वह ठीक ही करता है। वह पिता न्याय कारी है। मानव के अपने ही कर्मानुसार जो दुःख-सुख और आपत्ति-विपत्ति आती है हमें उसमें धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। हमारा कर्तव्य तो यही है कि हम सदा प्रसन्न-चित्त उसका धन्यवाद करें। "चरवैति चरवैति" यह दो शब्द तो उनके मुख से बड़े मीठे लगते थे।

और भी कितनी छोटी-छोटी बातें हैं, एक बार मेरी पुत्री निर्मला बोली—"स्वामी जी, आप की जितनी माला निश्चित की हुई है, कारण वश यदि किसी दिन पूरी नहीं हो सके तो दूसरे दिन करलूं क्या, सुनकर वे बहुत हंसे, बोले "हां पुत्री, कोई बात नहीं एक दिन खाना कम खा लिया एक दिन कुछ अधिक, क्या फरक पड़ता है? एक दिन पेट ठसा ठस भर खा ली दूसरे दिन भूखा रह गये?" बात हंसी की हो गई, बुरा भी न लगा। समझाने के लिये बहुत कुछ मिल गया। ऐसी थी विनोद पूर्ण और सरल हृदय की प्रकाशिका उनकी समझाने की शैली।

गायत्री जप की प्रेरणा

वे हमको प्रतिदिन गायत्री जप की अधिक से अधिक प्रेरणा दिया करते थे। मैं भी अधिक से अधिक जप करने का प्रयत्न करती। पर कभी अपनी अल्पज्ञता वश यह प्रश्न कर बैठती "पिताजी कितना भी करूं पर फिर भी कुछ सुधार दीखता नहीं तो वे समझाते—"पुत्री! तूने बैंक में 1000 रु० जमा कराया। अब अगर तू चाहे मुझे दस हजार मिल जाए तो कैसे मिल सकते हैं। उतना ही तो मिलेगा जितना उसमें तेरा सूद जुड़ेगा" मेरा मन सुन कर कितना शान्त हो जाता। इन छोटी-छोटी बातों को घर में सबको बताती हूं तो मन गद्-गद् हो जाता है और लगता है 'चिन्ता' नाम की किसी वस्तु का अस्तित्व है ही नहीं।

बच्चों से विशेष प्रेम था, उस महान-आत्मा को।

टेलीफोन नम्बर बदला

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का टेलीफोन नम्बर बदल गया है।

अब घर का नम्बर	59746
कार्यालय सभा प्रधान जी	57867
... ...	57868
सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन का नम्बर	73020 ही रहा

है सभी बन्धु अंकित कर लें।

विदेशी पादरियों का भारत में षड्यन्त्र

अंग्रेजों के राज्य में इसाई पादरियों द्वारा [illegible] के हिन्दुओं को इसाई बनाया जाता था। अंग्रेजों को भारत पर अपना शासन सुदृढ़ करने के लिए हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराना हितकर था। किन्तु भारत स्वतन्त्र होने पर भी भारत सरकार ने ईसाई पादरियों को यथा का तथ बनाए रखा। उन्हें पहले जैसी सुविधाएं भी दी गई। इसी कारण धीरे-धीरे ईसाइयों ने असम के नागा क्षेत्र में नागा जाति के भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत विरोधी बना डाला। ये नागा लोग भारत भक्त थे और अपने को भीम के पुत्र घटोत्कच के वंशज मानते थे। अनेक देवी देवताओं की पूजा करते थे। ये भारत भक्त सच्चा ईसाई बनने के पश्चात् विदेशी पादरियों द्वारा भड़काए जाने पर भारत के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने लगे। यही स्थिति मिजोरम में भी बन गई।

अब नागालैंड और मिजोरम पूर्ण रूप से ईसाई राज्य बन चुके हैं। अधिक कहना [illegible] कि यह दोनों राज्य ईसाई धर्म के ऐसे सुदृढ़ दुर्ग बन गए हैं कि अब यहां से असम के कई क्षेत्रों में अलगाववाद भड़काने के लिए षड्यन्त्र [illegible] जाते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि नागालैंड और मिजोरम कहने मात्र के लिए भारतीय [illegible] हैं। [illegible] में तो दोनों राज्यों में यूरोपीय ईसाई धर्म का ही साम्राज्य है। जिनके पीछे यूरोप की बड़ी शक्तियां कार्य कर रही हैं। इन शक्तियों के प्रभाव का लाभ उठा कर बंगला देश और बर्मा के क्षेत्रों में ऐसे अड्डे बनाए गए हैं जहां [illegible] अन्य देशों के ईसाई प्रेरित उग्रवादी संगठनों को प्रशिक्षण एवं हथियार प्राप्त कराए जाते हैं। मणिपुर, त्रिपुरा के विद्रोही गुटों को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया जाता है। शस्त्रों का प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। इन्हीं केन्द्रों में बोडो विद्रोहियों को और उल्फा विद्रोहियों को प्रशिक्षण आदि दिया जाता है।

नागालैंड में एक शक्तिशाली सैनिक संगठन बनाया जा चुका है, जिसका नाम है 'नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल ऑफ नागालैंड' (National Socialist Council of Nagalaud) वास्तव में यह चर्च की सेना है जिसे अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस किया गया है। पिछले वर्ष इस सैनिक संगठन ने असम की सीमा में घुसकर एक हिन्दू ग्राम पर आक्रमण किया था। असम के उल्फा विद्रोहियों को शस्त्र इसी संगठन ने दिए।

यह संस्था भारत भर में विद्रोह की आग फैला रही है। झारखण्ड के 21 जिलों के बहुत बड़े क्षेत्र को भी ईसाई राज्य बनाने के प्रयत्न पिछले 40 वर्षों से चल रहे हैं।

दुर्भाग्य से भारत की केन्द्र सरकार ने विदेशी ईसाई पादरियों द्वारा किए जा रहे इन भारत विरोधी कार्यों को समाप्त करने का कभी प्रयास नहीं किया। अतः यह बहुत आवश्यक है कि हिन्दू समाज के हजारों युवक युवतियां अपने देश हिन्दुस्थान और हिन्दू समाज की रक्षा के लिए अपना जीवन लगाएं।

—डा० [illegible]

पं० गुरुदत्त जयन्ती के उपलक्ष्य में वेद प्रचार कार्य

पत दिनों आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की जयन्ती मनाई गई इस सारे कार्यक्रम का समापन समारोह 29 अप्रैल रविवार को प्रातः 10.30 बजे से 1.00 बजे तक हुआ। प्रारम्भ में यज्ञ किया गया, जोकि पं० राजेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। मुख्य समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के वरिष्ठ प्रधान श्री गुरदयाल सिंह आर्य ने की। इस अवसर पर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन की चर्चा विस्तार से की गई।

आर्य युवक सभा पंजाब के स्पोर्टस विंग के संयोजक श्री राजेन्द्र महेन्द्रू की देखरेख में नवयुवकों ने व्यायाम एवं कराटे का शानदार प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में इण्डियन कराटे क्लब के लगभग 35 छात्रों ने भाग लेकर अपने करतबों का प्रदर्शन करते हुए जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। छात्रों के प्रदर्शन की जनता ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

[illegible]

स्व० श्री भगत किशना मल जी

ले०—श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल भठिण्डा

स्वर्गीय भक्त किशना मल जी गौरव वाले आर्य समाज रामामण्डी (जि० बठिण्डा) के संस्थापक थे। आप अधिक पढ़े लिखे तो नहीं थे—परन्तु आपके सादा जीवन एव सच्चाई की बड़ी भारी धाक थी। आपके जीवन से प्रेरणा लेकर श्री महाशय रौनक सिंह जी ने आर्य समाज मन्दिर के लिए जगह दान दी। उस समय आपके साथ स्वर्गीय महाशय रौनक सिंह जी स्व० मास्टर मुकंदी लाल जी, स्व० श्री भगवान दास जी, डा० आत्मा राम जी, स्व० महाशय ज्ञान प्रकाश जी, श्री मिहाल चंद जी, स्व० पं० कर्मवीर जी, स्व० पं० रविदेव जी, स्व० तिलक राम जी ने आर्य समाज के कार्य को बड़ी श्रद्धा एवं लग्न से किया। यह सभी आर्य बन्धु स्व० स्वामी स्वतन्त्रानंद जी महाराज एवं आचार्य भगवान राम जी (स्वामी आत्मानंद जी महाराज) के भक्त थे। भक्त किशना मल जी की प्रेरणा से रामामण्डी के लगभग 10-12 बालक गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने गए।

रामामण्डी के स्व० श्री महाशय किशोर चंद पटवारी ने भी जहां-जहां भी वह बदल कर गए उसी गांव में आर्य सिद्धान्तों द्वारा प्रेरणा दी।

श्री भगत नारायण दास जी

आर्य समाज तलवण्डी साबो के लिए स्थान श्री चौधरी सोभा मल जी ने दान में दिया था। उस समय आर्य समाज तलवण्डी साबो में स्व० श्री० चौधरी सोभा मल जी, स्व० श्री भगत नारायण दास जी, स्व० श्री चौधरी आत्मा सिंह जी, स्व० श्री महाशय रौनक सिंह जी तथा स्व० महाशय निगाही राम जी ने आर्य समाज का कार्य किया। उत्सव एवं प्रचार का कार्य बड़ी लग्न से होता था। सप्ताहिक सत्संग में यदि कोई न भी आता तो अकेले भगत नारायण दास जी स्वयं आर्य समाज मन्दिर में झाड़ू लगाते और अकेले ही हवन यज्ञ करते। इन सब के स्वर्गवास होने के कई वर्ष पश्चात् 1955 ई० में श्री ओम प्रकाश जी आर्य रामामण्डी के परिश्रम एवं श्री चौधरी यशपाल सिंह जी के सहयोग से यहां आर्य पुत्री पाठशाला जारी कर दी गई साथ ही दयानन्द आश्रम जिस के लिए स्थान श्री चौ० आत्मा सिंह जी के सपुत्रों ने दान दिया, की स्थापना की गई। आर्य पुत्री पाठशाला एवं दयानन्द आश्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर से सम्बन्धित हैं।

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को ग्रहण करने पर ही भारत सुदृढ़ हो सकेगा

—बनारसीदास गुप्त

वैदिक प्रचार मण्डल 72-बी गोबिन्द नगर अम्बाला छावनी के तत्वाधान में वेद भवन का शिलान्यास हरियाणा सरकार के पूर्व-मुख्यमंत्री माननीय बनारसीदास गुप्त द्वारा गत दिनों सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री गुप्त ने आह्वान किया कि आर्य समाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक क्षेत्र में किए हैं। जिससे भारत में नई चेतना का उदय हुआ, इसलिए यह आवश्यक है कि हमें ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा में भी आर्य समाज का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। ऋषि की भाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने तमाम ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे। इस अवसर पर उन्होंने डी०ए०वी० पब्लिक स्कूलों द्वारा अंग्रेजी पढ़ाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया, क्योंकि इस संस्था के साथ ऋषि दयानन्द का नाम जुड़ा है। आगे उन्होंने जनता को बताया कि मैं आज इस पद पर जो हूं। केवल आर्य समाज के कारण हूं। मंडल के कार्य से प्रभावित होकर उन्होंने व्यक्तिगत रूप से रु० 1100/- का दान दिया तथा मंडल को आगे भी हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मन्त्री जी जब सभा स्थल पर पधारे तो मुसद्दीलाल गर्ल्स हाई स्कूल तथा लक्ष्मी देवी गर्ल्स हाई स्कूल की छात्राओं ने बैंड के साथ उनका अभिवादन किया। मंडल के उत्साही मन्त्री श्री वेद मित्र हापुड़ वाले ने माला अर्पण के साथ गुप्त जी का स्वागत किया तथा उन्होंने बताया कि 7 वर्ष से यह मंडल कार्य कर रहा है, अतः इसका स्थाई भवन बनने जा रहा है। जिसके माध्यम से व्यापक रूप से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहायता होगी। एक केन्द्रीय सभा बनाने का सुझाव भी रखा गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बोलते हुए आर्य बन्धु सतीश मित्तल जी ने मंडल को पूर्ण सहयोग देने तथा केन्द्रीय सभा के शीघ्र गठन करने पर अपनी सहमती प्रकट की।

समारोह में सभी समाजों के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति और बहुत संख्या में भाई बहनों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर मंडल के उप-प्रधान श्री वेद प्रकाश शर्मा जी ने 25000/- रु० दान देने की घोषणा की। अन्य व्यक्तियों ने भी दान दिया जिस में श्रीमती सुशीला भाटिया ने 2000/- रु० स्त्री आर्य समाज दयानन्द मार्ग के 1000/- भी शामिल हैं।

वर्ष 22 अंक 10, ज्येष्ठ 21 सम्वत् 2047 तदनुसार 3/3 जून 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

ईश्वर स्तुति प्रार्थना और उपासना

ले०—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० लिट०

स्तुति, प्रार्थना और उपासना—ये तीन शब्द अलग-अलग भाव बतलाते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी महाराज ने तीनों शब्दों को समझाया और लिखा है कि स्तुति में ब्रह्म के गुणों का गान किया जाता है, प्रार्थना में उससे सद्गुणों, साहस बुद्धि तथा ... की याचना की जाती है तो उपासना में ब्रह्म से मेल किया जाता है तथा उसका साक्षात्कार किया जाता है। सन्ध्या में हम प्रतिदिन उपस्थान मन्त्रों से प्रभु के निकट जाने का यत्न करते हैं। उपस्थान शब्द का अर्थ है, समीप बैठना। उपासना शब्द का भी यही अर्थ है। भक्त अब भगवान के समीप बैठा है। नियम, धारणा, ध्यान और जप-तप के द्वारा मनुष्य अपने प्रभु के बहुत अधिक समीप पहुंच जाता है। सन्ध्या में उपस्थान मन्त्रों से पहले व्यक्ति आत्मनिरीक्षण, मार्जन, अघमर्षण तथा मनसा परिक्रमा के द्वारा ऐसा प्रयत्न करता है कि परमात्म तत्त्व से उसकी एकता हो जाए, वह उसके समीप पहुंच जाए। भक्ति के समुद्र उस भगवान के समीप पहुंचते ही जीवात्मा की शक्तियां विकसित और महान् बनती हैं। पानी की नन्हीं बूंद अपने में तुच्छ, असमर्थ, सीमित, अकिंचन और अनुपयोगी है, परन्तु वही नन्हीं बूंद जब विशाल समुद्र में गिरकर समुद्र के साथ अपने को मिला देती है तो समुद्र के स्वभाव, शक्ति और विशालता के साथ एकता प्राप्त कर लेती है। इसी प्रकार मनुष्य की शक्तियां भी तुच्छ एवं सीमित हैं, परन्तु उपासना या ब्रह्म-सामीप्य या योग-नियम द्वारा महान् प्रभु से निकट सम्बन्ध स्थापित कर लेने पर मनुष्य की शक्तियों की योग्यता बढ़ जाती है तथा उसे नई-नई शक्तियों का अनुभव होता है। अरविन्दाश्रम की माता जी ने उपासना के विषय में लिखा है—

आध्यात्मिक जीवन अथवा योग के अभ्यास का उद्देश्य दैवी चैतन्यता जागृत करना है। दैवीय चैतन्यता जागृत करने का परिणाम मनुष्यों की शक्तियों का पवित्र, महान, यशस्वी तथा पूर्ण होना है।

उपासना की स्थिति बड़ी आनन्द दायिनी है। उसके विषय में उपनिषत्कार ने लिखा है—

समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवे
शितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत।

न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा
स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।

अर्थात् जिस पुरुष के समाधि योग से अविद्या मल नष्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर जिसने परमात्मा में अपना ध्यान लगाया है, अपने परिश्रम, तप और साधना से शिखर पर पहुंच गया है और वहां पहुंच जो अद्भुत दृश्य देख रहा है, भगवान की क्रीडास्थली के दर्शन कर रहा है वह समीपता की अनुभूति ही उपासना है। इस सामीप्य की अनुभूति में जो आनन्द या सुख भक्त को होता है, वह वाणी से नहीं कहा जा सकता, वह तो अनुभव की वस्तु है। सूरदास ने ठीक ही कहा है—

अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगहि मीठे फल को रस
अन्तरगत ही भावै।

परम स्वाद सब ही जू निरन्तर
अमित तोष उपजावै।

मन बानी को अगम अगोचर सो
जानै जो पावै।

इस उपासना की स्थिति तक पहुंचने के लिए मनुष्य को (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि ये आठ अंग हैं, इनका पालन और अभ्यास करना चाहिए। स्वामी जी महाराज ने लिखा है 'जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन का नाभि प्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड में किसी स्थान पर स्थिर करके अपने आत्मा और परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी होवें। जो इन साधनों को करता है, उसका अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। जो आठ प्रहर में घड़ीभर भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त करता है।' इसलिए हमें ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। वेद के एक मन्त्र में बतलाया है कि हमारा उपास्य देव कैसा है—

स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर्मित्रो
न भूदद्भुतस्य रथीः।

तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर्विश
उप ब्रुवते दस्ममारीः ऋ० ॥ 1।77।3

(स क्रतु) वह कर्ता है (स मर्य), वह संहारक है, (स साधु) वह संसार का कारक है। वह (मित्र न) मित्र की तरह (अद्भुतस्य रथी) अद्भुत सृष्टि को रथ करके उस पर आरूढ होने वाला है (मेधेषु प्रथम तं) यज्ञों में मेधा बुद्धि के कामों में प्रथम देव वही है (दस्म) उस दर्शनीय को (देवयन्ती आरी विश) देवता बनने की इच्छा करने वाले प्रगतिशील प्रजाजन (उप ब्रुवते) उपासना करते हैं।

इस मन्त्र का भाव है कि परमेश्वर संसार का रचयिता, धर्ता और नाशक है। जो मनुष्य उस दिव्यशक्ति से एकता स्थापित करना चाहते हैं उन्हें उसकी उपासना करनी चाहिए।

संसार में हमें जितने कष्ट, दुःख और चिन्ताएं सताती हैं उनका कारण हमारी ईश्वर से मित्रता की भावना है जिससे हम इस संसार में अपने को दुःखी, चिन्तित निराश्रित और एकाकी अनुभव करते हैं। जो ईश्वर को अपना पालक और धारक समझता है और जिसे उसके रुद्र रूप का जो दुष्टों को रुलाता है विश्वास रहता है वह सब प्रकार की निराशाओं और कष्टों से ऊपर उठ जाता। ऐसा मनुष्य जीवन की प्रत्येक असफलता को सफलता में बदलने को सचेष्ट रहता है, सबको उन्नति की सीढ़ी बनाना है।

वह संसार की सम्पूर्ण परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है। सर्वशक्तिमान प्रभु के सामीप्य से उसकी शक्तियां दुगुनी हो जाती हैं और वह सोचने लगता है कि मेरे ऊपर उस सच्चिदानन्द प्रभु का वरदहस्त है जो अनादि, अनन्त है। इसलिए मुझे घबराने की आवश्यकता नहीं, मुझे जीवन में डरने की आवश्यकता नहीं। वह अपने को विनाश और परिवर्तन से परे समझ लेता है। वह प्रभु के उपास्य रूप से अपने को शक्तिशाली बना लेता है और तब परिस्थितियां उसकी दासी हो जाती हैं। वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जाता है। उसकी उपासना से हमें साहस, बल और शक्ति प्राप्त भी क्यों न होगी? वह है भी तो सबसे अधिक व्यापक, सबसे अधिक प्रभावशाली और सबका सच्चा पालक। वेद ने कहा है—

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्र
व्यचसं गिरः।

रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं
पतिम् ॥ ऋ० 1।11।1

(समुद्रव्यचसम्) समुद्र के समान विस्तृत (रथानां रथीतमं) वीरों में श्रेष्ठ वीर (वाजानां पतिं) बलों के स्वामी (सत्पतिं) सबके सच्चे पालक (इन्द्रं) प्रभु को (विश्वा गिरः) सब स्तुतियां (अवीवृधन) बढ़ाती हैं, उसकी प्रशंसा करती हैं। इसीलिए तो उसके समीप हमें पहुंचना चाहिए। जब हम उसके समीप पहुंच जायेंगे उस समय संसार की कोई विपत्ति या दुःख हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। ऋग्वेद में कहा गया है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

व्याख्यानमाला-32

सन्तोष जिनके पास है, उस सम धनी जग में नहीं

लेखक—श्री सुखदेव राज शास्त्री, अधिष्ठाता श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर।

(गतांक से आगे)

सन्तुष्ट. को न शक्नोति फलमूलैरपि वर्तितुम्।
सर्वाणीन्द्रियलौल्येन सकटान्यवगाहते ॥22॥

कौन सन्तुष्ट पुरुष है ? जो फल, मूल खाकर निर्वाह नहीं कर सकता इन्द्रियो की चंचलता के कारण ही तो मनुष्य सब सकटों को भोगता है।

सन्तुष्टस्य निरीहस्य स्वात्मारामस्य यत्सुखम्।
कुतस्तत्कामलोभेन धावतोऽर्थेहया दिश ॥23॥

सन्तुष्ट, इच्छा रहित और अपने आत्मा मे आनन्द लेने वाले पुरुष को जो सुख होता है वह सुख कामना और लोभ से धन के लिए दिशा विदिशा मे दौडने वाले को कहा प्राप्त होता है ?

यद्यदव हिवाञ्छेत ततो वाञ्छा प्रवर्तते।
प्राप्त एवार्थत सोऽर्थो यतो वाञ्छा निवर्तते ॥24॥

मनुष्य जितनी अधिक इच्छा करता है उतनी ही इच्छा बढती आती है। प्राप्त धन मे से जितने से इच्छा की निवृत्ति होती है वस्तुत उतना ही धन होता है।

सन्तोषस्त्रिषु कर्तव्य स्वदारे भोजने धने।
त्रिषु चैव न कर्तव्यो दाने तपसि पाठने ॥25॥

तीन बातो मे स तोष करना चाहिए—अपनी स्त्री मे, भोजन मे और धन में। तीन मे सन्तोष नही करना चाहिए दान मे, तप मे और स्वाध्याय (पढने-पढाने) मे।

अर्थी करोति दैन्य लब्धार्थो गर्वपरितोषम्।
नष्ट धनश्च स शोक सुखमास्ते निस्पृह पुरुष ॥26॥

मागने वाला दीनता करता है, जिसको मिल जाता है वह अभिमानमे रहता है, जिसका धन नष्ट हो जाता है वह शोक करता है लेकिन जो इच्छा रहित सन्तोषी पुरुष है वह सर्वत्र सुख पूर्वक रहता है।

त्वामुदर साधु मन्ये शाकैरपि मदसि लब्धपरितोषम्।
हतहृदय ह्यधिकाधिकवाञ्छाशतदुर्भर न पुन ॥27॥

हे उदर ? मैं तुम्हे श्रेष्ठ मानता हू क्योकि तू शाक पत्तों से भी सन्तोष कर लेता है परन्तु अधिक अधिक इच्छाओ द्वारा बुरी तरह से परिपूर्ण दुष्ट मन को मैं श्रेष्ठ नही मानता।

सर्पा पिबन्ति पवन न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति।
कन्दै फलैर्मुनिवरा क्षपयन्ति काल,
सन्तोष एव पुरुषस्य पर निधानम् ॥28॥

सर्प केवल वायु ही सेवन करते हैं पुनरपि दुर्बल नही होते, जगली हाथी सूखे तिनके खाकर भी बलवान बन जाते हैं, श्रेष्ठ मुनि लोग कन्द मूल खाकर भी जीवन यापन करते हैं इसलिए पुरुष के लिए सन्तोष ही श्रेष्ठ कोष (निधि) है।

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वञ्च लक्ष्म्या,
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेष।
स हि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला,
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र ॥29॥

हम यहा वल्कलों (वृक्ष की छालो) द्वारा सन्तुष्ट है और तू लक्ष्मी से सन्तुष्ट है हम दोनों मे सन्तोष तो समान है कोई विशेषता नहीं है जिसकी तृष्णा विशाल होती है वही निर्धन होता है और मन के सन्तुष्ट हो जाने पर कौन धनवान है और कौन निर्धन है ?

[illegible]
ता त्वमस्य [illegible] ॥
[illegible] मन्दाः,
सन्तोषेण विना पराभवपद प्राप्नोति मूर्खो जनः ॥30॥

सुगन्ध [illegible] मालती को छोडकर भवरा [illegible] (कुछ का फूल) पर जा बैठा, उसको [illegible] फिर वह कमल पर जा बैठा, [illegible] कमल में बन्द कर दिया और वह मूर्ख रोने लगा। बात यह है कि सन्तोष के बिना [illegible] व्यक्ति तिरस्कार पाते हैं।

चरित्रवान् बनो !

रचयिता—श्री कवि कस्तूर चन्द जी घनसार
कवि कुटीर [illegible] (राज०)

नवयुवक चरित्रवान हो सभ्य, नर-वर बनें सुमानी ॥
दुखद शराब असुरा जल पी कर, आमिष भक्षण करते।
जीवन बिगाड [illegible] [illegible]-भावना-भरते ॥
इधर सिनेमा सुने रेडियो, प्रतिदिन बिगडे मतियो।
उधर असुरा, खान मद सेवे, मन्द बनें मन मतियों ॥
भूले सुखद आर्य सद नीतियो करें सर्व विधि हानी।
नवयुवक चरित्रवान् हो सभ्य, नर-वर बनें सुमानी ॥
आमिष-मन्द शराबी सब को, कर डाला है बल दल।
प्रखर-पावन गया रूप सब, ब्रह्मचर्य का जो बल ॥
आज वही है लेडी दर्शन, सिर पर लटिये लटके।
चलते टम-टम चाल विदेशी सूट बूट पग पटके ॥
वाइफ साथ सिनेमा देखें फैसन अजिब जवानी।
नवयुवक चरित्रवान हो, सभ्य नर-वर बनें सुमानी ॥
रहा प्रचार-पाप पाखण्ड का, पापाचार बढा है।
अधर्म-अन्याय रहा देश मे, अविद्या नशा चढा है ॥
विचलित हुई बुद्धि लोगों की, देश का ध्यान भुलाया।
संस्कृति पावन थी अति प्यारी, बन मति मन्द बिसराया ॥
अरे ! बिगाने बनें देश मे, करते हैं मन-मानी।
नव युवक चरित्रवान हों सभ्य, नर-वर बनें सुमानी ॥
अण्डा आमिष, अहार बना है, खाते तब भी भूखे।
सुरका और चला भारत मे, पिच पिच चलते थूके ॥
नवयुवक बालक भी सीखे, सठता का सब चोड़े।
भये बिराने आज देश में, जीवन दुख में बोये ॥
नव रंग गुलन वे तन सुन्दर, करवी भूल जवानी।
नव युवक चरित्रवान हो सभ्य, नर वर बनें सुमानी ॥
नित्य स्नान करे शुद्ध हेतु, स्वच्छ शरीर रखावें।
[illegible] स्मरण, ओम् जपन हों, मन-पावन बन जावें ॥
स्वाध्याय करें सत्संग, सदाचार, को पावें।
सत्य-सेवा संयम सदा हो, नियम सुखद संजावें ॥
सुखी बनें 'घनसार' देश में चमके जीवन जवानी।
नवयुवक चरित्रवान् हो सभ्य नर वर बनें सुमानी ॥

टेलीफोन नम्बर बदला

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का टेलीफोन नम्बर बदल गया है।

अब घर का नम्बर	59746
कार्यालय सभा प्रधान जी	57867
. . ..	57868
सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन का नम्बर	73020 ही रहा

है सभी अपनी अंकित कर लें।

सम्पादकीय

इन का भी निर्णय होना चाहिए

लगभग 20 वर्ष पहले आर्य समाज के आकाश पर दो नये सितारे चमकने लगे थे। उस समय उन में से एक का नाम श्री इन्द्र देव और दूसरे का नाम श्री श्याम राव था। कुछ समय के पश्चात् दोनों ने सन्यास ले लिया। श्री इन्द्र देव, स्वामी इन्द्र वेश बन गए और श्री श्याम राव, स्वामी अग्निवेश बन गए और इसके साथ ही आर्य समाज में एक क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ और जनता ने समझा कि एक नई शक्ति व नई जागृति हुई है जो आर्य समाज में एक नये जीवन का संचार करेगी। लोग आँखें बन्द कर के इनके पीछे चलने लगे। यह दोनों प्रारम्भ में जिस प्रकार आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयास कर रहे थे, उसके कारण बहुत से आर्य समाजी इनकी ओर आकृष्ट हुए। उस समय तो स्थिति यह थी कि कोई कहता था कि स्वामी विवेकानन्द ने नया जन्म ले लिया है, कोई कहता था एक युवा शक्ति आर्य समाज का नेतृत्व करने के लिए पैदा हो गई है और यह युवा शक्ति इसे शिखर पर पहुंचाएगी। वास्तविक स्थिति यह थी कि उस समय इन का रूप किसी को पता न चला था। विशेषत: स्वामी अग्निवेश का। हम पंजाब वाले भी यही समझते थे कि इन दोनों के द्वारा अब आर्य समाज का उद्धार हो जाएगा। परन्तु जब धीरे-धीरे इनकी विचारधारा लोगो के सामने आने लगी विशेष कर अग्निवेश की, तो यह नजर आने लगा कि कहीं आर्य समाज की आड़ में यह साम्यवाद का प्रचार तो नहीं हो रहा। स्वामी अग्निवेश ने स्वयं कई बार लोगों से कहा था कि उसके दो गुरु हैं। एक स्वामी दयानन्द और दूसरे कार्ल मार्क्स। उसकी इन गतिविधियों और विचारधारा से कुछ परेशानी पैदा होने लगी। पंजाब और हरियाणा दोनों के आर्य समाजियों ने अन्त में यह फैसला किया कि इनके चंगुल से निकलने का एक ही रास्ता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को विशाखन कर दिया जाए और वह हो गया। उसके विरुद्ध इन्होंने अदालत का दरवाजा खटखटाया परन्तु यह सफल नहीं हुए, और फिर इनकी गतिविधियों को आपत्तिजनक समझते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इनके लिए आर्य समाज की वेदी बन्द कर दी। उसके पश्चात स्वामी इन्द्रवेश तो फिर भी अपने ढंग से आर्य समाज के प्रचार के कार्य में लगे रहे परन्तु स्वामी अग्निवेश ने कई नए नए रास्ते इख्तयार कर लिये। उन्होंने भी बन्धुआ मजदूरों के पक्ष में आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया, कभी सति प्रथा के विरोध में अभियान प्रारम्भ कर दिया कभी एक अभिनेत्री शबाना आजमी को साथ ले कर हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए आन्दोलन आरम्भ कर दिया। इसी के साथ वह विदेशों में जा कर कई दूसरे आन्दोलनों में भी भाग लेते रहे। और साथ ही जब कभी कोई उन्हें किसी आर्य समाज के उत्सव पर बुलाता तो वहां भी पहुंच जाते। तात्पर्य यह है कि यह पता न चल रहा था कि अग्निवेश कहां खड़े हैं। उन्हें आर्य समाज से निष्कासित करने का सार्वदेशिक सभा का आदेश अभी कायम है। वह वापिस नहीं लिया गया। इस लिये वह जब कभी किसी आर्यसमाज के उत्सव या सम्मेलन में जाते हैं तो यह प्रश्न अवश्य किया जाता है कि वह कहां खड़े हैं और साथ ही यह भी कि क्या उन्हें आर्य समाज की वेदी से बोलने का अधिकार है या नहीं।

गत दिनों 19-20 मई को जयपुर में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह मनाया गया था। यह दोनों ही वहां गए थे और अब आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री मुकन्द दास चालकस्वी का एक परिपत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने यह प्रश्न किया है कि स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश की वास्तविक स्थिति क्या है? सार्वदेशिक सभा ने इनके विरुद्ध जो आदेश जारी किया था वह समाप्त हो गया है या अभी चल रहा है? जयपुर के सम्मेलन में जहां ये दोनों गए हुए थे वहां सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी भी गए हुए थे और यह तीनों एक ही मंच से बोलते रहे हैं। इसलिए जयपुर के आर्य समाजियों ने अब यह प्रश्न किया है कि इन दोनों की वास्तविक स्थिति क्या है? मैं भी समझता हूं कि इसका स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए। इन पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया था यदि वह वापिस ले लिया गया है तो सार्वदेशिक सभा को इस की घोषणा कर देनी चाहिए। यदि वापिस नहीं लिया गया तो उस स्थिति में प्रान्तीय सभाओं को इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश होना चाहिए कि वह क्या करें? मेरी पहले भी यह निश्चित धारणा थी और आज भी है कि यदि यह दोनों बाकि सब झंझटों से निकल कर आर्य समाज की सेवा करें तो यह बहुत कुछ कर सकते हैं। स्वामी इन्द्रवेश के विषय में कभी भी यह संदेह नहीं हुआ कि वह आर्य समाजी नहीं है। परन्तु अग्निवेश कई बार ऐसी बातें कर जाते हैं जिनसे ऐसा आभास होता है कि यह वास्तव में वे कम्युनिस्ट हैं। एक बार माननीय उत्तम चन्द जी शरर ने अग्निवेश जी से यह प्रश्न भी किया था कि उनके एक हाथ में सत्यार्थ प्रकाश रहता है तो दूसरे हाथ में कार्ल मार्क्स की पुस्तक "दि कैपिटल" रहती है। वह मार्क्स और दयानन्द दोनों को अपना गुरु कैसे मान सकते हैं। अग्निवेश जी इस का कोई सतोषजनक उत्तर न दे सके थे। परन्तु मैं समझता हूं कि अब वह समय आ गया है जब इन दोनों के विषय में यह स्पष्ट होना चाहिए कि आर्य समाज की वेदी उनके लिए बन्द है या खुली है। यह स्पष्टीकरण केवल सार्वदेशिक सभा ही कर सकती है और उसी के साथ इन्द्रवेश और अग्निवेश इन दोनों को भी यह बता देना चाहिए कि वह महर्षि दयानन्द की विचारधारा मे विश्वास रखते हैं या नहीं। विशेष रूप से अग्निवेश को यह बताना चाहिए कि वह दयानन्द और कार्ल मार्क्स में से किस को अपना गुरु मानते हैं। यदि इन दोनों की स्थिति स्पष्ट हो जाए तो इन दोनो को आर्य समाज के उत्सवों व सम्मेलनों में बुलाया जाना कठिन न होगा और इस से आर्य समाज को भी बहुत लाभ होगा। इस लिए राजस्थान सभा के अधिकारियों ने जो प्रश्न उठाया है उस का उत्तर उन्हे अवश्य मिलना चाहिए।

—वीरेन्द्र

लुधियाना की दो लड़कियों को सत्यार्थ प्रकाश के प्रति श्रद्धा

लुधियाना में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की जहां और कई संस्थाएं हैं, वहां एक आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल भी है। इस स्कूल की कन्याएं प्रति वर्ष सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं मे बैठती हैं और प्राय: अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होती हैं। इस वर्ष की परीक्षा में भी इस स्कूल की कई कन्याओं ने भाग लिया जिन में से कुमारी शैलजा जैन प्रथम रही और कुमारी मधुबाला तृतीय रही है। इस स्कूल की प्राचार्य और प्रबन्धक महिलाएं अपनी कन्याओं को सत्यार्थ प्रकाश से अवगत कराने के लिए जो प्रयास कर रही हैं वह सराहनीय है और इसके लिए मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से उन सब को बधाई देता हूं। हमारी सभा का वार्षिक अधिवेशन 24 जून को जालन्धर में हो रहा है। इस अवसर पर इन दोनों कन्याओं को सम्मानित किया जाएगा जो सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा में प्रथम और तृतीय रही हैं।

पंजाब में हमारे और भी कई स्कूल व कालेज हैं। मैं उनके सभी अधिकारी महानुभावों से भी कहना चाहता हू कि जहां तक सम्भव हो सके वह भी आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल लुधियाना की तरह अपने विद्यार्थियों को सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा में बैठने के लिए तैयार करें। जो विद्यार्थी सत्यार्थ प्रकाश को अच्छी तरह से पढ़ लेगा वह आर्य समाज से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेगा। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश का विद्यार्थियों में अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। प्रति वर्ष और भी जिन स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थी सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहेंगे या और भी अधिक अंक प्राप्त करेंगे तो सभा की ओर से उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा।

—वीरेन्द्र

सत्यार्थ प्रकाश सर्वांग-धर्म शास्त्र

ले० — स्व० डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

(गतांक से आगे)

बुद्ध ने अपने उपदेशों मे सूक्ष्म व जटिल दार्शनिक विचारो को स्थान नही दिया। इनकी उन्होंने उपेक्षा की। उनका मत था कि जीवन की पवित्रता और आत्म-कल्याण के लिए इन पर विचार करना लाभकारी नही है। पर मनुष्यो में इन प्रश्नो के सम्बन्ध मे स्वाभाविक जिज्ञासा होती है होती है। बौद्ध लोग भी इस जिज्ञासा से बचे नही रह सके और उन्होने बहुत से ऐसे दार्शनिक सम्प्रदायो को विकसित कर लिया जो एक दूसरे के विरोधी है। बुद्ध के निर्वाण के केवल सौ वर्ष पश्चात् बौद्ध धर्म के सम्प्रदायो (स्थविरवाद और महासांघिक) मे विभक्त हो गया और तीन सौ वर्ष बाद अठारह सम्प्रदायो मे। इन अठारह सम्प्रदायो के भी अनेक उपसम्प्रदाय थे। तीसरी सदी ईस्वी पूर्व मे लिखे गये बौद्ध ग्रन्थ 'कथा वत्थु' मे बौद्ध धर्म के 214 वादो का विवेचन किया गया है। यह तथ्य इस बात को सूचित करने के लिए पर्याप्त है कि दार्शनिक बातो की उपेक्षा कर महात्मा बुद्ध ने एक भूल की थी। पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह भूल नही की। सत्यार्थ प्रकाश मे उन्होने सृष्टि की उत्पत्ति, जीव-प्रकृति और परमेश्वर का अनादित्व, पुनर्जन्म, परलोक, मोक्ष आदि सब दार्शनिक प्रश्नो का विवेचन किया है और उनके करते हैं, यद्यपि स्वतः प्रामाण्य केवल वेदो का है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर, मोक्ष सदृश विषयों के प्रतिपादन के लिए युक्ति और तर्क के साथ साथ वेदो का भी आश्रय लिया है और राजधर्म, वर्णाश्रम धर्म आदि के लिए मनुस्मृति सदृश धर्म ग्रन्थो का भी।

धर्म के सब अंगो का निरूपण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वार्द्ध मे दस समुल्लासों मे किया है। मानव जीवन के चारों आश्रमों के धर्म सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवे समुल्लास मे प्रतिपादित हैं और चारो वर्णों के चौथे समुल्लास मे। शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्तो और पठन पाठन विधि का विवेचन दूसरे और तीसरे समुल्लास में किया गया है और विवाह, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध तथा नियोग का चौथे समुल्लास मे। क्या सदाचार है और क्या अनाचार एवं क्या भक्ष्य है और क्या अभक्ष्य? इसका विवेचन दसवें, समुल्लास में है छठे समुल्लास मे राजधर्म पर प्रकाश डाला है। पहले, सातवें, आठवें और नवें समुल्लासों का सम्बन्ध परा विद्या के साथ है और इनमे एकेश्वरवाद, ईश्वर का स्वरूप, ईश्वर का आस्तित्व, जीव की ईश्वर से भिन्नता, सृष्टि की उत्पत्ति, विद्या और अविद्या तथा मुक्ति आदि आध्यात्मिक, पारलौकिक व दार्शनिक विषयो का निरूपण है। इन पर महर्षि के मन्तव्य इतने स्पष्ट हैं कि उनमे किसी सन्देह, भ्रान्ति व मतभेद का अवकाश ही नहीं है। इसलिए आर्य समाज मे उस प्रकार के परस्पर विरोधी दार्शनिक सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव विकास हो ही नहीं सकता, जैसा कि बौद्धो मे हुआ था। महर्षि द्वारा प्रतिपादित पूजाविधि भी सर्वथा स्पष्ट है। उसमे पञ्च महायज्ञो का समावेश है। ब्रह्मचर्य आश्रम मे रहते हुए ब्रह्मचारी को केवल दो यज्ञ (ब्रह्म-यज्ञ और देवयज्ञ या अग्निहोत्र) करने होते हैं और गृहस्थ को पांचो यज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, नृयज्ञ और भूतयज्ञ)। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना महर्षि द्वारा प्रतिपादित पूजाविधि के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। सत्यार्थ प्रकाश मे वह सब पूजापाठ, याज्ञिक अनुष्ठान आदि विशद् रूप मे प्रतिपादित है, जिन द्वारा मनुष्य लौकिक अभ्युदय के साथ निःश्रेयस की साधना मे भी तत्पर हो सकता है।

सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध मे चार समुल्लास हैं, जिनमे विविध सम्प्रदायो तथा मतमतान्तरों के सिद्धान्तो, मन्तव्यों तथा पूजा-पद्धति आदि का तर्क संगत रूप से विवेचन किया गया है। सत्य सनातन वैदिक धर्म में जिन अनेक ऐसे सम्प्रदायों का विकास हो गया था, जिनके बहुत से मन्तव्य वेद विरुद्ध हैं, उनकी विवेचना ग्यारहवें समुल्लास में की गई। ये सम्प्रदाय वेदों को प्रमाण रूप मे स्वीकार करते हैं और ईश्वर के भी विश्वास रखते हैं। इन्हें वैदिक धर्म का विकृत या परिवर्तित रूप कहा जा सकता है। हिन्दू धर्म का जो रूप उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग में प्रचलित था, वह विशुद्ध वैदिक न होकर पौराणिक था। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उसी की आलोचना की है। बारहवें समुल्लास में उन सम्प्रदायों व मतों की समीक्षा है, जो वेदों के प्रामाण्य को स्वीकार नहीं करते। तेरहवें समुल्लास में क्रिश्चियन मत समीक्षा है और चौदहवें समुल्लास में इस्लाम की।

विभिन्न मतों के विवेचन समीक्षा, या खण्डन में महर्षि का क्या प्रयोजन था? यह सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका के निम्नलिखित वाक्यों से स्पष्ट हो जाता है—"इसमें यह अभिप्राय रक्खा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे-वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मतमतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रक्खा है कि सब मत मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रक्खा है, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें।" वैदिक धर्म से भिन्न जो बहुत से सम्प्रदाय व मत-मतान्तर हैं, उनमें भी सत्य बातें हैं, इस तथ्य को महर्षि ने स्वीकार किया है ये बातें 'सबमें अविरुद्ध' या सबमे एक समान है अतः उन्हे लिखने या उन्हें प्रतिपादित करने से कोई लाभ नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि उनमें जो बातें प्रकट रूप से या गुप्त रूप मे बुरी व असत्य हैं, उन्हे प्रकाश मे लाया जाये और उनका खण्डन किया जाए। सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध मे महर्षि ने यही किया है। उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों मे अन्य मतो के खण्डन मे उनका जो प्रयोजन व उद्देश्य था, इसे बार बार स्पष्ट किया गया है। "इन सब मतवादियो, इनके चेलों और अन्य सब को परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ बनाया है। जो-जो इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य का खण्डन लिखा है, वह सबको जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रंथ देखने से बोध हुआ है, उसको सबके आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है, क्योंकि विज्ञान गुप्त हुए का पुनः मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जायेगा। [illegible] अपनी-अपनी समझ के अनुसार [illegible] का ग्रहण करना और [illegible] मत को छोड़ना सहज होगा।...... [illegible] की बुद्धि का विरोध करने में [illegible] सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है, इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्याय दृष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद विवाद, विरोध करने कराने के लिए। इसी मत मतान्तर के विवाद से जगत् मे जो जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे, उनको पक्षपात रहित विद्वद् जन जान सकते हैं, जब तक इस मनुष्य जाति [illegible] मत मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा।"

बारहवें समुल्लास में बौद्ध, जैन आदि नास्तिक मतों की समीक्षा करने से पूर्व महर्षि ने अनुभूमिका मे अपने प्रयोजन को इस प्रकार व्यक्त किया है—"जो जो हमने इनके मत के विषय मे लिखा है, वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ है न कि विरोध या हानि करने के अर्थ। इस लेख को जब जब जैनी, बौद्ध वा अन्य लोग देखेंगे, तब सबको सत्यासत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का समय मिलेगा और बोध भी होगा।

जब तक वादी-प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद वा लेख न किया जाए, तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगो मे सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महा अन्धकार मे पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है, इसीलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद या लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।"

अन्य मतों की समीक्षा व खण्डन महर्षि ने किस प्रयोजन से किया, इसे स्पष्ट करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश से कुछ अन्य उद्धरण देना भी उपयोगी होगा। तेरहवें समुल्लास की अनुभूमिका में उन्होंने लिखा है—"यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिए है न कि किसी को दुःख देने वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के अर्थ।...इससे एक यह प्रयोजन सिद्ध होगा कि मनुष्यों को धर्म विषयक ज्ञान बढ़कर यथायोग्य सत्यासत्य मत और कर्त्तव्याकर्त्तव्य कर्मों का परित्याग करना सहजता से हो सकेगा।— मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है, जितना अपना पठित वा श्रुत है, उतना निश्चय कर सकता है। यदि एक मत वाले दूसरे मत वाले के विषयों को जानें और अन्य न जानें तो यथावत् संवाद नहीं हो सकता किन्तु अज्ञानी किसी भ्रम रूप बाड़े में गिर जाते हैं, ऐसा न हो इसीलिए इस ग्रंथ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा-थोड़ा लिखा है। इतने ही से शेष विषयों में अनुमान है कि वे सच्चे हैं या झूठे। जो-जो सर्वमान्य सत्य विषय हैं, वे तो सबमें एक से हैं। झगड़ा झूठे विषयों में होता है।" इसी बात को महर्षि ने चौदहवें समुल्लास

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कश्मीर की कहानी—इतिहास की जुबानी (3)

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

यह लेखमाला लिखने का मेरा उद्देश्य एक भ्रामक प्रचार पर से पर्दा उठाना है कि कश्मीर एक मुस्लिम देश है। आज जो भी उठाता है यही कहता है कि चूकि कश्मीर में मुसलमानो का बाहुल्य है इसलिए यह एक मुस्लिम देश है। हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर यहा साम्प्रदायिकता को हवा दी जाती है। पजाब मे 45 प्रतिशत हिन्दू रहते है लेकिन जब पजाब का उल्लेख आता है तो यही कहा जाता है कि पजाब समस्या सिख समस्या है और सिख समस्या अकाली समस्या है। कश्मीर के बारे मे भी चूकि यह प्रचार किया जाता है कि यह एक इस्लामी देश है। यह आवश्यक है कि उस झूठ को किसी न किसी तरह तोड दिया जाए। और यह कश्मीर के इतिहास से बेहतर और कोई नहीं कर सकता।

इसमे कोई सदेह नही कि आज कश्मीर मे बहुसख्या मुसलमानो की है। जिस तरह जम्मू मे बहुसख्या हिन्दुओ की है। आज जम्मू और कश्मीर दो अलग अलग देश नहीं हैं। न ये दो अलग अलग राज्य हैं। इनके अतिरिक्त एक तीसरा क्षेत्र भी इसमे शामिल है। वह लद्दाख है। यहा के लोग अपने आपको बोध कहते हैं। इस तरह जम्मू कश्मीर और लद्दाख यह तीनो मिला कर एक राज्य बनता है जिसे जम्मू कश्मीर कहा जाता है। इसमे हिन्दू और मुसलमान लगभग बराबर हैं। इसे एक इस्लामी देश कहना किसी भी तरह उचित नहीं है।

लेकिन मैं तो केवल कश्मीर की बात कर रहा हू। इसमें मुसलमानो का बहुमत अवश्य है और बहुत अधिक बहुमत है जैसा कि पडित जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी एक पुस्तक मे लिखा था, जिन दिनों वहा मुस्लिम शासक सत्ता मे थे उन दिनों हिन्दुओ को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। यही कारण है कि आज भी कश्मीर के हिन्दुओं और मुसलमानो के कई रीति रिवाज मिलते हैं। कई मुसलमान अपने आप को पडित कहते हैं। पडित सस्कृत का एक शब्द है जिसका अर्थ है कि एक योग्य व्यक्ति लेकिन कश्मीर मे पडित एक जाति बन गई है। इसलिए कई मुसलमान भी अपने आपको पडित कहते हैं। यह सब कुछ केवल इसलिए हो रहा है क्योंकि मुस्लिम शासको ने हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया था। यह मैं नहीं कह रहा, पडित जवाहर लाल कह गए हैं। वह भी कश्मीरी पडित होने पर गर्व अनुभव किया करते थे। यही कारण था कि वह शेख अब्दुल्ला के इतने निकट थे।

कश्मीर वास्तव मे एक हिन्दू देश था और आज भी है। इसका सबसे बडा प्रमाण उसका इतिहास है। वह ऐसा है जिसे झुठलाया नही जा सकता। उसके इस इतिहास का नाम "राज तरगिणी" है। यह पुस्तक सस्कृत में कल्हण नाम के एक शायर और इतिहासकार ने 1148 में अर्थात् 840 वर्ष पहले लिखी थी, जिसमें कश्मीर का इतिहास महाभारत के समय से लिखा गया है। उस समय सस्कृत के अतिरिक्त और कोई भाषा नहीं हुआ करती थी। इसलिए यह उसी भाषा में लिखी गई थी। संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसमें हमारे सभी प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ, वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत और दूसरे कई ग्रन्थ लिखे गए थे। महाकवि कल्हण ने भी कश्मीर का इतिहास इसी भाषा अर्थात् सस्कृत में लिखा था जिसे देवभाषा भी कहते हैं अर्थात् देवताओं की भाषा।

इससे पहले कि मैं राज तरगिणी के बारे में कुछ और लिखू कश्मीर का एक हिन्दू देश होने का एक और प्रमाण भी पेश करना चाहता हू। कश्मीर की सभी बडे बडे स्थानों के नाम हिन्दी या सस्कृत में हैं। वहां कई मन्दिर भी बने हुए हैं जो उसकी पुरानी सस्कृति की याद दिलाते हैं। सबसे बडी निशानी अमरनाथ की गुफा है। अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ और जगन्नाथ पुरी यह चारों हमारे बहुत पुराने तीर्थ माने गए हैं। गत वर्ष तक तो हजारों लोग देश के [illegible] जाकर कश्मीर में अमरनाथ की यात्रा के लिए जाया करते थे। वहा 18 हजार फुट की ऊचाई पर एक मन्दिर बना हुआ है जिसमें शिवलिंग स्थापित है। हर वर्ष लोग वहा जाते हैं उसकी पूजा करने के लिए। उस मन्दिर के बाहर एक छोटी सी नदी भी बहती है जिसे कृष्ण गगा कहते हैं। उसमें बर्फानी पानी होता है। फिर भी लोग उसमे नहाते हैं। यह अपने धर्म के प्रति हिन्दुओं की गहन आस्था का एक बहुत बडा प्रमाण है। यदि कश्मीर एक मुस्लिम देश होता तो न अमरनाथ स्वामी का यह मन्दिर बनता न लोग पूजा के लिए वहा जाते। श्रीनगर से अमरनाथ जाते समय रास्ते मे पहलगाम भी आता है। उसमें पहले एक और तीर्थ है। उसका नाम वास्तव में मार्तण्ड है लेकिन उसे बिगाड कर मटन कर दिया गया है उसकी एक विशेषता यह भी रही है कि यहा कश्मीरी पडितों के ऐसे परिवार भी रहते हैं जिनके पास कई वर्षों का पुराना इतिहास लिखा पडा है। यदि किसी वश के पूर्वज या पूर्वजों के भी पूर्वज कभी कश्मीर या पहलगाम की तरफ गए हैं उन सब की पूरी वंशावली लिखित रूप से ये पण्डे आपको पढ कर सुना देते हैं। पीढी दर पीढी सब का पूरा हाल इन पडितों के पास मिल जाता है। सारे विश्व में ऐसे लोग आपको कहीं नही मिलेंगे जो किसी वश का पीढी दर पीढी इस तरह का रिकार्ड रखें और ये सब पुराने हिन्दू कश्मीरी पडित हैं जो इस विचारधारा का एक और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि कश्मीर एक हिन्दू है। (क्रमश)

महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं

हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौधरी बंसी लाल के उद्गार

हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौधरी बसी लाल जी गत दिनो देहली मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी से मिले और देश की वर्तमान स्थिति पर विचार विमर्श करते हुए चौधरी बसी लाल ने कहा कि वह दो महा पुरुषो से विशेष प्रभावित हैं। पहले हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती और दूसरे हैं महात्मा गांधी। इनके अतिरिक्त दो और महापुरुषो का भी मुझ पर बहुत प्रभाव है, एक हैं नेता सुभाष चन्द्र बोस और दूसरे सरदार वल्लभ भाई पटेल। इनके अतिरिक्त वह किसी और को अपना आदर्श नहीं मानते। चौधरी बसी लाल जी श्री वीरेन्द्र के साथ हरियाणा की वर्तमान स्थिति पर जब बात कर रहे थे तो उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध आर्य समाजी और ससद सदस्य श्री कैलाश नाथ सिंह और प्रसिद्ध आर्य समाजी व हिन्दी के समर्थक श्री वेद-प्रताप वैदिक और आचार्य भगवान देव जी भी उस समय वहा विद्यमान थे। इन के सामने चौधरी बसी लाल ने महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा कि मैं उन्हे अपना गुरु मानता हू। क्योंकि मैं जो कुछ भी बना हू, उन की ही विचारधारा से बना हू।

—सह सम्पादक

आर्य समाज फाजिलका का चुनाव

आर्य समाज फाजिलका का वार्षिक चुनाव 1990 91 सर्वसम्मति से नीचे लिखे अनुसार सम्पन्न हुआ। निवेदन है—

सरक्षक—श्री गिरधारी लाल बागपाल।

प्रधान—श्री सुभाष चन्द्र असूजा एडवोकेट।

उप-प्रधान—श्री बनवारी लाल अनेजा एडवोकेट, श्री चौ० शिवचन्द।

महा मन्त्री—श्री मास्टर मूलचन्द वर्मा।

उप-मन्त्री—श्री मास्टर शाम लाल

प्रचार मन्त्री—श्री वेदप्रकाशास्त्री।

कोषाध्यक्ष—श्री मास्टर बनवारी लाल सूना।

ओडीटर (लेखा निरीक्षक)—श्री विद्यासागर मुसरी एडवोकेट।

आर्य समाज की स्थापना क्यों की गई ?

ले०—श्री यशपाल आर्य बन्धु, सिद्धान्त मनीषी, चन्द्र नगर, मुरादाबाद।

पुनर्जागरण के अद्वितीय सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धर्म, समाज, संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा-भूषा आदि के क्षेत्रों मे नवीन मूल्यों की स्थापना करते हुए जब आर्य समाज की स्थापना की तो उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आर्य समाज कोई मत, मजहब, सम्प्रदाय अथवा पंथ नहीं है। उन्होंने स्वमन्तव्यामन्तव्यों का प्रकाश करते हुए उद्घोष किया कि "मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय: नही है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।"

अपने इस उद्घोष के पश्चात् भी महर्षि ने आर्य समाज की अलग से स्थापना क्यो की जबकि ब्राह्मसमाज, प्रार्थना समाज और थियोसोफिकल सोसायटी आदि विभिन्न संस्थाएं समाज सुधार का कार्य कर रही थीं ? महर्षि ने उन संस्थाओं के साथ सहयोग करके सुधार के कार्य को आगे नहीं बढ़ाया ? आइये ! इस पर थोड़ा सा विचार करें।

इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि ने उन संस्थाओं के साथ मिल-कर काम करने का कई बार प्रयत्न किया था। थियोसोफिकल सोसायटी तो अपने को आर्य समाज की ही एक शाखा भी कहने लग गई थी। दिल्ली दरबार और चान्दापुर के मेले पर महर्षि ने ऐसे प्रयत्न किए थे जिस से देश के सभी सुधारक एक साथ मिल कर सुधार का कार्य कर सकें। परन्तु जब उन्होंने देखा कि कई विषयों पर मौलिक मतभेद हैं, तब फिर उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करनी ही उचित समझी। जहां तक ब्राह्मसमाज आदि का प्रश्न है, महर्षि का कथन है कि उन में देश भक्ति अति न्यून है। वे इस देश की बड़ाई न कर भरपेट बुराई करते हैं। राष्ट्रवादी दयानन्द को वह बात गंवारा नहीं थी। जहां समाज सुधार और धर्म संस्थापन उन का उद्देश्य था, वहां देश को विदेशी दासता से मुक्ती दिलाना भी उनका एक लक्ष्य था। इस लक्ष्य की पूर्ति में उपरोक्त संस्थाओं को बाधक जानकर महर्षि ने आर्य समाज की अलग से स्थापना करनी ही श्रेयस्कर समझी। महर्षि ने आर्य समाज के बारे में लिखा है कि—"जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण हो सकता है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। "और" यदि उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये। नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा।"

महर्षि के उपरोक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि महर्षि ने किसी विशेष उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की थी। आइये। देखें कि वह उद्देश्य क्या था ?

आर्य समाज के उद्देश्य का ज्ञान हमें दो बातों से होता है। प्रथम तो यह कि जब आर्य समाज की बम्बई में 10 अप्रैल सन् 1875 ई० को स्थापना गई थी तो इसे पंजीकरण हेतु पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था और दूसरा आर्य समाज के उद्देश्यात्मक उस के दस नियम। रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था, उस में लिखा था कि आर्य समाज का उद्देश्य संसार में वेद-विद्या का प्रचार करना है। ब्राह्मसमाज आदि सुधारक संस्थायें तथा थियोसोफिकल सोसायटी को वेद से कोई लगाव नहीं था। लाहोर में ब्राह्मसमाज और आर्य समाज के एकीकरण की बात भी उठी थी। तब ब्राह्मसमाज वालों ने आर्य समाज के तृतीय नियम पर आपत्ति उठाई थी और कहा था कि यदि यह नियम निकाल दिया जावे तो ब्राह्म-समाज आर्य समाज का सहयोगी बन सकता है। परन्तु महर्षि वेद को किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। इस लिए वेद-विद्या के प्रचार के लिए उन्हें आर्य समाज की स्थापना करनी पड़ी।

महर्षि की मान्यता थी कि जैसे सूर्योदय होने पर भिन्न भिन्न प्रकार के दीपकों के रगड़े झगड़े मिट जाते हैं, वैसे [illegible] के प्रचार होने से सम्प्रदायों के रगड़े झगड़े मिट सकते हैं और राष्ट्रीय एकता की स्थापना हो सकती है। वेद का आधार लेकर चलने वाले स्वामी दयानन्द के लिये यह आवश्यक था कि वे वेद के वास्तविक स्वरूप और यथार्थ अर्थों को संसार के समक्ष रखते हैं क्योंकि संसार वेदों को सर्वथा भूल चुका था। महर्षि ने संसार का ध्यान इस भूली बिसरी विद्या की ओर खिंचवाया। इतना ही नहीं उन्होंने वेद के सही रहस्यों को खोल कर सर्व-साधारण की भाषा में सुलभ करा दिया और इस प्रकार धर्म सम्बन्धी मिथ्या धारणाओं और भ्रामक विचारों पर कुठाराघात करना प्रारम्भ कर दिया। उनका उद्देश्य केवल वेद विद्या का प्रचार करना ही नहीं था अपितु वेद के सम्बन्ध में प्रचलित मिथ्या धारणाओं और भ्रान्त विचारों का निराकरण करना भी था।

महर्षि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेद के प्रचार में ही लगा दिया। वे कहा करते थे कि—"वैदिक-धर्म-प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को अवश्य पूर्ण करूंगा।" इतना ही नहीं महर्षि की उत्कट अभिलाषा थी कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बहुत से उपदेशक होने चाहिएं, क्योंकि इतना बड़ा काम एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता। फिर भी उनका यह दृढ़-निश्चय था कि 'अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो कुछ दीक्षा ली है उसे अवश्य लाऊंगा।'

महर्षि दयानन्द स्वयं को जहां वेद मत का प्रचारक मानते थे वहां अपने अनुयायियों के लिए भी वेद मत का अनुयायी होने की व्यवस्था [illegible] करते थे। अत: कहना होगा कि आर्य समाज वेद प्रचारक संघ ही है। इसकी समस्त मान्यतायें वेद पर ही आधारित हैं। इसका दार्शनिक आधार वेद ही है। अत: वेद के प्रचार प्रसार के लिए ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसी लिए आर्य समाज के तृतीय नियम में यह व्यवस्था दी गई कि—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" ध्यान रहे कि धर्म के दो रूप होते हैं, एक गौण और दूसरा मुख्य। आर्य समाज के अन्य सभी लक्ष्य गौण धर्म हैं परन्तु वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना परम धर्म है।

दु:ख है आज आर्य समाज समय के प्रवाह में बहता हुआ अपने मुख्य अथवा परम धर्म से विमुख हो रहा है। आज साम्प्रदायवाद पनप रहा है सर्वत्र झगड़े ही झगड़े दिखाई देने लगे हैं। परन्तु जब तक वेद रूपी सूर्य का प्रकाश नहीं होता। दीपकों के रगड़े झगड़े होते ही रहेंगे। अत: इन रगड़े झगड़ों से बचना है तो संसार में वेदों का प्रचार करना परम आवश्यक है।

(पृष्ट 4 का शेष)

की अनुभूमिका में भी दोहराया है। वे बार बार इस तथ्य को प्रबल रूप से प्रस्तुत कर देना चाहते हैं कि अन्य सम्प्रदायों व मत-मतान्तरों की आलोचना व खण्डन करने में उनका प्रयोजन विरोध भाव न होकर सत्यासत्य के निर्णय में सहायक होना ही है। महर्षि यह भी भली भांति जानते थे कि अन्य मतों की आलोचना उन मतावलम्बियों को बुरी लगेगी। इसीलिए गीता के एक श्लोक (अध्याय 18 श्लोक 37) "यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्" को उद्धृत कर उन्होंने लिखा है कि जो जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 3)। किसी मत की असत्य बातों का खण्डन उस मत के अनुयायियों को बुरा लगना सर्वथा स्वाभाविक है। पर अच्छा काम शुरू में बुरा लग सकता है, यद्यपि उसका परिणाम सदा अच्छा व अमृत सदृश होता है। इसी प्रकार विविध मत-मतान्तरों के अनुयायियों को जब अपने मतों के असत्य का बोध हो जाएगा, तब वे उसका परित्याग कर सत्य को ग्रहण करने में तत्पर हो सकेंगे। इस प्रकार असत्य बातों का खण्डन मनुष्यों के लाभ के लिए ही है।

[illegible] वेद परिषद महोत्सव

रविवार 3 जून 1990 को आर्य समाज, सैक्टर 16, [illegible] में (प्रथम सत्र प्रातः 10 से 12-30)। भजन—10 से 10-30 भारत के प्रसिद्ध भजनो-पदेशक श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य (उ०प्र०) के भजन होंगे।

[illegible] स्वागत और [illegible] स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा।

विषय—वेद की वर्तमान स्थिति और आर्य समाज।

(दूसरा सत्र—सायं 5 से 7-30)

वेद सम्मेलन—[illegible]—[illegible] चक्रवर्ती स्वामी वैदिक [illegible] जी (महामहोपाध्याय [illegible] मिश्र [illegible] जी)।

प्रवक्ता—(1) स्वामी आनन्दबोध जी महाराज, (2) डा० [illegible] शास्त्री महामंत्री सार्वदेशिक सभा, (3) डा० [illegible], (4) भजन—श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य (उ०प्र०)।

—[illegible] आर्य, [illegible]

[illegible]

वैवाहिक विज्ञापन

कृपया सीरियल नम्बर देकर पत्र व्यवहार करें।

11. नाम मन्जुशर्मा, B.A.B.Ed. प्राईवेट सर्विस, आयु 31 वर्ष, कद 5 फुट 1 इन्च, रंग साफ के लिए वर चाहिए।

12. आयु 22 वर्ष, कद 5 फुट 3 इन्च, गौड ब्राह्मण, रंग गोरा, योग्यता B. A. M. S. माता पिता अध्यापक, भाई डाक्टर, लड़की के लिए M. B.B.S. या M. S. या M. D. वर चाहिए जो शाकाहारी हो।

13. आयु 22 वर्ष, कद 5 फुट, रंग गोरा, B. A. लड़की के लिए वर चाहिए जिस का अपना कारोबार हो या पक्की सर्विस। दहेज के लोभी पत्र व्यवहार न करें।

14. आयु साढ़े 21 वर्ष, कद 5 फुट 3 इन्च, खत्री, 10+2 डिप्लोमा कमर्शियल स्टैनो (अंग्रेजी) रंग साफ, शरीर पतला, लड़की के लिए सुयोग्य वर चाहिए।

15. आयु 20 वर्ष, कद 5 फुट 1 इन्च, रंग साफ, 10+2 थाना ग्राम (कण्डा घाट) हिमाचल निवासी के लिए आर्य विचारों का वर चाहिए।

16. आयु 32 वर्ष, कद 5 फुट साढे 4 इन्च, पतला शरीर, रंग साफ, हिन्दू सैनी परिवार M. Sc. (होम साईंस) प्रोफैसर गर्ल्ज कालेज लुधियाना के लिए M. A. पास सुशील वर चाहिए।

17. नाम विनोद कुमारी शर्मा B.A. सारस्वत ब्राह्मण,सरकारी सर्विस भाखड़ा ब्यास मैनेजमैन्ट बोर्ड वेतन 1900 रु०, आयु 29 वर्ष, रंग गदमी, के लिए अम्बाला, पानीपत, चण्डीगढ़ के रहने वाले वर को प्राथमिकता दी जाएगी।

18. नाम ममता भाटिया, B.A. कद 5 फुट दो इन्च, रंग साफ के लिए ममबीक वर चाहिए।

19. नाम चन्द्र प्रभा, आयु 29 वर्ष, रंग गेहुआ, कद 5 फुट, 1 इन्च, M.A. के लिए वर चाहिए।

20. नाम मीनाक्षी B.Sc. B.Ed. कद 5 फुट दो इन्च, रंग गोरा अग्रवाल परिवार, आयु 23 वर्ष, नवल निवासी के लिए सुयोग्य वर चाहिए।

21. आयु 22 वर्ष, कद 5 फुट 4 इन्च, B. A. B. Ed. ब्राह्मण परिवार की लडकी के लिए सुयोग्य ब्राह्मण वर चाहिए।

22 आयु 23 वर्ष, कद 5 फुट 3 इन्च खत्री परिवार B A. लडकी के लिए सुयोग्य वर चाहिए।

23 आयु 26 वर्ष, कद 5 फुट डेढ इन्च, M A. (पंजाबी) अरोडा परिवार फिरोजपुर निवासी के लिए आर्य विचारो का वर चाहिए।

भजनोपदेशक की आवश्यकता

दयानन्द मठ चम्बा (हि०प्र०) के लिए एक उत्साही, सुयोग्य एवं युवा भजनोपदेशक की तुरन्त आवश्यकता है वैदिक सस्कार कराने एव उपदेश करने की अच्छी योग्यता हो। शैक्षणिक योग्यता, अनुभव एव स्वीकार्य वेतन के सम्बन्ध में आचार्य महावीर सिंह एम० ए०, प्रबन्धक दयानन्द मठ चम्बा—176310 (हि०प्र०) से तुरन्त पत्र व्यवहार करें।

नियुक्ति जून से ही होनी है। जून मास के प्रचार कार्य को देखकर स्थायी काल तक के लिए नियुक्त कर दी जाएगी।

—स्वामी सुमेधानन्द

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली की यह सभा आर्य जगत् के विख्यात, वेदों व अन्य आर्य शास्त्रों के विद्वान्, निडर, समाज सेवी सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती के निधन पर गहरा दुःख व शोक प्रकट करती है। स्वामी जी ने 13 वर्ष की छोटी आयु में सन्यास लेकर आर्य समाज की सेवा में वेद प्रचार व प्रसार में लग गए थे। आप ने आर्ष वेद-विद्यालय गुरुकुल घरौंडा की स्थापना की, 5 वर्ष तक आप लोक-सभा के माननीय सदस्य रहे, हैदराबाद सत्याग्रह में आप ने आर्य सर्वाधिकारी के रूप में सत्याग्रह का नेतृत्व किया व अनेक कष्ट सहे। हिन्दी आन्दोलन का नेतृत्व भी आपने किया तथा कई बार जेल गए। चण्डीगढ़ में हिन्दी सत्याग्रह में आपने नेतृत्व किया। पुलिस ने आप की टांगों पर निर्दयता पूर्वक प्रहार किया। फलस्वरूप आपके अगले दो दांत टूट गए।

गौरक्षा आन्दोलन मे आपने सक्रिय भाग लिया तथा लोक सभा मे प्रभावशाली ढग से अपना पक्ष प्रस्तुत किया। आप हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे। आपने इस समाज मन्दिर में कई बार दर्शन देकर वेद कथा व उपदेशों से कृतार्थ किया।

आपने अनेक पुस्तकें लिखीं जिसमें सन्ध्या भाष्यम्, नमस्ते प्रदीप, ऋषि दयानन्द का योग प्रमुख हैं।

8 जून को आपके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है, आर्य जगत् मे उसकी पूर्ति करना असम्भव है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा आर्य भाई बहनों को इस महान् दुःख को सहने की शक्ति व साहस प्रदान करें।

ईश्वर स्तुति प्रार्थना और उपासना

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इन्द्रश्च मृडयाति नो न नः
पश्चादघं नशत्।
भद्रं भवाति नः पुरः।
ऋ० 2।41।11

अर्थात् जब वह शक्तिशाली भगवान् हमारे ऊपर दयालु होता है, तो पाप हमारे पीछे नहीं पहुंचता, पाप हमारा पीछा नही करता और भलाइयां हमारे आगे-आगे विद्यमान रहती हैं।

मैं आपको यह बतलाना चाहता हू कि उपासना उस बलिष्ठतम प्रभु की उपासना—हमारी परिस्थितियों मे आमूल परिवर्तन कर देती है। आपने सुना होगा कि बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि उपासना इसलिए एक अच्छी वस्तु है कि उससे मनुष्य मे कठिनाइयो और विपत्तियों का सामना करने के लिए हिम्मत और बल प्राप्त होता है। उनका यह विचार है कि उपासना मनुष्य मे आत्मविश्वास उत्पन्न करती है और वह विपदाओ से निकल और बच जाता है। पर हम आपसे कहेगे कि उपासना—सच्ची उपासना जिसमे कठिनाई मे भी ईश्वर ही दिखाई देता है, हमे कठिनाई से मुकाबला करने का बल ही नही देती बल्कि कठिनाई की जगह सुख ला देती है। उपासना एक परिस्थिति के बदले दूसरी परिस्थिति लाकर उसे बदल देती है। उपासना हमारे स्वभाव को बदलकर हमें सतोष और सुख देती हैं। उपासना मनुष्य को सफलता के नए रास्ते बताती है, वह केवल पुरानी राह की मुरम्मत-भर नही करती है। शरीर, परिस्थितियां, ससार हमारे विचारों के आधार पर बनते हैं, उनका रूप हमारे विश्वास के अनुरूप होता है और यह उपासना हमारे विचारो को उच्च, दृढ और सकल्पवान बनाता है। ईश्वर ने आपको बुद्धि दी है। उपासक की बुद्धि ईश्वरीय प्रेरणा से परिपूर्ण हो जाती है और वह बुद्धि का सफलतापूर्वक उपयोग करता है, यही उसकी सफलता का रहस्य है।

उपासना का लाभ हमे यह होता है कि प्रभु के अपने समीप होने और उसके शक्तिशाली स्वरूप को अपने में स्थिति होने से हममे एक आत्म-विश्वास उत्पन्न होता है। यह आत्म विश्वास ही हमें प्रभु के समीपतम ले जाता है और यह आत्मविश्वास वह शक्ति है जो पहाडो को उखाड फैंकती है। यह आत्मविश्वास वह महामन्त्र है, जिसकी सहायता से अजेय दुर्ग जीते जा सकते हैं, दुगम जगलो और सूखे रेगिस्तानो का पार किया जा सकता है, बडे बड आविष्कार किये जा सकते हैं, असम्भव वस्तुएं प्राप्त की जा सकती हैं। हमे इग्लैंड के एक यहूदी प्रधान मन्त्री का जीवन स्मरण आ रहा है जिसका नाम था बैंजमन डिज़राइली। वह यहूदी था। इसे किसी विश्वविद्यालय की उच्च पदवी प्राप्त न थी, इसका जन्म किसी बहुत बडे समृद्ध परिवार मे नही हुआ था। उस समय इसके यहूदी होने के कारण इग्लैंड की जनता भी इसे घृणा की दृष्टि से देखती थी। एक लार्ड मैलबोर्न से इसकी बातचीत हुई और इसने उसे बताया कि वह एक दिन इग्लैंड का प्रधान मन्त्री बने बिना न रहेगा। उस समय इग्लैंड मे किसी यहूदी के प्रधान मन्त्री बनने की कोई कल्पना भी नही कर सकता था। अत उसने इसे समझाया। पर ऐसा व्यक्ति जो प्रभु मे विश्वास कर और लक्ष्य सामने रखकर चलता है, कभी अपने निश्चय से विरत नही हो सकता। अनेक बार ससद का चुनाव हारने के बाद, एक बार वह सफल हुआ। उसके बाद भी ससद मे उसके भाषण को सुनने को कोई भी तैयार न हुआ। उसे अपना भाषण बीच मे रोकना पडता था। पर एक दिन वह इग्लैंड का प्रधान मन्त्री बनकर रहा।

वास्तव मे मनुष्य अपनी ठीक-ठीक शक्ति को तब तक प्राप्त नही कर सकता जब तक कि वह इस बात को मन, वचन और काया से न समझ ले कि वह विश्व के महान तत्त्व प्रभु की छाया या शरण मे है। 'यस्य-छायाऽमृतम' जिसकी छाया अमृत है। यही छाया उपासना से प्राप्त होती है। उपासना ईश्वर के साथ हमारा इतना गहन सम्बन्ध जोड देती है कि चारो ओर हमे वही दिखाई देने लगता है। उसके गुण हमे घेर लेते हैं। उस समय हमारी कमजोरी सकीर्णता, भीरुता, सन्देह हमसे विदा हो जाते हैं और उस समय हमे आत्मिक शक्ति प्राप्त हो जाती है। परमात्मा ही इस शक्ति का उद्गम है। यह शक्ति ही जीवन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। इसीलिए यह मन्त्र कहता है कि जब वह शक्तिशाली भगवान हम पर दयालु होता है, तब पाप हमसे दूर हो जाते हैं।

आवश्यक सूचना

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशियारपुर स्कूलो तथा कालेज के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तिया प्रदान करने के लिए दिनाक 15 जून 1990 तक प्रार्थना पत्र अपनी सस्था के उच्च-अधिकारी से प्रमाणित करवा कर अधोलिखित पते पर भेज दें।

—इन्द्रजीत सिंह—प्रधान

बेगा (सोनीपत) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बेगा (सोनीपत) हरियाणा का वार्षिकोत्सव दिनाक 1, 2, 3 जून 1990 तदानुसार शुक्र, शनि एवम रविवार को धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज बस्ती टैंका वाली फिरोजपुर (पंजाब) का वार्षिक चुनाव दिनांक ६-5 90 सत्संग के बाद सर्वसम्मति से श्री राम प्रकाश जी नैयर को प्रधान तथा श्रीमती वेद कुमारी जोशी जी को प्रधाना चुना गया और उन को पुरुष समाज तथा स्त्री समाज के बाकी अधिकारी चुनने का अधिकार दिया गया जोकि इस प्रकार है—

उप-प्रधान—डा० औधराम लुथरा
मन्त्री—श्री सत्यपाल शर्मा
उप-मन्त्री—श्री सुरेन्द्र शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री अमरनाथ छिब्बड़
स०कोषाध्यक्ष—श्री सुरेश मल्होत्रा
आडीटर—श्री दसया राम शर्मा
लायब्रेरियन—श्री अर्जुनदास अरोड़ा

अन्तरंग सदस्य—श्री मनीश कुमार, श्री वेद प्रकाश कोछड़, श्री दयानन्द।

स्त्री समाज

उप-प्रधान—श्रीमती सूरज कान्ता
मन्त्री—श्रीमती राम प्यारी शर्मा
उप-मन्त्री—निर्मला कोछड़
कोषाध्यक्ष तथा वर्तन भण्डारी—प्रकाश कुमारी लूथरा।

—सत्यपाल शर्मा, मन्त्री

मानव सेवाश्रम छुटमलपुर

"आपको जान कर हर्ष होगा कि वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की भांति मानव सेवा आश्रम छुटमलपुर (सहारनपुर) में भी व्यवस्था करने का प्रयास कर रहे हैं। आश्रम के अन्य कार्यकलाप पूर्ववत चलते रहेंगे।

आश्रम सहारनपुर हरिद्वार रोड पर छुटमलपुर से एक किलोमीटर दूर सड़क के किनारे पर ही स्थित है। आश्रम में 6 कमरे हैं। शौचालय तथा आवागमन के सब साधन उपलब्ध हैं। बिजली का अभाव है। यज्ञशाला है।

आश्रम में ऐसे साधक, वानप्रस्थी आमन्त्रित हैं जो योग साधना एवं एकान्त भक्ति के इच्छुक हों और अपना खर्च स्वय वहन कर सकें। खर्च वहन करने में असमर्थ व्यक्तियों को आश्रम की सेवा करनी होगी। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें या लिखें।"

—रामपथिक
मानव सेवा आश्रम
रुड़की रोड, छुटमलपुर
सहारनपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का निर्वाचन

दिनांक 13-5-90 को आर्य समाज कुल्लू में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसी अधिवेशन में आगामी दो वर्षों के लिए सर्वसम्मति से ब्र० आर्य नरेश जी को प्रधान चुना गया। उन्हीं को अन्य अधिकारियों तथा अन्तरंग के सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। सभा के अधिकारियों तथा अन्तरंग आदि का गठन इस प्रकार किया गया—

संरक्षक—श्री कृष्णलाल आर्य
प्रधान—ब्र० आर्यनरेश
कार्यकारी प्रधान—श्री रोशनलाल आर्य

उप-प्रधान—श्री श्याम बिहारी लाल तोमर, श्री कृष्ण चन्द्र आर्य, श्रीमती चान्द रानी।

महामन्त्री—श्री भगवानदेव चैतन्य
उप मन्त्री—श्री रामकृष्ण गौतम और श्री सुदर्शन कपूर।
कोषाध्यक्ष—श्री बृजेश कुमार।
लेखापरीक्षक—श्री करतार नाथ अग्नोतरा।

प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल—श्री कृष्णचन्द्र आर्य, उप-संचालक—श्री सचीन और श्री अखिलेश शास्त्री।

अन्तरंग सदस्य—स्वामी सुमेधानन्द (चम्बा), डा० सुमन व्यास (चम्बा), श्री गोविन्दराम आर्य (चौलधरा), श्री वेद प्रकाश आर्य (पठियार्मी), श्री के० के० टण्डन (शिमला), श्री अशोक (कुल्लू), श्री सत्यपाल (कुल्लू), सरदार चन्द मेहता (चपरोला), श्री शिवराम चन्द (नगरोटा), श्री विजय मोहन सिंह (सोलन), श्री सतीश कपूर (धर्मपुर), श्री देवेन्द्र राणा (सुन्दर नगर), श्री सोहनलाल आर्य (देहरा), श्री एस० एल० जसवाल (बिलासपुर), श्री जयप्रकाश (बिलासपुर), श्री सतीश कुमार (ऊना), श्री ज्ञान चन्द आर्य (हमीरपुर)।

प्रतिष्ठित सदस्य—स्वा० सुरेशा नन्द, श्री केवल राम भाटा, श्री धर्म पाल शर्मा, श्री सीता राम, श्री युगल किशोर, श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जगजीत प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

टेलीफोन 73029 रजि० न०' P-b/J.L. 55

वर्ष 22 अंक 11, ज्येष्ठ 28 सम्वत् 2047 तदनुसार 7/10 जून 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

वेद में भक्ति—भावना

ले० श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा साहित्यालंकार, एम० डी० लिट

"वेद ज्ञान सत्य विद्याओं की पुस्तक है" ऐसा अटल विश्वास रखने वाले भी कभी-कभी कह देते हैं कि "वेद मे अन्य विद्यायें भले ही हों लेकिन भक्ति परक मन्त्र तो हैं ही नही। विद्यायें दो प्रकार की मानी जाती हैं, परा और अपरा, इनमें से अपरा (सासारिक विद्यायें) तो वेद में हैं, परा (ब्रह्मविद्या) नहीं है, वह केवल उपनिषदों अथवा अन्य ग्रन्थों में मिल सकती है।" इसी आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास मे तो "भक्ति-काल" ही पृथक् एक युग मान लिया गया है। सारांश यह कि वेदो में भक्ति भावना का अभाव ऐसे ही अन्य भक्तो ने घोषित कर दिया और इन्ही का अनुकरण पाश्चात्य तथाकथित वैदिक विद्वानों ने भी किया। आज हम ऐसे महानुभावों के विचारार्थ ऋग्वेद के मण्डल 7 के 8, 9वें सूक्त के (जिसे "वरुण सूक्त" भी कहा जाता है) कुछ मन्त्र यहां केवल उदाहरणार्थ उपस्थित करते हैं जिससे पता चलेगा कि जो भक्ति भावना सूर, तुलसी, मीरा और कबीर के काव्यों में भी नहीं मिलती उसका मूलरूप वेद में कितने उदात्त शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है—

(1) मा वरुण मृण्मयं गृह राजन्नहं गमम्। मृडा सुक्षत्र मृडय॥

इस मंत्र में एक भक्त वरुण भगवान से प्रार्थना करता है कि हे राजन् वरुण (अह मृन्मयं गृहमथा उगमम्) मैं इसी मिट्टी के घर मे फिर कभी न आऊ। (मृडा सुक्षत्र मृडया) मुझे सुखी कर एवं मेरे द्वारा अन्यों को सुखी कराने का आयोजन कर। "तू हमारा भली प्रकार से रक्षक, पालक है।" यहा मिट्टी का घर कौन-सा है। वह हमारा शरीर जो पच तत्त्वों से बना होने पर भी जिसमे पार्थिव तत्त्व सबसे अधिक हैं, मिट्टी का घर है अर्थात् भक्त कहता है कि इस पार्थिव शरीर मे दोबारा न आना पड़े।

> "प्रभु जी ! अब न हमें भटकाओ।"
> जन्म मरण का बध न छुडा कर
> अपने पास बुलाओ ॥
>
> देखली दुनिया तेरी, अब तुझसे
> मिलना चाहता।
>
> यहा के झझटों ने मुझे, काफी परेशा
> कर दिया ॥

इस प्रकार, इस शरीर को वेद मे "मिट्टी के घर" की सज्ञा दी गई है और इसमें फिर से न भेजने की भगवान् से प्रार्थना की गई है। वास्तविक भक्ति की भावना के मूलाधार का जोकि अन्त स्तल की इच्छा में सन्निहित रहता है, यहां कैसा सुन्दर उल्लेख है। आगे दूसरे मन्त्र में देखिये—

(2) यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिव मृडा सुक्षत्र मृडया ॥

हे सुक्षत्र ! श्रेष्ठ रक्षक भगवान ! मैं धौंकनी की तरह ऊपर नीचे झुकता हुआ उच्चोच्च योनियो मे जाता हुआ तग आ गया हू। अत सुख वर्धक भगवान् ! मुझे सुखी कर और इस धौंकनी के चक्कर से बचा। तू ही सुखदाता है। मैं अन्य किसका आश्रय पकडू ? नल्योवाच मर्कट की नाई। जन्म जन्म भटकायो। माया मोही बहुही नाच नचायो।"

इस मन्त्र मे ससार की सारहीनता एव मरण के बन्धन से छूटने की कितनी प्रबल उत्कठा का दिग्दर्शन कराया गया है। ससार के सब बन्धन तथा आवागमन के चक्कर से छूटने की ही प्रार्थना सूरदासादि भक्त करते आये हैं।

(3) क्रत्व. समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे। मृडा सुक्षत्र मृडया ॥

हे शुचे ! (पवित्रात्मा प्रभो) मैं दीनता, विवशता, नीचता से यज्ञादि शुभ कर्मों के तथा भक्ति भावो के विपरीत मार्ग पर चला गया, अन्धेरे में भटक गया, हे श्रेष्ठ रक्षक ! अब तो मार्ग दिखाओ, मेरा पथ प्रदर्शन करो मुझे सुख की ओर ले चलो। "भटक्यो बहुत पथ नहीं पायो। अन्धकार मे उलटोहि से चाल्यो, तेरे बिन नही आयो।" ससार के विषय भोगों मे पड कर जीवात्मा अन्त मे जब मृत्यु को निकट जानकर होश मे आता है, तब पश्चाताप करता हुआ भगवान् से उपरोक्त प्रार्थना करता है। "प्रतीप जगमा" कहकर अपने अतीत जीवन पर दृष्टि डालते हुए ग्लानि से भरे हृदय से उपरोक्त भाव व्यक्त करता है।

अपा मध्ये तस्थिवांसं तृष्णा वद जरितारम्। मृडा सुक्षत्र मृडया ॥

हे प्रभो ! जल के बीच म खडे हुए मुझ भक्त को प्यास सता रही है। मेरी रक्षा करो कबीर जी ने इसी भाव को यो व्यक्त किया है—

'पानी मे मीन प्यासी, मोहि देखत आवे हासी।' इस माया मय ससार मे मानव की तृष्णा कभी कम नही होती निरन्तर बढती ही जाती है।

यही तृष्णा और प्यास, जो भक्त को सता रही है। इससे बचने का एकमात्र उपाय भगवान् की शरण मे आना है। वेद मन्त्रो मे कितनी उदात्त भावनायें हैं, इन मन्त्रो से स्पष्ट प्रगट हो जाती है। इसलिए कहा है—

वेद ही जग मे हमारा "सूर्य" जीवन सार है।

ज्ञान कर्म सुभक्ति का यह अक्षय भडार है ॥

"क्या जनता दल की सरकार हरिजनों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करना चाहती है"

लेखक—श्री आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य अजमेर।

राज्य सभा में नव बौद्धों को हरिजन अर्थात् अनुसूचित जाति को दिये गये विशेषाधिकार सम्बन्धी एक बिल पास किया गया है। अंग्रेजी पत्रों में प्रकाशित राज्य सभा की कार्यवाही सम्बन्धी समाचार में भी इस बात का उल्लेख है कि ईसाई और मुसलमानों को भी इसी प्रकार के विशेषाधिकार देने सम्बन्धी जो संशोधन पेश किया गया है, अधिकांश सदस्य उसके पक्ष में थे, किन्तु इस आश्वासन के बाद कि स्वयं सरकार ईसाई और मुसलमानों को भी नव बौद्धों के समान विशेष अधिकार दिये जाने के पक्ष में शीघ्र कानून प्रस्तावित करेगी, यह संशोधन वापिस ले लिए गए।

जात-पात का कलंक :

ऐसा लगता है कि वर्तमान सरकार ने तथा राज्य सभा के सदस्यों ने इस प्रकार के प्रावधान के दूरगामी परिणामों पर विचार नहीं किया। यदि इस प्रकार का कोई कानून बनता है तो उसके कितने दूरगामी और हानिकारक परिणाम होंगे, यह हरिजनों को दिए गए वर्तमान विशेषाधिकारों के इतिहास से स्पष्ट होगा। अंग्रेजों ने न केवल हिन्दू मुसलमानों के मतभेदों को अपना शासन बनाए रखने के लिए सदैव उपयोग किया, अपितु उन्होंने हरिजनों को भी हिन्दुओं से पृथक करने का प्रयत्न किया। जात-पात और छुआछूत हिन्दू धर्म और समाज का एक ऐसा कलंक है, जिसकी जितनी निन्दा की जाए कम है। इस कलक को दूर करने के लिए ऋषि दयानन्द जैसे धार्मिक और सामाजिक सुधारकों के अतिरिक्त महात्मा गांधी जैसे राजनैतिक नेताओं ने अनेक प्रयत्न किए।

गांधी जी का अनशन :

किन्तु हिन्दू समाज और स्वयं तथाकथित अछूतों की अपनी जाति प्रथा के कारण इस कलंक का निराकरण नहीं हो सका और इस निराशाजनक स्थिति के विरुद्ध डाक्टर आम्बेडकर जैसे स्वाभिमानी हरिजन नेता ने भी दलितों द्वारा हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा कर दी, जिसका लाभ उठाकर न केवल ईसाई और मुसलमान धर्म प्रचारकों ने उन्हें अपना-अपना धर्म स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया अपितु ब्रिटिश सरकार ने भी कम्युनल अवार्ड की घोषणा कर उन्हें हिन्दुओं से पृथक विशेष राजनैतिक अधिकार दिये जाने की घोषणा कर दी, जिसके विरुद्ध महात्मा गांधी जैसे हरिजनों के समर्थकों को आमरण अनशन करना पड़ा, और परिणामस्वरूप डाक्टर अम्बेडकर के साथ हुए समझौते के अनुसार दलितों को हिन्दू धर्म त्यागे बिना राजनीति तथा नौकरियों आदि में सुरक्षित स्थान दिए गए।

विरोधी आन्दोलन :

गत चालीस वर्षों में इन विशेषाधिकारों के व्यवहार में क्या लाभ और हानियां सामने आई हैं, इनका कुछ आभास इन आरक्षणों के विरुद्ध हुए देशव्यापी आन्दोलनों से सर्वविदित है और यदि ईसाई और मुसलमानों को इसी प्रकार विशेष अधिकार दिए गए तो उसके विरुद्ध और भी अधिक देशव्यापी आन्दोलन की सम्भावना है। हरिजन छुआछूत की समस्या का कारगर और अंतिम उपाय तो यही हो सकता है कि हिन्दू समाज में कोई व्यक्ति अपनी जन्मजाति के कारण ऊंच-नीच या छूत-अछूत न रहे, जैसा स्वामी दयानन्द चाहते थे, किन्तु सदियों से प्रचलित इस समस्या के इतनी आसानी से हल होने की सम्भावना नहीं है और अंग्रेजी राज्य में तथा उसके बाद स्वाधीन भारत में जात-पात और छुआछूत का राजनैतिक लाभ इतना आकर्षित सिद्ध हो रहा है कि इस कलक को मिटाने के स्थान में उसे लाभप्रद और उपयोगी बनाकर चिर-स्थायी करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु यहां आरक्षण के गुण दोषों पर विवेचन करना अभिप्रेत नहीं है। प्रश्न केवल उस प्रस्तावित बिल की समीक्षा करने का है, जिसके द्वारा जो हिन्दू ईसाई और मुसलमान बने या बनाए गए। उन्हें भी दलितों के समान विशेषाधिकार दिए जाने का सुझाव है।

छुआछूत ईसाई और मुस्लिम धर्म में नहीं :

इस्लाम और ईसाई धर्म का कोई भी निष्ठावान अनुयायी यह नहीं कह सकता कि उन्हें धर्म में जात-पात या छुआछूत के भेदभाव के लिए कोई स्थान है। इसलिए जो दलित या अछूत इन धर्मों में सम्मिलित हुए हैं वह वहां जाते ही अछूत या दलित नहीं रहे।

डा० अम्बेडकर की मान्यता :

डा० अम्बेडकर ने जब उनके धर्मान्तरण की बात कही तो उसका भी यही अर्थ था कि तभी तक यह अछूत या दलित हैं, जब तक ये हिन्दू हैं। दूसरा प्रश्न यह है कि स्वयं डाक्टर अम्बेडकर ने अपने तथा अपने दलित अनुयायियों के लिए ईसाई मिशनरियों और मुसलमान मौलवियों का निमन्त्रण स्वीकार कर उनमें से किसी एक धर्म को क्यों नहीं चुना? इसका उत्तर स्वयं अम्बेडकर ने यह कहकर दिया कि दलितों के कल्याण के लिए हिन्दू धर्म त्यागना आवश्यक होने पर भी वह भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता का त्याग नहीं करना चाहते। बौद्ध यद्यपि सनातनीय पौराणिक धर्म के अंग नहीं हैं, किन्तु वह सांस्कृतिक राष्ट्रीय दृष्टि से शुद्ध भारतीय हैं। इतना नहीं स्वयं अनेक हिन्दू धर्माचार्य बुद्ध को अवतार मानकर हिन्दू धर्म की व्यापक परिभाषा में उन्हें सम्मिलित करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वयं डा० अम्बेडकर यह अनुभव करते थे कि दलितों का हिन्दुओं से पृथक होकर ईसाई या मुसलमान धर्म स्वीकार करना न स्वयं दलितों के हित में है। और न ही देश के व्यापक हित में दुर्भाग्य से बौद्ध और यहां तक कि सिखों में भी उनकी धार्मिक मान्यताओं के विपरीत जात-पात और छुआछूत विद्यमान है।

राजनैतिक उद्देश्य :

पंजाब में सिखों को सरदार पटेल ने केवल विशिष्ठ राजनैतिक कारणों से विशेष अधिकार देना स्वीकार किया था। यद्यपि उन्होंने स्पष्ट किया था कि दलितों को दिए गए विशेष अधिकार तभी तक लागू रह सकते हैं जब तक वे हिन्दू बने हुए हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान जनता दल की सरकार ने नव बौद्धों को भी केवल इसी प्रकार के राजनैतिक लाभ की आशा से यह अधिकार दिए हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं, किन्तु यदि ईसाई और मुसलमान होने पर भी इसी प्रकार के विशेषाधिकार उन्हें प्राप्त हो तो इससे हिन्दुओं की धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु देश की राष्ट्रीय दृष्टि से भी गम्भीर दुष्परिणाम होंगे यह स्पष्ट है।

विदेशी सहायता का दुरुपयोग :

मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने का प्रश्न केवल धार्मिक स्वतन्त्रता तक सीमित नहीं है, यह सर्वविदित है। मध्य पूर्व से पैट्रोडालर की विशाल राशि का उपयोग हमारे देश के गरीब और अशिक्षित लोगों को ही नहीं अन्य बेरोजगार और पिछड़े वर्ग के लोगों को भी प्रलोभित करते हैं। इस प्रकार का दुरुपयोग ईसाई मिशनरियों को विदेशों से प्राप्त अपार धन राशि का किया जाता रहा है।

धर्मान्तरण को प्रोत्साहन :

एक ओर हमारी सरकार इस देश के आदिवासियों तथा अन्य आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के धर्म और संस्कृति के संरक्षण की बात करती है और संविधान में भी उन्हें इस प्रकार का आश्वासन दिया हुआ है, कि दूसरी ओर धर्मान्तरण के बाद भी अनुसूचित जातियों को दिए गए विशेष संरक्षण देने का प्रस्ताव करके विदेशी मिशनरियों द्वारा उनका धर्मान्तरण किए जाने का प्रोत्साहन देती है। महात्मा गांधी जैसे सर्व धर्म सम्भाव के समर्थक ने भी ईसाई मिशनरियों द्वारा किए जाने वाले धर्मान्तरण का इसीलिए विरोध किया था। प्राचीन समय में मुसलमानों द्वारा जिस प्रकार तलवार के जोर से धर्मान्तरण किया जाता था उस प्रकार वर्तमान युग में ईसाई प्रचारक अशिक्षित गरीब और भोले-भाले स्त्री-पुरुषों को लोभ लालच देकर उन्हें अपने धर्म से विमुख करते हैं।

धर्म के साथ राष्ट्रीयता का भी त्याग :

धर्म निरपेक्षता की विकृत परिभाषा और व्यवहार के कारण यह बात कितनी भी अप्रिय मालूम हो, किन्तु इस कटु सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि हमारे देश में धर्मान्तरण का अर्थ राष्ट्रान्तरण भी होता है और हुआ है। अन्यथा क्या कारण है कि जिनके पूर्वज हिन्दू थे, वह भी मुसलमान और ईसाई होते ही पृथक राज्य की मांग करके देश की एकता और राष्ट्रीयता को चुनौती देते हैं। जैसा पाकिस्तान तथा अब भी कश्मीर, मिजोरम, नागालैण्ड आदि उदाहरणों से स्पष्ट है।

देशव्यापी आशंका :

इसलिए यह आशंका स्पष्ट है कि यदि वर्तमान सरकार ईसाई और मुसलमान धर्म स्वीकार करने पर भी दलितों को वे ही अधिकार देने का प्रावधान करती है जो हिन्दू या बौद्ध धर्म के अनुयायी दलितों को दिया गया है तो इसका सर्वत्र और राष्ट्रव्यापी प्रबल विरोध होना स्वाभाविक है। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान सरकार को दिए जाने वाले अपने समर्थन को इस प्रकार के विधेयक का समर्थन करने की सीमा तक निभा सकेगी यह सम्भव प्रतीत नहीं होता है। ऐसा वह अपनी सारी घोषणाओं और मान्यताओं तथा सिद्धांतों को तिलांजलि देकर ही कर सकती है।

सम्पादकीय—

आर्य समाज और धर्म निरपेक्षता

धर्म निरपेक्षता का आजकल हमारे देश में बहुत चर्चा है। प्राय: सभी राजनीतिक लोग इसके द्वारा अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास करते रहते हैं। पहले कांग्रेस और अब जनता दल तथा इसके अतिरिक्त दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियां प्राय: धर्म निरपेक्षता का रोना रोती रहती हैं। इसका एक कारण यह भी है कि उन्हें वोट की आवश्यकता रहती है। इसलिए सब सम्प्रदायों को सन्तुष्ट करने के लिए और उनका समर्थन प्राप्त करने के लिए यह धर्म निरपेक्षता की बात करने लगते हैं। परन्तु किसी ने भी आज तक यह नहीं बताया कि धर्म निरपेक्षता क्या है और उसका अभिप्राय क्या है? पाठकगणों के लिए यह एक आश्चर्य की बात होगी कि हमारे देश का जो संविधान 1949 में स्वीकृत किया गया था और जो सबसे पहला विधान था उसमें सैक्लयूरिजम या धर्म निरपेक्षता का कहीं नाम नहीं आता। यह शब्द हमारे विधान में 1977 में उस समय डाला गया जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपात काल स्थिति की घोषणा की और उसके पश्चात् भिन्न भिन्न राजनीतिक दलों ने धर्म निरपेक्षता का सहारा लेकर अपनी अपनी शक्ति को संगठित करने का प्रयास किया। आजकल हम फिर धर्म निरपेक्षता का बहुत चर्चा सुनते हैं परन्तु किसी ने भी आज तक यह स्पष्टीकरण नहीं दिया कि धर्म निरपेक्षता का अर्थ क्या है। और उसका अभिप्राय क्या है? हमारे देश की अधिकतर जनता का शिक्षा स्तर बहुत ही कम है इसलिए सर्व साधारण को न तो इसका पता है और न वह जानने का प्रयास करते हैं कि धर्म निरपेक्षता क्या है? जो कुछ उनके नेता गण कहते हैं वह सुन लेते हैं। और नेता गण उनकी भावनाओं का अनुचित लाभ उठा कर अपना राजनीतिक स्वार्थ पूरा करने का प्रयास करते हैं। जो हमारा संविधान आज प्रकाशित है उसमें जो कुछ लिखा गया है वह भी पाठकों के सामने मैं रख देना चाहता हूं। इस विधान में जो प्रस्तावना है उसमें हम निम्नलिखित उद्देश्य पढ़ते हैं।

"हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पन्थ निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए, दृढ़ संकल्प हो कर अपनी इस संविधान सभा में संविधान को अंगिकृत अधिनियमित और आत्मर्पित करते हैं।"

इसमें भी एक बात देखने वाली है, कि यहां आरम्भ में शब्द पंथ निरपेक्ष है, धर्म निरपेक्ष नहीं। धर्म और पंथ में अन्तर होता है। जब कुछ व्यक्ति या एक समूह किसी धर्म का अनुसरण करता है उसे प्राय: पन्थ कहा जाता है। विधान की इस प्रस्तावना से यह स्पष्ट नहीं होता कि धर्म निरपेक्षता का अभिप्राय क्या है? परन्तु इस समय इस विवाद में पड़ने से कोई लाभ नहीं होगा कि जिस धर्म निरपेक्षता का आज हम इतना शोर सुन रहे हैं वह वास्तव में क्या है! मैं तो इससे केवल यही समझ सका हूं कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए और धर्म के आधार पर कोई राजनीति न चलाई जाए। परन्तु इसका एक दूसरा पक्ष भी है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। एक धर्म वह भी है जो राजनीति में नैतिकता के स्तर को बहुत ऊंचा करता है। धर्म और साम्प्रदायिकता में भी अन्तर है और देखा यह गया है कि जो लोग कोई साम्प्रदायिक खेल खेलना चाहते हैं वही धर्म की आड़ लेते हैं। पंजाब में अकाली भी यही कर रहे हैं। वह कहते हैं कि उनके धर्म को उनकी राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। परन्तु काम वह ऐसे करते हैं जिसकी कोई भी धर्म अनुमति नहीं दे सकता। पंजाब में आज निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएं हो रही हैं। जो लोग यह सब कुछ करते हैं वह भी यही कहते हैं कि उनके धर्म को और उनकी राजनीति को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। वास्तविक स्थिति यह है कि धर्म का जितना दुरुपयोग हमारे देश में हो रहा है इतना कहीं भी नहीं होता होगा। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इस्लाम और इसाईयत के नाम पर भी दुनिया में बहुत अत्याचार किए गये हैं। इसलिये यह सोचने की आवश्यकता अवश्य है कि धर्म और राजनीति को एक दूसरे से अलग रखा जाए या इन दोनों के महत्व को समझते हुए धर्म के सहारे ही राजनीति को चलाया जाए या राजनीति के सहारे धर्म को चलाया जाए। हमारे सामने महात्मा गांधी का उदाहरण भी है। उन्होंने कभी धर्म निरपेक्षता पर जोर नहीं दिया था न उन्होंने अपने धर्म को अपनी राजनीति से अलग किया था। "उनकी प्रार्थना रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीता राम, से आरम्भ हुआ करती थी। उसमें वह उपनिषद के मन्त्र भी पढ़ा करते थे और कुरान की आयतें भी पढ़ा करते थे और उसके पश्चात् अपनी राजनीति की व्यवस्था किया करते थे। उनका यह एक मात्र उदाहरण है कोई दूसरा राजनीतिक नेता यह न कर सका था। उनके निकटतम सहयोगी जवाहर-लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और अब्दुल कलाम आजाद जैसे व्यक्ति भी किसी राजनीतिक सभा में धर्म की बात न करते थे। परन्तु गांधी जी करते थे और उनके सहयोगी उनसे इस विषय में मतभेद रखते हुए भी उनकी इस कार्य प्रणाली पर कोई आपत्ति नहीं करते थे।

मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि धर्म निरपेक्षता का शोर तो हम बहुत सुनते हैं परन्तु जो लोग धर्म निरपेक्षता का सबसे अधिक रोना रोते हैं वह भी यह नहीं बताते कि इसका अभिप्राय क्या है? मैं तो केवल यह समझता हूं कि इस देश में जो जनता रहती है उसका धर्म या मजहब चाहे कुछ भी हो उन सब को एक जैसा राजनीतिक अधिकार मिलना चाहिए। यदि इस सिद्धान्त को मान लिया जाए तो फिर मेरे विचार में आर्य समाज से बड़ी धर्म निरपेक्ष संस्था और कोई नहीं हो सकती। आर्य समाज का आधार वेद हैं और वेद किसी विशेष देश, काल सम्प्रदाय, समुदाय या जाति के लिए नहीं बनाए गए। यह तो सारे मनुष्य मात्र के लिए हैं। अर्थात वेदो के सिद्धान्त सारी मानव जाति पर लागू हो सकते हैं। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज से बढ़ कर धर्म निरपेक्ष संस्था और कौन सी हो सकती है। फिर भी मैं यह समझता हू कि आर्य समाज के नेताओं और बुद्धिजीवियों को इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि धर्म निरपेक्षता वास्तव में क्या है? और इसके विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए? इस समस्या के कुछ और भी पक्ष हैं जिन पर आगामी लेख मे अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

हरियाणा सरकार का सराहनीय कार्य

हरियाणा सरकार के मुख्यमन्त्री श्री बनारसी दास जी गुप्ता ने आकाश-वाणी रोहतक से प्रसारित हरियाणा की जनता के नाम अपने पहले संदेश मे यह घोषणा की है कि—"अब से सारे हरियाणा में सरकारी पत्र व्यवहार अधिसूचनाएं तथा जन हित के विज्ञापन हिन्दी में दिये जाएंगे। यह पग आम जनता के हित के दृष्टिगत उठाया गया है।"

कई प्रदेशों में राष्ट्र भाषा हिन्दी को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। हम पंजाब में देखते हैं कि पहले से ही अकालियों का हिन्दी के साथ सौतेली मां जैसा व्यवहार चलता रहा है। पंजाब में चाहे अकालियों की सरकार बनी चाहे कांग्रेस की परन्तु दोनों ने ही हिन्दी की अवेहलना की है। बल्कि अब तो संस्कृत और हिन्दी को पंजाब में बिल्कुल समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। गत दिनों समाचार पत्रों मे इस सम्बन्ध में जो सूचनाएं छपी हैं शायद वह सभी पाठकों ने पढ़ ली होंगी। पजाब के तरनतारन व जंडियाला गुरु के गांव में पहले सभी स्कूलों के विद्यार्थियों से हिन्दी की पुस्तकें लेकर आतंकवादी जलाया करते थे और हिन्दी के अध्यापकों को डराते और धमकाते थे। परन्तु अब जो समाचार पत्रों में छपा है कि गत परीक्षाओ के दौरान विद्यार्थियों को वहां हिन्दी भाषा का पर्चा ही देने नहीं दिया गया इतनी घृणा है इन लोगों को हिन्दी से।

हिन्दी सारे देश की सम्पर्क भाषा है। यह किसी एक प्रदेश या जाति समुदाय की भाषा नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इसे देवभाषा कह कर और हिन्दी में ही अपने सभी ग्रंथ लिख कर गुजराती होते हुए भी इसके सम्मान को बढ़ाया था। उन्होंने अपने सभी ग्रंथों की रचना इसलिये हिन्दी में की थी क्योंकि वह जानते थे कि हिन्दी भाषा के द्वारा ही वह अपने विचारों को जन-साधारण तक पहुंचा सकते हैं। इसलिये उन्होंने हिन्दी को इतना महत्त्व दिया है।

हिन्दी का सम्मान करना राष्ट्र का सम्मान करना है। क्योंकि हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री बनारसी दास जी गुप्ता ने इसके महत्त्व को समझते हुए जो यह घोषणा की है कि हरियाणा मे अब सारा सरकारी पत्र व्यवहार व अधिसूचनाएं आदि सब कार्य हिन्दी में होगा। इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। ऐसा करके उन्होंने एक सराहनीय कार्य किया है।

—सह-सम्पादक

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार

श्री क्षितीश वेदालंकार की सेवा में समर्पित—प्रशस्ति पत्र

हे स्वतन्त्रता सेनानी !

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी मे जब आप अन्तिम वर्ष के छात्र थे और एक मास बाद ही स्नातक परीक्षा होने वाली थी, तब अपने भावी जीवन की सब आशाओं और स्वप्नों को ठुकराकर सन् 1939 के निजाम हैदराबाद के अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा प्रारम्भ किए आर्य सत्याग्रह के सर्वप्रथम जत्थे में शामिल होकर आपने कठोर कारावास का दण्ड भोगा, वह घटना आज भी नई पीढी को आदर्श के लिए सर्वस्व बलिदान करने की प्रेरणा देती है। अपनी कक्षा में प्रथम आने वाले आपको गुरुकुल विश्वविद्यालय के शिक्षा पटल ने स्नातक परीक्षा दिए बिना ही आपको आपके जेल में रहते हुए ही वेदालकार की उपाधि से अलंकृत किया और अपनी कक्षा के सर्वोत्तम स्नातक के स्वर्ण-पदक से सुभूषित किया।

हे ओजस्वी वक्ता !

स्नातक बनने के बाद समाज सेवा के लिए आपने आर्य समाज के उपदेशक के रूप में वैदिक धर्म की जो दुन्दुभि बजाई वह भी आपके जीवन का एक नया कीर्तिमान है।

हे निर्भीक पत्रकार !

देश विभाजन के पश्चात् आपने पत्रकारिता का क्षेत्र अपनाया। पहले दैनिक अर्जुन में श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के साथ कार्य करते हुए और बाद में प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्र दैनिक हिन्दुस्तान में सहायक संपादक के रूप में कार्य करते हुए अपनी लेखनी के प्रशंसकों का एक बड़ा वर्ग तैयार किया और राजनीति तथा साहित्य की अनेक विधाओं में लेखनी का चमत्कार प्रदर्शित किया। "दैनिक हिन्दुस्तान" से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् संप्रति साप्ताहिक "आर्यजगत" के सम्पादक के रूप में अपनी निर्भीकता की और राष्ट्रवादी विचारों की जो छाप छोड़ी है उससे आर्य समाज के सभी वर्ग प्रभावित हैं और आपने आर्य समाज की पत्रकारिता को नई दिशा दी है।

हे लोकप्रिय लेखक !

वाणी के धनी प्रायः लेखक नहीं होते और लेखक प्रायः वक्ता नहीं होते। पर आपने वाणी और लेखनी दोनों की जिस ढंग से साधना की है वह वक्ताओं और लेखकों दोनों के लिए स्पृहणीय बन गई है। आपकी लिखी बीस पुस्तकें अभी तक प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें "तूफान के दौर से पंजाब" तो इतनी लोकप्रिय हुई कि इसका तीसरा संस्करण पाठकों के आग्रह से अंग्रेजी में अनुवाद करके निकालना पड़ा। हाल में ही आपकी नवीनतम पुस्तक निकली है—"हिन्द की चादर पर दाग"।

जीवन में सादगी और सात्विकता के विचारों में प्रखर राष्ट्रवाद को और व्यवहार में आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप देने वाले हे स्वतन्त्रता सेनानी, हे ओजस्वी वक्ता, हे निर्भीक पत्रकार, हम राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समापन समारोह 18, 19, 20 मई, 1990 के अवसर पर आपका अभिनन्दन करते हुये आपको संस्कृत शिक्षा सभा, जयपुर द्वारा प्रतिष्ठित आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार ससम्मान प्रदान करते हैं तथा अपने आपको गौरवान्वित समझते हैं।

नोट—20-5-1990 को इस अवसर पर संस्कृत शिक्षा सभा जयपुर की ओर से श्री क्षितीश जी वेदालंकार को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से राजस्थान के मुख्य मन्त्री ने अपने कर कमलों से सम्मानित किया।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा,
शताब्दी-समापन-समारोह समिति,
जयपुर (राज०)

हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाईयों को क्यों ?

हरिजनों से ईसाई बने लोगों के लिए भी हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओं की मांग को लेकर ईसाई पादरियों ने आन्दोलन चला रखा है। यदि उनकी यह मांग मान ली जाती है तो हरिजन भाईयों को ईसाई बनाने के काम में ईसाई पादरियों को बहुत लाभ होगा। अधिक मात्रा में लोग ईसाई बनने लगेंगे। भारत के ईसाईकरण के सपनों को जल्दी साकार कर पायेंगे।

भारत के संविधान निर्माताओं ने हिन्दू समाज के हरिजन वर्ग Scheduled Castes को कुछ विशेष सुविधाएं तथा अधिकार कुछ वर्षों के लिए इस कारण दिये थे कि हरिजन वर्ग शताब्दियों से अस्पृश्य माने जाते रहे और हिन्दू समाज मे इनको बराबर का दर्जा नहीं मिलता रहा। परन्तु ईसाई समाज अथवा अन्य किसी गैर हिन्दू समाज में छुआ-छूत नही है। कोई भी हरिजन जब ईसाई धर्म स्वीकार कर लेता है तो वह हरिजन नहीं रहता। भारत के संविधान के अनुसार शैडयूल कास्टस में ईसाई वर्ग के लोग सम्मिलित नहीं है। ईसाई बन जाने के उपरान्त भी हरिजनों वाली सुविधायें दिये जाने से इस प्रावधान का उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा।

यदि ईसाईयों की माग मान ली गई तो हरिजन समाज को हानि होगी क्योंकि उन को मिलने वाली सुविधाओं को ईसाई भी बांट लेंगे यह भीषणतरा है कि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का 80 प्रतिशत भाग ईसाईयों के हाथ में चला जायेगा, जैसे की आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाओं का 80 प्रतिशत से अधिक भाग ईसाई बन चुके लोगों के हाथ में जा रहा है कारण यह है कि ईसाई वर्ग बहुत संगठित है। उनके बड़े बड़े कार्यालय हैं जिन में ऊंचे वेतन प्राप्त बहुत पढ़े लिखे लोग कार्यरत हैं। किन्तु दूसरे आदिवासी असंगठित और कम शिक्षित हैं इस लिए अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं।

भारत की जनसंख्या में हिन्दू 85 प्रतिशत के लगभग हैं। जो धन आदिवासी तथा हरिजनों के लिये व्यय होता है वह प्रायशः हिन्दुओं से ही कर के रूप में प्राप्त होता है। ईसाईयों को भी हरिजनों वाली सुविधाएं देने से तो हिन्दुओं का धन ईसाईयों के हाथ अनायास ही चला जायेगा।

भारत के एक करोड़ साठ लाख ईसाईयों में आधे हरिजन वर्ग से धर्मान्तिरित किए गए मिजोरम हैं। आधे प्रायः आदिवासी Scheduled Tribes हैं। आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाए तथा विशेषाधिकार इन ईसाईयों को भी प्राप्त हैं। यदि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं और विशेष अधिकार उन ईसाईयों को पहिले जो हरिजन थे, दे दिये जायें। तो भारत में समस्त ईसाई समाज तो विशेषाधिकार रखने वाला समाज बन जायेगा और हिन्दू समाज अपने ही देश में द्वितीय का नागरिक बन कर रह जायेगा।

भारत में जो आदिवासी क्षेत्र ईसाई बाहुल बन गये हैं वहां ईसाई राज्य बन गये। जैसे नागालैण्ड और मेघालय। नागालैंड और मिजोरम वास्तव में भारत की धरती पर विदेशी मिशनरियों के अधीन पोप के राज्य हैं। वे अपने आप को अब भारतीय ही नहीं मानते बल्कि वहां भारत के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति खड़ी हो रही है भारत विरोधी सशस्त्र संगठन बन गये हैं जो आसाम के अन्य क्षेत्रों में विद्रोह भड़का रहे हैं। बोडो या उल्फा उग्रवादियों को, हथियार और प्रशिक्षण देते हैं। उन्हें गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

भारत सरकार द्वारा इन दोनों राज्यों को अन्य राज्यों की अपेक्षा बहुत अधिक धन राशि दी जाती रही है इन दोनों राज्यों को कश्मीर की भान्ति बल्कि और भी अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं। यह सारे अधिकार, सुविधाएं तथा भारत विरोधी गतिविधियों में ही लग रहे हैं। जो कि बन्द होना चाहियें।

भारत में पहिले ही ईसाई जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है यदि यह प्रक्रिया अधिक तेज हो गई तो हिन्दू समाज सर्वनाश की ओर ही अग्रसर हो जाएगा।

अतः हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाईयों को नहीं मिलनी चाहियें क्योंकि—

1. संविधान निर्माताओं ने सोच समझ कर केवल हिन्दू समाज के ही पिछड़े वर्ग S. C. को सुविधाएं दी। ईसाईयों को भी यह सुविधाएं देना अवैधानिक है। संविधान की भावना के विरुद्ध है।

2. ईसाईयों में अस्पृश्यता नहीं है और ईसाई बनने के उपरान्त कोई भी व्यक्ति हरिजन S.C. नहीं रहता।

3. हरिजनों को मिलने वाले धन तथा सुविधाओं को ईसाई बांटना चाहते हैं इससे हरिजन समाज को हानि होगी। हरिजनों के प्रति अन्याय होगा।

4. ईसाईयों को हरिजनों S.C. वाली विशेष सुविधाएं और अधिकार प्राप्त हो जाने से ईसाई समाज Privileged Class तथा हिन्दू समाज Unprivilege Class यानि द्वितीय श्रेणी के नागरिक अपने ही देश भारत में बन जायेंगे।

5. हिन्दू समाज का धन ईसाईयों की जेब में चला जायेगा।

6. ईसाई जगत का नियन्त्रण विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथ में होने के कारण ईसाईयों को मिलने वाले धन का दुरुपयोग भारत विरोधी कार्यों में होता है। हिन्दू अपने धन का ऐसा दुरुपयोग नहीं होने देंगे।

ले०—डा० कैलाश चन्द्र, विश्व हिन्दू परिषद संकट लोचन आश्रम सैक्टर—6, रामा कृष्णा पुरम नई दिल्ली 22

कश्मीर की कहानी—इतिहास की जुबानी (4)

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

इस लेखमाला के पिछले लेख में मैंने मार्तण्ड के कश्मीरी पंडितों का उल्लेख किया था जो अपने पास पीढ़ी दर पीढ़ी कई-कई घरानों की वंशावली रखते रहे हैं। ये लोग चलता फिरता इतिहास थे। जिस तरह ये पीढ़ी दर पीढ़ी दूसरों की वंशावली अपने पास रखते थे उसी तरह उनका यह व्यवसाय भी पीढ़ी दर पीढ़ी चलता था। कश्मीर की वर्तमान वस्तुस्थिति का आंकलन करते समय हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जो कुछ अब कश्मीर में हो रहा है। वह इससे पहले कभी नहीं हुआ। हालांकि हिन्दू और मुसलमान वहां सदियों से रहते चले आ रहे हैं। जिस मार्तण्ड्य तीर्थ का मैं अब उल्लेख कर रहा हूं वहां भी कश्मीरी पंडितों के साथ मुसलमान भी रहते थे और उन सबके सम्बन्ध आपस में अत्यन्त मैत्रीपूर्ण और भाईचारे के हुआ करते थे।

कश्मीर के एक और पक्ष की ओर भी पाठकों का ध्यान दिलाना चाहता हूं जो मेरे इस विचार की पुष्टि करता है कि कश्मीर वास्तव में एक हिन्दू देश है। कश्मीर में 18 हजार फुट की ऊंचाई पर अमरनाथ स्वामी की गुफा है। वहां वर्ष भर बर्फ रहती है। उस गुफा में शिवलिंग बर्फ से बनता है। उस गुफा के बाहर जो छोटी सी नदी बहती है उसे कृष्णा गंगा कहते हैं। पहलगाम से अमरनाथ जाते समय पहला पड़ाव जिस जगह आता है उसे चंदनवाड़ी कहते हैं। उसके आगे एक बहुत बड़ी झील आती है, उसका नाम भी हिन्दू है। पहलगाम के पास एक और नदी है उसे भी शायद वेतरणी या इसी तरह के एक नाम से पुकारा जाता है। अमरनाथ की यात्रा पर गए मुझे बहुत देर हो चुकी है। इसलिए उन सभी स्थानों के नाम मुझे इस समय याद नहीं यह अवश्य याद है कि वे सब हिन्दू नाम थे जो मेरे इस विचार की पुष्टि करते हैं कि कश्मीर वास्तव में एक हिन्दू देश था। कश्मीर का नाम राज तरंगिणी में भी आता है और यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया था। श्रीनगर भी एक हिन्दी नाम है। श्रीनगर को बिगाड़ कर सिरीनगर कर दिया गया है। अनन्तनाग भी हिन्दी नाम है। खीर भवानी भी हिन्दी नाम है। यहां भी एक बहुत बड़ा मन्दिर है। और श्रीनगर में शंकराचार्य का मन्दिर कह रहा है कि—

खण्डहर बता रहे हैं
कि इमारत अज़ीम थी

पाठकगण मैंने आपके समक्ष कुछ वे तथ्य रखे हैं जो आज भी यह प्रमाणित करते हैं कि कश्मीर वास्तव में एक हिन्दू देश था। चूंकि पहले अकबर और बाद में दूसरे कई मुस्लिम शासक इस पर शासन करते रहे हैं उन्होंने इसे इस्लामी रंग देना शुरू किया था और जैसा कि पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी लिखा था कश्मीर में हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था आज जो मुसलमान कश्मीर में मिलते हैं किसी समय ये सब हिन्दू हुआ करते थे। बदलते समय और बदलते हालात के अनुसार वह अब बहुत बिगड़ गए हैं और इसमें पाकिस्तान ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्यथा ये सब पहले हिन्दू ही थे और जैसा पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी लिखा है कि एक बार जम्मू कश्मीर के एक महाराजा ने बनारस के पंडितों से पूछा था कि जो हिन्दू मुसलमान बन चुके हैं क्या वह फिर हिन्दू बन सकते हैं? बनारस के पंडितों ने इसकी अनुमति नहीं दी थी। काश! उस समय हमारे देश में आर्य समाज होता तो यह सब हिन्दू समाज में लौट आए होते और आज कश्मीर समस्या इस रूप में हमारे सामने न आती।

लेकिन मैं पहले भी लिख चुका हूं कि कश्मीर के प्राचीन इतिहास को समझने के लिए "राज तरंगिणी" को पढ़ना जरूरी है। 1148 में अर्थात् आज से 842 वर्ष पहले कश्मीर में महाराजा हर्ष देव राज्य करते थे। उनके एक महामन्त्री या प्रधानमन्त्री थे जिनका नाम था चम्पक। उनके बेटे का नाम था कल्हण जो अपने समय के महाकवि थे। वह संस्कृत के भी बहुत बड़े विद्वान् थे। उस समय कश्मीर की राजभाषा भी संस्कृत ही थी। कल्हण ने चूंकि सब कुछ बहुत निकट से देखा था उन्होंने राजतरंगिणी के नाम से संस्कृति में कश्मीर का इतिहास लिखा था। उस समय का इतिहास बहुत कम मिलता है लेकिन कई योरूपीय इतिहासकारों का भी यह कहना है कि "राज तरगिणी" कश्मीर का सही इतिहास है और जो कुछ उसमें लिखा गया है वह उस समय के हालात का सही चित्र हमारे सामने पेश करता है। इसी सिलसिला में पंडित जवाहर लाल ने भी अपनी बेटी को एक पत्र में लिखा था—

"आओ जरा अपने देश के अतीत की ओर भी देखें। इसमें हमारे लिए एक कठिनाई अवश्य पैदा होती है। हमारे प्राचीन बुजुर्गों में जिन्हें हम आर्य कहते हैं अपना इतिहास लिखने का शौक नहीं था। इसमें संदेह नहीं कि वह महान् व्यक्तित्व के मालिक थे और उन्होंने वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे थे। ऐसे ग्रन्थ वह महापुरुष ही लिख सकते थे। ये ग्रन्थ पढ़ कर हमें अपने अतीत का कुछ पता चल जाता है। विशेष रूप से यह कि हमारे पूर्वज प्राचीन काल मे कैसे होते थे। वह कैसे रहते थे, क्या खाते थे, क्या पहनते थे। इन बातों का तो हमें पता चल जाता है लेकिन यह सही इतिहास नहीं है। इतिहास की केवल एक ही पुस्तक हमें मिलती है जो संस्कृत में लिखी गई थी। वह कश्मीर का इतिहास है। उसका नाम "राज तरंगिणी" है जो कल्हण ने लिखी थी। उसे पढ़ने से हमें कश्मीर के बारे मे बहुत कुछ पता चल जाता है।

हम सबको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए क्योंकि उसके माध्यम से हमें कश्मीर के बारे में बहुत कुछ पता चल जाएगा और कश्मीर हमारी मातृ-भूमि है।"

यह थी पंडित जवाहर लाल की धारणा "राज तरंगिणी" के बारे में लेकिन उस ग्रंथ में कश्मीर के बारे में क्या लिखा गया है यह अगले लेख मे प्रस्तुत करूंगा।

ओ३म् ध्वज गायन

जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी, विश्व प्रेम-प्रतिमा अति प्यारी।
सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह—लता—सरसाने वाला।
साम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक, भव-भय हारी॥
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

इसके नीचे बढ़ें अभय-मन, सत्पथ पर सब धर्मधुरी जन।
वैदिक-रवि का हो शुभ-उदयन, आलोकित होवे दिशि सारी॥
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति—दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम-तरंग बहे सुखकारी॥
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच-नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद-मंगल गाकर, पथाई पाखण्ड बिसारी।
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भर दें वेद-ज्ञान घर-घर मे।
सुभग शांति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी॥
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी॥
जयति ओ३म् ध्वज-व्योम विहारी...

आर्य-जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य-जनों का ध्रुव-निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी॥
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम-विहारी...

भाषा एवं लिपि की उत्पति

ले०—श्री मनमोहन कुमार चुक्खुवाला, देहरादून।

आज विश्व में अनेक भाषाएं हैं जिनकी उत्पत्ति का अपना-अपना काल है। यह भी प्राय: निर्विवाद है कि संस्कृत सर्वप्राचीन भाषा है। आर्य समाज की मान्यता है कि वेदों का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ। यह कथन उचित ही है कि मानव एव वेदों की उत्पत्ति का काल एक ही है।

इससे पूर्व कि आगे लिखा जाए, एक घटना का उल्लेख किया जाता है जिसकी प्रेरणा स्वरूप यह विचार लेखबद्ध किये जा रहे हैं। इन पंक्तियों के लेखक के कार्यालय में एक तार्किक मनोवृत्ति के बन्धु हैं जिनसे आर्य समाज की मान्यताओं के सबन्ध में प्राय: वार्तालाप होता रहता है। एक बार इन बन्धु से भाषा एवं लिपि की उत्पत्ति एव सर्वप्राचीनता पर वार्ता हुई। इन्हें आर्य समाज के दृष्टिकोण के अनुरूप समझाने का यथासम्भव प्रयास किया गया परन्तु वह मतैक्य नहीं हुए। समय-समय पर इस विषय चर्चा होती रहती है। इसी के परिणाम स्वरूप एतद्विषयक कुछ विचार लेखबद्ध हैं।

पश्चिम के प्राय: सभी विद्वान् भाषा एवं लिपि की उत्पत्ति को मात्र कुछ सतस्त्र वर्ष ही मानते हैं। इन विद्वानों को महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण विदित नहीं था। वह विद्वान् ऋषि कोटि के व्यक्ति भी नहीं थे। ईश्वर सम्बन्धी इनके विचार भी वास्तविकता के विपरीत हैं। ईश्वर एवं जीव का ज्ञान, सृष्टियोत्पत्ति का प्रयोजन व ज्ञान जिसको नहीं होगा वह व्यक्ति भाषा एवं लिपि की उत्पत्ति के रहस्य की सत्यता को प्राप्त नहीं हो सकता। स्वामी दयानन्द इन सबसे न केवल पूर्णरूपेण परिचित ही थे अपितु विश्व को एतद्विषयक ज्ञान उन्हीं की देन है। वह योगी थे एवं परमात्मा का साक्षात्कार भी उन्होंने किया था। सृष्टियोत्पत्ति की पृष्ठभूमि, ईश्वरीय ज्ञान वेदों की उत्पत्ति, मानव की उत्पत्ति, अन्य चराचर प्राणि जगत की उत्पत्ति आदि विषयों का ऐतिहासिक ज्ञान भी महर्षि दयानन्द की ही देन है। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं पूनाप्रवचनों में व्यक्त महर्षि दयानन्द के विचारों को यदि ध्यानपूर्वक पढ़ा जाए तो सृष्टि की आदि भाषा एवं लिपि की उत्पत्ति के काल को सरलता से निर्धारित किया जा सकता है। यहां हम सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास का एक उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

प्रश्न—"वेद संस्कृत भाषा में प्रकाशित हुए और वे अग्नि आदि ऋषि लोग उस संस्कृत भाषा को नहीं जानते थे फिर वेदों का अर्थ उन्होंने कैसे जाना?"

उत्तर—परमेश्वर ने जनाया और धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब-जब जिस-जिसके अर्थ की जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाए। जब बहुतों के आत्माओं में वेदार्थ-प्रकाश हुआ तब ऋषि-मुनियों ने वह अर्थ और ऋषि-मुनियों के इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाए। उनका नाम ब्राह्मण अर्थात् 'ब्रह्म' जो वेद उसका व्याख्यान-ग्रन्थ होने से 'ब्राह्मण' नाम हुआ। और—

ऋषयो मन्त्रदृष्टय:, मन्त्रान्सम्प्रादु:॥ (निरुक्त)

जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने, प्रकाशित नहीं किया था, और दूसरों को पढ़ाया भी, इसीलिए अद्यावधि उस-उस मन्त्र के साथ ऋषिनाम स्मरणार्थ लिखा आता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्ता बतलावें उनको मिथ्यावादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थ-प्रकाशक हैं।"

स्वयं महर्षि दयानन्द जी की भी यह जीवन घटना प्रसिद्ध है कि जब महाराज जी पण्डितों को वेद भाष्य लिखवाया करते थे उस समय कभी-कभी किसी मन्त्र का अर्थ उन्हें स्पष्ट नहीं होता था तब महर्षि एकान्त में जा, समाधिस्थ होकर अभीष्ट मन्त्र का अर्थ अपने आचार्य परमात्मा से समझ आते थे और आकर पण्डितों को मन्त्रार्थ लिखवाया करते थे।

महर्षि दयानन्दजी के अनुसार सृष्टि, वेद, मानव सम्वत् 1,96,08,53,089 वर्ष है। इतने काल पूर्व ही मानव की उत्पत्ति इस पृथ्वी पर हुई थी। वेद का आविर्भाव भी मानव-उत्पत्ति के साथ-साथ हुआ था। सत्यार्थ प्रकाश से जो उद्धरण दिया गया है उसके अनुसार परमात्मा ने आदि चार ऋषियों को वेदों के ज्ञान को उक्त ऋषियों को जनाया भी। इससे स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि भाषा की उत्पत्ति भी वेदों की उत्पत्ति के साथ-साथ ही हुई। उक्त उदाहरण में ही महर्षि कहते हैं कि वेद ज्ञान के आविर्भाव के तत्काल-बाद 'ऋषि मुनियों के इतिहासपूर्वक ग्रंथ बनाए।' इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रंथों की रचना भी आदिकाल में ही आरम्भ हो गई थी। महर्षि के इन युक्तियुक्त एवं बुद्धिसंगत विचारों से यह भी स्पष्ट है कि लिपि का उद्भव भी वेदोत्पत्ति के साथ-साथ हो गया था।

उक्त आधार पर यह निश्चित है कि भाषा की उत्पत्ति आज से 1,96,08,53,089 वर्ष पूर्व सृष्टि, वेद एवं मानव की उत्पत्ति के साथ-साथ हुई। यह आदि भाषा संस्कृत थी एवं लिपि देवनागरी अक्षर थे जिनमें वर्तमान में वेदों को संहिताबद्ध किया हुआ है। यदि पाठक इस विषय पर पक्ष-विपक्ष में अपने विचार सूचित करेंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज कलकत्ता की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक 6-5-90 को प्रात: 10-30 बजे आर्य समाज मन्दिर, 19 विधान सरणी, कलकत्ता-6 में प्रधान श्री रलिया राम गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य समाज कलकत्ता तथा सम्बन्धित विभागों का वार्षिक विवरण तथा आय-व्यय का लेखा सुनाया गया। आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों का चुनाव हुआ।

प्रधान—श्री रलिया राम गुप्ता, उपप्रधान—श्री छबील दास सैनी, उप-प्रधान—श्री नाथ दास गुप्ता, उप-प्रधान—श्रीमती विद्यावती दत्त, मन्त्री—श्री यशपाल वेदालंकार, उप-मंत्री—श्री अशोक कुमार सिंह, उप-मंत्री—श्री अवधेश कुमार झा, उप-मंत्री—श्री अच्छे लाल जायसवाल, कोषाध्यक्ष—श्री विन्देश्वरी प्रसाद जायसवाल, हिसाब परीक्षक—श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नन्द लाल सेठ, उप-पुस्तकाध्यक्ष—श्री लक्ष्मीकान्त जायसवाल, यज्ञ व्यवस्थापक-श्री सत्य नारायण सेठ, अधिष्ठाता आर्य युवा जन—श्री दीपक कुमार आर्य, अन्तरंग सदस्य—श्री लक्ष्मण सिंह, श्री सीताराम आर्य, श्री मनीराम आर्य, श्री कुल भूषण अग्रवाल, श्री रामधनी जायसवाल, श्री श्रीराम आर्य, श्री अच्छेलाल सेठ; श्रीमती सुमना आर्या, विशेष आमंत्रित—श्री मनसाराम वर्मा, श्री राजाराम जायसवाल, श्री सुरेश कुमार अग्रवाल, प्रतिष्ठित सदस्य—पं० उमाकान्त उपाध्याय, पं० प्रियदर्शन सिद्धान्त भूषण, श्री सुखदेव शर्मा, श्री रामलखन सिंह, प्रधानाध्यापक रघुमल आर्य विद्यालय, श्रीमती सरोजिनी शुक्ला, प्रधानाध्यापिका आर्य कन्या महाविद्यालय।

आर्य समाज मेन बाजार, पठानकोट की ओर से सहायता

हमने आर्य समाज की ओर से कुछ दिन पूर्व उड़ीसा के निर्धनों के लिए श्री स्वामी धर्मानन्द जी, गुरुकुल आश्रम आम सेना कालाहाण्डी की अपील पर दान तथा कपड़े एकत्रित करने शुरू किये थे, जोकि 20-5-90 को एक समारोह करके श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दयानन्द मठ दीनानगर को वहां भेजने के लिए भेंट किये गये। तत्पश्चात् प्रीति भोजन किया गया।

विवरण निर्धन सहायता कोष

1. साड़ियां एकत्रित—150
2. धोती कोरी नई—200 लागत 4500/-
3. कुरते पजामे—50
4. बच्चों के कपड़े—400
5. नकद राशि (अनाज के लिए) 5000/-

गुरुकुल आश्रम आम सेना, खड़ियार रोड़ कालाहाण्डी को भेज रहे हैं।

6. शेष लगभग पांच हजार रु० श्री स्वामी सर्वानन्द जी दयानन्द मठ दीनानगर के आदेशानुसार नेपाल, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र के आश्रमों में भेजे जायेंगे।

हम सभी सहयोगी तथा दानी महानुभावों के आभारी हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप में इसी प्रकार सेवा एवं दान की भावना बनी रहे।

—लाल चन्द (प्रधान)

प्रवेश आरम्भ

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश हेतु 29 जून, 1990 को प्रवेश परीक्षा 9 बजे से 12-30 बजे तक लिखित तथा 2 बजे से 4-30 तक मौखिक इन दो चरणों में पूर्ण होगी। इसमें पचम कक्षा उत्तीर्ण 10 से 11 वर्षीय प्रतिभाशाली बच्चे ही भाग ले सकेंगे। जिसमें 50% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण छात्र ही वरीयता क्रम से गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे।

आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम,
भोला, मेरठ (उ० प्र०)

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का वार्षिक चुनाव दिनांक 6-5-90 को बहुत ही प्रेम तथा सद्भावनापूर्ण वातावरण मे सुसम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वश्री विजय सेठी जी पुन: तीसरी बार 1990-91 के लिए सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। उनको अपने सहयोगी अन्तरंग सभासद मनोनीत करने का सर्वाधिक दिये जाने पर उन्होंने निम्नोक्त महानुभावो को पदाधिकारी मनोनीत किया।

(1) संरक्षक—श्री बलदेव राज वर्मा, श्री सत्यदेव चड्ढ, श्री साँईदास सरीन, श्री वीरदेव पुरी, श्री वेदप्रकाश मल्होत्रा।

(2) उपप्रधान—श्री बकराज विन्द्रा, श्रीमती कमल कान्ता आनन्द, श्री सुदर्शन कुमार शर्मा, श्री अनिल चोपड़ा, श्री सुभाष सेठ।

(3) श्री वीरेन्द्र मोहन बख्शी (मन्त्री), कृष्ण देव कुन्द्रा, (सयुक्त मन्त्री) श्रीमती सरला सेतिया, (उपमंत्री) श्री बलदेवराज महेन्द्रु (कोषाध्यक्ष) श्री ए० डी० कपूर (लेखा निरीक्षक)।

(5) अन्तरंग सभासद्—हंसराज सेठी डा० के० के० महाजन, श्री हिन्दपाल सेठी, श्री ओमप्रकाश मलचन्दा, श्री परमजीत सोढ़ी, श्री के० के० शर्मा, श्री प्रेम स्वरूप पुरी, श्री अनिल गुलाटी।

प्राचार्य वाल्ले हालैण्ड सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य दत्तात्रेय वाल्ले हालैण्ड मे जून के प्रथम सप्ताह मे आयोजित होने वाले शांतिपूर्वक मृत्यु के अधिकार नामक आन्दोलन के आठवें विश्व सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रसिद्ध समाजवादी पारसी नेता तथा हमारा भारत आदि रचनाओं के यशस्वी आदि ग्रंथों के लेखक श्री मीनू मसानी द्वारा स्थापित इस आन्दोलन की भारतीय शाखा ने श्री वाल्ले जी को अपना प्रतिनिधि मनोनीत किया है।

सम्मेलन के बाद वह डेनमार्क, नार्वे तथा स्वीडन आदि मे आयोजित अन्य कार्यक्रमो मे भाग लेने के बाद जून के अन्तिम सप्ताह मे वापिस भारत लौटेंगे।

महाराणा प्रताप जयन्ती

27.5.1990 रविवार को आर्य समाज कठूआ की ओर से महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता एक धर्म प्रेमी आफिसर श्री आर० एस० जम्वाल जी ने की, जो बिजली विभाग मे एक्जीक्यूटिव इन्जिनियर हैं। शहर के प्रसिद्ध व्यक्तित्व एव सामाजिक कार्यकर्त्ता लाला कर्मचन्द जी इस समारोह मे मुख्य वक्ता थे जिन्होंने महाराणा प्रताप की शानदार गौरवगाथा को शानदार ढग से प्रस्तुत किया। श्री किशन दास, श्री देवेन्द्र, श्री भारतभूषण, और डा० दुष्यन्त जी ने भी अपने विचार रखे। इसके साथ ही श्री पंडित छज्जू राम जी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया गया। उनका निधन 21-5-90 को हो गया था।

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर की विजय

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर पर गेट लगाने के समय 17-8-89 को नरेश चन्द्र भंडारी मकान न० 250 द्वारा अदालत से स्टे आर्डर ले लिया था और आर्य समाज का काम रुक गया था, जोकि 9 महीने के पश्चात् 22-5-90 को आर्य समाज पर चलाया जा रहा यह केस खारिज हो गया। यह आर्य समाज की बड़ी भारी विजय हुई है। यह सारा कार्य चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट तथा उनके सहयोगी श्री लालचन्द जी मेहरा एडवोकेट तथा श्री राजपाल जी मित्तल एडवोकेट ने बिना किसी फीस के परिश्रम करके आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है।

महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा

गत दिवस महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा मे स्वातन्त्र्य वीर सावरकर तथा महाराणा प्रताप का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया। प्रातःकाल हवन यज्ञ के उपरान्त गीत तथा भाषण हुए। इस अवसर पर बोलते हुए प्रिंसीपल ने बच्चो को बताया कि हमे आज की सकट की घड़ी में सावरकर तथा प्रताप के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

—पृथ्वी राज जिज्ञासु

राजस्थान आर्य समाज स्थापना शताब्दी सम्मेलन में पारित शिक्षा सम्बन्धी संकल्प

वर्ष 1990 युनेस्को के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष घोषित किया गया है। 115 वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष के पुनर्जागरण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का आठवा सिद्धान्त विद्या का प्रचार और अविद्या का नाश करने का सकल्प करता है। नवें सिद्धान्त के अनुसार किसी को भी अपनी उन्नति मे सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए किन्तु प्रत्येक को सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इन्ही आदेशों को लक्ष्य मे रख कर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य समाज की स्थापन की शताब्दी के अवसर पर निम्न दस सूत्रीय शिक्षा का कार्यक्रम आगामी 10 वर्ष के लिए निश्चित करती है।

(1) महिला शिक्षा का प्रसार,

(2) प्रौढ शिक्षा को जन आन्दोलन का रूप देना,

(3) धार्मिक शिक्षा तथा मूल्य परक शिक्षा का प्रचार,

(4) युवा वर्ग को व्यवसाय परक तथा धनुर्वेद की शिक्षा,

(5) मैत्री प्रसार तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रसार,

(6) सामाजिक कुरीतियो का उन्मूलन,

(7) वैदिक ऋचाओ का हिन्दी तथा अन्य भाषाओ मे अनुवाद तथा मूल्य परक लोकप्रिय साहित्य का सृजन,

(8) पर्यावरण शिक्षा,

(9) महाविद्यालयो की शिक्षा स्तर के लिए हिन्दी मे ग्रथ निर्माण,

(10) कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की भूमिका मे आर्यत्व का विकास।

प्रस्तुतकर्ता—

प्रो० सुरेशचन्द त्यागी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय, गुरुकुल कागड़ी वि० वि० हरिद्वार, प्रो० नेतिराम शर्मा, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री छोटूसिंह, श्री बलभद्र भारती (हूबा), पूर्व कुलपति, गुरुकुल कागड़ी वि० वि०, हरिद्वार, श्री डा० सुभाष वेदालकार, श्री ज्ञानेन्द्र आर्य, श्री ऋषि पाल त्यागी "वेदालकार", डा० श्री जसबीर सिंह मलिक।

हंडियाया बाजार, बरनाला का चुनाव

वार्षिक चुनाव आर्य समाज बरनाला 6-5-90 को निम्न प्रकार हुआ।

1. श्री फकीर चन्द जी चोपड़ा एडवोकेट, 2. श्री निहाल चन्द जी जीन्दल—एडवोकेट सरक्षक। 3. श्री डा० राजेन्द्र जी बांसल—प्रधान। 4. श्री डा० रणजीत सिंह जी—उपप्रधान। 5. श्री रामशरण जी गोयल—उपप्रधान। 6. वैद्य इन्द्रसेन—महामन्त्री। 7. श्री सतीश सिन्धवानी जी सहायक मन्त्री। 8. श्री धर्मवीर जी जीन्दल—स्टेज सैक्रेटरी। श्री कर्मवीर जी—प्रचार मन्त्री। 10. श्याम लाल जी सिंगला—कोषाध्यक्ष। 11. श्री जीवन कुमार जी मोदी—लेखा निरीक्षक। श्री सतीश गुप्ता जी—लेखा निरीक्षक।

आर्य वानप्रस्थी की आवश्यकता

आर्य समाज सरहिन्दी गेट पटियाला के लिए प्रबन्ध एव प्रचार्थ एक वानप्रस्थी की आवश्यकता है जिसे वैदिक सिद्धांतो का ज्ञान हो। उनकी निजि आवश्यताओ का भार आर्य समाज सम्भालेगी।

—ओम प्रकाश गुगलानी मन्त्री

पटियाला में पारिवारिक सत्संग

श्री ओम प्रकाश जी गुगलानी मन्त्री आर्य समाज सरहिन्दी गेट पटियाला ने सूचना दी है कि 27-5-90 को श्री सोम प्रकाश जी (म० न० 1034/2 भाडिया वाली गली) के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग हुआ। जिसमे सैकडो स्त्री पुरुषो ने भाग लिया। पुरोहित श्री सत्यव्रत जी ने यज्ञ कराया और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। बहिन विद्यावति जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास के आधार पर प्रभावशाली प्रवचन दिया।

अमृतसर का सराहनीय कार्य

आर्य समाज नवा कोट अमृतसर की ओर से जम्मू और कश्मीर के दगो से पीडित होकर आए लोगो (हिन्दू-सिख) परिवार जो लगभग 1000 के करीब अमृतसर पहुचे है। आर्य समाज नवाकोट, मोहल्ला सुधार कमेटी की सहायता से प्रति रविवार 50 परिवारो को सूखा राशन तकसीम कर रहा है। यह राशन 6-5 90 रविवार और 13-5-90 (रविवार) को 50-50 परिवारो को बाटा गया। अभी यह परिक्रिया जारी है और दो रविवार यह राशन तकसीम किया जाएगा।

आ० स० स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिक चुनाव

गत दिवस आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिक अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया ने की। वार्षिक रिपोट प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज के महामन्त्री श्री रोशन लाल शर्मा ने कहा कि आर्य समाज ने देश की एकता और अखण्डता को कायम रखने के लिए, सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध जनता को जाग्रत करने के लिए जन सम्पर्क अभियान के अन्तर्गत लुधियाना शहर मे स्थान स्थान पर जन सभाओ का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्व तथा महापुरुषो के बलिदान दिवस श्रद्धा-पूर्वक मनाये गये।

आर्य समाज मे जनता के लिए नि:शुल्क होम्योपैथिक हस्पताल के अतिरिक्त निर्धन परिवारो मे 9484 किलोग्राम आटा, चावल, घी, रजाइया, कपडे आदि तथा छात्रो के लिए पुस्तके, निशुल्क आदि का प्रबन्ध किया गया।

नव वर्ष के लिए अधिकारियो का चुनाव किया गया जिसके प्रधान ज्ञानी गुरदयाल सिंह आर्य, उपप्रधान—सर्व श्री मदन मोहन चढ्ढा, जगजीवन पाल सूद, देवराज आर्य, विलायती-राम मेहता, यशपाल आर्य। महामन्त्री—श्री रोशन लाल शर्मा, मन्त्री—सर्व श्री बालकृष्ण सूद, कुलदीप राय, श्रवण कुमार, ललित जसवाल, विनोद डोगरा, कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सेठी, उपकोषाध्यक्ष—श्री शिव कुमार खोसला, लेखा निरीक्षक—श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश गुप्ता, उप पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, अन्तरग सदस्य—सर्व श्री रणवीर भाटिया, नरेन्द्रसिंह भल्ला, मगलसेन बधेवा, हरभगवान पाहवा, मतवाल चन्द आर्य, भीमसेन थापर सब सम्मति से चुने गये।

80 परिवारों के 400 से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में

उडीसा का फुलवाणी जिला जगल पर्वत बहुत होने से ईसाइयों का चारागाह बना हुआ है। गत कुछ समय से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपना शुद्धि आन्दोलन वहा शुरू कर रखा है, इसमें उत्तरोत्तर निरन्तर सफलता मिलती जा रही है। गत 16 17 18 मई को ग्राम गम्डा गाव पेना बीडा मे पुनर्मिलन के दो आयोजन अत्यन्त सफल रहे। दोनो स्थानों पर अस्सी परिवारो के चार सौ से अधिक लोगों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। आयोजन छोटा होने पर भी अपने आप मे अपूर्व श्रद्धा भक्ति से भरा था। जहा समाचार पहुचता लोग बाजे गाजे के साथ आते और दीक्षा लेकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते। पाच वर्ष से लेकर अस्सी वष के बुढे तक अपनी प्राचीन वेश भूषा धोती पहने हुए थे, गाव मे पहुचने पर आस पास के ग्राम वासियो ने दो किलो मीटर दूर से ही जो श्रद्धा पूर्ण स्वागत विद्वानो का किया, उससे सब भाव विभोर हो उठे। विदाई के समय भी हजारों लोगों ने नृत्य के साथ में अश्रुपूर्ण नेत्रों से जो श्रद्धा प्रकट की वह कभी भुलाई नही जा सकती। पजाब से पधारे महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने कहा मैंने जीवन मे इतना श्रद्धा पूर्ण स्वागत कहीं नहीं देखा लोगो मे यज्ञ मे बैठकर आहुति देने और यज्ञोपवीत लेने की होड लगी हुई थी। सस्कार एव कार्यक्रम का संचालन सभामन्त्री जी श्री प० त्रिविक्रम शास्त्री ने किया। इस आयोजन में सभा प्रचारक श्री नारायण प्रसाद का पुरुषार्थ प्रशंसनीय है। सारा कार्यक्रम सभा प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की देख रेख एव प्रेरणा पर हुआ। इस कार्यक्रम की सफलता से हजारों लोग शुद्धि के लिए तैयार हो रहे हैं।
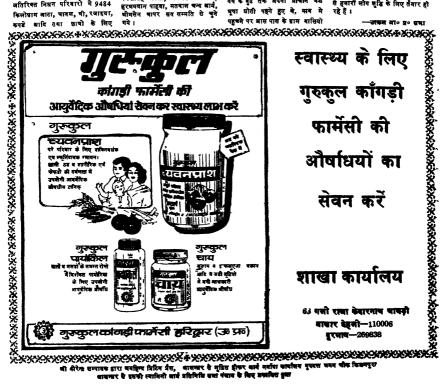
—उत्कल आ० प्र० सभा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 14, आषाढ़ 17 सम्वत् 2047 तदनुसार 28 जून/1 जुलाई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

श्री वीरेन्द्र जी एक बार फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित

जालन्धर, 25 जून—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन 24 जून 1990 को दोआबा कालेज जालन्धर मे सम्पन्न हुआ। जिस में पंजाब की भिन्न भिन्न आर्य समाजो के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रधान पद के लिए श्री वीरेन्द्र जी और श्री रामपाल मित्तल के नाम पेश किये गये परन्तु बहुत बड़े बहुमत से श्री वीरेन्द्र जी को एक बार फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान चुन लिया गया और इसके साथ ही एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा सभा के शेष अधिकारी व अन्तरंग सदस्यो, आर्य विद्या सभा के सदस्यों आदि को मनोनीत करने का सर्वसम्मति से उन्हें अधिकार दिया गया। इससे पूर्व इस अवसर पर आर्य समाज की प्रसिद्ध सन्यासिन आदरणीय मीरायति जी और आर्य समाज के सुप्रसिद्ध गायक श्री सत्यपाल जी पथिक को सभा की ओर से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही आर्य गर्ल्ज सी० सै०, स्कूल लुधियाना की उन दो कन्याओ को भी पारितोषिक दिये गये जो अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश की परीक्षा में प्रथम व तृतीय स्थान पर आई थी। पंजाब के भिन्न-भिन्न नगरों से आर्य प्रतिनिधियों ने पंजाब व जम्मू काश्मीर की वर्तमान स्थिति पर गहरी चिन्ता व्यक्त की और इस बात पर जोर दिया कि जो व्यक्ति उग्रवादियो के हाथो पीड़ित हो रहे हैं उनकी प्रत्येक प्रकार से सहायता की जाए। पंजाब की सब आर्य समाजो को यह निर्देश भी दिया गया कि उग्रवादियो के हाथो पीड़ित जो भी व्यक्ति उनके पास आए उसकी वह जिस प्रकार भी हो सके सहायता अवश्य करें। आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर पर भी विचार किया गया और कई सुझाव दिए गए जिन्हें क्रियान्वित करने के लिए एक योजना बनाई गई। निम्न प्रस्ताव पारित हुए।

प्रस्ताव न० 1

पंजाब और काश्मीर दो हमारे देश के सीमान्त प्रदेश इस समय बहुत अधिक विचलित और अशान्त क्षत्र हैं। यद्यपि भारत सरकार यहा स्थिति को सामान्य बनाने के लिए भरसक प्रयत्न कर रही है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य मे इन दो प्रान्तो मे स्थिति के सुधरने की कोई आशा नहीं। भारत सरकार की वर्तमान तुष्टिकरण नीति जो उसने उग्रवादियों और कट्टर पंथियो के प्रति अपना रखी है उसके कारण आम जनता मे ही असन्तोष पैदा हो रहा है और लोग इससे बहुत अधिक दुखी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की यह निश्चित धारणा है कि देश मे और विशेषकर पंजाब और जम्मू काश्मीर मे जो स्थिति पैदा हो गई है यह उन सब व्यक्तियो के लिए एक चुनौती है जो इस देश की स्वाधीनता, अखण्डता और एकता में अटल विश्वास करते हैं और किसी भी स्थिति मे उस पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने देना चाहते।

यह सभा इसलिए भारत सरकार से यह माग करती है कि वह स्पष्ट शब्दों मे यह घोषणा करे कि चाहे कुछ हो जाए वह किसी भी स्थिति मे भारत की एकता अखण्डता स्वाधीनता व प्रभुसत्ता के विषय मे किसी से कोई समझौता नहीं करेगी। पंजाब की तरह जम्मू काश्मीर भी भारत के अटूट अंग है और किसी भी स्थिति मे उन्हे भारत से कटने की अनुमति नही दी जा सकती। देश की स्वाधीनता, एकता, और प्रभुसत्ता की सुरक्षा के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भारत सरकार को हर समय अपना पूरा सहयोग देती रहेगी। और इन उददेश्यो व आदर्शों की पूर्ति के लिए उसे जो भी बड़े से बड़ा बलिदान करना पड़गा उसके लिए भी वह सदा तत्पर रहेगी। यह सभा अपने आधीन सब आर्य समाजो को यह आदेश देती है कि वह इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार को अपना पूरा सहयोग देने के लिए सदा ही तैयार रहे और अपना योगदान प्रत्येक रूप मे सदा देती रहे।

प्रस्ताव न० 2

पंजाब और काश्मीर को पिछले कुछ वर्षों मे कई प्रकार के शारीरिक व मानसिक आघात पहुचे हैं। हजारो व्यक्ति गोली का निशाना बना दिए गये है। बहुत बड़ी संख्या उन परिवारो की है जिन की कमाई करने वाले सदा के लिए उनसे छीन लिऐ गए हैं। कई महिलाए विधवा हो गई हैं और कई बच्चे यतीम हो गए। इसलिए यह भारत सरकार का कर्तव्य है कि वह उन सब परिवारो और दूसरे उन व्यक्तिओ की पूरी तरह सहायता करे जो इस धर्मान्धता के शिकार हुए। भारत सरकार ने देहली मे 1984 के दंगापीड़ितो की जो सहायता की है उसी प्रकार की सहायता पंजाब और जम्मू काश्मीर मे उनकी भी होनी चाहिए जो इन दो प्रदेशो मे उग्रवादियो के हाथो कई प्रकार की यातनाए सह रहे हैं, जिन के निकटतम सम्बन्धी उग्रवाद के शिकार हो गए हैं। यह सब परिवार केवल इसलिए इस स्थिति मे पहुचे हैं क्योकि सरकार उनकी पूरी रक्षा नही कर सकी। यह सरकार का नैतिक व संवैधानिक कर्त्तव्य हो जाता है कि जो जो परिवार उग्रवादियो के हाथो किसी भी प्रकार पीड़ित हुए हैं। सरकार उनकी हर तरह स सहायता करे और उन्हे इस योग्य बनाए कि वह फिर से अपने पाव पर खड़े हो सकें।

प्रस्ताव स 3

पिछले कुछ वर्षों मे उग्रवादियो ने पंजाब और जम्मू काश्मीर मे हजारो निर्दोष व्यक्तियो की हत्या कर दी है। महिलाओ और बच्चो की भी हत्या की गई। यह एक ऐसी स्थिति है जिसके कारण आप प्रत्येक व्यक्ति दुखी है। जो चले गए है उन्हे तो वापिस नही लाया जा सकता परन्तु सरकार और जनता का यह कर्तव्य हो जाता है कि न केवल उन सब परिवारो की सहायता करें परन्तु साथ ही ऐसी स्थिति भी पैदा करें कि यह घटनाए फिर न हो। जो व्यक्ति चले गए हैं उनकी आत्माओ की सदगति के लिए हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और उनके परिवारो के साथ सहानुभूति व्यक्त करते हुए उन्हे विश्वास दिलाते हैं। कि इस विपत्ति मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनकी प्रत्येक प्रकार से सहायता करने के लिए सदा तत्पर रहेगी।

अन्तरंग सभा के सदस्यों की सेवा मे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक प्रथम जुलाई 1990 रविवार को प्रात 11 बजे सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशन पुरा चोक जालन्धर म होनी निश्चित हुई है। कृपया अन्तरग के सभी सदस्य समय पर पधारने का कष्ट करें। सभा कार्यालय मे यज्ञ प्रात. 10-30 बजे आरम्भ हो जाएगा।

—अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट—सभा महा मन्त्री

कश्मीर की कहानी—इतिहास की जुबानी (5)

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मैंने पिछले लेखों मे बार-बार "राज तरंगिणी" का उल्लेख किया है जिसके बारे मे कहा जाता है कि यदि किसी पुस्तक को सही अर्थों में कश्मीर का इतिहास कहा जा सकता है तो वह "राज तरंगिणी" है। कुछ योरुपीय इतिहासकारो की भी यही राय है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी एक पुस्तक मे यह ही लिखा है कि "राज तरंगिणी" ही कश्मीर का प्रमाणित इतिहास है। इसलिए यह आवश्यक है कि "राज तरंगिणी" क्या है, किसने लिखी, कब लिखी और इसमे क्या लिखा गया है। यह सक्षेप मे पाठकों के समक्ष रखू ताकि उन्हे पता चल सके कि सैकड़ो वर्ष हजारो वर्ष पहले कश्मीर का धर्म क्या था, सस्कृति क्या थी और उसके रीति रिवाज क्या थे। "राज तरंगिणी" इस दृष्टिकोण का जबरदस्त प्रतिवाद है कि कश्मीर एक मुस्लिम देश है आज कश्मीर के बहुसख्यक मुसलमान हैं तो केवल इसलिए कि उन्हें बलात् मुसलमान बनाया गया था अन्यथा वह सब पहले हिन्दू ही थे।

राज तरंगिणी कल्हण नाम के एक महा कवि ने 1148 मे सस्कृत मे लिखनी शुरू की थी और इसे 1150 मे समाप्त किया। यह 550 पृष्ठों पर आधारित है और इसमे 3440 श्लोक है। इसकी आठ तरगें अर्थात आठ अध्याय हैं जिनसे अलग अलग समय मे कश्मीर मे कौन राज्य करता था उसके बच्चो के नाम क्या थे, उसकी रानियों के क्या नाम थे, उन लोगो के रीति-रिवाज क्या थे और रहन सहन कैसा था लिखा है जो आठ तरगें हैं वे इस पुस्तक के आठ अध्याय हैं। अत पहली तरग मे लिखा है कि 38 राजाओ ने एक हजार चौदह वर्ष और 9 दिन तक कश्मीर पर शासन किया। इस तरग मे लका अर्थात सिंहलद्वीप का भी उल्लेख आता है और बौद्धो का भी। एक जगह यह भी लिखा है कि यादवो के श्रेष्ठ श्री कृष्ण ने कहा था कि कश्मीर देश पार्वती का रूप है और वहा का राजा साक्षात शिव है।" कश्मीर के राजा का नाम सुरेन्द्र कुमार भी दिया है। और उसके महल का नाम सुरेन्द्र भवन था।

दूसरी तरग मे लिखा है कि 192 वर्ष मे केवल छ राजाओं ने कश्मीर पर राज्य किया। उस समय मे ऐसे राजा भी हुए थे जो ऋषियों मुनियो की कुटिया मे जाकर उनसे अपने लिये भोजन की भिक्षा मागते थे क्योंकि उनके हाथ से मिला हुआ भोजन वह पवित्र समझते थे। यह भी लिखा है कि भिक्षा मागने की अधिक आवश्यकता नही पडती थी क्योंकि कश्मीर के पेड़ हमेशा फलों स लदे रहते थे। उन फलो मे एक फल सेब भी था। जो बहुत अधिक होता था।

तीसरी तरग मे लिखा है कि 10 राजाओ ने 530 वर्ष कश्मीर पर राज्य किया था उस समय मे भी कई लोग औरतो के पीछे भागा करते थे। इसी तरह के दो ऐसे राज पुरुषो का उल्लेख किया गया है जो एक ही स्त्री के लिए आपस मे लड पड थे और राजसी सत्ता अपने हाथ से गवा बैठे।

चौथी तरग मे दो सौ साठ वर्ष छ मास और दस दिन तक राज्य करने वाले 17 राजाओ का इतिहास वर्णित है उस समय भी कई ऐसे राजा हुए थे जो अत्यन्त विलासी थे और अपना सारा समय शराब पीकर औरतो के साथ ही गुजारा करते थे। अन्तत वह सब कुछ खो बैठे। उसी समय मे अवनित वर्मा नाम का एक राजा हुआ था जिस ने अत मे सभी विलासी राजाओ को समाप्त करके कश्मीर का शासन स्वय सम्भाल लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि आजकल भी श्रीनगर के पास अवन्तिपुर नाम के जिस शहर के खण्डहर देखने को मिलते हैं वह शायद राजा अवन्ति वर्मा के समय के ही हो?

पाचवी तरग मे उन 17 राजाओ का उल्लेख है जिन्होने 83 वर्ष और चार मास शासन किया था। उनमे सकट वर्मा और उसकी रानी सुमेधा देवी तथा उनके मन्त्री शकर वर्धन के शासनकाल का वर्णन आता है। सकट वर्मा को राज्य उत्तराधिकार मे नही मिला था। उसने तिकड़मबाजी से उस पर अधिकार किया था।

छठी तरग मे उन दस राजाओं का वर्णन है जिन्होंने 64 वर्ष 8 मास और 15 दिन कश्मीर पर शासन किया था। इस अध्याय में उस समय के कश्मीरी स्त्रियों और पुरुषो के सौन्दर्य का बहुत वर्णन किया गया है और उनकी तुलना कई तरह के फूलो से की गई है।

सातवीं तरग सबसे बड़ी है उसमें एक राजा उदय राज के वश के छः राजाओं के 3 दिन कम 98 वर्ष के शासन का वर्णन है। उस समय शंकर राजा को मार कर केवल उसके सिर को उसकी प्रजा को दिखाया जाता था। लेकिन राज दरबारियों मे आपसी प्रतिद्वंदिता भी बहुत चलती रहती थी। कई बार मन्त्रियों की प्रतिद्वंदिता का शिकार राजा ही हो जाता था।

आठवीं तरग में उस समय के राजाओं की आपसी लडाई का उल्लेख है और अन्त में जिसने कश्मीर की सत्ता सम्भाली थी उसका नाम जयसिंह था। उससे पहले एक राजा ने अपने बेटे का नाम अभिमन्यु भी रखा था। एक राजा का नाम युधिष्ठर भी था और उसे राज तिलक भी लगाया गया था।

पाठकगण। मैंने राज तरंगिणी की सक्षेप मे कहानी आपके सामने रख दी है। जो कुछ उसमें लिखा गया है वह कहा तक सही है मेरे लिए कुछ कहना कठिन है। हा इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि एक हजार वर्ष पहले भी कश्मीर एक हिन्दू देश था। यहा हिन्दू धर्म और हिन्दू सस्कृति का बोलबाला था। इस्लाम तो बहुत पीछे आया है और वह ही तलवार के बल पर आज के हालात पहले से बिल्कुल भिन्न हैं। एक हिन्दू देश में मुसलमान बहुमत मे हैं। इसलिए यहा हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो को रहने का अधिकार है उसी तरह जिस तरह शेष देश मे हिन्दू और मुसलमान मिल कर रहते हैं। पाकिस्तान अथवा पाकिस्तान के समर्थको के लिए अब यहा कोई जगह नहीं है।

और अन्त मे अपनी इस लेखमाला को पंडित जवाहर लाल नेहरू के उन शब्दो के साथ समाप्त करता हू जो उन्होंने कश्मीर के बारे मे कहे थे।

"कश्मीर हजारो वर्षो से भारत का ही अंग रहा है। अंग्रेज के आने से सैकडो वर्ष पहले भी यह भारत का ही था। यह भारतीय सस्कृति का सबसे बड़ा केन्द्र था और उसी तरह भारत का एक भाग था जिस तरह कलकत्ता, बम्बई और मद्रास।"

—वीरेन्द्र

मंत्रगीत

ले०—श्री देव नारायण भारद्वाज जी

भूर्भुव स्वः। सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम् सुवीरो वीरैः
सुपोषः पोषैः। नर्य प्रजां मे पाहि। शंस्य पशून्मे पाहि
अथर्य पितुं मे पाहि॥ यजु० 3/37

तुमने ससार रचाया, दो नाथ हमे रचनायें।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अश हमे मिल जाए॥

भू ईश सदा ही वर्तमान,
भुव सृष्टि निर्माण वान,
स्व रूप ईश सुखदाता है,
हे नाथ हमे दो सुख महान।

जो प्रजा कुटुम्ब बनाया, कुछ पुत्र प्रजा मिल जाए।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अश हमे मिल जाए॥

प्रभु तुमने सुवीर दल पाया,
उनको हमने भी अपनाया,
हमको करो युद्ध मे विजयी,
होवे योद्धाओं की साया।

तुम वीर वश विकसाया, वे बली वीर हम पायें।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अश हमें मिल जाए॥

हे नर्य नरों के हितकारी,
कर दो रक्षित प्रजा हमारी,
स्वीकार वन्दना कर लो ये
अभ्यादिक पशु करो सुखारी।

जो अन्न अर्थ छितराया, वह अन्न हमे मिल जाए।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अश हमें मिल जाए।

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का निर्वाचन

अपनी परम्पराओं के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक वर्ष के पश्चात् विधिवत अपना वार्षिक चुनाव 24 जून को कर लिया। कई प्रान्तीय सभाओं का चुनाव तीन वर्ष के पश्चात् होता है। इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है कि चुनाव एक वर्ष के पश्चात् हो या तीन वर्ष के पश्चात् हो? एक वर्ष के पश्चात् चुनाव की एक कठिनाई यह होती है कि अधिकारी अपना ध्यान सभा की रचनात्मक कार्यवाही की ओर नहीं लगा सकते। चुनाव के पांच-सात माह पश्चात् उन्हें अगले चुनाव की तैयारी करनी पड़ती है। इस प्रकार वार्षिक चुनाव द्वारा पैदा की गई समस्याओं की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। जो चुनाव इस बार हुआ है उसमें कुछ सदस्यों ने अपना प्रत्याशी खड़ा करने का फैसला किया था और प्रधान के चुनाव में श्री राजपाल जी मित्तल एडवोकेट का नाम पेश किया गया था। श्री राजपाल जी मित्तल एक सुशिक्षित और सभ्य व्यक्ति हैं परन्तु आर्य समाज में आए उन्हें अभी अधिक समय नहीं हुआ। इसलिए प्रतिनिधि महानुभाव उनके नाम पर विचार करने को तैयार नहीं हुए और 140 प्रतिनिधियों में से केवल 10 ने उनके पक्ष मे अपना मत दिया। इसके अतिरिक्त जिस ढग से इस बार विपक्षी सदस्यों ने चुनाव लड़ने का प्रयास किया वह अत्यन्त सोचनीय था। उन व्यक्तियों के नाम पर अपील की गई जो किसी आर्य समाज के प्रतिनिधि न थे और उनमें से कई ऐसे भी थे जिन्हें यह पता भी न था कि उनका नाम इसमें लिया जा रहा है। आर्य समाज एक लोकतान्त्रिक संस्था है। इसमें किसी का विरोध करने से कोई किसी को रोक नहीं सकता। प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है कि वह किसे वोट दे या किसे न दे। परन्तु जिस निम्न और अनैतिक स्तर पर इस बार कुछ व्यक्तियों ने अपना चुनाव अभियान चलाया। उसकी प्रतिक्रिया सदस्यों पर इतनी अधिक सोचनीय थी कि 140 में से एक सौ तीस एक तरफ और केवल 10 ने दूसरी तरफ अपना मत दिया। आगे के लिए भी जो महानुभाव अपने प्रत्याशी खड़ा करना चाहें उन्हें चुनाव व्यवस्था के इस पक्ष को अवश्य सामने रख लेना चाहिए।

मैं प्रतिनिधि महानुभावों का आभारी हूं कि उन्होंने एक बार फिर मुझको सभा का प्रधान निर्वाचित कर दिया है। मैंने दो-तीन बार अपनी अन्तरंग सभा में कहा कि अब किसी और व्यक्ति को आगे आकर यह दायित्व सम्भालना चाहिए। किसी कारण प्रतिनिधि महानुभाव इसके लिए तैयार नहीं हुए। परन्तु मैं आज फिर यह कहना चाहता हूं कि अब समय आ गया है जबकि और कोई व्यक्ति भी आगे आए और इसके दायित्व को सम्भाले। कोई भी संस्था जब एक ही व्यक्ति पर निर्भर रहती है तो अन्त में उसका परिणाम अच्छा नहीं रहता। इसलिए आर्य समाज में अब ऐसे व्यक्ति पैदा करने चाहिएं जो इसे चलाने का दायित्व सम्भाल सकें। जो इसके पुराने कार्यकर्ता हैं उनका सहयोग लेकर अब नए कार्यकर्ता आगे आएं और आर्य समाज के चलाने का दायित्व अपने ऊपर लें।

सभा की अन्तरंग सभा और सभा के दूसरे अधिकारियों को मनोनीत करने का भी मुझे अधिकार दिया गया था। जो अधिकारी मैंने मनोनीत किए हैं, वह पाठकगण इसी अंक में पढ़ लेंगे। इस बात की मुझे हार्दिक प्रसन्नता व सन्तोष है कि जो नए अधिकारी बनाए गए हैं वह सब इस योग्य हैं जो सभा के कार्य को नई दिशा दे सकें। इस वर्ष में हमने तीन-चार बातों की ओर विशेष ध्यान देना है। सबसे पहली बात है आर्य समाज का संगठन अर्थात् जहां-जहां आर्य समाजों में विवाद चल रहे हैं उन्हें हल करके एक सगठन पैदा करना। दूसरी बात है जिन जिन आर्य समाजों में शिथिलता आ गई है उन्हें सक्रिय करना। तीसरी बात है प्रत्येक जिला में जिला सभाओं की स्थापना करना और जो जिला सभाएं बनी हुई हैं उन्हें सक्रिय करना। चौथी बात, सबसे आवश्यक कार्य युवक संगठन का है। आर्य वीर दल और युवक सभाएं सब आर्य समाजों में होनी चाहिएं ताकि युवकों को आर्य समाज के बारे में जानकारी देकर उन्हें समाज की सेवा के कार्य के लिए तैयार किया जाए। यह दायित्व मैंने इस बार उन युवकों पर डाला है जो इसमें विशेष रुचि रखते हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि वह अपने दायित्व को पूरा करके आर्य समाज में एक नए जीवन का संचार करेंगे।

आर्य समाज का सबसे बड़ा काम वेद प्रचार का है मुझे यह स्वीकार करने मे कोई संकोच नहीं कि इस क्षेत्र में पंजाब में हम बहुत पिछड़ गए हैं। पजाब की परिस्थितियां भी कुछ ऐसी बन गई हैं कि हमें अच्छे उपदेशक और प्रचारक नहीं मिल रहे। फिर भी हमे अपना प्रयास इस दिशा में जारी रखना चाहिए और अब तो यह सोचने का समय भी आ गया है कि हम अपनी प्रचार प्रणाली में क्या परिवर्तन कर सकते हैं ताकि बड़े-बड़े उपदेशकों के बिना भी हम प्रचार के कार्य को जारी रख सकें। वेद प्रचार के कार्य को पजाब में तीव्र करना अति-आवश्यक है और वह किस प्रकार से किया जाए इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है। इस वर्ष में इस ओर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

समस्याएं तो हमारे सामने और भी कई हैं। पिछला वर्ष निराशा जनक रहा है। हमें प्रचार की ओर जो ध्यान देना चाहिए था वह हम नहीं दे सकें। जिन महानुभावों पर नया दायित्व डाला गया है वह यह नहीं कह सकेंगे कि उन्हें काम करने का अवसर नही मिला। आगामी एक डेढ़ मास में सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों की एक गोष्ठी करने का विचार है। वहां केवल इस बात पर विचार किया जाएगा कि पजाब की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का प्रचार और उसका संगठन किस प्रकार प्रभावशाली बनाया जा सकता है। यह एक ऐसी समस्या है जिस के विषय में पंजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों को बैठ कर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

इस चुनाव के साथ ही आर्य समाज के इतिहास का एक नया अध्याय प्रारम्भ हो रहा है। हम इसे क्या रूप देते हैं इसका निर्णय तो एक वर्ष के पश्चात् ही किया जा सकेगा, परन्तु मैंने सारी स्थिति आर्य जनता के सामने रख दी है इस आशा के साथ कि आर्य समाज को पंजाब में शक्तिशाली बनाने में सब आर्य भाईयों और बहनों का सहयोग हमें मिलता रहेगा। किसी भी व्यक्ति के जिसको आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य में विश्वास है के सुझाव का हम स्वागत करेंगे। वह जो भी सुझाव हमें भेजेगा हम उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे ताकि आर्य समाज को और अधिक गतिशील व सक्रिय बनाया जा सके। आशा है पंजाब की आर्य जनता हमें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगी।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) 24 जून 1990 को जालन्धर में सम्पन्न हुआ था। जिसमें श्री वीरेन्द्र जी को बहुत बड़े बहुमत से सभा प्रधान निर्वाचित किया गया था। श्री राजपाल जी मित्तल एडवोकेट को उनके विरुद्ध प्रधान पद के लिये खड़ा किया गया था। इस पर मतदान के द्वारा श्री वीरेन्द्र जी प्रधान निर्वाचित किये गये। 140 प्रतिनिधियों में से 130 ने श्री वीरेन्द्र जी के पक्ष में अपना मत दिया और केवल 10 ने श्री राजपाल मित्तल जी के पक्ष में मत दिया।

श्री वीरेन्द्र जी को यह अधिकार भी दिया गया था कि वह अन्तरंग सभा, विद्या सभा, व्यवसाय पटल, सभा के अधिकारी और दूसरी समितियों आदि के सदस्य भी मनोनीत कर दें। साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के अनुसार श्री वीरेन्द्र जी ने निम्नलिखित महानुभावों को सभा के अधिकारी, अन्तरंग सदस्य व विद्या सभा के सदस्य आदि मनोनीत किया।

सभा अधिकारी

1. श्री वीरेन्द्र जी, सभा प्रधान मासिक दैनिक प्रताप व वीर प्रताप, जालन्धर।
2. श्री हरबंस लाल जी शर्मा, वरिष्ठ उप-प्रधान अध्यक्ष व्यवसायपटल, 406 एल० माडल टाऊन जालन्धर।
3. श्री डाक्टर के० के० पसरीचा, सभा उप-प्रधान, पसरीचा हस्पताल आदर्श नगर जालन्धर।
4. श्री रणवीर जी भाटिया सभा प्रधान, लिल्ली सिलाई मशीन चक्कड़ बाज़ार लुधियाना।
5. श्रीमती कमला आर्या सभा उप-प्रधान, 350 गली सती सूदां लुधियाना।
6. श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट महामन्त्री, एक कूल रोड जालन्धर।
7. श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न सभामन्त्री (कार्यालय मन्त्री) आज़ाद सर्जीकल वर्कस भार्गव नगर जालन्धर।
8. श्री आशानन्द जी आर्य सभामन्त्री, (संगठन मन्त्री) 49/63 हरपाल नगर लुधियाना।
9. श्री मनोहर लाल जी आर्य सभामन्त्री, द्वारा आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप।
10. श्री रामनाथ जी शर्मा सभामन्त्री भण्डारी निवास मजीठा रोड अमृतसर।
11. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष एफ० 232 रेलवे कालोनी-3 जालन्धर।
12. श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ, अधिष्ठाता वेद प्रचार एन० डी० 18 विक्रमपुरा जालन्धर।
13. श्री रोशन लाल शर्मा अधिष्ठाता आर्य वीर दल (युवक सभा) द्वारा आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाज़ार लुधियाना।
14. श्री प्रिंसीपल धर्म प्रकाश जी दत्त अधिष्ठाता साहित्य विभाग, आदर्श बाल विद्यालय बंगा रोड नवांशहर।
15. श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी शर्मा रजिस्ट्रार, दुआबा कालेज जालन्धर।

अन्तरंग सदस्य

16. श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, दीवान वाटिका भारत नगर चौक दुरगाय के पीछे लुधियाना।
17. श्री के० के० पुरी मैसर्ज देवी दास गोपाल कृष्ण आयल मिल्ज गांधी रोड मोगा।
18. श्री पंडित देवेन्द्र कुमार जी, श्रीराम देवेन्द्र कुमार पुरानी दाना मंडी नवांशहर।
19. श्री कृष्ण कुमार जी मैसर्ज, इन्द्र सिंह हजारा सिंह टी मर्चेन्ट भटिण्डा।
20. श्री विजय कुमार अग्रवाल, महाशक्ति मशीनरी मेकर जी०टी० रोड बटाला।
21. श्री ओम प्रकाश जी इन्दु, हिन्द फार्मेसी मोमलपुरा रोड फगवाड़ा।
22. श्री वेदप्रकाश जी मेहता, प्लाट नम्बर 19 अन्दर जगदीश आश्रम पटियाला।
23. श्री ललित बजाज, मुहल्ला सोढियां फिरोजपुर।
24. श्री इन्द्र राज जी शर्मा कोठी नम्बर 56 सैक्टर 21 चण्डीगढ़।
25. श्री जगदीशराज जी बांसल, बांसल टी कम्पनी मण्डी मोगा।
26. श्री महेन्द्र पाल जी शर्मा बी० II/932 माली गंज लुधियाना।
27. श्री राम लुभाया जी नन्दा, नन्दा जनरल स्टोर मेन बाज़ार बस्ती गुजां जालन्धर।
28. श्री डाक्टर ज्ञान चन्द जी, डब्ल्यू क्यू 196 बस्ती दानिशमंदा जालन्धर।
29. श्रीमती कृष्णा कोछड़, 634 ईस्ट दुर्गा नकपुरा जालन्धर।
30. श्री नरेन्द्र चस्वा बी-1/503 पार्क लेन डिस्ट्रिक्ट क्रिमिनल के सामने सिविल लाईन लुधियाना।
31. श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाज़ार लुधियाना।
32. श्री ओम प्रकाश जी पासी बी-11/927 माली गंज लुधियाना।
33. श्री अमृत लाल जी बजाज ई० जी० 931 मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर।
34. श्री कर्मचन्द जी माली मकान नम्बर 155 बड़ा जालन्धर।
35. श्री द्वारिका नाथ जी, द्वारा आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी।
36. श्री वेद प्रकाश जी सरीन खालियां मुहल्ला नवांशहर दुआबा।
37. श्री प्रिंसीपल सत्यवर्त राज जी, आर्य सी० सै० स्कूल दीनानगर (गुरदासपुर)।
38. श्री विजय कुमार जी, द्वारा आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना।
39. श्री कमल किशोर जी, बी० सी० 6/4 भार्गव नगर जालन्धर।
40. श्री मनोहर लाल जी आर्य मकान न० 1099 सामने गवर्नमैंट गर्ल्ज़ हाई स्कूल भार्गव नगर जालन्धर।
41. श्रीमती सुशीला भवत 71 न्यू जवाहर नगर जालन्धर।

विशेष आमंत्रित

1. श्री के० के० सैगर निवास नवांशहर दुआबा।
2. श्री बाल मुकन्द जी डब्ल्यू एम 66 बस्ती गुजां जालन्धर
3. श्री राम प्रसाद जी सरगम प्रेम गली रेसी रोड लुधियाना।
4. श्री ओम प्रकाश मंगला मकान नम्बर 1631 गली नम्बर 3 नई बस्ती भटिण्डा।
5. श्री प्रिंसीपल बलभद्र कुमार मल्होत्रा श्री राम आर्य सी० सै० स्कूल पटियाला।
6. श्री प्रिंसीपल जनक राज महाजन 100 पूर्ण रोड जालन्धर छावनी।
7. श्री राम रक्खा मल जी द्वारा आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर।
8. श्री चानन राम जी गम्भीर द्वारा आर्य समाज बैंक फील्डगन्ज लुधियाना।
9. श्री सुदेश कुमार जी, मन्त्री आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर।
10. श्रीमती कमला आर्या, ई० क्यू 18 पक्का बाग जालन्धर।
11. श्रीमती कमला भाटिया मुख्याध्यापिका आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भटिण्डा।
12. श्री धर्म प्रकाश सब्बर द्वारा आर्य समाज रायकोट (लुधियाना)।
13. श्री यशपाल भाटिया, भाटिया हस्पताल रघुनाथ मन्दिर के समीप सदर बाज़ार करनाल।
14. श्री कैलाश चन्द भारद्वाज मुहल्ला खालियां सराफां बाज़ार फगवाड़ा
15. श्री श्री देवबन्धु जी चोपड़ा आर्य सदन न्यू माडल टाऊन फगवाड़ा।
16. श्री अमृत लाल गुलाटी द्वारा आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा।
17. श्री बूटाराम जी आर्य 5/8 गांधी नगर नम्बर I जालन्धर।
18. श्री ओम प्रकाश महेन्द्र वैदिक मिशनरी मोरिण्डा (रोपड़)।
19. श्री डाक्टर ओम प्रकाश जी प्रधान आर्य समाज नवांकोट अमृतसर।
20. श्री राज कुमार जी गर्ग मैसर्ज देवी दयाल शिव कुमार कच्चा आढ़ती बढ़िया बाज़ार बरनाला।
21. श्री अमरनाथ जी आर्य, मन्त्री समाज बड़ा जालन्धर।
22. श्री भगत लाल चन्द जी न्यूमसेवार्ड बस्ती शेख जालन्धर।

(पृष्ठ 4 का शेष)

आर्य विद्या सभा के सदस्य

1. श्री वीरेन्द्र जी सभाप्रधान ।
2. श्री हरवंस लाल जी शर्मा वरिष्ठ उप-प्रधान ।
3. श्री डाक्टर के० के० पसरीचा सभा उपप्रधान ।
4. रणवीर जी भाटिया सभा उप-प्रधान ।
5. श्रीमती कमला आर्या सभा उप-प्रधान
6. श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट सभा महामन्त्री ।
7. श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न सभामन्त्री ।
8. श्री आशानन्द जी आर्य सभामन्त्री ।
9. श्री मनोहर लाल जी आर्य सभामन्त्री ।
10. श्री रामनाथ जी शर्मा सभामन्त्री ।
11. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष ।
12. श्री सेठ योगेन्द्र पाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार ।
13. श्री रोशन लाल जी शर्मा अधिष्ठाता आर्य वीर दल ।
14. श्री प्रिंसीपल धर्म प्रकाश दत्त अधिष्ठाता साहित्य विभाग ।
15. श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी शर्मा रजिस्ट्रार ।
16. श्री मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार ।
17. श्री आचार्य जी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार ।
18. श्री आचार्य जी कन्या गुरुकुल देहरादून ।
19. श्री प्रबन्धक जी कन्या गुरुकुल देहरादून ।
20. गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थियों में संरक्षकों की ओर से प्रतिनिधि ।
21. " " " " " "
22. कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं के संरक्षकों की ओर से प्रतिनिधि
23. श्री विनय कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों के प्रतिनिधि ।
24. गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापकों के प्रतिनिधि ।
25. श्रीमती मञ्जू मेहता कन्या गुरुकुल देहरादून के स्नातकों की प्रतिनिधि
26. कन्या गुरुकुल देहरादून की अध्यापिकाओं की प्रतिनिधि ।

सभा द्वारा मनोनीत सदस्य

27. श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट दिल्ली ।
28. श्री कमभद्र कुमार हूजा जयपुर ।
29. श्री कपिलदेव शास्त्री संसद् सदस्य हरयाण ।
30. श्री कैलाश नाथ सिंह संसद् सदस्य दिल्ली ।
31. श्री पंडित देवी राम जी तिगांव-गुडगांव ।
32.
33. भारत सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य ।
34. व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी ।
35. अध्यक्ष व्यवसायपटल ।

व्यवसाय पटल के सदस्य

1. श्री पंडित हरवंस लाल जी शर्मा अध्यक्ष ।
2. श्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी ।
3. श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा सभा महामन्त्री ।
4. महाशय धर्मपाल जी व्यवस्थापक गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ।
5. श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक आचार्य गुरुकुल कांगड़ी ।
6. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष ।
7. श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ जालन्धर ।
8. श्री ओम प्रकाश जी इन्दु फगवाड़ा ।
9. श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना ।
10. श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न जालन्धर ।
11. श्री वैद्य बैणी प्रसाद जी लुधियाना ।
12. श्री डाक्टर आनन्द प्रकाश जी शर्मा कैमिस्ट ।

धर्मान्तरण तथा गऊ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए

रांची कामकोटि पीठम् के पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी जरेन्द्र सरस्वती जी महाराज, गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ जी (संसद सदस्य), विश्व हिन्दू परिषद् के कार्याकारी अध्यक्ष श्री विष्णुहरि जी डालमिया, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, बोध गया हुमाबोधि मन्दिर के महन्त ज्ञानजगत जी, इन्टर नेशनल सिख ब्रदरहुड के अध्यक्ष बख्शी जगदेव सिंह जी तथा जैन मुनि गुलाब चन्द जी निर्मोही का संयुक्त वक्तव्य ।

नेपाल के मुसलमानों तथा ईसाईयों की ओर से लगातार इस बात के जो प्रयत्न हो रहे हैं कि वह देश हिन्दू अधिराज्य न रहे, उस सम्बन्ध में प्रकाशित हुए समाचारों से भारत के हिन्दुओं को बहुत क्षोभ हुआ है ।

नेपाल ने कभी भी किसी धर्म के अनुयायियों के प्रति कोई भेदभाव नहीं बरता है । यद्यपि नेपाल हिन्दू अधिराज्य रहा है, इसमें रहने वाले ईसाईयों, मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा-पाठ करने की पूरी स्वतन्त्रता रही है ।

संसार में कई देश हैं जो इस्लामी राष्ट्र हैं या जहां उनके राष्ट्र का धर्म इस्लाम है । उनमें ऐसे अनेक देश हैं, जिनमें हिन्दुओं को मन्दिर बनाने, धार्मिक साहित्य बाहर से मंगवाने, धार्मिक प्रवचन करने तथा सार्वजनिक स्थानों पर या घरों के अन्दर भी अन्य धार्मिक गतिविधियां करने की अनुमति नहीं है । कई मुस्लिम देशों में हिन्दू मृतकों के शवों का दाह संस्कार करने नहीं दिया जाता । नेपाल के मुसलमानों को चाहिए कि नेपाल में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की मांग करने से पहले वे मुस्लिम देशों में हिन्दुओं के प्रति होने वाले भेद को रोक सके ।

संसार भर के करोड़ों हिन्दुओं के लिए नेपाल एक अनुपम राष्ट्र है । समस्त हिन्दू इस बात पर गर्व करते हैं कि संसार में कम से कम एक ऐसा राष्ट्र है जो संविधान के अनुसार हिन्दू अधिराज्य है । यदि नेपाल ने स्वयं को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करना पसन्द किया तो वह अपनी वर्तमान प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति खो बैठेगा और इसके बदले उसे कुछ प्राप्त नहीं होगा ।

नेपाल के तथा बाहर के देशों के मुस्लिम तथा ईसाई संगठन नेपाल पर इस बात का दबाव डाल रहे हैं कि वहां धर्मान्तरण पर लगी रोक हटा दी जाए । यह रोक नेपाल में चिर काल से चली आ रही है, इसके होने पर भी ईसाई लोग अपनी जनसंख्या को जो सन् 1950 में 10 हजार के लगभग थी अब बढ़ाकर 40000 से अधिक कर चुके हैं । यदि धर्मान्तरण पर लगी वर्तमान रोक हटा दी गई तब वे लोग कहर ढा देंगे ।

नेपाल में मुसलमानों की संख्या 1950 के कुल जनसंख्या का लगभग 1 प्रतिशत थी, अब वह 4 प्रतिशत है । यह वृद्धि बाहर से बड़े पैमाने पर हुई घुसपैठ के कारण विशेषत: बंगला देश से आए बिहारी मुसलमानों के कारण हुई है ।

यह सर्व विदित है कि ईसाई मिशनरियां गरीब तथा भोली-भाली अनपढ़ जनता को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उनका धर्मान्तरण करने का प्रयत्न करती हैं । भारत के जिन भागों में विशाल पैमाने पर धर्मान्तरण हुए हैं, वहां कठिन परिस्थितियां पैदा हुई हैं जो देश की अखण्डता के लिए खतरा बन रही हैं । यदि नेपाल में मिशनरियों को धर्मान्तरण की खुली छूट दी गई तो अन्ततोगत्वा नेपाल को भी भारत जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा ।

गौहत्या पर प्रतिबन्ध नेपालियों के लिए धर्म सिद्धान्त की बात रही है । कृषि प्रधान देशों मे गऊ का महत्त्वपूर्ण स्थान है । हिन्दू गऊ का आदर धार्मिक आधार पर भी करते हैं । आशा है कि इस सम्बन्ध में नेपाल के संविधान मे इस समय जो व्यवस्था है, आगे उसे कायम रखा जाएगा ।

यदि नेपाल ने उस देश का अहित चाहने वाले तत्त्वो के प्रयासों का दृढ़ता से तथा साहसपूर्वक सामना किया तो भारत तथा अन्य देशो के हिन्दू नेपाल का एक जुट होकर भरपूर साथ देंगे । नेपाल देश अपने सभी लोगों के साथ, उनकी जाति या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव किए बिना, न्यायोचित अच्छा व्यवहार करता रहे, किन्तु उसे किसी वर्ग विशेष को अनुचित रूप से तुष्ट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए ।

भारत के हिन्दू संगठन नेपाल से आग्रह करते हैं कि जनता की इच्छाओं के अनुसार वहां जिस प्रकार का भी संविधान बने, नेपाल को "हिन्दू अधिराज्य" बने रहना चाहिए तथा उसमें धर्मान्तरण तथा गऊ वध की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध जारी रहना चाहिए ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी प्रवेश सूचना

सत्र–1990-91

निम्नांकित पाठ्यक्रमों में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश हेतु निर्धारित फार्म पर प्रार्थना पत्र आमंत्रित किये जाते हैं

क्रम सं० पाठ्यक्रम	अवधि	प्रवेश योग्यता
1—विद्याविनोद 10+2, (इण्टर)	2 वर्ष	संस्कृत तथा अंग्रेजी सहित मैट्रिक या समकक्ष अंग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा, विद्याधिकारी (गु० का० वि० वि०) विशारद (पंजाब) विद्यारत्न, प्राज्ञ) महर्षि दयानन्द वि० वि० रोहतक ।
2—अलंकार (बी० ए०) वेदालंकार/विद्यालंकार	3 वर्ष	संस्कृत तथा अंग्रेजी सहित इण्टर या समकक्ष अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद (गु० का० वि० वि०) विशारद (पंजाब) रोहतक ।
3—बी० एस० सी० (गणित, बायो० तथा कम्प्यूटर ग्रुप)	3 वर्ष	इंटरमिडिएट विज्ञान सहित अथवा उसके समकक्ष परीक्षा (गणित तथा बायो० ग्रुप के लिए द्वितीय श्रेणी तथा कम्प्यूटर ग्रुप के लिए प्रथम श्रेणी)
4—एम० ए० वेद, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, हिन्दी, अंग्रेजी मनोविज्ञान गणित, दर्शन	2 वर्ष	त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, बी० एस०-सी०, बी० ए०, बी० काम०, अलंकार, विद्याभास्कर, शास्त्री, आचार्य, साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
5.—एम० एस-सी (माइक्रोबायोलोजी, गणित तथा मनोविज्ञान)	2 वर्ष	त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बी० एस-सी० (बायो० ग्रुप) न्यूनतम 50% प्राप्तांक बी० एस०-सी० (गणित ग्रुप) द्वितीय श्रेणी तथा मनोविज्ञान के लिए बी० एस-सी०
6—पी-एच० डी० वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, प्राचीन, भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, अंग्रेजी मनोविज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान, तथा जीव विज्ञान ।	4 वर्ष	सम्बन्धित विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में 55% अंक 50% से अधिक परन्तु से न्यून प्राप्तांकों पर दक्षता परीक्षा 55% देनी होगी । संस्कृत एवं अंग्रेजी का हाई स्कूल स्तर का ज्ञान आवश्यक ।
7—वैदिक यज्ञ विज्ञान (कर्म-काण्ड डिप्लोमा)	1 वर्ष	अलंकार, शास्त्री, बी० ए० अथवा समकक्ष परीक्षा
8—स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कार्मशियल मैथड्स आफ कैमिकल एनैलिसिस)	1 वर्ष	बी० एस-सी० (रसायन) 50% प्राप्तांक (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत)
9—स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कम्प्यूटर साईंस एण्ड एप्लिकेशंस)	1 वर्ष	एम० ए० एम० एस-सी०/बी०एस०ई० 55% प्राप्तांक स्नातक स्तर पर गणित अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ा हो तथा हाई स्कूल से स्नातक तक न्यूनतम द्वितीय श्रेणी प्राप्त की हो ।
10—योग प्रमाण-पत्र	1 वर्ष	इण्टरमिडिएट, विद्याविनोद या समकक्ष
11—अंग्रेजी में दक्षता दक्षता प्रमाण-पत्र, पाठ्क्रम	3 मास	इण्टरमिडिएट (अंग्रेजी) स्तर की लिखित परीक्षा के आधार पर ।
12—संस्कृत "प्रवेश" प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	1 वर्ष	हाई स्कूल अथवा समकक्ष परीक्षा ।
13—संस्कृत "प्रवीण" प्रमाण पत्र-पाठ्यक्रम	1 वर्ष	हाई स्कूल (संस्कृत) अथवा समकक्ष परीक्षा ।

1. सामान्य सूचना—

1—यूनियर रिसर्च फैलो के लिए जिन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण की है, अध्येतावृत्ति अनुदान आयोग के नियमानुसार दी जायेगी ।

2—विद्याविनोद तथा अलंकार पाठ्यक्रमों में निःशुल्क शिक्षा तथा प्रत्येक छात्र को 60 रु० मासिक छात्रवृत्ति । एम० ए० (वैदिक साहित्य) में सभी छात्रों को 100 रु० मासिक तथा एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) के छात्रों को 40 रु० मासिक योग्यता छात्रवृत्ति दी जायेगी ।

3—अलंकार पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी छात्राएं प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय 47 सेवक आश्रम रोड, देहरादून (द्वितीय परिसर गुरुकुल कांगड़ी वि० वि०) से सम्पर्क करें ।

4—सैनिक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संचालित स्थानीय शिक्षा संस्थाओं के शिक्षक तथा मान्यता प्राप्त गुरुकुलों के स्थायी शिक्षक व्यक्तिगत रूप से एम० ए० तथा एम० एस-सी० (गणित) परीक्षा में बैठ सकते हैं ।

5—महिलाएं व्यक्तिगत उम्मीदवार के रूप में एम० ए० (मनोविज्ञान) को छोड़ कर सभी विषय एम० एस-सी० केवल गणित तथा (पी० एच-डी०) वनस्पति, जीव विज्ञान तथा मनोविज्ञान को छोड़कर अन्य विषयों के लिए आवेदन कर सकती हैं । महिलाओं के लिए किसी पाठ्यक्रम में नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है ।

6—एम० ए० में प्रवेशार्थी छात्र/छात्राओं को जिन्होंने हाई स्कूल पर अंग्रेजी का अध्ययन नहीं किया, उन्हें अंग्रेजी प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना आवश्य होगा ।

7—एन० सी० सी०, एन० एस० एस० तथा खेल/क्रिया की समुचित व्यवस्था है ।

8—अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिए भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण ।

2. प्रवेश प्रक्रिया—

1—पाठ्यक्रम संख्या 3 तथा 8 में प्रवेश, योग्यता क्रम से किए जायेंगे पाठ्यक्रम क्रम संख्या 9 में प्रवेश योग्यता क्रम तथा प्रवेश परीक्षा के आधार पर होंगे । इन पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थियों का साक्षात्कार भी लिया जायेगा ।

2—पी-एच० डी० के अतिरिक्त अन्य पाठ्क्रमों में प्रवेश हेतु विवरण पत्रिका तथा संक्षिप्त पाठ्यक्रम एवं आवेदन पत्र 10 रु० नकद देकर अथवा 15 रु० बैंक ड्राफ्ट (कुल सचिव के पक्ष में भेज कर आचार्य, वेद/कला महाविद्यालय) कला विषयों के लिये तथा प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय) विज्ञान विषयों के लिये) अथवा कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं । पी-एच० डी० में पंजीकरण हेतु प्रवेश फार्म तथा नियमावली उपरोक्त प्रकार धन राशि भेजकर कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं ।

3. आवेदन पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि—

20 जुलाई 1990

पी-एच० डी०—30 सितम्बर तथा 31 दिसम्बर 1990

डा० वीरेन्द्र अरोड़ा—कुलसचिव

शिरोमणि सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य केन्द्रीय शिरोमणि सभा फिरोजपुर का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) आर्य अनाथालय में सम्पन्न हुआ । निम्न अधिकारी चुने गए ।

संरक्षक—सर्व श्री प्रि० पी० डी० चौधरी, श्री द्वारका नाथ वर्मा, श्री मोहन लाल मल्होत्रा ।

प्रधान—श्री सत्यपाल शर्मा, आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर शहर ।

मन्त्री—श्री देव राज दत्ता आर्य समाज जी०टी० रोड फिरोजपुर छावनी ।

उपमन्त्री—श्री ललित बजाज, आर्य समाज राम्री का तालाब फिरोजपुर शहर ।

कोषाध्यक्ष—श्री मनोज कुमार आर्य समाज जी० टी० रोड फिरोजपुर छावनी ।

निर्णय—1. सभी सदस्यों ने सर्व सम्मति से यह निर्णय किया कि आश्रम की सहायतार्थ समस्त समाजें (आश्रम की रसीद बुकें लेकर) अधिकाधिक धन राशि संग्रह करने का प्रयत्न करें ।

2. सभी समाजों के प्रधान और मन्त्री तथा चुने हुए दो सदस्य सभा की कार्यकारिणी के सदस्य होंगे ।

3. अगली 'शिरोमणि' सभा की बैठक अगस्त की 12 तारीख को आर्य समाज राम्री का तालाब फिरोजपुर शहर में होगी ।

—देवराज दत्त मन्त्री

आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग (लुधियाना : पश्चिम)

गत दिनों आर्य समाज लुधियाना (पश्चिम) का साप्ताहिक सत्संग पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के हाथी परिसर में डा० व० रा० कपूर के निवास पर संपन्न हुआ। हवन यज्ञ के बाद कृषि विश्वविद्यालय के दूसरे क्षेत्रों में कार्यरत बुद्धि जीवियों की उपस्थिति में कश्मीर की वस्तुस्थिति व उसकी पृष्ठभूमि पर आर्य मर्यादा द्वारा प्रकाशित की जा रही तथा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की लेखमाला की तीसरी किश्त श्री रूप लाल जी शर्मा द्वारा पढ़ कर सुनाई गई।

लेख माला का स्वागत करते हुए प्रिंसीपल सुरेश चन्द्र वात्स्यायन ने इस बात पर गहरा दुःख प्रकट किया कि भारत को अपनी मातृभूमि मानने वाली कश्मीरी जनता आज अपने ही देश में शरणार्थी हो गई है। संकट की इस घड़ी में बेघर हो गए कश्मीरी भाइयों के लिए आर्थिक सहायता जुटाने के साथ-साथ पाकिस्तान की घिनौनी साजिशों को नाकाम करने के लिए वैचारिक जागरण की दिशा में वीरेन्द्र जी की कलम के योगदान को उन्होंने सामयिक व ठोस बताया और कहा कि जम्मू व लद्दाख सहित कश्मीर के इतिहास पर अगर ईमानदारी से नजर डाली जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि कश्मीर घाटी में ही अपने नामों के साथ पण्डित, भाटी, बक्शी व नायक जैसे ब्राह्मण जातिवाचक शब्दों का इस्तेमाल करने वाले अधिकांश मुसलमान कौन हैं?

प्रिंसीपल सुरेश ने सुझाव दिया कि वीरेन्द्र जी की लेखमाला जैसे प्रयत्नों का अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि कश्मीरी बच्चों व अन्य भाई बन्धुओं को पाठ्य पुस्तकों व दूसरे प्रचार माध्यमों द्वारा यह बतलाया जाए कि कैसे अपने भाइयों व बाप के खून से सुर्ख होने के लिए एक आतंकवादी औरंगजेब ने तलवार के जोर पर इन लोगों को उस वक्त इस्लाम कबूल करवाया जब इनके पास कश्यप जैसे ऋषि मुनियों द्वारा दी हुई धरती व शास्त्र विद्या तो थी मगर उस विद्या की रक्षा करने वाली शस्त्र विद्या नहीं थी। श्री सुरेश ने कहा कि खेद तो इस बात का है कि स्वराज उजाले में भी भारतीयमूल से अजनबी हो गई इन संतानों को विशेष वर्ग की सत्ताओं से बाहिर आकर अपने विशाल भारतीय परिवार में रच-पच कर एकमेक हो जाने की प्रेरणा, सुविधा व व्यवस्था हम नहीं दे रहे।

समाज ने सर्व सम्मति से उक्त सुझाव को अपनाया।

धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधाएं नहीं मिलनी चाहिएं

नव बौद्धों को अनुसूचित जातियों के समान आरक्षण तथा अन्य सुविधाएं देने सम्बन्धी बिल पास होने के बाद केन्द्रीय श्रम मन्त्री श्री पासवान ने कहा कि यही सुविधाएं हिन्दुओं से ईसाई और मुसलमान बने लोगों को भी देने के लिए सरकार विचार करेगी।

इस वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा पूर्व सांसद श्री आनन्द बोध सरस्वती ने कहा देश में पहले ही साम्प्रदायिकता सीमाएं पार कर चुकी है और इस वक्तव्य से श्री पासवान ने एक नई साम्प्रदायिकता को जन्म देने की कोशिश की है। वी० पी० सिंह सरकार का यह बड़ा भारी षड्यन्त्र है जिससे बहुत जल्दी हिन्दू जाति इस देश में अल्पसंख्यक बन जाएगी। स्वामी जी ने खेद व्यक्त किया कि भारतीय जनता पार्टी भी और जिम्मेवार नेताओं द्वारा चलाई जाने वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अपना समर्थन वापस क्यों नहीं लेती?

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने वक्तव्य में कहा कि अनुसूचित जातियों को मिलने वाला आरक्षण केवल हिन्दू समाज की व्यवस्था का अंग है। इस्लाम और ईसाईयत में जात-पात की सामाजिक व्यवस्था नहीं है। जब कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म से इस्लाम या ईसाई धर्म में प्रवेश करता है तो वह अनुसूचित जाति का कैसे रह सकता है?

स्वामी जी ने सुप्रीम कोर्ट के उन फैसलों का उल्लेख किया जिनमें यह कहा गया है कि धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधाएं नहीं मिल सकतीं।

सरकार को चेतावनी देते हुए स्वामी जी ने घोषणा की कि यदि इस तरह का कोई कदम उसने उठाया तो आर्य समाज राष्ट्रव्यापी और उग्र आन्दोलन करेगी।

सच्चिदानन्द शास्त्री,
प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली।

आर्य समाज गुरदासपुर का चुनाव

आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) गुरदासपुर का वार्षिक चुनाव श्री अमरनाथ कोहली की प्रधानगी में सम्पन्न हुआ, जिस में डा० जे० डी० नन्दा सर्वसम्मती से प्रधान चुने गए। श्री नन्दा जी ने सभी आर्य सदस्यों द्वारा शेष पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्यों नियुक्त करने के लिए गए। अधिकार के अनुसार (निम्न पदाधिकारी मनोनीत किए)—

वरिष्ठ उप-प्रधान—श्री वेदप्रकाश नन्दा।

उप-प्रधान—श्री सत्यपाल नन्दा।

मन्त्री—श्री जोगिन्द्र वोहरा।

सहायक मन्त्री—श्री गुरबचन।

उप-मन्त्री—श्री विजेन्द्र कोहली।

कोषाध्यक्ष—श्री द्वारका दास,

सहायक कोषाध्यक्ष—रामप्रकाश।

लेखा निरीक्षक—श्री जगदीश अरोड़ा।

आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्री अनिल चन्द्र एडवोकेट।

सहायक अधिष्ठाता—श्री जितेन्द्र नेहरू।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री बिरसा राम।

कार्यकारिणी सदस्य—सर्वश्री सरदारी लाल शर्मा, श्री प्रेम चन्द पारस, श्री पुरुषोत्तम मोदगिल, श्री रनजीत शर्मा, श्री पतन्जल मुनी, श्री केवलअम्बा, श्री बोधराज, श्री जगमोहन भण्डारी, श्री बलवन्त राय शर्मा, श्री दीवान चन्द नन्दा।

स्व० महात्मा दयानन्द जी की स्मृति में

पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज के तपःपूत शिष्य और वैदिक साधनाश्रम तपोवन (देहरादून), वैदिक भक्ति साधनाश्रम रोहतक (हरियाणा), वेद मन्दिर चांदपुर (बिजनौर) गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (पंजाब) आदि अनेक संस्थाओं के अधिष्ठाता सन्त शिरोमणि स्व० महात्मा दयानन्द जी महाराज का जीवन आर्य समाज एवं वैदिक संस्कृति को समर्पित था। उनके त्याग, तपस्या एवं सौम्य स्वभाव से हम सबके जीवन को मार्गदर्शन, दिशा एवं प्रेरणा मिली है।

महात्मा जी की स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के लिए आर्य समाज आदर्श नगर आलम बाग लखनऊ ने एक सार्वजनिक सेवा भवन के निर्माण का संकल्प लिया है। इसके लिए भूमि का चयन किया जा रहा है और शीघ्रातिशीघ्र निर्माण-कार्य प्रारम्भ करने की योजना है। इसमे लगभग पांच लाख रुपये के व्यय का अनुमान है। आप सबके भरोसे हम इस साहस के कार्य में प्रवृत्त हो गए हैं। कृपया इस पुण्य कार्य मे आर्थिक सहयोग देकर कृतार्थ करें।

—वैद्य कुन्दन लाल आर्य

अयोध्या के श्रीराम मन्दिर के लिए आस्ट्रेलिया से 90 करोड़ वर्ष पुरानी टाइल

एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार आस्ट्रेलिया से 10 करोड़ वर्ष पुरानी स्लेट टाइल अयोध्या में श्रीराम मन्दिर के पुनर्निर्माण में लगने के लिए इस सप्ताह प्राप्त हुई है।

विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त मन्त्री (विदेश समन्वय) श्री हरिबाबू कंसल ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह शिला आस्ट्रेलिया से श्री कार्ले बेबीबेला बेल्ले ने 19 जनवरी, 1990 को समुद्री डाक से भेजी थी।

श्री बेल्ले के पत्र अनुसार यह शिला मिन्टारो की स्लेट की खान से निकाली गई है। यह खान दुनिया की सर्वोत्तम खानों में से एक समझी जाती है। खान से प्रत्येक वर्ष सीमित मात्रा में ही स्लेट निकाली जाती है। अनुमान है कि यह स्लेट 84 से 90 करोड़ वर्ष पुरानी है।

—हरि बाबू कंसल

गुरुकुल कांगडी में प्रवेश

आश्रम पद्धति से चलने वाले गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में 6 वर्ष से 10 वर्ष तक की आयु के बालकों का प्रवेश 2 जुलाई से 31 जुलाई तक होगा।

गंगा के तट पर विद्यालय का विशाल प्रांगण बालकों के खेल कूद तथा व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापकों द्वारा उत्तर प्रदेश में सरकारी स्कूल में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। शिक्षा निःशुल्क है। पूर्ण जानकारी के लिए 10 रु० का मनीआर्डर भेज कर नियमावली प्राप्त करें।

वेदराज
सहायक मुख्याधिष्ठाता,
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

गुरु पूर्णिमा 8 जुलाई रविवार को करतारपुर-चलो

आषाढ़ शुक्ला 15 गुरु पूर्णिमा सं० 2017 तदनुसार 8 जुलाई 1980 रविवार को श्री गुरु विरजानन्द जी की जन्मस्थली करतारपुर में गुरु विरजानन्द दिवस के रूप बड़ी धूम धाम से मनाया जा रहा है। यह गुरु पर्व वही पुण्य ऐतिहासिक पर्व है जिस दिन आचार्य प्रवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरुवर दण्डीविरजानन्द जी को अपनी शिक्षा पूर्ण होने पर "लौंग" रूप में दक्षिणा देते हुए अपना सर्वस्व गुरु आज्ञा में अर्पित कर दिया था। इस अवसर पर सभी गुरु भक्तों से आग्रह है कि वे अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर अपनी गुरुभक्ति का परिचय दें। कार्यक्रम इस प्रकार है 10.30 से 1.30 बजे तक "गुरु दक्षिणा" सम्मेलन अध्यक्षा—श्रीमती कमला जी आर्या, प्रमुख-वक्ता—श्री ब्र. आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता।

मुख्य अतिथि—I श्री कृष्ण लाल जी संसद सदस्य महा मन्त्री भारतीय जनता पार्टी, II श्री प्रेम कुमार 'धूमाल' संसद सदस्य मन्त्री-भारतीय जनता पार्टी, हिमाचल प्रदेश

जालन्धर नगर से करतारपुर के लिए दो स्पेशल मिनि बसों की व्यवस्था भी की गई है। जिनमें से एक बस दयानन्द मठ, दन मुहल्ला से सेठ श्री कुन्दन लाल जी की दुकान के सामने से होते हुए करतारपुर जायेगी। दूसरी बस आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर से चलकर, नारी निकेतन-नकोदर रोड के सामने से होते हुये करतारपुर जायेगी। इसके अतिरिक्त श्री रामकृपाया जी नन्दा भी अपनी आर्य समाज, शास्त्री नगर से करतारपुर आने के लिए टैंपो की व्यवस्था करते हैं। अतः इन वाहनों का लाभ उठा सकने वाले सज्जनों व देवियों को ठीक 10 बजे उक्त स्थानों पर करतारपुर आने के लिये पहुंच जाना चाहिए।

प्रधान
हरिवंशलाल शर्मा
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट,
करतारपुर (जालन्धर)

छात्रवृत्तियां

(नव सत्र : जुलाई 1990 से अप्रैल 1991)

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नए सत्र के लिए गुरुकुलों, स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसंधान संस्थानों के सुयोग्य और छात्र छात्राओं और स्नातकोत्तर परीक्षाओं के प्रतिभागियों और परशिक्षार्थियों को छात्रवृत्ति देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुकों को चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा नियम आवेदन पत्र मंगवाकर शीघ्र ही ट्रस्ट के आनरेरी सचिव के नाम पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

गत सत्र इस कार्यक्रम पर रुपये 22,000/- व्यय किए गए हैं। इस सत्र के लिए यह राशि बढ़ाकर रुपये 30,000/- कर दी गई है।

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-32 अमर कालोनी
लाजपत नगर
नई दिल्ली—110024

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। 1 म० कक्षा से लेकर विद्यालंकार (बी० ए०) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है। विद्यालंकार में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्पर्क स्थापित करें तथा कक्षा 12वीं तक आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून।

उत्तम प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, शैतिक शिक्षा, चित्रकला, साइंस, संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधार भूत विशेषताएं हैं। विस्तृत क्षेत्र के नवीन आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्याएं भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। 10 जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव 10 रुपये भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर आचार्या

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 15, आषाढ़ 24 सम्वत् 2047 तदनुसार 5/8 जुलाई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

आओ सत्संग में चलें

ले०—श्री प्रा० भद्रसेन जी, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षायें हो चुकी हैं। परिणाम की प्रतीक्षा में विद्यार्थी अपने-अपने ढंग से इन दिनों का आनन्द ले रहे हैं। अनेक साथियों ने निश्चय किया, कि प्रतिदिन प्रात: सायं रोज गार्डन (गुलाब उद्यान) में एकत्रित होंगे और यहीं मिलकर भ्रमण, व्यायाम और वार्तालाप होगा। यह क्रम जब कई दिन से चल रहा था तो एक दिन सौरभ ने सभी साथियों से कहा, कि इस बार एक नया अनुभव किया जाए और प्रति सप्ताह एक धार्मिक स्थल पर जाया जाए। वहां के कार्यक्रम को यथासम्भव समझ कर परस्पर परामर्श किया जाए, जिससे उस-उस धर्म का कुछ अनुभव हो।

इसी क्रम में एक रविवार वे सारे आर्य समाज मन्दिर पहुंचे और निश्चित समय पर वहां का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। जब यज्ञ की विधि पूर्ण हो गई और प्रसाद वितरण हो रहा था, तो सौरभ ने अपने साथियों से कहा—ये कितने सारे देवताओं को मानते हैं। देखो! प्रार्थना मन्त्रों में और फिर यज्ञ में कहीं सविता, कहीं हिरण्यगर्भ, कहीं अग्नि, सोम, इन्द्र आदि का नाम लिया है, उनसे अनेक प्रार्थनायें की हैं। कहीं उनके गुणों और कर्मों की चर्चा है और कहीं उनको आहुति दी गई है।

अभिनव—भाई! आर्य समाज जब एक परमेश्वर को ही मानता है, तो आपकी बात का उससे ताल-मेल सोचने वाली बात है?

अभिषेक—देखो! अभी सूचना दी गई है, कि अब हाल में भजन और उपदेश आदि का कार्यक्रम होगा। चलो! वहां की कारवाई भी देख लें, फिर अन्त में यह चर्चा चलायेंगे।

प्रथम प्रभु भक्ति का एक भजन हुआ, उसके बाद दस मिनट एक वेद-मन्त्र की व्याख्या एक विद्वान् ने की। संयोग से वह मन्त्र प्रार्थना मन्त्रों में से था। जिसकी व्याख्या साथ के मन्त्रों से जोड़ कर की गई थी। इसके पश्चात् पुन: एक सामूहिक भजन हुआ।

उस दिन एक प्राध्यापक का भाषण था और वे अभी उन्हीं विद्यार्थियों के पास ही बैठे हुए थे। मंच पर विराज कर प्रथम प्राध्यापक ने एक मन्त्र का गानपूर्वक उच्चारण किया और प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा—यज्ञ में और हाल में अब तक मैं जहां बैठा हुआ था, वहीं मेरे पास कुछ युवक भी बैठे हुए थे। वे नए आगन्तुक प्रतीत होते हैं हां, उनका परिचय तो हम सबको कार्यक्रम के अनुसार अपने क्रम पर मिलेगा ही। हां, वे बड़ी श्रद्धा और जिज्ञासा-भावना से सारे कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने परस्पर कुछ प्रश्न उभारे थे, संयोग से आज की वेदमन्त्र व्याख्या में भी उसी सम्बन्ध में कुछ चर्चा हुई है।

यह तो आर्य समाज की स्पष्ट मान्यता है, कि इस संसार का बनाने और चलाने वाला एकमात्र ईश्वर ही है। यही बात वेदान्त दर्शन के 'जन्मा-द्यस्य यत:' आदि सूत्रों में आती है। इस रचना से संसार के स्रष्टा, नियन्ता ईश्वर का जैसा स्वरूप स्पष्ट होता है, इसका एक सुन्दर संकेत आर्य समाज के द्वितीय नियम में मिलता है।

हां, इतना स्पष्ट हो जाने पर भी इन यज्ञ के मन्त्रों को सुनने से एक विचारशील के मन में एक विचार उभरता है, कि इन मन्त्रों में अलग-अलग अग्नि, इन्द्र आदि नाम क्यों हैं?

वस्तुत: एक जिज्ञासु की ऐसी जिज्ञासा को सामने रखकर ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'वेद की कुञ्जी' के रूप में सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास प्रारम्भ में रखा है। हो सकता है, मेरी इस बात को सुन कर कुछ सोच रहे हों, कि यह तो बात को और भी उलझाने वाली बात है। अभी पहली दुविधा स्पष्ट हुई नहीं, उसके साथ एक और नई सामने ला दी गई।

अत:, आइए! इस पर कुछ गहराई से विचार करें। यह तो सब जानते हैं, कि महर्षि सबसे अधिक वेदों पर विश्वास रखते थे और सत्यार्थ प्रकाश में स्थान-स्थान पर बड़े श्रद्धा भरे शब्दों में वेदों को जहां स्मरण किया है, वहां उनके आधार पर अपनी बात कही है। महर्षि का यह दृढ़ विश्वास है, कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। अतएव महर्षि के अनुसार वेद हमारे सर्वस्व हैं। भारतीय साहित्य, धर्म, इतिहास और परम्परा भी वेदों को अपना मूल आधार मानती है।

इतना स्पष्ट होने पर जब हम वेदों का अध्ययन करते हैं, तो हमारे सामने आता है, कि उनमें अग्नि, इन्द्र आदि को लेकर चर्चा की गई है। इतिहास वाले भी यही कहते हैं, कि वेदों में अग्नि, वायु, सूर्य आदि की स्तुति, प्रार्थना और भक्ति है।

आज यज्ञ के अवसर पर जितने मन्त्र आए हैं, उनमें भी अग्नि आदि को आधार बना कर वर्णन किया गया लगता है। वैदिक व्याख्या में इनको देवता कहा जाता है। इस प्रसंग को स्पष्ट करते हुए ही महर्षि दयानन्द ने प्रथम समुल्लास में बताया है, कि ये अग्नि आदि प्रकरण के अनुसार अनेकों की ओर संकेत करते हैं।

जैसे कि जहां संसार को बनाने, चलाने वाले की और उसके गुणों, कर्मों की बात है या उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना है, वहां वेदमन्त्रों में अग्नि आदि परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं। जहां विराट् आदि रूप में किसी के पैदा होने की बात है, वहां वह प्रकृति के तत्त्वों की बात है और जहां सुख, दु:ख, इच्छा द्वेष, ज्ञान, अर्जन तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए किए जाने वाले कर्मों की बात है, वहां जीव की चर्चा है।

यह ठीक है कि अग्नि, वायु, सूर्य, जल आदि शब्द भौतिक पदार्थों के भी नाम हैं और अनेकत्र उस रूप में उनका स्पष्ट वर्णन है। इस प्रकार वर्णन के आधार पर संसार और जीवों के व्यवहार का भी संकेत है। हां, ये अग्नि आदि शब्द सबसे अधिक परमात्मा के लिए आए हैं। जब ये परमात्मा के लिए आते हैं, तब निरुक्त, व्याकरणशास्त्र के अनुसार जिस प्रकार का अर्थ होता है, वही प्रथम समुल्लास में 108 नामों का उदाहरण रूप में निर्दिष्ट है। अत: यह प्रथम समुल्लास वेद की कुञ्जी के रूप में हमें वेद को पढ़ना सिखाता है और जब हम यह सीख लेते हैं, तो हमारे लिए वेद में प्रवेश सरल हो जाता है। जैसे द्वार से कहीं प्रदर्शनीस्थल में प्रवेश कर लेने पर वहां की वस्तुएं क्रमश: स्पष्ट होती जाती हैं। ऐसे ही वेद की यह कुंजी हाथ में आ जाने पर हम वेद के विषयों के ताले खोल कर उन विविध विषयों के भावों को सरलता से समझ सकते हैं।

यह बिल्कुल स्पष्ट बात है, कि वेद में ईश्वर को अनेक नामों से स्मरण किया है। इसका पहला अभिप्राय यही है, कि प्रकरणानुसार ईश्वर के अनेक गुण, कर्म हमारे सामने आ सकें और इसके साथ अग्नि, वायु, सूर्य जैसे भौतिक पदार्थों के नामों से और इन पदार्थों के प्रत्यक्ष स्वरूप से संसार के स्रष्टा के कर्मों और स्वरूप को पहचाना जा सके।

हां, इन अनेक नामों से हमें अनेक देवताओं की स्वतन्त्रसत्ता का भ्रम नहीं होना चाहिए। जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा है, उनको याद होगा, कि एकादश समुल्लास में एक गुरु और उसके दो चेलों द्वारा गुरु के पगों की सेवा वाला दृष्टान्त आता है। जैसे उन चेलों ने एक गुरु के पगों को अलग-अलग अपना-अपना मान कर झगड़ा किया था, वैसे ही अनेक नाम देख कर अनेक देवी-देवताओं की कल्पना और

(शेष पृष्ठ 7 पर)

यह समय अन्तर्निरीक्षण का दोष-दर्शन का नहीं

ले०—पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन, दिलशाद गार्डन दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पजाब सभा के मुख पत्र साप्ताहिक आर्य मर्यादा मे प्रकाशित उनका सार्वदेशिक सभा की परीक्षा की घडी शीर्षक जो लेख 24 सितम्बर 1989 के अक मे प्रकाशित हुआ है, उसमे उन्होने सार्वदेशिक सभा के उन निर्णयो के प्रति अपनी असहमति प्रकट की है जो गोहत्याबन्दी, शराब बन्दी और अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को लाने के सघर्ष मे किया था। अपनी इसी लेख माला मे उन्होने यह भी सकेत किया है कि देश के सामने इन समस्याओ के अतिरिक्त बहुत से अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनकी ओर सार्वदेशिक सभा को ध्यान देना चाहिए। उनका यह विचार है कि सार्वदेशिक सभा निर्णय तो कर लेती है किन्तु उनका कार्यान्वियन समुचित रीति से नहीं हो पाता। उन्होने अपने उक्त लेख मे यह पीडा भी व्यक्त की है कि हम हिन्दी को अग्रेजी के स्थान पर लागू करना चाहते हैं परन्तु आज आर्य समाज मे ही अपनी सस्थाओं मे अग्रेजी को अधिक महत्व दिया जा रहा है। हमने छूत-छात समाप्त करने के लिए अपनी ओर से पूरा जोर लगा दिया था, परन्तु फिर भी आज हरिजन अपने को हिन्दू स्वीकार नहीं करते। जहा तक हमारी सरकार का सम्बन्ध है, वह आर्य समाज को कोई महत्व नही देती।

इस सम्बन्ध मे मेरा निवेदन है कि श्री वीरेन्द्र जी जरा ठण्डे दिल से सोचें और आर्य समाज के अतीत कालीन इतिहास पर दृष्टि डाले तो उन्हे यह नि सकोच स्वीकार करना पडेगा कि आर्य समाज ने केवल अपने बल बूते पर राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिए लोकोपकारी योजनाए बनाई और उनका क्रियान्वयन भी किया था। उसने कभी भी शासन की ओर नही देखा बल्कि उसकी आलोचना ही की। शासन की नीति तो तुष्टीकरण की ही होती है। आर्य समाज सदैव मार्ग दर्शक रहा है किसी भी शासन का अनुचर नहीं। ऐसी स्थिति मे वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो से यह आशा कैसे करते हैं कि वे शासन के मुखापेक्षी हैं? उन्हें तो स्वत ही अपना मार्ग बनाना है। और मैं समझता हू कि इस दिशा में सार्वदेशिक सभा ने जब जब भी समय आया तब तब ही शासको और समाज दोनो को इस सम्बन्ध मे चेतावनी दी है।

बात यहा तक ही नहीं है। श्री वीरेन्द्र जी ने वर्ष 22 अक 4 5 और 6 के आर्य मर्यादा मे प्रकाशित अपने 'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से' शीर्षक लम्बे धारावाहिक लेख में अपनी पीडा व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से त्याग पत्र देने की माग करते हुए यह विचार भी प्रकट किया है कि 'हमारा वैदिक यतिमण्डल सार्वदेशिक सभा के कार्य भार को क्यो नहीं सम्भाल लेता? उन्होने लिखा है' उनकी स्थिति उस व्यक्ति की सी है जिसकी आखो के सामने उसका घर जल रहा हो और वह बैठा तमाशा देख रहा हो। क्या हमारे सन्यासी देख नही रहे हैं कि आर्य समाज की क्या स्थिति हो रही है? क्या इसमें उनका कोई कर्त्तव्य नही है? मैं जानता हूं कि यतिमण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अनुभव इस विषय मे बहुत कटु है, जब उनके अपने ही शिष्य ने उनके हाथ मे अपना त्याग पत्र देकर बाद मे उसकी अवहेलना कर दी तो अब सम्भवत: स्वामी जी समझते हैं कि वह किसी और से क्या कहें——। इसलिए मैं वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष व दूसरे सन्यासी महात्माओं से नम्र निवेदन करना चाहता हू कि अभी भी समय है कि वह आर्य समाज को बचावें।'

मैं आर्य समाज का एक अकिंचन सा सेवक हू। मेरे जीवन का अधिकाश समय आर्य समाज की गतिविधियो को जानने और समझने और उनसे प्रभावित होने मे ही व्यतीत हुआ है। इतने पर भी मैं किसी सस्था का सक्रिय सदस्य नही हू। न मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की राजनीति से कुछ लेना देना है। मैं तो देश और समाज के हित मे आर्य समाज के अस्तित्व और उसके द्वारा समय समय पर चलाए जाने वाले आन्दोलनो का अत्यन्त अनिवार्य और आवश्यक मानता हू। मेरी यह भी मान्यता है कि आर्य समाज ही देश मे ऐसी सस्था है, जिसकी क्रान्तिकारी विचारधारा और उसके द्वारा प्रचारित विभिन्न कार्यकलापों के कारण ही अतीत काल मे देश मे जागृति हुई और आज भी इसका सगठन देश की किसी भी सास्कृतिक सस्था के मुकाबले इक्कीस ही ठहरता है, उन्नीस नहीं। इतिहास इसका साक्षी है जब जब आर्य समाज के मच से देश की विभिन्न प्रवृत्तियो मे योग देने की पुकार हुई, तब तब आर्य समाज पीछे नही रहा।

वीरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अध्यक्ष और उनके द्वारा किए जा रहे विभिन्न लोकोपकारी कार्यों में क्या कमी अनुभव की जिसके कारण उन्हें यह सब लिखने को विवश होना पडा। मैं आर्य समाज के विभिन्न वैचारिक आन्दोलनो को दूर से बडी तटस्थ दृष्टि से देखता रहा हू और मैंने यह अनुभव किया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी भी किसी भी समय कोई ऐसा कार्य नही किया जिस पर उगली उठाई जा सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पिछले 3 4 वर्षों के विवरण मेरे इस कथन के ज्वलन्त साक्षी हैं। यदि वीरेन्द्र जी भी अपने धारावाहिक लेख को लिखने से पूर्व इन विवरणो का गम्भीरता से पारायण कर लेते तो उन्हें विदित हो जाता कि सार्वदेशिक सभा क्या कार्य कर रही है। जहा तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के त्यागपत्र का प्रश्न है, उस सम्बन्ध मे पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेश पर उन्होने तत्काल त्यागपत्र दिया था। किन्तु इस त्यागपत्र के उपरान्त स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने 23 3-88 के पत्र में स्वामी आनन्दबोध जी को यह आदेश दिया था कि आर्य समाज के हित को ध्यान रखते हुए आप अपना कार्य पूर्ववत करते रहें। स्वामी जी का उक्त पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित हुआ था, श्री वीरेन्द्र जी ने भी उसे अवश्य देखा होगा।

जहा तक सार्वदेशिक सभा के कार्यों का प्रश्न है, उनमे से कुछ का सक्षिप्त विवरण दे रहा हू इससे स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती और उनके सहयोगी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ताओ की कर्मठता और कार्य कुशलता का सम्यक परिचय मिल सके—

1—धर्मरक्षा महाभियान एक महान उपलब्धि है, आर्य समाज के इस महाभियान ने देश मे नई विचार-धारा को प्रोत्साहन दिया और अनेक मौलवी और पादरी वैदिक धर्म मे प्रविष्ट हुए।

2—देश मे इस्लामीकरण की लहर को रोकने के लिए मीनाक्षीपुरम का सम्मेलन दक्षिण भारत मे आर्य समाज के मार्ग का मुख्य द्वार ही नहीं बना अपितु इस सम्मेलन ने पूरे भारत मे हरिजनो को अपने स्वाभिमान का अहसास कराया।

3—देश मे ईसाईकरण की लहर को रोकने के लिए आर्य समाज द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में वनवासी सम्मेलनों के जो लगातार आयोजन हो रहे हैं, वह सार्वदेशिक सभा और उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कार्यों की मुख्य देन है। इन सम्मेलनो द्वारा कई हजार ईसाई शुद्ध हुए हैं।

4—कुछ वर्ष पहले पोपपाल की भारत यात्रा मे एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाने की योजना को रोका ही नहीं अपितु स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कालाहाण्डी में उसी दिन 2500 ईसाइयो की शुद्धि करके पोपपाल को उत्तर दे दिया।

5—राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रस्ताव पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रपति भवन में पांच एकड़ जमीन पर मस्जिद बनाने की अनुमति दे दी थी, इसे भी आर्य नेता रामगोपाल शाल वाले ने रुकवाया था।

6—1938-39 के आर्य सत्याग्रह आन्दोलन को सरकार द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन घोषित करा कर उसके सेनानियो को सम्मान पैंशन दिलाने का श्रेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा को ही है।

7—मदुराई मे दो लाख रुपये में भूमि क्रय करके आर्य समाज का प्रचार केन्द्र सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित करना कोई साधारण काम नही है।

8. आसाम, नागालैंड, राजस्थान और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में दयानन्द सेवाश्रमो के माध्यम से सेवा सहायता कार्य हो रहे हैं।

9.—दिल्ली मे गोशाला की स्थापना करने के लिए कई एकड़ भूमि प्राप्त करना और उसके निर्माण की योजना का कार्यान्वियन बहुत बडा कार्य है।

10—वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सार्वदेशिक सभा द्वारा नए नए साहित्य का प्रकाशन। चारों वेदो की हजारों प्रतियों का वितरण।

11—देश की अन्य सामाजिक सस्थाए व्यक्ति विशेष की थैलियों तक सीमित हैं किन्तु सार्वदेशिक सभा का सबल सगठन शताब्दी की ओर बढ रहा है।

12—देश विदेश मे पिछले कुछ वर्षों में अनेक आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा उप-प्रधान प० वन्देमातरम् स्वय विश्व धर्म सम्मेलन मे भाग लेने जर्मनी गए थे।

13—अभी जगतगुरु शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी को गिरफ्तार किया गया था, सार्वदेशिक सभा के प्रधान की चेतावनी के बाद सरकार ने उन्हे रिहा कर दिया।

इस प्रकार के कार्यों की तालिका लम्बी है। सार्वदेशिक सभा, स्वामी आनन्दबोध और सभा के अधिकारियो ने बहुत सारे लोकोपकारी कार्य किए हैं, जिन्हे भुलाया नहीं जा सकता है। आर्य समाज का कोई व्यक्ति यदि अवैदिक कार्य करता है। अथवा किसी मजार पर चादर चढा सकता है तो आर्य समाज के प्रति उसकी सैद्धान्तिक निष्ठा को एक पलड़े पर कैसे तोला जा सकता है।

यह अत्यन्त हर्ष और सौभाग्य की बात है कि आज देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है और चारों ओर अराजकता का भीषण नग्न ताण्डव हो रहा है। (शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय—

स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश क्या चाहते हैं ?

स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी इन्द्रवेश जी का आर्य समाज से बहुत पुराना सम्बन्ध है। संन्यास लेने से कुछ समय पहले और कुछ समय उसके पश्चात् दोनों आर्य समाज में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। उस समय तो इन दोनों के विषय में आर्य समाज में यह भावना पैदा हो रही थी कि यह दोनों मिल कर आर्य समाज में एक नई क्रान्ति पैदा करेंगे। यही कारण था कि स्वामी इन्द्रवेश जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान भी निर्वाचित किया गया था और स्वामी अग्निवेश जी को आर्य विद्या परिषद् की बागडोर सम्भाल दी गई थी। यह केवल इसलिए कि समझा यह जा रहा था कि यह युवा संन्यासी आर्य समाज में एक नये जीवन का संचार करेंगे। जब कोई व्यक्ति किसी नई विचारधारा से या कोई नया कार्यक्रम लेकर किसी संस्था में आता है तो उसके नये और पुराने कार्यकर्ताओं में कई बार मतभेद भी पैदा हो जाता है और वही मतभेद एक टकराव का रूप भी धारण कर लेता है। यही कुछ इन दोनों के विषय में भी हुआ। विशेष रूप से स्वामी अग्निवेश जी के विषय में। उन्होंने समय-समय पर कुछ ऐसे विचार भी प्रकट किये जिनसे आर्य जगत में यह धारणा पैदा हो गई कि स्वामी अग्निवेश जी वास्तव में कोई कम्युनिस्ट हैं और आर्य समाज के द्वारा अपने दृष्टिकोण को जनता तक पहुंचाना चाहते हैं। जब देश में आपात्कालीन स्थिति पैदा हुई थी तो उस समय भी इन दोनों का जो कार्यक्रम और कार्य प्रणाली थी उसने भी आर्य जगत में इनके विषय में कई प्रकार के सन्देह पैदा कर दिये थे और एक समय वह भी आया था जब सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज की वेदी इन दोनों के लिये बन्द कर दी थी। इस प्रकार यह आर्य समाज से कट गये थे। परन्तु यह अपने विचार किसी न किसी रूप में आर्य जनता के सामने रखते रहे हैं। आर्य जगत को स्वामी इन्द्रवेश जी के विरुद्ध इतनी शिकायत न थी जितनी की स्वामी अग्निवेश जी के विरुद्ध। स्वामी अग्निवेश जी का सारा प्रयास अपने आपको एक धर्म निरपेक्ष व्यक्ति के रूप में जनता के सामने लाने में लगा रहा और उन्होंने कई बार ऐसे वक्तव्य भी दिये जिनसे उनके विषय में कई प्रकार की भ्रान्तियां भी पैदा हो गईं।

अब यह दोनों फिर सक्रिय हो रहे हैं। इन्होंने 14-15 जुलाई को दिल्ली में एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाया है। इनका कहना है कि इसके लिये इन्होंने दो हजार से अधिक अपने साथियों को आमन्त्रित किया है। जिनमें 81 आर्य संन्यासी भी होंगे। कई प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक, पत्रकार और उपदेशक भी होंगे। और एक सौ के लगभग बहिनें भी होंगी। इस सम्मेलन में देश की वर्तमान स्थिति में आर्य समाज का क्या योगदान होना चाहिये और जो समस्याएं हमारे सामने पैदा हो रही हैं आर्य समाज के दृष्टिकोण से उनका क्या समाधान होना चाहिये, इस पर भी विचार किया जाएगा। इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को ही अपने इस कार्यक्रम का आधार बनाया है। क्योंकि वह कहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश इनका घोषणा पत्र है। उनकी तरफ से जो नारा दिया गया है वह भी आर्य समाज के सिद्धान्तों और कार्यक्रमों के अनुसार ही है। पहला नारा है—

"दयानन्द का सन्देश फैलायेंगे, आतंकवाद मिटायेंगे"

दूसरा नारा है—

"आर्य राष्ट्र बनायेंगे, भ्रष्टाचार मिटायेंगे।"

और तीसरा नारा है—

"वेदों का है यह एलान, नर और नारी एक समान।"

चौथा नारा है—

"शोषण रहित समाज बनायेंगे, वैदिक समाजवाद लायेंगे।"

यह स्पष्ट है कि जहां तक उनके कार्यक्रम का सम्बन्ध है उस पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। केवल वैदिक समाजवाद से उनका क्या तात्पर्य है इसका स्पष्टीकरण अवश्य हो जाना चाहिये। क्योंकि देखा गया है कि जो लोग समाजवाद या साम्यवाद का प्रचार करना चाहते हैं वह कई रास्ते निकाल लेते हैं। इसलिये वैदिक समाजवाद से इनका क्या तात्पर्य है इसका स्पष्टीकरण भी हो जाना चाहिये।

जहां तक इनके कार्यक्रमों का सम्बन्ध है उस पर कोई अधिक मतभेद नहीं हो सकता। देश की वर्तमान परिस्थितियों में हमें उन सब समस्याओं पर आर्य समाज के दृष्टिकोण से विचार करना चाहिये जो समय-समय पर विवाद का एक विषय बन जाती हैं। आर्य समाज का दृष्टिकोण भी जनता के सामने आना चाहिये। स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी यदि अपने सम्मेलन के द्वारा आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहते हैं तो उस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु जो विषय विवादास्पद है वह यह कि क्या अपने दृष्टिकोण का प्रचार करने के लिये वह कोई नया संगठन बनाएंगे या सार्वदेशिक सभा के अधीन कोई संगठन बना कर उसके द्वारा प्रचार करेंगे। यदि वह अपना कोई स्वतन्त्र संगठन बनाएंगे तो उसका परिणाम अच्छा नहीं रहेगा। वह आर्य समाज के विघटन का सूत्रपात होगा। उचित तो यही रहेगा कि वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से इस विषय में बातचीत करें। और सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में कोई ऐसी समिति बना दी जाए जो इस नये कार्यक्रम को लेकर आगे चले। इस प्रकार स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी जो नया दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहते हैं वह भी रख सकेंगे और आर्य समाज के संगठन को भी शक्ति मिलेगी। परन्तु यदि उन्होंने अपनी अलग डफली बजाने का प्रयास किया तो उसके कारण टकराव भी होगा और देश की वर्तमान परिस्थितियों में यह न आर्य समाज के हित में होगा और न स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी के हित में होगा। मैं यह मानता हूं कि कई ऐसे प्रश्न इस समय हमारे सामने हैं जिनके विषय में आर्य जगत में तीव्र मतभेद है। इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि आर्य समाज का दृष्टिकोण उतना स्पष्ट रूप से जनता के सामने नहीं आ रहा जितना आना चाहिये। इसके लिये आपस में बैठ कर बात करने की आवश्यकता है। यदि इस सम्मेलन से पहले इन दोनों युवा संन्यासियों और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के बीच कोई बात हो जाए तो यह बहुत अच्छा रहेगा और उसका परिणाम भी अच्छा होगा। यदि इस सम्मेलन से पहले बात न हो सके तो उसके बाद में बात कर ली जाए। परन्तु आपस का टकराव किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिये।

—वीरेन्द्र

पंजाब की आर्य जनता से एक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का चुनाव हो गया और उसकी अन्तरंग सभा की एक बैठक भी हो गई, और उसके अधिकारियों ने अपना काम करना भी आरम्भ कर दिया है। परन्तु जो प्रश्न इस समय हमारे सामने सबसे बड़ा है वह यह कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का प्रचार कैसे किया जाए ? और इसका संगठन कैसे शक्तिशाली बनाया जाए ? गत अन्तरंग सभा में भी इस विषय पर विचार किया गया। इसके साथ ही यह भी निश्चय किया गया है कि पहली और दूसरी सितम्बर को एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन पंजाब में किया जाए वहां सब मिल कर इस समस्या पर विचार करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से मेरा यह निवेदन है कि वह अपना यह कर्त्तव्य समझ कर चलें कि पंजाब में हमने आर्य समाज को सक्रिय बनाना है। इसके लिये वह अपनी आर्य समाज के सदस्यों के साथ बैठ कर इस विषय पर विचार करें और अपने सुझाव हमें भेजें। जिन पर हम कार्यकर्त्ता सम्मेलन में विचार करेंगे।

अब वह समय आ गया है जबकि प्रत्येक आर्य समाजी अपने आपको आर्य समाज का प्रतिनिधि समझ कर आगे चले। एक दूसरे का सहारा बन कर और एक दूसरे को सहयोग देते हुए यदि हम आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करें तो अवश्य ही सफलता मिलेगी। इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियां अत्यन्त चिन्ताजनक हैं। परन्तु ऐसे संकट में ही किसी संस्था की परीक्षा हुआ करती है। आर्य समाज का पुराना इतिहास उसे बुला रहा है और वह कह रहा है कि अब आप सबकी परीक्षा का समय आ गया है। आशा है पंजाब की आर्य जनता परिस्थितियों का समुचित उत्तर देकर अपने लिये पंजाब में एक सम्माननीय स्थान बनाएगी।

—वीरेन्द्र

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियां

ले०—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

कहते हैं कि आपत्ति कभी अकेली नहीं आती अपितु अपने साथ अन्य अनेक आपत्तियों को लेकर आती है किन्तु अनुभव यह कहलाता है कि सौभाग्य के साथ भी कुछ दुर्भाग्य आपत्तियां चली आती हैं। ऐसा ही हुआ भारत में सन् 1947 के पन्द्रह अगस्त को।

उस दिन विदेशी सत्ता यहां से गई और देश की बागडोर देश वासियों हाथ में आई किन्तु स्वाधीनता का यह सौभाग्योदय अपने साथ दुर्भाग्य के कुछ ऐसे सत्य भी ले आया जो भारत के नेताओं और उनकी राजनीतिक व शासकीय अयोग्यताओं के कारण भारत राष्ट्र को अभिशाप रूप में प्राप्त हुए। उन अभिशापों को भारत तब से लेकर अब तक भोग रहा है और पता नहीं भविष्य में कब तक भोगता रहेगा।

इस समय स्थिति यह है कि महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी की जय बोलते रहो, उनकी प्रशंसा करते रहो और वर्तमान नेताओं को उन प्रस्तावों और जयकारों की ओट में जी भर कर कोसते रहो। परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्हीं महात्मा जी की कृपा के फल भारत राष्ट्र को भोगने पड़ रहे हैं। जिस मार्ग पर वह चलते रहे जिस प्रकार की गतिविधियां वह अपनाते रहे, वही मार्ग अपनाया उनके शिष्यों ने वही गतिविधियां अपनाईं उनके उत्तराधिकारियों ने। भले ही उन्होंने इन्हें अनिच्छापूर्वक न चाहते हुए या उनके दूरगामी परिणामों को न समझते हुए अपनाया हो। हमारा अभिप्राय यह है कि चाहे राजनीतिक और प्रशासनिक अयोग्यता और अदूरदर्शिता के कारण अपनाया हो या उनकी ओट में अपनी राजनीतिक महत्त्वकांक्षा अर्थात् लोकेषणा और सांसारिक भोग विलास की प्राप्ति के लिए अपनाया हो। इस समय स्थिति यह है कि प्रत्येक चुनाव के बाद केवल आकृतिएं बदलती हैं, व्यक्तित्व बदलते हैं किन्तु दृष्टिकोण नहीं बदलता अपितु और प्रत्येक बाद में सत्ता में आने वाला व्यक्ति गांधीवाद के भूत को अपने से पहले सत्ताधारी से बढ़चढ़ कर प्रस्तुत करने और लागू करने का प्रयत्न करता है जिससे वह अधिकाधिक समय तक सत्ता में रहकर अपनी मनोवांछित लोकेषणा और भोगविलास की प्राप्ति कर सके।

गांधी जी से अपनी सन्तपन की धुन में सब से बड़ी भूल हुई मुस्लिम तुष्टिकरण की, जिसके दूरगामी दुःखद परिणामों की ओर तो उन्होंने कभी दृष्टिपात भी नहीं किया। वकील होने के कारण उनसे जो आशा की जा सकती थी उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करके देखा जाए तो वह आशा पूरी हुई नहीं पाई जाती।

बंगाल में मुस्लिम लीग सरकार बनी और उसके मुख्य मन्त्री बने सोहरा वर्दी। सोहरा वर्दी ने बंगाल को पाकिस्तान में मिलाने की मांग को लेकर "डायरैक्ट ऐक्शन" अर्थात "सीधी कार्यवाही" की धमकी दी और उसे सत्य भी कर दिखाया। खुल कर हिन्दुओं की हत्यायें की गई, हिन्दू नारियों को अपमानित तथा भ्रष्ट किया गया। इस काण्ड में लगभग पांच सौ हिन्दु मौत के घाट उतार दिए गए इस काण्ड में अकेले कलकत्ता नगर में सौलह सहस्र हिन्दू मौत के घाट उतार दिये गये थे। जब गांधी जी से कलकत्ता जाने के लिये कहा गया तो उन्होंने यह कहकर कि अभी मेरे भगवान की प्रेरणा नहीं है, जब भगवान की प्रेरणा होगी, तब जाऊंगा, जाना अस्वीकार कर दिया। हिन्दू कब तक लुटता-पिटता रहता? अन्त में, "मरता क्या न करता" के अनुसार हिन्दू भी अपनी रक्षा करने पर उतर आये और हिन्दू के हथियार उठाने के बाद जितने समय में मुसलमानों ने केवल पांच सौ हिन्दुओं की हत्या की, इतने समय में हिन्दुओं ने चार सहस्र से अधिक मुसलमानों को मौत की नींद सुला दिया तो गांधी जी को उनके भगवान की तुरन्त प्रेरणा हो गई और इस इल्हाम के होते ही गांधी जी कलकत्ता जा पहुंचे। गांधी जी की दृष्टि में उनकी वकालत और सन्तपन में हत्या करना अपराध नहीं था और हत्यारा अपराधी नहीं था। हां, आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाना वह अवश्य अपराध और आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाने वालों को अपराधी मानते थे। यह हमारा निर्णय नहीं अपितु गांधी जी की स्वीकारोक्ति है। उन्होंने ऐसे ही एक अवसर पर हिन्दुओं को स्पष्ट शब्दों में यह सम्मति दी थी कि यदि वह (मुसलमान) तुमसे झगड़ा करते हैं तो भी तुम उनसे मत लड़ो, वह तुम्हें मारते हैं तो तुम उनके हाथ से मर जाओ। पाठक ही निर्णय कर लें कि यह कानून की कौन सी धारा या पर न्याय सिद्ध होता है और कहां का सन्तपन है? भारतीय दृष्टिकोण का सन्तपन तो "शठे शाठ्यं समाचरेत अर्थात् "जैसे के साथ तैसा" तथा "यथायोग्य व्यवहार" की शिक्षा देता है। गांधी जी ने कलकत्ता जाकर अपनी न्याय-कारिता तथा सन्तपन का परिचय पीड़ितों को न्याय दिलाने और उनके घावों पर मरहम लगाने में नहीं किया अपितु उस भीषण हत्याकांड और अत्याचार के जनक और मुखिया उस महाहत्यारे पापी सोहरावर्दी को शहीद की उपाधि से सम्मानित करने में किया। सोहरावर्दी से उसे अमर शहीद सोहरावर्दी बना दिया।

यह गांधी जी भी जानते थे और उनके शिष्य भी तथा भारत की सम्पूर्ण हिन्दू जनता के साथ-साथ संसार के अन्य देशों के निवासी भी भली भांति जानते हैं कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग की मुसलमानों के लिए पृथक्-पृथक् गृह—राष्ट्र की पूर्ति के लिए बनाया गया है तो फिर न्याय यह है कि समस्त मुसलमानों को पाकिस्तान चले जाना चाहिये था। भारत में उन्हें रहने का न तो नैतिक अधिकार प्राप्त है और न वैधानिक और यह तथ्य है कि मोहम्मद अली जिन्ना ने सेना और पुलिस के बंटवारे से पहले जनसंख्या परिवर्तन की बात कही थी। कहना न्याययुक्त होगा कि वह गांधी जी और उनके सर्वाधिक प्रिय शिष्य जवाहर लाल नेहरू की अपेक्षा अधिक बुद्धि और सूझबूझ रखता था और श्री डा० अम्बेडकर ने भी जिन्ना के इस सुझाव का समर्थन किया था किन्तु उस समय तो गांधी जी की आंधी चल रही थी और पृथ्वी पर पैर न रखकर वायु मण्डल में विचरण करने वाले गांधी-नेहरू ने जिन्ना का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। जबकि यह दोनों भी यह भली-भांति जानते थे कि सत्तानवें प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया था। उनका यह मत पाकिस्तान की मांग करने वाली मुस्लिम लीग को मिला था। मुसलमानों का शेष तीन प्रतिशत मत भी कांग्रेस को नहीं मिला था। उस तीन प्रतिशत में वह मत भी था, जो खान अब्दुल गफ्फार खां की मांग पर उस चुनाव में प्रयुक्त नहीं हुआ था तो केवल या आधा प्रतिशत मत के आधार पर द्विराष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर अर्थात् मुसलमानों को पृथक् राष्ट्र मान लेने के पश्चात् भी भारत में ही रोके और बसाए रखना कदापि न्यायसंगत नहीं है किन्तु गांधी जी का सन्तपन और उनके शिष्यों की उनके प्रति अन्ध भक्ति ने यह अभिशाप भी सदा-सर्वदा के लिए भारत के सर पर मढ़ दिया।

फिर, उसके बाद......

होना यह चाहिए था कि भारत को 'हिन्दू-राष्ट्र' घोषित कर दिया जाता। कारण अतीव स्पष्ट है कि जब द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार पर भारत का बंटवारा किया गया और मुसलमानों ने अपने लिए 'गृह राष्ट्र' के रूप में पाकिस्तान ले लिया तो शेष भाग तो द्विराष्ट्र सिद्धान्तानुसार हिन्दुओं का ही 'गृह राष्ट्र' अर्थात् 'हिन्दू राष्ट्र' रह गया और ऐसी स्थिति में प्रथम तो मुसलमानों को यहां रहने का न तो वैधानिक अधिकार है और न नैतिक और इतने पर भी यदि उन्हें रखा गया या वह यहां रहे तो उनके लिए जनसंख्या के आधार पर उतना भूभाग पाकिसस्तान बनने वाले क्षेत्र में से लिया जाना चाहिए था तथा उन्हें यहां नागरिक अधिकार नहीं दिए जाने चाहिए थे। वह तो यहां विदेशी या दूसरी श्रेणी के नागरिक बनकर रहने के अधिकारी हैं किन्तु उन्हें दिए जा रहे हैं अल्पसंख्यक होने के नाम पर विशेषाधिकार। यह भारत राष्ट्र और यहां के वास्तविक नागरिकों हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय है और इसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकती।

क्रमशः—

श्री पं० रामनाथ जी द्वारा वेद प्रचार

मोरिण्डा से श्री पं० रामनाथ जी सि० वि० उपदेशक ने सूचना दी है कि उसने गत दिनों आ० स० 27 चण्डीगढ़, स्त्री आ०स० सै०-7 चण्डीगढ़, स्त्री आर्य समाज पटियाला, स्त्री आर्य समाज अ० बा० लुधियाना और आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार, लुधियाना में वेद प्रचार का कार्य किया।

भूल सुधार

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सभा के जिन अधिकारियों को मनोनीत किया है उनकी सूचि गत अंक में छपी है। पृष्ट चार पर सं०-चार में श्री रणवीर जी भाटिया उप-प्रधान के आगे भूल से प्रधान छप गया। श्री भाटिया जी सभा के उप-प्रधान हैं कृपया पाठक भूल सुधार कर लें।

पाकिस्तान भी बन गया और पंजाबी सूबा भी बन गया

ले० श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

लेकिन जिस समस्या को हल करने के लिए य दोनो बनाए गए थे वह पहले से अधिक जटिल हो गई है। और कई बार यह प्रश्न अवश्य पैदा होता है कि कही नेताओ ने यह गलती तो नही की थी जो राजनीति की आड मे अपना खेल खेलने वाले कट्टर पंथियों के झांसे मे वह आ गए थे। जब हमारे नेताओ ने मुहम्मद अली जिन्नाह के दो कौमो के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए देश का विभाजन स्वीकार कर लिया था तो समझा जा रहा था कि इसके बाद फिर मुसलमानो के नाम पर कोई नई माग नही पेश की जाएगी और जब इन्दिरा गान्धी ने पजाबी भाषा के आधार पर एक नया राज्य बनाने का निणय किया था तो उन्होंने भी यह समझकर यह कदम उठाया था कि इसके बाद किसी ओर से विशेष रूप से अकालियो की ओर से और कोई माग पेश नही की जाएगी। इससे पहले पडित जवाहर लाल पजाबी सूबा की माग इसलिए अस्वीकार कर चुके थे कि वह इसे एक शुद्ध साम्प्रदायिक माग समझते थे। जिसका परिणाम वह समझते थे कि अत्यन्त भयानक होगा। इन्दिरा गाधी ने अपने पिता की बात न मानी और उसकी सजा उन्हे अपने खून से भुगतनी पडी।

पाकिस्तान को बने अब 43 वर्ष हो गए हैं और पजाबी सूबा को बने अब 25 वर्ष होने लगे हैं लेकिन दोनो मे एक ऐसी आग लगी हुई है कि यदि यह इसी तरह जलती रही तो सम्भव है अन्त मे न पाकिस्तान रहे न पजाबी सूबा। आईए तनिक देखें कि हम कहा से चले थे और कहा पहुचे हैं। हमे किसी गलत फहमी मे नही रहना चाहिए। भविष्य अत्यन्त चिंताजनक रूप धारण कर सकता है। इसीलिए एक लेख कलमबद्ध कर रहा हू ताकि—

"दूर दर्द मद दिल को रोना मेरा रुला दे
बेहोश जो पडे हैं शायद उन्हे जगा दे"

पाकिस्तान 1947 मे बना था। मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्नाह कहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम दो अलग अलग कौमे हैं और दो कौमे एक ही देश मे नही रह सकती। मुसलमान चूकि हिन्दुओं से अलग कौम है इसलिए उन्हें एक अलग देश की जरूरत है जहा वह अपने धर्म और अपनी परम्पराओं के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें। हमारे नेता गाधी जी, पण्डित जवाहर लाल, सरदार पटेल और दूसरे कई यह नही मानते थे कि हिन्दू और मुस्लिम दो कौमें हैं। अपने इस विचार के पक्ष मे वह विगत लगभग एक हजार वर्ष के इतिहास को पेश करते थे। जब हिन्दू और मुस्लिम मिल कर यहा रहते रहे हैं वह यह भूल गए कि जो यहा शासन करते रहे हैं वह अधिकतर बाहर से आए थे। इस्लाम जो उनका धर्म था और जिसके आधार पर वह इस देश की सस्कृति बनाना चाहते थे। वह यह भी अरब से आया था। उसे लाने वाले लगभग सब हमलावर थे जिन्होंने तलवार के बल पर यहा इस्लाम का प्रचार करना शुरू किया था। आज यदि बाबरी मस्जिद और रामजन्म भूमि का झगडा चल रहा है तो यह भी उन्हीं लोगो के कारण जिन्हें गान्धी जी व दूसरे काग्रेसी तथा आज के कई तथाकथित धर्म निरपेक्ष भाई भाई कहते हैं।

साराश यह है कि जिस वास्तविकता को कांग्रेस के नेता नहीं समझ सके थे मुहम्मद अली जिन्नाह समझ गए थे। इसीलिए उन्होंने कहा था कि हिन्दू और मुस्लिम दो कौमें हैं। उसके अपने अपने देश होने चाहिए। गान्धी जी पण्डित नेहरू और दूसरे काग्रेसी नेता मुहम्मद अली जिन्नाह से सहमत नही थे फिर भी वह अन्त मे देश के विभाजन के लिए तैयार हो गए इस विचार से कि रोज की चख चख समाप्त हो जाएगी। उसके बाद इस देश में कोई हिन्दू मुस्लिम प्रश्न नही रहेगा। और गाधी जी का हिन्दू मुस्लिम भाई भाई का नारा एक व्यवहारिक रूप ले लेगा

अब पाकिस्तान को अस्तित्व मे आए 43 वष होने लगे है। क्या हमारी कोई समस्या हल हुई है? और क्या हालात पहले से भी अधिक खराब नही हो गए? इसमे सदेह नही कि बहुत बडी सख्या में मुसलमान पाकिस्तान चले गए हैं लेकिन यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि आज भी इस देश में दस करोड मुसलमान रहते हैं और उनमे अब्दुला बुखारी जैसे शाही इमाम भी हैं जो अपने देश पर अपने धर्म को अधिमान देते हैं। शायद ऐसे ही लोगों की भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते हुए इकबाल ने एक बार कहा था—

ऐ आब ए रुद-ए-गगा वह दिन है याद तुम को
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा।

शाही इमाम जैसे लोग तो आज भी उसी समय को याद करते हैं जब उनका कारवा गगा के किनारे उतरा था। इसलिए वह आज भी अपने आपको विदेशी समझते हैं और प्राय कह देते हैं कि—

समझो हमे वहीं पर,
दिल हो जहा हमारा

मैं यह तो नही कहता कि इन लोगों का दिल कराची या इस्लामाबाद मे है। हा मक्का और मदीना मे अवश्य है और यही इस देश का दुर्भाग्य रहा है। पाकिस्तान बन जाने के बाद भी इस देश में ऐसे लोग रह गए थे जिनका न दिल यहा था न दिमाग यहा था। उसका यह परिणाम है कि पाकिस्तान बनने के 43 वष बाद भी साम्प्रदायिक समस्याए किसी न किसी रूप मे रिसते नासूर की तरह हमे परेशान करती रहती हैं। आज कश्मीर मे जो कुछ हो रहा है वह भी उसी का परिणाम है। जब तक जम्मू और कश्मीर पर महाराजा हरिसिंह का राज रहा था। इस तरह का कोई आन्दोलन वहा नही शुरू हुआ था जैसा कि आज कल चल रहा है। कश्मीर वास्तव म एक हिन्दू प्रदेश है। उसका पुराना इतिहास कह रहा है कि यह हिन्दू प्रदेश है। पडित जवाहर लाल नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को खुश करने के लिए महाराज हरिसिंह को जम्मू और कश्मीर छोडने को विवश कर दिया था। और यह राज्य शेख अब्दुल्ला को सौंप दिया। उसका परिणाम हम आज देख रहे हैं।

पाकिस्तान तो बन गया लेकिन न वहा चैन है न यहा। बगला देश पहले पाकिस्तान से अलग हो चुका है। अब सिन्ध बलोचिस्तान और सीमा प्रात भी उससे अलग होना चाहते हैं। जो कुछ पाकिस्तान म हो रहा है उसने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि जब धर्म और राजनीति की गडबड करने की कोशिश की जाती हैं तो अन्त म न धर्म कायम रहता है न राजनीति। पाकिस्तान बन जाने पर भी न उसकी कोई समस्या हल हुई है न हमारी। यही पजाबी सूबा की स्थिति मे भी हो रहा है। यह कैसे, इसका उत्तर आगामी अक मे दूगा।

(पृष्ट 2 का शेष)

उसके प्रति भी सावदेशिक सभा के अधिकारी अत्यन्त जागरूकता से उसके समाधान के प्रति भी सतत प्रयत्नशील हैं और समय-समय पर शासन को भी सावधान करते रहते हैं।

मेरी सम्मति मे यह समय दोष दर्शन का नही, आत्म निरीक्षण का है। जो अपील श्री वीरेन्द्र जी ने समस्त आर्य जगत से की है, यदि उसके प्रति वह स्वयं भी आत्म निरीक्षण करें तो इसका उत्तर वह स्वय पा लेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का त्रिशाखन उनकी प्ररणा और उपस्थिति मे हुआ किन्तु आज तक त्रिशाखन के आदेशो के अनुसार चल अचल सपत्तियो का बटवारा वह नही कर पाए और अब तो वह त्रिशाखन के आदेशो को भी भूल रहे हैं। उन्हे स्वय इसके आदेशो के अनसार कार्यान्वयन की पहल करनी चाहिए, जहा कोई मतभेद हो, उन्हे बैठकर पारस्पारिक विचार विनिमय के द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

जो अपेक्षा वह सावदेशिक सभा से करते हैं क्या वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के द्वारा उसका शुभारम्भ नहीं करा सकते? सार्वदेशिक सभा ने अतीतकाल मे आर्य समाज के बहुत से आन्तरिक झगडो को सलझाया था और अब जब भी आवश्यकता हुई देश के हित मे वह कैसा भी आन्दोलन छडने से पीछे नहीं रहीं। यह सावदेशिक सभा के सतत प्रयास का ही फल है कि गुरुकुल कागडी जैसी राष्ट्रीय सस्था को अराजकवादी तत्वो से मुक्त कराया (जिसके लिए स्वामी आनन्दबोध ने आमरण अनशन भी किया था)। आज यह सस्था अपने पूर्व गौरव प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर है। इस सबमे किसी एक व्यक्ति का नही अपितु समस्त आर्य जगत की सदभावनाए एव शुभकामनाए तथा सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विवेकी अधिकारियो का सतर्कतापूर्ण निर्देश ही महत्त्वपूर्ण रहा है।

मैं जानता हू कि श्री वीरेन्द्र जी के परिवार का आर्य समाज के प्रति अटूट प्रेम है, दृढ आस्था है, और कदाचित इसीलिए उन्होने यह लेख माला लिखी है। यह समय मण्डन का है, दोष दर्शन का नही अपितु आत्म निरीक्षण का है। जबकि देश की सारी सस्थाए पारस्परिक मतभेदो के कारण विनाश के कगार पर खडी हैं, तब क्या कम आश्चय की बात नही है कि सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विभिन्न राजनैतिक, सास्कृतिक और सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिए जन जागरण अभियान करने के साथ साथ समय समय पर शासन से भी लोहा लेती रहती है।

मेरा बन्धुवर वीरेन्द्र जी से यह अनुरोध है कि जिस आर्य समाज और गुरुकुल के निर्माण तथा विस्तार मे उनके स्वनामधन्य पिता महाशय कृष्ण जी ने अतीतकाल मे अपना अमूल्य योगदान दिया था, उस गौरव की रक्षा के निमित्त वह आत्म निरीक्षण करें और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आलोचना करने की अपेक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उस अतीत-कालीन गौरव की पुनःस्थापना करें जिसके लिए उनके पिता सदा सर्वदा तैयार रहते थे।

"आर्य समाज जागे"

ले०—श्री स्वामी सुबोधानन्द जी दयानन्द मठ चंबरा

महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना वैदिक सिद्धान्तों पर जीवन बिताने, मानव मात्र का कल्याण करने, पाखण्ड और कुरीतियो को मिटाने और अज्ञान के अन्धेरे को हटा कर सत्य का प्रकाश फैलाने हेतु की थी। आज हम खुद आर्यसमाजी व आर्य समाजें व प्रतिनिधि सभाए ही इस उद्देश्य से दूर चली गई हैं हम पुरानी डगर पर ही चल रहे हैं। गुरुकुल खोले परन्तु अपनी सन्तान अंग्रेजी स्कूलों मे पढ़ाते हैं। शादी गमी मे सब पाखण्ड चलता है। आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा भारी कार्य किया है परन्तु आहिस्ता-आहिस्ता आर्य समाज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से दूर चला गया है। आज तक आपसी झगड़े मिटाने के लिए विद्या सभा, न्याय सभा, धर्म आर्य सभा नही बना सके और न्यायालयों में धक्के खाते फिरते हैं। राजनीति में 1942 तक रहे। अब दूर-दूर राज सत्ता मे आर्य समाज की कोई आवाज नहीं कोई गिनती नहीं। ईसाई व मुस्लिम हिन्दुओं को अपने में नहीं समा सकते। जन्म जाति भेद नहीं मिटाए। वैदिक संस्कृति नहीं आई D.A.V. का जाल अंग्रेजी के मोह में फंस गया है। दो सभाओं के दो रास्ते हैं जिस आर्य समाज पर जनता लट्टू थी उसे अब दुकानदारी कहा जाता है। रविवार के सत्सग या पाठशालाएं या अंग्रेजी स्कूल इसे अब नही बचा सकते। आर्य समाज को राजनीति में भाग लेकर एक शक्ति शाली संगठन का सबूत देना होगा। आर्य समाज जागे, समय की पुकार है।

"हिन्दुओं ? तुम जिन्दगी चाहते हो या मौत। हम पांच हजार साल से संगठित न होने के कारण मार खाते खाते इस अधोगति को आज प्राप्त हो गए है कि 70-80% होते हुए बहु संख्यक हो कर भी हर जगह मार खा रहे हैं। हजारों कुर्बानियां देकर आप ने मिलजुल कर देश आजाद कराया। तबादला आबादी हुआ। कई लाख मारे गए अरबों की समपत्ति लूटी गई। ख्याल था देश आजाद हो गया और अखण्ड भारत में राम राज्य आएगा परन्तु जिन भाईयों को हमने अपना हितेषी जान कर देशवासी समझा वह खाएं पीएं तो भारत का और राम गाए अरब और योरप अमरीका के। 43 साल आजादी के बाद भी वह राष्ट्रीय लड़ी में नहीं परोए गए। वह साम्प्रदायिकता के राग अलापते हैं। नई सरकार भी उन अल्प सख्यकों के हित को ही सोचती है सारे भारतवासी एक विधान एक निशान, एक झण्डा क्यों नही। मानते। हिन्दू तो परिवार नियोजन करता फिरे और घोषणा करे हम दो हमारे दो और दूसरे यह कहे हम पांच हमारे पचास। आज वोटों की सरकार है अभी तो दो पाकिस्तान बने हैं और कई पाकिस्तान व इसाई स्तान बनाने के मंसूबे हैं। आज ही हम सब जगह मार खाते हैं 10 साल बाद क्या होगा इस पर विचार करें। हिन्दू सोचें कि उन्होंने यदि जीवित रहना है तो मरना सीखें। जो कौम जाति राष्ट्र पर मरने से डरती है उसे जीने का कोई हक नहीं।

समय वो आ गया है

ले०—श्री सत्यपाल 'पथिक' प्रसिद्ध गायक

तर्ज—मिलो न तुम तो हम घबराएं मिलो तो आंख...

जिस के लिए इस देश की माएं, गोद में लाल खिलाएं
समय वो आ गया है।
पालें पोषें कष्ट उठाएं, अपना दूध पिलाएं,
समय वो आ गया है...

ओ देशवासियो ! कहती है देखो मां पुकार के।
ले ही न जाए कोई सर से दुपट्टे को उतार के।
पुत्र भी अपना फर्ज निभाए, मा की लाज बचाएं,
समय वो आ गया है। जिस के लिए हम...

कृषको व्यपारियो ! अपने खजाने तुम भी खोल दो।
गेहू धान सोना चांदी देश की मिट्टी के भार तोल दो
सारे मिल के इक हो जाएं, शक्ति आज दिखाए,
समय वो आ गया है। जिसके लिए इस...

कवियो लिखारियो ! कलमों से फेंकों आज आग तुम।
सैनिकों में साहस भरके इनको बना दो काले नाग तुम।
जो भी इन के सामने आएं पानी मांग न पाए।
समय वो आ गया है। जिसके लिए इस...

ओ प्यारे सैनिको। उठा लो बन्दूकें अपनी चूम के।
वैरी का सफाया कर के रण में दिखा दो जरा झूम के।
"पथिक" तुम्हारी सभी दिशाएं, जय जयकार मनाएं,
समय वो आ गया है। जिस के लिए इस...

धर्म एक है अनेक नही

आर्य समाज बारां, जिला कोटा के 59वें वार्षिक उत्सव पर दिनांक 17 मई को सायं आयोजित धर्म और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में ओजस्वी भाषण करते हुए वेद पुराण व बाईबिल के प्रकाण्ड विद्वान पंडित शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ने कहा कि धर्म एक है अनेक नहीं। एक धर्म वैदिक धर्म है शेष हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख आदि सब मत मजहब और साम्प्रदाय हैं। अपने जीवन में किए सैकड़ों शास्त्रार्थों का बारां के मोलवी मोलाना जनाब हबीबुल्ला व अन्यों की उपस्थिति में अपना अनुभव सुनाते हुए पंडित जी ने कहा कि आर्य समाज ही राष्ट्र का सच्चा रक्षक और सजग प्रहरी है। उसके मन में मुसलमानों के प्रति रंज मात्र भी पूर्वाग्रह नहीं है। वह दिल से चाहता है कि मुसलमानों और ईसाई मुसलमान और ईसाई रहते हुए वैदिक धर्म व वैदिक संस्कृति की धारा में मिल जाएं। सम्मेलन में भजनोपदेशक अमर सिंह आर्य, ब्रजपाल शर्मा कर्मठ और स्वामी शिवानन्द मस्ताना ने राष्ट्र की वर्तमान दो बड़ी समस्याओं पंजाब और कश्मीर समस्या पर विचार कर उसे हल करने में आर्य समाजियों से आग्रह किया कि वे सत्य अर्थों मे राष्ट्र के जनमत को जगाएं। कोटा के मजदूर नेता और आर्य समाज के विद्वान कार्यकर्त्ता डा० रामकृष्ण आर्य ने सम्मेलन में उपयुक्त विषयक प्रस्ताव पढ़ते हुए कहा—

कोटा के पुलिस प्रशासन ने निष्पक्ष और तटस्थ भाव से विस्फोटक पदार्थों एवं हथियारों का जो घर घर जाकर तलाशी अभियान चलाया है वह कोटा के इतिहास में सबसे अच्छे कार्य की शुरूआत है। आर्य समाज बारां के 59वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर 17 मई को सायंकाल आयोजित धर्म और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में उपस्थित सभी स्त्री पुरुष पुलिस प्रशासन के इस अभियान का खुले दिल से समर्थन करते हैं और राज्य सरकार से निवेदन करते है कि इस प्रकार का अभियान किसी समुदाय विशेष को ध्यान में न रखते हुए, न केवल कोटा नगर कोटा जिला ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राजस्थान प्रांत के सभी सम्पूर्ण गड़बड़ वाले क्षेत्र में चलाये।

यह सम्मेलन प्रान्त के राजनैतिक दलों के कर्त्ता कर्ताओं से भी निवेदन करता है कि वे वोटों के स्वार्थ के पीछे किन्हीं बहुसंख्यक अथवा अल्प-संख्यक विशेष को भड़का कर उन्हें गलत दिशा में न ले जाएं। सम्मेलन में कोटा के जनता दल, कांग्रेस और मार्क्सवादी पार्टी के उन नेताओं की भी भर्त्सना की जो शान्ति प्रिय मुसलमानों को अपने वोटों के स्वार्थ की खातिर भड़का रहे हैं। उनसे यह भी आग्रह किया कि वे पुलिस को साम्प्रदायिक घोषित न कर उसे अपना कार्य करने दें। सभा में उपस्थित स्त्री पुरुषों ने हाथ खड़े कर सर्वसम्मत्ति से प्रस्ताव को पारित किया।

सम्मेलन के अन्त मे अजमेर से पधारे प्रो० धर्मवीर का देश की साम्प्र-दायिक समस्याओं और उसके समाधान पर चिन्तन पूर्ण भाषण हुआ। सम्मेलन का संचालन समाज के प्रधान भगवती प्रसाद आर्य ने किया।

समाज के मन्त्री श्रवणलाल शर्मा ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि आर्य समाज बारां का यह उत्सव 16 मई को बारां नगर में जलूस निकालने के साथ प्रारम्भ हुआ। जलूस को सफल बनाने में, बारां, कोटा, केलवाड़ा, छीपाबड़ोद आदि स्थानों के आर्यों की प्रमुख भूमिका थी। उत्सव 19 मई तक चलता रहा। उत्सव को सफल बनाने में बद्रीलाल गुप्ता, प्रह्लाद सोनी, त्रिभुवन दास एवं सेवक रामप्रसाद ने कठिन परिश्रम किया।

—श्रवण लाल शर्मा मन्त्री
आर्य समाज, बारा

अजमेर के समीप कोटड़ा ग्राम में वर्षायज्ञ

संस्थान द्वारा दिनांक 4-5-90 को भूमि पूजन व पूर्वाभ्यास के साथ वर्षायज्ञ का शुभारम्भ हुआ संस्थान के अध्यक्ष जगमोहन कौशिक ने यज्ञ शुभारम्भ किया। दिनांक 5-5-90 को यज्ञ आरम्भ होकर सायं 5 बजे तक चला। यज्ञ आरम्भ के प्रतिदिन सायं तक अजमेर शहर के आसपास बादल छाए रहे व हल्की बूदा-बांदी हुई। वायु का वेग 60 कि० मी० प्रति घण्टे पहुंच गया। यह कहना महत्वपूर्ण है कि मई के प्रथम सप्ताह में तापमान गिरना विगत दस वर्ष में प्रथम बार हुई। दूसरे दिन मध्यान्ह वायु अति मंद व बाद में वायु चलना आरम्भ हो गई। रात्रि को 11 बजे वर्षा हुई यज्ञ के तीसरे दिन रात्रि 2 बजे से 3 बजे तक नगर में व आसपास अच्छी वर्षा हुई। विगत दिनों से तापमान 9 से नीचे गिर गया। पूर्व में 11 डि० से० वृद्धि हुई। सायंकाल वर्षायज्ञ अनुसंधान का बुद्धिजीवियों का सम्मेलन हुआ। इसमें लगभग 50 बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ता प्रो० धर्मवीर, डा० कोठारी, डा० श्री मासी, पं० मदन मोहन शास्त्री, डा० एन० एस० शर्मा आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। गोष्ठी का प्रमुख मुद्दा वर्षायज्ञ अनुसंधान बुद्धिजीवि सम्मेलन में प्रमाणित किया गया कि वैदिक रीति से यज्ञ करने से वर्षा होने का दावा है। यज्ञ सम्पन्न कर्ता डा० आचार्य हरि प्रसाद शर्मा का दावा है कि अजमेर जिले में 20 यज्ञ प्रति वर्ष करने से अकाल मिट सकता है। डा० शर्मा का यह 21वां प्रयोग था जो सफल रहा। 8-5-90 को मौसम साफ रहा बादलों के दर्शन हुए। दिनांक 9-5-90 को पूर्णाहुति के साथ प्रात: 11 बजे यज्ञ सम्पन्न हुआ 9-5-90 की शाम को अच्छी वर्षा हुई। पूर्णाहुति में अतिरिक्त संभागीय आयुक्त रवि प्रकाश जी, जिला कलेक्टर बी० डी० जोशी, अतिरिक्त जिला कलेक्टर अजीत सिंह, पुलिस अधीक्षक मधुकर टण्डन व नगर के व्यक्तियों माताओं बहिनों ने भाग लिया। पुष्कर प्रोजेक्ट के सभी सहयोगियों ने भी भाग लिया।

यज्ञ प्रतिदिन 7 से 5 बजे तक चलता था। इसमें 8 ब्रह्मचारी, आचार्य हरि प्रसाद व उनके सहयोगी मदन मोहन जी शास्त्री, धर्म सिंह कोठारी रहे। यज्ञ में प्रतिदिन रामेश्वर लाल जी फतेहपुरिया, अशोक कुमार जैन, प्रो० एम० डी० शर्मा, श्री इन्द्र चन्द शर्मा, अशोक जी ठेकेदार, श्री जगदीश चोधरी, श्री रघुनन्दन अग्रवाल, श्री प्रकाश चन्द नागोरा, श्री लोकनाथ मेहता आदि युगल जोड़ें में बैठे।

प्रतिदिन नागरिक यज्ञ स्थल की परिक्रमा करते थे। व सभी को यहां रोजाना प्रसाद वितरण होता था। पुष्कर वासी हृदयाराम जी ने यज्ञ में आकर सभी को आशीर्वाद स्वरूप दो शब्द कहे यज्ञ के पूर्व सांसद प्रो० रासा सिंह रावत ने यज्ञ स्थल का निरीक्षण किया। यह यज्ञ उन तिथियों में किया गया जिन तिथियों में 1 मई से 10 मई तक पिछले दस सालों में अजमेर में वर्षा नहीं हुई सिचाई विभाग का लिखा हुआ संस्थान के पास प्रमाण है।

यज्ञ सफल के लिए शुभकामना संदेश मुख्य मन्त्री श्री भैरो सिंह शेखावत व अन्य मन्त्री महोदय ने यज्ञ सफल की शुभकामनाएं भेजी।

अन्त में संस्थान के अध्यक्ष श्री जगमोहन कौशिक व परियोजना निदेशक एन० एस० शर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया।

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय व्यवस्थापक जी,

सादर नमस्ते।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। आगे समाचार यह है कि मैं आपकी साप्ताहिक पत्रिका 'आर्यमर्यादा' का नियमित ग्राहक हूं। आपकी पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। इसके लिए आपका धन्यवाद। आप पत्रिका में पाठकों के लिए काफी ठोस एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री दे रहे हैं। प्रति सप्ताह यह पत्रिका आर्य समाज की गतिविधियों से पाठकों को अवगत कराती है। इसके साथ-साथ वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के नारे को साकार करने के लिए भी कृतसकल्प है। अत: यह पत्रिका विशुद्ध रूप से वैदिक सस्कृति की सजग प्रहरी है। आशा है यह पत्र भविष्य मे आर्य जगत के तमाम पत्र-पत्रिकाओ में अपना विशिष्ट स्तर बना लेगा। आर्यमर्यादा के गत दो अंकों से सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के जम्मू-कश्मीर के इतिहास के सम्बन्ध मे लेख पढ़ने को मिले। ये लेख बड़े अच्छे तथा मार्मिक रहे। इनके माध्यम से काफी जानकारी प्राप्त हुई तथा वास्तविक स्थिति का बोध हुआ। श्री वीरेन्द्र जी ने इतिहास को लेखमाला के रूप मे प्रकाशित करने का जो निर्णय लिया है। वह अत्यन्त प्रशंसनीय ही नही अपितु सराहनीय भी है।

अत: इस लेख माला से आर्यमर्यादा के पाठक काफी लाभान्वित होगे। सभा-प्रधान जी के इस प्रयास के लिए बधाई।

2. कुछ आर्यमर्यादा के शुल्क के बारे में—

वीरेन्द्र जी ने 27 मई 1990 के अंक में आर्यमर्यादा के सभी ग्राहको से अपील की है जिसका दो या तीन वर्ष का शुल्क शेष है। वे शीघ्र ही भिजवाएं। अत: मेरा शुल्क भी शेष है मैं भी शीघ्र ही अपना शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेज रहा हू। प्रतीक्षा करें। मेरा सहयोग सदैव इस पत्रिका के साथ रहेगा।

राज कुमार सोरायण
लोक निर्माण जन स्वास्थ विभाग,
जलधर जोशी चौहान वाला बहालगढ़,
(सोनीपत)।

आवश्यकता है

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के आवासीय विद्यालय में निम्न पदों को भरने के लिए आर्यसमाज की विचारधारा के योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है—

1. आश्रमाध्यक्ष (एक पद) आयु 40 से 45 वर्ष, वेतन 600 रु० प्रति मास, योग्यता—स्नातक भोजन एव आवास नि.शुल्क।

2. अधिष्ठाता (चार पद) योग्यता हाई स्कूल पास, आयु 40 वर्ष से 50 वर्ष वेतन 400 रु० प्रति मास। भोजन एवं आवास नि:शुल्क।

केवल शाकाहारी एवं धूम्रपान न करने वाला व्यक्ति ही निम्न पते पर प्रार्थना-पत्र भेजें। प्रार्थना पत्र विज्ञापन के 15 दिन बाद तक ही मान्य होंगे। साक्षात्कार के लिए प्रमाण पत्रों सहित गुरुकुल के मुख्य कार्यालय मे उपस्थित हों।

सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का निर्वाचन

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के वार्षिक साधारण अधिवेशन में रविवार दिनांक 27 मई 1990 को श्री सरदारी लाल वर्मा को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा श्री वर्मा एवं श्री राममूर्ति कैसा को शेष अधिकारी व अन्तरंग सभा के सदस्य एवं सभा के लिए भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों की सूची बनाने के लिए पूर्ण सर्वसम्मति अधिकार दिए गए। दोनों महानुभावों ने निम्न अधिकारी व सदस्य घोषित किए :—

प्रधान—श्री सरदारी लाल वर्मा।

उप-प्रधान—सर्वश्री राममूर्ति कैसा श्री रतनलाल सहदेव, श्री प्रह्लादराय गुप्त, श्रीमती सत्यशर्मा।

मन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण मिश्र।

उप-मन्त्री—सर्वश्री वीरेश बुग्गा, श्री रिपुदमन सरीन, श्रीमती सुमेधा शर्मा।

कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश आहूजा।

पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा।

अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री श्रवण प्रकाश वर्मा।

(प्रथम पृष्ट का शेष)

अर्चना में पड़ गए। जैसे एक ही व्यक्ति को कोई पिता, कोई चाचा, कोई भाई, बेटा कहता है, पर व्यक्ति एक ही रहता है। ऐसे ही अनेक नामों के होने पर भी ईश्वर एक ही है। अनेक नाम तो केवल उसके अनेक गुणो, कर्मों को ही स्पष्ट करते हैं।

हां, आपको स्मरण होगा, कि छटे समुल्लास के शुरू मे मनुस्मृति के श्लोक हैं, जिनमे इन्द्र, अग्नि आदि शब्द हैं। महर्षि ने प्रकरण के अनुसार उन सबका राजा (=प्रशासक) के रूप में वर्णन किया है। अत: प्रकरण के अनुसार इन्द्र आदि अनेक के वाचक हैं।

हां, कार्यक्रम के अनुसार अब भाषण का समय पूर्ण हो रहा, पर विषय की दृष्टि से अभी बहुत कुछ कहा जा सकता है। अत: समय की मर्यादा का ध्यान रखते हुए यही आवश्यक है, कि जो इस विषय को और स्पष्ट रूप से समझना चाहते है ? वे 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' की प्रतीक्षा करें। वहा इस विषय से जुड़े हुए सभी विषयो पर विचार किया गया है। हां, यह पुस्तक कब प्रकाशित होती है, यह कहना तो किसी प्रकाशक या किसी आर्य समाज पर निर्भर है, कि कौन इस कार्य के लिए आगे आता है ?

साप्ताहिक सत्संग की समाप्ति के पश्चात् वे सारे युवक प्राध्यापक के पास आए और उनकी भावनाओं को ध्यान में रख कर प्रवचन के लिए धन्यवाद दिया।

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय, सादर नमस्ते। कल दिनांक 31-5-90 को एक मनीआर्डर रु० 50/- आपको प्रेषित किया है जोकि बकाया राशि रु० 120/- का आंशिक भुगतान है। शेष राशि रु० 70/- भी शीघ्र ही प्रेषित की जायेगी। आशा है आप आर्य मर्यादा प्रेषित करना जारी रखेंगे।

आजकल आप आर्य मर्यादा में श्री वीरेन्द्र जी की काश्मीर पर जो लेखमाला प्रकाशित कर रहे हैं, वह अतीव सामयिक एवं ज्ञानवर्धक है। पिछले कुछ समय से आर्य मर्यादा में लेखों में नवीनता एवं सामयिक विषयों पर भरपूर सामग्री प्रकाशित हो रही है जिससे सभी लेखों को पढ़ने एवं प्रतिक्रिया सूचित करने की स्वत: प्रेरणा होती है। कल परोपकारी में प्रकाशित सूचना से ज्ञात हुआ है कि आगामी महीनों में चण्डीगढ़ में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी की बलिदान शताब्दी, राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर आप श्री पंडित जी के जीवन पर विभिन्न कोणों से लिखे गये लेखों का आर्य मर्यादा का एक भव्य विशेषांक प्रकाशित करें। सभा के कार्यालय का नाम भी पण्डित जी के नाम पर है, अत: सभा को उनकी ग्रन्थावली एवं अन्य साहित्य पुस्तकें पंडित जी के जीवन एवं कार्यों को केन्द्रित कर प्रकाशित करवानी चाहिएं।

मनमोहन कुमार आर्य
195/II, चुक्खूवाला, देहरादून—248001 (उ०प्र०)

श्री अमर नाथ जी प्रेमी चल बसे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भूतपूर्व भजनोपदेशक श्री अमरनाथ जी प्रेमी चिरकाल से रुग्ण चले आ रहे थे। 28-6-90 को फज्जुपुर (धारीवाल) में उनके निवास स्थान पर उनका देहावसान हो गया। श्री प्रेमीजी सभा के बहुत प्रसिद्ध गायक रहे। पंजाब की आर्य समाजें उन्हें अपने उत्सवों में आग्रह पूर्वक बुलाया करती थी। परन्तु अचानक पक्षाघात हो जाने के कारण वह रुग्ण हो गये और चिरकाल तक प्रयत्न करने पर भी ठीक नहीं हो सके। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असहय वियोग को सहन करने की शक्ति दे। उनका अन्तिमशोक दिवस 7-7-90 को फज्जुपुर (धारीवाल) में मनाया जाएगा।

श्री पंडित देवीराम जी का देहावसान

12-6-90 को श्री पंडित देवीराम जी शर्मा का देहावसान हो गया। उन्होंने आर्य समाज की लगभग 40 वर्ष बड़ी लग्न से अर्थात् तन मन धन से सेवा की। आर्य समाज बस्ती टैंका वाली फिरोजपुर के कई वर्ष वह प्रधान रहे। वहां आर्य समाज की सेवा में उनका नाम प्रथम व्यक्तियों में लिया जाता रहा है। फिरोजपुर में उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। 31-10-86 को वह रेलवे से रिटायर्ड हुए थे और वह इसके बाद देहली चले गये थे।

16-6-90 को आर्य समाज बस्ती टैंकावाली में एक शोक सभा हुई। जिसमें सभी सत्संगी बहनों और भाइयों ने उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।
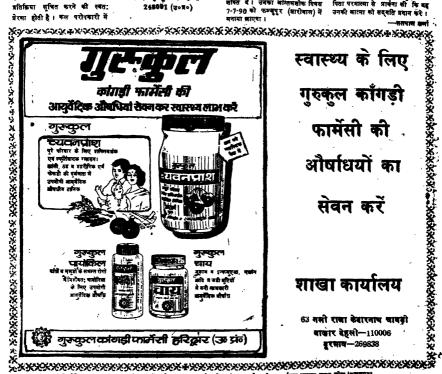
—सतपाल शर्मा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 16, आषाढ़ 31 सम्वत् 2047 तदनुसार 12/15 जुलाई 1990 दयानन्दाब्द 106 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

धैर्य धारण करें ! कैसे ?

प्रो० श्रीमती विमला श्रीवास्तव 4 ए सड़क न० 1 सै० 4 भिलाई (मध्य प्रदेश)

धैर्य एक मानसिक गुण है जिस के लक्षण हैं—सहनशीलता, आत्मसंयम, मानसिक संतुलन, दुःख सुख की स्थिति मे समभाव रहना, असफलता, भूख, गरीबी, आर्थिक हानि मानहानि, शारीरिक कष्ट, प्रिय वियोग, प्रिय जन की मृत्यु आदि कठिन परिस्थितियों मे डांवाडोल न होना, हाय तौबा न करना, क्रोध के वशीभूत होकर कटु-वचनो का प्रयोग न करना, लोभ के कारण चोरी व बेईमानी न करना, जल्दबाजी न करना, और शांति पूर्वक तथा बुद्धिमत्ता से अपने कर्तव्य का पालन करते जाना आदि । इसके विपरीत खुशी व सफलता की स्थिति मे खूब नाचना गाना, उछल कूद करना, तथा विषम परिस्थिति मे पारे की तरह अस्थिर होकर हाहाकार करना, आसू बहाना, हाथ पैर पटकना, गाली गलौच, मारपीट, तोड़फोड़ हिंसा या आत्महत्या करना आदि मानसिक स्थिति को अधैर्य कहते हैं ।

धैर्य मनुष्य जीवन मे सफलता, खुशी, शांति, यश, श्री व आनंद प्राप्त करने का साधन है । यह स्वर्ग का प्रवेश द्वार है । इसके बिना मनुष्य कभी भी सुखी नही रह सकता क्योंकि बुद्धि या विवेक से ही मनुष्य दुःखो को दूर कर सुख के साधन जुटाता है और विवेक बुद्धि धैर्य शाली व्यक्ति मे ही निवास करती है, अधैर्यशाली व्यक्ति मे नहीं ।

धैर्य से मनुष्य सोचता समझता व विषम परिस्थियो से जूझने के उपाय ढूंढता है । इससे उसमे कार्य करने की शक्ति पैदा होती है जबकि अधैर्य शाली व्यक्ति हाय तौबा मे अपनी शक्ति का अपव्यय करके अपने पास आई मंजिल खो बैठता है । धैर्य से मनुष्य सब का मित्र बन जाता है । आजकल पति पत्नी जैसे मधुर सबंधो में भी कटु-वाहट घुलती जा रही है व तलाक विच्छेदों के लिए अदालतो मे झूठे सच्चे मुकद्दमे लड़े जा रहे हैं । भाई-भाई के खून का प्यासा होता जा रहा है । चान्दी के चन्द सिक्को के लिए मनुष्य मनुष्य का बैरी होकर इतना रक्त बहा रहा है कि आज रक्त सस्ता और पानी महगा होता जा रहा है आखिर क्यो ? इसका एक ही मुख्य कारण है और वह है मनुष्य मे धैर्य की कमी । अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई किसी की बात को सुनने या सहने के लिए तैयार ही नही । बच्चे मा बाप की सुनने को तैयार नही । यदि पति ने पत्नी को कुछ कह दिया तो वह झट आग बबूला होकर दहेज की मांग की आड़ लेकर झट झूठा सच्चा केस बनाकर अदालत मे पहुच जाती है ताकि वह अपने पति व ससुराल वालो को हथकडिया लगवा सके । वह अधैर्य के कारण भूल जाती है कि आखिर उसे रहना तो पति के साथ ही है । क्या पति को हथकड़िया लगवाकर कोई पत्नी पति का प्यार, या खुशी प्राप्त कर सकती है ? कदापि नहीं ।

इसी प्रकार यदि पत्नी ने अपने पति को कुछ कह दिया तो वह गाली गलौच व हाथा पाई पर उतर आता है ।

आजकल स्वामी-सेवक-भक्ति, देश-भक्ति व सच्ची ईश्वर-भक्ति, सब का लोप होता जा रहा है । आखिर क्यो ? क्योंकि मानव मे धैर्य अर्थात् स्थिरता सहनशीलता, संयम आदि गुणो का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है । ऐसी स्थिति मे मनुष्य मे धैर्य जैसे गुण को विकसित करना आवश्यक ही नही अपितु अनिवार्य है । इसीलिए मनुजी महाराज ने धर्म के लक्षण बताते हुए धैर्य को दस लक्षणों में प्रथम स्थान दिया है, उदाहरणतया :

"धृति (धैर्य) क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच,
इन्द्रिय निग्रह, धी: विद्या, सत्य,
अक्रोध
इति दशकम धर्म लक्षणम्"

इतिहास इस का साक्षी है कि इतिहास प्रसिद्ध जितने महान व्यक्ति पथ प्रदर्शक नेता व सफल लोक नायक हुए हैं उन्होने जीवन को विकट परि-स्थितियो मे कभी धैर्य का पल्ला नही छोड़ा, कभी असफल होने पर हार नही मानी व अधीरता वश कभी कटु शब्दो का प्रयोग नही किया । परिणामस्वरूप वे अमर हो गए । श्री राम चन्द्र जी इसका उदाहरण हैं । उन्होने राज्या-भिषेक के स्थान पर चौदह वर्ष का कठिन वनवास पाकर भी उफ तक नही की । एक बार भी अपने माता पिता, भाई भरत अथवा मथरा दासी के प्रति कटु शब्दो का प्रयोग नही किया जबकि लक्ष्मण ने इस अन्याय को सहन न कर अधीरता वश कई बार कटु शब्दो का प्रयोग किया है । इसी प्रकार कर्मयोगी श्री कृष्ण जी जो आज हजारो वर्षों के बाद भी इतने लोक प्रिय हैं उन्होने संपूर्ण जीवन मे कभी भी धैर्य को नही त्यागा । इस कारण वह पूजनीय हैं । इनके विपरीत रावण व दुर्योधन अपने अधैर्य के कारण कटुवाणी का प्रयोग करने के कारण न केवल पराजित हुए अपितु कलंकित भी हुए ।

आधुनिक काल के महान युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी जिन्होने समाज एव धर्म के क्षेत्र मे फैले अज्ञान के अन्धकार को सूर्य की भान्ति छिन्न भिन्न करके समाज को एक नई दिशा प्रदान की, उन्हे इस उपकार के बदले मे सोलह बार विष पीना पड़ा परन्तु वे कभी रंच मात्र भी अधीर होकर अपने लक्ष्य से विचलित नही हुए । उन की मृत्यु का अन्तिम दृश्य उनके अद्भुत धैर्य का ज्वलन्त उदाहरण है जिसे देखकर विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित श्री गुरुदत्त जैसे नास्तिक व्यक्ति का काया कल्प हो गया ।

आधुनिक काल के राजनैतिक नेता महात्मा गांधी भी सर्वाधिक धैर्यशाली नेता थे जिनके नेतृत्व मे भारतवासियो ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए कठिन लड़ाई लड़ी और सफलता प्राप्त की । उनकी सफलता का रहस्य था धैर्य । महात्मा गांधी बार-बार पराजित होकर, आलोचनाए सुन कर भी अधीर नहीं हुए और अपने लक्ष्य पर डटे रहे और अन्त मे विजयी होकर रहे ।

साराश यह है कि धैर्य एक ऐसा गुण है जो हमे सफलता, यश व शांति प्रदान करता है तथा हमे लोक प्रिय बनाता है । यह कदम कदम पर हमारी रक्षा करता है अत हमे चाहिए कि हम धैर्य को धारण करें ।

यद्यपि धैर्य ईश्वर प्रदत्त गुण है तथापि इसे उपार्जित भी किया जा सकता है । उसके लिए निम्नलिखित उपायो का अभ्यास करने से प्रत्येक चंचल से चंचल प्रकृति का व्यक्ति भी धैर्यशाली बन सकता है—

1. उपाय—प्रिय वियोग की स्थिति मे धैर्य धारण करने के लिए बार बार चिन्तन करें—

1. मृत्यु अवश्य भावी है । अतः एक न एक दिन तो सब को मरना ही है । हमारा सम्बन्ध इसके साथ इतने समय तक का था जो हमे प्राप्त हुआ । अत अब रोने से क्या लाभ ।

2. ईश्वर सर्वशक्तिमान् है । उस ने ही यह इष्ट मित्र दिया था और उसने उसे वापिस बुला लिया । ऐसी स्थिति मे मैं अब कर भी क्या सकता हू ।

3. "आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर" ।

2. असफलता की स्थिति मे चिन्तन करें—

1. "कर्मण्येव अधिकारस्ते मा
फलेषु कदाचन"

श्री मद् भगवद् गीता मे श्री कृष्ण जी ने सत्य ही कहा है कर्म करना तुम्हारे अधिकार मे हैं फल की चिन्ता मत कर । (क्रमशः)

व्याख्यानमाला-33

तृष्णा तेरा अन्त न किसी ने पाया

ले०—श्री सुखदेव राज शास्त्री अधिष्ठाता श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर

दृते भीष्मे दृते द्रोणे कर्णे च त्रिदिवं गते।
आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान् ॥19॥

महाभारत मे विदुर जी धृतराष्ट्र को कहते हैं भीष्म और द्रोण के मर जाने पर और कर्ण के भी स्वर्ग चले जाने पर अब शैल्य पांडवों को जीतेंगे ऐसी तृष्णा बनी हुई है इसीलिए तो कहता हूं हे राजन् ! तृष्णा बड़ी बलवान है।

आशा हि परम दुःखं नैराश्यं परम सुखम्।
यथा संछिद्य कान्ताशा सुख सुष्वाप पिङ्गला ॥20॥

आशा परम दुःख है, निराशा परम सुख है इसीलिये प्रियतम की आशा छोड़कर पिंगला नामक वैश्या सुख पूर्वक सोई।

उपकारः परोधर्मः परार्थ कर्म नैपुणम्।
पात्रे दानं परः कामः परोमोक्षो वितृष्णया ॥21॥

परोपकार परम धर्म है दूसरों के लिये कर्म करना चतुरता है पात्र को दान देना श्रेष्ठ कर्म है परन्तु तृष्णा के त्याग से उत्तम मोक्ष प्राप्त होता है।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमाश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥22॥

जो मनुष्य सभी कामनाओं को त्याग कर इच्छा रहित, ममता रहित और अहंकार रहित हो जाता है वह शान्ति को प्राप्त होता है।

जीर्य्यन्ते जीर्य्यतः केशा दन्ता जीर्य्यन्ति जीर्य्यतः।
जीर्य्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते ॥23॥

बूढ़े होते हुए मनुष्य के बाल सफेद हो जाते हैं, दांत गिर जाते हैं, आंखें और कान जवाब दे जाते हैं एक तृष्णा ही है जो सदा जवान सी रहती है।

काम जानामि ते मूलं संकल्पात्किल जायसे।
संकल्पे तु मया त्यक्ते कथं त्व मपि जायसे ॥24॥

हे काम मैं तेरी जड़ को जानता हूं कि तू सकल्प से ही पैदा होता है मैंने तो सकल्प ही छोड़ दिया है तू फिर मुझ में कैसे पैदा होगा?

कामकिङ्करता प्राप्य जनो नो कस्य किङ्करः।
एकं काम परित्यज्य जनोऽसौ कस्य किङ्करः ॥25॥

काम का दास बन कर मनुष्य किसका दास नहीं होता और एक काम को त्याग देने पर वह मनुष्य फिर किसका दास होगा? अर्थात् किसी का नहीं।

या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्या न जीर्यति जीर्यतः।
योऽसौ प्राणान्त को रोगस्तां तृष्णां त्यजतः सुखम् ॥26॥

दुर्बुद्धिजनों द्वारा जो कठिनता से त्याज्य है, जो शरीर के जीर्ण होने पर जीर्ण नहीं होती, जो प्राणों को समाप्त करने वाला रोग है उस तृष्णा को यदि छोड़ दिया जाये तो सारा जीवन सुखमय हो जाता है।

यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
तृष्णाक्षय सुखस्यैतेः नार्हतः षोडशीं कलाम् ॥27॥

दुनियां में जो काम रूपी सुख है अथवा और भी जो दिव्य महान सुख हैं ये सब सुख तृष्णाक्षय से उत्पन्न सुख के सोलहवें भाग की भी समानता प्राप्त नहीं कर सकते।

नाह्ना पूरयितु शक्यां न मासैर्भरतर्षभ।
अपूर्यां पूरयन्निच्छामायुषाऽपि शक्नुयात् ॥28॥

हे भारत श्रेष्ठ? यह तृष्णा न दिनों में पूरी होती है न महीनों में कभी पूरी न होने वाली इस तृष्णा को पूरा करने के लिये यह सम्पूर्ण आयु भी समर्थ नहीं।

धर्मार्थं यस्य वित्तेहा वरं तस्य निरीहता।
प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ॥29॥

धर्म के लिये जिसे धन की इच्छा है इससे तो यह अच्छा है कि वह इच्छा रहित रहे। कीचड़ में नहाने से उसे स्पर्श न करना ही अच्छा है।

ते धन्याः पुण्यभाजस्ते तैस्तीर्णः क्लेशसागरः।
जगत्संमोहजननी यैराशाशीविषी जिता ॥30॥

वे धन्य हैं, वे पुण्य आत्मा हैं, उन्होंने हो दुःख का सागर पार किया है जिन्होंने जगत को मोहित करने वाली तृष्णा रूपी सर्पणी को जीता है।

आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ॥31॥

जो लोक तृष्णा के दास हैं वे समस्त संसार के दास हैं जिनकी तृष्णा दासी है उनका समस्त संसार दास बन जाता है।

[illegible]
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम् ॥32॥

जिसके अंग शिथिल हो गये हैं, सिर सफेद हो गया है, मुख दांतों से रहित होकर खाली हो गया, ऐसा वृद्ध मनुष्य डण्डा हाथ में लेकर चलता है, फिर भी तृष्णा उस का पीछा नहीं छोड़ती।

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायु ॥33॥

रात-दिन, साय-प्रातः, शिशिर और वसन्त ये बार-बार आते हैं समय बीत रहा है, आयु जा रही है परन्तु तृष्णा रूपी वायु फिर भी पीछा नहीं छोड़ती।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥34॥

भोग नहीं भोगे गये अपितु हम ही भोगे गये हैं, तप नहीं तपा गया अपितु हम ही सताप गये हैं, समय नहीं बीता अपितु हम ही बीत गये, तृष्णा तो जीर्ण नही हुई अपितु हम ही जीर्ण हो गये।

वपुः कुब्जीभूतं गतिरपि तथा यष्टिशरणा,
विशीर्णा दन्तालिः श्रवणविकलं श्रोत्रयुगलम्।
शिरः शुक्लं चक्षुस्तिमिरं पटलैरावृतमहो,
मनो मे निर्लज्जं तदपि विषयेभ्य स्पृहयति ॥35॥

शरीर कुबड़ा हो गया और चलना भी अब लाठी के सहारे हो गया, दांतों की पंक्ति गिर गई, कान सुन नहीं सकते, सिर सफेद हो गया, आंख में अन्धेरे ने घर कर लिया परन्तु दुःख है कि मेरा निर्लज्ज मन अब भी विषयों की तृष्णा रखता है।

खलोल्लापाः सोढाः कथमपि तदाराधनपरा,
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा।
कृतश्चित्तस्तम्भः प्रतिहतधियामञ्जलिरपि,
त्वमाशे मोघाशे किमपरमतो नर्तयसि माम् ॥36॥

ऐ तृष्णे? दुष्टों को प्रसन्न करने के लिये मैंने उनके प्रलाप भी जैसे-तैसे सहे। आंसुओं को अन्दर ही अन्दर पीकर सूने मन से (न चाहते हुए भी) हंसता रहा, हृदय को थामकर मूर्खों के सामने हाथ भी फैलाया, अरी व्यर्थ तृष्णे? तू मुझे और क्या-क्या नाच नचाना चाहती है?

उत्खातं निधिशंकया क्षितितलंध्माता गिरेर्धातवो,
निस्तीर्णः सरिता पतिर्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः।
मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः,
प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम् ॥37॥

अयि तृष्णे? खजाना मिलेगा इस आशा में मैंने खजाने खोदी, पर्वतों की धातुओं को उलट-पुलट किया, समुद्र पार किये, राजाओं को प्रयत्न पूर्वक सन्तुष्ट किया, मन्त्र जपते-जपते श्मशान में रात्रियां व्यतीत की, परन्तु वहां कौड़ी भी प्राप्त न हो सकी अरी तृष्णे अब तो तू छोड़।

भ्रान्तं देशमनेकदुर्गविषयं प्राप्तं न किंचित्फलं,
त्यक्त्वा जातिकुलाभिमानमुचितं सेवा कृता निष्फला।
भुक्तं मानविवर्जितं परगृहेष्वाशकया काकवत्,
तृष्णे जृम्भसि पापकर्मनिरते नाद्यापि सन्तुष्यसि ॥38॥

अनेक कठिन मार्ग वाले देशों में घूमता रहा कुछ भी फल प्राप्त न किया, अपनी जाति और कुलोचित अभिमान त्याग कर सेवा भी की परन्तु निष्फल गई, मान रहित होकर दूसरों के घरों में कऊवों के समान शंका भरे मन से खाया भी परन्तु पाप कर्म में लगी ए तृष्णे? तू निरन्तर बढ़ती ही जा रही है अब भी सन्तुष्ट नहीं होती।

निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतं लक्षं सहस्राधियो,
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपतिर्ब्रह्मास्पदं वाञ्छति,
ब्रह्मा विष्णुपदं हरिः शिवपदं तृष्णावधिं को गतः ॥39॥

निर्धन सौ रुपये चाहता है और सौ रुपये वाला एक हजार चाहता है, हजारों का मालिक लाखों चाहता है लाखों का स्वामी पृथ्वी का राज्य चाहता है, पृथ्वी का स्वामी चक्रवर्ती राज्य चाहता है, चक्रवर्ती राजा इन्द्र का पद चाहता है इन्द्र ब्रह्मा का पद चाहता है, ब्रह्मा विष्णु का पद चाहता है विष्णु शिव का पद चाहता है, तृष्णा का अन्त किसने पाया है?

भ्रान्तं याचनतत्परेण मनसा देहीतिवाक् प्रेरिता,
भुक्तं मानविवर्जितं परगृहे साशङ्कितं काकवत्।
साक्षेपं भ्रुकुटीकटाक्षकुटिलं दृष्टं खलानां मुखं,
तृष्णे देवि यदन्यदिच्छसि पुनस्तत्रापि सज्जा वयम् ॥40॥

मांगने में लगे हुये मन से धन दो, पैसा दो कहते-कहते सारी दुनियां घूम ली, दूसरे के घर में कऊवे के समान शंकित मन से मान रहित भोजन भी किया, आक्षेप से भरी हुई भृकुटियों वाली कुटिल आंखों से दुष्ट पुरुषों का मुख भी देखा है हे तृष्णा देवी? यदि तू और भी कुछ चाहती है तो हम उसके लिये भी तैयार हैं।

सम्पादकीय—

गुरुकुल करतारपुर में गुरु पूर्णिमा

आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार गुरु और शिष्य का एक विशेष सम्बन्ध है। और वह एक प्रकार से माता पिता और उसकी सन्तान के सम्बन्ध से भी अधिक महत्त्व रखता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के दिल में अपने गुरु विरजानन्द जी लिये कितनी श्रद्धा थी इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वामी जी महाराज ने यह विशेष रूप से लिखा है कि "यह ग्रंथ श्रीमद्परमहंस परिव्राजकाचार्य परमविद्वान श्री गुरु विरजानन्द सरस्वती स्वामी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी ने लिखा है,। इसी गुरु शिष्य की भावना को क्रियान्वित करने के लिये श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। और इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रारम्भ में इस गुरुकुल से जो स्नातक शिक्षा प्राप्त कर के निकले थे उनके दिलों में गुरु और शिष्य की वहीं भावना थी जिससे प्रेरित होकर स्वामी जी महाराज ने गुरुकुल की स्थापना की थी। आज वह सब चौपट हो गया है। उस गुरुकुल में न कोई अब गुरु है न ही कोई शिष्य है। राजकीय शिक्षा प्रणाली के अनुसार जो शिक्षा संस्था चलाई जाती है उसमें गुरु और शिष्य का कोई सम्बन्ध नहीं होता। परन्तु आर्य समाज अभी भी अपने अतीत से प्रेरणा ले कर कई ऐसी संस्थायें चला रहा है जिन पर वह गर्व कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह सौभाग्य है कि पंजाब जैसे प्रदेश में आज भी ऐसी संस्थायें चल रही हैं जिन में गुरु और शिष्य के उसी सम्बन्ध को रचनात्मक रूप देने का प्रयास किया जाता है जो आर्य संस्कृति के अनुसार अवश्यक है। एक संस्था दीनानगर में दयानन्द मठ के नाम से चलाई जा रही है जहां संस्कृत पढ़ाई जाती है और श्री स्वामी सर्वानन्द के संरक्षण में यह विद्यालय चल रहा है। वहां भी संस्कृत के द्वारा ही शिक्षा दी जाती है। इसी प्रकार दूसरी संस्था करतारपुर में गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय के नाम से चल रही है। यह भी संस्कृत का एक बहुत बड़ा केन्द्र बनती जा रही है। वहां के बच्चे प्रारम्भ से ही संस्कृत पढ़ते हैं। और जब वह बड़े हो जाते हैं तो उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों की शिक्षा भी दी जाती है। इस विद्यालय के ब्रह्मचारी जब संस्कृत में भाषण देते हैं तो उन पर गर्व होता है कि यह हमारी नई पीढ़ी वैदिक संस्कारों के अनुसार उभर रही है। इस गुरुकुल में प्रत्येक वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर एक समारोह किया जाता है। उसमें पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने गुरुजनों का सम्मान करते हैं और वैदिक परम्पराओं के अनुसार यह प्रण करते हैं कि वह बड़े होकर अपने गुरुजनों के आदेशों के अनुसार चलेंगे। करतारपुर का यह गुरुकुल एक छोटी सी संस्था है परन्तु यह संस्था काम बहुत बड़े बड़े करती है। मैं नहीं कह सकता कि किसी और गुरुकुल में भी गुरु पूर्णिमा के दिन इस प्रकार का समारोह किया जाता है या नहीं। इस प्रकार इस गुरुकुल ने शेष सभी शिक्षा संस्थाओं, विशेष कर गुरुकुलों का इस विषय में नेतृत्व किया है। जो दूसरे गुरुकुल नहीं कर सके वह इस गुरुकुल ने करके दिखाया। आठ जुलाई 1990 को जब गुरु पूर्णिमा समारोह मनाया गया उस दिन दो संसद सदस्य श्री कृष्ण लाल जी शर्मा और श्री प्रेम कुमार जी धूमल को भी सम्मानित किया गया। क्योंकि उन्होंने संसद में संस्कृत भाषा में शपथ ली थी। आर्य समाज की परम्पराओं के अनुसार जब एक शिष्य अपने गुरु की इस प्रकार पूजा करता है तो ऐसे अवसर पर कुछ न कुछ दक्षिणा भी देता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने गुरु श्री स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती को जब कुछ लौंग पेश किये थे तो स्वामी विरजानन्द जी ने कहा था कि उन्हें लौंगों की आवश्यकता नहीं थी। वह तो यह दक्षिणा चाहते हैं कि दयानन्द संसार में वेदों का डंका बजाये और जो अन्धकार हमारे देश में फैला हुआ है उसे वेदों के प्रकाश से दूर करने का प्रयास करे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु के सामने इसके लिए प्रतीज्ञा की और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने इस प्रतीज्ञा को तन मन धन से पूरा किया।

गुरुकुल करतारपुर में इस समय 130 के लगभग विद्यार्थी पढ़ते हैं और इन सबको निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। अब हमारी बहुत कम संस्थाएं ऐसी हैं जहां निःशुल्क शिक्षा दी जाती हो। इस दिशा में भी गुरुकुल करतारपुर ने अन्य गुरुकुलों को एक नया मार्ग दिखाया है। जैसा कि मैंने पहले लिखा है कि यह एक छोटी सी संस्था है परन्तु हम जानते हैं कि कई बार एक छोटा सा दीपक अपने चारों तरफ के अन्धकार को मिटा देता है। यही कुछ करतारपुर का यह गुरुकुल कर रहा है। इसके लिये मैं इसकी प्रबन्धकर्त्री सभा के प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा, महामन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल, उपप्रधान श्री रोशन लाल जी गुप्ता, आचार्य श्री नरेश जी शास्त्री और अधिष्ठाता श्री सुखदेव राज जी शास्त्री और सारी प्रबन्धकर्त्री सभा को बधाई देता हूं। यह गुरुकुल दूसरे गुरुकुलों का भी मार्गदर्शन कर रहा है। यदि वह भी इस छोटे से गुरुकुल से किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर सकें तो हमारे गुरुकुलों का ध्येय सार्थक हो सकता है।

—वीरेन्द्र

चतुर्वेद गंगा लहरी

यह इस लेख का शीर्षक भी है और उस पुस्तक का नाम भी है जो आदरणीय पंडित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ने लिखी है। वेदों पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। परन्तु इसमें एक विशेषता यह भी है कि पंडित जी ने चारों वेदों में से 106 मन्त्र चुन कर उनका हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अनुवाद किया है। आज हमारे देश में और बाहर भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अंग्रेजी भाषा के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त करते हैं। उनमें से कई कहा करते हैं कि वह संस्कृत नहीं जानते। इसलिये पंडित जी ने उनकी समस्या का समाधान कर दिया है। 106 मन्त्रों का हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद करके उनके लिये वेद के स्वाध्याय का रास्ता खोल दिया है। जिन महानुभावो ने यह पुस्तक पढ़ी है उनका कहना है कि ऐसी पुस्तकें बहुत कम मिलती हैं। भारत सरकार के भूतपूर्व नियन्त्रण महालेखा परीक्षक श्री डी० एन० चतुर्वेदी ने इस पुस्तक के विषय में लिखा है कि "चतुर्वेद गंगा लहरी भारतीय संस्कृति के किसी भी प्रेमी के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमे चारों वेदो में से चुने हुए सूक्तों का विशेष परिश्रम से अपूर्व संग्रह किया गया है। इस ग्रन्थ मे मन्त्रों के पारस्परिक और पारम्परिक सम्बन्ध को ध्यान में रखा गया है। इसी के साथ-साथ इसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अनुवाद तथा विश्लेषण किया गया है। इससे दूसरे देशों के तथा भारत के हिन्दी जानने तथा न जानने वाले जिज्ञासु लाभान्वित होंगे।"

श्री पंडित सत्यव्रत जी ने पहले भी कई ऐसी पुस्तकें लिखी हैं जिनका हमारे धर्म और संस्कृति से सीधा सम्बन्ध है। गीताभाष्य, एकादशोपनिषद, संस्कार चंद्रिका और वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व। यह सब पुस्तकें उन्होंने हिन्दी में लिखी हैं। उनके लिखे ग्रन्थ सब आर्य समाजों और शिक्षा संस्थाओं में होने चाहिएं, विशेषकर चतुर्वेद गंगा लहरी नाम का यह ग्रन्थ जो उन्होने अब लिखा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इसकी कुछ प्रतियां मंगवा रही है जो महानुभाव इसे लेना चाहें वह सभा कार्यालय से सम्पर्क करके ले सकते हैं। इसकी एक प्रति का मूल्य 100 रुपये होगा। प्रत्येक शिक्षा संस्था को अपने पुस्तकालय में यह पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये।

—वीरेन्द्र

साहित्य वितरण की ओर ध्यान दीजिए

आर्य समाज का प्रचार या तो उपदेशकों ने किया है या साहित्य के द्वारा हुआ है। अब पंजाब में बहुत कम उपदेशक रह गये है। इसलिये भी यह आवश्यक है कि साहित्य के द्वारा ही अधिक से अधिक प्रचार किया जाए। सभा के पास कई प्रकार की छोटी बड़ी पुस्तकें पड़ी हैं जिनके द्वारा आर्य समाजें वेद का प्रचार कर सकती हैं। आर्य मर्यादा में समय-समय पर उनकी सूची प्रकाशित होती रहती है। मेरी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से विनम्र प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक साहित्य मंगवा कर उसका वितरण करें। हमारा यह भी प्रयास है कि कुछ नये छोटे-छोटे ट्रैक्ट और प्रकाशित करवाए जायें। सभा के चमूपति साहित्य विभाग के नये अधिष्ठाता श्री धर्म प्रकाश जी दत्त इस ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। यदि किसी आर्य समाज के पास पुराने और उपयोगी ट्रैक्ट पड़े हों तो उनकी एक या दो प्रतियां सभा कार्यालय में भेज दें। हम उनमें से ही कुछ ट्रैक्ट छपवा कर प्रचार के लिये आर्य समाजों को देना चाहेंगे। आशा है आर्य समाजों के अधिकारी महानुभाव इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

—वीरेन्द्र

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियां—2

ले०—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

भारत के राजनीतिक नेताओं का कहना है कि हम धर्मनिरपेक्ष हैं, भारत धर्मनिरपेक्ष है, यह नितान्त मिथ्या कथन है। न तो भारत के नेता ही धर्मनिरपेक्ष हैं और न इन लोगों की परिभाषानुसार भारत ही धर्मनिरपेक्ष है। भारत तो वर्तमान स्थिति में नितान्त "मुस्लिम राष्ट्र" है या कम से कम वह भूभाग तो अवश्यमेव है, जिसे भारत के यह तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता अपनी धर्मनिरपेक्षता की पूर्ति के लिये यहां रह रहे मुसलमानों के साथ मिलकर दारूल इस्लाम में परिवर्तित कर देने के लिये प्रयत्नशील हैं। कारण स्पष्ट है कि हिन्दुओं को मूर्ख बनाने के लिये यह लोग संसार में अपनी उदारता का ढोल पीटने के लिए स्वय को और भारत को धर्मनिरपेक्ष भले ही कहते हैं किन्तु पक्ष प्रत्येक मूल्य पर मुसलमानों का ही लेते हैं।

गाधी जी तो भारत में बसे मुसलमानों को ही नहीं अपितु पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिये भी भारत की अस्मिता को न केवल स्वयं ठुकराते रहे अपितु अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक पाकिस्तान के चरणों में डालते रहे और इसका प्रमाण है अरबों रुपया भारत का बंटवारे के समय का पाकिस्तान पर शेष रहते हुए भी आमरण अनशन करके पचपन करोड़ राशि का ड्राफ्ट भारत से पाकिस्तान को और दिला दिया। इन्हीं महात्मा जी की अदूरदर्शिता के परिणामस्वरूप पाकिस्तान में लाखों हिन्दुओं की हत्या हुई। पता नहीं कितने शिशुओं और महिलाओं को बलात् मुसलमान बना लिया गया और कितनी महिलाओं के सतीत्व भंग हुए और अकेले पाकिस्तान के रावलपिण्डी नगर की सड़कों पर ही तेरह सहस्र हिन्दू महिलाओं को निर्वस्त्र करके उनका प्रदर्शन निकाला गया, परन्तु धर्मनिरपेक्षता के इन पुजारियों को लेश मात्र भी लज्जा न आई। न महात्मा जी आमरण अनशन करने रावलपिण्डी गये और न एक दिन की भी भूख हड़ताल करके उन्होने अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर पश्चाताप के आंसू बहाये।

फिर उसके बाद......

पहले तो गांधी जी के मुख्य और परम शिष्य श्री जवाहरलाल नेहरू काश्मीर के भारत में विलय को तैयार नहीं थे तथा विलय के लिए कश्मीर के तात्कालिक महाराजा हरिसिंह द्वारा प्रेषित दस्तावेज को लेकर आये कश्मीर राज्य के तात्कालिक प्रधानमन्त्री (दीवान) श्री मेहरचन्द महाजन को अपमानित कर अपने निवास से बाहर निकाल दिया था जब श्री महाजन यह कहकर चल दिये कि "कश्मीर का विलय भारत में नहीं तो पाकिस्तान में होगा, अब मेरा हैलीकाप्टर दिल्ली से श्रीनगर नहीं, कराची (पाकिस्तान की तात्कालिक राजधानी) जाएगा। मैं श्रीनगर पर बम्बार्डमेण्ट होकर उसे बरबाद नहीं होने दूगा। तब शेख अब्दुल्ला के कहने पर......जो उस समय वहां उपस्थित था......नेहरू जी विलय को तैयार हुए। अब्दुल्ला ने ही दौड़कर महाजन को रोका था। और फिर उसके बाद......

काश्मीर का विलय भारत में किया तो किन्तु धारा 370 जोड़कर काश्मीर की विशेष स्थिति बनाकर शेख अब्दुल्ला को मुख्यमन्त्री ही नहीं, प्रधानमन्त्री बनाकर उसका भारत से पृथक् विधान और पृथक् प्रधान (सदर-ए-रियासत) बनाकर तथा महाराजा हरिसिंह को उनकी राष्ट्रभक्ति भारत मे काश्मीर के विलय की निष्ठा के दण्ड स्वरूप उनके काश्मीर जाने पर प्रतिबन्ध लगाकर, भारत की सेनाओं ने पाकिस्तानी सेनाओं को जब मारकर भगा दिया और अन्तिम मोर्चा गिलगित का क्षेत्र शेष था, तब काश्मीर का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाकर तुरन्त युद्धबन्दी के आदेश कर काश्मीर के तिहाई भाग को पाकिस्तान के हाथों में सौंप दिया, काश्मीर का विलय भारत में हो चुका था, फिर उसे संयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाने की क्या आवश्यकता थी? यदि युद्धबन्दी की घोषणा शीघ्रता में न की गई होती तो काश्मीर के जिस भाग पर अब तक पाकिस्तान का अधिकार है, वह भी तभी पाकिस्तानियों से ठीक करा लिया जाता।

इस समय काश्मीर में जो कुछ हो रहा है, वह न होता यदि काश्मीर की पृथक् स्थिति बनाये रखने के लिए धारा 370 संविधान में न जोड़ दी गई होती। उसी धारा 370 के परिणामस्वरूप बने नागालैण्ड और मिजोरम पंजाब समस्या भी इसी धारा की देन हैं। भारत में कभी झारखण्ड की मांग उठती है तो कहीं गोरखालैण्ड की। कहीं बोडो आन्दोलन चल रहा है तो कहीं उत्तराखण्ड......यह सब इसी धारा पृथक्करण की जनती है किन्तु भारत के एक के बाद एक आने वाले सभी राजनीतिक नेता इसे अवश्य बनाये रखना चाहते हैं। पता नहीं इससे राष्ट्र की किस समस्या का हल करना चाहते हैं? इससे तो भारतीय शासनरूढ़ नेताओं की मूर्खता ही प्रमाणित होती है। यह नेता अपने पास तो इतनी बुद्धि रखते नहीं किन्तु दुराग्रही स्वभाव के कारण अन्य किसी की मानने को तैयार भी नहीं होते, तथ्य यह है कि यह लोग राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से तो नितान्त अयोग्य हैं, साथ ही अपने अहंकारी स्वभाव के कारण दुराग्रहपूर्वक इस धारा को संविधान से नहीं हटा रहे। भारत के इन नेताओं को भारत की लेश मात्र भी चिन्ता नहीं। यह लोग घड़ियाली आंसू बहाते हैं और अपनी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा की नमाज के दो सजूद लोकैषणा तथा भोगविलास पूरे करने में लगे हैं।

पाठकगण ध्यान दें कि भारत में कश्मीर का निष्ठापूर्वक विलय करने वाले महाराजा हरीसिंह को तो कश्मीर से बाहर बम्बई में ही अपना जीवन बिताने और समाप्त करने को बाध्य कर दिया किन्तु हैदराबाद के तात्कालिक निरंकुश शासक आसफजाह को जिसने खुलकर देशद्रोह का अवलम्बन लिया और शस्त्र-सज्जा के साथ अपने रजाकार सैनिकों को भारतीय सेना से युद्ध के लिये मैदान में उतारा, जिसने तीन दिन जमकर भारतीय सैन्य से लड़ाई लड़ी, उसी को हैदराबाद का राजप्रमुख बनाया। जिसे आजीवन जेल के सीखचों में बन्द रखा जाना चाहिए था उसे राजप्रमुख के पद पर सौभाग्यमान कर पुरस्कृत किया और जिस महाराजा हरिसिंह को भारत का सम्मानित राष्ट्रपति पद देना चाहिए था, उसे उसकी जन्मभूमि कश्मीर के दर्शनों तक के लिए तरसते हुए तड़प-तड़प कर बम्बई में प्राण [illegible] को बाध्य कर दिया।

चाहे जवाहरलाल नेहरू हों या उनकी पुत्री इन्दिरा गांधी अथवा अन्य कोई—हैं सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। न्याय नैतिकता को दूर फैंक और धर्मनिरपेक्षता की शपथ ले-लेकर अपनी मुस्लिम तुष्टिकरण की घोर साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रघातिनी पगडण्डी पर ही यह सब चलते हैं। मुस्लिम लीग से बार-बार समझौते करना और प्रत्येक पग राष्ट्रद्रोही मुसलमानों को महत्त्व प्रदान कर पूरे मुसलमान समुदाय को राष्ट्रद्रोह के लिये प्रोत्साहित करना इन नेताओं का मुख्य कर्तव्य बना हुआ है। नेहरू जी के दोहित्र और और इन्दिरा जी के पुत्र श्री राजीव जी प्रधानमन्त्री बने तो विदेशों में जाकर "जिस दिन भारत के मुसलमान बगावत पर उतारू होकर सड़कों पर निकल आयेंगे, भारत की सेनायें उनका मुकाबला नहीं कर सकतीं।" शहाबुद्दीन का विदेशों में दिया गया यह बयान मां के दूध की भांति गटा-गट पी गये। यदि कोई राष्ट्रभक्त वीर पुरुष उस समय प्रधानमन्त्री होता तो सैयद शहाबुद्दीन का परमिट स्थगित करा उसे तुरन्त भारत बुलाकर जेल के सींखचें बन्द करता और उस पर देशद्रोह का अभियोग चलाकर उसे जीवन भर के लिए कारागार वासी बना देता।

दूसरा राष्ट्रद्रोही मौलाना ओबेदुल्ला खां आजमी—जिसने कहा था कि—"हम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं। हाईकोर्ट तो दूर की बात है, सुप्रीम कोर्ट भी अगर "मुस्लिम पर्सनल ला" को चैलेन्ज करेगी तो हम सुप्रीम कोर्ट का भी हर फैसला जूतें की नोक पर रखेंगे।" भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपनी साम्प्रदायिक और राष्ट्रघातिनी मनोवृत्ति का परिचय उस दिन दिया, जब भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से विरुद्ध अपने पूर्ण बहुमत के बल पर संसद में निर्णय करा के राष्ट्र के स्वाभिमान को एक राष्ट्रद्रोही के जूते की नोंक पर रखकर उड़वा दिया। जबकि ओबेदुल्ला खां को उसके इस राष्ट्रीय अपमान से भरे और राष्ट्रद्रोह पूर्ण बयान पर जेल की हवा खिलानी चाहिये थी।

श्रद्धांजलि एवम् क्रिया रस्म

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवम् दानवीर श्री [illegible] की धर्मपत्नी श्रीमती [illegible] देवी नागपाल का 24-6-90 को निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा 27-7-90 को हुई। इस अवसर पर 1003 रु० शहीद परिवार [illegible] विभिन्न संस्थाओं के लिए दान दिया गया।

—[illegible]

विश्व हिन्दी सम्मेलन

12-13-14 जुलाई 1991 को ओकलेण्ड विश्वविद्यालय मिशीगन अमेरिका में होगा। विशेष जानकारी के लिए आर्य समाज मिशीगन पोस्ट-बाक्स 296-[illegible] एम० आई० 48801 अमेरिका से प्राप्त कर सकते हैं।

नव निर्वाचित महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा : एक परिचय

आर्य प्रतिनिधि पंजाब का 24-6-90 को जालन्धर में वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिस में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के आधार पर श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट जालन्धर को सभा का महामन्त्री मनोनीत किया है। श्री शर्मा जी सन 1974 से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित हुए थे और तब से ले कर अब तक निरन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के किसी न किसी पद पर रह कर सेवा करते रहे हैं। इससे पूर्व यह आर्य विद्या परिषद के रजिस्ट्रार के पद पर भी आसीन रहे हैं और कई शिक्षण संस्थाओं का प्रबन्धक के तौर पर संचालन करते रहे हैं। विशेषकर नवांशहर की शिक्षण संस्थाओं का प्रबन्ध कराने में कई वर्ष सहयोग देते रहे। यह सभा के उप प्रधान और सभामन्त्री के पद पर रह कर भी सभा की सेवा कर रहे हैं।

श्री शर्मा जी जालन्धर के आर्य शिक्षा मण्डल के सक्रिय सदस्य हैं और कई वर्ष से दोआबा कालेज और कन्या महाविद्यालय व एन० डी० विक्टर सी० सैं० स्कूल जालन्धर छावनी और दूसरे विक्टर माडल स्कूल के प्रबन्ध में सहयोग देते रहे हैं और आज कल एन० डी० विक्टर सी० सैं० स्कूल आदि की प्रबन्ध समितियों के मन्त्री हैं।

श्री शर्मा जी का जालन्धर के एडवोकेट समुदाय में अपना एक विशेष स्थान है। यह जहां एक सीनियर एडवोकेट हैं वहां जिला बार एसोसिएशन जालन्धर के वरिष्ठ उप प्रधान भी रह चुके हैं।

श्री शर्मा जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अन्तरग सदस्य हैं और सार्वदेशिक सभा की बैठकों में भी सक्रिय रूप से यह भाग लेते है श्री शर्मा जी एक नौजवान कार्यकर्त्ता हैं और आर्य समाज के प्रति इनकी पूर्ण आस्था है।

पंजाब के राज्यपाल : श्री वीरेन्द्र वर्मा

केन्द्र सरकार ने श्री निर्मल कुमार मुखर्जी के स्थान पर श्री वीरेन्द्र वर्मा को पंजाब के चौथे राज्यपाल की नियुक्ति इस आशय से की है ताकि वह आतंकवाद की आग से झुलस रहे पंजाब और पंजाबियों को अपने विवेक एवम कुशल नेतृत्व से राहत दिला सकेंगे।

श्री वीरेन्द्र वर्मा ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ऐतिहासिक नगर शामली (मुजफ्फर नगर) में स्व० श्री रघुवीर सिंह के घर में 18 सितम्बर 1916 को जन्म लिया। इसके पूज्य पिता श्री रघुवीर सिंह एवम ताऊ जी चौ० माम राज सिंह एवम उनका परिवार आर्य समाज एवम जन सेवा के प्रति समर्पित रहा है। श्री वीरेन्द्र वर्मा जी यद्यपि पिछले 50 वर्षों से सक्रिय राजनीति में रहे हैं किन्तु फिर भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्राणीमात्र पर किए गए उपकारों को सदैव याद रखने तथा उसके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए उनका चित्र अपने साथ रखते हैं। यह एक सम्पन्न कृषक परिवार से सम्बन्धित हैं।

सुप्रसिद्ध आर्य समाजी स्व० चौधरी चरण सिंह के कट्टर समर्थक श्री वर्मा जी उत्तर प्रदेश विधान सभा के 1952 से 1980 तक सदस्य रहे तथा प्रदेश के गृहमन्त्री, कृषि मन्त्री, सहकारिता मन्त्री आदि महत्वपूर्ण पदों पर काम किया। वह अप्रैल 1984 तथा इस वर्ष अप्रैल में राज्य सभा के सदस्य चुने गए। श्री वर्मा जी की अपने प्रारम्भिक जीवन से ही खेल कूद और भारतीय शैली की कुश्तियों में रुचि रही है तथा देश और जनता की सेवा ही इनका प्रमुख उद्देश्य रहा है।

पंजाब के राज्यपाल की नियुक्ति एवम् शपथ ग्रहण के बाद अपने भाषण में कहा है कि "मैं अपना जीवन राजनीति से ऊपर उठकर पंजाब की जनता की सेवा, सभी वर्गों और समुदाय की एकता, हिन्दू सिख भाईचारे एवम विश्वास की बहाली, भ्रष्टाचार की समाप्ति, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में विश्वास, निर्धन एवम कमजोर वर्गों का उत्थान तथा आतंकवाद का उन्मूलन करूंगा।

श्री वीरेन्द्र वर्मा अपने उत्तम चरित्र उत्साह कर्त्तव्य निष्ठा तथा उत्साह का परिचय देते हुए अपने पथ से विचलित लोगों को देश की मुख्यधारा में जोड़ने का प्रयास करेंगे तथा महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त होने के कारण उनसे प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार और यदि ना समझें तो यथा योग्य व्यवहार के सिद्धान्त का पालन करेंगे।

श्री वर्मा ने सभी दलों की मीटिंग बुलाकर एक सुखद प्रयास की शुरूआत तो की है किन्तु यह भी अनुभव किया है कि अकाली दलों ने इस शान्ति प्रयास में भाग न लेकर अशान्तिमय वातावरण का रुख ही दिखाया है जिसे सख्ती से निपटना होगा।

परम पिता परमात्मा उन्हें दीर्घायु तथा असीम शक्ति प्रदान करे ताकि वह पंजाब के हिंसामय वातावरण को समाप्त करके प्रेम और भाईचारे का वातावरण तैयार करने में सफल हो सकें।

—हरिवंश लेखी सम्पादक पति (जिला अध्यक्ष आर्य वीरदल सोनीपत)

पाकिस्तान भी बन गया और पंजाबी सूबा भी बन गया—2

ले० श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

लेकिन परमात्मा वहीं का वहीं रहा। बल्कि हालात पहले से भी अधिक खराब हो गए हैं। पाकिस्तान में इस समय क्या हो रहा है हमें इसकी अधिक चिंता नहीं है। यह उनका घरेलू मामला है। लेकिन पाकिस्तान कश्मीर में क्या कर रहा है उसे हम अनदेखा नहीं कर सकते। पाकिस्तान कश्मीर में यह शरारत इसलिए कर रहा है कि वहां बहुसंख्यक मुसलमान हैं। लेकिन मुसलमान तो शेष भारत में भी रहते हैं। दस करोड़ के लगभग अभी भी हैं और यदि कश्मीर पर पाकिस्तान का अधिकार इसलिए बनता है क्योंकि वहां मुसलमान रहते हैं तो कल को वह यह मांग भी कर सकता है कि भारत के अन्य भागों में जहां मुसलमान बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं उन्हें भी पाकिस्तान के साथ मिला दिया जाए। इस समस्या का एक ही हल है कि जो मुसलमान इस समय भारत में रहते हैं उन सबको पाकिस्तान भेज दिया जाए क्योंकि पाकिस्तान जो मांग आज कश्मीर के बारे में कर रहा वही कल को उन क्षत्रों के बारे में भी कर सकता है जहां मुसलमान एक बड़ी संख्या में रहते हैं।

1947 में जब देश का विभाजन हुआ था और पाकिस्तान की स्थापना हुई थी तो उस समय यह भी कहा गया था कि इसके बाद अब भारत में कोई साम्प्रदायिक समस्या नहीं खड़ी होगी। लेकिन 43 वर्ष बाद आज हम फिर घूमघाम कर वहीं आ पहुंचे हैं जहां से चले थे।

यहां कुछ हम पंजाबी सूबा के बारे में भी कह सकते हैं। पंडित जवाहर लाल और सरदार पटेल दोनों पंजाबी सूबा के विरुद्ध थे। दोनों इसे एक साम्प्रदायिक मांग कहते थे। और उनका यह विचार था कि पंजाबी सूबा बन जाने के बाद हालात और भी अधिक खराब हो जाएंगे। अब वही हो रहा है। मास्टर तारा सिंह एक ऐसा पंजाबी सूबा चाहते थे जिसमें सिखों का बहुमत हो। पंडित जवाहर लाल ने उसे एक साम्प्रदायिक मांग कह कर रद्द कर दिया। इस पर संत फतेह सिंह ने कहना शुरू किया कि वह भाषा के आधार पर उसी तरह का एक सूबा चाहते हैं जिस तरह देश की दूसरी प्रादेशिक भाषाओं के आधार पर एक सूबा बना दिया जाए। हरियाणा के जाट तो पहले ही पंजाबी भाषा से पीछा छुड़ाना चाहते थे। जब संत फतेह सिंह ने कहा कि वह भाषा के आधार पर राज्य मांगते हैं तो हरियाणा के जाटों ने उसका समर्थन कर दिया। पंजाब के प्रकाश सिंह बादल और हरियाणा के चौधरी देवी लाल दोनों ने मिलकर पंजाब का विभाजन करा दिया। पंजाबी भाषा के साथ इससे बड़ा धक्का और नहीं हो सकता था। जो भाषा पहले हरियाणा और हिमाचल दोनों में पढ़ाई जाती थी और सरकारी काम काज के लिए भी इस्तेमाल हो सकती थी वह मास्टर तारा सिंह के अनुसार

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य मर्यादा एक आर्य महिला की दृष्टि में

आर्य मर्यादा के पाठको का क्षेत्र दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जो लेख व सूचना इसमे प्रकाशित करने के लिए आते हैं। अब उनके लिए हमारे पास स्थान नही होता। आर्य मर्यादा की लोक प्रियता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि एक आर्य विदुषी श्रीमति अरुणा अरोडा ने भठिण्डा से आर्य मर्यादा मे प्रकाशित लेखो पर समीक्षा भेजी है। एक एक लेख पढ कर उसके विषय मे अपने विचार भेजे हैं। हम इन्हे प्रकाशित कर हैं। ताकि दूसरे पाठक भी इसी प्रकार हमारा मार्ग प्रदर्शन करते रहे आर्य मर्यादा आर्य जनता का प्रवक्ता बन गया है। इस के लिये हम इसके पाठको व सरक्षको के आभारी।

सम्पादक

"आवश्यकता निराशा की नहीं दृढ सकल्प की है

ले०—आचार्य वेद भूषण अक—4 मार्च और 11 मार्च 90

यह लेख पढ कर लगा मेरे मन के भावो को किसी ने लेखनीबद्ध कर दिया है। बहुत बार सोच करती कि हमारा आर्य समाज जिसके सिद्धान्त इतने ऊचे, इतने महान् और वैज्ञानिक तथ्या को तरह सत्य की कसौटी पर खरे उतरते—आज क्यो इतनी जर्जर अवस्था को प्राप्त होता चला जा रहा है। मगर 'छोटे मुह बडी बात' यह यह सोचकर कि नेतृत्व को कुछ कहना उचित प्रतीत नही, अपनी मर्यादा का उल्लघन लगता है, पर आचार्य वेद-भूषण जी का यह लेख पढकर रह न सकी। लगा, सचमुच आज हमारी सगठनात्मक कमजोरी का कारण कही हमारी 'कुर्सी लिप्सा' हो तो नही। क्या हम सब आर्यों को आज यह विचारने की आवश्यकता नही कि हममे से कौन सच्चे त्याग से आर्य समाज की सेवा करने को तत्पर है।" अधिक न लिखती हुई आचार्य जी के ही शब्दो मे—"आवश्यकता है, हम आत्मनिरीक्षण करें और उन दोषो को दूर करें जिनके कारण हम जर्जरित हो चुके हैं। आचार्य जी के विचारों से तथा दिए गये सुझावो से मैं शत प्रतिशत सहमत हू। उनके विभिन्न सुझावो से एक है "उपस्थिति 85 की बजाय 75% रखी जाये।" बल्कि मैं तो कहूगी। जैसे अधिकतम अको को Merit माना जाता है—उसी प्रकार अधिकतम उपस्थिति को नेतृत्व का विशेष गुण माना जाये और हा बैठने के समय को भी। कई लोग, मैंने स्वय देखा है, आते हैं, रजिस्टर मे उपस्थिति लगाई, घडी देखकर पाच मिनट (हा जी, पूरे पांच ही मिनट, इसमें अतिश्योक्ति नहीं) बैठे और गये।

दूसरा सुझाव—सब समाजो की नियमावली मे एकरुपता तीसरा—आय व्यय लेखा परीक्षक दल। यह तो अति आवश्यक है, क्योकि जर, जमीन जोरू के अनुसार भी धन की गडबडी विशेष झगडो की जड है।

चौथा—Quantity नहीं Quality बढाई जाये। विशेष रूप से नेता का चुनाव करते समय उसकी योग्यताओ मे कुछ तो नियमो का पालन विशेष रूप से जोडा जाये। वह 'नेता' आर्य समाज के नियमो का क्या प्रचार व प्रसार करेगा जो सब पाखण्ड करता है। धागे तावीज, वृक्ष पूजा, पत्थर पूजा, मदिरापान—सब कुछ करता है। प्रश्न उठ सकता है किसी के माथे पर तो नहीं लिखा होता, यह सब। मगर सिद्ध हो जाने पर, बिना एक क्षण भी लगाये उनको हटाया जा सकता हो, ऐसा कोई नियम होना चाहिए। उनके लिए तो कोई विशेष आचार सहिता होनी चाहिए।

पाचवा—रचनात्मक कार्य प्रत्येक आर्य समाज को आवश्यक रूप से करना पडे। उसकी रिपोर्ट भेजी जाये। इसके अतिरिक्त, विशेष रूप से आर्य विद्यालयो मे यज्ञ हवन—सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार व प्रसार तथा सस्कृत पढने पढाने की व्यवस्था अवश्य हो। यदि कही पर न हो, उस समाज के अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही हो। यह पक्ति Out of Record समझी जाये—यहा के आर्य विद्यालय में लगभग एक वर्ष से हवन नही हो रहा—और मैं स्वय व्यक्तिगत रूप से अधिकारियों की निगाह में यह बात लाई लेकिन व्यर्थ। क्योंकि अधिकारी-अधिकारी आपस में मिले हुए होवें हैं। मगर सचमुच सच्चाई जानना चाहें तो इस School के विद्यार्थियों से बात कर सकते हैं, मगर अधिकारी शायद सत्य नहीं बतायेंगे।

और अन्त में आचार्य जी ने बिल्कुल उचित लिखा है कि "किसी भी समस्या पर विचार करते समय हम राग द्वेष से बचकर तथा व्यक्तिगत दोषारोपण से बचकर शुद्ध हित भावना से विचार करें तो समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

एक और सुझाव जो मेरा अनुभव है—आर्य समाज के पुरोहित का पद चुकि वैतनिक कर्मचारी का सा होता है अत वह निर्भयता से सत्य नहीं कह सकता बल्कि अधिकारियो की ठकुर सुहाति' बात करनी पडती है। क्या कोई ऐसी व्यवस्था नही हो सकती कि पुरोहित की नियुक्ति तथा वेतन प्रान्तीय सभा की ओर से दिया जाए जिससे उसे स्थानीय अधिकारियो से डरना न पडे। मैंने स्वय देखा है, और आश्चर्य से दातो तले उगली दबाई है—जब भी कोई function (उत्सव) आर्य समाज मे होता है तो पुरोहित जी की स्थिति केवल एक कर्मचारी जैसी होती है, जिनका काम माइक का ध्यान रखना, तथा अन्य सामान आदि की व्यवस्था करना। यहा तक की पुरोहित जी की पत्नि ने 'जल पिलाने' का काम किया मगर मैंने इन्कार कर दिया और कहा कि यह काम आप नही हम करेंगे।

जो समाजें 'विद्वानो' से इस प्रकार काम लेती हैं, वह वेदो का, विद्वानो का, ज्ञान का आदर करने का दिखावा मात्र करती है और साधारण जनता दिखावे व वास्तविकता में अन्तर बहुत जल्दी समझ लेती है। जनता कुर्बानी व त्याग पसन्द करती है—दिखावा नही। मैं कहती हू पुरोहित की नियुक्ति की ऐसी व्यवस्था हो कि उनकी उपस्थिति में स्थानीय अधिकारी नीच या सिद्धान्तहीन कार्य करते हुए डरें। और पुरोहित भी केवल मात्र ईश्वर से डरने वाले हो और किसी से नही।

अन्त मे, मैं इस लेख से, इसमे दिये गये सुझावों से पूर्णतया सहमत हू कि जल्दी से जल्दी इनको क्रियान्वित रूप देने पर विचार किया जाये।

आचार्य जी, बधाई के पात्र हैं जो इतनी निडरता से उन्होने नेतृत्व को आत्मनिरीक्षण के लिए सकेत दिये हैं। आशा करती हू कि नेतृत्व भी इस बात पर गम्भीरता से विचार करने के लिए कोई कदम उठायेगा। उदारदिली से, विशाल हृदय से, आर्य समाज की उन्नति के दृष्टिकोण से। ऐसे वक्ता, श्रोता दुर्लभ ही होते हैं।

> "लभ्यन्ते पुरुषा राजन् सतत प्रियवादिन।
> प्रियस्य तु पथ्यस्य, वक्ता, श्रोता, च दुर्लभा.॥

4 मार्च, 90 'आर्य समाजों से एक निवेदन'

आपका अपना लिखा हुआ निवेदन, बहुत अच्छा लगा। अच्छे कार्य के लिए सम्मानित करने से, उत्साह बढता है, हिम्मत बढती है, कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। पुन: आपने, स्कूलों कालेजों में भी आर्य समाज के अच्छे कार्य कर्त्ताओ को सम्मानित करना चाहा है।

आपने यह सुझाव आर्य समाजों को दिया है। पर यहा मेरी समझ में एक बात नहीं आई—आप स्वय आर्य समाजों की meeting में यह प्रस्ताव रखकर, पास करवा कर, लागू करवा सकते हैं। यदि आप भी सुझाव देकर ही छोड देंगे तो सुझावों को क्रियान्वित रूप कौन देगा? क्या प्रान्तीय सभा मे, इस प्रकार की बातो की, प्रस्तावो की रूप रेखा सबके सामने रखकर, उसे लागू करवाना, आपके अधिकार क्षेत्र मे नही आता मेरी प्रार्थना है और हार्दिक इच्छा भी आर्य समाज के लिए तन मन-धन लगा देने वालों को प्रोत्साहित करना ही चाहिए और उन लोगो को निरुत्साहित या दण्डित भी जो उच्च-पदो को प्राप्त करके भी—आर्य समाज से मूल व मुख्य सिद्धान्तो को भी नहीं मानते आप इस विषय मे जो भी कर सकते हो, अवश्य करें।

एक बात और समझना चाहूगी कि सन्यासी, वानप्रस्थी पुरोहित—क्या इन सबकी मर्यादा मे, आचार सहिता मे प्रथम विशेषता—"निर्भयता से सत्य वादन" नही होनी चाहिए। क्या 'धर्मगुरु' का स्थान 'राजा' से भी ऊचा नही होता। क्या 'ऋषि आज्ञा' 'राजाज्ञा' से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होती। यदि यह सत्य है तो मेरे विचार मे उस किसी भी वानप्रस्थी, सन्यासी या पुरोहित को मच पर, धर्म गुरु के उच्च आसन पर बैठने का कोई अधिकार नही जो भाई भतीजावाद के चक्कर मे पडकर अथवा किसी अन्य भय के कारण सत्य नहीं कह सकता।

यहीं से तो फिर विश्वास उठता चला जाता है साधारण जनता का। "ये मच पर बैठे लोग' उन सस्थाओ के प्रतिनिधि होते हैं जिनके मच पर 'ये' बैठते हैं। इनके अच्छे या बुरे व्यवहार से उस सस्था का यश या अपयश फैलता है। इन मच पर बैठने वालो का व्यवहार तो 'अनुकरणीय' होना चाहिए। गीता मे श्रीकृष्ण जी ने कहा है—

> "यद् यदाचरति श्रेष्ठस् तत् तदेवेतरों जन।
> स यत् प्रमाण कुरुते, लोकस् तदनुवर्तते॥

अत घूम फिर कर बात वही आगे चलने वाले मार्ग दर्शक, पथ प्रदर्शक पर आ जाती है। जिनका जीवन सत्य-भाषण तथा त्याग की प्रतिमूर्ति हो। ऐसे लोगों से धरती खाली तो नहीं हुई मगर उन पुरुषों के बालों को ढूंढने की आवश्यकता है। पर कैसे ढूढा जाये उनको शायद यही विचारणीय प्रश्न है। (क्रमश:)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समाचार

5 मई, 1990 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नव नियुक्त कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने अपने पद का कार्यभार सम्भाल लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की वर्तमान समस्याओं पर विश्वविद्यालय के अध्यापकों और अन्य अधिकारियों से विचार विनिमय किया और उनसे अनुरोध किया कि वे 8वीं पंचवर्षीय योजना के लिए अपने विभिन्न प्रस्ताव प्रस्तुत करें। कुलपति विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति शास्त्र तथा प्राणि शास्त्र में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए प्रयत्नशील हैं। विज्ञान महाविद्यालय के गणित विभाग तथा माइक्रोबाइलोजी विभाग में स्नातकोत्तर शिक्षा पिछले कुछ वर्षों से दी जा रही है। गणित विभाग में वैदिक गणित पढ़ाने की व्यवस्था करने के भी प्रयत्न किए जा रहे हैं।

नया शिक्षा स्तर :

विश्वविद्यालय का नया सत्र 10 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। कुलपति ने आदेश दिए हैं कि शिक्षा सत्र का शुभारम्भ बृहद् यज्ञ से होगा। इस यज्ञ में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं समस्त कुलवासी उपस्थित होंगे तथा प्रतिदिन प्रातः वैदिक प्रार्थना के साथ अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ होगा। विश्वविद्यालय में यह प्रथा पहले भी प्रचलित थी किन्तु पिछले अनेक वर्षों से इसका परिपालन नहीं किया जा रहा था। नए शिक्षा सत्र में ऐसे हर सम्भव प्रयत्न किए जायेंगे जिनसे विश्वविद्यालय में शिक्षा का समुचित वातावरण बने तथा शिक्षा से सम्बन्धित सभी सुविधाएं और अध्यापकों का मार्गदर्शन विद्यार्थियों को दिन भर प्राप्त होता रहे।

माननीय अतिथि :

भारत सरकार के शिक्षा राज्य-मन्त्री माननीय श्री चिमनभाई मेहता विश्वविद्यालय में 16 जून को पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अध्यापकों से विश्वविद्यालय के विकास तथा शिक्षा से सम्बद्ध मामलों पर विचार-विमर्श किया और आश्वासन दिया कि इस विश्वविद्यालय के विकास के लिए भारत सरकार समुचित सहायता देती रहेगी। उन्होंने कहा कि, इस समय देश के हर क्षेत्र में चरित्र-वान नागरिकों का अभाव है। गुरुकुल की शिक्षा में चरित्र निर्माण पर सदैव बल दिया जाता रहा है, इसलिए देश को गुरुकुल की गुरुकुल से विशेष आशायें एवं अपेक्षाएं हैं। माननीय शिक्षा राज्यमन्त्री महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय में ऐसे पाठ्यक्रम शुरू किए जाने चाहिएं जो आजीविका के लिए सहायक होने के अतिरिक्त निरक्षरता दूर करने में भी सहायक बन सकें।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष से भेंट :

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने 21 जून को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो० यशपाल से विश्वविद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों और आगामी योजनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया। प्रो० यशपाल ने आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य के अध्ययन तथा अनुसन्धान के लिए एवं इस विश्वविद्यालय को वैदिक ग्रन्थों, भारतीय विद्या एवं योग का विशिष्ट अध्ययन एवं अनुसन्धान केन्द्र बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यथाशक्ति सहयोग देगा। प्रो० यशपाल के निर्देशों के अनुसार इस सम्बन्ध में 8वी पंचवर्षीय योजना के प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं जिन पर विश्वविद्यालय के अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों के साथ निकट भविष्य में ही विचार-विमर्श करेंगे।

विश्वविद्यालय का नया शिक्षा सत्र प्रारम्भ होने से पहले ही वित्त समिति और कार्य परिषद् की बैठकें भी की जा चुकी हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। उक्त बैठकें दोनों विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में 12 एवं 13 जून को आयोजित की गईं। इन बैठकों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इन प्रतिनिधियों ने द्वितीय परिसर की समस्याओं और आवश्यकताओं का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण एवं आंकलन किया।

पुस्तकालय और पुरातत्त्व संग्रहालय :

पिछले दिनों पुस्तकालय में कम्प्यूटर यूनिट ने भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके कारण पुस्तकालय की सुविधाओं को और अधिक बढ़ाया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं पुरातत्त्व संग्रहालय को देखने के लिए इस मास अनेक गणमान्य व्यक्ति गुरुकुल में पधारे, जिनमें उत्तर प्रदेश के महालेखाकार श्री ज्योतिस्वरूप मल्होत्रा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपसचिव डॉ० तिलक राज केम, शिक्षा मन्त्रालय की उपसचिव श्रीमती शोभना जोशी, महालक्ष्मी शूगर मिल के महा-प्रबन्धक श्री राव तथा हरिद्वार विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री एच० सी० श्रीवास्तव के नाम उल्लेखनीय हैं।

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षा देने वाले परीक्षार्थियों ने भी गर्मियों की छुट्टियों में पुस्तकालय का विशेष रूप से लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त दून स्कूल एवं वैलहम स्कूल, देहरादून के कुछ छात्र अपने ग्रीष्मकालीन प्रोजेक्ट पूरे करने के लिए अध्ययन हेतु पुस्तकालय में आए।

(पृष्ठ 5 का शेष)

एक छोटी सी सूबड़ी में बंद होकर रह गई।

पजाबी सूबा तो बन गया और उसके साथभाषा की समस्या तो हल हो गई लेकिन पंजाब की राजनीतिक समस्या हल नहीं हुई। वह आज तक रिसते नासूर की तरह इस राज्य की राजनीति में जहर फैला रही है। पजाबी सूबा प्रथम नवम्बर 1966 को बना था आज इसे 24 वर्ष होने लगे हैं लेकिन अकालियों की ओर से कभी आनदपुर साहेब का प्रस्ताव पेश कर दिया जाता है कभी जम्मू कश्मीर की तरह 370 की धारा पंजाब पर भी लागू करने के लिए कहा जाता है और फिर पंजाब में कुछ लोग खालिस्तान मांगने लगे हैं। कोई खालसा राज की बात करने लगता है, कोई चडीगढ़ मागता है कोई नहरी पानी मांगता है और कुछ लोग वह भी हैं जो यह कहते हैं कि वह संयुक्त राष्ट्र सघ से अपील करेंगे। यह अक्ल के अंधे यह नहीं समझते कि संयुक्त राष्ट्र संघ किसी स्वतत्र और प्रभुसत्ता संपन्न देश के आंतरिक मामलों में हस्ताक्षेप नही कर सकता। आजकल श्रीलंका में एक गृह युद्ध चल रहा है। हर रोज सैंकड़ों लोग मारे जा रहे हैं। श्रीलंका सरकार ने तो विद्रोहियों पर बमवर्षा भी शुरु कर दी है। इसके बावजूद संयुक्त राष्ट्रसंघ उसमें हस्ताक्षेप नही कर रहा। सिमरनजीत राष्ट्रसंघ उसमें हस्ताक्षेप नहीं कर सकता। सिमरनजीत सिंह मान अपने आपको बहुत बड़ा नेता समझता है उसे यह भी पता नहीं, कि संयुक्त राष्ट्रसंघ किसी स्वतंत्र और प्रभुसत्ता सम्पन्न देश के आंतरिक मामलों में हस्ताक्षेप नहीं कर सकता।

सारांश यह कि जिस उद्देश्य के लिए पजाबी सूबा बनाया गया था वह तो कभी का पूरा हो चुका है। पंजाबी आज इस राज्य की राज भाषा है। यहां पंजाबी के साथ-साथ अंग्रेजी तो चल सकती है लेकिन हिन्दी नहीं चल सकती। पंजाबी की प्रगति के लिए इस समय पंजाब में तीन विश्वविद्यालय चल रहे हैं। इसीलिए जहां तक पजाबी भाषा का सम्बन्ध है यदि पंजाबी सूबा केवल उसकी प्रगति के लिए बनाया गया था तो वह उद्देश्य तो पूरा हो रहा है। लेकिन वास्तविकता यह है है कि अकालियों की नियत न पहले साफ थी न अब है स्वाधीनता से पहले अकाली नेता खालिस्तान मांगते रहे हैं वह अब भारत और पाकिस्तान के बीच अपना एक स्वतन्त्र देश चाहते थे। प्रत्येक अकाली अपने आपको महाराजा रणजीत सिंह का उत्तराधिकारी समझता था। इसलिए उन्होंने अपने लिए एक अलग देश मांगा था लेकिन न जिन्नाह उसे स्वीकार करने को तैयार हुआ न पंडित जवाहर लाल हुए। अंग्रेज सिखों को एक अलग देश देने को तैयार था जिन्नाह का कहना था कि पाकिस्तान के अंदर सिखों के लिए एक ऐसा राज्य बनाया जा सकता है जहां वह अपनी इच्छानुसार शासन करें लेकिन कुछ ऐसे मामले भी होंगे जिनमें उन्हें पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार के अधीन रहना पड़ेगा। मास्टर तारा सिंह और ज्ञानी करतार सिंह इसके लिए तैयार नहीं हुए। वह किसी भी स्थिति में पाकिस्तान के अधीन रहने को तैयार नही थे। उनका कहना था कि या तो वह पूर्णरूप से स्वतंत्र हो कर रहेंगे या भारत में शामिल हो जाएंगे वह पाकिस्तान पर भारत को अभिमान देते थे। इस तरह आखिर पजाबी सूबा लेकर वह बैठ गए। लेकिन जिन्होंने पंजाबी सूबा लेकर दिया था वह तो चले गए अब वह रह गए हैं जो पंजाबी सूबा को समाप्त करके दम लेगे।

वीरेन्द्र

श्री सत्य पाल जी सूद का देहावसान

आर्य समाज बैंक फिल्डगंज लुधियाना के पुराने और प्रसिद्ध व कर्मठ कार्यकर्ता श्री सत्यपाल जी सूद का एक जुलाई को स्वर्गवास हो गया है। श्री सूद जी चिरकाल से आर्य समाज की सेवा कर रहे थे और लुधियाना के आर्य समाजी क्षेत्र में उनका अपना ही स्थान था। उनका अन्तिम शोक दिवस 11 जुलाई को अग्रवाल धर्मशाला कूचा-6 फील्डगंज लुधियाना में मनाया गया।

—सावित्री देवी, मन्त्री

आर्य समाज, सान्ता-क्रुज बम्बई का चुनाव

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिक निर्वाचन बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में दिनांक 17-6-90 को इस प्रकार सम्पन्न हुआ—

श्री रामचन्द्र आर्य—प्रधान।

श्री कैप्टन देवरत्न आर्य—उप-प्रधान।

श्री विमल स्वरूप सूद—उप-प्रधान।

श्री विश्वभूषण आर्य—महामन्त्री।

श्री लालचन्द आर्य—मन्त्री।

श्री नरेन्द्र पटेल—मन्त्री।

श्री कस्तूरी लाल मदान—कोषाध्यक्ष।

श्री चैमन लाल महाशय, श्री कान्तिभाई जंगबारी, श्री संगीत शर्मा, श्री यशपाल अग्रवाल, श्री गोवर्धन लाल छाबड़िया, श्री मदन रहेजा, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री रणवीर भंडारी को सदस्य चुना गया।

—विश्वभूषण आर्य

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०) वेदाङ्ग-दर्शन-योग-शिक्षण संस्था है। यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के अनुसार शिक्षण देने की व्यवस्था है। इसमें आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करने के इच्छुक युवक ब्रह्मचारियों को प्राथमिकता दी जाती है। इसका सारा व्यय गुरुकुल वहन करता है। छठी, सातवीं, आठवीं उत्तीर्ण छात्रों को भी प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) की मध्यमा, शास्त्री और आचार्य कक्षा की परीक्षा देते हैं। घृत, दुग्ध आदि सहित मासिक व्यय 200/- दो सौ रुपये होता है। शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक उन्नति करने का शुभ अवसर उपलब्ध है। शीघ्र सम्पर्क करें।

— जगदेव नैष्ठिक, आचार्य

बधाई सन्देश

श्रद्धेय पूज्यपाद श्री वीरेन्द्र जी, सादर नमस्ते।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के माध्यम से मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपको पुन: आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इस समय जबकि पंजाब उग्रवाद की आग में झुलस रहा है। आपका दायित्व आर्य समाजों को उचित दिशा प्रदान करने के लिए भी बढ़ रहा है। आपके कुशल नेतृत्व, गतिशील निर्देशन, विवेक, उत्साह, कर्मठता, तपोनिष्ठ एवम् आर्य वीर पुरुष जैसे कार्यों से ही आर्य समाजें उन्नति कर सकेंगी। आपकी दीर्घायु हो ताकि वेद वाणी का प्रचार एवम् प्रसार पहले से भी अधिक शक्ति के साथ कर सकें। श्री अश्विनी कुमार शर्मा (एडवोकेट) सभा महामन्त्री एवम् श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा कोषाध्यक्ष के रूप में आपको अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। मैं परमात्मा से सभा की उन्नति हेतु प्रार्थना करता हूं तथा अपनी शुभ कामनाएं अर्पित करता हूं।

विनीत
हरिचन्द्र स्नेही
मण्डलपति आर्य वीर दल, सोनीपत

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

ग्राम जुआं (सोनीपत) में 17 जून से 24 जून 90 तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर मा० बलवान सिंह के कुशल संचालन एवम् श्री हरिसिंह आर्य तथा श्री राजेश आर्य (शिक्षक) के नेतृत्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें 102 आर्य वीरों ने भाग लिया। इस शिविर में श्री सत्यवीर शास्त्री (हरियाणा सभा), श्री हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति), श्री केदार सिंह आर्य, श्री पं० चिरंजी लाल एवम् रत्न सिंह भजनोपदेशक, श्री दिलीप सिंह आर्य, श्री राम मेहर (मुख्याध्यापक), डॉ० नरेन्द्र सिंह वेदवास एवम् सैकड़ों नर-नारियों ने आर्य वीरों को आशीर्वाद दिया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

रजि० नं० Pb/JL 55

वर्ष 22 अंक 17 श्रावण 7 सम्वत् 2047 तदनुसार 19 22 जुलाई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

सुखी गृहस्थ के आधार

ले०—श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली

गृहस्थाश्रम को ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आश्रम माना गया है। गृहस्थाश्रम को ही स्वर्गधाम कहा गया है। गृहस्थ के कर्तव्य कर्मों का पालन करते हुए मनुष्य इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के सुखों को प्राप्त करता है, परन्तु आज ये स्वर्गधाम नरक बने हुए हैं। जिससे पूछो— आप कुशल तो हैं?' वही कहेगा, 'अजी! कुशल मंगल कहां? जैसे तैसे कट रही है। गृहस्थ में सुख कैसे प्राप्त हो, इसके लिए कुछ सूत्र प्रस्तुत हैं—

सुखी गृहस्थ का पहला आधार है—सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त पति पत्नी का दीर्घायुष्य। वेद में कहा है—विश्व मायुर्व्यश्नुतम। (ऋ० 10 95 42) पति पत्नी दोनो दीर्घजीवी हों। दीर्घ और स्वस्थ जीवन के आठ उपाय हैं—

(1) प्रातः भ्रमण कम से कम 6 किलोमीटर प्रतिदिन।

(2) 15 से 20 मिनट तक आसन, प्राणायाम प्रतिदिन।

(3) सादा और अल्प भोजन। दिन में अधिक से अधिक दो बार भोजन। पीने में दूध और पानी ही सर्वोत्तम है। बोतलों के पानी से बचें।

(4) सप्ताह में एक दिन उपवास रखना।

(5) मन को सुन्दर, धार्मिक भावों से सजोना।

(6) वीर्य-रक्षा करना। गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करना। सन्तान के लिए ही मैथुन करना।

(7) शराब आदि मादक पदार्थ, अण्डे आदि अभक्ष्य पदार्थ और मांसादि तामसिक भोजन से बचना बुरे विचारों से दूर रहना।

(8) प्रतिदिन 15 20 मिनट दर्पण के सामने खूब खुलकर हंसना।

सुखी गृहस्थ का दूसरा आधार है—पति पत्नी में प्रेम। वेद का आदेश है—इहैव स्तं मा वियौष्टम। (ऋ 10 95 42) हे दम्पती! तुम इस गृहस्थाश्रम में रहो, एक दूसरे से पृथक मत हो। गृहस्थ को सुखी बनाने में पति पत्नी का प्रेम बहुत महत्त्वपूर्ण है। महर्षि मनु लिखते हैं—

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥ मनु० 3 60

जिस कुल में स्त्री से पति और पति से स्त्री सन्तुष्ट रहती है, उस कुल में अवश्य ही सबका कल्याण होता है।

वेद के शब्दों में चक्रवाकेव दम्पती (अथर्व 14 64)—पति पत्नी में चकवा-चकवी जैसा प्रेम होना चाहिए। चकवा-चकवी रात्रि में अलग हो जाते हैं, परन्तु निरन्तर एक-दूसरे का चिन्तन करते रहते हैं। प्रातः होते ही फिर मिल जाते हैं। पति पत्नी के प्रेम का आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम और सती साध्वी सीता से सीखें। दोनो एक दूसरे के लिए व्याकुल हैं। हनुमन्नाटक में एक उत्तम प्रसंग है। सरमा ने राम का ध्यान करने वाली सीता से कहा—'हे सखि! भ्रमर का ध्यान करने से भ्रमर बने हुए कीट को देखकर मुझे डर लगता है कि निरन्तर श्रीराम का ध्यान करने से तुममें पुरुषत्व आ गया तो फिर उनके साथ तुम्हारा मेल कैसे होगा? फिर स्वयं ही उत्तर देते हुए कहती है—'डर की कोई बात नही है। तुम्हारा निरन्तर ध्यान करने से श्रीराम में स्त्रीत्व आ जाएगा, फिर दोनो में प्रेम होगा ही।

सुखी गृहस्थ का तीसरा आधार है—उत्तम सन्तान। वेद में अनेक स्थानों पर 'प्रजा' और 'सुप्रजा' की कामना की गई है। विवाह विलास के लिए नही है अपितु सुसन्तान प्राप्ति के लिए है। घर में अन्न है, धन है, परन्तु सन्तान नही है तो सब कुछ सूना सूना सा लगता है। घर में सन्तान हो परन्तु वह सुसन्तान हो, सुप्रजा हो। सन्तान उत्पन्न न होने पर तो एक ही दुःख होता है कि सन्तान नहीं हुई, परन्तु उत्पन्न होकर मूर्ख हो, दुष्ट हो, अयोग्य हो तो पद पद पर दुःख होता है। अध्यापक शिकायत करते हैं कि इस बच्चे का दिमाग ही नही है। छह छह बार समझाने पर भी इसकी समझ में ही नही आता। एक पड़ोसी शिकायत कर रहा है कि आपके बच्चे ने पत्थर मारकर हमारा शीशा तोड़ दिया तो दूसरा पड़ोसी कह रहा है कि इसने हमारे बच्चे को पीट दिया।

सन्तान उत्पन्न कीजिए परन्तु उसे सन्तान बनाइए। माता और पिता इसके लिए तप करें। माता अपने संकल्पों से जैसा चाहे सन्तानों को वैसा बना लेती है—

माता के बनाये पुत्र कायर और कपूत होते।
माता के बनाये पुत्र वीर बन जाते हैं ॥
माता के बनाये पुत्र शिवा और प्रताप जैसे।
माता के बनाये पुत्र दयानन्द की कहूं क्या बात है ॥

माता लोरियां देकर और पिता अपने सदुपदेश से, अपने आदर्श आचरण से सन्तानों का निर्माण करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट सोलह संस्कार सुप्रजा निर्माण में अत्यन्त सहायक हैं।

सुखी गृहस्थ का चौथा आधार है—धन की प्रचुरता। जब ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी का कार्य भी धन के बिना नहीं चलता तो गृहस्थ का तो चल ही कैसे सकता है? गृहस्थ धन धान्य से भरपूर होना चाहिए। हां गृहस्थ यह ध्यान रखे कि यह धन ईमानदारी से कमाया गया हो। वेद में कहा है—

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे।
यशसं वीरवत्तमम् ॥ ऋ० 1-1 3

मनुष्य अपने पुरुषार्थ से उस धन को कमाये जो प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होता जाए, कभी भी क्षीण न हो, जो दान आदि के कारण यश देने वाला हो और पुत्र, भृत्य (नौकर चाकर) आदि से युक्त हो।

अन्याय से कमाया हुआ धन जड़मूल सहित नष्ट कर डालता है अतः दूसरों का शोषण न करके दूसरों का गला न काटकर, दूसरों का हक न छीनकर पुरुषार्थ से ही धन कमाएं।

सुखी गृहस्थ का अन्तिम परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आधार है—घर में पञ्च महायज्ञों का अनुष्ठान। इनकी महिमा में कहा गया है—

आपद्यपि हि कष्टायां पञ्च यज्ञान न हापयेत।
स्वर्गापवर्गयो प्राप्तिं पञ्च यज्ञै प्रचक्षते ॥

आपत्तियां और कष्ट आने पर भी पञ्चमहायज्ञों को नही छोड़ना चाहिए। स्वर्ग—सुखविशेष और मोक्ष—इन दोनों की प्राप्ति पञ्चमहायज्ञों द्वारा ही होती है। ये पञ्चमहायज्ञ गृहस्थ के आवश्यक कर्त्तव्य हैं। संक्षेप में पञ्च महायज्ञों का स्वरूप यह है—

(1) ब्रह्मयज्ञ—सन्ध्या और स्वाध्याय। सन्ध्या का अर्थ है परम पिता परमात्मा की उपासना। प्रतिदिन कम से कम एक घड़ी 24 (मिनट) प्रातः और एक घड़ी सायं प्रभु की आराधना करना। स्वाध्याय का अर्थ है वेद का अध्ययन, चिन्तन और मनन करना।

(2) देवयज्ञ—अग्निहोत्र करना। हम प्रतिदिन श्वासों के द्वारा मल मूत्र के द्वारा जल, वायु आदि को दूषित करते हैं। यज्ञ के द्वारा वायु सुगन्धित होती है। उत्तम वृष्टि होती है। उससे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वैदिक विद्वान् का अपूर्व सम्मान-चार लाख रुपये की निधि समर्पित

ले०—श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य उप मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली

दक्षिणा अफ्रीका मे भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्राय: स्वरूप तथा एक अग्रगण्य धार्मिक नेता पं० नरदेव वेदालंकार की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए सगठित सम्मान समिति डरबन द्वारा ता० 23 नवम्बर 1988 के दिन डरबन के सीटी हाल में पण्डित जी के भारत प्रवास के समय अपूर्व सम्मान समारम्भ सम्पन्न हुआ। इस समय इस विशाल हाल में नेटाल का हिन्दु समाज उमड पड़ा था। 1500 से अधिक उपस्थित जनता ने अपने इस निष्काम कर्मयोगी नेता के प्रति अपना प्रेम और आदर प्रदर्शित किया। 1913 में हुए महात्मा गाधी के विदाई समारम्भ के बाद यह सब से बड़ा और गौरवशाली समारम्भ था।

इस सम्मान के लिए हिन्दू समाज की मुख्य सस्थाओ के द्वारा प० नरदेव वेदालकार सम्मान समिति निर्माण की गई थी। पण्डित जी की 75वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 75 हजार रेंड (लगभग चार लाख रुपये) की थैली समर्पित करने का निर्णय किया। पण्डित जी की लोकप्रियता के कारण यह राशि एक मास में एकत्रित हो गई।

समारम्भ में पण्डित जी के कार्यों का परिचय देते हुए अनेक नेताओं ने अपनी प्रेमांजलि प्रदर्शित की। हिन्दू महासभा के प्रधान श्री प्राणलाल लाखाणी ने हिन्दू समाज के सगठन और उत्कर्ष के लिए पण्डित जी के प्रयत्नों का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि पण्डित जी के कार्य से हिन्दू समाज में नव जागृति की लहर पैदा हो गई है। हिन्दू अपने हिन्दू होने का गौरव अनुभव करने लगा। विधि सम्प्रदाय मे विभक्त हिन्दू समाज को पण्डित जी ने एक सूत्र में सगठित कर दिया है। विशेष कर हिन्दी भाषा और गुजराती भाषा भाषी लोगों के दिलों को जीत कर दोनो को एक दूसरे के निकट कर दिया है। इससे पूर्व किसी ने ऐसा कोई प्रयत्न किया नही था।

युवक आर्य नेता डरबन यूनिवर्सिटी के संस्कृत के प्रध्यापक श्री विश्राम रामविलास ने पण्डित जी हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए नए प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सन् 1948 में इस देश मे पधार कर पण्डित जी ने सर्वप्रथम हिन्दी प्रचारक के क्षेत्र को अपने हाथ में लिया। तब उन्हीं ने हिन्दी शिक्षा संघ नाम को केन्द्रीय सस्था की स्थापना की। हिन्दी प्रचार समिति वर्धा की उच्च परीक्षा कोविद और हिन्दी रत्न (बी० ए०) के लिए विद्यार्थी तैयार किए और साउथ अफ्रिका में प्रथम बार भारतीय भाषा के इतने उच्च स्तर पर अध्यापन का कार्य हुआ। पण्डित जी ने भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए उसके अंगरूप नाटक, सगीत, नृत्य, वेदमन्त्र पाठ, रामायण पाठ आदि विषयों की स्पर्धाएं चालू की। इस प्रकार की स्पर्धाओं के समय प्रति वर्ष यह हिन्दी मेला का रूप लेता है। हिन्दी के इस कार्य से प्रेरणा लेकर गुजराती, तमिल, तेलगू भाषाओं ने भी ऐसी ही प्रतियोगिताएं चालू की हैं, जिनके द्वारा इस भारतीय भाषाओं के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ गया है। जो भाषाएं मृत प्राय: अवस्था में थी वे पुनर्जीवन प्राप्त करने लगी लगी हैं।

इसके बारे में विश्राम जी ने संस्कृत हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी में लिखित कलामय मानपत्र भारतीय जनता की तरफ से पण्डित जी को समर्पित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल राम भरोसे ने पण्डित जी के नेतृत्व में हिन्दू समाज में धार्मिक जागृति कैसे आई उसका उल्लेख करते हुए कहा कि इस देश में धार्मिक सस्कारों और विधियों को शुद्ध रूप में करवाने की बडी कमी थी, यहां पर कोई भी पण्डित या पुरोहित शुद्ध रूप से उच्चारण करने में अथवा धार्मिक विधि करवाने मे सुशिक्षित न था। इस बड़ी कमी की पूर्ति के लिए पण्डित जी ने वैदिक पुरोहित मण्डल की स्थापना की तथा उन के द्वारा धार्मिक श्रेणी चालू की। आज तक पण्डित जी द्वारा शिक्षित 35 व्यक्ति पुरोहित परीक्षा में उत्तीर्ण होकर कार्य करने लगे हैं। पण्डित जी की प्रेरणा से महिलाएं भी पुरोहित परीक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं। इस प्रकार विविध धार्मिक सम्प्रदायों में सिर्फ आर्य समाज को यह गौरव प्राप्त है कि महिलाएं इस कार्य में दीक्षित हुई हैं जिसका श्रेय पण्डित जी की दीर्घ दृष्टि को है।

इस तरह पण्डित नरदेव जी ने वेद निकेतन की स्थापना कर के विदेशों में बसे हुए सभी देशों के हिन्दुओं में हिन्दू धर्म की भावनाओं को जागृत कर दिया है। वेद निकेतन के द्वारा प्रारम्भिक रूप से डिपलोमा के स्तर पर क्रमिक पाच धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन किया आज परीक्षाओं के केन्द्र मौरीशस फिजी, अमेरिका, कनेडा, इग्लैण्ड, सुरीनाम, गयाना आदि प्रदेशों में चालू हो गए हैं। इन परीक्षाओं के लिए प्रारम्भिक उच्चारण की क्रमिक श्रेणी वाली पांच पुस्तकें पण्डित जी ने लिख कर प्रकाशित की हैं।

वेद निकेतन द्वारा दूसरा महत्व पूर्ण कार्य धार्मिक साहित्य का अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन है। पण्डित जी ने इसके लिए बारह पुस्तकें लिखी हैं। 50 से अधिक ट्रेक्ट सभी धार्मिक पैम्फलेट लिख कर लाखों की संख्या में बिना मूल्य के वितरित किए। विश्व में निकेतन के 100 से अधिक प्रसारण केन्द्र हैं। यह एक अद्भुत कार्य हुआ है। पण्डित जी की सर्वाधिक सम्मानित पुस्तक "शास्त्रनवनीतम्" है 500 पृष्ठों की इस पुस्तक में वेद उपनिषद, गीता, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत तिरुकुरल आदि ग्रंथों का सार संग्रहित है। इनके द्वारा अन्य धर्मियों के मन में भी हिन्दु-धर्म के प्रति आदर प्रकट हुआ है।

प० नरदेव वेदालकार को साउथ अफ्रिका में निमन्त्रित करने का श्रेय सूरत हिन्दू एसोसिएशन को है। इस संस्था द्वारा संचालित गुजराती पाठशाला में पण्डित जी 40 वर्षों तक अध्यापन कार्य करते रहे। पंडित जी के इस क्षेत्र में किये गए कार्यों का विवरण देते हुए सस्था के प्रधान श्री रतीलाल मिस्त्री ने बताया कि पण्डित जी के प्रयत्नों से गुजराती भाषा पुन:जीवित हो गई है। दक्षिण अफ्रिका की गुजराती संस्थाओं का संगठन पण्डित जी के प्रयत्नों से सफल हुआ है। तथा गुजराती भाषा की शिक्षा को प्रगति देने वाले पण्डित जी ने गुजराती शिक्षा बोर्ड की स्थापना की है। वर्षों तक पण्डित जी इस बोर्ड के प्रधान रह कर उसे मार्ग दर्शन देते रहे। इन प्रवचनों के बाद तथा संगीत नृत्य आदि कार्यक्रमों के होने पर सम्मान समिति के अध्यक्ष श्री शिशुपाल राम भरोसे ने पंण्डित जी को 75 हजार रेंड (करीब चार लाख रुपये) की थैली भारतीय हिन्दु जनता की तरफ से समर्पित की और आपने कहा कि पण्डित जी ने आजीवन निष्कामभाव से इस देश में 40 वर्षों तक जागृत रहकर धर्म और जाति की सेवा की है। आज वृद्धावस्था में उनके भारत गमन के समय यह राशि देकर भी हम उनसे उऋण नहीं हो सकते। इस समय पर उपस्थित जनता ने खडे होकर पण्डित जी का तुमुल करध्वनि द्वारा सत्कार किया।

इस सम्मान का उत्तर देते हुए पण्डित जी ने अपने माता पिता तथा गुरुकुल की शिक्षा के प्रति सर्वप्रथम कृतज्ञता प्रदर्शित की। एवं आज की भारतीय जागृति के अग्रदूत हिन्दु जाति में अमृत संजीवनी का संचार करने वाले महर्षि दयानन्द को प्रणामांजलि प्रदान की। पण्डित जी ने आगे चलकर चालीस वर्षों तक इस देश में किये गये अपने निरन्तर प्रयत्नों का तथा अपने परिवार के आर्थिक संघर्ष का गद्गद कंठ से उल्लेख किया। आपने बताया कि आज हिन्दू जाति पर विशेष अन्धकार छाया है। भारत में और विदेशों में अन्य धर्मों में हिन्दुओं की स्थिति कमजोर होती जा रही है। एक सामान्य हिन्दू इस परिस्थिति से बेखबर है। वह हिन्दू धर्म के प्रति उदासीन होता जाता है। वह कमजोरी को धार्मिक उदारता के बहाने छिपाना चाहता है। आज भी एक धनिक हिन्दू अपने अहम् को प्रदर्शित करने के लिए लाखों का खर्च कर रहा है। परन्तु धर्म के लिए कुछ भी देने को तैयार नहीं है। जो जाति अपने आदर्शों के लिए बलिदान नहीं कर सकती वह जीवित नहीं रह सकती।

पण्डित जी को दी गई सम्मान थैली का उल्लेख करते हुए उन्होंने गदगद कंठ से कहा, आपने मुझे इतनी बडी राशि प्रदान की है, मैं इसका क्या करूं। अपने हाथों में हजारों की रकम मैंने देखी नहीं है। मुझे क्या चाहिए—खाने को दो रोटी, पहनने को लंगोटी और सिर पर एक टोपी "इस समय सभा भवन में बैठे हुए सैकड़ों लोगों की आंखों में प्रेमाश्रु भर आए थे। पण्डित जी ने कहा" मेरे जीवन में जब जब कुछ कठिनाई आई मैंने भगवान से मांगा है और उसने मुझे दिया है" मत समझो मैंने हजारों रुपये भगवान से मांगे हैं। आज मुझे परिवार सहित भारत जाने की जरूरत थी। पैसा हाथ में नहीं था—पर आप जानते हैं भगवान देता है तो छप्पर फाड़कर देता है, आपने इस थैली में अपने प्यार और श्रद्धा के दर्शन कराए हैं। मुझे हिन्दू धर्म के प्रचार की चिन्ता है। इस राशि में से मैं अपने परिवार के भारत प्रवास के लिए तथा वृद्धावस्था जीवन निर्वाह के लिए कुछ राशि निकाल कर चालीस सहस्र रैंड (दो लाख पचास हजार रुपये) हिन्दू धर्म के प्रचार कोष में देता हूं। यह एक बड़ा आवश्यक कार्य है, आप इसके लिए और दीजिए—और इस कोष में कम से कम एक लाख रेंड इकट्ठा कीजिए यह आपका कर्तव्य है। इस अनपेक्षित घोषणा से सभा भवन हर्ष में उमड पडा और खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट से हाल को गुंजा दिया, पण्डित जी की अपील पर दान के वचन आने लगे और कुछ ही मिनटों में जनता की तरफ से हिन्दू धर्म प्रचार कोष में देखते ही देखते दूसरे चालीस हजार रैंट जमा हो गये। जो पण्डित जी के प्रति प्रखर प्रेम और अपार श्रद्धा के प्रतीक बन गये।

समारम्भ के अन्त में गुजराती अध्यापिकाओं ने पण्डित जी की विदाई वेला में करुण विदाई गीत गाया और सभा जनों को द्रवित कर दिया। सब के मुख में एक ही बात थी ऐसा अपूर्व समारम्भ जीवन में कभी नहीं देखा, सम्भवत: शीघ्र देखने को नहीं मिलेगा।

सम्पादकीय—

यह शेर सिंह जी कौन हैं ?

देहली के बड़े-बड़े समाचार पत्र यह प्रश्न कर रहे हैं कि यह शेर सिंह कौन हैं ? उनका कहना है कि अब जबकि दूसरी बार श्री ओम प्रकाश जी चौटाला की ताजपोशी हुई है तो उस समय एक पर्यवेक्षक के रूप में वहां एक व्यक्ति शेर सिंह जी मौजूद थे। यह कौन है ? और इसका उत्तर स्वयं समाचार पत्रों में दिया है कि यह प्रो० शेर सिंह जी हैं। जिस बात पर आश्चर्य प्रकट किया है वह यह है कि प्रो० शेर सिंह जी अभी भी कांग्रेस में हैं, परन्तु चौधरी देवी लाल के कहने पर वह जनता दल का काम भी करते हैं। इसलिए श्री ओम प्रकाश जी चौटाला की ताजपोशी के समय वह वहां यह देखने गए हुए थे कि सारी व्यवस्था ठीक है या नहीं और श्री ओम प्रकाश जी चौटाला की ताजपोशी ठीक से हुई है या नहीं। साधारण परिस्थितियों में कोई इधर ध्यान न देता परन्तु जिस तरह से यह कार्य हो रहा था इधर ध्यान जाना अवश्य था।

प्रो० शेर सिंह जी गिरगिट की तरह से रंग बदलते रहते हैं। पहले यह कांग्रेस में थे, फिर जनता पार्टी में सम्मिलित हो गए, उसे छोड़ कर फिर कांग्रेस में आ गये और अब फिर जनता दल के नेताओं के इधर-उधर घूम रहे हैं। जब यह जनता पार्टी में थे उस समय इन्हें मन्त्रिमण्डल में भी स्थान मिल गया था। फिर इन्होंने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ना चाहा, इस आशा के साथ कि वहां भी इन्हें मन्त्रिमण्डल में स्थान मिल जाएगा परन्तु यह चुनाव हार गए। अब जबकि इन्होंने देखा कि हरियाणा में चौधरी देवी लाल की तूती बोल रही है तो यह हरियाणा जनता दल में सम्मिलित हो गए। अब इन्हें सम्भवतः चौधरी देवी लाल अपना विश्वास पात्र व्यक्ति समझते हैं। इसलिए जब श्री ओम प्रकाश चौटाला को पुनः सिंहासन पर बैठाने का कार्यक्रम हो रहा था तो राज पुरोहित का कर्त्तव्य निभाने के लिए प्रो० शेर सिंह जी वहां पहुंच गये। श्री ओम प्रकाश चौटाला हरियाणा के मुख्यमन्त्री रहेंगे या नहीं ? यह तो मालूम नहीं। हो सकता है वह त्यागपत्र दे दें परन्तु प्रो० शेरसिंह जी एक विवादास्पद व्यक्ति बन गए हैं।

कोई व्यक्ति किस राजनीतिक दल में सम्मिलित होता है और किस मे वह नहीं होता, इसका अन्तिम निर्णय करने का अधिकार केवल उसी व्यक्ति को है। परन्तु प्रो० शेर सिंह एक साधारण व्यक्ति नहीं हैं। वह प्रान्तीय हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी हैं। जब किसी प्रान्तीय सभा का प्रधान इस प्रकार अपना रंग बदलता रहे तो इसका प्रभाव आर्य समाज पर भी पड़ता है। राजनीतिक क्षेत्रों में यह समझा जाता है कि यह लोग बेपैंदे के लोटे हैं कि कभी किसी पार्टी में सम्मिलित हो जाते हैं, तो कभी किसी पार्टी में। इनका तो न कोई राजनीतिक सिद्धान्त है और न इनकी कोई किसी राजनीतिक संस्था में निष्ठा है। मेरे विचार में यह स्थिति अत्यन्त गम्भीर और चिन्ताजनक है। जब हम बार-बार कहते हैं कि इसका कोई फैसला हो जाना चाहिये कि आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिये या नहीं ? तो हमारे नेता इसका फैसला नहीं करते। उसका परिणाम वही निकलता है जो प्रो० शेर सिंह का निकला है। आर्य समाजियों के विषय में जनता की यह धारणा थी कि यह चट्टान की तरह अपने सिद्धान्तों पर अड़े रहते हैं, परन्तु अब धीरे-धीरे यह धारणा समाप्त हो रही है क्योंकि राजनीतिक क्षेत्रों में अब आर्य समाज का कोई स्थान नहीं है। गत दिनों 14-15 जुलाई को देहली में स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने एक सम्मेलन किया है। उस पर भी कई लोगों को आपत्ति है। परन्तु मेरे विचार में जो कुछ इन दोनों ने किया है वह प्रो० शेर सिंह जी से तो अच्छा है। वह अपना मार्ग स्वयं बना रहे हैं कोई उन से सहमत हो या न हो परन्तु प्रो० शेर सिंह के विषय में तो यही पता नहीं चल रहा कि वह कहां खड़े हैं। जनता दल में आज सबसे बड़ी चर्चा राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद की है और इस बात में भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि जनता दल के नेताओं का झुकाव मुसलमानों की तरफ अधिक है। ऐसी स्थिति में प्रो० शेर सिंह जी क्या करेंगे ? उन्हें अब केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में तो कोई लेने से रहा। तो ऐसी स्थिति में यह अपना ईमान क्यों बेच रहे हैं ? मुझे इस पर कोई अधिक आपत्ति न होती यदि यह एक प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान न होते। देश में कई राजनीतिक व्यक्ति भटकते फिर रहे हैं। प्रो० शेर सिंह जी भी उनमें से एक बन सकते थे। परन्तु अब वह एक प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी हैं, उन्हें केवल अपना स्वार्थ ही नहीं देखना चाहिये, आर्य समाज के हित उसके आदर्श और सम्मान का भी ध्यान रखना चाहिये।

इसी सन्दर्भ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधिकारी महानुभावों से मैं कहना चाहूंगा कि देश में जो राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं वह उनसे अपनी आंखें बन्द करके नहीं बैठ सकते। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जिसने देश का इतिहास बनाया है। हम यह नहीं कह सकते कि हमें चिन्ता नहीं कि क्या हो रहा है ? इसलिये सार्वदेशिक सभा को यह भी फैसला करना चाहिये कि आर्य समाजों या प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों को कहां तक राजनीतिक पार्टियों में सक्रिय भाग लेना चाहिये। मैं इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य समझता हूं कि समय-समय पर जो समस्याएं हमारे सामने आती रहती हैं उनका कोई समाधान नहीं होता। हमारी हालत उस नाव जैसी है जो एक दरिया में बहती जा रही है। एक लहर उसे एक किनारे की तरफ ले जाती है तो दूसरी दूसरे किनारे की तरफ और अन्त में कहा जाता है कि जहां जाकर यह नाव लग जाएगी वहीं इसका किनारा हो जाएगा।

इसलिये प्रो० शेर सिंह के विषय में जो विवाद समाचार पत्रों में चल रहा है उससे आर्य समाज का भी सम्बन्ध है। इसलिये इस दिशा में आर्य समाज को कोई न कोई निर्णय लेना चाहिये। विशेष कर यह कि आर्य समाज के वरिष्ठ नेता किसी राजनीतिक दल में जा सकते हैं या नहीं ? यदि जाएं तो वहां किस सीमा तक सक्रिय भाग ले सकते हैं और एक राजनीतिक दल में वरिष्ठ अधिकारी बनने के बाद भी क्या वह आर्य समाज में एक वरिष्ठ पद पर रह सकते हैं या नहीं ?

—वीरेन्द्र

चौधरी रूपचन्द जी भी चले गए

आर्य समाज का एक और सपूत उसे छोड़ कर चला गया। चौधरी रूपचन्द उन पुराने आर्य समाजियों की एक निशानी थे जिनकी रग-रग में आर्य समाज भरा हुआ था। जब तक उनका स्वास्थ्य ठीक रहा वह उठते-बैठते, सोते-जागते केवल आर्य समाज की ही चिन्ता किया करते थे। पिछले कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। एक दुर्घटना से उनके लिये चलना भी मुश्किल हो गया था फिर भी वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में सम्मिलित होने के लिये पहुंच जाया करते थे और यदि कभी गुरुकुल कांगड़ी में भी कोई सभा होती तो वहां भी पहुंच जाते। हम उन्हें देखकर कई बार आश्चर्य किया करते थे कि यह व्यक्ति हड्डी मांस का बना हुआ है या लोहे का बना हुआ है। जब वह बिल्कुल ही चलने-फिरने के लायक नहीं रहे तो मैं एक बार उन्हें मिलने के लिये चण्डीगढ़ गया था। उस वक्त भी वह एक प्रश्न किया करते थे कि आर्य समाज का अब क्या बनेगा ? चौधरी रूपचन्द जी ने आर्य समाज को उस समय भी देखा था जब वह अपने शिखर पर था। अभी वह लाहौर के कालेज में ही पढ़ा करते थे कि उन्होंने आर्य समाज में सक्रिय भाग लेना शुरू कर दिया था। देश के विभाजन के बाद उन्होंने चण्डीगढ़ में आकर अपना घर बना लिया और हाईकोर्ट में अपनी वकालत शुरू कर दी और जब कभी हाईकोर्ट में हमें सभा का कोई मुकद्दमा लड़ने की आवश्यकता होती तो वह निःशुल्क ही यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते थे। इसलिये मैं कहता हूं कि वह आर्य समाज के स्वर्ण युग की एक निशानी थी और वह निशानी अब चली गई। कुछ व्यक्ति वह भी होते हैं जो चले तो जाते हैं परन्तु अपनी एक ऐसी याद छोड़ जाते हैं जो वर्षों तक उन्हें भूलने नहीं देती। चले जाने के बाद भी वह एक प्रकाशस्तम्भ बने रहते हैं। चौधरी रूपचन्द जी एडवोकेट एक सच्चे और सुच्चे व्यक्ति थे और उन्होंने कभी किसी के साथ कोई धोखा न किया था। मैं तो यह भी कहूंगा कि वह एक सच्चे आर्य समाजी थे।

परन्तु वह चले गये और अब हम कर ही क्या सकते हैं ? हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह चौधरी रूपचन्द जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार के सदस्यों को यह शक्ति दे कि वह इस वियोग को सहन कर सकें और हम सबको यह प्रेरणा दे कि हम जहां तक सम्भव हो सके चौधरी रूपचन्द जी के पदचिन्हों पर चलने का प्रयत्न करें।

—वीरेन्द्र

आबू पर्वत पर नया सूर्योदय— आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय

ले० श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

स्थान आबू पर्वत प्रात:काल 27 मई को हज़ारों नर नारी प्रसन्नता उत्सुकता एव आश्चर्य से एक ऐतिहासिक क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, गत चार वर्षों से नित भविष्य की योजना बन रही थी। आज सब उसका वर्तमान मे परिवर्तित होते देख रहे थे, सबके मन में एक गर्व का भाव दिखाई दे रहा था, जिसमे उन क्षणो के साक्षी होने का गौरव था। प्रात: सामवेद परायण यज्ञ के पश्चात् ईश्वर स्तुति प्रार्थना के पाठ के ध्वजोतलन के साथ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के विधिवत् प्रारम्भ करने की घोषणा की। सन्यासियों, ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, सद्गृहस्थों के तुमुल जयघोष से आबू पर्वत की शृखलाएं गुन्जायमान हो उठी, जो आबू पर्वत प्राचीन समय में ऋषियों की तपस्थली थी। आज उसके पुरातन गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने का दिन था।

पुरातन काल से आबू पर्वत ऋषियो की तपस्थली रहा है। साथ ही आबू पर्वत एक महत्वपूर्ण पर्यटक केन्द्र है। राजस्थान और गुजरात की सीमा पर होने के कारण दोनों प्रान्तों के निवासियो के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्राकृतिक सुन्दरता के साथ इतिहास के प्रसगों का स्मरण कराता है। विश्व प्रसिद्ध देलवाडा के मन्दिर पौराणिक ऐतिहासिक प्रसंगों के साथ भाव एवं भावनाओं को कला के माध्यम से प्रकट करते हैं। उसी आबू पर्वत पर यह ऐतिहासिक महत्त्व का विशाल आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य था आबू पर्वत पर आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना करना। गुरुकुल की स्थापना का सकल्प लिया था स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने। धर्मानन्द सरस्वती जी एकान्तवास में आध्यात्मिक साधना करने की इच्छा से आबू पर्वत पर पधारे थे, जहां जंगल में कुटिया बना कर अनेकों वर्षों तक तपस्यापूर्वक ईश्वर भक्ति में लीन रहे, इस अवधि में इन्होंने अनुभव किया कि इस पवित्र तपस्थली को धार्मिक पाखण्डों एवं स्वेच्छाचारी लोगों ने अज्ञानी और भोले-भाले लोगों को ठगने और अराष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार करने का केन्द्र बना कर दूषित कर दिया है। इसके लिये स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने अनुभव किया कि जनता को भारतीय संस्कृति की रक्षा और उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराना आवश्यक है, यह कार्य विना गुरुकुल के संभव नहीं था। इसके लिये गुरुकुल की स्थापना का संकल्प किया। इस सकल्प के साथ ही इसको मूर्तरूप देने के लिये उचित भूमि की आवश्यकता थी, भूमि की खोज प्रारम्भ की गई और आबू की पर्वतमाला के मध्य प्राकृतिक वातावरण के बीच एक सुन्दर भूखण्ड का चयन किया गया। आर्यजनों के सहयोग से एक मास से भी कम समय में 15 बीघा भूमि प्राप्त कर ली गई। यह भूमि पर्वत के दर्शनीय देलवाड़ा मन्दिरों के सामने सड़क के दूसरी ओर एक किलोमीटर अन्दर चारो ओर से अरावली की ऊंची चोटियों के मध्य स्थित है, जहां ईश्वर प्रदत्त अनुपम सौन्दर्य का वैभव बिखरा हुआ है।

भूमि प्राप्त करने के पश्चात् 1 जून, 1986 में एक समारोह में गुरुकुल की नींव रखने का दूसरा चरण प्रारम्भ किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा आधारशिला रखी गई। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के सामने महाविद्यालय के निर्माण के लिये भूमि को समतल करना, जल की स्थायी व्यवस्था करना भवनों का उपयुक्त नक्शा बनवाकर निर्माण करना आदि की कठिन समस्या थी। केवल पानी की व्यवस्था पर एक लाख रुपया व्यय हुआ, पानी की व्यवस्था के पश्चात् तीन गुफाओं का निर्माण किया गया। कार्यकर्त्ताओं के रहने योग्य स्थान की और जल की व्यवस्था हो जाने पर भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। नक्शे के अनुसार चौबीस कमरे एक यज्ञशाला एव हाल का निर्माण करना था। चार वर्ष के कम समय में गुरुकुल के लिये एक हाल यज्ञशाला सहित चार कमरों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया तथा शौचालय, स्नानगृह, अतिथिशाला का निर्माण कार्य चल रहा है।

उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ गुरुकुल की नव निर्मित यज्ञशाला में वेदों के विद्वान् स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य पं० भीमसेन जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ द्वारा प्रारम्भ हुआ। प्रात: एवं सायंकाल वेदमन्त्रों के उद्घोष और प्रवचनों से अरावली की पर्वत माला गुन्जायमान होती रही। उत्सव का कार्यक्रम दिनांक 25, 27 एवं 28 मई को सम्पन्न हुआ। उत्सव का कार्यक्रम नक्की झील के सुरम्य तट पर स्थित आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में हजारों आर्य नर-नारियों की उपस्थिति में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के प्रवचन एवं भजनोपदेश से आध्यात्मिक एवं धार्मिक वातावरण में हजारों व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

गुरुकुल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर ध्वजोत्तोलन करते हुए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बताया इस संसार में वास्तविक धर्म के प्रचार का और संसार को सुखी करने का मूल आर्ष शिक्षा प्रणाली है। आर्ष शिक्षा से ही मनुष्यों का मानवीय मूल्यों का विकास होता है। अन्य शिक्षा तो मनुष्य को मनुष्यता से दूर करती है और शोषण की प्रवृत्ति को बढ़ाती है।

गुजरात के मुख्य सचेतक लेखराज बच्चाणी ने गुरुकुल के लिये शुभकामना व्यक्त करते हुए गुरुकुल के लिये राज सरकार से मिलकर सड़क निर्माण करवाने की घोषणा की और बताया कि यह स्थान गुजरात और राजस्थान के लिये प्रेरणा और प्रकाश का केन्द्र बनेगा। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने बताया वर्तमान शिक्षा भोगवादी प्रवृत्ति की ओर ले जाती है। जबकि आर्ष शिक्षा त्यागवाद की ओर मनुष्य को प्रवृत्त करती है। पूर्व संसद् सदस्य आचार्य भगवानदेव ने कहा स्वामी धर्मानन्द जी महाराज का त्याग और तप है जिसके कारण आज आबू-पर्वत पर एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ है। देश की जनता को तन, मन, धन से इस पवित्र कार्य में सहयोग करना चाहिये। श्री बाल दिवाकर हंस ने स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के शुभ संकल्प को जनता से सफल बनाने का आह्वान किया और उनके प्रयासों का विवरण दिया। समारोह में उपस्थित जनसमूह ने दत्तचित होकर विद्वानों के प्रवचन उपदेशों का श्रवण किया साथ ही उदारता-पूर्वक सहयोग प्रदान किया।

गुरुकुल में एक कमरे के निर्माण के लिये अनेक व्यक्तियों ने इक्तीस हजार रुपये देने की घोषणा की। नीचे मंजिल के सभी कमरों के निर्माण हेतु दान प्राप्त हो गया है। गुरुकुल के प्रबन्धकों ने योजना बनाई जिसके अनुसार इक्कीस हजार रुपये की स्थिर निधि से एक छात्र का वार्षिक व्यय प्राप्त होगा। ग्यारह हजार की स्थिर निधि के ब्याज से गुरुकुल का एक दिन का व्यय पूरा होगा तथा इक्यावन सौ की स्थिर निधि के ब्याज से गुरुकुल का आधे दिन का व्यय पूरा होगा। अनेक व्यक्तियों ने अपने परिजनों एवं मित्रों की स्मृति में इस व्यय भार को उठाने में मुक्त हस्त से योगदान प्रदान किया है और कर रहे हैं।

इस प्रारम्भिक सत्र में 25 छात्रों को रखने की व्यवस्था की गई थी जो 26 छात्रों के प्रवेश के रूप पड़ गई। 29 मई को प्रात: गुरुकुल भूमि में ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार, सम्पन्न हुआ। गुरुकुल चितौड़के सुयोग्य वैदिक विद्वान् पं० भीमसेन जी वेदवागीश की देखरेख में विद्यार्थियों के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ हो गया है।

इस गुरुकुल स्थापना महोत्सव ने गुरुकुल के ब्रह्मानन्द युग को फिर एक बार साकार कर दिया।

दिवंगत आर्य समाजी

ले०—श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थ गुरुकुल भटिण्डा

स्व० महाशय हुकम चंद जी

आर्य समाज मन्दिर मण्डी डबवाली की रजिस्ट्री 1946 ई० में ओम् प्रकाश आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर के नाम कराई। उस समय इन के सहयोगी देश भक्त श्री महाशय हुकम चंद जी थे। नगर में इन को सभी लोग महाशय जी कह कर ही बुलाया करते थे। मण्डी डबवाली में इन्होंने एक हजार रुपया उधारा लेकर आर्य समाज मन्दिर और आर्य विद्या मन्दिर का कार्य शुरू किया। अपने जीवन काल में समाज मन्दिर का दो मंजिला भवन यज्ञशाला स्कूल अति उत्तम बनाने में सफलता प्राप्त की। आप जनक आर्य समाज के कार्य को बड़ी लगन से अपना निजी काम समझ कर दिन रात इस कार्य में लगे रहते थे। देश की स्वतन्त्रता के लिए कई बार जेल भी गए। सारी आयु स्वदेशी खद्दर के वस्त्र ही पहनते रहे।

स्व० श्री लाला रामजी दास जी

स्व० श्री लाला रामजी दासजी आर्य समाज कालांवाली मण्डी (जिला सिरसा) के संस्थापक थे। लोग इन को अन्त समय तक मन्त्री जी कह कर ही बुलाया करते थे—इन के नाम को बहुत कम लोग जानते थे। इनका नाम ही मन्त्री जी पड़ गया था। स्व० स्वामी स्वतन्त्रानंद जी महाराज की प्रेरणा से इन्होंने आर्य समाज मन्दिर के लिए बहुत बड़ा त्याग दान में किया। इनके साथी स्व० श्री काहन चन्द जी प्रधान थे। इनको भी लोग अन्त समय तक प्रधान जी कह कर ही बुलाते थे श्री लाला रामजी दास जी "मन्त्री अस्वस्थ रहते थे। परन्तु आर्य समाज के कार्यों में सदा भाग लेते रहते। बड़ी भारी लगन थी। अब उन के सपुत्रों ने (श्री बिहारी लाल जी, श्री टेक चन्द जी, श्री जगदीश राम जी, श्री मदन लाल जी) आर्य समाज मन्दिर में अपने पिता जी की स्मृति में 25-30 हजार रुपया के लागत से यज्ञशाला बनानी शुरू कर रखी है। श्री लाला रामजी दास मन्त्री के साथ स्व० श्री महाशय चेतन राम जी ने भी आर्य समाज का बड़ा काम किया।

पाकिस्तान भी बन गया और पंजाबी सूबा भी बन गया—3

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

और हमारी कोई भी समस्या हल नहीं हुई बल्कि हालात और अधिक खराब हो गए हैं। पाकिस्तान जो कुछ कर रहा है उस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। मुहम्मद अली जिन्नाह ने जिस नीयत से देश का विभाजन कराया था उसका यही परिणाम निकलना था। जब यह समझ लिया गया कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग अलग कौमें हैं तो उसके बाद वही कुछ होना था जो अब कश्मीर में हो रहा है। अयोध्या में मुसलमान बाबरी मस्जिद को वहां से हटाने को तैयार नहीं हैं जिसका अर्थ है कि उनके विचार के अनुसार भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि में उनकी स्मृति में कोई मन्दिर नहीं बन सकता। दूसरे शब्दों में वह राम पर बाबर को अधिक मान देते हैं।

यह सब कुछ पाकिस्तान बन जाने के बाद हो रहा है। जिसका अर्थ है कि जिस उद्देश्य को समक्ष रख कर देश का विभाजन हुआ था, वह पूरा नहीं हुआ। नेहरू और पटेल समझते थे कि यदि जिन्नाह की बात मान ली जाए तो यह हमेशा की चखचख समाप्त हो जाएगी और फिर हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कोई झगड़ा नहीं होगा। गांधी जी ने भी आखिर देश का विभाजन स्वीकार कर लिया था तो इसी लिए। लेकिन आज वह सब आशाएं और अकांक्षाएं मिट्टी में मिल गई हैं। हिन्दू मुस्लिम समस्या पहले की तरह हमारे सामने खड़ी है बल्कि पहले से भी अधिक भयानक रूप में।

और यही पंजाबी सूबा के बारे में कहा जा सकता है। पंडित जवाहर लाल अकालियों की यह मांग स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। इंदिरा गांधी ने मान ली, इस विचार से कि उसके बाद अकाली और कोई मांग नहीं रखेंगे। लेकिन 1966 में पंजाबी सूबा की मांग स्वीकार हुई और 1973 में आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव पेश कर दिया गया। इसके साथ एक नया आन्दोलन शुरू हो गया। केवल इतना ही नहीं अकालियों ने पुराने मुर्दे भी उखाड़ने शुरू कर दिए हैं कि महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल ने उनके साथ जो वायदे किए थे वह पूरे होने चाहिएं। आईए, पाठकगण। आपको बताऊं कि वह वायदे क्या थे—

19 मार्च 1937 को गांधी जी ने दिल्ली के गुरुद्वारा शीशगंज में भाषण देते हुए कहा था—

"मुझ से वायदा मांगा गया है कि कांग्रेस ऐसा कुछ नहीं करेगी जिससे उसके लिए सिखों की सहानुभूति में कोई कमी आए। कांग्रेस ने अपने लाहौर के अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास किया है कि वह अल्पसंख्यकों के बारे में न तो कोई ऐसा समझौता करेगी न उसमें भागीदार होगी जो किन्हीं भी सम्बद्ध अल्पसंख्यकों को संतुष्ट न कर सके। कांग्रेस सिखों को इससे और अधिक विश्वास क्या दिला सकती है। मैं चाहता हूं कि आप मेरा यह आश्वासन और कांग्रेस का प्रस्ताव स्वीकार करें कि एक सम्प्रदाय की तो बात ही क्या कांग्रेस किसी एक व्यक्ति से भी विश्वासघात नहीं करेगी, आप अपने दिल से सभी शंकाएं दूर कर दें। परमात्मा आपके और कांग्रेस के बीच इस समझौते के साक्षी होंगे।"

जहां तक पंडित जवाहर लाल का सम्बन्ध है उन्होंने 6 जुलाई 1946 को एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था "पंजाब के बहादुर सिख एक विशेष सुविधा के अधिकारी हैं। मैं एक ऐसे क्षेत्र और व्यवस्था में कुछ भी आपत्ति अनुचित नहीं समझता जहां सिख स्वतन्त्रता का माहौल महसूस करें।"

जो कुछ गांधी जी ने कहा और बाद में पंडित नेहरू ने कहा था उसका यदि कुछ अर्थ था तो केवल यह कि सिखों को दूसरों की अपेक्षा एक विशेष दर्जा दिया जाएगा और उन्हें एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करने की अनुमति होगी जहां वह आज़ादी की सांस ले सकें।

जिस दिन पंजाबी सूबा की मांग स्वीकार कर ली गई उस दिन सिखों की यह मांग स्वीकार कर ली गई और जो वायदा कांग्रेस ने उनसे किया था वह भी पूरा हो गया। मास्टर तारा सिंह और संत फतेह सिंह दोनों कहते थे कि यदि पंजाबी सूबा की मांग स्वीकार कर ली जाए तो उसके बाद उनकी कोई और मांग नहीं रहेगी। जब इन्दिरा गांधी ने यह मांग स्वीकार की थी उस समय सरदार गुरनाम सिंह पंजाब की अकाली सरकार के मुख्यमन्त्री थे। उन्होंने पहले पंजाब में दीपमाला करने की घोषणा की थी लेकिन बाद में इस फैसले को वापिस ले लिया। और अब अकाली कहते हैं कि आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाए। यदि यह स्वीकार हो जाए तो कहेंगे कि अब खालिस्तान भी बना दो।

पाठक गण मैंने जो घटनाएं आपके सामने रखी हैं उनसे आपको यह तो पता चल गया होगा कि जिस उद्देश्य के दृष्टिगत पहले पाकिस्तान बनाया गया और बाद में पंजाबी सूबा, वे दोनों उद्देश्य धराशायी हो गए हैं। आज यह भी कहा जा सकता है कि पाकिस्तान और पंजाबी सूबा दोनों हमारे नेताओं की बहुत बड़ी गलतियां थी। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि परमात्मा हमें बड़ों की गलतियों से बचाए छोटे लोग जो गलती करते हैं उनके परिणाम इतने भयानक नहीं होते जितने कि बड़ों की गलतियों के। पाकिस्तान नेहरू और पटेल के गलत फैसले का परिणाम था। पजाबी सूबा इंदिरा गांधी के गलत फैसले का। इसी के साथ यह भी स्पष्ट हो गया है कि जब किसी विशेष साम्प्रदायिक मांग को राजनीतिक आधार पर स्वीकार किया जाता है उसका परिणाम अन्त में खराब होता है। गान्धी जी एक धर्मप्रिय व्यक्ति थे। सुबह और शाम "रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम" का जाप करते थे। जब कभी कोई रानीतिक समस्या उनके सामने आती थी तो राजनीतिक आधार पर ही उसका फैसला करते थे 1947 में उन्होंने भी हिमालय जितनी बड़ी गलती की थी जो देश का विभाजन स्वीकार कर लिया था यही गलती इंदिरा गांधी ने। 1966 में की थी जो पंजाबी सूबा स्वीकार कर लिया था। पाकिस्तान और पजाबी सूबा आज दोनों हमारे लिए सिर दर्द बने हुए हैं और काफी समय तक बने रहेंगे। यह वास्तव में वर्तमान सरकार की परीक्षा की घड़ी है। इसलिए तो कहा गया है कि :

लम्हों ने खता की थी
सदियों ने सजा पाई

जो गलती हमारे नेताओ ने पहले 1947 में और फिर 1966 में की थी उसकी सजा हम आज पा रहे है।'

मैंने उड़ीसा में क्या देखा ?

जिला फूल बाणी (उड़ीसा) में शुद्धि समारोह—में 11 मई 1990 को पूर्व निश्चित कार्यक्रम अनुसार सातवीं बार धुरी से चला, पंजाब, हरियाणा, देहली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र होता हुआ आठवें प्रान्त उड़ीसा, दो दिन दो रात और दो घण्टे में "खरियार रोड़" गुरुकुल, "आम सेना" 13 मई को पहुंचा। वहां से जीप के द्वारा साढ़े 13 घण्टे में गंडगांव जहां शुद्धि समारोह था, पहुंचे। जिसमें उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं उत्कल सभा के महामन्त्री श्री धिशिकेशन जी शास्त्री भी थे तथा अन्य कुछ ब्रह्मचारी भी। सायं 7 बजे जब हम पहुंचे, तो उड़ीसा की संस्कृति अनुसार हम सब का भव्य स्वागत हुआ, जिसे देखकर यह लगा कि यह लोग ईसाइयत से तंग आ चुके हैं। भला यह भी कोई बात है कि एक गरीब के बीमार बच्चे को "औषधि इसलिए फ्री" दी जाएगी कि उसका पिता "गाय मांस" खाकर ईसाई मत स्वीकार करे। यह सेवा नहीं "पाप" है, और फिर उस व्यक्ति को यह कहते हैं कि हिन्दू डाक्टर से दवाई नहीं लेना, नपुसक बना देगा। कहीं कहीं यह ईसाई यह कहते हैं कि तुम्हारे दो भगवान हैं, "राम और कृष्ण"। देखो यह क्या भगवान हैं ? "भगवान राम" बिना युद्ध के "सीता" को न ले सका और बिना युद्ध के पांच गांव भी "भगवान कृष्ण" न ले सके, परन्तु हमारा ईसा "शान्ति" की ही बात करता है। आप को जान कर आश्चर्य होगा कि ईसाईयों ने मध्य प्रदेश (रायगढ़) जिले मे एक बार कुए में गाय मांस डाल दिया और उस गांव वालों को कहा कि तुम सब ईसाई हो गए, यह है "शान्ति का सन्देश"। शान्ति और सेवा की आड़ में ईसाई "देश" को तोड़ने में लगे हुए हैं। केवल आर्य समाज ही है, जो देश भक्त संस्था ही नहीं, देश भक्तों की फौज देश को पहले भी दे चुकी हैं, आज भी देश भक्त बना रहा है।

देश की स्वतन्त्रता से पूर्व भी आर्य समारोहों में "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होते थे और देश स्वतन्त्र होने के बाद भी आर्य समारोहों में "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन इस लिए रखे जाते हैं, ताकि देश पर भूमि भाषा एवं संस्कृति पर जो आक्रमण हो रहे हैं, उससे देश को बचाया जा सके और देश एक सूत्र में बन्धा रहे। हम सोचते हैं कि जन गणना होने वाली हैं, अतः और भी कई पुनर्मिलन सस्कार रखे जायेंगे।

मैं कहना यह चाहता कि जिला फुल बाणी "वनवासी क्षेत्र" उड़ीसा में दो स्थानों पर 16, 17, 18 मई 90 को समारोह हुए, जिसमें 7 गांवों में 386 लोग झूम झूम कर गंडगांव पहुंचे, उन्हें आचमन यज्ञोपवीत यज्ञ के पश्चात भोजन, फिर भजनों एवं प्रवचनों का ऐसा प्रभाव हुआ कि गुडगांव में आर्य समाज की स्थापना हो गई तथा चारों दिशाओं में एक ही गूंज थी, लोग नाच नाच कर, गा गा कर कह रहे थे—

जगत गुरु महर्षि दयानन्द की जय

—महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ
आर्य कुटिया धूरी (पंजाब)

यज्ञ पद्धति के सम्बन्ध में धर्मार्य सभा को पत्र

मान्य धर्माधिकारी जी,

सादर नमस्ते।

आशा है आप सानन्द होंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने संध्या एवं यज्ञ (हवन) पद्धतियों में एकरूपता लाने के लिए धर्म आर्य सभा द्वारा संकलित पद्धति पर्याप्त समय पहले सभी आर्य समाजों को पालनार्थ भेजी थी। अब भी जब कभी मुझे कई आर्य समाजों के सत्संगों में बैठने और सुनने का अवसर मिलता है तो अनुभव करता हूं कि एकरूपतार्थ बनाई गई पद्धति के अनुसार हवन नहीं होता। कारण पूछे जाने पर कोई सतोषजनक उत्तर उपलब्ध नहीं होता।

इस सम्बन्ध में मुझे कुछ शंकाएं हैं जिन का उल्लेख मैं निम्न प्रकार आप से समाधान हेतु कर रहा हूं।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने संस्कारों आदि में हवन यज्ञ करने और गृहस्थ मे सन्ध्या और दैनिक यज्ञ की पद्धति बताने के लिए संस्कार विधि पुस्तक इस विषय पर उनकी अन्य कृतियों तथा पंच महायज्ञ विधि, ऋग्वेद भाष्य भूमिका आदि में, सब के बाद की कृति प्रतीत होती है। अत: इसकी पद्धति को ही विशेष महत्व देना अधिक उपयोगी होगा।

जहां तक ब्रह्म यज्ञ अर्थात् संध्या का सम्बन्ध है उससे तो प्रचलित एवं एकरूपतार्थ संकलित पद्धति में कोई विशेष अन्तर नहीं है सिवाए इसके कि आचमन मन्त्र का प्रयोग स्वामी जी की संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण में तीन बार लिखा है जबकि इस नई पद्धति में दो ही बार लिखा है और साधक प्राय: एक बार ही कर रहे हैं।

हवन के सम्बन्ध में कुछ अधिक अन्तर ज्ञात हुआ है।

आचमन अंग स्पर्श, ऋत्विक्वरण स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्रों से पूर्व करने का विधान इस नई पद्धति में है जबकि महर्षि जी ने स्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्तिवाचन शान्तिकरण के मन्त्रो के बाद लिखा है। वास्तव में हवन तो विशेष कर जब अग्नि आधान की कार्यविधि करने और कराने का समय है तब ही है। अत: महर्षि के अनुसार न रख कर यह नई दिशा देने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता जबकि हमें महर्षि की कृतियों के अनुसार ही अधिक से अधिक चलना चाहिए। क्योंकि उन्होंने ही इस दिशा में हम लोगों का मार्ग प्रशस्त किया है।

गृहाश्रम प्रकरण में प्रात: और सायं से पृथक अथवा एक समय में दैनिक यज्ञ करने की 16, 16 मन्त्रों आहुतियां लिखी हैं जो निम्न प्रकार हैं:

आघारवाज्यभागाहुति—4

सायं की आहुति—4

महाव्याहृतियाहुति—4

आपो, अग्ने, विश्वेम मन्त्रों से आहुति—4

प्रात: काल के दैनिक यज्ञ में 4 प्रात: कालीन मन्त्रों से आहुति देवें।

उपरोक्त आहुतियों के दिए जाने की विशेष पुष्टि महर्षि द्वारा लिखित संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण में दी गई टिप्पणी से भी होती है। परन्तु सार्वदेशिक सभा की नई पद्धति में एक ही समय में यज्ञ करने वाले के लिए आघारावाज्यभाग आहुतियों का दो बार विधान नहीं किया जिससे चार आहुति न्यून रह जाती है।

जो पद्धति एक रूपातार्थ पहले पहल छपी हुई उपलब्ध हुई थी उस में और जो अब 8 मार्च 1984 में छपी है उसमें कुछ अन्तर प्रतीत होता है। यथा पहले दैनिक यज्ञ की आहुतियां (प्रात: सायं की) पहले देकर तदोपरान्त विशेष यज्ञ की आहुतियां देने का विधान किया गया था। अब जो पुस्तक मार्च 1984 में छपी है इसमें विशेष यज्ञ के अन्तर्गत ही दैनिक की आहुतियों का विधान किया गया है।

4. जब प्रात: और सायं पृथक-पृथक यज्ञ न कर के एक ही समय यज्ञ करते हैं तो जैसे प्रात: काल यज्ञ करें तो प्रात: की आहुतियां पहले और सायंकाल की (जो समय अभी आया ही नहीं और शायद आएगा भी नहीं) आहुतियां देते हैं। यह (एडवांस बूकिंग समझ नहीं आती) प्रात: काल यज्ञ के समय पहले बीती सायं की आहुतियां देवें और पश्चात प्रात: काल की आहुतियां देवें तब तो कुछ ठीक प्रतीत होता है। क्योंकि जो समय बीत गया उस की आहुतियां यदि दी जाएं तो युक्तियुक्त है अथवा उसके लिए यदि अन्य कोई प्रायश्चिताहुति हो तो वह दी जा सके। कहने का भाव यह है कि एडवांस (समय से पूर्व) आहुति का क्या तुक है।

5. जलसेचन करने का भी कई जगह भेद प्रतीत हुआ है। पूर्व दिशा में जल सेचन करते समय कई जगह उत्तर से दक्षिण की ओर करते हैं तो कोई दक्षिण से उत्तर की ओर ऐसे ही पश्चिम दिशा में और उत्तर को कई पूर्व से पश्चिम और कई उल्टा करते हैं।

6. अष्टाज्याहुति के समय कई लोग केवल आज्या (घृत) की आहुति देते हैं और कई लोग साथ सामग्री की आहुति भी देते हैं। इस का विधान स्पष्ट नहीं है।

7. सार्वदेशिक सभा की पुस्तक में टिप्पणी होते हुए भी सामग्री की आहुति प्रात: सायंकाल के मंत्रों से प्रारम्भ करते हैं तो अन्त तक देते ही जाते हैं जबकि सामग्री केवल प्रात: सायं के चार ही मंत्रों के साथ ही देने का निर्देश है।

8. पूर्णाहुति करते समय "सर्व वै" से पहले अब भी बहुत जगह पूर्णमिदं आदि मंत्रों को पढ़ते हैं। जबकि सार्वदेशिक के निर्देशानुसार केवल सर्व वै मन्त्र है ऐसी कई एक और भी भिन्नताएं हैं। कृपया इन का समाधान करने का कष्ट करें और एकरूपार्थ पुन: आर्य जगत को आह्वान करें।

—[illegible] शर्मा

कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

जन्म भूमि श्रीराम की

ले० श्री स्वरूपानन्द जी सरस्वती दिल्ली

सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की॥

छाया है आतंक देश में सियार शेर सम गुर्राते हैं।
हो रहे अत्याचार प्रबल अति दीन दुखी जन चिल्लाते हैं॥

राष्ट्र शक्तियां सुप्त हो रही इस भारत सुखधाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की॥1॥

यह भारत सरकार राम मन्दिर पर रोक लगाती है।
राम कृष्ण के वंशज होकर जरा शर्म नहीं आती है॥

राम मर्यादा पुरुषोत्तम बिन कीमत नहीं एक छदाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्री राम की॥2॥

उखाड़ फैंको हृदय भूमि से अहंकार का खर पतवार।
स्नेह सूत्र में बंध जाओ लो सद विचार निज हृदय धार।

राम नाम की ध्वनि गुंजादो देर नहीं शुभ काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्री राम की॥3॥

यही समस्या बनी रही तो फिर भविष्य में हल क्या होगा।
यह तन के उजले मन के काले इनसे कार्य सफल क्या होगा॥

जब सूख गई सारी खेती फिर बरसात है कौन काम की॥
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्री राम की॥4॥

सावधान राम भगतो सीधेपन से काम नहीं चलता।
टेढ़ी उंगली किए बिना हांडी से घी नहीं निकलता॥

बढ़े चलो निर्भय होकर क्या बाट तको परिणाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्री राम की॥5॥

हम आर्यवीर श्रीराम भक्त सतपथ पर कदम बढ़ायेंगे।
पूरण हो सारी अभिलाषा अब मन्दिर शीघ्र बनायेंगे॥

कहे 'स्वरूपानन्द' तुम्हें सौगन्ध राम घनश्याम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की॥6॥

यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।

धैर्य धारण करें ! कैसे ?

ले० श्रीमती विमला श्रीवास्तव 4 ए सड़क नं० 1 से० 4 भिलाई (मध्य प्रदेश)

(गतांक से आगे)

2. राम चरित मानस में तुलसी दास जी ने लिखा है—

"हानि लाभ, जीवन मरण, यश
अपयश विधि हाथ"

3. इस असफलता में मेरी कहां कमी रही है। उस कमी को दूर करने से ही सफलता मिलेगी। अत: हाथ पर हाथ रख कर बैठने या धैर्य खोकर रोने से तो सफलता मिलने से रही।

4. तुन्दे हवा से न घबड़ा तू ए अकाब,
यह तो आती है, और ऊंचा उठाने के लिए।

5. सुर्ख होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद,
रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद।

4. किसी विषय पर चर्चा करते हुए जब कभी—

1. परस्पर वाक् युद्ध प्रारम्भ हो जाए और धैर्य हाथ से फिसलता दृष्टिगोचर हो तो ऐसी स्थिति में मौन हो जाएं तथा आत्म विश्लेषण करें कि इस कटु स्थिति को पैदा करने वाली भूल कहां हुई है? और जब तक भूल का मूल पकड़ में न आ जाए तथा मन की बेचैनी शांत न हो जाए तब तक मौन रहें क्योंकि अधैर्य की स्थिति में जो कुछ बोला जाएगा या कार्य किया जाएगा वह अनुचित हो सकता है।

2. आत्म विश्लेषण करें और अपने को प्रतिपक्षी की स्थिति में रख कर सत्य को ढूंढने का प्रयत्न करें। यदि भूल अपनी हो तो प्रायश्चित करे। इससे धीरे धीरे धैर्य का गुण विकसित होगा।

3. अधैर्य की स्थिति उत्पन्न होने पर यह सोच कर अपने को संतुलित करने का अभ्यास करें—

(क) यदि प्रतिपक्षी मूर्ख है तो तुम कौन से बुद्धिमान हो जो मूर्ख से उलझ पड़े थे। बुद्धिमान तो वह होता है जो भैंस के आगे बीन नहीं बजाता।

(ख) बुद्धिमान वह होता है जो अपनी इन्द्रियों का स्वामी होता है। जब तुम अपनी वाणी पर अधिकार नहीं रख सके तो तुम और कहां अधिकार रख सकोगे।

(ग) याद रखो धैर्य से सफलता प्राप्त होती है व धैर्यशाली व्यक्ति को ही दुनियां बुद्धिमान समझती है।

(घ) धैर्य को खोने से बात बनते बनते बिगड़ जाती है।

(ङ) धैर्यहीन व्यक्ति के मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।

(च) धीरे धीरे रे मना,
धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़े,
ऋतु आए फल होय।

(छ) धैर्यहीन व्यक्ति कभी अच्छा नेता या शासक नहीं बन सकता।

4. धैर्य खो जाने पर जब किसी के प्रति अपराध हो जाए तो प्रायश्चित हेतु अपने को निम्नलिखित दण्ड दें—

1. उपवास करें ताकि भूख बार बार आप को आप की भूल स्मरण कराती रहे तथा आप अपनी भूल सुधारने का संकल्प करते रहे।

2. जिसके प्रति अपराध हुआ हो उससे क्षमा याचना करें चाहे वह आपका शत्रु या सेवक क्यों न हो।

3. दण्ड के रूप में यथा शक्ति कुछ धनराशि दान करें।

4. कठोर परिश्रम करें क्योंकि श्रम से अहंकार नष्ट होता है और अहंकार के नष्ट होने पर धैर्य पैदा होता है।

5. जो अबोध हैं या अनपढ़ हैं वे इतना चिन्तन नहीं कर सकते अत: उनको धीरे धीरे अभ्यास करवायें—

1. परस्पर जोर-जोर से व ऊंचा ऊंचा न बोले।
2. अधिक न बोले।
3. गाली गलौच न करें।
4. आत्म-प्रशंसा न करें। यह सबसे बड़ा दुर्गुण है।
5. सत्य बोलें व मधुर बोले।
6. जल्दबाजी न करें। लड़ाई झगड़ा न करें।
7. असफल होने पर उन्हें प्रोत्साहित करें और उन्हें समझाएं कि

गिरते हैं शाहे सवार, मैदाने जंग में
वे तिफ्ल क्या गिरेंगे, जो घुटनों के बल चलें।

8. अपनी मान्यताओं के विपरीत बातें सुनने समझने व सत्य का विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करने के लिए चर्चा करें।

6. धैर्यशाली महान् व्यक्तियों की जीवनियों, सूक्तियों व उनके विचारों का स्वाध्याय करें।

7. अन्त में अपने परिश्रम के साथ साथ धैर्य पैदा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें तथा निम्नलिखित वेद मन्त्र का अर्थ सहित बार बार जाप करें—

"विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव।

अर्थ—सम्पूर्ण विश्व को पैदा करने वाले, प्रकाश स्वरूप परमेश्वर हमारे दुर्गुण अर्थात् अधैर्यादि दूर कीजिए तथा हमें कल्याणकारी गुण प्रदान कीजिए।

इस प्रार्थना से हृदय अवश्य प्रकाशित होगा तथा धैर्य की प्राप्ति होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रचारित साहित्य की सूचि

पुस्तक	लेखक	मूल्य
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली	ग्यारह भाग	मूल्य 660-00
सत्य की मंजिल सेवा की राह	लेखक श्री शादी राम जोशी	,, 20-00 रु०
अमृत पथ	,, पंडित दीना नाथ— सिद्धान्ता-लंकार	,, 6-00
व्यक्ति से व्यक्तित्व	,, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु	,, 20-00
तत्वमसि	,, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	,, 40-00
संध्या अग्निहोत्र	,, श्री सत्यकाम विद्यालंकार	,, 25-00 ,,
संस्कार विधि	,, — —	,, 8-00 ,,
नित्यकर्म विधि:	,, — —	,, 3-00 ,,
आर्यों का आदि देश	,, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	,, 2-00 ,,
आर्य समाज अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न	,, डा० भवानी लाल भारतीय	,, 10·00 ,,
पंजाब का आर्य समाज	,, प्रि० राम चन्द्र जावेद	,, 4-00 ,,
सत्यार्थ प्रकाश	,, स्वामी दयानन्द जी महाराज	,, 12-00 ,,
बलिदान जयन्ती	,, — —	,, 4-50 ,,
आर्य समाज का इतिहास छ: खण्ड	,, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार	,,675-00 ,,
सिख तुष्टीकरण की राजनीति	,, अरुण शोरी	,, 2-00 ,,
वेद और उनका प्रादुर्भाव	,, महात्मा नारायण स्वामी	,, 7-60 ,,
व्यवहारभानु:	,, स्वामी दयानन्द जी महाराज	,, 1-00 ,,
दि पुष्पांजलि	,, श्रीमती पुष्पा महाजन	,, 2-00 ,,
आर्य कीर्तन भजनावलि	,, — —	,, 1.00 ,,
वेद और आर्य समाज	,, स्वामी श्रद्धानन्द	,, 1-00 ,,
ओंकार स्तोत्र		,, 0-75 ,,
निजाम की जेल में	,, क्षितिश वेदालंकार	,, 20-00 ,,
The Storm in Punjab	,, —do—	
Swami Shardhanand	,, K.N. Kapoor	,, 5-00 ,,
Glimpses from Satyarth Parkash	,, D.N. Vasudeva	,, 3-00 ,,
Social Reconstruction by Buddha and Dayananda	,, Ganga Parshad Upadhyays	,, 2-25 ,,
ਜਨਮ ਸਾਖੀ	,, ਪਿੰਡੀ ਦਾਸ ਗਿਆਨੀ	,, 2-00 ,,
ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦਾ ਦਿਗ ਦਰਸ਼ਨ	,, ਆਚਾਰੀਆ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਸਿੰਘ ਆਜ਼ਾਦ	,, 2-00 ,,
ਸਿੱਖ ਗੁਰੂ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਿਧਾਂਤ	,, ਸਵਾਮੀ ਸੰਵਤੰਤ੍ਰਾਨੰਦ ਜੀ	,, 2-50

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उत्तम अन्न होता है। प्रतिदिन यज्ञ करने से घर का वातावरण भी सुगन्धित रहता है। यज्ञ के द्वारा परमात्मा का आराधन, बड़ों का सत्कार और छोटों को प्रेम प्राप्त होता है।

(3) पितृयज्ञ—जीवित माता-पिता दादा-दादी, परदादा-परदादी—इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना। इन्हें अन्न, धन, वस्त्र, सेवा और सत्कार द्वारा सदा प्रसन्न रखना, इनका कभी भी अपमान न करके सदा सम्मान करना। जीवित माता-पिता आदि की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध और तर्पण है। मरने के पश्चात् उनके नाम पर बीड़ी सिगरेट पीने वाले, गांजे-सुलफे का दम लगाने वाले, अनपढ़ बाम्हनों को खिलाने से कोई पुण्य नहीं होता। पितरों को पहुंचने की बात तो कोरी कल्पना ही है।

(4) अतिथि यज्ञ—जब कभी वेदादि शास्त्रों के विद्वान्, धर्मोपदेशक, लोगों को सन्मार्ग पर चलाने वाले, प्रश्नोत्तर के द्वारा उनके सन्देहों को निवृत्त करने वाले व्यक्ति घर पर आएं तो भोजन, वस्त्र आदि के दान से उनका भी स्वागत सत्कार करना।

(5) बलिवैश्वदेवयज्ञ—कौआ, कुत्ता, कीट पतंग, कोढ़ी, लूला लंगड़ा आदि व्यक्ति—इनको भी अपने भोजन में से भाग देना।

इन पञ्चयज्ञों के अनुष्ठान से गृहस्थाश्रम स्वर्ग बन जाते हैं।

आर्य समाज नवां शहर के समाचार

आर्य समाज नवाशहर में भागवन्ती लडोईया आर्य सिलाई केन्द्र गत दिनों खोला गया है। श्री वेद प्रकाश जी लडोईया आर्य समाज ने अपने पास से पांच हजार रुपया तथा 8 सिलाई मशीने दान दी, तीन मशीनें श्री नौबत राय जी प्रसिद्ध समाज सेवी ने दी। सिलाई केन्द्र की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री इन्द्र देव गौतम तथा मन्त्री श्रीमती प्रेमलता भुक्कर को नियुक्त किया गया।

पारिवारिक सत्संग—श्री सुरेन्द्र मोहन तेज पाल मन्त्री ने कहा कि इस वर्ष में 40 पारिवारिक सत्संग नवांशहर के भिन्न भिन्न मोहल्लों में होंगे। पिछले दिनों श्री कुलवन्त राय शर्मा के निवास स्थान मोहल्ला सतगुरु नगर और श्री राम पाल भारद्वाज अकौंटैंट न्यू बैंक आफ इण्डिया के निवास स्थान पर दो पारिवारिक सत्संग किए गए। श्री पं० देवेन्द्र कुमार जी ने दोनों परिवारों को आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज की ओर से गुरुकुल करतारपुर को दान रूप में 501 रु० तथा एक बोरी कनक की दी गई।

आर्यसमाज फिरोजपुर छावनी में वेद प्रचार

आर्य समाज (लुधियाना रोड) जी० टी० रोड फिरोजपुर छावनी में 6-7-90 से 7-7-90 तक प्रात: व सायं आर्य जगत के युवा हृदय सम्राट ब्र० आर्य नरेश जी द्वारा वेद प्रचार हुआ। इन सभाओं में फिरोजपुर शहर, बस्ती टैंका वाली, कैनाल कालोनी व छावनी के धर्म प्रेमी भाई बहनो ने उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाया। ब्रह्मचारी जी ने प्रत्येक स्त्री पुरुष को अपने जीवन में पांच बातों को अपनाने का उपदेश किया।

1. ईश्वर का ध्यान 2. वेद का ज्ञान 3. यज्ञ का अनुष्ठान 4. संस्कारी जीवन और संतान 5. राष्ट्रहित बलिदान। —देवराज बस

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सोहन गंज दिल्ली का वार्षिक चुनाव गत दिनों सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री शिव प्रसाद जी गुप्त
मन्त्री—श्री प्रेमसागर जी गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री बाल मुकन्द जी गुप्ता।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक चुनाव 15-7-1990 को श्री राम लाल जी गांधी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी व अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए :

प्रधान—श्री सुभाष गुप्ता।

उप-प्रधान—श्री ओम प्रकाश महाजन।

मन्त्री—श्री विजय सरीन।

उप-मन्त्री—श्री ओम प्रकाश गुलाटी।

कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश गुप्ता

पुस्तकाध्यक्ष—श्री मास्टर राधा कृष्ण।

यज्ञाध्यक्ष—श्री राम लाल गांधी।

अन्तरंग सदस्य—श्री यशपाल गुप्ता और श्री ओम प्रकाश मोहन।

आर्य कुमार सभा का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 5-7-90 को आर्य कुमार सभा महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) का चुनाव पूज्य-स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, डॉ० वामदेव जी एवं पं० सुभाष शास्त्री जी की उपस्थिति में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—नं० कुञ्जदेव जी शास्त्री
उप-प्रधान—ब्र० सतीश कुमार जी आर्य।

महामन्त्री—ब्र० जयबन्धु जी आर्य
उप-मन्त्री—ब्र० भास्कर जी त्यागी
कोषाध्यक्ष—ब्र० कर्मवीर जी आर्य
पुस्तकालय अध्यक्ष—ब्र० सतेन्द्र कुमार, ब्र० छत्रसाल आर्य।

एक यज्ञ सीमित का भी गठन किया गया जिसके सदस्य यज्ञाध्यक्ष के अतिरिक्त श्री महाशय यशपाल और श्री स्वस्ति दास गुप्ता होंगे।

आगामी वर्ष के लिए श्री रम० कुमार गुप्ता लेखा निरीक्षक नियत किए गए।

—विजय सरीन मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ
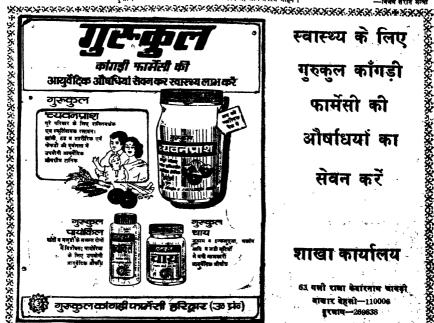
वर्ष 22 अंक 18, श्रावण 14 सम्वत् 2047 तदनुसार 26/29 जुलाई 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

बतायें तुम्हें हम—

दयानन्द क्या थे ?

ले० श्री प्रा० चन्द्रसेन, श्री डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) 146021

संस्कृत विद्वानों का एक मण्डल हरिद्वार घूमने के लिए जा रहा था। छुटमलपुर के बाहर जल पीने के लिए उनका वाहन एक जलयन्त्र को देख कर रुका। जल पीने के पश्चात् टहलते हुए कुछ व्यक्ति मानव सेवा आश्रम में प्रविष्ट हुए। वहां की स्थिति को देख कर विद्याधर ने कहा—चाहे यहां के प्रबन्धक मानव मात्र की सेवा से जुड़े हुए हैं। फिर भी ऋषि दयानन्द से प्रभावित लगते हैं। इतने पर धर्मवीर ने कहा—ये दयानन्दी भी अजीब ही हैं, क्योंकि महर्षि दयानन्द तो अपनी हर चर्चा में वेद का प्रमाण देते हैं या संस्कृत ग्रन्थों का आदर करते हैं, पर आर्य समाज वाले अधिकतर दयानन्द की जय या बात करते हैं। इस पर विजयपाल ने पूछा, आप कहना क्या चाहते हैं? तब उसने कहा—जब महर्षि का परम प्रमाण वेद एवं संस्कृत साहित्य है, तो दयानन्द का अपना योगदान अलग क्या है?

तभी सामने सारी बातें सुनते हुए आश्रम के सहयोगी मिले। उन्होंने सब का स्वागत किया और बैठकर यह चर्चा आगे चलाने का आमन्त्रण दिया। सभी ने इसको स्वीकार किया और सभी आरम्भ से निर्दिष्ट स्थान पर बैठ गए। तब आश्रम का सामान्य परिचय देने-लेने के पश्चात् सहयोगी ने कहा—एक प्राध्यापक यहां ठहरे हुए हैं, उनको भी बुला लेते हैं। प्राध्यापक के सामने जब पूर्व प्रकरण आया, तो परिचय के के पश्चात् उन्होंने कहा—हां, चर्चा के सम्बन्ध में मेरा विचार यह है—"आओ! बतावें तुम्हें हम दयानन्द क्या थे?"

निःसन्देह महर्षि संस्कृत साहित्य और उसमें भी वैदिक वाङ्मय को प्रमुखता देते हैं, परन्तु उनकी स्थिति या योगदान यह है, कि संस्कृत साहित्य के परस्पर विरोधी, असम्बद्ध, विचित्र वर्णनों से भरे विशाल भण्डार से महर्षि ने एक जीवन का सुसंगत पथ दर्शाया है। जैसे कि एक कुशल विशेषज्ञ सारे देश की एकता की दृष्टि से एक राजपथ बनाए, जोकि यातायात की दृष्टि और देश की एकता के परिप्रेक्ष्य से उपयुक्त हो, तो वह यही करेगा, कि जो भी उसमें बाधक बनता है। वह उसको छोड़कर सरल-सपाट-सक्षम-राजपथ बनाएगा। ठीक ऐसे ही महर्षि दयानन्द ने सारे संस्कृत साहित्य का मन्थन करके उसके आधार पर जीवन का एक सुसगत पथ दर्शाया। उसमें जो भी असंगत, असम्बद्ध, विपरीत था, उसको छोड दिया और सुसगत रूप को ही प्रस्तुत किया। तभी तो कहा है—

> 'जब ललाट पर चेतनता के
> चिन्ह अनिश्चय का अंकित था,
> दिखलाया निश्चय-पथ तुमने
> शोधित कर शंका का सागर।'

(परमानन्द शर्मा—एक बार फिर आओ प्रभुवर)

विद्याधर—क्या इसका कोई उदाहरण देंगे?

प्रा०—पहला उदाहरण विवाह का ही देखिए। संस्कृत साहित्य में विवाह की आयु की दृष्टि से परस्पर विरोधी और असम्भव चित्रण भी मिलता है। पर महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में विवाह विषयक सभी बातों का स्पष्ट वर्णन किया है। इस दृष्टि से एक उद्धरण देखिए—'आठ, नौ और दसवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं।' समु० 4, पृ० 76 स्थूल संस्करण। हां, इस बात को केवल तर्क से ही नहीं, वेदमन्त्रों से भी प्रमाणित किया है।

दूसरा उदाहरण अभिवादन का लीजिए। महर्षि ने संस्कृत साहित्य के सभी शास्त्रों के प्रमाण देते हुए कहा है—हमें परस्पर अभिवादन के लिए नमस्ते का प्रयोग करना चाहिए।

इसका तीसरा उदाहरण है—आर्य नाम। महर्षि का मन्तव्य है, कि कि जैसे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से नाम होते हैं। ऐसे ही हमारा सामूहिक नाम आर्य है। जिसका अर्थ है—अच्छा, भला और सभी यही सर्वत्र चाहते हैं। इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यही है कि हमारे सारे के सारे शास्त्र भी यही बताते हैं, कि हमारा एकमात्र साझा नाम आर्य ही है।

जगदीशचन्द्र—श्रीमान् जी! आप इस आधार पर सिद्ध क्या करना चाहते हैं?

प्रा०—मेरा भाव बिल्कुल स्पष्ट है, कि महर्षि दयानन्द ने सारे सस्कृत साहित्य का आलोडन करके एक सुसगत जीवन पथ दर्शाया है। जैसे कि उसके ऊपर वाले विवाह, अभिवादन और आर्य शब्द स्पष्ट प्रमाण हैं। ऐसे ही महर्षि की मान्यता है, कि इस जगत का कर्त्ता-धर्त्ता और नियन्ता एक ईश्वर ही है। अतः उसकी उपासना करनी चाहिए। 2—परमात्मा की एक जैसी सन्तान होने से मानव जाति एक ही है। 3—धर्म शब्द का मूल भाव अच्छा आचरण ही है और इसी के लिए ही अन्य सब कुछ अर्थात् धर्म से अभिप्रेत कर्मकाण्ड है। 4—जिस भी महापुरुष ने जिस भी क्षेत्र मे जो भी महान कार्य किया है उसके आधार पर वह उतना ही वन्दनीय है। ये हैं, वे मूल मन्तव्य, जो महर्षि ने सारे साहित्य के आधार पर सुसंगत जीवन पथ के रूप मे दर्शाये हैं और यही अपूर्व योगदान है। इसी की दृष्टि से दयानन्दी दयानन्द को इतना अधिक महत्त्व देते हैं और जय-जयकार करते हैं। चाहे यह सब संस्कृत साहित्य के आधार पर ही महर्षि ने दर्शाया है, पुनरपि इसको सुसंगत रूप देना ही महर्षि का अनोखा योगदान है।

गंगा प्रसाद—संस्कृत के सम्बन्ध में यह तो कुछ भ्रम फैलाने वाली ही बात है।

प्रा०—आप सब संस्कृत साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण करें, तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे। जैसे कि वहां एक ईश्वर की मान्यता की उपेक्षा देवी-देवताओं और इष्टों की चर्चा अधिक है। इसका प्रभाव प्रायः अधिकतम संस्कृत विद्वानों पर भी देखा जा सकता है। आज के अनेक शकराचार्य भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

विद्याधर—इसका कोई प्रमाण?

प्रा०—कुछ वर्ष पूर्व जात-पात को लेकर हरिजन समस्या के सम्बन्ध में विश्व हिन्दू परिषद् ने सुधारवादी भावना व्यक्त की थी। उन्हीं दिनों होशियारपुर में सनातन धर्म के वार्षिक समारोह पर श्री निरञ्जनदेव जी शकराचार्य आए थे। उन्होंने अपने भाषण में इस प्रसग पर कहा—शंकराचार्य पद का अभिप्राय है, अपने शास्त्रों के सिद्धान्तों का सरक्षण। हमारे शास्त्र जन्मना जात-पात का समर्थन करते हैं। उनमें हरिजनों के सम्बन्ध में सुधारवादी दृष्टिकोण नही है। अतः शकराचार्य के लिए आवश्यक है, कि उस पद की प्रतिष्ठा का ध्यान रखें।

ऐसे ही कुछ कार्यकर्त्ता एक अन्य शंकराचार्य जी के पास गए। प्रसगवश सुधारवादी विचारधारा की बात चली। इस पर शकराचार्य जी ने कहा—सामूयिक दृष्टि से और जातीय सगठन के कारण आप सब सुधारवादी विचारधारा को उपयुक्त समझते हैं, तो विश्वस्त होकर ऐसा कार्य कीजिए। हां, आप इस सुधारवाद पर हमसे शास्त्रों की मोहर न लगवाइए! क्योंकि वहा तो दोनों तरफ की बातें हैं। महर्षि ने इस स्थिति में भी एक सुसगत रूप स्पष्ट किया और यही उनका अनोखा योगदान है।

सभी संस्कृतज्ञ—आप गहरे पानी पैठने की बात कर रहे हैं। इसके लिए हम लौटते हुए आप से आगे की चर्चा चलायेंगे।

कर्म सिद्धान्त

ले० श्री देवी दयाल शर्मा, शर्मा निवास, 120 माडल टाऊन, अमृतसर

ओ३म् न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत पक्तारं पक्वः पुनराविशाति ।।
अथर्ववेद 12/3/48

ऊपर लिखे वेद मन्त्र में कर्म सिद्धान्त का कितना सुन्दर चित्र खींचा गया है।

कुछ व्यक्ति, वैदिक सिद्धांत को भली भान्ति न जानते हुए अपने मन में गलत धारणाएं बनाए हुए हैं कि उनके गुरु संत, महन्त उनको बुरे कर्म के प्रतिफल से बचा लेंगे। उनके मन में यह भी व्यर्थ कल्पना है कि गुरु के आशीर्वाद से अपने कर्मों का असीम शुल्क प्राप्त करेंगे। वेद ऐसे व्यक्तियों को दैवी प्रकाश देता है। हे! लोगों, कर्मों के अन्दर किसी किस्म की घटती बढ़ती नहीं हो सकती। जितना हमने अपने कर्म पात्र को शुभ अथवा अशुभ कर्मों से भरा है वह वैसा ही सुरक्षित है। कर्मों के फल को भुगतने से ही हमारा छुटकारा होगा। कर्म फल में किसी की सिफारिश नहीं चल सकती न ही हम किसी संत, महन्त, गुरु का पल्ला पकड़ कर पार हो सकते हैं। न ही हमें कोई पुण्य फल दे सकता है और न ही पाई फल। सच्ची बात तो यह है कि मनुष्य अपने ही कर्मों से बन्धता है और अपने ही कर्मों से छुटता है। अपनी ही चेष्टता से मनुष्य गिरता है और अपने ही पुरुषार्थ से ऊपर उठता है।

मानव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतंत्र है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था देखिए यदि हमने निम्ब का बीज बोया है तो निम्ब ही उत्पन्न होगा और यदि हमने आम का बीज बोया है तो आम ही निकलेगा। आज तक कोई भी वैज्ञानिक इस अटल नियम को उल्टा नहीं सका और न ही उल्टा सकेगा। यह अटल व्यवस्था कारण कार्य के भाव की व्यवस्था के सहारे है। महाभारत शान्ति पर्व में बड़ा सुन्दर श्लोक आया है:—

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्व कृतम कर्म कर्तारमनुगच्छति ।।

जैसे हजारों गौओं में, बच्छड़ा अपनी मां को ही पकड़ता है, इसी तरह हमारा किया हुआ कर्म भी कर्ता का ही पीछा करता है। हमने अपने कर्मों से अपने पात्र को जितना भरा है वह उतना ही भरा रहेगा जब तक हमारा इन कर्मों से भुक्तान नहीं हो जाता। संसार के अन्दर कोई भी भौतिक शक्ति हमारे कर्मों में घटी/बढ़ी नहीं कर सकती। हमारे अपने ही कर्म हमें बन्धन में डाल सकते हैं और हमारे अपने कर्म छुटकारा (Release) दिला सकते हैं किसी भी गुरु, सन्त महन्त का पल्ला पकड़ कर हम पार नहीं हो सकते। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। पकाने वाले को फिर पका हुआ आ ही मिलता है। जैसा कोई पकाता है वैसा ही खाता है यदि हम ने गेहूं की रोटी पकाई है तो गेहूं की ही खानी पड़ेगी। ऐसा तो कभी हो नहीं सकता कि पकाई हमने गेहूं की और खानी पड़ेगी चने की।

महा भारत के उद्योग पर्व में एक बड़ा सुन्दर श्लोक आया है:—

अन्यो धनं प्रेतगतस्य भुञ्जते वयांसि चाग्निश्च शरीरधातून्।
द्वा भ्यामयं सह गच्छत्यमुत्र पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमान: ।।

मरने के पश्चात् धन किसी के हाथ लगता है और मृतक शरीर शमशान में अग्नि का भोजन बनता है या जंगल में पशु पक्षियों का आहार बनता है यह पता नहीं। न इसके साथ धन जाता है और न ही शरीर। आखिर क्या जाता है—इसके कर्म-कौन से कर्म—शुभ और अशुभ।

परलोक यात्रा में कोई भी साथी इस जीव के साथ नहीं जाता। इस लिए वेद ने ठीक ही कहा है। अपने किए हुये कर्मों की याद करो। सर्वदा शुभ कर्म करते चलो। एक शुभ कर्म हो गया अगला शुभ कर्म ही तुम्हारी प्रतीक्षा करे कि कितनी देर में होगा। गरजेकि, शुभ कर्मों के अनुष्ठान में हर समय कमर कस कर व्यस्त रहो। जीवन का एक एक क्षण शुभ कर्मों के सोचने और शुभ कर्मों के अनुष्ठान में व्यतीत हो। कल्याणकारी गुणयुक्त कर्म ही हमारे मित्र बनें। बुरे कर्मों की ओर मन कभी भी व्यस्त न हो। ईश्वर से प्रार्थना करो कि हे प्रभु यह मेरा मन सदा शुभ संकल्पी बना रहे।

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यम, बोद्धव्यम, च, विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति ।। गीता—4/17

ऊपर लिखे गीता के श्लोक में, हमें कर्म का चित्र भी देखना चाहिए और अकर्म को भी जानना चाहिए और यह भी समझने की कोशिश करनी चाहिए कि विकर्म क्या है। अर्जुन सुन। कर्मों की गति गहन है जो मनुष्य कर्म में अकर्म को देखता है और अकर्म में कर्म का अनुभव करता है, वह मनुष्य यथार्थ देखता है और वही मनुष्यों में बुद्धिमान है। हमने देखना है कि हमारे सम्पूर्ण कर्म स्वार्थंतता की लपेट में न आवें और पूर्णरूप से परमात्मा में अर्पित हों ऐसे स्वार्थरहित कर्म हमारे बन्धन का कारण नहीं बनेंगे। यदि मनुष्य कर्म करने से प्रहेज करता है और समझ बैठे कि वह मोक्ष को प्राप्त हो जायेगे तो वह मनुष्य वास्तव में मूर्खों के स्वर्ग में रहता है। यदि कर्म न करने से मोक्ष मिल जाए तो पत्थर को भी मुक्ति मिलनी चाहिये परन्तु ऐसा कभी नहीं होता इसलिये तीन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(1) स्वार्थ रहित कर्म का यह तात्पर्य्य नहीं कि कर्म करने से प्रहेज करना।

(2) संसार में कोई भी मनुष्य कर्मों का त्याग नहीं कर सकता अगर वह चाहे भी तो।

(3) मानव कर्म छोड़ कर सिद्धि को प्राप्त नहीं हो सकता।

जो कुछ मांगा गया है वह यह नहीं कि मनुष्य कर्मों का त्याग करे बल्कि स्वार्थयुक्त कर्मों का त्याग करे और कर्मों के फल की कभी स्वप्न में भी आकांक्षा न करे। हमें यह समझना चाहिये कि हम परमपिता परमात्मा के सेवक हैं परमात्मा से प्रार्थना करें कि हे प्रभु हमें कर्म करने की शक्ति प्रदान कर। कर्म करना ही अर्थात् वेदानुकूल कर्म करना, परमात्मा की सच्ची पूजा है मानो यह मनुष्य की, परमात्मा की सब से बड़ी पूजा है। इस बात को हृदयंगम करना चाहिए। ओ३म कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजुर्वेद 40/2

ऊपर लिखा वेद मन्त्र हमारा मार्ग दर्शन करता है। मनुष्य को 100 (सौ) साल कर्म करते हुए जीने की इच्छा करनी चाहिए। वेद इस बात पर बल देता है कि हमारे कर्म ऐसे होने चाहिएं जिसमें स्वार्थपना की जरा भी दुर्गन्ध न हो और हमारे सम्पूर्ण कर्म फल की आकांक्षा से रहित हों। इस प्रकार के कर्म करने से हम कर्म बन्धन का शिकार न बन सकेंगे, अर्थात् हमारे स्वार्थ रहित कर्म मुक्ति का द्वार हमारे लिये खोल देंगे। वेद तो बार बार बार मनुष्य को चितावनी दे रहा है कि हे मानव तुम्हारे सम्पूर्ण कर्म रचनात्मक हों—केवल समाज और देश के हित के लिये जितने भी उपकार करने के कर्म हैं वह सब के सब परमात्मा को अति प्रिय हैं परमात्मा भी फिर ऐसे मनुष्यों पर अपने शान्ति रूपी खजाने खोल देता है। इन मनुष्यों को परमात्मा का आतिथ्य प्राप्त करना चाहिए। परमात्मा का आतिथ्य क्या है—प्राणि मात्र की सेवा करना, दीन दुखियों के दुखों को दूर करना, वस्त्र हीनों को वस्त्र देना। भूखों को, अन्न देना रोगियों को नीरोग करना, धन हीनों को धन देना। वेद ने कहा भी है "पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् धन" के साथ पुरुष, सत्य पात्र को दान देवे ही। वह बड़ा भाग्यशाली गार्हस्थ्य है जो शुभ कर्म करने में दिन रात तत्पर है। वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान है जिसकी आत्मा में परमात्मा का चमत्कार होता है। ऐसे मनुष्य ही ईश्वरीय चमत्कार प्राप्त करके दूसरों के अन्धकार को दूर करके प्रकाश में ला सकते हैं जिस तरह महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने किया। संसार का अन्धकार दूर करने के लिए और लोगों को प्रकाश में लाने के लिये सारा जीवन कुर्बान कर दिया। उन्होंने मानव जाति को पांच यज्ञ करने का उपदेश दिया और वह करने के यज्ञ हैं—(1) ब्रह्म यज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृ यज्ञ, (4) अतिथि यज्ञ (5) बलिवैश्व देव यज्ञ:

नीचे लिखे गीता के दो श्लोक हमारा मार्गदर्शन करते हैं—

यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत:
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम ।।
एतान्यपितु कर्माणि संग त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ।।

यज्ञ, दान और तप, इन तीनों कर्मों को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहिए। इनको नित्यप्रति करना ही चाहिए। "भगवान कृष्ण जी कहते हैं कि इन तीनों कर्मों को आसक्ति रहित और फल की आशा को छोड़ कर कर्तव्य बुद्धि से करना चाहिए, ऐसा मेरा निश्चय किया हुआ मत है"

कर्म सिद्धान्त के बारे में गीता का नीचे लिखा श्लोक अपनी ही मार्मिकता रखता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

तेरा कर्म करने में अधिकार होवे फल में कभी नहीं तू कर्म के फल की वासना वाला भी मत हो, तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न होवे। अपने जीवन में अकर्मण्यता, निष्क्रियता और पुरुषार्थ हीनता को कभी पनपने न देवें।

सम्पादकीय—

आर्य समाज के सामने एक नई समस्या

जिस भी संस्था के सुयोग्य, सुशिक्षित और अनुभवी व्यक्ति सदस्य होते हैं, वहाँ किसी न किसी विषय पर कई बार मतभेद हो जाना स्वाभाविक ही होता है। आर्य समाज का यह परम सौभाग्य रहा है कि उसके सदस्य कई उच्च कोटि के बुद्धिजीवी भी रहे हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि जो भी व्यक्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश व उन द्वारा लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अध्ययन करता है तो उसके सामने कई प्रकार के प्रश्न उठते हैं। यह स्थिति उस समय और भी गम्भीर हो जाती है। जब आधुनिक युग के कई विचारक महर्षि दयानन्द से भिन्न अपने विचार रखते हों। उस समय यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि सत्य और असत्य में क्या अन्तर है। आर्य समाज के जन्म काल से ही इस प्रकार के मतभेद आर्य जनता के सामने आते रहे हैं। जब आर्य समाज दो दलों में बंटा था, गुरुकुल दल और कालेज दल, उस समय यह प्रश्न भी उठा था कि यह मतभेद क्यों? परन्तु आर्य समाज के उस समय के नेता बहुत दूरदर्शी थे। उन्होंने अपने इस मतभेद को विरोध का रूप नहीं दिया और एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखते हुए अपने अपने मार्ग पर चलते रहे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन दिया और महात्मा हंसराज जी ने कालेज शिक्षा प्रणाली को और दोनों ने इसके द्वारा आर्य समाज का प्रचार भी किया और महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को सारे देश में भी फैलाया।

आज स्थिति कुछ भिन्न होती दिखाई दे रही है। कई समस्याए अब भी हमारे सामने आती हैं। परन्तु उस सद्भावना के वातावरण में उनका समाधान ढूंढने का प्रयास नहीं किया जा रहा जो सद्भावना पहले हुआ करती थी। आज के हमारे कई नेता मतभेद और विरोध इन दोनों में क्या अन्तर है इसे भी समझने का प्रयास नहीं करते। वह मतभेद को भी विरोध समझने लगते हैं। जब कोई उन से किसी प्रकार से मतभेद का प्रदर्शन करता है तो वह उसे ही अपना विरोध समझ कर उसके विरुद्ध हो जाते हैं। इसका एक परिणाम यह भी है कि आज आर्य समाज में खुले तौर पर आपस में वह तर्क और वाद-विवाद नहीं होता जो होना चाहिए। आज हमारे सामने समस्याएं पहले से अधिक हैं। देश का वातावरण पहले से अधिक दूषित है। इसलिए आर्य समाज का दायित्व भी पहले से अधिक बढ़ जाता है। परन्तु हम देख रहे हैं कि जितना आर्य समाज का दायित्व बढ़ रहा है उतना ही वह निष्क्रिय होता जा रहा है। इसलिए जब भी कोई नई समस्या सामने आती है उसका समाधान ढूंढने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता। इसका परिणाम वही होता है जो हम ने 14-15 जुलाई को दिल्ली में देखा है। वहां स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने अपना एक सम्मेलन किया है और साथ ही उन्होंने यह भी घोषणा की है कि क्योंकि आर्य समाज में शिथिलता आ गई है, देश के सामने जो समस्याएं खड़ी हो रही हैं, आर्य समाज की ओर से उनका समाधान ढूंढने का कोई प्रयास नहीं हो रहा। इसलिए वह एक नया संगठन खड़ा कर रहे हैं। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं इस संगठन के पक्ष में नहीं हूं। स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश से मैं इसमें तो सहमत हूं कि देश के सामने इस समय जो समस्याए हैं, उनके साथ आर्य समाज को जिस प्रकार जूझना चाहिए वह नहीं जूझ रहा। परन्तु कोई नया संगठन खड़ा कर के वह आर्य समाज को सक्रिय बनाने की बजाए और अधिक शिथिल बनाएंगे। इस संस्था का मैं इसलिए भी विरोध करता हूं क्योंकि आज तक यह भी पता नहीं चल सका कि स्वामी अग्निवेश की अपनी विचारधारा क्या है? उन की रुचि राजनीति में अधिक है। इसलिए वह समय समय पर ऐसे वक्तव्य देते रहते हैं जो न केवल आर्य समाज के हित में नहीं है, मैं उन्हें देश के हित में भी नहीं समझता। धर्म निरपेक्षता क्या है? और क्या नहीं? इसका भी आज तक स्पष्टीकरण नहीं हुआ, मैं तो समझता हूं कि धर्म निरपेक्ष वह व्यक्ति होते हैं जिनका कोई दीन-ईमान नहीं होता और कोई धर्म कर्म नहीं होता। क्योंकि स्वामी अग्निवेश अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहते हैं, इसलिए आज तक यही पता नहीं चला कि वह वास्तव में क्या हैं? ऐसा व्यक्ति यदि कोई नया संगठन खड़ा करता है तो वह आर्य समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। इसलिए कोई आर्य समाजी उनका समर्थन नहीं कर सकता। आवश्यकता आज इस बात की है, वह यह कि आर्य समाज के संगठन के अन्दर रहते हुए आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार एक ऐसी समिति बनानी चाहिए जो समय समय पर देश की भिन्न भिन्न समस्याओं के विषय में आर्य समाज का वास्तविक दृष्टिकोण जनता के सामने रख सके। आर्य समाज को आज झझोड़ने की आवश्यकता है। उस सुषुप्ति अवस्था में से निकालने की आवश्यकता है जिसमें वह फंस गया है। यह उसी स्थिति में हो सकता है यदि उन समस्याओं पर खुल कर विचार किया जा सके जो समय समय पर हमारे देश के सामने भी आती रहती हैं और आर्य समाज के सामने भी आती हैं। पिछले दिनों सार्वदेशिक सभा ने एक त्रिसूत्रीय कार्यक्रम आर्य समाज के सामने रखा था, गौरक्षा, हिन्दी प्रचार और शराब बन्दी। इसमें संदेह नहीं कि यह त्रिसूत्रीय कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है परन्तु इसे क्रान्तिकारी नहीं कहा जा सकता जैसे कि सार्वदेशिक सभा के नेतागण कहते हैं। यह तीन समस्याएं तो आज से 100 वर्ष पहले भी आर्य समाज के सामने थी। क्या हम यह समझें कि इन सौ वर्षों में आर्य समाज ने कुछ भी नहीं किया। जिससे यह समस्याएं वैसी की वैसी ही खड़ी हैं। वास्तविक स्थिति तो यह है कि यह समस्याएं आज पहले से भी अधिक गम्भीर रूप में हमारे सामने आ रही हैं। हिन्दी का स्थान अंग्रेजी लेती जा रही है। गौहत्या और शराब पीने की प्रथा पहले से बहुत अधिक बढ़ गई है। इसलिए जो त्रिसूत्रीय कार्यक्रम रखा गया है उस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु हम इस बात से भी इन्कार नहीं कर सकते कि आज हमारे सामने कई नई नई समस्याएं भी खड़ी हो रही हैं, जो सामाजिक भी हैं और धार्मिक भी। उन की तरफ भी ध्यान देने की आवश्यकता है उन में एक भाषा की समस्या भी है और इस पर आर्य समाज में भी टकराव हो रहा है। एक तरफ आर्य समाज कह रहा है कि बच्चों की शिक्षा का माध्यम केवल हिन्दी होना चाहिए दूसरी तरफ आर्य समाज का एक पक्ष स्थान-स्थान पर ऐसे स्कूल खोल रहा है जहां शिक्षा का माध्यम् अंग्रेजी है। हम यह तो नहीं कह सकते कि यह लोग आर्य समाजी नहीं हैं। डी०ए०वी० संस्थाओं के द्वारा आर्य समाज का जो प्रचार हुआ है वह सराहनीय है और आज भी हो रहा है। फिर भी वह अंग्रेजी को यह महत्त्व क्यों दे रहे हैं? उन्हें यह देना चाहिए या नहीं? और इसका कल को क्या परिणाम निकल सकता है? इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इस समस्या के कई और भी पक्ष हैं जिन पर आगामी अंक में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

पंजाब में आर्य समाज का संगठन

इस बार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के जो अधिकारी नियुक्त किए गए हैं, उनमे संगठन मन्त्री श्री आशानन्द जी को बनाया गया है। वह इसलिए कि हमारे सामने इस समय दो लक्ष्य हैं जिन्हें हम ने इस वर्ष में पूरा करना है। एक यह है कि सभा चाहती है कि सब जिलो में जिला सभाएं बना दी जाएं। श्री आशानन्द जी इस समय लुधियाना जिला आर्य सभा के महामन्त्री हैं। इस लिए उन के जिम्मे यह काम लगाया गया है कि बाकी जिलों में भी इसी प्रकार की सभाएं बनाएं। जिला आर्य सभा का विधान क्या होना चाहिए इस को अन्तिम रूप शीघ्र ही सभा की अन्तरग सभा देगी और उसे सब आर्य समाजो को भेजा जाएगा। इसलिए सब आर्य समाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि वह अपने अपने जिला में जिला सभाए बनाएं और इस बात पर भी विचार किया जाए कि जो जिले बड़े हैं उनसे तहसील के आधार पर जिला सभाए बनाई जाएं तात्पर्य केवल यह है कि पंजाब में आर्य समाज के सगठन को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाया जाए।

दूसरा काम जो श्री आशानन्द जी के जिम्मे लगाया गया है वह यह है कि इस वर्ष सब आर्य समाजो के वार्षिक चुनाव एक निश्चित मास के अन्दर हो जाए। वह मास कौन सा हो इस का निर्णय भी सभा की अन्तरग सभा करेगी। इस समय स्थिति यह है कि किसी आर्य समाज का चुनाव कभी होता है और किसी का कभी। उचित यही रहेगा कि सब आर्य समाजें एक नियन्त्रण में चलें और एक निश्चित मास में जिस भी रविवार को वह अपना चुनाव करना चाहें कर लें। जो आर्य समाजें इस समय शिथिल हो रही हैं उन्हें भी सक्रिय करने की आवश्यकता है जो नई आर्य समाजें बनाई जा सकती हैं वह भी बनानी चाहिएं। तात्पर्य यह है कि आर्य समाज का संगठन पहले से अधिक सुदृढ़ और शक्तिशाली होना चाहिए। इस दिशा में जो भी आर्य भाई व बहिनें हमें अपना सुझाव भेजेंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

—वीरेन्द्र

इतिहास विषयक महर्षि के विचार

ले०—श्री मांगेराम जी आर्य, अहमद नगर (महाराष्ट्र)

इक्ष्वाकु यह आर्यावर्त्त का प्रथम राजा हुआ। इक्ष्वाकु की ब्रह्मा से छटी पीढ़ी है। पीढ़ी शब्द का अर्थ बाप से बेटा यही न समझें किन्तु एक अधिकारी दूसरा अधिकारी, ऐसा जानें, पहला अधिकारी स्वयम्भुव था। इक्ष्वाकु के समय में लोग अक्षर, स्याही आदि लिखने की रीति को प्रचार में लाये, ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि इक्ष्वाकु के समय में वेद को बिल्कुल कण्ठस्थ करने की रीति कुछ-कुछ बन्द होने लगी। जिस लिपि में वेद लिखे जाते थे, उसका नाम देवनागरी ऐसा है। कारण देव अर्थात् विद्वान् इनका जो नगर ऐसे विद्वान् नागर लोगों ने अक्षर द्वारा अर्थ संकेत उत्पन्न करके, ग्रन्थ लिखने का प्रचार प्रथम प्रारम्भ किया। ब्रह्मा तक दिव्य सृष्टि थी, पश्चात् मैथुनी सृष्टि उत्पन्न हुई, उससे विराट् हुआ, और विराट् के पीछे मनु हुआ। मनु ने धर्म व्यवस्था बनाई। मनु के दश पुत्र थे, उनमे स्वयम्भुव के समय से राजकीय और सामाजिक व्यवस्थाए प्रारम्भ हुई। इक्ष्वाकु राजा हुआ तो वह इससे नही कि राज-कुल मे वह उत्पन्न हुआ था अथवा उसने बलात् राज्य उत्पन्न किया हो, किन्तु सारे लोगो ने उसे उसकी योग्यतानुकूल राज-सभा में अध्यक्ष स्थान पर बैठाया। उस समय सारे लोग वैदिक व्यवस्थानुकूल चलते थे, भृगु जी ने अपनी संहिता मे यह सब व्यवस्था प्रकट की है और यह ग्रन्थ श्लोकात्मक है, इससे बाल्मीकि जी ने उसे बताया यह कहना कितना सायुक्तिक है सो देखो। इस व्यवस्था के सम्बन्ध मे मनु स्मृति के सातवें, आठवें और नौवें अध्यायों में जो राज्यों की व्यवस्था बतलाई है उसे देखो, केवल अकेले राजा ही के हाथ में किसी प्रकार का हुक्म चलाने की शक्ति न थी, वह तो केवल राजसभा में अध्यक्ष का अधिकार चलाता रहता। राज्यों की व्यवस्था कैसी थी उसे सक्षेप से इस स्थल पर कहता हू। ग्राम, महाग्राम, नगर, पुर, ऐसे-ऐसे देश विभाग रहते थे। ग्रामों में सौ-सौ घर, तो महाग्रामों में हजार, नगर में दश हजार और पुर मे तो इससे भी अधिक घरों की सख्या रहती थी। दश ग्राम पर एक शतेश नाम का अधिकारी रहता था और सहस्र ग्रामों पर सहस्रेश नाम का अधिकारी होता था। दश सहस्रों पर महा सुशील नीतिमान ऐसा एक ही अधिकारी रहता था। लिखने-पढ़ने के कामों में अनुभवशील ऐसे सब देशो में गुप्त दूत वातनियां (खबरें) पहुंचाने के लिये तथा अधिकारी लोग कैसा अधिकार चलाते हैं इसका बोध रखने के लिये चारों ओर फिरते रहते थे, और यह दूतों का काम पुरुष व स्त्रियां भी करती थीं। राज्य में चार प्रकार के अधिकारी होते थे—राज्याधिकारी, सेनाधिकारी, न्यायाधिकारी और कोषाधिकारी, ऐसे चार महकमे के चार अधिकारी रहते थे। इक्ष्वाकु राजसभा का प्रथम अध्यक्ष था। यदि सभा के विचार में दो पक्ष आ पड़ते उस स्थल पर निर्णय करने का काम अध्यक्ष का था। देश में भिन्न-भिन्न की सभायें थीं। दश विद्वान् विराजे बिना परिषद् सभा नही होती थी और न्यून से न्यून तीन विद्वानों के आये बिना तो सभा का काम चलता ही नहीं था। धर्म सभा की ओर किसी प्रकार का अधिकार न था, किन्तु उसमें सभा का ध्यान रहता था, न्यूनाधिक के विषय में राजाार्य्य सभा को विदित करके उस सभा की ओर से दण्डादिक की व्यवस्था होती थी। महाभारतान्तर्गत सभा पर्व में भिन्न-भिन्न सभाओं का वर्णन किया हुआ है, उसे देखो। सेना के सिपाही लोगो को आज्ञा मानना ही मुख्य कर्त्तव्य कर्म है, ऐसा बतला कर उन्हें धनुर्वेद सिखाते थे। आर्य लोगों को "कवायद क्या है", यह विदित न था, ऐसा बहुत से अंग्रेजी पढ़े हुए लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना पागलपने का है क्योंकि मकरव्यूह, बकव्यूह, बलाकाव्यूह, सूचीव्यूह, शूकरव्यूह, शकटव्यूह, चक्रव्यूह इत्यादि कवायद के नाना. प्रकार प्राचीन काल में आर्य लोगों को विदित थे और सैन्य में भिन्न-भिन्न टोलियों पर दशेश, शतेश, सहस्रेश ऐसे अधिकारी रहते थे और उस समय के उनके हथियार अर्थात् शक्ति, असि, शतघ्नी, भुशुण्डी आदि होते थे। अंग्रेज लोगों को अब तक व्यूह रचना का पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ है अर्थात् वे नहीं जानते कि व्यूहरचना किसे कहते हैं। थोड़ी बहुत कवायद करते हैं, उतने ही से वे प्राचीन आर्य लोगों की अपेक्षा कुशल हैं ऐसा तुम्हें, प्रतीत होने लगा है। सारांश "निरस्तपादपेदेशे एरण्डोऽपिद्रुमायते" यह कहावत सत्य है।

इससे अंग्रेजों में हमारी अपेक्षा विशेष गुण नहीं हैं, ऐसा मेरा कहना नहीं है, किन्तु उनमें भी बहुत से अच्छे गुण हैं, सो उनके अच्छे गुणों को हम स्वीकार करें, यही हमें योग्य है। पहिले समय में जो कोई युद्ध में मरता तो उसके लड़के बालों को वेतन मिला करता था और युद्ध प्रसंग में जो लूट मिलती तो उसे नियत समय पर व्यवस्था से बांट दिया करते। सैन्य की योग्य व्यवस्था के सम्बन्ध से उस समय बहुतेरे कार्यों की ओर ध्यान दिया करते और समस्त ऐश्वर्य की मूल कारण सेना है। वह जान सेना के लोगों को कोई किसी प्रकार की चिन्ता वा कष्ट न होने देते। इसलिए अधिकारी लोग उस समय बहुत ही दक्ष होते थे यदि सेना मे कोई बीमार पड़ता तो उसकी विशेष चिन्ता की जाती थी अर्थात् उत्तम रक्षा होती थी।

> कार्षापणभवेद्दण्ड्यो यत्रान्य: प्राकृतो जन:। तत्र राजाभवेद्दण्ड्य: सहस्रमिति धारणा ॥1॥

श्रेष्ठ पुरुषों को और राजा को गरीबों की अपेक्ष: शतपट (सौ गुणा) दण्ड अधिक दिया जाता और राजा लोग मुनि लोगों के साथ धर्मवाद करने में समय लगाते रहते, इस विषय में पिप्लाद मुनि की कथा देखो। इस प्रकार इक्ष्वाकु के समय में राज्यव्यवस्था थी। इक्ष्वाकु राजा इस प्रकार का सुशील, नीतिमान, सुविज्ञ, जितेन्द्रिय, विद्वान् और गुण सम्पन्न राजा था।

बहुत सी पीढ़ियों के पश्चात् सगर राजा राज्य करने लगा। उस समय राजा लोग यदि मूर्ख होते तो उन्हें अधिकार से दूर कर देते अथवा अधिकार ही न देते।

इन दिनों हमारे राजा लोगों को खुशामदियों की चण्डाल चौकड़ी ने घेरा है। सहज ही राजाओं में सारे दुर्गुण वास करते हैं, इसमें आश्चर्य ही क्या है ? बस सारांश इतना ही है कि यह हमारे आर्यावर्त्त का दुर्दैव है।

> बहुधा: पुरुषा राजन्सततं प्रियवादिन:। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ: ॥1॥

सगर राजा सुशील और नीतिमान था। इस राजा का मूर्ख और दुष्ट ऐसा "असमंजस" नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने एक गरीब के बालक को पानी में फेंक दिया। इसकी प्रार्थना का न्याय राजार्य सभा के सम्मुख होने पर राजा ने उसे दण्डित किया और उसे एक महा भयंकर जंगल के बीच कैद कर रखा, इसी का नाम न्याय है, नहीं तो आज कल के राजा लोग और उनके न्याय का क्या पूछना है, कहते हैं कि—

> समरथ को नहि दोष गुसांई। रविपावक सुरसरि की नाईं ॥

बस इस प्रकार की शिक्षा ने भारत को तबाह कर दिया। प्यारे आर्य गण। समर्थों को मूर्खों की अपेक्षा अधिक दोष लगता है क्योंकि उसे समक्ष देख कर समर्थ किया है, वह भला, बुरा, पाप, पुण्य सब जान सकता है। तात्पर्य यह कि ऐसे ऐसे गपोड़ों को न मान कर अपने धर्मानुरागी पूर्वजों के धर्म शिक्षानुकूल बर्ताव रखें, इसी में कल्याण है।

उपदेश मंजरी से साभार—महर्षि दयानन्द सरस्वती का नौवां व्याख्यान

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर का वार्षिक उत्सव

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का वार्षिक उत्सव 10 सितम्बर से 16 सितम्बर 1990 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। उच्चकोटी के विद्वान सन्यासी महात्मा पधार रहे हैं।

विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र प्रकाशित होगा।

हरिवंश लाल शर्मा—प्रधान
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट
करतारपुर 144801 (जालन्धर)

अन्दर के पट खोल रे बाबा!

ले०—श्री डा० शान्तिस्वरूप कपूर, नई दिल्ली।

गंगाराम बड़ा मलंग रहा अपने बचपन में। सब दोस्त इसके साधन-सम्पन्न थे। ऐश-मौज की जवानी मस्तानी आई, गंगो सुन्दर पत्नी आई। पहले आटा-दाल की चिन्ता पिता जी को थी, माता जी को थी। अब गंगाराम यह बोझ उठाने लायक तगड़ा हो गया था, रोटी-रोजी के खेत में पुरुषार्थ का हल चला लेता था। गंगो बाहर से भी सुन्दर और स्वच्छ अन्दर से सुघड़ थी, स्यानी थी, मेहनत करके जो गंगू लाता गंगो उसे सावधानी से खर्च करती; कुछ बचाती; कुछ खिलाती। जीवन का बसन्त नये-नये अरमानों के फूल खिलाता। सौभाग्यवान् था यह चकवा-चकवी का जोड़ा "एक ने कही दूजे ने मानी, नामक कहे दोनों महाज्ञानी।" जहां रगड़ा नहीं, वहां झगड़ा कैसे? गृहस्थ के जूए के नीचे दोनों गर्दन डाले, शुभ कर्मों का हल चलाकर आगे आने वाले कल के लिए आनन्द बीज रहे थे। जो बीजेंगे सो काटेंगे।

गृहस्थ की बेल पर एक सोहनू एक मोहनू के साथ एक भोली के मीठे फल लग गए। गंगा और गंगो चारों पहर इनकी चौकीदारी करते रहे—कहीं बुरी संगत का कोई कौवा इनको खराब न कर दे, कहीं इनकी गन्ध-दुर्गन्ध न हो जावे, कहीं इनकी पुष्टि मे रुकावट न आए, कहीं इनके वर्धन में कसर न रह जाए। दिन-रात की मेहनत सफल हो गई, फल तैयार हो गए। सामर्थ्य के अनुसार शादियां कर दीं, दूसरे गमलों में आरोप दिये—आप कमाएं आप खाएं। धीरे-धीरे जीवन की दोपहर बीत गई, शाम आने लगी। इधर से कुछ फुरसत पाई, जोड़ी निकली यात्रा पर—पहाड़ों के नज़ारे, झरने, बर्फ की लदी चोटियां, कहीं लाल-लाल सेब, कहीं लाल मुख की खुमानी, कहीं रसभरी नाशपाती, कहीं अखरोट, बादाम, शुद्ध शहद, खुशबूदार काला जीरा, महकाने वाला केसर। एक ही धरती, एक ही पानी, एक ही हवा, पर लीला सब न्यारी-न्यारी—

नज़ारे बहुत थे पर,
नज़र छोटी थी।
सीख बहुत थी पर,
अकल मोटी थी॥
पहले तो फ़िक्रे-रोजी में,
मदहोश थे इतने।
कि फ़िक्रे-रोज़ी तो थी,
राज़क का कुछ ख्याल न था॥

अब इन नज़ारों की मस्ती ने इतना मदहोश कर दिया कि इनके बनाने वाले का ध्यान ही नहीं आया। पहाड़ से उतरे, हरिद्वार आए, मथुरा घूमे, इलाहाबाद संगम की सैर की, बनारस के घाटों पर मीरा दीवानी के गीत सुने। विश्वनाथ के संगमरमर के मन्दिर में उछल-उछल कर घण्टे बजाए। काली के मन्दिर कलकत्ते आए। छोटे-छोटे बकरी के बच्चे काली के नाम पर कटते देख खूब घबराए। वह गंगा जो गंगोत्री में कितनी स्वच्छ, ठण्डी, पावन थी, यहां आते-आते रास्ते के कुसंग से कितनी मैली, कितनी धीमी, कितनी थक गई थी, और बेबस होकर खारे समुद्र में लीन हो गई। अब वह गंगा, गंगा नहीं थी यमुना, सरस्वती, नर्मदा, कावेरी भी नही थी, अब यह मात्र खारी समुद्र की लहर थी। प्रभु की कृपा हो गई, बुद्धि इन नज़ारों में खो गई। एक जिज्ञासा की दीपशिखा जाग उठी, काली कमली वाले के क्षेत्र में सवेरे-सवेरे मीठे स्वर गूंज रहे थे—

'असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

झूठ से सच की ओर, अन्धेरे से रोशनी की ओर, और मौत से मोक्ष की ओर चलो रे राही! यही आखिरी पड़ाव है, यही आखिरी पुरुषार्थ है, यही आखिरी लक्ष्य है। गंगा का किनारा, योगियों की साधना से सुरभित वातावरण और जीवन की संध्यावेला, .. सबने जीवन की चिन्तन की नैया का रुख बदल दिया। जिज्ञासा जाग उठी, अन्दर वाला बोल उठा—

कुछ देर फ़िक्रे-आलमे-बाला,
की छोड़ दे।
इस अंजुमन का राज़ इसी,
अंजुमन में है॥

ओ भोले गंगाराम! ओ प्यारी गंगो! अब कुछ समय के लिए बाहर की मौज-मस्ती छोड़ दो। चोटी वाले का हलुवा-पूड़ी भूल जा, दिल्ली की दरीबे की जलेबी बहुत खा ली, कुलफी और चाट भी चखा जी, बाहर बहुत घूम लिया, अब कुछ अन्दर की सुध ले, इस यात्रा का राज़ अन्दर है, बाहर नहीं। ओ भले मुसाफिर! यह कब तक चलेगा?

"अन्दर पैश कूड़लां, बाहर बंसी वाले माल गल्लां" तू पहलगांव गया था, तूने लाल सेब, खुमानी, बादाम, अम्मृगोशा खाया, एक क्षण के लिए रसना तृप्त तो हो गई, पर यह सुख क्षण से अधिक टिका नहीं। यदि तू तब भी समझ लेता कि सेब की लाली बाहर से नहीं, अन्दर से आई है, मिठास जलेबी की तरह बाहर की चाशनी से नहीं, खुमानी के अन्दर से आई तो तेरा बेड़ा पार हो जाता। तू तब भी जाग न सका। तूने चलती गंगा-यमुना-कावेरी को देखकर भी न समझा कि चलने की गति जड़ जल कतरों में नहीं थी, कोई अटल नियम इनको भगा रहा था। तूने कितनी ही प्रभात-बेला देखीं, सूरज को उदय होते देखा, दोपहर की तीव्र तपिश देखी, शाम को अस्त होते सूर्य को देखा। तूने सुना ही नहीं—

डूबते सूरज को वक्ते-शाम देख।
हुसन वाले, हुसन का अंजाम देख॥

तुमने सूरज से पूछा ही नहीं तुझे यह रोशनी, यह गर्मी, यह आकर्षण कहां से मिला? तूने चांद देखा, चांदनी देखी, उसकी चांदनी में ठण्डक देखी, समुद्र को पूर्णमासी के दिन चांद की ओर उछलते देखा, पर पूछा नही यह सब भण्डार उसे किस अन्दर वाले ने दिया? कबीर गाता रहा—

सुबहान तेरी कुदरत पै कुरबान।
पानी ऊपर चादर बिछाई,
तम्बू ताना आसमान।
चांद सूरज बने मशालची,
चमके सकल जहान॥
जो कोई यहां नाचत आया,
बूढ़ा या जवान।
पांच तत्त्व का पिंजरा बनाया,
फूके इसमें प्राण॥
आंखें देखें कान सुने रे,
बोली बोले जबान।
हत्थीं लेवे हत्थीं देवे,
पांव नापें जहान॥
पिंजरे अन्दर मैना बैठी,
गावे उसके गुन गान।
भरके पेट सुलाता सबको,
भूखा जगे जहान॥
ज़र्रे-ज़र्रे मे रहा समाया,
परम दयाल भगवान्।
कहे कबीर सुनो भई सन्तो,
साहिब को पहचान॥

तो जीवन के मोक्षपथ के यात्री कबीर ने तुझे जगाया था पर तू जागा नहीं, ससार के विषयो से भगाया था पर तू भागा नही। ओ बावरे—

दिल के अन्दर ही खुदा था,
तुझे मालूम न था।
मुश्क नाफे मे छिपा था,
तुझे मालूम न था।
हश्र क्या उस मरीज का होगा।
जहर को जो दवा समझता है॥
मेरे प्यारे, घबरा नही—
देख तू वक्त की दहलीज से,
टकरा के न गिर।
रास्ते बन्द नही,
सोचने वाले के लिए॥

उसके दरबार में जब जागो तभी सवेरा है। "जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।" तू भी अब बाहर के पट बन्द करके अन्तर के पट खोल, तुम्हे पिया मिलेंगे जरूर।

वह तेरे अन्दर, तेरे बाहर, तुझसे दूर, सब जगह पर हर क्षण जागता हुआ तेरी रक्षा करता है, तुझे बुलाता है। उसकी गोद हर समय तेरे लिए खाली है। वह सच्चा शिव है, सबका कल्याण करने वाला तेरे हृदय के मन्दिर में है। वह कल्याण का भण्डार है, उसके चिन्तन से, मनन से, तेरे सब इरादे, मनसूबे हमेशा कल्याणकारी हो जाएगे। सुन, उसकी वेद की वाणी को सुन!

(वेद प्रकाश से साभार)

साधना को एक आवश्यक लड़ी

—ले० महात्मा प्रेम प्रकाश जी आर्य कुटिया पुरी

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव (यजुर्वेद)

जो अपनी सहायता आप करता है, भगवान उसकी ही सहायता करते हैं जब पुरुषार्थ से ही पदार्थ मिलते हैं, तो क्या है अर्थ प्रार्थना का? जैसा हम कर्म करते हैं, वैसा ही भगवान फल देते हैं। जैसा कर्म वैसा ही फल देना यह एक महानता है क्या? आप नहीं जानते कि न्यायाधीश या न्यायमूर्ति की प्रशंसा इसी में रहती है कि वह अपराधी को उसके अपराध के अनुसार ही हुक्म सुनाये। पेपर देने वाला स्वयं अंक (नम्बर) नहीं ले सकता, निरीक्षक ही नम्बर देगा आपका कर्म में अधिकार है फल में नहीं।

प्रार्थना एक प्रेरणा

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने "आर्याभिविनय" (भक्ति का समुद्र) में भगवान को हृदय से इतने नामों से सम्बोधन किया है, जितने सृष्टि के आदि से लेकर आज तक कोई नहीं कर पाया। मनुष्य, मनुष्य से प्रार्थना करके भी अपना काम निकालते हैं, कृपालु तो कोई और है जो अकारण ही कृपा करता रहता है, उससे भी प्रार्थना करके देख! क्योंकि प्रार्थना का अर्थ केवल भीख मागना नही, अपितु प्रार्थना प्रेरणा बनकर "साधना" का रूप धारण कर लेती है। प्रार्थना, से पुण्य हो या न हो संकट टलें या न टलें, परन्तु दिव्य शक्ति के ध्यान से स्वभाव या पवित्र शक्ति के ध्यान से पवित्रता आती ही है। मन को प्रसन्नवान

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्यसमाज का मूलाधार—वेद

ले० श्री यशपाल जी आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद।

उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वप्रमुख जन आन्दोलन आर्य समाज का मूलाधार वेद है। उसके संस्थापक ने इसे वेद के प्रचार-प्रसार के लिए ही स्थापित किया था और ऐसा ही घोषणापत्र उस समय रजिस्ट्रार के सम्मुख उपस्थित भी किया गया था। महर्षि की घोषणा थी कि—"मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।" (देखें—स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश) और "जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरवादी पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं।" (वही) तात्पर्य यह कि महर्षि ने आर्य समाज के मूल में अपनी कोई कपोल-कल्पित मान्यता नहीं रखी अपितु वेद को ही उसका आधार बनाया है। पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री का कथन है कि—"मानव शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक कार्यकाल का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है, उसी प्रकार संसार के प्रत्येक सामाजिक संगठन का भी कोई दार्शनिक आधार होता है और उसकी सम्पूर्णता के अनुपात से कार्य-कारण सरणि द्वारा कार्य की पूर्ति होती है। उदाहरणार्थ संसार के प्रत्येक मत और सम्प्रदाय—हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, कम्युनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार—पुराण, कुरान, बाईबिल, कैपिटल आदि ग्रन्थ हैं। उनके गुण-दोषों के अनुसार ही उनके अनुयायी भी होते हैं। आर्य समाज का मूलाधार वेद हैं, जो संसार से प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं और जो बाह्य-साक्षी में मतभेद तथा संशय होने पर भी अन्त:साक्षी के अनुसार मानुषी सृष्टि के आदि से वर्तमान हैं (आर्यमित्र, आर्यसमाजांक, 12 अप्रैल, 1964)

महर्षि दयानन्द की समस्त मान्यतायें वेद पर ही आधारित हैं। उन्होंने अपनी ओर से कोई नवीन मान्यता अथवा सिद्धान्त खड़ा नहीं किया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीन ऋषि-महर्षिगण जो कुछ मानते-मनवाते तथा कहते-कहवाते आये हैं, कालक्रम से उस पर बड़े आवरण को हटाकर उन्होंने उसी उद्घोष को दुहराया और वेद-प्रतिपादित शाश्वत सत्य-सनातन धर्म की रक्षा के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की थी। अत: इस दृष्टि से आर्य समाज कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय न होकर एक ऐसा आन्दोलन है, जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को संसार के सामने उपस्थित करता है। इसलिए स्पष्ट है कि आर्य समाज का मूलाधार वेद है।

आर्य समाज का तृतीय नियम जहां इस बात की घोषणा करता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं, वहां इसमें वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को सब आर्यों का परम धर्म कहा गया है। यहां महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश आदि अपने अपितु वेद के लिए ही ऐसा निर्देश दिया है।

वेद ही मूलाधार क्यों ?

प्रश्न उठता है कि वेद में ऐसी क्या विशेषता है कि महर्षि ने इसे आर्य समाज का मूलाधार बना दिया ? और फिर अपना सम्पूर्ण जीवन ही इसके प्रचार-प्रसार और भाष्य आदि में खपा दिया। इसके लिए उन्हें कितने कष्ट उठाने पड़े, कितनी यातनायें सहनी पड़ीं इसका अपना अलग इतिहास है। आखिर कोई बात तो है कि महर्षि को कहना पड़ा कि—"वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि इस सारे सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य पूर्ण करूंगा।" इतना ही नहीं महर्षि को तो उत्कट अभिलाषा थी कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिये बहुत से उपदेशक होने चाहियें। क्योंकि इतना बड़ा कार्य एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता। फिर भी उनका यह दृढ़ निश्चय था कि—"अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो दीक्षा ली है, उसे चलाऊंगा।"

महर्षि ने वेद को आर्य समाज का मूलाधार इसलिए बनाया कि यही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान है। और ईश्वरीय ज्ञान वही हो सकता है जो कि मानव की उत्पत्ति के साथ सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाता है। ज्ञान का बीज सृष्टि के आरम्भ में ही दिया जाता है। अत: धर्म का मूल-स्रोत वही हो सकता है जो मानव की उत्पत्ति के साथ-साथ दिया गया हो। अन्यथा ईश्वर पर पक्षपात का दोष आता है। आज तक किसी अन्य तथाकथित ईश्वरीय ज्ञान या इल्हामी पुस्तक के सृष्टि के आदि में होने का दावा किसी ने नहीं किया। महर्षि का इसमें यह तर्क है कि यदि—"सृष्टि के आदि में परमात्मा जो वेदों का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती।" (द्रष्टव्य—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदोत्पत्ति विषय)

यदि सृष्टि उत्पत्ति के बहुत बाद की पुस्तकों को ईश्वरीय ज्ञान माना जाये तो फिर यह प्रश्न उठेगा कि ईश्वर ने उन असंख्य लोगों को अपने उस ज्ञान से वंचित क्यों रखा ? इस अवस्था में उन कोटि-कोटि मानवों को विधि और निषेध आदि कर्मों के लिए उत्तरदायी भी नहीं ठहराया जा सकता। वेद की विशेषता है कि उसमें अनित्य इतिहास का लेशमात्र भी नहीं। साथ ही उसमें बुद्धि और युक्ति के विरुद्ध कोई बात कहीं नहीं मिलती। फिर वह ज्ञान मानवमात्र के लिए है न कि किसी देश अथवा जाति-विशेष के लिए या फिर किसी काल विशेष के लिए। वह ज्ञान सृष्टिक्रम से पूर्ण मेल खाता है, उसमें और सृष्टिक्रम में कहीं कोई विरोध नहीं। वेद ईश्वर का ज्ञान है तो सृष्टि उसका कार्य। अत: इन दोनों में विरोध नहीं हो सकता। अत: जो पुस्तकें सृष्टिक्रम के विपरीत ज्ञान देती हैं, वे ईश्वरीय ज्ञान कदापि नहीं हो सकती।

वेद धर्म का आदि मूल है। वह नित्य, निर्भ्रान्त तथा अपौरुषेय ज्ञान है। इसलिए ऐसा अनुपम ज्ञान राशि को छोड़ कर और किसको आर्य समाज का मूलाधार बनाया जा सकता था ? वेद स्वत: प्रमाण है। जैसे सूर्य के प्रकाश को देखने के लिए किसी अन्य दीपक आदि प्रकाश की आवश्यकता नहीं रहती। इसी प्रकार स्वत: प्रमाण वेद के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। जिसकी प्रामाणिकता दूसरे पर आधारित हो, अर्थात् जो परत: प्रमाण हो और अनित्य हो, उसको मूलाधार में क्यों रखते ? महर्षि के ही शब्दों में जो "स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिसके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप से स्वत: प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं।" (स्वमन्तव्या-मन्तव्य प्रकाश)

पाठकगण स्वयं विचारें कि ऐसे अनुपम वेदज्ञान को छोड़ कर अन्य किस को आर्य समाज के मूलाधार में रखा जा सकता था ? वेद शाश्वत सत्य का पुस्तक है अत: आर्य समाज के मूलाधार में शाश्वत सत्य को प्रतिष्ठित कर महर्षि दयानन्द ने, जो स्वयं सत्य के अनन्यतम उपासक थे, अपनी अनोखी सूझ-बूझ तथा वेदज्ञान के प्रति अपनी अपार निष्ठा का ही परिचय दिया है। पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार के शब्दों में—"महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना शाश्वत सत्य वेदवाणी की नींव पर की है। जो समाज शाश्वत सत्य की नींव पर प्रतिष्ठापित हो, उसे ईश्वर की ओर से शाश्वत जीवन का वरदान मिला होता है।" आर्यगण यदि आर्य समाज को शाश्वत जीवन प्रदान करना चाहते हैं, तो फिर वेद के प्रचार-प्रसार में सर्वात्मना जुट जाना पड़ेगा। वेद के प्रचार से ही आर्य समाज का जीवन है।

(पृष्ठ 5 का शेष)

बलवान, उत्साहवान और निर्भय बनाने का क्या यह उत्तम उपाय नहीं कि अपने अपराधों का प्रायश्चित और कष्टों का निवेदन करके सुमति सद्गति और शान्ति मांगना मानव कितना अभागा है कि अपना दु:ख बन्धुओं और मित्रों को तो सुनाता हुआ पागल हो जाता है जो इस दु:ख से पहले ही दु:खी होते हैं। परन्तु दु:ख नाशक परमपिता परमात्मा को अपना दु:ख नहीं सुनाता। कल्याण को चाहने वाले कल्याण का मार्ग ढूंढ ! दु:खों को मेटने वाले की शरण पकड़। तेरा परम सौभाग्य होगा यदि प्यास बुझाने के लिये सरोवर प्राप्त कर लेगा। रोग का उपचार वैद्य ही कर सकता है।

प्रभो से प्रार्थना हृदय से की स्वीकार होती है।

परन्तु मुश्किल तो यह है, यह बड़ी मुश्किल से होती है।

प्रार्थना में एकता

प्रार्थना का एक अर्थ यह भी है कि अपने हितों को दूसरों के साथ मिला देना। सभी सुखी हों निरोग हों भद्रदृष्टि युक्त हों, सभी के सब दु:ख दुर्गुण दूर हों, यही है प्रार्थना का सच्चा स्वरूप। क्या राजा क्या रंक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, साधु, विद्वान भक्त सभी प्रार्थना करते हैं। अपनी-अपनी अभीष्ट सिद्धि की सभी इच्छा करते हैं। सभी मांगते हैं—क्योंकि उससे मांगने में लज्जा नहीं आती भय नहीं लगता है वह दे कर भूल जाता है वह राजाओं का "राजा" धनियों का "धनपति" सुख शान्ति आनन्द का भण्डार अर्थात् सभी ऐश्वर्यों का निर्माता और दाता है। दाता से भिखारी मांगते हैं, भगवान के दर के सभी भिखारी हैं। भिन्न-भिन्न होते हुए भी यहां आकर सब एक हैं। मानो मानव की एकता प्रार्थना में है।

प्रार्थना एक आत्म ध्वनि

हे दु:ख परोपकारिन् ! अकारण कृपालु ! सुन हमारी प्रार्थना तेरे साथ में रहना चाहते हैं, रख ले अपने साथ क्योंकि तेरी भक्ति की "कोंपल" तेरे प्रेम का एक "अंश" तेरे ज्ञान की एक "किरण" तेरी कृपा का एक "कण" तेरे "प्रकाश" की "झलक" हमारे सम्पूर्ण जीवन को ज्योतिर्मय बना सकती है।

प्रवासी भारतीय और आर्य समाज

ले० श्रीमति विजय लक्ष्मी, प्रधानाचार्य आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, लुधियाना

आज से दस वर्ष पूर्व जब मैं इग्लैंड गई तब भी मैं वहा जाकर प्रभावित हुए बिना नही रह सकी थी। आर्य समाज के प्रति उनका असीम प्रेम एव सम्मान देख कर अतीव प्रसन्नता हुई थी—तब आर्य समाज का सत्सग रविवार को किराये पर लेकर एक चैम्बर्स मे होता था। उपस्थिति भी सामान्य होती थी पर एक-दूसरे के प्रति प्रेम का अभाव नही था। जब उन्हे पता लगता था कि कोई व्यक्ति आर्य विचारो वाला यहा आया है उसे अवश्य निमन्त्रित करते थे एव सम्मान देते थे पर इतना व्यापक रूप नहीं था।

अब मैं पिछले वर्ष वहा गई तो आश्चर्य की कोई सीमा भी न रही—इग्लैंड मे बहुत ही सुन्दर एव विशाल भवन का निर्माण हुआ है। बहुत बडा हाल जोकि 150 के लगभग कुर्सियों द्वारा सुसज्जित है। बहुत बडी स्टेज, खाने का कमरा, पुस्तकालय एव अन्य कमरे हैं। अब उनका भरसक प्रयत्न है कि दूसरी मजिल बने जहा अतिथियो के लिये स्थान हो तथा दूसरे कार्यों के लिये भी वह सफलता के काफी समीप हैं शायद इसी वर्ष पूर्ण हो जाए।

मुझे इन्होंने निमन्त्रण भेजा। मैं वहा गई कितना सम्मान देते हैं यह भारतीयो को। बडे उल्लास एव स्नेह के साथ मुझे बिठाया। उनके मुस्कराते चेहरे आज भी मेरे सम्मुख हैं। उनके प्रेम एव उत्सुकता को देख कर मेरी आखो में प्यार के आसू भर आये। स्टेज पर यजमान परिवार श्रद्धा से यज्ञ कर रहे थे। शेष सभी अपनी-अपनी सीट को सुशोभित कर रहे थे। तदन्तर बहिनों का समूह गान हुआ जिसमे भारतीयों की मगल गान स्तुति थी। यजुर्वेद के मन्त्र की विस्तृत व्याख्या की गई वह प्रवचन इतना प्रभावशाली था कि जिसे सुनने की उत्सुकता स्वय ही बढ़ती जा रही थी। इसके पश्चात् सावित्री जी छाबड़ा ने जोकि कन्या गुरुकुल देहरादून मे मेरी सहपाठिनी थी बहुत ही सुन्दर एक प्रभु भक्ति का भजन गाया। इसी बीच जोकि एक महिला मेरे पास आई और मुझे अगले सप्ताह कुछ बोलने के लिये कहा। मैं नहीं मानी क्योंकि मैं उस समाज के चार प्रतिष्ठित विद्वानों को जानती थी। मैं संकोच-वश नहीं मान पाई पर महिला अभी के आगे झुकना पडा और मैंने पाच-सात मिनट का समय लेना स्वीकार किया। जब मैं आर्य समाज में पहुची तो सभी ने सम्मानपूर्वक आगे बैठाया। जब ज्यों-ज्यो मेरा बोलने का समय समीप आ रहा था मैं नर्वस हो रही थी कि क्या और कैसे अपने भावुक विचारो को व्यक्त कर सकूगी। जब बोलने का क्रम शुरू किया तो लगभग 35 मिनट बोलती रही। बडे ही प्यार एव ध्यान से मेरे विचारो को सुना एव सराहा। अगले सप्ताह के लिये फिर आदेश दिया। उनके स्नेह को देख कर मन करता था कि भारत वापिस न जाऊ, यहा ही रह जाऊ। मैंने वहा के भारतीयो की विशेष प्रशसा की जिन्होने वहा रहते हुए भी अपनी मर्यादा को बाधे रखा है। सयम की कोई सीमा नहीं। स्त्री-पुरुष मे काम का कोई भेद नही सुचारू ढग से अपनी गृहस्थी को भारतीय मान्यताओ के अनुकूल चला रहे हैं। स्त्री और बच्चो का पूर्ण ध्यान एव प्रत्येक कार्य मे सहयोग है।

आर्य समाज के प्रति पूरी निष्ठा है। हर सत्सग मे श्रद्धा के साथ जाते हैं तभी उनकी उपस्थिति 200-250 के लगभग होती है। दान भी दिल खोल कर देते हैं। हर सप्ताह 100 पौंड से ज्यादा एकत्रित हो जाता है। सप्ताह में जो परिवारो के घर यज्ञादि करवाये जाते हैं उससे भी 100-200 पौंड एकत्र होते हैं। यदि नया घर लिया है, बच्चे का जन्म, मुण्डन तथा विवाहादि पर भारतीय अपने घर यज्ञ करवाते हैं और दिल खोल कर दान देते हैं।

तदन्तर शान्ति पाठ के पश्चात् यजमान परिवार की ओर से खाना दिया जाता है।

साऊथहाल समाज भी एक किराये की चर्च में ही सत्सग लगाती है। इनका पूरा प्रयत्न है कि इनका अपना भवन हो। उनकी आकाक्षा उनके मनोबल को देखते हुए अवश्य पूर्ण होगी। यहा भी इन्होंने मुझे बुलाया तथा सम्मान दिया।

बहिनो मे वेद पाठ गान नामक सस्था बनाई हुई है यहां वेद के मन्त्रों का हिन्दी मे अनुवाद पद्य भाषा में है। बहिनें मिल कर गाती हैं तथा मुस्कराते हुए आने वालो का अभिवादन करती हैं। यहां भी मुझे बोलने के लिये मजबूर किया गया। मैंने भारतीयों की निर्भयता के लिये स्त्री जाति को ही श्रेय दिया। यह भ्रान्त धारणा है कि भारतीय नारी केवल अबला का प्रतिरूप है। घर के काम के सिवाए कुछ नहीं। अज्ञानता से ओतप्रोत है। और यहा भी यजमान परिवार की ओर से चाय तथा खूब स्नैक्स दिये गये। बहिनों द्वारा जो धन लगभग 3000/- एकत्रित हो जाता है मुझे देना चाहा पर मैंने सहायता अस्वीकार कर दी क्योंकि आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना की रसीद बुक अभी तक पहुची नहीं थी। रसीद बुक के बिना धन एकत्रित करना शोभनीय नहीं है।

मेरे वापिस आने के दिन आ रहे थे पर मन आना नही चाहता था इतना प्यार तो अपने भी नहीं देते। इतना सम्मान कौन दे सकता है। आखिर मैं 11 बजे आ गई और साथ मे 10 बजे को रसीद बुक भी आ गई। मन में असह्य पीड़ा थी। क्या करती एक-दूसरे का मीलों का फासला था परन्तु पास वाले जो थे उन्होने मुझे जो दिया मैंने आखों मे आसू भर कर स्वीकार किया। वह लगभग 30000/- था जो मैंने स्कूल के निर्माण के लिये दे दिया।

धन्य है वह प्रवासी भारतीय बहिन और भाई जो सम्मान और प्यार देना जानते हैं। धन्य हैं जिन्होने भारतीय सभ्यता एव सस्कृति को जीवित रखा हुआ है। आर्य समाज के प्रचार के लिये कटिबद्ध हैं। जितना प्रचार-प्रसार विदेशो मे है उसका वास्तविक रूप वहीं जाकर देख सकते हो।

गोमूत्र का कमाल देखकर मैंने गाय ली

मैं 1906 से भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के एक कार्यकर्त्ता की हैसीयत से सीतामढी जिला कम्युनिस्ट पार्टी का सस्थापक सदस्य हू। वर्षों तक मैं गोहत्या-विरोधी आन्दोलन को एक साम्प्रदायिक कार्य मानता रहा, क्योंकि पार्टी की ऐसी ही समझ रही है।

1985 की बात है, मैं जौंडिस का शिकार हो गया। मेरे एक वैद्य मित्र ने राय दी कि मैं गोमूत्र का सेवन करू। मैंने उनके कथनानुसार 21 दिनो तक गोमूत्र का सेवन किया और मैं बिल्कुल ठीक हो गया।

कुछ महीनो के बाद मेरे मझले लडके का बाजारू सामान खाने से और ज्यादा चाय पीने से लीवर खराब हो गया। वह मरणासन्न हो गया। मैंने उसे भी गोमूत्र का सेवन करवाया। 15 दिनो के पश्चात् वह ठीक हो गया।

एक दिन मेरे कान मे भयकर दर्द होने लगा, मैं अपने वैद्य मित्र के पास गया। उन्होंने मेरे कान मे गोमूत्र का बूद डाला। 15 मिनटो मे ही दर्द दूर हो गया। मैं गोमूत्र से अनेक लोगो का कान और दात-दर्द दूर कर चुका हू।

अभी मेरे बड़े लडके का भी लीवर खराब हो गया, वह भी मरणासन्न हो चला, मैंने उसे भी गोमूत्र का सेवन कराया, अब काफी सुधार है।

मैंने सर्वोदय कार्यकर्त्ता श्री बिन्देश्वरी सिह एव जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता श्री महादेवशरण सिह को पेट की बीमारी मे गोमूत्र का सेवन करवाया है, उनको काफी लाभ हुआ। उपर्युक्त बातो से उत्साहित होकर मैंने अच्छी सी गाय खरीद ली है, जिससे गोदूध, गोमूत्र दोनो मिलने लगा है। सुबह मुहल्ले वालों की गोमूत्र के लिए लाईन लग जाती है। मेरे परिवार के कल्याण के साथ गोमाता मुहल्ले वालो का भी कल्याण कर रही है। मैं रोज सवेरे गाय को खाना-पानी, साफ सफाई करके फिर और काम करता हू। मेरी उम्र अभी 66 साल की है। मैं अभी रोज 40 मील साइकिल चला लेता हू। बुढापा मुझे महसूस नही होता है।

लक्ष्मण सिह
पुनर्मरा, जिला सीतामढी (बिहार)

नोट—गाय का दूध सुपाच्य होता है। क्षय, फेफडे की बीमारी मे लाभ-दायक और कफ, वात, पित-नाशक होता है। गाय का धारोष्ण दूध औषध का काम करता है। वह दो-ढाई घण्टे मे पच जाता है। गाय के दूध की सबसे बडी विशेषता यह है उसमे कैरोटिन नामक पौष्टिक तत्त्व सबसे अधिक होता है, जो स्वास्थ्यवर्द्धक-सौन्दर्यवर्द्धक पूर्ण आहार है।

(वेद प्रकाश से साभार)

अमृतसर में गुरु पूर्णिमा उत्सव सम्पन्न

अमृतसर,—दिनांक 8 जुलाई 90 को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर मे स्थानीय आर्य समाज की नव नियुक्त तदर्थ समिति के प्रधान डा० रामनाथ शर्मा की अध्यक्षता मे गुरु पूर्णिमा उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम साप्ताहिक यज्ञ मे विशेष मन्त्रों के साथ आहुतियां दी गई। मास्टर दिलबाग राय जी ने प्रभु भक्ति के भजन सुना कर मन्त्र मुग्ध कर दिया। पंडित पवन कुमार जी त्रिपाठी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रकट किये। श्री दीवान चमन लाल जी का गुरु पूर्णिमा पर्व पर ओजस्वी व्याख्यान हुआ। श्री वैद्य बाबू राम शर्मा, श्री ओंकार नाथ जी बहल, श्री निहाल चन्द जी चीदा, आदि कई महानुभावों ने आर्य समाज के नव नियुक्त प्रधान डा० राम नाथ जी शर्मा को माल्यार्पण कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया।

अविनाश भाटिया—महामन्त्री

आर्यसमाज कपूरथला का वार्षिक चुनाव

24-6-90 को साधारण सभा की बैठक मे आर्य समाज कपूरथला के 1990-91 के लिए निम्नलिखित अधिकारी चुने गये—

संरक्षक—श्री हरिसिंह जी।
प्रधान—श्री रोशन लाल जी।
मन्त्री—श्री सत्यदेव जी।
उपप्रधान—श्री सदानन्द जी सेठी, श्री अमरनाथ जी, श्रीमती कमलेश कुमारी।
उपमन्त्री व पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिचन्द जी।
कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र कुमार।
स्कूल प्रबन्धक—श्री रामनाथ भारद्वाज।
औषधालय प्रबन्धक—श्री हरिसिंह
अन्तरंग सदस्य—श्रीमती सुवर्णा रानी, श्रीमती प्रकाशवती, श्रीमती कविता, श्री श्यामसुन्दर वैद्य, श्री महेन्द्र ठुकराल।

आर्यसमाज [illegible] का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मन्दिर [illegible] का वार्षिक (1990-91) चुनाव सर्वसम्मति से 1-7-90 को हुआ और नीचे लिखे पदाधिकारी चुने गए —

1. प्रधान—श्री सुरिन्द्र नाथ सूद
2. मन्त्री—श्री धर्मवीर सैनी
3. कोषाध्यक्ष—श्री दीना नाथ गुप्ता
4. उप-प्रधान—श्री हरी कृष्ण शर्मा
5. उप मन्त्री—श्री रघुनाथ सूद

आर्य समाज भदौड़ का चुनाव

आर्य समाज भदौड़ (संगरूर) का चुनाव मिति 8-7-90 को निम्न प्रकार से हुआ है —

1. सरप्रस्त—महाशय चन्द्रगुप्तजी
2. प्रधान—डा० सुरिन्द्र कुमार
3 उप प्रधान—महाशय मित्रसैन जी बन्ता।
4 मन्त्री—गीता राज।
5 कोषाध्यक्ष—महाशय बचनदास
सदस्य—श्री सुभाष [illegible], श्री राजिन्द्र कुमार, श्री आनन्द प्रकाश, श्री मुरारी लाल।

शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ

[illegible] की ओर से स्वामी [illegible] के जन्म दिवस पर एक अगस्त 1990 को सायंकाल 4-30 बजे [illegible] हाल, [illegible] मार्ग, नई दिल्ली में शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया है। [illegible] पूज्यपाद [illegible] सरस्वती, [illegible] पधार रहे हैं।

महामहिम डा० शंकर दयाल शर्मा, उप-राष्ट्रपति भारत "शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ" का विमोचन एवं लोकार्पण करेंगे।

डा० [illegible].
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15—हनुमान रोड, नई दिल्ली

वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज समौर, जिला पटियाला का वार्षिक चुनाव दिनांक 15-7-90 को निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री प्यारे लाल।
उपप्रधान—डॉ० [illegible], व प्रिय कृष्ण गौड़।
मन्त्री—श्री विनोदकुमार वालिया।
कोषाध्यक्ष—श्री मोहन लाल।
संरक्षक—श्री [illegible] दास वैद्य।

—मोहन लाल कोषाध्यक्ष

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक द्वारा जनहित प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 22 अंक 19, श्रावण 21 सम्वत् 2047 तदनुसार 2/5 अगस्त 1990 दयानन्दाब्द 166 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक) शुल्क 30 रुपये

रक्षा बन्धन—श्रावणी उपाकर्म

—श्री पं० धर्म देव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

श्रावण सुदि पूर्णिमा को प्रति वर्ष रक्षा बन्धन व श्रावणी उपाकर्म पर्व मनाया जाता है। श्रावणी उपाकर्म के दिन रक्षा बन्धन कैसे और कब आरम्भ हुआ इस का ठीक से अनुमान लगाया जाना कठिन है। क्योंकि हमारे पुराने किसी भी ग्रंथ में रक्षा बन्धन का कोई प्रमाण नहीं मिलता। केवल इस दिन श्रावणी उपाकर्म का ही विधान है। परन्तु पौराणिक काल में इस पर्व पर वेद स्वाध्याय ऋषि तर्पण का सर्वथा लोप हो गया था। इस समय में भविष्योत्तर पुराण में इसका कुछ वर्णन भी मिलता है। उसी समय से इस दिन सर्पों को बलि देने, याज्ञिकों द्वारा यजमानों के दहिने हाथ में रक्षा सूत्र (राखी) बांधने का प्रचलन आरम्भ हुआ। इसके साथ ही अबलाएं अपनी रक्षा के लिये सबलों को और बहनें भाईयों को और पुत्रियां पिताओं को रक्षा सूत्र (राखी) बांधने लग गई। राजपूत काल में जिस किसी वीर क्षत्रिय को कोई अबला राखी भेज कर अपना राखी बन्ध भाई बना लेती थी उसकी वह आयु भर रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूं को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षा के लिए राखी भेजी थी जिससे हुमायूं ने चित्तौड़ पहुंच कर तत्काल उसकी सहायता की थी और उसने चित्तौड़ का मुगल बादशाह बहादुर शाह के आक्रमण से उद्धार किया था। इसके पश्चात् से यह प्रथा और अधिक प्रचलित हो गई। इसके साथ ही जब बहिनें अपने भाईयों को, पुत्रियां अपने पिताओं को और याजक अपने यजमानों को राखी बांधते थे। तो उसके बदले में भाई, पिता व यजमान राखी बांधने वाली बहनों व याजकों को अपने सामर्थ्य अनुसार धन, वस्त्र अन्न इत्यादि देने आरम्भ हो गये। आज भी ऐसी प्रथा लगभग सभी स्थानों पर प्रचलित हैं। यदि यह प्रथा पुत्री और पिताओं, बहिनों और भाईयों, याजक और यजमानों के वात्सल्य प्रेम को दृढ़ करने वाली मानी जाए तो इस प्रथा के प्रचलित रहने में कोई क्षति नहीं। परन्तु यदि केवल रक्षा बन्धन अर्थात् भाईयों आदि को राखी बांधने तक ही यह पर्व सीमित कर दिया जाए तो इस पर्व का उतना महत्त्व नहीं रहता जितना कि पूर्व काल में होता था,

आजकल के श्रावणी उपाकर्म में और प्राचीन काल के श्रावणी उपाकर्म में बहुत अन्तर आ गया है। वैदिक धर्म में स्वाध्याय को बहुत बड़ा महत्त्व दिया गया है। और हमारे सभी ग्रंथों में इसका बार बार वर्णन किया गया है। स्वाध्याय समाज के सभी वर्गों के लिए अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण स्वाध्याय के बिना ब्राह्मण नहीं बन सकता और इसी प्रकार से क्षत्रिय और वैश्य भी स्वाध्याय के बिना अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य को द्विजन्मा संज्ञा स्वाध्याय से ही दी जाती है। आश्रमों में भी सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम बिना स्वाध्याय के सफल नहीं होता। ब्रह्मचर्य की समाप्ति पर भी समावर्तन संस्कार के समय अपने शिष्य को आचार्य कहता है "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" अर्थात् गृहस्थ में प्रवेश के पश्चात् भी हे—शिष्य तू स्वाध्याय में कभी आलस न करना। अर्थात् निरन्तर स्वाध्याय करते रहना। गृहस्थ के पश्चात् वानप्रस्थी के लिए भी उसका प्रधान कर्म स्वाध्याय और तप कहा गया है। संन्यासी के लिये भी कहा गया है कि वह और सब कर्मों को त्याग देवे केवल वेद को न त्यागे। अर्थात् वेद के स्वाध्याय के द्वारा वह जहां स्वयं अपने ज्ञान को बढ़ाता रहे वहां दूसरों को भी ज्ञान देता रहे। मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए स्वाध्याय अति आवश्यक है। इसलिए, स्वाध्याय मनुष्य के लिये भोजन के समान अनिवार्य है।

वैदिक काल में वेदों के अतिरिक्त अन्य वैदिक साहित्य का भी पठन का विशेष प्रचार था। वैसे तो लोग नित प्रतिवेद का पाठ किया करते थे परन्तु वर्षा ऋतु में विशेष रूप से वेद के परायण यज्ञ व पाठ का आयोजन भी किया करते थे। भारत कृषि प्रधान देश हैं। यहां विशेष करके श्रावण माह में सभी किसान अपनी फसल के कार्य से लगभग निवृत हो जाते थे। इन चार मासों में आने जाने के साधनों की भी वर्षा के कारण से अक्सर कमी रहती थी। इसलिए हमारे ऋषियों, मुनियों और महात्माओं ने इस चौमासा को अर्थात् वर्ष के इन चार मासों को स्वाध्याय के लिए चुना है। सन्यासी वान्नप्रस्थी और महात्मा लोग जो जंगलों पहाड़ों व कन्दराओ में अपनी भक्ति विशेष किया करते थे वह भी इस चौमासा में अर्थात् वर्षा ऋतु मे गांव व नगरों के समीप आ जाते थे। गृहस्थी लोग उनके पास जा कर अपने ज्ञान का वर्धन, शंकाओं का सामधान कर ज्ञान प्राप्त किया करते थे। श्रावण सुदि पूर्णिमा का दिन इसके लिए विशेष रूप से माना जाता था और गृहस्थी लोग उन ऋषियों का तर्पण भी करते थे। उपाकर्म का दूसरा नाम ऋषि तर्पण भी पड़ गया था। इसका विस्तार से वर्णन हमें गृह्य सूत्रों में मिलता है। श्रावण की पूर्णिमा से श्रावणी उपाकर्म आरम्भ हो कर पौष के अन्त तक चलता रहता था। और पौष मास में उसका उत्सर्जन एक विशेष सस्कार के रूप में किया जाता था।

परन्तु आज कल हम धीरे-धीरे स्वाध्याय को भी छोड़ते चले जा रहे हैं और अपनी पुरानी परम्पराओं को भी भूलते चले जा रहे हैं स्वाध्याय न करने से आज इन्सान राक्षस बनता जा रहा है। और उसमें सोचने की शक्ति भी बहुत कम होती जा रही है वह अपना अच्छा बुरा आज नहीं सोच पा रहा उसमें स्वार्थपन अधिक बढ़ रहा है और देवत्व धीरे धीरे कर के समाप्त होता जा रहा है। हमारे ऋषियों, मुनियों ने अपने जीवन के अध्ययन और वेद आदि अन्य धर्म शास्त्रों के अध्ययन का जो विधान बनाया था वह इसलिए बनाया था कि हम अपने जीवन से सभी बुराईयों को निकाल कर मानव से देवत्व की ओर बढ़ें। इसलिए आज हमे श्रावणी उपाकर्म रक्षा बन्धन का यह पवित्र पर्व मनाते हुए व्रत लेना चाहिए कि हम स्वाध्याय में कभी भी किसी प्रकार का प्रमाद नही करेंगे। और इसके साथ ही इस पर्व को उसी रूप में मनाएगे जिस रूप मे हमारे पूर्वज मनाया करते थे। जैसे कि मैंने पूर्व लिखा है यदि रक्षा बन्धन को भी इस पर्व के साथ सम्बन्धित रखा जाए तो इससे कोई हानि होने वाली नहीं बल्कि इससे भी भाई और बहिन का प्यार बढ़ता है, पिता और पुत्री के स्नेह में एक वात्स्लय भर जाता है। याजक और यजमान में आपस का प्रेम और व्यवहार निखर कर सामने आता है। परन्तु केवल रक्षा सूत्र (राखी) बांध करके ही अथवा, अपनी बहिनों व पुत्रियों तथा याजकों को कुछ दे कर ही इस पर्व को न मनाए इसके मनाने की भावना में कुछ परिवर्तन जरूर करें अर्थात् जहां हम यह सब कुछ करें वहां इसके साथ साथ अपने वास्तविक उद्देश्यश्रावणी उपाकर्म ऋषितर्पण अर्थात् विद्वानों का आदर मान सत्कार और स्वाध्याय इसको कभी न छोड़ें।

इसके साथ ही आर्य पर्व पद्धति में इस पर्व को मनाने और यज्ञ विशेष करने की जो पद्धति दी है वह भी हम नीचे दे रहे हैं ताकि आर्य समाजें व अन्य आर्य बन्धु इस दिन यज्ञ विशेष सम्पन्न कर सकें।

गृह्यपद्धति—नीचे पारस्करगृह्य-सूत्रानुसार उपाकर्म की विधि लिखी जाती है। यह कांगड़ी गुरुकुल विश्व-विद्यालय के महोपाध्यायो द्वारा सकलित हो कर वहां कई वर्षों से प्रचलित है। और वहीं से निज उपयोगार्थ पुस्तिका रूप में भी मुद्रित हुई थी। उसी को कुछ परिवर्तित रूप में नीचे दिया जाता है।

प्रथम सस्कार विधि मे लिखी हुई विधि से अग्निस्थापनादि कर के

शेष पृष्ठ 6 पर

श्रीराम जन्म-भूमि—पुरातत्व के अकाट्य साक्ष्य

ले०—डॉ० स्वराज्य प्रकाश गुप्त, पूर्व निदेशक, इलाहाबाद संग्रहालय

डॉ० रोमिला थापर और अन्य के जो दो लेख "नवभारत टाइम्स" के अप्रैल, 10 और 11 के अंकों में छपे हैं उनके सम्बन्ध में आपके पाठकों को निम्न तथ्य जानने आवश्यक हैं क्योंकि स्वयं पुरातत्व वेत्ता न होने के कारण रोमिला जी का रिसर्च अधूरा है और उस पर उनकी पकड़ भी लचर है। दुर्भाग्य से वे केवल लाइब्रेरी में बैठकर पुरातत्व का अध्ययन करती हैं अन्यथा मेरे कथन की पुष्टि वे स्वयं प्रो० बी० बी० लाल से दिल्ली के पुराने किले में स्थित भारतीय पुरातत्त्व उत्खनन विभाग में जाकर कर सकती थीं अथवा जनपथ पर स्थित पुरातत्त्व के केन्द्रीय कार्यालय मे जाकर श्री मुनीषचन्द्र जोशी, सयुक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण से करके जान सकती थीं। तब उन्हे गैर जिम्मेदाराना तरीके से यह लिखने की धृष्टता न करनी पड़ती कि मैं "चश्मदीद ग्वाह" हूं कि नहीं अर्थात् जिन दिनों श्रीराम जन्मभूमि की ऊपरी पर्तों की खुदाई हो रही थी, जिसमें कुरक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ० अरुण केसरवानी उन दिनो भाग ले रहे थे, उन्हीं दिनों उनके साथ पास की बन रही धर्मशाला मे कनातों के बीच मे रहा था या नहीं। क्या किसी विद्वान् के द्वारा अपने सहयोगी के लिए ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण कटाक्ष उचित है ? अफसोस है कि उन्होंने यह घटियां तरीका अपनाया।

डॉ० थापर ने प्रो० लाल के अति संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट, जो इण्डियन आर्कोलॉजी-ए रिव्यू के 1976-77, पृष्ठ 52 पर छपा था, का तो उल्लेख किया है किन्तु यह कौन-सी बड़ी भारी रिसर्च उन्होंने किया। 27 जून, 1989 को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण को दिए गए प्रो० लाल के अधिकारिक, अधिक (वार्षिक नही) विस्तृत रिपोर्ट "अर्कोलॉजी ऑफ दी रामायण साइट्स प्रोजेक्ट—इट्स जेनेसिस एण्ड ए समरी ऑफ दी रिजल्टस" की जानकारी उन्होंने दिल्ली में रहते हुए भी प्राप्त क्यों नहीं की ? और की तो क्या वे कुछ छिपा नही रही हैं ? इस रिपोर्ट के पृष्ठ 10 के पैरा 1 में प्रो० लाल ने स्पष्ट लिखा है—"इन दी जन्मभूमि एरिया, दी अपरमोस्ट-लेवेल्स ऑफ ए ट्रेंच, दैट से इमीजिएटली टू दी साऊथ ऑफ दी बाबरी मस्जिद, ब्राट टू दी लाइट ए सिरीज ऑफ ब्रिक—बिल्ट बेसेज व्हीच एवीडेंटली कैरीड पिलर्स देअर ऑन। इन दी कन्सट्रक्शन ऑफ दी बाबरी मस्जिद ए फीड स्टोन पिलर्स हैड दिस प्रेसीडिंग स्ट्रक्चर।" अर्थात् श्रीराम जन्मभूमि क्षेत्र में उत्तर की ओर बाबरी मस्जिद के ठीक पीछे की खुदाई में, ऊपर के स्तरों में कई एक ईंटों की बने आधार प्रकाश में आए हैं जो स्वयं सिद्ध हैं कि इन पर स्तम्भ खड़े किए गए थे। बाबरी मस्जिद के बनाने में पत्थर के जो थोडे से स्तम्भ काम में लाए गए थे, वे इसे पहले के बने भवन से लिए गए होंगे। क्या प्रो० लाल का यह कथन मेरी बात की पुष्टि करता है या रोमिला जी की, पाठकों पर ही मैं यह छोड़ता हूं।

और क्योंकि मैं उन दिनों वहीं खुदाई के दौरान था अतः मैं कुछ और तथ्य भी रख रहा हूं। इसकी भी जानकारी वे चाहे तो प्रो० लाल से ले सकती हैं। यह "भवन" जो निश्चित ही मन्दिर था, जैसा कि मस्जिद में लगे उन 14 स्तम्भों की नक्काशी से स्पष्ट है जिसका उल्लेख मैं पहले लेख में कर चुका हू और जिसके दो चित्र भी मैंने दिए थे, मुश्किल से आज के धरातल से 1 फुट नीचे से ही मिलना शुरू हो जाता है। ये आधार स्तम्भ के नींव के हैं। इनकी तिथि 11वीं शती है। इसके ऊपर तीन स्तर हैं। दो तो फर्शों के ही हैं जो दो काल-खण्डों में इनके बनने और पुनः बनने का सकेत देते हैं। अर्थात् मन्दिर का कम से कम दो बार परिवर्द्धन हुआ था। कालान्तर में 16वीं शती के आरम्भ में इसे ध्वस किया गया। कुछ एक प्रस्तर-स्तम्भ निकाले गए और फिर मलबे को बिखरा कर जमीन समतल की गई। इसी कारण से ये "टॅएल-टेल" स्तम्भ आधार सुरक्षित रह गए।

आप पूछेंगे कि इसका क्या प्रमाण है कि यह मन्दिर 16वीं शती में तोड़ा गया ? इसका प्रमाण हैं मैडीकल अथवा इस्लामिक ग्लेजड वेयर अर्थात् नीले रंग के चित्रों से सजे मध्ययुगीन इस्लामी चीनी मिट्टी के ग्लेज किए हुए बर्तनों के वे उनके टुकड़े जिनकी तिथि 15-16वीं शती की है। कुछ ग्लेजड बर्तन एक हिस्से में 13वीं शती और उसके बाद के भी मिले हैं। स्पष्ट है 13वीं से 15वीं शती तक आने जाने वाले व्यक्ति "इस्लामिक ग्लेजड वेयर" के नाम से आने जाने वाले क्राकरी का प्रयोग करते थे। पुरातत्त्व में बर्तनों की कला कौशल का सबसे अधिक अध्ययन किया जाता है क्योंकि बर्तनों के रंग, रूप बनाने की विधि आदि थोड़े-थोड़े समय के अन्तराल में बदलते रहे हैं। यह स्थान श्रीराम जन्मभूमि पर पुरातत्त्व की खुदाई की रिपोर्ट लिखने का नहीं, मैं तो यहां केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि मेरे द्वारा वर्णित अकाट्य साक्ष्य हैं, उन्हें "तथाकथित" कहकर डॉ० थापर ने पुरातत्त्व के बारे में दुर्भाग्य से केवल अपनी अनभिज्ञता का ही परिचय दिया है। पुरातत्त्व के साक्ष्यों पर मैं उन्हें खुली चुनौती देता हूं। मैं अनेक चित्रों को जानता और विद्वानों की भरी सभा में दिखा सकता हूं जो मेरी बातों की पुष्टि करेंगी। लगता है कि अधिक प्रसिद्धि से उन्हें स्वयं सर्वज्ञ होने का भ्रम हो गया है।

अब मैं आता हूं प्रस्तर-स्तम्भों पर मुझे दुःख है कि उन्होंने इन स्तम्भों के चित्रों का भी अध्ययन नहीं किया। स्तम्भों का अध्ययन तो दूर रहा बल्कि जैसा मैं कह रहा हूं वैसे ही वे भी कहतीं कि इनका अध्ययन उन्होंने स्वयं किया है। ये स्वयं कभी आयोध्या गई हैं इसमें मुझे सदेह है अन्यथा वे अन्य विद्वानों का हवाला न देतीं, न सही, क्या मिसेज ई० बी० जोशी द्वारा सम्पादित फैजाबाद गजेटियर (1960) हेन्स बेकर द्वारा लिखित "आयोध्या" तथा कई अन्य पुरानी पुस्तकों में छपे चित्रों का ही उन्होंने अध्ययन किया है ? क्या अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टेडीज, रामनगर, वाराणसी में कार्यरत भारत के वयोवृद्ध कला समीक्षक प्रो० कृष्णदेव से अथवा अन्य किसी मनीषी से उन्होंने इसके विषय में राय ली है ? आखिरकार वे स्वयं तो कला समीक्षक नहीं हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उन्होंने नहीं ली है। मैंने स्वयं आयोध्या में रहकर इनका अध्ययन किया फिर भी इन सभी विद्वानों को भी इन स्तम्भों के अनेक चित्रों को दिखाया है। बनारस में इस पर छानबीन की है। दिल्ली के भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के विद्वान् श्री मुनीषचन्द्र जोशी ने भी इन चित्रों को देखा है और आयोध्या जाकर इन स्तम्भों को भी देखा है। कम से कम उन्हीं से जाकर पूछ लिया होता। रोमिला जी को मैं पूरी ईमानदारी से बताना चाहूंगा कि उन सबकी वही राय है जो मेरी है, अर्थात् ये स्तम्भ 11वीं शती के ही हैं। पाठकगण स्वयं भी इन अन्य विद्वानों से मिलकर अथवा लिखकर पूछ सकते हैं। अफसोस है रोमिला जी ने यह सब कुछ नहीं किया अथवा अनदेखा किया।

रोमिला जी एक स्थान पर लिखती है—"अन्य विद्वानों ने भी इस प्रकार के स्तम्भ फैजाबाद के आसपास और सम्भवतः अन्यत्र भी पाए जाते हैं, देखे हैं और उनके विचार स्वराज्यप्रकाश गुप्त के मत से मेल नहीं खाते।" रोमिला जी क्योंकि आपने स्वयं तो देखा नहीं अतः क्या आप इस विद्वान् का नाम पाठकों को देंगी ? मैं देता हूं, क्योंकि इन्होंने मुझे भी तीन पत्र लिखे हैं। ये तथाकथित विद्वान् हैं—श्री श्री शेर सिंह, बंगाल केडेर के एक आई० ए० एस० आफिसर जो कलकत्ता में पोस्टेड हैं। आपने लिखा है कि फैजाबाद के एक तिकोने पार्क में खड़ा है एक प्रस्तर स्तम्भ तथा लखनऊ संग्रहालय में हैं दो स्तम्भ। इनका इन्होंने अध्ययन किया है। मैं भी जानता हूं, पाठक स्वयं फैजाबाद के डी० एम० श्रीवास्तव से तथा लखनऊ संग्रहालय के निदेशक डॉ० त्रिवेदी से मिलकर या लिखकर पूछ लें—इनमें से एक भी स्तम्भ श्रीराम जन्मभूमि—बाबरी मस्जिद के प्रस्तर स्तम्भों की बात कर रहे हैं कि भारत के तमाम अन्य स्तम्भों की ?......पाठकों को सन्दर्भ रहित तथाकथित प्रमाणों का जिक्र करके रोमिला जी द्वारा गुमराह तो किया ही जा रहा है, पुरातत्त्व के प्रति सरासर बेईमानी भी बरती जा रही है।

श्री शेर सिंह कहते हैं कि इन स्तम्भों को कार्बन 14 डेटिंग उन्होंने कराई है। इसिए नहीं, उन्होंने अहमदाबाद के फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी के सी-14 विभाग के अध्यक्ष प्रो० धर्मपाल अग्रवाल को पत्थर के टुकड़े वास्तव में भेजे थे। पिछले माह 26 तारीख को दिल्ली में उनसे मेरी भेंट हुई तो उन्होने श्री शेर सिंह को कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि ऐसे पत्थर की भी क्या कोई कार्बन डेटिंग होती है जिसमें कार्बन ही नहीं है ? और फिर पत्थर की डेटिंग करानी है या नक्काशी की ? पत्थर तो लाखों साल पुराना होगा। कौन समझाए इन तथाकथित "विद्वानों" को कि कार्बन किसी आर्गेनिक (जीवधारी) चीज से ही आएगा—जीवित या मृत—इन्आर्गेनिक से सीधा तो नहीं हो जाएगा। पुरातत्त्व आज विज्ञान की तमाम शाखाओं का ज्ञान मांगता है, यह इतिहासकारों के बस की बात नहीं। रोमिला जी ने मलालसेकर (डिक्शनरी ऑफ पाली नेमस, 1960) के लेखक को भी अधूरे उद्धृत करके पाठकों को भरमाने की चेष्टा की है।

शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज के सामने एक नई समस्या—२

जब मैंने इस क्रम का पिछला लेख लिखा तो उसके पश्चात् मुझे वर्धा से आचार्य कुल के संयोजक का एक पत्र प्राप्त हुआ । उन्होंने लिखा है कि आचार्य कुल की एक बैठक शीघ्र ही वर्धा मे होने वाली है वह चाहते हैं कि मैं भी उसमें सम्मिलित होकर देश की वर्तमान परिस्थितियो के विषय मे अपने विचार आचार्य कुल के सदस्यो के सामने रखू । इस बैठक में देश के कई शिक्षा विशेषज्ञ, विधि विशेषज्ञ और राजनैतिक नेता सम्मिलित होगे । स्वर्गीय आचार्य विनोबा जी ने यह आचार्य कुल नाम की सस्था उस समय स्थापित की थी जब आपात काल के समय में देश की स्थिति बहुत बिगड़ गई थी और वह चाहते थे कि कुछ प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी बैठ कर देश की स्थिति पर विचार करें और उस का जो समाधान निकल सकता है उसे भी निकालने का प्रयास करें ।

मैंने इस निमन्त्रण पत्र के उत्तर मे यह तो लिख दिया कि मेरे लिये इस सम्मेलन मे सम्मिलित होना कठिन होगा परन्तु मैं यह अवश्य सोचता हू कि क्या कारण कि आर्यसमाज की ओर कभी भी इस प्रकार के सम्मेलन या गोष्ठिया नही होती जहा बैठ कर गम्भीरता पूर्वक हम अपनी समस्याओ पर विचार कर सकें । एक समस्या का मैंने पिछले अक मे भी जिक्र किया था वह है भाषा समस्या । अग्रेजी को हमारी शिक्षा व्यवस्था मे क्या स्थान मिलना चाहिए और राज प्रबन्ध में भी उसे कोई महत्व मिलना चाहिए या नही ? इस विषय पर आर्य समाज मे भी मतभेद है । अभी थोडा समय हुआ जब सार्वदेशिक सभा ने अपना एक त्रिसूत्रीय कार्यक्रम घोषित किया था जिसमे एक प्रश्न यह भी था कि अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग होना चाहिए । अब स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने यह घोषणा कर दी है कि वह अग्रेजी के विरुद्ध एक अभियान आरम्भ कर रहे हैं । दूसरी तरफ हम यह भी देख रहे है कि डी० ए० वी० कालेज कमेटी कई स्थानो पर बच्चो के ऐसे स्कूल खोल रही है जहा शिक्षा का माध्यम अग्रेजी रखा जा रहा है । जब उनसे पूछा जाता है कि वह ऐसा क्यो कर रहे हैं ? तो उनका यह उत्तर है कि ईसाइयो ने जगह जगह पर जो अपने स्कूल खोल रखे हैं और अभी भी खोल रहे है वहा बहुत बड़ी सख्या मे हमारे बच्चे केवल इसलिए भेजे जाते हैं कि इन स्कूलो मे शिक्षा का माध्यम अग्रेजी है । इसका परिणाम यह होता है कि जो बड़े बड़े सम्पन्न परिवार हैं और जिन्हे अपने बच्चों को अग्रेजी के माध्यम से शिक्षा देने पर कोई आपत्ति नही है वह अपने बच्चो को इन स्कूलो मे भेज देते हैं । और जो बच्चे वहा जाते हैं उन पर कई बार ईसाई धर्म और ईसाई सस्कृति का प्रभाव भी पड़ता है उन्हे वहा से रोकने के लिए यह आवश्यक है कि हम भी अपने ऐसे स्कूल खोलें जहा शिक्षा का माध्यम चाहे अग्रेजी हो परन्तु विचारधारा वैदिक हो । यह भी कहा जाता है कि डी० ए० वी० कालेज कमेटी जो स्कूल खोलती है उसमे बच्चो को वेद मन्त्र भी सिखाये जाते हैं और वैदिक सस्कृति के उज्जवल पक्ष उनके सामने रखे जाते हैं । डी० ए० वी० कालेज कमेटी का यह भी दावा है कि उनका इस प्रकार के स्कूल खोलने का एक परिणाम यह भी निकला है कि अब इसाईयों के स्कूलों मे हिन्दुओं के बच्चों की उतनी सख्या नहीं रही जितनी की पहले हुआ करती थी । अब उन्हे अपनी एक ऐसी सस्था मिल गई है यहा उनके बच्चो को वेद मन्त्र भी पढाये जाते हैं और कई स्कूलों मे यज्ञ भी किए जाते हैं । और उन पर ईसाई सस्कृति का वह प्रभाव भी नही पड़ता जो ईसाई स्कूलो मे पड़ता है । मैंने आर्य समाज की तीन भिन्न-भिन्न सस्थाओ का दृष्टिकोण पाठको के सामने रख दिया है । मैंने शुरू में ही यह प्रश्न किया था कि क्यो नही आर्य समाज की आज ऐसी गोष्टिया होती जहा उन समस्याओं पर भी विचार किया जा सके जिनके विषय में आपस का मतभेद हो ? ऐसे मतभेद पहले भी पैदा होते रहे हैं । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और कालेज शिक्षा प्रणाली इन दोनों पर शुरू से ही आर्य समाज में मतभेद रहा है । फिर भी आर्य समाज के नेता अपने मौलिक सिद्धान्तों के लिए मिल कर काम करते रहे हैं । यदि गुरुकुलों के द्वारा आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार हुआ है तो स्कूल और कालिजो के द्वारा भी कुछ कम प्रचार नहीं हुआ । श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और श्रद्धेय महात्मा हस राज जी महाराज इन दोनों ने यह समझ लिया था कि लक्ष्य यदि एक हो तो उस तक पहुचने के लिए भिन्न-भिन्न मार्ग अपनाने पड़ें तो इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए और यही दृष्टिकोण हमें आज भाषा के विषय मे भी अपनाना पड़ेगा । मैं नहीं समझता कि अग्रेजी पढने पर कोई आपत्ति हो सकती है । आज की दुनिया में कोई व्यक्ति यह समझे कि अग्रेजी के बिना वह अपना काम चला सकता है तो यह सम्भव नही । यदि मेरा अनुमान निराधार नहीं तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी यह कहा था कि एक व्यक्ति अधिक से अधिक जितनी भाषायें पढ़ सकता है उसे पढ़नी चाहिए । हम यह भी देख रहे कि परोपकारिणी सभा की जो पत्रिका परोपकारी प्रकाशित होती है उसमे कई बार महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित अग्रेजी मे पत्र प्रकाशित किए गये है यह उन्होने स्वय लिखे थे या किसी और ने लिखे थे, यह हमारे लिए कहना कठिन है । लेकिन अग्रेजी के इन पत्रो के नीचे हस्ताक्षर महर्षि दयानन्द सरस्वती के ही होते हैं । इसी प्रकार हम ने यह भी देखा है कि जब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल की स्थापना की थी तो वहा भी बच्चो को अग्रेजी पढाई जाती थी । और उसका स्तर बहुत ऊचा हुआ करता था । कहने का तात्पर्य यह है कि अग्रेजी पढाने पर कभी भी आर्य समाज ने प्रतिबन्ध नही लगाया । केवल एक ही प्रश्न है जिस का कि फैसला होना चाहिए वह यह कि अग्रेजी बच्चो की शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए या नही ? मेरे विचार मे बच्चो की शिक्षा का माध्यप केवल हिन्दी ही होनी चाहिए । आगे चल कर हिन्दी भाषा के साथ साथ अग्रेजी भी पढ़ाई जा सकती है । आज के युग मे प्राय सब विषयो पर पुस्तकें अधिकतर अग्रेजी मे मिलती है, विशेष कर विज्ञान के विषय मे । ऐसी स्थिति मे अग्रेजी का पूर्णतया बहिष्कार करके काम नही चल सकता । कोई न कोई बीच का रास्ता निकालना ही पड़ेगा । भाषा का प्रश्न बहुत जटिल प्रश्न है । इस पर अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है । इसके कुछ राजनीतिक पक्ष भी हैं जिनकी अनदेखी नही जा सकती । वह क्या हैं आगामी अक मे इस पर अपने विचार रखूगा ।

सभा अधिकारियों के वेद प्रचार सम्पर्क अभियान का शुभारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के इस बार जो अधिकारी निर्वाचित हुए हैं वह पजाब मे आर्य समाज के सगठन मे नए जीवन का सचार करना चाहते हैं । इसके लिए उन्होने सारे पजाब का भ्रमण करके आर्यसमाजो के अधिकारियो और सदस्यो के साथ सम्पर्क पैदा करने का अभियान आरम्भ कर दिया है । 29 जुलाई रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट और प्रचार मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न लुधियाना गये और लुधियाना की भिन्न भिन्न आर्य समाजो के अधिकारियो और सदस्यो से मिले । उन्होने इस सदर्भ में दो गोष्ठिया भी लुधियाना मे रखी, एक आर्य समाज फील्डगज मे और दूसरी महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे दोनो स्थानो पर लुधियाना के आर्य बहिनो व भाईयो ने काफी सख्या में भाग लिया और और उन्होने आर्य समाज की वर्तमान समस्याओ पर विचार विमर्श किया । सब से बड़ा प्रश्न यही था कि पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज के सगठन को किस प्रकार शक्तिशाली व प्रभावशाली बनाया जा सकता है । जो सज्जन इन गोष्ठियो मे सम्मिलित हुए उन्होने भी अपने विचार इन दोनो महानुभावो के सामने रखे । इस विचार विमर्श का सब पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा । आपस मे मिलने मिलाने का भी अच्छा परिणाम रहता है । सम्भवत यह पहली बार है कि सभा के अधिकारी इस प्रकार पजाब की आर्य समाजो के साथ अपना सीधा सम्पर्क बनाने का प्रयास कर रहे हैं । इसके पश्चात वह दूसरे नगरो मे भी जायेंगे और धीरे-2 यह प्रयास होगा कि जिला वार छोटे छोटे सम्मेलन भी किये जायें ताकि सब के साथ सम्पर्क पैदा किया जा सके और इस प्रकार पजाब मे आर्य समाज के सगठन को सुदृढ बनाया जाये । इस से पहले लुधियाना के श्री आशानन्द जी आर्य सभा के सगठन मन्त्री ने भी सभी आर्य समाजो से सम्पर्क करने के लिए पत्र व्यवहार किया था और वह सब जिलो मे जिला आर्य सभायें बनाने का प्रयास कर रहे है । इसके साथ ही यह भी प्रयत्न किया जा रहा है कि इस बार पजाब की सभी आर्य समाजो के वार्षिक चुनाव एक ही समय मे करवाए जाए । जो प्रयास श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा और सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने आरम्भ किया है वह भी इस दिशा मे एक सक्रिय पग है । इस अवसर पर महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से उसके प्रधान श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी ने 3100 रुपये, आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की ओर से डा० राम स्वरूप जी ने 1100 रुपये और स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से श्रीमती विद्यावती जी ने 500 रुपये वेद प्रचारार्थ सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी को भेंट किए । इसके साथ ही आर्य मर्यादा के भी कुछ नये ग्राहक बनाये गये । सगठन को सक्रिय बनाने के लिए अब अगला पग 5 अगस्त को उठाया जायेगा जब जालन्धर मे आर्य विद्या परिषद पजाब की एक बैठक होगी । इस मे सभा के आधीन चल रहे सभी स्कूलो और कालेजो के प्रतिनिधि बैठ कर अपनी समस्याओ पर विचार करेंगे । मेरा पजाब की आर्य जनता से नम्र निवेदन है कि उन्हे भी अब सक्रिय हो जाना चाहिए पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे हम हाथ पर हाथ रख कर नही बैठ सकते ।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा एक महिला की दृष्टि में

श्रीमती अरुण अरोड़ा जी भठिण्डा ने आर्य मर्यादा में प्रकाशित लेखों की जो समीक्षा की है गत अंक 15.7.90 से आगे पाठकों की सेवा नीचे दी जा रही है।

सह-सम्पादक

(15·7·90 के अंक से आगे)

आर्यसमाज में पुरोहित रखे व उन्हें प्रोत्साहित व सम्मानित करें तथा रचनात्मक कार्य करें। मैं इन सब विचारों को बहुत पसन्द करती हूं, मगर यहां मुझे ऐसा वातावरण नहीं मिलता, हां व्यक्तिगत रूप से जो कर सकती हूं, करती रहती हू, पर संस्था का कार्य तो संस्था का ही होता है और अधिक लाभकारी भी।

1 अप्रैल 90—"आर्य समाज के सामने एक और समस्या आने वाली है।" (इस विषय मे मैंने पिछले पत्र मे कुछ लिखा था—आर्य या हिन्दू (पूछना चाहूंगी कि क्या आर्य समाज ने meeting करके कोई एस निर्णय लिया ? यदि हां तो क्या ? कृपया लिखें। इसी में—

"राम नवमी आ रही है।"

अब तो राम नवमी जा भी चुकी है। मगर फिर आयेगी। हर वर्ष आती है। मैं आपकी यह राय व वि ार पढ़कर बहुत खुश हुई कि कुछ बातों में आप भी वैसे ही सोचते हैं जैसे मैं। अर्थात् विचारों का सामान्यीकरण अर्थात् और भी मेरे जैसे साधारण बुद्धि वाले हजारों लोग ऐसे ही सोचते होंगे। अब आर्य व हिन्दू एक हैं—उनके नायक एक हैं—उनकी संस्कृति एक है—तो क्यों न हम मिल जुलकर उन महान् चरित्र नायकों के दिन मनाए। उनके चित्र की पूजा नही चरित्र का मनन करें। इससे एकता भी परिलक्षित होगी। मैं तो साधारण बुद्धि के अनुसार छोटी सी बात समझती हू—जैसे सभी छात्र उत्तीर्ण तो कहलाते हैं—प्रथम श्रेणी में भी सैकड़ों छात्र आते हैं मगर विशेष रूप से योग्य को 'छात्रवृत्तिप्राप्त' या Scholar कहा जाता है, पर उत्तीर्ण तो सभी हैं। ऐसे ही हिन्दु तो हम सभी हैं मगर कुछ विशेष गुणों से युक्त हिन्दु—आर्य कहलाने के अधिकारी हैं, सभी नहीं। जिनमें वह श्रेष्ठता के गुण हों, आर्यत्व के गुण हों—मगर हिन्दू तो वह भी हैं, हां गुणों के कारण उसको विशेष व्यक्ति अर्थात् 'आर्य' माना गया। अत: विस्तार में न जाकर पुन: कहूंगी कि आप जो राम-कृष्ण के पर्व मनाने की प्रेरणा देते रहते हैं—यह हिन्दुओं को एकता के सूत्र में पिरोये रखने का बहुत अच्छा व दृढ़ सूत्र है। राम कृष्ण के बिना हिन्दू अधूरे हैं। उनके चरित्र को अपनाने मे ही हम कुछ बन पायेंगे अत: इसी प्रकार एकता के सूत्र में बंधे हम मिलकर अपनी संस्कृति व धर्म को बनाये रख सकते हैं।

8 अप्रैल, 90 में सूचना है आपकी ओर से—"पंजाब प्रान्तीय विचार गोष्ठी" इसके विषय में एक दो बातें जानने की उत्सुकता है ?

1. क्या इस प्रकार की गोष्ठियों में कोई भी आर्य विचारों का स्त्री पुरुष हिस्सा ले सकता है, यदि उसकी रुचि हो, अथवा नहीं।

2. यदि नहीं तो क्या उसे किन्हीं विशेष नियमों का पालन करना पड़ता है ? यदि हां, तो वे नियम क्या हैं ?

3. क्या यह उपरोक्त गोष्ठी हो चुकी है ?

4. यदि हां, तो उसमें आर्यसमाज के कर्णधार किस निर्णय पर पहुंचे ? क्या आर्य समाज को प्रादेशिक राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए, यदि हां तो किस रूप में ?

5. अप्रैल के बाद June आ गया। हमें इस गोष्ठी के निर्णय जानने की उत्सुकता है। मेरी अपनी व्यक्तिगत राय में—आर्य समाज को अवश्य सक्रिय भाग लेना चाहिए। क्योंकि शुद्ध राजनीति जो 'देश' को मुख्य मान कर चलती है—वह धर्म और नीति से अलग नहीं हो सकती। आज की राजनीति भ्रष्ट व गदली होने का कारण ही मुख्य यही समझ में आता है कि स्वार्थपरक अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने वाली तथा धर्म से रहित हो गई है। आज राजाज्ञा ऋषि आज्ञा से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। आज आर्य समाज को विदुर बनकर धृतराष्ट्र की नीति का विरोध करने के लिए अवश्य तन कर खड़े होना चाहिए। यही समय की भी मांग है। ऋषि दयानन्द ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में कभी अंग्रेज सरकार का भय न मानते हुए राजनीति में भाग लेने की प्रेरणा दी जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज ने एक से एक निर्भय व वीर देश भक्त देश को दिए आज भी देश को व आर्य समाज के भगत सिंह व लाला लाजपतराय जैसे शेरों की, विदुर जैसे नीतिज्ञों की आवश्यकता है। क्या चाणक्य ने ब्राह्मण होते हुए भी चन्द्र गुप्त के साथ सक्रिय राजनीति में हिस्सा नहीं लिया था। क्या समय की मांग पर द्रोणाचार्य, परशुराम व स्वयं श्री कृष्ण जी ने प्रतिज्ञाबद्ध होने पर भी शस्त्र नहीं उठाए थे।

जो संस्था समय के साथ कदम से कदम मिला कर नहीं चलती, वह बहुत पीछे रह जाती है।

मैं तो बस रह न सकी, ऐसे ही कुछ लिख दिया मगर बहुत उत्सुकता है। यह जानने की आर्य विद्वत् मण्डल की गोष्टी किस निर्णय पर पहुंची ? विस्तार से आर्य मर्यादा में ही लिखें या फिर व्यक्तिगत रूप से पत्र, जैसा आप उचित समझें।

× × ×

15 अप्रैल, 90—'जिला सभाओं के अधिकारियों से निवेदन' तथा 'जिला आर्य सभाओं का विधान।'

श्री रणवीर भाटिया महामन्त्री

यद्यपि इस सूचना से मेरा कोई ताल्लुक नहीं। मगर काफी समय से मेरे मन में उठतीं शंकाओं में से कुछ का, इस सूचना से समाधान अवश्य हो गया। मैं प्राय: आर्य समाज के संविधान को, नियमावली को जानने की उत्सुक रहती हूं। जैसा कि 8 मई, 90 की आर्य मर्यादा में लिखा है कि 1935 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य विद्या सभा का निर्माण किया। इसकी नियमावली तथा विधान बनाने हेतु 5 महानुभावों की एक समिति बनाई गई। मगर यह सभा नये आदेश से भंग हो गई और वही पुरानी 1935 वाली चलती रही। मैं तो यह कहना चाहती हूं कि जो भी वर्तमान आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य विद्या सभा आदि का संविधान है—उसकी नियमावली है, आर्य समाज का सदस्य बनने के नियम साधारण सदस्य, वोट देने का अधिकार, सभा के चुनाव में हिस्सा लेने, अन्तरंग सभा के सदस्य बनने तथा अन्य भी—जो भी 1935 से आज तक बने नियम व उपनियम आदि हैं। उनकी जानकारी एक साधारण आर्य समाजी को या किसी भी नागरिक को होनी चाहिए, ताकि कोई किसी प्रकार किसी को मूर्ख बनाने का प्रयत्न न कर सके। जैसे देश का संविधान—नागरिक के अधिकार व कर्त्तव्य हम बच्चों को आरम्भ से ही पढ़ाना शुरू कर दें—उसी प्रकार—आर्य संविधान, आर्य परिवार के सदस्यों को मालूम होना चाहिए। अगर आप एक शृंखला के रूप में इसका प्रकाशन आर्य मर्यादा में आरम्भ कर सकें तो बड़ी कृपा होगी। कोई अन्धेरे में नहीं रहेगा। बल्कि, मेरे विचार से तो आर्य संविधान की छपी हुई प्रतियां, प्रत्येक आर्य समाज में, आर्य विद्यालय में उपलब्ध होनी चाहिएं। ताकि आर्य समाज में रुचि रखने वाला कोई भी नागरिक, उसको पढ़ सके, समझ सके, उसमें आस्तिकता आ सके और गलत परिभाषाओं व शोषण से बच सके तथा स्वयं भी पूर्णतया सतर्क होकर अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सके। संविधान—का संक्षेप करके—चार्ट आदि बना कर आर्य समाजों में लगाये जायें जिससे अधिकारियों पर भी एक प्रकार का आटोमैटिक नियन्त्रण या अंकुश रहे। वह मिथ्यावादन से परहेज करेंगे। इस 8 मई के लेख से जो उपरोक्त सूचना (15 अप्रैल) से काफी ज्ञान बढ़ा। और भी जानकारी—सही तथा सत्य लेना चाहते हैं हम, ताकि कोई भी साधारण नागरिक जो आर्य समाज में आना चाहे और यदि उसकी रुचि व लग्न हो तो नियमों का पालन करता हुआ स्वयमेव आगे बढ़ता चला जाये—मगर इसके लिए नियमों की, विधान की, संविधान की जानकारी तो आवश्यक है।

आशा है, आप मेरे इस प्रस्ताव पर या प्रार्थना पर अवश्य गौर करेंगे। अगर कहीं अपनी meeting में बात करनी आवश्यक हो तो भी आप करेंगे और फिर भी कोई विशेष अड़चन हो हो तो बताने की कृपा करेंगे। वैसे एक स्वतन्त्र, लोकतन्त्रात्मक देश में वह भी धार्मिक संस्था के क्षेत्र में—कोई अड़चन होगी, ऐसी सम्भावना। नहीं है। 8 May & 15 April के लेखों से काफी जानकारी बढ़ी है तथा और बढ़ाने की प्रेरणा मिली है।

22. अप्रैल, 90 अन्तिम पृष्ठ—

"भारतीय जनगणना सोचलोच"

गोवर्द्धनदास आर्य (नाभा) बहुत संक्षिप्त सा लेख है। मूलभाव या मूल प्रश्न तो समझ में आ गया मगर शब्दों के बहुत कम प्रयोग के कारण अथवा शैली थोड़ी क्लिष्ट रही, न जाने किस कारण—कहीं-कहीं पर तो यह ही पता नहीं चला कि लेखक कहना क्या चाहता है।

चूंकि आपके लेख से तथा अन्य लेखों से "मूल प्रश्न" का ज्ञान था—अत: समझ पाई। अब जनगणना का समय बहुत नजदीक आ गया है। शायद अगस्त, 90 से यह कार्य शुरू हो रहा है। क्या आर्य परिवारों ने अपनी गोष्ठी में कोई निर्णय लिया ? यदि लिया हो तो क्या ? कृपया सूचित करें। इसमें कोई सन्देह नहीं यह देश 'आर्यवृत्त' था—सब आर्य थे—समय पाकर आर्य जाति ही हिन्दु जाति कहलाने लगी। सब ऐतिहासिक तथ्य ठीक हैं (मेरा तो इतना विस्तृत अध्ययन भी नहीं) मगर आज समय की मांग है—"एकता"। फिर कागज पर लिखने मात्र से किसी के विचारों में अन्तर नहीं आयेगा। आर्य-आर्य रहेगा, हिन्दु-हिन्दु रहेगा।

(क्रमशः)

स्वाध्याय और शुद्ध मन्त्रोच्चारण

ले० श्री पं० सत्यव्रत जी "[illegible]" 70-ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड, अमृतसर

आज मैं अपने प्रौढ़ आर्य भाई बहिनों की सेवा मे सन्ध्या उपासना, दैनिक एवं नैमित्यिक यज्ञानुष्ठानों, वेद पाठ तथा स्वाध्याय आदि कार्यों में पढ़े जाने वाले वेद मन्त्रों के उच्चारण सम्बन्धी कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हूं इसका उद्देश्य यह है कि संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी, पंजाबी, उर्दू तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं को जानने वाले आर्य बन्धु भी यदि थोड़ा सा ध्यान दें तो वेद मन्त्र उच्चारण में पर्याप्त लाभ हो सकता है।

सामान्यत: देखा गया है कि हमारे भाई बहनों को सन्ध्या हवन आदि के तथा अन्य भी बहुत सारे वेदमन्त्र स्मरण होते हैं जो कि बड़े हर्ष की बात है। परन्तु संस्कृत न जानने के कारण अथवा किसी से शुद्ध उच्चारण की विधि न सीख पाने से मन्त्रों में कई अशुद्धियां भी रट ली जाती हैं। जिनका कि बिना बताए पता नहीं लग सकता। जब कोई जानकार सुनता है तो वह प्रसन्नता के साथ-साथ खेद का अनुभव भी करता है। प्रसन्नता तो इस बात की होती है कि संस्कृत भाषा न जानते हुए भी इतने वेद मन्त्र कण्ठस्थ कर लिए हैं। तथा खेद इस बात पर होता है कितना अच्छा होता यदि इन मन्त्रों के याद करने जहां हमारी वेद के प्रति श्रद्धा, लग्न व आस्था जान पड़ती है, वहीं पर कुछ अधूरापन भी दिखाई देता है जो कि प्रयत्न एवं अभ्यास के द्वारा दूर किया जा सकता है।

यहां इस बात को ध्यान पूर्वक समझ लेना चाहिए कि यदि यह पूछा जाए कि भाषा किसे कहते हैं ? तो उत्तर यह होगा कि जिस माध्यम से अपने मनोगत भावों को दूसरों पर प्रकट किया जा सके उसे भाषा कहते हैं। भाषा के मुख्य दो भेद हैं एक है बोली तथा दूसरी है लिपि। मुख द्वारा शब्दों को बोल कर बात को समझाया जाए तो यह बोली कहाती है। यदि शब्दों को लिख कर दूसरों को बात समझाई जाए तो यह माध्यम लिपि नाम से जाना जाता है। सारांश यह है कि भाषा के अन्तर्गत बोली और लिपि दोनों को लिया जाता है। अत: जिस अक्षर (वर्ण) का जैसा निश्चित उच्चारण है उसे वैसा ही ठीक-ठाक बोलना तथा लिखना चाहिए। यही उचित व लाभकारी है।

संसार की जितनी भाषाएं हैं उन में संस्कृत के अतिरिक्त ऐसी दूसरी कोई भाषा नहीं है जिसमें प्रत्येक शब्द को शुद्ध रूप में लिखा या पढ़ा जा सके। यह सौभाग्य तो सस्कृत भाषा को ही प्राप्त है। संस्कृत की जो लिपि है इसका नाम है "देवनागरी"। यह लिपि अपने आप में परिपूर्णता को लिए हुए है। इसी लिपि में प्रत्येक शब्द को शुद्ध रूप में लिखा तथा पढ़ा जा सकता है। संस्कृत की यह देवनागरी लिपि संस्कृत भाषा के समान ही ससार की श्रेष्ठतम लिपि है। अभी कुछ मास हुए हैं समाचार-पत्रों यह छपा था कि अमेरिका के वैज्ञानिकों ने यह घोषणा की है कि कम्प्यूटर सिस्टम के लिए जो संस्कृत एव देवनागरी लिपि में पूर्णता पाई गई है वह अन्य किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं। कहने का अभिप्राय यह है कि वैज्ञानिक मूल्यों पर पूरा उतरने वाली एक मात्र भाषा सस्कृत व उसकी लिपि देवनागरी ही है इसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि जिस मानव समुदाय के पास इतनी शुद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा व लिपी एक बहुत बड़ी सम्पत्ति के रूप में मौजूद हो उसका सम्भाषण तथा लेखन अशुद्ध क्यों ? इस का उत्तर यही हो सकता है कि भारतीय संस्कृति का उद्घाटक, प्रचारक तथा प्रसारक यह हमारा हिन्दू समाज सदियों से विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा पद दलित होता रहा है। अत: विदेशी मान्यताएं, विदेशी भाषाएं विदेशी खानपान, पहरान ये सब कुछ हमें उनसे बरबस ग्रहण करना पड़ा है और हम अपनी भाषा तथा संस्कृति से दूर होते चले गए हैं। अब जबकि हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है। किसी विदेशी ताकत का इस विषय में कोई दबाव नहीं है फिर भी हम अपनी शुद्ध भाषा, संस्कृति व सभ्यता को अपनाने में अपनी असमर्थता अनुभव करते हैं। यह तो हमारा राजनैतिक और सामाजिक प्रमाद ही कहा जाएगा। धन्य है वे सस्थाएं जोकि किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति के प्रचार व प्रसार में अपनी शक्ति को निरन्तर लगा रहीं हैं।

जैसा कि मैंने ऊपर यह निवेदन किया है कि सस्कृत भाषा एक पूर्ण एवं सर्वांगीण भाषा है। इसका मुख्य कारण है इसके व्याकरण की निर्विवाद पूर्णता। संस्कृत व्याकरण इतना गहन, गम्भीर तथा अद्भुत पूर्णता लिए हुए है कि जिस की कहीं भी कोई तुलना नहीं है। इसमें सबसे पहले "शिक्षा" का निर्देश है शिक्षा ग्रन्थ प्राचीन कई आचार्यों के द्वारा लिखित आजकल उपलब्ध हैं। इनमे पाणिनीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा आदि प्रमुख हैं। पठन पाठन में इस समय पाणिनीय शिक्षा का ही मुख्य रूप से प्रचलन है। शिक्षा में सर्वप्रथम उच्चारण सम्बन्धी नियमों का वर्णन किया गया है। जिस में वर्णमाला का परिचय, वर्णों की संख्या, वर्णों के भेद, वर्णों के उच्चारण स्थान, इनके बाह्य, आभ्यन्तर प्रयत्न आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। अक्षर दो प्रकार के होते हैं। स्वर तथा व्यञ्जन। जो बिना किसी दूसरे अक्षर की सहायता के बोले जा सकें वे स्वर कहलाते हैं तथा जो स्वरों की सहायता से बोले जाएं उन अक्षरों को व्यञ्जन कहते हैं। व्यञ्जन स्वरों की सहायता के बिना कभी बोले जा ही नहीं सकते। स्वरों के तीन भेद होते हैं। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, ह्रस्व स्वर पांच है—अ इ उ ऋ लृ। दीर्घस्वर आठ हैं—आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ। प्लुत के लिए स्वर के आगे 3 (तीन) का अक लिख दिया जाता है। अक्षर या वर्ण की छोटी से छोटी ध्वनि को ह्रस्व कहते हैं। ये एक मात्रिक होते हैं। अर्थात् स्वस्थ मनुष्य के हाथ की नाड़ी की एक धड़कन (धक्) में जितना समय लगता है इतना समय एक मात्रा का होता है जैसे क, जि, बु, पृ आदि दीर्घ स्वर द्विमात्रिक होते है अर्थात् ह्रस्व से दो गुणा समय लेते है जैसे गा, ची, धू पे, सौ इत्यादि। प्लुत की ध्वनि ह्रस्व से कम से कम तीन गुणा लम्बी होती है। व्यञ्जनों के भी तीन भेद होते हैं।

1. स्पर्श=क से म तक 15 वर्ण।
2. अन्तस्थ=य र ल व चार वर्ण)
3. ऊष्म=श ष स ह चार वर्ण। क्ष त्र ज्ञ इन्हीं में से अक्षर जोड़ कर बने हैं इस लिए इनकी यहां चर्चा नहीं करते। संस्कृत भाषा में एक यह अत्यन्त सराहनीय नियम दिखाई पड़ता हैं कि एक ध्वनि के लिए वर्ण है। अथवा उच्चार्यमाण अक्षर की मौलिक ध्वनि ही उस अक्षर का नाम है। अत: स्वर चाहे अपने वास्तविक स्वरूप में व्यञ्जनों के साथ सम्मिलित हो प्रत्येक स्वर की ध्वनि उसके अपने मूल उच्चारण के रूप में ही सर्वत्र उच्चरित होती है। इसमे कभी परिवर्तन नहीं होता। स्वर जब व्यञ्जनो के साथ मिल कर आते हैं तो क, का के, कै, को, कौ इत्यादि रूप हो जाते हैं। तथा जब किसी व्यञ्जन में स्वर की आवश्यकता नहीं होती तो हम उस व्यञ्जन को आधा लिखते अथवा उस के नीचे हलन्त का यह (्) चिन्ह लगा देते हैं। जैसे—र च् र क् र त् आदि।

मन्त्रों का उच्चारण करते समय यदि कुछ मोटी मोटी बातों पर ध्यान दे कर अभ्यास कर लिया जाए तो उच्चारण मे पर्याप्त शुद्धिकरण हो सकता है।

ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अजन्त, हलन्त तथा सयुक्त अक्षरों का इनके समय विभाजन के अनुसार उच्चारण होना चाहिए।

ह्रस्व को छोटी ध्वनि मे (एक मात्रिक) बोलिए जैसे—अ इ उ ऋ इत्यादि।

दीर्घ को इससे दो गुणा लम्बा (द्विमात्रिक) बोलिए। जैसे—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ इत्यादि।

प्लुत को ह्रस्व से तीन गुणा लम्बा (त्रिमात्रिक) बोलिए जैसे आ, इ, ओ इ, इत्यादि।

किसी भी शब्द में ह्रस्व अक्षर के उच्चारण समय छोटी ध्वनि जोड़ें जैसे अ धि क त र=अधिकतर। परन्तु इनका जो मूल उच्चारण है वह अवश्य बोलें। अर्थात् इन अक्षरों की जो वास्तविक ध्वनि है ठीक वही ध्वनि शब्द जोड़ते समय भी बोलिए। आप के मुख से शुद्ध शब्द ही निकलेगा। अशुद्ध तो निकल ही नहीं सकता। जैसे—वि क सि त=विकसित। इसी प्रकार दीर्घ अक्षरों को बोलते समय इनकी ध्वनि (आवाज) दो गुणी रखिए। जैसे—मा ला या:=मालाया:, सं वै धा निक=संवैधानिक। प्लुत वर्ण जिसके आगे ३ (तीन) का चिन्ह लगा होता है उसे तीन गुणा लम्बा बोलिए जैसे—ओ३म्। इत्यादि।

अब अजन्त तथा हलन्त अक्षरों की बात है। अच् कहते हैं स्वरों को तथा हल् कहते हैं व्यञ्जनों को। अजन्त (अच्+अन्त) का अर्थ है स्वरान्त। अर्थात् ऐसे वर्ण जिनके अन्त में कोई न कोई स्वर अवश्य हो। जैसे—क, दा से, धौ इत्यादि। हलन्त वे वर्ण होते हैं जिनके अन्त में कोई स्वर न हो अपितु मौलिक व्यञ्जन ही हों।

(क्रमश:)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आघार और आज्य भागाहुतियों को दे कर (1) ब्राह्म स्वाहा (2) छन्दोभ्य स्वाहा ये दो आहुतियो को दे कर निम्नलिखित घी की दश आहुति दें—

(1) सावित्र्यै स्वाहा (2) ब्राह्मणै स्वाहा (3) श्रद्धायै स्वाहा (4) मेधायै स्वाहा (5) प्रज्ञायै स्वाहा (6) धारणायै स्वाहा (7) सदसस्पतये स्वाहा (8) अनुमतयै स्वाहा (9) छन्दोभ्य स्वहा (10) ऋषिभ्य: स्वाहा।

तदनन्तर ऋग्वेद की निम्नलिखित 11 ऋचाओं से आहुति दें—

बृहस्पते प्रथम वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधाना:।

यदेषां श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत्प्रे तदेषां निहित गुहाविः।।

ऋ० म० 10 (सू० 71/1

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।

अत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि

ऋ० म० 10 (सू० 71/2

यज्ञेन वाच: पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।

तामाभृत्या व्यदधु: पुरुत्रा तां सप्तरेभा अभि स नवन्ते।।

ऋ० म० 10 (सू 71/3

उत त्व: पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्व: शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।

उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासा:।।

ऋ० म० 10 (सू० 71/4

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।

अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवां अफलामपुष्पाम्।।

ऋ० म० 10 (सू० 61/5

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।

यदीं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।।

ऋ० म० 10 (सू 71/6

अक्षण्वन्त: कर्णवन्त: सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवु:

आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे।।

ऋ० म० 10 (सू० 71/7

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद ब्राह्मणा: सयजन्ते सखाय:

अत्राह त्व वि जहुर्वेद्याभिरोह ब्राह्मणो वि चरन्त्यु त्वे।।

ऋ० म० 10 सू० 71/8

इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरास:

ए एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञय:।।

ऋ० म० 10 सू० 71/9

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखाय:

किल्विषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय:।।

ऋ० म० 10 (सू० 71/10

ऋचां त्व: पोषमास्ते पुपुष्वान गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु

ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उ त्व:

ऋ० म० 10 (सू० 71/11

इसके पश्चात् यजुर्वेद के इस मन्त्र से—

सद्सस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।

सनि मेधामयासिषं स्वाहा।। यजुर्वेद अध्याय 32 मं० 13

यजमान या गृहपति हवन करे, किन्तु मन्त्र सब बोलें। पश्चात सब उपस्थित पारिवारिक जन पलाश की तीन तीन हरी या शुष्क समिधाओं को भिगो कर सावित्री मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन बार करे। पुन: स्विष्टकृत आहुति दे कर प्रातराश किया जाए।

शन्नो मित्र:" इस मन्त्र को पढ़ कर उसके पश्चात मुख धो कर आचमन कर के अपने अपने आसनों पर बैठ कर जलपात्रों में कुशाओं को रख कर हाथ जोड़ कर पुरोहित के साथ तीन तीन बार ओंकार व्याहृतिपूर्वक सावित्री पढ़ कर वेदों के निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें—

ऋग्वेद:—

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम् होतारं रत्नधातमम्। समानी

व आकूति: समाना हृदयानि व:

समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।।

यजुर्वेद—

ओ:३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो व: सविता प्रापयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्नया इन्द्राय भागं प्रजा वतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशं सों ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह् वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

यो सावादित्ये पुरुष: सो सावहम।। खं ब्रह्म।

सामवेद—

अग्न आयाहि वीतये गृणानों हव्यदातये।

निहोता सत्सि बर्हिषि:।

मृगो न भीम कुचरो गिरिष्ठा: परावत आ जगन्था परस्या:।

सृकं संशय पविमिन्द्र तिग्म वि शत्रून्तताढि वि मृधो नुदस्व।।

भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:

स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांस सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:।।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेद:।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

अथर्ववेद—

ओ:३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभि स्रवन्तु न:।।

पनाय्यं पदस्विमा कृतं वां वृषभो दिवो रजस: पृथिव्या:। सहस्रधारा उत्सपे गविष्ठौ सर्वामित तामुपयाता विकर्ष्यै।।

पश्चात यह मन्त्र पढ़े।

सह नो स्तु सह नो वतु सह न इदं वीर्यवदस्तु।

ब्रह्मा इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे।।

इस वेद मन्त्र को पढ़ कर सामवेद का वामदेव्यगान करें।

(पृष्ठ 2 का शेष)

खंड-1, पृष्ठ 694 में संयुक्त निकाय में वर्णित "गंगाय नद्रीये तीरे" (कोशाम्बी) के सन्दर्भ में केवल अपना संदेह व्यक्त किया है "दिस इज आइदर ऐम एरर, और हियर दि नेम गंगा रिफर्स नाट टू दी गैंजेज बट टू दी यमुना "फेन सुत्त एवं दारुक्खन्ध दोनों में कुछ एक पाण्डुलिपियों में अयोध्या के स्थान पर कोशम्बी लिखा मिलता है, किन्तु मलालशेखर जी ठीक कहते हैं "बट इवन कौशाम्बी वाज आन दी यमुना एण्ड नाट आन दी गैंजेज" (पृष्ठ 155) अत: पाली साहित्य में जब यह लिखा मिलता है कि आयोध्या नगर गंगा किनारे था तो इसके अर्थ केवल नदी हुए, आयोध्या को बिहार में ले जाने की जरूरत नहीं है।

रोमिला जी एक स्थान पर लिखते हैं, "बौद्ध स्रोतों में केवल एक बार ही कौशाम्बी को गंगा किनारे स्थित बताया गया है", लेकिन क्या वे बताएंगी कि कि उसे यमुना किनारे क्यों नहीं बताया गया, जो सच होता? आप कहती हैं प्रो० मलालशेखर का मत है कि यहां "प्रतिलिपिक की गलती माननी चाहिए।" रोमिला जी एक विद्वान् का अपना व्यक्तिगत मत कब से इतिहास का साक्ष्य होने लगा? और क्या आप पाठकों को यह बताना चाहेंगी कि पाली बौद्ध ग्रन्थों में जैसा मैंने ऊपर कहा कई बार "गंगा" शब्द अन्य नदियों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। सिर्फ गंगा नदी के ही लिए नहीं। एम० मोनीयर विलियम की संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोष में गंगा का अर्थ बताया है "स्विफ्ट गोयर" अर्थात् तेजी से भागने वाली। स्पष्टत: गंगा शब्द किसी भी नदी के लिए प्रयोग हो सकता था और होता था। ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक मिथिकों के द्वारा गंगा नदी का मानवीकरण हुआ और यह शब्द एक नदी विशेष के लिए प्रयोग में आने लगा। किन्तु यह बन्धन बौद्धों के लिए पूर्ण रूप से कभी भी लागू नहीं हुआ। जन साधारण भी पहले भी और आज भी "गंगा" शब्द का प्रयोग "पवित्र नदी" के लिए ही किया जाता है, केवल मात्र उस नदी के लिए नहीं किया जाता जो गंगोत्री से निकल कर गंगासागर में मिलती है। अत: बौद्ध पाली साहित्य के सन्दक सुत्त (चुल्ल वग्ग-6 एवं मज्झिम निकाय 2-3-6) में संदक नामक कौशाम्बी के भिक्षु की कथा का उल्लेख आया है जो भगवान् बुद्ध के प्रमुखतम शिष्य आनन्द से दर्शन पर विचार विनिमय करता है और गंगा का वर्णन नदी मात्र के लिए करता है, आज की गंगा के लिए नहीं करता और संदर्भ तो मैं पहले ही दे चुका हूं, जैसे संयुक्त निकाय था। आज भी चित्तौरागढ़ जिले में एक स्थान विशेष को "गंगावली" से घिरा बताते हैं अर्थात् एक से अधिक गंगाओं से घिरा स्थान। स्पष्ट है यहां भी "गंगा" का अर्थ नदी मात्र से है गंगा नदी से नहीं। चित्रकूट में तो मंदाकिनी को गंगा ही कहा जाता है। अत: बौद्ध साहित्य में यमुना को गंगा कहा गया तो वह गलत नहीं था, स्वाभाविक था। मुझे दु:ख है कि रोमिला जी तथा उनके मित्र संग्रहालयों में जाकर पाण्डुलिपियों का अध्ययन नहीं करते। जी हां, जो मैंने कहा है वही सच है। हैदराबाद कोडेक्स जिसका अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेवरिज ने "बाबरनामा" नाम से किया है, वह बाबर द्वारा अपने हाथों से लिखित पाण्डुलिपि का अनुवाद नहीं है। आप सलारजंग संग्रहालय के निदेशक डॉ० निगम से पूछ सकती हैं। स्वयं मिसेज बेवरिज ने लिखा है कि उस पाण्डुलिपि से जिससे उन्होंने अनुवाद किया है वह औरंगजेब के काल का है। (1655-1707) पृष्ठ सं०-XLVI उनका कहना है कि यह प्रतिलिपि 1700 की है। पृष्ठ XLV पर लिखा है कि केवल जहांगीर ने ही बाबर की हाथ की लिखी हुई पाण्डुलिपि देखी थी। बाबर की मृत्यु 1530 में हुई जबकि यह पाण्डुलिपि 1700 की है, अर्थात् पौने दो सौ साल का अन्तर रहा है दोनों पाण्डुलिपियों में अत: पाठक सोचें कि क्या मैं झूठ बोल रहा हूं या रोमिला जी, दोनों तो सच नहीं हो सकते? और इल्विन ने तो अकबर से ली हुई आज्ञा और अब्दुर्रहीम खानखाना द्वारा फारसी में अनुदित डायरी के एक हिस्से का ही अनुवाद पुस्तक रूप में किया है। इसका उपयोग अब्दुल फजल को "अकबरनामा" के लिए करना था। हम सबका धर्म है सच लिखकर पाठकों को सच का ज्ञान कराना। अफसोस है कि रोमिला जी की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएं, साम्यवादी दृष्टिकोण और सोद्देश्य लेखन उनसे इतिहास पर लीपा-पोती रही है। मैं प्रो० ए० एच० खान (विश्वविद्यालय शिमला) से साम्य रखता हूं कि इतिहास जैसा रहा है उसे वैसा ही हम स्वीकार करें, अच्छा या बुरा। हमारी लीपा-पोती से वह बदलने वाला नहीं।

रोमिला जी अपने भीतर के इतिहासकार को राजनैतिक नेता बनने दें, यह उनका अपना निजी निर्णय है, लेकिन देश के उन सैंकड़ों युवा इतिहासकारों और पुरातत्त्व के विद्यार्थियों का भविष्य न बिगाड़ें जो अपने को केवल विशेषज्ञ ही रखना चाहते हैं। वे बहुत ही खतरनाक स्थिति में इतिहास को पहुंचा रही हैं। भविष्य में इतिहास केवल प्रचारात्मक रचना—धर्म ही नाएगा सत्य का [illegible] खोजा नहीं।

'शब्द [वेद] प्रमाण की प्रामाणिकता'

ले० श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार, शांति सदन, 145/4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

भूमिका—शब्द प्रमाण को प्रत्येक धर्म में माना जाता है। यह शब्द ईसाइयों के लिए बाइबल का है। मुसलमानों के लिए कुरान का है। सिखों के लिए ग्रन्थ साहिब का है तथा वेदानुयायियों के लिए वेद का। यही बात जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के विषय में भी है।

वैदिक धर्म में कुछ और अन्तर भी है। ऋषि दयानन्द के विचार से चार संहिता भाग ही स्वतः प्रमाण हैं, जबकि अन्य बहुत से विचारक ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद का ही भाग मानते हैं। कुछ अन्य लोग उपनिषद्, गीता आदि ग्रन्थों को भी भगवान् की वाणी ही समझते हैं।

यदि केवल ऋषि दयानन्द के ही विचार को लें तो भी प्रामाणिकता के लिए मन्त्र का शब्द ही स्वीकार्य नहीं अपितु प्रामाणिकता अर्थ की है—मन्त्र के अक्षरों की ही नहीं। यहां एक विचार भेद भी है। अनेक विद्वान मन्त्र के मन्त्राक्षरों के जाप से भी फल प्राप्त होता है—ऐसा मानते हैं। विशेष कर गायत्री मन्त्र, ओ३म शब्द-व्याहृति शब्द के जाप और ध्यान से ही सफलता का होना मानते हैं।

जहां तक ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों-सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के अध्ययन से पता चलता है—वह तो मन्त्र के विचार और उसके ऊपर आचरण करने से ही लाभ है ऐसा मानते हैं।

सनातनी भाई तो मन्त्र के अक्षरों में भी शक्ति और सिद्धि मानते हैं। ह्रीं-क्लीं आदि का विशेष रूप से जाप भी फल प्रद मानते हैं। कुछ आर्य विद्वानों की बातों से भी यही झलकता है। उदाहरण के लिए—

महात्मा आनन्द स्वामी जी की पुस्तक "प्यारा ऋषि" पृष्ठ 7 पर-फर्रुखाबाद में बाबू मुन्नी लाल और बा० जगन्नाथ को स्वामी जी (ऋषिवर) ने बतलाया कि गायत्री के जाप से बुद्धि शुद्ध होती है—सन्ध्या में सबको गायत्री का जाप करना चाहिए।

पृष्ठ 18—प्रयाग के माधव बाबू खड़े होकर जाप कर रहे थे—शरत् बाबू ने पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया, स्वामी जी का आदेश है कि सन्ध्योपासना के पश्चात् खड़े होकर एक सहस्र गायत्री के जपने से पूर्वकृत दुष्कर्मों का फल नष्ट हो जाता है।

म० प्रभु आश्रित जी की पुस्तक "गायत्री कुसुमांजलि" के पृष्ठ 6 पर: "गायत्री मंत्र का ऋषियों ने अपनी घोर तपस्या के बाद अनुभव करने पर त्रयलोक तारनी, कष्ट निवारणी, पाप मोचनी, पतित पावनी, वरदायनी नाम रखा है।"

पृष्ठ 8: "मैं अपने 56 वर्ष के निरन्तर जप और इसके मनन से कहता हूं—यह मन्त्र देवता स्थायी रूप से सदा के लिए दूसरों पर और अपने पर भी जादू का सा प्रभाव रखता है।"

इस विषय पर और विचार करने की अपेक्षा ऋषि दयानन्द की बात कहना अधिक ठीक रहेगा। प्रत्येक आर्य इस विषय में निर्णय कर सकता है। मन्त्रों के शब्द के विषय में ऋषिवर ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृ० 7 पर लिखते हैं:-

1. मंत्रि गुप्त परिमार्जणे इससे हलश्च सूत्र से घञ् प्रत्यय कर मन्त्र शब्द सिद्ध होता है। गुप्त पदार्थों की व्याख्या जिसमें हो वह मन्त्र वेद है। उसके अंशों की भी मन्त्र संज्ञा होती है।

2. "मन्त्र ज्ञाने सर्वधातुभ्य-ष्ट्रन्—इससे प्रत्यय हुआ। जिसके द्वारा सब मनुष्यों को सब पदार्थों का ज्ञान होता है। जिसके द्वारा मन्त्र (वेद) है। इसके अवयव "अग्नि मीडे" आदि भी मन्त्र शब्द से ग्रहण किए जाते हैं।"

इससे मन्त्र के शब्द के विषय में स्पष्ट हुआ कि मन्त्र के शब्दों की अपेक्षा मन्त्र द्वारा प्रदत्त ज्ञान की प्रधानता है।

जाप के विषय में भी ऋषिवर स्पष्ट करते हैं। ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका पृ० 175—

"अब उसकी भक्ति किस प्रकार से करनी चाहिए सो लिखते हैं। जो ईश्वर का ओंकार नाम है सो पिता पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ कर दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं उनमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है इसलिए इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थ सदा करना चाहिए जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की भक्ति सदा बढ़ती जाए।

पृष्ठ 185

"धारणा उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुड़ा के नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर कर ओंकर का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है उस का विचार करना।"

इसी को और बढ़ाने से ध्यान और समाधि अवस्था आती है। सत्यार्थ प्रकाश पृ० 40—

"जगल मे अर्थात् एकान्त देश में जा, सावधान हो के, जल के समीप स्थित हो के नित्य कर्म करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण अर्थात् ज्ञान और उसके अनुसार अपना चाल चलन करे, परन्तु यह जाप मन से करना उत्तम है।"

ऊपर के उद्धरणों से स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द महत्त्व अर्थ ज्ञान और आचरण को—कर्म को देते हैं—केवल मन्त्र पाठ को नहीं।

प्रामाणिकता के विचार के लिए मन्त्र के अर्थ का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान निश्चित होना चाहिए। यदि ज्ञान ही अनिश्चित होगा तो प्रामाणिकता संदिग्ध होगी। वेद मन्त्रों के विषय में एक कठिन बात यह है कि वेद को धर्म का आधार मानने वाले न जाने कितने परस्पर विरोधी सिद्धान्तों को मानते हैं उन पर आस्था पूर्वक विश्वास करते हैं और सब अपने सिद्धान्तों का मूल वेद को ही मानते हैं।

वेद संहिता भाग तो बहुत बड़ा ग्रन्थ समूह है—मन्त्र समूह है, ब्रह्म सूत्रों (उत्तर मीमांसा) पर आश्रित अद्वैतवादी, शुद्धाद्वैतवादी, द्वैताद्वैतवादी, विशिष्टाद्वैतवादी तथा त्रैतवादी इन्हीं सूत्रों का भिन्न भिन्न अर्थ करते हुए अपने विचारों का समर्थन करते हैं। गीता तथा उपनिषद् समूह का भी यही हाल है।

न जाने कितने सहस्र वर्षों तक वेद के आधार पर और वेद मन्त्रों के द्वारा ही यज्ञों में पशु बलि होती रही। पिछले दिनों—

ओ३म् जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुः दुरितात्यग्निः ऋक् 1।99।1 इस मन्त्र को T. V. पर मद्रास के किसी स्थान से गाया जा रहा था और देव दासी इसकी धुन पर नृत्य कर रही थी।

अभिप्राय यह है कि वेद के मन्त्रों का अपने ढंग से अर्थ कर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों से भिन्न-भिन्न कर्म किए जाते रहे।

वेद के सम्बन्ध से एक बात निश्चित है। वेदों का प्रारम्भ ऋषि दयानन्द अरबों वर्ष पूर्व मानते हैं। ईश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ मे दिए, ऐसा विचार है। उसे लगभग अनन्त काल में वेदों का कोई निश्चित अर्थ न हो पाया। अब क्या आशा है।

आर्य समाज का प्रारम्भ तो 100 वर्ष से कुछ अधिक समय पहले हुआ। ऋषिवर ने अपनी यौगिक पद्धति के आधार पर सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा लगभग पूर्ण ऋग्वेद का अनुवाद प्रस्तुत किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने ऋषिवर कृत भाषा को सम्मिलित कर अवशिष्ट भाग का कुछ विद्वानों द्वारा किया गया भाष्य प्रकाशित किया। पर भाष्य कार्य तो चल ही रहा है। अभी तक तो किसी भाष्य को प्रमाणिक मान कर सब आर्य विद्वान स्वीकार लें—ऐसा नही हो पाया। जो भाग ऋषिवर द्वारा पूर्ण किया जा चुका है उस पर भी नए-नए भाष्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इस परम्परा का अन्त कहां होगा कुछ पता नही।

कुछ उदाहरण लीजिए—

अथर्व वेद के उदाहरण— (क) आर्य जगत 25 जून 1989 के अंक में मान्य श्री विश्वनाथ जी।

वेद—मार्तण्ड-वेद वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता का एक लेख है इसमे—

यजु—40/17

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्

यो ऽसां वादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् ओ३म् खं ब्रह्म।

इस मन्त्र का अर्थ दिया है।—

सुवर्णमय पात्र द्वारा सत्य का मुख अर्थात् स्वरूप ढका हुआ है। (क्रमशः)

श्री कस्तूरचन्द जी का देहावसान

आर्य समाज फरीदकोट के प्रधान श्री कस्तूर चन्द जी का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 29-6-90 को देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार श्री प० आर्यभूषण जी 'पिप्पल' ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया।

—देवराज

श्री पं० रामनाथ सि० वि० द्वारा वेद प्रचार

सभा के भू० पू० उपदेशक श्री पं० रामनाथ जी सि० वि० मोरिण्डा ने लिखा है कि उन्होंने आषाढ मास मे, आर्य समाज सैं० 27, चण्डीगढ, कालका, खन्ना, माजरी, स्यालबा, समराला, जवाहर नगर लुधियाना, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, लुधियाना, और माडल टाऊन लुधियाना में वेद प्रचार किया।

चतुर्वेद गंगा लहरी की समालोचना

पण्डित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार के घर मैं प्राय: जाता रहता हूं। चतुर्वेद गंगा लहरी जब छप रही थी तो इसके Proof किस कठिनाई से पण्डित जी 92 वर्ष की आयु मे नत्थी करते थे, यह देख कर अचम्भा होता था। खैर जब पुस्तक छप गई तो मैंने इस की एक प्रति खरीदी और दोबारा इसका अध्ययन किया।

मुझे पुस्तक बहुत उपयोगी लगी। इसकी भाषा इतनी सरल लगी कि सारी पुस्तक पढ़ जाने में बोझल प्रतीत नहीं हुई।

मैंने चक्रवती श्री राजगोपालाचार्य जी की भी उपनिषद्, गीता व वेदान्त पर लघु पुस्तकें पढ़ी हैं। राजा जी का सदैव प्रयास रहा कि अपने युवकों को सरल भाषा में अपने साहित्य से परिचित करवाना चाहिये। उनको पाण्डित्यपूर्ण लेख से बोर नहीं करना चाहिये। उनका यह भी कथन है कि जो निधि हमें प्राप्त हुई है, अगर अंग्रेजों को प्राप्त होती तो उन्हें साम्राज्य स्थापित करने की लालसा न होती।

पण्डित जी को कुछ वर्ष हुए राजा जी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। मेरा तो यह मानना है कि राजा जी का आशीर्वाद है जिसने पण्डित जी को इस प्रकार का ग्रन्थ तैयार करने में प्रवृत्त किया।

मैंने इस ग्रन्थ की 15 प्रतियां खरीद की हैं। यद्यपि मैं 16 वर्ष से सेवानिवृत्त हूं, फिर भी मैंने इनकी बहुत बड़ी संख्या अपने परिवारजनों को उपहार में भेंट की है। मेरा यह मानना है कि पुस्तक इतनी बढ़िया है कि यह एक छोटे से बच्चे से लेकर बड़ों तक सबके लिए उपयोगी है। यह पुस्तक हरेक आर्य परिवार में अवश्य होनी चाहिये।

—योगेन्द्र नाथ अवस्थी,
11 भण्डारी मैनशन्स रोड, करोलबाग,
नई दिल्ली-5

आर्य समाजें सावधान रहें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्तरंग सभा दिनांक 8-7-90 में निम्न प्रस्ताव पारित किया गया जो आर्य समाजों की सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्ताव—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा किसी भी व्यक्ति के द्वारा चाहे वह आर्य समाजी हो अथवा गैर आर्य समाजी, आर्य समाज के नाम पर किसी भी नए संगठन की स्थापना करने का विरोध करती है। इस सम्बन्ध में यह तर्क प्रस्तुत करना कि सार्वदेशिक सभा इस समय देश के समक्ष उपस्थित खतरों का सामना करने में निरन्तर असमर्थ रही है और इसके लिए एक नये संगठन की आवश्यकता है, एक दम निरर्थक और आधारहीन है। इस प्रकार के प्रयास आर्य समाज को खण्डित करने की एक कुटिल चाल मात्र ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब आर्य समाजियों को चेतावनी देती है कि वे इस प्रकार की चालों से सावधान रहें और किसी भी प्रयत्न आरम्भ में ही कुचल दें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री—महामन्त्री

शिरोमणि सभा फिरोजपुर का सत्संग

15-7-90 को आर्य समाज मन्दिर जी० टी० रोड, फिरोजपुर छावनी में शिरोमणि सभा का मासिक सत्संग आयोजित किया गया। देव यज्ञ के पश्चात् गायत्री गान व ब्रह्मयज्ञ किया गया। कु० योगेश, कु० रिंकू के भजनों से सुसज्जित इस कार्यक्रम में श्री द्वारकानाथ वर्मा जी ने पराज्ञान के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा के प्रधान सत्यपाल शर्मा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु चलविजयोपहार शील्ड वर्ष 1989-90 हेतु आर्य समाज जी० टी० रोड, फिरोजपुर छावनी को प्रदान की। श्री द्वारकानाथ वर्मा जी ने इसे समाज की ओर से प्रस्तुत किया। श्री देवराज दत्त सभा मन्त्री ने आये हुए सभी सज्जनों, देवियों का धन्यवाद किया।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 22, भाद्रपद 11 सम्वत् 2047 तदनुसार 23/26 अगस्त 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)
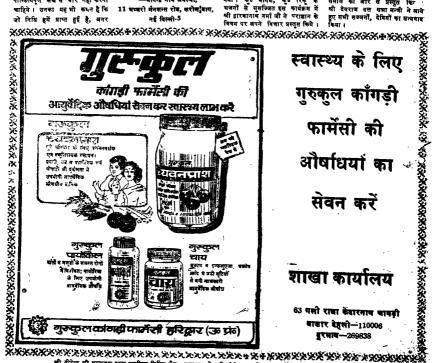
ऋग्वेद का पुरुष सूक्त—

परम पुरुष और उसकी पुरी

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥1॥

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥2॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥3॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥4॥

तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पुरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥5॥

1. 'परम पुरुष परमात्मा सहस्र (असंख्य) सिरों वाला, सहस्र आंखों वाला, सहस्र पैरों वाला है। वह सब ओर से भूमि को भरकर, इस दस अंगों वाली भूमि से परे भी विद्यमान है।'

2. 'वह सब-जगत जो था, पर अब नहीं, जो अब नहीं, परन्तु भविष्य में होगा, और जो अब अन्न द्वारा बढ़ता है, उस परम पुरुष की रचना है। वही अविनाशी मोक्ष सुख का अधिष्ठाता है।'

3. 'इस परम पुरुष की इतनी महिमा है—दृश्य ब्रह्माण्ड इसके महत्त्व का सूचक है। परमात्मा इस दृश्य ब्रह्माण्ड से बहुत बड़ा है। पृथ्वी आदि भूत, सारा चराचर जगत, उसका एक अंश है। इसके तीन अंश या भाग अपने अमृतमय स्वरूप में हैं'

4. तीन अंशों वाला परम पुरुष (ब्रह्माण्ड से) ऊपर उदय होता है। इस पुरुष का एक भाग जगत रूप में बार बार उत्पन्न होता है। इस उत्पन्न हुए जगत के जड़ और चेतन, दोनों प्रकार के पदार्थों को यह पुरुष सब ओर से प्राप्त होके, विशेष रूप से व्याप्त करता है।

5. 'परम पुरुष से विराट, ब्रह्माण्ड, उत्पन्न हुआ। उस विराट संसार से पुरुष ऊंचा अधिष्ठाता है। पुरुष पहले से है (अनादि है), जगत से अलग है। वह प्रथम भूमि आदि की रचना करता है, और पीछे उसे धारण करता है।'

इन पांच मन्त्रों में निम्नलिखित बातों पर संक्षेप से कहा गया है—

1. परम पुरुष का चिन्तन सर्वथा सफल है। वह सब कुछ देखता है, और हर जगह पहुंचा हुआ है। वह सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है।

2. वह सारे विश्व में है, और इससे परे भी है।

3. वह इस की रचना करता है, और उस पर शासन भी करता है। वह विश्व से अलग और विश्व उससे अलग है।

4. संसार की रचना एक निरन्तर क्रिया है। जो संसार अब विकास में है, उससे पूर्व संसार हुए, और उसके पीछे भी होंगे। ये सारे परम पुरुष के आधिपत्य में हैं। मनुष्यों को उनके परम पुरुषार्थ का फल—मोक्ष सुख—देने वाला भी वही है।

5. जगत की रचना और उसका शासन उसकी महिमा के सूचक हैं, परन्तु यह तो उसकी महिमा का छोटा सा भाग है। उसकी महिमा का अधिकांश तो इससे ऊपर है।

यह सारी बातें बहुत महत्त्व की हैं।

सारे जीवित पदार्थ जीवन के लिए अपने इर्द गिर्द से अन्न ग्रहण करते हैं, और उसे अपने शरीर का अंग बना लेते हैं। वृक्ष एक स्थान पर गड़े होते हैं, और जो कुछ उनकी जड़ों और पत्तों की पहुंच में होता है, उससे अपनी खुराक ले लेते हैं। पशु-पक्षी इधर उधर जा सकते हैं, और अपनी पहुंच के देश को कुछ विस्तृत कर लेते हैं। यदि वे देख सकें, तो उन्हें अपनी खुराक प्राप्त करने और आक्रमणों तथा खतरों से बचने से बहुत सहायता मिलती है। मनुष्य पैरों और और आंखों का प्रयोग करता है, परन्तु जीवन के संग्राम में उसका सबसे बड़ा शस्त्र या कारण उसका मस्तिष्क है। पैरों, आंखों और मस्तिष्क के साथ भी मनुष्य की शक्ति बहुत तुच्छ है। इसकी अपेक्षा परम पुरुष की शक्ति असीम है। उसके असंख्यात पैर हैं, असंख्यात चक्षु हैं, असंख्यात सिर हैं। यहां कोई स्थान नहीं, वहां कोई स्थान नहीं, जहां वह पहुंचा नहीं। कोई वस्तु नहीं जिसे वह देखता नहीं। कोई विषय नहीं, जो उसकी समझ के बाहर है। परमात्मा की अनन्त शक्ति, उसके अनन्त ज्ञान, और अपने बल तथा ज्ञान की क्षीणता को अनुभव कर लेना धर्मभाव की नींव है।

परम पुरुष और जगत के सम्बन्ध की बाबत दो बातें विशेषकर विचारने की हैं—

(1) ब्रह्म और ब्रह्मांड दो भिन्न पदार्थ हैं, या एक ही हैं ?

(2) यदि भिन्न हैं, तो ब्रह्म ब्रह्मांड में है, या इसके बाहर है ?

पहले प्रश्न की बाबत नवीन वेदान्ती करते हैं कि ब्रह्म और ब्रह्माण्ड एक ही हैं। यह अद्वैतवाद 'पुरुष सूक्त' की शिक्षा के विरुद्ध है। इन मन्त्रों में कहा गया है कि पुरुष पुरी से जुदा है।

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में कुछ लोग कहते हैं कि संसार में जो कुछ हो रहा है, वह ईश्वर की ही लीला है, और वहीं उसकी समस्त क्रिया है। दूसरी ओर कुछ लोग ईश्वर को किसी आसमान पर, पृथ्वी से दूर, बैठा देते हैं। वेद की शिक्षा के अनुसार ये दोनों विचार असत्य हैं। परमात्मा सारे विश्व में समाया हुआ है। जो कुछ होता है, उसकी दी हुई शक्ति से ही होता है, परन्तु यह सीमित विश्व उसे सीमित नहीं बना देता। वह इससे परे भी है।

संसार की बनावट की बाबत एक और मर्म की बात कही गई है। यह प्रवाह रूप से अनादि और अनन्त है। वर्तमान जगत से पहले अनेक जगत हुए, और इसके बाद भी अनेक जगत होंगे। सृष्टि और प्रलय एक दूसरे के पीछे आते ही रहते हैं।

(वेदोपदेश से)

'शब्द वेद प्रमाण की प्रामाणिकता'

ले०—श्री प० सत्यदेव जी विद्यालंकार 145/4 सैन्ट्रल टाऊन जालन्धर

(गताक से आगे)

आर्य जगत 26-3-1189 मे आचार्य वेद भूषण जी :-

मन्त्र :

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ

मा यज्ञं हिं सिष्ट मा यज्ञपतिं...
यजु 5/3/

(नः समनसौ भवतम्) यज्ञ और यज्ञपति एक रूप हो जाए अर्थात यज्ञपति का जीवन यज्ञमय हो जाए। सचेतसौ। हम दोनों जागरूक हो जाएं - चेत जाए - ज्ञानयुक्त हो जाए (अरेपसौ) यज्ञ और यज्ञपति एकाकार हो जाए (समनसौ) एक मन दो शरीर वाली समानता आ जाए सगतिकरण हो जाए। (यज्ञ यज्ञपति मा हिंसिष्टम्) दोनों कभी मारे न जाए हिंसक न हों अहिंसक रहे। व्रती रहें। (अद्य नः जातवेदसौ शिवौ भवतम्) ज्ञान पूर्वक जिस ज्ञानग्नि को हमने धारण किया है वह यज्ञ विधान हमारा कल्याण करे।

ऋषिवर का भाष्य :-

जो (अरेपसौ) प्राकृत मनुष्यों के भाषण रूपी वचन से रहित (समनसौ) तुल्य विज्ञान युक्त (सचेतसौ) तुल्य ज्ञान ज्ञापन युक्त (जातवेदसौ) वेद और उपविद्याओ को सिद्ध किए हुए पढ़ने पढ़ाने वाले विद्वान् (नः) हम लोगों के लिए उपदेश करने वाले (भवतम्) होवें। जो (यज्ञम्) पढ़ने-पढ़ाने रूप यज्ञ वा (यज्ञपतिम्) विद्या-प्रद यज्ञ के पालन करने वाले यजमान को (मा हिंसिष्टम्) न पीडित करे। वे (अद्य) आज (नः) हम लोगों के लिए (शिवौ) मगल करने वाले (भवतम्) होवे।

ऊपर उद्धृत अष्टाज्याहुति के 4 मन्त्रों के अर्थों की तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य वेद भूषण जी वेद मन्त्रों का ऋषि दयानन्द से भिन्न अर्थ कर रहे हैं। यह उदाहरण माना है। भिन्न अर्थ करने पर मन्त्र के आधार पर की गई स्थापना भी भिन्न होगी।

इस तथ्य के सम्बन्ध में एक और उदाहरण देखिए। आर्य जगत् 22 अक्तुबर 1989 में आचार्य वेद भूषण जी ने सन्ध्या के मनसा परिक्रमा प्रकरण में दिए छः मन्त्रों में भी अपनी इच्छा से कुछ शब्दों के अर्थ किए हैं। ये मन्त्र अथर्व 3/27 के हैं—

प्राची दिगग्नि : पूर्व दिशा का अधिपति अग्नि तत्व।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपति : दक्षिण दिशा का अधिपति इन्द्र (वायु) तत्व।

उदीची दिक् सोमोऽधिपति : उत्तर दिशा का सोम (चन्द्रमा) अधिपति।

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपति : नीचे की दिशा का विष्णु (पृथिवी) अधिपति।

ऊर्ध्वादिग् बृहस्पतिरधिपति : ऊपर की दिशा का अधिपति बृहस्पति (आकाश) है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित भाष्य—श्री क्षेमकरण त्रिवेदी द्वारा कृत में इन शब्दों के अर्थ निम्न है :

अग्नि : अग्नि विद्या में निपुण सेनापति।

इन्द्र : बडे एश्वर्य वाला अधिकारी सेनापति।

वरुण : शत्रुओं को रोकने वाला वरुण पद वाला सेनापति।

सोम : प्रेरक व उत्तेजक सोम पद वाला सेनापति।

विष्णु : कामों मे व्यापक सद्वैद्य।

वृहस्पति : बडे-बड़े शूरों का स्वामी वृहस्पति पद वाला सेनापति।

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी के अथर्ववेद भाष्य मे—

अग्नि : तेजस्वी। इन्द्र-शत्रु विदारक शूर। वरुण-श्रेष्ठ अधिपति।

सोम : शान्त अधिपति। विष्णु-प्रवेशकर्ता अधिपति। बृहस्पति-आत्म ज्ञानी स्वामी।

यहां मूल प्रश्न यह है कि आचार्य वेद भूषण जी ने मनसा परिक्रमा के अग्नि आदि शब्दों के आधार पर जो पञ्चतत्व के सम्बन्ध मे स्थापना की है उसका अन्य विद्वानों द्वारा किए गए भिन्न अर्थों के कारण क्या मूल्य क्या प्रामाणिकता रह जाएगी।

आचार्य वेद भूषणजी अपनी स्थापनाओं के सम्बन्ध मे कुछ और भी कहते हैं। आर्य जगत 29/1/89 के अक में आचार्य जी का कथन है—

शास्त्र आठ प्रकार के प्रमाणों को स्वीकार करते हैं। इनमें से चौथा शब्द प्रमाण है। इसके अन्तर्गत वेद भी आते हैं। महर्षि जन वेद को स्वतः प्रमाण मानते हैं।

हमें यह पढ़ कर आश्चर्य हुआ कि यज्ञ का धूम 200 फुट से ऊपर नहीं जा सकता। इतनी ऊंची तो पतंग या गुब्बारा भी चला जाता है। मिट्टी की सूक्ष्म धूल भी आकाश में इस से ऊपर तक चली जाती है। यज्ञ से निकलने वाली वाष्प जो गाय के घृत से अत्यन्त सूक्ष्म हो जाती है इन वैज्ञानिकों की पकड़ से दूर है। यह वाष्प सूर्य लोक तक पहुंच कर वहां पर भी अपना प्रभाव दिखलाती है। यदि वैज्ञानिक अपने सूक्ष्म यन्त्रों से आंकलन नहीं कर पाते तो इससे वेद मन्त्रों से प्रतिपादित एक सत्य से इन्कार करना वैसा ही है जैसे बिल्ली को देख कर कबूतर आंख बन्द कर लेता है।

आर्य जगत् 15/1/89 के अंक में आचार्य वेद भूषण जी कहते हैं—

"गाय का घृत समस्त रसों से सूक्ष्म रस है। गाय के घी में और तत्व की भी प्रधानता है। जब हम इस घृत को अग्नि में डालते हैं तब वह अग्नि के संयोग से सूक्ष्मतम हो जाता है और बहुत शीघ्र ही भूलोक से ऊपर उठ कर अन्तरिक्ष से होता हुआ द्युलोक में चला जाता है। वहां जा कर वह सूर्य की रश्मियों में उत्पन्न प्रदूषण को नष्ट करता है। इनसे उस घृताहुति का विशेष प्रभाव भूलोक पर नहीं पड़ पाता।"

सामग्री युक्त घृताहुति अन्तरिक्ष लोक में वरुण देव को अर्थात् वृष्टि जल को और वायु को पवित्र करती है। अन्तरिक्ष की शुद्धि से भूलोक भी पवित्र हो जाता है।

आचार्य विद्या भूषण जी के उल्लेख को समाप्त करने से पहले मैं दो निवेदन करना चाहता हूं। एक तो वेदार्थ के विषय में दूसरा यज्ञ प्रक्रिया के सम्बन्ध में।

पहला निवेदन तो यह है कि यदि प्रत्येक विद्वान वेद मन्त्रों का अपना अलग अर्थ कर उस के आधार पर अपनी कोई स्थापना करना चाहता है तो न उस अर्थ की प्रामाणिकता है और न उस अर्थ के आधार पर की गई स्थापना की कोई प्रामाणिकता है। वेद के आधार पर कोई स्थापना करने, किसी सिद्धान्त को सिद्ध करने या किसी प्रक्रिया को चलाने से पहले वेद के मन्त्र का सर्वमान्य प्रामाणिक अर्थ उपस्थित करना आवश्यक है—अनिवार्य है। नहीं तो कुछ सिद्ध न होगा।

यज्ञ प्रक्रिया में सम्बन्ध में मेरा निवेदन है यज्ञ का लगभग सारा आधिभौतिक है—आध्यात्मिक नहीं, हवन कुण्ड, अग्नि, घी, समिधा, सामग्री में सब वस्तुएं भौतिक हैं। इस के प्रयोग और फलाफल के विषय में वर्तमान ज्ञान-विज्ञान से परख करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह कहना कि यज्ञ में घी गोघृत की आहुति द्युलोक तक पहुंचेगी और सामग्री की आहुति अन्तरिक्ष लोक हो जाएगी। इस बात की वैज्ञानिक जांच आवश्यक है। आज यदि शब्द और प्रकाश की गति को मापा जा सकता है तो यज्ञ धूम जैसी वस्तु की गति और पहुंच को नहीं नापा जा सकता यह बेतुकी बात है। इन पार्थिव पदार्थों को अग्नि में डालने से वातावरण में या मानव शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है इन सब की जांच आवश्यक है। केवल श्रद्धा से इस विषय के सत्य पर नहीं पहुंचा जा सकता। घृत तो अनेक हैं—भैंस, गाय, बकरी इन सब के जले घृत के धूम की पहुंच कहां तक है यह जांचा जा सकता है।

विषय विस्तृत है संक्षिप्त उल्लेख यहां कर रहा हूं।

आर्य जगत् के 25-10-89 के अंक में श्री रमेशमुनि वानप्रस्थ आर्य समाज जयपुर का लेख "वृष्टि यज्ञ की सही पद्धति" प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने यज्ञ सम्बन्धी न जाने कितनी शर्तें बताई हैं। प्रत्येक आहुति की 3-3 मिन्ट बाद देना, आहुति की 6 माशे से 1 छटांक तक हो, विनियोग मात्रा में वेद का नाम-अध्याय-मन्त्र की संख्या ऋषि तथा देवता के साथ मन्त्र का उच्चारण करना, कामना पूर्ति के लिए आहुति देते समय 2 मिन्ट ध्यान लगा कर आहुति देना आदि। मैं समझता हूं यह सब उन की व्यक्तिगत कल्पनाएं हैं। इन का आधार ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में कहीं नहीं।

श्री रमेशमुनि वानप्रस्थ जी ने एक विशेष मन्त्र भी दिया है। अयो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गरा अपां वरुणाव नीचीरपः सृज। वदन्तु पृश्नि बाहवो मण्डूका इरिणा नु। अथर्व 4-5-12

श्री रमेश मुनि जी के अनुसार—

"इस मन्त्र का देवता वरुण है उसे असुर की पदवी दी गई है। चारों वेदो में कुल 476 देवता हैं। इन देवताओं में केवल वरुण को ही असुर ही संज्ञा दी गई है और किसी को नहीं क्योंकि वरुणा ही ऐसे कार्य करता है जो आसुरी शक्ति से ही सम्पादित हो सकते हैं।

आगे उन्होंने मेघनाथ का उदाहरण दिया है जिस ने आसुरी शक्ति से विमानों के द्वारा राम की सेना पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा की थी। ऐसे ही घटोत्कच ने आसुरी बल से आकाश मार्ग से कौरवों पर अस्त्र गिराए थे।

उन का कहना है इस प्रकार वरुण देवता आसुरी शक्ति से हजारों किलोमीटर दूर से जल ला कर बरसाता है यह आसुरी कृत्य है। इस मन्त्र में श्री रमेश मुनि आसुरी शक्ति से युक्त वरुण देवता की कल्पना करते हैं।

इस ही मन्त्र का अर्थ अपने अथर्व भाष्य में श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर जी ने स्पष्ट करते हुए "अपो निषिञ्चन्नसुरः—जल की वृष्टि करने वाला मेघ ऐसा किया है। वरुणः का अर्थ श्रेष्ठ जल को धारण करने वाला मेघ ऐसा किया है। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

जात-पात की राजनीति

राजनीतिज्ञ कई बार अपनी जड़ें स्वयं ही काटने लगते हैं। सत्ता का नशा कई बार मनुष्य को पागल बना देता है। वह यह नहीं सोचता कि वह जो कुछ कर रहा है उसका परिणाम क्या होगा। सत्ता और असीमित अधिकारों के नशा में वह कई ऐसे पग उठा लेता है जो इसे बाद में केवल वापस ही नहीं लेने पड़ते अपितु इनके कारण वह अपनी हड्डी-पसली भी तुड़वा कर बैठ जाता है।

कुछ यही स्थिति हमारी वर्तमान सरकार की है। जब हम स्वतन्त्र हुए सबसे पहला प्रश्न जो हमारी सरकार के सम्मुख आया वह यह था कि हमारे देश में जो लोग पिछड़े हैं चाहे आर्थिक रूप में और चाहे सामाजिक रूप में इनका क्या किया जाए। हमारे नेता जिन्होंने देश का संविधान बनाया था बहुत दूरदर्शी थे। सभी परिस्थितियों का जायजा लेने के बाद उन्होंने अपने देश के संविधान में ही यह लिख दिया कि सबके बराबर के अधिकार होंगे। किसी भी व्यक्ति के लिए उन्नति के द्वारा बन्द न किए जाएंगे, क्योंकि इसका जन्म किसी विशेष वर्ग या समुदाय में हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता के आधार पर ऊंचे से ऊंचे पद तक पहुंच सकता है। हमारा यह संविधान बनाने वाले डॉक्टर अम्बेदकर थे जिनसे अधिक पिछड़े वर्ग का शुभ-चिन्तक और कोई न हो सकता था। यदि वह देखते कि देश के पिछड़े वर्ग के लिए संविधान में कुछ और भी लिखने की आवश्यकता है तो अवश्य लिख देते। आज भी यही समझा जाता है कि डॉक्टर अम्बेदकर जो संविधान बना गए हैं वह हमारे देश का सर्वोत्तम संविधान है। इसमें डॉक्टर अम्बेदकर ने देश के पिछड़े वर्ग के हितों की रक्षा के लिए सभी प्रबन्ध कर दिए थे।

हम यह भी जानते हैं कि छूआछूत की बीमारी हमारे देश में बहुत पुरानी है। सैंकड़ों वर्ष पुरानी है। मैं इसे हजारों वर्ष पुरानी इसलिए नहीं कहता कि हमने देख लिया है कि महाभारत काल के महाराज धृतराष्ट्र के प्रधानमन्त्री विदुर थे, वह दासी पुत्र थे यानि एक नौकरायिन के बेटे थे। नौकर और नौकरानियां आज की भांति उस समय भी पिछड़े वर्ग मे से ही हुआ करते थे। परन्तु अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता से वह बड़े से बड़ा पद प्राप्त कर सकते थे। विदुर धृतराष्ट्र के प्रधानमन्त्री थे। वह अपने महाराज को जो परामर्श देते थे ठीक ही देते थे। यदि धृतराष्ट्र उनके परामर्श पर चलता तो महाभारत का युद्ध न होता और उसके कारण से जो तबाही हुई थी यह देश उससे भी बच जाता। यह भी वास्तविकता है कि महाभारत के बाद ही हमारे देश का पतन शुरू हो गया था। इतिहास को झुठलाया नहीं जा सकता और इतिहास पुकार-पुकार कर कह रहा है कि इस देश में जन्म के आधार पर कभी भी किसी को अछूत स्वीकार न किया गया था। जहां महाभारत में विदुर के सम्मान का उल्लेख आता है वहां हम रामायण मे यह भी पढ़ते हैं कि भगवान् राम ने भीलनी की कुटिया में जाकर उसके बेर खाये थे। वह कह सकते थे कि वह तो एक पिछड़े वर्ग की है। एक क्षत्रिय और वह भी राजकुमार उसकी कुटिया में कैसे जा सकता है और उसके हाथ से बेर लेकर कैसे खा सकता है।

निष्कर्ष यह कि हमारा इतिहास असंख्य ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जो यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन समय में हमारे देश में जन्म के आधार पर किसी को अछूत न माना जाता था। यह ही कारण था कि वर्तमान काल के इस देश के दो महापुरुषों ने छूआछूत को समाप्त करने का एक व्यापक आन्दोलन चलाया था। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले यह कहा था कि कौन ब्राह्मण है, कौन क्षत्रिय या कोई वैश्य या शूद्र है। इसका निर्णय उसके जन्म के आधार पर नहीं अपितु उसके कर्म के आधार पर ही हो सकता है। एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर भी एक व्यक्ति शूद्र कहला सकता है, यदि उसकी कार्यपद्धति ब्राह्मणों जैसी नहीं, और एक शूद्र परिवार में उत्पन्न होकर एक व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है यदि उसकी कार्य-पद्धति ब्राह्मणों जैसी हो। शूद्र किसे कहते हैं इसकी व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा था कि शूद्र वह है जो अनपढ़ है, नैतिकता से रहित है, जिसे कोई छूत का रोग है यानि जिसने अपनी कार्यपद्धति से ऐसी परि-स्थितियां उत्पन्न कर दी हों कि उसके साथ अपना सम्बन्ध रखना किसी व्यक्ति या किसी समाज के लिए हानिप्रद हो। निष्कर्ष यह कि महर्षि दयानन्द और उनके बाद आर्य समाज ने छूआछूत को कभी भी जन्म के आधार पर स्वीकार न किया था। यह प्रायः उसी का परिणाम था कि महर्षि दयानन्द के लगभग एक सौ वर्ष बाद इस देश के एक और महापुरुष ने छूआछूत के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया था। जिन्हें अछूत कहा जाता है गांधी जी ने उन्हें हरिजन का नाम दिया। महर्षि दयानन्द छूआछूत के विरुद्ध जो आन्दोलन चलाते रहे उसका आधार केवल धर्म था उनके समय में राजनीति हमारे धर्म पर प्रभावी न होने लगी थी। उस समय अभी स्वतन्त्रता के आन्दोलन ने भी वह जोर न पकड़ा था, जो इसने गांधी जी के समय में पकड़ा था। परन्तु महर्षि दयानन्द ने फिर भी उस समय कह दिया था कि विदेशी राज चाहे कितना अच्छा क्यों न हो वह स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता। इस दृष्टि से स्वराज्य का नारा सबसे पहले लगाने वाले महर्षि दयानन्द ही थे। चूंकि वह देश को स्वतन्त्र कराना चाहते थे इसलिए उन्होंने ही सबसे पहले यह भी कहा था कि जन्म के आधार पर किसी को अछूत नहीं कहा जा सकता। जो कुछ महर्षि दयानन्द ने एक सौ वर्ष पहले कहा था वह फिर गांधी जी ने कहा कि यदि इस देश को बचाना है तो हिन्दुओं में छूआछूत समाप्त होनी चाहिए। यह भी शायद हमारे इन दो महा-पुरुषों की दूरदर्शिता का ही परिणाम था कि जब हमारे देश का संविधान बना उसमें भी यह लिखा गया कि किसी व्यक्ति की उन्नति के द्वार केवल इसलिए बन्द नहीं किए जा सकते कि उसका जन्म किसी विशेष जाति मे हुआ है।

(क्रमशः)

—वीरेन्द्र

आतंकवाद बढ़ रहा है

पंजाब में गत कई वर्षों से आतंकवाद फैला हुआ है और यहां आतंकवाद अपनी इतनी गहरी जड़ें जमा चुका है कि अब उसे उखाड़ फेंकना कठिन है। जब यह एक नन्हा सा पौधा था तो कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने इसे बढ़ाने के लिए पानी दिया, खाद दी और इसकी बाड़ बन कर रक्षा की। उस समय यदि सरकार चाहती तो इसे उखाड़ कर फेंका जा सकता था, परन्तु ऐसा नहीं किया गया। अब इसने एक वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। इसका तना बड़ा मजबूत हो गया है। टहनियां, शाखाएं चारों ओर फैल गई हैं। जड़ें बहुत गहरी जमीन में धस गई हैं। अब यदि कुल्हाड़ा लेकर इसे कोई काटना भी चाहे तब भी यह समाप्त नहीं हो सकता, कटने के बाद फिर उग पड़ेगा। पंजाब के साथ-साथ अब यह जम्मू-काश्मीर मे भी पूर्णतः फैल गया है। वहां भी स्थिति ऐसी ही हो गई है जैसी पंजाब में है। वहां की स्थिति भी सुलझने की जगह और अधिक उलझती जा रही है।

भारत के प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह जी ने 19-8-90 को पंजाब के बार्डर के इलाके का इसी उद्देश्य से दौरा किया। यहां उन्होंने एक जन सभा को सम्बोधित करते हुए पंजाब के एक लाख युवकों को रोजगार आदि दिलवाने की घोषणा भी की। ताकि जो युवक बेरोजगारी के कारण उग्रवादियों के साथ चले जाते हैं उन्हें उग्रवाद की ओर जाने से रोका जा सके। उन्होंने यह भी घोषणा की कि वह मानसून अधिवेशन के पश्चात् इसी उद्देश्य से पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रों की एक सप्ताह की पद यात्रा भी करेंगे।

क्या यह सब करने पर पंजाब मे शान्ति स्थापित हो जाएगी? यह कहना कठिन है। बेरोजगारी कहां नहीं है। हरियाणा मे, उत्तर प्रदेश में, राजस्थान में और दूसरे प्रदेशों में भी बहुत से युवक बेरोजगार हैं। इसके लिए केवल पंजाब में ही नहीं सारे देश में बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि पंजाब की समस्या तो इसके बाद भी समस्या ही बनी रहे और दूसरे प्रदेशों में नई समस्याएं खड़ी हो जाएं।

आतंकवाद निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। जिसका कारण है कि आज तक इसका सही इलाज नहीं हुआ। आज बड़े बड़े राजनीतिज्ञ अपने-अपने ढंग से इसे समाप्त करने के लिए अपने-अपने सुझाव दे रहे हैं। परन्तु यह समस्या और उलझती जा रही है और चारों ओर फैलती जा रही है। इसका मुख्य हल है उग्रवादियों को बाहर से हथियार और सहायता को रोकना और लूटपाट पर अंकुश लगाना है। जब तक उग्रवादियों को बाहर से हथियार और लूटपाट से धन मिलता रहेगा तब तक यह समाप्त नहीं होगा। युवकों को रोजगार देने के साथ-साथ इस ओर भी तुरन्त ध्यान देना चाहिए।

—सह-सम्पादक

भारतीय जनता पार्टी का भविष्य [2]

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मैंने पिछले अंक में लिखा था कि पार्टियां तो दो ही हैं। कांग्रेस तथा भारतीय जनता पार्टी। जनता दल एक चू-चू का मुरब्बा है। यदि देवीलाल का बस चल गया तो वह जनता दल की ईंट से ईंट बजाकर ही दम लेंगे। वह कई बार कहा करते हैं कि जनता दल को बनाने वाले वह ही हैं। उन्होंने इसे बनाया था इसलिए कि वह इसके माध्यम से प्रधानमन्त्री बन सकें। अब उन्होंने देखा कि यह सम्भव नहीं तो वह अब इसे तोड़ने पर तुल गए हैं। इस समय जनता दल में वह एक मात्र व्यक्ति है जो हर रोज कोई न कोई नया संकट खड़ा कर देते हैं। उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं कि वह जो कुछ कर रहे हैं उससे उनकी पार्टी को कितनी क्षति पहुंच रही है। आज जनता दल मजाक का विषय बन गया है। इसके मन्त्रियों का आपस में तालमेल नहीं रहा। उस समय तक यदि जनता दल की सरकार नहीं टूटी तो इसलिए नहीं कि देवीलाल ने इसे तोड़ने में कोई कमी रहने दी है। बल्कि केवल इसलिए कि भारतीय जनता पार्टी और दोनों कम्युनिस्ट पार्टियां नहीं चाहती कि जनता दल की सरकार अभी टूटे। यदि वह टूट जाए, या तो कांग्रेस सत्ता में आ जाएगी या नए चुनाव होंगे। दोनों के लिए न अभी भाजपा तैयार है न कम्युनिस्ट पार्टियां। इसीलिए जनता दल की सरकार अभी तक चल रही है। चौधरी देवी लाल ने उसे तोड़ने मे कोई कमी उठा नहीं रखी।

इसीलिए मैं कहता हूं कि जनता दल एक चू-चू का मुरब्बा है। इसमें अधिकतर वे लोग हैं जो पहले कांग्रेस मे थे। किसी न किसी कारण उनकी पहले इंदिरा गांधी से नहीं बनी, बाद मे राजीव गांधी से नहीं बनी और उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी। सत्ता का चस्का भी बहुत बुरा होता है। जो एक बार मन्त्री बन जाए और फिर हट जाए तो उसकी नींद हराम हो जाती है और वह तब तक चैन की नींद नहीं सो सकता जब तक वह मन्त्री न बन जाए। जनता दल में अधिकतर वही लोग हैं जो मन्त्री बनने के लिए उसमें शामिल हुए हैं। जो एक मन्त्री नहीं बन सका वह उन्हें दम नहीं लेने देता वह चन्द्रशेखर है। देवीलाल इस लिए दम नहीं लेने देते कि वह प्रधानमन्त्री नहीं बन सके और चन्द्रशेखर इस लिए आराम नहीं लेने देते कि वह मन्त्री नहीं बने। ये दोनों जनता दल और उसकी सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी है। यह निश्चय ही ऐसे हालात पैदा करेंगे कि वर्तमान सरकार अपनी कार्य विधि पूरी न कर सके।

जनता दल के बाद दो ही पार्टियां रह जाती है जो देर सवेर केन्द्र में सत्ता में आ सकती है कांग्रेस इस समय चार राज्यों मे सत्ता मे है। भारतीय जनता पार्टी तीन राज्यों में। इन दोनों मे भी एक अन्तर है जिसे समझने की आवश्यकता है। कांग्रेस की स्थिति उस परिवार जैसी है जिसके बुजुर्ग अपने परिश्रम और योग्यता से बहुत कुछ कमा कर अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं। बच्चे यदि बुद्धिमान और दूरदर्शी हो तो वह अपने बुजुर्गों की छोड़ी हुई सम्पत्ति को दोगुणी तिगुणी कर देते हैं। यदि बच्चे नालायक हों तो वह धीरे-धीरे कोष खाली करते जाते हैं। फिर वह समय आता है जब वह पूर्णत: खाली हो जाता है। यही स्थिति आज कांग्रेस की है वह आज जो कुछ भी है बहुत कुछ उन बुजुर्गों के कारण, जिन्होंने इसके लिए बलिदान दिया था और अपनी योग्यता तथा विवेक से इसे वहां पहुंचा दिया कि उन्होंने इसके माध्यम से देश को स्वतन्त्र करा लिया। यदि आज राजीव गांधी कांग्रेस अध्यक्ष हैं तो इसलिए नहीं कि वह कोई बहुत योग्य और दूरदर्शी नेता हैं। इस दृष्टिकोण से कुछ भी नहीं है। वह कांग्रेस अध्यक्ष हैं तो केवल इस लिए कि वह इंदिरा गांधी के बेटे हैं। केवल नेहरू परिवार यह गर्व कर सकता था कि जो कुछ मोती लाल नेहरू थे, उनके बेटे जवाहरलाल उनसे भी बढ़कर थे, लेकिन जब नेहरू परिवार गांधी परिवार बन गया तो उसका पतन शुरू हो गया और उसके साथ कांग्रेस का भी पतन शुरू हो गया। इंदिरा नेहरू जब इंदिरा गांधी बन गई तो उसके साथ उनका पतन भी शुरू हो गया, कांग्रेस का भी आज कांग्रेस अध्यक्ष नेहरू परिवार का कोई कुल दीपक नहीं है गांधी परिवार का आंख का तारा है। इसमें भी कोई गलतफहमी न रहें कि राजीव गांधी, मोहनदास कर्म चंद गांधी का उत्तराधिकारी नहीं है। राजीव गांधी वास्तव में गांधी नहीं है। यह गैंडी है। गांधी हिन्दू होते है। गैंडी पारसी होते हैं। जब इंदिरा गांधी की शादी फिरोज गांधी के साथ हुई थी कुछ समय के लिए इंदिरा जी अपने नाम के साथ इंदिरा नेहरू गांधी लिखा करती थी। इस पर फिरोज गांधी को आपत्ति हुई। उसने कहा कि यदि मेरे साथ शादी की है तो मेरी बन कर रहो। अब नेहरू का दुमछल्ला साथ क्यों लगाती फिरती हो। इस पर इंदिरा जी ने नेहरू छोड़ दिया और वह इंदिरा गांधी बन गई। फिर यह प्रश्न भी पैदा हुआ कि वह अपने नाम के साथ गांधी लिखे या गैंडी। पंडित जवाहर लाल भी फिरोज के नाम के साथ गैंडी ही लिखा करते थे। लेकिन जब इंदिरा की शादी फिरोज के साथ हो गई और यह प्रश्न पैदा हुआ कि वह अपने नाम के साथ क्या लिखे तो उन्होंने यही फैसला किया कि वह अपनी जाति गांधी ही लिखेंगे इसमें उन्हें लाभ भी था। कई लोगों ने समझा कि उन्होंने महात्मा गांधी के परिवार में शादी कर ली है। पंडित जवाहर लाल को अपने कई मित्रों को बताना पड़ा कि उनकी बेटी ने किसी गांधी से नहीं एक पारसी गैंडी से शादी की है।

सारांश यह कि राजीव गांधी का न गांधी परिवार से कोई सम्बन्ध है न नेहरू परिवार से। और कांग्रेस के लिए उन्होंने कभी कोई विशेष काम नहीं किया। ऐसा व्यक्ति यदि कांग्रेस का प्रधान बन जाए तो वही हाल होना था जो अब हो रहा है।

(क्रमश:)

वीरों की बदौलत

रचयिता—श्री कवि कस्तूर चन्द 'घनसार', कवि कुटीर, पीपाड़ शहर (राज०)

वाह रे ! वीर जवानों प्रहरी
खड़े सीमा पर सीना तान।

(1)

दुर्गम घाटी, गिरि गगन सम, करते निरजन शेर दहाड़।
महा भयानक जंगल झाड़ी, गिरि कन्दर है, ऊंचे पहाड़।।
लेकर प्राण हाथ में घूम, ले कर कन्धे, शस्त्र वीर।
डटे रहे महाकाल सामने, रण बांकुरे है रणधीर।।
टूक टूक हो पड़े रणस्थल, नहीं छोड़े शूरा मैदान।
वाह रे ! वीर जवानों प्रहरी, खड़े सीमा पर सीना तान।।

(2)

जीने की आशा तज रहते, सतर्क सावधान हों एक।
भारत मां का दूध पिया है, छोड़े नहीं धर्म की टेक।।
नही लजावे नाम देश का, परम्परा वीरों का वंश।
रग-रग रोम-रोम में व्यापक, रक्त-भरा तेजोमय अंश।।
वीरो ! सर्व तुम्हारे पीछे, नेता गण, भारत की शान।
वाह रे ! वीर जवानों प्रहरी, खड़े सीमा पर सीना तान।।

(3)

रखने वाला लाल लाज तुम, ललित लाडले आर्य्य सुलाल।
दुश्मन आते जब भारत में, निगल जाते हो बन के काल।।
लाज लगे तो तुम को लाजे, सब की रखते हो तुम लाज।
शोभित है भारत का झण्डा, रखते तुम्हीं अपने का राज।।
ओ ! वीरों पर नायक हो तुम, तेरा है हम को अभिमान।
वाह रे ! वीर जवानों प्रहरी, खड़े सीमा पर सीना तान।।

(4)

धर्म रहे सद्-कर्म रहे निज, धर्म रहे वीरों आधीन।
मान रहे सब आन रहे निज, शान रहे न कोई छीन।।
सम्पत्ति भारत कोष अथाह, शिक्षा कला विज्ञान भण्डार।
रक्षक वीरो तुम्ही एक हो, यश तेरा गाते "घनसार"।।
ईश्वर दे नित तुमको पौरुष, सभी जवान बने बलवान।
वाह रे ! वीर जवानों प्रहरी, खड़े सीमा पर सीना तान।।

पंजाब की आर्य समाजों का विवरण

आर्य समाज-गुरदास पुर (गुरुकुल विभाग)—आर्य समाज के मन्त्री श्री जोगिन्द्र वोहरा एवं प्रधान श्री जितेन्द्र देव नन्दा अपने 23-7-90 के सभा के पत्र के उत्तर में लिखते हैं कि—आर्य समाज में दैनिक एवं साप्ताहिक सत्संग (रविवार) समय प्रात: 7—9 तक गर्मियों की तथा 8 से 10 तक सर्दियों में नियमानुसार बगैर किसी नागा के लगता है। पुरोहित श्री समाज भवन में ही रहते हैं। सदस्यों की संख्या 130 है—आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रतिनिधियों के लिये पत्र लिखा है। आर्य समाज के साथ कोई भी शिक्षण संस्था सम्बन्धित नहीं है।

2. आर्य समाज बलाचौर जिला होशियारपुर के मन्त्री श्री गुरुदेव सिंह धीमान अपने पत्र 20-7 90 में सभा के पत्र के उत्तर में लिखते हैं—समाज प्रधान ठाकुर पृथ्वी चन्द्र ? हैं—समाज दैनिक प्रात: आर्य सन्धया प्रार्थना उपासना होती है परन्तु हवन यज्ञ रविवार की प्रात: 7½ से 8-30 बजे तक बिना नागा होता है। समाज मे कोई पुरोहित न होने के कारण संस्कार आदि कराने का कोई प्रबन्ध नहीं। आर्य समाज के 15 सभा सद हैं जो 5 रु० मासिक शुल्क देते हैं - आर्य समाज मे यज्ञ आदि का खर्च चलता है—सभा को भी शीघ्र दशांश सम्बन्ध जोड़ने के लिए भेज दिया जायेगा। इस आर्य समाज के अधीन कोई शिक्षण संस्था नहीं केवल एक वेद मन्दिर ही है और कुछ नहीं।

3. केन्द्रीय आर्य शिरोमणि सभा फिरोजपुर के मन्त्री श्री देव दत्त जी ने अपने 21-7-90 के पत्र में इच्छा व्यक्त की है वह अपने क्षेत्र में मासिक परिवारिक तथा समाजो मे साप्ताहिक सत्सगों का आयोजन करते हैं इसके लिए हमे ऐसे विद्वानों की आवश्यकता है जो रविवार को प्रात: फिरोजपुर आयें और सांए काल अपने घर चले जायें—इसके लिए वह आने वाले विद्वान को दक्षिणा के साथ मार्ग व्यय भी देंगे।

4. श्री पं० निरंजन देव जी महोपदेशक ने सभा के पत्र के उत्तर में गढ़शंकर से लिखा है कि समाजों सम्बन्धि आप ने जो जानकारी मांगी उस सम्बन्ध में प्रार्थना है कि 30% जानकारी कार्यक्रम से मिल सकती है। मुझे बहुत सी समाजों की जानकारी है जो बन्द पड़ी हैं किराये पर हैं, कोई उपदेशक को वहां पूछने वाला नहीं। वहां क्या करें आप आदेश दीजिए हम पालन करेंगे। इन दिनों गढ़ शंकर में प्रात: 9 से 11 और साय: 3 से 5 और 5 से 6 बजे तक का कार्यक्रम चल रहा है। अन्यत्र जाना सम्भव नहीं फिर हम ठहरे भी मन्दिर में हैं। फिर भी यत्न करूंगा मार्ग की समाजों में जाने का। आदमपुर आर्य समाज बन्द है, सभा ने किराय पर दे रखी है। बलाचौर समाज नाम मात्र एक व्यक्ति की अपनी सम्पत्ति है। जोड़ आर्य समाज बारे पूरी जानकारी चमनेलाल सम्पत्ति विभाग वाले से ले लीजिये। अपरा आदि में वर्षों से समाज का काम ठप है। इन दिनों प्रोग्राम बने हुये हैं। खाली दिनों में आप कोई योजना बनाये—इन समाजों का यदि सुधार हो जाए तो हम उपदेशक जी जान से सेवा करेंगे।

5. आर्य समाज नवांशहर के मन्त्री श्री सुरेन्द्र मोहन तेज पाल अपने पत्र तिथि 23-7-90 के सभा के पत्र के उत्तर मे लिखते हैं कि समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी लड़ोईया हैं। समाज में कोई पुरोहित नहीं, सभी कार्यकर्ता एवं सदस्य सामूहिक रूप मे हवन यज्ञ करते हैं। रविवार का साप्ताहिक सत्सग लगता है। सदस्यों में से ही कोई ऐसा सदस्य एक वेद मन्त्र की व्याख्या पढ़ता तथा किसी न किसी पुस्तक का स्वध्याय होता है। आजकल सत्यार्थ प्रकाश का पाठ एवं स्वाध्याय श्रीमति इन्दुमति भी गौतम करती है। गत वर्ष का वेद प्रचार दशांश दो हजार रु० भेज दिया गया था। इस वर्ष का दशांश भी भेज चुके हैं। इस आर्य समाज के अधीन निम्नलिखित शिक्षण संस्थायें चल रही हैं।

1. आर. के. आर्य. कालेज—प्रि. एस. के. स्याल।

2. डी. ए. एन कालेज ऑफ ऐजुकेशन—प्रि० देवच्छा।

3. बी. एल. एम. गलर्ज कालेज—प्रि० नीलम गोयल।

4. डी.ए. सीनियर सै० स्कूल—प्रि० हरबंस लाल तनेजा।

5. डब्लयू. एल. आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल—प्रि० इन्दिरा वर्मा।

6. डा० आसानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर—प्रि० वीना भल्ला।

6. आर्य समाज कपूरथला के प्रधान श्री रोशन लाल तथा मन्त्री श्री सत्य देव जी सभा के पत्र उत्तर में 22-7-90 को अपने पत्र में लिखते हैं कि समाज मे दैनिक सत्संग प्रात: 6 से 6-45 तक लगता है। बुधवार को स्त्री सत्संग सायं 3-30 से 4-45 तक तथा रविवार को सप्ताहिक सत्सग 7 से 9-30 तक लगता है—आर्य समाज में निशुल्क होमियोपैथी डिसपेंसरी दैनिक साएं 4 से 6 तक चलती है—सभा की देय सब राशियां up to Date दी जा चुकी हैं। आर्य समाज द्वारा ही स्कूल चलाया जा रहा है उसके प्रबन्धक श्री राम नाथ भारद्वाज एव प्रिंसीपल श्रीमति सन्तोष दुग्गल हैं। मेरी आप से प्रार्थना है कि आप केवल वेद प्रचार पर ही Concentrate करें।

—योगेन्द्र पाल सेठ अधिष्ठाता वेद प्रचार

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ महोत्सव

गत दिनों आर्य समाज सैक्टर 16 की यज्ञशाला में विश्ववेद परिषद् चण्डीगढ के महोत्सव का यज्ञ 10-30 बजे आरम्भ हुआ जबकि यज्ञ शाला जहां आर्य जगत के मूर्धन्य सार्वभौमिक नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध जी सरस्वती और विश्व भर में यज्ञ उच्चकोटि के विद्वान स्वामी वेदर्षि व्यास योगी विराजमान थे वहां श्रद्धालु आर्य स्त्री पुरुषों से यज्ञ शाला भर गई थी। पूर्णाहूति और यज्ञ शेष वितरण के पश्चात् उत्तर प्रदेश से पधारे प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य के मनोहर गीतों प्रथम सत्र सभा का आरम्भ हुआ। तत्पश्चात् स्वामी आनन्द बोध जी का स्वागत चण्डीगढ़ की आर्य संस्थाओं के प्रमुख नेता प्रिंसीपल श्री कृष्ण सिंह आर्य ने माल्या अर्पण से साथ किया सभी समाजों और संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने बारी-बारी आ कर स्वामी जी के गले को पुष्प मालाओं से भर दिया वैदिक धर्म की जय और आर्य समाज अमर रहे के जय घोषों के साथ स्वामी जी ने अपने भाषण का शुभारम्भ करते हुए सब को धन्यवाद देते हुए और देश की वर्तमान अवस्था कश्मीर, पंजाब और आसाम में प्रतिदिन की निर्मम हत्याओं और सरकार की निर्बलता बेबसी और आश्चर्यजनक मौन पर अत्यन्त दु:ख प्रगट करते हुये कहा कि आर्य समाज राष्ट्र, जाति और मानवता पर किये गये अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध कभी भी अकर्मण्य नहीं बैठा। लेकिन अफसोस कि वोटों की भूखी सरकार सब कुछ देखते और सुनते हुए भी अन्धी और बेहरी हो चुकी है।

मालाबार मे जब हिन्दुओं के कतलों से कुए भरे जा रहे थे, राजस्थान में दुर्भिक्ष से एक-एक दाने के लिये लोग मर रहे थे, हैदराबाद में कृष्ण मन्दिर को तोड़ने का अन्याय हो रहा था, अकालियों के गुरुबाग का मामला हो, लाहौर में शहीद गंज के गुरुद्वारे की रक्षा हो या पजाब के अन्दर राजभाषा हिन्दी के साथ किया गया अन्याय हो, आर्य समाज सदैव इस का मुकाबला करने के लिए छाती तान कर आगे रहा है। बिना किसी जात पात या भेद भावों के अनेक बलिदानों को दिया है। यदि कश्मीर का महाराजा रणवीर सिंह और वहां के ब्राह्मण महर्षि स्वामी दयानन्द की बात को मान कर बलात् बनाये हुये मुसलमानो को शुद्ध करने की बात मान लेते तो आज कश्मीर के अन्दर चारों तरफ़ ब्राह्मणों का ही फैलाव होता और वहां से मौत के घाट उतारे जा कर अपने प्राण बचा पलायन करके दिल्ली आदि देश के विभिन्न नगरों में भिखारियों की भांति दर-दर की ठोकरें खाते न दीख पड़ते। यही ब्राह्मण थे जो जेहलम नदी में डूब कर आत्महत्या करने को तैयार हो गये कि यदि इन ब्राह्मणों से बने हुये मुसलमानों को शुद्ध कर दिया तो कितनी घोर अविद्या का अन्धकार था जिस मे यह फसे हुये थे, आज की हालत यह है भारत का मुसलमान राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन भी अपने रहने के लिए वहां घर नहीं बना सकता। 370 की धारा से जम्मू कश्मीर की सरकार ने उनके प्रार्थना पत्र को ठुकरा दिया था। आर्य समाज सारे देश के अन्दर सब के लिये एक विधान को मानता हुआ इस धारा का भी सदा विरोध करता रहा है और हम ने तो राष्ट्रपति भवन के अन्दर मस्जिद के निर्माण की योजना को भी असफल कर दिया था। अन्यथा पता नहीं वहां क्या-क्या गुल खिलते। समय की मांग है कि सरकार आर्य समाज की आवाज पर ध्यान देकर गोहत्या बन्दी कानून बनाये (2) भारत के लोगो को अंग्रेजी की दासता से छुड़ा कर यहूं और राज भाषा हिन्दी का प्रभुत्व स्थापित करे। शराब बन्दी और विदेशी पादरियों का भारत से निष्कासन हो।

सायंकाल का दूसरा सत्र इसी विशाल हाल में श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य भजनोपदेशक के वेद गान और ऋषि महिमा के गीतों के साथ आरम्भ हुआ। जिसका उद्घाटन आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के कर्मठ प्रसिद्ध लेखक प्रवक्ता चण्डीगढ़ महर्षि दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानी लाल भारतीय ने करते हुए महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर उनके जीवन की अनेक घटनाओ से प्रकाश डाला। प० आशुराम आर्य महामन्त्री ने विश्व वेद परिषद् का परिचय देते हुए कहा कि 1975 में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी पर दिल्ली में स्वर्गीय पं० धर्मदेव विद्या-मार्तण्ड जी बाद मे सन्यास आश्रम में प्रवेश कर के स्वामी धर्मानन्द के कर कमलों से इस परिषद् की स्थापना हुई।

चण्डीगढ में तब से परिषद् चल रही है। हमें इस बात का सौभाग्य है कि सैकड़ों घरों में प्रतिदिन वेद पाठ के लिये वेद ग्रन्थों के पहुचाने मे हम प्रयत्न शील रहे हैं। तत्पश्चात् आर्य जगत के 86 वर्षीय वयो वृद्ध एवं विद्याविद वेद विद्वान स्वामी वेदर्षि व्यास योगी जी ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना वेद विद्या के प्रचार और प्रसार के लिये और अविद्या के विनाश के लिये की थी। जिस से ससार के मनुष्य मात्र ही नहीं अपितु प्राणी मात्र सुख शान्ति और निर्भयता का जीवन बिता सकें, किन्तु आर्य समाज संस्थावाद और अनेक कारोबार के अन्दर पड़ कर इस परम उद्देश्य से दूर हो गया, जिस के परिणाम स्वरूप ईश्वरीय ज्ञान वेद धर्म से मानव जाति भटककर फिर पौराणिक कुचक्रो में फसकर अविद्या ग्रस्त हो गई है। चारों ओर प्रतिदिन की भडकती हुई हिन्सा और दु:खों की भरमार से जगत में अशान्ति फैल रही है महर्षि दयानन्द साक्षात् कृत धर्मा ऋषियों की परम्परा से थे, उन्होंने हमारा सम्पर्क महर्षि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों से जोड़ा। वह ऋषि थे जो हजारों वर्षों से लुप्त हुये वेद के व्याख्यानों को ससार के लोगों के सामने ले आये।

अंत मे परिषद् के अध्यक्ष डा० कृष्ण कुमार धवन ने परम-पिता परमेश्वर का और पधारे हुये विद्वानों एवं सब बहन भाईयों का हार्दिक धन्यवाद किया। —आशु राम आर्य

प्रो० वेद व्यास जी के नाम स्वामी विद्यानन्द का पत्र

माननीय प्रो० वेदव्यास जी, सप्रेम नमस्ते ।

आशा है प्रभु कृपा से आप सर्वथा एवं प्रसन्न होंगे ।

यह खेद का विषय है कि यद्यपि आर्य समाज में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान है, तथापि आपके विचार वेद, ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की मान्यताओं से मेल नहीं खाते, जैसा कि निम्नलिखित बातों से स्पष्ट है—

1. ऋषि दयानन्द की मान्यता के, अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से अपौरुषेय हैं, जब कि आपके अनुसार वेदों की रचना अयोध्या के राजा दशरथ के समकालीन दिवोदास अतिथिग्व (अतिथियों को गोमांस खिलाने वाले की उपाधि) के पड़पोते के पोते सुदास की रचना हैं । कुछ वेदमन्त्रो की रचना असुरों ने की थी ।

2. ऋषि दयानन्द के अनुसार वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के आदि में आज से लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हुआ था, जब कि आपके अनुसार वेदों की रचना दशरथ की छठी पीढ़ी में मौर्य साम्राज्य की स्थापना से कुछ वर्ष पूर्व अर्थात् आज से लगभग अढाई हज़ार वर्ष पूर्व हुई थी ।

3. ऋषि दयानन्द के अनुसार वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, जब कि आपके अनुसार उनमें कुछ कबीलों (Tribes) की लड़ाईयों का वर्णन है ।

4. ऋषि दयानन्द के अनुसार आर्य भारत के मूल निवासी हैं और उनसे पहले यहां कोई नहीं बसता था, जब कि आपके अनुसार वे ईरान से आने वाले विदेशी, आक्रान्ता हैं जो हड़प्पा पर अधिकार करने के लिए दिवोदास से सुदास तक छह पीढ़ियों तक लड़ते रहे । ये युद्ध ऋषियों के नेतृत्व में लडे गये थे ।

5. डी. ए. वी. द्वारा (The Young World) नाम से अंग्रेजी में एक मासिक पत्रिका निकलती है जो लाखों की संख्या मे छप कर वितरित होती है । उसमे ऋषि दयानन्द, वेद और आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध लेख छपते रहते हैं । उदाहरणार्थ—

(क) यहूदी मत सबसे पुराना है—पांच हज़ार वर्ष पहले का । वैदिक धर्म 3500 वर्ष पहले का है ।

(ख) वेद पौराणिक गाथाओ, कल्पित कहानियों तथा रीति रिवाजों का संग्रह हैं ।

(ग) आर्य लोग देवी-देवताओं के रूप में पृथ्वी, सूर्य अग्नि की पूजा करते थे । प्रत्येक परिवार का अलग-अलग देवता होता था ।

(घ) आर्य लोग यज्ञों में पशु बलि देते थे ।

(ङ) वेदों-उपनिषदों में बुद्धि या तर्क के लिए कोई स्थान नहीं था । तर्क बौद्धमत की देन है ।

आप देश में ही नहीं, विदेशों तक में, अपने इन वेद, और भारत विरोधी विचारों का प्रचार करते हैं और इस निमित्त एक बड़ी योजना बनाने जा रहे हैं ।

6. ऋषि दयानन्द की शिक्षा-नीति के तीन निर्देशक सिद्धान्त हैं—

(क) प्रारम्भिक शिक्षा देवनागरी अक्षरों में दी जाए और शिक्षा का माध्यम देश की भाषा हो ।

(ख) सहशिक्षा न हो ।

(ग) विद्यालय ऐसे हों जिनमें राजकुमार और दरिद्र की सन्तान एक साथ पढ़ सकें ।

आप दयानन्द के इन सिद्धान्तों का खून करके दयानन्द के नाम पर धड़ाधड़ (English Medium Co-educational Public School) खोल रहे हैं जिनमें विद्यार्थियों को 'नमस्ते' की जगह (Good morning) करनी पड़ती है और जनेऊ की जगह नेकटाई लगानी पड़ती है । इन स्कूलों में वही पढ़ सकते हैं जो प्रवेश के समय 10 से 50 हज़ार रुपये दे सकते हैं और हर महीने लगभग 500 रुपये खर्च कर सकते हैं । उन्हें आदर्श मनुष्य बनाने के लिए समय-समय पर अभिनेता अभिनेत्रियों को आमन्त्रित कर एक-एक लाख रुपये की थैली देकर उनका अभिनन्दन किया जाता है ।

इससे स्पष्ट है कि आपकी न महर्षि दयानन्द में आस्था है, न वेद में और न आर्य समाज और उसकी मान्यताओं से कोई लगाव है । दयानन्द के नाम पर आप मैकाले, मैक्समूलर, तथा सायण-महीधर का काम कर रहे हैं और प्रच्छन्नरूप से वाम मार्ग ईसाइमत को बढ़ावा दे रहे हैं । ऐसी स्थिति में अच्छा तो यही है कि आप स्वतः आर्य समाज को छोड़ दें ।

लगभग एक वर्ष पूर्व आपको इस आशय का एक पत्र आर्य जगत् के शिरोमणि, वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने लिखा था । परन्तु अहंभाव से बुरी तरह ग्रस्त होने के कारण आपने ऐसे श्रद्धास्पद सन्यासी के पत्र का उत्तर देने के सामान्य शिष्टाचार तक का पालन करना आवश्यक नहीं समझा ।

मेरा आपसे सानुरोध निवेदन है कि इस पत्र का उत्तर देकर अपनी स्थिति स्पष्ट करने की कृपा करें । यह निवेदन मैं किसी अधिकार से नहीं, प्रत्युत कर्त्तव्य भावना से प्रेरित होकर आर्य समाज के और आपके हित की दृष्टि से लिख रहा हूं । इसे अन्यथा न लें ।

यदि इस पत्र का उत्तर 15 दिन तक नहीं आया तो मैं समझूंगा कि आपके पास कहने को कुछ नहीं है और आप ऋषि दयानन्द, वेद और आर्य समाज के विरुद्ध अपना अभियान चालू रखने के लिए कृतसंकल्प हैं ।

सेवा में — हितैषी

प्रो० वेदव्यास — विद्यानन्द सरस्वती

64—लोधी एस्टेट — 14/16 मालवीय

नई दिल्ली — नगर दिल्ली

आर्यसमाज अग्रनगर लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज अग्रनगर लुधियाना का वार्षिक चुनाव गत दिनों निम्न प्रकार से हुआ :—

प्रधान—श्री मदन मोहन अग्रवाल।

मन्त्री—श्री ब्रजेन्द्र मोहन भण्डारी।

कोषाध्यक्ष—श्री ए०के० कपिला ।

उप-प्रधान—श्री बलवन्त राय श्रीमान ।

अन्तरंग सदस्य—श्री राधा कृष्ण गुप्ता, श्री सुरेश कुमार शर्मा, श्री सत्य पाल अग्रवाल, श्रीमती सूर्य सावित्रीनाथ श्री बी०डी० नारंग और श्री विशम्भरी राम जी ।

जालन्धर में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 6 अगस्त श्रावणी से 15 अगस्त 1990 तक वेद सप्ताह मनाया गया । 15-8-90 को प्रातः 8-30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति यजुर्वेद शतक के मन्त्रों से हुई । इसके पश्चात् आचार्य नरेश जी शास्त्री की अध्यक्षता में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया, जिसमें श्रीमती हर्ष अरोड़ा प्रि० आ० सी० स्कूल बस्ती नौ, श्री चौ० ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, श्री प्रि० वेद व्रत जी मेहरा और श्री आनन्द सागर जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए ।

तलवाड़ा में श्रावणी पर्व

महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के छात्रों ने आर्य समाज मन्दिर में श्रावणी पर्व बड़े समारोह के साथ मनाया । प्रातः हवन यज्ञ के उपरान्त स्कूल के बच्चों ने श्रावणी पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला । इस समारोह की विशेषता यह थी कि बच्चों ने देव वाणी संस्कृत में भाषण दिए । समारोह के अन्त में प्रिंसीपल महोदय ने इस बात का दावा किया कि आगामी वर्षों में मेरे स्कूल का एक-एक बच्चा धारा-वाहिक संस्कृत बोलेगा । यद्यपि पब्लिक स्कूलों में संस्कृत का इतना प्रचार नहीं, परन्तु इस स्कूल में संस्कृत पांचवीं कक्षा से अनिवार्य विषय के रूप मे पढ़ाई जाती है ।

—पृथ्वी राज जिज्ञासु

श्रीमती ऊषा गम्भीर का देहावसान

आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना की साधारण सभा मे श्रीमती ऊषा जी गम्भीर की अचानक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करती है । आप विदुषी एवम् लगनशील बहन थी । श्रीमति ऊषा आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना की व फ्री औषधालय की सच्ची सेविका थी । उनकी सेवाओं को कभी भुलाया नही जा सकता । हम सब को श्रीमती ऊषा के स्वर्ग सिधार जाने का गहरा खेद हुआ है । हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि बिछुड़ी हुई आत्मा को शान्ति दे, अपने चरणों में निवास दे व उनके परिवार के सभी सदस्यों को, रिश्तेदारों को और मित्र-गणों को इस महान् दु:ख को सहन करने की शक्ति दें ।

आपके दु:ख में दु:खी
आर्य समाज फील्ड गज के अधिकारी
एवं सदस्य

कुछ तो अब करके दिखाना चाहिए

लेखक—श्री कृष्ण मदान (बड़ी लाल) सोनीपत

देश को ऊंचा उठाना चाहिए,
दर्दो गम को भूल जाना चाहिए ।

बल्कि अपने देश की खातिर हमें,
मुश्किलों में मुस्कराना चाहिए ।

हम तो भारत देश की सन्तान हैं,
देश ही के काम आना चाहिए ।

मौत की बातें करें क्यों दोस्तो,
हमको जीने का बहाना चाहिए ।

नफ़रतों के घुप अन्धेरों में सदा,
प्रेम का दीपक जलाना चाहिए ।

"कृष्ण" आए हैं अगर संसार में,
कुछ तो अब करके दिखाना चाहिए ।

श्री लाल कृष्ण अडवानी से—

"टू डे इण्डिया" के मार्च 1990 के अंक में श्री लालकृष्ण अडवानी अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी की भेंटवार्ता प्रकाशित हुई है। जिसमें उन्होंने कहा है कि "मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूं कि राम और कृष्ण दोनों मांस खाते थे।" उस भेंट में आपने यह भी कहा है कि "मैं मांस नहीं खाता।"

अडवानी जी मांस नहीं खाते यह तो अच्छी बात है, हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं अपितु इसे जानकर प्रसन्नता ही हुई है। आपत्ति तो उनके राम और कृष्ण के विषय में कहे गये शब्दों पर है। वह जब और जहां चाहें, हम उनसे इस विषय पर सार्वजनिक रूप से विचार विनिमय के लिये तैयार हैं। यदि वह इस कार्य के लिये कोई उपयुक्त व्यवस्था न कर सकें तो हमें सूचित कर दें। हम स्वयं इसकी व्यवस्था करा लेंगे। समय भी हमें श्री लालकृष्ण अडवानी जी की सुविधानुसार ही स्वीकार होगा क्योंकि हमें सत्यासत्य का विचार कर सत्य मत की खोज और स्थापना करनी है।

हमें इस विषय में इसलिये लेखनी उठानी पड़ी क्योंकि अडवानी जी उस अखिल भारतीय दल के अध्यक्ष हैं, जो भारतीय संस्कृति का पोषक है। हमारी जानकारी के अनुसार व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्ध विषय इतिहास का होता है, शास्त्र का नहीं। अन्त में पुनः आग्रह करता हूं कि श्री अडवानी जी हमारी इस भ्रान्ति को निकालने के लिये हमारा प्रस्ताव स्वीकार करने की कृपा कर अनुग्रहित करें।

—वेद मुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद

अमृतसर में स्वतन्त्रता दिवस

44वां स्वाधीनता दिवस कार्यक्रम आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। झंडा लहराने की रस्म प्रधान श्री राम नाथ जी शर्मा ने अदा की। वैदिक गर्ल्ज सीनियर सै० स्कूल के बच्चों ने राष्ट्रीय गीत गाया। श्रद्धानन्द महिला महा विद्यालय के बच्चों ने राष्ट्र भक्ति गीत एवं भाषण आदि दिए। श्री राम नाथ जी शर्मा जी ने इस विषय में बोलते हुए कहा कि इस समय देश में चारों तरफ से खतरा मंडरा रहा है। देश की एकता व अखण्डता को खतरा है। इस शुभ अवसर पर देश की एकता व अखण्डता के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए शपथ उठाई। कार्यक्रम के अन्त में स्कूल कालेज के बच्चों को फल आदि दिए गए। कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को आर्य साहित्य तथा ओ३म् की शील्ड प्रदान की गई। शान्ति पाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हो गई।

—अविनाश भाटिया—महामन्त्री

स्त्री आर्य समाज पटियाला का चुनाव

आर्य स्त्री समाज का चुनाव 28-7-90 को किया गया। इस चुनाव में सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी चुने गए—

1. संरक्षिका—श्रीमती सत्यावती चोपड़ा।

2. प्रधाना—श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता

3. उप-प्रधाना—श्रीमती कमला गुप्ता, श्रीमती कृष्णा गुप्ता।

4. मंत्राणि—श्रीमती विद्यावती कोच्छड़।

5. उप-मन्त्राणि—श्रीमती शान्ती देवी सैनी. श्रीमती सुशीला कपूर।

7. कोषाध्यक्ष—श्रीमती उमा खोसला।

8. आय-व्यय निरीक्षका—श्रीमती उर्मिल जी।

9. सहायक आय-व्यय निरीक्षका श्रीमती सवित्री टंडन।

निर्णय के तट पर (भाग—4) छप कर तैयार !

जिन सज्जनों ने उपरोक्त ग्रन्थ की अग्रिम प्रतियां बुक करा रखी हैं, उनसे प्रार्थना है कि वह तारीख 8 सितम्बर तक हमें सूचित करें कि वह अपनी प्रति रजि० डाक से मंगाना चाहते हैं या वी० पी० से? अगर रजिस्टर्ड डाक से चाहते हैं तो हमें अग्रिम राशी 50+13 अर्थात् 63 रु० भेजें अथवा वी० पी० से 70 (सत्तर) रु० पड़ेगा। क्योंकि हम 20 सितम्बर तक सभी ग्राहकों की पुस्तकें भेज देना चाहते हैं।

हमने इस ग्रन्थ को 400 पेजों में प्रकाशित करने घोषणाकी थी परन्तु पेज 550 होने पर भी हमने कोई मूल्यवृद्धि नहीं की। जिन सज्जनों की प्रतियां बुक नहीं थी, उन्हें नियमानुसार छूट पर ही ग्रन्थ प्राप्त होगा, ग्रन्थ का मूल्य 200 रुपये है। इस ग्रन्थ के 5वें भाग के प्रकाशन की तैयारी भी चल रही है, जो इस श्रृंखला का अन्तिम खण्ड होगा इसके लिए आप प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित करें। प्रस्तुत ग्रन्थ के तैयार होने में जो देरी हुई उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

निवेदक

लाजपत राय अग्रवाल

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

1058—विवेकानन्द नगर

गाजियाबाद—201001 (उ०प्र०)

दयानन्द माडल स्कूल, लुधियाना में यज्ञ

गत दिनों दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना में मासिक यज्ञ हवन का आयोजन किया गया। इसमें श्री अश्विनी कुमार मलिक तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सुनीता मलिक यजमान बने। हवन के पश्चात् श्री कमला जी आर्या प्रधाना ने और श्री आशानन्द जी आर्य मैनेजर ने यजमान और बच्चों को आशीर्वाद के साथ साथ मनोहर उपदेश भी दिए। विद्यार्थी मण्डल में से निधि, सपना तथा श्वेता ने महर्षि दयानन्द जी की स्तुति में मनोहर भजन सुनाए।

—के०के० गुप्ता

आर्या समाज माडल हाऊस जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज माडल हाऊस का चुनाव वर्ष 1990-91 के लिए तिथि 24-6-90 को हुआ और निम्न पदाधिकारी चुने गए—

1. प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार धवन।

2. उप-प्रधान—श्रीमती राजरानी।

3. मन्त्री—श्री गिरधारी लाल भाटिया।

4. उप-मन्त्री—श्री वेद प्रकाश।

5. कोषाध्यक्ष—श्री बाल कृष्ण भगत।

6. प्रचार-मन्त्री—श्री ईश्वरदास भगत।

सम्पादक के नाम पत्र !

आदरणीय सम्पादक जी

सप्रेम नमस्ते,

मैं आज अपना वार्षिक शुल्क बाबत आर्य मर्यादा 1-1-90 से 31-12-90 तक का मात्र 30 (तीस) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज रहा हूं। कृपया स्वीकार करें और पावती भेजें। मेरी ग्रा० स० खरीदारी न० 1072 है।

सभा का चुनाव हो गया है, आर्य जगत ने फिर अपने प्रिय नेता श्री वीरेन्द्र जी को प्रधान चुना है। यह इनकी लगातार आशा विश्वास का ही सिला है और यह धन्यवाद के पात्र हैं, इसके इलावा सभी लगनशील नेता, कार्यकर्ता, आर्य साधु, सन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी, सेवक जो अपने ऊंचे आदर्श लेखों से मानव मात्र का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं और समय-समय पर सरकार को भी उस की कमजोरियों का अहसास कराते रहते हैं, वह सब भी धन्यवाद के पात्र हैं, ईश्वर करे आर्य मर्यादा इसी प्रकार जगत में चमकता रहे और अपने पाठकों का मार्ग दर्शन करता हुआ व ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करता रहे।

यह बहुत ही खुशी की बात है कि सभा ने कई कल्याणकारी कार्यक्रम तैयार किए हैं और कार्य सुचारु रूप से हो रहा है, साथ ही अपनी गल्तियों को सुधारा जा रहा है और सभा सजग एवं सम्पन्न है।

धन्यवाद

आपका अपना

ज्ञानचन्द आर्य

ग्रा० थाना पो० कुन्हल (सोलन)

क्षेत्रीय आर्य सभा हरियाणा का चुनाव

क्षेत्रीय आर्य सभा हरियाणा का (जिला कुरुक्षेत्र, करनाल, यमुनानगर, और अम्बाला की आर्य समाजों के सशक्त संगठन) का वार्षिक चुनाव गत दिनों सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

1. प्रधान—श्री सिंह राम जी आर्य (गुन्दियाना)।

2. उप-प्रधान—श्री बनारसीदास जी (अजाणा) व श्री मान सिंह जी (मन्धार)।

3. मन्त्री—श्री कृष्ण लाल जी आर्य (मढ़ी बीरबल)।

4. उप-मन्त्री—श्री सत्य पाल जी आर्य।

5. कोषाध्यक्ष—श्री सुख दर्शन लाल जी आर्य।

6. प्रचार मन्त्री—श्री रवेलसिंह जी आर्य।

7. वेद प्रचार अधिष्ठाता—श्री इन्द्र देव जी आर्य।

8. लेखा निरीक्षक—श्री लाला सुन्दर लाल जी आर्य।

9. संरक्षक—श्री स्वामी सदानन्द जी सरस्वती।

—कृष्ण लाल आर्य—मन्त्री

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर का वार्षिक चुनाव गत दिवस 5-8-90 को श्री अमर नाथ जी की अध्यक्षता में हुआ। श्री सत पाल जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया।

अन्य पदाधिकारी निम्न प्रकार चुने गए :—

1. उप-प्रधान—श्री अमरनाथ।
2. महा-मन्त्री—श्री तिलक राज आर्य।
3. मन्त्री—श्री वेद आर्य।
4. कोषाध्यक्ष—श्री शिवदियल।
5. प्रचार मन्त्री—श्री अनिल कुमार।
6. स्टोरकीपर—श्री राजेशकुमार
7. लायब्रेरियन—मिस सरोज बाला
8. आडीटर—श्री मनोहर लाल डोगरा।
9. पुरोहित—श्री पं० जगदीश आर्य।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में गोष्ठि

सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा तथा कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य गत दिनों जब लुधियाना में पहुंचे तो उन का विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों तथा वरिष्ठ सदस्यों ने पुष्प माल्यार्पण कर हार्दिक स्वागत तथा अभिनन्दन किया। जिन में श्री रणवीर भाटिया ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी, मास्टर ज्ञान चन्द जी, श्री मदन मोहन जी, श्री नरेन्द्र भल्ला, श्री श्रवण कुमार आर्य, श्री जगजीवन पाल, प्रि० ओमप्रकाश जी टण्डन, श्री आशानन्द जी आर्य, श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा, श्रीमती विद्या वती जी, श्रीमती जनकरानी जी, डा० सत्य भूषण जी शांगिया, डा० राम स्वरूप, श्री हरबन्स लाल जी सेठी एडवोकेट, श्री मंगल सेन जी वधवा तथा श्री महेन्द्र प्रताप जी आर्य के नाम उल्लेखनीय है। कुमारी गीतांजलि व कुमारी पूर्णिमा ने आए हुए अतिथि महानुभावों के स्वागत में स्वागत गीत सुनाया। श्री श्रवण कुमार आर्य ने अभिनन्दन पत्र पढ़ कर सुनाया।

श्री रणवीर जी भाटिया ने सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा तथा श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह प्रधान आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने श्री सरदारी लाल जी आर्य को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। प्रि०ओमप्रकाश जी टण्डन ने सभा अधिकारियों का स्वागत करते हुए पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन किया। श्री अश्विनी कुमार जी महामन्त्री और श्री सरदारी लाल जी कार्यालय मन्त्री ने सभी आए हुए आर्य बन्धुओं का धन्यवाद करते हुए वेद प्रचार के कार्य को सफलतापूर्वक चलाने के लिए अपने अपने सुझाव दिए।

इसके साथ ही श्री सत्य भूषण शांगिया, डा० राम स्वरूप जी, श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा, श्री हरबंस लाल जी सेठी, श्री रणवीर जी भाटिया ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

पं० चन्द्र सेन वैदिक मिश्नरी का निधन

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान एवम् प्रकाश स्तम्भ श्रद्धेय पं चन्द्र सैन जी आर्य वैदिक मिश्नरी का 21-7-90 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका सारा जीवन वेद प्रचार हेतु समर्पित रहा है। वह कई वर्षों तक विभिन्न सभाओं से जुड़े रहे। उनका जन्म 1924 ई० में पाकिस्तान में हुआ था। वह एक उत्साही, ओजस्वी एवम् प्रभावशाली तथा निडर वक्ता थे। उनके निधन से आर्य जगत का एक और सूर्य अस्त हुआ है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। उनके निवास स्थान सोनीपत में स्वामी जीवनानन्द जी की अध्यक्षता में जिला वेद प्रचार मण्डल सोनीपत, आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल, आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत, विश्व हिन्दू परिषद सहित अनेक संस्थाओं ने उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पित की।
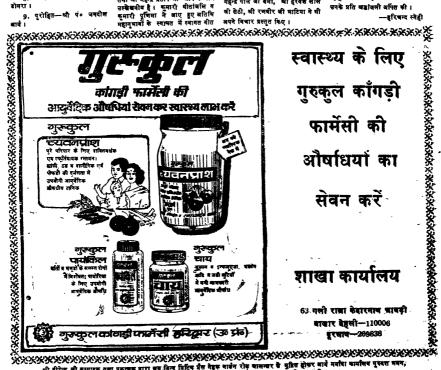
—हरिचन्द स्नेही

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस गोहद्र रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 23, भाद्रपद 18 सम्वत् 2047 / तदनुसार 30 अगस्त/2 सितम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

विश्व में यज्ञ हो रहा है

यत्पुरुषेण हविषा देवा
यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म
इध्म शरद्धविः ॥6॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्
पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या
ऋषयश्च ये ॥7॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत
सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या
नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥8॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः
सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य-
जुस्तस्मादजायत ॥9॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के
चोभयादतः ।
गावोहि जज्ञिरे तस्मात्त-
स्माज्जाता अजावयः ॥10॥

6 'जिस ग्रहण करने योग्य पुरुष के द्वारा देवताओं ने यज्ञ का विस्तार किया, उसमें बसन्त घी, ग्रीष्म ईंधन और शरद ऋतु सामग्री बनी।'

7 'उस सबसे पहले विद्यमान, यज्ञ-रूप पूजनीय पुरुष को मन रूपी यज्ञ वेदी पर अभिषिक्त करके देव, साध्य और ऋषियों ने उसी के उपदेश द्वारा यज्ञ किया।'

8. 'उस सब कुछ प्रदान करने वाले पूज्य परमात्मा से घी आदि भोग्य वस्तुएं सिद्ध हुईं। वायु में विचरण करने वाले पक्षी, वन में निवास करने वाले सिंह आदि और ग्राम में बसने वाले पशु उसी ने पैदा किये।'

9. 'उसी यज्ञ रूप परमात्मा से ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए। उसी से छन्द (अथर्व वेद) उत्पन्न हुआ और उसी से यजुर्वेद उत्पन्न हुआ।'

10 'उसी से घोड़े और ऊपर नीचे दोनों ओर दांतों वाले पशु उत्पन्न हुए। उसी से गायें, भेड़, बकरी उत्पन्न हुईं।

इन पांच मन्त्रों में यज्ञ का विचार विशेष रूप से प्रमुख है। भारतीय सभ्यता का आधार वेदों पर है, इस सभ्यता की नींव यज्ञ पर है। बच्चे के जन्म से पूर्व यज्ञ प्रारम्भ होता है, और जीवन के अन्त तक चलता है। अन्तिम यज्ञ में तो मनुष्य का शरीर ही आहुति बनता है। हमारी धर्म पुस्तकों में कहा गया है कि मानव जीवन ही यज्ञ रूप है। हम पूर्व कह चुके हैं कि मानव बहुत छोटे पैमाने पर विश्व का नमूना ही है। इन मन्त्रों में कहा गया है कि विश्व और पृथ्वी, जिस पर हम रहते हैं, एक प्रकार का यज्ञ है, और परम पुरुष इस यज्ञ का याजक हैं। मनुष्य जो यज्ञ करता है, उसमें अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग देकर अग्नि के द्वारा वायुमण्डल को शुद्ध करना होता है। यह एक प्रकार से देव ऋण का चुकाना है। मैं जीवन कायम रखने के लिये खाता पीता हूं, सांस लेता हूं। जो कुछ अन्दर जाता है, वह सारा अन्दर तो नहीं रहता, न सारा शरीर का भाग बनता है। उसका बहुत बड़ा भाग बाहर फैंक दिया जाता है, क्योंकि या तो वह काम का नहीं, या अपना काम कर चुका है। इतना भेद हो जाता है कि पदार्थ अन्दर जाते समय स्वच्छ होते हैं, और बाहर आते समय गन्दे होते हैं। अन्दर अन्न और फल जाता है, और बाहर मल आता है, अन्दर दूध और जल जाता है, और बाहर मूत्र व पसीना आता है। वायु भी बाहर मैली होकर आती है। हम अपने वायुमण्डल को प्रतिक्षण मैला करते रहते हैं। यज्ञ के विचार के नीचे मर्म यही है कि हम अपनी की हुई हानि को पूरा करने के लिये कुछ करें। परन्तु सौ में शायद 99 मनुष्य इस ऋण को चुकाने के लिये कुछ नहीं करते। फिर यह खराबी दूर कैसे होती है? मनुष्य याजक हों भी, तो उनका यज्ञ एक छोटा सा यज्ञ ही हो सकता है। परमात्मा स्वयं एक महान, अति महान यज्ञ निरन्तर कर रहा है। वह सबसे बड़ा याजक है। उसका यज्ञ इतना विस्तृत और उदार है कि वह स्वयं यज्ञ स्वरूप ही है। उसकी देन का कोई पारावार नहीं। वायुमण्डल को ही लें। सूर्य कुण्ड की अग्नि का काम करता है। यह अपवित्रता को दूर करता है, गली सड़ी चीजों को पुनर्जीवित करके वनस्पति और औषध बना देता है। वायुमण्डल के स्वच्छ बनाने में ताप के घटने बढ़ने और ऋतु परिवर्तन का भी बहुत महत्त्व है।

वायुमण्डल के स्वच्छ करने का अर्थ क्या है? जब हम हवन करते हैं, तो कुण्ड के ऊपर की और निकट की वायु गर्म हो जाती है। हलकी वायु ऊपर उठती है, क्योंकि जहां गति में कोई रोक न हो, वहां स्वभाव से ही भारी चीज नीचे आ जाती है, और हलकी चीज ऊपर रह जाती व पहुंच जाती है। कुण्ड के ऊपर और निकट की वायु के ऊपर जाने से वहां शून्य पैदा हो जाता है। प्रकृति ऐसे शून्य को सहार नहीं सकती। इसका परिणाम यह होता है कि इद गिर्द से ठण्डी, भारी वायु शून्य को भरने के लिए कुंड पर आ पहुंचती है। यह भी गर्म होकर ऊपर उठ जाती है, और इस तरह यह क्रम जारी रहता है। यह वायु उन कीटों को, जो अपवित्रता तथा रोग का कारण होते हैं, पीछे नहीं छोड़ जाती। उन्हें अपने साथ खींच ले जाती है। ऐसे कीटों का जलाना, उन्हें खत्म करना, हवन का प्रयोजन और फल है। यही कार्य बड़े पैमाने पर सूर्य करता है। जहां गर्मी अधिक है, वहां वायु ऊपर उठती है। उसका स्थान लेने के लिये दूर से ठण्डी वायु वेग से गर्म स्थान पर पहुंचती है। इसे आंधी कहते हैं। गर्मी सर्दी का भेद, ऋतु परिवर्तन और वायु की तेज गति उस महान यज्ञ के साधन हैं, जो वायुमण्डल को निरन्तर शुद्ध कर रहा है। बौद्ध और जैनी शायद हवन यज्ञ के विपक्षी इसीलिये हैं कि इसमें हानिकारक प्राणियों की हिंसा होती है। मानव यज्ञ से उदासीन तो वह हो सकते हैं, परन्तु संसार में रहते हुए, वे उस विस्तृत यज्ञ के अमल से भाग नहीं सकते, जो पृथ्वी पर निरन्तर परम पुरुष याजक की ओर से हो रहा है, और जिसका उद्देश्य ही यह है कि हानिकारक प्राणियों को समाप्त करे।

अब हम इन पांच मन्त्रों को फिर पढ़ें, और देखें कि वह क्या शिक्षा देते हैं।

छठे मन्त्र में कहा गया है कि पृथ्वी पर एक यज्ञ हो रहा है, और बसन्त, ग्रीष्म तथा शरद ऋतु उस यज्ञ की सामग्री हैं। सातवें मन्त्र में कहा है कि परम पुरुष याजक के यज्ञ पर मनन करने के फलस्वरूप भले पुरुषों, देवों, साध्यों और ऋषियों ने भी यज्ञ किया। 8, 9 और दसवें मन्त्रों में कहा गया है कि इस महान यज्ञ के फलस्वरूप सारे खाद्य पदार्थ और पशु पक्षी पैदा हुए। यह सब कुछ मनुष्यों के लिये हितकर है, परन्तु मनुष्य का सबसे बड़ा सच्चा सहायक तो सत्य ज्ञान है। उसके लिये परम पुरुष ने चारों वेदों का ज्ञान दिया। जो कुछ हमारे जीवन को कायम रखता है, जो कुछ इसे मीठा और उत्तम बनाता है, वह सब उसी प्रभु के महान यज्ञ का प्रताप है।

'शब्द वेद प्रमाण की प्रामाणिकता'

ले०—श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार 145।4 सेन्ट्रल टाऊन जालन्धर

(गतांक से आगे)

श्री क्षेमकरण दास त्रिवेदी कृत भाष्य में "असुर:" प्राणदाता मेघ तथा 'वरुण:' वरणीय मेघ ऐसा अर्थ दिया गया है। किसी आसुरी माया वाले वरुण देवता की कल्पना का कोई स्थान ही नहीं।

मेघनाथ और घटोत्कच की आसुरी शक्ति की बातें कपोल कल्पित हैं—उनसे कुछ नहीं होता।

आर्य समाज वेद को स्वत: प्रमाण मानता है। हमारे सब सिद्धांत वेद के आधार पर हैं—ऐसा हम मानते हैं। पर यदि वेद के मन्त्रों के अर्थ भिन्न-2 विद्वानों द्वारा अलग-अलग किए जाएं तो प्रमाणिकता का आधार ही नष्ट हो जाता है। इस ही बात को और भी स्पष्ट करने के लिए अपने इस लेख को समाप्त करने से पहले एक और उदाहरण देना चाहता हूं।

श्री मनोहर लाल विद्यालंकार (दिल्ली) एक आस्थावान् स्वाध्याय शील विद्वान हैं। उन्होंने दीपावली प्रार्थना के रूप में एक मन्त्र अपने मित्रों की सेवा में भेजा। मन्त्र निम्न है :-

ओं युक्ष्वा हि वाजिनीवति अश्वां अद्यारुणां उष: ।
अथानो विश्वा सौभाग्यन्यावह ।
ऋक्—1/92/15

इस का अर्थ और भाव शब्दों में इस प्रकार है :-

अधिदेव अर्थ—हे समृद्धि मति उषादेवि! वरुण रंग वाले अश्वों को रथ में जोड़। और तदनन्तर हमें सभी प्रकार के सौभाग्य प्राप्त करा।

आध्यात्मिक अर्थ—हमारा शरीर ही रथ है। पंच विद् रंग विरंगा ज्ञान प्राप्त कराने वाली ज्ञानेन्द्रियां और नाना कर्मों में प्रवृत्त कराने वाली कर्मेन्द्रियां हैं, वरुण अश्व है। प्रात: काल स्वप्न से जागृत दशा में आते समय की चेतना बोधमयी उषा है।

इसके बाद श्री वेदालकार जी ने उपमा के आधार पर इस का सम्बन्ध दीपावली से जोडा है और प्रार्थना रूप में प्रस्तुत किया है।

इस अर्थ-भाव को चमत्कृत करने के लिए उन्होंने देवता-ऋषि-छन्द के सान्दर्य को भी ग्रहण किया है।

ऋषि दयानन्द ने जो इस मन्त्र का अर्थ लिखा है वह इस प्रकार है :-

हे स्त्री (वाजिनीवति) जिसमें बहुत गमन कराने वाली क्रिया है वह (उषा) प्रात: समय की वेला (अरुणान्) लाल (अश्वान्) चमचमाती हुई किरणों का (युक्ष्व) संयोग करती है और (अथ) पीछे (न:) हम लोगों के लिए (विश्वा) समस्त (सौभाग्यवती) सौभाग्यपन के कार्यों को अच्छे प्रकार करती है। (हि) ही है। वैसे (अद्य) आज तू शुभ गुणों से युक्त और (आवह) सब ओर से प्राप्त कर।

श्री विद्यालंकार जी का किया अर्थ और ऋषिवर द्वारा प्रस्तुत अर्थ दोनों बिल्कुल भिन्न हैं।

अब मूल प्रश्न है :-

I एक वेद मन्त्र के कितने अर्थ हो सकते हैं।

II उन में से कितने प्रमाणिक होंगे।

III जो प्रमाणिक नहीं उनके आधार पर की गई धारणाए और स्थापनाए कितनी मानने योग्य हैं।

IV प्रामाणिकता का निश्चय कौन करेगा।

वर्तमान समय में आर्य समाज के क्षेत्र में ही वेद मन्त्रों का अर्थ करने की अनेक शैलियां चल पड़ी हैं। ऋषिवर ने अपने ग्रन्थों में वेद भाष्य के लिए व्याकरण-निरुक्तादि षड्ङ्गों में व्युत्पत्ति के अतिरिक्त उच्चकोटि की मानसिक पवित्रता को भी आवश्यक माना है। पर प्राय: विद्वान अपनी एकांकी योग्यता और अपनी धारणाओं के आधार पर वेद को समझने का प्रयत्न करते हैं। अधिकतर लोग अपने वर्तमान ज्ञान के धार्मिक-राजनीतिक-आर्थिक-भौतिक रूपों को वेदों मे देखने का प्रयत्न करते हैं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि वेद ज्ञान की मनुष्य को उपलब्धि तो न जाने कितने सहस्त्रो या लाखों वर्षों पूर्व हुई थी। इस अन्तराल मे आने वाला यह सारा विकसित ज्ञान अपने पूर्ण रूप में पहले कैसे माना जा सकता है।

यह सब चिन्तन बहुत गम्भीर और लम्बा है। पर इतना तो सुनिश्चित है कि वैदिक मत के अनुयायियों के सामने वेद-मन्त्रों के प्रामाणिक अर्थों का रूप अवश्य आना चाहिए। अन्यथा वेद के नाम से निश्चित रूप से कुछ कहना असम्भव होगा।

देश, जाति, व आर्य समाज के अनथक सेवक—चौ० रूप चंद एडवोकेट

जो लाहौर से शिमला और फिर चंडीगढ़ तक देश जाति और आर्य समाज की सेवा में दिन रात कटिबद्ध रहे, 1947 में देश के बटवारे के समय ही धर्म पत्नी का देहान्त हो गया, छोटे-छोटे छ: बच्चों को संभाले हुए शिमला में नगरपालिका के प्रधान होते हुए भी आर्यसमाज के प्रधान के नाते सब से छोटी पुत्री प्रतिमा को गोद में लिए, वर्षा हो, आंधी हो या तूफान आर्यसमाज के सत्संग में प्रति दिन प्रात: अनिवार्य रूप में पहुंचना इस आर्य पुरुष का सर्व प्रथम नियम रहा। चण्डीगढ़ आकर भी कई बार एक्सीडेंट से टांगों के टूटने पर भी अनवरत प्रात: सत्संग मे सैक्टर 9 के 4 न० अपने निवास से 3 मील पैदल चलकर पहुचना एक अटूट नियम था, फिर जाकर हाईकोर्ट के लिए मुकदमों की तैयारी और आर्य समाज के अनेक कार्यों, सामाजिक सेवाओं में दिन रात संलग्न ही नहीं अग्रसर रहते थे। दान शीलता में बढ़ चढ़ कर उत्साह पूर्वक हंसते-हसते भाग लेते और तीन राज्यों की राजधानी चंडीगढ़ में आने वाले अभियोगों और कानूनी सलाह लेने वाले इसको अपना घर समझ कर आते थे और चौधरी जी इनकी अधिकाधिक सेवा कर अतीव हर्ष मानते थे।

इनका जीवन कितना पवित्र था कि शिमला म्यूंनिसिपल कमेटी के प्रधान पद पर रहते हुए वहां की कोई चीज अपने प्रयोग में कभी नहीं लाते थे। एक बार राजकुमारी अमृत कौर जो केन्द्र में स्वास्थ्य मंत्रीणी थीं, ने इन्हें कहा कि मेरी कोठी की सड़क बहुत ही खराब हो रही है, आप अपनी पालिका के कर्मचारियों से सामान भिजवा कर ठीक करा दीजिए, चौधरी साहब ने कहा कि मैं तो स्वयं सेवा में हाजिर हूं, पर कमेटी के कर्मचारी और व्यय कुछ भी नहीं हो सकता, क्योंकि यह आप का निजी गृह निवास है। भला भारत जैसे महान राज्य के मंत्री को जिस का सूर्य समान कांग्रेस राज्य हो और फिर जिसके प्रधानमंत्री के साथ भी गहरे सम्बन्ध हों, यह सुनने का धैर्य था, उसने तुरन्त नेहरू जी को पत्र लिखा कि शिमले जैसे उच्च नगर की पालिका का प्रधान ऐसा अयोग्य है कि इस को न तो राजनैतिक व्यक्तियों के सम्मान का कुछ ध्यान है और यह व्यक्ति यहां संरक्षक होता हुआ कभी चण्डीगढ़ होता है कभी यहां, अत: इसको तुरन्त प्रधान पद से हटा दिया जाए।

नेहरू जी ने उस समय के संयुक्त पंजाब (हिमाचल हरियाणा पंजाब) के मुख्यमंत्री श्री भीमसेन सच्चर को राजकुमारी का पत्र भेज दिया, जिस पर सच्चर जी ने चौधरी साहब को बता दिए या जिक्र किए बिना ही प्रधानमंत्री जी को लिख दिया कि इस जैसा नेक ईमानदार और नेक पुरुष शिमला की पालिका को नहीं मिल सकता इत्यादि.. चौ० साहब को बहुत देर बाद ही इसका पता लगा तो वह चकित रह गए।

ऐसी शानदार सेवाओं के साथ आर्य समाज और वैदिक धर्म की दिव्य दीक्षा से ओत प्रोत जीवन को निभाते हुए एकदम 12, 13 जून को ब्रेन हैम्ब्रेज हो जाने से मूर्छित रहे और 86 वर्ष के यह पुरानी पीढ़ी के आर्य पुरुष 11 जुलाई को भौतिक शरीर को छोड़ भगवान की शरण में अर्पण हो गए।

चौ० रूप चंद जी की सेवाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए भी जो लाहौर से लेकर चंडीगढ़ तक निरंतर रहीं सदा अंतरंग सदस्य रहे और कानूनी पैरवी भी निरंतर करते रहे वे भी नहीं भुलाई जा सकतीं, विश्ववेद परिषद के सदा संरक्षक रहे और प्रधान भी और आर्य समाज 22 सैक्टर चण्डीगढ़ के भी चिरकाल तक प्रधान और संरक्षक रहे। 14-7-90 को उनके शान्ति यज्ञ पर मेरे अतिरिक्त पं० इन्द्र राज शर्मा, श्री० कृष्ण लाल जी, प्रिंसीपल कृष्ण सिंह आर्य, बहिन सुबोधा देवी और हिन्दू मिशन के महामंत्री श्री प्रेम दत्त शंकर (विश्व मिशन के श्री० श्री अध्यक्ष थे) ने भरपूर श्रद्धांजलियां समर्पित की। इस अवसर पर परिवार ने सभी आर्य समाजों को दान रूप में एक विशेष राशि दी।

—सोमू राम आर्य चंडीगढ़

दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना में मासिक सत्संग

दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना में मासिक यज्ञ (सत्संग) का आयोजन हुआ। इस यज्ञ में श्री आत्मानन्द जी आर्य ने ईश्वर प्रार्थना और यज्ञ के वैदिक मन्त्रों की व्याख्या करते हुये यज्ञ के कार्य को सम्पन्न किया। आज के यज्ञ के यजमान श्रीमती सुनीता जी थीं। यज्ञ के पश्चात् छठी कक्षा की छात्रा निधि ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर सारगर्भित भाषण दिया। इसी कक्षा की एक छात्रा ने ईश्वर स्तुति का एक भजन गाया। छोटे बच्चों ने भी कविताएं सुनाई।

सम्पादकीय—

जातपात की राजनीति—२

मैंने गत अंक में लिखा था कि वैदिक धर्म जन्म के आधार पर किसी व्यक्ति को अछूत नहीं स्वीकारता। उसके अनुमोदन में मैंने महाभारत के महात्मा विदुर का उदाहरण प्रस्तुत किया था। जो दासी पुत्र होते हुए भी महाराज धृतराष्ट्र के प्रधानमन्त्री थे। यह महाभारत काल की बात है। हमने यह भी सुना है कि उसी जमाने में भगवान कृष्ण ने अपने एक सहपाठी सुदामा का स्वागत करते हुए स्वय उसके पैर भी धोये थे। सुदामा ब्राह्मण अवश्य थे परन्तु आर्थिक रूप से पिछड़े हुए थे। वह श्री कृष्ण से मिलने गए तो उसके लिए थोड़े से चावल ले गए थे। उनके पास इससे अधिक और कुछ न था जब श्री कृष्ण को पता चला कि सुदामा जी गुरुकुल में उनके साथ पढ़ा करते थे, आये हैं, वह उन्हें शुभागमन कहने के लिए अपने महल के द्वार पर गए। यह भी नैतिकता उस समय लोगों में थी। उन दिनों न तो किसी का इसलिए सम्मान होता था कि वह पूंजीपति है न इसलिए कि इसका जन्म किसी ऊंचे परिवार में हुआ है। लोग यह ही देखते थे कि वह कौन है और इसके कर्म कैसे हैं।

हमारे जो भाई आज अपने आप को बाल्मीक कहते है वह हरिजन कहलाने में गर्व महसूस करते हैं। हालांकि महर्षि बाल्मीक का रुतबा उस समय के ब्राह्मणों से भी ऊंचा था। उन्हें तो भगवान राम भी सम्मान से देखते थे। उस समय भी उनकी पूजा होती थी। ऐसे महापुरुष अछूत या हरिजन कैसे हो सकते थे? परन्तु आज के बाल्मीक अपने आपको हरिजन कहलाने में गर्व महसूस करते हैं। यह ही कुछ रविदासियों के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। भगत शिरोमणी गुरु रविदास का जन्म एक चर्मकार परिवार में हुआ था परन्तु उनका सम्पूर्ण जीवन मानव सेवा में गुजरा था। उनकी सम्पूर्ण वाणी मनुष्य को ऊंचा उठाने के लिए ही लिखी गई थी। आज इन्हें भी अछूत या हरिजन समझा जाता है और जो अपने आपको रविदासिये कहते हैं। वह यह कहलाने पर गर्व महसूस करते हैं। हालांकि इनमें से कई बड़े बड़े ऊंचे पदों पर पहुंचे हैं।

स्वर्गीय बाबू जगजीवनराम भी रविदासिये थे और वह आर्थिक रूप से भी पिछड़े न थे। अपने पीछे करोड़ों की सम्पत्ति छोड गए हैं। आज उस पर अधिकार करने के लिए उनके परिवार में परस्पर मुकद्दमेबाजी हो रही है। परन्तु थे वह भी हरिजन और उन अनुसूचित जातियों में से एक थे जिन्हें संविधान के अनुसार पिछड़ा समझा जाता है।

निष्कर्ष यह कि हिन्दुओं में उन लोगों को जो किसी कारण पिछड़ा समझे जाते थे अलग करने के लिए अंग्रेज ने एक चाल चली थी। गांधी जी उनको समझ गए थे। इसी लिए जब 1933 में तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने विभिन्न साम्प्रदायिक वर्गों को विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व देने के लिए कम्यूनल एवार्ड के नाम से अपना सुझाव प्रस्तुत किया था, तो गांधी जी ने उसका विरोध किया था। गांधी जी उन दिनों प्रावदा जेल में कैद थे। उन्होंने वहीं भूख हड़ताल शुरू कर दी। ब्रिटिश सरकार ने यह शरारत की कि हिन्दुओं के पिछड़े वर्गों को सिखों, मुसलमानों और ईसाईयों की भांति अलग प्रतिनिधित्व देने का निर्णय किया। गांधी जी ने कहा कि यह हिन्दुओं को कमजोर करने के लिए किया जा रहा है और इस प्रकार यह देश और भी कमजोर हो जाएगा जब गांधी जी ने अपना व्रत प्रारम्भ किया तो देश के बड़े-बड़े नेता प्रावदा जेल में इकट्ठे हुए। डाक्टर अम्बेदकर भी इनमें से एक थे। वहीं यह फैसला किया गया कि हिन्दुओं के पिछड़े वर्ग को भी विधान सभाओं और लोक सभा में अलग प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा। परन्तु उनके प्रत्याशी संयुक्त मतों द्वारा ही निर्वाचित हो सकेंगे। इस प्रकार अंग्रेज जो शरारत कर रहा था, गांधी जी ने उन्हें नाकारा बना दिया। गांधी जी ने इस पिछड़े वर्ग को हरिजन का नाम दिया। इससे पूर्व कई लोग उन्हें अछूत कहते थे। महर्षि दयानन्द ने और इनके बाद आर्य समाज ने इन्हें दलित का नाम दिया था। जिसके अर्थ थे कि जो पिछड़ा व्यक्ति हो वह चाहे कोई भी हो उसे दलित कहा जाता था। इसलिए आर्य समाज में दलित उद्धार आन्दोलन भी शुरू किया था। गांधी जी ने पिछड़े वर्ग को हरिजन का नाम दिया। उसके बाद यह सभी लोग जो पिछड़े समझे जाते हैं। वह हरिजन कहलाए जाने लगे। परन्तु इसका आपत्तिजनक पक्ष यह था कि यह एक नई जाति बन गई। शुरू में समझा जाता था कि अछूत या दलित वह हैं जो आर्थिक रूप से भी पिछड़े हैं। अब कुछ हरिजन वह हैं जो करोड़पति हैं परन्तु उन्हें विशेष सुविधाए प्राप्त हैं क्योंकि उनका जन्म एक विशेष परिवार में हुआ है। हमारे सविधान में भी कुछ ऐसी जातियो का नाम उल्लेख है जिन्हें अनुसूचित जातियां कहा जाता है। उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त है। आज स्थिति यह है कि एक हरिजन चाहे वह करोड़पति हो उसे भी वह सभी अधिकार प्राप्त हैं जो पिछड़े वर्गों को सविधान के अनुसार प्राप्त हैं। परन्तु यदि एक ब्राह्मण का लड़का भीख मांगता फिरता है तो उसे वह अधिकार नहीं मिल सकते जो अनुसूचित जातियों को मिलते हैं और यह सब कुछ उस समय हो रहा है जबकि डाक्टर अम्बेदकर देश के सविधान में यह लिख गए हैं कि इस देश के सभी नागरिकों को एक समान अधिकार प्राप्त होंगे।

—वीरेन्द्र

जिला जालन्धर की आर्यसमाजों की गोष्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नव-निर्वाचित अधिकारियो ने गत चुनाव के पश्चात् आर्य समाज के प्रचार कार्य को तीव्र करने के लिये सारे पजाब मे इस सम्बन्ध में गोष्ठियां करने का निश्चय किया था। गत दिनों लुधियाना जिला की आर्य समाजों में दो गोष्ठियां, एक आर्य समाज फील्डगंज में और दूसरी आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाज़ार, लुधियाना में सम्पन्न हुई थी, जिनका वहां की आर्य जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा था। 19-8-90 को जिला जालन्धर के प्रतिनिधियों की एक गोष्ठी सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक मे सम्पन्न हुई। जिसमें लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस गोष्ठी में भी आर्य बहिनों तथा भाईयों ने अपने-अपने सुझाव दिये कि आर्य समाज के कार्य को किस प्रकार से सुचारू रूप से चलाया जाये। सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा, सभा उप-प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा, सभा उप-प्रधान श्रीमती कमला आर्या, संगठन मन्त्री श्री आशानन्द जी आर्य, कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न, सभा कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा और वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ ने भी विशेष रूप से इस बैठक मे भाग लिया और आये हुए आर्य बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए अपने-अपने सुझाव वेद प्रचार के सम्बन्ध में दिए।

इस बैठक में निम्न सुझाव आये—(1) पारिवारिक सत्संगों द्वारा आर्य समाज के कार्यों को तीव्र किया जाये। (2) जन-सम्पर्क बढ़ाया जाये। (3) जिस प्रकार ईसाई अपना साहित्य बाटते हैं उसी प्रकार आर्य समाज की ओर से सस्ता साहित्य बांटा जाये। (4) प्रत्येक आर्य बन्धु को दैनिक यज्ञ व संध्या इत्यादि करनी चाहिये और इसके साथ ही मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण की ओर भी ध्यान देना चाहिये। (5) प्रत्येक आर्य बन्धु को आर्य समाज के लिये स्वेच्छा से अधिक से अधिक समय देना चाहिये। (6) आर्य स्कूलों तथा कालेजों में आर्य वीर दल व कुमार सभाओं इत्यादि का गठन किया जाये और सभा से सम्बन्धित सभी स्कूलों में धर्म शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाये ताकि बच्चो में आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार व प्रसार किया जा सके। (7) आपस के सभी विवादों को मिटा कर आर्य समाज के सगठन को मज़बूत किया जाये। इन सुझावों के साथ ही जालन्धर की आर्य समाजों को संगठित करने के लिये जिला आर्य सभा का निर्वाचन भी किया गया और श्री पं० हरबंस लालजी शर्मा को सर्वसम्मति से जिला सभा का प्रधान निर्वाचित करके उन्हे अन्य पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य चुनने का अधिकार दे दिया गया।

गत वर्ष पंजाब में आर्य समाज के कार्य में आई हुई शिथिलता को देखते हुए इस वर्ष सभा के अधिकारियों ने प्रारम्भ से ही वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने का निश्चय किया है और इस दिशा मे निरन्तर कार्य चल रहा है। पजाब के सभी जिलों में जिला सभाओं का निर्माण किया जा रहा है। सगठन मन्त्री श्री आशानन्द जी ने 26-8-90 को कपूरथला की जिला सभा का भी निर्माण करवा दिया है और उसका चुनाव भी सम्पन्न हो गया है जो इसी अक में प्रकाशित किया जा रहा है। इस सब बातो को देखते हुए आशा की जाती है कि 90-91 के इस वर्ष में गत वर्षों की अपेक्षा वेद का प्रचार पंजाब में अधिक होगा और पंजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारियों व सदस्यो का सहयोग सभा अधिकारियों को इसी प्रकार मिलता रहेगा। सभा के अधिकारियों द्वारा अब लुधियाना, जालन्धर और कपूरथला की गोष्ठियों के बाद पजाब के दूसरे जिलों में भी आर्य समाजों की गोष्ठियां शीघ्र ही करके वहां भी वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने का प्रयास किया जा रहा है। इस दिशा में श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा सभा महामन्त्री, श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न कार्यालय मन्त्री और श्री आशानन्द जी आर्य संगठन मन्त्री, सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के निर्देशानुसार सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

—सह-सम्पादक

क्या आर्य समाज अल्पसंख्यक है ?

भारतीय सविधान की धारा 29 और 30 के अन्तगत धार्मिक अल्प सख्यक वर्गों को सरकारी हस्तक्षेप के बिना अपनी शिक्षण सस्थाओ को चलाने का अधिकार प्राप्त है। बिहार मे आय समाज को पटना उच्च न्यायालय ने 1958 ई० मे एक दिए गए फैसले मे एक अल्पसख्यक वग के रूप मे माना है। उच्चतम न्यायालय ने भी पजाब मे न केवल धम के आधार पर वरन भाषा के आधार पर भी आय समाज को अल्पसख्य वर्ग के रूप मे मान्यता प्रदान की है पर केन्द्र प्रशासित दिल्ली मे उच्च न्यायालय के 1973 ई० मे दिये गये एक निणय के अनुसार दिल्ली मे आय समाज को हिन्दू धर्म के अन्तगत मानते हुए इसे अल्पसख्यक वग के रूप मे नही माना गया है। चूकि उच्चतम न्याया लय ने इससे पूर्व आय समाज को अल्पसख्यक मान लिया था, अत दिल्ली उच्च न्यायालय को उच्चतम न्यायालय के निणय के विरुद्ध फैसला देने का आधार नही था। पर जिस भाषा मे उच्चतम न्यायालय ने आय समाज को अल्पसख्यक माना है, उसका अभिप्राय स्पष्ट करत हुए दिल्ली उच्च न्यायालय का कहना है कि आय समाज को पजाब मे अल्प सख्यक माना गया है, भारत के अन्य राज्यो मे नही। आय समाज ने दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपीले दायर करते हुये सामायिक रूप से स्थानादेश लिया हुआ है। अत जब तक उच्चतम न्यायालय द्वारा आर्य समाज की अपीलो पर निणय नही होता तब तक आय समाज के अल्पसख्यक धार्मिक वर्ग की विवादास्पद स्थिति को देखते हुए छोटा नागपुर स्थित आय समाजो के अधिकारियो से मेरा अनुरोध है कि वे अपने धार्मिक परिषदो मे नये स्कूल खोलें और जो पूर्व से स्कूल खुले हुए हैं, उन्हे बिना सरकारी अनुदान प्राप्त किए अपने खच से चलाए, साथ ही सविधान मे सशोधन के लिए आन्दोलन करना चाहिये, जिससे बहुसख्यक हिन्दुओ को भी अपनी शिक्षण सस्थाओ के प्रबध और सचालन मे अल्पसख्यक वग के समान अधिकार प्राप्त हो, हमे बहुसख्यक वाले राज्यो मे शिक्षा विषयक कानूनो मे सशोधन के लिए भी सरकार से माग करनी चाहिये जिससे शिक्षा विभाग के अधिकारी निजी स्कूलो का प्रबध व सचालन मे कम से कम हस्ताक्षप कर सकें।

हमारा देश लोकतन्त्रवादी है। लोकतन्त्र मे सरकार की कायनीति का निर्धारण जनता की इच्छा पर अवलम्बित है। कानून भी लोकमत के अनुरूप होता है अत आय समाज के साथ साथ अन्य सस्थाओ के सम्बधित लोगो को भी इस ओर सतत जागरूक रहकर सचेष्ट रहना चाहिए।

—दयानन्द पोद्दार, मन्त्री
छोटा नागपुर, आय प्रतिनिधि सभा,
राची।

मोर्चा सरकार की विघटनवादी नीतियों पर आर्य समाज की प्रतिक्रिया

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, सरकार के हाल ही मे उठाए गए कदमो से चिन्तित है जिनके तहत वतमान राष्ट्रीय मोर्चा सरकार साम्प्रदायकवादी तथा देशद्रोही तत्त्वों को हर सम्भव उपहार देने की होड मे लगी है।

राष्ट्र की एकता और अखण्डता पर पहला प्रहार मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने का फैसला किया गया। मण्डल आयोग की सिफारशें हिन्दू धार्मिक ग्रन्थो के प्रक्षेपो तथा झूठे तथ्य पर आधारित हैं।

इसके तुरन्त बाद एक और सम्प्रदायक घोषणा राष्ट्र के 45वें स्वतन्त्रता दिवस पर मोहम्मद हजरत के जन्म दिवस को राष्ट्रीय अवकाश घोषित करके की गई। आर्य समाज पूछता है कि यह सरकार इस प्रकार के निणय लेते समय राष्ट्र को एक सगठित शक्ति के रूप में क्यो नही देखती। क्या प्रधान मन्त्री यह नही जानते कि राष्ट्र आय समाज का ऋणी है जिसके सार्वाधिक बलिदान स्वतन्त्रता आन्दोलन मे दिए गए और जिसका प्रवतक महर्षि दयानन्द एक देश भक्त था। समाज सुधारक के रूप मे योगदान राष्ट्र के प्रतापी इतिहास का अखण्ड हिस्सा है।

यदि हजरत मोहम्मद का जन्म दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश हो सकता है तो महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश न होने का कोई कारण ही नही। हमारे राष्ट्र की विभिन्न विचारधाराओ एव समूहो से सरकार एक समान व्यवहार क्यो नहीं करती।

सारा राष्ट्र जानता है कि ब्रिटिश सरकार अपनी हुकूमत को कायम रखने के लिए ईसाईयत मे धर्मान्तरण को हर प्रकार का सहयोग व प्रोत्साहन देती रही है। आज वही ईसाई समुदाय उन दलितो व हरिजनो के लिए जो ईसाई बन गए थे, समस्त पूर्व सुविधाओं की माग कर रहा है। उनका कहना है कि जब धर्मान्तरित सौखो को सभी पूव सुविधाए मिल सकती हैं तो धर्मान्तरित ईसाईयो को क्यो नही! यह कथन कहना धर्मान्तरण से सामाजिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आता, उनके अपने धर्मान्तरण प्रचार को छुपाने की एक चाल है। ईसा के नाम पर यही नेता दावा करते हैं कि ईसाई धम मे प्रवेश करने से हरिजनो की सामाजिक स्थिति सुधर जाएगी क्योंकि वे हरिजन नही रहेगे। आर्य समाज सरकार से पूछता है कि क्या सब असवैधानिक तथा राष्ट्र द्रोह नहीं है कि समूह समाज मे वग सघर्ष को बढाने के लिए कायरत हैं और सरकार उन्हीं को मदद देना चाहती है।

जब इस प्रकार के तत्त्व ईसाईयत या इस्लाम के नाम पर हमारे राष्ट्र की एकता को तोडने मे लगे हैं तो केन्द्रीय सरकार खामोश क्यो है?

इसी प्रसग मे ईसाईयों से भी सवाल करते हैं कि—

"क्या वे विदेश से प्राप्त धन को उन सभी हरिजन तथा सामाजिक एव आर्थिक रूप से पिछडी जातियो मे बाटने के लिए तैयार हैं जिन्होंने धर्मान्तरण से इन्कार कर दिया है। यदि ऐसा नही हो सकता तो हरिजनों को मिलने वाली विशेष सुविधाए उन्हे क्यो मिल जो अपना धर्म छोड चुके हैं जिसके कारण उन्हे सुविधाए मिलती थी।"

आय समाज ने देश को असख्य शहीद जसे प० राम प्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिह, स्वामी श्रद्धानन्द आदि दिए, परन्तु आज किसी भी राष्ट्रीय पर्व पर सरकार द्वारा इन आर्य समाजी नेताओ को याद करने की जगह उन लोगो के नाम लिए जाते हैं जिन्होने कोई उल्लेखनीय राष्ट्र सेवा नही की। आर्य समाजियों को ब्रिटिश राज का शत्रु उस समय माना जाता था जब कांग्रेस की स्थापना भी नहीं हुई थी। उन्हे हर प्रकार की यातनाए दी जाती थीं और अपने राष्ट्र भक्त विचारों के कारण ही आय समाजियो को फौज में भर्ती के काबिल नहीं समझा जाता था।

आर्य समाज जैसी राष्ट्रवादी ताकत का धैय अब लगभग समाप्त होता जा रहा है। सरकार को इसे महसूस कर लेना चाहिए और न्यायोचित कदमों पर विचार करना चाहिए।

इन सब वर्तमान समस्याओ पर निणय लेने के लिए सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक शीघ्र बुलाई जायेगी।

आर्य समाज (ऋषि कुंज) पक्का बाग में श्री कृष्ण जन्माष्टमी सम्पन्न

आय समाज पक्का बाग जालन्धर मे दिनाक 14 8 90 को पूर्वायोजित कायक्रम के अनुसार बड उत्साह से, कमयोगी श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पव मनाया गया जिसमे भारी सख्या मे नर नारी सम्मिलित हुए। सारे आयोजन को अन्तरग सदस्यो ने, चौ० ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट प्रधान आय समाज एव उपमन्त्री सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के योग्य नेतृत्व मे सम्पन्न किया। भारी वर्षा के बावजूद भी पव समारोह अति सफल रहा।

प्रात साढे 7 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ, जिसके ब्रह्मा श्री प० भूदेव जी शास्त्री शिमला वाले थे। स्वर्गीय रविन्द्र सेठ एडवोकेट एव स्वर्गीय सुखदेव मेहता जी के हेतु आय समाज को भवन निर्माण मे दिये गये दान शिलाओ को स्थापित किया गया। श्रीमती इन्दु रविन्द्र सेठ इस समय भाव-विभोर हो उठी।

अमर ग्रथ सत्याथ प्रकाश की 1989 की परीक्षाओ का परीक्षा फल घोषित किया गया और तत्सम्बन्धी प्रमाणपत्र वितरण किये गये। सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद, की परीक्षाओ मे प्रथम द्वितीय, तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो को पारितोषिक भी दिये गये। सत्याथ विशारद मे श्री सुलतान सिंह ने 83 100 अक प्राप्त कर सबको उत्साहित किया। 'विशेष पारितोषिक' सत्याथ शास्त्री का बहन सुशीला जी भगत को दिया गया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पव समारोह का सभापतित्व श्री प० धर्मदेव जी ने किया, जिसमे श्री आचार्य नरेश कुमार शास्त्री गुरुकुल करतारपुर, श्री गेरा जी, ए० पी० जे० आदि ने अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यानो से योगेश्वर श्री कृष्ण के उज्ज्वल जीवन पर आर्य समाज के दृष्टिकोण से प्रकाश डाला।

भजन और गायन सम्बन्धी सारा प्रोग्राम का भजन बहनो ने किया। बहन सरला जी 'सेतिया का भजन गान 'कमफल माफ नही होते, भुगतने ही पडेंगे ने समय बाध दिया। गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी और श्री नरेन्द्र शास्त्री एव आर्य बाल-बालिकाओ ने भी समयानुकूल भजन सुनाए। मच का सफल आयोजन [illegible] शर्मा ने किया। साढे 12 बजे [illegible] ऋषि लगर मे भाग लिया जिसकी कुशल व्यवस्था श्री आशाराम गुलाटी, श्री चूनी लाल, श्री बलवत राय ठेकेदार, श्री कश्मीरी लाल अरोडा जी ने की। आयवीर दल के अधिष्ठाता चांद कुमार सैनी ने श्री करतार [illegible] जी के नेतृत्व में अपने आयवीरों व वीरांगनाओं के सहयोग से सम्पूर्ण व्यवस्था व अनुशासन बनाये रखा। [illegible]

भारतीय जनता पार्टी का भविष्य [3]

ले०—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

हमारे देश में इस समय तीन बड़ी पार्टियां हैं—

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
2. जनता दल
4. भारतीय जनता पार्टी।

पार्टियां और भी हैं लेकिन वे सब छोटी-छोटी हैं। उनमें से कोई भी ऐसी नहीं जो अकेले केन्द्र में सरकार बना सके। जिन तीन पार्टियों का मैंने ऊपर उल्लेख किया है वे यदि चाहें और कोशिश करें तो केन्द्र में अपनी-अपनी सरकार बना सकती हैं।

इन तीनों में पहली दो अर्थात् कांग्रेस और जनता दल बदनाम हो गई हैं। कांग्रेस यदि इस बार बहुमत न प्राप्त कर सकी तो इसका भी यही कारण है। यह दूसरी बार है कि कांग्रेस अल्पमत में है। पंडित जवाहर लाल 17 वर्ष देश के प्रधान मन्त्री रहे। एक बार भी केन्द्र में किसी दूसरी पार्टी की सरकार नहीं बनी थी। इन्दिरा गांधी के समय एक बार कांग्रेस हार गई थी। अब वही कुछ राजीव गांधी के समय में हुआ है। आज कांग्रेस यह आशा लगाए बैठी है कि जनता दल की सरकार शायद अपने पांच वर्ष पूरे न कर सके और उसे फिर सत्ता में आने का अवसर मिल जाए लेकिन यह होता नजर नहीं आता। जनता दल सरकार को शायद अपने पांच वर्ष पूरे न कर सके। देवीलाल इसका पूरा प्रबन्ध कर रहे हैं कि जनता दल सरकार जितनी जल्दी ही टूट जाए। इसका यह अभिप्राय: नहीं कि कांग्रेस अवश्य वापिस आ जाएगी। राजीव गांधी पांच वर्ष देश के प्रधानमन्त्री रहे हैं लेकिन वह अपने देशवासियों के दिलों पर अपनी छाप नहीं बैठा सके। इसलिए अब कांग्रेस के दूसरी बार सत्ता में आने की अभी कोई सम्भावना नजर नहीं आ रही।

दो बड़ी पार्टियां जनता दल और कांग्रेस दोनों ही इस समय बदनाम हैं। इस बात की पूरी सम्भावना है कि जनता दल सरकार अपने पांच वर्ष भी पूरे न करे और नए चुनाव हो जाएं लेकिन न कांग्रेस पार्टी बहुमत प्राप्त कर सकेगी, न जनता दल और न अभी भारतीय जनता पार्टी इस स्थिति में यह है कि वह केन्द्र में अपनी सरकार बना सके। लेकिन मैं भारतीय जनता पार्टी का भविष्य बहुत उज्ज्वल समझता हूं। कांग्रेस तथा जनता दल इन दोनों के बाद यही एक पार्टी है जो केन्द्र में अपनी सरकार बना सकती है। यह अभी बदनाम नहीं हुई। इस समय तीन राज्यों में इसकी सरकार चल रही है। ये तीनों सरकारें भारतीय जनता पार्टी के भविष्य को बनाएंगी यदि उसकी कार्यशैली जनता को पसन्द आई तो दूसरे राज्यों में भी भाजपा सरकारें बन सकेंगी और साथ ही केन्द्र में उसकी सरकार के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाएगा, लेकिन यदि उसकी राज्य सरकारें असफल रही तो भाजपा के लिए केन्द्र का द्वार बन्द हो जाएगा।

इस विचार से अब मैं हिमाचल के हालात पर नजर डालता हूं तो मुझे कुछ निराशा होती है। सेब का मूल्य कोई ऐसी समस्या नहीं थी जिसके कारण सरकार को गोली चलानी पड़ती। उसमें तीन व्यक्ति मारे गए। अब हिमाचल की सरकार ने उनके आश्रितों को पचास-पचास हजार रुपया देकर उनकी जुबान बन्द करने की कोशिश की है। वास्तविक प्रश्न तो यह है कि ऐसी स्थिति ही क्यों पैदा हुई कि सरकार को गोली चलानी पड़ी। इस देश के सब राज्यों में हिमाचल ही एक ऐसा राज्य है जहां के लोग शांतमय देवता स्वरूप हैं। वह इतने उत्तेजित क्यों हुए कि सरकार को गोली चलानी पड़ी। अब मुख्यमन्त्री ने अपने एक साथी मन्त्री को कोटगढ़ भेजा है कि वह वहां जाकर सेब उत्पादकों से बात करें। यह सब कुछ पहले भी हो सकता था। लेकिन उस समय शांता कुमार के पास समय नहीं था। वह मद्रास गए थे। उनके घर में आग लगी हुई थी उसे बुझाने के लिए उनके पास समय नहीं था। वापिस आकर उन्होंने कह दिया कि कुछ शरारती लोगों ने सेब उत्पादकों को भड़का दिया है। यह तो उन्हें पहले पता होना चाहिए था कि जो कुछ वह कह रहे हैं उनकी प्रतिक्रिया कल को क्या हो सकती है। कोई सरकार गोली चला कर तीन निरपराधों का खून बहाना-यह ऐसी घटना नहीं जिसे आसानी से अनदेखा किया जा सके। यदि यही कुछ कांग्रेस राज में होता तो अब तक सारे देश की भारतीय जनता पार्टी ने आसमान सिर पर उठा लिया होता।

इसलिए मैं कहता हूं कि भाजपा को फूक-फूक कर कदम बढ़ाना चाहिए। उसका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और केन्द्र में कांग्रेस तथा जनता दल दोनों को पछाड़ कर उनकी जगह ले सकती है। बशर्ते कि यह भी बड़ी गलतियां न करें जो पहले कांग्रेस कर चुकी है और अब जनता दल कर रहा है। जितना बुरा हाल इस समय जनता दल का है इससे पहले किसी और पार्टी का नहीं हुआ था। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इसमें नेता अधिक हैं कार्यकर्ता कम। पार्टी वही चल सकती है जिसका नेता एक हो—वह जिसे लोग अपना नेता समझते हों। जन्म के आधार पर नेता न बने कर्म के आधार पर बने। राजीव गांधी जन्म के आधार पर नेता है। लाल कृष्ण अडवानी कर्म के आधार पर। जन्म के आधार पर नेता बनने वालों का समय चला गया है। जवाहर लाल और पटेल भी जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर नेता बने थे। जवाहर लाल इसलिए स्वतन्त्र भारत के पहले प्रधानमन्त्री नहीं बने थे कि वह मोती लाल नेहरू के बेटे थे, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपने देश के लिए वर्षों जेल की तंग और अंधेरी कोठरियों में गुजारे थे। कांग्रेस ने कर्म के आधार को छोड़ कर, जन्म को नेतृत्व का आधार बनाया। उसकी कीमत वह अब चुका रही है।

भारतीय जनता पार्टी का दामन इस समय तक बिल्कुल साफ है। कठिनाईयां उसके सामने भी कई हैं। उनका समाधान ढूंढना उनके लिए आसान नहीं होगा। लेकिन वह उन कठिनाइयों को दूर करके केन्द्र पर अधिकार जमा सकती है यदि उसका उद्देश्य स्पष्ट हो, रास्ता साफ हो और लक्ष्य तक पहुंचने का दृढ़ संकल्प हो।

—वीरेन्द्र

जिला आर्य सभा बठिंडा का चुनाव

गत दिनों जिला आर्य सभा बठिण्डा का चुनाव श्री मेघराज जी गोयल, प्रधान आर्य समाज बुढलाडा की प्रधानता में सम्पन्न हुआ। सर्व सम्मति से श्री वजीर चंद जी को प्रधान चुना गया और उन्हें नए अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य बनाने का अधिकार भी दिया गया। श्री वजीर चंद जी प्रधान ने नीचे लिखे अनुसार अधिकारियों की घोषणा कर दी, जो सब को सुना दी गई।

1. श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी, संरक्षक

2. श्री वजीर चंद जी, प्रधान

3. श्री रोशन लाल जी मानसा मंडी, उप-प्रधान, 4. श्री डा० ओम प्रकाश जी वर्मा, उप-प्रधान

5. श्री मेघ राज जी गोयल बुढलाडा, महामन्त्री

6. श्री बिहारी लाल जी, बठिण्डा, मन्त्री

7. श्री ओम प्रकाश जी रामा मण्डी, उप-मन्त्री, श्री तरसेम कुमार जी मोनियाना मण्डी उप-मन्त्री

9. श्रीमती लीला वती जी बठिण्डा, कोषाध्यक्ष।

अन्तरंग सदस्य—श्री चौधरी यशपाल सिंह जी एवं श्री प्रेमनाथ जी, तलवण्डी साबो, श्री चिरंजीलाल जी, मोनियाना, श्री बनारसी दास जी गुप्त, बरेटा, श्री अमर चंद जी एवं श्री मास्टर मनसा राम जी भुच्चो मण्डी (विशेष) श्री द्वारका दास ज श्री निरजन लाल जी आर्य, मानसा मण्डी एव श्री राजकर्ण जी आर्य, रामा मण्डी (विशेष) श्री मती कमला जी भाटिया, श्री कृष्ण कुमार जी, बठिण्डा।

जिला बठिण्डा की सभी आर्य समाजों एव आर्य शिक्षा संस्थाओं से अलग-अलग प्रस्तावों द्वारा प्रार्थना की गई कि वह अपना सम्बन्ध विधिवत् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य विद्या परिषद से शीघ्र अति शीघ्र करके सुचारु रूप से अपने साप्ताहिक सत्संग एवं पर्व बडे उत्साह से मनाया करें। आर्य शिक्षा संस्थाओं में भी प्रात: प्रार्थना के समय गायत्री मन्त्र, आर्य समाज के दस नियम बुलवाया करें। सभी शिक्षा संस्थाएं आ. प्र. नि. स. से पूछकर अलग-अलग श्रेणियों में धर्म शिक्षा की पुस्तकें लगवाकर पढ़ाया जाया करे। तथा शिक्षा संस्थाओं में भी प्रति सप्ताह किसी सप्ताह किसी एक दिन सन्ध्या-हवन-ईश्वर भक्ति के भजनों द्वारा सभी मिलकर सत्संग का कार्यक्रम अवश्य रखा करें।

एक प्रस्ताव द्वारा सभी आर्य समाजों से अनुरोध किया गया कि वह अपनी समाज एव शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों के लिए अपने परिवार में कम से कम एक वर्ष में दो बार सन्ध्या-हवन यज्ञ आदि के रूप में सत्संग करना अनिवार्य करें, जिसमें मुहल्ला के पड़ोस के परिवारों को निमन्त्रित किया जावे। आज इस प्रकार के प्रचार की बड़ी जरूरत है।

एक विचार :—

आर्य समाज पंजाबी (गुरुमुखी लिपि) को भी अपनाए

लेखक : चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, (उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा)
चौक नई कचहरी जालन्धर ।

यह बात तो माननी पड़ेगी कि पंजाब में रहने वाले पंजाबी बोली बोलते हैं, वह पजाब चाहे भारत का हो अथवा पाकिस्तान का। यह भी सत्य ही कहा जा सकता है कि 'बोली' के लहजे में लगभग बारह मील के अन्तर पर फर्क पड़ता चला जाता कहा जाता है। हिमाचली, डोगरी, उत्तर हरियाणे की अथवा ऊपरी राजिस्थान की बोली काफी सीमा तक पंजाबी सी लगती है, परन्तु जब इस पजाब के भूगोलिक स्थान का नाम 'पंजाब' नहीं था, तो 'बोली' तो यही बोली जाती होगी, पर इसको 'पजाबी बोली' नहीं कहते होंगे। पंचाली अथवा कुछ और कहा जाता रहा होगा। महाराजा पोरस भी यही बोली बोलते होंगे। इस प्रकार इस भूगोलिक क्षेत्र की बोली तो यही होगी जो यहां पर उत्पन्न होने वाले व्यक्ति आज बोलते हैं, नाम कुछ भी होता रहा होगा। इसी प्रकार जिस-जिस क्षेत्र में जो-जो 'बोली' बोली जा रही है, वहां की जलवायु में उत्पन्न व्यक्ति मूल रूप से वही 'बोली' बोलता है। यह बात सारे संसार पर पूरी उतरती है, किसी देश अथवा क्षेत्र विशेष की नहीं है। इसी धरती पर सैंकड़ों 'बोली' व भाषाए बोली जाती हैं, और सबको अपनी-अपनी बोली और भाषा पर गर्व भी होता है।

2. अब बात आती है भाषा की, तो भाषा पजाब की पहले हिन्दी ही रही है जो संस्कृत के अधिक समीप है। इस भाषा का नाम भी तभी से हिन्दी पडा होगा जब से इस भूभाग का नाम हिन्दुस्तान पडा है और इसमें रहने वाले का नाम हिन्दू, और फिर यह धर्म के रूप मे जाना जाने लगा। क्योंकि यह शब्द हिन्दू लगभग उस समय से इतिहास के पन्नों पर आता है जबसे यवन/मुसलमान आदि इस भूभाग पर आए उससे पहले हिन्दी को 'आर्य भाषा' के नाम से भी जाना जाता रहा होगा। मुसलमान अपनी भाषा में जो लिपि प्रयोग करते थे वह अरब देशों से आई हुई अरबी-फारसी थी, और इसी लिपि में वह 'पंजाब' के भूभाग में 'पंजाबी' को फारसी लिपि में, जिसे उर्दू भी कहने लगे थे, अपने राज्य के प्रभाव से पजाबी लिपि मान कर काम करने लगे। वारिश शाह इत्यादि के 'हीर-रांझे' किस्से इसी भाषा-लिपि में, पंजाबी में हैं, अत: जब यहां यह फारसी लिपि नहीं थी, तो इसी पंजाबी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता था, जिसे हिन्दू नाम से जोड़ कर हिन्दी भी कहते हैं, जैसे कि सन्त तुलसीदास जी ने 'देवनागरी' लिपि जिसे हिन्दी कह कर भी पुकारते हैं, 'राम चरित मानस' का महान् ग्रंथ रचा। गुरु नानक देव से पहले और भी बहुत से सन्तों व गुरुओं ने देवनागरी लिपि में ही लिखा-पढ़ा है। उस समय अथवा उससे पहले पंजाब के भू-भाग पर 'बोली' तो यही है जो बोली अब पंजाबी कही जाती है परन्तु इसका नाम यह नहीं होगा और देवनागरी लिपि में व वर्णमाला जो हिन्दी कहाती है का ही प्रयोग होता था यहां तक कि इस बीसवीं शताब्दी के अर्धशतक से भी अधिक समय तक पंजाब में हिन्दी का प्रयोग लिखा-पढ़ी की भाषा में होता रहा है जबकि बोली वही पंजाबी होती थी। फिर भी पंजाब में पजाबी मजहब से जुड़ने के कारण, मुसलमान इसे फारसी लिपि उर्दू में लिखने लगा, और हिन्दू इसे देवनागरी लिपि में लिखने लगे और प्रयोग में हिन्दी भाषा लाते थे।

3. फिर इसी पंजाबी बोली को पजाब भू-भाग के गुरुओं ने जो सिख सम्प्रदाय के बानी थे, जम्मू काश्मीर की शारदा लिपि में से, व लण्डे लिपि में से कुछ शब्द लेकर 35 अक्षरों की की वर्णमाला बना कर, देवनागरी वर्णमाला के दोहरे उच्चारण इत्यादि शब्दों से एक नवीन लिपि को जन्म दिया जिसे अब गुरुमुखी नाम से पुकारा जाने लगा है। इस 'सिख' सम्प्रदाय में इसी पजाबी को नवीन गुरुमुखी लिपि में लिखा जाने लगा है और अब यहां तक हो गया कि अब इसी लिपि को उनके अनुयाई केवल पंजाबी की ही लिपि मानने लगे और "पंजाबी" इसी को कहने लगे। पंजाबी वाली यह बात चाहे पूर्णतया ठीक नहीं कही जा जा सकती क्योंकि पाकिस्तानी पंजाब में, पंजाबी बोली जाती है और उसे फारसी लिपि में लिखा जाता है। यदि केवल यही गुरुमुखी लिपि होती, तो पाकिस्तान में भी गुरुमुखी लिपि में ही पंजाबी लिखी जाती, जैसे कि बंगाली बोली/भाषा/लिपि, भारत के बंगाल में भी वही है जो पाकिस्तान (अब बंगला देश) में भी वही है और फिर बोली/भाषा के लिये एक ही लिपि हो, तो ऐसी बात भी नहीं है, क्योंकि देवनागरी लिपि जहां संस्कृत, हिन्दी (आर्य भाषा) के लिये प्रयोग में आती है वहां मराठी भाषा के लिये भी वही देवनागरी लिपि है। जबकि हिन्दी और मराठी में बहुत अन्तर है। अभी पंजाबी और हिन्दी में विशेष अन्तर नहीं है।

(क्रमशः)

आर्य समाज आर्य नगर का उत्सव

आर्य समाज आर्य नगर (गुलाब देवी हस्पताल रोड) जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 6 से 9 सितम्बर 1990 तक होना निश्चित हुआ है। महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट 9 सितम्बर को 11 बजे ध्वजारोहण करेंगे, श्री धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष के उपदेश तथा श्री जगत वर्मा जी के भजन होंगे। इस अवसर पर कार्यक्रम प्रतिदिन रात्रि 8 से 10 बजे तक होगा। रविवार 9 सितम्बर को कार्यक्रम प्रात: 8-00 बजे से 1 बजे तक चलेगा। श्री सरदारी लाल जी कार्यालय मन्त्री, श्री हरबंस लाल जी शर्मा सभा उपप्रधान, प्रि० अश्विनी कुमार शर्मा, श्रीमती प्रि० हर्ष अरोड़ा, पं० मनोहर लाल, श्री सुशील कुमार, श्री दर्शन लाल, श्री विजय सेठी, डा० ज्ञान चन्द, श्री मोहन सिंह जी, श्री कृष्ण चन्द जी, श्री भगत राम चन्द जी आदि अपने विचार रखेंगे। श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री पं० राज कुमार, श्री प० अमर नाथ जी आर्य, श्री रत्न लाल जी आदि के भजन होंगे।

देवराज गर्ल्ज सीनियर सैकेंडरी स्कूल की शानदार परम्परा

आर्य विद्या परिषद् पंजाब की ओर से आयोजित धर्म शिक्षा की परीक्षाओं में देवराज गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की छात्राएं गत 20 वर्षों से सक्रिय भाग ले रही हैं। प्रति वर्ष भारतीय स्तर पर रजत पदक, प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान ग्रहण करती हैं। इस वर्ष भी 'धर्म ज्ञानी' की परीक्षा में कु० नीरू (दशम्) प्रथम और कु० प्रीति (दशम्) तृतीय स्थान पर रहीं।

गत कई वर्षों से विद्यालय में 'सत्यार्थ प्रकाश' की परीक्षा 'श्री ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट' के सहयोग से हो रही है। जिसमें प्रति वर्ष लगभग 50 छात्राएं भाग लेती हैं तथा प्रमाण-पत्र ग्रहण करती हैं।

1988-89 की परीक्षा में कु० प्रोमिला ने 'सत्यार्थ-रत्न' की परीक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया।

प्रिंसीपल सन्तोष सूरी जी, आर्य कन्या परिषद् की व्यवस्थापिकाएं श्रीमती आशा बेड़ा व श्रीमती प्रवीन सहगल नैतिक व धार्मिक शिक्षा द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन कर रही हैं।

—सन्तोष सूरी

पर्व और जाति

ले०—श्री पं० सत्यपाल "पथिक" 70—ए, गोकुल नगर मजीठा रोड, अमृतसर।

ये पर्व हमारी जाति को मजबूत बनाया करते हैं।
कोई आलस या कमजोरी हो तो दूर हटाया करते हैं।
सन्देश मिला जो ऋषियों का कहीं वह तो भूल नहीं बैठे,
भटके तो नहीं राहें अपनी महसूस कराया करते हैं।
पहले क्या थे और अब क्या हैं आगे हमने क्या बनना है,
दर्पण में हमारा ही चेहरा हमको दिखलाया करते हैं।
अपने तो भला फिर अपने हैं गैरों को पास बुलाते हैं,
मिलजुल के रहो सब प्यार करो सब को समझाया करते हैं।
कहते हैं सयाने कलियुग में संगठन ही असली ताकत है,
इस ताकत को पाने के लिये हम पर्व मनाया करते हैं।
दुनियां है ताकत वालों की ताकत से दुनियां झुकती है,
ताकत वाले ही जीते हैं बाकी मर जाया करते हैं।
जिस कौम के पर्व उजागर हैं वह कौम हमेशा चमकी है,
जिस कौम ने पर्वों को मारा वे उसका सफ़ाया करते हैं।
पर्वों की बदौलत लाठी में इक जान गजब की होती है,
लाठी है "पथिक" जिन हाथों में अपनी मनवाया करते हैं।

गुरुकुल करतारपुर चलो

आर्य समाज के जन्मदाता महान् वेदवेत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के परमगुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की जन्मभूमि करतारपुर मे हर वर्ष की भान्ति 10 सितम्बर, 1990 सोमवार से 16 सितम्बर, 1990 तक गुरुकुल करतारपुर की ओर से धार्मिक मेला मनाया जा रहा है। इस वर्ष यजुर्वेद का यज्ञ रखा गया है, जिसके ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प्रेम भिक्षु जी मथुरा वाले होंगे। महात्मा आर्य भिक्षु जी प्रतिदिन कथा करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत श्री वर्मा के मधुर भजन होंगे।

पहली बार गत वर्ष गुरुकुल करतारपुर में वेद अष्टाध्यायी तथा संस्कार विधि कण्ठस्थ करने वाले ब्रह्मचारियों को पुरस्कार देकर सम्मानित करने की योजना बनाई थी जो बहुत सफल रही। अनेक गुरुकुलो के ब्रह्मचारियों ने इसमें भाग लिया। इस बार भी यह कार्यक्रम श्री प० सत्यदेव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में 15 सितम्बर शनिवार प्रात 10 बजे रखा गया है। मुख्य अतिथि के रूप मे प्रसिद्ध समाज सेवक श्री रजनीश जी गोयन्का पधार रहे हैं। इसी दिन दोपहर बाद महिला सम्मेलन होगा।

रविवार प्रातः 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद ध्वजारोहण तथा गुरुकुलो के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा अमर हुतात्मा प० लेखराम जी के स्मारक-कक्षों का उद्घाटन होगा। उसके बाद रविवार को प्रमुख गुरु विरजानन्द सम्मेलन होगा जिसमे मुख्य रूप से डॉ० श्री भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ पधार रहे हैं, अतिथि के रूप मे जालन्धर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्ता ने आना स्वीकार किया है, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियो के कार्यक्रम होंगे। पूरे सप्ताह सत्संग का लाभ उठाने वालो के आवास भोजन की विशेष व्यवस्था की जाएगी। सभी सत्संग प्रेमियो से निवेदन है कि गुरुधाम करतारपुर मे अधिक से अधिक संख्या मे अवश्य पहुचें और अपना आर्थिक सहयोग देना न भूलें।

—हरिवंश लाल शर्मा
'प्रधान ट्रस्ट'

लुधियाना में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में वेदों के परम-भक्त, आर्य संस्कृति के प्रतीक, वैदिक सभ्यता के प्राण, आचार्य प्रवर, योगीराज श्री कृष्ण जन्म अष्टमी के उपलक्ष्य में एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया। समारोह यज्ञ से प्रारम्भ हुआ, जोकि प० राजेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस यज्ञ मे 25 यजमानों ने बड़ी श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

आर्य जगत के वरिष्ठ नेता श्री रणवीर जी भाटिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि श्रीकृष्ण सोलह कला परिपूर्ण थे। इसके साथ ही स्वामी सुमनायति जी, श्री प० वेद प्रकाश जी शास्त्री, महाशय ज्ञान चन्द, श्री श्रवण कुमार जी आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए

भार्गव नगर जालन्धर मे वेद प्रचार

आर्यसमाज वेद मन्दिर भार्गवनगर जालन्धर में जन्म अष्टमी के उपलक्ष्य में वेद सप्ताह मनाया गया है। जिसमें एक सप्ताह तक घर-घर में पारिवारिक सत्संग किए गए। श्री जग्गी जोश जी स्टोर कीपर आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के घर से पारिवारिक सत्संग की शुरूआत की गई। विशेष उत्सव 14-8-90 दिन मंगलवार रात को किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने की। योगीराज कृष्णचन्द्र महाराज जी के जीवन चरित्र पर विशेष रोशनी डाली गई।

श्री प० सन्त राम जी, श्री सुखदेव राज जी, श्री प० मनोहर लाल जी, श्रीमती वीरा देवी, श्रीमती प्रकाश देवी जी ने मधुर भजनों से सबको निहाल किया।

नवांशहर में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज नवांशहर की ओर से श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार एवम् जन सम्पर्क अभियान दिनांक 6-8-90 से 14-8-90 तक बड़े उत्साहपूर्वक चलाया गया।

इस दौरान लगातार नौ दिन भिन्न भिन्न मुहल्लों मे हवन यज्ञ एवम् सत्संग हुआ। यजुर्वेद के शतक मन्त्रों की आहुतियां भी दी गई। पूर्णाहुति जन्माष्टमी के दिन सम्पन्न हुई। जन्माष्टमी पर युग पुरुष योगी राज श्री कृष्ण जी महाराज के जीवन पर प० देवेन्द्र कुमार जी, श्रीमती प्रेमलता भुच्चर तथा सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, मन्त्री आर्य समाज ने प्रकाश डाला। स्कूल के बच्चों ने भी इस दिन अपने लेखों, कविताओं तथा गीतो द्वारा उनका गुणगान किया।

आर्य समाज नवांशहर की ओर से यजमान परिवारों तथा अन्य लोगो को इस अभियान के दौरान स्वाध्याय एवम् प्रचार हेतु साहित्य बांटा गया। प० देवेन्द्र कुमार जी ने प्रतिदिन यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया तथा सभी आर्यजनों ने पुष्प वर्षा करके परिवारों का सम्मान बढ़ाया। श्रीमती इन्दुमति जी गौतम ने यहां प्रतिदिन यजुर्वेद मन्त्रो का अर्थ सहित उच्चारण करते हुए आहुतियां दिलवाई, वहां श्री राजेन्द्र कुमार प्रेमी प्रचार मन्त्री तथा श्रीमती प्रेम लता भुच्चर उप मन्त्री ने अपने अपने गीतो द्वारा सत्संगो को रोचक बनाया। श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मन्त्री आर्य समाज नवांशहर प्रतिदिन इस अभियान के उद्देश्य पर प्रकाश डालते रहे। उन्होंने लोगो को स्वाध्याय करने, आर्य समाज की गतिविधियो मे भाग लेने तथा साप्ताहिक सत्संगो में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया।

आर्य समाज बरेटा मण्डी का चुनाव

आर्य समाज बरेटा मण्डी (पंजाब) का चुनाव गत दिनो श्री गोपी राम जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए।

1. संरक्षक—श्री गोपीराम जी।
2. प्रधान—श्री ज्ञानसिंह जी।
3. उप-प्रधान—श्री बनारसीदास गुप्ता।
4. मन्त्री—श्री भागीरथ लाल सिंगला।
5. कोषाध्यक्ष—श्री नारायणदास जी गर्ग।
6. अन्तरंग सदस्य—बीबी दानी देवी, श्री सज्जन कुमार जी, श्री दर्शन कुमार जी, श्री दीवान चन्द सिंगला, श्री सूरज प्रकाश जी। एक सदस्य चुनने का अधिकार श्री प्रधान जी को दिया गया।

—ज्ञानसिंह प्रधान

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में वेद सप्ताह

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप मे श्रावणी पर्व (वेद सप्ताह) दिनांक 6-8-90 रक्षा बन्धन से दिनांक 14-8 90 श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात तथा सायंकाल सामवेद पारायण यज्ञ श्री प० कर्मवीर जी शास्त्री एम० ए० प्राध्यापक श्री दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय हिसार (हरियाणा) की अध्यक्षता मे आर्य समाज नंगल के पुरोहित श्री प० दुलाल चन्द जी विद्यावाचस्पती द्वारा सम्पन्न कराया गया।

इन्द्र कुमार शर्मा
मन्त्री

जिला आर्य सभा कपूरथला का गठन

26-8-90 रविवार को जिला कपूरथला की सब आर्य समाजो के अधिकारियों की एक बैठक 12-30 बजे दोपहर सभा कार्यालय में श्री आशानन्द जी आर्य सभा संगठन मन्त्री की प्रधानता मे हुई। सर्वसम्मति से जिला कपूरथला की आर्य सभा का गठन किया जिसमे यथा निम्न अधिकारी चुने गए।

प्रधान श्री आनन्द किशोर पसरीचा सुलतानपुर लोधी। उप-प्रधान श्री हरि सिंह कपूरथला। उप-प्रधान श्री बनारसी दास जी फगवाड़ा। मन्त्री श्री बाल कृष्ण जी सभ्रवाल फगवाड़ा। कोषाध्यक्ष श्री देवबन्धु फगवाड़ा। उप मन्त्री श्री हरि चन्द कपूरथला। अन्तरंग सदस्य : श्री राम नाथ भारद्वाज कपूरथला।

मोगा में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मोगा की ओर से वेद प्रचार सप्ताह तथा जन्म अष्टमी का पावन पर्व धूम-धाम से मनाया गया। तिथि 8-8-90 से तिथि 13-8-90 तक प्रतिदिन प्रातःकाल 6 बजे से 7 बजे तक वेद पारायण यज्ञ होता रहा। 7 से साढे सात बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनीक श्री जगत सिंह जी वर्मा के मधुर भजन और वैद्य सच्चिदानन्द जी के प्रवचन से समय बन्ध जाता था।

तिथि 14-8-90 को हवन यज्ञ के उपरान्त प्रिंसीपल आर० ऐल० सच्चदेवा की अध्यक्षता मे आर्य सस्थाओ के बच्चो की भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमे डी० एन० माडल स्कूल की कुमारी परविन्द्र प्रथम, आर्य गर्ल्ज स्कूल की कुमारी सविता सैकण्ड और आर्य माडल स्कूल की कुमारी भावना तृतीय रही। इसके पश्चात् डा० विजय, श्री मास्टर हरबंस लाल भूषण, महता ओ३म प्रकाश तथा सरदार हरनाम सिंह जी महजू के प्रवचन हुए। अध्यक्ष महोदय श्री आर० ऐल० सच्चदेवा ने बच्चो को ईनाम दिए अन्त मे प्रीति भोजन हुआ जिसमे पाच सौ भाई बहनों ने मिलकर भोजन किया। अन्त मे श्री के० के० पुरी प्रधान आर्य समाज ने सबका धन्यवाद किया।

—के० के० पुरी

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना को "रजत जयन्ति"

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना का रजत जयन्ति महोत्सव 21 अक्तूबर से 28 अक्तूबर 1990 तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर जिला आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। प्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी, भजनीक इस अवसर पर पधार रहे हैं।

—आशानन्द आर्य

आर्य युवक सभा स्पोर्ट्स विंग की प्रतियोगिता

गत दिनो लुधियाना में आर्य युवक सभा के स्पोर्ट्स विंग की प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस विंग द्वारा लुधियाना में कई स्थानों पर शाखाए लगाई जा रही हैं। इस अवसर पर क्रास कन्ट्री दौड की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन श्री रणवीर जी भाटिया ने किया और दौड के लिए झण्डी श्री ओम प्रकाश जी टण्डन ने दिखाई। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता श्री रोशन लाल जी शर्मा ने की और श्री भाटिया जी ने पुरस्कार वितरण किए। इस अवसर पर श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी प्रधान आर्य समाज ने श्री रोशन लाल जी शर्मा, श्री रणवीर जी भाटिया, श्री राजेन्द्र महेन्द्रु, श्री मुकेश भल्ला, श्री प्रमोद कुमार गुप्ता को आर्य युवक सभा की ओर से शील्डें प्रदान की।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज जी० टी० रोड फिरोजपुर छावनी में वेद प्रचार सप्ताह' 13 अगस्त 1990 से 19 अगस्त 1990 तक सोत्साह मनाया गया। प्रतिदिन यजुर्वेद शतक गुटके मे से मन्त्रों की आहुति के साथ पाठ किया गया। विशेष रूप से पंडित निरंजन देव जी महोपदेशक एव पंडित श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, के सुमधुर भक्ति सगीत कार्यक्रम को लोगों ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना। साथ ही 14 अगस्त 1990 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी एव 15 अगस्त 1990 को स्वतन्त्रता दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया एव उक्त दिवसों के महत्त्व परस्थानीय विद्वानो ने प्रकाश डाला तथा अपने विचारों से जनता को अवगत कराया। लोगो ने वेद प्रचार सप्ताह के इन कार्यक्रमो की खूब सराहा।
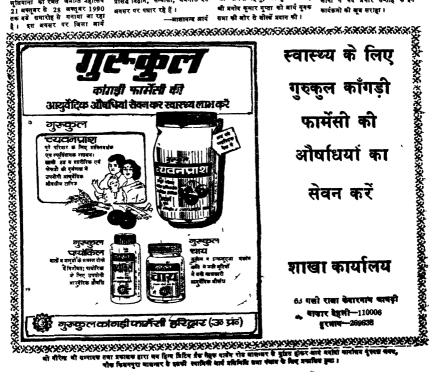
श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस [illegible] रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 24, भाद्रपद 25 सम्वत् 2047 तदनुसार 6/9 सितम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

जय हिन्दी—जय देव नागरी

ले०—श्री प्रो० भद्रसैन वर्णाचार्य होशियारपुर

अजय—मित्र ! सोमेश आओ हिन्दी बाजार चलें।

सोमेश—आज क्या उधर कोई विशेष कार्य है ?

अजय—हां, वहां के दो मित्रों ने आमन्त्रित किया है।

दोनो मित्र जब हिन्दी बाजार पहुंचे, तो देखा कि बाजार के प्रारम्भ में ही एक सुन्दर सफेद वस्त्र बन्धा हुआ है और उस पर लिखा है—राष्ट्र भाषा प्रेमी—आपका स्वागत करते हैं। प्राय हर दुकान पर जगह-जगह जय हिन्द, जय नागरी के रंगीन आघोष टंगे हुए हैं। इन आघोषो से इस बाजार की शोभा अनोखी ही झलकती है। बाजार के बीच मे एक नामपट्ट पर लिखा है—

'भारत की एकता—हिन्दी की विशेषता' बाजार की समाप्ति पर एक अन्य पट्ट पर लिखा था—'अपने व्यवहार में हिन्दी को अपनाकर, उसे अमर बनाइए।'

इस नए परिवर्तन को देखते हुए दोनों मित्र अपने मित्र के आवास पर पहुंचे। परस्पर अभिवादन के पश्चात आवश्यक बातचीत और जलपान हुआ। इसकी समाप्ति पर सुमनेश ने कहा—मित्रो ! आप कुछ देर रुको, तो बहुत अच्छा हो, क्योंकि अभी यहां हिन्दी के एक अनन्य उपासक और प्रतिष्ठित प्राध्यापक आ रहे हैं। अत: अच्छा हो हम सब मिल कर उन का स्वागत करें।

अजय—क्या बाजार मे इसी दृष्टि से आयोजन किया हुआ है ?

सुमनेश—हां, यह सारा आयोजन उन्हीं के स्वागत के लिए ही है।

तभी थोड़ी देर में प्रतिष्ठित प्राध्यापक वहां पधारे। सभी ने उनका स्वागत किया और अभिवादन के साथ बैठने पर वार्तालाप प्रारम्भ हुआ।

सोमेश—अच्छा हो, इस प्रसग को स्पष्ट करने के लिए आप हिन्दी भाषा की पृष्ठभूमि को पहले बताएं।

प्राध्यापक—भारत एक प्राचीन और विशाल देश है तथा इस का साहित्य भी बहुत समृद्ध है। भारत मे प्रारम्भ से ही धर्म, ज्ञान के क्षेत्र मे खुली स्वतन्त्रता रही है। यहां इन के सम्बन्ध मे कभी भी कट्टरता, सकीर्णता नहीं छाई। इसीलिए यहां हजारों वर्ष तक संस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार रहा। साधारण जनता जब सस्कृत से दूर होने लगी तो आज से तीन हजार साल पूर्व संस्कृत के साथ ही साथ प्रदेश प्रदेश के अनुरूप प्राकृत भाषा सामने आई और कुछ समय पश्चात् पाली भी आ चुकी। जैन बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा के साथ उन का साहित्य प्राकृत पाली के साथ सस्कृत मे भी रचा जाने लगा। इन धर्मों और भाषाओ का बिना रोक-टोक के प्रचार चलता रहा।

सोमेश—भारतीय भाषाओ के प्रसार मे हिन्दी भाषा ने कब प्रवेश किया।

प्रा०—आज से पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व आधुनिक भारतीय भाषाओ तमिल, बगला आदि का श्रीगणेश हुआ। ये अपने-अपने क्षेत्र मे सस्कृत, प्राकृत, पाली के साथ पनपने लगीं। सारे देश की साझी भाषा के रूप मे सस्कृत का स्थान अक्षुण्ण रहा। इसीलिए इन सभी भाषाओ मे सस्कृत की तत्सम तद्भव शब्द राशि, व्याकरण प्रक्रिया, वस्तु कथा और काव्य लक्षण प्राप्त होते हैं। तभी तो सस्कृत को इन भाषाओ की जननी तथा धात्री कहा जाता है।

अवधि ब्रज-राजस्थानी आदि स्थानो में से निकलती हुई हिन्दी भाषा भी सामने आई। हजारो कवियो, सन्तो, भक्तों, विद्वानों ने हिन्दी साहित्य की हर विधा को पल्लवित-पुष्पित और फलित किया।

अजय—भारतीय भाषाओ के इतिहास के साथ भारत के भौगोलिक परिवेश तथा सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात कर दिया जाए तो मेरे विचार से यह पृष्ठ भूमि 'सोने में सुहागा' हो सकती है ?

प्रा०—ससार के इतिहास मे भारत का एक प्रतिष्ठित स्थान है। भारत के प्राचीन और विशाल होने से इसकी सीमाओ मे समय समय पर परिवर्तन आया। कभी आर्यावर्त और कभी भारत के नाम से इसकी प्रसिद्धि चर्चित हुई। विशाल भूखण्ड होने के कारण कभी अनेक अनेक छोटे छोटे राज्यों के रूप मे और कभी सामूहिक रूप मे यहां प्रशासन चला। भारत का विशाल भूखण्ड—मैदानी, पहाडी, पठारी, रेतीला और समुद्रतटीय है। अत यहां प्रारम्भ से ही अनेक तरह के खान-पान, रहन-सहन, रीति रिवाज एव वेश भूषायें प्रचलित हुई। सौ वर्ष पूर्व तक आज की तरह यातायात और दूर सचार के साधन विकसित और प्रचलित नही थे। अत बहुत कम व्यक्तियो का सारे भारत मे परस्पर सम्पर्क होता था। केवल तीर्थ यात्रा, धर्म प्रचार और व्यापार ही सम्पर्क के साधन थे।

सर्वेश—जैसे कि यह पढाया जाता है कि आधुनिक हिन्दी वीर गाथा काल, भक्तिकाल और रीतिकाल के रूपों से निकलती हुई आधुनिक रूप मे प्रतिष्ठित हुई है। अच्छा हो हिन्दी भाषा के आधुनिक रूप के प्रारम्भ पर भी कुछ प्रकाश डाला जाए ?

प्रा०—हिन्दी भाषा का समृद्ध साहित्य स्वत इसके पूर्वकालो या पूर्व रूपो को प्रमाणित करता है। पुनरपि यह एक सर्व प्रसिद्ध बात है कि अग्रेज भारत मे व्यापार करने की दृष्टि से आए थे। पर जब उन्होने यहां प्रशासन को छोटे-छोटे टुकडो मे बटे हुए तथा परस्पर सिरफटौल करते हुए देखा तथा अनुभव किया कि प्रशासन मे सर्वत्र अव्यवस्था है। शासक वर्ग अपने मन-मौजीपन मे मस्त हैं, तो अपनी होशियारी से इन्हीं को आपस में लडाया और स्वय यहां के शासक बन गए। अपने शासन की सुदृढता के लिए अग्रेजो ने एक सेना रखी, उस के आवागमन और प्रशासन को काबू मे रखने के लिए अग्रेजो ने सडको, रेलो तथा स्कूलो का जाल बिछाना शुरू किया। इन्हीं दिनो मे ही औद्योगिक, यान्त्रिक परिवर्तन भी यूरोप से भारत मे आया। प्रशासनिक सुविधा और सुदृढता के लिए जहां अग्रेजों ने जनता से सम्पर्क के लिए सम्पर्क भाषा की ओर ध्यान दिया। प्रशासनिक, औद्योगिक, यान्त्रिक परिवर्तनो के कारण भारतीयों के विचारो मे हलचल शुरू हुई। इस हलचल को दैनिक-साप्ताहिक आदि पत्रो के माध्यम से भी प्रकट किया जाने लगा। इन्ही दिनो बगाल मे ब्रह्म समाज ने शिक्षितो मे नई लहर शुरू की। इसके कुछ समय बाद 1865 ई० के आस-पास महर्षि दयानन्द ने भी भारतीयो को झकझोरना प्रारम्भ कर दिया।

हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र मे भारतेन्दु जैसे लेखक भी सुधार की भावनाओं के साथ खडी बोली मे रचनाये करने लगे। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी ने अपने पैर जमाए। जैसे-जैसे स्वाधीनता की भावना बलवती हुई, वैसे वैसे भारत की राष्ट्र भाषा के रूप मे हिन्दी सामने आने लगी। उन दिनो के भारतीय धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय नेताओ ने भी यह अनुभव किया, कि भारत की साझी भाषा हर तरह से हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी भाषा के साहित्य ने हर विधा से हिन्दी को समृद्ध बना कर राष्ट्र भाषा के रूप मे साकार करने का हर सम्भव प्रयास किया।

अजय—अभी हम जब बाजार से आ रहे थे, तो एक स्थल पर नामपट्ट पर लिखा था—'हिन्दी को अपनाइए, एकता को बढाइए' इस आघोष का क्या भाव है ?

प्रा०—आज चाहे विज्ञान के कारण प्रकट हुए यातायात और सन्देश सचार साधनों से हम एक-दूसरे के निकट आ चुके हैं। पुनरपि भारत मे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

14 सितम्बर (हिन्दी दिवस) पर—

देश स्वतन्त्र है पर उसकी भाषा पर आज भी प्रतिबन्द है

लेखक—श्री डा० प्रशान्त जी वेदालंकार, 7/2 रूपनगर दिल्ली—7

जब भारत स्वतन्त्र हुआ था तो बी० बी० सी० लदन ने महात्मा गांधी से विश्व के नाम एक संदेश देने के लिए कहा था। तब महात्मा गांधी जी का उत्तर था कि विश्व से कह दो कि गांधी अब अंग्रेजी नहीं जानता। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गांधी का यह वाक्य इस बात का संकल्प था कि देश की भाषा अब केवल हिन्दी होगी। अंग्रेजी का स्थान केवल एक विदेशी भाषा के रूप में रहेगा। किन्तु बड़े दु:ख के साथ लिखना पड रहा है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 43 वर्षों के बाद भी इस देश में अंग्रेजी का वर्चस्व है। चवालीसवें स्वाधीनता दिवस पर देश के प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने देश की भाषा समस्या के सम्बन्ध मे एक शब्द भी नहीं कहा। जबकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के वे प्रेमी माने जाते हैं। यदि वी० पी० सिंह ने हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का सकल्प किया होता तो वे लाल किले की प्राचीर से इसकी अवश्य घोषणा करते। उन्होंने विदेशों में जाकर हिन्दी के प्रयोग की बात अवश्य कही है। पर अभी उनके कथन की परीक्षा शेष है।

सबसे बड़ी शिकायत देश के राष्ट्रपति से है। उन्होंने सदा की भांति इस वर्ष भी स्वाधीनता दिवस की पूर्व सध्या पर अपना संदेश अंग्रेजी भाषा में दिया। उन्होंने अपने सदेश मे स्वतन्त्रता सेनानियों को आदर से स्मरण किया पर अंग्रेजी बोल कर वे उनका उपहास कर रहे थे। मानों कह रहे हों—उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए बलिदान किए, पर हम 43 वर्षों में भी अपनी भाषाओं को स्वतन्त्र नहीं करा सके। राष्ट्रपति यह भी नहीं जान सके कि देश में अच्छी तरह अंग्रेजी समझने वाले 2 प्रतिशत लोग हैं जबकि हिन्दी 65 प्रतिशत लोगों की भाषा है। तमिल भाषी भी अंग्रेजी जानने वालों से अधिक हैं।

14 सितम्बर, 1949 को संविधान के सत्रहवें भाग के 343 अनुच्छेद में देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया था। यह भ्रान्त धारणा है कि राष्ट्रभाषा की स्वीकृति केवल एकमत की अधिकता से हुई थी। वस्तुत: एकमत की अधिकता नागरी अंकों को स्वीकार करने के सम्बन्ध में 26 अगस्त '949 को कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में हुई थी न कि राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में। राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में संविधान सभा एकमत थी। हां, उसके स्वरूप के सम्बन्ध में अवश्य मतभेद थे।

सम्भवत: उस समय दृष्टिकोण यह था कि 1949 में प्रथम अथवा दूसरी श्रेणी में पढ़ने वाला छात्र 1965 तक एम० ए० कर चुकेगा और उसे इस प्रकार से शिक्षित किया जाएगा कि भारतीय भाषाओं में अपना सम्पूर्ण व्यवहार पूर्ण कर ले। पर धारा 343 (2) तथा 344 में ऐसी व्यवस्थाएं कर दी गईं कि 1965 के बाद भी अंग्रेजी बनी रहे। और यही हुआ। आज 1990 में भी अंग्रेजी यथावत् विद्यमान है जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपना स्थान नहीं लेने दे रही।

अंग्रेजी के पक्ष में सबसे प्रबल तर्क यह दिया जाता है कि सम्पूर्ण आधुनिक ज्ञान-विज्ञान आंग्लभाषा में ही उपलब्ध है, अत: उसके बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा होना असम्भव है। इसके अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दों का भारतीय भाषाओं में नितान्त अभाव है। जिसके फलस्वरूप अंग्रेजी शब्दों के बिना व्यवहार मे भी कठिनाई उपस्थित होगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अंग्रेजी का अत्यधिक महत्त्व है अतएव उसकी अपेक्षा करना मूर्खता है। आंग्लभाषा का महत्त्व प्रतिपादित करने के लिए कुछ अन्य तर्क भी दिए जाते हैं किन्तु वे सभी उपर्युक्त कारणों में अन्तर्गत किए जा सकते हैं, अत: उनका पृथक् उल्लेख करना व्यर्थ है।

ये सभी तर्क अत्यन्त लचर हैं। वास्तविकता यह है हमारे देश की महती शक्ति मात्र अंग्रेजी में नष्ट हो रही है। भारत का छात्र जितनी शक्ति (समय, बुद्धि और धन) अंग्रेजी में लगाता है यदि उतनी ही शक्ति वह किसी दूसरे, अपनी रुचि के विषय में लगा पाए तो यह निश्चित है कि वह अपने विषय के साथ अधिक न्याय कर सकेगा और उसमें मौलिक चिन्तन की क्षमता भी जागृति हो सकेगी। उसके अपने प्रिय विषय राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि के मध्य अंग्रेजी की दीवार खड़ी होती है, उसका सम्पूर्ण श्रम इस दीवार के लांघने में लग जाता है। परिणामत: विषय को वह जानता मात्र है, उसकी गूढ़ता में जाने के लिए अनिवार्य चिन्तन, मनन एवं निदिध्यासन की सीढ़ियों पर चढ़ने का न तो उसके पास अवकाश ही होता है और न उस प्रकार की क्षमता।

यह स्पष्ट कर देना भी अनिवार्य है कि शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क में ज्ञान-विज्ञान का संग्रह नहीं होता, वरन् चिन्तन तथा परिस्थिति के अनुसार काम करने की क्षमता प्राप्त करना होता है। मात्र अंग्रेजी के ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से यह क्षमता तो उत्पन्न होती नहीं वरन् भारत का व्यक्ति अपने देश की परिस्थितियों से हटकर कुछ दूर की सोचने लगता है। यहां की परिस्थिति में और विदेश की परिस्थिति में महान् भेद है। अत: दोनों देशों के अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र आदि विषयों के सिद्धान्तों में भी भेद होना अनिवार्य है। इस अनिवार्य भेद का परिज्ञान अपनी भाषाओं के बिना असम्भव है।

इस प्रकार प्रत्येक देश की भूमि व वनस्पतियों में भेद के कारण कृषि विज्ञान एवं वनस्पतिशास्त्र से सम्बन्धित अनुसन्धानों से निकले निष्कर्ष भी प्रत्येक देश के पृथक्-पृथक् होते हैं। जलवायु की भिन्नता के कारण प्रत्येक देश का चिकित्सा-विज्ञान भी पृथक्-पृथक् विकसित होना चाहिए। हमारा निश्चित मत है कि अपने देश की सर्वांगीण उन्नति के लिए अंग्रेजी में लिखा ज्ञान-विज्ञान बहुत उपयोगी नहीं है। जब तक हमारे देश का मस्तिष्क अपने ही देश की जलवायु, भूमि, परिस्थिति आदि का अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण-परीक्षण नहीं करेगा तब तक न उसमें मौलिकता से विचार की क्षमता जागृत होगी और न उसका ज्ञान का अपने देश के लिए कोई उपयोगी ही सिद्ध हो सकेगा।

प्रश्न है कि अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान को भारतीय छात्र किस प्रकार सीखे? पर यह प्रश्न अपने आप मे अपूर्ण है, प्रश्न तो यह है कि विश्व की विविध भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को भारतीय विद्यार्थी किस प्रकार हृदयंगम करे? रशियन, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के विविध विषयों की जानकारी भारत का व्यक्ति सम्बन्धित भाषा के अंग्रेजी अनुवादों से करता है। पर ये अनुवाद मूलभाव से—थोड़ी मात्रा में ही सही—निश्चय ही अवश्य हटे हुए होते हैं। अत: समस्या केवल अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान को भारतीय भाषाओं में लाने की नहीं है। समस्या का समाधान यह हो सकता है कि प्रत्येक विषय के कुछ विशिष्ट विद्वान् पृथक्-पृथक् भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर विषय की सामग्री का अनुशीलन करें और उसे भारतीय भाषाओं में सर्वथा मौलिक रूप से प्रस्तुत करें, और यदि वे आवश्यकता का अनुभव करें तो किसी कृति-विशेष का अविकल अनुवाद भी प्रस्तुत कर दें। जिस भाषा में वह विशिष्टता प्राप्त करने का इच्छुक हो उसे उस देश में कम से कम दो वर्षों के लिए भेजने की व्यवस्था की जाए।

यूरोप में छोटे-छोटे देशों ने अपनी भाषा का वर्चस्व अपने यहां स्थापित किया है। इंग्लैण्ड तथा अंग्रेजी के अत्यन्त निकट रहने के बाद भी इन देशों की प्रजा अंग्रेजी से सर्वथा अपरिचित है फिर भी वे देश कला, साहित्य व विज्ञान में बहुत आगे हैं। पता नहीं क्यों भारत सरकार यूरोप से इस विषय में प्रेरणा प्राप्त नहीं करती। बहु भाषा-भाषी भारतवर्ष के लिए एक समभाषिकता अत्यन्त आवश्यक है।

यह निश्चित है कि स्वतन्त्र भारत में शासन के साथ सामान्य जनता का सम्पर्क इसलिए नहीं जुड़ पा रहा कि देश की भाषा हिन्दी का त्याग करके राजकाज में विदेशी अंग्रेजी का अधिक प्रयोग हो रहा है। जब इस देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या दो प्रतिशत से अधिक नहीं है, तब भी अंग्रेजों का वर्चस्व बने रहने के कारण भारत सरकार का प्रजातन्त्र, समाजवादी समाज-व्यवस्था तथा कल्याणकारी शासन होने का दावा निरा खोखला हो जाता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव तथा मध्य प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों ने सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का बहिष्कार करने का निर्णय लेकर क्रांतिकारी कार्य आरम्भ किया है। पर उनके मार्ग में भी रोड़े अटकाए जा रहे हैं।

अनुच्छेद 351 के अनुसार संविधान मे स्वीकृति संघीय राजभाषा हिन्दी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे हिन्दी प्रदेशों में बोली जाने वाली क्षेत्रीय हिन्दी नहीं है, वरन् यह संविधान की अष्टम् सूची में परिगणित सभी भारतीय भाषाओं की समन्वयात्मक हिन्दी है, जो भारत की भावात्मक एकता का माध्यम बन सकती है। अर्थात् संविधानानुमोदित हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप है, न कि क्षेत्रीय। देश की सभी भाषाओं को निकट लाने के लिए संविधान (धारा) 351 के अनुसार हिन्दी का स्वरूप संस्कृत शब्दावली पर आधारित होना चाहिए। इसी कारण त्रिभाषा सूत्र में में भी संस्कृत की गणना अनिवार्य है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

जातपात की राजनीति—३

गांधी जी ने 1933 में जिस खतरा को टालने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई थी। आज की सरकार ने उसी खतरे को घिनौने रूप में हमारे सामने ला खड़ा किया है। मण्डल आयोग की सिफारिशें विगत 10 वर्ष से सरकार के विचाराधीन थी वह इन्हें यदि लागू न कर रही थी तो केवल इस लिए कि इनकी प्रतिक्रिया भी अत्यन्त असुखद होगी। जो कुछ कांग्रेस की सरकार ने न किया था वह जनता दल की सरकार ने कर दिया है। इसमें स्पष्टतया इसकी राजनीति का हस्तक्षेप है। जहां तक पिछड़ी जातियों की भलाई का प्रश्न है कांग्रेस को इसकी कोई कम चिन्ता न थी। परन्तु कांग्रेस के नेता यह भी समझते थे कि इसकी प्रतिक्रिया जो दूसरों पर होगी उसका उत्तर देना कठिन हो जाएगा, यह ही अब हो रहा है। जनता दल की सरकार ने इस मामले में जल्दबाजी से काम लिया है तो केवल इस डर से कि देवीलाल कहीं पिछड़ी जातियों की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल न हो जाएं। देवीलाल ने जो रैली 9 अगस्त को दिल्ली में की थी उसमें बहुजन समाज पार्टी के नेता श्री कांशीराम भी शामिल हुए थे। इस पर सरकार को यह चिन्ता हुई कि कल को देवीलाल और बहुजन समाज पार्टी में बीच कोई समझौता न हो जाए। इसलिए प्रधानमन्त्री ने तुरन्त यह घोषणा कर दी कि सरकार मंडल आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करती है और इसे क्रियान्वित करने के लिए कार्रवाई भी प्रारम्भ कर दी गई।

इसकी प्रतिक्रिया अब एक नए तूफान के रूप में सामने आ रही है। जो लोग आर्थिक रूप में पिछड़े हैं उनका सम्बन्ध चाहे किसी वर्ग या समुदाय से हो सरकार यदि इनकी भलाई के लिए कुछ करती है तो इस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु मंडल आयोग की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने 27 प्रतिशत सरकारी नौकरियां इन लोगों के लिए सुरक्षित कर दी गई है जो पिछड़ी जातियों की सूची में शामिल होंगे। यह 27 प्रतिशत उन 22·25 प्रतिशत के अतिरिक्त होगी जो इससे पूर्व अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए सुरक्षित की जा चुकी है। इस प्रकार यह 27 प्रतिशत मिलकर 49·50 प्रतिशत बन जाती है।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, हमारे समाज का जो पिछड़ा वर्ग है उसकी मदद होनी चाहिए। यदि सरकार इनके लिए कुछ करती है तो इस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु एक प्रकार के गरीब वर्ग और दूसरी प्रकार के गरीब वर्ग, इन दोनों के बीच भेदभाव क्यों किया जाए। अनुसूचित जातियां और जनजातियां इनमें वह लोग शामिल किए गए हैं जो आर्थिक और सामाजिक रूप में पिछड़े समझे जाते हैं। परन्तु पिछड़े तो अन्य जातियों में भी है।

ब्राह्मणों और क्षत्रियों में कई आर्थिक रूप में पिछड़े हैं। इनमें से कई अपने बच्चों को उच्च शिक्षा नहीं दिला सकते, क्योंकि उनके आर्थिक साधन सीमित होते हैं। ऐसे लोगों को वह सुविधाएं क्यों न मिले जो अनुसूचित जातियो और पिछड़ी जातियों के बच्चों को अब दी जाएंगी। इस सम्बन्ध में यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारे संविधान की धारा 332, 334, 335, 338, 339, 341 और 342 में अनुसूचित जातियां और जनजातियां इनके अधिकारों की रक्षा के लिए सरकार को कई प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं। राष्ट्रपति ही यह फैसला करते हैं कि अनुसूचित जातियों में किसे शामिल करना है?

निष्कर्ष यह कि विगत 40 वर्ष से निरन्तर अनुसूचित जातियों और जनजातियों की भलाई के लिए सरकार कई पग उठा रही है। इससे भी कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जिन्हें हम हरिजन कहते हैं उनमें यह अनुसूचित जातियों वाले भी शामिल हैं। इनमें से कई बड़े-बड़े पदों पर पहुंच चुके हैं। आर्थिक रूप में भी इनमें से कई अब लखपति और कई करोड़पति बन गए हैं। यह लोग अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कमजोर और पिछड़े वर्ग को दबाने का प्रयास करते हैं। इसलिए जो सुविधाएं निचले वर्ग को मिलनी चाहिए वह इन्हें नहीं मिलती।

अब सरकार ने घोषणा की है कि 27 प्रतिशत सरकारी नौकरियां केवल आर्थिक और सामाजिक रूप में पिछड़ी जातियो को मिला करेगी। परन्तु केवल उन्हीं को जिनका सम्बन्ध अनुसूचित जातियों, जनजातियों और पिछड़ी जातियो से होगा। निष्कर्ष यह कि अब सरकार हिन्दू समाज में फिर वही फूट डालने लगी है जिसके विरुद्ध गांधी जी ने 1933 में मरणव्रत रखा था। अनुसूचित जातियां या जनजातियां अधिकतर हिन्दुओं की पिछड़ी जातियां ही है। अब इनकी देखादेखी ईसाईयों ने भी यह सुविधाएं मांगनी शुरू कर दी है। वह कहते हैं कि ईसाईयों में भी पिछड़ा वर्ग है। इसे भी वही सुविधाए मिलनी चाहिए जो अनुसूचित जातियों और जनजातियों को देने का फैसला किया है।

इस सम्बन्ध में यह बात भी उल्लेखनीय है कि जब हमारे देश का संविधान बन रहा था उस समय भी यह प्रश्न उठा था कि जिन्हें हरिजन या पिछड़ा वर्ग कहा जाता है वह किस-किस वर्ग में हैं ताकि सबको एक जैसे अधिकार दिए जाएं और यह फैसला हुआ था कि छूतछात की बीमारी केवल हिन्दुओं में ही है। इसलिए हिन्दू हरिजनों को ही यह सुविधाए दी जाए। अकालियों ने कहा था कि सिक्खों में भी ऐसे लोग हैं जो पिछड़े समझे जाते हैं। उन्हें भी यह सुविधाएं मिलनी चाहिए। सरदार पटेल ने यह कह कर यह मांग रद्द कर दी थी कि सिख धर्म छुआछात की अनुमति नहीं देता। परन्तु बाद में अकालियों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया और सिखो की चार पिछड़ी जातियों को इसमें शामिल कर लिया गया। जो कुछ वर्तमान सरकार ने किया है उसका यह परिणाम है कि अब ईसाई भी वही अधिकार मांगने लग गए हैं जो इस समय तक केवल हिन्दुओं के दलित व पिछड़े वर्ग को मिले हुए थे।

—वीरेन्द्र

यह आर्य समाज के लिए एक चुनौती है

मंडल आयोग की सिफारिशों पर अमल करने के निर्णय के तीन पक्ष हैं—राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक। मैं इस समय इसके राजनीतिक एव आर्थिक पक्षों पर बहस करना नहीं चाहता। परन्तु इन्हें भी दृष्टिविगत नही किया जा सकता, राजनीतिक पार्टियां और राजनीतिक नेता इस समय इस समस्या के आर्थिक पक्ष पर अधिक बल दे रहे हैं। चूंकि उनका यह विश्वास है कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए। इस लिए वह प्रत्येक समस्या के धार्मिक और सामाजिक पक्ष को दृष्टिविगत कर देते हैं। जो परिस्थितियां इस समय देश में उत्पन्न हो गई हैं वह इस प्रकार चिन्ताजनक हैं कि यदि उनका तुरन्त कोई समाधान तलाश न किया गया तो देश में एक ऐसा गृहयुद्ध आरम्भ हो जाएगा जो हमारे समाज के संगठन को खण्ड-खण्ड कर देगा। राजनीतिक पार्टियां आती जाती रहती हैं। कल तक कांग्रेस सत्ता में थी आज कई पार्टियां की मिली-जुली सरकार चल रही है। कल को कौन सी पार्टी देश पर राज करेगी इस सम्बन्ध में आज कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। परन्तु धार्मिक संस्थाएं कुछ मौलिक सिद्धान्तों के आधार पर काम करती हैं। उनके सामने किसी एक व्यक्ति या किसी एक वर्ग की स्वार्थपरता नही होती। वह कुछ सिद्धान्तों और कुछ आदर्शों के आधार पर काम करती हैं और जब देखती हैं कि कुछ राजनीतिक नेताओं की स्वार्थपरता और अवसरवादिता उनके किए कराए को मलियामेट कर रही है तो उनके लिए शांत रहना कठिन हो जाता है। मैं भी समझता हूं कि जो वातावरण देश में पैदा कर दिया गया है, उसने देश के कई महापुरुषों के किए कराए पर पानी फेर दिया है। इनके जो भी अनुयायी हैं। उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि ऐसे समय वह भी अपनी आवाज उठाएं और देश को तबाही से बचाने का प्रयास करें। जिसकी ओर हमारे राजनीतिक नेता, विशेषकर यह सरकार ले जा रही है।

हमारे देश में और भी कई महापुरुष हुए हैं जिन्होने मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रत्येक प्रकार के भेदभाव समाप्त करने का प्रयास किया था। परन्तु आज तो मैं केवल दो महापुरुषों का उल्लेख करना चाहता हू—महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी। महर्षि दयानन्द ने लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व यह कहा था कि जन्म के आधार पर किसी को बड़ा या छोटा नहीं कहा जा सकता। न कोई जन्म के आधार पर ब्राह्मण बनता है, न क्षत्रिय, न वैश्य और न शूद्र। जिसके जैसे कर्म होंगे, वैसा ही वह बनेगा। भगवान् कृष्ण ने भी अपने कर्मयोग का स्पष्टीकरण करते हुए कहा था कि कर्म करना मनुष्य का कर्त्तव्य है परन्तु इसका फल उसे क्या मिले इसका फैसला करना किसी और का काम है। निष्कर्ष यह कि यदि एक ब्राह्मण कुछ ऐसे काम करता है जिनसे उसके देश और उसके समाज को चोट पहुंचती है तो इसे ब्राह्मण कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। चाहे वह एक ब्राह्मण परिवार मे ही उत्पन्न हुआ हो। इसी प्रकार यदि एक पिछड़ी जाति का व्यक्ति अच्छे काम करता है, उसकी कार्यपद्धति से मानव जाति का कल्याण होता है तो फिर उसकी गणना उस पिछड़ी जाति मे नहीं हो सकती जहां से वह आया हो। उसकी गणना फिर ऊंची से ऊची जाति मे होनी चाहिए। अर्थात् वह

(शेष पृष्ठ 7 पर)

एक विचार :—

आर्य समाज पंजाबी (गुरुमुखी लिपि) को भी अपनाए

लेखक : चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, (उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा)
चौक नई कचहरी जालन्धर।

(गतांक से आगे)

अत: भारत विभाजन के पश्चात् पंजाब में जो लिपि का कुछ विवाद खड़ा हुआ वह ऐसे तत्त्वों के कारण हुआ जिन्होंने मजहब के साथ किसी विशेष भाषा अथवा लिपि को जोड़ दिया। अपनी अलग पहचान बनाने के आग्रह ने इसमें जलती पर तेल का काम किया। इसका जब विरोध राष्ट्रवादी तत्त्वों ने किया, तो उसका परिणाम और भी अच्छा न निकला क्योंकि वह राष्ट्रवादी जो राष्ट्रभाषा-हिन्दी के पक्षधर भी थे और सारे भारत को इसी राष्ट्र भाषा हिन्दी से और इसकी वैज्ञानिक लिपि से, सगठित रखना चाहते थे और इसलिये भी कि इस भू-भाग की भाषा व लिपि भी वही राष्ट्र भाषा थी। उलटे मतान्ध व स्वार्थी तत्त्वों द्वारा ऐसे आन्दोलन को संकुचित भावना वालों का आन्दोलन कहा जाने लगा। एक समय वह भी आया कि "पंजाबी" को दोनों लिपियों में "देवनागरी" और "गुरुमुखी" में सरकारी ढंग से मान्यता दी जाने बारे कहा गया, परन्तु उस समय के नेताओं ने यदि इसे स्वीकार कर लिया होता तो उचित ही होता। बाद में केवल गुरुमुखी ही पजाबी और पंजाबी ही गुरुमुखी बन कर रह गई और राष्ट्रवादी तत्त्वों की पुकार सरकारी राजनीति में दम तोड़ कर रह गई।

4. पर अब जबकि भारत में पंजाबी बोली/भाषा के लिये केवल गुरुमुखी लिपि ही राज्य भाषा व लिपि हो गई है और इसकी समृद्धि के लिए सब दिशाओं से निरन्तर विशेष प्रयत्न चल रहे हैं, कई विश्वविद्यालय तक बना दिए गए हैं, इसके विपरीत आज तक हिन्दी को पंजाब में प्रोत्साहन देने के लिए जितने भी प्रयास किए गए उतने ही वेग से इसे समाप्त करने के यत्न चल रहे हैं। तो क्या यह सद्भावना रूप में उचित न होगा कि अब पंजाबी को उसी रूप में अपना लिया जावे जैसी कि पजाब सरकार, यहां तक कि भारत सरकार की कार्य पद्धति है और जैसा कि अन्य भाषा व लिपियों को अपना रखा है। विशेषकर भारत के पजाब भूभाग के निवासियों को पजाबी पर उसी रूप में छा जाने की आवश्यकता है जैसे किसी अन्य भाषा व लिपि पर, ताकि यह किसी मजहब विशेष की भाषा न रह कर सब की भाषा व लिपि हो। भाषा व लिपि किसी की बपौती नहीं होती। जो भी सीखना, पढ़ना, बोलना, लिखना चाहे, स्वतन्त्र है।

इस सन्दर्भ में आर्य समाज जैसी प्रबुद्ध संस्था को भी ध्यान देना आवश्यक है कि पंजाब में यदि पंजाबी गुरुमुखी लिपि में लिख कर भी अपने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को बढ़ाया जावे और सारा वैदिक साहित्य इसी लिपि में प्रकाशित कर ग्राम-ग्राम व नगर-नगर में प्रचारित व प्रसारित किया जावे, तो इस धार्मिक सस्था का मिश्नरी ध्येय अधिक सुगमता से पूरा किया जा सकता है, जैसे कि जितना प्रचार आर्य समाज द्वारा भारत विभाजन से पूर्व पंजाब में "उर्दू फारसी लिपि" में किया गया, उस समय आर्य समाज की लहर की लपेट में सारा पंजाब आ गया था। अब भी पंजाब वासियों में और विशेषतया आर्य समाजियों में भरपूर सामर्थ्य है कि गुरुमुखी लिपि मे पजाब में वैदिक नाद गूंजा दें। शेष अधिकार (वहम, पाखण्ड और भुरम) वेदों के प्रकाश में स्वयमेव छट कर रह जाएगा।

5. आर्य समाज एक विश्व व्यापी धार्मिक संस्था है। वेदो का प्रचार करना व वैदिक धर्म का प्रसार करना, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इसका लक्ष्य है। किसी भाषा/बोली/लिपि से इसका कोई वैर विरोध नहीं। अपने-अपने स्थान पर प्रत्येक भाषा उचित व शोभनीय है। यदि हिन्दी भारत की हमारी राष्ट्र भाषा है और अंतर्राष्ट्रीय भाषा आजकल अंग्रेजी को कहा जा सकता है तो फिर पंजाब वासों के लिए, इन परिस्थितियों में, पंजाबी (गुरुमुखी लिपि में) प्रांतीय भाषा क्यों पीछे रहे? क्या ईसाई आदि मतावलम्बियों ने कभी ऐसा विरोध किया? वह तो सारे संसार में जहां भी जाते हैं, वहां की उसी भूभाग की भाषा को तुरन्त अपना कर, अपना साहित्य उसी भाषा में प्रकाशित कर ईसाईयत का प्रचार व प्रसार आरम्भ कर देते हैं और सफलता भी पाते हैं। हम तो अब अपनी जन्म भूमि के प्रांत में ही "बेगाने" से बनते नजर आ रहे हैं, क्योंकि जब कभी टेलीवीजन इत्यादि पर, उदाहरणार्थ किसी स्थान पर पंजाबी में (गुरुमुखी लिपि में) कुछ लिखा आता है तो हमारे अपने छोटे बड़े, जो गुरुमुखी पढ़े नहीं होते, वह कहने लगते हैं कि "पता नहीं की लिखिया होया है, सानू पंजाबी नहीं औंदी।" अर्थात पंजाबी में ही बोल कर कह रहे हैं कि "हमें पंजाबी नहीं आती, पता नहीं क्या लिखा हुआ है।" जबकि वास्तविकता यह है कि वह स्वयं ठेठ पंजाबी हैं, पंजाबी बोलते हैं, पजाब में जन्म लिया है, सारे रीति, रिवाज, खान, पान, पहरावा सब पंजाबी है, परन्तु गुरुमुखी लिपि में पंजाबी पढ़ना लिखना न आने के कारण, उन्हें ऐसा कहना पड़ता है, और इस पर पंजाब की दूषित परिस्थितियों में शरारती मतान्ध लोग, कहने लगते है कि यदि पजाब में रह कर पजाबी नहीं आती तो यहां क्या कर रहे हो जो कुछ आता है वहां चले जाओ। अर्थात 'हिन्दी भाषी' क्षेत्रों में क्यों नहीं चले जाते। पंजाब तो पंजाबियों का है इत्यादि। इस प्रकार हम स्वयं अपनी ढाकी से अपने ऊपर चोट कर के स्वयं पराजित हो रहे हैं। नवीन पढ़ी लिखी पीढ़ी पर इस प्रकार के वातावरण का विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है और उनके हृदयों में निराशा पनपने लगी है। अत: हमें इस विषय में ध्यान देने की आवश्यकता है इसमें जितनी देर होगी, उतने ही गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूचि

गुरुकुल करतारपुर के वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम

गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर) का वार्षिक उत्सव 10 सितम्बर सोमवार से 16 सितम्बर 1990 रविवार तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ—प्रातः ,-30 बजे से 8-00 बजे तक। ब्रह्मा पूज्य महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी, मथुरा। वेदपाठ—गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी। भक्ति संगीत—श्री जगत वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

वैदिक गोष्ठि—मध्याह्न 10 से 12 बजे तक। विषय—'त्रैतवाद की पृष्ठभूमि'। विचारक—पूज्य महात्मा आर्य भिक्षु जी वानप्रस्थी, ज्वालापुर। प्रि० श्री वेदव्रत जी मेहरा, जालन्धर नगर।

सायं 4 बजे से 6 बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ। प्रवचन एव आशीर्वाद—श्री महात्मा प्रेम भिक्षु जी मथुरा। रात्रि—प्रवचन व भजन 8 बजे से साढे 9 बजे तक। संगीत—श्री जगत् जी वर्मा। प्रवचन—महात्मा आर्य-भिक्षु जी, ज्वालापुर।

11 सितम्बर 1990 मंगलवार—यज्ञ आदि पूर्व की भान्ति।

वैदिक गोष्ठी—त्रैतवाद पर प्रतिदिन 10 बजे से 12 बजे तक ही होगी। भिन्न-भिन्न विद्वान अपने विचार इस विषय पर रखेंगे।

यज्ञ के पश्चात् 15 सितम्बर को ध्वजारोहण तथा उद्बोधन पूज्य महात्मा प्रेम भिक्षु जी, मथुरा करेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम कक्षों का उद्घाटन ध्वजारोहण के तुरन्त पश्चात् होगा।

आर्य-सम्मेलन—10 से 12 बजे तक। अध्यक्ष—श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार जालन्धर। मुख्य अतिथि—श्री रजनीश जी गोयन्का, दिल्ली।

वेद-अष्टाध्यायी संस्कार विधि कण्ठस्थीकरण परीक्षाएं

विभिन्न गुरुकुलों से आए हुए अनेक छात्र कण्ठस्थ किए सम्पूर्ण वेद के मन्त्र या अष्टध्यायी के सूत्र या संस्कार विधि महर्षि दयानन्द द्वारा सम्पादित के मूलमन्त्र (कर्मकाण्ड की विधि सहित) मंच पर ही सुनाकर अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे तथा सफल परीक्षार्थियों को वेदी-यजुर्वेदी, सामवेदी, अथर्ववेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, पाणिनीय तथा संस्कार विशारद की उपाधियों से विभूषित किया जाएगा। प्रतिवर्ष कुल 14 परीक्षार्थियों में 20000/- बीस हजार रुपये के पुरस्कार वितरण करने की व्यवस्था की गई है।

निर्णायकों का निर्णय अन्तिम होगा।

पुरस्कार वितरण—जालन्धर नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रोशन लाल जी गुप्ता करेंगे।

ऋषि लंगर—12 बजे से 1 बजे तक।

महिला सम्मेलन—मध्याह्नोत्तर 1-30 से 4-30 बजे तक।

वेद मन्त्र वाचन हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर की छात्राएं।

संयोजिका—श्रीमती कमला जी आर्या, लुधियाना।

अध्यक्षता—श्रीमती ब्रह्मवती जी नारंग, देहरादून।

वक्ता—मान्य सुमता जी यति लुधियाना, महात्मा प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी मथुरा, श्रीमती सत्यवती जी चौधरी ज्वालापुर, श्रीमती विद्यावती कोछड़ पटियाला।

विशेष कार्यक्रम—आर्य कन्या हाई स्कूल की छात्राएं तथा आर्य मॉडल हाई स्कूल करतारपुर के छात्र अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ 5-00 से 6-00 बजे तक

वेद पाठ—गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी करेंगे

ऋषि लंगर—सायं 6-00 से 7-00 बजे तक

आर्य सम्मेलन रात्रि 7-30 से 10-00 बजे तक

विषय—आर्य समाज का भावी कार्यक्रम क्या हो?

अध्यक्ष—महात्मा प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी, मथुरा।

प्रवचन—प्रो. श्री भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़, महात्मा आर्य-भिक्षु जी, प्रि. श्री वेदव्रत जी मेहरा।

16 सितम्बर 1990 रविवार

प्रातः 6-30 से 8-30 बजे तक—यजुर्वेद पारायण यज्ञ।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा आशीर्वाद

प्रातः 8-30 बजे यज्ञ-ब्रह्मा महात्मा प्रेम भिक्षु जी मथुरा द्वारा।

प्रातःराश—9-00 से 9-30 बजे तक।

श्री गुरु विरजानन्द सम्मेलन मध्याह्न 9-30 1-30 तक

महर्षि दण्डी विरजानन्द जी को भजनों, आध्यात्मिक प्रवचनों तथा संस्मरणों द्वारा विभिन्न विद्वान् अपनी श्रद्धांजली अर्पित करेंगे। इसी मध्य ट्रस्ट एवं विद्यालय की वर्ष भर की उपलब्धियां, प्रगति तथा रिपोर्ट की प्रस्तुति के साथ-साथ गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी मन्त्रोच्चारण, श्लोक पाठ, संस्कृत गीतिका, भजन, सम्वाद, अन्त्याक्षरी, भाषण आदि बौद्धिक कार्यक्रम तथा योगासन, स्तूप निर्माण एवं अन्य रोचक कला-प्रदर्शन के साथ अपनी प्रतिभा व्यक्त करेंगे।

मुख्य अतिथि—प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्ता, जालन्धर।

वक्ता—सर्वश्री महात्मा प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी मथुरा, महात्मा आर्य-भिक्षु जी ज्वालापुर, भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आदि।

संगीत—श्री जगत वर्मा जी व श्री अजय कुमार जी शास्त्री।

ऋषि लंगर—1-30 बजे शान्ति पाठ के पश्चात् ट्रस्ट की ओर से होगा।

14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर—

राष्ट्रभाषा हिन्दी [अतीत वर्तमान एवं भविष्य]

ले०—श्री मनमोहन कुमार आर्य 196-B-2 चुक्खुवाला देहरादून

भारत के इतिहास में महर्षि दयानन्द प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने स्वाराज्य एवं स्वभाषा (देवभाषा संस्कृत एव आर्य भाषा हिन्दी) का उद्घोष किया था। उन्होंने प्राचीन आर्य साहित्य एवं इतिहास से प्रेरणा पाकर वैदिक धर्म एवं संस्कृत का पुनरुद्धार किया। अन्धविश्वास दूर कर सत्य एवं विज्ञान से परिपूर्ण देश का निर्माण करने एवं विश्व में वैदिक धर्म एव संस्कृति का प्रचार प्रसार करने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने वर्ष 1875 ई० में मुम्बई में "आर्य समाज" की स्थापना की। महर्षि के देश भक्ति युक्त विचारों से प्रेरणा पाकर आर्य समाज के अनुयायियों ने विदेशी ब्रिटिश शासन का विरोध किया एवं स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय योगदान दिया। स्वतन्त्रता आंदोलन वस्तुतः आर्य समाज की वर्ष 1875 में स्थापना से आरम्भ हुआ था जो 15 अगस्त, 47 को स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर समाप्त हुआ। स्वतन्त्रता आंदोलन के दिनों में क्रांतिकारियों एवं सत्याग्रहियों की सम्पर्क भाषा हिन्दी थी। आर्य समाज के कार्यों से यह सम्भव हुआ कि स्वतन्त्र भारत के संविधान में आर्य भाषा (हिन्दी) को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि आर्य समाज की स्थापना के समय हिन्दी की स्थिति दयनीय थी। महर्षि दयानन्द ने अपने सम्भाषणों, शास्त्रार्थों के लिए अहिन्दी भाषी होते हुए भी आर्य भाषा हिन्दी को चुना। स्वामी दयानन्द जी की मातृभाषा गुजराती थी। उनके निश्चित विचारों के कारण आर्य समाज के अनुयायियों ने हिन्दी प्रचार एवं विकास को एक प्रकार से अपना मुख्य उद्देश्य मानकर उसे न केवल स्वयं अपनाया अपितु धार्मिक एवं शैक्षणिक साहित्य तैयार कर इसके प्रचार प्रसार में अप्रतिम योगदान किया। देश भर में फैली आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों एवं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालयों का भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान है। दासत्व के दिनों में गुरुकुलों एवं डी. ए. वी. कालेजों में विज्ञान सहित सभी विषयों की पुस्तकें तैयार कर हिन्दी भाषा में अध्यापन किया गया। उन दिनों हिन्दी समाचार पत्रों, इतिहासज्ञों आदि में प्रायः आर्य समाजी अथवा आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित विद्वानों का ही बाहुल्य था।

देश के स्वतन्त्र हो जाने पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ। 10 वर्षों मे अंग्रेजी का का प्रयोग बन्द कर समस्त शासकीय कार्य अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी में किया जाना था। ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि आर्य समाज इस दिशा में उदासीन रहा। आर्य समाज की जो विचारधारा है उसको देखते हुए हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए आर्य समाज को अवश्य राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन करना चाहिए था। पंजाब में हिन्दी के लिए किया गया सत्याग्रह महत्वपूर्ण था परन्तु हमने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने हेतु पंजाब व अन्य राज्यों की तत्कालीन परिस्थितियों से शिक्षा ग्रहण नहीं की देश को स्वतन्त्र हुए 43 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान सद्यः प्राप्त न हो सका।

9 अगस्त, 1990 को देश के कुछ भागों स्थानों पर अंग्रेजी हटाओ दिवस के रूप मे मनाया गया। अंग्रेजी संस्कृति के प्रतीक "दून स्कूल" "देहरादून" पर आर्य समाज, भाजपा, साम्यवादी दलों, प्रमुख राष्ट्रवादी व्यक्तियों एवं स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से एक सार्वजनिक प्रदर्शन स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में हुआ जिसका उद्देश्य अंग्रेजी हटाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसके उचित स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाना है। 11 से 13 अगस्त, 90 तक इन्दौर में भी अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन हुआ जिसमें प्रमुख राजनैतिक नेताओं, भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री जैलसिंह सहित चार हिन्दी प्रदेशों के मुख्यमंत्री सम्मिलित थे। यह दोनों आयोजन हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाए जाने के लिए शुभ-संकेत हैं। अंग्रेजी भाषा ने पिछले 43 वर्षों में अंग्रेजी न जानने वालों का शोषण किया है। अंग्रेजी को हटा कर ही इसे शोषण को समाप्त किया जा सकता है। हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी प्रेमी देश भक्त लोग अपने सभी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करने एवं इसे राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने का संकल्प लें, तभी इस दिवस की सार्थकता होगी। आर्य समाज का दायित्व इस सम्बन्ध में अन्य सब संस्थाओं से अधिक है।

संस्कृत-प्रेमी महानुभावों से एक निवेदन

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट द्वारा संचालित संस्कृत महाविद्यालय में 125 ब्रह्मचारी संस्कृत पढ़ रहे हैं। जिनके भोजन, दूध, आवास व शिक्षा का प्रबन्ध सर्वथा निःशुल्क होता है। कोई फीस नहीं ली जाती। दान ही आय का साधन है। इस ट्रस्ट को दिया गया दान आयकर की धारा 1961—80 G के अन्तर्गत कर मुक्त है। कृपया अपनी सहयोग-दान राशि के मनीआर्डर/ड्राफ्ट या चैक निम्न पते पर अवश्य भेजें—

—हरवंश लाल शर्मा-प्रधान

—श्री चतुर्भुज मित्तल-मन्त्री

मानव के चोले को कलंकित न कर

लेखक—महात्मा प्रेम प्रकाश जी, वान-प्रस्थ आर्य कुटिया—धूरी (पंजाब)

1. कठोपनिषद् के पढ़ने से, यदि मैं अलंकारिक भाषा में कहूं तो कह सकता हूं, कि सत्युग के मनुष्य को ढूंढने से भी "भगवान्" नहीं मिला और आज के युग में भगवान् को ढूंढने से भी "इन्सान" नहीं मिला। क्योंकि आज भाई से भाई लड़ रहा है, बहिन से बहिन लड़ रही है, परिवारों से परिवार लड़ रहे हैं, प्रान्त लड़ रहे हैं और राष्ट्र लड़ रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि सभी घोषणाएं कर रहे हैं, कि हम "शान्ति" चाहते हैं, परन्तु सभी लड़ाई की तैयारियां कर रहे हैं। भाव यह कि हमारे आचरण बिगड़ गये हैं और वह भी धर्म और ईश्वर के नाम पर। आज के मानव को धर्म, कर्म और शर्म नहीं है, अतः पवित्र तीर्थों पर भी आप देखेंगे कि लोग ज्ञान प्राप्ति के स्थान पर जूते सिर के नीचे रखकर सो रहे हैं, कितना नैतिक पतन हो चुका है।

2. आश्चर्य एवं दु:ख से लिखना पड़ता है, कि आज मानव निर्मित भगवान् की मूर्तियों को तो शुद्ध जल, फल एवं शुद्ध घी के पदार्थों का "भोग" लगाया जाता है परन्तु भगवान् निर्मित मूर्तियों को कृत्रिमता, मिलावट दी जाती है। कैसी विडम्बना है, दाता के लिये दान, भूखे का अपमान। खाने वाले के लिये 'ज़हर' और न खाने वाले के लिये "अमृत"। यहीं तक नहीं हम भगवान् को अपना इष्ट समझते, परन्तु उसको बाजार में बेचते-घूमते हैं, आस्तिकों के बुरे आचरणों के कारण ही नास्तिकता फैल रही है, इसी भाव को एक उर्दू के शायर के शब्दों में—

खुदा के बन्दों को देख करके, खुदा में मुनकर हुई है दुनिया, जिस खुदा के हैं यह बन्दे, कोई अच्छा खुदा नहीं है।

3. मनुष्य का मनुष्य वैरी क्यों है? आपको मार्ग में आते-जाते समय सैंकड़ों पशु-पक्षी मिलते हैं, परन्तु मनुष्य निर्भय रूप से अपने मार्ग पर चलता जाता है, किन्तु अपनी ही जाति के भाई को सामने आते देखकर भय! भय!! भय!!! क्योंकि देश द्रोहियों ने निर्दोष लोगों की हत्याओं का बिगुल बजा रखा है, सरकार हिजड़ेपन की धर्मनिर्पेक्षता (धर्म हीनता) अर्थात् कर्त्तव्य परायणता का नग्न प्रदर्शन हो रहा है। पंजाब में हजारों विधवायें प्रलाप कर रही हैं, अनाथ बच्चे त्राहि-त्राहिमान कर रहे हैं और वृद्ध माता-पिता रोते देखे नहीं जाते हैं। प्रश्न पैदा होता है, ऐसी अवस्था में क्या करें? कहां जाएं? कहीं नहीं। ऐसे समय में हमें गम्भीर, वीर और धीर बनना चाहिये। भगवान् राम जब लंका जाने लगे तो समुद्र ने उनका मार्ग रोक लिया, उन्होंने तुरन्त नल और नील इंजीनियरों द्वारा पुल बन्धवा कर, समुद्र को पांव तले रौंदते हुए सेना सहित लंका पहुंच गये। यही विधि है।

4. एक घटना याद आई। एक व्यक्ति किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्यवश मिलने के लिये उसके घर पहुंचा, घर आकर आवाज लगाई, श्रीमान् जी ने अन्दर से आवाज पहचान ली, श्रीमान् जी मिलना ही नहीं चाहते थे, उन्होंने अपने छोटे बच्चे को कहा, बेटे बाहर जाकर कह दे बाबू जी घर नहीं, उस पवित्र हृदय के बच्चे ने बाहर जाकर कह दिया, "बाबू जी कहते हैं, बाबूजी घर नहीं" हैं। बन्धुओ मानव का मानव से उपहास क्यों? बड़े दु:खी होकर ऐसे समय के लिये ही किसी उर्दू के कवि ने कहा है—

सभी कुछ हो रहा है, इस तरक्की के जमाने में।

गजब क्या है ?, आदमी "इन्सान" नहीं होता॥

5. ओ मानव! तेरा लक्ष्य देव जीवन है, तू कुसंस्कारों और कुकर्मों से इस मानव चोले को दूषित न कर। विषमता का व्यवहार मानव एकता पर वज्र प्रहार है, विषय तो "विष" है—विलास तो विनाश है। अज्ञान अन्धकार से तो उल्लू की प्रीति होती है, अतः ऋषियों ने कहा है, कि यदि धन, बल, बुद्धि और कर्म के साथ "धर्म" नहीं होगा, तो व्यक्ति लुटेरा बन जाएगा। ऐसी अवस्था में पतन अवश्यम्भावी होगा। क्योंकि जब पाप का बुखार चढ़ता है तो "धर्म" की भूख विदा हो जाती है। ओ मानव! यदि तू सचमुच मानव बन जाये, तो संसार सुखधाम बन जाये, अतः वेद ने हमें "मनुर्भव" का उपदेश देकर जगाया है। "जो जागत है सो पावत है"। "यो जागार तमृचः कामयन्ते" (ऋग्वेद)

6. मानव अल्पज्ञ प्राणी है, बोलने वाले से, पढ़ने वाले से, लिखने वाले से भूल चूक हो ही जाती है, किन्तु दुष्ट पुरुष उस पर उपहास करते हैं और सज्जन उसका समाधान करते हैं, किसी को गिरा देना तो सरल है, परन्तु उठाना बहुत कठिन लगता है। भूला-भटका मनुष्य फटकार का पात्र नहीं, करुणा का पात्र है। एक ऐसा युग भी था, कि भारत में न कोई राजा था और न ही कोई पुलिस और न ही कोई सेना। सभी मानव स्वयं शासन में रहते थे, यदि किसी से कोई अपराध हो भी जाता था, तो वहां "दण्ड की अपेक्षा "शिक्षा", भय की अपेक्षा "विवेक", कानून की अपेक्षा "धर्म" और पुलिस की अपेक्षा "आत्मा" को अधिक महत्त्व दिया जाता था। सभी, सभी से प्यार करते थे—किसी ने ठीक ही कहा है—

क्या करेगा प्यार वह भगवान् से? कर न पाया प्यार जो इन्सान से।

उस समय भारत जगत गुरु कहलाता था। इसीलिये श्री मैथिली शरण गुप्त जी ने लिखा है—

मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारें आरती। भगवान् सारे विश्व में गूंजें हमारे भारती॥

7. भारत के प्रत्येक नागरिक का दैनिक जीवन पवित्र और महान बने। उसके लिये आवश्यक है, कि हम अपने अन्दर आध्यात्मिक अग्नि प्रज्वलित करें, जैसे अग्नि को प्रज्वलित करते हुए वायु के झोंकों से बचाते हैं या दियासलाई को जलाते हुए हाथ की ओट करते हैं, ऐसे ही "आत्मज्ञान" रूपी अग्नि को प्रज्वलित करते हुए विषय वासनाओं के झोंकों से बचाना आवश्यक है। वेद ने हमें "ब्रह्म" की अनुभूति करवाने के लिये ही "इन्द्र" है और इस शरीर को देवपुरी, ब्रह्मपुरी। क्योंकि सप्तदेव तो इसके द्वारपाल हैं, दो आंख, दो कान, दो नासिका और एक मुख तथा कई ऋषियों ने यह कहा है, कि पांच ज्ञानेन्द्रियां, एक मन और एक बुद्धि यह सप्त ऋषि हैं। आकाश में भी सप्त ऋषि "ध्रुव" तारे की निरन्तर परिक्रमा कर रहे हैं, इसी भाव को समक्ष रखकर एक भक्त ने कहा है—जो मनुर्भव का सन्देश है।

बुद्धि इन्द्रियां और मन मेरे ऋषि यह सात। परिक्रमा तेरी करें सब दिन सारी रात॥

सावधान सोने व चांदी के वर्क से

पूर्ण शाकाहारी रहने का व्रत लेने वालों के लिए विशेषकर निम्न विचार हैं। आर्य जगत 29 अप्रैल के अंक के आधार पर भले ही चांदी सोना विशुद्ध धातु हो तो इससे बने वर्क मांसाहारी कैसे हो सकते हैं? आप की पीठ के पीछे (आंख से दूर) क्या होता है? किसे पता है, बस श्रद्धा विश्वास से सभी सेवन करते हैं, अब तो पान आदि पर भी चांदी का वर्क लगा कर खाने का शौक बढ़ रहा है। फलों की टोकरियों को सजाने वास्ते तथा कमजोर व्यक्तियों को डा. वैद्य भी आमले सेब के मुरब्बे पर वर्क लगा कर खाने को कहते हैं।

जरा ध्यान से पढ़िए इसके बनाने की विधि को यदि विश्वास फिर भी न आए तो जांच करें, या कराएं कि वर्क मांसाहारी कैसे हो जाता है बनते बनते?

जरा कलेजा थाम कर पढ़ें। बैल की आंतों में रख कर वह भी ताजे मरे की, क्योंकि 12 घंटों बाद आंतें अपना गुण छोड़ देती हैं। लेने वाले कसाई खाने (घर) के बाहर तभी पहुंच जाते हैं। तभी आंतों को मल से साफ कर के टुकड़े टुकड़े कर के एक के ऊपर एक रख कर तहों की किताब सी बना ली जाती है। इस के पन्ने में चांदी का पतला टुकड़ा रखते हैं। बैल की आंतें इतनी मजबूत होती है कि ऐसी और कोई वस्तु खोज में नहीं निकली। रबर प्लास्टिक युग भले ही है बैल की आंतों से जो पुस्तकाकार रूप में बनाई जाती है, इस के ऊपर हथौड़े की चोटें मार-मार कर अन्दर रखे चांदी, सोने के पत्ते को फैला कर चौड़ा किया जाता है। पुन: इस बारीक कागजों में रख कर बिक्री होती है सर्वत्र।

बरफी व अन्य मिठाईयों पर वर्क भी लगा कर चाव से खाते हैं। जबकि बनाते समय बैल की आंत का कुछ अंश वर्क में मिल ही जाता है। कहावत है कि कोयलों की दलाली में हाथ मुंह काला। अत: एक बार विचारिए कि वर्क कैसे मांसाहारी नहीं? आप की जानकारी के लिए पान चूना भी मांसाहारी नहीं आप चकित होंगे? परन्तु घबराए नहीं। वास्तविकता प्रकट करना ही सत्य की खोज है। आत्म बन्धु आगे पान चूने पर लिखूंगा।

—पथिक मानव सेवाश्रम छुटमल पुर (सहारनपुर)

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का उत्सव

"आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 68वां वार्षिकोत्सव 22 से 28 अक्तूबर 1990 को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान, संन्यासी, एवं राष्ट्रीय नेता भाग लेंगे।"

हिन्दी का गौरव बढ़ाओ

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

शादी उत्सव के निमंत्रण पत्र हिन्दी छपाओ।
राष्ट्र का सन्देश सुमधुर हिन्दी भाषा में सुनाओ॥
बोल कर भाषा विदेशी मत वृथा शेखी जताओ।
हंसों की महफिल में क्यों सरपंच, कागा को बनाओ॥
छोड़ कर अनमोल हीरा हाथ ना कंकड़ उठाओ।
विदेशी भिखारिन को महारानी ना बनाओ॥
देश की मझधार में मत हिन्दी नौका डुबाओ।
कृष्ण की संतान बन क्यों गीत कंसासुर के गाओ॥
अन्याय रूढ़ीवाद की पवन सुत लंका जलाओ।
बोल दो हिन्दी की जय फिर निद्रित भारत को जगाओ॥
त्याग दो अंगरेजियत कर लेखनी अपनी उठाओ।
आज मिलकर परस्पर हिन्दी का गौरव बढ़ाओ॥

(पृष्ठ 3 का शेष)

ब्राह्मण भी बन सकता है, क्षत्रिय भी बन सकता है और वैश्य भी बन सकता है। हमारा अपना इतिहास साक्षी है कि जिसका जन्म पिछड़ी जातियों से हुआ था उन्हें हमारे समाज में ऊंचे से ऊंचा दर्जा दिया गया था। सबसे बड़ा उदाहरण हमारे सामने महर्षि बाल्मीकि का है। आज जो लोग अपने आपको महर्षि बाल्मीकि के उत्तराधिकारी कहते हैं वह साथ ही यह भी कहते हैं कि वह हरिजन हैं। कुछ राजनीतिक अधिकारों और कुछ सुविधाओं की खातिर उन्होंने स्वय ही अपना दर्जा कम कर लिया है। महर्षि बाल्मीकि का स्थान हमारे इतिहास में सबसे ऊंचा है। उनके आगे तो भगवान् राम भी अपना सिर झुकाया करते थे। यदि महर्षि बाल्मीकि उस समय की किसी पिछड़ी जाति में पैदा हुए होते तो भगवान् राम भगवती सीता को उनके आश्रम में न भेजते। न वह अपने दोनों बेटों लव और कुश को इस आश्रम में रहने देते। महर्षि बाल्मीकि ने इन दोनों को वह ही शिक्षा दी थी जो किसी राजकुमार को दी जानी चाहिए थी। उन्होंने यह सब कुछ इसलिए किया था कि वह एक महर्षि थे। उनका स्थान उस समय के ब्राह्मणों से भी ऊपर था। आज उत्तराधिकारी होने का दावा करने वाले अपने आपको हरिजन कहते हैं। चूंकि हरिजन बनकर उन्हें कुछ सरकारी नौकरियां मिल जाती हैं।

दूसरा उदाहरण हमारे सामने महाराज धृतराष्ट्र का है। उनके प्रधानमंत्री महात्मा विदुर भी पिछडी जाति से थे। वह एक दासी के पुत्र थे। महाराज धृतराष्ट्र क्षत्रिय थे, उनके दरबार में कई बडे-बड़े ब्राह्मण भी थे। परन्तु उन्होंने एक दासी पुत्र को अपना प्रधानमन्त्री बनाया था और वह अपने प्रधानमन्त्री के परामर्श को पूरे ध्यान से सुनते थे और महात्मा विदुर भी पूरी ईमानदारी और साहस से अपनी बात कहा करते थे। आज के कई बड़े-बड़े मन्त्री महात्मा विदुर के पांवों की धूल के बराबर भी नहीं हैं।

मैंने यह दो उदाहरण उनके दिए हैं जो पिछडी जातियों में जन्म लेकर ऊंची जातियों से भी ऊंचे चले गए। परन्तु एक उदाहरण वह भी देना चाहता हूं जहां एक ऊंची जाति में पैदा होकर और भी ऊंचे पहुंच गए। महर्षि विश्वामित्र का भी हमारे धार्मिक इतिहास में बहुत उल्लेख आता है। कहते हैं कि उनका जन्म एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था परन्तु तपस्या करके वह ब्राह्मण बन गए।

यह तो प्राचीन काल के उदाहरण हैं। विक्रमी सम्वत् 1943 में भगत शिरोमणि गुरु रविदास का जन्म हुआ था। यद्यपि वह एक चर्मकार परिवार में पैदा हुए थे, उनकी वाणी को पढ़ने के बाद यह कोई नहीं कह सकता कि वह किसी पिछड़ी जाति के महापुरुष ने लिखी है। उन्होंने मानव और मानवता को जिस रूप से हमारे सामने पेश किया था उसे पढ़कर ऐसा मालूम होता है कि किसी महापंडित ब्राह्मण ने यह सब कुछ लिखा है। फिर भी उन्हें हरिजन ही कहा जाता है। कोई और क्या कहेगा, उनके भगत उन्हें हरिजन कहते हैं। क्योंकि ऐसा कह कर उन्हें राजनीतिक सुविधाएं मिल जाती हैं।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज बंगा की की गतिविधियां

आर्य समाज बंगा में गत दिनों पारिवारिक सत्संगों का निम्न प्रकार आयोजन किया गया—

1. श्री राम लाल जी मौर्य के घर पर उन के सुपुत्र चिरंजीव सुशील कुमार के जन्म दिन के उपलक्ष्य में पारिवारिक सत्संग किया गया जिसमें सैंकड़ों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया और श्री शादी लाल जी मन्त्री ने पुरोहित्य कार्य सम्पन्न करवाया।

2. श्री सत्यपाल सिंह जी बेदी के घर माडल टाऊन बंगा में बहुत बड़े यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया। श्री सत्यदेव जी सरल उप प्रधान आर्य समाज फगवाड़ा ने पुरोहित्य कार्य सम्पन्न कराया। जिस का आई हुई जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

3. श्री शादी लाल महेन्द्रू ने अपने पौत्र चिरंजीव वरुण महेन्द्रू के जन्म दिन के उपलक्ष्य में 14-8-90 को पारिवारिक सत्संग करवाया जिसमें सैंकड़ों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया। इन सभी पारिवारिक सत्संगों का बंगा की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

—मन्त्री आर्य समाज

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनेकत्र अनेक तरह की अनेकता दिखाई देती है। इस अनेकता में एकता लाना वस्तुत: हिन्दी की अपनी अनोखी विशेषता है। क्योंकि—

आज भारत प्रशासन की दृष्टि से केन्द्रीय प्रदेश और राज्यों के रूप में (9+24) 33 क्षेत्रों में विभक्त है। संविधान के अनुसार मान्यता प्राप्त 15 भाषायें भारत में प्रचलित हैं और बोलियों की संख्या तो लगभग एक सौ है। केवल भाषा की दृष्टि से ही नहीं, अपितु धर्म, वर्ग (जाति), खान-पान, रीति-रिवाज, वेश-भूषा के रूप में भी भारत में अनेकता प्राप्त होती है।

ऐसी स्थिति में एक राष्ट्र के नाते एक राष्ट्र भाषा अत्यावश्यक हो जाती है। जिससे सभी स्तरों पर परस्पर सम्पर्क हो सके। क्योंकि कोई भी भारतीय नागरिक, अधिकारी या मन्त्री सारी भारतीय भाषाओं से परिचित नहीं हो सकता। इस विविधता में एक भाषा के द्वारा ही सम्पर्क हो सकता है। देश में अनेक अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रान्तों में समान स्थिति या समस्या सामने आती है। तब एक भाषा के बिना एक समस्या की स्थिति में भी एकता, समन्वय कैसे हो सकता है?

भारत में नौकरी, खेल, पर्यटन, व्यापार के लिए एक प्रान्त से दूसरे में जाने की प्राय: जरूरत पड़ती रहती है। तब बिना किसी एक भाषा के परस्पर बात-चीत तथा पारस्परिक व्यवहार कठिन हो जाता है।

यह सम्पर्क भाषा का कार्य हिन्दी ही सरलता से वहन कर सकती है। क्योंकि हिन्दी संस्कृत की निकटतम भाषा है और यह भारतीय धर्मों, भावनाओं, परम्परा से जहां जुड़ी हुई है, वहां भारतीयों के बहुत बड़े वर्ग द्वारा बोली और समझी जाती है। अत: हिन्दी भारतीयों की एकता का एक साधन है। इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए सभी राष्ट्र प्रेमियों को सहर्ष हिन्दी को अपना लेना चाहिए। हिन्दी किसी विशेष वर्ग, प्रदेश, धर्म से भी जुड़ी हुई नहीं है। अत: बड़ी सरलता से सारे भारतीयों का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

सुमनेश—हां, आपने हिन्दी के सम्बन्ध में बहुत सारी बातें स्पष्ट की हैं। अच्छा हो अब 'हिन्दी को अपनाइए और उसको अमर बनाइए' इस नामपट्ट पर भी प्रकाश डालें तो कृपा होगी?

प्राध्यापक—वस्तुत: सबसे महत्वपूर्ण बात यही ही है। भाषा सम्बन्धी व्यवहार में हिन्दी प्रेमी हिन्दी को अपनायेंगे, उतना-उतना वे जड़ को सींच कर हिन्दी को हरा-भरा बनायेंगे।

ऐसे अवसरो पर हम प्राय: हिन्दी भाषा अमर हो, हिन्दी भाषा की जय ही कहते हैं। इसका भाव यही है, कि हम हिन्दी की अमरता और जय चाहते हैं। अमर का अर्थ है—न मरना, जीवित रहना। जैसे एक जीवित व्यक्ति अपनी दिनचर्या, जीवनचर्या के सारे कार्य जारी रखता है। वैसे ही किसी भाषा का व्यवहार में आते रहना ही उसकी अमरता है। भाषा की दृष्टि से बोलने-पढने-लिखने के सारे व्यवहारों में जिस भी भाषा को हम बर्तते हैं, वह भाषा उस-उस बर्ताव से जीवित रहती है और उस भाषा का यही अमरपना है।

जय—किसी खेल में लगातार के अभ्यास और लगन से जब कोई औरों से आगे निकल जाता है, अपने कार्य को सिरे चढ़ाता है, तो हम कहते हैं वह जीत गया। ऐसे ही श्रद्धा, लगन, सम्मान के साथ जब लगातार अपने व्यवहार में हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, तो उस भाषा की वह जय ही कही जा सकती है। अत: हिन्दी को अपनाना ही हिन्दी को अमर बनाने का आघोष चरितार्थ किया जा सकता है। सभी हिन्दी प्रेमी इस भावना को यदि सच्चे अर्थों में अपना लें और तब स्वत: हिन्दी भाषा की जय साकार हो जाए।

आर्य समाज सैक्टर 22, चण्डीगढ़ का चुनाव

गत दिनों आर्य समाज 22-सैक्टर चण्डीगढ़ के सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ।

सरक्षक—श्री डा० इन्द्रराज शर्मा

प्रधान—श्री रामरत्न महाजन

उप-प्रधान—वरिष्ठ श्री नरेन्द्रनाथ तहसीलदार, श्री ओम प्रकाश सेठी, श्री ब्रह्मदेव बहल

मन्त्री—श्री प्रेमचन्द्र मनचन्दा

उप-मन्त्री—श्री बुधराम, श्रीमती सन्तोष चौहान

कोषाध्यक्ष—श्री गुलशन कालरा

लेखा निरीक्षक—श्री विश्वामित्र महाजन।

—प्रेमचन्द मनचन्दा

वस्ती शेख जालन्धर में कृष्ण जन्माष्टमी

आर्य समाज बस्ती शेख जालन्धर में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व तथा स्वतंत्रता दिवस 15-8-90 को बड़े समारोह से मनाया गया। ध्वजारोहण चौ० ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर श्रद्धानन्द विद्यालय के छात्रों तथा अध्यापिकाओं ने बड़ा प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री राम कृष्ण जी एडवोकेट प्रधान आर्य समाज ने सभी बन्धुओं का धन्यवाद किया।
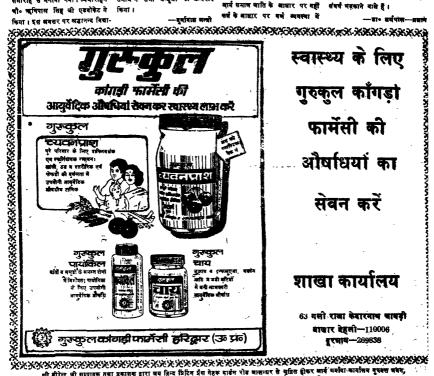
—दुर्गादास मन्त्री

आरक्षण जाति के आधार पर नहीं, आर्थिक आधार पर होना चाहिए

राजधानी के सभी आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में पारित प्रस्ताव में यह कहा गया है कि देश की एकता, अखण्डता एवं राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए। आरक्षण जाति के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर किया जाना चाहिए। सभा की अध्यक्षता डा० धर्मपाल ने की।

महामंत्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही दलितों, अछूतों एवं कमजोर वर्गों के उत्थान एवं कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहा है। आर्य समाज जाति के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था में विश्वास करता है और अनुसूचित जातियों में जन्मे व्यक्तियों को आर्य समाज में पुरोहित जैसा सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार ने बढ़ती हुए महंगाई एवं अन्य अनेक असफलताओं को छुपाने के लिए गलत नीतियों के द्वारा आरक्षण जैसी समस्यायें पैदा करके एकता अखण्डता को खतरा पैदा कर दिया है।

केन्द्रीय मन्त्री श्री राम विलास पासवान एवं श्री शरद यादव के व्यक्तव्य अत्यन्त गैर जिम्मेदार एवं संघर्ष भड़काने वाले हैं।

—डा० धर्मपाल—प्रधान

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 73020 राज० नं०/P-b./JL. 55

वर्ष 22 अंक 25, आश्विन 1 सम्वत् 2047 तदनुसार 13/16 सितम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे

वैदिक संध्या के मन्त्रों का शब्दार्थ

आओ संध्या को अर्थ सहित पढ़ें

आचमन मन्त्र

शम्—कल्याणकारी।
न:—हमारे लिए।
देवा:—सबका प्रकाशक
अभिष्टये—मनोवांछित सुख के लिए।
आप:—सर्वव्यापक ईश्वर।
भवन्तु—होवे।
पीतये—मोक्ष सुख के लिए।
शंयो—सुख की।
अभिस्रवन्तु—वर्षा करे।
न:—हमारे लिए।

इन्द्रियस्पर्श मन्त्र

वाक् वाक्—वाणी और रसना।
प्राण: प्राण:—प्राणवायु।
चक्षु: चक्षु:—दोनों नेत्र।
श्रोत्रम् श्रोत्रम्—दोनों कान।
नाभि:—नाभि।
हृदयम्—हृदय।
कण्ठ:—कण्ठ।
शिर:—शिर।
बाहुभ्यां—दोनों भुजाए।
यशो बलम्—कीर्ति और शक्ति।
करतलकरपृष्ठे—हाथ का नीचे का व ऊपर का भाग।
(आयुपर्यन्त बलवान रहे)

मार्जन मन्त्र

ओम्—सर्वरक्षक ईश्वर।
भू:—प्राणों से भी प्रिय।
पुनातु—पवित्रता करे।
शिरसि:—शिर से।
भुव:—सब दु:खों से छुड़ाने वाला।
नेत्रयो:—नेत्रों में।
स्व:—आनन्द स्वरूप।
कण्ठे—कण्ठ में।
मह:—पूजनीय (सबसे बड़ा)
हृदये—हृदय में।
जन:—जगत् उत्पादक।
नाभ्याम्—नाभि में।
तप—ज्ञान स्वरूप (दुष्ट विनाशक)
पादयो:—दोनों पैरो मे।
सत्यम्—अविनाशी।
ख ब्रह्म—सर्वव्यापक महान्।
सर्वत्र—सब इन्द्रियो पर (में)।

अघमर्षण मन्त्र

ऋतम्—वेद ज्ञान, च—और।
सत्यम्—कार्य जगत्।
अभीद्धात्—ईश्वर के ज्ञानमय।
तपस:—सामर्थ्य से।
अध्यजायत=उत्पन्न हुआ।
तत:—उसी ईश्वर से।
रात्री—प्रलय रूपी रात्रि।
अजायत—उत्पन्न हुई।
तत:—उसी ईश्वर से।
समुद्र:—पृथ्वी पर स्थित समुद्र।
अर्णव:—आकाश मे स्थित जल।
समुद्रात्—पृथ्वी पर स्थित समुद्र।
अर्णवात्—आकाश मे स्थित जल की उत्पत्ति के।
अधि—पश्चात्।
सवत्सर:—क्षण, मुहूर्त, प्रहर, आदि काल।
अजायत—उत्पन्न हुआ।
अहोरात्राणि—दिन और रात।
विदधत्—रचे हैं।
विश्वस्य—सब ससार को।
मिषत:—सहज स्वभाव से।
वशी—वश मे करने वाले (ईश्वर ने)।
सूर्याचन्द्रमसौ—सूर्य चन्द्रमा आदि लोकों को।
धाता—धारण करने वाले ईश्वर ने।
यथापूर्वम्—पूर्वकल्प के समान।
अकल्पयत्—रचा है।
दिवम्—द्युलोक को, च—और।
पृथिवीम्—पृथ्वी लोक को।
अथो—और।
स्व:—आकाश मे स्थित सब लोक लोकान्तरो को।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

प्राची—सामने की (पूर्व)।
दिक्—दिशा का।
अग्नि:—ज्ञानस्वरूप (ईश्वर)।
अधिपति:—स्वामी है।
असित:—बन्धन रहित।
रक्षिता—रक्षा करने वाला है।
आदित्या: - प्राण, सूर्य की किरणें।
इषव:—बाण के समान हैं।
तेभ्य:—उनके लिए।
नम:—नमस्कार हो।
अधिपतिभ्य:—अधिपति (ईश्वर) के गुणों के लिए।
नम:—नमस्कार हो।
रक्षितृभ्य:—रक्षा करने वाले (ईश्वर के गुण और उसके रचे पदार्थों) के लिए।
नम:—नमस्कार हो।
इषुभ्य:—बाणों के लिए।
नम:—नमस्कार हो (अर्थात् यथा-योग्य उपयोग करें)।
एभ्य:—इन (सब) के लिए।
अस्तु—(नमस्कार) हो।
य:—जो।
अस्मान्—हमसे।
द्वेष्टि—द्वेष करता है।
यम्—जिससे।
वयम्—हम।
द्विष्म:—द्वेष करते हैं।
तम्—उस द्वेष को।
व:—आप (ईश्वर) के।
जम्भे—न्यायरूप जबड़े में।
दध्म:—दध्म करते हैं।
दक्षिणा—दक्षिण (दाईं)।
दिक्—दिशा का।
इन्द्र:—परमैश्वर्ययुक्त (ईश्वर)।
अधिपति—स्वामी है।
तिरश्चिराजी—कीट पतग आदि।
रक्षिता—रक्षा करने वाले हैं।
पितर—ज्ञानी लोग।
इषव:—बाण के समान हैं।
प्रतीची—पीछे की (पश्चिम)।
दिक्—दिशा का।
वरुण:—सर्वोत्तम (ईश्वर)।
अधिपति:—स्वामी है।
पृदाकू—अजगर आदि विषधर प्राणी।
रक्षिता—रक्षा करने वाले हैं।
अन्नम्—अन्नादि भोग्य पदार्थ।
इषव:—बाण के समान हैं।
उदीची—बाईं (उत्तर)।
दिक्—दिशा का।
सोम—शान्ति प्रदाता (ईश्वर)।
अधिपति:—स्वामी है।
स्वज:—अजन्मा।
रक्षिता—रक्षा करने वाला है।
अशनि: - विद्युत्।
इषव:—बाण के समान है।
ध्रुवा—नीचे की।
दिक्—दिशा का।
विष्णु:—सर्वव्यापक (ईश्वर)।
अधिपति:—स्वामी है।
कल्माषग्रीव:—वृक्ष आदि।
रक्षिता—रक्षा करने वाले है।
वीरुध.—लता, बेल आदि।
इषव:—बाण के समान है।
ऊर्ध्वा:—ऊपर की।
दिक्—दिशा का।
बृहस्पति:—वेदशास्त्र तथा ब्रह्माण्ड का पति (ईश्वर)।
अधिपति:—स्वामी है।
श्वित्र:—शुद्ध स्वरूप।
रक्षिता—रक्षा करने वाला है।
वर्षम्—वर्षा के बिन्दु।
इषव:—बाण के समान हैं।

उपस्थान मन्त्र

उत्—श्रद्धावान् होकर।
वयम्—हम लोग।
तमस:—अन्धकार से।
परि—पृथक (रहित)।
स्व:—आनन्दस्वरूप (ईश्वर को)।
पश्यन्त:—देखते हुए।
उत्तरम्—प्रलय के बाद भी वर्तमान रहने वाले)।
देव देवत्रा:—देवो का भी देव।
सूर्यम्—जड़ और चेतन जगत् के आधार को।
अगन्म—प्राप्त करे।
ज्योति:—स्वप्रकाश स्वरूप।
उत्तमम्—सर्वोत्कृष्ट को।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य वीर दल एक संक्षिप्त परिचय

ले०—श्री हरिश्चन्द्र स्नेही, अध्यक्ष, आर्य वीर दल, सोनीपत

भारत वर्ष ऋषियों, मुनियों, सन्तों महात्माओं की पुण्य भूमि है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसी पुण्य भूमि पर जब अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, सामाजिक बुराइयों और अत्याचारों का बोलबाला था उस समय टंकारा में एक बालक का जन्म 1824 ई० में हुआ, जिसका नाम मूलशंकर रखा गया। सच्चे शिव की खोज में भटक रहे इस बालक मूल शंकर को गुरु स्वामी विरजानन्द ने वैदिक ज्ञान देकर सच्चा महर्षि स्वामी दयानन्द बनाया और आदेश दिया कि जग से अज्ञान रूपी अन्धकार दूर करके वेदवाणी के प्रकाश से ही प्रकाशित करो। गुरु आज्ञा शिरोधार्य करके वेद वाणी के प्रचार प्रसार तथा प्राणी मात्र के कल्याणार्थ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई० मे बम्बई मे प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी और संसार मे फैले पाखण्डो का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इस से साम्प्रदायिकता से परिपूर्ण विधर्मियो के पाव उखड़ने लगे। जब स्वामी जी के सम्मुख पाखण्डियों की दाल नहीं गली तो उन्होंने स्वामी जी को मरवाने के लिए अनेक षड्यन्त्र किए। उन्ही के षड्यन्त्रों का स्वामी जी शिकार हुए। स्वामी जी का 1883 ई० में दीपावली के दिन निर्वाण हुआ। इस प्रकार वेद निधि के एक प्रकाश स्तम्भ गिरने से एक सूर्य का अस्त हुआ। स्वामी जी को निर्वाण प्राप्ति के पश्चात् विधर्मियों ने पुन. अपने पांव फैलाने का असफल प्रयास किया जिसका दयानन्द के भक्तों ने मुंह तोड़ जवाब दिया। इस समय साम्प्रदायिकतावादी एवम् अन्य विधर्मियों ने जब आर्य समाज के सगठन को नष्ट करना चाहा तो भारतीय सस्कृति, आर्य समाज एव वेदनिधि की रक्षा के लिए एक ऐसे सगठन की आवश्यकता अनुभव की गई उत्साही आर्य नेताओं के प्रयत्नो से चरित्रवान एवम् बलशाली युवकों की एक सेना तैयार की गई जिस का नाम "आर्य वीर दल" रखा गया।

इसमे कोई सन्देह नहीं आर्य समाज रूपी इस पौधे को सींच कर वट वृक्ष बनाने के लिए कुछ आर्य वीरों को अपना बलिदान देने का श्रेय प्राप्त हुआ। इनमे अमर शहीद पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द एवम् महाशय राज पाल जी का नाम सर्वोपरि है। जब तक सूर्य और चाद रहेंगे तब तक ये दिव्य सितारे भी अपनी दिव्य शक्ति के फलस्वरूप चमकते रहेंगे और हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

आर्य वीर दल

आर्य—आर्य शब्द का सीधा सादा अर्थ श्रेष्ठ व्यक्ति है। महाभारत एवम् गीता के आधार पर वह व्यक्ति जिसमे आस्तिकता, ज्ञान, सन्तोष, मन पर नियन्त्रण, सत्य भाषण, उत्साह, कर्त्तव्य निष्ठा, विद्वता, दया, नम्रता और जितेन्द्रियता आदि गुण हों, आर्य कहलाता है।

वीर—जिस व्यक्ति में उत्साह का सचार हो, शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ और पराक्रमी हो, जिसे देखने मात्र से ही शत्रु के होश उड़ जायें वह वास्तव से वीर कहलाता है।

दल—ऐसे युवकों के सगठन को जिसमे श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ चरित्र, तार्किक शक्ति, पराक्रम, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना, शारीरिक आत्मिक-सामाजिक एवम् अन्य गुणों का समावेश हो-दल कहलाता है।

आर्य वीर दल के उद्देश्य

1. वैदिक धर्म, सभ्यता एवम् सस्कृति की रक्षा तथा इसके प्रचार और प्रसार में सहयोग प्रदान करना।

2. आर्य समाज एवम् महर्षि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार तथा प्रसार करना।

3. मानव जाति का शारीरिक आत्मिक एवम् सामाजिक दृष्टि से उत्थान करके उनमें वैचारिक क्रान्ति लाना।

4. प्राणी मात्र की सेवा करना।

5. देश की एकता, अखण्डता तथा इसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना।

6. स्वयं आर्य वीर बनकर विश्व को आर्य वीर बनाना।

आर्य वीर दल की स्थापना

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी अभियान तथा उनके निर्वाण के पश्चात् उनके अमर वीर सैनिकों ने धर्मान्धता के कुचक्र को ध्वस्त करना आरम्भ किया तो स्वार्थी तत्त्वों ने षड्यन्त्र रचा कर कई महापुरुषों के प्राण ले लिए। षड्यन्त्रकारियों के अपवित्र इरादों को विफल बनाने के लिए त्याग मूर्ति महात्मा हस राज जी की अध्यक्षता में 1927 ई० में दिल्ली में एक विराट् सम्मेलन आयोजित किया गया और इसके परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1929 ई० को आर्य वीर दल की स्थापना की गई। महात्मा नारायण स्वामी जी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। आर्य वीर दल के नियमित संचालन हेतु महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में सन् 1931 ई० में द्वितीय महासम्मेलन का आयोजन किया गया और उसमें यह निर्णय लिया गया कि आर्य वीर दल की शाखा प्रत्येक आर्य समाज, नगर एवम् प्रान्त में लगाई जाएगी जिसमें अधिक से अधिक नवयुवकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। आर्य वीर दल के नवयुवकों क प्रशिक्षण के फलस्वरूप विधर्मी एवम् साम्प्रदायिक लोगों में खलबली मच गई। उनके स्वप्न चूर-चूर होने से उनके आक्रमण रुक गये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सन् 1936 ई० में आर्य वीर दल के नियमों मे संशोधन किया। आर्य वीर दल की बागडोर उत्साही, कर्त्तव्यनिष्ठ, पराक्रमी, विवेकी, शूरवीर, ईमानदार एवम् कुशल युवक श्री ओम प्रकाश त्यागी को सौंपी गई। उनके गतिशील एवम् कुशल नेतृत्व में सन् 1942 ई० पहली बार 400 आर्य वीरो का शिविर दिल्ली में बदरपुर नामक स्थान पर आयोजित किया गया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य वीर दल नामक इस सगठन ने समय-समय पर अपने साहसिक एवम् शौर्यपूर्ण कार्यों द्वारा विश्व मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

आदर्श आर्य वीर

एक आदर्श आर्य वीर में उपरोक्त वर्णित गुणों के अतिरिक्त निम्नलिखित गुणों का समावेश होना भी अत्यन्त आवश्यक है—

1. राम जैसा आज्ञा पालक एवम् मर्यादा पुरुष।
2. लक्ष्मण जैसी वीरता और तप।
3. हनुमान जैसी स्वामी भक्ति।
4. श्री कृष्ण जैसी निरभिमानता, नीति एवम् योग विज्ञान।
5. बालक भरत के समान निर्भीकता।
6. वीर शिवा जी जैसी नीति-निपुणता एवम् साहस।
7. महाराणा प्रताप जैसा स्वाभिमान।
8. भामाशाह जैसी उदारता।
9. कर्ण जैसा दानवीर।
10. हरीश्चन्द्र जैसा सत्यवादी।
11. चाणक्य के समान राजनीति का ज्ञाता।
12. जयमल फत्ता जैसा युद्ध प्रयाण।
13. वीर बालक हकीकत जैसा धर्म प्रेम।
14. श्रवण कुमार जैसी पितृ-भक्ति।
15. बन्दा बैरागी और तेगबहादुर जैसा बलिदान।
16. गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों जैसी वीरता व धर्मनिष्ठा।
17. स्वामी दयानन्द जैसा अखण्ड ब्रह्मचर्य और वेदज्ञान।
18. रानी झांसी जैसा संग्राम और पन्नाधाय सा बलिदान।
19. एकलव्य के समान गुरु भक्ति।
20. विक्रमादित्य के समान न्याय-प्रियता।
21. भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्र शेखर, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, ऊधम सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, मगल पाण्डे, वीर सावरकर एवम् अन्य क्रांतिकारी वीरों जैसा स्वदेश प्रेम एवम् स्वतन्त्रता अभियान।

उपसंहार

इस समय जबकि सारा देश उग्रवाद की आग में झुलस रहा है, विभिन्न सम्प्रदायों ने अपने पैर फैलाने शुरू कर दिए हैं, लोग अपनी प्राचीनतम सभ्यता और सस्कृति को भूल रहे हैं, धर्मान्धता अपनी चरम सीमा पर है। अब आर्य वीरों का दायित्व और भी बढ़ जाता जाता है किन्तु दुर्भाग्य की बात है अब हमें विधर्मियों से नहीं बल्कि अपनों से ही खतरा है। आर्य समाजों मे ही ऐसे पदाधिकारी कुर्सी से चिपके हुए हैं जो नवयुवकों को आर्य समाजों में आगे नही लाते। यदि कुछ युवक भूले भटके आर्य समाज में आ जावें तो उनकी कुदृष्टि का शिकार होते हैं। उनके कारण ही आर्य समाजों की छवि धूमिल हो रही है और आर्य समाजें अवनति की ओर जा रही हैं।

स्मरण रखो! आर्य समाज एवम् आर्य वीर दल के सगठन से ही अज्ञान, अन्याय, अभाव, जातिपाति, अस्पर्शता, नारी उत्पीड़न, मादक द्रव्यो का सेवन, निम्न वर्ग का शोषण एवम् अन्य बुराइयों को दूर किया जा सकता है। आर्य वीर दल के सगठन से ही राष्ट्रीयता, सभ्यता और संस्कृति की रक्षा, शक्ति, सञ्चय और प्राणीमात्र की सेवा हो सकती है। आर्य वीर दल से ही चरित्रवान, उत्साही, बलिष्ठ, सुसस्कृत और अनुशासित युवकों का निर्माण हो सकता है। इन्हीं के कन्धों पर ही आर्य समाज का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने-अपने स्वार्थों को तिलाञ्जली देकर भावी पीढ़ी का निर्माण करने का संकल्प लें। ऋषि दयानन्द तथा वेद वाणी के अनुसार कार्य करें। इन कार्यों को करके ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" "अस्माकम् वीरा उत्तरे भवन्तु" जैसे उद्घोषों को पूरा कर सकेंगे और तभी वास्तव में आर्य राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

सम्पादकीय—

यह आर्य समाज के लिए एक चुनौती है (2)

मैंने पिछले लेख में महर्षि बाल्मीकि, महात्मा विदुर, भगत शिरोमणि गुरु रविदास का उल्लेख किया था तो केवल इसलिए कि जब महर्षि दयानन्द ने छूतछात के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया था तो इनके सम्मुख दो ऐसे धार्मिक और ऐतिहासिक तथ्य थे जिन्हें दृष्टिविगत नहीं किया जा सकता था। उनके सामने वेदों के यह उपदेश थे कि इस संसार में जो लोग पैदा हुए हैं वह सब एक ही परमात्मा की संतान हैं। इसलिए उनमें से किसी के साथ इस आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता कि उस का जन्म किसी विशेष परिवार में हुआ है। इसीलिए वह कहा करते थे कि कोई व्यक्ति क्या है, इसका निर्णय उसके जन्म के आधार पर नहीं, उसके कर्म के आधार पर ही किया जा है। गांधी जी ने बाद में समाज के जिस वर्ग को हरिजन कहा था, महर्षि दयानन्द ने उन्हें दलित कहा था। अंग्रेजी में इनके लिए OPPRESSED शब्द उपयुक्त होगा। महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण के अनुसार जो भी व्यक्ति दलित है यानि समाज में किसी कारण से दबाया जाता है, चाहे आर्थिक रूप में चाहे सामाजिक रूप में उसे अपने पांव पर खड़ा होने का अधिकार है और उसे अपने पांवों पर खड़ा होने के योग्य बनाना समाज का काम है। महर्षि दयानन्द एक क्रान्तिकारी युगपुरुष थे। वह प्रत्येक उस धारणा, हर उस विचार और प्रत्येक उस आन्दोलन के विरुद्ध विद्रोह करते थे जो मनुष्य को किसी भी तरह गिराने के प्रयास के रूप में सम्मुख आती थी। जब इन से कहा गया कि आदि शंकराचार्य ने कहा था कि नारी और शूद्र इन दोनों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है तो महर्षि दयानन्द ने शंकराचार्य के इस दृष्टिकोण को रद्द कर दिया था और कहा था कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है तथा कोई उन्हें इस अधिकार से वंचित नहीं कर सकता।

महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा गांधी दूसरे महापुरुष थे। जिन्होंने इस देश में छूतछात को समाप्त करने के लिए एक आन्दोलन चलाया था। महर्षि दयानन्द जिन्हें दलित कहते थे, गांधी जी ने उन्हें हरिजन कहा। दोनों किसी को शूद्र कहने के विरुद्ध थे। इसी सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने अछूत की जो व्याख्या की थी वह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं। उन्होंने कहा था कि अछूत वह है जो अनपढ़ है जिसका चरित्र अच्छा नहीं है और जिसे यह अनुमति नही दी जा सकती कि वह समाज में स्वतन्त्रता घूम सके। अछूत वह है जो किसी छूत की बीमारी का रोगी हो। निष्कर्ष यह कि अछूत वह है जो किसी कारण से इस योग्य न रहे कि उसे समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान दिया जा सके। परन्तु आज अछूत को एक राजनीतिक रंगत दी जा रही है। और चूंकि अछूत को कई प्रकार की राजनीतिक सुविधाएं मिल रही हैं। इसलिए कई लोग अपने आप को अछूत कहने पर गर्व महसूस करते हैं। अछूत के लिए अंग्रेजी का शब्द UNPOUCHABLE भी इसीलिए प्रयोग किया गया है कि वह व्यक्ति जो अपनी कार्यपद्धति से इस योग्य न हो कि उसे न छुआ जा सके या न उसके पास बैठा जा सके। उसे अछूत या UNIOUCHABLE कहा जाता है और यह शब्द अंग्रेज के समय में ही शुरू हुआ था। चूंकि वह हिन्दूओं में विघटन उत्पन्न करना चाहता था इसलिए उसने हिन्दुओं के एक वर्ग को अछूत या UNIOUCHABLE कह कर उन्हें हिन्दुओं से अलग करने का प्रयास किया था।

हमारी आज की सरकार ने फिर जात-पात की भावना को भड़काने का प्रयास किया है और इसे ही मैं आर्य समाज के लिए एक चुनौती समझता हूं। जो कुछ आर्य समाज ने विगत डेढ़ सौ वर्ष में किया था। सरकार उस पर मिट्टी डालने का प्रयास कर रही है। ताकि उसे उन लोगों के मत प्राप्त हो सकें जिन्हें हम दलित या पिछड़ी जातियां कहते हैं। आर्य समाज उन्हें मदद देने के विरुद्ध नहीं है। इन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप में उठाने के लिए जो कुछ भी किया जा सकता है वह सरकार को भी करना चाहिए और जनता को भी। जब अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांगड़ी में अपना गुरुकुल प्रारम्भ किया था उसमें जो बच्चे प्रविष्ट किए जाते थे, उन सबके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता। वह सब एक जगह ही रहते थे, एक जैसा खाते थे, एक जैसा पहनते थे। इनमें से किसी को यह पता न होता था कि वह किस जात या किस बिरादरी का है। जात-पात को समाप्त करने में आर्य समाज की ओर से यह एक क्रियान्वित परीक्षण किया गया था।

सपने टूट रहे हैं

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक सपना देखा था कि भारत देश एक दिन आजाद होगा। यहां से जहालत, गरीबी, अस्पृश्यता बेरोजगारी, जात-पात और लूट फूट की बीमारी दूर हो कर भारत के लोग वेदानुयायी बन कर स्वतन्त्र भारत को उन्नत करते हुए यहां राम राज्य स्थापित करेंगे। आपस मे सभी भाई भाई की तरह रहेंगे और जाति बिरादरी की दीवारो को तोड़ कर अपने परिवार को, समाज को, देश को और मानव जाति को उन्नत करेंगे। महर्षि के सपने कुछ साकार भी हुए, आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने देश की आजादी के लिये अपने अनेकों बलिदान दिये और 15 अगस्त सन् 1947 को भारत आजाद हुआ। उसके पश्चात आर्य समाज के नेताओं ने फिर आशाए लगाई कि वास्तव मे भारत महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बन जायेगा परन्तु राजनीतिक लोगों ने वोटों के लिये अपने तरह तरह के नये-नये हथकंडे प्रयोग करने आरम्भ कर दिये। देश उन्नत हुआ, आर्थिक दृष्टि से कुछ निर्भर हुआ परन्तु सामाजिक दृष्टि से और बिखरता जा रहा है और इस में हमारे देश के नेताओं का ही अपना स्वार्थ झलकता हुआ दिखाई देता हैं।

आज आरक्षण के नाम पर सारे देश में जो स्थिति पैदा हो गई है उसे देख कर तो अब ऐसा लगता है कि जिस उग्रवाद से देश त्रस्त हो रहा था इस के सामने शायद वह भी तुच्छ हो कर रह जाये। क्योंकि यह विवाद उग्रवाद से भी भयकर रूप धारण करता जा रहा है। आज ऐसी स्थिति पैदा कर दी गई है कि जिस से नगर नगर और गाव-गाव मे लोग एक दूसरे के शत्रु बन कर रह जायेंगे और देश की उन्नति के स्थान पर यह लोग इसे अवनति की ओर ला कर खड़ा कर देंगे। हम कांग्रेस के राज्य में यह विचारा करते थे कि वह अपनी निहित वोटों के लिये कई तरह के हथकंडे बरत रही है और इस से देश को बहुत हानि पहुंच रही है। इसी पर जनता ने कांग्रेस के स्थान पर जनता दल के हाथ मे देश की बागडोर दे दी, परन्तु इस पार्टी के आने पर जो आशाए जनता की इन के प्रति लगी हुई थी वह सभी धूमिल हो गई। यदि स्थिति इसी प्रकार से बनी रही तो भारत देश का हो सकता है बहुत बड़ा नुकसान हो। विदेशी पहले ही कुछ ताकतों को देश मे खड़ा कर के जगह जगह उपद्रव झगड़े और आतक फैलाना चाहते हैं। परन्तु अब अपने भी जो देश के कर्णधार या उच्च पदों पर आसीन है वह भी उसी राजनीति पर चल पड़े हैं जो विदेशियों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अपना रखी है। प्रश्न पैदा होता है कि ऐसी दशा मे देश का क्या बनेगा इसे देख कर आज देश भक्तों के सपने टूट रहे है।

आर्य समाज ने जिस वर्ण व्यवस्था का वेद और अपने धर्म ग्रंथों के आधार पर प्रचार किया था अर्थात् समाज को चार भागों मे बांटा था, ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यदि भारत की जनता आज इसवर्ण व्यवस्था को स्वीकार कर ले तो जो खतरा इस समय देश के सामने खड़ा हो गया वह टल सकता है। बुद्धिजीवी और देश भक्त लोग देश को इस संकट मे से निकालने के लिए आगे आएं यही समय की पुकार है।

— सह-सम्पादक

मण्डल आयोग की सिफारिशो के कारण जात-पात की भावनाओ को बल मिल रहा है, जबकि जात-बिरादरी की इस भावना को समाप्त करने के लिए देश की नई पीढ़ी के दिमाग में यह भावना भरने का प्रयास आर्य समाज ने ही किया था कि हम सब एक हैं। हम मे से कोई भी इसलिए ब्राह्मण नहीं कि इसका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ है। न ही कोई शूद्र या हरिजन है क्योंकि इसका जन्म किसी शूद्र या हरिजन परिवार मे हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करने की स्वतन्त्रता है। वह जैसा कर्म करेगा, वैसा ही उसे फल मिलेगा ; दूसरे शब्दों मे उसे अपने समाज मे वह ही स्थान मिलेगा जिसका वह पात्र है।

मैं इसे देश का दुर्भाग्य समझता है कि जिन्हें पिछड़ी जातियां कहा जाता है। उनमें भी हीन भावना उत्पन्न हो रही बजाये इसके कि वह इस सीमित दायरा से निकलने का प्रयास करें, जिसमें कि वह अपने जन्म के कारण फस गए हैं। वह अपनी जंजीरों को और भी अधिक सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहे हैं। आर्य समाज इन जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करता रहा है और हमारी सरकार इन्हें इसलिए मजबूत कर रही है ताकि उसके वोट सुरक्षित हो जाएं। (आगामी अंक में पढ़ें)

—वीरेन्द्र

14 सितम्बर (हिन्दी दिवस) पर—

देश स्वतन्त्र है पर उसकी भाषा पर आज भी प्रतिबन्ध है

लेखक—श्री डा० प्रशान्त जी वेदालंकार, 7/2 रूपनगर दिल्ली - 6

(गतांक से आगे)

भारत की भाषा समस्या के समाधान के लिए त्रिभाषा सूत्र बनाया गया पर कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडू आदि में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकारते हुए त्रिभाषा सूत्र को पूर्ण रूप से कार्यान्वित नहीं किया गया। कुछ प्रान्तों में तो एक भाषा सूत्र ही अपनाया जा रहा है। जहाँ त्रिभाषा सूत्र कार्यान्वित किया गया है, वहाँ भी हिन्दी की पढ़ाई असन्तोषजनक है। हिन्दी अध्यापकों के लिए सन्तोषप्रद व्यवस्था नहीं है और न ही अनुमोच्य पाठ्यक्रम बनाया गया है। अतः सरकार के पास भाषा सम्बन्धी कोई निश्चित नीति नहीं है। जिन सरकारों ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया है वे भी अपने प्रान्त के विद्यार्थियों के भविष्य के प्रति आशंकित हैं और अपनी नीति बदलने की सोच रहे हैं। अंग्रेजी को अनिश्चित् काल के लिए सहराजभाषा स्वीकार करने का यह दुष्परिणाम निकला कि अंग्रेजी का अस्तित्व बना रहा और हिन्दी के राजभाषा बनने की सम्भावना नहीं रही।

एक समान न्यायिक व्यवस्था को विकसित करने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि उच्च एवं उच्चतम न्यायालयों में कानून की भाषा हिन्दी हो। इस दिशा में भारतीय संविधान में विविध उपबन्धों पर गम्भीरता से विचार किया गया है। संविधान के अनुसार प्रत्येक प्रादेशिक न्यायालयों के न्याय-निर्णय प्रादेशिक भाषा में होने पर राष्ट्र की एकता नष्ट होगी तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की उच्चतम न्यायालय में नियुक्ति असम्भव होगी। न्यायदान की गुणवत्ता नष्ट होगी तथा उच्च न्यायालयों के अखिल भारतीय स्वरूप में बाधा पड़ सकती है। यही नहीं, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जा बसने वालों को न्यायालयों में याचिकाएं प्रस्तुत करने में तो असुविधा होगी। अतः न्यायालयों में एक सामान्य भाषा का प्रचार हो और वह सामान्य भाषा अंग्रेजी मान ली गई।

इस भ्रामक तर्क के आधार पर अभी तक हिन्दी भाषी प्रदेशों के न्यायालयों में भी हिन्दी को पूर्ण रूप से न्यायोचित स्थान नहीं मिल सका। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली के न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति प्रदान करने के लिए वकीलों को संघर्ष करना पड़ा। वस्तुतः संविधान के 348वें अनुच्छेद में अंग्रेजी को अनावश्यक महत्व दिया गया है। 348 (क) के अनुसार उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी। इसी अनुच्छेद के (क) तथा अन्य उपधाराओं में भी अंग्रेजी की प्रमुखता बनी हुई है।

प्रजातन्त्र में अल्पसंख्यकों के कुछ विशिष्ट अधिकार आवश्यक हैं—इस तर्क के आधार पर अल्पसंख्यकों की भाषा तथा संस्कृति को जिस प्रकार प्रश्रय दिया गया है उससे प्रादेशिक भाषाओं तथा राष्ट्रीय भाषा पर बहुत ही दुष्प्रभाव पड़ा है। वस्तुतः अल्पसंख्यक भाषा और राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने से इस देश की भाषाओं की जितनी हानि हुई है उतनी और किसी बात से नहीं। एक अल्पसंख्यक भाषा को राजभाषा की मान्यता देना संविधान सभा की सबसे बड़ी गलती रही।

संविधान में हिन्दी को राजभाषा तक नहीं कहा गया उसके लिए संघ सरकार की राजभाषा शब्द का प्रयोग किया गया है। बाद में 1965 में एक राजभाषा अधिनियम बनाकर उसका यह अधिकार भी सदा-सदा के लिए छीन लिया गया है। आज देश स्वतन्त्र हैं पर उसकी भाषा पर प्रतिबन्ध है। पता नहीं कोई पुरुषोत्तम दास टण्डन या सेठ गोविन्द दास कब संसद् में आकर हिन्दी को ठीक स्थान दिलाने के लिए संघर्ष कर सकेंगे।

हम भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई का स्मरण अत्यन्त आदरपूर्वक करना चाहते हैं, उन्होंने अपने कार्यकाल में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सभी भारतीय भाषाओं की मान्यता दिलवा दी थी। इसी मान्यता का यह सुखद परिणाम है कि अब कुछ युवक अपनी भाषाओं के माध्यम से भी प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने लगे हैं। उससे अहिन्दी भाषियों का यह भय बहुत कुछ दूर हुआ है कि हिन्दी के छा जाने के प्रति वे प्रतियोगी परीक्षाओं मे पिछड़ जाएंगे। वस्तुतः अन्य भारतीय भाषाओं को भी समादृत करने का प्रश्न उतना ही सार्थक है जितना कि हिन्दी को समृद्ध करने का।

पर दुःख इस बात का है कि अभी भी इन परीक्षाओं में अंग्रेजी के प्रश्नपत्र अनिवार्य हैं। जिसके लिए गत दो वर्षों से संघ लोकसेवा आयोग के बाहर कुछ युवक निरन्तर आन्दोलन कर रहे हैं। पर उनकी आवाज सुनने वाला कोई नहीं है।

यह निश्चित है कि जब तक संविधान में पूरी निष्ठा के साथ भारतीय भाषाओं का आदर नहीं होगा, तब तक हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा असम्भव है। यह कार्य प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मानकर पूरा हो जाने वाला नहीं है। हिन्दी पर सरकारी राजभाषा विभाग हिन्दी सप्ताह अथवा हिन्दी पखवाड़ा मनाकर कुछ हिन्दी प्रेमियों का सम्मान अवश्य कर देते हैं पर उससे हिन्दी का कोई लाभ नहीं होता।

पिछले दिनों इन्दौर में हुए अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव का यह प्रस्ताव कि हिन्दी भाषा प्रदेशों के मुख्यमंत्री मिलकर इन प्रदेशों में हिन्दी को प्रस्थापित करें—हिन्दी के प्रयोग की दिशा में एक प्रभावी कदम हो सकता है। इस सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शान्ता कुमार, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने भी उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया।

श्री शेखावत ने हिन्दी के प्रयोग के लिए सब दलों को एक ही मंच पर आने का आह्वान किया और केन्द्रीय सरकार के हिन्दी के प्रयोग करने की मांग की। इस सम्मेलन में निवर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, केन्द्रीय रेलमंत्री जार्ज फर्नांडीज, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़, समाजवादी नेता श्री राजेश्वर दयाल आदि ने भी हिन्दी के बारे में सरकार की ढुलमुल नीति की आलोचना की।

पर अब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भोपाल में यह ब्यान देकर कि वे भाजपा शासित प्रदेशों में अंग्रेजी हटाने के विरुद्ध हैं। भाजपा के मुख्यमंत्री चक्र में आ गये हैं। इस कारण अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन से जो आशा बंधी थी वह धूमिल हो गयी है।

वस्तुतः अभी हमें बहुत संघर्ष करना है। शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम तथा प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी से भारत मां की कुल दो संतान ही बोल सकती है, बाकी 98 गूंगी बनी रहती हैं। यह गूंगापन जन्मना नहीं है, वरन् उनको बलात गूंगा बना दिया गया है। हमें राजनीतिक दलों व नेताओं से आशा नहीं है। जनता को ही जागरूक होकर अपना मुंह खोलना होगा। जैसे भारत मां को स्वतन्त्र कराने के लिए संघर्ष किया था वैसे ही भारत मां के 98 प्रतिशत पुत्रों की वाणी पर लगे प्रतिबन्ध को हटाने के लिए भी संघर्ष करना होगा।

ऐसे ही दिन बीतेंगे !

रचयित—मोहन लाल शर्मा "रश्मि"
907/ए०, फ्रीलैण्ड गंज, दाहोद (गुजरात)।

कुछ तो विचार करो साथियो, क्या ऐसे ही दिन बीतेंगे।
बढ़ा के घट वैदिक पथ पर, क्या ऐसे ही अब रीतेंगे॥
किसी समय में भूतल पर आर्यों का राज कहाता था।
सारा जगत कभी यहाँ पर, गुण आर्यों के गाता था॥
उपदेश दयानन्द के वे, क्या कभी इन मन भीतेंगे।
कुछ तो विचार करो साथियो, क्या ऐसे ही दिन बीतेंगे॥1॥
पथ की बाधाओं में जो, जीवन भर था कभी न हारा।
मानवता की खातिर जिसने, तन मन धन सब वारा॥
न जीत सके जो मन को हम, फिर कैसे हम जग जीतेंगे।
कुछ तो विचार करो साथियो, क्या ऐसे ही दिन बीतेंगे॥2॥
दयानन्द सा कोई जगत में, न हुआ और न हो पायेगा।
वेद मार्ग बतलाया हमको, जग सदा कीर्ति यश गायेगा॥
बाग लगाया ऋषिवर ने जो, कब तक उसको न सींचेंगे।
कुछ तो विचार करो साथियो, क्या ऐसे ही दिन बीतेंगे॥3॥
स्वप्न ऋषि का अब हमको, मिल करके पूरा करना है।
देश प्रेम के भाव हृदय में, जन जन में अब भरना है॥
मुस्कानों को बांट के "रश्मि" कब मानव मन हम जीतेंगे।
कुछ तो विचार करो साथियो, क्या ऐसे ही दिन बीतेंगे॥4॥

एक विचार :—

आर्य समाज पंजाबी (गुरमुखी लिपि) को भी अपनाए

लेखक : चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, (उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा)
चौक नई कचहरी जालन्धर।

(गतांक से आगे)

6. प्रत्येक वर्ष पंजाब सरकार की ओर से हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों विशेषतया मिडल इत्यादि के बालक व बालिकाओं के गले में हिन्दी माध्यम का डला हुआ फंदा सुकेड़ा जा रहा है। और शीघ्र ही यह हिन्दी माध्यम, सरकार समाप्त करके रख देगी। क्योंकि प्रथम तो पंजाब के सरकारी शिक्षण संस्थाओं में, आरम्भ से हिन्दी का विषय है ही नहीं। पहली पराजय तो यही हो चुकी। और फिर यदि कुछेक शिक्षण संस्थाओं में, कुछ प्रबुद्ध सामाजिक व्यक्तियों अथवा संस्थाओं ने, हिन्दी माध्यम से पढ़ाई कराने का प्रबन्ध कर रखा है, तो उनके साथ 'पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड' पूरी तरह अन्याय का पैमाना वर्तता है। प्रत्येक वर्ष यह देखने में आता है कि हिन्दी माध्यम की परीक्षाओं को बोर्ड आज्ञा प्रदान करने मे रुकावट डालता है और विद्यार्थीगण विचारे अंतिम दिनों तक दुविधा में पड़े रहते हैं। यह कह कर हर बार आज्ञा मिलती है कि अब भविष्य में केवल पंजाबी (गुरमुखी लिपि) के माध्यम से ही पंजाब में परीक्षाएं ली जाया करेंगी। अत: पंजाब के नौनिहाल मासूम बालक बालिकाओं पर उन संस्थाओं इत्यादि द्वारा अत्याचार व अन्याय ही कहा जा सकता है जिन्होंने ऐसे हिन्दी माध्यम स्कूलों को खोल रखा है? अपनी ओर से तो हिन्दी की पैरवी यह सामाजिक संस्थाएं कर रही है जबकि इनके उच्च मनतव्यों को पूर्ण रूप से न समझ कर सरकार व मतान्ध लोग इन्हें द्वेष भावना फैलाने वालों की सजा देते हैं।

दूसरी ओर ऐसे हिन्दी पढ़े योग्य व्यक्तियों को पंजाब में सरकारी नौकरियों में भी प्रवेश नहीं मिलता, जबकि उनसे कहीं कम योग्यता रखने वालों को जो पंजाबी (गुरमुखी लिपि) में पढ़े होते हैं, नौकरी में रख लिया जाता है, और इस प्रकार सरकारी धन वेतन के रूप में उन लोगों को ही मिल रहा है और हिन्दी वाले विचारे निर्धन होते चले जा रहे हैं। और गुरमुखी वाले पंजाब सरकार की बनाई हुई नीति पर व माप दण्ड पर पूरा उत्तर जाते हैं। हिन्दी वालों का यह दोष कि वह पंजाब सरकार की भाषा नीति के विरुद्ध, हिन्दी संस्थाओं में हिन्दी पढ़ रहे हैं। कैसी विडम्बना है।

7. उधर यदि कोई ऐसा विद्यार्थी कहीं पंजाबी (गुरमुखी लिपि में) पढ़ लिख कर किसी हिन्दी माध्यम वाले स्कूल/कालेज में पंजाबी विषय में नौकरी चयन हेतु साक्षात्कार में आ ही जाता है, तो भी उस विचारे की तुलना में, वह प्रत्याशी जो विशेष सम्प्रदाय का है और पंजाबी को अपनी बपौती समझने लगे हैं वह, उस में, अधिक योग्यता के कारण वहा पर भी चुन लिया जाता है और वह हिन्दी सम्प्रदाय वाला यहा भी मात खा कर निर्धनता मे धकेल दिया जाता है। और यदि विचारे ऐसे व्यक्ति को हिन्दी शिक्षण संस्था वाले नौकरी नहीं देंगे, तो दूसरे सम्प्रदाय वाले व सरकार तो उनको लेगी ही नहीं। इन्हें पग-पग पर हर प्रकार से हानि का मुख देखना पड़ रहा है। इस उलट चक्र को अब दिशा देकर सीधा चलाना ही होगा, और पंजाबी को भाषा मे अपना कर उस पर प्रभावी होने का सामर्थ, हिन्दी संस्कारों के पल्लवित पोषित बालक बालिकाओं में है ही।

"पंजाबी" को हमने तश्तरी में रखकर एक सम्प्रदाय को दे दिया है और स्वयं हम एक तरफ होकर रह गये हैं। निश्चय ही पंजाब के हर क्षेत्र में उनका बोल-बाला होकर रह गया है क्योंकि उन्हें हर फील्ड में बिना लड़े जीत (WALK OVER) मिल जाता है। यह दोष अब दूर होना ही अभीष्ठ है, अन्यथा भविष्य और भी अन्धकारमय बनेगा, ~~और इसका~~ कारण वह नेतृत्व होगा जो अब भी गुरमुखी लिपि को पंजाबी में पूर्ण रूपेण से स्वीकार न करने में बाधक बनेगा। आर्य समाज उच्चकोटि के प्रबुद्ध और बुद्धि जीवियों की महान संस्था है, विचार और पुनर्विचार करें, और नया मोड़ लेकर स्थिति को पुन: अपने हाथों में दलेरी से ले, और पंजाबी अपनाने हेतु दिशा निर्देश दे।

8. एक घटना यहां देकर मैं अपनी लेखनी को विराम दूंगा।

गत पांच/छ: वर्ष की बात है, आर्यसमाज की शिरोमणी सभा, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के मान्य उपप्रधान, श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, जो आन्ध्रप्रदेश सरकार की ओर से एक मन्त्री के तुल्य रुतबे पर पंजाब, जालधर सरकारी दौरे पर एक बैठक में भाग लेने आये थे। मैं उनके साथ जालन्धर के सर्किट हाउस में, पंजाब के आर्यो की ओर से उनके सम्मान हेतु, गया था। वहां उन्होंने भाषा सम्बन्धी विचार व्यक्त करने थे। जब मीटिंग समाप्त हुई, तो वापसी पर मैंने उनसे प्रश्न किया कि आपने तो इस भाषा सम्बन्धी गोष्ठि में पंजाब में हिन्दी भाषा की पैरवी की होगी? उन्होने उत्तर में कहा कि नहीं। उन्होंने आगे कहा कि मैंने तो सरकारी तौर से प्रत्येक राज्य में उसकी अपनी मातृभाषा को और तीव्र गति से प्रोत्साहन देने सम्बन्धी विचार दिये। और पंजाब में पंजाबी (गुरमुखी लिपि में), क्योंकि भारत सरकार का यही मन्तव्य है और प्रोग्राम है कि प्रत्येक प्रान्त में उस की मातृ भाषा ही शिक्षा का माध्यम हो। पंजाब में पंजाबी है।

मैं आश्चर्य चकित तो हुआ, पर मेरे उन विचारों को वन्देमातरम् जी के उत्तर से शक्ति मिली, कि पंजाब मे गुरमुखी लिपि में पंजाबी को आर्यसमाज पूर्ण रूपेण 'अपना कर' पंजाब के वास्तविक रूप मे मालिक बन, वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करे। इससे जहां हम पंजाब मे स्वयम् दो नम्बर के शहरी बन बैठे हैं, वह भावना समाप्त होगी, सद्भावना भी फैलेगी और पंजाब में फिर हमारा स्वयमेव बोल-बाला होता जायेगा। वर्चस्व बढेगा। पर ध्यान रहे, आर्यसमाज अपने हिन्दी प्रचार की गति को भी निरन्तर बनाये रखे और तीव्र करे।

संस्था के प्रति अगाध श्रद्धा

पिछले दिनों आदरणीय श्रीमती विजय लक्ष्मी बहिन जी अपने घरेलु कार्य हेतु इंग्लैंड गईं वहा से संस्था के लिए 943 पौंड दान के रूप में लोगों से एकत्रित करके जिसकी भारतीय मुद्रा लगभग 25659/- रुपये बनती है लाकर आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, लुधियाना को दी जिसकी वह प्रबन्धक हैं। इतनी अगाध श्रद्धा के कारण ही विद्यालय इतनी उन्नति कर रहा है। आदरणीय बहिन कमला जी आर्या प्रधाना तथा आदरणीय प्रिंसीपल श्रीमती कान्ता जी सूरी के नेतृत्व में अगाध लग्न से विद्यालय परीक्षा परिणामों, खेल कूद तथा अन्य विषयों में उन्नति की ओर अग्रसर है। विद्यालय की छात्राएं एवं अध्यापक वर्ग व प्रबन्धकर्तृ सभा उनके प्रति आभार प्रकट करती है।

—ऊषा सूरी

सम्पादक के नाम पत्र

शब्द प्रमाण की प्रामाणिकता

महोदय,

आर्य मर्यादा के विगत अकों में पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार का एक एक विचार पूर्ण लेख आप प्रकाशित कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में निवेदन है कि निरुक्त पद्धति का आश्रय लेने से वेदों के एकाधिक अर्थ तो किए जा सकते हैं किन्तु सर्वथा स्वेच्छाचार से वेदार्थ करना घातक होगा। अतः प० वेदभूषण ने जो अर्थ किये हैं, उन्हें सशयास्पद माना जाना स्वाभाविक है। विद्यालंकार जी के कथन में बहुत बल है जब वे यह कहते हैं कि किसी भी मन्त्र का सर्व सामान्य तथा सर्व स्वीकार्य कुछ अर्थ तो होना ही चाहिए। इसी प्रकार वेद भूषण जी का वैज्ञानिकों को चुनौती देना भी औचित्य पूर्ण नहीं है। गोघृत आदि को लेकर आर्य विद्वान् प्रायः अतिशयोक्तियां करते रहते हैं। गोघृत की उत्तमता को स्वीकार करते हुए भी यह सब कहना किसी पौराणिक गप्प से कम नहीं है कि उसमें सौर तत्त्व की प्रधानता है अथवा सूर्य लोक तक जा कर रश्मियो के प्रदूषण को नष्ट करता है आदि आदि।

रमेश मुनि के सम्बन्ध में तो जितना थोड़ा कहा जाए उतना ही अच्छा Lesser the better कारण कि वे तो वेद का क ख भी नहीं जानते। उन्होंने यज्ञ विषयक जो शर्तें आर्य जगत (25-10-89) में लगाई हैं वे उनकी अनाधिकार चेष्टा ही बताती है। पता नहीं इतना अनर्गल लिखने वालों को आर्य पत्रों मे स्थान कैसे मिल जाता है।

यज्ञ की विधियां ऋषि दयानन्द ने बनाई हैं। हम उनके आदेश को मानें या रमेश मुनि को, जो जीवन भर सरकारी कार्यालयों में काम करते रहे और अब यज्ञाचार्य बनने का झूठा दम्भ करते हैं।

रमेश मुनि का यह कथन तो और भी हास्यास्पद है कि वरुण देवता आसुरी शक्ति से हजारों किलो मीटर से जल लाकर बरसाता है। जिसे वैदिक भाषा विज्ञान का थोड़ा भी ज्ञान है वह जानता है कि वैदिक संस्कृत में असुर कोष्ठता का सूचक है क्योंकि यह शब्द असु अर्थात् प्राण के साथ जुड़ा है। वेदों में यदि वरुण को असुर कहा है तो वह उसकी आसुरी (राक्षसी) वृत्ति का सूचक नहीं है जैसा कि ये तथाकथित मुनि जी समझ बैठे हैं। आर्य समाज में स्वाध्याय की प्रवृत्ति की न्यूनता का ही यह परिणाम है कि आर्य समाज के पत्रों में अनार्य विचार-धारा विशेषतः सकीर्ण हिन्दूवाद को प्रोत्साहन देने वाले लेख प्रायः छपते रहते हैं।

—डा० भवानीलाल भारतीय
दयानन्द पीठ चंडीगढ़

आगे बढ़िये

- जो करना चाहते है उसको करिये, ज्यादा सोचिए मत।
- सुबह उठो और सब काम सुबह से ही करो।
- आप कोई अच्छा काम करना चाहते हैं तो कुछ लोग आपको करने से रोकेंगे, मगर उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।
- जिस भी फील्ड मे आप काम करते हैं आप उसे देखें, उस फील्ड में सब से अच्छा काम कौन करता है कैसे करता है। उसके तरीके अपनायें।
- खर्चे सीमित करें।
- जो काम जितना सस्ता हो सकता हैं उसको सस्ता करें। जहां चिट्ठी से काम चल सकता हो चिट्ठी ही डालिये।
- वक्त रहते काम करिये, पहले प्लानिंग कीजिए।
- सब काम संक्षिप्त (शार्ट) मे करें, ज्यादा फैलाव न करें।
- कमाओ ऊपर वाले की तरफ देख कर, खर्च करो अपने से नीचे वाले की तरफ देख कर।
- हमेशा आगे बढ़ने की इच्छा रखें (अच्छी तरफ)।
- जरा सोचें, कैलण्डर सन् को याद रखें कि 1990 है, सन् 1890 में आप कहा थे और सन् 2090 में आप कहा होंगे। इसलिए छोटी सी जिन्दगी मे उलझिए मत। आगे बढ़िये।
- जिन्दगी में सौ चीजों की जरूरत होती है, उसमें पैसा भी एक चीज है। पैसा साधन है साध्य नहीं।
- समय की कीमत समझो, गया समय हाथ नहीं आता।
- ईश्वर को सदा पास समझो। वह हर अच्छे बुरे काम को देखता है।
- दूसरे के गुणों को देखो, अपने अवगुण को।
- हमें अपने परिवार के मेम्बरों के साथ और दूसरे साथियों के साथ जहां तक हो सके ताल-मेल रखना चाहिए।
- कुदरत, समाज और सरकार की तरफ से जो सुविधाएं दी हुई हैं उनका पूरा लाभ उठाना चाहिए, जैसे लायब्रेरी, पार्क, योगा, प्रवचन, मनोरंजन, खेल-कूद इत्यादि।

—भामा सोसायटी, दिल्ली

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता

श्री हाकिम राय का देहावसान

श्रीमती कौशल्या देवी जो कि आर्य समाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली की स्त्री समाज की कई वर्षों से प्रधाना चली आ रही है और आर्य जगत में प्रधाना जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन के पति श्री हाकिम राय का अकस्मात् देह अवसान हो गया है। श्री हाकिम राय जी का विवाह श्रीमती कौशल्या देवी के साथ 1930 में हुआ था। श्रीमती कौशल्या देवी एक प्रसिद्ध आर्य समाजी घराने की थी उस समय भी आर्य समाज का कार्य करने में अग्रणी रहती थी। उन्हीं के प्रभाव से श्री हाकिम राय जी आर्य समाज के संगठन में सम्मिलित हुए और एक दृढ़ आर्य समाजी बन गये।

श्री हाकिम राय जी का जन्म 20 जनवरी 1910 को पाकिस्तान के मिण्टगुमरी जिला में हुआ था। वहां उन्होंने ट्रांसपोर्ट का काम शुरू किया। अपने परिश्रम से उसने खूब तरक्की की और धनोपार्जन किया। परन्तु उस आय का बहुत सा हिस्सा आर्य समाज के कार्यों में लगाते रहे।

भारत के विभाजन के कारण उन्हें पाकिस्तान छोड़ना पड़ा। दिल्ली में आकर उन्होंने अपना कारोबार फिर शुरू किया और इस में भी पहले की तरह सफल रहे। यह सफलता उनके अकेले शुद्ध विचार प्रभु में दृढ़ विश्वास सादा जीवन और दयानतदारी का फल था।

इस सफलता के लिए उनको धर्म-पत्नी का सहयोग भी एक कारण था। प्रभु की कृपा से वह अपने पीछे एक सुपुत्र और तीन सुपुत्रियां छोड़ गए हैं उन सब ने बहुत अच्छी ऊची शिक्षा प्राप्त की और आर्य समाज के विचारों से ओत प्रोत हैं और अपनी माता की तरह आर्य समाज के कार्य और उस की प्रगति के लिए प्रतिक्षण अग्रसर रहते हैं।

यह हाकिम राय का परिवार ग्रीन पार्क देहली में धनाढ्य घराना समझा जाता है। हाकिम राय जी ने प्रत्येक के साथ निश्छल सम्बन्ध रखा है। किसी का कभी उन्होंने विरोध नहीं किया। दान देने में और विशेषकर गरीबों की सहायता करने में उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। इसी कारण वे कई जन कल्याण संस्थाओं से सम्बन्धित रहे।

ऐसी संस्थाओं को उनके चले जाने से शायद आर्थिक सहयोग में कमी आए। परन्तु आर्य समाज को उनके निधन के कारण भारी क्षति पहुंची है।

श्रीमती कौशल्या देवी का सारा समय आर्य समाज की सेवा में व्यतीत होता था। घर की चिन्ता से उन्हें पति देव ने मुक्त किया हुआ था। परन्तु सम्भव है अब उस समय में कुछ कटौती हो जाने के कारण आर्य समाज उनकी सेवा का पूरा लाभ न उठा सकेगा।

श्री हाकिम राय जी के हमें छोड़ जाने से मुझे व्यक्तिगत भी क्षति हुई है। जब कभी किसी अवसर पर श्री हाकिम राय जी व उनकी धर्म पत्नि से भेंट होती तो ऐसा प्रतीत होता कि जैसे एक ही कुटुम्ब के सदस्य मिल रहे है जब भी आर्य समाज के किसी कार्य के लिए उनसे दान लेने गया तो जितना भी दान मांगा उतना ही उन्होंने देने में अपनी प्रसन्नता प्रकट की। जबकि आर्य समाज को ऐसे व्यक्तियों की बड़ी आवश्यकता है उनका चले जाना दुखदायी ही नहीं बल्कि समाज की यह क्षतिपूर्ति असंभव दिखाई देती है। अतः मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि प्रभु उन्हें सद्गति प्रदान करे और उनकी धर्मपत्नि सुपुत्र सुपुत्रियों और उनकी सन्तानों को प्रभु प्रेरणा देवें कि वे भी श्री हाकिम राय जी के आरम्भ कार्यों को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करते रहें।

—निवेदक : सोमनाथ मरवाहा
C 3-4 ग्रीन पार्क ऐक्सटेंशन देहली

पादरी को एक आर्य का उत्तर

संग्रहकर्ता—ओम् प्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल, बठिण्डा।

इक दिन इक पिण्ड विच इक पादरी आया।
लोग पिण्ड के कट्ठे कीते, जलसा ओस रचाया॥

जलसे दे विच ओस पादरी, इक तस्वीर दिखाई।
नजर आया तस्वीर दे अन्दर, बैठा कृष्ण कनाई॥

सखिया दे नाल रास रचाऊंदा, ओस ने कृष्ण दिखाया।
मक्खन खांदा, दूध ढोलदा, ओस ने सीन दिखाया॥

फिर ओस ने इक सीन दिखाया, जमना नदी किनारे।
कृष्ण ते राधा पींगां पा पा, लैंदे प्रेम हुलारे॥

फिर दिखाया नहाउदयां, सखियां के कपडे ले जावे।
ऐदां नाल सी पादरी सौ सौ लांछन कृष्ण उत्ते लाऊंदा॥

हिन्दु कौम दा रब्ब आख के ओस दी हसी उडाओंदा।
आखिर दे विच ओस पादरी, इक होर तस्वीर दिखाई।
आखन लगा एह यशू है, मरियम जिस दी माई॥

एह है पुत्त खुदा दा, इस दा पल्ला जिम फड़िया।
ओनां दे पापां दे बदले, एह है सूली चढ़िया॥

एस यशू दी पार्टी विच, जेहड़ा वी रल जावे।
एह जा के सिफारिश करे ओस दी, ओह स्वर्ग नू पावे॥

आओ एस यशू दे उत्ते, सारे ईमान ले आओ।
आओ अपने सब पापा नू, इस कोलों बखशाओ।
जेहड़ा बन्दा इस दे उत्ते, न ईमान लाए।
सड़दा रहेगा नरक दे अन्दर, ओह न बखशया जावे॥

एह कह के ओस पादरी, सारे पासे झाती मारी।
ऐने दे विच इक वृद्ध आर्य, आया पादरी कोल॥

कहन लगा, मैं इक गल्ल पुछा, मैनू जे समझावें।
कहा पादरी पुछो बाबा, तैनू मैं समझावां॥

तेरे दिल दी हर शका नू, दिल तों दूर करावा॥
पादरी दी एनी गल सुन के, बुड्ढे ने जीभ हिलाई।
दस्सो रब्ब कदों दा मोया, हुन किस दी है खुदाई॥

कहा पादरी भोले बाबा, रब्ब कदे नी मरदा।
ओह पालक ते रक्षक सब दा, सारियां दे दु.ख हरदा॥

बुड्ढे केहा जे रब्ब है जिऊंदा, फेर अज्ञी क्यों धर्म गवाइए।
जद पिऊ जिऊंदा है ते पुत्त ते किंयों ईमान लाइए॥

साडे पिण्ड दी रीत पुरानी, चल्दी मुढ तों आवे।
पिऊ दे हुंदे पुत्त दी गल्ल, कदी न मन्नी जावे॥

किंयों न ओहदा पल्ला फड़िए, जेहड़ा कदी नी मरदा।
जो दुनिया दा रक्षक-पालक. सब दे दुखडे हरदा॥

जेहड़ा कम्म नेकी दे करदा, रब्ब नू ओही भावे।
रब्ब नहीं सरकारी बन्दा, जेहड़ा रिश्वत खावे॥

एनी गल्ल सुन के पादरी जी घबराए।
ऐदा नस्से ओस पिण्ड चो, फेर कदे नी आए॥

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उत्त—अच्छी प्रकार से।

उ—निश्चय से।

त्यम्—उस परमात्मा को।

जातवेदसम्—उत्पन्न सम्पूर्ण जगत् को जानने वाले को।

देवम्—देवों के भी देव को।

वहन्ति—जानते हैं।

केतव:—जगत् के रचनादि नियामक गुण तथा वेद-मन्त्र।

दृशे—देखने के लिए (विद्या प्राप्ति)।

विश्वाय—विश्व को (सम्पूर्ण)।

सूर्यम्—जड़ और चेतन के आधार पर ईश्वर को।

चित्रम्—अद्भुत स्वरूप।

देवानाम्—विद्वानों के हृदय में।

उदगात्—अच्छी प्रकार से प्रकट होने वाला है (हुआ है)।

अनीकम्—काम क्रोधादि के नाश के लिए सर्वोत्तम बल है।

चक्षु:—सम्पूर्ण लोकों तथा विद्याओं को जानने व प्रकाश करने वाला है।

मित्रस्य—राग द्वेष से रहित का।

वरुणस्य—श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले मनुष्य का।

अग्ने:—भौतिक अग्नि का।

आ प्रा—सब ओर में धारण करके रक्षा करता है।

द्यावापृथवी—द्युलोक और पृथ्वी लोक को।

अन्तरिक्षम्—अन्तरिक्ष लोक को।

सूर्य:—सबका प्रकाशक।

आत्मा—आधार (व्यापक है)।

जगत:—चेतन जगत् का (मे)।

तस्थुष:—जड जगत् (में)।

च—और।

स्वाहा—मै सत्य कहता हूं।

तत्—उस ब्रह्म को।

चक्षु:—सबका द्रष्टा।

देवहितम्—विद्वानों और धर्मात्माओं का हितकारी।

पुरस्तात्—सृष्टि से पूर्व।

शुक्रम्—शुद्ध स्वरूप (था)।

उच्चरत्—प्रलय पश्चात् भी रहता है।

पश्येम—हम देखें (ईश्वर को)।

शरद: शतम्—सौ वर्ष तक।

जीवेम्—हम जीवें।

शरद: शतम्—सौ वर्ष तक।

श्रृणुयाम्—हम सुनें (ईश्वर को)।

शरद: शतम्—सौ वर्ष तक।

अदीना:—दीनता और अधीनता से रहित-स्वतन्त्र।

स्याम—रहे।

शरद: शतम्—सौ वर्ष तक।

भूयश्च—अधिक भी।

शरद: शतात्—सौ वर्ष से (अधिक भी जीते हुए ईश्वर को देखें, सुनें, सुनावें)।

समपर्ण वाक्य

हे ईश्वर—हे ईश्वर!
दयानिधे—दया के सागर।
भवत्कृपया—आपकी कृपा से।
अनेन—इस।

जपोपासनादिकर्मणा—जप, उपासना आदि कर्म के द्वारा।

धर्मार्थकाममोक्षाणाम्—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को।
सद्य:—शीघ्र।
सिद्धि:—प्राप्ति।
भवेत्—होवे।
न:—हमे।

नमस्कार मन्त्र

नम:—नमस्कार हो।

शम्भवाय—सुखस्वरूप ईश्वर के लिए।

च—और।

मयोभवाय—सब सुखों को देने वाले के लिए।

च—और।

मयस्कराय—धर्मयुक्त कर्मों के नियुक्त करने वाले के लिए।

च—और।

नम:—नमस्कार हो।

शिवाय—अत्यन्त मंगलस्वरूप ईश्वर के लिए।

च—और।

शिवतराय—मोक्ष सुख प्रदाता के लिए।

ओम्—सर्वरक्षक परमेश्वर!

शान्ति:—अध्यात्मिक दु:ख।

शान्ति—आधिभौतिक दु:ख तथा

शान्ति:—आधिदैविक दु:ख से निवृत्ति: शीघ्र करें।

—ज्ञानेश्वर

दर्शन—योग—विद्यालय,
आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़, पत्रा, सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात
पिन—383307

चण्डीगढ़ में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर-22 चण्डीगढ़ में दिनाक 27-8-90 से 2-9-90 तक प्रधान श्री रामरत्न महाजन की अध्यक्षता में मन्दिर के वेद भवन मे वेद सप्ताह सम्पन्न हुआ। जिस में माननीय डा० भवानी लाल जी भारतीय जी का वेदों और उपनिषदों पर दोनों समय प्रात: और सायं प्रवचन हुआ और प्रेम चन्द जी आर्य भजनोपदेशक के मनोहर भजन हुए। सप्ताह भर मे यज्ञ पर बने सभी यजमान आर्य परिवारों को आर्य समाज की तरफ से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश की 21 पुस्तकें बाटी गई। चण्डीगढ़ की जनता ने इसका काफी धर्म लाभ उठाया एव सराहना की।

—प्रेमचन्द मनचन्दा—मंत्री

भगवान् के नाम पर देश को जातीय आधार पर न बांटें

वैदिक मर्यादा के अनुसार मानव जाति को वर्ण व्यवस्था के आधार पर चार वर्गों में विभाजित किया गया। (1) ब्राह्मण—इनका कार्य स्वयं उच्च शिक्षा ग्रहण करके मानव जाति को शिक्षित करना तथा उनका शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक विकास करना था। (2) क्षत्रिय—जिस व्यक्ति मे उत्साह का सचार हो, शारीरिक दृष्टि मे बलिष्ठ एव पराक्रमी हो, जिसे देखने मात्र से ही शत्रु के होश उड़ जाएं, वह वास्तव मे क्षत्रीय कहलाता है। उन्हे देश की सुरक्षा का कार्य सौंपा गया था। (3) वैश्य—इम वर्ण के लोग धन धान्य से सम्पन्न थे तथा इन्हे मानव मात्र के जीवन यापन हेतु मालिक एव अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दायित्व सौंपा जाता था। ये व्यापार कार्य में कुशल थे। (4) शूद्र—उपरोक्त वर्णों मे से किसी भी कार्य को कर सकने मे जो व्यक्ति सक्षम नहीं होते थे उन्हें उपरोक्त की सेवा करने का कार्य भार सौंपा गया था वे शूद कहलाते थे। समाज के कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु इन तीनों वर्गों को जाति व्यवस्था मे बदल दिया चाहे वे कार्य उनकी सक्षमता के विपरीत क्यों न हों और भविष्य में उन्हें जाति के आधार पर दर्जा दिया जाता रहा। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने आपको उच्च वर्ग के मानने वाले ने इसी वर्ग का शोषण किया तथा इन्हें निम्न जाति का समझा जाने से इस वर्ग में हीनता आ गई तथा ये लोग पिछड़ते चले गए। आर्य समाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इन्हें गले लगाया था इनके उत्थान हेतु प्रचार किया तथा इस वर्ग के लिए अनेक सुधारों की घोषणाएं की। इस प्रकार समय के परिवर्तन के साथ ही इनको सम्मान मिलने लगा और लोग जातीय भेद-भाव को भूलकर मिलजुल कर रहने लगे हैं और यह जातीय साम्प्रदायिकता हट रही है।

अब राष्ट्र उग्रवाद की आग में झुलस रहा है, विदेशी ताकतें भारत की एकता और अखण्डता को नष्ट करना चाहती हैं। इसी समय पुन: जातीय आधार पर सरकार द्वारा घोषणा से मानव-मानव के खून का प्यासा बन बैठा है। जातीय भावना पुन: भड़क उठी है। देश में चारों ओर दंगे, फसाद, आग-जनी, तोड़-फोड़, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय सम्पत्ति का नुकसान हो रहा है।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधान मन्त्री भारत सरकार से अनुरोध है कि इस निर्णय पर पुन: विचार करके लोगों का जातीय आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर उत्थान करें ताकि प्राणी मात्र का कल्याण हो।

—हरिचन्द स्नेही,
अध्यक्ष आर्य वीर दल, सोनीपत मण्डल

आ० स० संगरूर का चुनाव

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक चुनाव गत दिनों निम्न प्रकार सर्व सम्मति से हुआ।

1. संरक्षक—श्री निरंजन दास जी गुप्ता।
   प्रधान— ,, सुरेश कुमार जी।
2. उप-प्रधान— ,, भीम सैन जी।
3. मन्त्री श्री मेहरचन्द जी।
4. उप-मन्त्री श्री निरंजन देव जी।
5. कोषाध्यक्ष श्री सतपाल जी आर्य।
6. पुस्तकाध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश जी।
7. स्कूल मैनेजर श्री शिवराम जी महाजन। 8. स्टोर कीपर श्री राम शरण जी।

अन्तरंग सदस्य :

सर्व श्री धर्मवीर जी, कर्म प्रकाश जी, सुरेन्द्र पाल जी गुप्ता, अशोक कुमार जी आर्य, सुरेन्द्र पाल जी उषावाले, श्रीमति कमला जी गुप्ता, शकुन्तला देवी जी, कृष्णा रानी जी महाजन, अश्विनी जी, परसराम जी, जोगीराम जी डिपोवाले।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रेस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

रजि० नं० Pb.J./L. 53
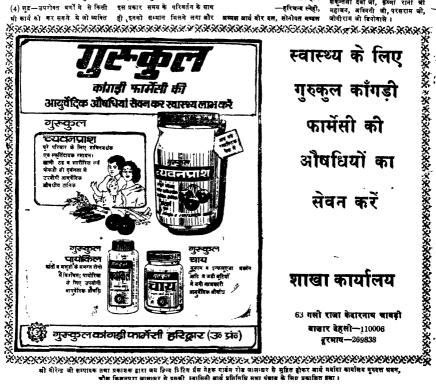
वर्ष 22 अंक 26, आश्विन 8 सम्वत् 2047 तदनुसार 20/23 सितम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

वेद और वैदिक धर्म

लेखक—श्री देवी दयाल शर्मा 'शर्मा निवास' 120 माडल टाऊन अमृतसर।

वेद का अभिप्राय: है ज्ञान। वेद में तृण से ले करके ब्रह्मपर्यन्त सभी पदार्थों का ज्ञान बीज रूप से निरूपित है। दूसरे शब्दों में लौकिक ज्ञान और पारलौकिक ज्ञान, सृष्टि नियम (Scientific Knowledge) और ब्रह्म का ज्ञान (Metaphysical Knowledge) इस ज्ञान का अनुष्ठान करने के लिए हमें वैदिक धर्म का आश्रय लेना पड़ता है। जो ज्ञान धर्म पर आश्रित नहीं है उस ज्ञान से मनुष्य को बहुत अलाभ हो सकता है और उसको जीवन में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। ऐसा ज्ञान जिसका अनुष्ठान नहीं वह तो अज्ञान से भी बुरा है जो मनुष्य को भवसागर में डुबो डालता है।

हमारे पूजनीय महर्षि लोग हमारा मार्ग दर्शन करते चले आ रहे हैं। उन्होंने बताया है कि धर्म के तीन स्तम्भ हैं जिन पर हमारा वैदिक धर्म खड़ा है। वह नीचे लिखे जाते हैं—

(1) यज्ञ (2) दान (3) तप।

(1) यज्ञ करने से मनुष्य अभिमानरहित हो जाता है, मन बड़ा सन्तुष्ट और उदार हो जाता है। स्त्री हो या पुरुष हो उसके मन में प्राणिमात्र का उपकार करने की भव्य भावना जाग्रित हो जाती है। उपकार करने से मन को शान्ति मिलती है। लोक में यश बढ़ता है। इसी से स्वास्थ्य मिलता है, आयु लम्बी होती है, गीता में श्लोक आता है जो यज्ञ अनुष्ठान की पुष्टि करता है—

सहयज्ञा: प्रजा: सृष्टवा,
पुरोवाच प्रजापति:
अनेन प्रसविष्यध्वमेष,
वो ऽस्त्विष्टकामधुक्।

प्रजापति (ब्रह्मा) ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि को प्राप्त हो और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं के देने वाला हो।

यज्ञ के द्वारा मनुष्य को परमपिता परमात्मा का आतिथ्य प्राप्त करना चाहिए। परमात्मा का आतिथ्य क्या है? प्राणिमात्र की सेवा करना, वस्त्रहीनों को वस्त्र देना, भूखों को रोटी देना, रोगियों को निरोग करने का यत्न करना, धनहीनो को धन देना, किसी गरीब की लड़की के विवाह पर धन देकर उसकी सहायता करना, किसी निर्धन माता पिता की सन्तान को स्कूल या कालेज में दाखिल करवा कर उसकी विद्या प्राप्ति का सारा खर्चा बर्दाश्त करना। यह सब बातें यज्ञ के अन्दर आ जाती हैं।

दूसरा वैदिक धर्म का स्तम्भ है दान देना तो मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है यह सारी सृष्टि दान पर ही चल रही है। जो कुछ उस दानियों के दानी, महादानी परमेश्वर ने हमें दिया है उसके निमित्त दे डालने का नाम ही सच्चा दान है। यदि ईश्वर ने आपके पूर्व जन्म के सौभाग्ययुक्त कर्मों के अनुसार धन दिया है तो उस धन को दान में व्यय कर दो। यदि शारीरिक बल दिया है तो पीड़ित जनों को दूसरे के अत्याचार से बचाओ। यदि परमात्मा ने आपको ऋतम्भरा, धारणावती और विलक्षण बुद्धि प्रदान की है तो बुद्धिहीनों को बुद्धिमान् बनाने में प्रयत्नशील हो।

दान देना तो मानो परमात्मा को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ वापिस करता है। नीचे लिखा वेद मन्त्र दान प्रवृत्ति की घोषणा करता है।

ओ३म्। प्रणीयादिन्ना धमानाय तव्यान,
द्राघीयांसं अनुपश्येत पन्थाम्॥
ओहि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा,
अन्यमन्यमुप तिष्ठन्ते राय:॥

धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह मांगने वाले सत्य पात्र को कभी न ठुकराए उसको दान देवे ही। यह जीवन मार्ग बड़ा लम्बा है इस को दीर्घ दृष्टि से देखना चाहिए। यह धन तो रथ चक्रों की तरह घूमता रहता है एक को छोड़ दूसरे के पास जाता रहता है। इसलिए दान करने में विलम्ब कभी नहीं करना चाहिए।

(3) वैदिक धर्म का तीसरा स्तम्भ है 'तप' तप का मतलब है द्विन्दों को सहना। आपत्ति आने पर धैर्य रखना। कायर मनुष्य ऐसे समय पर अधीर हो जाते हैं और सब कुछ लुटा बैठते हैं। गर्मी-सर्दी, मान अपमान, जय अजय, हानि लाभ इनका समभाव से सहने का नाम ही तप है। तप का अभिप्राय यह भी है ईश्वर की अनन्य भाव से भक्ति करना। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इस बात पर बहुत बल दिया है कि गृहस्थ में रहते हुए ब्रह्मचर्या का पालन अवश्य करना चाहिए। हर गृहस्थी को दस बजे सो जाना चाहिए और चार बजे प्रात: उठ कर शौच आदि से निवृत्त होकर ईश्वर भक्ति में निमग्न हो जाना चाहिए। ओ३म् का जप और गायत्री पाठ दोनों ही मनुष्य को भौतिक और अभौतिक उन्नति के शिखर तक पहुंचा देते हैं। महात्मा हंसराज जी भी गायत्री का जप बहुत किया करते थे।

वैदिक धर्म के तीन स्तम्भों का वर्णन योगीराज कृष्ण जी महाराज ने भी गीता में किया है वह अर्जुन को उपदेश करते हैं कि यज्ञ, दान और तप, इनका नित्यप्रति अनुष्ठाण करना चाहिए क्योंकि यह तीनों मानव को पवित्र करने वाले हैं परन्तु इनका अनुष्ठाण कर्तव्य बुद्धि से करना चाहिए, फल की आकांक्षा कभी न करे। फल का बोझ अपने सिर पर कभी न उठाए। श्री अरबिन्दु जी ने भी फल की आकांक्षा रखने वाले मनुष्य की उपमा एक पथिक से की है। वह लिखते हैं कि एक मुसाफिर गाड़ी में यात्रा कर रहा है परन्तु अपने समान (Luggage) को अपने सिर पर उठाए हुए है उस मूर्ख को इतना पता नहीं कि सामान तो तेरा तेरे साथ अपने आप ही गाड़ी में सफर कर रहा है तुझे इसको अपने सिर पर उठाने की क्यों चिन्ता पड़ी। जब फल की भावना से रहित होकर वैदिक अनुष्ठाण किया जाएगा तो फल का बोझ अपने आप ही हमे निर्बोझ कर देगा और हम अपने आपको हल्का-फुल्का अनुभव करेंगे। वैदिक धर्म के बारे में महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में कहा है—

यतोऽभ्युदयनि: श्रेयससिद्धि स धर्म्म:

जिससे लोक उन्नति और मोक्ष सिद्धि हो उसे वैदिक धर्म कहते हैं। अर्थात् केवल परलोक साधना में लग कर इस लोक की अपेक्षा करने वाला धार्मिक नही है। धार्मिक होने के लिए दोनों जन्मो के सुधारने की आवश्यकता है। वैदिक धर्म की इस विशेषता को सदा सामने रखकर तदनुसार आचरण करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जो दोनों जन्मों के लिए व्याकुल होकर जी जान से यत्न करता है वही सच्चा वैदिक धर्म है। मनु महाराज ने भी वैदिक धर्म के मुख्यता दस लक्षण कहे हैं—

धृति: क्षमा दमोऽस्तेय,
शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यक्रोधो दशकं,
धर्म्मलक्षणम्॥

कन्या महाविद्यालय के संस्थापक

लाला देवराज जी

लेखक—स्वर्गीय, श्रीयुत सन्तराम, बी० ए०

लाला देवराज ने पंजाब में स्त्री-शिक्षा और हिन्दी का प्रचार उस समय आरम्भ किया था जब वहां के लोग स्त्री-शिक्षा के विरोधी थे और हिन्दी का नाम भी न जानते थे। खेद है कि गत वैशाख में 75 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया पर जालन्धर के कन्या-महाविद्यालय के रूप में उनका सबसे बड़ा स्मारक हमारे सामने है। श्रीयुत सन्तराम जी उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी जानते थे और इस लेख में आपने उनका संक्षिप्त पर सुन्दर परिचय दिया है।

गतविख्यात इतिहासशास्त्री श्रीयुत एच०जी०वेल्स के मतानुसार किसी व्यक्ति की महत्ता के परखने की कसौटी यह है—"क्या वह विकसित होने के के लिए छोड़ गया? क्या उसने प्रयत्न लोग नवीन शैली पर इतने जोर के साथ सोचने लगे हैं कि उसके मरने के बाद भी उनकी वह विचार-सरणी बद नही हुई?" इस कसौटी के अनुसार भी श्रीमान् देवराज जी एक महापुरुष थे। उनकी महत्ता को समझने के लिए आज से पचास वर्ष पीछे जाना पड़ेगा। उस समय भारत में, विशेषत: पंजाब में, स्त्री-शिक्षा का नाम-निशान न था। उस समय जिन महावीरो ने लोकमत के विरोध के रहते भी, स्त्री-शिक्षा का पंजाब मे प्रचार किया उनमें श्रीमान् देवराज जी सर्वप्रधान थे। उनके द्वारा संस्थापित जालन्धर का कन्या-महाविद्यालय ही शायद पंजाब में स्त्री-शिक्षा की सबसे पहली संस्था है। इसमे केवल पंजाब से ही नहीं, वरन् सुदूर काठियावाड, गुजरात कच्छ, संयुक्त प्रान्त, मध्यप्रदेश और बिहार से भी कन्यायें शिक्षा प्राप्त करने आती थीं। विद्यालय का वार्षिकोत्सव स्त्रियों और स्त्री-शिक्षा के प्रेमियो के लिए एक पुण्य-पर्व का काम देता था। जिस काल में पंजाब का नारी-समाज पर्दे की कड़ी बेड़ियों में जकड़ा पड़ा था, उस काल मे यह विद्यालय स्त्रियों के लिए राक्षसों से पीड़ित प्रदेश मे बाल्मीकि के आश्रम के समान था। यहा आकर वे स्वतन्त्रता और निर्भयता के साथ बिना पर्दे के घूमती-फिरती थी। इन पंक्तियों के लेखक ने सनातन-धर्म के नाम को बदनाम करने वाले कुछ अज्ञानी लोगों को बहुत ही घृणित रीति से स्त्री-शिक्षा और जालन्धर के कन्या-विद्यालय की खिल्ली उड़ाते देखा है। कुछ लड़के लड़कियों का वेष बनाकर एक छकड़े पर बैठ जाते थे और नितांत अश्लील गीत गाते हुए गेंद-बल्ला खेलने का ढोंग भरते थे। सनातन-धर्म के उत्सवों में इसी मडली के साथ सबसे अधिक भीड़ हुआ करती थी। परन्तु आज हम क्या देखते हैं? वही सनातन-धर्मी खुद कन्या पाठशालायें खोल रहे हैं। आज उनके उत्सवों में स्त्री-शिक्षा के विरुद्ध वैसी बकवाद करने का किसी को साहस नहीं होता। दूसरे शब्दों में श्रीमान् देवराज जी ने आज से पचास वर्ष पूर्व जनता को जिस सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा की थी, जिस नवीन विचार-सरणी पर उसको डाला था, उस पर वह अब पूरे प्रेम और उत्साह साथ अग्रसर हो रही है। इसीलिए मैं कहता हू कि महत्ता की कसौटी पर वे पूरे उतरते हैं, खेद है कि स्त्री-जाति के इस परम हितकारी और पंजाब में स्त्री शिक्षा के इस निर्भीक मार्ग-दर्शक का, 78 वर्ष की आयु में, गत 4 वैशाख संवत् 1992 को अचानक देहान्त हो गया।

लाला देवराज जी का जन्म जालन्धर के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता राय सालिगराम जी एक बड़े रईस और सरकारी इलाके में तहसीलदार थे। लाला जी की अपनी माता श्रीमती काहनदेवी पर बड़ी भक्ति और स्नेह था। अपने चार भाइयों में वे दूसरे थे सबसे बड़े भाई का देहान्त बहुत दिन पहले हो चुका था। तीसरे भाई राय जादा भक्तराम जालन्धर के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। चौथे भाई श्रीयुत हंसराज जी बैरिस्ट कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। श्रीमान् देवराज की एक भगिनी भी थीं। उनका विवाह स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी (तब महाशय मुंशीराम जी) के साथ हुआ था।

मुझे स्वर्गीय लाला देवराज जी के साथ कोई दो बरस तक रहने का सुअवसर मिला था। इस थोड़े से समय मैंने उनमें अनेक देवदुर्लभ गुण देखे। सबसे पहला सद्गुण तो उनका बहुत उच्च चरित्र था। विद्यालय की लड़कियां उन्हें 'चाचा जी' कहा करती थीं और वे सचमुच उनके चाचा ही थे। जिस प्रकार किसी स्नेहशील पिता के घर में प्रवेश करते ही सभी बच्चे हर्ष से प्रफुल्लित हो उठते हैं और उससे आकर लिपट जाते हैं, [illegible] प्रकार श्रीमान् देवराज जी के महाविद्यालय के आंगन में पांव रखते ही विद्यालय की सभी लड़कियां उनसे आकर लिपट जाती थीं। कई छोटी लड़कियां तो उनकी पीठ पर चढ़ जाती थीं और जेबों में हाथ डाल कर फल-फूल निकाल लेती थीं। उस समय वे भी उन बच्चियों के साथ बच्चे ही बन जाते थे। वे भी उनके साथ उसी प्रकार खेलते थे, हो हो करके चिल्लाते थे, भागते थे, छुपते थे। लड़कियां उन्हें खोजती थीं, वे लड़कियों को खोजते थे। मुझे यह दृश्य देखने का सौभाग्य अनेक बार प्राप्त हुआ था। सचमुच ऐसा जान पड़ता था, मानों पिता अपनी पुत्रियों के साथ खेल रहा है। माता-पिता के स्नेह से वंचित 'आश्रम'-निवासिनी कन्यायें लाला जी के साथ इस प्रकार खेलकर अपने माता-पिता के बिछोह को भूल जाती थीं। आश्रम का कठोर और स्नेहशून्य जीवन लाला जी के इस पिता-सदृश व्यवहार से उन्हें सरल जान पड़ता था।

मैंने बहुत कम कन्या संस्थायें ऐसी देखी या सुनी हैं जिनके संचालकों पर पर किसी-न-किसी प्रकार का आचार-दोष जनता ने न लगाया हो। यही कारण है कि आज से कुछ वर्ष पूर्व तक किसी भी कन्या-विद्यालय के साथ छात्राओं के रहने के लिए आश्रम या बोर्डिङ्ग हाउस न होता था। परन्तु श्रीमान देवराज-द्वारा संस्थापित जालन्धर के कन्या-महाविद्यालय के साथ लगभग आरम्भ से ही छात्रावास का होना इस बात का प्रमाण है कि जनता को लाला देवराज पर कितना भारी विश्वास था। उनका कट्टर से कट्टर विरोधी भी कभी उनके चरित्र पर दोष नही लगा सका।

एक समय की बात है। मैं लाला जी के साथ विद्यालय को जा रहा था। विद्यालय नगर से बाहर कोई डेढ़ मील के अन्तर पर है। रास्ते में एक मुसलमान किसान युवती सिर पर रोटी और हाथ में छाछ का लोटा लिए आती मिली। लाला जी ने झट उसकी पीठ पर हाथ रख दिया और बड़े स्नेहपूर्ण शब्दों में पूछा बेटी, कहां जा रही हो? युवती ने भी ठीक उसी भाव से जो पुत्री का पिता के प्रति होता है, उत्तर दिया—चाचा जी, खेत में हरवाहे को रोटी देने जा रही हूं। उस स्वर्गीय दृश्य को देखकर मुझे बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ। मैंने मन में सोचा कितनी पवित्र आत्मा है। कितना शुद्ध हृदय है कोई दूसरा मनुष्य इस प्रकार निःसंकोच होकर दूसरे की लड़की की पीठ पर हाथ रखने का साहस नहीं कर सकता।

[illegible] अपना पिता-पुत्री का सम्बन्ध मानती थीं। लाला जी ने मुझे खुद सुनाया था कि एक समय वे रेल में यात्रा कर रहे थे। जिस डिब्बे में सवार थे उसी में एक और युवक भी आ बैठा। उसने आकर बड़े प्रेम और सम्मान के साथ उन्हें नमस्ते किया। थोड़ी देर के बाद उन्होंने उससे पूछा कि मैंने आपको पहचाना नहीं, आप मुझे कैसे जानते। मैं आपको जानता हूं। आपकी अमुक लड़की मेरे साथ ब्याही हुई है। यह सुनकर लाला जी दंग रह गये। फिर उन्हें याद हो आया कि हां, इस नाम की अमुक स्थान की एक लड़की विद्यालय में पढ़ा करती थी। तब उन्होंने एक रुपया निकाल कर, पुराने शिष्टाचार के अनुसार, उस युवक को भेंट किया और कहा कि आप सचमुच मेरे जामाता हैं, ससुर का यह प्रेमोपहार स्वीकार कीजिए और मेरी बेटी से राजी-खुशी कह दीजिएगा।

आज कितने कन्या-विद्यालय या गर्ल्ज स्कूल हैं जहा इस प्रकार का पिता-पुत्री का सम्बन्ध देख पड़ता है या सम्भव भी है? कहावत है कि मर्द की माया और वृक्ष की छाया उसके साथ ही जाती है। श्रद्धेय लाला जी के निधन से विद्यालय को जो इस अंश में हानि हुई है उसकी पूर्ति अब किसी भी प्रकार सम्भव नहीं। लाला जी की मानस-पुत्रियों का सारे देश में एक जाल-सा फैला हुआ था। कोई भी नगर ऐसा न होगा, जहां जालंधर-विद्यालय की पढ़ी हुई दो-एक लड़कियां न हों।

लाला जी में वाणी का संयम भी बहुत था मैंने कभी भी उनको किसी की निन्दा करते नहीं सुना बड़े आदमियों में बहुधा निन्दा-चुगली सुनने की बडी आदत होती है। वे कान के भी बड़े कच्चे होते हैं परन्तु लाला जी की बात इसके बिलकुल विरुद्ध थी। जब कोई मनुष्य उनके सामने किसी की निन्दा करने लगता तब वे फौरन उसे रोक देते और कहते कि यदि उसमें एक-आध कमी थी तो सद्गुण भी तो बहुतेरे थे। सर्वतो भावेन वह बहुत भला मनुष्य था हमें उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए।

लाला जी रसिक और आनन्दी थी खूब वे निर्दोष हंसी-मजाक में अच्छा रस लेते थे। एक समय की बात है। जालन्धर में एक ब्रह्मचारी आये। वे कोई 20-22 वर्ष के युवक थे। घर की सारी संपत्ति किसी आर्य-सामाजिक संस्था को दान कर दी थी और अब आप स्वामी दयानन्द की शैली पर संस्कृत पढ़ने के उद्देश्य से जगह-जगह घूमते-फिरते थे। उनके सिर पर लम्बे

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय—

यह आर्य समाज के लिए एक चुनौती है (3)

हमारे शास्त्रों ने मानव जाति को चार भागों में बांटा था—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र और इन चारों के जिम्मे कुछ काम लगाए थे। ब्राह्मण के जिम्मे पढ़ने-पढ़ाने का, क्षत्रिय के जिम्मे राज करने और देश की रक्षा करने का, वैश्य के लिए, व्यापार और उद्योग के विस्तार के द्वारा स्वयं भी धन कमाना और देश के कोष के लिए भी पैसा देने का, शूद्र के जिम्मे समाज की सेवा करने का। वह एक Division of Labour अर्थात् काम-काज का विभाजन था। समाज के चार प्रकार के लोगों के जिम्मे चार काम लगा दिए गए थे। इसी के साथ प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुमति थी कि वह अपने परिश्रम और योग्यता से एक दायरा से निकल कर दूसरे में जा सकता था। एक काम को छोड़ कर दूसरा शुरू कर सकता था। आज का ब्राह्मण कल को क्षत्रिय बन सकता था और आज का क्षत्रिय कल को ब्राह्मण भी बन सकता था। जैसा कि महर्षि विश्वामित्र के सम्बन्ध में कहा जाता है। इनका जन्म एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। परन्तु फिर वह ब्राह्मण बन गए। महात्मा विदुर का जन्म एक पिछड़ी जाति में हुआ था, परन्तु वह अपने समय के सबसे बड़े राजनीतिज्ञ थे। इसलिए महाराज धृतराष्ट्र ने इन्हें अपना प्रधानमन्त्री बनाया था। कहते हैं कि महर्षि बाल्मीकि का जन्म भी एक पिछड़े परिवार मे हुआ था, परन्तु उनका दर्जा उस समय के ब्राह्मण से भी ऊंचा था और आज भी है।

निष्कर्ष यह है कि समाज के प्रबन्ध जिसे वर्ण व्यवस्था का नाम दिया गया है इसके द्वारा हमारे समाज को चार भागों में बांटने का काम था और प्रत्येक के जिम्मे कुछ काम लगाए गए थे। शूद्रों के जिम्मे समाज सेवा का काम था। जिन्हें शूद्र कहा जाता है या जो अपने आपको शूद्र कहते हैं उनकी तुलना मनुष्य के पांव से की जाती है। जिन चार वर्ण के आधार पर समाज को बांटा गया है उनमें ब्राह्मण का वही स्थान होता है जो एक व्यक्ति के शरीर में सिर का या उसके दिमाग का होता है। क्षत्रिय का वह स्थान है जो एक मनुष्य की दो बाजुओं का होता है। अर्थात् अपने शरीर की रक्षा करना। वैश्य वह जो कि एक व्यक्ति के शरीर में जो कुछ जाता है वह पहले पेट में एकत्रित होता है। वहां से फिर सारे शरीर में जाता है और शूद्र की वह ही जगह होती है जो एक व्यक्ति के शरीर में उसके पैरों की होती है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि एक मनुष्य के दो पैरों की भी पूजा होती है। इनके बिना कोई मनुष्य चल नहीं सकता। इसलिए जब किसी बुजुर्ग को, किसी नेता को, किसी साधू संन्यासी को मिलना हो तो पहले उसके पैरों को हाथ लगाते हैं। कई लोग उनके पैरों की धूली अपने सिर पर लगाते हैं और जब किसी बुजुर्ग को, नेता को, साधू संन्यासी को पत्र लिखा जाता है तो इसको चरण वन्दना से प्रारम्भ किया जाता है, जिसका अर्थ है कि जिस प्रकार एक मनुष्य के शरीर में उसके दो पांवों का विशेष महत्त्व है उसी प्रकार एक समाज में शूद्र का विशेष महत्त्व है। मैं इसे देश का दुर्भाग्य समझता हूं कि आज जो लोग अपने आपको शूद्र समझते हैं या समझे जाते हैं। इनमें यह एहसास पैदा हो गया है कि वो इस दायरे में से निकलने का प्रयास ही नहीं करते। हालांकि हमारे शास्त्रों के अनुसार जो आज शूद्र है वो कल को ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य भी बन सकता है और जो आज ब्राह्मण या क्षत्रिय है वो कल को अपनी कार्यपद्धति से शूद्र बन सकता है।

हमारे शास्त्रों में हमारे समाज को केवल चार भागों में बांटा था और हरेक के जिम्मे विशेष काम लगाया था, लेकिन हमारी सरकार ने जिन्हें पिछड़ी जातियां कहा है और उन्हें ही तीन हजार से ज्यादा भागों में बांट दिया है। पहले इनके लिए साढ़े 22 प्रतिशत नौकरियां सुरक्षित की गई थी, अब प्रधानमन्त्री ने कहा है कि 27 प्रतिशत इनके अतिरिक्त इनके लिए होंगी। जिन्हें पहली सूची में शामिल नहीं किया गया। इसी के साथ 10 प्रतिशत इनके लिए सुरक्षित कर दी जाएंगी जो आर्थिक रूप में पिछड़े हैं। इसका अर्थ है कि जिन 52 प्रतिशत लोगों के लिए पहले सरकारी नौकरियां सुरक्षित हो चुकी हैं वह तीन हजार से अधिक वर्गों में बांटी जाएंगी, क्योंकि मंडल आयोग के अनुसार इन पिछड़ी जातियों की संख्या तीन हजार से ज्यादा है।

मैंने शुरू में लिखा था कि मंडल परिषद् की सिफारिशों के राजनीतिक पक्ष पर मैं बहस करना नहीं चाहता। हमारे सामने इसका सामाजिक और धार्मिक पक्ष है। मैं इसे आर्य समाज के लिए एक चुनौती समझता हूं तो केवल इसलिए कि आर्य समाज जिस जात पात के विरुद्ध विगत एक सौ वर्ष से संघर्ष करता आ रहा है आज की सरकार इसी जात-पात और जात बिरादरी को फिर से जीवित कर रही है। इसने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि कल को हिन्दू ही आपस में लड़ने लगेंगे। देश में गृह युद्ध का वातावरण पैदा हो रहा है, जब गांधी जी ने समाज के पिछड़े वर्ग के उद्धार के लिए अपना आन्दोलन शुरू किया था तो उन्होंने भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि पेश की थी और कहा था कि उनके आदेश पर आर्य समाज ने इस देश में छूतछात को खत्म करने के लिए सबसे ज्यादा कोशिश की है। आर्य समाज को इसमें कोई रुचि नहीं कि किस को कितनी सरकारी नौकरियां मिलती हैं। आर्य समाज केवल यह चाहता है कि जात-पात की लानत समाप्त हो। इस देश के सब लोग प्रत्येक दृष्टि से बराबर समझे जाए। सामाजिक और राजनीतिक रूप में भी जिन्हें पिछड़ा या शूद्र कहा जाता है उन्हें भी यह अधिकार हो कि वह ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच सके। इस देश में उत्पन्न होने वाले किसी भी व्यक्ति की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति के मार्ग में कोई जात बिरादरी नहीं आनी चाहिए। सबको एक-जैसे और बराबर के अधिकार हों। यह है आर्य समाज का दृष्टिकोण। जिसके लिए वो पहले भी संघर्ष करता रहा है और आगे भविष्य में भी करता रहेगा।

—वीरेन्द्र

कार्यकर्त्ता सम्मेलन स्थगित

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने यह निर्णय किया था कि पंजाब की आर्य समाजों के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन किया जाए, जहां पंजाब में आर्य समाज की समस्याओं पर विचार किया जाए। इसके लिए तिथि 29 सितम्बर, 1990 निश्चित की गई थी। यह सम्मेलन दो दिन के लिये लुधियाना में होना था। यह तिथि निश्चित करते समय सभा के अधिकारी यह भूल गये कि 29 सितम्बर को विजय दशमी (दशहरा) है। उस दिन यह सम्मेलन करना सम्भव न होगा। इसलिये उसे अभी स्थगित किया जा रहा है। आगामी तिथियां शीघ्र ही निश्चित करके आर्य जनता को सूचित कर दिया जायेगा। हम यह अवश्य चाहते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समाजों के अधिक से अधिक प्रतिनिधि वहां आयें। आपस मे बैठ कर हमे पंजाब की वर्तमान स्थिति पर विचार विमर्श करना चाहिये। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि पंजाब की स्थिति इस समय अत्यन्त गम्भीर है। ऐसा ही वह समय होता है जब आपस में बैठ कर यह विचार करने की आवश्यकता होती है कि हम आगे क्या करें। मेरा यह भी विश्वास है कि पंजाब की आर्य समाजों में ऐसे बहुत से महानुभाव हैं जो वर्तमान परिस्थिति पर गम्भीरता से विचार करके कोई निर्णय ले सकते हैं। इसलिये पंजाब की आर्य समाजों को इस सम्मेलन में अधिक से अधिक अपने प्रतिनिधि भेजने चाहिएं। इसका सारा प्रबन्ध करने के पश्चात् पुनः सब आर्य समाजों को सूचित कर दिया जायेगा। आशा है आर्य समाजों के अधिकारी महानुभाव इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

—वीरेन्द्र

श्री विष्णुहरि डालमिया, कार्यकारी अध्यक्ष, विश्व हिन्दूपरिषद् द्वारा मोडिया सेण्टर 10, पन्त मार्ग, नयी दिल्ली में 4 सितम्बर 1990 को दिया गया वक्तव्य

बहुत दुःख एवं चिन्ताजनक बात है कि उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने तथाकथित "साम्प्रदायिकता विरोधी रैलियों" को सम्बोधित करते हुए हमारे उन महान् संतों एवं महात्माओं तथा कर-सेवकों का मार्ग अवरुद्ध करने, उनपर आक्रमण करने तथा उनके प्रति अपशब्दों का प्रयोग करने के लिए लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से उकसाना आरम्भ कर दिया है, जो इस वर्ष अक्तूबर मास में अयोध्या के लिए प्रस्थान करने वाले हैं।

मुख्यमन्त्री तथा मुस्लिम वक्फ मंत्री आज़म खान जैसे उनके साथियों द्वारा अपनाये जा रहे इन तेवरों से यह स्पष्ट है कि वे पूरे उत्तर प्रदेश मे भाई-भाई के बीच संघर्ष कराने पर उतारू हैं।

सर्वाधिक दुःखद तो यह है कि देश के जीवन में राजनैतिक पतन अपनी चरम सीमा पर पहुचता जा रहा है। प. मदन मोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, श्री लाल बहादुर शास्त्री, प० गोविन्द वल्लभ पंत, डॉ० सम्पूर्णानन्द जैसे महापुरुषों को देने वाले प्रान्त को आज इस स्तर का एक मुख्यमंत्री प्राप्त हुआ है, जो एक ओर हिन्दुओं के इस देश में ही भगवान श्री राम के उपासक हिन्दुओं पर "देशद्रोही" जैसा घृणित आरोप लगाने और मुसलमानों को उकसाने के लिए यह सपाट सर्टिफिकेट देने में कि "मुसलमान सबसे अधिक देशभक्त रहे है" कोई हिचक तक अनुभव नही कर रहे हैं। भला इससे अधिक लज्जाजनक बात क्या होगी? उनके भाषण के उस अंश के सम्बन्ध में, जिसमे उन्होंने "हिन्दुत्व" के उपासकों को "बेईमान" तथा "दुश्चरित्र" बताया है, जितना कम कहा जाय, उतना ही अच्छा है।

यह सारे हिन्दू समाज का घोर अपमान है। अगर हिन्दू अपने इस देश मे ही गौरव और सम्मान के साथ रहना चाहते हैं तो उन्हें जातिवाद और राजनैतिकता से ऊपर उठकर अपनी शक्ति के परिचायक के रूप में एक जुट होकर खड़ा होना होगा, जिससे कोई भी उनके सम्मान को ठेस पहुंचाते हुए उनकी धार्मिक तथा सामाजिक भावनाओं का अनादर अथवा उन्हें उपेक्षित न कर सके।

जैसा कि सीतापुर रैली में दिए गए मुख्य मंत्री के भाषण की रिपोर्ट में बताया गया है, उन्होंने अयोध्या जाने वाले वाले हिन्दुओं को रोकने की अपनी योजना को एक नया मोड़ दिया है। उन्होंने कहा है कि यह कार्य खाकी वर्दीधारी पी. ए. सी. या पुलिस के जवानों द्वारा नहीं किया जाएगा। इसमें जो षड्यन्त्र रचा जा रहा है, वह स्पष्ट है। मुख्य मंत्री जी की योजना के अनुसार उनके द्वारा नियुक्त असामाजिक तत्व ही इस भूमिका को निभायेंगे एवं हिन्दू संत, महात्माओं तथा कर-सेवकों पर हमले करके उनके साथ दुर्व्यवहार करेंगे:

हम उत्तर प्रदेश के अपने मुसलमान भाईयों को भी यह चेतावनी देने में अपना कर्त्तव्य समझते है कि वे मुलायम सिंह आजम खान-कम्युनिष्ट गठजोड़ में पड़कर उनके हाथ का खिलौना बनकर गुण्डा राज स्थापित करने में निमित्त बनने से बचें। यह कहावत स्मरण रखें—"शैतान किसी का मित्र नही होता।" मुलायम सिंह यादव के दाहिने हाथ मुस्लिम वक्फ मंत्री आजम खान ने तो स्पष्ट ही कहा है कि डण्डा ही प्रत्येक समस्या का अन्तिम समाधान है।

अन्त में एक बात पुन: आपके सामने स्पष्ट कर देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हू कि विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकलाप एवं देश के संत-महात्माओं द्वारा श्रीराम मंदिर, अयोध्या का जीर्णोद्धार करने के लिए सम्पूर्ण कार्यक्रम संविधान के अन्तर्गत ही बिना किसी कानून का उल्लंघन किए ही सम्पन्न किया जा रहा है।

मैं अपने समस्त देशवासियों के लिए भगवान् श्रीराम से प्रार्थना करता हू। कि वे उन्हें शुभ अशीष प्रदान करे तथा उन्हें शक्ति दें कि वे भले और बुरे की ठीक पहचान कर बुराई के विरुद्ध एकजुट होकर खड़े हो सके। लाखों श्रीराम भक्त प्रस्तावित समय के अनुसार, जो कार्य उन्हें अतिशय प्रिय है उसे सम्पन्न करने के लिए, शान्तिपूर्ण ढग से अपने गौरवमय स्वरूप के अनुसार अयोध्या के लिए प्रस्थान करेंगे।

मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से अपील करता हू कि वे अपने इस प्रकार के वक्तव्यों द्वारा, जिसमें किसी एक वर्ग के साथ पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाकर दूसरे वर्ग को अपमानित कर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच खाई खोदने का प्रयास है, ऐसे घृणित कार्य से विरत हों अन्यथा ऐसा करना देश के लिए बड़ा घातक होगा। भगवान् श्रीराम का पावन नाम ही सबको एक साथ जोड़ने वाला, सबकी आकांक्षाओं को पूरा करने वाला मंगलस्वरूप ही है। मैं भगवान् श्रीराम से प्रार्थना करता हूं कि वे उन्हें सद्बुद्धि दें और शक्ति प्रदान करें कि वे सत्य को देख सकें, जिससे उनका अपना तथा देश का भविष्य उज्ज्वल हो सके।

(पृष्ठ 2 का शेष)

के खुर के बराबर चौड़ी और बहुत लम्बी चोटी थी। सिर नंगा रखते थे। पांवों में खड़ाऊं और तन पर धोती मात्र रहती थी। वहां एक आर्यसमाजी प्रोफेसर के यहां ठहरे थे। जब चलते तब खड़ाऊं की खटखट और चोटी का फहराना अजब बहार दिखाता था। कुछ दिनों के बाद जब वे जालन्धर से जाने लगे तब मैंने उनको एक एड्रेस देने का आयोजन किया। कुछ सज्जन निमंत्रित किये गये। उनमें अधिकांश लोग तो उदार विचार के रसिक मनुष्य थे, पर दो-एक कोर आर्यसमाजी भी थे। ब्रह्मचारी जी के जलपान के लिए एक पैसे के पकौड़े मंगाये गये। मेरे पास कुछ शक्कर पड़ी थी, उसका शर्बत बनाकर निमंत्रित सज्जनों को पिलाया गया। जब एड्रेस—अभिनन्दन-पत्र—देने का समय हुआ तब पहले तो तो ब्रह्मचारी जी ने ही आने से इन्कार कर दिया। बड़ी मुश्किल से व पकड़ कर लाये गये। अब उस विचित्र सभा का सभापति कौन हो, यह समस्या आ खड़ी हुई। उन दिनों मित्रवर भदन्त राहुल सांकृत्यायन (तब श्री केदारनाथ जी) मेरे पास ठहरे हुए थे। वे उठकर खड़े हो गये और बोले कि मैं समझता हूं, इस सभा के प्रधान पद के लिए मुझसे योग्य दूसरा मनुष्य नहीं। इसलिए मैं इसका प्रधान बनता हूं। इतना कहते ही वे झटपट कुरसी पर जा बैठे। तब मैंने अभिनन्दन-पत्र पढ़ना शुरू किया—"श्री ब्रह्मचारी जी महाराज, जब आपकी चोटी का फहराना और खड़ाऊं का खटखटाना याद आयगा, तब हम रो-रो मरेंगे—मैं इतना ही कह पाया था कि ब्रह्मचारी जी वहां से भागने लगे। उन्हें पकड़कर बैठाये रखने का यत्न किया गया कि आप पूरा एड्रेस तो सुनकर जायें, परन्तु वे रोनी सूरत बनाकर कमरे से बाहर भाग गये। प्रधान जी समेत सारी सभा उनके पीछे भागी और उनको सड़क में पकड़ लिया कि हमने इतनी तैयारी की है, अब आपको एड्रेस लेना ही पड़ेगा। खैर, ज्यों-त्यों करके वे वहां भाग गये और फिर उनको जालन्धर में किसी ने नहीं देखा। परन्तु सभा में बैठे हुए एक घोर आर्यसमाजी, मास्टर सत्यपाल जी, मुझसे बहुत बिगड़े। मैंने उनके बिगड़ने का कारण पूछा, तब बोले—तुमने एक ब्रह्मचारी को तेल के पकौड़े क्यों खिलाये हैं? मैंने पूछा—इसमें क्या हर्ज है? वे बोले—शास्त्र में ब्रह्मचारी को तेल के पकौड़े खिलाने का कहां विधान है? मैंने कहा—भाई, मैंने तो शास्त्र पढ़े नहीं। मुझे पता नहीं था, क्षमा कीजिए।

लाला देवराज जी ने जब ब्रह्मचारी को अभिनन्दन-पत्र देने की बात सुनी तब वे बहुत हंसे और बोले—तुमने मुझे क्यों न बुलाया? उस सभा में तो मैं भी सम्मिलित होना चाहता था। मैंने कहा—जी, आपको किसने बता दिया? आपको सभा में बुलाना तो दूर, मैं तो डरता था कि आप सुनेंगे तो नाराज होंगे। वे बोले—ऐसी निर्दोष हंसी में क्या डर है?

लाला जी बड़े विद्या-व्यसनी थे। उनको उत्तमोत्तम पुस्तक इकट्ठी करने का बड़ा शौक था। वे अपने पीछे अपना निज का एक बहुत बड़ा पुस्तकालय छोड़ गये हैं। भगवान बुद्ध का जीवन-चरित्र और उनके उपदेश वे विशेष चाव से पढ़ा करते थे।

उन्होंने पंजाब हिन्दी प्रचार के लिए भी बहुत काम किया था। छोटे बच्चों की प्रकृति को वे खूब समझते थे। उनके लिए उन्होंने 40 के लगभग छोटी-मोटी सुन्दर पुस्तकें लिखी हैं। कन्या-पाठशालाओं में आज भी जितना लाला जी की पुस्तकों का प्रचार उतना किसी दूसरे की पुस्तकों का नहीं। उन्होंने 'पाञ्चाल पण्डिता' नाम की एक मासिक पत्रिका भी कई वर्ष तक चलाई थी। उस समय पंजाब में हिन्दी का बहुत ही कम प्रचार था। फिर सन् 1919 में उन्होंने महाविद्यालय की ओर से 'भारती' नाम की एक और मासिक पत्रिका निकाली थी।

लाला देवराज जी आर्यसमाज के पुराने सेवक और और पक्के समाज-सुधारक थे। उनके परिवार में दो लड़कियों और एक लड़के ने जात-पांत तोड़कर विवाह किया है। पर्दा-प्रथा पर तो बहुत दिन पहले से ही कुठारघात कर चुके थे। वे आनरेरी मजिस्ट्रेटी थे। परन्तु सन् 1920 में, मार्शल ला के कारण असहयोग करके, उन्होंने मजिस्ट्रेटी छोड़ दी थी।

वे बड़े मिलनसार, निरभिमान और सहृदय थे। उनसे मिलकर सदा आनन्द प्राप्त होता था। संगीत वाद्य, चित्रकारी आदि ललित कलाओं का भी उनको बड़ा शौक था। महाराष्ट्र आदि से बहुत अच्छे अच्छे संगीताचार्य मंगाकर वे विद्यालय में लड़कियों को शिक्षा दिलाया करते थे। मेरा अनुमान है कि अब भी लड़कियों के लिए संगीत वाद्य और चित्रकारी का जैसा अच्छा प्रबन्ध जालन्धर-महाविद्यालय में है उतना किसी दूसरे में नहीं। महाविद्यालय की हिन्दी-शिक्षा की तो सारे पंजाब में धाक है। मेरा अपना भी अनुभव है कि कन्यामहाविद्यालय की लड़कियां पंजाब में हिन्दी लिखने में सबसे अच्छी हैं।

लाला जी अपने पीछे दो पुत्र, श्रीयुत धन्वंतरराज तथा श्रीयुत ऋषिदेव और विधवा स्त्री श्रीमती टहलदेवी जी को छोड़ गये हैं। उनकी पुत्री श्रीमती मार्गीदेवी और पुत्र श्री योगराज का देहान्त पहले हो चुका था। परन्तु लाला देवराज का सबसे बड़ा स्मारक उनका स्थापित किया हुआ कन्या-महाविद्यालय है। बड़े सन्तोष का विषय है कि लाला जी के लोकान्तरित होने पर कुमारी लज्जावती, श्री कर्मचन्द एडवोकेट और श्री बैरागीराम जी एडवोकेट आदि अनेक देवियों और सज्जनों ने लाला जी के लगाये हुए उपर्युक्त पौधे की रक्षा और सेवा का भार अपने ऊपर ले लिया था और तन, मन, धन से उसमें लगे हुए थे।

[illegible]

आज का ज्वलन्त प्रश्न:

क्या राजनीति का हिन्दू करण सम्भव है ?

ले० डा० श्री भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़

आर्य जगत में 28 मई 1989 के सम्पादकीय का शीर्षक है राजनीति का हिन्दूकरण। इस लेख को लेखक ने वीर सावरकर की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में लिखा है और भारत की राजनीति में हिन्दुओं की वर्तमान शोचनीय स्थिति पर दुख प्रकट करते हुए राजनीतिकों हिन्दू विचारधारा पर आधारित करने की बात कही है। सर्वप्रथम वे सावरकर के इस सूत्र को लेते हैं कि हिन्दू का सैनिकीकरण आवश्यक है। सम्पादकीय में इस सूत्र की अपने ढंग से व्याख्या की गई है। लेखक की राय में इसका अर्थ है प्रत्येक हिन्दू का अनुशासन बद्ध, संगठन बद्ध, एक्यबद्ध, और संकल्पबद्ध, होना" किन्तु क्या यह सम्भव है ? जब तक हिन्दू हिन्दू है तब तक वह न तो अनुशासन में रहेगा, न संगठन की बात सोचेगा, एक्य भावना से दूर रहेगा और उसमें अपने संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठ कर देश के लिए कुछ संकल्प लेने की बात तो आयेगी ही नहीं। क्योकि 9 कारण स्पष्ट है। जिसे हम आज हिन्दू नाम से पुकारते हैं वह कोई संघ बद्ध सामाजिक जीव तो है ही नहीं। वह तो ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ, भंगी, चमार आदि सहस्त्रधा विभक्त उच्च एवं तथाकथित निम्न जातियों में बंटा ऐसा मनुष्य समूह है जिसका न तो कोई सामाजिक दर्शन है और न जिसमें सामाजिक चेतना तथा एक्य ही है। हिन्दुओं में जातिगत एकता का आना तब तक अशक्य है जब तक वह जन्मना जाति के अजगर के चंगुल से अपने आपको मुक्त कर ऋषि दयानन्द के राष्ट्रीय एकता के सूत्र एक भाषा, एक भाव, एक लक्ष्य, एक उपासना पद्धति को नहीं अपना लेता। अपने-अपने जाति गत, वर्णगत, धर्मगत तथा सम्प्रदाय गत स्वार्थों के कारण आज हिन्दू समाज जिस प्रकार विभक्त, विच्छिन्न तथा परस्पर की फूट का शिकार है, क्या इस सबके रहते उसके एकता में आबद्ध होने की कल्पना की जा सकती है और तो और इन हिन्दुओं के तथाकथित मार्गदर्शक धर्माचार्य, महन्त महाधीश तथा धर्मध्वज भी एकता के सूत्र में स्वयं को नहीं बांध पाते। फिर भला वे अपने अनुयायियों को एकता के सूत्र में कैसे पिरो सकते हैं। समाचार पत्रों में पढ़ चुके हैं कि राजीव गांधी ने राम जन्म भूमि के मसले पर दों शंकराचार्यों को पटा लिया था।" जब रामजन्मभूमि जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक प्रश्न पर भी हिन्दू जाति के तथाकथित कर्णधार एक नहीं हो सकते तो हिन्दू राजनीति की अर्थी उठने में देर ही क्या लगेगी।

लेखक ने इस बात पर खेद व्यक्त किया है कि खुद हिन्दुओ ने ही हिन्दू "शब्द का इतना अवमूल्यन कर दिया है कि हिन्दुओं के अनेक तथाकथित प्रबुद्धवर्ग (लेखक इसमें आर्यसमाजियों की भी गणना करता है) अपने आपको हिन्दू कहने में संकोच करते हैं। लेखक का कहना ठीक है, किन्तु प्रश्न यह है कि "हिन्दू" शब्द में गौरव था ही कब ? अकेले भूषण जैसे कवि ने भले ही अपनी कविता में हिन्दुत्व के गौरव का आख्यान किया हो। वास्तविकता तो यह है कि भूषण ने भी हिन्दुत्व की गौरव गाथा का वर्णन नहीं किया अपितु इस तथाकथित हिन्दुत्व के रक्षक शिवाजी महाराज का ही प्रशस्ति पाठ किया है जो सर्वथा श्लाघनीय हैं। जो लोग दीवारों पर लिखते फिरते हैं— "गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं" हम उनसे विनम्रता से पूछना चाहते हैं कि "हिन्दू" में गर्व करने लायक है ही क्या? जो कुछ गर्व की वस्तु है वह तो उस काल की है जब इस देश के वासियों को हिन्दू नाम से पुकारा ही नहीं जाता था। "हिन्दू" नाम को हमसे जोडना तो हमारे पतन का आरम्भ ही सूचित करता है। राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, अशोक, कनिष्क, हर्ष, शंकर, रामानुज, दयानन्द यहां तक कि तुलसीदास तक का कार्य एवं चिन्तन भी "हिन्दू" शब्द से परहेज करता है तो हम इस नाम पर कैसे गर्व करें। "हिन्दू" शब्द का अवमूल्यन भला दूसरा कौन करता। इसके साथ तो हमारी पराजय, हमारी हताशा तथा हमारे पारस्परिक विद्वेष की कथा ही जुड़ी है।

यदि "हिन्दू" पर गर्व करना है तो जयचन्द और पृथ्वीराज के विग्रह पर गर्व करना होगा। हिन्दू काल के ही मानसिंह ने महाराणा प्रताप का अपमान किया था। हिन्दुओं के पतन की इस कथा को और विस्तार देना ही व्यर्थ है। अतः यदि आर्य लोग इस शब्द को अपने साथ जोड़ने में संकोच करते हैं तो अनुचित क्या है। अगर यह गलत है तो इस गलती को करने वाला पहला व्यक्ति तो खुद स्वामी दयानन्द ही था जिसने स्वयं को कभी हिन्दू नहीं कहा। मैं तो दयानन्द को गलत कहने का साहस नहीं कर सकता अन्य लोग भले ही वैसा करें।

सम्पादकीय में इस बात को लेकर बड़ी चिन्ता प्रकट की गई है कि हिन्दू एक ऐसी गाय है जिसका दूध तो पिया जा सकता है किन्तु इसकी रक्षा और पालन पोषण कोई क्यों करे ? मैं पूछता हूं हिन्दू को इस निरीह गाय की स्थिति तक पहुंचाया किसने ? क्या इसके लिए औरंगजेब को दोष देंगे या स्वयं को ? यह गाय अपना दूध उन लोगों को निकालने ही क्यों देती है, जो अपनी स्वार्थ साध करके भी इसे प्रताड़ित ही करते हैं। क्यों नहीं यह गाय तभी अपने तीखे सींगों का प्रयोग कर उन राजनैतिक दलों के स्वार्थी नेताओं को अपने से दूर भगा देती, जो एक शताब्दी से निरन्तर उसका दोहन तो करते है किन्तु भूसा उस अल्पसख्यक भैंस को ही डालते हैं जो शक्ति और उद्दण्डता में इस बेचारी गाय से कुछ इक्कीस ही ठहरती है। यही कारण है कि कांग्रेसी हो या कम्युनिष्ट, सभी के लिये भारत का यह हिन्दू "गरीब की जोरू" की तरह है। वह उसके मतों का उपयोग अपनी दलीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये तो करता है किन्तु उसके जाति गत हितों की सर्वथा उपेक्षा करता है। क्या कांग्रेस के नेता हिन्दू नहीं है ? क्या नम्बूदरीपाद, राजेश्वर राव और हीरेन मुखर्जी हिन्दू नहीं हैं ? वे हिन्दुत्व को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जब कि मोहसिना किदवई हो चाहे शाहाबुद्दीन सभी मुसलमान राजनीतिज्ञ स्वय को पहले मुसलमान मानते हैं, उसके बाद भारतवासी। किन्तु प्रश्न यह है कि इन कांग्रेसी हिन्दुओं और कम्युनिष्ट हिन्दुओं में आई वैचारिक दुर्बलता का कारण भी क्या यह तथाकथित हिन्दू जीवन दर्शन ही नहीं है जो यह मान कर चलता है कि क्या भाषा, क्या भाव और क्या विचार-सर्वत्र अनेकता ही हिन्दू का भूषण है। जब कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि में भाषा, भाव, लक्ष्य, विचार और उपासना की इस अनेकता ने ही आर्य जाति के वर्चस्व समाप्त कर उन्हें "बेचारा हिन्दू" बना दिया। वह स्वयं तो चिश्ती की दरगाह अथवा अमीर खुसरों के मजार पर जाकर इसलामी तत्व दर्शन का गुणगान करता है, किन्तु किसी मौलाना मोहम्मद अली को महात्मा गांधी का अपमान करने से रोकने का साहस नहीं बटोर पाता। इसी कांग्रेस संस्कृति के शिकार स्वयं महात्मा जी भी तो अपने मुंह बोले भाई मौलाना द्वारा किये गये इस कटाक्ष के प्रतिकार में कुछ नहीं कह सके थे। खैर, वे तो मानापमान के द्वन्द्व से मुक्त होकर "महात्मा" बन चुके थे किन्तु अब्दुल्ला बुखारी और सैयद शहाबुद्दीन जैसे अग्नि जिह्व वाचालों का मुंह बन्द करने की सामर्थ्य भी आज किस कांग्रेसी मे है ? हो भी नहीं सकती, क्योंकि अन्ततः वह भी तो हिन्दू ही हैं। यह तो स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य का ही गुर्दा था कि उसने 7 करोड़ अछूतों को हिन्दू और मुसलमानों में आधा-आधा बाटने के सुझाव पर उक्त मौलाना को ललकारा और उ [illegible]न के तारे दिखा दिये। बेचारा हिन्दू ऐसी शक्ति कैसे बटोर पायेगा।

लेखक को इस बात की बड़ी चिन्ता है कि आज "हिन्दू" शब्द से से दकियानूसी, साम्प्रदायिक, अन्धविश्वासी, सामाजिक कुरीतियों से आबद्ध, जाति, बिरादरी के दायरे मे बधे तथा सामाजिक बोध से सर्वथा असंपृक्त व्यक्ति का ही बोध होता है। हम भी लेखक की चिन्ता से सहानुभूति तो रखते हैं उससे प्रश्न करते हैं कि हिन्दू ने कभी धार्मिक साम्प्रदायिकता से परहेज किया है क्या कभी कभी वह जात बिरादरी की संकीर्णता से उभर उठा है, क्या कभी उसने अधविश्वासों से स्वय को मुक्त किया है ? उसका सामाजिक बोध तो इतना दुर्बल है कि उस पर कोई टिप्पणी करना ही अनावश्यक है। चाहते तो हम भी हैं कि वह अपनी इन बुराइयों से ऊपर ऊपर उठें किन्तु जब तक वह हिन्दू है और रहेगा तब तक तो इन विपत्तियों से उसका उभरना कठिन है। हां' यदि वह दयानन्द के मूल-मत्र एक भाषा, एक भाव, एक उपासना पद्धति और एक ही लक्ष्य (वेद के शब्दों मे 'समानो मन्त्रः समितिः) को अपना ले, तो उसका उद्धार शक्य है। किन्तु दयानन्द के बोध को तो सर्वात्मना सावरकर ने ही कब स्वीकार किया था, तिलक ने ही उसे कब मान्यता दी थी और मालवीय जी ने भी कब श्लाघा की दृष्टि से देखा था। दयानन्दीय चिन्तन को आगे बढ़ाने वाले तो स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय ही थे जिनसे से पहले को पिस्तौल का शिकार होना पड़ा और दूसरा गोरे साम्राज्यवादियों के डडों को छाती पर झेलकर परलोक गामी हुआ।

सम्पादक जी कहते है कि पुरी के शंकराचार्य हिन्दुत्व की जो व्याख्या करते हैं, उस में वे सहमत नहीं हैं। किन्तु वे हमें बतायें कि इस शंकराचार्य हिन्दुत्व के दायरे से वे पृथक् ही कैसे कर सकते हैं।

(क्रमशः)

देश को गृह युद्ध के कगार पर खड़ा कर दिया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप-प्रधान पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का संयुक्त बयान

श्री वी० पी० सिंह द्वारा 7 अगस्त 1990 को की गई घोषणा ने देश को एक प्रकार से गृह-युद्ध के कगार पर खड़ा कर दिया है। उन्होंने भारत को दो प्रतिस्पर्धी-आरक्षण समर्थक तथा आरक्षण विरोधी गुटों में बांट दिया है। यह परिस्थिति देश को कहां ले जायेगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

शिक्षित युवकों द्वारा आत्म-दाह की धमकियां बढ़ती आ रही हैं। पिछले दिनों दोनों गुटों मे हिंसात्मक झगडे भी हुए हैं जिनके परिणाम स्वरूप कई जानें गईं और सरकारी सम्पत्ति का भी भारी नुकसान हुआ।

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रधान मन्त्री ने यह भी कहा है कि 'हमारे लिए सरकार बदलना ही नहीं परन्तु देश की समाजिक व्यवस्था मे परिवर्तन लाना भी अत्याधिक महत्वपूर्ण है।'

यदि सामाजिक परिवर्तन लाना भी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का जनता से किया गया एक चुनावी वायदा है तो सरकार को अविलम्ब समाज के अन्दर व्याप्त जातिय विषमताओं को समाप्त कर देना चाहिए। इससे सरकार को राष्ट्रीय एकता के समर्थकों का सम्मान और प्रशंसा भी प्राप्त होगी।

दुःख का विषय है कि इस दिशा में कार्य करने के बजाय वी० पी० सिंह की सरकार देश को मुस्लिम, ईसाई तथा पिछडा वर्ग, उन्नत वर्ग- में बाटने पर अमादा है। हमारे देश के अल्प-सख्यक समुदाय के लोग भी यह अच्छा तरह समझ लें कि विभाजन की यह बिमारी अनजाने उनके अन्दर भी प्रवेश कर सकती है। अन्य कई कारणों से भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अल्पसख्यकों के आरक्षण का विरोध करती है।

हम यह मानते हैं कि हिन्दुओं का जातिवाद हमारे प्राचीन संस्कारों की देन है किन्तु उसकी वर्तमान समाजिक व्यवस्था पुन: अपने प्राचीन शुद्ध रूप में प्रतिष्ठापित हो।

9 सितम्बर 1990 को होने वाली गोष्ठी के दो सत्र होंगे। प्रथम सत्र में विश्व में प्रचलित विभिन्न प्राचीन एवं अर्वाचीन सामाजिक व्यवस्थाओं के अच्छे और बुरे पहलुओं पर विचार किया जायेगा। भारतीय वर्णाश्रम धर्म पर चर्चा होगी जिसके अनुसार समाज को चार वर्गों में विभाजित किया गया है और जहां कार्य विशेष में योग्यता और उचित रूचि के अधार पर ही सामाजिक कार्यों को चलाने के लिए सत्ता के पदों पर व्यक्ति का चयन किया जाता है। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था में ऊच और नीच का विचार भी निषिद्ध माना जाता है। ऐसे समाज में शोषण का कोई स्थान नहीं है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सब देशों में अपनी शाखाओं को लिखा है कि वे इस व्यवस्था की उपयोंगिता के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए संगोष्ठियों का आयोजन करें। विभिन्न देशों में वहां के जन नेताओं तथा सरकारी क्षेत्र के सत्ता-धारी व्यक्तियो से मिलने के लिए एक प्रतिनिधि मण्डल को भेजने का भी विचार है।

गोष्ठी के दूसरे सत्र में वकता भारत की वर्तमान परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य में देश की सामाजिक व्यवस्था के, विशेष कर वर्णाश्रम धर्म के अधार पर, पुन-र्गठन की आवश्यकता पर विचार करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मण्डल आयोग की रिपोर्ट का विरोध करती है जिसमें अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए हिन्दू धर्म ग्रन्थों की पूर्णतया गलत और भ्रान्तिपूर्ण व्याख्या की गई है।

मण्डल आयोग ने सामाजिक और शैक्षिक द्रष्टि से पिछड़े वर्गों को आरक्षण देने का लालच देकर हिन्दू जाति को स्थाई रूप से कृत्रिम वर्गों में बांटने का प्रयास करके उसे हानि पहुंचायी है। स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित लेखराम आदि ने अपना खून बहाकर सामाजिक क्रान्ति के जो शुभ परिणाम प्राप्त किये थे उसे मण्डल आयोग ने पूर्णतया नष्ट कर दिया हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिसम्बर 1990 में एक आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में करने जा रही है जिसमें समस्त आर्य समाजी संस्थायें तथा समान विचार वाले व्यक्ति बड़ी संख्या में भाग लेंगे। वे इस सम्मेलन में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए विघटन-कारी तत्वों से लड़ने तथा वेदों का संदेश फैलाने का संकल्प लेंगे।

माता पिता का ऋण

रचयिता—श्री सत्यपाल जी पथिक, अमृतसर

तर्ज—अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं।

हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।
इनके तो एहसान हैं इतने गिना सकते नहीं।

यह कहां पूजा में शक्ति यह कहां फल जाप का।
हो तो हो इन की कृपा से खातमा संताप का।
इन की सेवा से मिले धन, ज्ञान, बल, लम्बी उमर,
स्वर्ग से बढ़ कर है जग में आसरा मां बाप का।
इन की तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं।
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।...

देख लें हम को दु:खी तो भर लें अपने नैन यह।
इक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रैन यह।
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
कष्ट हो तन पे हमारे हो उठें बेचैन यह।
इन से बढ़ कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं।
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।...

पढ़ लो वेद और शास्त्र का ही एक यह भी मर्म है।
योग्यतम सन्तान का यह सब से उत्तम कर्म है।
जगत में जब तक जियें सेवा करें माँ बाप की।
इनके चरणों मे यह तन मन धन लुटाना धर्म है।
यह "पथिक" वो सत्य है जिस को झुठा सकते नहीं।
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।...

वेद गोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति अजमेर में सम्पन्न होने वाले ऋषि मेला समारोह मे 26 व 27 अक्तूबर 90 को अन्तर राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की ओर से परोपकारिणी सभा द्वारा सचालित अनु-सन्धान विभाग के तत्वाधान मे एक वेद गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी का विषय है।

अथर्ववेद समस्या और समाधान

इसमें विचार हेतु अथर्ववेद का कुताप सूक्त, मोहनों अतिथि, यज्ञविधि उच्छिष्ठ ब्रह्म, अथर्ववेद की भाषा, अथर्ववेद और जादू-टोना, अथर्ववेद और मंत्र विद्या, वेदत्रयी और अथर्ववेद के मन्त्रों में पाठ भेद, आदि विषयों पर विद्वानों के शोधपूर्ण लेख आमन्त्रित किये जाते हैं। सभी विद्वानों से अनुरोध है अपने अनुशोध निबन्ध 15 अक्तूबर 90 तक संयोजक को प्रेषित कर दें। इनमें से उत्कृष्ठ निबन्धों का चयन कर परोपकारी के विशेषांक रूप में प्रकाशित किया जाता है।

—संयोजक परोपकारिणी सभा अजमेर

जालन्धर छावनी में वेद प्रचार

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वेद प्रचार सप्ताह 20-8-90 से 26-8-90 तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री स्वामी जगदीश्वरा-नन्द जी दिल्ली, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मान चन्द, दीप चन्द भजन मण्डली तथा गुरुकुल करतार के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। सैंकड़ों की संख्या से आर्य जनता ने इसमें भाग लेकर धर्म लाभ उठाया। श्री स्वामी जी की कथा का और श्री मानचन्द जी के भजनों का बहुत प्रभाव रहा। इस अवसर पर विक्टर माडल स्कूल, के. एस. आर्य गर्ल्ज स्कूल, डी. ए. वी. गर्ल्ज कालेज जालन्धर छावनी के अध्यापक, अध्यापिकाएं, प्राध्यापक, प्रिंसिपल तथा छात्र-छात्राओं ने भी भाग लेकर अपना सहयोग दिया।

क्या वेद पांच ?

लेखक—श्री पं० सत्यपाल पथिक 70.ए, गोकुल नगर मजीठा रोड, अमृतसर

सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति एवं प्रलय इन तीनों कार्यों में पूर्णतया समर्थ एवं सभी जीवों के शुभाशुभ कर्मों का न्यायपूर्ण फल प्रदान करने वाला परमेश्वर सृष्टि की उत्पत्ति के प्रारम्भ काल में मानव मात्र के कल्याण के निमित्त सभी कर्त्तव्याकर्त्तव्य कर्मों का ज्ञान अन्तर्यामी होते हुए ऋषियों के हृदय में प्रकाशित कर देता है। वे उस ज्ञान को गुरु शिष्य की परम्परा से आगे बढ़ाते हैं। परमात्मा द्वारा प्रदत्त इसी ज्ञान का नाम वेद है। इस सृष्टि के आदि काल में चार ऋषियों के द्वारा चार वेद संसार में प्रकट हुए अर्थात् प्रचरित हुए। इन चार ऋषियों के नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा कहे जाते हैं। इन्ही चारों ऋषियों से चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त करके सर्वप्रथम एक विद्वान् (देव) "ब्रह्मा" की उपाधि धारण कर ब्रह्मा जी के नाम से सुविख्यात हुए हैं। क्योंकि "विद्वांसोहि देवा:" अर्थात् विद्वानों का नाम देव है। और चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त करने वाले विद्वान् को ब्रह्मा कहते हैं। पौराणिक मन्तव्यानुसार सृष्टि के रचयिता चार मुख वाले ब्रह्मा जी हैं। इनके चार मुख चार वेदों के ही प्रतीक माने जाते हैं। सारांश यह कि वेद चार हैं पांच नहीं। इनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद हैं। इन चार वेदों के इन्हीं चार नामों से भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिक विद्वान् भली भान्ति सुपरिचित हैं।

फिर भी इस लेख का शीर्षक "क्या वेद पांच हैं?" रखने का एक विशेष कारण यह है। वह कारण यह है कि गत 14 अगस्त 1990 "दैनिक पंजाब केसरी" जालन्धर, पृष्ठ आठ, कालम एक, के "क्लासीफाईड विज्ञापन" के अन्तर्गत "व्यक्तिगत" शीर्षक के नीचे निम्नलिखित एक विज्ञानपन छपवाया गया है कि—"वेद पांच हैं चार नहीं। नि.शुल्क ज्ञान के लिए कृपया लिखें। सर्वमंगला सेवा आश्रम, मनीमाजरा, चण्डीगढ़।

इस विज्ञापन को पढ़ कर एक बार तो मन अचम्भित हो गया। क्योंकि दुनियां तो वेद चार ही जानती और मानती है परन्तु यह विज्ञापन वाले साहिब पता नहीं पांच वेद कैसे और क्यों सिद्ध करने चले हैं? यह तो मैं जानता हूं कि पौराणिक मन्तव्यों के अनुसार कुछ लोगों की वेदों के प्रति इसी प्रकार की कई विभिन्न धारणाएं हैं। परन्तु एक भ्रान्त धारण को समाचार पत्र में छपवा कर डंके की चोट से प्रचारित करके लोगों के गुमराह करना तथा अकारण ही सीधे सादे स्वाध्यायहीन व्यक्तियों को भूल-भुलैयां में डालना मुझे तर्क संगत नहीं लगा। अत: मैंने निश्चय किया कि उक्त विज्ञापन-दाता महानुभाव को पत्र लिख कर इस विषय में कुछ पूछना चाहिए। तब मैंने उन्हें 18-8-90 को एक पत्र लिखा जिसके कुछ अंश नीचे उद्धृत करता हूं—

"समादरणीय महानुभाव! मैं भी भारतीय संस्कृति का एक छोटा सा पुजारी हूं। तथा स्वाध्याय में रुचि रखता हूं। 14 अगस्त 1990 के "दैनिक पजाब केसरी" समाचार पत्र में सूचना पढ़ी जिसमें लिखा है कि "वेद पांच हैं चार नहीं नि:शुल्क ज्ञान के लिए कृपया लिखें।" यहां पते में आप के शुभ नाम अथवा उपाधि का परिचय नहीं मिल पाया है। इस पत्र के प्रारम्भ में नाम अथवा उपाधि पटक सम्बोधन नहीं लिख पाया हूं। क्षमा कीजिएगा।

अब निवेदन यह है कि आपने "वेद पांच हैं चार नहीं लिख कर आचम्भे में डाल दिया है। हम तो सर्वत्र वेद चार ही पढते अथवा सुनते आए हैं। पौराणिक हिन्दू जन सामान्य मे ब्रह्मा जी को वेदों का कर्त्ता माना जाता है। ब्रह्मा जी के चार मुख ही चार वेदों के प्रतीक कहे जाते हैं। शंखासुर ब्रह्मा जी से चारों वेद छीन कर पाताल लोक में ले गया था ऐसा भी पढ़ा सुना जाता है। वहां भी पांच वेद नहीं चार वेद ही कहे गए हैं। अत: कृपया निम्नलिखित कुछ प्रश्नों के उतर देने का कष्ट करें। बड़ी कृपा होगी—

1. अपने शुभ नाम तथा उपाधि की जानकारी दें।

2. पांचो वेदों के पृथक् पृथक् नाम तथा क्या हैं?

3. क्या पांचों वेद ब्रह्मा जी के ही बनाए हुए हैं अथवा अन्य किसी के भी?

4. उन पांच वेदों के नाम किन ग्रन्थों में लिखे हुए हैं? उन ग्रन्थों के नाम तथा स्थल लिखें।

5. क्या वेदों में भी पांचों वेदों के नाम आए हैं? स्थल का पूरा पता लिखें।

6. "वेद पांच हैं चार नहीं" यह बात समाचार पत्र में किस उद्देश्य से छपवाई गई है? इससे क्या लाभ होगा? इत्यादि।"

उक्त विज्ञापन दाता महानुभाव का पत्र आ गया है। मैंने उस पत्र का प्रत्युत्र भी लिख दिया है। इस पत्र तथा अपने उत्तर की चर्चा अगले लेख में करूंगा।

ईश्वर भक्ति

ले०—प्रा० भद्रसेन (होशियारपुर)

ईश्वर और भक्ति इन दो शब्दों का मेल ही ईश्वर भक्ति है।

ईश्वर—शब्द संसार के बनाने-चलाने वाले के लिए सर्वप्रसिद्ध है। इसीलिए कहा जा सकता है—दुनिया बनाना, बना के चलाना बस उसी का ही काम है।

दुनिया में हम देखते हैं, कि सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, पृथ्वी और धरती से प्राप्त होने वाले अन्न, वनस्पति, खनिज, धातु आदि प्राकृतिक पदार्थ न तो हमने बनाये हैं और न ही हमारे पूर्वजों ने। हम सबको ये सारे पदार्थ जिसकी कृपा से प्राप्त होते हैं, वह ही ईश्वर है। हम सबके जन्म-मरण की व्यवस्था का व्यवस्थापक भी ईश्वर ही है, क्योंकि इसमें हम जैसे किसी की अपनी इच्छा नहीं चलती। तभी तो अच्छे से अच्छे चिकित्सकों के प्रयास करने पर भी अनेक हाथों से निकल जाते हैं।

भक्ति—शब्द भज (सेवायाम्) धातु से बनता है, जिसका भाव है कि अपने इष्ट की सेवा करना। जैसे कि ससार में सेवा, सेवक, सेव्य शब्दों से भी स्पष्ट होता है, कि अपनों की जो जरूरत हो, उसको पूरा करना। वह भोजन, वस्त्र, जल, धन आदि की आवश्यकता के अनुसार उस-उस वस्तु को देना और उनकी आज्ञा का पालन करना। जैसे कि माता-पिता के भक्त श्रवण कुमार ने उनकी अनुपम सेवा की। आरुणि और एकलव्य गुरुभक्त कहलाते हैं। उन्होंने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य किया था।

किसी से प्यार करने वाला, किसी के यश को बढ़ाने वाला भी उसका भक्त माना जाता है। जैसे कि राम-भक्त श्रीराम का यशोगान करते हैं। रामनवमी, दीपावली पर्व मना कर श्रीराम का जय-जयकार करते हैं। उनके प्रति अपना प्यार प्रकट करते हैं।

अत: किसी की सेवा करना, आज्ञा मानना, उसके गीत गाना भी उसकी भक्ति है और ऐसा करने वाला भक्त कहलाता है। हां, इस दृष्टि से राम-भक्त हनुमान एक सुन्दर उदाहरण है।

ईश्वर भक्ति की दृष्टि से जब हम इन तीनों अर्थों पर विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता है, कि ईश्वर पूर्ण काम है, उसको किसी भी भौतिक चीज की जरूरत नहीं है। अत: ईश्वर की आज्ञा का पालन करना ही इस प्रकरण में ईश्वर भक्ति कही जा सकती है। जैसे कि इस ससार के स्रष्टा ने जो संसारी पदार्थ जिस प्रयोजन के लिए बनाया है, उसका उसी रूप में प्रयोग करना। अत: हर एक के उचित उपयोग से अपना और दूसरों का भला करना भी सेवा, भक्ति है। यथा आंख का सही उपयोग ही आंख की सेवा और उसका लाभ ग्रहण है। भाई-बहन, पुत्र-पिता, पति-पत्नी, मित्र आदि रूप में जो भी जिससे जिसका सम्बन्ध है, उसको सही रूप मे निभाना भी ईश्वर की भक्ति-सेवा-आज्ञा में ही आता है, क्योंकि ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार ही ये पारस्परिक सम्बन्ध बनते हैं। इसी भाव को श्रीधर पाठक ने 'जगत सचाई सार' में इस प्रकार व्यक्त किया है—

'हाथ, पैर और आंख, कान, बुद्धि से काम जो लेता है।

जीवन का सुख पाता है, वह औरो को सुख देता है।।

पुत्र, कलत्र, मित्र, बान्धव में फैला कर सच्चा आनन्द।

काम जगत का करता है वह रहता है सुख से स्वच्छन्द।।'

योगदर्शन में ईश्वर भक्ति के लिए ईश्वर प्रणिधान शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है—ईश्वर के प्रति अपने आपको अर्पित कर देना। ईश्वर के भरोसे, ईश्वर के विश्वास पर पूरी तरह से जीना। केवल ऐसा कहना ही नहीं, अपितु ईश्वर पर विश्वास रखते हुए अपनी जीवन नैया को उसके भरोसे पर चलाना। जैसे कि एक विद्यार्थी अपने गुरु को सौंप देता है। उसकी आज्ञा के अनुसार चलता है। किसी टीम के सदस्य अपने कप्तान को उस खेल की दृष्टि से सौंप देते हैं। पति-पत्नी पूरी तरह से एक दूसरे को अपना आपा अर्पित कर देते हैं। वैसे ही अर्पण भावना ईश्वर के प्रति रखना। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में इसी दृष्टि से पति या पत्नीवत अर्पण भावना का संकेत है।

ईश्वरप्रणिधान का व्यावहारिक दृष्टि से यह अभिप्राय है, कि केवल कर्त्तव्य बुद्धि से सभी कार्यों को करे। अधिक लाभ प्राप्ति के लिए हेरा-फेरी न करे रिश्वत या पहुच, परिचय के बल पर किसी बात को न करे। यदि मैं बेईमानी करता हूं, धोखा, मिलावट का सहारा लेता हू, तो इसका अर्थ है, कि मुझे ईश्वर पर विश्वास नहीं है। अत: ईश्वर प्रणिधान का यही मार्ग है, कि पूरी ईमानदारी से जीवन को व्यतीत करे और भक्ति, उपासना द्वारा ईश्वर के साथ अपना सम्बन्ध बनाए। क्योंकि—

जिस ईश्वर ने हमारे भले के लिए एक से एक अद्भुत भौतिक पदार्थ दिए हैं। उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना हर समझदार का काम है। अत: भक्ति का सबसे अच्छा ढग यही है, कि जिसके द्वारा हम अपने दिल से जुड़े शब्दों द्वारा उसका धन्यवाद कर सकें।

उसकी दूसरी उपयोगिता यह भी है, कि ईश्वर जगत कर्ता होने से हमारा पिता भी है। भक्ति द्वारा हम अपना ईश्वर से निकट का सम्बन्ध भी अनुभव करें। अत: भक्त और भगवान् में निकट सम्बन्ध का अनुभव कराना ही भक्ति की खूबी है।

(सुखी जीवन से)

दिल्ली में 7वां आर्य युवा महासम्मेलन

नई दिल्ली—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 7वां आर्य युवा महासम्मेलन 6 अक्तूबर 1990 से 10 नवम्बर 1990 तक आयोजित किया गया है। समापन एव पारितोषिक वितरण समारोह 10 नवम्बर 1990 को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में आयोजित किया जायेगा, जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती करेंगे।

उल्लेखनीय है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए 6/10/90 से 5/11/90 तक सभा ने चित्रकला, भाषण, वाद-विवाद, सगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद, योग प्रदर्शन आदि की प्रतियोगितायें आयोजित की हैं, जिसमें आर्य शिक्षण संस्थाओं के अतिरिक्त केन्द्रीय विद्यालयों के हजारों छात्र/छात्रायें भाग लेंगे। शनिवार 6 अक्तूबर को रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर में चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता, शनिवार 13 अक्तूबर को बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स में वाद-विवाद प्रतियोगिता, 20 अक्तूबर, को सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग में खेल-कूद प्रतियोगिता, 27 अक्तूबर को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में भाषण प्रतियोगिता, 2 नवम्बर को सरस्वती आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में समूहगान प्रतियोगिताएं तथा 5 नवम्बर को रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में वालीबाल प्रतियोगिता आयोजित की गयी है।

—सूर्य देव महामन्त्री

नवांशहर की शिक्षा संस्थाओं द्वारा सभा महामन्त्री का स्वागत

गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट नवांशहर की शिक्षा संस्थाओं के निमन्त्रण पर वहां गए। आर. के. आर्य कालेज, डी. एन. एम. कालेज, हावा आर्य सीनियर सै० स्कूल और डा. आशानन्द आर्य बालविद्या मन्दिर नवांशहर इन चारों संस्थाओं के अधिकारियों ने महामन्त्री जी का स्वागत करते हुए उन्हें, अपनी संस्थाओं की ओर से 5100/- इकावन सौ रुपए अर्थात 20 हजार चार सौ रुपया आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भवन निर्माणार्थ दिया। इसके साथ डी. डब्ल्यू. एम. आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल ने भी इस अवसर पर 3100 रु. दिया। कुल 23500 रु. नवांशहर की संस्थाओं ने दिया है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से अपने इन सभी कालेजों व स्कूलों के प्रिंसीपलों तथा अधिकारियों का धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने अपनी इन संस्थाओं की ओर सभा की यह सहयोग दिया है। हमें आशा है अन्य शिक्षा संस्थाएं भी इसी प्रकार सभा को अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी।

पटियाला में वेद सप्ताह

आर्य समाज चौक पटियाला में वेद सप्ताह 10 से 16 सितम्बर 1990 तक बड़े समारोह से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं० निरजनदेव जी इतिहास केसरी तथा भजनोपदेशक श्री प० राम नाथ जी यात्री व श्रीराम जी ने अपने अपने उपदेशों तथा भजनों द्वारा बड़ा प्रभावशाली प्रचार किया। उपस्थिति दिन प्रतिदिन बढ़ती रही और काफी संख्या में आर्य बन्धुओं तथा बहनों ने इसमें भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को 1000 रुपया वेद प्रचारार्थ भेंट किया।

—मन्त्री आ० स०

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 27, आश्विन 15 सम्वत् 2047 तदनुसार 27/30 सितम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे
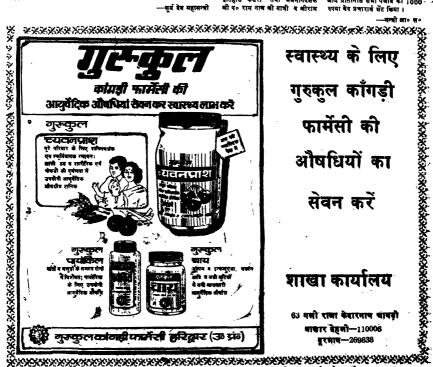
आर्यसमाज का स्थापना दिवस

ले०—मनमोहन कुमार आर्य चुक्खूवाला देहरादून

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्य के ग्रहण एवं असत्य के परित्याग करने में सर्वदा तत्पर रहने को कहा है। उन्होने कहा है कि सत्य को मानना एवं मनवाना एवं असत्य को छोड़ना छुड़वाना मुझे अभीष्ट है। अपने एक पत्र में महर्षि स्वरचित वेदभाष्य की प्राणिकता के सदर्भ में लिखते हैं कि "—यदि सायण ने भूल की है और अंग्रेजो ने उसको अपना मार्गदर्शक जानकर अंगीकार कर लिया तो भले ही करें, परन्तु मैं जानबूझ कर कभी भूल का काम नहीं कर सकता। परन्तु मिथ्यामत बहुत काल तक नहीं ठहर सकता, केवल सत्य ही ठहरता है और असत्य सत्यता के सन्मुख शीघ्र मैला हो जाता है।"

महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों एवं अन्य आर्य विद्वानों के लिखे ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हुए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आर्य समाज में उनके बहुत से विचारों का पालन नहीं हो रहा है। वेद-मानव-सृष्टि संवत्, आर्य समाज से सम्बन्धित शिक्षण संस्थानों में संस्कृत एव आर्यभाषा (हिन्दी) की स्थिति एव आर्य समाज के स्थापना-दिवस से सम्बन्धित जो निर्णय लिए गये हैं वह महर्षि के विचारों एव उपलब्ध प्रमाणों से साम्य नहीं रखते। यहां आर्य समाज स्थापनादिवस से सम्बन्धित कुछ विचार प्रस्तुत हैं।

सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापना-दिवस से सम्बधित जो तिथि स्वीकार की गयी है वह चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, सं०1931 है। इस दिन आंगल तिथि 7 अप्रैल, 1875 थी। प्रत्येक वर्ष सार्वदेशिक पत्र में विज्ञप्ति छापी जाती है जिसमें आर्यों के आर्य समाज स्थापना-दिवस दिनांक 7 अप्रैल को मनाने का उद्बोधन होता है। महर्षि दयानन्द जी के पत्रव्यवहार में एक पत्र उपलब्ध होता है जो उन्होंने श्री गोपालराव हरि देशमुख, न्यायाधीश, अहमदाबाद को 11 अप्रैल, 1875 को लिखा था। इस पत्र से आर्य समाज की स्थापना तिथि पर प्रकाश पड़ता है अत: वह पत्र उद्धृत है :

श्रीरस्तु

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्य: श्रीयुत गोपाल राव-हरिदेशमुखादिभ्यो दयानन्दसरस्वती स्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति, तत्राप्यस्तुतमाम्। आगे मुम्बई मे चैत्र शुद्ध 5 शनिवार के दिन सध्या के साढे पांच बजते आर्य समाज का आनन्द-पूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ। आप लोग भी वहा आरम्भ कर दीजिए। विलम्ब मत कीजिए। नासिक में भी होने वाला है। अब आर्य समाजार्थं (नियम) और संस्कार विधान का पुस्तक वेदमन्त्रो से बनेगा शीघ्र।

संवत् 1931 मिति चैत्र शुद्ध 6 रविवार।

(सदर्भ-ऋषि द०स० के पत्र एव विज्ञापन, भाग—1, पृष्ठ-55)

महर्षि के इस पत्र पर आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान पं० युधिष्ठर मीमासक जी ने जो पाद टिप्पणी दी है उससे आर्य समाज का स्थापनादिवस 7 अप्रैल 1875 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) की भ्रान्ति पर प्रकाश पड़ता है। प० जी द्वारा की गई टिप्पणी निम्न है :

"बम्बई आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ला 5 शनिवार स० 1932 (10 अप्रैल, 1875) को हुई थी, यह उपर्युक्त लेख से स्पष्ट है। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र लेखक पं० लेखराम जी तथा प० देवेन्द्रनाथ जी आदि ने यही तिथि लिखी है।

इस तिथि की पुष्टि बम्बई आर्य समाज की प्रारम्भिक 11 मास की मुद्रित संक्षिप्त कार्यवाही से भी होती है। यह कार्यवाही 20×30= आकार के (32 पृष्ठों में छपी है।) (बाह्य टाईटल पेज पृथक है)। इस कार्यवाही के प्रथम पृष्ठ पर अन्दर का टाइटल है। द्वितीय पृष्ठ खाली है, और तृतीय पृष्ठ पर स्थूलाक्षरो मे "श्री आर्य समाज स्थापना स. 1931, ना चैत्र शुद्ध शनिवार (स्पष्ट लिखा है) यहां संवत् 1931 गुजराती पंचांगानुसार है)। इस कार्यवाही के मुख पृष्ठ पर मुद्रणकाल "संवत् 1932 माघ वदि-ना माहा वद ॥ सन् 1876" (अर्थात् स० 1932 माघ वदि.) छपा है। आर्य समाज स्थापना दिवस के सम्बन्ध में इस समय जितनी भी पुरानी सामग्री (रेकार्ड) मिलती है, उसमे यह सब से पुरानी और विश्वसनीय है। हमे यह कार्यवाही उक्त आर्य समाज के कार्यकर्ता हमारे मित्र श्री प० पदमदत्त जी की कृपा से 29 अक्तूबर, 1952 को बम्बई में देखने को प्राप्त हुई। सन् 1939 के पश्चात् सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा "चैत्र शुक्ला।" को आर्य समाज को स्थापना दिवस मनाने की जो प्रतिवर्ष घोषणा होती है, उसका एक मात्र आधार बम्बई आर्य समाज मन्दिर पर लगा हुआ जाली शिला लेख है। इस भवन का निर्माण आर्य समाज स्थापना के 7 वर्ष के अनन्तर हुया था। यह भी वहीं लगे अन्य शिलालेख भवननिर्माण काल वाले शिलालेखो से भी अर्वाचीन हैं। इसलिए उक्त आर्य समाज स्थापनादिवस वाला शिलालेख सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण और अशुद्ध है। अत: उस शिलालेख और उसके आधार पर सन् 1939 के अनन्तर सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित आर्य समाज की स्थापना तिथि मे सशोधन होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके विषय मे वेदवाणी वर्ष छ: अक 5, 8, 11 मे हमारे लेख देखे। उनमें आर्य समाज बम्बई के सभी लिखित व मुद्रित प्रमाणों को दिया है।"

महर्षि दयानन्द जी के पत्र एव प० मीमांसक जी के लेख के पश्चात् स्थापनादिवस के संबध में कोई सदेह नहीं रह जाता है। परन्तु इसे और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान लेखकों स्वामी सत्यानन्द एवं डा. भवानीलाल जी भारतीय द्वारा महर्षि के जीवनचरितों में दिए गये उनके विचार उद्धृत कर रहे हैं। स्वामी सत्यानन्द जी ने दयानन्द प्रकाश में इस प्रकरण पर निम्न शब्दों में प्रकाश डाला है।

"महाराजा के आदेशानुसार चैत्र सुदी 5 सम्वत् 1932 विक्रमी शनिवार को मुम्बई नगर के गिरगाव मुहल्ले मे डाक्टर माणिकचन्द्र की वाटिका में, साय समय आर्य समाज की शुभ स्थापना हुई।"

डाक्टर भवानी लाल भारतीय ने महर्षि के जीवनचरित "नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती" में आ० स० के स्थापना दिवस विषयक प्रकरण निम्न शब्दों में प्रस्तुत किया है।

'इस प्रकार आर्य समाज की स्थापना को लेकर भक्त जनो में व्यापक सहमति देखी गई, तो राजमान राज श्री पानाचद आनन्द जी पारेख को आर्य समाज के नियमो का प्रारुप बनाने के लिए कहा गया। यह प्रारुप स्वामी जी के समक्ष रखा गया, जिसमे उन्होने समुचित सशोधन कर दिए। पश्चात् चैत्र शुक्ला पचमी 1932 वि. शनिवार, तदनुसार 10 अप्रैल, 1875 (शकाब्द 1797) को गिरगाव मुहल्ले मे प्रार्थना समाज के निकट एक पारसी सज्जन डा. माणक जी अदेर जी की वाटिका मे सायकाल साढ़े पाच बजे एक सभा आयोजित कर आर्य समाज की विधिवत् स्थापना की गई।" इस प्रकरण पर जो पादटिप्पणी दी गई है उसके अनुसार स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा. भारतीय एव आचार्य विश्वश्रवा जी ने भी इसी तिथि के पक्ष में वेद प्रकाश एव आर्यमर्यादा आदि पत्र-पत्रिकाओ मे वर्ष 1971 मे विवेचन, तर्क एव प्रमाणों से युक्त लेख लिखे थे।

यह स्पष्ट है कि आर्य समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ल पचमी, 1932 वि. (10 अप्रैल, 1875) ही है। महर्षि ने सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग को आर्य समाज का नियम बनाया है। अत: सार्वदेशिक सभा को स्थापना दिवस विषयक इस त्रुटि के निवारण मे विलम्ब नही करना चाहिए। दिसम्बर 90 में सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन हो हो रहा है। सार्वदशिक सभा इस सम्मेलन से पूर्व यदि सभी विवादास्पद विषयो पर नये शिरे से विचार कर निर्णय लेती है तो यह वर्तमान समय मे आर्य समाज की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

ऋषिवर की पावन स्मृति में

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०) ।

विक्रमी वर्ष 1940 की दीपावली का सायंकाल साढ़े पांच बजे, जब देश-देशान्तर मे बसे भारतीय अपने-अपने घरों मे दीपमाला के दीप प्रज्ज्वलित कर रहे थे, तब विश्व मानवता के हितार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वेद-दीप प्रज्ज्वलित कर महर्षि दयानन्द का जीवन दीप अनन्त आकाश मे विलुप्त हो गया।

उस महामानव के महाप्रयाण की सूचना जहा-जहा पहुची.. न केवल भारत और आर्य जाति मे ही अपितु समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले मनुष्यों के मन और मस्तिष्क पर शोक छा गया।

यद्यपि वह महान विभूति 1940 विक्रमी की दीपावली को सायकाल से इस ससार मे कही दिखाई नही देती उसके द्वारा प्रकाशित किया गया वह ज्ञान-विज्ञान परिपूर्ण दीप, अनादि पुरुष का वह शश्वत ज्ञान जो शताब्दियो से लुप्त प्राय था और जिसके विषय मे अविद्यान्धकार के गर्त मे भटकती आर्य जाति मे यह किंवदन्ति प्रसिद्ध थी कि "वेद को शखासुर लेकर पाताल चला गया—उस महामानव ने पुन: प्रकाशित कर विश्व-मानता के विशाल प्राण-पण मे उसका प्रकाश फैला दिया। केवल उस प्रकाश को स्वय ही फैलाया हो, ऐसी बात भी नही अपितु युग-युगान्तर तक इस विशाल पृथ्वी पर उसे प्रज्ज्वलित करते रहने के लिए अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आर्य समाज का सगठन बनाकर "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है" इस सूत्र के रूप में उसे दायित्व सौंप दिया।

महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य समाज ने भी उस दायित्व के निर्वहन में अपने पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग किया और निरन्तर कर रहा है। महर्षि की इस घोषणा के अनुरूप कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" आर्य समाज ने वेद के विधि विज्ञानों से संबद्ध अब तक सैकडों ग्रन्थ प्रकाशित कर संसार के पुस्तकालय की भी वृद्धि की है।

आर्य समाज का ऐसा मन्तव्य नहीं है कि यान्त्रिकीय ही विज्ञान है अपितु आर्य समाज की यह मान्यता है कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता है। यह तो सभी जानते हैं कि प्रत्येक विषय का अपना ज्ञान होता है किन्तु इससे आगे बढकर प्रत्येक विषय के विज्ञान तक सब नहीं पहुच पाते हों, ऐसी ही बात नहीं है अपितु प्रत्येक विषय का विज्ञान भी होता है, ऐसा विचार भी सब नहीं कर पाते तथा तथ्य तो यह है कि सर्व-सामान्य की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े मनुष्यों का भी इस ओर ध्यान नहीं जाता। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक विषयक ज्ञान का विवेचन और विश्लेषण तथा उसके परिणाम स्वरूप होने वाली उपलब्धि उस विषय का विज्ञान होता है।

यदि केवल यान्त्रिकीय दृष्टि से भी देखा जाय तो वेद में इस परिमाण में विज्ञान भरा पड़ा है कि न केवल हमारी पृथ्वी पर अपितु विश्व ब्रह्माण्ड में 'यावत् चन्द्रदिवाकरौ' जब तक चन्द्रमा और सूर्य सहित यह सृष्टि रहेगी, तब तक उस प्रभु-प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान मे से विज्ञान के सूत्रों की उपलब्धि होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही वेद को "सब सत्य विद्याओं का पुस्तक" कहकर वेद की वैज्ञानिकता की चर्चा की हो, ऐसी बात भी नही है अपितु अब से दीर्घ समय पूर्व महर्षि भारद्वाज के "यन्त्र सर्वस्व" नामक ग्रन्थ के टीकाकार श्री बोधानन्द ने अपने द्वारा की गयी टीका के मगलाचरण मे लिखा है—

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनि: ।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्व रूपकम् ॥

अर्थात् महामुनि भारद्वाज ने वेद-रूपी समुद्र को मथकर उसमे से "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के रूप मे नवनीत (मक्खन) निकाल लिया है। यदि 'यन्त्र सर्वस्व' को ही हम उद्धृत करने लग जायें तो लेख का कलेवर बहुत बढ़ जायेगा किन्तु फिर भी इतना कह देना अनिश्चित न होगा कि उक्त ग्रन्थ के केवल वैज्ञानिक प्रकरण को ही लिया जाये तो भी वैज्ञानिक यान्त्रिकी के साथ-साथ उसमें युद्धोपयोगी अन्य भी अनेक यान्त्रिकीय उपकरणो के निर्माणार्थ उनके तन्त्र भी वर्णित किये गए हैं, जिनमें प्रयुक्त होने वाली धातुओं तथा वनस्पतियों के अतिरिक्त आग्नेय आदि पदार्थों के प्रयोग का भी वर्णन है और शत्रु के विमानों मे आग लगाकर उन्हें नष्ट कर देने के लिए तैयार किए गए दर्पण तथा भूगर्भ में छिपाकर रखे गए भयकर आग्नेय गोलों का पता लगाने वाली यन्त्रों (राडारो) को तैयार किए जाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाली तापमानों के अश तक वर्णित हैं।

इसके अतिरिक्त भी हम वेद में देवी अर्थात् अणुचालित नावों और पनडुब्बियों तक का वर्णन 'मध्ये अन्त: समुद्रे' अन्दर समुद्र के गर्भ मे तथा 'सिन्धुरूर्मौ कारं विभ्रत:' समुद्र की लहरों पर कार को चलाने का वर्णन पाते हैं।

आकाश मे सूर्य के चारों ओर "शकमय धूमं सूर्यमारात्' सूर्य को चारों ओर से घेरे हुए श्वेत धूम (हीलियम गैस) वर्णित है तो सूर्य में खाद्य पदार्थों के भरे होने की बात कहकर सूर्य की ऊर्जा, उसकी किरणों के माध्यम से प्राप्त होने वाली भोज्य सामग्री की भी चर्चा है। यहां इस लघु निबन्ध में इन सब उद्धरणों को वेद से प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न नहीं कर रहे वह तो पृथक से एक ग्रन्थ का विषय है, फिर कभी किसी लेख में वेद-विज्ञान विषय पर पृथक से चर्चा की जायेगी।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के दिवंगत होने के पश्चात् अभी तक एक ही महापुरुष योगी राज अरविन्द घोष ऐसे भारतीय मनीषी हुए हैं, जिन्होंने महर्षि दयानन्द की वेद मे विज्ञान होने की घोषणा का यह कहकर समर्थन किया है कि "महर्षि दयानन्द ने वेद में विज्ञान होने की बात कहकर कुछ अतिशयोक्ति नहीं की है अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है, क्योंकि वेद के असख्य विज्ञानों के रहस्य तो अभी तक अज्ञात ही हैं।" यह स्मरण रहे कि श्री अरविन्द घोष आर्य समाजी नही थे किन्तु उन्होंने जब वेद का अध्ययन किया तो आधुनिक युग प्रवर्त्तक तथा वेदोद्धारक देव दयानन्द के वेदभाष्य के अतिरिक्त उनकी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भी—जिसमें 'तार विद्या' तथा 'नौविमानादि विद्या' प्रकरण भी है—अवश्य पढ़ी होगी। परिणामस्वरूप उन्होंने उक्त घोषणा करके महर्षि दयानन्द के वेद में विज्ञान होने के दृष्टिकोण का उनसे भी आगे बढ़कर समर्थन किया।

पश्चिमीय जगत में महर्षि दयानन्द के समकालीन जर्मन निवासी प्रोफेसर मेक्समूलर ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त का जब अध्ययन किया तो वह आश्चर्य-चकित रह गये और वेद में प्रलयावस्था की वैज्ञानिकता के वर्णन को स्वीकार किया। उन्होंने अपनी "भारतीय दर्शन के छ: सिद्धांत" नामक पुस्तक में लिखा है कि 'मैं अब तक वेदों को ऋषियों की खोज मानता था किन्तु ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढकर इस परिणाम पर पहुचा कि प्रलयकाल मे क्योंकि ऋषि आदि कोई भी प्राणी नहीं था, अतएव यह ऋषियों की खोज नहीं हो सकता। प्रलयकाल में मानवों की उपस्थित न होने पर भी उस काल के इतने स्पष्ट आंखो देखे जैसे वैज्ञानिक वर्णन के होने से तो यह ज्ञान परमात्मा की ओर से ऋषियो की ओर आया प्रतीत होता है।" इस प्रकार ऋषिवर दयानन्द ने वेद को शखासुर द्वारा पाताल ले जाने की भ्रान्ति का निवारण कर वैदिक विज्ञान की दुन्दुभि बजाकर विश्व मनुष्यों का ध्यान वेद की ओर आकर्षित किया।

करनाल में आर्य वीर दल का सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा का तेरहवां महासम्मेलन 8-9 सितम्बर 90 को डी.ए.वी.सी. सै० स्कूल करनाल में सम्पन्न हुआ जिसका आयोजन श्री जगदीश चन्द्र मधोक तथा श्री भोपाल सिंह आर्य तथा श्री लाजपतराय श्री अमरनाथ कुमार ने किया। पहले दिन 8 सितम्बर को भारी वर्षा के बावजूद बाहर से आए आर्य वीरो तथा नगर के सैकड़ों गण मान्य व्यक्तियों, महिलाओं तथा बच्चों ने एक विशाल शोभा यात्रा निकाली जिसमें आर्यवीरों ने लाठी, भाला, तलवार तथा योगासन आदि का प्रदर्शन किया।

रात्रि को 9—11½ बजे तक आर्य वीर सम्मेलन हुआ जिसमें प्रो० उत्तमचन्द शरर, प्रो० ओम कुमार, प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य, श्री उमेदसिंह शर्मा स्वामी सच्चिदानंद, स्वामी रत्नदेव आदि ने भाग लिया। वक्ताओं ने आत्म शक्ति का महत्त्व बताते हुए युवाओं का शारीरिक एवं चरित्रिक विकास का सन्देश दिया इस सम्मेलन के अध्यक्षता आचार्य डा. देवव्रत ने की तथा इसका संयोजन श्री अजीत कुमार आर्य (पलवल) ने किया।

रविवार 9-9-90 को प्रात: प्रो० उत्तमचन्द शरर (पानीपत) की अध्यक्षता में वेद तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें प्रो. ओमकुमार (जीन्द) डा. देवव्रत आचार्य (दिल्ली) श्री वेदप्रकाश आर्य (रोहतक) श्री लाजपतराय, स्वामी सच्चिदानंद आदि ने भाग लिया इसका संयोजन श्री कृष्णदेव शास्त्री ने किया। सम्मेलन का उद्घाटन दयालसिंह कालेज करनाल के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य ने किया।

सम्पादकीय—

कामरेड अग्निवेश

स्वामी शब्द हिन्दी और संस्कृत की शब्दावली में अपना विशेष महत्त्व रखता है। हम परम पिता परमात्मा को भी स्वामी कहते हैं और जो व्यक्ति संसार के सब बन्धन तोड़ कर सन्यास आश्रम में प्रवेश करता है उसे भी स्वामी कहते हैं। एक पत्नी अपने पति को भी स्वामी कहती है क्योंकि पत्नी पर पति का पूर्ण अधिकार होता है। सामान्य भाषा में स्वामी उसे भी कह देते हैं जो किसी वस्तु का मालिक हो। कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि स्वामी शब्द एक विशेष अर्थ और महत्त्व रखता है और फिर भी उसे प्राय: उन लोगों के लिए ही प्रयोग किया जाता है जो उसके योग्य होते हैं। आर्य समाज के सन्यासियों को भी हम स्वामी कहते हैं परन्तु हम यह भी जानते हैं कि जो भी व्यक्ति आर्य सन्यासी होता हुआ सन्यास आश्रम में प्रवेश करता है, उस पर तीन प्रकार के प्रतिबन्ध होते हैं। वह पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा इन तीनों प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त होता है। उसी स्थिति में वह सन्यासी बनने का अधिकारी होता है और उसी स्थिति में हम उसे स्वामी कह कर उसका आदर और सम्मान करते हैं।

जब हम इस पृष्ठभूमि में स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश इन दोनों की गतिविधियों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह सोचना पड़ता है कि यह वास्तव में स्वामी कहलाने के अधिकारी भी हैं या नहीं। मैं विशेष रूप से अग्निवेश के विषय में कहता हूं। इन्द्रवेश तो उनके साथ बन्धे हुए हैं। इसलिए दोनों का नाम एक साथ ही आता है और इन दोनों की जो भी प्रशंसा हो या निन्दा हो वह भी एक साथ ही होती है और जब तक यह दोनों इकट्ठे रहेंगे वह जो भी करेंगे उसका हानि लाभ दोनों को ही उठाना पड़ेगा।

यह लगभग 20-25 वर्ष पुरानी बात है जब आर्य समाज में दो नये युवक सक्रिय रूप से काम करने लगे थे। एक का नाम इन्द्रदेव था और दूसरे का नाम श्याम राव। दोनों सुयोग्य सुशिक्षित और सुशील थे। इनके विचारों को सुनकर आर्य समाज में आशा की एक नई किरण जाग उठी। जनता ने समझा कि आर्य समाज सम्भवत: इन दोनों के नेतृत्व में एक बार फिर अपनी खोई हुई ख्याति और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेगा। आर्य समाज के बड़े बड़े नेताओं ने इन दोनों को अपने सिरों पर उठा लिया। यह जहां भी जाते थे आर्य जनता उनकी राह में अपनी आंखें बिछा देती थी। कई स्थानों पर इनका स्वागत किया गया और आर्य समाज की युवा पीढ़ी ने इनसे कहा कि वह युवा वर्ग का नेतृत्व सम्भालें। जो पुराने महारथी थे उन्होंने भी इनसे कहा कि वह आर्य समाज का नेतृत्व करें। वह उनके लिए अपने स्थान छोड़ने के लिए तैयार हैं और एक ऐसा वातावरण पैदा हो गया जब यह समझा जाने लगा कि आर्य समाज का नेतृत्व अब इन दोनों के हाथ में दे दिया जाए। इन्होंने भी सम्भवत: यह समझा कि केवल इन्द्रदेव और श्याम राव बनने से काम न चलेगा। हिन्दू समाज में गेरवें कपड़ों को बड़े आदर और सम्मान और श्रद्धा से देखा जाता है। इसलिए सन्यास ले लिया जाए। इसलिए इन दोनों ने समझा कि इसके अतिरिक्त और कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। इन्होंने सीधा ब्रह्मचर्य से सन्यास आश्रम में प्रवेश करने का निर्णय लिया और इन्द्रदेव, इन्द्रवेश बन गए और श्याम राव, अग्निवेश बन गए और इसके साथ ही आर्य समाज के इतिहास का एक नया अध्याय शुरू हो गया। यह दोनों जहां जाते थे लोग कहते थे कि राम और लक्ष्मण की जोड़ी आ गई क्योंकि यह दोनों ही विद्वान थे, शिक्षित थे, सुयोग्य थे। इसलिए भाषण भी अच्छा दे लेते थे। इनकी लोकप्रियता ने आर्य जगत में वेश सम्प्रदाय की नींव रख दी और उसके पश्चात वेश नाम के कई सन्यासी आगे आने शुरू हो गए और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब आर्य समाज में नई क्रान्ति आ जायेगी परन्तु यह धारणा अधिक देर तक न चल सकी। इन दोनों में पद लोलुपता की भावना पैदा हो गई। जो व्यक्ति किसी पद के लिए उत्सुक होता है वह उसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। प्रारम्भ में इन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी निर्वाचित किया गया। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि मैं भी उन व्यक्तियों में से था जो यह समझते थे कि आर्य समाज में युवा शक्ति का एक नए रूप में यह प्रादुर्भाव हो रहा है। इसलिए मैं उन व्यक्तियों में से एक था जो इनका समर्थन करते थे। जिन्होंने इन दोनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी निर्वाचित करने के लिए बहुत कठिन प्रयास किया था और स्वामी इन्द्रवेश को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान बनाया गया और अग्निवेश को आर्य विद्या परिषद् का प्रस्तोता बनाया गया था। यह एक इन्हें ऐसा अवसर मिला था जिस के द्वारा यह आर्य समाज में अपना एक ऐसा स्थान बना सकते थे कि जिससे आयु पर्यन्त कोई इन्हें हटा नहीं सकता था। आर्य समाज में नये नेतृत्व के लिए एक बहुत बड़ा स्थान था। यदि यह उससे लाभ उठाते और निस्वार्थभाव से आर्य समाज की सेवा करते तो आर्य जनता इनके चरणों में बैठने के लिए तैयार थी। न जाने क्यों इनमें कुछ स्वार्थ की भावना पैदा हो गई और उसके साथ नया सबर्ष इन्होंने शुरू कर दिया। इसी बीच अग्निवेश ने कुछ ऐसे भाषण दिए और कुछ ऐसे लेख लिखे व कुछ ऐसे वक्तव्य दिए जिनके कारण आर्य जनता में यह भावना पैदा होने लगी कि यह व्यक्ति आर्यसमाजी है या नहीं? कहीं यह कम्युनिस्ट तो नहीं है? इसी बीच 1975 में आपातकालीन स्थिति पैदा हो गई। पुलिस इन दोनों को गिरफ्तार करना चाहती थी। अग्निवेश ने उससे बचने के लिये अपनी वेशभूषा ही बदल ली। गेरवे वस्त्र उतार कर कोट पैंट और हैट के साथ घूमने लगे। इससे आर्य जनता को एक ऐसा धक्का लगा वह सोचने लगी कि क्या कहीं यह व्यक्ति जिससे उन्होंने इतनी आशाए लगाई थी कुछ और ही तो नहीं है। यदि सरकार उसे गिरफ्तार करना चाहती थी तो गिरफ्तार हो जाता, इसमें क्या अंधेर आ जाता। हजारों लोग गिरफ्तार हो रहे थे और अगर यह गिरफ्तार हो जाते तो एक बड़े नेता बन जाते। परन्तु इन्होंने पुलिस से बचने की कोशिश की और उस प्रयास में सन्यास आश्रम की एक निशानी गेरवें कपड़े भी उतार फैंके। इसके साथ ही अग्निवेश आर्य जनता की नजरों से गिर गये। परन्तु यह भी समझते थे कि आर्य समाज में इतनी दूर तक जा कर अब उन के लिये वापिस आना कठिन है। इसलिए आर्य समाज के नाम पर उन्होंने अपनी कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रचार करना शुरू कर दिया। इसे देखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन दोनों को आर्य समाज से निष्कासित कर दिया और इनके लिए आर्य समाज की वेदी बन्द कर दी। मैं समझता हूं कि इन दोनों में कुछ भेद करना चाहिए था। स्वामी इन्द्रवेश ने कभी भी कोई ऐसी बात नहीं कही जो आर्य समाज के सिद्धान्तों मान्यताओं और विचारधारा के विरुद्ध हो। अग्निवेश बहुत कुछ ऐसी बातें कहते रहे हैं और आज भी कह रहे हैं जिनके कारण आज आर्य समाज के विषय में लोगों में भ्रान्ति पैदा होती है। जब मैं कहता हूं कि अग्निवेश आर्य समाज के माध्यम से कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रचार करता है तो मैं बिना कारण नहीं कहता। इसकी सम्पुष्टि आर्य समाज के विख्यात नेता श्री प्रो० उत्तम चन्द जी शरर ने की थी। एक बार वह और अग्निवेश दोनो ही जेल में थे। श्री शरर जी ने अग्निवेश जी से पूछा कि आप दयानन्द के माध्यम से कार्ल मार्क्स की विचारधारा का प्रचार करते हैं तो क्यों? तो अग्निवेश जी ने उत्तर दिया कि इस देश के इतिहास और इसकी परिस्थितियो को देखते हुए वह इस परिणाम पर पहुंचे है कि इस देश में वह कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता जिसे धार्मिक रूप न दिया जाये। कम्युनिज्म की विचारधारा को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि किसी धर्म का सहारा लिया जाये। और वह समझते हैं कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसके द्वारा वह आसानी से कम्युनिज्म का प्रचार कर सकते हैं। जब श्री शरर जी ने अग्निवेश जी से पूछा कि यदि उन्हें दयानन्द और कार्ल मार्क्स इन दोनों में से किसी एक का चयन करना पड़े तो वह क्या करेंगे। तो अग्निवेश जी ने कहा कि वह दयानन्द को छोड़ देंगे और कार्ल मार्क्स को पकड़ लेंगे।

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है वह उस आधार पर लिखा है जोकि श्री उत्तम चन्द जी शरर ने मुझे बताया था। परन्तु अब मैं समझता हूं कि शरर जी ने जो कुछ कहा था वह ठीक ही कहा था। आज देश में आरक्षण के विरोध में जो आन्दोलन चल रहा है उसमें अग्निवेश ने जो अपने विचार प्रकट किये हैं वह आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध हैं। परन्तु समझा यह जाता है कि अग्निवेश आर्य समाज के नेता हैं। वह किसी विषय पर अपने विचार प्रकट करते हैं तो यह भ्रान्ति पैदा होती है कि एक आर्य समाज का नेता बोल रहा है यह अत्यन्त गम्भीर स्थिति है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है।

(क्रमश:)

—वीरेन्द्र

एक वीर माता का स्वप्न

ले०—श्री अमित प्रताप नारायणसिंह ग्राम—हाटा, डा० मझौली, जिला देवरिया।

मातृ देवो भव

माता को देवता समझकर उसकी पूजा करो।

न मातुः परं दैवतम्

माता से बढ़ कर कोई देवता नहीं है।

हमारे ग्रन्थों में माता का बहुत आदर किया गया है और उसे महत्त्व दिया गया है। माता सदा बालकों का, बच्चों का हित सोचती है, उनका ध्यान रखती है। बच्चों का निर्माण भी वही करती है। वीर माताएं ही अपने बच्चों को वीर साहसी और देश भक्त बना सकती हैं।

शिवाजी की माता जीजाबाई ऐसी माता थी जिन्होंने शिवाजी को छत्रपति शिवाजी बनाया। जीजाबाई शिवनेर के दुर्ग में रहती थी तथा नित्य दुर्ग की अधिष्ठात्री शिवाई देवी से प्रार्थना करती थी कि मुझे ऐसा वीर पुत्र प्राप्त हो जो महाराष्ट्र में एक स्वतन्त्र मराठा राज की स्थापना करने में सफल हो। 10 अप्रैल सन् 1627 ई० को जीजाबाई ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने शिवाई देवी के नाम पर शिवाजी रखा। इस सम्बन्ध में एक संस्कृत के कवि ने लिखा है—

श्री विक्रमस्य शतके शुभ षोडशान्ते जातः शिवश्चतुर शीत्यधि के ऽब्दे शुभ श्री शाहमित्र भवने शिवनेरिदुर्गे दुर्गेहिऽवासौ गिरि समोऽस्ति महाराष्ट्रे॥

शिवाजी विक्रमीय 1684 में शिवनेरि किले में शाहमित्र के भवन में उत्पन्न हुए जो किला महाराष्ट्र में पर्वत के समान सुदृढ़ था। यही बालक आगे चलकर छत्रपति शिवाजी के नाम से विख्यात हुआ और उसने माता के स्वतन्त्र मराठा राज्य के स्वप्न को पूरा किया।

माता जीजाबाई ने बचपन से ही शिवाजी से हृदय में देश प्रेम तथा हिन्दू धर्म का भाव कूट-कूट कर भर दिया था। वह प्रेम से बालक शिवाजी को पूर्वजों के शौर्य और देश के प्राचीन वैभव की कहानियां सुनाती और उनके हृदय में साहस वीरता और महत्त्वाकांक्षा की भावनाएं भरती। इस शिक्षा का प्रभाव उस समय दृष्टिगोचर हुआ जब शिवाजी 12 वर्ष की अवस्था में बीजापुर गये जहां उनके पिता जी—शाहजी सुल्तान से मुख्य मन्त्री थे। उन्हें बीजापुर का दरबारी जीवन तनिकुल पसन्द नहीं आया। जब वे अपने पिताजी को सुल्तान को झुककर सलाम करते हुए देखते थे तो उनका माथा शर्म से झुक जाता था और हृदय क्रोध से जल जाता था। वे आकर अपनी माता जी को दरबार की बातें बताते और अपने पिता जी की आलोचना करते। माता जीजाबाई उनके स्वतन्त्र विचारों की सराहना करती और अलग राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करती जिससे आत्मसम्मान की रक्षा हो सके। जब शाह जी ने देखा कि बालक शिवाजी को दरबारी जीवन पसंद नहीं है, उन्होंने उनको जीजाबाई के साथ पूना भेज दिया। माता जीजाबाई की प्रेरणा से शिवाजी ने छोटे-छोटे किले जीतकर स्वतन्त्र मराठा राज्य स्थापित करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने रायगढ़, पुरन्दर-राजगढ़ आदि दुर्गों को जीत लिया। इससे उनकी ख्याति बढ़ गयी और आसपास के शासक उनसे डरने लगे।

एक बार माता जीजाबाई ने शतरंज के खेल में शिवाजी को मात दे दी। शिवाजी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और कहा, "मां आप अपनी इस जीत के लिए मुझ से कुछ भी मांग ले।" मां बोली, "अगर देना ही चाहते हो तो मुझे सिंहगढ़ का दुर्ग दो।" यह अजेय पहाड़ी दुर्ग मुगलों के हाथ में था। और उदयभान नाम का राजपूत सरदार मुगलों की ओर से उसका प्रबन्ध करता था। उदयभान के पास बहुत बड़ी मुगल सेना थी। अतः उन्होंने अपने मित्र ताना जी मालसुरे को बुलाया। यह ज्ञात होने पर कि उन्हें सिंहगढ़ जीतना है अपने छोटे भाई सूर्या जी को लेकर एक हजार सैनिकों के साथ सिंहगढ़ को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें उदयभान और ताना जी दोनों मारे गए। किला मराठों के हाथ आ गया लेकिन ताना जी की मृत्यु पर शिवाजी तथा उनकी माता जी को गहरा धक्का लगा।

मुगल प्रदेश हाथ से जाता देख औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध अपने मामा शाइस्ता खां को भेजा किन्तु शिवाजी ने अचानक हमला बोल दिया और शाइस्ता खां ने मुश्किल से प्राण बचाए। औरंगजेब शिवाजी से बहुत डरता था—

श्री वीर सिंह शिवराज कृपाणभीतश्चौरंगजेबन्नृपतिर्न बहोस्वऽर्म्यम्। रात्रिदेवं स्वधिगृहं निज संस्त्रमत: स्वाद् पिबन्नपि जलेश्वदवर्मशिवम्॥

अर्थात् सिंह रूप शिवाजी के कृपाण से भयभीत राजा औरंगजेब महल को नहीं छोड़ता था दिन-रात घर में रहता हुआ बड़ा व्याकुल था। खाता पीता चलता सामने (स्वप्नवत) वीर शिवाजी को ही देखता था शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुए भूषण कवि ने लिखा है।

छूटत कमान बरु गोली तीर बानन के,
मुश्किल होत मुरचान हूं की ओट में।
ताहि समय सिवराज हुकम के हुल्ला कियो,
दावा बांधि परा हल्ला बीर बर जोर में।
भूषन भनत तेरी हिम्मत कहां लों कहीं,
किम्मत इहां लगिहै जाकी भट जोरमें।
ताव दै दै मूछन कंगूरन पै पांव दे दें,
अरिमुख घाव दै दै कूदि परे कोट में।

शिवाजी की सेना के चलने से शेष की दुर्दशा होती है, समुद्र हिलने लगता है तथा धूल उड़ने से सूर्य ढक जाता है—

(1) भूषन भनत नाद विहद नगारन के,

नदी नद मद गैबरन के रलत हैं।
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल, गजन की ठेल पेल सैल उसलत है। तारा सो तरनि धूरि धारा में लागत जिमि धारा पर पारा पारावार यों हलत है।

(2) टूटिगे पहार बिकरार भुव मण्डल के, शेष के सहस फन कच्छप कचकिगे।

(3) दल के दरारन तें कमठ करारे फूटे, केरा के से पात विहराने फन शेष के।

महाराजा शिवाजी मुसलमानों के सम्बन्ध में उदारनीति के पोषक थे। मुसलमानों के प्रति उनके हृदय में किसी प्रकार का द्वेष या घृणा का भाव नहीं था। श्री खफी खां ने लिखा है—उन्होंने एक नियम बना दिया था कि जब कभी उनके अनुयायी इधर-उधर लूट पाट करें तब मस्जिद के धर्मग्रन्थ और स्त्रियों को किसी प्रकार हानि न पहुंचावें। जब कभी उनको पवित्र कुरान की कोई प्रति मिली, उन्होंने उसे सम्मानपूर्वक रखा और उसे अपने मुसलमान अनुयायियों को दे दिया।'

एक बार शिवाजी ने एक दान पत्र पर सारा राज्य अपने गुरु रामदास जी को भेंट कर दिया। गुरु ने कहा तुम्हीं राज्य की सेवा करते रहो। तू ही प्रजाजन बन कर राज्य सम्भाल और देखना। यह राज्य तुम्हारे लिए नहीं है जनता के लिए है। तुम निष्काम कर्म करो। सचमुच राजा का कार्य बड़े जोखिम का है। राजा और मन्त्री को मिलकर कार्य करना चाहिए। राजनीति और धर्मनीति एक ही बात है। सब लोगों को राजी रखना भले-बुरे की खूब जांच करना नीति का त्याग न करना, लालच में कभी न फंसना, सदा सावधान रहना, ऐसा करोगे तो सफल रहोगे।

6 जून 1674 ई० को शिवाजी का छत्रपति शिवाजी के रूप में रायगढ़ के दुर्ग में बड़ी धूम-धाम के साथ राज्याभिषेक हुआ। इस समय शिवाजी की वय से साथ-साथ माता जीजाबाई की धूम का अन्त मेरी बात की पूर्ण रक्षा। इस प्रकार यह वीर देशभक्त असीम वीरता तथा अदम्य साहस पूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ सन् 1980 ई० में 53 वर्ष की आयु में रायगढ़ स्थान पर स्वर्ग सिधार गया। आप भी शिवाजी के समान वीर तथा देशभक्त बनें और अपनी मातृ भूमि की रक्षा के लिए इस विकट घड़ी में स्वयं को न्योछावर करने के लिए आगे आयें।

आर्य समाज, नया नंगल का वार्षिक उत्सव

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज नया नंगल का 30वां वार्षिक उत्सव 1 अक्तूबर से 7 अक्तूबर तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री सत्य प्रिय जी सत्य प्रिय जी शास्त्री एम० ए० आचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा), स्वामी सुमेधा नन्द जी, दयानन्द मठ (चम्बा), श्री कृष्ण लाल जी आर्य पूर्व प्रधान हिमाचल प्रतिनिधि सभा, तथा भजनोपदेशक पं० हरीश चन्द्र जी (गुडगर नगर) अपने आत्मवर्धक उपदेशों और मनोहर भजनों से आप सब को आनन्दित करने के लिए पधार रहे हैं।

आपसे प्रार्थना है कि आप सपरिवार पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाएं और वेद ज्ञान का पूरा-पूरा लाभ उठाएं। कार्यक्रम प्रातः 7-30 बजे से 9 बजे तक और शाम 6 बजे से 7-30 बजे तक और रविवार को प्रातः 8 बजे से 1-25 बजे तक कार्यक्रम होगा।

—सुभाष चन्द्र खजूरिया—मन्त्री

आज का ज्वलन्त प्रश्न:

क्या राजनीति का हिन्दू करण सम्भव है ?

ले० डा० श्री भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

जिसमें मूल्यवान रत्न हैं तो शंख, घोंघे और कीचड़ भी है। किन्तु दयानन्द के "धर्म" की अवधारणा इससे नितान्त भिन्न है। आर्य और आर्यत्व तो नितान्त उदात्त, महनीय एवं प्रकृतिशील जीवनमूल्यों का ही पर्याय है जो संकीर्णता, रूढ़िवाद और अन्धविश्वासों से कभी भी समझौता नहीं करता तथा जो "गंगा गये गंगादास जमना गये जमनादास" की कांग्रेसी संस्कृति से भी अपने को पृथक् रखता है।

अन्तत: सम्पादकीय के लेखक को भी उसी बिन्दु पर आना पड़ा जिसका प्रतिपादन करना हमारे इस लेख का लक्ष्य है। अब वे हिन्दुत्व के उसी रूप का समर्थन करने के लिए विवश हो जाते हैं जो आदिकाल से वैदिक विचारधारा के रूप में इस देश में अनवरत प्रवाहित हो रही है। किन्तु मैं नम्रता पूर्वक पूछना चाहता हूं कि क्या सर्व श्री सावरकर, हेडगेवार, गोलवालकर और देवरस की विचारधारा भी हिन्दुत्व को वैदिक धारा तक ही परिसीमित देखना चाहती है। मैं दृढ़ता से कहना चाहता हूं नहीं। उपर्युक्त महानुभावों का हिन्दुत्व तो गंगा के उस प्रदूषित प्रवाह को भी भागीरथी और मन्दाकिनी ही कहना चाहता है जो ऋषिकेश से आगे जाकर अपनी उत्तराखण्ड की पवित्रता और निर्मलता को खोकर गंदे नाले से भी अधिक दोषावह बन गया है।

इस लेख की अवशिष्ट बातों पर कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं है क्योंकि वर्तमान शासकों की बहुमत तथा अल्पमत को विभाजित कर दोनों को उल्लू बनाने की नीति का कोई भी विचारशील व्यक्ति समर्थन नहीं करेगा। धार्मिक अल्पसंख्यक अपने आप में अत्यन्त भ्रामक शब्द है। भारत के 11 करोड़ मुसलमानों को मात्र उपासना प्रणाली की भिन्नता के कारण ही अल्पसंख्यक कहना और उन्हें समाज राजनीति तथा अर्थ के क्षेत्र में रियायतें देना नितान्त ही अनुचित एवं अन्याय-पूर्ण है। यदि केवल उपासना-प्रणाली की भिन्नता के कारण ही मुसलमानों को अल्पसंख्यक कहा जाता है तो हिन्दू समाज में तो धार्मिक अल्पसंख्यकों की एक बड़ी भीड़ मिलेगी। इस प्रकार तो सारा बहुसंख्यक (हिन्दू) समाज ही धार्मिक अल्पसंख्यकों में शतधा विभक्त हो जायेगा क्योंकि वहां शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन, कबीरपन्थी, राधास्वामी, आदि सैंकड़ों उपासना भेद पर आधारित फिरके पहले से ही मौजूद हैं। फिर अल्पसंख्यकों के हितों का राग गाने वाली वर्तमान सरकार हिन्दुओं में विद्यमान इन धार्मिक अल्पसंख्यकों के आर्थिक और राजनैतिक हितों की रक्षा क्यों नहीं करती ?

भारत की राजनीति का हिन्दूकरण तब सम्भव होता यदि देश विभाजन के समय इस देश के नेता यह मान लेते कि भारत का बंटवारा हिन्दू और मुसलमानों के पूर्ण पार्थक्य की भावना पर आधारित है। उन्होंने यह तो माना कि उस समय के अधिकांश मुसलमान भारत में न रह कर अपना पृथक् देश बनाना चाहते थे किन्तु साथ ही उन्होंने यह भी स्वीकारा कि बचे खुचे भारत के रहने वाले हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि सभी नागरिक धर्म निरपेक्ष भारत का निर्माण करने के ही पक्ष में हैं और वे किसी भी प्रकार की धर्माधारित शासन व्यवस्था को स्वीकार करना नहीं चाहते। उनका यह सोच तो ठीक ही था, किन्तु कालान्तर में अपनी सत्ता को अनन्त काल तक बरकरार रखने के लिए उन्होंने बहुसंख्यकों को बेचारी गाय मान कर उपेक्षा करने तथा अल्प संख्यकों को खुश कर उनके वोट बटोरने की नीति अपनाई। अल्प संख्यकों का यह तुष्टिकरण शासकों के लिए भी भस्मासुर ही सिद्ध हुआ। ज्यों ज्यों उनको रियायतें दी जातीं, उनकी मांगें और भी बढ़तीं और अब तो स्थिति यह आ गई है कि संविधान में निर्दिष्ट धर्म-निरपेक्षता का अर्थ ही बहुसंख्यक समाज की उपेक्षा और अल्पसंख्यकों की खुशामद करना रह गया है। यहां पर ध्यातव्य है कि कांग्रेसी तथा जनता दल के शब्द कोश में अल्पसंख्यक का अर्थ अकेला मुसलमान ही होता है। हिन्दू, सिख, ईसाई या पारसी नहीं। तभी तो उसे उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्य की चिन्ता तो है और वहां का भूतपूर्व ब्राह्मण मुख्यमन्त्री उन्हें खुश करने के लिए उर्दू और अरबी के प्रचार के लिए लाखों रुपये देता है हज की यात्रा पर जाने वाले मुसलमानों पर करोड़ों रुपये व्यय करता है और हिन्दू तीर्थ यात्री यदि पाकिस्तान स्थित किसी हिन्दू धर्मस्थान की यात्रा पर जाने की बात करें तो उन्हें सुविधा नहीं मिलती। इस शासन को काश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दुओं के धर्म, संस्कृति और उपासना स्थलों की सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं है।

परन्तु उपाय भी क्या है ? आज यदि संसार में इस्लामी देशों का संगठन बना है और इस्लामी राजनीति ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम देशों में धर्मान्धता और कट्टर-वाद को बढ़ावा दे रही है तो इसका स्पष्ट कारण भी है। आज यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों में मुस्लिम देशों की संख्या पर्याप्त है और इस्लाम के नाम पर वे यदा कदा अपनी एकता का प्रदर्शन करते ही हैं। कहने को तो हम यह भी कह सकते हैं कभी इन देशों के धर्मान्ध नेताओं का कट्टरपन्थी नीतियों के कारण ये मुस्लिम देश आपस में भी लड़ पड़ते हैं और अपने ही दीन वालों का रक्त बहाने में भी उन्हें संकोच नहीं होता। ईरान और ईराक की एक दशाब्द तक चलती रही लड़ाई इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। अब भारत को तो विश्व राजनीतिक के व्यापक परिप्रेक्ष्य में इन अरब मुस्लिम राष्ट्रों से दोस्ती रखनी ही पड़ती है। तभी तो वह दिन में दस बार इजराइल को कोसता है और फिलस्तीनियों की हिमायत की कसमें खाता है। आज यदि दुनिया में भारत के अतिरिक्त और भी कई सबल हिन्दू बहुल देश होते तो शायद ही भारत के शासक यहां के बहुसंख्यकों की उपेक्षा और तिरस्कार करने की जुर्रत करते। ले दे कर अकेला पड़ोसी देश नेपाल ही तथा कथित हिन्दू राष्ट्र है किन्तु उसमें भी प्रजातन्त्र की जड़ें कभी जम ही नहीं सकीं। यदि वह राणाशाही के कुएं से निकला तो राजशाही की खाई में गिर पड़ा। इधर हमारे विगत शासन भी इस पड़ोसी से विशेष सौहार्द पैदा नहीं कर सके। नेपाल से ही क्या भारत की तो किसी भी पड़ोसी देश से बहुत काल तक पटरी बैठती ही नहीं, चाहे वह पाकिस्तान हो, या श्रीलंका, नेपाल या बंगला देश।

निष्कर्षत: भारत को राजनीति के हिन्दूकरण की सम्भावना तभी बनती जब दुनिया के पचीसों मुस्लिम देशों की भांति इस भूमण्डल पर 10-20 हिन्दू बहुल देश भी होते और इन हिन्दू देशों की राजनीति परस्पर एक दूसरे को प्रभावित कर संसार में हिन्दू राजनीति का कोई आधार बनाती। किन्तु आज की परिस्थितियों में यह सब आकाश कुसुम ही है।

और सर्वोपरि बात तो यह है कि भारत की राजनीति का हिन्दूकरण होना बहुत दूर की बात है। हिन्दू तो अपनी अस्मिता, स्वाभिमान और आत्म गौरव को इतना भूल बैठा है कि चाहे दूरदर्शन हो या अखबार, सिनेमा हो या नाटक, कविता हो या कहानी। अभिव्यक्ति की कोई प्रणाली या जन संचार का कोई माध्यम उसके देवी देवताओं, पूज्यपुरुषों, धर्म ग्रन्थों का भी अपमान करे तो उसे कोई ग्लानि नहीं होती, कोई दर्द नही होता। तभी तो हमारे चित्र-पट निर्माता कभी कलियुग की रामायण बनाते हैं तो कभी महर्षि नारद को लेकर हास्य चित्र बनाये जाते हैं। अपने पूज्य पुरुषों, ग्रंथों तथा परम्पराओं का उपहास करने में जब खुद हिन्दू ही आगे रहता है तो उसके लिए सलमान रश्दी की आवश्यकता ही क्या है ? सचाई यह है कि दयानन्द की विचारधारा को स्वीकार किये बिना हिन्दू का न तो कल्याण ही सम्भव है और न त्राण ही। यहां यह भी लिख दू कि महर्षि दयानन्द ने चाहे हिन्दू शब्द से अपनी विरक्ति ही प्रकट की किन्तु वे हिन्दुओं के तो हितैषी ही थे। वे हिन्दू की बेचारगी को दूर करना चाहते थे। इस देश के बहुसंख्यक हिन्दू का सुधार ही उन्हें इष्ट था और इसे सच्चा आर्य बना कर उसी के द्वारा वे समग्र मानव जाति के उत्थान का सुन्दर सपना अपने मन में सजोये बैठे थे। अन्तत:, दयानन्द चाहे स्वयं आर्य थे, किन्तु वे तो एक हिन्दू पिता के ही पुत्र। फिर भला उन्हें हिन्दू जाति कि उत्थान की चिन्ता क्यो नहीं होती। हमारा तो सुदृढ़ विश्वास है कि भारत-वासी आर्य (हिन्दू) की उन्नति और प्रगति दयानन्द दर्शित मार्ग पर चलने से ही होगी। नान्य: पन्था विद्यते अनाय।

वेद और वैदिक धर्म

लेखक—श्री देवी दयाल शर्मा 'शर्मा निवास' 120 माडल टाऊन अमृतसर।

(गताक से आगे)

"हिन्दुत्व" तो स्वामी श्रद्धानन्द के शब्दों मे है ही ऐसा 'चू चू का मुरब्बा' जिसमे पुरी के निरजनदेव जैसे सकीर्ण, कट्टरपथी, सामाजिक सदाचारो के समर्थक मठाधीश भी आयेंगे और मालवीय जी जैसे उदार सनातनधर्मी भी। क्योंकि इस तथाकथित हिन्दूधर्म की खूबी भी यही है, और इसका ढोल बजा कर विवेकानन्द पन्थी खूब विज्ञापन भी करते हैं कि हिन्दुत्व तो एक महासागर है।

धृति धीरज रखना। आपत्ति आने पर बिल्कुल नहीं घबराना, बल्कि उस का वीरता से मुकाबला करना। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जीवन आपत्तियो से ओत प्रोत था परन्तु वह कभी भी निरोत्साह नही हुए और हसते हसते आपत्तियो को सहन किया। सफलता हर कार्य क्षेत्र मे उनका चरण चुम्बन करने लगी। क्षमा—सहनशीलता जब किसी ने कोई मामूली अपराध किया हो तो हमारे अन्दर सहनशीलता होनी चाहिये कि हम उस अपराधी को क्षमा दान दें न कि बदले की भावना से उसको कड़ा दण्ड दें।

दम—मन को वश मे करना, मन की चचलता को दूर करना, इस चलित चित्र को अचल अविचल बनाने का पुरुषार्थ करना।

अस्तेय—मन वचन कहीं से चोरी न करना।

महात्मा गाधी जी ने भी कहा है कि जिसने मन वचन और कर्म से अस्तेयता को अपना लिया है उसकी कोई वस्तु कोई भी चुरा नहीं सकता।

शौच—भीतर और बाहर की शुद्धता—

इन्द्रिय निग्रह=इन्द्रयो को वश मे रखना अर्थात ब्रह्मचर्य का मन वचन और कर्म से पालन करना।

धी—बुद्धि। हमारा खान पान सात्विक होना चाहिए तभी हम सात्विक बुद्धि को प्राप्त कर सकते हैं और इसके द्वारा हम शुभ कर्मों का अनुष्ठान कर सकते हैं। यदि बुद्धि सात्विक नहीं है तो हमे पूर्णरूप से सफलता प्राप्त नहीं होगी। मनु महाराज ने ठीक ही कहा है बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।

विद्या—ज्ञान। दो प्रकार का भौतिक ज्ञान और अभौतिक ज्ञान लौकिक और पारलौकिक ज्ञान। Scientific knowledge and Metaphysical knowledge

सत्य—जो पदार्थ जैसा है उसको ठीक-ठीक जानना वैसा मानना और कहना।

अक्रोध—क्रोध न करना, मन वचन और कर्म से किसी को दुख न देना अर्थात् अहिंसा का पूर्णरूप से जीवन में अभ्यास करना।

महर्षि दयानन्द जीवन पर्यन्त वेद और वैदिक धर्म का ही प्रचार करते रहे। लोगों को अन्धकार से छुड़ा करके प्रकाश मे लाए। कितना बड़ा भारी उपकार कर गये उसका कोई अनुमान लगा सकता फर्रुखाबाद (उ प्र) मे किसी मरे हुए साधु की यादगार मे लोगो ने एक मन्दिर बनवाया और मूर्ती पूजा आरम्भ कर दी। मन्दिर की हालत काफी खराब खस्ता हो गई थी। स्वामी जी के कुछ अनुयायी उनके पास आए और कहा कि आप तो कई सरकारी अफसरों को जानते हैं उनको कहकर इस मन्दिर को तुड़वा दिया जाए। स्वामी जी महाराज ने उनको बड़ा मार्मिक उत्तर दिया। "कहा मैं इस ससार मे मन्दिर, मस्जिद, गिरजा घर तुड़वाने नही आया हू कोई काम जो अन्याय रूप से किया जाए वह अधर्म है मुसलमान बादशाही ने अपने बल के जोर से हिन्दू जाति के कई मन्दिर तोड डाले परन्तु मूर्ति पूजा को समाप्त करने मे सफल न हुए। मेरा काम तो ईंट चूने गारे से बने हुए मन्दिरो को तुड़वाने का नही परन्तु जो लोगों के मनों अन्दर मूर्ति पूजा के मन्दिर बने हुए हैं उनको तोड़ना है ताकि वह भोले भाले लोग वैदिक धर्म के झडे के नीचे आकर इस लोक की उन्नति और परलोक की सिद्धि को प्राप्त कर सके"

दक्षिण की जीत, उत्तर की बारी !

ले०—श्री देव नारायण जी भारद्वाज, रामघाट मार्ग, अलीगढ़

आर्य करो स्वीकार बधाई, दक्षिण की जीत तुम्हारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है॥

दक्षिण का यह धर्म युद्ध, फिर उत्तर में गहराया है।
दुश्मन के साथ मिल गया जो वह अपनी ही मा का जाया है॥
काश्मीर सिरमौर यहा, दुश्मन ने शोर मचाया है।
मा का रक्षक ध्वान रहा, उसको किस ने तड़पाया है।
है अरियन से सधि मिताई, माता की ममता मारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है॥

पूजा पाठ, धर्म, देवालय, जिन सस्कृति पर अतिक्रमण हुआ।
अत्याचार और उत्पीडन बलपूर्वक धर्मान्तरण—हुआ।
मिल गए यवन ईसाई थे, था वेद भानु का ग्रहण हुआ।
दक्षिण में ओज जगाने को था उत्तर से समरण हुआ।
अब उत्तर में हुई चढ़ाई, दक्षिण मे हुई खुमारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है॥

अरबो वर्षों का सृष्टिकाल, आधा वेदो से शासित है।
कुछ अन्धों को तो पता नहीं' जो आधा शेष प्रभासित है।
सब ऋषियो, मुनियो, गुरुओ से, यह सृष्टि वेद सम्भाषित है।
हममे से ही गुरु हुए सभी, हमसे ही शिष्य प्रकाशित है।
वेदो की रक्षा अगुआई, गुरुओ की ही बलिहारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है॥

निज शिशुओ का बलिदान किया, गुरुओ ने शीश चढ़ाया है।
क्यो नहीं समझते हो शिष्यो सम्प्रदाय भिन्न क्यों आया है।
तुमको भी मेटा घाटी मे, घर से भी मार भगाया है।
यह वही पड़ोसी पाखण्डी, तुमको जिसने भड़काया है।
गुरु प्रथा नहीं क्यों अपनायी, क्या आज हुई लाचारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है।

जो भारत मा को मा कहता, बस वही हमारा भाई है।
जो भिन्न आस्था रखता है, वह घोर घृणित सौदाई है।
माता की भुजा कटा करके, दुश्मन की ध्वजा उठाई है।
माता को मुर्दाबाद कहा, विधि पुस्तक फाड जलाई है।
जग उठी राम की तरुणाई, जो रावण को भयकारी है।
फिर उठो आर्य लो अंगड़ाई, आई उत्तर की बारी है।

आर्य नगर के वार्षिकोत्सव का शानदार समापन समारोह

आर्य समाज वेद मन्दिर, आर्य नगर का वार्षिकोत्सव 6-9-90 से 9 9 90 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। भारी वर्षा के बावजूद आर्य जनता ने बड़े उत्साह के साथ इसमे भाग लिया। प० धर्मदेव जी कार्याल्याध्यक्ष व श्री जगत राम वर्मा जी ने अपने प्रवचनो तथा भजनों से आर्य जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। रविवार दिनाक 9-9 90 को समारोह का आरम्भ हवन यज्ञ से हुआ। इस महा यज्ञ में मुख्य यजमान श्री जयदेव तथा श्री कुलदीप मगो सहित सैंकड़ो नर नारियो ने बड़ी श्रद्धापूर्वक भाग लिया। 10 बजे स्त्री सभा भार्गवनगर द्वारा भजन गाए गए। वर्षा का प्रकोप अभी तक जारी था। लेकिन आर्यों की श्रद्धा और उत्साह के सामने आखिर वर्षा को भी थमना पड़ा और शेष कार्यवाही बड़े सुचारु ढग से सम्पन्न हुई। बाद मे प० श्री धर्म देव जी का बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ। विशेष समारोह श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ।

सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी ने बड़ा ही प्रभाव पूर्ण भाषण दिया और सभी आर्य समाजियों को एक साथ मिलकर ऋषि स्वप्न को पूरा करने का आह्वान किया। तालियों के बीच उन्होंने आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर के निर्माण कार्य के लिए सभा की ओर से पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। श्री दविन्द्र जीत सिंह वर्मा प्रधान कांग्रेस कमेटी (एस) जालन्धर विशेष रूप से इस उत्सव मे सम्मिलित हुए और उन्होंने समाज सेवक के रूप में प्रत्येक वर्ष ऋषि लगर का पूरा खर्चा स्वय वहन करने का प्रस्ताव किया। मन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर' ने धर्म प्रेमी जनता से मन्दिर की इमारत के निर्माण के लिए दिल खोल कर दान देने की अपील की। श्री हरबस लाल शर्मा प्रधान केन्द्रीय सभा जालन्धर उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (पजाब) सर्व श्री कर्मचन्द शास्त्री, प्रिन्सिपल हर्ष अरोड़ा, जयदेव, रामलुभाया नन्दा मनोहर लाल ओबरा, प० अमरनाथ इत्यादि महानु भावों ने अपने अपने विचार तथा भजन जनता के सामने रखे।

सम्मानित समारोह—प्रधान श्री सतपाल जी ने दानवीर तथा आर्यश्रेष्ठ श्री हरबस लाल जी शर्मा तथा श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न को उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया। उपप्रधान श्री अमरनाथ मागो द्वारा सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात श्री हरबस लाल जी श्री सरदारी लाल जी तथा श्री अश्विनी कुमार जी ने कर्मठ तथा उद्यमी आर्य कार्य कर्ताओं को सम्मानित किया जिनमे सर्वश्री अनन्त राम, प० हरि चन्द, कर्म चन्द शास्त्री, जयदेव, जगन्नाथ दास, पं० मनोहर लाल, श्रीमति कान्ता देवी, कु० सरोज, तिलक राज आर्य तथा अन्य आर्य नवयुवक शामिल हैं। इन आर्य कार्य कर्ताओं तथा नव युवकों से आशा की गई कि वे आगे चलकर इसी प्रकार आर्य समाज के लिए पूरी लग्न से कार्य करते रहेंगे तथा सगठन को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न करेंगे।

श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी तथा महामन्त्री के अनुरोध पर श्री हरबस लाल शर्मा जी ने ध्वजारोहण का सम्मान प्राप्त किया 2-30 बजे ऋषि लगर का आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ों नर नारियों ने भोजन किया।

आर्यसमाज के तीसरे नियम में प्रयुक्त 'सब' पद की प्रमाणिकता

आर्य समाज का तीसरा नियम है "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म हैं।' हमारे एक स्वाध्यायशील मित्र ने हमें सूचित किया कि इस नियम में सत्यविद्याओं से पूर्व प्रयुक्त 'सब' पद के प्रक्षिप्त होने के सबध मे उन्हें कुछ प्रमाण मिले हैं। वह आगे अध्ययन कर रहे हैं। उन्हें आशा है कि निकट भविष्य में वह इस पद की प्रक्षिप्तता पर और प्रमाण प्राप्त कर लेंमे।

इस विषय पर हमारा अध्ययन किंचित नहीं था, अत: इसके पक्ष अथवा विपक्ष में कुछ नहीं कह सके। समय-समय पर उक्त मित्र से वार्तालाप होता रहा एव इस पद के प्रक्षिप्त होने के विषय मे वह अपने अनुकूल विचारों से अवगत कराते रहे। कुछ समय पूर्व हमने रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन का अध्ययन आरम्भ किया। इस अध्ययन के बीच हमें महर्षि दयानन्द जी का एक पत्र दृष्टिगोचर हुआ जिससे तीसरे नियम मे प्रयुक्त 'सब' पद के प्रक्षिप्त होने पर प्रकाश पडता है। स्वाध्यायशील पाठको एव आर्यबन्धुओं के लिए उपयोगी समझकर इसका उल्लेख कर रहे हैं।

यह पत्र महर्षि ने दानापुर के बाबू माधो लाल जी को दिनांक 1 अप्रैल, 1878 को लिखा था जिसे पत्र और विज्ञापन मे पूर्ण संख्या 92 पर मुद्रित किया गया है। इस पत्र में महर्षि लिखते हैं "...केवल इसी देश से विद्या और सुख सारे भूगोल में फैला है, क्योंकि वेद ईश्वर की सब सत्य विद्याओं से पूर्व प्रयुक्त 'सब' पद एवं इस पत्र पर महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो के प्रसिद्ध गवेषक, अनुसंधानकर्ता विद्वान पं० युधिष्ठर मीमांसक की पाद टिप्पणी से इसके प्रक्षिप्त होने के भ्रम का निवारण हो जाता है। पाद टिप्पणी में प० जी ने लिखा है .." कई लोग आर्य समाज के तीसरे नियम "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" इसमे 'सब' पद को प्रक्षिप्त मानते हैं, वे वे वस्तुत: भ्रान्त हैं। यह इस वाक्य से, तथा पूर्ण सख्या 106 (प्रारम्भिक सदर्भ) के 'सर्व सत्यविद्याकोशेषु वेदेषु' वाक्य स्पष्ट है। अत: तृतीय नियम मे उल्लेखित 'सब' पद ऋषि दयानन्द का ही रखा हुआ है, यह निश्चित है।

ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' एक अनुपम ग्रन्थ है। इसके स्वाध्याय से महर्षि द्वारा लिखे ग्रन्थो मे उल्लेखित कई स्थलों का स्पष्टीकरण होता है। जिन आर्य-स्वाध्यशील बन्धुओं ने इसे न पढ़ा हो उन्हें इसका स्वाध्याय करने का परामर्श है।

—श्री मनमोहन कुमार

डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति वैदिक व्याख्यान

—डा० प्रशान्त वेदालंकार 7/2 नगर रूप दिल्ली

दिल्ली। यहां आर्य समाज हनुमान रोड में स्व० डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से वैदिक संगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि भारत सरकार में संस्कृत के विशेषाधिकारी, दरभंगा व सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति डा० रामकरण शर्मा थे। उन्होंने अपने सारगर्भित भाषण मे भी वैदिक साहित्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य मे कहीं ऊच नीच की भावना नही है। रामायण और महाभारत के अनेक छोटी कही जाने वाली जातियो के पात्रों का नाम लेकर उन्होंने बताया कि उनका सम्मान किसी भी अन्य पात्र से कम नही था। भारतीय प्रजा ज्ञान के विविध क्षेत्रो मे अपनी चरम सीमा पर थी।

डा० शर्मा ने कहा कि आज देश भर के विश्वविद्यालयो मे संस्कृत के पाठ्यक्रमों मे एक समता होनी चाहिए तथा उसमें वेद को अनिवार्य विषय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस सगोष्ठी के मुख्यवक्ता पंजाब विश्वविद्यालय की महर्षि दयानन्द पीठ के आचार्य एवं अध्यक्ष आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् डा० भवानी लाल भारतीय थे। आपने वैदिक ज्ञान के विस्तार मे आर्य समाज के योगदान विषय पर अपना शोधपूर्ण लेख पढा। महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियो ने वेद व वैदिक साहित्य के पठन-पाठन में नयी वैज्ञानिक दृष्टि देकर तथा लेखन के क्षेत्र मे अभूतपूर्व कार्य किया। आज भी अनेक विद्वान् व आर्य सस्थाए वैदिक साहित्य के पठन-पाठन मे लगी हुई हैं।

सगोष्ठी की अध्यक्षता गुरुकुल कागड़ी के सुयोग्य स्नातक व वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् श्री मनोहर विद्यालकार ने की उन्होंने कहा कि जहां आर्य समाज का वैदिक ज्ञान के क्षेत्र मे शोध पूर्ण कार्य है वहा रेशम मे लपेट कर रखे वेदों को जन सामान्य के हाथों में पहुंचाने में भी आर्य समाज की भूमिका उल्लेखनीय है। उन्होने डाक्टर के लिए पण्डित प्रवर शब्द का प्रयोग करने की प्रेरणा थी दी।

संगोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए डा० प्रशान्त वेदालकार ने बताया कि किस प्रकार अपने पिता स्वतन्त्रता सेनानी व गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य अध्यापक स्व० प० वासुदेव जी विद्यालकार की प्रेरणा से डा० प्रह्लाद तथा उसका सारा परिवार वैदिक ज्ञान के सवर्द्धन में लगा हुआ है। डा० प्रह्लाद की 32 वर्षों की अल्पायु में आकस्मिक मृत्यु के उपरान्त वैदिक संगोष्ठी के रूप मे उनका स्मृति पर्व मानकर हम उसको यह मनाकर श्रद्धांजलि देते हैं, मानो उन्ही के सुनिश्चित कार्य को ही हम आगे बढा रहे हैं।

सगोष्ठी के सयोजक दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष तथा डा० प्रह्लादकुमार की अप्रकाशित सामग्री का प्रकाशन भी होना है। उन्होंने अब तक छात्रवृति प्रदाता दानियो का परिचय देकर उपस्थित सज्जनों से इस कार्य में मुक्त हस्त से दान देने की प्रेरणा दी।

सगोष्ठी में प्रो० वेदव्रत, डा० देवेन्द्रकुमार, डा० केवल कृष्ण मित्तल, श्री कृष्ण सेमवाल, डा० शिवकुमार शास्त्री तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापक, प्राध्यापिकाए एवं शोध छात्र उपस्थित थे।

अन्त मे आर्य समाज हनुमान रोड के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने कहा कि आर्य समाज मे वैदिक कार्य को बढ़ाने की दृष्टि से इस प्रकार की वैदिक सगोष्ठियो का विशेष महत्त्व है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ स्थापित करने की प्रेरणा दी।

उन्होंने सगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों को धन्यवाद दिया।

संस्कृत की उपेक्षा क्यों?

सरकार द्वारा सस्कृत की घोर उपेक्षा की जा रही है। सस्कृत भारत की आत्मा है। भारतीय सस्कृति का आधार है। कम से कम 5000 वर्षों से निरन्तर सब प्रकार के साहित्य एवं विज्ञान की समस्त विधाएं सस्कृत माध्यम से ही पुष्पित पल्लवित होती रहीं। भारत की समस्त भाषाएं संस्कृत से जीवन रस प्राप्त करती रहीं। दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी देश संस्कृत की शब्दावली से ही अपनी भाषाओं को सजाते संवारते रहे हैं। 19वीं शताब्दी में यूरोप की भाषाओं में नवीन क्रान्ति का सचार सस्कृत से ही हुआ। इसीलिए तो 150 वर्षों से यूरोप के विद्वान एशिया के देशों में संस्कृत के व्यापक प्रभाव की खोज में लगे हुए हैं। उन्हीं की खोजों के कारण ही तो भारतीय विद्वानों को भी पता चला कि चीन का सम्पूर्ण साहित्य संस्कृत ग्रन्थों के अनुवादों पर ही आधृत है। मंगोल, तिब्बत में सस्कृत की पूजा है। जापान, कोरिया मे सस्कृत मत्रो से आराधना की जाती है और कोरिया जापान में लिपिया भी सस्कृत के अधार पर ही निर्मित की गई है। यूरोपीय विद्वानों ने ही तो 13000 से अधिक सस्कृत शिलालेख केवल कम्बुज देश (कम्पूचिया) में खोजे जहां 800 वर्ष संस्कृत राजभाषा रही। उन्होंने तो थाई देश और इन्डोनीशिया के जन-जन में व्याप्त संस्कृत पर बृहत्काय ग्रन्थ लिखें। श्री खोन्डा द्वारा सस्कृत इन इण्डोनेशिया। संस्कृत से ही भारत का गौरव बढ़ा। सस्कृत मे रचे ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए ससार भर के देशों से विद्वान् नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों मे आ कर पढ़ा करते थे, जिनके यात्रा वृतान्त भी अब इतिहास का आधार बन गए हैं।

ससार भर को सुसस्कृत करने वाली सस्कृत, विश्व भर को विश्व कल्याण की ओर उन्मुख करने वाली सस्कृत, मानव सस्कृत के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करने वाली सस्कृत आज भारत में ही, भारतीय शासन द्वारा ही तिरोहित की जा रही है, मारी जा रही है।

समय आ गया है कि राष्ट्र की गरिमा को आघात पहुंचाने वाली तथा देश के मूलधार पर ही चोट करने वाली नीतियो के विरुद्ध हम आवाज उठाएं। भारत मां की इस विपदा के समय हम अपना कर्त्तव्य समझें। राष्ट्र की अखण्डता और भारतीय सस्कृति की रक्षा के लिए प्राण-पण से जुट जायें। कहीं ऐसा न हो कि एक नागालैंड या बोडोलैंड ही नहीं दर्जनों ऐसे लैंडों मे बटकर भारत खण्ड-खण्ड हो जाए।

हिन्दू गौरव प्रतिष्ठान
डा० कैलाश चन्द्र
सी—285, प्रशान्त विहार
दिल्ली—85.

आर्य समाज जालंधर छावनी का चुनाव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव गत दिनों निम्न प्रकार हुआ—

1. प्रधान—श्री जनक राज जी महाजन।

2. उप-प्रधान—श्री कृष्ण लाल जी गुप्ता, श्री चमन लाल जी नन्दा।

3. मन्त्री—श्री काशी राम जी अग्रवाल।

4. उप-मन्त्री—श्री स्वदेश कुमार लाला।

5. कोषाध्यक्ष—श्री जवाहरलाल महाजन।

6. पुस्तकाध्यक्ष—श्री राम चन्द्र जी।

7. अधिष्ठाता आर्य वीरदल—श्री चन्द्र गुप्ता।

8. लेखा निरीक्षक—श्री बलदेव राज शर्मा।

9. अन्तरग सदस्य—सर्वश्रीमदन-लाल अग्रवाल, श्री रमेश चन्द्र, श्री धर्मेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री गणपत राय साहनी, श्री अयोध्या प्रसाद।

आर्य समाज फाजिल्का में त्रिमासिक वेद प्रचार

फाजिल्का—आर्य समाज फाजिल्का के तत्वाधान में त्रिमासिक वेद प्रचार कार्यक्रम (अगस्त, सितम्बर और अक्तूबर के प्रथम सत्र (चरण) में दिनाक 13-8-90 से 24-8-90 तक स्वामी दयानन्द विदेह और स्वामी आत्मानन्द परिव्राजक और श्री सत्यपाल जी पथिक के उपदेश और भजन हुए। द्वितीय सत्र (चरण) में दिनांक 19-9-90 से 25-9-90 तक महात्मा आर्य भिक्षु और सुश्री स्वामी मीरा यति ज्वालापुर वाले। तृतीय सत्र (चरण) में दिनांक 15-10-90 से 21-10-90 तक स्वामी सत्यानन्द जी के उपदेश और पथिक जी के भजन होंगे।

प्रतिदिन प्रात: 7-00 से 9-00 बजे तक हवन यज्ञ और भजनोपदेश हुआ करेंगे।

प्रतिदिन नये यजमानों द्वारा हवन-यज्ञ सम्पन्न हुआ करेंगे।

मूलचन्द वर्मा
महामन्त्री

जालन्धर में वेद प्रचार

आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर मे 24 सितम्बर से 30 सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसके उपलक्ष्य मे प्रात: 6-30 से 8-00 तक चतुर्वेद शतक यज्ञ तथा श्री जगत वर्मा के भजन व पूर्णानन्द जी ब्रह्मचारी आर्यवानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के प्रवचन हुआ करेंगे। रात्रि को 8-00 से 9-30 तक भजन व प्रवचन होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 30 सितम्बर, 90 प्रात: 9-30 बजे डाली जाएगी तथा भजनों और प्रवचन का कार्य 11 बजे तक चलेगा।

—नरेश कुमार—मन्त्री

'सत्यार्थ रत्न' में प्रथम व तृतीय स्थान

गत् वर्षों की तरह परम्परा को स्थिर रखते हुए इस वर्ष श्री देव राज गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की 1989-1990 की 'सत्यार्थ रत्न' की परीक्षा मे 'चन्दमा शर्मा' 'प्रथम' व रेणु शर्मा तृतीय रही। 8 छात्राओं ने सत्यार्थ रत्न' में, 2 छात्रों ने 'सत्यार्थ भूषण' मे प्रथम दर्जा प्राप्त किया। प्रिंसीपल सन्तोष सूरी जी, व्यवस्थापिका श्रीमती आशा सेठा व श्रीमती प्रवीन सहगल के सहयोग से विद्यालय उन्नति की ओर अग्रसर है।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 31, कार्तिक 12 सम्वत् 2047 तदनुसार 25/28 अक्तूबर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे

वेद क्या, क्यों कैसे ?

ले०—श्री यशपाल आर्यबन्धु आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद—244032

ईश्वरीय ज्ञान वेद के सम्बन्ध में क्या, क्यों, कैसे ? आदि विभिन्न शंकाएं उठाकर उनका समाधान सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रस्तुत है।

प्र०—वेद से क्या तात्पर्य है ?

उ०—वेद से तात्पर्य उस ईश्वरीय ज्ञान से है, जो सृष्टि के प्रारम्भ में मानवमात्र के कल्याण के लिए ईश्वर की कृपा से दिया जाता है।

प्र०—वेद कितने हैं ?

उ०—ऋक्०, यजु०, साम और अथर्व ये चार संहिताएं ही वेद कहलाती हैं।

प्र०—ईश्वर ने वेद का ज्ञान क्यों दिया ?

उ०—ईश्वर ने वेद का ज्ञान जीवों के कल्याण के लिए दिया है। मनुष्य एक कर्मशील प्राणी है। कर्म के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिना ज्ञान के धर्म-अधर्म अथवा कर्तव्य अकर्तव्य का बोध मनुष्य को नहीं हो सकता। वेद के द्वारा ही मनुष्य विधि और निषेध का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है पर फल भोगने में परतन्त्र है। जब तक उसे विधि और निषेध का विधिवत् ज्ञान न करा दिया जावे, तब तक फल के लिए उसे उत्तरदायी भी नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए वेद ज्ञान का प्राप्त करना आवश्यक है। वेद ही मनुष्य को दुनिया में रहने का ढंग सिखाता है और वेद ही ईश्वर की प्राप्ति का उपाय भी बताता है।

प्र०—यदि ईश्वर वेद का ज्ञान न देता तो क्या होता ?

उ०—यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो सम्पूर्ण मानव समुदाय अज्ञानी और असभ्य रह जाता। यहां तक कि वह बोलना भी नहीं सीख पाता। ईश्वर ने केवल ज्ञान ही नहीं दिया, ज्ञान के साथ भाषा भी दी। उसी भाषा को सीखकर मानव ने बोलना सीखा। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—"अनन्त ज्ञान-सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढ़ाने के लिए और उसे ऊंचे दर्जे तक पहुंचाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है, जो वही प्रकाश वेद है।'

(पूना का पांचवां प्रवचन)

प्र०—यह कैसे जाने कि वेद ईश्वर का ही ज्ञान है, ऋषियों का नहीं ?

उ०—वेद ऋषियों का ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि वेद के प्रकाश से पूर्व वे ऋषि भी सर्वथा अज्ञानी ही थे वेद का ज्ञान दिए जाने से वे ज्ञानी बने। अत ऋषियो मे यह सामर्थ्य नहीं कि वेद जैसे ज्ञान की रचना कर सकें।

प्र०—परमेश्वर ने वेद का ज्ञान कैसे दिया ?

उ०—परमेश्वर ने वेद ज्ञान अपनी सर्वशक्तिमत्ता से अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियो के हृदय मे प्रकाशित किए।

प्र०—जब ईश्वर का मुख नही तो उसने यह ज्ञान कैसे दिया ?

उ०—ईश्वर को ऋषियों के अन्तरात्मा मे ज्ञान का प्रकाश करने के लिए मुख आदि की आवश्यकता नही पड़ती। क्योंकि मुख की आवश्यकता अपने से बाहर वाले को सुनाने के लिए होती है। अपने मन में बात करते हुए हमें भी मुखादि की आवश्यकता जैसे नहीं पड़ती, ऐसे ही ईश्वर को भी मुखादि की आवश्यकता नही पड़ती।

प्र०—ईश्वर ने इन्हीं चार ऋषियों को वेद का ज्ञान क्यो दिया, अन्यों को क्यो नहीं ? क्या इससे ईश्वर मे पक्षपात की गन्ध नहीं आती ?

उ०—यही चार ऋषि सब से अधिक पवित्रात्मा थे इसलिए इन्हीं को पात्र समझ कर उन्हें वेद का ज्ञान दिया, अत इसमें पक्षपात की कोई बात नहीं।

प्र०—जब वे ऋषिगण भाषा जानते ही नही थे तो उन्हें वेदो के अर्थ कैसे ज्ञात हुए ?

उ०—ईश्वर ने ही उन्हे अर्थ भी बताये।

प्र०—क्या ब्राह्मण ग्रन्थ तथा उपनिषदे आदि ईश्वरीय ज्ञान नही।

उ०—नही। ये ऋषियो की रचनाए हैं ईश्वरीय रचना नही। वेद तो अपौरुषेय ज्ञान को कहते हैं।

प्र०—अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान की पहचान क्या है ?

उ०—अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान की सब से पहली पहचान यह है कि वह सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया जाता है। वह ज्ञान सर्वथा निर्भ्रान्त और सृष्टि क्रम के अनुकूल होता है। उसमे लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं होता। वह ज्ञान सर्वथा पक्षपात शून्य होता है। अर्थात् वह किसी जाति विशेष, देश विदेश अथवा काल विशेष के लिए नही होता, अपितु सार्वजनिक, सार्वभौम तथा सार्वकालिक होता है। उसमे कोई भी बात युक्ति और तर्क एव विज्ञान के विपरीत नही है। उसमे मानव के अभ्युदय एव नि श्रेयस की सम्पूर्ण योजना निहित है। उस मे ईश्वर का वर्णन उसके गुण, कर्म और स्वभाव के विपरीत नही है। वह ज्ञान अपने आप में पूर्ण हो, ताकि किसी पूरक ज्ञान की आवश्यकता न रहे।

प्र०—क्या परमेश्वर का ज्ञान इतना ही है ?

उ०—नहीं। परमेश्वर का ज्ञान अनन्त है।

प्र०—फिर इतना ही ज्ञान क्यो दिया ?

उ०—मनुष्यों के लिए जितना आवश्यक था, उतना ही दिया। दूसरे मनुष्यो को ज्ञान के ग्रहण करने का सामर्थ्य भी इतना ही था।

प्र०—ईश्वर ने सब विद्याओं का मूल ही क्यों दिया ?

उ०—इस लिए कि मानव की बुद्धि का विकास हो सके और वह परिश्रम कर के उस का विस्तार कर सके।

प्र०—वेद मन्त्रो के साथ ऋषियों के नाम क्यों जोड़े गए हैं ?

उ०—जिन ऋषियो ने जिस जिस मन्त्र का साक्षात्कार किया उन उनका नाम सम्मानार्थ उन मन्त्रो के साथ जोड़ा गया है।

प्र०—क्या ऋषि मन्त्रकर्त्ता नही ?

उ०—नही, ऋषि मन्त्रद्रष्टा हैं।

प्र०—मन्त्र के देवता से क्या तात्पर्य है ?

उ०—मन्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ही मन्त्र का देवता कहा गया है।

प्र०—क्या वेद पढ़ने का अधिकार सबको नही ?

उ०—वेद पढ़ने का अधिकार सब को है पर मूढ व्यक्ति अधिकार होने पर भी उसका उपयोग नही कर सकता महर्षि का कथन है कि—'जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि को पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इसके शरीर मे वाक और श्रोत्र इन्द्रिया क्यो रचता ? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और अन्न आदि पदार्थ सब के लिए बनाये हैं, वैसे वेद भी सब के प्रकाशित किए हैं। (द्रष्टव्य—सत्यार्थ-प्रकाश, तृतीय समुल्लास) प्राचीनकाल मे गार्गी, मैत्रेयी आदि स्त्रिया और जानश्रुति आदि तथाकथित शूद्र ने भी वेदाध्ययन किया था।

प्र०—वेद-विद्या का आदिमूल कौन है ?

उ०—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

प्र०—क्या वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ?

उ०—आर्य समाज का तृतीय नियम कहता है कि—वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है, इसलिए वेद के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने को परम धर्म कहा गया है।

प्र०—महर्षि दयानन्द को वेदों वाला ऋषि क्यो कहते हैं ?

उ०—इसलिए कि वही लुप्तप्राय वेद-विद्या को संसार के समक्ष लाये थे वे पहले व्यक्ति थे जो कि जन भाषा हिन्दी में वेदों का भाष्य कर सर्वसाधारण के लिए उसे सुलभ कर गए। उन्होंने अपना कोई नवीन मतमतान्तर नही चलाया अपितु वैदिक धर्म की ही उन्होंने पुन स्थापना की थी। उन्होंने ही वेदो के युक्तियुक्त एव तर्कसंगत अर्थ किए। वेदो की संसार में पुन प्रतिष्ठा करने के कारण ही वेदों वाले ऋषि कहलाए। उनका सम्पूर्ण जीवन वेद के प्रति समर्पित था। उनकी चाहना थी कि चाहे दूसरा जन्म भी लेना पड़े, वेद का प्रचार अवश्य करूंगा महर्षि की सभी मान्यताए वेद पर ही आधारित थीं। अत वे सही अर्थों मे वेदो वाले ऋषि थे। सारा संसार उन का इस विषय में ऋणी है।

न रहे बांस न बजे बासुरी

—लेखक डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार दिल्ली

भारत का संविधान बनाने वाले सब राजनीति के पंडित थे। उनके सामने यूरोप का इतिहास था जहां सामाजिक-विकास होते-होते मनुष्य डेमोक्रेसी तक पहुंचा था। वे यहीं तक पहुंच पाये थे कि प्रत्येक मानव को वे सब अधिकार प्राप्त होने चाहिए जो देश के किसी भी मानव को प्राप्त हैं। मनुष्य-मनुष्य में जो भेद हैं, कोई ऊंच नीच नहीं। इस भेद को मिटाने का उनके पास एक ही तरीका था और वह तरीका सिर्फ यह था कि विधान में लिख दें कि सब मनुष्य एक समान हैं, कोई ऊंचा नहीं, कोई नीचा नहीं। परन्तु सामाजिक रचना संविधान बना देने या उसे लिख देने से नहीं बनती। सामाजिक-रचना परिश्रम पूर्वक बनाने से बनती है, बिगाड़ने से बिगड़ती है। संविधान में तो 1947 मे लिखा गया था कि संविधान की दृष्टि में सब एक समान है, परन्तु वह कानून की पुस्तकों में लिखा ही रहा, क्रियात्मक रूप मे मनुष्य-मनुष्य मे भेद बना ही रहा। योरुप में गोरे-कालों के भेद को कोई न मिटा सका, भारत में छूत-अछूत के भेद को कोई न मिटा सका। यह भेद जन्म के आधार पर था जिसे अन्य देशों में "रेस" के नाम से और भारत में "जाति" के नाम से पुकारा जाता है। अन्य देशों का काले-गोरों का भेद जन्म के आधार पर टिका है, भारत मे ऊंच-नीच जाति का भेद जन्म के आधार पर टिका है। इस भेद-भाव को दो-तीन तरीकों से मिटाया जा सकता है—या वह भेद-भाव राजनैतिक-क्रान्ति से मिट सकता है, या सामाजिक-क्रान्ति से मिट सकता है। परन्तु दोनों क्रांतियों से हल संभव नहीं है, आर्यसमाज के पास ही इस समस्या का हल है। सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए, तीन हल हैं जो निम्न प्रकार हो सकते हैं?

(क) सामाजिक क्रान्ति :

सामाजिक क्रान्ति का अर्थ है कि समाज के नेता अपने व्याख्यानों, उप-देशों या क्रियात्मक-जीवन से ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दें जिससे समाज के हर वर्ग के लोग एक-दूसरे को भाई के समान समझने लगें और सब से समान-भाव से व्यवहार करें। इस प्रकार की सामाजिक-क्रान्ति में कुछ बातों में भेद-भाव के रहते हुए भी ग्लानि का भाव या अधिकार-हीनता का भाव नहीं रहता। उदाहरणार्थ, 1947 से पूर्व हिन्दू मुसलमान भाई-भाई की तरह भेद-भाव था। ऐसी क्रांति में उबाल तभी आता है जब कोई स्वार्थी-वर्ग अधिकार-हीनों को भड़काने के लिए उठ खड़ा होता है। अगर कोई न भड़-काये तो समाज के सब लोग शान्ति से एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। मनुष्य का स्वभाव शान्ति पूर्वक जीवन बिताना है। फिर भी सामाजिक-क्रान्ति से मानव-मानव में अन्तर्निहित भेद-भाव के उबल पड़ने का खतरा बना ही रहता है जैसा भारत-विभाजन के समय स्पष्ट हुआ।

(ख) राजनैतिक क्रान्ति—

राजनैतिक क्रान्ति का अर्थ है कि राज्य ऐसे कानून बना दे जिनके द्वारा उच्च-नीच का भेद-भाव ही न रहे। यह रास्ता मंडल कमीशन का है। इस रास्ते को हमारे प्रधानमन्त्री श्री विश्व नाथ प्रताप सिंह ने अपनाया है। इस रास्ते का जो परिणाम हो सकता है वह हमारे सामने रैलियों तथा उप-द्रवों के रूप में है। कानून के दो काम हो सकते हैं। या तो जो लोग ऊंच-नीच को बढ़ावा देते हैं उन्हें "सजा" दे ताकि मानव-मानव में भेद-भाव न रहे, या जिन लोगों को सामाजिक निचले दर्जे में रखता है उन्हें विशेष "रियायतें" देकर उन्हें उच्च जाति के सम-कक्ष बना दे। इसी को 'रिजर्वेशन' या 'संरक्षण' की नीति कहते हैं।

संरक्षण की नीति का क्या परि-णाम है? सरक्षण का अर्थ है—रियायत" 'रियायत' का अर्थ है। जो जिस काम के योग्य नहीं है उसे उस काम के लिए योग्य समझकर रियायत के तौर पर वह काम दे देना। जिस रास्ते पर चलने से 'रियायत' मिले, अयोग्यता के होते हुए भी योग्यता का प्रमाण-पत्र मिले, उस सहज मिलने वाले मार्ग को कौन छोड़ेगा? रिजर्वेशन का परिणाम यह होगा कि प्रत्येक व्यक्ति "रिजर्वेशन" चाहेगा, अगर दलित या 'भंगी' या 'चमार' कहे जाने वाले व्यक्ति को नौकरी में रियायत मिलेगी तो सभी लोग अपने को 'भंगी' या 'चमार' कहलाना पसन्द करेंगे। जैसे आज उच्च जाति का होना एक गौरव की बात है, वैसे मंडल-कमीशन के मार्ग पर चलने पर अपने को नीच-जाति का कहलाना फैशन हो जायेगा, यही गौरव की बात हो जाएगी और यह बात सदा के लिए पक्की हो जायेगी।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि जन्म [illegible] रास्ते पर चलने से देश का विभाजन [illegible] दलितों को रियायत दी जाये, [illegible] को, किसानों को, अहीरों को—[illegible] को रियायतें देने का सिलसिला जारी हो जाएगा। देखा जाए, तो सभी पतित-दलित ही रह जायेंगे, उच्च वर्ग कहलाने वाला कोई नहीं रहेगा 'उच्च वर्ग' का अर्थ ही बदल जायेगा। इसका अर्थ नीच-वर्ग हो जाएगा। देश में दलित 3742 कही जाने वाली जन्मजात जातियां हैं, इन सब को रियायतें देकर कौन संभाल सकेगा।

तो फिर इस धन्धे से कैसे निपटा जाये। इस धंधे से निपटने का मार्ग अब कुछ-कुछ रिजर्वेशन वादियों को सूझने भी लगा है। एक तरफ तो वे दम ठोककर कहते हैं कि आरक्षण की नीति सोलहों आना चल कर रहेगी, दूसरी तरफ इस नीति के विरुद्ध इतना हो—हल्ला, रैलियां और मार-धाड़ देखकर वे पलटने लगे हैं, और कहने लगे हैं कि सैनिक सेवाओं मे, शिक्षा के क्षेत्र में, भिन्न-भिन्न राज्यों में यह नीति चलना आवश्यक नहीं है। आवश्यक हो, या न हो, इतना तो स्पष्ट है कि इस नीति से जन्म की जात-पात की जड़े मजबूत हो जायेंगी और ज्यों-ज्यों दवा करेंगे, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता जायेगा।

हम पहले लिख आये हैं कि जन्म-जात भेद-भाव को मिटाने का इलाज रियायते या रिजर्वेशन देने से न होगा, इस से सिर्फ जात-पात की जड़ें पक्की होकर पाताल तक पहुंच जाएगी, इसका इलाज सिर्फ आर्यसमाज के पास है और किसी के पास नहीं है। आर्य समाज का कहना है कि सारे झगड़े की जड़ जन्मकी जात-पात है। कानून से इसे पक्का करने के स्थान से इसे ही मिटा दो, न रहे बांस, न बजेगी बांसुरी।

(ग) आर्यसमाज का दृष्टिकोण :

आर्य समाज का दृष्टिकोण यह है कि न कोई जन्म से ब्राह्मण होता है, न जन्म से शूद्र या दलित होता है। यह एक छोटी सी समझदारी की बात है। ऐसा लगता है कि पहले भी कभी इस देश में जन्म से उच्च-नीच की समस्या उठी थी और उस समय वर्ण के विद्वान समाज ने इसको हल करते [illegible] [illegible] दिया उत्तर—जन्म से कोई ऊंचा नहीं, जन्म से कोई नीचा नहीं। पैदा तो सब शूद्र ही होते हैं, कर्म से, अपनी योग्यता से कोई ब्राह्मण हो जाता है—'जन्मना जायते शूद्रः'। उस समय आज की तरह उत्पन्न हुए होंगे, और विद्वानों ने उस समय जन्म जात-पात को निरस्त किया होगा। समाज में समय समय पर इस प्रकार की विसंगतियों का उत्पन्न होना तथा उनका विद्वानों द्वारा समझा-बूझा कर मिटा देना स्वाभाविक है। क्या आज उन्नत देशों में भी इस प्रकार की समस्याएं नहीं उत्पन्न होतीं? होती हैं, मिलती भी हैं। वास्तव की कठिनाई यह है कि इस देश की वर्तमान स्थिति में यह सामान्य राजनीति के साथ जुड़ा है। और क्योंकि इस देश में दलित वर्ग के लोगों की संख्या बहुत अधिक हो गई है। इसलिए चुनाव में उनका वोट लेने के आरक्षण नीति रिश्वत देकर उनके वोटों को खरीदने की कोशिश होना स्वाभाविक है यद्यपि यह जरूरी नहीं है कि आरक्षण मिल जाने के बाद दलित वर्ग के सब लोग अपना वोट उसी पार्टी के उम्मीदवारों को देंगे। जिन्होंने वर्तमान स्थिति में उनका साथ दिया है।

आर्यसमाज का कहना है कि जन्म-जाति-पाति के झगड़े को ही समाप्त कर देना ही समस्या का हल है। पहले भी कभी यह हल किया गया था, अब भी इस समस्या का यही हल है, अन्यथा यह समस्या सदा बनी रहेगी। समझ-दारी की बात भी यह है कि समाज की उन्नति योग्य व्यक्तियों के हाथ में ही होनी चाहिए। संरक्षण द्वारा उच्च पर आये व्यक्तियों के हाथ में नहीं। ऐसे योग्य व्यक्ति किसी भी जाति में हो सकते हैं, ब्राह्मणों में भी, शूद्रों में भी। हर हालत में समाज की रचना रियायती लोगों के हाथ में होकर नहीं योग्यता पर निखरत व्यक्तियों के हाथ में होनी चाहिए। यही आर्य समाज का दृष्टिकोण है। तभी गीता में कहा है। 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण[illegible] [illegible] किया गया'।

श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिंडा द्वारा प्रचार कार्य

1. श्री भगवन्त सिंह जी पावर हाऊस बठिंडा के परिवार में हवन यज्ञ एवं प्रवचन।

2. श्री अशोक कुमार जी तलवण्डी साबो (दमदमा साहिब) के परिवार में हवन यज्ञ एवं प्रवचन।

3. श्री कस्तूरी लाल जी बठिंडा को यज्ञ द्वारा यज्ञो पवीत धारण कराया।

4. श्री पुरुषोत्तम दास जी गोयल एडवोकेट बठिंडा के परिवार में आरंभ रख कर यज्ञ किया।

5. [illegible] मण्डी के आर्य समाज के संस्थापक स्वर्गीय श्री राम दास जी "[illegible]" की स्मृति में उनके [illegible]

6. श्री प्यारे लाल जी बरेटा मण्डी के परिवार में यज्ञ किया।

7. श्री पवन कुमार जी [illegible] [illegible] का विवाह वैदिक रीति से कुमारी सरोज रानी जी [illegible] मण्डी से किया गया।

8. श्री नारायण दास जी [illegible] आर्य समाज बरेटा मण्डी के नए मकान में हवन यज्ञ द्वारा गृह प्रवेश कराया गया।

9. श्री [illegible] जी प्रधान जिला आर्य सभा बठिंडा के पोते के जन्म दिन पर उन के परिवार में यज्ञ किया।

—[illegible] बठिंडा

सम्पादकीय :—

आर्यसमाज और राम जन्म भूमि

मुझे कई पत्र आते रहते हैं, जिन में यह पूछा जाता है कि राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का जो विवाद चल रहा है उस में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या है ? यह एक ऐसा विषय है जिस पर सार्वदेशिक सभा ही अधिकृत रूप से कुछ कह सकती है और मेरे विचार में उसे कहना भी चाहिए। समय-समय पर देश के सामने जो समस्याए आती रहती हैं आर्य समाज का अधिकृत दृष्टिकोण उनके विषय में जनता के सामने आते रहना चाहिए। मण्डल कमीशन के विरोध में जो आन्दोलन आज सारे देश में चल रहा है उसके विषय मे सार्वदेशिक सभा का एक वक्तव्य पिछले दिनों प्रकाशित हुआ था। परन्तु वह पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता आज इस बात की है कि आर्य समाज देश की समस्याओं के विषय में अपना दृष्टिकोण जनता तक पहुचाने के लिए एक योजनाबद्ध ऐसा अभियान चलाए कि जनता यह समझे कि आर्य समाज भी एक ऐसी सस्था है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। मैं तो इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य समझता हू कि मण्डल कमीशन की सिफारिशो के विषय मे स्वामी अग्निवेश के दृष्टिकोण को आर्य समाज का दृष्टिकोण समझ लिया जाता है। कुछ लोगो को यह भ्रान्ति है कि अग्निवेश आर्य समाजी है और वह जो कुछ कहता है वही आर्य समाज का दृष्टिकोण है। जन साधारण की इस धारणा को समाप्त करने के लिए भी यह आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा की ओर से भिन्न-भिन्न समस्याओ के विषय में एक ऐसा अभियान चलाया जाए जिस से जनता यह समझ सके कि आर्य समाज क्या चाहता है और उसका दृष्टिकोण क्या है ? आज की इन समस्याओ मे राम जन्म भूमि का विवाद भी है, जिस पर आर्य समाज को अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहिए।

जो मैं लिख रहा हू यह मेरे निजी विचार है। यह भी कहा जा सकता है कि यह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विचार हैं, सार्वदेशिक सभा के नही। इस लिए किसी को कोई भ्रान्ति नही रहनी चाहिए। यदि किसी को मेरे विचारो से मतभेद हो और वह हमे लिख कर भेज देवें तो हम उन्हे आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर देंगे। मैं चाहता हू कि आर्य मर्यादा के माध्यम से देश की समस्याओं पर आर्य जन अपने विचारो का आदान प्रदान करते रहे ताकि साधारण जनता को भी पता चलता रहे कि देश किधर जा रहा है और हम किधर जा रहे हैं।

जहा तक राम जन्म भूमि आन्दोलन का सम्बन्ध है मेरे विचार मे आर्यसमाज की सहानुभूति तो इस आन्दोलन के साथ रहनी चाहिए ही, परन्तु आर्यसमाज एक संस्था के रूप मे इस आन्दोलन में सक्रिय भाग नहीं ले सकता। इसके दो कारण हैं जिस मदिर के लिए सारा आन्दोलन हो रहा है आर्य समाज ऐसे मदिरो का समर्थन नही करता। हम अपने उन भाईयो की भावनाओ का आदर अवश्य करते हैं, जो भगवान राम की स्मृति में एक मदिर बना कर वहा उन की मूर्ति रख कर उस की पूजा करना चाहते हैं। क्योंकि मूर्ति पूजा पर हमारा दूसरे भाईयों से मतभेद है। इसलिए हम उन का समर्थन इसलिए तो करते हैं कि उन्हें यह अधिकार है कि वह अपना मदिर बना कर वहा भगवान राम की मूर्ति रख कर, उनकी पूजा करना चाहते हैं तो करें, यदि सरकार उन के रास्ते में कोई रूकावट पैदा करती है तो वह भी केवल मुसलमानों के तुष्टिकरण के लिए तो हमें उसका विरोध करना चाहिये। परन्तु आर्यसमाज यद्यपि एक सस्था के रूप मे इस में सक्रिय भाग नहीं ले सकता। परन्तु कोई भी आर्य समाजी निजी रूप से इस से सक्रिय भाग लेना चाहता हो तो उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए। हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि देश मे जो वातावरण पैदा किया जा रहा है वह एक प्रकार से सारे हिन्दूओं के लिए एक चुनौती है। सरकार ने पहले मण्डल कमीशन का समर्थन कर के हिन्दूओं को हिन्दूओ से लड़ाने का प्रयास किया है और अब राम जन्म भूमि का विवाद शुरू कर के हिन्दूओं और मुसलमानों को आपस में लड़ा रही है। इस सारे विवाद मे सरकार का समर्थन मुसलमानो को अधिक मिला। प्रधानमन्त्री और उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री इन दोनो का बार बार यह कहना कि बाबरी मस्जिद पर चोट नहीं आने दी जाएगी यह केवल मुसलमानों के तुष्टिकरण के लिये ही कहा जा रहा है। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि मुहम्मद अली जिन्नाह के बाद किसी दूसरे नेता ने मुसलमानों की भावना को इतना नहीं उभारा जितना की विश्वनाथ प्रताप सिंह और उन के साथी उभार रहे हैं। इसी के साथ वह सिखों को भी उभार रहे हैं और ईसाईयों को भी उभार रहे हैं। उन्हे इस बात चिन्ता की नहीं कि हिन्दूओं की भावनाएं क्या हैं ? और वह जो कुछ कर रहे हैं उस से देश की कितनी हानि होगी।

इन परिस्थितियों में आर्य समाज का भी यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने थोड़े बहुत मतभेद इस समय एक तरफ रख कर राम जन्म भूमि के प्रश्न पर हिन्दूओं के दृष्टिकोण का पूरा समर्थन करे। हमारे आपस मे जो मतभेद हैं उन का निपटारा किसी और रूप मे हो सकता है। आज हम सब को मिल कर इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए जो सरकार हिन्दूओ को दे रही है।

इस विषय मे मेरी जो सम्मति है वह मैंने आर्य जनता के सामने रख दी है फिर भी मैं कहना चाहता हू कि यह आर्य जगत का अधिकृत दृष्टिकोण नही है। वह क्या होना चाहिए इस का निर्णय करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को है।

—वीरेन्द्र

धन्यवाद है इन शुभकामनाओं के लिये

दीपावली हमारा राष्ट्रीय पर्व है। आर्य समाज के लिए यह और भी विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि इसी दिन हम महर्षि निर्वाण समारोह भी मानते हैं। दीपावली पर्व पर मुझे कई बहनों और भाइयो की ओर से बधाई और शुभकामनाओ के पत्र आते रहते हैं। इस बार भी आए हैं। मैं उन सब का धन्यवाद करता हू जिन्होने मुझे यह पत्र लिखे हैं। परन्तु दो ऐसे पत्र भी हैं जिन की ओर मैं आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू।

दक्षिण अफ्रीका मे जो आर्य समाज का काम हो रहा है वह अत्यन्त सराहनीय है। समय-समय पर मुझे वहा से जो पत्र आते रहते हैं उनसे पता चलता है कि वहा के आर्य भाई और बहिने अपने देश से बहुत दूर बैठे अपने धर्म प्रचार के लिए क्या कुछ कर रहे है। वैसे तो दूसरे देशो मे भी किसी न किसी रूप मे आर्य समाज का प्रचार चल रहा है परन्तु मेरे विचार मे सब से अधिक सक्रिय दक्षिणी अफ्रीका के आर्य समाजी हैं। वहा आर्य समाज की कई सस्थाए है। पडित नरदेव जी विद्यालकार के नेतृत्व मे वहा आर्य समाज का जो काम हो रहा है उसका वृतान्त सुन कर हम उस पर गर्व कर सकते हैं।

आर्य समाज नेटाल के एक वरिष्ठ अधिकारी श्री भगवान दास बिठटल के पत्र मुझे समय समय पर आते रहते हैं। उनसे वहा की आर्य समाज की गतिविधियो के विषय मे पता चलता रहता है। जो पत्र अब आया है उस मे उन्होने पजाब के सब आर्यसमाजियो को दीपावली के शुभ पर्व पर अपनी शुभकामनाए और बधाई भेजी है। जब 1975 मे आर्य समाज की शताब्दी मनाई गई थी उस समय वह भारत आए थे और जालन्धर भी आये थे, और उसका वह कई बार अपने पत्रो मे जिक्र करते रहते हैं परन्तु जो कुछ वह वहा का साहित्य मुझे भेजते रहते हैं उसे देख कर प्रसन्नता होती हैं साथ ही आश्चर्य भी होता है कि दक्षिण अफ्रीका मे आर्य समाज का इतना प्रचार हो रहा है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की सब आर्य समाजो, उनके सदस्यों और सदस्याओ की ओर से दक्षिण अफ्रीका मे रहने वाले अपने सब आर्य समाजी भाई और बहनो को शुभकामनाए भेजता हू और परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हू कि जो इतनी दूर बैठे हमारे भाई और बहिनें अपने धर्म प्रचार के लिए यह सब कुछ कर रहे हैं, परमात्मा करे कि वह इस मे और भी अधिक सफल हों और दक्षिण अफ्रीका मे रहते हुए भी वह महर्षि दयानन्द जी के जलाये दीपो को और अधिक प्रज्जवलित करते रहे।

दूसरा पत्र जिसकी ओर मैं आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू वह हमारे पुराने वयोवृद्ध श्री काशी राम जी चावला का है। अब उन की आयु 104 वर्ष से ऊपर हो गई है। वह प्रतिवर्ष अपने जन्म दिन पर हमारी सभा को 131 रुपये भेजते हैं, 101 रुपया दान और 30 रुपये इस मे आर्य मर्यादा का शुल्क होता है। उसी के साथ वह अपनी शुभकामनाए सब आर्य समाजी भाईयों और बहनो के लिए भी भेजते हैं। इस बार भी उनका जो पत्र मुझे आया है उसमे उन्होने अपनी भावनाओ को लिखते हुए यह कामना की है कि सब आर्य समाजी भाई और बहिनें सदा स्वस्थ प्रसन्न और समृद्ध रहे और उनका जीवन सदा सुखमय रहे। मेरी परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि श्री काशी राम जी चावला और भी बहुत लम्बे समय तक हमारा मार्ग दर्शन करते रहें और उनका आशीर्वाद हमे मिलता रहे। उनका जो पत्र मुझे आता है वह अब भी उसे अपने हाथ से लिखते हैं। आशा है भविष्य मे भी वह इसी प्रकार पत्र लिखकर हमारा मार्ग दर्शन करते रहेगे। वह देहरादून मे रहते हैं उनका पता है —श्री काशी राम जी चावला—177/2 बसन्त बिहार देहरादून (उ.प्र)।

वीरेन्द्र

स्वामी अग्नि वेश—आर्यसमाज के इतिहास को दूषित न करें

लें० —डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

क्रान्तिधर्मी नामक पत्र (सितम्बर 1990) मे उर्दू पत्र नई दुनिया के सम्पादक श्री शाहिद सिद्दीकी को दिया गया स्वामी अग्निवेश का एक इण्टरव्यू छपा है। कांग्रेस और जनता दल के नेताओं की ही भांति स्वामी अग्निवेश भी यदि मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपनायें तो इस पर हमें कुछ नहीं कहना। हमारा निवेदन तो इतना ही है कि वे अपने तथाकथित साम्प्रदायिकता विरोधी अभियान को चलाते समय स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को न लपेटें। स्वामी दयानन्द का इस्लाम तथा उसके अनुयायियों के प्रति क्या रुख या रवैया था। इसे आर्य समाज के इतिहास तथा महर्षि के जीवन का अध्ययन करने में ही अपना अधिकांश जीवन लगा देने के कारण हम स्वामी अग्निवेश से कहीं बेहतर समझते हैं। स्वामी दयानन्द ने देश की दरिद्रता पर आंसू बहाये तो साम्प्रदायिकता के नग्न ताण्डव की ओर से भी वे कभी विमुख नहीं हुए। स्वामी अग्निवेश को इस बात की तो चिन्ता है कि हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई मिल बैठकर अपनी गरीबी और बेरोजगारी को दूर करने के उपाय ढूंढते। मैं स्वामी जी से यह कहना चाहता हूं कि वे इन सम्प्रदाय वालों से इसके साथ यह भी पूछें कि संकीर्ण सम्प्रदायवाद को बढ़ाने में भी उक्त मत वालों ने इतना जोश और उत्साह क्यों दिखलाया है। सत्य तो यह है कि दरिद्रता और कट्टर मतवाद दोनों से ही हमें लड़ना है। इस्लाम की साम्प्रदायिकता तो आज भारत के लिए ही नहीं संसार के सभी सभ्य देशों के लिए खतरा बन रही है। आज ग्रेट ब्रिटेन के मुसलमान अपने लिए अलग कानून की मांग करते हैं और फ्रांस में रहने वाले मुसलमानों की लड़कियां बुर्का पहनकर स्कूलों में जाने का आग्रह करती हैं। भारतीय मुसलमानों में कट्टरवाद देश के विभाजन के बाद भी कम नहीं हुआ, अपितु बढ़ा ही है। अतः साम्प्रदायिक संकीर्णता से मुह मोड़ कर केवल गरीबी की दुहाई देना काफी नहीं है।

पत्रकार सिद्दीकी ने कहा कि भारत के मुसलमानों के सबसे बड़े मासूमी से इसे मान लिया तथा इसे दुर्भाग्य की बात बताया। उन्हें शायद ज्ञात नहीं कि आर्य समाज तो राष्ट्र विरोधियों का शत्रु है, चाहे वे हिन्दू हों मुसलमान हो, सिख हों या ईसाई हों। मुसलमान वर्ग से आर्य समाज की कोई जाती दुश्मनी कभी नहीं रही। हमारे शास्त्रार्थकर्त्ता तो हजारों मुसलमान श्रोत रूपों की उपस्थिति में इस्लाम के मुल्ला मौलवियों से शास्त्रार्थ करते रहे। बैर और विरोध का जहर तो राजनैतिक लोग ही फैलाते हैं या वे लोग जो क्षुद्र और तुच्छ लोकप्रियता अर्जित करने के लिए स्वामी अग्निवेश की ही भांति मुसलमान पत्रकार से लल्लो-चप्पो करते हैं और खुद इस्लाम के भयंकर संकीर्ण विस्तारवाद से कबूतर की भांति अपनी आंखें मूंद लेते हैं।

अब स्वामी जी के इतिहास ज्ञान की परीक्षा करें। इस इण्टरव्यू को देने से पहले यदि स्वामी अग्निवेश आर्य समाज का इतिहास या महर्षि का मेरा लिखा जीवन चरित्र ही पढ़ लेते तो शायद उन्हें ऐसी गलतब्यानी नहीं करनी पड़ती। परन्तु उन्हें पढ़ने पढ़ाने की फुर्सत ही कहां है। वे तो कभी बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का आन्दोलन छेड़ते हैं तो कभी दिवराला या नाथ द्वारा की यात्रा करते हैं। कभी आरक्षण समर्थक ब्यान देते हैं तो कभी और कोई शिगुफा छोड़ते हैं। मैं इन कामों को बुरा नहीं कहता। सभी कार्यक्रम अपने अपने स्थान पर अच्छे हैं किन्तु आर्य समाज की सेवा के लिए तो आप को इन बहुधंधी कार्यक्रमों से थोड़ी देर के लिए छुटकारा पाकर, एकनिष्ठ हो कर महर्षि के मिशन की सेवा में ही लगना होगा। Jack of all and master of none की कहावत को ध्यान में रखकर अपने जीवन का एक ध्येय बनायें : सस्ती ख्याती अर्जित करने के लिए भिन्न भिन्न प्लेट फार्मों पर जाने के प्रलोभन से बचें।

स्वामी अग्निवेश कहते हैं कि आर्य समाज की स्थापना 8 अप्रैल 1875 को हुई। यह तिथि किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में नहीं है। स्वामी जी आर्य समाज के इतिहास को पुनः पढ़ें। जिस मुसलमान बंधु ने आर्य समाज बम्बई के भवन निर्माण के लिए जो राशि दी वह 1875 में (आज से 115 वर्ष पहले) नहीं दी थी। वह तब दी जब आर्य समाज बम्बई का भवन काकड़वाड़ी में बनने लगा। यह घटना स्वामी दयानन्द के निधन के बाद की है। लाहौर में आर्य समाज के जो दस नियम बनाए गए वे बम्बई में निर्मित 28 नियमों से काट छांट कर नहीं बनाए गए, किन्तु यह सोच कर बनाए गए कि संस्था के संविधान तथा उसके शाश्वत नियमों एवं उद्देश्यों को पृथकशः परिभाषित किया जाए। संविधान तो बदला जा सकता है। किन्तु सिद्धान्त और उद्देश्य अपरिवर्तित रहते हैं। दस नियमों के निर्धारण का कार्य भी किसी नवाब के यहां नहीं, अपितु डा० रहीम खां की कोठी पर सम्पन्न हुआ था। (अधिक जानने के लिए पाठक मेरी पुस्तक महर्षि दयानन्द के भक्त- प्रशंसक और सत्संगी पढ़ें)।

स्वामी अग्निवेश का यह कथन तो महा मिथ्यातथा इतिहास के विरुद्ध है कि स्वामी दयानन्द के जीवन का अधिक हिस्सा मुसलमानों के घरों में ठहरने उनसे मिलने जुलने और उन्हें इकठा करने में गुजरा।' पता नहीं स्वयं को आर्य सन्यासी कहने वाला कोई व्यक्ति इतनी गलत ब्यानी कैसे करता है? आर्य समाज की स्थापना के पहले तो स्वामी जी मन्दिरों नदियों के घाटों तथा धर्म स्थानों पर ठहरते थे। आर्य समाज की स्थापना होने और अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ने पर महाराज के निवास की व्यवस्था आर्य समाज के अधिकारी तथा भक्त गण ही करते थे। स्वामी जी से मिलने के लिए सभी लोग आते थे हिन्दू अधिक और मुसलमान कम। स्वामी दयानन्द का मिशन था आर्यावर्त की उन्नति वैदिक धर्म का प्रचार, आर्य विद्या का उत्थान न की मुसलमानों को इकठा (संगठित) करने में उन्होंने अपनी आधी जिन्दगी गुजारी जैसा की उक्त स्वामी जी कहते है।

पता नही देवबंद के इस्लामी विद्यालय की अपनी झोली का सारा धन दे डालने का अपोढ़ा स्वामी अग्निवेश को कैसे मिल गया। शायद यह उन लोगों की करामात है जो मुजफ्फर नगर जिले के ग्राम सोरम की एक पंचायत के पुराने रेकार्ड के नाम पर उल्टी सिधी मनघड़ी बातें लिख कर आर्यसमाजी पत्रों में छापते रहते हैं। स्वामी जी के पास न तो झोली रहती थी और न ही उसमें धन। उन्हे तो फर्रुखाबाद और कासगंज आदि स्थानों में स्वस्थापित संस्कृत पाठशालायें चलाने के लिए भी सेठ साहूकारों के दान पर निर्भर होना पड़ता था। अब स्वामी जी के इस्लाम के खंडन और शिक्षा में ऐसी क्या खूबी देखी थी वे देवबंद जैसे इस्लामी सम्प्रदायिकता के गढ़ की स्थापना के लिए कुछ धन देते। जो अवधूत अपने विद्या गुरु दण्डी विरजानन्द को दक्षिणा देने के लिए मुश्किल से आधा पाव लौंगों का जुगाड़ कर पाया वह अपनी झोली से रुपये निकाल कर देवबंद के लिए देता इससे बढ़ कर सत्य का अपलाप और क्या हो सकता है और यह भी इसलिए कि इसे सुनकर मुसलमान अखबार नवीस को खुश किया जा सके।

अब सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध को लेकर स्वामी अग्निवेश ने जो ऊटपटांग लिखा है इस पर विचार करें। स्वामी जी लिखते है -'यदि उन्हें (ऋषि ने) चार पन्ने इस्लाम के बारे में लिखे तो 40 पन्ने कुरान के विरुद्ध लिखे हैं। हिन्दुओं के देवी देवताओं के विरुद्ध लिखे हैं। यदि इस वाक्य की भाषा को अभिधार्थ (Literal Sense) में लिया जाए तब तो मैं कहूंगा कि अग्निवेश जी ने सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा क्या देखा भी नहीं है। इस्लाम की आलोचना में सत्यार्थप्रकाश में कितने पृष्ठ हैं और आर्यवर्तीय मतमतान्तरों के खण्डन में (इसे अग्निवेश जी पुराणों और देवी देवताओं के विरुद्ध लिखा कहते हैं) कितने पृष्ठ हैं यह आलोचक ग्रन्थ के समुल्लासों के पृष्ठ की गणना करके ही जाना जा सकता है। किन्तु सवाल चार या चालिस [पन्नों का ?] नहीं है। स्वामी जी को वेद विरुद्ध मतमतान्तरों की आलोचना में जितना लिखना उचित और अभिष्ट था पड़ा उतना उन्होंने निर्भीक होकर बिना किसी पक्षपात किये लिखा फिर आज मुसलमान पत्रकार को खुश करने के लिए यह क्यों कहते हैं कि इस्लाम की आलोचना चार पन्नों की है और हिन्दू धर्म की चालीस की। इण्टरव्यू देने वाला इतना भी नहीं जानता की स्वामी जी ने पुराणों या देवी देवताओं के विरुद्ध नहीं लिखा।

(क्रमशः)

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के नाम पत्र

पूज्य वीरेन्द्र जी,

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब)

नमस्ते !

मैं आप को मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के सम्बन्ध में सरकार के निर्णय से उत्पन्न हुई स्थिति के बारे में अपने विचार भेज रहा हूं।

वी०पी० सिंह सरकार ने जब केन्द्र में सत्ता सम्भालते ही आरक्षण नीति को दस वर्ष के लिए आगे बढ़ाया था तो उसके विरुद्ध पूरे देश में तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। लेकिन मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के निर्णय पर ऐसी जबरदस्त प्रतिक्रिया होगी, इसका अनुमान सत्ताधारी पार्टी ने निश्चित रूप से नहीं लगाया होगा। इस समय अनेक राज्य आरक्षण विरोधी आन्दोलन की लपेट में हैं और यह आन्दोलन हिंसक रूप ले चुका है। अनेक स्थानों पर जन जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को काफी नुकसान पहुंचा है। एक दो को छोड़कर सभी मुख्य राजनैतिक पार्टियों ने सरकार के इस निर्णय को जल्दबाजी में उठाया गया कदम बताकर इसकी आलोचना की है। लेकिन विभिन्न राजनैतिक दलों ने दोगली नीति अपनाई हुई है जिससे स्थिति अभी भी अस्पष्ट बनी हुई है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश के नेता सत्ता पर कब्जा जमाये रखने के उद्देश्य से अथवा अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश की एकता तथा अखण्डता को भी दांव पर लगाने से नहीं चूकते। वी०पी० सिंह सरकार का यह निर्णय निश्चित रूप से राजनैतिक हितों को ध्यान में रखकर लिया गया है जिससे आने वाले सम्भावित चुनावों में इसका लाभ मिल सके। ये वही वी०पी० सिंह हैं जिन्होंने कांग्रेस में रहकर इन सिफारिशों का विरोध किया था और अब वे अपनी इस गलती पर घड़ियाली आंसू बहाकर राजनैतिक लाभ उठाना चाहते हैं। यदि जाति व्यवस्था को उचित नहीं ठहराया जा सकता। आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के लोग किस जाति में नहीं हैं ? आरक्षण नीति का वास्तविक उद्देश्य तो जातिवाद को समाप्त करना है न कि उसका पोषण करके उसे बढ़ावा देना है। पिछले 40 वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आरक्षणनीति का अनुसरण करने से जातिवाद समाप्त होने की बजाय अधिक दृढ़ हुआ है। इसका लाभ भी कुछ गिनी चुनी जातियों को ही पहुंचा है जबकि वास्तविक रूप से पिछड़े वर्ग अभी तक इसके लाभ से वंचित हैं। इससे बड़ा मजाक और क्या हो सकता है कि बड़े-बड़े मन्त्री उच्चाधिकारी तथा धनी परिवार केवल जातीय आधार पर आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं ? सामाजिक रूप में पिछड़ी हुई जिन जातियों में शिक्षा का स्तर अत्यन्त निम्न है, उन्हें नौकरियों में आरक्षण की सुविधा का क्या लाभ हो सकता है ? सरकार को चाहिए कि वह शिक्षा कार्यक्रमों की ओर अधिक ध्यान देकर समाज के सभी पिछड़े वर्ग के लोगों को शिक्षा सम्बन्धी बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाये। इससे उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने में सहायता मिलेगी और उन्हें जातीय आधार पर आरक्षण की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस विषय का सबसे दुखांत पहलू यह है कि सरकार के इस निर्णय से हिन्दू समाज जातीय आधार पर विभिन्न वर्गों में बंट गया है। इससे हिन्दू समाज में फूट पड़ेगी और सामाजिक कटुता बढ़ेगी। ऐसा कोई धर्म या सम्प्रदाय नहीं है जिसमें ऊंच नीच या जातपात का भेदभाव न हो, लेकिन जातपात के के नाम पर नजला हमेशा हिन्दू समाज पर ही गिरता है। यहां तक आर्य समाज का प्रश्न है हम जातपात में विश्वास नहीं रखते। जातीय आधार पर हम सभी आर्य हैं तथा सारे विश्व को बिना किसी जातीय भेदभाव के आर्य बनाना चाहते हैं। आर्य समाज गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वैदिक वर्णव्यवस्था में विश्वास रखता है जिसमें परिवर्तन की पूरी सम्भावना है। यदि हिन्दू समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रस्तावित वैदिक वर्ण व्यवस्था को पूरी ईमानदारी से स्वीकार कर लेता तो उसे जातीय आधार पर बांटकर उसकी शक्ति क्षीण करने का दुस्साहस करना किसी के लिए भी सम्भव न होता।

आज बेरोजगारी की समस्या हमारे देश सबसे गम्भीर समस्या है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी लाखों की संख्या में बेरोजगार नौजवान अत्यन्त मानसिक पीड़ा झेलते हुए अन्धेरे में हाथ पांव मार रहे हैं। अपने भविष्य के प्रति उनमें चिन्ता तथा निराशा की भावना व्याप्त है। मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का सीधा अर्थ है कि सरकारी नौकरियों में लगभग आधे स्थान आरक्षित हो जाएंगे। इस के अतिरिक्त सरकार ईसाईयों, मुसलमानों तथा नवबौद्धों को भी आरक्षण की सुविधा देने पर गम्भीरता से विचार कर रही है। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग पैंसठ या सत्तर प्रतिशत स्थान आरक्षित हो जाने की दशा में एक सामान्य वर्ग के व्यक्ति के लिए क्या बचेगा। बाकी बचे हुए स्थान भारी रकमों अथवा भ्रष्ट राजनैतिक प्रभाव से छीन लिए जाते हैं। ऐसी दशा में युवा वर्ग की चिन्ता तथा भड़की हुई भावना को दृष्टि विगत नहीं किया जा सकता। लेकिन इसके साथ साथ हम हिंसात्मक तथा तोड़ फोड़ की कार्यवाईयों को भी किसी रूप में उचित नहीं ठहरा सकते। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के दो नेताओं श्री शरद यादव तथा श्री राम विलास पासवान ने दलित वर्ग को अपने अधिकारों के लिए सड़कों पर उतर आने का जो आह्वान किया है, उसकी कड़े से कड़े शब्दों में भर्त्सना की जानी चाहिए। लगता है कि केन्द्र की गैर जिम्मेवार सरकार अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश की जनता को धर्म तथा जाति के आधार पर विभाजित करके देश को गृह युद्ध की ओर धकेलना चाहती है। हिन्दू समाज के लिए यही उचित है कि वह ऐसी स्थिति में किसी प्रकार की बहकाहट में न आएं और आपसी प्रेम सद्भावना और सौहार्द बनाए रखे। सरकार को भी चाहिए कि वह इस मुद्दे को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न न बना कर खुले दिमाग से इस पर पुनर्विचार करे और सभी वर्गों को विश्वास में ले कर इसका कोई स्थाई समाधान निकालें अन्यथा इस के परिणाम देश के लिए अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण हो सकते हैं।

धन्यवाद सहित।

सुशील कुमार शर्मा,
आर्य समाज वेद मन्दिर,
बस्ती दानिशमंदा जालन्धर

नारी और योग

लेखक—प्र. भद्रसेन जी, साधु आश्रम (होशियारपुर) 146021

एक दिन मानव सेवा आश्रम, छुटमलपुर में महिला सत्संग को प्रारम्भ करते हुए साध्वी साधना ने कहा— पूर्वसत्संग में मैंने यह बताया था, कि योगसाधना से पूर्व हमें क्या-क्या करना चाहिए। हां, आज ध्यान की प्रक्रिया की चर्चा से पूर्व एक बात स्पष्ट कर दूं, क्योंकि कल की चर्चा के पश्चात् एक महिमा ने आकर कहा, कि मेरी सहेलियां पूछती हैं, कि तुझे योग सीखने की क्या जरूरत है ? देखो ! तुझे पति मिल गया, तेरे दो शिशु हैं और तेरा भरा-पुरा घर है। अत: इससे अधिक एक नारी को और क्या चाहिए ? इतने से ही उसकी मुक्ति हो जाती है। और यही ही उसका धर्म, योग, तप, व्रत आदि सब कुछ है। इसी में ही उसके जीवन की सार्थकता एवं पूर्णता है। अत: आईए ! पहले इसी प्रश्न पर कुछ गहराई से विचार करें। वैसे तो ऐसे प्रश्नों के सामने रख कर ही इस आश्रम ने 'नारी जीवन' पुस्तक प्रकाशित की है। पुनरपि आज की चर्चा की दृष्टि से जब हम विचार करती हैं, तो मुझे स्मरण आता है, कि कुछ दिन पूर्व 'नारी संजीवन संगठन' की बैठक में भी यह विचार उभरा था, कि देखो ! हमारा कार्य बहुत ही कठिन और उलझन भरा है। हम जिन नारियों में आत्मविश्वास भरना चाहती हैं। उनको इस ससार में जन्म लेते ही भेदभावों से गुजरना पड़ता है, क्योंकि उनके साथ हर व्यवहार में अन्तर किया जाता है। हमारी परम्परा की यह भावना है, कि यहां बेटी बोझ बनकर ही जन्म लेती है। हमारी सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था के अनुसार बेटे के जन्म पर खुशियां मनाई जाती हैं। आपस में बधाई दी दी जाती है और मिठाइयां बांटी जाती हैं। परन्तु बेटी को बोझ समझकर पाला-पोसा जाता है। हमारे समाज में बेटियों के साथ बहुत प्राचीन काल से ही ऐसा होता आ रहा है। अतएव यहां ऐसा वातावरण बना दिया गया है, कि पुरुष को यह अधिकार है, कि वह नारी पर हुक्म चलाए और नारी अबला एवं उपभोग की वस्तु होने से इस अन्याय, शोषण को चुपचाप सहन करे। यही नारी की नियति है। हां, आज जो स्थिति है, वह सबके सामने है। कहने के लिए तो आज अनेक कहते हैं, कि परिवार और समाज के नर-नारी समान सदस्य हैं। पर असलियत तो व्यवहार से ही स्पष्ट होती है ? जो व्यवहार में हो, क्योंकि कथनी और करनी की एकरूपता को ही सत्य कहा जा सकता है। जब सब यह स्वीकार करते हैं, कि नर और नारी में एक सी ही आत्मा है, दोनों के शरीर एक सी ही प्रकृति (मूलरूप) से बने हैं। आंख-कान, हाथ-पैर आदि ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियां और मन-बुद्धि सदृश अन्त:करण भी दोनो मे समान है। पुरुष जैसा ही मस्तिष्क और हृदय ही स्त्री मे भी है। सभी क्षेत्रों मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली नारियों ने इस समानता को पूरी तरह साकार करके दिखा दिया है। ऐसी स्थिति में नारी की भी कुछ आकांक्षायें, भावनायें हो सकती हैं, उसके मस्तिष्क में भी कुछ विचार हो सकते हैं। अत: प्रश्न तो यह है कि उसको स्वतन्त्र रूप से सोचने तथा निर्णय लेने का कितना अवसर और अधिकार दिया जाता है ? क्या पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक,राजनीतिक जीवन के व्यवहार में पुरुष की तरह अपनी इच्छा के अनुसार सोचने, बोलने, बर्तने, चलने, जीने की स्वतन्त्रता दी जाती है, या केवल घोषणा ही घोषणा है।

पहले परिवार को ही लेते हैं, ऐसे कितने परिवार हैं, जहां किसी नए परिवार की रूपरेखा रखते समय उसके मूलभूत सदस्य को प्रमुखता दी जाती है। परिवार की रीति-नीति सोचते हुए तथा परिवार के आकार-प्रकार, कार्यक्रम, योजना सम्बन्धी निर्णय लेते हुए क्या पत्नी को समान अधिकार दिया जाता है ? तथा अपनी बात कहने के लिए सम्मानजनक अवसर एव प्रोत्साहन दिया जाता है ?

अब इसी परिप्रेक्ष्य में मूल प्रश्न की बात पर आते हैं। जब नर जैसा ही नारी का भी मानव चोला अमूल्य है और उस का यह जीवन दुर्लभ है, जीवन की प्राप्ति पर उसके जीवन के अर्थ, उददेश्य, महत्त्व को सामने और रखते हुए नारी को भी उन सब को चरितार्थ करने का अवसर और अधिकार मिलना चाहिए। जीवन के उद्देश्य, महत्त्व तथा साध्य-साधन की चर्चा करना, इनका चिन्तन, इस साधना को अपनाना ही योग है। तभी तो कहा है—'अय तु परमो धर्मो यद् योगेन-आत्मदर्शनम्'।

अर्थात् अपने आप को समझना, पहचानना, अनुभव करना ही योग है और यही इस दुर्लभ मानव जीवन का परम लक्ष्य है। अत एव इस साधना को स्पष्ट करते हुए मनुस्मृतिकार ने सन्देश दिया है—'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा' 5 109 अर्थात् प्राणियों के आत्मा का निखार-विद्या=आत्मज्ञान, आत्मचिन्तन तथा तप==उस आत्मज्ञान के अनुरूप योग की प्रक्रिया के अभ्यास से ही होता है। अत: आत्म कल्याण की रुचि रखने वाली हर नारी को भी इस पथ का पथिक बनने का पूर्ण अधिकार है।

हां, जब कोई पारिवारिक जीवन को स्वीकार करता है, उसका कर्त्तव्य हो जाता है, कि वह उसके प्रति हर

(शेष पृष्ट 7 पर)

वैदिक यति मण्डल द्वारा पारित प्रस्ताव

23 सितम्बर, 1990 को गुरुकुल गोतमनगर दिल्ली में सम्पन्न वैदिक यति मण्डल की विशेष बैठक में आर्य प्रादेशिक सभा तथा डी.ए.वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो. वेदव्यास जी को स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा 8 जुलाई 1990 को रजिस्ट्री द्वारा भेजे गये पत्र पर विचार हुआ। इस पत्र में स्वामी विद्यानन्द जी ने प्रो. वेदव्यास जी के वेद, ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज विरोधी मन्तव्यों का उल्लेख करते हुए उनसे अनुरोध किया था कि क्योंकि आपकी ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओं मे आस्था नहीं है, इसलिए आपको स्वच्छतापूर्वक आर्य समाज का परित्याग कर देना चाहिए। प्रो. वेद व्यास जी के सन् 1933 से 1987 तक के लेखों के आधार पर उनकी मान्यताओं की ऋषि दयानन्द की मान्यताओं से तुलना करते हुए स्पष्ठन: सिद्ध किया गया था कि दोनों मे 3 व 6 का सम्बन्ध होने से प्रो. वेदव्यास जी ने का आर्य समाज में कोई स्थान नहीं है।

सबसे पहले सन् 1933-34 मे लिखी अपनी पुस्तक Ancient India में श्री वेद व्यास जी ने ऋषि दयानन्द की मान्यताओं के विरुद्ध लिखा था। यही विचार उन्होंने 1950 के आस-पास मोती लाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित अपनी रचना Destruction of 'Harappa' में दुहराये। 1977 में पेरिस में हुई Warld Conference of Sanskrit Scholars मे और फिर 1981 में बनारस में हुई विद्वद् गोष्ठी में उन्होंने वेद के विषय में दयानन्द के विपरीत पाश्चात्यों की विचारधारा का प्रचार किया। यह सब 1987 में डी. ए. वी. द्वारा प्रकाशित Felicitations (अभिनन्दन ग्रन्थ) में लिखे गये स्वयं उन्हीं के लेखों से सिद्ध है। सत्यार्थ प्रकाश में प्रतिपादित महात्मा हंसराज जी द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति का परित्याग कर लार्डमेकाले की इच्छानुसार English Medium Co-educa-tional Public Schools खोलकर उनमें लड़के-लड़कियां तैयार करने लगे जो कि देखने में (क्योंकि चेहरा बदला नहीं जा सकता) भारतीय रह गये। अन्यथा बोल-चाल, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार आदि की दृष्टि से पूरे अंग्रेज या ईसाई बन गये हैं। डी ए. वी. द्वारा *प्रकाशित* मासिक 'The Young World' में समय-समय पर प्रकाशित लेखों द्वारा भी इसी प्रकार के दूषित घृणित तथा मिथ्या एवं आर्य समाज विरोधी विचार फैलाये जा रहे हैं। यह 'Young world' लाखों की संख्या में छप कर घर-घर पहुंचाया जाता है। और यह सब प्रो. वेद व्यास जी की आंखों के सामने उनके निर्देशन में हो रहा है।

आर्य समाज में उच्च पदस्थ किसी व्यक्ति का निरन्तर 60 वर्ष से उसी की विचारधारा के विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला प्रचार करते रहना आर्य समाज के लिए खुली चुनौती है आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाओं में एतद्विषयक लेख प्रकाशित होने के बाद वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने जून 1989 में प्रो. वेद व्यास जी के नाम पत्र लिखकर इन बातों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। किन्तु श्री वेदव्यास जी ने, उसका उत्तर देना तो दूर, उसकी पावती स्वीकार करने के सामान्य शिष्टाचार का पालन करना भी आवश्यक नहीं समझा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने प्रो. वेदव्यास जी को अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ की चुनौती भी दे डाली।

बैठक में गत एक वर्ष में प्रचार सामग्री के अतिरिक्त स्वामी विद्यानन्द जी तथा श्री राम नाथ सहगल के बीच हुए पत्र व्यवहार पर भी विचार किया गया। पत्र व्यवहार से स्पष्ट है कि श्री सहगल जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी गई बातों में से किसी एक का उत्तर भी देने का साहस नही किया। बातों ही बातों में बात को टालने का प्रयास करते रहे वैदिक यति मण्डल की निश्चत सम्मति है कि ऋषि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के विरुद्ध प्रचार करने में स्वतन्त्र नहीं हैं। इसलिए संसार भर के आर्य सन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों से निर्मित वैदिक यति मण्डल—

1. प्रो. वेदव्यास को आर्य समाज और उसके द्वारा संचालित संस्थाओं में किसी भी प्रतिष्ठित पद के लिए अयोग्य घोषित करता है।

2. आर्य जनों, आर्य समाजों, संस्थाओं, प्रान्तीय सभाओं से अपील करता है कि वे प्रो. वेदव्यास जी के वेद और ऋषि दयानन्द विरोधी अभियान को समाप्त करने के लिए अपने-अपने स्तर पर आपेक्षित कार्यवाही करें जिससे आर्य समाज में रहते किसी व्यक्ति को आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध प्रचार करने का साहस न हो।

3. सार्वदेशिक सभा से यतिमण्डल अनुरोध करता है कि जिस प्रकार अतीत में समाज के सिद्धान्तों के विरोधी पं० भीमसेन शर्मा, पं० अखिलानन्द, स्वामी सत्यानन्द, पं० विश्वबन्धु, स्वामी विद्यानन्द विदेह आदि के विरुद्ध सार्वदेशिक स्तर पर आदेश दिए गये थे, उसी प्रकार प्रो. वेदव्यास जी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करें।

4. स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी से अनुरोध करता है वे सार्वदेशिक सभा की शिघ्र कि सभा की अगली बैठक में इस विषय को विचारार्थ प्रस्तुत किया जाए और इसके अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास करें।

5. स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा प्रो. वेदव्यास जी को 8 जुलाई 1990 को लिखे गये पत्र को बड़ी संख्या में देश भर में वितरित किया जाये।

6. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर समस्त सन्यासियों, वानप्रस्थियों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों, विद्वानों व उपदेशकों का एक सम्मेलन किया जाये।

—स्वामी सुमेधानन्द
मंत्री, वैदिक यति मण्डल

आर्य समाज मन्दिर सुलतानपुर लोधी का निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक 1-7-90 को रविवारीय सत्संग उपरान्त आर्य समाज मन्दिर व आर्य माडल हाई स्कूल सुलतानपुर की प्रबन्धक समिति के नए वर्ष का निर्वाचन सम्बन्धी कार्यक्रम श्री द्वारका दास जी चावला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मत्ति से श्री आनन्द किशोर पसरीचा संस्था के नये प्रधान चुने गए।

तदोपरान्त सभी उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मत्ति से प्रधान जी को यह सर्वाधिकार दिया कि निर्वाचित प्रधान श्री आनन्द किशोर पसरीचा अपनी कार्यकारिणी (प्रबन्धक समिति) का अतरंग का गठन स्वयं करें। उन द्वारा गठित प्रबन्धक समिति निम्न प्रकार है—

1. प्रधान व मैनेजर—श्री आनन्द किशोर पसरीचा।

2. उप-प्रधान—श्री डा० नरेश चावला—

3. महामन्त्री—श्री तिलक राज सेठी।

4. मन्त्री—श्री वीरेन्द्र कुमार पसरीचा।

5. कोषाध्यक्ष—श्री अविनाश चन्द्र चावला।

6. पुस्तकाध्यक्ष—श्री चमन लाल सेठी।

7. विद्यालय निरीक्षक—श्री मा० सागर चन्द ठुकराल।

अकाउन्ट कमेटी—

1. अध्यक्ष श्री द्वारका दास चावला।
2. श्री नरेश चावला।
3. श्री सागर चन्द ठुकराल।

अन्तरंग सदस्य—

1. श्री डा० लाल चन्द पसरीचा
2. श्री डा० यश राज भुटानी
3. श्रीमति विश्वरूपा चावला
4. श्री सत्यपाल नरूला
5. श्री सुरेन्द्र कम्बोज।

मलेर कोटला में आर्य युवक सभा की स्थापना

आर्य समाज मलेर कोटला में आर्य युवक सभा की स्थापना हेतु सात दिवसीय वेद प्रचार का कार्यक्रम 10 सितम्बर से आरम्भ किया गया जिसमें यज्ञ भजन एवं प्रवचन प्रात: 6-30 से 8-00 बजे तक रात्रि वेद कथा 8-30 से 10-00 बजे तक महात्मा प्रेम प्रकाश जी के सान्निध्य में हुआ। महात्मा जी के प्रवचनों का जनता पर काफी अच्छा प्रभाव रहा।

मुख्य समारोह 16 सितम्बर को प्रात: 7-30 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षता महात्मा प्रेम प्रकाश ने की। श्री रोशन लाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब एवं श्री हरीश शर्मा प्रिंसीपल डी. ए. वी. स्कूल मलेर कोटला समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री रोशन लाल शर्मा ने नवयुवकों के चरित्र निर्माण, उन्हें राष्ट्र निर्माण के कार्यों में रचनात्मक कार्य करने, हिन्दी को पंजाब में दूसरी भाषा का दर्जा देने पर बल दिया। श्री शर्मा ने ज्योति प्रज्वलित करके आर्य युवक सभा की स्थापना की, इस अवसर पर श्री ज्ञान चन्द आर्य प्रधान, श्री मुकेश गोयल मन्त्री, श्री जितेन्द्र गर्ग कोषाध्यक्ष चुने गये। इस मौके पर आर्य समाज के प्रधान श्री उप्पल ने आर्य समाज की ओर से आर्य युवक सभा पंजाब को 501/- रुपये भेंट की गई।

जिला संगरूर के प्रतिष्ठित आर्य कार्यकर्ताओं, नवयुवकों, स्थानीय संस्थाओं को उनके द्वारा समाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने शील्ड एवं वैदिक साहित्य भेंट करके सम्मानित किया। मंच का संचालन श्री राधे श्याम ने किया। इस समारोह को सफल बनाने के लिए श्री रमेश कौशल, सतपाल तथा अन्य सदस्यों ने परिश्रम किया।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का त्रिवार्षिक चुनाव

(4 नवम्बर रविवार 1990 को दोपहर बाद तीन बजे)

स्मारक ट्रस्ट के चुनाव को तीन वर्ष पूर्ण हो चुके हैं अत: ट्रस्ट के सभी आजीवन सदस्यों (ट्रस्टियों), 1000) रुपये से ऊपर स्थिरनिधि संस्थापकों से निवेदन है कि वे समय पर उपस्थित होकर तीन वर्ष के लिए अधिकारियों का चुनाव करें।

प्रधान
हरिवंशलाल शर्मा

मन्त्री
[illegible]

डब्ल्यू. एल. आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल नवांशहर की मेधावी छात्राएं

डब्ल्यू. एल. आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर की तीन छात्राओं ने 10+1 स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में 100 में 100 तथा 97 प्रतिशत अंक लेकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

कु. सुखविन्द्र सैनी सुपुत्री श्री त्रिलोक नाथ जी ने 100 में 100 अंक प्राप्त किए, कु. प्रवेश सुपुत्री श्री जगन्नाथ श्री तथा कु. वनिता सुपुत्री श्री राम लाल जी ने 100 में से 97 सत्तानवे अंक प्राप्त किए। हम आर्य शिक्षा परिषद पंजाब व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से स्कूल की प्रबन्ध समिति व प्रिंसीपल तथा पढ़ाने वाली अध्यापिकों को बधाई देते हैं।

—अश्विनी कुमार शर्मा रजिस्ट्रार

कुमार सुखविन्दर सैनी

कुमारी प्रवेश

कुमारी वनिता

जिला आर्य सभा होशियारपुर का गठन

7-10-90 रविवार प्रातः 11 बजे जिला होशियारपुर के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक बैठक आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप में श्री आशानन्द जी आर्य संगठन मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रधानता में हुई जिस में तलवाड़ा, गढ़शंकर, गढ़दीवाला, बलाचौर, हरियाणा, मुकेरियां, पन्जोड़ा, हाजीपुर के 40 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगठन मन्त्री जी ने विस्तारपूर्वक बताया कि जिला आर्य सभा के गठन में जिला में आर्य समाजों का आपस में तालमेल बढ़ेगा और जिला में वैदिक धर्म का प्रचार तेजी से होगा। बहुत से प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे सर्वसम्मति से जिला आर्य सभा का गठन करना स्वीकार हुआ और निम्न चुनाव हुआ।

प्रधान—श्री मनोहरलाल तलवाड़ा

उप-प्रधान—श्री वेद प्रकाश गढ़शंकर, श्री राजकुमार गढ़दीवाला, श्री प्रमार जी मुकेरियां।

महा-मन्त्री—श्री जगदीश मित्र होशियारपुर।

मन्त्री—श्री गुरदेव सिंह बलाचौर, श्री मगन बिहारी जी गढ़शंकर, श्री खुशी राम जी हरयाना।

कोषाध्यक्ष—श्री अमर नाथ तलवाड़ा।

अन्तरंग सदस्य—श्री कृष्ण सिंह, डा० राम स्वरूप पन्जोड़ा, श्री रामप्रकाश हाजीपुर।

इसके अतिरिक्त प्रधान जी को और अन्तरंग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप की ओर से जलपान तथा भोजन का अति उत्तम प्रबन्ध था।

—आशानन्द आर्य

पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन

समस्त आर्य जगत को यह जानकर अत्याधिक हर्ष होगा कि वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष वीत राग सन्त पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन आगामी दिसम्बर मास में सार्वदेशिक सभा द्वारा किए जा रहे आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर समारोहपूर्वक किया जाएगा। पूज्य स्वामी जी महाराज के अभिनन्दन में जो धन एकत्रित होगा उससे शुद्धि, वेद प्रचार, साहित्य प्रकाशन, निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति एवं रुग्ण व अशक्य अवस्था में साधुओं व प्रचारकों की सेवा एवं सहायता में व्यय किया जाएगा।

अतः आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाओं, आर्य समाजों एवं पूज्य स्वामी जी महाराज के श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य के लिए दिल खोलकर सहयोग करने की कृपा करें। धन की राशि चैक, ड्राफ्ट या मनिआर्डर द्वारा निम्न पतियों को भेजें।

1. श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज गुरुकुल झज्जर, जिला रोतक (हरियाणा)
2. श्री स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती आर्य समाज, श्री गंगानगर (राजस्थान)
3. श्री आचार्य हरिदेव जी दयानन्द वेद विद्यालय, 119 गौतमनगर, निकट यूसुफ सराय नई दिल्ली—49

निवेदक—
स्वामी ओमानन्द सरस्वती
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में वेद प्रचार सप्ताह

24 सितम्बर से 30 सितम्बर 90 तक बड़े उत्साह से मनाया गया जिस में श्री पूर्णानन्द जी ब्रह्मचारी आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की देखरेख में चतुर्वेद शतक के मन्त्रों द्वारा यज्ञ हुआ। प्रातः यज्ञ के पश्चात श्री जगत शर्मा भजन गायक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मनोहर भजन होते थे तथा सायंकाल भी भजनोपरान्त ब्रह्मचारी जी के प्रवचन होते थे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 30 सितम्बर को प्रातः 9-30 पर हुई। जालन्धर की दूसरी समाजों के भाईयों ने भी सम्मिलित होकर सहयोग दिया। सबके सहयोग से वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन सफल रहा। जालन्धर के प्रसिद्ध दानवीर श्री हरवंस लाल शर्मा विशेष बधाई के पात्र हैं जो सदा ही इस समाज को हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं। अन्त में सब के धन्यवाद तथा शान्ति पाठ के साथ वेद प्रचार समाप्त का समापन हुआ। बाद में सभी अभ्यागतों का चाय, यज्ञ, प्रसाद से स्वागत किया गया।

—नरेश कुमार मन्त्री

दीनानगर में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी दिवस

7-10-90 को आर्य समाज दीनानगर में डा० हरिदास जी की अध्यक्षता में पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने भाग लिया। अन्त में प्रथम श्री रामचन्द्र जी शास्त्री प्रथम वर्ष दयानन्द मठ दीनानगर और द्वितीय श्री योगराज जी शास्त्री द्वितीय वर्ष तथा श्री राजवलिजी प्राज्ञ को तृतीय स्थान प्राप्त होने पर प्रधान जी ने आर्य समाज की ओर से विजयताओं को पारितोषिक दिये। प्रिंसीपल गन्धर्व राज जी ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जी इतनी छोटी आयु में शंकराचार्य की भान्ति कितना कार्य कर गए। हमें भी मिलकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए तभी पण्डित गुरुदत्त जी का जन्म दिन मनाना सफल होगा।

(पृष्ठ 5 का शेष)

तरह से सुव्वा-सुव्वा हो इन पारिवारिक कर्त्तव्यों को निभाते हुए साथ-ही साथ जीवन की चर्या में ऐसा समन्वय करे कि जीवन का कोई भी पक्ष अधूरा न रहे। सब में सदा सन्तुलन बना रहे।

हां, जैसे हर मिठाई में अपने-अपने अनुपात के अनुरूप चीनी का स्थान होता है जो अनेक खाद्यीय पदार्थ में अपने अपने अनुपात के अनुरूप ही नमक होता है। वहां इनका सन्तुलन असन्तुलित हुआ, वहीं वह वस्तु बे-स्वादी हो जाती है। ठीक इसी प्रकार जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए भिन्न-भिन्न तत्त्वों की अपेक्षा होती है। इन सब का संयोजन अत्यन्त आवश्यक है।

अतः अब नारी में भी आत्मा है, तो उस आत्मा के विकास के लिए योजना को अपनाना आवश्यक हो जाता है।

आवश्यक सूचना

आर्य समाज के महाधन, अनेक शिक्षण-संस्थाओं के जनक एवं प्रबन्धक, सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उप-प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति, आर्य महा विद्यालय किरठल के आचार्य संसद सदस्य, सम्राट, आर्योदय, जाग्रत-हरियाणा, आर्य मर्यादा और सार्वदेशिक पत्रों के सम्पादक स्वर्गीय पं० रघुवीर सिंह शास्त्री का जीवन-चरित्र लिखने का दायित्व डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण एम० ए०, पी० एच० डी० को सौंपा गया है।

शास्त्री जी के निकट सम्पर्क में रहने वाले समस्त महानुभावों से प्रार्थना है कि शास्त्री जी से बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख डा० सुरेन्द्र सिंह को यथाशीघ्र भजिवाने का प्रबन्ध करें। कृपया इस बात का ध्यान रखें कि जो भी संस्मरण भेजे जाए उनसे शास्त्री जी की प्रतिभा, उनके गुणों व क्षमता पर समुचित प्रकाश पड़ना चाहिए। सामग्री संक्षेप में भेजी जाए लेकिन वह ठोस हो।

आर्योदय, जाग्रत हरियाणा और सार्वदेशिक आदि पत्रों की उनके सम्पादन-काल की पुरानी फाइलें यदि किसी सभा, संस्था या सज्जन के पास हों तो कृपया सूचित करें। आवश्यक सामग्री का चयन करने के बाद ये फाइलें आभार सहित लौटा दी जाएगी अथवा व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर वांछित सामग्री नोट कर ली जाएगी।

उपर्युक्त विषय पर समस्त पत्र-व्यवहार, सहयोग व रचनाएं आदि भेजने का सम्पर्क सूत्र निम्न प्रकार है :—

डा० सुरेन्द्र सिंह कादियान
वार्ड 454/455 कैम्प नं० 1,
नागलोई, दिल्ली—110041

स्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालंधर का चुनाव

सर्व सम्मति से केन्द्रीय आर्य स्त्री समाज जालन्धर का निम्नलिखित चुनाव तिथि 26-9-90 को किया गया—

प्रधाना—श्रीमति कृष्णा जी आनन्द
उपप्रधाना—श्रीमति सन्तोष जी सूरी
मंत्राणी—श्रीमति रूपरानी जी आर्या
उपमंत्राणी—श्रीमति सुदर्शन जी
कोषाध्यक्ष—श्रीमती राज रानी जी रत्ती
सह-कोषाध्यक्ष—श्रीमति लीला वती जी बावला

अन्तरंग सभा के सदस्य—
श्रीमति दमयन्ती जी
श्रीमति विद्यावती जी दुग्गल
श्रीमति प्रकाशवती शर्मा
श्रीमति कृष्णा जी ज्योति
श्रीमति विमला जी कोहली
श्रीमति स्वर्णा जी शाही

—अरुणा सोन्धी
पूर्व मन्त्राणि

नवांशहर में खूनदान कैम्प

गत दिनों एक खूनदान कैम्प दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर के प्रिंसीपल एच०एल०तनेजा की देख रेख में Blood Donation Council की ओर से लगाया गया, जिसका शुभारम्भ श्री डी०पी० दत्त, अधिष्ठाता साहित्य विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने कर कमलों से किया। इस कैम्प में जहां स्कूल के स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर खून दान दिया वहां स्कूल के प्रिंसीपल तनेजा स्वयं और बाकी बाहर की जनता से पीछे नहीं रहे। स्कूल ने इस कैम्प को लगाकर समाज की बहुत ही आड़े समय में सेवा की है क्योंकि लुधियाना आदि शहरों में Blood Bank dry पड़े थे। इस शुभ काम की कामयाबी का श्रेय श्री सुरिन्द्र सिंह तुड़, चेयरमैन श्री सुलक्षण सरीन ऐडवोकेट, श्री कालिया जी और उनके सहयोगियों के साथ साथ स्कूल प्रबन्ध कर्तृ सभा के मैनेजर श्री वेद प्रकाश सरीन, प्रिंसीपल तनेजा और स्कूल स्टाफ और विद्यार्थियों को है।

आर्यसमाज नवांशहर की गतिविधियां

1. गत दिनों आर्य समाज नवांशहर की ओर से आंखों के रोगों का कैम्प लगाया गया। इस कैम्प का उद्घाटन श्री धर्म प्रकाश जी दत्त ने किया। डा० एच०एल०गिल एम०बी० बी० एस० एम० डी० ने मरीजों का निरीक्षण किया तथा औषधि आदि दी। इस कैम्प से 281 मरीजों ने लाभ उठाया। मरीजों को फ्री दवाईयां, चाय, बिस्कुट आदि दिए गए।

2. हिन्दी दिवस के अवसर पर यज्ञ के पश्चात् ला० वेद प्रकाश जी लखोईया प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में कार्यवाही सम्पन्न हुई। श्री कृष्ण गोपाल शर्मा, श्रीमती प्रेम-लता भुच्चर, श्रीमती इन्दुमति गौतम, श्री पं० देवेन्द्र कुमार एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल ने अपने विचार हिन्दी के सम्बन्ध में प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर 3 हिन्दी प्रेमियों श्री प्रि० धर्म प्रकाश जी दत्त, श्री सन्त कुमार जी जैन, कुमारी सरोज सरीन एम०ए० को सम्मानित किया गया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी दिवस

आर्य समाज नवांशहर की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार दिनांक 7-10-90 रविवार को आर्यसमाज मन्दिर में लाला वेदप्रकाश जी लखोइया प्रधान आर्य समाज नवांशहर की अध्यक्षता में पं० गुरु दत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया।

पहले हवन यज्ञ एवं कीर्तन हुआ। तत्पश्चात श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मन्त्री आर्य समाज नवांशहर ने तथा श्री धर्म प्रकाश जी दत्त साहित्य विभाग अधिष्ठता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पण्डित जी की जीवनी पर बड़ा ओजस्वी एवम् मार्मिक प्रकाश डाला। इस दिन की महत्ता को और चार चांद लगाने हेतु आर्य समाज की ओर से नवांशहर की सभी शिक्षण संस्थाओं के विकलांग बच्चों को, जिनकी संख्या बीस के लगभग थी, सम्मानित किया गया।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

73920

वर्ष 22 अंक 32, कार्तिक 19 सम्वत् 2047 तदनुसार 1/4 नवम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

हम युद्धों में विजयी बने

ले०—श्री पंडित सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, एम० ए० डी. लिट.

ओ३म् ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।
मह्यम् नमन्ता प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम। अ० 5-3-1।

हे अग्ने, तेजस्वी ईश्वर (विहवेषु) युद्धों में (मम वर्चः अस्तु) मेरा तेज होवे। (वय) हम (त्वा) तुझे (इन्धाना) प्रदीप्त करते हुए, (तन्व पुषेम) अपने शरीर को पुष्ट करें। (चितस्रः) चारों (प्रदिशः) दिशायें (मह्य) मेरे सामने (नमन्ता) नमन हो (त्वया अध्यक्षेण) तुझ अध्यक्ष के साथ (पृतनाः जयेम) युद्धो मे विजयी बनें।

वीरता मानवो का सर्वोत्कृष्ट गुण है। वीरता की पताका प्रेम, ज्ञान, युद्ध और सामाजिक कार्यों में फहराया करती है। परन्तु वीरता का आधार परमेश्वर की भक्ति है। हमारी आत्मा मे एक बड़ी आलौकिक शक्ति भरी हुई जिसका विवेचन नहीं किया जा सकता, पर अनुभव किया जा सकता।

मान लीजिए, हम यह विचार करें कि हम नाचीज, तुच्छ, क्षुद्र और हीन हैं तो हमारी आत्मा के रजिस्टर में ये सब बातें लिख ली जायेंगी और उसका परिणाम यह होगा कि हम सचमुच वैसे ही बन जाएंगे। यदि हम यह निश्चय-पूर्वक विश्वास अपने हृदय मे बैठा दें कि विश्व की सम्पूर्ण उत्तम भावनाएं मुझ में हैं और मैं उनको प्राप्त करके रहूंगा, चाहे ही मुझे इसके लिए आत्मोत्सर्ग भी क्यों न करना पड़े तो मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि यह वीरता जीवन के मार्ग मे आने वाली सम्पूर्ण कठिनाइयों और पराजयों को समाप्त कर देगी। यदि हमारा यह विश्वास है कि शक्ति मेरी है, स्वास्थ्य मेरा है आधि, व्याधि, निर्बलता और विरोध से मेरा कोई मतलब नहीं है तो मानो हम मन मे उत्पादक और निश्चयात्मक शक्ति उत्पन्न कर रहे होंगे जो हमारी सम्पूर्ण अभिलाषाओं, सकल मनोरथों एव ऊंचे जीवनोद्देश्यों को परिपुष्ट कर सफल करेगी। बिना घबराये जीवन के लक्ष्यो की ओर बढ़ना ही तो वीरता है। वह एक ऐसी वस्तु है जिसे देखकर दूसरे स्वय प्रभावित होते हैं। शत्रु उस प्रभाव से दूर भागते हैं, मित्र उस प्रभाव से श्रद्धान्वित बनते हैं। उदासीन बनते नहीं। इसलिए मन्त्र मे अग्नि-स्वरूप परमात्मा से प्रार्थना की गई कि हे तेजस्वी ईश्वर, युद्धों में मेरा तेज हो। युद्ध दो राष्ट्रो के बीच होते हैं। युद्ध समाज मे होते हैं, युद्ध आत्मा मे होता है। युद्ध किसी भी क्षेत्र मे हो, उसमे विजय प्राप्त करने के लिए पहला आवश्यक गुण ईश्वर-भक्ति और विश्वास है। ईश्वर में विश्वास रखता हुआ मनुष्य विजयी बनने के लिए अपनी आत्मोन्नति करे। परन्तु आत्मा की उन्नति के लिए शरीर का विकास आवश्यक है। अतः इस मन्त्र में कहा गया है कि हम अपने हृदय मे परमेश्वर को स्मरण करते हुए अपने अपने शरीर को पुष्ट करें। 'नायमात्मा बल-हीनेन लभ्यः' निर्बल शरीर इस आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकता। धर्माचरण के कार्यों के लिए, जिनमे वीरता का प्रभाव आवश्यक होता है, बिना शरीर के विकास के नही हो सकता। कहा गया है : शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम्।

जब शरीर में वीरता होगी, हृदय में परमेश्वर की भक्ति होगी तब हममे पराक्रम स्वतः आयेगा और उस पराक्रम की बदौलत हम ससार की शक्तियो का, उन शक्तियो का जो हमे दुष्टता की ओर ले जाती हैं, सामना करने को उद्यत हो जायेंगे उस समय चारो दिशायें हमारी वीरता से नत हो जाएगी और विश्व मे हमारा जय-जयकार होने लगेगा।

आर्यो! वेद के उपासको! सोचो, आज राष्ट्रीय सकट के समय देश और जाति के लिए क्या यह वीरता हम मे नही होनी चाहिए? यही वीरता है जो स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय मे जब आई तो गोरो की बन्दूक उनके सामने झुक गई। यही वीरता है जो जब स्वामी दयानन्द के हृदय मे आई तो दुनिया उनके विरोध में रह कर भी उनका कुछ न बिगाड सकी और अन्त मे उसने उनका जय-जयकार ही किया। अत. हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु हमे शक्ति, वीरता और साहस प्रदान कर, ऐसा साहस जिसके सामने पहाड झुक जाए, समुद्र काप उठे और हम अपने राष्ट्र का महान् यश फैला सकें।

अबल के बल केवल भगवान्

रचयिता—श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा, डी०लिट०,

मैं मतिहीन, दीन, दुर्मति अति, अस्थिर अघी, अज्ञान
तुम करुणा के कोष दयामय, त्राण, प्राण, कल्याण।

सत्य, न्याय, महिमा से मण्डित, तुम विवेक विज्ञान,
शक्ति, भक्ति, अनुरक्ति तुम्ही हो तुम्हीं त्याग, बलिदान।

अशरण शरण, भक्त-वत्सल तुम, तुम जीवन प्राण,
योगी, यती, सती, गति-मति, तुम समाधि निर्वाण।

सकट मे ध्रुव धैर्य तुम, सुख मे तुम वरदान,
तर जाते हैं भक्त तुम्हारे, गा-गा कर गुण गान।
अबल के बल केवल भगवान्॥

क्रान्तिकारी पं० किशोरी लाल

ले०—श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार 145/4 सेन्ट्रल टाऊन जालन्धर

पं० किशोरी लाल जी का स्वर्गवास थोड़े दिन हुए एक दुर्घटना में हो गया वे एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे परन्तु आजादी के बाद वह कम्युनिस्ट दल के प्रमुख प्रचारक और कार्यकर्त्ता बन गए थे। आजकल वे जालन्धर के यादगार हाल में अन्य कम्युनिस्ट नेताओं के साथ रहते थे।

बहुत थोड़े सज्जनों को इस बात का परिचय है कि पंडित किशोरी लाल जी का आर्य समाज के साथ भी सम्बन्ध था। उनके पिता डाक्टर हर प्रसाद जी मिल्टरी में डाक्टर थे वे क्वेटा (बलोचिस्तान) के पास के एक छोटे से नगर पशीन में आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता थे। पं० किशोरी लाल जी चार भाई थे। पं० सत्यपाल, प० चन्द्रकेतु, प० किशोरी लाल और श्री बनवारी लाल। श्री बनवारी लाल जी यौवन के प्रारम्भ में ही बर्मा चले गये थे, फिर इनका पता नहीं चला। पं० सत्यपाल जी विद्यालकार तथा पं० चन्द्र केतु विद्यालकार गुरुकुल के स्नातक थे। प० चन्द्र केतु विद्यालंकार अब भी गुरुकुल में कार्यरत हैं। सब भाईयों में केवल प० चन्द्र केतु विद्यालकार का ही विवाह हुआ था। अन्य तीनों भाईयों ने विवाह नहीं किया।

पंडित सत्यपाल विद्यालकार आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक थे। जिन दिनों प० किशोरी लाल ने क्रान्तिकारियों के सरदार भगत सिंह के दल में प्रवेश किया, पं० सत्यपाल जी भी क्रान्तिकारी विचार के बन गए थे। वे गुरुदत्त भवन लाहौर में रहते थे। पिस्तौल का अभ्यास किया करते थे। एक दिन उन्होंने गुरुदत्त भवन के सामने के लैम्प पोस्ट का बल्व पिस्तौल से फायर कर के तोड़ दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने इस भय से कि वे पुलिस की पकड़ में न आ जायें उन्हें अफ्रीका भेज दिया। वे वहां अनेक वर्ष प्रचार करते रहे। पर स्वभाव नहीं बदला अफ्रीका के भयंकर माओ माओ आन्दोलन से सम्बन्ध रखने के कारण उन्हें फिर सब कुछ वहां ही छोड़कर हवाई जहाज द्वारा भारत आना पड़ा। जालन्धर में वे बहुत दिन रहे। यहां उनके मित्र और सम्बन्धी थे वे मस्त-मौला रूप के थे। पर व्याख्यान अद्भुत देते थे। उनका भी स्वर्गवास हो चुका है।

प० किशोरी लाल जी के पिता बंसीधर जी ब्राह्मण थे। क्वेटा में स्कूल में अध्यापक थे। वे हमारे घर प्राय: आते रहते थे। मेरी माता जी की उन पर बहुत श्रद्धा थी। ब्राह्मण होने के नाते उन्हें भोजन के लिए बुलाया करती थी। 1928-29 में वे लाहौर में काम करते थे। पंडित किशोरी लाल स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर लाहौर डी.ए.वी. कालेज में प्रविष्ट हुए। गुरुदत्त भवन में रहते थे। उनके पिता जी को सूचना मिली कि किशोरी लाल नियमित रूप से कालिज नहीं जाते। उन्होंने मुझे कहा कि मैं उनका ख्याल रखूं। पंडित किशोरी लाल वस्तुत: कई-कई दिन कालिज और गुरुदत्त भवन से अनुपस्थित रहते थे। उन्हीं दिनों सरदार भगतसिंह द्वारा सांडर्स वध का उपक्रम हुआ और पकड़ धकड़ शुरू हो गई। पंडित किशोरी लाल को अपने कुछ साथियों के साथ लाहौर स्टेशन के पास रैफ्रिकल इंस्टीच्यूट के तहखाने में बम के सामान के साथ पकड़ा गया, ऐसा समाचार पत्रों में आया। पंडित किशोरी लाल के चचेरे भाई श्री बलदेव जी की अनारकली में दुकान थी। उनके साथ मैंने क्रान्तिकारियों के मुकद्दमें को देखने का प्रयत्न किया पर सफल न हो सका।

जब मैं 1930-1931 में मिण्टगुमरी डी.ए.वी. स्कूल में कार्य करता था मुझे पता चला कि पंडित किशोरी लाल सैंट्रल जेल में है। हमारे सम्बन्धी प० सलामत राय जी असिस्टैण्ट जेलर थे उनकी कृपा से मैं पं० किशोरी लाल जी से जेल में मिला।

अपने साथियों के सम्पर्क के कारण पं० किशोरी लाल के विचार समाजवादी हो गए थे। धार्मिक आस्थाओं के वह विरोधी थे। सम्भवत: स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही वे जेल से बाहर आ सके। जालन्धर में मुझे उनसे मिलने का सुयोग कई बार मिला।

थोड़े ही दिन हुए मैं उनसे यादगार हाल में मिलने गया था। वे अस्वस्थ थे, यह नहीं पता था कि उनका शीघ्र एक दुर्घटना में स्वर्गवास हो जाएगा।

आर्य समाज आनन्द नगर राजपुरा टाऊनशिप में यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर राजपुरा टाऊन में स्वामी सदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ 4-10-90 से 14-10-90 तक 81200 आहुतियों के साथ सम्पन्न हुआ।

जिसकी पूर्णाहुति 14-10-90 सायं 5 बजे डाली गई। टाऊन की जनता पर इसका अच्छा प्रभाव रहा।

—वेदपाल आर्य

स्वास्थ्य-सुधा

शहद और उसके प्रयोग

स्वास्थ्य बनाने वाली वस्तुओं में शहद का नाम सर्वप्रथम लिया जा सकता है भारत वर्ष में प्राचीन समय से ही शहद को बड़ा महत्व दिया जाता रहा है इसका प्रयोग औषधि के रूप में भी होता था और मिठास पैदा करने वाली वस्तु के रूप में भी अब भारत में दवा के रूप में इसका प्रयोग होता है, परन्तु भोजन अथवा मिठास पैदा करने वाली वस्तु के रूप में लोगों का झिकाव इस ओर नहीं। इसका कारण यह है कि एक तो शहद काफी मात्रा में उपलब्ध नहीं और दूसरे सफेद दानों वाली शुद्ध चीनी इसके मुकाबले सस्ती पड़ती है।

शहद के स्वास्थ्यवर्द्धक गुण

शहद साधारण गर्मी में एक स्वास्थ्यवर्द्धक पेय का कार्य करता है, परन्तु सर्दियों में यह दानेदार बन जाता है और छत्ते से निकलते हुए शहद के शुद्ध होने की भी यही पहचान है। काफी खोजबीन के उपरान्त विशेषज्ञ इस निर्णय पर पहुचे हैं कि सात औंस शहद में इतनी शक्ति होती है जितनी ढाई पौंड दूध में।

शहद की चिकित्सक विशेषतायें

शहद अपनी चिकित्सक विशेषताओं के लिए बहुत लोकप्रिय है। अब तो वैज्ञानिकों ने यह जांच करली है कि यह कीटाणुनाशक भी है आयुर्वेदिक तथा यूनानी औषधि-विज्ञान के अनुसार शहद का प्रयोग नजला जुकाम और खांसी के लिए लाभदायक है तथा जुकाम, बुखार तथा दूसरी अन्य बिमारियों को रोकता है। स्वभाव से गरम खुश्क तथा कफ-नाशक होता है, इसका प्रयोग पाचन-शक्ति को बढ़ाता है और कब्ज दूर करने में सहायक होता है। मोटे व्यक्ति को गरम पानी में मिला कर पीना चाहिए उनको लाभ पहुंचेगा। जाड़ों में शक्ति प्राप्त करने के इच्छुक शहद में घी मिलाकर सेवन करें, उन्हें लाभ पहुंचेगा। इस बात का ध्यान रहे कि शहद और घी का वजन एक-सा नहीं होना चाहिए क्योंकि बराबर होने से यह विष का कार्य करता है।

सर्दी लग जाने पर जिस प्रकार ब्रांडी प्रयोग किया जाता है, यदि उस समय शहद का चम्मच दिया जाये तो यह भी ब्रांडी के समान गुणों का प्रभाव दिखाएगा। सर्दी या कमजोरी के कारण जब हृदय की धड़कन घट-बढ़ जाये और रोगी का दम घुटता दिखाई दे तो केवल एक चम्मच शहद भी नवजीवन प्रदान करने की शक्ति रखता है यदि आंखें फूल गई हों आंखों में कोई घाव हो तो सलाई से शहद का सुरमा की तरह प्रयोग करना चाहिए बड़ी जल्दी रोग दूर हो जाएगा यदि जिह्वा पर गर्मी के कारण छाले पड़ जाये और खाना भी न खाया जाए तो बोरिक ग्लिसरिन में शहद मिला कर प्रयोग करने से लाभ होता है।

शहद रक्त को भी शुद्ध करता है। शरीर के सुधार करने के लिए तथा मेदे और आंतो के भयंकर घाव भी शहद के प्रयोग से ठीक हो जाते हैं। टाईफाईड और पेचिस जैसे रोग के किटाणु भी नष्ट हो जाते हैं हम कह सकते हैं कि शहद प्राचीन और अर्वाचीन युग का अमृत है जो मनुष्य को नया जीवन प्रदान करता है।

आर्य परिवार

ले०—स्वामी स्वरूपा नन्द सरस्वती दिल्ली

रहता जहां आर्य परिवार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
बसता रहे प्रेम का सरिता, आनन्द मय वातावरण रहता
अटूट रहे परस्पर प्यार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥1॥

पुष्प भांति सब बच्चे हंसते, प्रात: उठ कर करें नमस्ते,
नहीं कभी करते तकरार,, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥2॥

माता पिता सुत आज्ञाकारी, वैदिक धर्मी सत्य व्रतधारी
रहें सत्य असत्य विचार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥3॥

पति पत्नी बहिन अरु भाई, प्रभु चिन्तन करते हरषाई
वेद मंत्र ध्वनि की गुंजार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥4॥

चित्र दयानन्द, लेख राम के, श्रद्धानन्द, श्री कृष्ण, राम के
शोभायमान बने दीवार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥5॥

रहे पंच यज्ञों का ध्यान, आदर पाते जहां विद्वान।
अतिथि का होवे सत्कार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार ॥6॥

सम्पादकीय :—

पंजाब के आर्य भाईयों और बहनों से एक निवेदन

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में प्राय: पहले की तरह वेद प्रचार का कार्य करना कठिन होता जा रहा है। हमारी सब से बड़ी कठिनाई यह है कि हमारे पास न तो कोई उपदेशक है और न भजनोपदेशक है। दूसरे प्रान्तों से हमने उपदेशक लेने के लिए प्रयास किया, परन्तु कोई भी पंजाब में आने को तैयार न हुआ। यह भी आर्य समाज की वर्तमान स्थिति का एक अत्यन्त निराशा जनक रूप हमारे सामने प्रस्तुत करता है। एक वह समय था जब आर्य समाज के उपदेशक उन क्षेत्रों में जाकर काम किया करते थे, जहां उन्हें यह पता भी होता था कि वह अपने लिए एक बहुत बड़ा खतरा मोल ले रहे हैं। आज स्थिति यह है कि कोई उपदेशक पंजाब में आकर प्रचार करने को तैयार नहीं है। हम दावा यही करते हैं कि आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है जो देश में क्रान्ति पैदा करेगी, परन्तु यह क्रान्ति पंजाब से बाहर होगी, पजाब में नहीं होगी। परन्तु पंजाब से बाहिर भी जो हो रही है वह हम देख रहे हैं।

इस लिए मैं समझता हूं कि पंजाब के आर्य समाज को अपने प्रचार के कार्य को कोई नया रूप देना पड़ेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने इस स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् यही निश्चय किया है कि हम जन-कल्याण अभियान के द्वारा जनता तक पहुंचेंगे। इस लिए सभा ने यह भी निर्णय किया है कि आगे आने वाली सर्दियों में हम उन परिवारों तक पहुंचेंगे जो निर्धन और निस्सहाय हैं और जिनमें से कईयों के पास अपना तन ढांपने के लिए भी कपड़ा नहीं होता। इस वर्ष सभा ने 400 कम्बल, 500 स्वेटर और 100 शालें बांटने का निश्चय किया है। पिछले दिनों सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों को एक परिपत्र भेजा गया था कि वह हमें बताए कि उन्हें कितने कम्बल और स्वेटर चाहिएं। जिन-जिन आर्य समाजों के उत्तर आए हैं, उन्हें कम्बल और स्वेटर भेज दिए जाएंगे परन्तु इस शर्त पर कि वह आर्य समाज स्वयं भी गर्म कपड़े एकत्रित करके उन परिवारों में बांटें, जिन्हें इनकी आवश्यकता है। सभा अपना योगदान उसी स्थिति में दे सकती है, यदि आर्य समाजें स्वयं भी इसके लिए कुछ प्रयास करें। केवल सभा पर निर्भर रहने से काम न चलेगा। सभा कुछ सहायता ही कर सकती है लेकिन सारा बोझ नहीं उठा सकती।

यह पहली बार है कि सभा की ओर से एक ऐसा अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है, जिस पर 50 हजार रुपये से भी अधिक व्यय किया जा रहा है। जहां यह कम्बल आदि बांटे जाएं वहां उन लोगों में आर्य समाज का साहित्य भी बांटा जा सकता है। कुछ साहित्य सभा के पास पड़ा है और कुछ हम और मंगवा रहे हैं। इस प्रकार सामाजिक व धार्मिक अभियान के द्वारा हम उन परिवारों तक भी पहुंच सकते हैं, जहां अभी तक आर्य समाज नहीं पहुंचा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान श्री पं० हरबंस लाल जी शर्मा भी अपनी ओर से इस दिशा में बहुत कुछ कर रहे हैं। उन्होंने भी निर्धन परिवारों में बांटने के लिए कम्बल मंगवाए हैं। इस प्रकार और भी जो महानुभाव इस दिशा में कुछ कर सकें, मेरा उन से निवेदन है कि वह सक्रिय होकर जनता तक पहुंचें। इसके सिवाए और कोई साधन नहीं है। अब बड़े-बड़े उत्सव करके और बड़े-बड़े नेताओं के लैक्चर सुनकर लोग प्रभावित नहीं होते। अब तो जितना हमारा जन-सम्पर्क जनता के साथ अधिक होगा, उतना ही अधिक प्रचार भी होगा।

जो-जो आर्य समाज इस अभियान में योगदान दे, वह सभा को सूचित कर दे ताकि आर्य मर्यादा में उसे प्रकाशित किया जा सके। हमें यह समझ लेना चाहिए कि इस बार सर्दियों में हमने यही काम करना है कि जिनके तन पर कपड़ा नहीं है, उन्हें हमने कपड़ा पहुंचाना है। प्रचार की दिशा में यह पहला पग है जो पंजाब की आर्य जनता उठाएगी। अब लैक्चरबाजी का समय समाप्त हो चुका है। अब कुछ करके दिखाने का समय आ गया है।

—वीरेन्द्र

एक आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक 4 नवम्बर 1990 को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में प्रात: 10-30 बजे होगी निश्चित हुई है। सभी अन्तरंग सदस्य समय पर पधारने का कष्ट करें। इससे पूर्व प्रात: 10 बजे सभा की यज्ञशाला में यज्ञ होगा। इसके पश्चात् कार्यवाही आरम्भ होगी।

—अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट (सभा महामन्त्री)

धर्म को राजनीति की बांदी न बनाओ

राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के विषय में इस समय देश मे जो विवाद चल रहा है। उसमें तीन प्रश्न स्पष्ट रूप से हमारे सामने आ खड़े हुए हैं। एक यह कि धर्मनिरपेक्षता क्या है? दूसरा यह है कि धर्म या मजहब क्या है? और तीसरा यह कि क्या धर्म राजनीति के अधीन है? इन तीन प्रश्नों ने सारे देश के सामने एक ऐसी उलझन खड़ी कर दी है कि आज यह पता नहीं चल रहा कि वास्तविक समस्या क्या है।

इस सारे विवाद का एक पक्ष यह है कि जो लोग आज गले फाड़-फाड़ कर कह रहे हैं कि धर्म को राजनीति से अलग रखो, वो ही लोगों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं। वे स्वयं भी नही जानते कि धर्म क्या है। धर्म को राजनीति से अलग रखो यह आवाज दो तरफ से बड़े जोर से उठायी जा रही है। एक तो हमारे प्रधानमंत्री प्रतिदिन कहते हैं कि हमें प्रत्येक स्थिति में व प्रत्येक मूल्य पर धर्म निरपेक्षता की रक्षा करनी है और यह भी कहते हैं कि धर्म को राजनीति मे नहीं घसीटना चाहिए।

पूरे आदर और सम्मान के साथ प्रधान मन्त्री से पूछना चाहता हूं कि क्या उन्हें मालूम है कि धर्म किसे कहते हैं? प्रधानमन्त्री की आवाज मे सबसे अधिक जोर से अपनी आवाज हमारे कम्युनिस्ट मित्र मिलाने का प्रयास कर रहे हैं। कम्युनिस्ट एक ऐसा सम्प्रदाय है जो सदा ही धर्म से दूर रहा है जिन्हें बिल्कुल ही पता नही कि धर्म क्या है। वह भी कहते हैं कि धर्म को राजनीति से अलग रखो। इनके पितामह कार्लमार्क्स ने कहा था कि धर्म जनता के लिए अफीम का काम करता है परन्तु हम यह भी जानते हैं कि कई बीमारियों के इलाज में अफीम का भी प्रयोग होता है। सम्भवत: यही कारण है कि कम्युनिस्टों के तीर्थ सोवियत रूस में फिर से धर्म प्रचार की अनुमति दे दी गई है। यानि आज मिखाईल गोर्बाच्योव भी यह समझने लगे हैं कि धर्म या मजहब के बिना मनुष्य का कल्याण नहीं। जिस रूस के गिरजाघरो मे धर्म प्रचार पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था आज वहां उसकी अनुमति दे दी गई है और भारत के कम्युनिस्ट कहते हैं कि धर्म या मजहब को राजनीति से अलग रखो।

बहुत जोर दिया जा रहा है धर्म निरपेक्षता पर हमारे प्रधानमन्त्री तो इसके दीवाने है। अपने हर भाषण में इसका जिक्र करते हैं अब तो वह धर्म-निरपेक्षता के शहीद बनने को भी तैयार हैं। कहते हैं कि यदि धर्मनिरपेक्षता की रक्षा के लिए उन्हें प्रधान मन्त्री की पदवी से भी हटना पड़े तो वह इसके लिए भी तैयार हैं। क्या उन्होंने कभी यह जानने या समझने का प्रयास किया है कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ क्या है क्या उन्हें यह मालूम है कि जब 1950 मे आजाद भारत का नया विधान पहली बार लागू किया गया था उसमें जिन आदर्शों का जिक्र किया गया था इन्दिरा गांधी के समय जब विधान में संशोधन किया गया था उस समय धर्म निरपेक्षता का शब्द पहली बार इसमें संलिप्त किया गया था और हिन्दी में इसके लिए पन्थ निर्पेक्ष शब्द प्रयोग किये गए थे। इसका क्या अर्थ है? क्या विश्वनाथ प्रताप सिंह, हरकृष्ण सिंह सुरजीत या इन्द्रजीत गुप्ता यह बताने का कष्ट करेंगे?

क्या धर्म निरपेक्षता के यह अर्थ भी हैं कि किसी सम्प्रदाय जाति या वर्ग को उसके उन अधिकारों से भी वंचित किया जाए जो उसे न्याय के आधार पर मिलने चाहिए?

इसलिए वंचित कर दिया जाए कि किसी दूसरे वर्ग की यही मांग है। आज यदि राम जन्म भूमि के प्रश्न पर लाखों लोग अपने घरों से निकल कर बाहर आ गये हैं और बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार हैं तो उसका एक कारण यह भी है कि धर्म निरपेक्षता की आड़ में इस देश के हिन्दुओं को दबाया जा रहा है। इसका एक रोमांचित पक्ष यह भी है कि यह नहीं बताया जा रहा कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ क्या है कोई कहता है कि इसका अभिप्राय: है कि राजनीति में धर्म के लिए कोई स्थान नहीं है। कोई कहता है कि राजनीति और धर्म को एक-दूसरे से अलग रखो। कोई कहता है कि धर्मनिरपेक्ष समाज का अभिप्राय: यह है कि एक धर्म विरोधी समाज और सरकार ने इसका अर्थ निकाला है, पंथ निर्पेक्ष समाज।

पाठकगण। आप वर्तमान स्थिति और हास्यस्पद पक्ष को भी देखे कि आज धर्मनिरपेक्षता के पक्ष में एक ओर तो विश्वनाथ प्रताप सिंह बोल रहे हैं दूसरी तरफ विख्यात कम्युनिस्ट नेता हरकृष्ण सिंह सुरजीत धर्म निरपेक्षता का राग अलाप रहे हैं और तीसरी तरफ सिमरनजीत सिंह मान भी अपने आपको धर्म-निरपेक्ष कहते हैं। हरकृष्ण सिंह सुरजीत कहते हैं कि धर्म को राजनीति से अलग रखो और सिमरनजीत सिंह मान कहते हैं कि धर्म और राजनीति को एक दूसरे से अलग नहींकिया जा सकता और दोनों अपने आपको धर्मनिरपेक्षता के पक्षधर कहते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे देश में धर्म और धर्मनिरपेक्षता इन दोनों शब्दों का जिस प्रकार प्रयोग किया जा रहा है वह आपको किसी दूसरे देश में नहीं मिलेगा। जैसे कि मैंने ऊपर भी लिखा है कि अब रूस जैसा देश भी धर्म का सहारा लेने लग गया है और हमारे राजनैतिक नेता कहते हैं कि धर्म का नाम न लो। वो भूल जाते हैं कि गांधी, तिलक, अरविन्द, मालवीय, लाजपतराय, सावरकर,यह सब अपने-अपने धर्म के अनुयायी थे और किसी ने कभी यह न कहा था कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए। (क्रमश:)

—वीरेन्द्र

स्वामी अग्निवेश—आर्यसमाज के इतिहास को दूषित न करें

ले०—डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

उन्होंने तो यह बताया है कि वास्तव में पुराण नामधारी ग्रन्थ कौन से हैं और भागवत ब्रह्मवैवर्तादि प्रचलित अठारह पुराणों को 'पुराण' की संज्ञा क्यों नहीं दी जा सकती। इसी प्रकार वे देवी देवताओं के विरुद्ध नहीं लिखते अपितु बताना चाहते हैं कि वास्तव में देवी देवता हैं क्या? अल्प पठित का यही हश्र होता है। अच्छा होता आर्य समाज के नेता अथवा स्वयंभू प्रवक्ता बनने के पहले उक्त स्वामी जी कुछ अधिक स्वाध्याय कर लेते।

इसी प्रसंग मे स्वामी अग्निवेश महर्षि जी को हानि पहुंचाने वालों के बारे में और भी गलतब्यानी करते हैं। आपका कहना है कि किसी मुसलमान, सिख या जैन ने इन पर (स्वामी दयानन्द) हमला नहीं किया। (क्रान्ति धर्मी सितम्बर 1990 पृष्ठ 10) स्वामी दयानन्द के पुण्य शरीर को नष्ट करने के लिए किन किन ने, कब कब, कैसे कैसे हमले किए, यह जानने के लिए तो मेरी पुस्तक 'नवजागरण के पुरोधा' पढ़नी चाहिए। सत्य यह है कि स्वामी जी पर हमले सभी ने किए, कोई पीछे नहीं रहा। अब इनका ब्यौरा सुनिए—

(1) पौराणिक हिन्दुओं ने महाराज को मारने के अनेक प्रयास किए। यह तो स्वयं अग्निवेश जी मानते ही हैं और उसका ढिंढोरा भी पीटते हैं।

(2) गंगा तट पर विचरण करते समय महाराज को गंगा में डुबो देने का दुष्प्रयास कतिपय मुसलमान गुण्डों ने किया, जिसमें वे कृतकार्य नहीं हुए।

(3) रायपुर (जिला पाली राजस्थान) में मुन्शी करीम बख्तर और अन्य मुसलमानों ने महाराज को पीटने का षड्यन्त्र किया। (द्रष्टव्य ऋषि दयानन्द का जीवनचरित प० घासीराम द्वारा सम्पादित भाग 2 पृ० 277 वि० सं० 2017 का संस्करण)

(4) जोधपुर में मियां फैजुल्ला खां के भतीजे मोहम्मद हुसैन ने स्वामी जी को मारने के लिए तलवार म्यान से बाहर निकाली।

(5) जोधपुर में ही डा० अली मर्दान ने औषधि में धीमा विष देकर महाराज को मृत्यु के कगार तक पहुंचाया।

(6) 1878 में जब महाराज ने अमृतसर में सिख मत के किन्हीं अंधविश्वासों का खण्डन किया तो निहंग सिखों ने उन्हें मार डालने की धमकी दी। (उक्त जीवनचरित पृ० 105)

(6) जैन मतानुयायी ठाकुरदास मूलराज भामड़ा ने भारतीय दण्ड-संहिता (जाब्ता फौजदारी) की धारा 285 के अन्तर्गत 6 फरवरी 1881 को स्वामी दयानन्द को नोटिस भेजकर उन पर अभियोग चलाने की धमकी दी। 13 जून 1882 को उसने पुन: एक अंग्रेज सालिसिटर से स्वामी जी को कानूनी नोटिस भेजा और सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण) के जैन मत विषय 12वें समुल्लास में, उसके विचार के अनुसार आपत्तिजनक अंशों को हटाने के लिए कहा। (द्रष्टव्य-नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती पृ० 472-473)।

अब आप इस बात को छोड़ दें कि स्वामी जी को नष्ट करने के लिए किसने अधिक प्रयास किए। हमारा तो मानना है कि सभी इन्सानियत पसन्द लोगों ने स्वामी दयानन्द के प्रयासों की सराहना की और मानवता के शत्रुओं ने उनको हानि पहुंचाई। इसमें हिन्दू मुसलमान का भेद या विचार करना व्यर्थ है।

स्वामी अग्निवेश आगे कहते हैं कि बाद वालों ने आर्य समाज को ऐसा बना दिया जिससे मालूम होता था कि आर्य लोग मुस्लिम विरोधी हैं, सिख विरोधी हैं, ईसाई विरोधी हैं। मेरा निवेदन है कि इस बात को इतने हल्केपन से टाल देना उचित नहीं है। उन तथ्यों का गम्भीरता से परीक्षण किया जाना चाहिए कि आर्य समाज तथा इतर मतावलम्बियों के सम्बन्धों में बिगाड़ क्यों आया। इसके लिए जिम्मेदार ऐतिहासिक परिस्थितियों और तथ्यों की गम्भीर से छानबीन की जानी चाहिए। इस प्रकार सस्ता फैसला देना उचित नहीं कि बाद वालों (शायद स्वामी अग्निवेश का तात्पर्य है। स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्य समाजी नेता) ने इन रिश्तों को बिगाड़ा। आर्य समाज और अन्य मतमतान्तरों के पारस्परिक सम्बन्धों और उनमें आए उतार चढ़ाव की गम्भीर मीमांसा कोई इतिहासज्ञ ही कर सकता है, सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए इण्टरव्यू देने वाले व्यक्ति के वश का यह काम नहीं है।

यहां स्वामी अग्निवेश का खुशामद भरा एक और स्वर उभर कर सामने आता है जब वे कहते हैं कि "इस्लाम और आर्य समाज के दृष्टिकोण में बहुत एकता है।" स्वामी जी ने इस्लाम और आर्य समाज में क्या एकता देखी, इसका उन्होंने विस्तार नहीं किया। यह उनका विषय भी नहीं है। यह तो तुलनात्मक धर्म (Comparative study of Religions) विषय के अन्तर्गत आता है। मेरा तो यही कहना है कि इस प्रसंग में यह वाक्य मुसलमान पत्रकार को खुश करने करने के लिए ही कहा गया है। आगे स्वामी अग्निवेश दिल्ली दरबार के समय स्वामी दयानन्द द्वारा आयोजित भारत के तत्कालीन धार्मिक नेताओं के उस सम्मेलन की चर्चा करते हैं जो 1877 की जनवरी के आरम्भ में हुआ था। स्वामी अग्निवेश को पढ़ने लिखने से तो कोई मतलब है नहीं, अब तो वे पूरे लीडर हैं। उन्हें यह भी पता नहीं कि उक्त सम्मेलन कब हुआ था। वे तो इसे 1866 में आयोजित बताते हैं। 1866 में तो स्वामी जी राजस्थान तथा उसके पारिवर्ती पश्चिमी संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) में ही रहे।

इण्टरव्यू में स्वामी अग्निवेश द्वारा कही गई कुछ अन्य बातें हमारे लिए विशेष महत्त्व की नहीं हैं। वे अयोध्या के प्रस्तावित राम मंदिर के स्थान पर वे एक राम रहीम अस्पताल खोलने का सुझाव देते हैं। उनकी धारणा है कि अयोध्या में राम मंदिर बनाने वालों का मुख्य उद्देश्य तो हिन्दू संसार के लिए मक्का के तुल्य एक सर्वमान्य तीर्थ स्थान बनाने का है जहां विश्व भर के हिन्दू आकर अपनी श्रद्धा प्रकट करेंगे। स्वामी जी के ये सुझाव पहले अयोध्यानाथ तथा विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री को कहां तक स्वीकार्य हैं, अथवा सैयद शहाबुद्दीन तथा बाबरी मस्जिद कार्यवाही समिति वाले उनके इन विचारों का कहां तक अनुमोदन करते हैं, यह हमारे लेखन की परिधि में नहीं आता। मुझे तो आपत्ति स्वामी जी के इस कथन पर है कि "भारत तो अब आकर अंग्रेजों के कारण इतना लम्बा चौड़ा नजर आता है।" उनके कथन का अभिप्राय यह है कि आज के भारत की कल्पना को अंग्रेजों ने ही साकार किया है। अन्य शब्दों में काश्मीर से कन्या कुमारी और अटक से लेकर ब्रह्मदेश पर्यन्त भारतीय उप महाद्वीप की भौगोलिक एकता साम्राज्यवादी अंग्रेजों के कारण ही सम्भव हो सकी। शायद अग्निवेश ने उस बृहत्तर भारत का इतिहास पढ़ा ही नहीं जिस की सीमाएं अशोक और कनिष्क के काल में भी हमारे आज के भारत से कहीं अधिक विस्तृत थी। वे महाभारत काल के भारत का भी उपहास करते हैं और कौरव पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर को एक छोटा सा गांव कहते हैं। महाभारत के जिस युद्ध में चीन का भगदत्त, अमेरिका का बभ्रुवाहन, यूरोप का बिडालाक्ष, ईरान का का शल्य (यह सब स्वामी दयानन्द की साक्षी से लिख रहा हूं) आया उस युग के आर्यों के पुरुषार्थ, पराक्रम और गौरव का अवमूल्यन कोई खुशामद पसन्द व्यक्ति भले ही करे। कोई आर्य समाजी तो हरगिज नहीं करेगा।

योग साधना एवं आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आम सेना में 30 सित: से 5 अक्तूबर तक उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं देख रेख में उपरोक्त दोनों शिविर उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुए।

योग साधना शिविर में आध्यात्मिक योग क्रियात्मक ध्यान पातञ्जल योग दर्शन की पद्धति से श्री अमृतलाल जी शर्मा गुरुकुल हो शंगाबाद ने किया। इसका संचालन श्री गुलाब चन्द्र बसल वेद प्रचार अधिष्ठाता म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा ने अत्यन्त श्रद्धा एवं योग्यता पूर्वक किया। इसमें 15 साधकों ने लाभ उठाया। सभी अत्यन्त प्रभावित एवं सन्तुष्ट हुए। अनेकों ने अपने दुर्गुण छोड़ने का संकल्प लिया।

आर्य वीर दल शिविर संचालन के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी ने श्री सुरेन्द्र सिंह जी आजाद को दिल्ली से भेजा। श्री आजाद जी ने योग्यता पूर्वक आर्य वीरों को प्रशिक्षण देकर उत्साहित किया। इस शिविर में 125 से अधिक आर्य वीरों ने भाग लेकर नई प्रेरणा प्राप्त की। उड़ीसा में अपने ढंग का यह पहला प्रयास था जो अत्यन्त सफल रहा। अब शनै: शनै: इस की शाखाओं का विस्तार किया जाएगा।

धर्मार्थ आयुर्वेदिक चिकित्सालय का उद्घाटन

गुरुकुल आश्रम आम सेना की ओर से खड़ियार रोड में निर्धन जनता की सेवा के लिए धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन 30-9-90 को उड़ीसा सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री श्री घासीराम मांझी के कर कमलों से समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें सुयोग्य वैद्य श्री मुरली धर जी आर्य की देखरेख में सभी नए पुराने रोगों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया जा रहा है।

—विविकेवान शास्त्री मन्त्री

श्रद्धेय मीरायति जी की वेद प्रचार यात्रा

श्रद्धेय मीरायति जी को सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी शाल उढ़ा कर सम्मानित करते हुए ।

महर्षि दयानन्द जी का नारी जाति के ऊपर महान उपकार है। वह न आते तो हम पैर की जूती ही बनी रहती। परन्तु उन्होंने आकर हमें सिर का मुकुट बना दिया। इसी कारण हमे वैदिक नारी के नाम से लोग पुकारने लगे और हम सन्यास की दीक्षा लेने की अधिकारी भी बन गई।

उनमें से एक मैं आर्य समाज की तुच्छ सी सेविका हूं। जो ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए स्थान-स्थान पर घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार कर रही हूं। यद्यपि मेरा स्वास्थ्य इस योग्य नहीं है कि मैं बस द्वारा लम्बे लम्बे सफर कर सकूं। परन्तु मन में एक लगन है, दिल में वेदना है कि किसी प्रकार से अज्ञान को मिटाकर वेद ज्ञान का प्रकाश उन लोगों तक पहुंचा कर अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकूं।

सितम्बर मास की 14 तिथि को मैं वेद प्रचार के लिए आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर से चली थी। सब से पहले मेरा कार्यक्रम अर्बन स्टेट करनाल (हरियाणा) में था। वहां पर वार्षिक उत्सव था। फिर मैंने मोगा से होकर फाजिल्का आर्य समाज में आठ दिन प्रचार किया। वहां पर एक मंदिर में महिलाओं का प्रतिदिन प्रातःकाल सत्संग होता है। दो दिन मेरा वहां प्रवचन हुआ जिसमें वहां की देवियां प्रभावित होकर आर्य समाज में आने लग गई। यह बहुत प्रसन्नता की क्योंकि उन्हें तो कभी वेद प्रवचन सुनने को मिलते नहीं, केवल गीता रामायण इत्यादि पढ़ लेती हैं।

उसके पश्चात् मैं लुधियाना आ गई यहां एक परिवार में यज्ञ तथा सत्संग था। अभी मेरा कार्यक्रम कई दिन का था परन्तु आरक्षण के विरोध में दंगे फसाद और कर्फ्यू लग जाने के कारण 28 सितम्बर को आश्रम लौटना पड़ा।

अब मैं फिर प्रात: 11 अक्तूबर को वेद प्रचार के लिए चल पड़ी। एक दिन सहारनपुर एक परिवार में उपदेश हुआ। 13-14 अक्तूबर चण्डीगढ़ सैक्टर 18, सैक्टर 7 की आर्य समाज में उत्सव था। वहां पर 4 लैक्चर दे कर तुरन्त दीनानगर के लिए प्रस्थान किया। वहां पर 15 से 18 अक्तूबर तक सेवा कार्य किया। प्रात:काल पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी के दयानन्द मठ में यज्ञ उपदेश होते थे। दोपहर को महिला सम्मेलन हुआ जिस में भारी संख्या में देवियों ने आकर सम्मेलन की शोभा को बढ़ाया।

दूसरे दिन आर्य कालेज में जहां पर आठ सौ लड़कियां पढ़ती हैं, वहां की प्रिंसीपल बड़ी ही सुयोग्य है, मुझे अपने कालेज में ले गई और मेरा लैक्चर करवाया। मैंने महर्षि जी के नारी जाति के ऊपर किए गए उपकारों का वर्णन किया। रात्रि को प्रतिदिन आर्य समाज में मेरे लैक्चर होते थे। वहां की उपस्थिति बहुत अच्छी थी जिसकी मुझे आशा नहीं थी।

दीपावली के दिन प्रात:काल दयानन्द मठ में मिलकर सब ने त्यौहार मनाया और उसी समय कार द्वारा मुझे गुरदासपुर की आर्य समाज में जाना हुआ। वह लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। बड़ी श्रद्धा और प्रेम से उन्होंने बच्चों का कार्यक्रम और मेरा प्रवचन सुना।

इसके पश्चात मैं जालन्धर आ गई और 20 से 24 अक्तूबर तक आर्य समाज कपूरथला में मेरा कार्यक्रम हुआ। वहां पर प्रात:काल परिवारों में और सायंकाल आर्य समाज में प्रवचन होते थे। एक दिन डी०ए०वी० स्कूल में मेरा प्रवचन हुआ जो कि कपूरथला आर्य समाज में ही खोला हुआ है।

पंजाब में यद्यपि वातावरण अनुकूल नहीं है फिर भी प्रचार कार्य हो रहा है। सब आर्य जन बधाई के पात्र है। मुझे इन लोगों ने बहुत स्नेह सत्कार दिया। मार्ग का कष्ट तो होता ही है। जब भी मेरे से पूछा गया कि माता जी कष्ट तो नहीं हुआ तो मेरा एक ही उत्तर होता था कि महर्षि दयानन्द जी से कम ही कष्ट हुआ। उन्होंने कितने कष्ट सहन करके प्रचार कार्य किया था। आज मैं 25 अक्तूबर को मथुरा वेद मंदिर के लिए जा रही हूं वहां से देहली में एक सप्ताह प्रचार कार्य करके ज्वालापुर लौट जाऊंगी।

मूल को सींचो, पत्तों को नहीं

ले०—प्रा० श्री जयसेन जी, साधु आश्रम (होशियारपुर)

श्रद्धानन्द बाजार आर्य समाज में सत्सग के पश्चात् चर्चा चली कि श्रद्धा की मूर्ति स्वा० श्रद्धानन्द जी का भव्य स्मारक गुरुकुल कांगड़ी है। अतः उस को देखने के लिए चलना चाहिए। निश्चय के अनुसार अपने वाहन से कुछ आर्य सदस्य चले। जब वाहन छुटमुलपुर से रुड़की की ओर मुड़ा, तो मंजरी ने कहा—आर्य मर्यादा में एक लेख 'स्त्री ब्रह्मा बभूविथ' छपा था। उसमें यहां के मानव सेवा आश्रम से 'नारी जीवन' पुस्तक प्राप्ति का संकेत था। वह पुस्तक यहां से लेनी है। इस पर विभा ने कहा—यहां से एक और पुस्तक 'पति-पत्नी की कहानी' भी छपी है। इसमें करवाचौथ को आधार बना कर पति-पत्नी के सम्बन्धों और दीर्घ जीवन प्राप्ति का सवाद शैली मे वर्णन है। तभी चालक ने पूछा—मानव सेवा आश्रम तो सामने ही है, क्या वाहन रोकूं? इतने में उत्तर आया—अवश्य रोकिए। जल पीकर यात्री जब अन्दर गए तो वहां सत्सग चल रहा था। सभी वहां बैठ गए।

प्रवचन कर्त्ता कह रहे थे कि हम सब अपने जीवन, परिवार, समाज में हरा-भरापन और सफलता चाहते हैं। हमारी यह इच्छा कैसे पूरी हो सकती है? इस पर जब हम गहराई से सोचते हैं, तो हमारे सामने यह बात स्पष्ट होती है कि एक पेड़ या खेत हरा-भरा कहलाता है। कहीं हरा-भरापन कैसे आता है? इसकी खोज से पता चलता है कि एक माली या किसान क्यारी तैयार करने के बाद वहां प्यौद लगाता है या बीज बोता है। प्यौंद के जो बूटे जमीन पकड़ लेते हैं, जिन पौधों की जड़ जम जाती है। वे धीरे-धीरे हरे होने लगते हैं, उन पर एक के बाद एक हरा-भरा पत्ता दिखाई देता है। इसका सीधा सा भाव यही है कि मूल के आधार पर ही पत्ते पल्लवित होते हैं।

ऐसे ही किसी वृक्ष या फसल को स+फल तभी कहते हैं, जब वह फल, दाने सहित होती है। वह सफल तभी व फसल होती है, जब इसकी जड़ जीवित, हरी-भरी होती है। इस प्रक्रिया से दो बातें हमारे सामने आती हैं कि—1. मूल+जड़ से ही पत्ते, टहनी, शाखा, फूल, फल विकसित होते हैं। 2. मूल को सीचने से ही ये सब विकसित होते हैं। इसीलिए ही कहते हैं—पत्तों को पानी देने से काम नहीं चलता, अत: जड़ को ही सींचना चाहिए। पत्तों को पानी देने से श्रम, समय, शक्ति आदि का ही अपव्यय होता है।

बालक मूल से बने महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह एक बहुत बड़ी अनोखी बात है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे सब का ध्यान मूल की ओर ले जाते हैं, जिसको हम सत्य भी कह सकते हैं। अत: महर्षि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता, प्रगति, हरे-भरेपन के लिए निर्देश करते हैं कि उस-उसकी सच्चाई को समझो। हर कार्य अपने कारणो से ही होता है, जैसे कि मूल और पत्ते-फूल-फल का सीधा सम्बन्ध है तथा कारण और कार्य का भी सीधा सम्बन्ध है। किसी का कारण या मूल वही ही है, जिसके होने से वह हो और न होने से न हो। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ऋषि ने लिखा है—यत्-तत् कर्तव्यम्, नेतरत्।

श्रोताओ! आपने उपनिषदों की वह कथा कई बार सुनी है, जिसमें इन्द्रियों की श्रेष्ठता की पहचान है कि जिसके बिना शरीर की गाड़ी रुके। इससे भी यही सिद्ध होता है कि हमें जीवन मे वह-वह अवश्य अपनाना चाहिए, वही पढ़ना और समझना चाहिए, जिसके बिना जीवन रुकता हो, यह है मूल की पहचान। ऐसे ही हमारी सस्कृति, धर्म, सिद्धान्तों का भी एक मूल है, जिस के साथ अन्य सारे सिद्धान्त, विचार, तत्त्व जुड़े हुए हैं। ऐसे ही आर्य समाज के हरे-भरेपन, सफलता, प्रगति का भी एक निश्चित मूल है। उसी को सींचने से आर्यसमाज का विकास होगा। और वह मूल है, उसकी विचारधारा, शेष भवन आदि तो पत्तों की तरह हैं। इन दोनों मूलों की चर्चा यहां अगले रविवार को होगी तब शान्ति पाठ से सत्सग सम्पन्न हुआ अभ्यागतों को इससे विशेष प्रसन्नता हुई कि लौटते हुए वे भी सत्सग का लाभ उठा सकेंगे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती वंतमान सन्दर्भ में

ले०—श्री विमल जी वधावन एडवोकेट, संयोजक कानूनी सैल
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

पूज्य दयानन्द सरस्वती के जीवन का मुख्य कार्य चाहे धर्म प्रचार ही था परन्तु इसी कार्य के माध्यम से जहां उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग गृहस्थ विद्यार्थी स्त्री, व राज कार्य करने वाले आदि के कर्त्तव्यों का उपदेश किया वहां समाज की लगभग सभी बुराईयों और कुरीतीयों का स्पष्ट विरोध किया। स्वयं भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दो में 'स्वामी दयानन्द की सबसे बडी विशेषता थी उनकी दूरदर्शिता। यह देख कर आश्चर्य होता है कि जिन बातो पर महात्मा गाधी ने अधिक बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य कहा, प्राय: वे सभी काम स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में 50 वर्ष पूर्व शामिल थे। चाहे वह स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज्य का मामला था या अछुतोद्धार, स्त्री शिक्षा और नैतिक शिक्षा का।'

इससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द मात्र धार्मिक नेता ही न थे बल्कि विचारों एव कर्मों से सच्चे राष्ट्रवादी समाजी नेता भी थे। समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और उनके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। स्वामी दयानन्द ने सारे भारतवर्ष का भ्रमण करके अपने भाषणों और शास्त्रार्थों के माध्यम से वैदिक सभ्यता एव सस्कृति का अत्याधिक प्रचार किया उपदेशों के बाद श्रोताओं द्वारा तरह-तरह के प्रश्नों से भी स्वामी जी का मार्ग दर्शन प्राप्त किया जाता था।

एक बार किसी भक्त ने प्रश्न किया कि पहले जैसी उत्तम मनोवान्छित सुपात्र सन्तान हुआ करती थी वैसी अब क्यों नही होती? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि पहले लोग वैदिक सस्कार किया करते थे सदाचारी होते थे इस लिए उनकी सन्तान में ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी। इस युग में इन संस्कारों को त्याग कर लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिए हुए हैं लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है इस लिए उनकी सन्तान भी निस्तेज, दीन, दुखिया, उत्पन्न होती है।

बुलन्दशहर मे एक सभा के दौरान वहा के तत्कालीन कलेक्टर ने अपना एक सेवक सभा स्थल पर भेजा और दर्शनों की इच्छा प्रकट की। उत्तर मे स्वामी ने पूछा कि आपको किस समय अवकाश होगा। कलेक्टर महाशय ने इस पर उत्तर भिजवाया कि चार घण्टे पश्चात अवकाश ही अवकाश है। मुलाकात के समय कलेक्टर को राज्य धर्म पर उपदेश देते हुए कहा 'जिसके सिर पर एक परिवार के भरण पोषण का भार होता है उसे बड़ी दौड़ धूप करनी पड़ती है। रातों को जागना पडता है और सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं होता परन्तु हजारों मनुष्यों का बोझ आपके कन्धों पर है। दीन दुखियों का संकट निवारण करना आपका कर्तव्य है फिर आपको अवकाश ही अवकाश है ऐसा जान कर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि यह तो सर्वथा ही ही राज्य धर्म से विपरीत है।

स्वामी जी का विचार था कि शिक्षण कार्य को अधिकाधिक संगठित एवं सुदृढ़ करके ही इन सब बुराइयों कुरीतियों और अज्ञानता को दूर किया जा सकता है। पंजाब के एक शहर में जब स्वामी जी रेलगाड़ी से उतरे तो एक बहुत बड़े उद्योगपति स्वयं अपनी गाडी लेकर स्वामी जी को लेने आए। रास्ते में एक विशाल भव्य मन्दिर की ओर संकेत करते हुए स्वामी जी को बताया कि लाखों रुपये स्वय लगाकर उन्होंने इस मन्दिर को बनवाया है। इस पर स्वामी जी ने पूछा कि 10-15 वर्षपश्चात् इस मन्दिर में से क्या निकलेगा स्वामी जी ने उसी उद्योग पति से कहा कि यदि मन्दिर के स्थान पर एक विशाल विद्यालय बनवाया होता तो 15 वर्ष पश्चात् अगली पीढ़ी आपके अनुरूप सभ्य, सदाचारी परोपकारी बनकर आप ही के चरण स्पर्श करती। इस पर वह सज्जन बहुत शर्मिदा हुए परन्तु इस घटना से यह कदापि न समझना चाहिए कि स्वामी दयानन्द का ईश्वर में विशवास नहीं था इसलिए उन्होंने ने विरोध किया। ये तो स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने एक ईश्वरवाद की भावना पर बल दिया, विरोध तो उन्होंने केवल उन मतमतान्तरों का किया जो सबके अनुकूल नहीं थे, जो मिथ्या थे और जिनसे आपस में विरोध बढ़ने की सम्भावना थी। स्वामी दयानन्द ने मूल रूप से ईश्वरीय ज्ञान का वैदिक प्रचार किया जिससे मानवता के वास्तविक कर्तव्यों का ज्ञान लोगों को हुआ। वेदों में ऐसा काई भी उपदेश नहीं है जिससे भिन्न मतों में विरोध या घृणा उत्पन्न हो, इसी लिए स्वामी जी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अछूतोद्धार पर अपने उपदेश देते हुए स्वामी जी ने कहा था कि जो मनुष्य कुत्तों को छूता है, बिल्लीयों के साथ खेलता है भैंस, ऊटों तथा अन्य कई घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेता है वह मनुष्य को अछूत समझें उनसे दूर भागा करें यह कितना अन्याय है कितना अधर्म है।

स्वामी दयानन्द बचपन से ही उच्च कोटि के ब्रह्मचारी थे जिन्होने वेद की शिक्षा स्वामी विरजानन्द जी के आश्रम में प्राप्त की। एक बार स्वामी विरजानन्द ने आवेश में आकर दयानन्द जी पर लाठी का एक प्रहार किया तो उनकी भुजा पर कड़ी चोट आई इस पर एक अन्य शिष्य नयनसुख दास जी ने गुरु जी से कहा कि ये दयानन्द हमारे समान गृहस्थ नहीं हैं इसमें सन्यासी की आत्मा है इन्हें न तो अवाक्य कहना उचित है और न ही मारना। गुरुजी ने नयनसुख के वचन को स्वीकार करते हुए कहा कि बहुत अच्छा आगे से हम इन्हें आदर और प्रतिष्ठा पूर्वक पढ़ाएगे नयन सुख से अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि तुमने मेरे बारे में क्यों कुछ कहा? उनका हमारे साथ कोई द्वेष तो है नहीं यदि मारते हैं तो हित-बुद्धि से प्रेरित होकर ही मारते हैं।

आज राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद के कारण जो अस्थिरता की तलवार समाज के सिर पर टंगी नजर आ रही है, मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के कारण जो जाति युद्ध शुरू होता नजर आ रहा है और अर्थ व्यवस्था की चरमराती हालत में स्वामी दयानन्द के उपदेशों से स्पष्ट तथा निर्विरोध मार्ग दर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

जैसा कि उपरोक्त मन्दिर निर्माण विरोध की घटना से स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द का यह दृढ़ मत था कि मंदिरों मस्जिदों, गुरुद्वारों आदि से किसी मत मतान्तर के मानने वालों का उद्धार नहीं हो सकता। मानवता का उत्थान तो तभी होगा जब ऐसी सभ्यता और संस्कृति का विकास हो जिससे मनुष्यों में आपसी विरोध, क्लेश एवं दुर्भावना खत्म हो। स्वामी दयानन्द का इस मन्दिर मस्जिद विवाद पर स्पष्ट उपदेश होता था कि यदि एक विशाल राष्ट्रीय उच्च महाविद्यालय इस स्थान पर स्थापित कर दिया जाए तो दोनों समुदायों की भावनाएं हताहत नहीं होंगी। इन्हीं विचारों के तहत तो स्वामी दयानन्द के शिष्यों ने प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर को मात्र हवन या सत्संग का केन्द्र ही न बनाते हुए, साथ में विद्यालयों, औषधालयों तथा अन्य समाज सेवी कार्यक्रमों को भी इनका अंग बनाया। अब तो कानूनी सहायता केन्द्रों की स्थापना भी इन आर्य समाज मन्दिरों में होने लगी है।

पिछड़े वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए स्वामी दयानन्द ने भी सम्पूर्ण जीवन भरसक प्रयत्न किए परन्तु इतना भयकर विद्रोह तो कभी नहीं हुआ। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की शुरूआत का एक उद्देश्य यह भी था कि गरीब अमीर तथा समस्त वर्गों के परिवारों से आए विद्यार्थी समान आसन, समान वस्त्र, समान भोजन तथा समान शिक्षा प्राप्त कर सकें। सरकार की इस प्रकार की आरक्षण नीतियों से तो जातिवाद और मजबूत होगा, समानता होनी तो मुश्किल नजर आती है। वर्तमान संदर्भ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों का आज भी उतना ही महत्त्व है जितना 100 वर्ष पहले था। मानवता सदैव ऋणि रहेगी। स्वामी दयानन्द की तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की जो उन उपदेशों का भार अपने कन्धों पर लादे हुए आज भी समाज की सेवा में प्रयत्नशील है।

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर का चुनाव

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर का चुनाव 29-7-90 को हुआ। श्री हवन लाल महता दसवीं बार सर्वसम्पत्ति से प्रधान चुने गए। 1990-91 के लिए निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए—

संरक्षक—श्री मोहन लाल जी

प्रधान—श्री हवन लाल महता

उप-प्रधान—श्री बलदेव राज, श्री ओम प्रकाश धवन

मन्त्री—श्री दिलसुख राय गोयल

उप-मन्त्री—श्री ललित बजाज, श्री विजय कुमार

कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश भाटिया

पुस्तकाध्यक्ष—श्री विनोद सागर महता

स्टोरकीपर—श्री सुरेन्द्र कुमार धवन।

लेखा निरीक्षक—श्री वेद प्रकाश बजाज।

अन्तरंग सदस्य—श्री सत्यपाल, श्री दिलबाग राय, श्री बिहारी लाल, श्रीमति सुदेश गोयल, श्रीमतिकान्ता बजाज।

—हवन लाल महता प्रधान

टंकारा समाचार

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पावन जन्म भूमि में स्थित उनके जन्म-गृह पर स्वामी जी का 107वां निर्वाण दिन उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारी एवं कार्यकर्त्ता, स्थानीय आर्य समाज के सदस्य एवं आर्य वीर दल के आर्य वीरों की उपस्थिति में आर्यसमाज के मन्त्री श्री हसमुख भाई आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें उपदेशक विद्यालय टंकारा के उपाचार्य अरुण कुमार विदर्भि एवं छात्रों ने तथा अन्य सदस्यों ने अपनी श्रद्धाञ्जलि स्वामी जी के प्रति अर्पित की। इस अवसर पर दीपावली के पर्व पर स्वर्गस्थ हुए महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ एवं विनोबा भावे का भी स्मरण किया गया।

—अरुण

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम पर ट्रस्ट

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के नाम पर इस समय दो ट्रस्ट चल रहे हैं। एक ट्रस्ट का नाम "स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारतीय स्मारक ट्रस्ट" है और दूसरे का नाम श्रद्धानन्द सेवा संघ है। इन दोनों ट्रस्टों के मुख्य कार्यालय आर्य भवन जोरबाग नई दिल्ली में हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारतीय स्मारक ट्रस्ट

यह ट्रस्ट 1926 में स्वामी जी महाराज की शहादत पर स्थापित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य शुद्धि, हिन्दू संगठन और दलित उद्धार के कार्यों को बढ़ावा देना है। इसका कार्य क्षेत्र सारा भारत है। परन्तु इसके अधिकतर कार्य केन्द्र बिहार प्रदेश में छोटा नागपुर के क्षेत्र में है। रांची और खूंटी में श्रद्धानन्द सेवा आश्रम चलाए जा रहे हैं, जिन में वनवासी बच्चों का पालन पोषण और शिक्षा आदि का प्रबन्ध है। खूंटी में डी०ए० वी० फाऊंडेशन के सहयोग से एक पब्लिक स्कूल भी चलाया जा रहा है और एक औषधालय भी है।

1967 में छोटा नागपुर में सूखा पड़ने पर हजारों रुपये व्यय करके ट्रस्ट की ओर से वनवासी लोगों में अन्न, वस्त्र आदि बांटे गए और बच्चों की शिक्षा के लिए कई स्कूल खोले गए।

श्रद्धानन्द सेवा संघ

इसका पूर्व नाम पटौदी हाउस ट्रस्ट था। इस ट्रस्ट की स्थापना स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 1923 में की थी। उन्होंने दरियागंज दिल्ली में पटौदी हाउस नाम की कोठी खरीद की थी। इसके लिए सेठ रघुमल जी ने एक भारी रकम दान के रूप में दी। उसके बाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज और लाला नारायण दत्त जी ने इस संघ के काम को आगे बढ़ाया उन्होंने पटौदी हाउस में एक नया भवन बनवाया। तत्पश्चात् आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता और पत्रकार 'महाशय कृष्ण जी' ने इस संघ को महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। उन्होंने जोरबाग नई दिल्ली में एक बहुत बड़ा प्लाट खरीद किया और उस पर एक भव्य भवन बनाया। इस भवन का नाम 'आर्य भवन' है। इस भवन में एक बहुत बड़ा हाल बनाया गया, जिसका नाम ट्रस्टियों ने महाशय कृष्ण हाल रखा। इस भवन निर्माण के लिए 'श्री महाशय कृष्ण जी ने 62000/- (बासठ हजार रुपये) का शुभदान दिया। विज्ञान, साहित्य और कलाओं की उन्नति करना और धर्मार्थ सेवा में कार्य को बढ़ावा देना इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य है। इस समय आर्य भवन में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय और वाचनालय चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त एक पैथोलोजिकल लेबोरेट्री भी चलाई जा रही है। महाशय कृष्ण हाल में आर्य स्त्री समाज और महिला मंडल के सत्संग भी होते रहते हैं। सार्वजनिक उत्सव और समागम भी होते रहते हैं।

भावी कार्यक्रम

इन दोनों ट्रस्टों के कार्यक्रमों को बढ़ाने की योजना बनाई जा रही है जिसके लिए ऐसे महानुभावों की आवश्यकता है जो कि प्रचार प्रचार प्रबन्ध के कार्यों को भली प्रकार कर सके। जो सज्जन दफ्तरों में मैनेजर अकाउंटेंट, लेखक और पुस्तकाध्यक्ष, मास्टर और वैद्य आदि का काम कर सके अथवा पिछड़े वर्गों में जीवन सुधार और प्रचार का काम कर सकें। आयकर्ताओं के लिए भी प्रबन्धकों की आवश्यकता है। पिछड़े वर्ग के लोगों को रोजगार दिलाने के उपाय करने के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। वानप्रस्थी लोग जो दुनियादारी के कार्यों से निवृत हो चुके हैं उनके लिए सेवा का अच्छा अवसर है आवश्यकतानुसार गुजारे के लिए वेतन देने का भी प्रबन्ध किया जाएगा।

एक सुझाव यह भी है कि एक सेवा सदन बनाया जाए जिसमें ऐसे नवयुवक सदस्य बनाए जाएं जो आयु भर समाज सेवा का कार्य करने के इच्छुक हों। उनके गुजारे के लिए सम्मानपूर्वक पुरस्कार देने का प्रबन्ध किया जाएगा।

—ज्ञान चन्द अध्यक्ष

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

18 अक्तूबर को आर्य समाज हबीबगंज (जनकपुरी) में लुधियाना में महर्षि निर्वाण दिवस मनाया गया। जिसमें आर्य समाज के अधिकारी सदस्य तथा समाज मन्दिर में चल रहे स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रातः हवन यज्ञ, प्रार्थना के पश्चात् इस समाज के संरक्षक श्री आशानन्द आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा।

—वेद प्रकाश महाजन मन्त्री

आर्यसमाज शास्त्रीनगर जालन्धर की गतिविधियां

1. आर्य समाज की ओर से 21-9-90 को एक निर्धन लड़की श्रीमा रानी की शादी आर्य समाज मन्दिर में पूर्ण वैदिक रीति से की गई विवाह,की रसम पंडित सोहन लाल जी कालड़ा ने करवाई। बरात पठानकोट से आई थी और सायं 4 बजे वापिस चली गई। इस शुभ कार्य पर आर्य समाज मंदिर का पांच हजार (5000) रु० खर्च आया।

2. आर्य समाज की ओर से 7-10-90 रविवार को पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी की शताब्दी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। प्रातः 7 बजे आर्यसमाज मन्दिर में हवन यज्ञ के बाद श्री महिन्द्र पाल जी के भजन हुए। बाद में श्री राम लुभाया जी नन्दा प्रधान आर्य समाज ने पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी के जीवन पर प्रकाश डाला। जिस का लोगों पर बहुत असर हुआ। ठीक साढ़े 9 बजे कार्यवाई समाप्त हुई।

3. 18 अक्तूबर 1990 वीरवार प्रातः $7\frac{1}{2}$ से $9\frac{1}{2}$ बजे तक दीपावली का पावन पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिस में प्रोफैसर ओम प्रकाश जी नारंग का प्रभावशाली उपदेश हुआ। यह पर्व ऋषि निर्वाण के उपलक्ष में मनाया गया। हाजरी अच्छी थी, शान्ति पाठ के बाद जलेबियों का प्रसाद बांटा गया।

4. वार्षिक उत्सव 6, 7, 8 तथा तथा 9 दिसम्बर 1990 को मनाया जा रहा है जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा के महा उपदेशक प० निरंजन देव जी इतिहास केसरी तथा श्री जगत जी वर्मा के भजन होंगे। श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निर्धनों को कम्बल, रजाईयां, स्वैटर तथा शालें बांटेंगे। पंजाब के कुछ कार्य कर्त्ताओं को सम्मानित भी किया जाएगा

—राम लुभाया नन्दा

प्रधान आर्य समाज शास्त्री नगर

बस्ती गुजां

महर्षि दयानन्द का आर्य समाज धर्म नहीं आन्दोलन है।

दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव पर आर्य नेताओं का उद्गार।

नई दिल्ली 18 अक्तूबर।

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य नेता पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव की अध्यक्षता में आर्य समाज के हजारों अनुयायियों ने महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया।

आज प्रातः 8 बजे से रामलीला मैदान के वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पं० यशपाल सुधांशु ने यज्ञ कराया। स्वामी जीवनानन्द जी के द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात आर्य वीर दल ने गणवेश धारी नौजवानों ने ध्वज गीत गाया।

सभा की अध्यक्षता करते हुए पं० वन्देमातरम जी ने कहा कि वेद और महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलकर आज की समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानन्द का आर्य समाज एक सर्वतोमुखी आन्दोलन है। आर्य समाज कोई धर्म नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई मजहब या कोई पन्थ भी नहीं। आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का संदेशवाहक है।

स्वामी जी ने आगामी 23, 24, 25 और 26 दिसम्बर 1990 को होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन को सफल बनाने की आर्य जनता से जोरदार अपील की।

इस अवसर पर सांसद श्री रामचन्द्र जी की विकल, श्रीमती सुषमापाल मल्होत्रा, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री शिव कुमार शास्त्री आदि ने भाषण दिए। सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान न्याय मूर्ति श्री महावीरसिंह को आर्य साहित्य भेंट करके उन का स्वागत भी किया गया।

प्रचार विभाग

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य समाज जवाहरनगर में ऋषि निर्वाणोत्सव 18-10-90 रविवार को बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। पं० बाल कृष्ण जी पुरोहित आर्य समाज जवाहर नगर के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञ उपरान्त मधुर भजन हुए तथा प्रो० वेद व्रत जी आर्य कालेज लुधियाना का बहुत प्रभावशाली प्रवचन हुआ। प्रोफैसर साहिब ने स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा किए गए महान कार्य का बहुत सुन्दर वृतान्त दिया तथा कहा कि महर्षि द्वारा बताए गए मार्ग पर चल कर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजली दे सकते हैं। रात्रि को आर्य समाज मंदिर में दीपमाला की गई।

—विजय सरीन मन्त्री

कानपुर में वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, मेस्टनरोड, कानपुर का 111वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार, 9 फरवरी मंगलवार से 12 फरवरी, 1991 तक समारोहपूर्वक श्रद्धानन्द पार्क में मनाया जाना निश्चित हुआ है। शोभा यात्रा (नगर-कीर्तन) शनिवार 9 फरवरी 1991 को सायं काल ठीक 4 बजे से प्रारम्भ होगा तथा 10-11-12 महोत्सव का विस्तृत कार्यक्रम बाद मे प्रकाशित किया जायेगा।

इस अवसर पर आर्य-जगत के शीर्षस्थ आर्य संन्यासियों महोपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जा रहा है।

—(डा०) विजयपाल शास्त्री मन्त्री

आर्य समाज गढ़ा में ऋषि निर्वाण उत्सव

आर्य समाज गढा जालन्धर का ऋषि निर्वाण उत्सव 18 10 90 को दीवाली के दिन बडी धूम धाम के साथ मनाया गया जिसमे 15 अक्तूबर से 18 अक्तूबर तक वेद कथा प० निरंजनदेव इतिहास केसरी द्वारा हुई। प० रामनाथ यात्री के मनोहर भजन होते रहे उत्सव मे गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियो ने योग प्रदर्शन किया। नगर कीर्तन के बाद विशाल ऋषि लंगर हुआ जिसमे हजारों आर्य भाई बहनो ने प्रीति भोज किया। उत्सव हर प्रकार से सफल हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट, मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न, कार्यालयध्यक्ष प० धर्मदेव जी आर्य, श्री जयदेव जी, डा० ज्ञान चन्द जी, श्री प० अनन्तराम जी तथा कई अन्यमहानुभावों ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

—अमरनाथ आर्य मन्त्री

दयानन्द माडल स्कूल, लुधियाना में यज्ञ

दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना मे 26 10-90 शुक्रवार को मासिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ का संचालन श्रीआशानन्द जी आर्य प्रबन्धक स्कूल ने किया। उन्होंने वेद मन्त्रो के पाठ के साथ साथ उनका हिन्दी मे अर्थ और व्याख्या करके भी उपस्थित लोगो को प्रभावित किया। श्रीमती मन्जू बाला ने यजमान का पद सुशोभित किया। श्री अयोध्याप्रकाश जी मल्होत्रा ने सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर प्रकाश डाला और स्कूल के अध्यापको मे और उपस्थित सभी सदस्यों मे सत्यार्थ प्रकाश की प्रतिया वितरित की और 150 प्रतिया बाटने का संकल्प किया। यज्ञ भजन, प्रार्थना गीत, आर्शीवाद और शांति पाठ के साथ हवन समाप्त हुआ।

—के०के० गुप्ता

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा हालैंड में वैदिक प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री गत 6 अक्तूबर को हालैंड के दौरे पर रवाना हो चुके हैं। वेद प्रचार के उद्देश्य से लगभग 4 हफ्ते की अपनी विदेश यात्रा के दौरान जहा शास्त्री जी के द्वारा हालैंड की विभिन्न आर्यसमाजों मे वैदिक उपदेश दिए जायेंगे, वही आर्य समाज की गतिविधियो के अधिकाधिक प्रचार तथा प्रसार के लिए भी हालैंड के आर्यजनों को मार्ग दर्शन मिलेगा। शास्त्रीजी की वापसी नवम्बर 1990 के प्रथम सप्ताह में उपेक्षित है। इस बीच यदि सम्भव हुआ तो वह गयाना, सूरीनाम व ट्रिनीडाड की आर्य समाजो का भी निरीक्षण करेंगे।

वैदिक प्रचार की दृष्टि से शास्त्री जी की इस विदेश यात्रा का आर्य जगत को विशेष लाभ होगा। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री वहा अपने साथ वैदिक तथा आर्य साहित्य भी काफी मात्रा मे प्रचारार्थ ले गए हैं।

गुरुदत्त विद्यार्थी विशेषांक

प्रिय महोदय, नमस्ते

आर्य मर्यादा का प० गुरुदत्त विद्यार्थी विशेषाक आद्योपान्त पढा। पण्डित जी के निधन के शताब्दी वर्ष मे प्रकाशित यह विशेषाक, महर्षि दयानन्द के अद्वितीय भक्त के जीवन एव कार्यों का स्मरण दिलाता है। आप समय-समय पर आर्य मर्यादा के विशेषाक प्रकाशित करते रहते हैं जिसस पाठकों को नवीन प्रेरणाए मिलती हैं। आर्य मर्यादा, आर्य जगत का श्रेष्ठ पत्र है। प० जी ने अपने जीवन काल मे जो ग्रन्थ लिखे थे, वह सम्पत्ति अप्राप्त है। चण्डीगढ़ मे शताब्दी स्मृति समारोह मे इनकी ग्रन्थावली क प्रकाशन पर अवश्य कोई योजना स्वीकृत की जाएगी जिससे प० जी के विचारों को उन्हीं के शब्दो में जाना जा सकेगा।
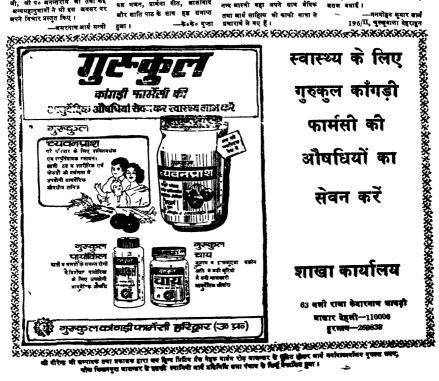
इस विशेषाक के प्रकाशन के लिए शतश बधाई।

—मनमोहन कुमार आर्य
196/II, चुक्खूवाला देहरादून

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

रजि० नं० Pb./J.L. 55.

वर्ष 22 अंक 33, कार्तिक 26 सम्वत् 2047 तदनुसार 8/11 नवम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

श्रीराम मन्दिर निर्माण की तुरन्त अनुमति दी जाए

विश्व हिन्दू परिषद् और दूसरी हिन्दू संस्थाओं की मांग का पूर्ण समर्थन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा 4-11-90 में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को धर्म व उपासना की स्वतन्त्रता प्राप्त है। 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने देश के स्वाभिमान को पुनः स्थापित करने के लिए कई वह पुरानी संस्थाएं, स्मारक व ऐसे चिन्ह मिटाने का प्रयास किया था जो भारत के उस युग के प्रतीक थे जब हमारा देश परतन्त्र था। यह चिन्ह बाहर से आए आक्रमकों ने देश के स्वाभिमान के लिए एक चुनौती बना दिए थे। सोमनाथ का मन्दिर भी इनमें से एक था। उसी प्रकार अयोध्या में भी 1528 में उस समय के आक्रमक शासक बाबर ने श्री राम जन्म भूमि पर बने हुए एक मन्दिर को तोड़ कर एक मस्जिद बनाई थी।

स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने देश के स्वाभिमान को पुनर्जीवित करने के लिए 1949 में पुराने सोमनाथ मन्दिर के स्थान पर एक नया सोमनाथ मन्दिर बनाया था। वह कहते थे कि हमारे गुलामी के युग की जो जो निशानी हमें दिखाई दे उसे मिटा देना चाहिए ताकि हम यह अनुभव कर सकें कि अब हम एक स्वतन्त्र और प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र में रहते हैं। उन्होंने सोमनाथ मन्दिर बनवाने से पहले पूज्य महात्मा गांधी की अनुमति भी ले ली थी। जब यह मन्दिर बन गया था तो उस समय के राष्ट्रपति महामहिम श्री डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने उस का उद्घाटन किया था। इस प्रकार सोमनाथ मन्दिर के पुनः उत्थान के लिए जो कुछ किया गया था उस समय की भारत सरकार का उसे पूरा समर्थन प्राप्त था।

अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि में जो मस्जिद बनाई गई थी वह भी उसी प्रकार उस युग की एक प्रतीक है जब बाहर से आए आक्रमणकारियों ने हमारे देश पर आक्रमण करके कई मन्दिरों को तोड़ दिया था। पिछले कुछ समय से यह मांग की जा रही थी कि अयोध्या में उसी स्थान पर श्री राम मन्दिर बनाया जाए, जहां पहले बना हुआ था और जिसे बाबर ने तोड़ा था किसी न किसी कारण यह इस समय तक सम्भव न हो सका था। अब विश्व हिन्दू परिषद द्वारा चलाए गए एक आन्दोलन के द्वारा यह मन्दिर बनाने का प्रयास हो रहा है परन्तु भारत की वर्तमान सरकार साम्प्रदायिक मुसलमानों की तुष्टीकरण की नीति के अधीन वहां मन्दिर बनने की अनुमति नहीं दे रही। पिछले कुछ दिनों में श्री राम भक्तों ने वहां जाकर पहले शिलान्यास किया। फिर कार सेवा के द्वारा मन्दिर बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु सरकार ने उसे नहीं चलने दिया। उस समय वहां जो संघर्ष हुआ, उसमें इस समय तक तीन दर्जन के करीब व्यक्ति पुलिस की गोली से मारे जा चुके हैं।

आर्य समाज मूर्ति पूजा का समर्थक नहीं है। सामान्य स्थिति में कहीं कोई मन्दिर बनता है या नहीं। इसमें आर्य समाज न विशेष रुचि लेता है न हस्तक्षेप करता है। परन्तु अयोध्या में जो मन्दिर बनाने की योजना है, वह सारी हिन्दू समाज के स्वाभिमान की प्रतीक है। जो मन्दिर तोड़ा गया था, वह बाहर से आए एक आक्रमणकारी ने तोडा था। इसलिए यह मन्दिर और मस्जिद का प्रश्न नहीं बनता। अपितु एक अत्याचारी आक्रमणकारी व्यक्ति द्वारा हिन्दू जाति की भावनाओं को ठेस पहुचाने के लिए यह सब कुछ किया गया था। हमारे देश में लाखों मस्जिदें हैं। उन्हें हटाकर उनके स्थान पर मन्दिर बनाने का कभी प्रयास नहीं किया गया, न कभी यह मांग की गई है कि केवल उन मन्दिरों या मस्जिदों के विषय में यह प्रश्न उठता है कि जिन्हें कभी किसी आक्रमणकारी ने तोड़ने या बनाने का प्रयास किया था। अयोध्या का राम मन्दिर भी ऐसे ही मन्दिरों में से एक है।

इस सारी स्थिति पर विचार करने के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विश्व हिन्दू परिषद् और दूसरी हिन्दू संस्थाओं की इस मांग का पूर्ण और सबल समर्थन करती है कि श्री राम जन्म भूमि पर जहां पहले मन्दिर बना हुआ था, वहीं फिर से मन्दिर बनाने की अनुमति दी जाए। जो मस्जिद वहां खड़ी है उसे किसी और स्थान पर ले जाया जा सकता है, जैसा कि दूसरे कई इस्लामी देशों में किया जाता है। मस्जिद को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना इस्लाम की मान्यताओं के विपरीत नही है। इसलिए इस समस्या का यही एक समाधान है कि बाबरी मस्जिद को वहां से हटा दिया जाए और उस स्थान पर श्री राम मन्दिर के निर्माण की अनुमति दी जाए।

इस संघर्ष में इस समय तक जो भाई मारे गए हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके परिवारों से अपनी संवेदना प्रकट करती हुई भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार की इस कार्यवाही की घोर निन्दा करती है। जो कुछ सरकार कर रही है वह हमारे देश के विधान का भी उल्लंघन है क्योंकि अपने धर्म की रक्षा के लिए कुछ करना विधान के विपरीत नही है। जो लोग अयोध्या में श्री राम की स्मृति में मन्दिर बनाना चाहते हैं, वह वहां खड़ी मस्जिद को तोडना नहीं चाहते हैं, उसे किसी और स्थान पर ले जाकर मन्दिर बनाना चाहते हैं। यह एक ऐसी योजना है, जिस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इसका पूर्णतया समर्थन करती है। जो भाई इस समय तक इसमें अपना बलिदान दे चुके उनके परिवारों से सहानुभूति प्रगट करते हुए उनकी आत्माओं की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती है और भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से यह मांग करती है कि अयोध्या में श्री राम का मन्दिर बनाने के तुरन्त अनुमति दी जाए।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्

ले०—श्री देवी दयाल शर्मा, शर्मा निवास, 120 माडल टाऊन, अमृतसर।

ओ३म् तन्तुं तन्वन् रजसो
मानुमन्विहि,
ज्योतिष्मत: पथोरक्ष धिया कृतान।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥
(ऋ० 10/53/6)

जिस बात की आवश्यकता रही है, आगे भी रहेगी और अब भी बड़े जोर की अनुभव हो रही है। उस तत्त्व का उपदेश इस मन्त्र में दर्शित किया गया है। वेद में यदि कोई और उपदेश न होता, केवल यही मन्त्र होता तो भी वेद का आसन सब मतों और संप्रदायों से ऊंचा ही रहता।

परन्तु आज हो क्या रहा है। हर मत मतान्तरों के लोग हर एक मनुष्य को अपनी तरफ ही खींचते हैं। यदि कोई ईसाई अफसर है तो वह केवल ईसाइयों को ही Preference देता है। इसी तरह जैन और बुद्धमत को मानने वाले अपना ही डंका बजा रहे हैं। मुसलमान भी मुसलमानों को ही अपना रहे हैं। मानवता का जरा भी विचार उनके दिलो-दिमाग को नहीं छूता। या रे बंदे तू जाति जन्म से ऊपर उठकर वर्ण व्यवस्था को सामने रख कर मानवता का ही उपदेश कर रहा है, जो कोई जिस पद का अपनी योग्यता के बल पर अधिकारी है। वेद उसकी नियुक्ति के लिए ही निर्देश करता है। वेद तो केवल मानवता को देखता है। जाति पाति और जन्म के अधिकारी का बहिष्कार करता है। वेद तो इस बात का हामी है कि कोई भी मानव चाहे इसाई है, जैन मत का है या बुद्ध मत का है, चाहे सिख है या मुसलमान है, अपनी योग्यता के बल पर वह उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर सकता है। यदि ब्राह्मण के घर लेकर अनक्षर रहता है तो वह शूद्र है। यदि वह शूद्र के घर जन्म लेता है और अपनी त्याग और तपस्या के कारण धारणावती और विलक्षण बुद्धि को प्राप्त करके वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करके ऊंचा उठता है तो वह ब्राह्मण कहलाने के योग्य है।

हम सब परमपिता परमात्मा के अमर पुत्र और अमर पुत्रियां हैं तो फिर आपस में इतनी द्वेषता क्यों, इतना भेदभाव क्यों। इस का मूल कारण यह है कि हम स्वार्थता के इतने वशीभूत हो गए हैं कि सिवाय पैसे के हमें कुछ नहीं दिखता। वास्तव में धन ने हमें पागल कर दिया है, (As a matter of fact, we are madened with money). हमें न मौत का भय है, न ईश्वर का। जब यह दोनों भय न रहें तो कुवासना ने हमारे मन को चारों ओर से जकड़ लिया। अन्धकार में कुछ सूझता नहीं, हम ने अज्ञानता और अन्धकारता वश होकर अपने स्वामी को अपने भीतर ही खो दिया है एक Persian poet ने बहुत अच्छा कहा है, "आ च मा करदेम बखुद हेच नाबीना न करद दरमियाने खाना गुम करदयेम साहिबे खाना रा"।

जो कुछ हमने अपने ऊपर किया है ऐसा तो कोई अन्धा भी नहीं करेगा हमने अपने भीतर ही अपने स्वामी को खो दिया है।

दिव्य दृष्टि के न होने से हमने परमपिता परमात्मा को चूने गारे के बने हुए मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजों में बन्दी बना दिया है, लेकिन याद रहे उसका निवास स्थान हमारी आत्मा के अन्दर है। "His abade is in our heart". वह हमारी आत्मा की आत्मा है। एक दार्शनिक (Philosopher) ने बड़ा ही अच्छा कहा है, "The saints percieve the supreme self is the self by the self"! विवेकानन्द, राम तीर्थ, नानक, मुहम्मद, ईसामसीह दयानन्द, यह सब के सब परमपिता परमात्मा के भेजे हुए महापुरुष थे, परमात्मा नहीं थे। किस लिए भेजा इनको—शान्ति और प्रेम का लोगों में संदेश देने के लिए। नफरत और दया-हीनता को मिटाने के लिए।

एक अच्छे Philosopher ने ठीक ही कहा है, Peace and love are more powerful than hatred and cruelty. यदि आज का मानव यह संदेश सुनकर अपने जीवन में धारण कर ले तो आज ही अमानवता समाप्त हो सकती है और शान्ति की राजकता का प्रारम्भ हो सकता है, परन्तु इस संदेश को अपनाने के लिए त्याग और तपस्या की बहुत आवश्यकता है।

हम सब भाई भाई हैं, वेद कहता है
"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे"

ऐ! मानव सब को मित्र की दृष्टि से देख; फिर सारा संसार तुम्हारा मित्र है। जब ऐसे सच्चे और सुच्चे भाव तेरे अन्दर जन्म लेंगे, मानवता तो तेरी कदमबोसी करेगी और अमानवता की राजिकता समाप्त हो जाएगी। वेद तो आगे चल कर पुकार पुकार कर कह रहा है।

'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि
जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना
उपासते ॥

ऐ पुरुषो तुम मिलकर बातचीत करो, तुम्हारा बोल एक हो चाल एक हो, मनन एक हो तुम अपने मनों को एक बनाओ जैसे कि तुम से पहले ज्ञानवान पुरुष अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं। भ्रातृ भाव को दर्शाने के लिए एक दार्शनिक ने बड़ा सुन्दर चित्र नीचे खींचा है।

हममें और आप में दो का खून है अर्थात माता और पिता का। न अकेली स्त्री सन्तान पैदा कर सकती है और न ही अकेला पुरुष। दो के संयोग से सन्तान उत्पन्न होती है।

अब ऊपर चलिए। हमारे माता पिता दो की सन्तान थे तो हुआ न हमारे अन्दर दो का खून। इसी तरह ज्यों ज्यों हम ऊपर चढ़ते जाएंगे, खून का रिश्ता बढ़ता जाएगा। कहो हुए न हम भाई भाई। क्या भाई, भाई का गला काट दे, वेद तो यह सन्देश देता है कि यदि भाई पर संकट के पहाड़ टूट पड़े है तो दूसरे भाई को उस अपने भाई का संकट दूर करने के लिए जीवन न्योछावर कर देना चाहिए। लेकिन हो क्या रहा है। आज भाई, भाई का बैरी बना बैठा है, ऐसी मानवता से तो पशु लाख दर्जे अच्छे हैं। हम नरतन धारी तो हैं परन्तु नरमन धारी नहीं बने। आवश्यकता तो नरमन धारी बनने की है, जिसके लिए हमें पूर्ण रूप से यत्नशील होना चाहिए।

वेद कहता है कि तू संसार का ताना-बाना बुनता हुआ प्रकाश का अनुसरण कर। ऐ मानव, तेरा सारा अनुष्ठान ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। शतपथ ब्राह्मण में कहा भी है—तमसो मा ज्योतिर्गमय। हे ईश्वर, मुझे अन्धकार से, अज्ञानता से छुड़ा कर प्रकाश प्राप्त करा। अज्ञानता और अन्धकारता मृत्यु के प्रतिनिधि हैं। इस लिए अन्धकार से ऊपर-उठ और प्रकाश का पीछा कर। अन्धकार तो उल्लू को पसन्द हैं, मनुष्य को नहीं होना चाहिए।

ज्योतिष्मत: पथो रक्षधिया कृतान।

प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर और अपनी बुद्धि का योगदान भी दे। संसार के सभी देशों में प्रकाश के मार्गों का नाश करने वालों को कड़ा दण्ड दिया जाता है अर्थात Capital punishment, परन्तु विदेशियों ने हमारे बड़े बड़े पुस्तकालय जहां करोड़ों रुपयों की बहुमूल्य प्रकाशयुक्त पुस्तकें थी। अग्नि देव की भेंट कर डाला। यह सब नरतन धारी थे, क्या यह मनुष्य नाम के भी अधिकारी थे।

किसी पक्षी को आकाश में उड़ते देखकर किसी वैज्ञानिक के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि मैं भी पक्षी की तरह आकाश में उडूं। उसने भी कृत्रिम पंख लगाकर उड़ने की इच्छा की। परन्तु वह गिर पड़ा, अंग भंग हो गया। दूसरे Scientist ने अपनी बुद्धि का योगदान दिया, इसी तरह और वैज्ञानिक अपनी बुद्धि का योगदान देते गए। आखिर में क्या हुआ। वायुयान तैयार हो गया। आज आप देख ही रहे हैं कि 500 मनुष्य से ज्यादा भी बैठाने की वायुयान के अन्दर क्षमता है। यह सब बुद्धि के योगदान के चमत्कार हैं।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो। ऐ मानव तू विद्वानों के उलझनरहित कार्यों का ज्ञानपूर्वक अनुष्ठान कर और उन कर्मों का बुद्धि द्वारा प्रचार कर ताकि लोगों के अन्दर जो अन्धकार छाया हुआ है, उसका नाश हो और उन कर्मों को अपने जीवन में भी धारण कर।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। मनुष्य को जितनी सामग्री मिलती है सब समाज से ही मिलती है। मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य है कि वह भी समाज को मरने से पूर्व कुछ दे जावे। समाज का सारा कार्य वेदों के सहारे चलता है। हमने मानवता से ऊपर उठकर देवत्व को प्राप्त करना है। सन्तान पैदा करते समय हमारे अन्दर कुकाम की कामना न हो केवल वेद काम उत्पन्न हों तब हम वेद हितकारी सन्तान को जन्म दे सकते हैं। ऐसी सन्तानें ही संसार के दु:खों को और अन्धकार को दूर कर सकती हैं। सारांश यह कि हमने पहले मानवता को प्राप्त करना है, फिर देवत्व को। देवत्व प्राप्त कर सुसन्तान को पैदा करना है। वेद की ऐसी सुन्दर और दिव्य शिक्षा किसी और ग्रन्थ में नहीं मिलेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के जनहित अभियान का शुभारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने पिछले दिनों सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों को यह आदेश दिया था कि वह उन निर्धन और निसहाय परिवारों की सहायता के लिए अपनी ओर से एक ऐसी कार्यवाही करें कि जनता को यह पता चले कि आर्य समाज केवल वेद प्रचार ही नहीं करता बल्कि रचनात्मक कार्य कर के जनता की सेवा भी करता है। सभा ने अपनी ओर से 400 कम्बल और 500 स्वेटर व 100 शालें बांटने का निर्णय किया था और साथ ही सब आर्य समाजों से कहा था कि वह भी स्वयं अपनी ओर से निर्धन परिवारों की सहायता के लिए गर्म कपड़े इकट्ठे करके बांटें। सभा इसमें अपना जो योगदान दे सकेगी वह देगी।

इस अभियान का शुभारम्भ 4 नवम्बर 1990 को जालन्धर में उस समय किया गया जब आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर का उत्सव हो रहा था। इस अवसर पर लगभग 100 परिवारों को कम्बल और स्वेटर बांटे गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने भार्गव कैम्प में रहने वाले अत्यन्त निर्धन परिवारों को यह कम्बल और स्वेटर स्वयं अपने हाथों दिए। इस अवसर पर सभा के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा और कार्यालय मंत्री की सरदारी लाल आर्यरत्न तथा दूसरे कई आर्य जन वहां उपस्थित थे। इसी प्रकार और भी कई आर्य समाजों ने इस अभियान में अपना योगदान देने के लिए गर्म कपड़े इकट्ठे किये व खरीदे हैं। सभा ओर से भिन्न-भिन्न आर्य समाजों को इस के लिए कम्बल स्वेटर भिजवाए गए हैं। सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सब आर्यसमाजों से कहा की अब हमें अपने प्रचार का ढंग बदलना चाहिये। केवल उपदेश से अब काम नहीं चलेगा जनता के साथ सम्पर्क कर के उन की सेवा हम कर सकते हैं हमें करनी चाहिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस संदर्भ में कुछ और कार्यक्रम भी शीघ्र ही अपनी आर्य समाजों के सामने रखेगी। इस प्रकार पंजाब में आर्य समाज का प्रचार अधिक हो सकेगा हम सेवा के साधनों द्वारा उन परिवारों पर पहुंचने की योजना बनाई है जहां इस से पहले आर्यसमाज नहीं पहुंचा था।

आशा है की सब आर्य समाजें इस ओर विशेष ध्यान देंगी और जनता के साथ अपना सम्पर्क स्थापित करने के लिए जनता की सेवा द्वारा इस उद्देश्य को पूरा करेंगी।

—सह-सम्पादक

सम्पादकीय :—

धर्म को राजनीति की बांदी न बनाओ—2

एक पांच सौ वर्ष पुरानी ऐतिहासिक घटना याद आ गयी है जो कुछ आज हमारे देश में हो रहा है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहास अपने आपको दोहरा रहा है।

लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व फ्रांस में लूई नामक एक व्यक्ति राज करता था वह अत्याधिक ऐश्वर्य पसन्द भी था और अत्याचारी भी। इसके देश में निर्धनता इतनी थी कि लोगों को दो समय का भोजन भी प्राप्त न होता था। आखिर जनता ने इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। एक दिन हजारों लोगों ने उसके महल पर धावा बोल दिया। लूई अपने महल की छत पर खड़ा यह दृश्य देख रहा था। जब उसने वह भीड़ अपने महल की ओर आती देखी तो उसने अपने प्रधान मंत्री से पूछा कि यह क्या है? क्या यह विद्रोह है? प्रधानमंत्री ने उत्तर दिया कि नहीं श्रीमान जी! यह क्रांति है।

मैं भी सोचता हूं कि जो कुछ 30 अक्तूबर को अयोध्या में हुआ है उसे देखकर शायद विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मुलायम सिंह से पूछा होगा क्यों भाई मुलायम, क्या यह विद्रोह है? मालूम नहीं कि मुलायम सिंह ने क्या उत्तर दिया। परन्तु वास्तविकता यह है कि जो कुछ अयोध्या और अन्य शहरों में हुआ है केवल उत्तर प्रदेश के शहरों में ही नहीं सारे देश में हुआ है। यह मात्र सरकार के विरुद्ध विद्रोह न था यह एक नई क्रांति की पृष्ठिभूमि है। इस देश की हिन्दू जनता जिनकी संख्या सारे देश में 80 प्रतिशत के लगभग है इस समय यह महसूस कर रही थी कि इसके अपने ही देश में इसके साथ विमाता जैसा व्यवहार हो रहा है सरकार धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को कुचलने का प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री की धर्मनिरपेक्षता इन्हें यह अनुमति नहीं देती कि अयोध्या में श्रीराम के जन्मस्थान पर उनकी स्मृति में एक मंदिर बनाया जाए। परन्तु मुसलमानों के वोट प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री लालकिले से घोषणा करते हैं कि हजरत मुहम्मद का जन्म दिन एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाएगा। भगवान् राम व भगवान कृष्ण के जन्म दिन और शिवरात्रि के त्यौहारों पर सरकारी छुट्टी नहीं की जा सकती परन्तु हजरत मुहम्मद के जन्म दिन पर की जा सकती है।

सरकार ने दिल्ली की जामामस्जिद को सुन्दर बनाने के लिए 50 लाख रुपया दिया है। किसी हिन्दू मन्दिर के लिए कुछ नहीं दिया अपितु अयोध्या में तो श्रीराम का मंदिर भी नहीं बनाने दिया गया। मुसलमानों की भावनाओं को शांति पहुंचाने के लिए सरकार ने शाहबानो के मुकद्दमा में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की भी परवाह न की थी।

निष्कर्ष यह कि इस देश के हिन्दू बाहुल्य के अधिकारों को पांवों तले रौंद कर मुसलमानों को संतुष्ट करने के लिए अयोध्या में श्री राम का मंदिर भी नहीं बनने दे रही। इसे भी श्रीराम की अपेक्षा उस बाबर की अधिक चिन्ता है जिसने एक मन्दिर को तोड़कर उस पर यह मस्जिद बनाई थी। सरदार पटेल को कोई नया मन्दिर बनाने की आवश्यकता न थी। उन्होंने सोमनाथ के मन्दिर को केवल इसलिए बनवाया था कि हमारे परतंत्रता के दौर का वह चिन्ह समाप्त हो जाए। बाबरी मस्जिद भी उसी दौर का एक चिन्ह है। अब जबकि हम स्वतन्त्र हो गए हैं तो बाबरी शासन काल का यह चिन्ह भी यदि समाप्त कर दिया जाए तो हिन्दुओं और मुसलमानों के सम्बन्ध और अधिक अच्छे हो सकते हैं। हिन्दुओं को किसी मस्जिद पर आपत्ति नहीं है; जगह-जगह मस्जिदें बन हुई हैं किसी मस्जिद को गिराने के लिए कोई नहीं कह रहा। आज केवल बाबरी को वहां से हटाने के लिए कहा जा रहा है। बाबर ने श्रीराम का मंदिर तोड़ा था हिन्दुओं के लिए उसे भूलना कठिन है। परन्तु आज धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुओं से आशा की जाती है कि मुगल राज के समय हिन्दुओं पर जो अत्याचार ढाये गए थे उनकी निशानी भी कायम रहनी चाहिए। सरकार और मुसलमानों का यह रवैया ही वर्तमान स्थिति के लिए उत्तरदायी है। इकबाल ने कहा था :—

> मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
>
> हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा।

परन्तु इसी इकबाल ने फिर पाकिस्तान का ख्याल मुसलमानों के दिमाग में बिठाया था।

मुहम्मद अली जिन्ना अपने समय में सब से बड़ा धर्मनिरपेक्ष नेता समझा जाता था। सरोजनी नायडू ने एक बार जिन्ना के सम्बन्ध में कहा था यह धर्म निरपेक्षता का झंडा उठाने वाला" एक मात्र नेता है। उसी जिन्नाह ने फिर पाकिस्तान बनाया था। जिन्नाह को इस्लाम का कुछ पता न था। उसने कभी नमाज न पढ़ी थी। परन्तु अन्त में इस्लाम का झंडा उठाकर उसने हिन्दुस्तान का विभाजन कराया था। इसलिए मैं कहता हूं कि धर्म या मजहब को अपनी राजनीति की बांदी न बनाओ। धर्म राजनीति से बहुत ऊंचा है। राजनीति के सम्बन्ध में तो कहा गया है कि यह एक शैतान का अन्तिम शरणस्थल है और धर्म मनुष्य को मुक्ति दिलाने का एक मात्र साधन है। आज हमारे राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ की खातिर धर्म से खिलवाड़ कर रहे हैं। इन्हें यह न भूलना चाहिए कि हमारे शास्त्रों में लिखा है कि जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म उनकी रक्षा करता है और जो धर्म को समाप्त करते हैं धर्म उन्हें समाप्त कर देता है।

—वीरेन्द्र

यह आग कब बुझेगी

गत कई वर्षों से पंजाब में आतंकवाद की आग लगी हुई है जिसमें हिन्दू-सिख अमीर-गरीब ग्रामीण-शहरी सभी जलते जा रहे हैं। किस को कहां मौत आकर दबोच लेगी यह कुछ भी पता नहीं। सवेरे अपने काम पर जाते और वापिस घर आते समय कुछ पता नहीं, आतंकवादी कहां रास्ता रोक कर गोली का निशाना बना लें। सवेरे काम पर जाने वाला यह भी नहीं जानता कि सायंकाल अपने बच्चों के पास लौटेगा भी या नहीं। पहले यह आग केवल पंजाब में थी, परन्तु उसके कुछ दिन बाद इस आग की लपटें जम्मू काश्मीर में भी पहुंच गईं। वहां भी प्रतिदिन वहीं कुछ हो रहा है जो पंजाब में कई वर्ष से हो रहा है। परन्तु इसी बीच इसने एक और दूसरा रूप आरक्षण का धारण कर लिया और सारे ही देश में इस आग की लपटें फैल गईं। जगह जगह आरक्षण विरोधी विद्यार्थियों और पुलिस में संघर्ष होना आरम्भ हो गया है और जहां विद्यार्थियों ने झाड़ फूक आरम्भ कर दी, वहां इसके साथ ही आत्मदाह तथा आत्महत्या जैसे कार्य भी आरम्भ कर दिए और इस आरक्षण से जो जातिवाद लगभग समाप्त हो चुका था, जिसे लोग बिल्कुल भूल चुके थे फिर से वह भयंकर रूप धारण करके खड़ा हो गया। एक जाति के लोग दूसरी जाति से एक बार फिर नफरत करने लगे हैं और एक दूसरे के जानलेवा बन बैठे हैं। आरक्षण को लेकर एक हिन्दू दूसरे हिन्दू का शत्रु बन गया है। परन्तु यह आग यहां भी नहीं रुकी। इससे भी आगे बढ़ गई। आज श्री राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद को लेकर हिन्दू और मुसलमानों में भी यह आग भड़क उठी है। जहां इस आग में अयोध्या में पता नहीं कितने लोगों को पुलिस की गोली का निशाना बनना पड़ा, वहां उसके साथ साथ उत्तर प्रदेश और उसके साथ लगते अन्य प्रदेशों के प्रमुख शहरों में हिन्दू मुसलमान फसाद होने आरम्भ हो गए हैं, जिसके कारण कितने ही शहरों मे सरकार को कर्फ्यु लगाना पड़ा। इस प्रकार सारे देश में यह आग भड़क उठी है। आज सारा देश इस आग में जल रहा है परन्तु इसको बुझाने की ओर किसी का भी ध्यान नही जा रहा।

यह आग क्यों लगी? कैसे लगी? किस ने लगाई? शायद यह किसी भी भारतीय से छुपा हुआ न हो। जब यह आग आरम्भ हुई थी यदि उसी समय हमारे राजनीतिक नेता इस को हवा न देते इस पर तेल न डालते बल्कि पानी डालते, बुझाने का प्रयास करते तो यह बड़ी आसानी से बुझ जाती। पहले इस आग को हमारे राजनीतिक नेताओं ने ही भड़काया और जब यह अब धू धू कर के जलने लगी है और वह यह समझने लगे हैं कि अब इस की लपटें हमारे तक भी पहुंच रही हैं तो अब उनको कुछ होश आया है परन्तु फिर भी वह अपनी गद्दियों से चिपटे हुए हैं और उन्हें अपने देश की इतनी चिन्ता नहीं जितनी की अपनी कुर्सी व गद्दियों को बचाने की है। ऐसी कौन सी समस्या है जिसका कोई हल नहीं निकाला जा सकता हो। आतंकवाद जब आरम्भ हुआ था उस पर तभी काबू पाया जा सकता था परन्तु नहीं पाया गया। आरक्षण की मांग किसी ने भी नहीं की थी परन्तु स्वय ही सरकार ने मण्डल कमीशन की रिपोर्ट को लागू कर के देश को इस युद्ध की आग में धकेल दिया। इस आग को भी बुझाया जा सकता है यदि इस पर पानी डालने का प्रयास किया जाए। श्री राम मदिर और बाबरी मस्जिद का विषय कोई ऐसा विषय नहीं था, जिसे सुलझाया न जा सके, परन्तु पहले राजनीतिक नेताओं ने इसे तूल दिया और अब इस को सुलझाने का मार्ग सोचने लगे हैं। यदि पहले ही इस ओर ध्यान दिया जाता तो यह स्थिति पैदा न होती जो आज हो रही है। धर्म निरपेक्षता का राग अलाप कर और मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को अपना कर ऐसा वातावरण पैदा कर दिया गया है कि इससे सारा देश ही संकट से घिर गया है। बुद्धिजीवी लोगों को आपस में बैठकर इस बात पर विचार करना चाहिए कि जो आग कुछ स्वार्थी धार्मिक व राजनीतिक लोगों ने लगाई थी अब उसे कैसे बुझाया जा सकता है। यदि चारों तरफ फैली हुई इस आग को न बुझाया गया तो सारा देश ही इस आग में जल कर राख हो जाएगा। इसलिए राजनीतिक लोगों का साथ छोड़ कर बुद्धिजीवी स्वयं अपने तौर पर आगे आकर इस समस्या से देश की रक्षा करें और प्रभु हमारे राजनैतिक लोगो को सद् बुद्धि प्रदान करे कि वह अपने सभी प्रकार के स्वार्थों को छोड़कर देश को वर्तमान संकट से बचाने का प्रयास करें।

—सह-सम्पादक

भारतीय क्रान्तिकारियों पर आर्यसमाज का प्रभाव

ले०—श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं में ही देश को स्वतन्त्र कराने की प्रेरणा निहित है। यही कारण था कि ऋषि दयानन्द से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रेरणा ग्रहण कर भारत के क्रान्तिकारियों ने शताब्दियों से पराधीन इस देश को स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया। स्वामी जी के प्रत्यक्ष शिष्य कच्छ-निवासी पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा भारत की क्रान्तिकारी चेष्टाओं के आद्य प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने जब यह अनुभव किया भारत में रहकर अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों का सफल संचालन नहीं किया जा सकता, तो स्वदेश त्याग कर इग्लैंड चले गये और लंदन के 'इण्डिया हाऊस' को अपना केन्द्र बना कर प्रवासी भारतीय विद्यार्थियों में स्वाधीनता की भावना को भरते रहे। विनायक दामोदर सावरकर मदनलाल धींगड़ा, लाला हरदयाल, चम्पकरमण पिल्लई आदि वे क्रान्तिकारी थे जो श्याम जी कृष्ण वर्मा के सीधे सम्पर्क में आये। जब श्याम जी को इग्लैंड से निष्कासित कर दिया गया तो वे फ्रांस चले गये और जब उस देश में भी रहने में उन्हें कठिनाई हुई तो अन्ततोगत्वा वे स्विट्जरलैंड चले गये। उन्होने इण्डियन सोशियोलोजिस्ट शीर्षक पत्र का सम्पादन किया और भारत के स्वतन्त्रता संग्राम को प्रबुद्ध किया।

स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर अमर हुतात्मा भगतसिंह के पितामह सरदार अर्जुनसिंह ने अपने परिवार में वैदिक धर्म के आदर्शों को अपनाया था। उन्होंने अपने पुत्र सरदार किशनसिंह को साईदास ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, जालधर में प्रविष्ट कराया ताकि उनमें वैदिक आदर्शों को पल्लवित किया जा सके। सरदार भगतसिंह का तो पं० लोकनाथ तर्कवाचस्पति से विधिवत् यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। आर्य समाज की प्रेरणा ने ही भगतसिंह को देश के लिये सर्वस्व समर्पित करने का मानस प्रदान किया था। वे पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के पास रह कर दैनिक विजय का सम्पादन करते रहे और गुरुकुल कांगड़ी में निवास करते हुए गुरुकुल के तत्कालीन पं० देवशर्मा 'अभय' से सम्पर्क बनाया।

जिन क्रान्तिकारियों ने भारत को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी उनमें पं. रामप्रसाद बिस्मिल का नाम अग्रगण्य है। बिस्मिल ने अपनी स्वलिखित आत्मकथा में आर्य सामाजिक पृष्ठभूमि का विस्तारपूर्वक विवरण दिया। है। वे यह स्वीकार करते हैं कि आर्य समाज शाहजहांपुर में उन्हें स्वामी सोमदेव नामक एक आर्य संन्यासी का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त होता था। इन्हीं संन्यासी जी से उन्होंने देश सेवा की प्रेरणा ली जो आगे चलकर उनके आत्मोत्सर्ग का कारण बनी। ऐसे ही क्रांतिकारियों में पं० गेंदालाल दीक्षित, सोहनलाल पाठक आदि के नाम लिए जा सकते हैं जिनके त्याग और बलिदान के पीछे आर्यसमाज की प्रेरणा कार्य कर रही थी।

लाहौर में आर्यसमाज के देशभक्त अनुयायियों ने आर्यस्वराज्य सभा का संगठन किया। इसके कार्यकर्त्ताओं में सर्वश्री प० रामगोपाल शास्त्री, चौधरी वेदव्रत तथा अजीतसिंह सत्यार्थी के नाम उल्लेखनीय हैं। इससे पूर्व भाई परमानन्द तथा उनके अनुज भाई बालमुकुन्द का भी क्रान्तिकारी गतिविधियों से घनिष्ठ संबध रहा। भाई परमानन्द ने वर्षों तक काला पानी की कालकोठरी में कारावास के कष्ट भोगे तो छोटे भाई बालमुकुन्द ने फासी के फंदे को गले लगाया। उधर दिल्ली में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के आरोप में राजस्थान के आर्य नगर शाहपुरा के निवासी जोरावरसिंह बारहट का नाम लिया जाता है। ठाकुर कृष्ण सिंह बारहट स्वामी दयानन्द के भक्त और शिष्य थे। स्वामी जी से उनका पत्राचार निरन्तर चलता था। इन्हीं के पुत्र केसरी सिंह तथा जोरावर सिंह और प्रतापसिंह ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए जो कष्ट सहे हैं, उनकी कथा ही पृथक है।

महात्मा हंसराज के पुत्र लाला बलराज के क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के प्रमाण मिलते हैं। उत्तर प्रदेश के ठाकुर रोशनसिंह, विष्णुशरण दुबलिश, प्रसिद्ध हिन्दी-लेखक यशपाल आदि अनेकानेक क्रान्तिकारी आर्यसमाज से ही प्रेरणा प्राप्त कर स्वतंत्रता संग्राम में जुट गये थे। अभी तक आर्यसमाज से जुड़े क्रान्तिकारियों का विशद और प्रामाणिक इतिहास लिखा ही नहीं गया है। प० सत्यप्रिय शास्त्री ने भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में आर्य समाज का योगदान शीर्षक ग्रन्थ में इस विषय की विस्तृत चर्चा तो की है जबकि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अन्य इतिहास लेखकों ने जाने-अनजाने इस प्रसंग के साथ पूर्ण न्याय नहीं किया है।

(हव्यदातयै) निर्माता व दाता

ले०—श्री महात्मा प्रेम प्रकाश आर्य कुटिया कुरी

भगवान जीव के कल्याणार्थ केवल सृष्टि के आरम्भ में ही वेद ज्ञान देकर शान्त नहीं हो जाते, अपितु उसके निरन्तर दान के भण्डारे चल रहे हैं, संसार झोलियां भर रहा है, परन्तु लोगे कितना ? वह तो थकता ही नहीं। पाठकों! हम लेते लेते मर जायेंगे, किन्तु भगवान देते ही रहेंगे। भगवान अन्न दूध औषधि ही नहीं "प्राण" भी दे रहे हैं, यहीं तक नहीं अपना प्रेम भरा आत्मा में उपदेश भी दे रहे हैं। आपके पास जल है तो किसी प्यासे को पानी पिला दो, अन्न है तो भूखे को रोटी खिला दो, क्योंकि अन्न दान तो जीवन दान है। वैसे दान अनेक प्रकार का है, जैसे वस्त्र दान, विद्या दान, अभय दान आदि। बन्धुओ! जब धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, वायु ने प्राण देने से इन्कार नहीं किया, जल ने जीवन देने से इन्कार नहीं किया और सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नहीं किया तो तू कृपण किस लिए। दाता का दान सर्वदा निःस्वार्थ होना चाहिए, जैसे गाय के बछड़े को दूध पिलाना।

2. भगवान प्रातः दे रहे हैं, सायं दे रहे हैं। सूर्य समुद्र से जल लेकर मेघ द्वारा सर्वत्र बरसाता है, बरसा हुआ जल, अन्न, फल आदि उत्पन्न करता हुआ, पुनः भागा भागा समुद्र को प्राप्त करके ही शान्ति लेता है, ऐसे ही दाता का दान फलता फूलता हुआ पुनः दाता को आकर ही प्राप्त हो जाता है। संसारी लोग मित्र चाहते है, दाता को मित्रों की क्या कमी ? जिसके अधिक मित्र होंगे, निःसन्देह धर्म युद्ध में उसकी ही विजय होगी, जिसकी विजय उसका "यश" संसार गाता है, अतः दान देकर "यश" कमाओ। दान देने से कीर्ति होगी और जीवन देने से "कीर्तन"।

3. दान उसी से मांगा जाता है, जिसके पास कुछ देने को हो। भिखारी से मांगता है कौन ? और वह देगा क्या ? हे ईश्वर! तू तो सब कुछ दे रहा है, क्योंकि तू सर्व हितकारी है, परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हम लेने के लिए आपके पास नहीं पहुंचते, अपितु भिखारियों से ही मांग बैठते हैं। भिखारी, भिखारी से नहीं दाता से मांगते हैं, दाता, दाता से नहीं, दाताओं के "दाता" से मांगते हैं। मांगने का स्थान एक देने वाला एक, परन्तु लेने वाले अनेक हैं। पिता जी! जो जोगी को चाहिए वह तेरे पास है, जो अमीर को चाहिए वह भी तेरे पास है, जो गरीब को चाहिए वह भी तेरे पास है, अर्थात् चींटी से हाथी पर्यन्त जिसको जो वस्तु चाहिए, वह तेरे पास है, वह सब तेरे पास है, क्योंकि तू सभी ऐश्वर्यों का निर्माता और दाता है, भिखारी तो दाता के दान का अनुमान भी नहीं लगा सकते।

4. दान, तन, मन और धन से दिया जाता है, जब तन से दिया, तो मन और धन जायेंगे कहां ? दान कितना है महत्त्व इस बात का नहीं, महत्त्व इस बात का है कि दान कितनी "श्रद्धा" से दिया गया है। दान बसाने के लिए होता है। उजड़ों को बसाना नंगों को कपड़ा देना, भूखों को रोटी देना और प्यासों को पानी पिलाना, मानों जीवन दान देना "दाता" का दायित्व है। अकेला खाने वाला पाप खाता है "केवलाघो भवति केवलादि" दाता बांट कर ही खाता है। पिता जी! मैं तो तेरे दर का भिखारी बनूंगा, मैं नहीं जाऊंगा किसी और से मांगने। मुझे क्या पता देने वाले का स्वभाव कैसा है ?" मैं मांगू कपड़ा वह देवे थपड़ा" मैं मांगू रोटी वह देवे सोटी, तो क्या होगा मेरे भगवान ? और मुझे एक दो वस्तुएं नहीं चाहिएं, मुझे तो बहुत कुछ चाहिए, क्या मैं दर-दर के धक्के खाऊं ? यदि सारी दुनिया से भी मांग लूं। फिर भी प्राण रूपी "जीवन" मांगने के लिए तेरे दर पर आना पड़ेगा। मैं क्यों न वहां से सीधा लूं ? जहां से सभी कुछ मिल सकता हो, मैं क्यों स्थान-स्थान पर मांगता फिरूं। मैं तो उससे मांगूंगा, देने वाले भी जिससे मांगते हैं और जो देकर भूल जाता है। मेरे भगवान! भिखारी हूं तेरे दर का, भिक्षा लेकर जाऊंगा, मैं तेरा हूं तू मेरा है, रख चाहे मार।

दीपावली तथा ऋषि निर्वाण उत्सव

आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में ऋषि निर्वाण उत्सव दिनांक 14-10-90 से 18-10-90 तक बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया गया। वेद पाठकों द्वारा विशेष यज्ञ आरम्भ हुआ और उसकी पूर्ण आहुति दिनांक 18-10-90 को डाली गई। जिसमें नगर के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। बहन दुर्गा देवी अध्यापिका आर्य अनाथालय फिरोजपुर ने अपने स्कूल के बच्चों द्वारा ऋषि के जीवन पर भजन कविता तथा कव्वाली द्वारा बड़ा सुन्दर कार्यक्रम रखा। अन्त में प्रोफैसर धर्म पाल राम पाल Double M. A. R. S. D. College द्वारा स्वामी जी के उपकारों पर बहुत प्रभावशाली उपदेश हुआ। जिससे जनता में जागृति की भावना आई। श्री रामप्रकाश मैम्बर समाज की द्वारा बच्चों को इनाम बांटे गए। स्त्री समाज के श्रीमती राय प्यारी शर्मा तथा प्रकाश गुप्ता ने पूर्ण सहयोग दिया।

शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन के पक्षधर : पं० गुरुदत विद्यार्थी

ले०—श्री डा० प्रशान्त वेदालंकार 7/2 रूप नगर दिल्ली—6

पं० गुरुदत्त जी के शिक्षा विषयक विचारों को प्रकट करने से पूर्व उनके जीवन पर प्रकाश डालना आवश्यक है। जब वह अपने जन्म स्थान मुलतान के एक विद्यालय के छात्र थे तभी उनमें धर्म की ओर रुचि उत्पन्न हो गयी थी और उन्होंने सदाचारमय सात्विक जीवन बिताना प्रारम्भ कर दिया था। इसी कारण उनके सहपाठी उन्हें वैरागी और गुरुजी कहते थे वे जाति से अरोड़ा थे पर अपने पाण्डित्य के कारण पण्डित कहलाये।

पिताजी से उन्होंने फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया तथा अपने स्कूल से उन्होंने अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त की। वे अपने धर्म के ज्ञान के लिए संस्कृत भी पढ़ना चाहते थे। इसीकारण वे आर्य समाज का सदस्य बनकर वे महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं के सम्पर्क में आये। यही उन्होंने संस्कृत भाषा सीखकर वैदिक धर्म के प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया।

गुरुदत्त राजकीय महाविद्यालय के अत्यन्त प्रबुद्ध छात्र थे। उनके प्राध्यापक भी उनकी प्रतिभा और कुशाग्रबुद्धि की प्रशंसा करते थे। महाविद्यालय में उनका विज्ञान विषय था। पर धर्म और दर्शनशास्त्र के प्रति उनकी रुचि थी, और वह इनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहते थे। अपने पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान न दे सकने पर भी वे विज्ञान में सदा अच्छे अंक प्राप्त करते थे।

उन दिनों पाश्चात्य जगत् में अनेक वैज्ञानिक विचारक विकासवाद, भौतिक वाद और अनीश्वरवाद जैसे सिद्धान्त का प्रतिपादन कर रहे थे। डार्विन का विकासवाद ईश्वर को सृष्टिकर्ता मानने के सिद्धान्त के विरुद्ध था? पश्चिम के वैज्ञानिक भौतिक क्षेत्र के अतिरिक्त समाज, धर्म, संस्कृति की भी विकास-वाद के अनुसार व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहे थे। भारत के नव-शिक्षित युवकों पर भौतिकवाद का प्रभाव पड़ रहा था। गुरुदत्त भी उनमें से एक थे। उन्होंने अपने जीवन के दो वर्ष (1881 से 1882) तक ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ दिया और वे अपने को नास्तिक कहने लगे। पर इस काल में भी गुरुदत्त लाला साईदास जैसे आर्यसमाजियों के सम्पर्क में रहे, जिस कारण उनके हृदय से धर्म व आस्था के बीज विलुप्त नहीं हुए।

सन् 1882 के प्रारम्भ में गुरुदत्त ने एक फ्री डिबेटिंग क्लब की स्थापना की, जिसमें धार्मिक, शैक्षणिक व राजनीतिक विषयों पर खुला वाद-विवाद प्रारम्भ किया गया। प्रारम्भ में गुरुदत्त वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध अपना पक्ष प्रस्तुत करते थे। पर बाद में धीरे-धीरे उनके विचारों में परिवर्तन आया और उन्होंने आर्यसमाज के मन्तव्यों को पुष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। परिणामत: फ्री डिबेटिंग क्लब के सदस्य वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट होने लगे। गुरुदत्त से प्रभावित होने वाले युवकों में लाला लाजपतराय ने लिखा है—मुझे गर्व है कि सम्भवत: मैं ही वह प्रथम व्यक्ति हूं, जिसके हृदय में पण्डित गुरुदत्त की वक्तृता और वाद-विवाद ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर दृढ़ निश्चय कराया है। लाला जी की माता सिख परिवार की थीं और पिता मुंशीराधाकिशन पर इस्लाम का प्रभाव था। वे नमाज पढ़ते थे, रमजान का व्रत रखते थे और आर्य समाज के विरुद्ध लेख भी लिखा करते थे। ऐसे पिता के पुत्र को वैदिकधर्म का अनुयायी बनाकर गुरुदत्त ने आर्यसमाज का महान कार्य किया।

मूलत: विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण गुरुदत्त हिन्दू धर्म और वेदों की प्रमाणिकता को वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध करने लगे। वे राजकीय महाविद्यालय लाहौर के हिन्दू विद्यार्थियों के मन में अपने धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कराने में समर्थ रहे।

लाहौर में 'आर्यप्रेस' नाम का एक मुद्रणालय था, जिसके स्वामी लाला शालिग्राम थे। उन्होंने आर्यसमाज की की ओर से अंग्रेजी और उर्दू में दो दो पत्र प्रारम्भ किये। अंग्रेजी पत्र का सम्पादन हंसराज और गुरुदत्त ने तथा उर्दू पत्र का सम्पादन लाला लाजपतराय ने प्रारम्भ किया। उस समय युवकों में इतनी त्याग वृत्ति थी कि शालिग्राम जी के चाहने पर भी इन युवकों ने सम्पादन कार्य के लिए कोई वेतन स्वीकार नहीं किया।

यहां इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि यद्यपि गुरुदत्त जी अंग्रेजी पढ़े लिखे तथा विज्ञान के छात्र थे तो भी उनकी रुचि धर्म, योग और वेद-वेदांगों के अध्ययन की ओर अधिक थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती के योग द्वारा स्वेच्छापूर्वक प्राणत्याग के दृश्य को अपनी आंखों में देखकर योग सीखने की उनकी इच्छा बहुत प्रबल हो गई थी। अजमेर से लाहौर वापस लौटकर उन्होंने योग दर्शन का विधिवत अध्ययन प्रारम्भ कर दिया था। उनकी दैनन्दिनी में अनेक स्थानों पर योग के प्रति रुचि का प्रमाण प्राप्त होता है। योग के ही कारण गुरुदत्त जी ने राजकीय महाविद्यालय के प्रोफेसर पद से त्यागपत्र दे दिया। वे अपने प्रात:काल के दो घण्टे के समय को भी योगाभ्यास से नहीं हटाना चाहते थे।

इन्हीं दिनों वे योग के साथ वेद-शास्त्रों के गूढ़ अर्थों को समझने का प्रयत्न कर रहे थे। वेदों पर उनकी अगाध श्रद्धा थी। उन के वास्तविक अभिप्राय को समझने के लिए उन्होंने व्याकरण और निरुक्त सदृश वेदांगों का अध्ययन किया। हमने इस लेख में गुरुदत्त जी के स्वभाव व व कृर्तत्व का परिचय एक विशेष प्रयोजन से किया है। उसकी यह सारी शिक्षा बाद में उनके शिक्षा विषयक विचारों का आधार बनी।

गुरुदत्त जब आजमेर से लाहौर सुदृढ़ आस्तिक बनकर वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि यहां महर्षि का एक स्मारक दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल एव कालिज स्थापित करने पर विचार चल रहा है। गुरुदत्त प्रारम्भ से ही उसमें रुचि लेने लगे। 8 नवम्बर 1883 को लाहौर के आर्य समाज मन्दिर में आयोजित एक सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। उक्त स्मारक के लिए उसमें सात हजार से भी अधिक रुपए तत्काल एकत्र हो गए। गुरुदत्त जी ने भी अपनी एक मास की छात्र-वृत्ति 25 रुपये इस स्मारक कोश में दे दी।

प्रारम्भिक वर्षों में डी०ए०वी० स्कूल एव कालिज के लिए धनसंग्रह के कार्य में गुरुदत्त जी का विशेष योगदान रहा। गुरुदत्त विविधि नगरों की आर्य समाजों में जाकर धन के लिए अपील करते और जनता उन्हें श्रद्धा तथा उत्साह के साथ धन प्रदान करती।

1 जून 1885 को उक्त संस्था की विधिवत् स्थापना कर दी गयी। इस नयी शिक्षण संस्था के उद्देश्यों में संस्कृत और वेद-वेदांगों के उच्च अध्ययन की व्यवस्था के साथ ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी की शिक्षा देने का भी लक्ष्य रखा गया। डी०ए०वी० शिक्षण-संस्थान की नियमावली तथा पाठविधि के निर्माण में भी गुरुदत्त जी ने रुचि ली।

लाहौर आर्य समाज के सन् 1886 के वार्षिकोत्सव पर लाला लाजपतराय तथा पण्डित गुरुदत्त ने डी०ए०वी० कालिज के लिए धन की जो अपील करते हुए कहा था कि देशवासियों को केवल इस कारण से कालिज की सहायता नहीं करनी चाहिए कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के सेवामय जीवन के उपकारों से दबे हुए हैं, अपितु इसलिए भी कि इस समय सदाचार और धर्म शिक्षा का नितान्त अभाव है। सन् 1887 के लाहौर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर पण्डित गुरुदत्त ने अपने व्याख्यान में कहा था—ब्रह्मचर्य के बिना लोगो के जीवन दु:खमय हो रहे है, ब्रह्मचर्य का पालन कर सकना तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि वेद तथा शास्त्रों का अध्ययन न करें। डी०ए०वी० कालिज से देश को एक बड़ा लाभ यह होगा कि उसमें धर्म-शास्त्रों तथा धर्म का ज्ञान कराया जाएगा। महात्मा नारायण स्वामी ने अपनी आत्मकथा में डी०ए०वी० के लिए गुरुदत्त जी के मुरादाबाद जाने का वर्णन किया है—'स्व० पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने मुरादाबाद आकर दयानन्द कालिज के लिए धन की अपील की। अपील मे कही सारी बातें यहां गौतम और कणाद को उत्पन्न करने की थीं, जो कुछ वर्ष पहले गुरुकुलो के लिए कही जाया करती थी और जिन्हें आज कहते हुए गुरुकुल के पुष्टपोषक भी संकोच करते हैं। भला जब गुरुदत्त जैसा वक्ता हो और योजना गौतम और कणाद बनाने की मशीन ढालने की हो, तो क्या असम्भव है? ये कुछ उद्धरण यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि आर्य जनता डी०ए०वी० कालिज से संस्कृत तथा वेदशास्त्रों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आशा करती थी। गुरुदत्त विद्यार्थी ने डी०ए०वी० कालिज के इन्हीं उद्देश्यों को सामने रखकर ही डी०ए०वी० संस्थाओं के लिए जनता से प्रभूत धन एकत्र किया था।

(क्रमश:)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय विकास की सतत यात्रा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह अगस्त 1990 को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री विमल भाई मेहता भारत सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री, मानव संसाधन मंत्रालय विशेष अतिथि के रूप में पधारे। इस वर्ष विश्वविद्यालय के पी.एच.डी., एम.ए., एम.एस.सी., बी.एस.सी., विद्यालंकार, वेदालंकार आदि के 104 स्नातको को कुलपति श्री सुभाषविद्यालंकार ने उपाधियां वितरित करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति का परिचय दिया वैदिक विद्वान आचार्य प्रियव्रत जी ने नव स्नातकों को उपदेश देते हुए गुरुकुल की परम्पराओं के अनुसार की शिक्षा का प्रसार करने का अनुरोध किया।

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री विजयेन्द्र स्नातक तथा 84 के चिकित्सा शास्त्र के महान पडित डा० जैतली को विद्यामार्तण्ड की उपाधिया मानवीय मंत्री श्री चिमनभाई मैहता द्वारा प्रदान की गई। अपने दीक्षान्त भाषण मे प्रो० शेर सिंह जी ने नव स्नातकों को आशीर्वाद दिया और उन्हें परामर्श दिया कि आप जहा भी जावें वहां गुरुकुलीय छाप बनाये रखें। संन्यासियों की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भी नव स्नातकों को आशीर्वाद दिया।

पत्रकारों के अखिलभारतीय सम्मेलन मे पधारे पत्रकारों के सम्मान में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से रात्रि भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजेन्द्र माथुर, श्री राजमोहन गांधी, श्री जयपाल रेड्डी, श्री बी.एस.सिन्हां, श्री एडन व्हाइट श्री आर.प्रभू, श्री वीरेन्द्र ढल आदि पत्रकारों व नेताओं का स्वागत किया गया इस अवसर पर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री सुभाषविद्यालंकार की मांग पर मुख्यमंत्री महोदय ने इस विश्वविद्यालय में आचार्य किशोरीदास वाजपेय की की स्मृती में शोध पीठ की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की तथास्वागताध्यक्ष के रूप में कुलपति महोदय की इस मांग को मुख्य मंत्री जी ने स्वीकार कर लिया कि हरिद्वार में एक पत्रकार कालोनी तथा एक पत्रकार भवन का निमार्ण किया जाये। प्रो० विष्णुदत्त राकेश ने उपस्थित पत्रकारों को गुरुकुल की पत्रकारिता में योगदान में भूमिका के बारे में अवगत कराया। उन्हों ने पत्रकारों को अवगत कराया कि गुरुकुल की भूमि से ही हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ था।

विश्वविद्यालय में रिक्त पदों पर नियुक्तियों हेतु यू.जी.सी. द्वारा 7वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तंगत प्रतिबन्ध लगादिया गया था। लेकिन कुलपति जी के अथक प्रयत्नों द्वारा यू.जी.सी. द्वारा यह प्रतिबन्ध हटालिया गया है। तथा अधिकांश पदों हेतु चयन प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई। तथा अधिकांश चयनित व्यक्तियों ने अपना कार्य भार ग्रहण कर लिया है।

आरक्षण के विरोध में यद्यपि स्थानीय सभी स्कूल एवं कालेज पिछले दो माह से बन्द हैं लेकिन इस विश्वविद्यालय में निरन्तर निर्देशन, अध्ययन, अध्यापन का कार्य चल रहा है।

ग्लोबल एक्सचेन्ज कार्यक्रम के अन्तंगत दिनांक—4.10.90 को 15 छात्रों का एक दल इस विश्वविद्यालय में आया उन्हें पुस्तकालय के संदर्भ विभाग में भारतीय दर्शन, एव वैदिक साहित्य से परिचित कराया गया। तथा उन्होंने वैदिक साहित्य संस्कृत साहित्य आर्य साहित्य एवं दुर्लभ ग्रन्थों का अवलोकन किया। पुस्तकालय हाल में विश्वविद्यालय के छात्रों से उनका एक परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों ने एक दूसरे के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्हें गुरुकुल कागडी फार्मेसी में आयुर्वेदिक औषधियों की निर्माण प्रक्रिया से भी परिचत कराया गया।

18 सितम्बर 1990 को विश्वविद्यालय के भू० पूर्व कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के जन्म दिवस को इतिहास दिवस के रूप में मनाया गया। डा० सत्य केतु जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए डा० के.एस. वाजपेयी, आचार्य प्रियव्रतजी डा० राकेश जी ने यह कहा कि डा० सत्यकेतु जी एक व्यक्ति नहीं संस्था थे। इस अवसर पर उनकी धर्म पत्नी भी उपस्थित थीं उन्हों ने डा० सत्यकेतु जी के अछूते जीवन प्रसंगों को उपस्थित समुदाय को सुनाया। इस कार्यक्रम का आयोजन डा० जबर सिंह सेंगर अध्यक्ष, इतिहास विभाग द्वारा किया गया।

दिनांक—4.10.90 को वेद मन्दिर में डा० रामनाथ जी वेदालंकार भूतपूर्व आचार्य एवं प्रोफेसर दयानन्दपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ को उ०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के उपलक्ष में पुरस्कृत किये जाने के फलस्वरूप उनका अभिनन्दन विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा डा० रामनाथ जी को 25,000 रुपये के वेद विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

जोधपुर में महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की अन्तिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास में दिनांक 27-9-90 से 30-9-90 तक महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ। 29 मई 1883 को इसी स्थान पर महर्षि दयानन्द को प्राणघाती विष दिया गया था। महर्षि की इसी स्मृति में उक्त सम्मेलन एवं महायज्ञ का आयोजन किया गया। सामवेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री अर्जुनदेव जी स्नातक आगरा एवं वेदपाठी श्री रामनारायण जी शास्त्री भरतपुर एवं श्री रतनलाल जी पालड़िया अजमेर थे। जोधपुर नगर के हजारों श्रद्धालुओं ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से यज्ञ में भाग लिया।

दिनांक 29-9-90 को राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी की अध्यक्षता में आए हुए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की सम्मिलित बैठक में स्मृति भवन की वर्तमान दशा एवं भावी योजनाओं पर विचार विमर्श करके यह निर्णय लिया गया कि स्मृति भवन में सन्यास एवं वानप्रस्थ आश्रम खोला जाएगा जहां निःशुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा के साथ पूर्ण स्वाध्याय की व्यवस्था भी की जाएगी। आगामी वर्ष जब स्मृति सम्मेलन आयोजित हो उससे पूर्व एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण भी कराया जाए।

दिनांक 30-9-90 को महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् दो बड़े सम्मेलन आयोजित हुए—पहला महिला सम्मेलन जोधपुर की भूतपूर्व राजमाता श्रीमति कृष्णा कुमारी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें नगर और आसपास की सैकड़ों महिलाओं ने उत्साह से भाग लिया। रात्रि कालीन आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता जोधपुर के भूतपूर्व नरेश महाराजा गजसिंह सांसद ने की। इस अवसर पर बोलते हुए श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने महाराजा गजसिंह को आर्य समाज की गतिविधियों में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया और कहा कि यदि महर्षि दयानन्द के विचारों के अनुसार स्वतन्त्रता के बाद चला जाता तो आज आरक्षण के दावानल की विभीषिका से बचा जा सकता था। महाराजा गजसिंह ने महर्षि दयानन्द और राजघराने के घनिष्ठ सम्बन्धों की ओर संकेत करते हुए कहा कि जब भी आवश्यकता होगी, मैं आर्य समाज के सहयोग सेवा के लिए तैयार हूं। अर्जुन देव जी और स्वामी चन्द्र देव जी ने भी अपने विचार रखे।

सम्मेलन के चारों दिन आचार्य श्री अर्जुनदेव जी स्नातक आगरा स्वामी चन्द्रदेव जी हरिद्वार, स्वामी सुमेधानन्द जी श्री गंगानगर के प्रवचन एवं उपदेश तथा श्री पन्नालाल जी पीयूष एवं श्री भूपेन्द्र सिंह जी के भजनोपदेश होते रहे।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जोधपुर के भूतपूर्व नरेश महाराजा गजसिंह जी ने डा० भवानी लाल जी भारतीय द्वारा लिखित लघु पुस्तिका "ऋषि दयानन्द का साढ़े चार मास का जोधपुर प्रवास" का विमोचन भी किया।

पण्डित गुरुदत्त जी की निर्वाण शताब्दी

आर्य समाज मन्दिर बैकफील्डगंज, लुधियाना में 2-10-90 से 7-10-90 तक पण्डित गुरुदत्त जी की निर्वाण शताब्दी मनाई गई। जिस में पुरोहित पण्डित दया सागर जी शास्त्री जी ने प्रातःकाल व सायंकाल में यजुर्वेद शतकम् का पाठ किया तथा पण्डित गुरुदत्त जी की जीवनी पर प्रकाश डाला और बहनों, भाईयों तथा माताओं ने भजनो से श्रोताओं को आनन्दित किया और इन यज्ञों में निम्नलिखित यजमान बने—

श्रीमती सावित्री देवी जी मन्त्री आर्य समाज, हरीश चन्द्र जी सूद उपमन्त्री व उनकी धर्मपत्नी कमलेश जी सूद, श्रीमति उषा जी सूद, श्रीमति विमला जी, श्रीमति कांता गुप्ता जी, श्रीमति दर्शना जी, श्री विजय कुमार जी तथा उनकी धर्मपत्नी सन्तोष जी, प्रधान चानन राम जी के सुपुत्र श्री सुरेश जी तथा उनकी धर्मपत्नी, श्री रमेश कुमार, सूद कोषाध्यक्ष तथा उन की धर्मपत्नी श्रीमति नीलम सूद, श्री नन्द लाल जी बहुता तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमति जानकी देवी जी, श्री हर्ष जी आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी, श्री हरीश जी मुसद्दानी तथा उनकी धर्मपत्नी, और गंगा राम व पुराने कार्य समाजी श्रोमृद्ध लाला जगन्नाथ पुरी जी ने कोषाध्यक्ष के नन्हें मुन्हें बच्चे विशाल सूद को आशीर्वाद दिया।

(नोट—हमारे समाज में प्रतिदिन प्रातःकाल हवन किया जाता है तथा सायंकाल 6 बजे से 7 बजे तक सत्संग किया जाता है।)

व्यक्तित्व क्या है ?

बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व निर्माण पर पत्र रूप में लिखा श्री पं० सुरेश चन्द्र जी वेदालंकार का यह लेख, पाठकों के लाभार्थ आर्य मर्यादा में दिया जा रहा है अवश्य ही पाठक इसे पसन्द करेंगे।

—सहसम्पादक

प्रिय विनोद भारती,

अभी तुम दोनों बालक एवं बालिका हो। तुम्हें जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अपना विजयशील व्यक्तित्व निर्माण करना है। वेद एक मंत्र है :—

वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा-वयम् सासह्याम पृतन्यतः।

हे इन्द्र ! हम तेरे साथ रहकर तथा अस्त्रों का प्रयोग करने वाले शूरवीरों के साथ रहकर (पृतन्यतः) सेना से हमला करने वाले शत्रु का (सासह्याम) पराभव करेंगे।

इस मन्त्र में विजय की प्रार्थना है। जीवन युद्ध-क्षेत्र है। इसमे विजय प्राप्त करने के लिए उच्च व्यक्तित्व का निर्माण हमें करना है। हमारे हृदय मे जो आशाभरी उच्च तरंगे उठा करती है, आत्मा में जिन महत्त्वाकांक्षाओं का जन्म होता रहता है, हमारे मन में जिन दिव्य भावनाओं का उदय होता रहता है, जिन सफलताओं की हम चाह करते हैं, उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी बच्चो, याद रखो, हमारी हार्दिक अभिलाषायें हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती हैं। वे हमारी योग्यताओं को बढ़ाती हैं। ईश्वर का हमें यह आदेश है कि पूर्ण बनो। मनुष्य मे पूर्णता प्राप्त करने की, पूर्ण व्यक्तित्व-निर्माण की शक्ति है बशर्ते कि हम अपने आदर्श को मजबूती से पकड़ लें।

इसी बात को दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि तुम्हें अपने व्यक्तित्व का निर्माण अभी से करना है। तुम शायद पूछो कि व्यक्तित्व क्या है ? व्यक्तित्व सुन्दरता नही है। शिक्षा नहीं है। इसी तरह यह आकृति नही है। यह वस्त्र, उपाधि या पदवी या प्रतिष्ठा या प्रमुखता नहीं है तथापि इन सब विशेषताओं के साथ उसका सम्बन्ध हो सकता है या इनमें सर्वथा स्वतन्त्र स्थिति भी। मुख और आकृति का सौन्दर्य बहुमूल्य संपत्ति है, प्रभाव, पद और उपाधियां सब सहायता देती है पर व्यक्तित्व ही लक्ष्य का विजय लाभ करता है।

तुम्हारा व्यक्तित्व 'तुम' ही जिसे कि दूसरे लोग देखते हैं, सुनते, स्पर्श करते हैं, और उसकी ओर आकृष्ट होते हैं या उससे उद्विग्न होते हैं। वास्तव में यदि मैं कहूं कि तुम्हारी बाह्यसत्ता द्वारा तुम्हारी आन्तरिक शक्तियों का प्रकाशन ही तुम्हारा व्यक्तित्व है तो अनुपयुक्त न होगा।

अब यह आवश्यक है कि हम अपना व्यक्तित्व बाह्य स्वरूप के समान अपने आन्तरिक स्वरूप के विषय में भी जानकारी प्राप्त करें और देखें कि यह किस प्रकार अपने को प्रकट करती है और उसका दूसरे पद पर कैसा प्रभाव पड़ता है।

प्रत्येक मनुष्य में अपने कुछ विशेष गुण होते हैं। जो उसके आकार द्वारा दूसरों पर थोड़ा या अधिक मात्रा में अपना प्रभाव डालते हैं। कभी तो उन विशेषताओं का प्रभाव हम पर ऐसा पड़ता है कि हम प्रभावित हो उनकी ओर आकर्षित होते है और कही हम उनसे उद्विग्न होते है। आकर्षक मनुष्य उपने में उन विशेषताओं को रखते हैं जिन्हें हम रुचिकर कहते हैं इसके उद्वेगजनक मनुष्य अरुचिकर गुणों से युक्त होते हैं। व्यक्तित्व का सबसे अच्छा लक्षण यह है कि तुम दूसरों के सामने जो कुछ प्रतीत होते हो उस सबका पूर्ण सकलन हो। बच्चो, इन सब बातों का उचित रूप में स्थापित करने के बाद हम लोग इस अत्यधिक लाभजनक अध्ययन के रहस्यों के अन्वेषण में संलग्न हो जाएं।

यदि तुम यह जानना चाहते हो कि किन अवस्थाओ से तुम्हें दूसरे लोग आदर की दृष्टि से देखेंगे तो इसके लिए दूसरों से पूछने की आवश्यकता नहीं। यह बात तो तुम अपने से पूछो कि दूसरों मे कौनसी विशेषता है जिससे तुम आकर्षित हो जाते हो। अपने दोस्तों, पड़ोसियों और सहायकों मे ऐसे व्यक्तियों के, जिनका अपनी जाति और समाज में खूब प्रभाव है, नाम चुनो और कम से कम ऐसे आठ दर्जन व्यक्तियों के नाम चुनने के बाद तुम उनमें से प्रत्येक की विशेषता का अलग-अलग रूप से अध्ययन करो और जिस विशेषता के कारण उसका दूसरों पर प्रभाव पड़ता है, नोट कर लो।

इस प्रकार जांच पड़ताल करने के बाद तुम्हारे सामने कुछ इस प्रकार के गुण आवेंगे जैसे शारीरिक स्फूर्ति, प्रसन्न और उल्लासपूर्ण प्रकृति, निर्भयता सहानुभूति, निर्भरता योग्यता, मित्रता, दूसरों के कल्याण में निरत जीवन, वैयक्तिक आकर्षण, प्रेममय मुस्कान, मधुर मनोहर स्वर, सुरुचि और इस तरह के अनन्त दूसरे गुण। ये उपकरण हैं, और यदि इनका ठीक तरह प्रयोग किया जाए और नियन्त्रण किया जाए तो तुम्हें निश्चय ही विजयशील व्यक्तित्व की प्राप्ति होगी।

इस विजयशील व्यक्तित्व के लिए अपना व्यक्तित्व चमत्कारी बनाने के लिए तुम अपनी कमजोरियों को अपने मे से निकाल दो और विशेषताओं की वृद्धि करो। शारीरिक, मानसिक एव आध्यात्मिक तीनों दृष्टियों से किसी में तुम हो, तुम्हारा व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होगा।

विजयशील व्यक्तित्व के निर्माण के लिए बल शक्ति, स्फूर्ति, उत्साह, दृढ़ निश्चय, अभावग्रस्तों के प्रति सहानुभूति एव सहृदयता का होना अनिवार्य गुण हैं।

बच्चो, इस प्रकार जब तुम्हे विजयशील व्यक्तित्व की प्राप्ति हो जायगी, तो तुम अपनी अभिलाषाओं और महत्त्वाकांक्षाओ को और शीघ्र पूरा कर सकोगे। मनोरम व्यक्तित्व तुम्हे उन सब वस्तुओं की प्राप्ति करा देगा जिनकी तुम लालसा करते हो। जैसे कमनीय उच्च स्थिति, पदोन्नति, मित्र, लोक-प्रियता और जीवन में सफलता के लिए जो कुछ आवश्यक है वह सब तुम्हें प्राप्त होगा।

अच्छा, जीवन की सफलता के लिए शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुरेशचन्द्र वेदालंकार

हम प्रेम की गंगा बहा देंगे

(रचयिता—श्री महाशय किशोरीलाल जी प्रेम,)

इस देश में हमने जन्म लिया, इस देश के कष्ट मिटा देंगे,
हम अपने ही पुरुषार्थ से, इस देश को स्वर्ग बना देंगे।
कह गए वीर जवाहर यह, आराम हराम है सब के लिए,
उत्साह से काम करेंगे तो, सबको खुशहाल बना देंगे।

यह तन मन धन सब देश का है हम देश के, देश हमारा है,
इस देश का मान बढ़ाने को अपना सर्वस्व लगा देंगे।
यह भारतवर्ष हमारा है, यह जान से हमको प्यारा है,
भारत की रक्षा करने को हम अपना खून बहा देंगे।

हम पञ्चशील भी मानते हैं और युद्ध करना भी जानते हैं,
जो जैसा चाहेगा उसको वैसा ही पाठ पढ़ा देंगे।
प्रताप, शिवा, बैरागी का है खून हमारी नस-नस में,
हम मौत से खेलना जानते हैं संसार को यह दिखला देंगे।

उन वीरों की सन्तान हैं हम जो खून की होली खेले थे,
जो देश के शत्रु हैं उनको ललकार कर यह बतला देंगे।
निर्धन, निर्बल, लाचार जो हैं भूखे, नंगे, बीमार जो हैं,
उनकी सेवा और रक्षा मे सब तन मन धन लगा देंगे।

जब स्वार्थ भावना जाग उठे मानव दानव बन जाता है,
स्वार्थ की ऐसी भावना को हम देश से दूर भगा देंगे।
भ्रष्टाचार के बढ़ने से देश के दुख बढ़ जाते हैं,
हम सदाचार की शिक्षा से सब भ्रष्टाचार मिटा देंगे।

मित्रों से भी हम प्रेम करें शत्रु से भी हम प्रेम करें।
"प्रेम" का लक्ष्य तो प्रेम ही है, हम प्रेम की गंगा बहा देंगे।

तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में यति-मण्डल का प्रस्ताव

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में वैदिक यतिमण्डल के प्रमुख सदस्यों की एक आवश्यक बैठक 23-9-90 को गुरुकुल गौतम नगर मे सम्पन्न हुई। जिसमें श्री स्वामी अग्निवेश एव स्वामी इन्द्रवेश द्वारा निर्मित तथा कथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध मे विचार किया गया। सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया—

आर्य समाज के संविधान के अनुसार बिना सार्वदेशिक सभा के अनुमति के कोई भी नया सगठन नही बन सकता। जहां तक श्री स्वामी अग्निवेश व श्री स्वामी इन्द्रवेश का सम्बन्ध है। वे सार्वदेशिक सभा से पहले ही निष्कासित हैं। अतः उन्हे आर्य समाज के सगठन में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए उनके द्वारा स्थापित सगठन सर्वथा अवैधानिक एव आर्य समाज के लिए घातक है, अतः उसे अमान्य घोषित किया जाता है।

—स्वामी सुमेधानन्द मन्त्री,
वैदिक यतिमण्डल

ऋषि निर्वाणोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज दीनानगर में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ऋषि निर्वाण उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। 12-10-90 को यह कार्यक्रम विशाल शोभा यात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ। शोभा यात्रा मे आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के छात्रों तथा आध्यापकों अवां खां पाठशाला, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल आर्य प्राईमरी स्कूल तथा डी० डी० खां की छात्राएं और सब स्कूल के शिक्षक अपने-अपने माटो के साथ लिए ऋषि दयानन्द की जय का नारों से सारा आकाश मण्डल गूंज रहा था। बैंड भिन्न-भिन्न ध्वनियों में बज रहे थे। इस वर्ष की शोभायात्रा अपना अनोखा रंग दिखा रही थी। सायं प्रतिदिन 8 से 10 बजे तक भिन्न भिन्न वक्ताओं के प्रवचन तथा श्री ओम प्रकाश जी प्रेमी के भजनों ने लोगों पर विशेष प्रभाव डाला। इतिहास केसरी पण्डित निरंजन देव जी तथा श्रीरामपति जी का भी विशेष प्रभाव रहा। 16-10-90 को स्त्री सम्मेलन में श्रीरामपति जी का प्रवचन हुआ और सम्मेलन के अध्यक्षा प्रिंसिपल निर्मल पांधी जी थी। स्त्री सम्मेलन की ओर से आई महिलाओं को मिष्ठान बांटा गया।

—रघुनाथ सिंह, मन्त्री

आर्य समाजों के लिए आवश्यक सूचना

प्रत्येक आर्य समाज को यह सहर्ष सूचना दी जाती है कि भारत के सुप्रसिद्ध प्रभावशाली क्रान्तिकारी मधुर भाषी भाषणकर्ता श्री विश्व मित्र जी मेधावी शास्त्री विद्यावागीश ने आर्य समाज दयानन्द मार्ग, शकूरबस्ती, दिल्ली-34 को अपनी सेवायें प्रदान कर दी हैं। अतः आप प्रभावशाली ढंग से वैदिक संस्कारों, वार्षिक उत्सवों, महा यज्ञों एवं पर्वों आदि के लिए मन्त्री आर्य समाज, दयानन्द मार्ग से पत्र द्वारा तथा दूरभाष स० 7126966 से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

—भारत भूषण
स्वतन्त्रता सेनानी, मन्त्री

आर्य समाज नवांशहर की गतिविधियां

(1) ऋषि निर्वाण दिवस :—

दिनांक 18-10-90 को आर्य समाज मन्दिर नवांशहर में ऋषिनिर्वाण दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। श्रीमती प्रेम लता जी मुख्तर, पं० देवेन्द्र कुमार जी एवम् आर्य समाज के मन्त्री श्री सुरेन्द्रमोहन तेजपाल ने ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला। डा० आसानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर के छात्र-छात्राओं ने कोरस-गीत, ग्रुप सौंग एवम् कविताएं गाईं। आर्य समाज की ओर से भाग लेने वाले बच्चों को ईनाम दिए गए।

(2) पारिवारिक सत्संगों की लड़ी—पिछले दिनों पारिवारिक सत्संग श्री हरभजन लाल जी मल्होत्रा, श्री धर्म प्रकाश जी दत्त एवम् श्री देवबन्धु जी भल्ला (एडवोकेट) के निवास स्थान पर हवन यज्ञ एवम् सत्संग किए गए। पं० देवेन्द्र कुमार जी ने इन परिवारों को आशीर्वाद दिया एवम् प्रार्थना कराई। इन अवसरों पर आर्य समाज नवांशहर को निम्न प्रकार राशि दान में मिली।

(1) श्री हरभजन लाल मल्होत्रा =151/- रु०
(2) श्री धर्म प्रकाश दत्त =501/- रु०
(3) श्री देवबन्धु भल्ला एडवोकेट =251/- रु०
(4) डा० सूर्य भल्ला =500/- रु०
डा० मिथिल पुरी=100/- रु०

शोक समाचार

पिछले दिनों आर्य समाज नवांशहर के प्रधान लाला वेदप्रकाश जी सडोइया की भाभी जी, श्रीमती रत्न देई सडोइया धर्म पत्नी स्वर्गीय लाला कर्मचन्द जी सडोइया का निधन हो गया।

आर्य समाज नवांशहर की ओर से शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

रस्म पगड़ी के अवसर पर परिवार की ओर से हवन यज्ञ करवाया गया तथा आर्य समाज नवांशहर को 1100 रु० तथा भाग्यवन्ती सडोइया सिलाई केन्द्र को 1100 रु० दान के रूप में दिए गए।
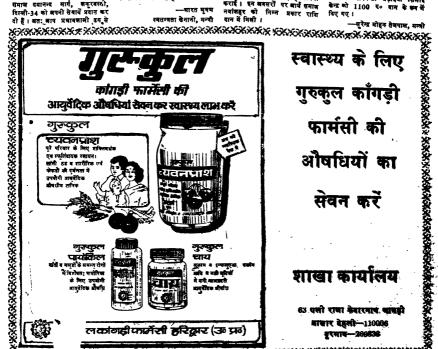
—सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, मन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहता काउंज रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 73020

रजि० नं० Pb./J.L. 55.

वर्ष 22 अंक 34, मार्गशीर्ष—3 सम्वत् 2047 तदनुसार 15/18 नवम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

17 नवम्बर को जिनका बलिदान दिवस है—

अमर शहीद देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी।

भारत का ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा जो पंजाब केसरी लाला लाजपत-राय जी का नाम न जानता हो? महाराजा रणजीत सिंह के बाद पंजाब में लाला लाजपत राय ही केवल वह व्यक्ति थे जिन्हें "पंजाब केसरी" की उपाधि से सुशोभित किया गया था। वह शेर की तरह निडर और साहसी थे। वह जब स्टेज पर खड़े होकर गर्जते थे तो अंग्रेजों के दिल दहल उठते थे। पंजाब की धरती को यह गौरव प्राप्त है कि उसने इस प्रकार के कई शहीदों को जन्म दिया। लाला जी जीवन भर संसार की सब से बड़ी राज शक्ति ब्रिटिश सरकार से लड़ते रहे और अन्त में लड़ते-लड़ते एक घायल सैनिक की तरह उन्होंने अपने प्राण देश के लिए दे दिए।

अमर शहीद लाला लाजपत राय जी

उनका जन्म सन् 1865 में जिला फिरोजपुर के ढोडिके ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम लाला राधा कृष्ण और माता का नाम गुलाब देवी था। जिन के नाम से जालन्धर में प्रसिद्ध गुलाब देवी हस्पताल चल रहा है। सन् 1885 में 20 वर्ष की आयु में लाला जी ने वकालत पास की। कुछ समय जमरांव और हिसार में वकालत करने के बाद वह वापिस लाहौर आ गए और देश को स्वतन्त्र कराने तथा समाज सेवा के कार्य में जुट गए। आपने समाज सुधार दलित उद्धार और शुद्धि का अभियान शुरू किया। आप विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में थे और अनाथों की रक्षा के लिए भी कार्य करते रहे। इसलिए उन्होंने फिरोजपुर में एक अनाथालय को खोलने में सहयोग दिया था। यह अनाथालय आज भी अच्छी प्रकार चल रहा है।

1885 में इंडियन नैशनल कांग्रेस की स्थापना की गई। जिसका चौथा अधिवेशन 1888 में प्रयाग में हुआ। लाला जी ने पहले पहल इसी अधिवेशन के अवसर पर कांग्रेस में प्रवेश किया। उस समय लाला जी की आयु केवल 23 वर्ष की थी। इस छोटी सी आयु में आप को कांग्रेस के मंच से भाषण करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रयाग के अधिवेशन में यह निश्चय किया गया था कि आगामी अधिवेशन लाहौर में होगा। पंजाब मे कांग्रेस का यह पहला अधिवेशन होना था जिसकी सफलता में कांग्रेसी नेताओं को सन्देह हो रहा था। क्योंकि मुसलमानो ने कांग्रेस को सहयोग देने से इन्कार कर दिया था।

परन्तु पंजाब में दूसरा प्रभावशाली वर्ग आर्य समाजियों का था, इसलिए कांग्रेसी नेताओं ने आर्य समाज का सहयोग लिया क्योंकि लाला लाजपत राय जी स्वयं भी आर्य समाजी थे और लाला जी ने घूम घूम कर इस अधिवेशन की सफलता के लिए कार्य किया। जिसके परिणामस्वरूप यह अधिवेशन अपूर्व सफलता के साथ निर्विघ्न सफल हुआ।

इस अधिवेशन से जहां लाला जी की ख्याति चारों तरफ फैल गई। वहां पंजाब सरकार की दृष्टि भी उन के प्रति बदल गई। सरकार की दृष्टि मे आप एक विरोधी नेता बन गए। 1897 में जब रानी विक्टोरिया के शासन की हीरक जयन्ती मनाने केलिए लाहौर में रानी विक्टोरिया की मूर्ति स्था-पत करने का सरकार द्वारा निश्चय किया गया तो लाला जी ने इस का डटकर विरोध किया। उन्होंने कहा कि जो रुपया आप मूर्ति की स्थापना पर लगा रहे हैं, यदि उस रुपये से अनाथों की सहायता की जाए तो यह उनका सच्चा स्मारक बन सकता है। इस बात से भी सरकार उनके विरुद्ध हो हो गई। परन्तु उन्होंने इस की कोई चिन्ता न की।

1905 में बंग-भंग आन्दोलन के कारण देश भर में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध जनमत खड़ा हो गया। स्थान स्थान पर रोष सभाएं हुई और सरकार ने हजारों देशवासियों को जेल की सीखचों में बन्द कर दिया। लाला जी भी सरकार के दमन चक्र से न बच सके। इन्हीं दिनों रावलपिंडी के किसानों ने लगान वृद्धि के विरुद्ध संघर्ष आरम्भ कर दिया। लाला जी ने एक वकील होने के नाते इस संघर्ष मे भाग लिया और किसानों का पक्ष लेते हुए वह इस सम्बन्ध मे मजिस्ट्रेट से मिले। परन्तु सरकार ने यहां भी अपना दमन चक्र चलाया। कई किसानों और वकीलों को भी गिरफ्तार कर लिया परन्तु लाला जी पर वह हाथ न डाल सके। कुछ समय पश्चात् 16 मई 1907 को अदालत जाते हुए उन्हे अचानक पकड़ लिया गया और मान्डले जेल में भेज दिया गया। परन्तु उनके विरुद्ध सरकार के पास कोई ठोस सबूत नहीं था। इसलिए उन्हें 21 नवम्बर 1907 को छोड दिया गया। अब लाला जी की ख्याति सारे देश मे फैल

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ऐं ! मानव प्रयत्न द्वारा मोक्ष प्राप्त कर

ले०—श्री स्व० स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ

ओ३म् । यत्रा सुपर्णा अमृतस्य
भागमनिमेषं विदथाभि स्वरन्ति ।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपा स
मा धीर: पाकमत्रा विवेश ॥
ऋ० 1-164-21)

(यत्रा) जिस भगवान् में रहकर (सुपर्णा:) उत्तम जीव (अमृतस्य) मोक्ष के (भागम्) भजनीय व्यवहार को (अनिमेषम्) निरन्तर (विदथाभिस्वरन्ति ज्ञान प्रयत्नादि के द्वारा प्राप्त करते हैं ।

(स:) वह (विश्वस्य) विश्व का (इन:) स्वामी (भुवनस्य+गोपा:) ससार का रक्षक (धीर:) ज्ञानगम्य भगवान् (अत्र) इस ससार में, इसी जन्म मे (मा) मुझ (पाकम्:) परिपक्व, पवित्र मे (आ+विवेश) पूर्णतया आविष्ट हुआ है ।

इस से पूर्व (द्वा सुपर्णा—) मन्त्र मे प्रकृतिरूपी वृक्ष पर जीव तथा ब्रह्म को बैठा वर्णन किया है । उस मे परमात्मा के सम्बन्ध मे कहा है कि वह अनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति=दूसरा (जीव से भिन्न ब्रह्म) प्रकृति का भोग न करता हुआ सब ओर प्रकाश ही कर रहा है । दूसरे शब्दों में इस का अर्थ यह हुआ कि वही जीवों को इस प्रकृति रूपी वृक्ष से विविध भोग प्राप्त करने का ज्ञान देता है । इस भाव को अगले 22वें मन्त्र मे बहुत स्पष्ट करके कहा है—यस्मिन् वृक्षे मध्वद: सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे । तस्येदाहु: पिप्पल स्वाद्वग्रे तन्नो नशद्य: पितरं न वेद ।— जिस प्रकृतिरूपी वृक्ष पर मधु के भोक्ता जीव रहते हैं और सृष्टि विस्तार करते हैं उसी के फल को ही सब से अधिक स्वादु कहा जाता है किन्तु जो जगत्पिता को नहीं जान पाते वे उस स्वादु फल को प्राप्त नहीं कर सकते । अर्थात् परमात्मा को जाने बिना उससे सम्पर्क स्थापित किये बिना उस से ज्ञान मिलना असभव है और जब तक ज्ञान न मिले तब तक जगत् के पदार्थों का उपयोग—उचित उपयोग—करना असम्भव है । भाव यह है कि यह न समझा जाये कि अत: भगवान् प्रकृति का उपभोग नहीं करता, अत: वह कुछ नहीं करता । प्रत्युत वेद कहता है कि वह सब को उस का उपयोग, उपभोग सिखाता है । प्रकृत मन्त्र मे उसके सम्बन्ध मे कुछ विशेष तत्त्व बताए गये हैं । पूर्वार्ध में कहा गया है कि 'यत्रा सुपर्णा......स्वरन्ति=जिस में रह कर, जिस के सहारे उत्तम जीव मोक्ष के भाग का ज्ञान द्वारा सेवन करते हैं इसी भाव को प्रसिद्ध प्रार्थना मन्त्र मे भी कहा गया है—यत्र विश्वे देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥=जिस मे सम्पूर्ण मुक्त जीव अमृत का, मोक्ष का भोग करते हुए तृतीय धाम परमात्मा में अधिकार-पूर्वक विचरते हैं । इस मन्त्र में मोक्ष के स्वरूप का सकेत किया गया है । मुक्त जीव भगवान् में स्वच्छन्द विचरते हैं । यहा यह नहीं कहा गया कि वे ससार मे साधिकार विचरते हैं अपितु यह कहा गया है कि वे भगवान् मे साधिकार विचरते हैं । इस कथन में एक महत्त्व-पूर्ण रहस्य है । संसार तो अल्प है । भगवान् की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ है—नाल्पे सुखमस्ति (छा०) थोड़े मे सुख नही होता, प्रत्युत भूमा वै सुखम् (छा:) सुख तो भूमा=महान् मे है । भगवान् मे जो सबसे ज्यायान्=महान् है विचरते हैं । यद्यपि उनके उस समय हस्त पाद नेत्रश्रोत्र आदि इन्द्रिय नही हैं तथापि उनके स्वाभाविक सत्य सङ्कल्पादि सामर्थ्य होते हैं, उनसे वे मोक्षानन्द का भोग करते हैं । उन स्वाभाविक सामर्थ्यों को यहां विदथ पद से व्यक्त किया है । मुक्ति केवल छूटने का ही नाम नहीं है, वरन् ब्रह्मानन्द प्राप्ति भी उस में होती है । इसी वास्ते ब्रह्म को ही मोक्ष दाता मानते हुए कहा—न ऋते त्वदमृता मादयन्त (ऋ०) तेरे बिना मुक्त जीव आनन्द नही पाते ।

वह केवल मोक्षदाता ही नही है प्रत्युत 'इनो विश्वस्य=सब ससार का स्वामी तथा भुवनस्य गोपा=सकल ससार का रक्षक एव पालक है ।

कही यह न समझ लिया जाये कि मुक्ति मरे पीछे होती है, इस भ्रम के भजन के लिये कहा—स मा धीर पाकमत्राविवेश=वह ज्ञानगम्य भगवान् इसी जन्म में मुझ पाक=पवित्रात्मा परिपक्व ज्ञान वाले में आविष्ट हुआ है । आविष्ट होने का अर्थ है कि अब भगवान् के अतिरिक्त और कोई पदार्थ रुचता नही है ।

भगवान् केवल मोक्ष दाता ही नही वह भोग दाता भी है जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि तन्नो नशद्य: पितर न वेद=जो जगत्पिता को नही जानता वह प्रकृति से मिलने वाले भोग को भी प्राप्त नहीं कर सकता ।

—वेदानन्द

उपाय और अपाय

लेखक तथा प्रेषक—श्री माने राम आर्य प्रधान आर्य समाज, अहमदनगर

उपाय और अपाय के यथार्थ ज्ञान से पुरुष विपत्ति से बच सकता है अन्यथा नहीं । एक वृक्ष पर एक बगुला पक्षी निवास करते थे । जब वह बच्चे उत्पन्न करते थे, तब एक सर्प जो उस वृक्ष के तले रहता था । वह वृक्ष पर चढ़कर उन के बच्चों को खा जाता था, इस बात से पक्षी बडे ही दु:खी थे । वह निवास छोड़ना नहीं चाहते थे, और उपाय कुछ सूझता नहीं था । अन्त में उन्होंने एक बैठक की; और उसमे सब पक्षियों को बुलाकर अपनी विपत्ति को सुनाया । परामर्श तो कई एक ने दिये, परन्तु कोई अनुकूल न हुआ, अन्त मे एक नीति पर सब सहमत हो गये । वह यह थी कि सर्प के साथ इस प्रकार हम को विग्रह करना चाहिये, कि सर्प का शत्रु नकुल (नयोला) है उसको किसी उपाय से यहां लाना चाहिये और उस का उपाय यह है कि उस के स्थान को ढूंढ कर वहां मछलियां डालनी चाहियें । जब उसको मछली खाने की आदत हो जाएगी तब उसको इस व्याज से वृक्ष के नीचे ले आवेंगे, पुन: वह सर्प के साथ युद्ध करके उस को मार डालेगा, कुछ समय के पश्चात् ऐसा ही हुवा । उसने सर्प को मार डाला । बगुले अपने को समर्थ देखकर गाने और बजाने लगे, परन्तु जब उन्होंने फिर बच्चे दिये तो उस नयोले ने वृक्ष पर चढ़ कर उन को खा लिया, तब दु:खी हुए, हतोत्साह हो स्थान को छोड़ गये । उपाय तो ठीक सोचा, परन्तु अपाय पर ध्यान नहीं दिया । उपाय कार्य सिद्धि का हेतु और अपाय उसको कहते हैं कि पुन: इस उपाय में विपत्ति की सम्भावना तो नहीं है ।

निष्कर्ष—उपाय और अपाय के यथार्थ ज्ञान से ही मनुष्य विपत्ति से बचता है, अन्यथा नहीं । भारतवासियों का इन दोनों में कोई अग भंग रहता है ।

(वीतराग महात्मा श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज कृत "सन्मार्ग दर्शन" से साभार) ।

टिप्पणी—आर्य समाज अर्थात् आर्य समाजी विद्वान् अपने आप को बहुत चतुर, ज्ञानवान, बुद्धिमान, नीतिनिपुण और धर्म शास्त्रों का ज्ञाता समझते हैं । परन्तु बात ऐसी दिखाई नहीं पड़ती क्योंकि जो समाज उपाय और अपाय का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं रखता, जिसके पास सुनीति नहीं, जो राजनीति से अनभिज्ञ रहना चाहता, उस में भाग नहीं लेना चाहता और केवल कोरे शास्त्रीय ज्ञान द्वारा सब का उद्धार करना चाहता है यह उनकी भूल है क्योंकि बिना मरे स्वर्ग दिखाई नहीं देता । उपाय और अपाय के न जानने वाला समाज ऐसे ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है जैसे बिना वर्षा के खेती । इस समय यही हमारे आर्य समाज का हाल हो रहा है । आर्य समाज स्वत: का राजनीतिक मच न बना कर केवल वाहर से ही अपने शास्त्रीय ज्ञान द्वारा राजनेताओं को प्रभावित करने का यत्न करता है, उपाय करता है परन्तु अपाय पर ध्यान नहीं देता कि सरकार में सब सम्प्रदायों के नेता शामिल हैं जो आर्य (वैदिक) सिद्धान्तो को नही मानते जैसे कि जैनी, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान और सिक्ख आदि । जब वे हमारे सिद्धान्तों से दूर हैं तो इन्हें हम कैसे प्रभावित कर सकते हैं । यह नहीं हो सकता क्योंकि इन में भारतीयता है ही नही । आर्य समाजी नेताओं ने सभी राजकीय पार्टियों में गाहे बगाहे शामिल होकर देख लिया परन्तु उन्हें उस में से कुछ हासिल नहीं हुआ । वह खुद सिद्धान्तहीन हो गये और आर्य समाज को हानि हुई । आर्य समाजी नेताओं ने हिन्दू महासभा से मेल किया, कांग्रेस और जनसंघ से भी मिले परन्तु उन्हें इन पार्टियों के साथ कोई लाभ नहीं मिला । केवल हानि हुई । आर्य समाज बिखर गया, इस के नेता अलग अलग विचारधारा में बह गये । अपने सिद्धान्तों को छोड़ा और वेद-प्रचार भी बन्द हो गया । अत: धर्म, संस्कृति, भाषा और देश की रक्षा के लिये आर्य नेता तथा विद्वान् राजनीति की ओर अग्रसर होवें क्योंकि राजधर्म सब से बड़ा है उसी से धर्म की रक्षा होती है । आर्य नेता उपाय करते समय अपाय को भी ध्यान रखें । यही मेरी विनती है ।

आर्य समाज दानिशमन्दा जालन्धर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर दानिशमन्दां जालन्धर का वार्षिकोत्सव दिनांक 17-12-90 से 23-12-90 तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है । जिसमें कई उच्च कोटि के विद्वान व भजनोपदेशक भाग ले रहे हैं । 23-12-90 रविवार को विशेष समारोह होगा । जिसमें प्रात: 9 बजे से दोपहर एक बजे तक यह समारोह चलेगा । सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस समारोह में पधार कर धर्म लाभ उठावें ।

—डा० ज्ञानचन्द प्रधान

सम्पादकीय—

आर्य समाज के दीवाने लाला लाजपतराय जी

आर्य समाज का इतिहास देश जाति और समाज के लिए अपना बलिदान देने वाले देशभक्तों से भरा पड़ा है। महर्षि दयानन्द जी ने जो क्रान्ति पैदा की थी और जो देश प्रेम का पाठ अपने उपदेशों में पढ़ाया था उसका प्रभाव लगभग सभी क्रान्तिकारी उन युवकों में देखा जा सकता है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया था। लाला लाजपतराय जी भी उन में से एक थे और वह भी उस प्रभाव से अछूते न रह सके थे।

लाला जी उन भाग्यशालियों में से न थे जो नेता बनने की सुविधाएं लेकर संसार में जन्म लेते हैं। उनका जन्म एक साधारण से परिवार में और एक ग्राम में हुआ था। उन के पिता लाला राधा कृष्ण जी एक स्कूल में अध्यापक थे। वह फिरोजपुर जिला के ढोडिके ग्राम के रहने वाले थे और इसी ग्राम में लाला जी का जन्म हुआ। 6 वर्ष तक लाला जी ने ग्रामीण स्कूलों में ही शिक्षा प्राप्त की थी। जब उनके पिता जी की बदली कुछ समय के लिए लुधियाना में हो गई थी तो वह भी उनके साथ लुधियाना आ गये थे और यहां के मिशन हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने लगे, परन्तु इसके पश्चात् इनके पिता की बदली अम्बाला में हो गई और लाला जी भी अम्बाला के स्कूल में पढ़ने लगे। वहां से उन्होंने 1880 में पंजाब विश्व विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की और इस परीक्षा मे अच्छे नम्बर आने के कारण आपको छात्रवृत्ति मिलने लगी। इस से प्रभावित होकर आपके पिता जी ने आपको गवर्नमेंट कालेज लाहौर में पढ़ने के लिए भेज दिया। इस कालेज से लाला जी ने एफ.ए. की परीक्षा और मुख्त्यारी की परीक्षा पास की।

लाला लाजपतराय जी केवल अपनी परीक्षा देने तक ही सीमित न रहते थे। जहां वह यहां विद्या ग्रहण कर रहे थे वहां सार्वजनिक क्षेत्र में भी इन्होने अपना कार्य आरम्भ कर दिया था। उस समय के सार्वजनिक जीवन में जो विचार धाराएं चल रही थी उनका इनके मन पर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। आप स्वभाव से लोकप्रिय और परोपकारी भावना के व्यक्ति थे। आप किसी को दुःखी नहीं देख सकते थे। आप जिसे भी दुःखी देखते थे उसके दुख को दूर करने में उसका हाथ बटाते थे। विद्यार्थी जीवन से लेकर अन्तिम समय तक आप के स्वभाव में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं आया। आप जीवन भर परोपकार की भावना को लेकर कार्य करते रहे।

लाला जी जब पढ़ते थे तो उस समय सारा पंजाब महर्षि दयानन्द के सुधारवादी विचारों से गूंज रहा था। स्वामी जी ने घूम घूम कर सारे पंजाब मे अपने क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया था। पंजाब का कोई भी ऐसा शहर नहीं था जहां के बुद्धिजीवी व नौजवान महर्षि दयानन्द जी के विचारों से प्रभावित न हुए हों। लाहौर मे इस विचार धारा का बहुत प्रभाव पड़ा और वहां 1877 में आर्य समाज की स्थापना हो गई और लाहौर के बहुत से बुद्धिजीवी व नवयुवक आर्य समाज के सदस्य बन गए थे। उन दिनों आर्य समाज को नये विचारों और बलिदान की भावनाओं का प्रतीक समझा जाता था। इसीलिए सभी लोग इसकी ओर खींचे आते थे। जो व्यक्ति एक बार आर्य समाज में आ जाता था, और आर्य समाज की विचारधारा से परिचित हो जाता था वह फिर इसका दीवाना बन जाता था। लाला जी अपने दो मित्रों लाला गुरुदत्त, जो बाद में पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी के नाम से प्रसिद्ध हुए और लाला हंसराज जो बाद में महात्मा हंसराज कहलाए के साथ आर्य समाज में प्रविष्ट हो गए और तीनों ने आर्य समाज के सेवकों मे अपना नाम लिखवा दिया। यह केवल आर्य समाज के सदस्य ही नहीं बने बल्कि जो भी इन के सम्पर्क में आने वाले युवक थे उन सब को भी आर्य समाज की ओर आने के लिए इन्होंने प्रेरित किया। इन तीनों नवयुवकों ने मिल कर जो कार्य किया वह आर्य समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। लाला जी ने आर्य समाज से ही देश भक्ती की प्रेरणा ली और इसी से अपना सार्वजनिक जीवन आरम्भ किया। उन्होंने एक बार स्वयं कहा था कि "मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा है, लोगों में प्रशंसा करने योग्य है वह सब आर्य की बदौलत है। मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज से सीखे हैं" उन्होंने यह भी कहा था कि "यदि मैं आर्य समाज में दाखिल न होता तो ईश्वर जाने क्या होता" और एक बार उन्होंने यह भी कहा था कि "आर्य समाज मेरी मां है और महर्षि दयानन्द जी मेरे गुरु हैं। इन शब्दों से स्पष्ट होता है कि लाला जी के हृदय में आर्य समाज के लिए कितनी बड़ी श्रद्धा थी।

महर्षि दयानन्द जी महाराज को जब विष दे दिया गया और अजमेर में वह रूग्ण अवस्था मे पड़े थे तो इसकी सूचना लाहौर पहुंची। स्वामी जी की सेवा के लिए लाहौर से गुरुदत्त विद्यार्थी जो लाला जी के घनिष्ठ मित्र थे को अजमेर भेजा गया और गुरुदत्त जी महर्षि के शरीर त्याग के दृश्य को देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना सर्वस्व आर्य समाज को अर्पण करने का निश्चय कर लिया। लाहौर मे जब महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण पर शोक सभा की गई तो उसका आयोजन लाला लाजपतराय ने किया था और श्रद्धांजलि भेंट करते हुए महर्षि के लिए उन्होंने बहुत ही मार्मिक शब्दों का प्रयोग किया था।

लाला जी सन् 1882 मे आर्य समाज में प्रविष्ट हुए और इसी वर्ष उन्होंने वकालत की परीक्षा दी थी परन्तु वह उस में सफल न हुए। इस पर लाला जी लाहौर छोड़कर जगरांव आ गये और वहां मुख्त्यारी करने लगे। परन्तु वह जगरांव में अधिक समय न ठहर सके और पुनः वकालत पास करने के लिए लाहौर चले गए। सन् 1885 मे इन्होने वकालत पास की और उसके पश्चात हिसार में जाकर वकालत करने लगे। लाला जी पर क्योंकि आर्य समाज का प्रभाव बहुत अधिक था इसलिए उन्होने वकालत करते हुए कोई भी झूठा अभियोग नही लिया। उन्होंने अपने मुंशी को भी कह रखा था कि जिस अभियोग के बारे में उनको यह पता चल जाए कि वह अभियोग करने वाला झूठा है चाहे वह कितने ही रुपये क्यो न देता हो उसका मुकद्दमा कभी न लें। वह उन्हीं अभियोगों की पैरवी करते थे जो दूसरों के अन्याय से पीड़ित होते थे। इस से लाला जी की हिसार में बहुत प्रसिद्धी हो गई और उनके पास बहुत से अभियोग आने लग गये। और अदालत में जजो पर भी लाला जी की इस प्रकार की धाक बैठी हुई थी कि लाला जी जिस केस की पैरवी करेंगे वह अभियोग झूठा नही होगा। लाला जी ने हिसार मे रहते हुए आर्य समाज का कार्य करना आरम्भ कर दिया वह अपने घर के ऊपर ही आर्य के सत्सग लगाया करते थे। उन्होंने देखा कि यहा आर्य समाज का भवन नहीं है इसलिए वकालत से जो उनको आमदनी हुई थी उसमे से 1500 सौ रुपया जो उनके पास बचा था वह सारा का सारा रुपया उन्होंने आर्य समाज के लिए दे दिया। यह राशि तो कोई बहुत अधिक नही थी परन्तु यह देने वाले की भावना को प्रदर्शित करती है कि उसके पास जो था उसने सभी कुछ आर्य समाज के लिए दे दिया। लाला जी ने इन्हीं दिनों हिसार में एक संस्कृत विद्यालय भी प्रारम्भ किया था परन्तु वह अधिक देर तक न चल सका क्योंकि लाला जी भी हिसार से सन् 1892 मे फिर लाहौर आ गये और स्थाई रूप से वहीं रहने लग गये। यहां आ कर लाला जी ने अपने मित्र लाला हंसराज और पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी को अपना सहयोग देना आरम्भ कर दिया जो उस समय दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना में लगे हुए थे। यह कालेज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की समृति में आरम्भ किया जा रहा था और इसके साथ ही यह भी प्रयास किया गया था कि इस कालेज मे महर्षि दयानन्द जी के आदर्श के अनुसार ही शिक्षा दी जाएगी इस कालेज की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह सरकार से कोई सहायता नही लेना चाहता था। इसलिए इस कार्य के लिए बहुत से धन की आवश्यकता थी। धन संग्रह के लिए जहां गुरुदत्त विद्यार्थी स्थान-स्थान पर जाया करते थे और धन संग्रह किया करते थे वहा लाला लाजपतराय जी भी पंजाब के नगरों में घूम-घूम कर इस कालेज के लिए धन संग्रह करने लगे। लाला जी के भाषण इतने ओजस्वी हुआ करते थे कि जहा वह भाषण दिया करते थे वहां लोगों की एक भीड़ उमड़ पड़ती थी और वह लाला जी की झोली पैसों से भर देती थी। यहां तक ही नहीं जो देवियां लाला जी के भाषण को सुनने के लिए उस समय वहां उपस्थित होती थी वह उन से प्रभावित होकर अपने आभूषण तक उतार कर इस राष्ट्र महायज्ञ में अपनी आहुति डाल देती थी।

इस प्रकार लाला लाजपत राय जी के जीवन पर जब हम एक दृष्टि डालते हैं तो हमें आरम्भ से अन्त तक उनका जीवन महान प्रेरणाओं के देने वाला दिखाई पड़ता है उन्होंने उस समय जो आर्य की सेवा की है वह अत्यन्त सराहनीय है। उनकी पुण्य तिथि 17 नवम्बर को हम उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हम उनके पदचिन्हों पर चलते हुए अपने देश जाति और समाज के लिए उसी प्रकार के कार्य करने में समर्थ हों कि जिस प्रकार के कार्य लाला जी ने किये थे।

—सहसम्पादक

चिंता को दूर भगाइए

ले०—श्री लाल मोहन सिंह जी

आप उदास क्यों हैं। क्या प्रियजन के असह्य चिर वियोग ने आपके आशातीत सुनहरे भविष्य पर तुषारापात कर दिया है। क्या आप के जीवन की दोपहरी मे ही संध्या आ गई है? क्या आप अपने दाम्पत्य जीवन से असन्तुष्ट हैं? क्या आप अपने बन्धु के अवांछनीय कार्य-कलाप से भयातुर, आतंकित एवं क्षुब्ध हैं? क्या आप आर्थिक सकट से ग्रस्त हैं? क्या आप को अपने जीवन संग्राम में असफलता मिली है। क्या दैहिक कष्ट ने आपकी मजुल मुखाकृति पर विषाद की रेखा ला दी हैं। क्या आपके किसी बन्धु ने आपको अकारण हानि पहुचाई है? तो आइए, विश्व की चचल बालिका (चिन्ता) पर विजय प्राप्त करने की स्वर्णिम विधियों पर विचार करें।

किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है "जो व्यक्ति चिन्ता के शिकार हो जाते हैं, वे असमय मे ही काल के गाल मे चले जाते हैं।"

कहावत है—

चिता मुर्दे को जलाती है।
चिन्ता जिन्दे को जलाती है॥

दु:खद प्रसगों के कांटो को निकाल कर फेंक देना और प्रसन्न तथा मस्त रहना—दीर्घ यौवन का प्रथम सूत्र है। देर तक यौवन को स्थिर रखने के लिए जीवन में घटी हुई अप्रिय एवं दु:खद बातों को भूल जाने की आदत डालिए।

नब्बे वर्ष की आयु में भी तरुण दीखने वाले एक वृद्ध से जब मैंने पूछा कि क्या बात है जो आप इस अवस्था में भी अपनी ताजगी बनाए हुए हैं।

तब उन्होंने उत्तर दिया—"इस लिए मैं अप्रिय बातो को भूल जाना जानता हू।"

ईश्वर की सत्ता पर विश्वास रखें। भगवान् के राज्य मे अकारण किसी का अमगल नही होता। गाढ़ी निद्रा का उपभोग करें। सुगम मधुर संगीत से प्रेम करें। आशावादी बनें। फिर कहना ही क्या। अनुपम स्वास्थ्य एवं असीम आनन्द आपके पैरों को चूमेगे।

कहावत है—

"निठल्ला मन पिशाच का कारखाना होता है।"

आपने अनुभव किया होगा, निठल्ले मन को ही चिन्ता के प्रखर बाण अत्यधिक वेधित करते हैं। अत: चिन्ता पर विजय पाने के लिए सदैव कार्यरत रहें। किसी रचनात्मक कार्य के सम्पादन मे आत्म विभोर हो जाएं।

जिन परिस्थिति-विशेष को आप बदलने में सर्वथा असमर्थ हों, उसे ईश्वर का वरदान एवं प्रारब्ध समझकर उसका सहर्ष आलिगन करना न भूलें।

उल्लास एव आनन्द के क्षणों को सदैव स्मृति-पटल पर सजोये रखें तथा जीवन के दु:खद प्रसगों को अपने पास कभी न फटकने दें। ये ही ढाल हैं चिन्ता को पराजित करने की।

अपने पड़ोसियो से स्नेह रखें। उनके कष्टों को दूर करने के प्रयास मे दिलचस्पी रखें। कहावत है—"जो व्यक्ति अपने पड़ोसियो से दिलचस्पी नही रखते, उनके जीवन-सग्राम, कटकाकीर्ण बन जाते है। उनके जीवन मे कठोरतम बाधाए आ धमकती हैं।"

"बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" से प्रेरित होकर सार्वजनिक कल्याण एव रचनात्मक कार्यों मे दिलचस्पी रखें। फिर कहना ही क्या। सफलता आपकी। स्वास्थ्य आपका। प्रसन्नता आपकी। अभूतपूर्व आनन्द से आपका मन-मयूर नाच उठेगा। चिन्ता के कीट अविलम्ब ही पलायन कर जायेंगे।

रात में सोते समय दैनिक कार्यों की चिन्ताओं को अपने साथ हरगिज न सजोयें। 'चिन्ता' सर्पिणी है, जो डस कर व्यक्ति में अनिद्रा-रूपी विष का सचार कर प्राणान्त कर देती है। रात में बिछावन पर जाने के पूर्व दिन भर की सारी चिन्ताओं को संकट-हरण भगवान् की प्रार्थना कर, उनके श्री चरणों में समर्पित कर दें।

गाढ़ी निद्रा की गोद में निश्चिन्त सो जाएं। प्रात:काल आप में एक अपूर्व स्फूर्ति, अदम्य उत्साह, अनुपम आनन्द की अनुभूति होगी। ईश्वर की प्रार्थना चिन्ता रूपी सर्पिणी को मार भगाने का राम-बाण है।

प्रत्येक उषा हमारे लिए अनुपम स्वास्थ्य, असीम आनन्द लेकर आती है अभूतपूर्व स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता लाभ करने हेतु प्रकृति की सुषमाओं में आत्म विभोर हो जाएं।

जब रात में चिन्ता के कारण पलकों में नींद नहीं हो, करवटें बदलते रात काटना असह्य प्रतीत हो, तो इन क्षणों में मनोहर दिलचस्प पुस्तकों के पढ़ने की आदत डालें। फिर चिन्ता को नौ दो ग्यारह होते विलम्ब न होगा। आप निद्रा देवी की गोद में अभूतपूर्व गाढ़ी नींद एवं अलौकिक आनन्द का अनुभव करेंगे।

आशा, धैर्य, समय की प्रतीक्षा एवं सुखद भविष्य का विश्वास—हमारी चिन्ताओं को दूर करने की अचूक दवा है।

मानसिक कार्यों से थके मादे विश्राम के क्षणों में किसी मन-पसन्द खेल में अपने को भुला दें। बच्चों की तरह चिन्ता-रहित बन जाएं। एक क्षण भी बेकार कदापि न बैठें। निठल्ले मन को चिन्ता रूपी सर्पिणी बहुधा डसती है।

आने वाले समय की प्रतीक्षा करें। समय में आपकी विपत्तियों को दूर भगाने की अद्भुत शक्ति छिपी है। बाधाएं चन्द क्षणों के लिए आई हैं। कुछ समय के उपरान्त आपकी विकट प्रतिकूल समस्याएं स्वत: अनुकूल बन सुलझ जाएंगी। उनका निदान आप स्वयं निकाल लेंगे।

शुद्ध वेदपाठ के नियम

1. ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्र शीघ्र गति से, यजुर्वेद के मध्यम तथा सामवेद के मन्त्र विलम्बित गति से बोलें। 'अग्निमीळे' के 'ळे' को 'ड' तथा 'ल' की ध्वनि को मिलाकर बोलें।

2. चारों वेदों से सामान्य यज्ञ करते समय अन्त में 'ओ३म् स्वाहा' न बोलकर केवल 'स्वाहा' ही बोलें। समिधानी मन्त्रों को छोड़कर। 'स्वाहा' अन्त वाले मन्त्रों से आहुति देते समय पुन: 'स्वाहा' न बोलें।

3. एक क्रम के मन्त्र समूह तथा ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, अघमर्षण, मनसापरिक्रमा आदि में आए मन्त्रों के प्रथम मन्त्र से पूर्व ही 'ओ३म्' (प्लुत ओम्) का उच्चारण करें, न कि प्रत्येक मन्त्र से पूर्व। अ, इ, उ, ए, ऋ आदि स्वरों से प्रारम्भ होने वाले मन्त्रों मे पूर्व 'ओ३म्' और अन्यत्र 'ओम्' बोलें।

4. दो पृथक्-पृथक् पदों को मिला कर न बोलें, यथा—'स दाधार' को सदाधार 'स नो' को सनो। और एक ही लम्बे पद को तोड़ करके न बोलें। यथा—'मेधयाऽग्ने, पितरश्चोपासते' को 'मेध्या-अग्ने' तथा 'पितरश्च उपासते'। पदों को हाथी के पैरों के ताल के तुल्य थोड़ा बल लगाकर बोलें।

5. विराम चिन्ह पर जहां मन्त्र का एक भाग समाप्त होता है, वहां थोड़ा रुकें। यथा 'ओ३म् अग्नये स्वाहा' इदं...... । यहां विराम (।) चिन्ह पर। जहां मन्त्र के मध्य में (-) चिन्ह आवे वहां भी थोड़ा रुकें। यहां 'इदमग्नये-इदन्न मम' यहां इस (-) पर पर थोड़ा रुकें।

6. वेदमन्त्र के अन्तिम भाग को पूर्व भाग के समान ही बोलें। यथा—ओ३म् अग्नये स्वाहा।' इदमग्नये-इदन्न मम। यहां इदमग्नये-इदन्न मम को शीघ्र न बोलें।

7. अवग्रह (ऽ) को 'अ' न बोलें। यथा—'अदितेऽनुमन्यस्व' को 'अदिते-अनुमन्यस्व', 'वाङ् मे आस्येऽस्तु' को 'वाङ् मे आस्ये अस्तु' और 'ऊर्वोमे ओजोऽस्तु' को 'ऊर्वोमें ओजोअस्तु न बोलें।

8. विसर्ग (:) चिन्ह को थके हुए भारवाहक की बैठते समय 'ह्' जैसी सांस के समान कण्ठ से बोलना चाहिए। यथा—अ:, आ:, इ:, उ: को अह्, आह्, इह्, उह्। देवा:, चक्षु:, शान्ति आदि को देवाहा, चक्षुहु, शान्ति हि न बोलें।

9. ओं, होतारं आदि में अनुस्वार (ं) को ओम्, हीतारम् न बोलकर, नाक से ही बोलें। जैसा जिस वेद का पाठ हो, वैसा ही बोलें।

10. ँ, ঁ चिन्हों को ग्वङ्, गुण्, गुं न बोलकर नासिका से कांसे की थाली की गूज के समान, ँ को दीर्घ तथा ঁ को ह्रस्व बोलें। ँ को नाक तथा कण्ठ से बोलें।

11. ओ शब्द जैसा हो वैसा ही बोलें। भुव: को भवह्, सवितुर् को सवितर्, यविष्ठ्य को यविष्ठाय, करतलकरपृष्ठे को कर्तल्कप्रंष्ठे, यज्ञ को जग, यज्ञ एवं यग्य, शान्ति: को सान्ति:, शीर्षा: को शीर्खा न बोलें। 'यो३स्मान्' के (३) इस स्वर चिन्ह को प्लुत न बोलें।

12. 'ऋ' अक्षर को 'र' के तुल्य मूर्द्धा से बोलें। ऋ अक्षर को र, रि व रु के समान यथा—सृष्टि को स्रष्टि वा स्रुष्टि न बोलें।

14. हलन्त को अजन्त (आधे अक्षर को पूरा) न बोलें। यथा—'तत्' को 'तत', 'स्व:' को 'सव:' एवं अजन्त को हलन्त यथा—'मम' को 'मम्', 'अंबहू' को अंबहम् न बोलें। अ, इ आदि स्वरों के बिना त्, स् आदि अक्षर 'हलन्त' (आधे) तथा अ, इ आदि से युक्त 'म, मि' आदि 'अजन्त' (पूरे) कहलाते हैं।

14. दीर्घ व प्लुत (3) मात्रा को ह्रस्व यथा—भू: भुयिष्ठान् व ओम् न बोलें।

15. सामूहिक रूप में मन्त्रों का उच्चारण करते समय किसी एक शुद्ध उच्च स्वर व स्पष्ट उच्चारण करने वाले व्यक्ति के साथ-साथ, पुस्तक को देखते हुए सचेत होकर, श्रद्धापूर्वक, मधुर ध्वनि, एक स्वर व एक लय में प्रेम से मिलकर बोलें।

* 'ह्रस्व' नाड़ी की एक, 'दीर्घ' नाड़ी की दो, 'प्लुत' नाड़ी की तीन, धड़कन के बराबर काल होता है। मूर्द्धा का स्थान, कण्ठ और तालु के मध्य में होता है।

* ये नियम वर्णोच्चारण शिक्षा, अष्टाध्यायी, याज्ञवल्क्य शिक्षा, प्रातिशाख्य तथा ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के आधार पर हैं।

प्रेषक—श्री राम भिक्षु मानव सेवा आश्रम, रुड़की रोड, कुटमलपुर (सहारनपुर)

शिक्षा प्रणाली में अमूलचूल परिवर्तन के पक्षधर : पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

ले०—श्री डा० प्रशान्त वेदालंकार 7/2 रूप नगर दिल्ली—6

(गतांक से आगे)

पण्डित गुरुदत्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के पण्डित थे। पर फिर भी वे उसकी तुलना में संस्कृत तथा प्राचीन शास्त्रों को अधिक महत्त्व देते थे। वे अपने भारतीय ज्ञान-विज्ञान से इतने प्रभावित थे कि भावुकता मे वे कहते थे कितना अच्छा हो यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा मात्र संस्कृतज्ञ बन सकूं, क्योंकि जो बात अंग्रेजी ग्रंथों के सहस्रों पृष्ठों में मिलती है वह वेद के एक मन्त्र अथवा ऋषियों के एक सूत्र मे मिल जाती है। उन की समस्त फिलासफी न्याय दर्शन के दो सूत्रों की व्याख्या प्रतीत होती है। उनका मत था कि यद्यपि पाश्चात्य विज्ञान अच्छा है और इसके द्वारा विविध कलाओं का आविष्कार हुआ है, पर वैशेषिक दर्शन के समक्ष यह अभी कुछ भी नही है। उनका यह भी कथन था कि इस समय पृथ्वी पर ऋषि कणाद सदृश पदार्थ विद्या का ज्ञाता कोई नहीं है। वेद के प्रति प० गुरुदत्त जी की इतनी निष्ठा थी कि उन्होंने जुलाई 1888 में वैदिक मैगज़ीन नामक एक अंग्रेजी मासिक पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। इसके विद्वतापूर्ण लेख आर्य जगत् के अतिरिक्त सम्पूर्ण शिक्षा जगत् में आदर के साथ पढ़े जाते थे, और इससे वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में बहुत सहायता मिली।

इन विचारों के आधार पर डी० ए० वी० संस्था के उद्देश्यों में उनका स्पष्ट मत था कि डी० ए० वी० संस्था संस्कृत की शिक्षा के लिए स्थापित की गई है। लाला रलाराम जेहलम आर्य समाज की ओर से डी०ए०वी० सोसायटी के सदस्य थे। वे भी पं० गुरुदत्त जी के इस विचार से पूर्णत: सहमत थे कि डी०ए०वी० संस्थाओं में संस्कृत व वेद पर ही बल दिया जाए।

कालिज समिति ने संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करने के लिए एक उप-समिति का गठन किया, जिस के संयोजक पं० गुरुदत्त बनाए गए। उस अवसर पर लाला मूलराज का उप-समिति को भेजा पत्र उद्धरणीय है उनके अनुसार 'वर्णोच्चारण शिक्षा' और 'संस्कृत प्रबोध' उस पाठ विधि में सम्मिलित हैं जो अब प्रचलित हैं। मुझे प्रसन्नता होगी यदि अष्टाध्यायी मिडल के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव और उनकी पढ़ाई में विघ्न डाले बिना अच्छी तरह से पढ़ाई जा सके। प० गुरुदत्त विद्यार्थी से कहा जाए कि वे अष्टाध्यायी के उन भागों को अंकित करें जो विभिन्न कक्षाओं को पढाने है। मुझे विश्वास है कि यदि पं० गुरुदत्त विद्यार्थी अपनी सम्मति दे दें तो इस विषय पर अच्छा विचार किया जा सकता है। पर लाला मूल राज जी का अपना विचार यह था कि संस्कृत में सूत्र, उणादि कोष तथा भूमिका को पाठविधि में रखने से छात्र संस्कृत के स्थान पर फारसी लेने लगेंगे और यदि फारसी को पाठ्यक्रम से हटा दिया गया, तो कोई भी सम्भवत: बहुत कम, दयानन्द कालिज में प्रवेश लेंगे।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 27 जुलाई 1889 को एक पत्र उपसमिति को लिखा था, जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्कृत व्यकारण आदि की शिक्षा के सम्बन्ध में प्रतिपादित पद्धति को डी०ए०वी० स्कूल व कालिज में प्रयोग करने पर बहुत बल दिया। उनका कहना था कि एम०ए० तक केवल अष्टाध्यायी का अध्ययन महर्षि दयानन्द की इच्छा व विचारों की अवहेलना करनी है। अष्टाध्यायी के साथ उणादि कोष महाभाष्य का अध्ययन भी आवश्यक है। उन्होंने लिखा था कि कालिज का वह स्नातक, जिसने केवल अष्टाध्यायी पढ़ी हो और वह भी अधूरी, क्योंकि न तो उसने उणादि कोष, न निघण्टु, न निरुक्त, न छन्द, न ज्योतिष और न छह दर्शनों में से कोई एक भी पढ़ा होता है, मैं पूछता हूं कि क्या ऐसा विद्यार्थी आर्य शिक्षा के उच्च आदर्श को पूरा कर सकता है? क्या उस को आर्य शिक्षा के सिद्धान्तों में दृढ़ समझा जा सकता है।

पण्डित गुरुदत्त के सामने महर्षि दयानन्द के निम्नलिखित वाक्य आदर्श थे—

"जितना बोध इन (अष्टाध्यायी और महाभाष्य) के पढ़ने से तीन वर्ष में होता है, उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत, चन्द्रिका, कौमुदी, मनोरमादि के पढ़ने से पचास वर्षों में भी नही हो सकता, क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता के महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है, वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्यों कर हो सकते हैं। महर्षि लोगों का आशय जहां तक हो सके वहां तक सुगम और जिसके ग्रहण करने के समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है। क्षुद्राशय लोगों की मन्शा ऐसी होती है कि जहां तक बने वहां तक कठिन रचना करनी जिस को बड़े परिश्रम से पढ़ कर अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ उठाना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसे एक गोता लगा कर बहुमूल्य मोतियों को पाना।" पण्डित गुरुदत्त ने स्वयं अष्टाध्यायी पढ़ कर थोड़े समय में ही संस्कृत का इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि वे उसमें भाषण भी करने लगे थे। उन्हें इस बात से हार्दिक दु:ख था कि डी०ए०वी० स्कूल मे संस्कृत की पढ़ाई के लिए उस लघुकौमुदी का प्रयोग हो रहा था, जिसकी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निन्दा की थी। अन्तत: 1890 मे डी०ए०वी० स्कूल की आठवीं कक्षा में अष्टाध्यायी की पढ़ाई को अनिवार्य कर दिया गया। पर वे और उनके अनुयायी डी० ए० वी० कालिज में संस्कृत को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान देने के प्रयत्न में लगे रहे।

यहां यह लिखते हुए दु:ख होता है कि पण्डित गुरुदत्त, लाला रलाराम, लाला ठाकुरदत्त और लाला मुन्शीराम जैसे आर्य समाजी नेताओं के संस्कृत शिक्षण के आदर्शों से डी० ए० वी० कालिज समिति के अधिकांश सदस्य सहमत नहीं थे। वे अष्टाध्यायी और महाभाष्य सदृश ग्रन्थों को डी०ए०वी० स्कूल तथा कालिज की पाठविधि में रखना व्यावहारिक नहीं समझते थे। उन के मत में संस्कृत की शिक्षा के लिए लघुकौमदी तथा आधुनिक सरल पुस्तकों का सहारा लेने में कोई हानि नहीं है।

डी०ए०वी० कालिज के इतिहास मे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का एक विशेष स्थान था। वे उस के संस्थापकों मे थे और अगस्त 1888 में जिस दयानन्द एंग्लो वैदिक कालिज सोसायटी की रजिस्ट्री कराई गई थी, उसके वे भी अन्यतम सदस्य थे। कालिज के लिए धन एकत्र करने मे भी उनका विशेष महत्त्व था। डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओं की पाठविधि और शिक्षानीति के सम्बन्ध में जिस मतभेद का उल्लेख हमने किया है, उसमें एक पक्ष के वे प्रधान नेता थे।

पर धीरे धीरे उनके मन में इस शिक्षण-संस्था के प्रति असन्तोष उत्पन्न हो गया। यह उन के व्यक्तित्व की महानता थी कि असन्तुष्ट होते हुए भी उन्होंने उस के विकास में निरन्तर सहयोग दिया।

गुरुदत्त जी के असंतोष का कारण स्पष्ट था। डी०ए०वी० शिक्षा संस्थाओं के प्रारम्भ से ही स्वरूप के सम्बन्ध में दो विचारधाराएं थी। दयानन्द की स्मृति में स्थापित संस्था में संस्कृत व वेद की शिक्षा के साथ अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन तो सभी चाहते थे, पर प्रथम पक्ष—अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान की तुलना में भारतीय ज्ञान पर अधिक बल देना चाहता था, जबकि दूसरा पक्ष—पाठ विधि में भारतीय ज्ञान की तुलना मे अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान पर अधिक बल देने का इच्छुक था। गुरुदत्त जी प्रथम मत के पस्तोता थे। पर उन्होंने अनुभव किया कि संस्था पर दूसरा पक्ष अधिक हावी हो गया है।

डी० ए० वी० शिक्षण संस्था से अपना उद्देश्य पूरा होता न देखकर प० गुरुदत्त ने एक पृथक संस्था का श्रीगणेश किया। लाला जीवनदास, लाला रला राम और लाला मुन्शीराम आदि अनेक अन्य आर्य विद्वान इस संस्था ने निर्माण में प० गुरुदत्त जी के सहायक थे। 3 सितम्बर 1889 के आर्य पत्रिका के अंक मे पं० गुरुदत्त जी द्वारा स्थापित संस्था के विषय में निम्नलिखित विवरण प्राप्त होता है—क्योंकि आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के लिए एक क्लास का खोलना आवश्यक है, इस कारण जब तक डी० ए० वी० कालिज की प्रबन्धकर्ती सभा या कोई अन्य नियमपूर्वक बनी कमेटी इस कार्य को हाथों में नहीं ले लेती, तब तक क्लास के लिए चन्दा एकत्र करने तथा क्लास सम्बन्धी अन्य कार्यों के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक अस्थायी वैदिक क्लास कमेटी बनाई जाए—स्वामी रामानन्द सरस्वती, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०, लाला जीवनदास (लाहौर), लाला मुन्शीराम (जालन्धर), लाला रलाराम (जेहलम), मास्टर दयाराम (गुजरात), पण्डित धर्मचन्द (अमृतसर), डा० सीताराम (पेशावर) और लाला केदारनाथ (लाहौर)। इस संस्था के प्रधान लाला मुन्शीराम, मन्त्री लाला केदारनाथ, कोषाध्यक्ष लाला जीवनदास तथा उपदेशक स्वामी रामा नन्द मनोनीत हुए।

पण्डित गुरुदत्त ने सन् 1889 में अपने मकान पर उक्त कक्षा प्रारम्भ भी कर दी। इस कक्षा ने आर्य जगत में एक हलचल उत्पन्न हो गई। डी० ए० वी० संस्था के लिए इसकी उपेक्षा कर सकना सम्भव नही था। जिस कारण डी० ए० वी० कमेटी के प्रधान लाला लाल चन्द ने 26 अक्तूबर 1889 को पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा मे यह प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा एक उपदेशक क्लास का संचालन करे। लाला मुन्शीराम को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शहीद ठा० रोशन सिंह

ले०—श्री बनारसी सिंह जी

उत्तर प्रदेश के प्रमुख जिले शाहजहांपुर के नवादा ग्राम में सन् 1891 ई० की वसंतपंचमी के ऐतिहासिक दिवस पर आर्य समाज के सम्पर्क में आए हुए राजपूत परिवार में एक बालक ने जन्म ग्रहण किया। पुत्र के 11वें दिवस पर पिता ने पंडितों को बुलाकर यज्ञ कराया। कुल को रोशन करने वाला समझकर परिवार वालों ने वैदिक विधि से इस बालक का नामकरण किया 'रोशन सिंह'।

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी ही सिद्ध हुए रोशन सिंह। उन्होंने एक ही लिप्सा जगाई थी और वह थी मातृभूमि को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने की तमन्ना।

रोशन सिंह को 6 वर्ष की अवस्था में ग्राम की पाठशाला मे शिक्षा-प्राप्ति हेतु भेजा गया। किन्तु उसे पुस्तकों में कम और खेल-कूद में ही अधिक रुचि थी। इस पर भी येन केन-प्रकारेण उन्होंने 1901 ई० तक ग्राम की पाठशाला मे चौथी श्रेणी तक की शिक्षा पूर्ण कर ली और उन्हें हिन्दी तथा उर्दू का सामान्य ज्ञान हो गया।

नवादा ग्राम में जो भी आर्यसमाजी प्रचारक, उपदेशक या भजनीक आता वह ठा० रोशन सिंह के यहां ही आश्रय पाता। धीरे धीरे आपके परिवारों में भी आर्य समाज का प्रभाव बढ़ता गया फलस्वरूप नवादा ग्राम के राजपूत परिवारों में श्रावणी पर्व पर सामूहिक यज्ञोपवीत बदलने का कार्यक्रम भी सुनियोजित रूप से चलने लगा। ठा० रोशन सिंह राजपूत परिवार मे जन्म ग्रहण करने के कारण अश्वारोहण और निशानेबाजी मे तो कुल-परम्परा के पारगत थे।

आर्य समाज के सम्पर्क ने तो आप के जीवन मे एक नया मोड़ ही ला दिया था, सुप्रसिद्ध आर्योपदेशक स्वामी सोमदेव का एक दिन नवादा आगमन हुआ। उन्हीं दिनों (13 अप्रैल 1919) पंजाब की सुप्रसिद्ध महानगरी अमृतसर के जलियांवाला बाग की सार्वजनिक सभा में एकत्र हुए सहस्रों निहत्थे नागरिकों पर गोलियां चलाकर ब्रिटिश सरकार ने क्रूरता का परिचय दिया था। स्वामी सोमदेव ने अपने प्रवचन में जलियांवाला बाग हत्याकांड का अपनी प्रभावशाली शैली में वर्णन किया। उसे सुनकर जहा श्रोताओं के हृदय दहल उठे, अनेकों के नेत्र अंग्रेज के विरुद्ध रोष से लाल हो गए वहीं उन्होंने क्रूर विदेशी सत्ता से टकराने का पावन व्रत ग्रहण कर लिया। वे ग्राम ग्राम में क्रान्ति का अलख जगाने लगे और युवा शक्ति में क्रान्ति यज्ञ की ज्वाला को धधकाने में सन्नद्ध हो गए।

सन् 1921 में बरेली मे एक गोली कांड के लिए ठा० रोशन सिंह को उत्तरदायी समझ कर बंदी बना लिया और अभियोग चलाकर दो वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दे दिया। यह आप का प्रथम कारावास था। 1923 के मार्च मास में आप कारामुक्त हो गए।

कारागार से मुक्त होने के उपरांत आप शाहजहांपुर में आर्य कुमार सभा के संस्थापक 'राम प्रसाद बिस्मिल', एवम् अन्य क्रान्तिकारी युवकों के सपर्क में आ गए। शाहजहांपुर के आर्य समाज मंदिर में ही इन दोनों कर्मयोगियों की भेंट हुई थी। अब क्रान्तिकार्यों मे संलग्न हो गए ठाकुर सिंह भी।

तदुपरात 9 अगस्त, 1925 को सहारनपुर-लखनऊ पैसिंजर मे डाली गई ऐतिहासिक डकैती में भी आप बिस्मिल आदि के सहयोगी बने और 26 सितम्बर 1925 को आप भी बंदी बना लिए गए। आप को लखनऊ कारागार मे रखा गया। इस बंदी वास में आपके जीवन ने एक और नई दिशा ले ली। आप कारागार में प्रात: 4 बजे ही शैय्या का त्याग कर देते और शौचादि से निवृत्त होकर योगसाधना, प्रार्थना, प्राणायाम इत्यादि क्रियाओं में रत हो जाते। इसके अतिरिक्त वहीं आपने सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द का जीवनचरित्र एवम् भाई परमानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थों का स्वाध्याय किया तो कारागार में ही बिस्मिल' से बंगला भाषा भी सीखी।

अन्तत: डेढ़ वर्ष के लगभग की अवधि तक अभियोग चलाए जाने के उपरान्त आपको भी बिस्मिल और अशफाकुल्ला खां एवं लाहिड़ी के साथ मृत्यु दण्ड सुना दिया गया।

मृत्यु दण्ड दिए जाने से लगभग एक सप्ताह पूर्व इस महान राष्ट्रभक्त ने अपने एक मित्र को जो पत्र लिखा था उससे उनकी मन:स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस पत्र मे ठा० रोशन ने लिखा था—

"आप मेरे लिए हर्गिज रंज न करें। मेरी मौत खुशी का बाइस है। दुनिया में पैदा होकर मरना जरूर है। दुनिया में बदफैल करके इन्सान अपने को बदनाम न करे और मरते वक्त ईश्वर की याद रहे। यही दो बातें होनी चाहिए। मुझे ईश्वर भजन का मौका मिला। इससे मेरा मोह छूट गया और वासना बाकी नहीं रही। मेरा पूर्ण विश्वास है कि दुनिया की कष्ट भरी यात्रा समाप्त करके मैं अब आराम की जिन्दगी के लिए जा रहा हूं। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि जो आदमी धर्म युद्ध में प्राण देता है, उस की वही गति होती है जो वनों में रह कर तपस्या करने वालों की।

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है रोशन
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं?

19 दिसम्बर 1927 को वह महावीर जीवनदान दे कर अमर हो गया।

जिला आर्य सभा होशियारपुर का पुनर्गठन

दिनांक 7-10-90 को आर्य समाज तलवाड़ा में जिला होशियारपुर की आर्य समाजों के अधिकारियों की बैठक श्री आशा नन्द जी संगठन मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में हुई थी। जिसमें मुझे जिला सभा का प्रधान चुना गया था। और जिला सभा के कुछ अधिकारी चुने गये थे और मुझे यह अधिकार दिया गया था कि मैं जिला सभा के कुछ अधिकारी और अन्तरंग सभा का चुनाव करके जिला सभा का पुनर्गठन कर दू। इस लिए मैंने सभी जिला की समाजों में जाने का यत्न किया और प्रयास किया कि जहां भी आर्य समाजी मिलें उनसे सम्पर्क किया जायें। और मैंने कोशिश की है कि जिनके पास कार्य करने के लिये समय हो उनको जरूर जिला सभा और अन्तरग सभा में लिया जाये। और प्रत्येक समाज से अधिकारी लिए जायें। इस लिए मैंने निम्नलिखित जिला सभा के अधिकारी और अन्तरग सदस्य मनोनीत किये हैं जिला सभा के अधिकारी और अन्तरंग सदस्य।

(1) प्रधान—श्री मनोहर लाल जी आर्य समाज तलवाड़ा

उपप्रधान—श्री वेद प्रकाश जी आर्य समाज गढ़शंकर, श्री अमर सिंह जी आर्य समाज मुकेरियां, श्री राज कुमार पुरी आर्य समाज गढ़दीवाला श्री राजेन्द्र प्रसाद दत्ता आर्य समाज गढ़शंकर।

महामन्त्री—श्री जगदीश मित्र होशियारपुर

मन्त्री—श्री गुरदेव सिंह दीवान आर्य समाज बलाचौर, श्री सुरेन्द्र मोहन कृपाल आर्य समाज गढ़शंकर, श्री पं० खुशी राम जी आर्य समाज हरियाणा।

प्रचार मन्त्री—श्री मदन बिहारी शास्त्री गढ़शंकर।

कोषाध्यक्ष—श्री अमर नाथ जी आर्य, आर्य समाज तलवाड़ा।

लेखा निरीक्षक—श्री जिया लाल जोली आर्य समाज मुकेरियां।

अन्तरग सदस्य—श्री निशान सिंह जी डा० राम स्वरूप जी आर्य समाज पजोड़ा, श्री राम प्रकाश जी आर्य समाज हाजीपुर, वैद्य हंसराज जी गढ़दीवाला श्री सत्यानन्द जी गांव सढोयां, श्री किशोरी लाल जी तलवाड़ा, श्रीमति कमल बाला आर्य समाज गढ़शंकर।

—मनोहर लाल आर्य
प्रधान जिला आर्य सभा होशियारपुर

श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती का अभिनन्दन

आर्य समाज पानीपत के वार्षिक उत्सव पर 4-11-90 रविवार को श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती का अभिनन्दन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री विजय कुमार उपायुक्त पानीपत ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए आर्य समाज पानीपत के मन्त्री श्री राम मोहनराय, एडवोकेट ने कहा कि स्वामी विद्यानन्द जी का विगत अर्द्धशताब्दी का जीवन परिचय, आर्य समाज पानीपत का इतिहास है। ऐसा कोई कार्यक्रम, आन्दोलन तथा सत्याग्रह नहीं रहा, जिसमें स्वामी जी का सक्रीय मार्गदर्शन तथा सहयोग नहीं रहा हो।

आर्य समाज पानीपत के प्रधान श्री योगेश्वर चन्द जी ने स्वामी विद्यानन्द जी को एक अभिनन्दन-पत्र, एक दुशाला तथा 2100/- रुपये की एक थैली भेंट की।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेर सिंह जी ने इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी को वैदिक सिद्धान्तों पर अडिग तथा निर्भीक सन्यासी बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने कहा कि स्वामी विद्यानन्द जी आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द को एक समर्पित व्यक्तित्व है तथा सिद्धान्त की कीमत पर समझौता उन्होंने कभी नहीं किया।

नगर के विधायक श्री बलबीर पाल शाह, जो स्वामी विद्यानन्द जी (पूर्व प्रि० लक्ष्मी दत्त जी दीक्षित) का कालेज में छात्र रहा है, ने कहा कि स्वामी जी की ही प्रेरणा से, उनके जीवन में अमूल-चूल परिवर्तन हुआ है।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्ती ने धन्यवाद देते हुए कहा कि राजनीति को धर्मविहीन बनाने की बात करना निरा पाखण्ड है।

(पृष्ठ 5 का शेष)

उसके नियमें आदि बनाने का काम सौंपा जाए। उपदेशक क्लास से जो रुपये आएं उनका पृथक हिसाब रखा जाए। वस्तुत: यह डी०ए०वी० कमेटी में गुरुदत्त के विचारों की विजय थी। जुलाई 1890 तक उपदेशक क्लास के नियम बना लिए गए, और अगले वर्ष प्रारम्भ में पृथक एक उपदेशक क्लास खोल दी गई। जिसमें आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा की विशेष रूप से व्यवस्था की। इसका उद्देश्य था—आर्ष विद्यालय स्थापित करना। पं० गुरुदत्त जी ने ही उक्त विद्यालय स्थापित कराने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया था। परिणामस्वरूप धीरे धीरे बाद में आर्य समाज द्वारा अनेक उपदेशक विद्यालयों तथा गुरुकुलों की स्थापना की गई।

इसी बीच पण्डित गुरुदत्त गम्भीर रूप से बीमार पड़ गए और 9 मार्च 1890 को उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया। इससे उनके उद्देश्य को पूर्ण करने में बाधा उत्पन्न हुई। अब इस कार्य को (महात्मा) मुन्शीराम ने सम्भाला। उनके नेतृत्व मे सस्कृत और वेद शास्त्रों की शिक्षा को प्रमुख स्थान दिलाने के पक्षपाती लोगों मे नवीन उत्साह का सचार हुआ। पर मुन्शीराम जी को डी० ए० वी० के दूसरे पक्ष से निराशा हुई और उन्होने डी० ए० वी० से पृथक गुरुकुल की स्थापना का निश्चय किया।

डी०ए०वी० के आदर्शों के विषय में मतभेद का एक दूसरा कारण मांस भक्षण का विषय था। इस विषय पर स्वामी जी की मृत्यु के बाद से ही मतभेद प्रारम्भ हो गया था। यद्यपि पण्डित गुरुदत्त के जीवन काल मे इस विषय ने बहुत उग्र रूप धारण नही किया था। पर उनके बाद 1894 तक यह स्थिति आ गई कि लाला मुन्शीराम व उनके साथी डी० ए० वी० कालिज सोसायटी में नहीं रह सके।

गुरुदत्त जी हमें छोड़ कर बहुत जल्दी चले गए। पर इसी अल्पकाल में उन्होंने आर्य शिक्षण सस्थाओं के स्वरूप की जो कल्पना की वे आज भी हमारा आदर्श हो सकता है।

ऊपर हमने देखा कि पं० जी के समय मे भी उनके विरोधियों का पक्ष अधिक प्रबल था। जिस आर्ष शिक्षा प्रणाली का उल्लेख महर्षि दयानन्द ने किया था, गुरुदत्त जी उसी का प्रचलन चाहते थे। पर सत्य है कि आज के युग में ठीक उसी शिक्षा प्रणाली को चलाना एक कठिन काम है। स्वय महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में अनेक पाठशालाओं की स्थापना की, पर उन्हें अपने आदर्शों के अनुरूप चलता न देखकर उन्होने स्वय उन्हें बन्द कर दिया। पर हर व्यक्ति में यह साहस नहीं होता कि वह आदर्श व सिद्धान्तों के पीछे अपनी सस्था को ही बन्द कर दे। सस्था के सचालन में लोकेषणा होती है, उस लोकेषणा के लिए ही वह सिद्धान्तों की बलि चढ़ाकर ही सस्था चलाता रहता है। प० गुरुदत्त जी के लिए महर्षि दयानन्द के समान कोई लोकेषणा नहीं, सिद्धान्त व आदर्श प्रमुख थे। अत: जब उनको लगा कि डी० ए० वी० सस्थाए महर्षि दयानन्द द्वारा 'निर्दिष्ट' आदर्शों के अनुरूप नहीं बन पा रही तो उन्होंने अपने द्वारा निर्मित व पोषित सस्था से मुह मोड़ने में देर नहीं की।

आर्य शिक्षा सस्थाओं के स्वरूप के सम्बन्ध मे मतभेद तब भी थे और आज भी हैं। सिद्धान्तवादी की तब भी पराजय हो रही थी पर वह अपने को पराजित मानता नही था। अपने सिद्धान्त की पूर्ति के लिए किसी नई शिक्षा सस्था की स्थापना करने का उसमें सकल्प व शक्ति थी। पर आज सिद्धान्तवादी पक्ष अपनी पराजय मान कर शान्त होकर बैठ गया है, अधिक से अधिक वह उसकी आलोचना मे लग जाता है। सिद्धान्त के अनुसार किसी नई शिक्षा संस्था की स्थापना करने की उसमे शक्ति नही है।

जिनका शिक्षा सस्थाओं पर आधिपत्य है, वे शिक्षा सस्था के सचालन के पीछे सिद्धान्तों की चर्चा करते हैं। उनका कहना है कि आर्य शिक्षा संस्थाओं के स्वरूप में भी समय व परिस्थिति के अनुसार कुछ परिवर्तन अवश्य करने चाहिए। उनका मत है कि आज के युग में सस्कृत व वेद की तुलना में अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की अधिक आवश्यकता है। देश मे स्थापित ईसाई स्कूलों की प्रतिद्वन्द्विता करने के लिए मैकाले की शिक्षा प्रणाली रखकर भी हम दयानन्द सस्कृत और धर्म शिक्षा की चर्चा द्वारा उन्हें ईसाई मत से बचा सकते हैं। वस्तुत: इस प्रकार का तर्क देने वाले सस्था संचालक आर्य जगत् के साथ अपने को भी धोखा दे रहे होते हैं। उसका कारण स्पष्ट है। उनकी शिक्षा संस्थाओं में दयानन्द, संस्कृत व धर्म शिक्षा का केवल नाम होता है, उनकी वास्तविक शिक्षा नही। उन शिक्षा-णालयों के अध्यापक अध्यापिकाओं को यह भी ज्ञात नहीं होता कि दयानन्द कब हुए थे, उनके कौन-कौन से ग्रन्थ हैं आदि। संस्कृत की उतनी शिक्षा भी वे अपने विद्यालयों में अनिवार्य नही रख पाते, जितने राज्यों द्वारा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जा सकती है। इसी प्रकार अंग्रेजी माध्यम के कारण भारतीय आर्य भाषाओं का भी स्थान गौण हो जाता है। वस्तुत: आज की परिस्थिति में आर्य शिक्षा संस्थाओं के स्वरूप को स्थापित करने व उनका संचालन करने के लिए पं० गुरुदत्त के जीवन व आदर्शों से मार्ग दर्शन लेना होगा।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी योग, ब्रह्मचर्य व मांसाहार के सर्वथा विरुद्ध थे और वे आर्य शिक्षा संस्थाओं का स्वरूप भी ऐसा ही चाहते थे, जहां विद्यार्थी सच्चरित्र हों। पण्डित जी के युग में जो मांसाहार के पक्ष में थे वे भी विद्यार्थियों के चरित्र पर विशेष ध्यान देते थे। मांसाहार के पक्ष मे उनका तर्क यह था कि मांसाहारियों को भी दयानन्द, सस्कृत व वेदादि को सीखने का अधिकार होना चाहिए। पर आज मांसाहार के साथ मद्य का भी आर्य शिक्षा सस्थाओं के अधिकारी अपना अधिकार मानने लगे है। छात्रों के चरित्र निर्माण की ओर उनका कोई ध्यान नही है। प० गुरुदत्त विद्यार्थी इस दृष्टि से भी याद आते हैं और इनसे मार्ग दर्शन लेकर आर्य शिक्षा संस्थाओं का स्वरूप निर्धारित करने की इच्छा व प्रेरणा प्राप्त होती है।

वस्तुत: यदि हम सचमुच प० गुरुदत्त विद्यार्थी को पवित्र स्मरण व श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो हमें उनके आदर्शों के अनुरूप शिक्षा सस्थाओं का सचालन करना होगा। उनका जीवन और उनके सिद्धान्त हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई थी और उन्होंने इसके पश्चात् अपना सारा जीवन देश सेवा के लिए अर्पण कर दिया था।

1905 में कांगड़ा भूकम्प ने बहुत तबाही मचाई और इसी प्रकार 1907 में उड़ीसा मध्य प्रान्त में व उत्तर प्रदेश में भीषण अकाल पड़ा था। जिससे जनता त्राहि-त्राहि कर उठी थी। लाला जी दोनों स्थानों पर अपने साथ आर्य समाज के स्वयं सेवकों को लेकर सहायतार्थ पहुंचे थे। इस प्रकार लाला जी देश जाति और समाज के कार्यों में दिलो जान से जुट गए थे। इसी बीच उन्हें विदेश जाने का भी अवसर मिला परन्तु वह शीघ्र ही भारत वापिस लौट आए।

सर साइमन की अध्यक्षता मे सुधार की योजना की गतिविधियां देखने और देश की बिगड़ रही परिस्थितियों में आवश्यक परिवर्तन करने के सुझाव देने के लिए ब्रिटिश सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया था। भारतीय नेताओं ने इस कमीशन की रूप रेखा पर असन्तोष प्रकट किया, क्योंकि उन्होंने माग की थी कि इस कमीशन के सदस्यों मे भारत की जनता के प्रतिनिधि भी लिए जाए। परन्तु अंग्रेज सरकार ने भारतीयो की इस न्याय सगत छोटी सी माग को भी ठुकरा दिया। इसलिए सारे देश में इस साइमन कमीशन के विरुद्ध एक रोष की लहर उठ खड़ी हुई। स्थान स्थान पर इसका बहिष्कार किया जाने लगा। जहां जहां यह कमीशन जाता था, वहां वहां काले झंडों से इसका स्वागत किया जाता था।

30 अक्तूबर 1928 को यह कमीशन जब लाहौर आया तो हजारों लोगों ने काले झंडों से स्टेशन पर इसके विरुद्ध प्रदर्शन करने की एक योजना बनाई। परन्तु सरकार ने लाहौर में दफा 144 लगा दी ताकि कोई इस जलूस में न जा सकें। लाला लाजपतराय जी ने इसकी कोई परवाह न करते हुए हजारों लोगों को साथ लेकर स्टेशन पर जाकर इसके विरुद्ध प्रदर्शन करना आरम्भ कर दिया जब लाला लाजपतराय जी सभी का नेतृत्व कर रहे थे और आगे आगे चल रहे थे, तो अचानक पुलिस ने सभी प्रदर्शनकारियों पर उन्हें तितर-बितर करने के लिए लाठीचार्ज कर दिया। निहत्थे लोग लाठियों की बौछार से गिरने लगे और लाला जी भी इन प्रहारो से न बच सके। उनके शरीर पर अनेकों लाठियां पड़ी जिनके कारण उनकी छाती पर भी घाव हो गए। जहां जहां चोटें आई थी, वहां वहां सूजन भी हो गई थी, परन्तु लाला जी ने फिर भी अपनी हिम्मत नहीं हारी और इसके एक सप्ताह पश्चात लुधियाना मे अपने घावों की परवाह न करते हुए उन्होने एक जन सभा को सम्बोधित किया और इस अवसर पर उन्होने कहा था कि "मेरे शरीर पर लगी एक एक लाठी ब्रिटिश सरकार के कफन की कील बन कर रहेगी। मैं नही जानता कि मैं रहूंगा या नही परन्तु तुम्हें चिन्ता न करनी चाहिए। मेरे बाद मेरी आत्मा आप सब को स्वतन्त्रता और बलिदान के लिए प्रेरित करती रहेगी।" इसके पश्चात लाला जी लाहौर आ गए। 15 नवम्बर 1928 के दिन उनके शरीर में पीड़ा होने लग गई और इसके साथ ही उन्हें बुखार भी हो गया और 17 नवम्बर 1928 को प्रात: सात बजे उन्होंने अपने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया।

—धर्मदेव आर्य

सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव 23, 24, 25 नवम्बर 1990 को मनाया जा रहा है। उत्सव से एक सप्ताह पूर्व ऋग्वेद पारायण यज्ञ होगा। उसकी पूर्णाहुति रविवार 25 नवम्बर को प्रातः 10 बजे होगी। इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए एक बस दिनांक 24-11-90 को दोपहर 3 बजे आर्य समाज "अनार कली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से और एक बस 25-11-90 को प्रातः 7 बजे आर्य समाज ग्रीन पार्क से तथा उसी समय एक बस प्रातः 7 बजे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश—1, नई दिल्ली से चलेगी। जो आर्य जन इस वार्षिक उत्सव मे जाना चाहे वे उक्त तीनों स्थानों में से किसी एक पर अपना नाम लिखवा कर सीटें सुरक्षित करवा सकते हैं।

आर्य समाज पठान कोट में वस्त्र(वितरण) वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट में 4 से 11 नवम्बर तक शीत ऋतु (वस्त्र वितरण) सहयता दिवस 1990 व वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी स्कूल के निर्धन बच्चों तथा अन्य असहाय लोगों में वस्त्र, जूते व स्वेटर आदि गर्म कपड़े बान्टे गए। वेद कथा आचार्य अखिलेश्वर जी ब्रह्मचारी करते रहे। भजन श्री पं० सत्यपाल जी पथिक के होते रहे प्रातः 7 से 9 बजे तथा सायं 4 से 6 बजे आर्य समाज द्वारा पारिवारिक सत्सग होते रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति 11-11-90 को 8 से 12 बजे तक हुई। पूर्णाहुति के पश्चात्पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा।

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज माडल टाऊन जालंधर का 36वां वार्षिकोत्सव दिनांक 2, 3, 4 नवम्बर 90 को बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इसको सफल बनाने में नगर की लगभग सभी समाजों ने पूर्ण सहयोग दिया। इसी उपलक्ष में पिछले दिनांक 21-10-90 से पं० श्री सत्य प्रकाश जी शास्त्री तथा पं० श्री वेद प्रकाश जी आर्य के पौरहित्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ किया गया था जिसका आकर्षणीय भव्य पूर्णाहुति समारोह दिनांक 4-11-90 रविवार को 51 हवन कुण्डों पर महात्मा आर्य भिक्षु जी के बह्मत्व में 204 यजमान परिवार तथा अन्य बहुत सारे धर्मप्रेमी परिवारों की उपस्थिति में सुसम्पन्न हुआ। दिनांक 29-10-90 से 31-10-90 तक प्रि० वेदव्रत जी मेहरा वेदकथा करते रहे। दिनांक 1-11-90 से 4-11-90 तक महात्मा आर्य भिक्षु जी, महात्मा प्रेम प्रकाश जी, श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा, डा० राम अवतार जी, के हृदयग्राही प्रवचन, श्री धर्म पाल जी व पं० श्री जगत जी वर्मा के मधुर भजन होते रहे।

आर्य समाज मुकेरियां का चुनाव

आर्य समाज मुकेरियां का चुनाव दिनांक 19-10-90 को रात्री के 7-30 बजे श्री धर्म पाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिस में सर्वसम्मति से श्री जगदीश मित्र खुल्लर जी को प्रधान चुना गया।

अन्य पदाधिकारी निम्न हैं—

1. उप-प्रधान—श्री अजीतकुमार नारंग।
2. मन्त्री—श्री अमरसिंह परमार
3. उप-मन्त्री—श्री शशि जोशी
4. कोषाध्यक्ष—श्री हरि किशन महाजन।
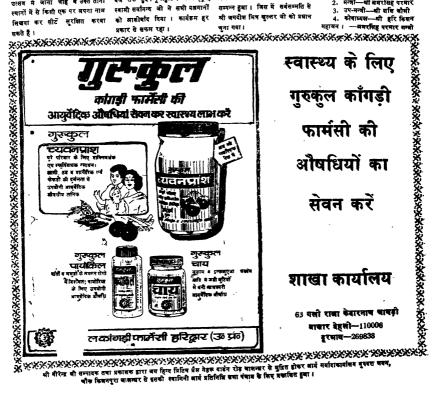
—अमरसिंह परमार मन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादाकार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 35, मार्गशीर्ष—10 सम्वत् 2047 तदनुसार 22/25 नवम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये (प्रति अंक 60 पैसे)

'इदन्न मम' का रहस्य

ले०—श्री डा० धर्मचन्द्र जी विद्यालंकार

इस दुनियां में क्या मेरा अपना नितान्त निजी भी कुछ है ? यह प्रश्न बार-बार हृदय मस्तिष्क में रह-रहकर कौंधता रहता है। कुछ भी तो स्थिर और स्थायी नहीं है। यहां सभी कुछ तो चंचल है। क्षण-क्षण पल-पल परिवर्तन की माला जप रहा है। प्रतिमास कई हजार रुपये वेतन के रूप में कमाता हूं, लेकिन महीने के अन्तिम दिनों मे वही फक्कड का फक्कड बना रहता हूं। क्योंकि वेतन का वितरण जिन-जिन मदों में होता है उनके कारण महीने का अन्त आते-आते हाथ खाली। कही राशन वाला है, कहीं कपड़े वाला, कहीं दूध वाला, कहीं धोबी, तो कहीं सफाई करने वाला या वाली। सारे का सारा ही तो वेतन प्रसाद के रूप में वितरित हो जाता है। तब मैं यह कैसे मानूं कि वह मेरा अपना है। उस पर तो न जाने कितने लोगों का अधिकार है।

मैं ही क्यों, मुझसे भी कई गुणा अधिक कमाने वाले लोग हैं। लेकिन जिसके पास भी जाओ और मांगकर देखो थोड़ा सा धन-द्रव्य, तो उत्तर मिलेगा—'मुझे किसी का देना है।' तब मुझे लगने लगता है कि क्या हम सब और भी किसी के लिए कमा रहे हैं। कहते तो सब यही हैं कि अपने लिए मर-खप रहे हैं। परन्तु कहां, यहां तो सबके सब भर सावन बरसे हुए बादलों की तरह अश्विनी आते ही खाली हो जाते हैं। तदपि अहर्निश संचय की चिन्ता बिलकती रहती है। धनो भाई—लक्ष्मी किसी के यहां पूरी तरह जमकर कब ठहरती है। लक्ष्मी के इसी मनचले स्वभाव को लक्षित करते हुए रहीम जी ने कहा था—

"लक्ष्मी थिर न रहीम कहहि,
यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू,
क्यों न चंचला होय।"

लेकिन लक्ष्मी के इस चंचल स्वभाव को जानते हुए भी लोग मानते रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे अवश्य ही उसको अपने यहां रहने के लिए राजी कर लेंगे। जैसे वह लक्ष्मी न हुई, उनके घर की कोई दासी हो। लेकिन वह दासी नहीं वह तो स्वामिनी है। तभी तो महाभारतकार व्यास जी को कहना पड़ा था—

अर्थ पुरुषो दास: दासस्त्वर्थो न
कस्यचित।

सब लक्ष्मी के दास हैं, लक्ष्मी किसी की दासी नहीं है। जो लोग दुनिया में अरबों-खरबों धन सम्पत्ति जोड़कर लक्ष्मीपति होने का दम भरते हैं, वे भी लक्ष्मी के अनुचर ही हैं। उन्हे लक्ष्मीपति नहीं लक्ष्मीदास कहना उचित होगा।

लक्ष्मी के स्वामी तो वही लोग हो सकते हैं जो उसके रहने की परवाह न करते हों, जो लाभ और हानि में एक जैसे समरस बने रहते हों, जैसा कि भर्तृहरि ने लिखा है :—

"निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु च यथेष्टम्।"

ऐसे नर ही तो दुनिया में कोई स्मरणीय लोकहितकारी साहसिक कार्य कर पाते हैं। ऐसे घर फूंक कर तमाशा देखने वाले मस्तमौला फक्कड़ ही तो संसार में अपना सिर ऊचा करके जी सकते हैं। वास्तव में ऐसे त्यागी वीतरागी लोग ही तो सच्चे जनसेवक हैं। वे ही तो लक्ष्मी के पति हैं। क्योंकि वे लक्ष्मी को नहीं, लक्ष्मी ही उन्हें ढूढती फिरती हैं। वृक्षों में मधुर फल लगते हैं, लेकिन वे स्वय तो इन्हे कभी नहीं खाते। इतनी आंधी वर्षा और सर्दी गर्मी सहनकर प्राप्त किए हुए प्रकृति प्रदत्त अनुपम उपहार वे सहज भाव से दूसरों के लिए दान कर देते हैं नदियों में इतना सुशीतल जल प्रवाहित होता है लेकिन क्या कभी वे स्वयं भी उसका पान करती हैं ? नही, उनका यह सुधा सम सलिल औरो की तृषा की तुष्टि के लिए होता है। तब इनसे बढ कर और कौन महात्मा व परोपकारी होगा। तभी तो कबीर जैसे संत कवि ने इनकी तुलना महामानवों से की है।

तरुवर फल नही खात है,
नदी न सचहि नीर।
परमारथ के कारणे,
साधुन धरयो शरीर।।

'परोपकाराय सतां विभूतयव:' की सस्कृत सूक्ति भी रह रहकर हमारा ध्यान इसी तथ्य की ओर आकर्षित कर रही है। विश्व में कुछ भी स्थिर या शाश्वत नही है। यदि इनसे किसी का भला कर सकते हो तो कर लो। सेवा ही परम धर्म है वही महत कर्म है। लेकिन ऐसा वही कर पाएगा जिसने इस रहस्य को जान लिया हो कि मेरा कुछ नहीं है। ममत्व से पूर्ण मानव परहित नही सकते। वे अपने मन का इदम् में विकास नही कर पाते। इसी लिए आत्म-बद्ध होकर रह जाते हैं। लेकिन जिन्होने अपने अह को इदम् तक व्यापक बना लिया है। उनके लिए तो विश्व की समस्त विभूति ही उनकी अपनी है। उनके लिए अपने पराये का भेद ही कहां रह जाता है। लेकिन यह सब होता है आत्मा के उन्मुक्त विकास से। आत्मा का अनात्म तक विस्तार हो, तभी सब अपना लगता है और सभी पराया, अपना मानता हूं।

मेरा क्या है ? की यही गुत्थी एक बार विदेहराज जनक के मन में भी उठी। उन्होंने बड़े बडे विद्वानों को बुलाकर इसका समाधान चाहा। लेकिन सभी महाराज की संतुष्टि करने में असफल रहे। कोई विद्वान कहता कि महाराज आप तो राजाधिराज हैं : यह सारा संसार ही आपका है। आप तो इन्द्रतुल्य हैं कोई कहता कि आपके पास ज्ञान है, वैराग्य है धन है, वैभव है श्री है, लक्ष्मी है, और आप को क्या चाहना ? लेकिन जनक जैसे तत्वदर्शी को इस प्रकार के अधूरे उत्तर कब आश्वस्त कर सकते थे। कई दिनों तक विद्वत् परिषद् का सत्र चलता रहा।

अन्त में एक दिन राज्य सभा में अष्टावक्र नाम के एक ज्ञानी पुरुष का पदार्पण हुआ, उसने राजा से अपना प्रश्न दोहराने को कहा। राजा ने अपना प्रश्न दोहराया कि मैं यह जानना चाहता हूं कि इस दुनिया मे मेरा क्या है ? अष्टावक्र ने यज्ञ कुण्ड की राख हाथ में ली और पहले मुट्ठी को बांधे हुए और फिर बाद में उसे खोलकर बिखेरते हुए कहा कि तुम्हारा यह है। सभी आश्चर्यचकित थे। लोग सोच रहे थे कि भला ये भी कोई उत्तर हुआ। यह तो एक प्रकार से महाराज का अपमान है। कही यह साधु पागल तो नही है। स्वय जनक असमजस मे पड गए कि वे उत्तर को सही मानें या गलत किंवा पूर्ण या अपूर्ण। अतएव उन्होंने ऋषिराज से विस्तार से अपनी बात समझाने की विनय की अष्टावक्र ने तब उन्हें दर्शन की रहस्यमयी भाषा में जीवन का सार समझाया। उनका कहना था कि जनकराज ! तुम यहा अजर अमर होकर नही आए हो। कुछ वर्षों के पश्चात् तुम्हारा देहान्त होगा। देहविसर्जन के समय तुम्हारा यह जो पच भौतिक शरीर है यह पच महाभूतो में विलीन हो जाएगा। पृथ्वी पृथ्वी में, जल-जल में, अग्नि-अग्नि में, वायु-वायु में और आकाश-आकाश मे समा जाएगा। शब्द-स्पर्श, रूप, रस, गन्ध तन्मात्राओं में विलीन हो जाएंगे। एकादश इन्द्रियां सूक्ष्म शरीर के साथ चली जायेंगी। तब यह स्थूल शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया जाएगा। और शरीर भस्मान्त होने पर यह एक मुट्ठी राख शेष बचेगी। यह भी कभी आंधी या वर्षा से बहकर या उड़कर भूमि का अग बन जाएगी। तब तुम्हारे भौतिक अस्तित्व का कोई भी अवशेष नहीं बचेगा। अतएव तुम्हारा तो यहा पर कुछ भी नही है। इस विस्तृत व्याख्या के पश्चात् जनक को अपने प्रश्न का सही उत्तर मिल गया था।

मैं भी कभी-कभी सोचा करता हूं कि मेरा अपना यहां क्या है ? जीवन की कोई सुनिश्चित अवधि नहीं है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

धर्म का सरल स्पष्ट रूप

प्रो० श्री भद्रसेन जी, साधु आश्रम (होशियारपुर)

आज विद्या और विज्ञान के विकास से जीवन के हर क्षेत्र में आए दिन सुविधा, सरलता, स्पष्टता आ रही है। आज की सड़कें, वाहन, मकान, चिकित्सा कृषि क्षेत्र आदि इस के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इनकी इसी लिए सबसे बड़ी विशेषता यही है कि सभी देशो, वर्गों के लोग इन को स्वीकार करते हैं। जीवन की भौतिक जरूरतो को पूरा करने वाले इन सर्वमान्य रूपों की तरह धर्म का भी एक सरल स्पष्ट और सर्वमान्य रूप है। जैसे कि—

यह एक सचाई है कि नदी को सरलता से पार करने के लिए जैसे पुल या नौका सहायक होती है। ऐसे ही जीवन नदी को तरने के लिए धर्म नौका का काम करता है। धर्म का अर्थ है पालना और इस का फल है—सुख। अत: जिन बातों को अपनाने से सुख मिलता है, वही धर्म हैं। जैसे कि आपस मे सही बोलने, परस्पर के सम्बन्धो को सचाई से निभाने पर यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है। इस दृष्टि से जब हम धर्म के सरल स्पष्ट रूप पर विचार करते हैं, तो धर्म का पहला पहलू ईश्वर भक्ति ही सिद्ध होता है।

ईश्वर—सभी एक स्वर से इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस दुनिया को बनाने और चलाने वाला ईश्वर ही है। हम सब के भले के लिए ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, जल, धरती और उसके अन्न, फूल, फल, धातु, खनिज आदि पदार्थ दिए हैं। केवल ये भौतिक पदार्थ ही नहीं, अपितु जीवों के जन्म-मरण की व्यवस्था भी वही चलाता है, अत: ईश्वर का सरल स्पष्ट सा रूप वही है, जो दुनिया की सारी व्यवस्था के अनुरूप है।

ईश्वर भक्ति—जिस ईश्वर ने हमारे भले के लिए एक से एक अद्भुत भौतिक पदार्थ दिए हैं। उस के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना हर समझदार का काम है। अत: भक्ति का सब से अच्छा ढग यही है कि जिस के द्वारा हम अपने दिल से जुड़े शब्दों से उसका धन्यवाद कर सकें। इस की दूसरी उपयोगिता यह भी है कि ईश्वर जगत कर्ता होने से हमारा पिता भी है। भक्ति द्वारा हम अपना ईश्वर से निकट का सम्बन्ध भी अनुभव करें। अत: भक्त और भगवान मे निकट सम्बन्ध अनुभव कराना ही भक्ति की खूबी है।

धर्म का स्वरूप—सभी धर्म वाले यह स्वीकार करते हैं कि धर्म का ही दूसरा नाम सच्चाई है। अत: व्यक्ति को सच्चा-सुच्चा बनाना ही धर्म का उद्देश्य है। धर्म के पूजा-पाठ आदि कर्म काण्ड सडक के बोर्डों की तरह सही रास्ते की ओर संकेत करने के लिए ही हैं। 'परहित सरस धर्म नहीं भाई' ही धर्म की पहचान है। अत: जिन बातों से अधिक से अधिक का भला होता है, वे सच्चाई, ईमानदारी, भलाई, स्नेह, सहयोग आदि बातें ही असली धर्म हैं।

धर्म के इस विवेचन से स्वत: यह स्पष्ट हो जाता है कि दूसरों की भलाई के लिए जिस किसी क्षेत्र में जिस भी व्यक्ति ने अपने समय पर जो महान कार्य किया। वह अपने भले कार्यों के कारण हमारे लिए स्मरणीय और पूजनीय है।

अत:—'नमन उन्हे मेरा शतवार'

क्योंकि—

'गढते हैं इतिहास देश का, तथा—जिन का दिया अमृत जग पीता' दिनकर। जैम्सवाट और जार्ज स्टीफेंसन का आविष्कृत इञ्जन जहां अपने क्षेत्र मे स्मरणीय है, वहा वह अब केवल पुरातत्त्व की ही वस्तु है, आज सर्वत्र उसके आधुनिक परिष्कृत रूप ही अनुकरणीय कोटि में आते हैं। अत: औट आफ डेट की अपेक्षा आधुनिक ही अनुकरणीय है।

मानव जाति की एकता—सभी धर्मों की दृष्टि से ईश्वर ही जब हम सब का पिता है, तब हम सब एक पिता की सन्तान होने से स्वत: एक से सिद्ध हो जाते है। और हम सब मानवों के शरीर 'एक ही माटी के भाडे' तथा 'कुदरत के बन्दे' हैं। सभी के शरीर, उन की इन्द्रियां और उनका अपना अपना कार्य एक ढग का ही है। तभी तो सभी के खून का रग लाल और हड्डियां सफेद है। सभी के दिलों में दूसरों से सचाई, ईमानदारी, भलाई, सहयोग की एक सी ही चाहना झलकती है। सभी सुख-शान्ति पाने के लिए सोचते और सब कुछ करते हैं। उसमें रंग-रूप, जात-पात, क्षेत्र-भाषा का भेद कोई अन्तर नहीं डालता। अत: मानव जाति में प्राप्त होने वाली ये एक सी स्थितियां मानव जाति की एकता को ही परिपुष्ट करती हैं। अत: बिना भेदभाव के सभी प्राणियों की भलाई के व्यवहारों का नाम ही धर्म है और सचाई भलाई ही धर्म का सरल स्पष्ट रूप है।

स्त्री जाति और महर्षि दयानन्द

ले०—श्री अशोक कुमार आर्य, 15 हनुमान रोड दिल्ली

स्त्री जाति भी ऋषि दयानन्द की उतनी ही ऋणी है जितने कि मानव जाति के अन्य वर्ग। यदि स्वामी दयानन्द के उन विचारों पर प्रकाश डाला जाए जो कि मानस विशेषत हिन्दू मानस को अदृश्य रूप से प्रभावित करते हैं तो यह ऋण और भी स्पष्ट हो जाएगा।

19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द आए और उन्होंने मानवीय विधान में पुरुष एवम् नारी रूप से निम्न वर्गीय एव कुलीन, दास एवं सामन्त ब्राह्मण एव अछूत सब का एक दूसरे के बिना काम चला सकते हैं। परन्तु पुरुष और स्त्री मानस रूपी ईकाई के दो भाग हैं और एक का दूसरे के बिना सोचना भी असम्भव है। फिर भी स्त्री जाति के साथ सदैव कुछ दुर्भाग्य-पूर्ण व्यवहार रहा है।

स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया कि हिन्दू स्त्री की दशा भी दूसरी स्त्रियों से किसी तरह भिन्न नहीं थी। गृहस्थी मे उसका स्थान निम्न स्तरीय था, उसे सदा परदे मे रखा जाता था। अर्थात् बाहर नहीं निकलने देते थे। बाहर निकलते समय घुघट निकालना आवश्यक था। उनके लिए ज्ञान प्राप्ति आवश्यक नहीं समझी जाती थी बल्कि यह सकट पूर्ण मानी जाती थी।

स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुते: अर्थात् स्त्री और शूद्र को न पढ़ाएं, यह श्रुति है, उनको पढ़ाया भी नहीं जाता था, पौराणिक पंडितों की यह प्रिय सूक्ति थी। वेदों के बारे में कोई भी ज्ञान उन्हें देने का प्रयत्न करने का साहस भी न कर सकता था। पवित्र, धार्मिक ग्रन्थों से परिचय भी नहीं कराया जाता था। हजारों पाठशालाएं थी परन्तु लड़कियों के लिए एक भी नहीं थी। हिन्दुओं की अपनी माताओं, बहनों, पत्नियों और पुत्रियों के प्रति ऐसी धारणाएं थी। अपने साधन और अभिरुचि के अनुसार एक पुरुष जितनी चाहे पत्नियां रख सकता था। जिनकी स्थिति दासियों से बढ़कर नहीं थी।

देश के कई भागों में दशा इतनी बुरी थी कि पुत्री का होना ही सबसे बड़ा श्राप समझा जाता था। इसलिए लड़की के उत्पन्न होते ही मार दिया जाता था और बाल विवाह की प्रथा होने से कभी कभी तो एक वर्ष की बालिका भी विधवा हो जाती थी और ऐसी विधवाओं की कमी नहीं थी, अभी भी कहीं कहीं यह बिमारी विद्यमान है। स्त्रीयों में भी कई अयोग्यताएं थी जिनमें बुरी बात यह थी कि वह अपनी स्थिति को अनुभव करने की क्षमता भी नहीं रखती थी।

स्त्री जाति की दशा से स्वामी दयानन्द बहुत दुखी थे परन्तु उनको देखकर बहुत दु:खी मिश्रित हर्ष हुआ कि वेदों में नारी की इस हीनता की स्वीकृति नहीं है वैदिक साहित्य पढ़ कर उन्हें पता चला कि प्राचीन वैदिक धर्म स्त्री को पुरुष के सम्मानित जीवन-साथी के रूप में देखता है और वैदिक काल में स्त्री को समाज में बहुत उच्च स्थान प्राप्त था। भवभूति की प्रसिद्ध पंक्ति—गुण पूज्य स्थान न तु लिंग न च वय:।

अर्थात् गुण ही पूजे जाते हैं। न तो लिंग और न आयु, यह सूक्ति पुरुष या स्त्री दोनों मे समान रूप से लागू होती थी। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" में उन्होंने इस विषय में चर्चा की है। वेदों तथा अन्य पवित्र ग्रन्थों में पुष्टि के लिए उदाहरण है :

1. स्त्री को भी पुरुष के समान पढ़ना चाहिए।

2. स्त्री और पुरुष के अधिकार समान हों।

3. प्रत्येक कन्या को अपने भाई के समान यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार हो और उस का यज्ञोपवीत संस्कार हो।

4. उसका विवाह बाल अवस्था में न हो और न ही उसकी इच्छा के विपरीत हो।

5. विवाह के पश्चात् ससुराल में उसे पुरुषों के समान सब सुविधाएं मिलनी चाहिएं।

स्वामी दयानन्द ने स्त्री जाति के उद्धार के लिए अधिक सुदृढ़ और विशाल आधार प्रदान किया है। स्वामी दयानन्द की स्थिति में यह स्पष्ट समर्थन है। जब वैदिक ज्योति और अधिक चमकती है और पुरुष वैदिक सिद्धान्तों के मूल्य को समझता है, तब निश्चय ही स्त्री गर्व से अपना मस्तक ऊंचा उठाकर ऋग्वेद के शब्दों में कह सकती है—अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।

मैं पताका हूं, मैं मस्तक हूं, मैं यथार्थ निर्णायिका हू।

सम्पादकीय—

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन

23 दिसम्बर से 26 दिसम्बर तक दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन करने की तैयारी हो रही है। यह हो सकेगा या नहीं इसके विषय में अभी कुछ कहना कठिन है। दिल्ली में और उसके साथ उत्तर प्रदेश में जो परिस्थितियां पैदा हो रही हैं उनको देखते हुए कई बार यह संदेह पैदा होता है कि क्या यह सम्मेलन हो सकेगा? यदि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होना है तो एक बहुत बड़े स्तर पर इसकी तैयारी आरम्भ करनी पड़ेगी। दिल्ली में हर चौथे दिन कोई न कोई ऐसी घटना हो जाती है जिसके कारण कई बड़े बड़े कार्य व योजनाएं अस्त व्यत हो जाती हैं। जब तक राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के विवाद का कोई समाधान नहीं निकलता तब तक स्थिति गम्भीर बनी ही रहेगी ऐसी परिस्थितियों में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का होना सम्भव नहीं। इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। परन्तु यह कार्य सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का है। यदि वह समझते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में भी यह सम्मेलन हो सकता है तो आर्य जनता को उन्हें अपना पूरा सहयोग देना चाहिए और यदि किसी कारण यह समझा जाये कि वर्तमान वातावरण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन न हो सकेगा तो इसे कुछ समय के लिए स्थगित कर देना चाहिए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने घोषणा की है कि इस सम्मेलन मे 10 लाख व्यक्ति शामिल होंगे। उन्हें इस पर भी विचार कर लेना चाहिए कि यदि सम्मेलन से कुछ दिन पहले कुछ शरारती तत्व दिल्ली में कोई गड़बड़ पैदा कर दें और वहां फिर कर्फ्यू लग जाये जैसा कि आजकल कई स्थानों में हुआ है तो उस रूप में क्या यह सम्मेलन होगा और इतने लोगों का दिल्ली में रहने का प्रबन्ध हो सकेगा? अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का ही है। इस सम्मेलन को सफल कैसे बनाया जा सकता है और इन परिस्थितियों में क्या यह सम्मेलन करना चाहिए इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

इसके साथ ही एक और आवश्यक विषय पर भी उन्हें सोच लेना चाहिए वह यह कि देश के सामने जो समस्याएं इस समय आई हुई हैं उनके विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए। इस विषय पर पहले विचार करके प्रस्ताव तैयार कर लेने चाहिए। प्रायः देखा गया है कि ऐसे सम्मेलनों में एक ऐसा घोषणा पत्र स्वीकार किया जाता है जिसके द्वारा भिन्न भिन्न समस्याओं के विषय में उस सस्था का दृष्टिकोण जनता के सामने रखा जाता है। और वह ही घोषणा पत्र आगे के लिए उस सस्था का मार्ग प्रदर्शक बन जाता है। हम प्रायः कहा करते हैं कि आर्य समाज एक क्रान्तिकारी सस्था है परन्तु उस क्रान्ति का रूप क्या है यह हम कुछ बताते नहीं। हम प्रायः पुरानी बातों को ले कर अपना ढोल पीटते रहते हैं। हिन्दी का प्रचार, गौ रक्षा, नारी शिक्षा विधवा विवाह यह सब समस्याएं अब एक नया रूप धारण कर चुकी हैं। और इनमें से कई ऐसी भी हैं जिनका आज वह महत्त्व नहीं रहा जो पहले होता था। आज हमारे सामने नारी शिक्षा के विषय में यह प्रश्न नहीं कि देश की नारी को शिक्षित किया जाए, या न अपितु यह कि उसे शिक्षा क्या दी जाए? हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र भाषा है परन्तु वह राष्ट्र भाषा बन नहीं रही। तात्पर्य यह है कि जो लक्ष्य सामने रख कर आर्य समाज आज से 100 वर्ष पहले चला था आज उसमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है। परिस्थितियां बदल चुकी हैं देश का वातावरण बदल चुका है, नई नई समस्याएं सामने खड़ी हो गई हैं।

आज मण्डल कमीशन ने सारा वातावरण ही बदल दिया है। मैं समझता हूं कि इसमें आर्य समाज बहुत अधिक पिछड़ गया है। हमें चाहिए था कि वर्ण व्यवस्था की योजना को ले कर इतना अधिक प्रचार करते कि मण्डल कमीशन ने जो दूषित वातावरण पैदा कर दिया है उसे हम किसी प्रकार रोक सकते। परन्तु हमारा ध्यान इस तरफ नही गया। इसका यह परिणाम है कि हिन्दुओं में विघटकारी तत्व अधिक प्रभावशाली बनते जा रहे हैं। पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने और उसके पश्चात महात्मा गांधी जी ने जात पात को समाप्त करने का जो प्रयास किया था आज उस पर पानी फिर रहा है। आर्य समाज को इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए था परन्तु हम नहीं कर सके। आज स्थिति यह है कि देश में जो समाजिक परिवर्तन आ रहा है उसमें आर्य समाज कहीं दिखाई नही दे रहा। इसलिए मैंने ऊपर लिखा है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आर्य समाज की ओर से एक घोषणा पत्र प्रकाशित होना चाहिए। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि आर्य समाज के कुछ प्रसिद्ध बुद्धिजीवी और विद्वान महानुभावों की एक बैठक बुलाई जाए और यह विद्वान बैठ कर इस सारी स्थिति पर विचार करें। वह देश की वर्तमान परिस्थितियों को सामने रखते हुए आर्य समाज का एक घोषणा पत्र तैयार करें। जिसको इस सम्मेलन में स्वीकार किया जाए और उसके आधार पर आर्य समाज एक ऐसा अभियान प्रारम्भ करे जो देश की जनता के सामने एक नया दृष्टिकोण रख सके।

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है वह केवल मेरे सुझाव हैं। इन्हें क्रियान्वित करना या न करना यह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का कार्य है। पहले तो उन्हें यही सोच लेना चाहिए कि दिल्ली की वर्तमान परिस्थितियों में क्या इतना बड़ा सम्मेलन सम्पन्न हो सकेगा? यदि वह समझते हैं कि यह सम्मेलन सफल हो सकता है तो उन्हें आर्य समाज का एक घोषणा पत्र तैयार करने के लिये उन विद्वानों और बुद्धिजीवियों की एक समिति बनानी चाहिए जो उस घोषणा पत्र को तैयार करें और जब यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो तो वह उस घोषणा पत्र की स्वीकृति दे दें और उसके आधार पर आर्य समाज का भावी कार्यक्रम बनाया जाये। यह भी आवश्यक है कि यह घोषणा पत्र केवल हिन्दी मे ही प्रकाशित न किया जाए। देश की सभी प्रमुख भाषाओं मे इसे छपवाया जाए। जैसे अंग्रेजी, उर्दू, बंगाली, तमिल, मराठी, गुजराती और दूसरी भाषाओं में भी प्रकाशित किया जाए, उसी स्थिति मे इसका प्रचार हो सकेगा और देश की जनता को पता चल सकेगा कि आर्य समाज क्या चाहता है।

—वीरेन्द्र

पं० आशुराम जी भी चल बसे

पंडित आशु राम जी आर्य पंजाब के एक सुयोग्य विद्वानों में से एक थे। वह उर्दू भाषा के पारगत थे और गत कई वर्ष से वह वेदों का उर्दू अनुवाद करने में लगे हुए थे। वह चारों वेदों का उर्दू अनुवाद करना चाहते थे, परन्तु 10 नवम्बर 1990 को पी०जी०आई० चण्डीगढ मे हृदयगति रुक जाने से उनका निधन हो गया। वह केवल तीन खण्डों मे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के कुछ अंशों का ही अनुवाद कर पाए। उर्दू जानने वाले महानुभावों ने इस बात से बडी प्रसन्नता प्रकट की थी कि उन्हें उर्दू भाषा में अब वेद पढ़ने का सुअवसर मिल जाएगा। परन्तु उनकी यह आशा अब निराशा में बदल जाएगी, जब उन्हें यह पता चलेगा कि वेदों के उर्दू अनुवाद का बोडा उठाने वाले पंडित आशु राम जी आर्य चल बसे।

पंडित आशु राम जी मुलतान के रहने वाले थे। उनका जन्म ग्राम खानगढ में सन् 1913 मे हुआ था। उनकी आयु इस समय 77 वर्ष की थी। परन्तु इस आयु में भी वह पूर्ण सक्रिय थे। देश विभाजन के पश्चात वह अम्बाला और उसके बाद चण्डीगढ़ में रहते रहे। चण्डीगढ़ की आस पास की आर्य समाजों तथा प्रतिष्ठित आर्य महानुभावों और चण्डीगढ़ के आर्य परिवारों मे उनकी विशेष प्रतिष्ठा थी। सभी आर्य बन्धु उन से प्रभावित और परिचित थे। वह यज्ञ व संस्कार बड़ी विधि से व श्रद्धा से कराया करते थे जिस से जनता बहुत प्रभावित होती थी। उनका व्यवहार बहुत मधुर था और वह बहुत मिलनसार थे। उनमें वह सब गुण थे जो एक सुयोग्य पण्डित मे होने चाहिए।

विश्व वेद परिषद चण्डीगढ़ के वह महामन्त्री थे और इसके लिए निरन्तर कार्य करते रहे। वह आर्य समाज और विश्व वेद परिषद के लिए सर्वथा समर्पित थे। ऐसे विद्वान का चला जाना चण्डीगढ के आर्य समाजी क्षेत्र के लिए एक महान क्षति है, जिस की पूर्ति होनी असम्भव है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और हम सब को उनके पद चिन्हों पर चलने की शक्ति दे।

—सह सम्पादक

आलसीपन जन्म से नहीं होता

ले०—श्री मा० पवन सिंह, प्रवक्ता, ककरौली, (मुजफ्फरनगर)

क्रियाशीलता बालक की जन्मजात प्रवृत्ति है किन्तु जब बालक कुछ करना नहीं चाहता, हाथ पैर हिलाने से भी डरने लगता है। काहिल बन जाता है। धीरे धीरे रुक रुक कर काम करने लगता है मानो शरीर में जान न हो। काम को टालते जाना स्वभाव बन गया हो। बदनामी की कोई परवाह नहीं। जीवन में न उत्साह, न कोई रुचि। ऐसा बालक आलसीपन का शिकार हो जाता है।

आलसीपन जन्मजात नहीं होता। पैदा होने के बाद अनियमित जीवन जीना। पीना, सोना, उठना, जागना, खेल में अनियमितता, कोई नियत समय नहीं, माता पिता का आदर्शहीन जीवन की क्रियाओं में आलसीपन, सगी साथियों का आलसी होना, इसके मुख्य कारण हैं। बालक को आलसीपन सीखना नहीं पड़ता, अपने आप सीख जाता है। यदि शिक्षक भी आलसी हुआ फिर तो बंटाधार हो गया।

एक काम पूरा न हो पाए और बीच में ही अनेक काम करने के आदेश मिल जाए, मन पर कार्य भार का बोझ लदा रहे तो निश्चित ही बालक उत्साहहीन होकर आलसी बन जाता है। यह दुविधा में पड जाता है क्या करे, क्या न करे? तो कैसे करे? तिस पर भी यदि अग्रिम कार्य का बोझ सामने हो तो मन बोझिल होकर काम से दूर भागना चाहता है। एक बार असफलता मिली फिर तो सफलता दूर भागती जाती है। आलस चारों ओर से घेरता जाता है।

यदि बालक की रुचियों के अनुकूल कार्य नहीं सौंपा गया तो बालक सौंपे कार्य से घृणा करने लगता है। यदि परिस्थितियां अधिक समय तक न बदली तो मन कामचोर बन जाता है। काम करने की परिस्थितियां, तापक्रम, हवा, वातावरण, साधन विपरीत हुए फिर तो आलस दिन दूना, रात चौगुना बढ़ता जाता है। तब काम न करने का दोष विपरीत परिस्थितियों के सिर मढ़ा जाता है। मन को बहाना मिल जाता है। काम को टालने की प्रवृत्ति बलवती बनती जाती है और टालमटोल करना आदत बन जाती है।

यदि बालक के जीवन का कोई लक्ष्य न हो तो फिर मन हमेशा सोचता है कि कार्य क्यों करें? ऐसी परिस्थितियों में काम करने की इच्छा होते ही मन पर कठिनाइयों का भूत नाचने लगता है। बालक काम से पीछा छुड़ाने का बहाना करने लगता है। परिणाम यह होता है कि बालक काहिल और आलसी बन जाता है।

बहुत से बालक हवाई किले बनाया करते हैं। मन ही मन अवास्तविक कल्पिनाएं करते है। जीवन मे पूर्ति न होने पर दिवास्वप्न के शिकार बन जाते हैं। ऐसे बालकों का आलसी होना आश्चर्य की बात नहीं।

इन प्राकृतिक, सामाजिक, मानसिक कारणों के अलावा शारीरिक दोष भी आलसीपन को जन्म देते हैं। विशिष्ट ग्रन्थियों का ठीक विकास न होना। दांतो के रोग होना। जिसके फलस्वरूप पाचन क्रिया का ठीक न होगा। बालकों को शक्तिहीन, निस्तेज, एवं सुस्त बना देता है। मांसपेशियां एव मस्तिष्क काम करना बन्द कर देते हैं। शरीर की बाढ रुक जाती है, कद नाटा रह जाता है। बालक सुस्त एव आलसी बन जाता है।

आलसीपन के कारण समझने से उसका उपचार करना आसान हो जाता है। कारण के अनुकूल उपाय अपनाने से बालक को आलसी होने से बचाया जा सकता है। जैसे बच्चे में आलसीपन के लक्षण दिखें तो डाक्टर की सलाह ली जाए। यदि शारीरिक रोग हो तो उचित उपचार द्वारा बच्चे को स्वस्थ बनाया जाए। मानसिक रोगों के लिए मानसिक चिकित्सक की सलाह ली जाए।

बच्चे अनुकरणशील होते हैं। अतः माता पिता तथा शिक्षक आदर्श उपस्थित करें। कहने की अपेक्षा स्वयं समय से उठने, जागने, व्यायाम तथा काम करने को नियमित दिनचर्या का उदाहरण पेश करें। विभिन्न अभिरुचियां उत्पन्न करके आलस भगाया जा सकता है। बालकों की रुचि के अनुकूल क्रियाकलाप पठनपाठन की सामग्री जुटाई जाए। डार्विन के पिता उसे डाक्टर या पादरी बनाना चाहते थे पर उसने कोई रुचि न दिखाई। प्राकृतिक घटनाओं में रुचि थी। उसके अध्ययन का अवसर आते ही उसका आलसीपन भाग गया और वह प्रकृति अध्ययन का महान वैज्ञानिक बन गया। लार्ड क्लाइव बचपन में आवारा आलसी नेतृत्व का भूखा था। अवसर मिलने पर भारत में ब्रिटिश शासकों की पंक्ति में आ गया।

बालक में रचनात्मक क्रियाशीलता कूट कूट कर भरी होती है। उसकी अपरिमित शक्तियों के अनुकूल उसे अध्यवसायी, परिश्रमी बनाने का पाठ पढ़ाया जाए। उन्हें समझाया जाए बिना परिश्रम के सफलता नहीं मिलती सतत परिश्रम, अटूट लगन ने ही गरीब इब्राहीम लिंकन को राष्ट्रपति, नैपोलियन को विश्व इतिहास का अमर पृष्ठ बना दिया। निर्धन रैमजे मैकडानाल्ड इंग्लैंड का तथा लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमन्त्री अपने अध्यवसाय, परिश्रम व कर्त्तव्यशील होने के कारण बन पाए।

बालक को उसके भरोसे पर न छोड़ दें। सहायता करें। उसकी कठिनाइयों को हल करें। सोच विचार कर जीवन का लक्ष्य तय करने मे सहायक हों। यथासम्भव प्रोत्साहन दें। बाल्यकाल से ही समय के सदुपयोग की शिक्षा दी जानी चाहिए। आज का काम कल पर न टालना सिखाना चाहिए। बच्चे को मिलजुल कर काम करने की आदत डालनी चाहिए। घर के छोटे-मोटे कार्य झाड़ू लगाना, कपड़े साफ करना, स्वयं नहाना आदि प्रारम्भ से ही सिखाना चाहिए। 'बड़ा होकर सब सीख लेगा' पर विश्वास करने से बालक स्वावलम्बी न बन सकेगा। स्वावलम्बन से बढ़कर कोई चीज नहीं स्वावलम्बन की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोश।

बच्चा एक दिन या थोड़े समय में आलसी नहीं होता। उसकी आदत पड़ने में समय लगता है। इसलिए आरम्भ से उचित कार्य करने की आदतें डालने का आदर्श वातावरण उत्पन्न किया जाए। 'खाली मस्तिष्क शैतान का घर है, अतः रचनात्मक खेल-कूद कार्यों में रुचि उत्पन्न की जाए। 'आलस मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है' बालक को समझाया जाए। परिश्रम अध्यवसाय, अनुशासन सफलता की कुंजी है। सामर्थ्यानुसार कार्य लें। अनावश्यक अग्रिम कार्य भार न लादें। इन प्रयासों से बालक को आलसी बनने से बचाया जा सकता है तथा उसे कुछ बनने योग्य बनाया जा सकता है।

पान का चूना कैसे मांसाहारी ?

ले०—श्री "पथिक" मानव सेवा आश्रम छुटमलपुर (सहारनपुर)

कहीं चूना भी मांसाहारी हो सकता है? शायद आप मानने को तैयार न हों क्योंकि सभी जानते है कि पत्थर से चूना बनता है। धन कमाने की धुन तथा अनुसंधान करने की धुन अथवा धुन धुन ही है चाहे जैसी भी है समुन्द्र किनारे सिपियों का ढेर रहता है, कभी पानी की लहर छोड़ जाती है तो अब व्यापारी छोटों बड़ों से चन्द रुपये देकर ले जाते हैं विघटन कार्यों वास्ते।

प्रत्येक सिपी में एक कीड़ा (जीव) होता है। यह इसे बनाता है, जैसे कई पक्षी अपने ढंग का घोंसला बनाते हैं।

ईश्वर की प्रत्येक रचना का महत्त्व है, इन सिपीयों द्वारा प्रकृति समुन्द्र को स्वस्थ रखती हैं, सिपीयों के आकार की कोई सीमा नहीं, शंख छोटे बड़े हैं, यह सब विभिन्न प्रकार के जीवों से बनते हैं, यह सिपी कहीं भी मिल सकती है।

इन सिपीयों को विशेषकर छोटी सिपी का चूना बनाया जाता है। साफ करके भून कर, फिर इसमें अन्य कुछ कैमिकल मिलाकर साफ सुथरे रूप मे आकर्षण युक्त पैकटों में भरकर सभी बड़े नगरों के पान वालों को इस चूने के विशेष गुण बताकर रेडीमेट चूना है बस पैकट खोले, आप इतनी पानी की मात्रा रखें, एक मिन्ट में तैयार है चूना, यह पत्थर के चूने से स्वादिष्ट, लाभप्रद आदि का गुण गान कर एक के दस रुपये बना लेते हैं।

आत्म बन्धुओ! विवेक से विचारें इन सिपियों में कितने (जीवों) कीड़ों की हत्या की गई है, मात्र धन के वास्ते जैसे आजकल पनीर भी प्रायः बड़े नगरों में रेडीमेट मसाले से ही बनता है जबकि पहले निम्बू या टाटरी से बनता था, अब यह मसाला कैसे बनता है? आप चौक जाएंगे, बस जो नहीं देखा, सुना, पढ़ा वही ठीक।

धन कमाने की दौड़ ने धर्म, मानवता आदि को प्रायः तिलाञ्जलि दे दी है।

पीछे वनस्पति घी में करोड़ों रु० की गाय की चरबी (विदेशों से आई) मिला कर जनता को किस ने खिलाई थी?

जय हो धन देवता की।

वेदोपदेश

यज्ञ ही जीवन का सार है

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त
समिधः कृता।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्
पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि
धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

'इस यज्ञ की सात परिधियां या लपेटें हैं, इक्कीस इस की समिधायें हैं। इस यज्ञ को विस्तृत करते हुए, विद्वान लोग जानने योग्य परमात्मा को अपने हृदय में बांधते व स्थिर करते हैं।'

'विद्वान पुरुषों ने यज्ञ के द्वारा ही यज्ञ किया किया। यह आरम्भ से ही धर्म है। इन महिमा सम्पन्न यज्ञ करने वालों ने पूर्ण सुख को प्राप्त किया, जिसे पूर्वकाल में भी साध्य और देवों ने प्राप्त किया।'

इस मन्त्र के पहले भाग में सात परिधियों वा लपेटों और इक्कीस समिधाओं का वर्णन है। जहा विशेष सख्यायें आ जाती हैं, मन्त्र का आशय स्पष्ट नहीं होता। प्रत्येक पाठक को जो सूझता है, वही ग्रहण करता है। 'पुरुष सूक्त' के सारे मन्त्र यजुर्वेद के 31वें अध्याय के पहले 16 मन्त्र भी हैं। स्वामी दयानन्द जी ने इन मन्त्रों का अर्थ 'वेद भाष्य भूमिका' और 'यजुर्वेद भाष्य' में किया है। 'भूमिका' मे सात परिधियो पर लिखते हुए कहा है कि प्रत्येक लोक के ऊपर सात आवरण व परदे हैं—समुद्र, त्रसरेणु, मेघमण्डल का वायु, वृष्टिजल, इस जल के ऊपर का वायु सूक्ष्म वायु, धनजय और अति सूक्ष्म वायु सत्रात्मा। 'यजुर्वेद भाष्य' में जिसे 'भूमिका' से पीछे लिखा, गायत्री आदि सात छन्दों को सात परिधियां बताया है, और इस यज्ञ को लोकान्तरों के अर्थ में नहीं, बल्कि मानव यज्ञ के अर्थों में लिया है। इक्कीस समिधाओं की बाबत भी दोनों स्थानों में कुछ भेद है। पांच सूक्ष्मभूत, पांच स्थूलभूत, पांच ज्ञानेन्द्रियां दोनों में आते हैं। शेष छः समिधायें 'भूमिका' के अनुसार ये हैं—पांच कर्मेन्द्रियां और छटी प्रकृति+बुद्धि+जीव, जो तीनों अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ हैं। 'यजुर्वेद भाष्य' में छः पदार्थ यह हैं :—

प्रकृति, महत्तत्त्व, अहंकार, सत्व, रजस् और तमस्।

इस भेद का अर्थ यही है कि इन शब्दों को एक से अधिक अर्थों में समझा जा सकता है।

मन्त्र के दूसरे भाग में कहा गया है कि विद्वान लोग भी विश्व यज्ञ की महिमा को देख कर यज्ञ को अपने जीवन के लिए नियम बनाते हैं। यह कर्त्तव्य व धर्म है। धर्म का तत्त्व अपने आप को ईश्वर परायण करना है। परमात्मा को हृदय सिंहासन पर विराजमान करना, उसे वहां बांधना, स्थिर करना है।

मन्त्र के दूसरे भाग का अर्थ यों भी हो सकता है—'देवों ने जिस यज्ञ का विस्तार किया, उसमें पुरुष को पशु रूप में बांध दिया।' इस अर्थ मे भी कर्त्तव्य की महिमा वर्णन की गई है। विश्व में जो यज्ञ विश्व की शक्तियों की ओर से हो रहा है, उसमें मनुष्य का स्थान क्या है? उपनिषदों में कहा है कि मनुष्य देवताओं का पशु है। पशु तो बोझ उठाता है, और काम करना होता है। काम करना और बोझ उठाना तो हम सब के भाग्य में है, जैसा अन्य पशुओं के भाग्य मे है। विचार करने का प्रश्न तो यह है कि वह बोझ किस प्रयोजन से उठाते हैं, और किसके आदेश मे काम करते हैं? देवों के व असुरों के आदेश मे? आदर्श जीवन तो यही है कि हम देवों के पशु हों। देव कौन सा बोझ हमारे सिर और कन्धों पर रखते हैं? यह बोझ धर्म, यज्ञ व कर्त्तव्य का बोझ है। पशु पक्षियों के लिए तो कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का भेद है ही नहीं। 'आचार के जीवन मे कोई छुट्टी का दिन नहीं।' कोई ऐसा समय नहीं जिस मे हम, मनुष्य, यह कह सकें कि इस समय कर्त्तव्य व धर्म के विचार को हम एक ओर रख सकते हैं। हमे तो इस ससार रूपी यज्ञ शाला मे पशु बनाकर कर्त्तव्य की रस्सी से बांध दिया गया है। यही मनुष्य की विशेषता है, जो उसे अन्य पशुओं से इतना ऊंचा उठा देती है।

अगले और अन्तिम मन्त्र में इसी ख्याल को और जोर से कहा गया है। 'देवताओं ने यज्ञ के द्वारा ही यज्ञ किया।' त्याग या कुर्बानी तो हम में बहुतेरे करते हैं। जहां प्रत्येक स्वार्थ का ही ध्यान करें, वहा सामाजिक जीवन हो ही नहीं सकता त्याग, सच्चा त्याग, तभी होता है, जब यह त्याग के भाव से किया जाए। देवता का यज्ञ, यज्ञ के द्वारा, यज्ञ को करना होता है। 'यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्'। यह सनातन धर्म है, यह अच्छे जीवन का नियम है। यह जैसा अब सत्य है, वैसा ही पहले सत्य था। जैसे अब यज्ञ के भाव से यज्ञ करने वाले परम गति को प्राप्त करते हैं, वैसे ही इससे पूर्व होता रहा है। साधक और देव इस गति को प्राप्त करते हैं। इसकी प्राप्ति के लिए ज्ञान व प्रकाश और साधना व उपयोगी कर्म साधन हैं। इसी सत्य को प्रकट करने के लिए उपनिषद ने कहा है कि परमात्मा का दर्शन साख्य और योग से होता है और इस दर्शन के बाद मनुष्य सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर आदि शिक्षण संस्थाएं अल्पसंख्यक घोषित

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर की ओर से राजस्थान उच्च न्यायालय में सन् 1987 में एक याचिका दायर की गई थी, जिस में दयानन्द महा विद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं को संविधान की धारा-30 के अन्तर्गत अल्पसंख्यक संस्थाओं को प्राप्त सुविधाएं दिए जाने की माग की गई थी। किन्तु न्यायालय ने सन् 1989 मे यह कहकर कि आर्य समाज हिन्दू धर्म का ही एक सम्प्रदाय है, याचिका खारिज कर दी।

सभा ने सन् 1990 में इस निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील प्रस्तुत की जिनमे अन्य बातों के अतिरिक्त यह आपत्ति भी उठाई कि याचिका के साथ प्रेषित तथा न्यायालय की पत्रावली में सम्मिलित प्राचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले की बहुचर्चित अंग्रेजी पुस्तक (आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म) द्वारा तर्क और प्रमाणों के आधार पर यह नवीन मुद्दा उठाया गया था कि आर्य समाज व्यापक अर्थ में हिन्दू समाज का अग होते हुए भी ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित भिन्न मान्यताओं के कारण एक धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय है। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा उस मुद्दे को सर्वथा नजर अन्दाज किया गया जबकि मुसलमान होने पर भी 'शिया' पाकिस्तान में अल्पसंख्यक और ईसाई होने पर आयरलैण्ड में 'प्रोटोस्टेन्ट्स' धार्मिक अल्पसंख्यक स्वीकार किए गए हैं।

उच्चतम न्यायालय ने दिनांक 30 अक्तूबर, 1990 को शिक्षा सभा की अपील विचारार्थ स्वीकार करते हुए राज्य सरकार को यह अस्थाई आदेश भी दिया है कि इन शिक्षण संस्थाओं का अनुदान इस आधार पर नहीं रोका जा सकता कि वे धार्मिक अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाएं नहीं है।

—आचार्य गोविन्द सिंह
मन्त्री

दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिल्ली 8 नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आगामी 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक दिल्ली के राम लीला मैदान मे 14वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। दिल्ली की सभी आर्य समाजें महा सम्मेलन की सफलता के लिए कार्य कर रही हैं।

इस समागम मे देश विदेश के लगभग 10 लाख आर्यजन भाग लेंगे। सम्मेलन मे देश की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार किया जाएगा।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव आगामी 11 दिसबर को नेपाल की यात्रा पर जाएगे, जहा वे 12-13 दिसम्बर को नेपाल के महाराजा धिराज श्री वीरेन्द्र तथा प्रधान मन्त्री श्री भट्टाराई जी से मिलकर आर्य महासम्मेलन के अवसर पर उन्हें भारत आने का निमन्त्रण देंगे। इस अवसर पर आर्य नेता काठमाण्डू मे शहीद शुक्रराज शास्त्री की जयन्ती समारोह मे भी भाग लेंगे। इन दोनों नेताओ के स्वागत के लिए काठमाण्डू में आर्य हिन्दू जनता जोरदार तैयारियां कर रही हैं।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां में कम्बल बांटे गए

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेश अनुसार आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां (गुरदासपुर) की ओर से दिनाक 4-11-90 को 13 निःसहाय व जरूरत मन्द परिवारों मे गर्म कम्बल बांटे गए। फतेहगढ़ चूड़िया के प्रसिद्ध समाज सेवी डाक्टर मोहन लाल शर्मा जी द्वारा यह वस्त्र बांटे गए। आर्य बन्धुओं ने बड़े उत्साह से इस समारोह में भाग लिया और जनता ने इस कार्य की बड़ी सराहना की। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से हमे 30 कम्बल व 30 स्वेटर मिल गए हैं जो एक अन्य समारोह में जरूरत मन्दों मे बांटे जाएगे।

—नरेन्द्र कुन्द्रा प्रधान

एक खोजपूर्ण लेख

बाबर द्वारा दी गई भूमि व बाबरी मस्जिद

ले०—श्री बी०पी० शर्मा अधिवक्ता

मुगल शासक बावर ने मस्जिद के लिए जो चालीस एकड़ जमीन मुहैया कराई थी वह आज भी अयोध्या से 32 किलोमीटर दूर सहनवां गाव में मौजूद है। उस का (मैनेजर) 58 वर्षीय जावाद हुसन है और यह जमीन बाकायदा इलाके के पटवारी के कागजों में दर्ज है।

वर्ष 50 पूर्व अरब में दजला नदी के किनारे हजरत मोहम्मद के दो नजदीकी जाविर इब्ने अब्दुल्ला असारी तथा हुजैफ एयमानी की कब्रो और वहा बनी मस्जिदों को स्थानान्तरित कर दिया गया था। अरब मे ही मस्जिदें मनारतीन, मस्जिदें मुबादिला, मस्जिदें-अली तथा मस्जिदें सलमान का स्थान भी बदल दिया गया था।

दस वर्ष पूर्व हजरत मोहम्मद से वालिद हजरत अब्दुल्ला का शव कब्र से निकाल कर दूसरें स्थान पर दफनाया गया। जबकि मुस्लिम नेता कुराने पाक के हिसाब से इसे वर्जित मानते हैं।

भारत स्थित ईरानी दूतावास के प्रकाशित एक पत्रिका 'राहे-इस्लाम' में शिया मुसलमानो द्वारा सुन्नियों पर आरोप लगाते हुए 'इत्तेहाद की राह में रुकावटें" शीर्षक से छपे लेख मे बताया गया है कि रसूले अकबर हजरत मोहम्मद के मकान को विस्तार के बहाने गैरेज के रूप मे बदल दिया गया अलबलाल की मस्जिद को गिराकर एक पुलिस पोस्ट बना दी गई। मुमताज महल की कब्र आगरा किले से 33 किलोमीटर दूर थी, उसे वहा से हटा कर शाहजहां, किले में ले आया।

जब मुसलमानों द्वारा अनेक मस्जिदों को स्थानान्तरित किया गया है, तो एक तथाकथित मस्जिद को रामजन्म भूमि से हटाकर इस अनावश्यक विवाद को खत्म क्यों नही किया जा रहा।

"गुरु तीरथ संग्रह" नामक धर्म-ग्रन्थ के पेज नम्बर 130 के पैरा 5 में अयोध्या का विवरण देते हुए गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने कहा है कि यहां हम अपने कुल के पूर्वज राम जी के जन्म स्थान पर पहुचे।

इस समय बादल और मान राम-जन्म भूमि का अपमान करके अपने गुरु तथा पूर्वजों का और सिख पंथ का अपमान कर रहे हैं।

सैयद शहाबुद्दीन और इमाम बुखारी इत्यादि मुस्लिम नेता 'कुरान मजीद' के ऊपर हाथ रखकर कसम खायें कि वे इस विवाद का निपटारा 'कुरान मजीद' के आधार पर करने को तैयार हैं।

मौलाना सैयद फरमान अली द्वारा लिखित तथा मतबूआए निजामी प्रैस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'कुरान मजीद' व्याख्या में 'सूरा ए तौबा' की आयत नम्बर 107 में जो कि 'मस्जिदे करार का किस्सा" शीर्षक से है, उल्लेखित है कि मोहम्मद साहब जब जग-ए-तबूक में जा रहे थे तो रास्ते में अबू आबर नामक शख्स मिला। वह हजरत के पैरों पर झुक गया और बोला मेरी आंख खुल गई है। मैं आपका मुरीद हो गया हूं। मैंने एक मस्जिदे बनवाई है, आप नमाज पढ़कर इसे पाक करें। हजरत मोहम्मद ने उसे अपनी वापसी में ऐसा करने का आश्वासन दिया। वापसी पर हजरत साहब को आकाशवाणी सुनाई दी कि ये खूनी मस्जिद है, यह "अहले किताब" (परमात्मा की पूजा करने वाले) लोगो का खून करके बनाई गई हैं। अत: मोहम्मद साहब ने तीन फतवे दिए कि 'मस्जिद को ढा दिया जाये', कि मस्जिद में आग लगा दी जाये' कि 'इस मस्जिद के स्थान पर मजबला (शौचालय) बना दिया जाय। और उनके अनुयायियों ने उसका पालन किया।

सफा नम्बर 630 में 'आलमगीर नामा' में औरंगजेब ने साफ लिखा है कि 10 हजार लोगों का कत्ल करने के बाद इस स्थान पर अधिकार किया गया। अत: मोहम्मद साहब के आदेशानुसार इस बाबरी मस्जिद का क्या किया जाना चाहिए। यह शहाबुद्दीन और इमाम बुखारी खुद निर्णय करें।

मुसलमानों के एक धर्म ग्रन्थ तोफतुल अवाम' के सफा नम्बर 41 पर लिखा है कि नमाज के लिए वजू (हाथ धोना) जरूरी है किन्तु बाबरी मस्जिद में पानी का कोई कुंड टकी, नाली इत्यादि नहीं है। एक अन्य इस्लामी धर्मग्रन्थ 'बहरूल कईम' के अनुसार नमाज के लिए मस्जिद से अजान हेतु चार मीनारों का होना जरूरी है लेकिन वहां कोई मीनार नहीं। अत: 1936 से आज तक वहां नमाज अदा नहीं की गई।

हर मस्जिद मे 11 कर्मचारी होते हैं तथा उनके रहने के स्थान भी, लेकिन कथित बाबरी मस्जिद में कोई रिहाइशी कमरा नहीं। अयोध्या के रामकोट क्षेत्र में जहां यह स्थान है, इलाके में मुस्लिम समुदाय का मात्र एक मकान है। जहां सामूहिक जमाज नहीं होती, वहां मस्जिद नहीं होती।

जनाब अमजद अली- काकोरी ने स्पष्ट लिखा है कि जैसे मथुरा वाराणसी इत्यादि स्थानों पर मंदिरों को तोड़ कर मदरसे, मस्जिद इत्यादि बने उसी तरह लक्ष्मण और राम के पिता की राजधानी अवध में जन्म स्थान मंदिर पर एक जगह सैयद मूसा आशिकान के मार्गदर्शन में 'मस्जिद सर बुलन्द बाबरी' तैयार हुई जो हिन्दुओं में 'सीता की रसोई' के नाम से मशहूर थी।

मिर्जा रजब अली बेग मसूर द्वारा लिखित पुस्तक 'फसाना ए इबरत' में ठीक यही बात लिखी है कि मूसा आशिकान के निर्देश में मस्जिद बाबरी सीता की रसोई के स्थान पर तामीर हुई।

प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह या बाबरी मस्जिद की पैरवी करने वाला कोई भी नेता किसी भी सार्वजनिक मंच पर इस मामले में खुली बहस कर लें। मेरे पास 3 हजार 32 मन्दिरों को तोड़ कर मस्जिद बनाये जाने के सबूत हैं।

महावीर स्वामी तथा जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी ने भी अपने आप को सूर्यवंशी माना है और अयोध्या में उनके भी मंदिर मौजूद हैं। जैनों, सिखों, बौद्धों और इस देश के 85 प्रतिशत लोगों के लिए रामजन्म भूमि महत्त्वपूर्ण व पूज्य है इस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

(आर्य जगत से समाचार)

पं० आशुराम जी आर्य का निधन

आर्य जगत् को यह जान कर अत्यन्त दुख होगा कि आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् वेदों के उर्दू अनुवादक तथा विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ के महामन्त्री पं० आशुराम आर्य का 10 नवम्बर, 1990 को पी०जी०आई० चण्डीगढ़ मे हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे 77 वर्ष के थे। पं० आशु राम जी तीन दिन पूर्व ही अपनी इंग्लैंड में बसी पुत्रियों से मिलकर भारत लौटे थे। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया। 1913 मे मुलतान जिले के खानगढ़ में जन्मे पं० आशुराम आर्य देश विभाजन के पश्चात अम्बाला तथा बाद में चण्डीगढ़ के निवासी बन गए। उन्होंने कुछ काल तक डी० ए० वी० स्कूल में अध्यापन किया तथा इसके बाद पौरोहित्य कर्म को स्वीकार किया। वे एक सफल कर्मकाण्डी पुरोहित थे और चण्डीगढ़ तथा समीपवर्ती नगरों में उन्हें संस्कारों, यज्ञों तथा अन्य कर्म-काण्डों के लिए आमंत्रित किया जाता था। विगत कुछ वर्षों से उन्होंने चारों वेदों का उर्दू में अनुवाद करने का बीड़ा उठाया था। तीन खण्डों में वे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के कुछ अंशों के उर्दू अनुवाद प्रकाशित भी कर चुके थे जिन का उर्दू भाषी वर्ग में स्वागत हुआ था। प० आशुराम जी आर्य समाज के लिए सर्वथा समर्पित रहें। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। अन्त्येष्टि में पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर० पी० बाम्बा सहित सहस्रों आर्यपुरुष उपस्थित थे।

—भवानीलाल भारतीय

जालन्धर में लाला गंगाराम दिवस व वस्त्र वितरण समारोह

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 1-11-90 से 4-11-90 तक श्री लाला गंगा राम जी का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 4-11-90 रविवार को श्री गगा राम आर्य प्राईमरी स्कूल के बच्चों द्वारा भार्गव नगर में जलूस निकाला गया तथा 11 बजे से 4 बजे तक उत्सव की कार्यवाही चली, जिसमें वस्त्र वितरण समारोह किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने की और उन्होंने अपने हाथों से गरीब बेसहारा लोगों व विधवाओं को कम्बल तथा स्वेटर आदि वितरण किए। इस सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट, कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न, श्री पंडित हरिचन्द्र जी, श्री पंडित अनन्त राम जी, श्री यमुना दास जी, श्री भगत लाभ चन्द जी, श्री पंडित निरन्जन देव जी इतिहास केसरी श्री पं० रामनाथ जी यात्री तथा दूसरे कई महानुभावों ने लाला गंगा राम जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

विक्रमी संवत् की महत्वता

ले०—श्री भवंर लाल शर्मा—उप प्रधान-उप आ० प्र० सभा जोधपुर

प्राचीन समय में उज्जैन के महाराजा सम्राट विक्रमादित्य थे। उनके नाम से वर्तमान सवत् 2047 चल रहा है। उनके शासन के पहले भारत में युधिष्ठर संवत् चलता था। उनके शासन काल में विदेशी आततार्इयों ने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय महाराजा विक्रमादित्य ने अपनी वीरता और पराक्रम से लडकर विजय प्राप्त की, उसकी प्रसन्नता में महाराजा ने सर्वसम्मति से विक्रम सवत् का चलन शुरू की और महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने भी अपनी ओर से विक्रम संवत् को ही उचित समझ कर मान्यता दी। किन्तु आज हमारी धर्म निरपेक्ष कहलाने वाली सरकार भी अग्रेजी तिथिया व महिने वार आदि चलाने को प्रोत्साहित कर रही है। जिन्होंने देश पर बलिदान किया उनका नाम तक नही, और अंग्रेजों ने भारत मे आकर व्यापार करने के नाम से आक्रमण व छल-कपट कर भारत को गुलाम बनाया था और बाद मे उसने ही ईसाई सम्प्रदाय को यहां थोपा था। उन्ही के द्वारा ये थोपा हुआ सन् ईसा-मसीह की याद दिलाने वाला आज भी स्वतन्त्र होने के बाद भी साम्प्रदायिक सन् बराबर थोपा ही जा रहा है, और चल रहा है, यह एक गुलामी का ही सूचक है हमारी सरकार ने एक पण्डितों की सभा बुलाई थी, जिसमें निर्णय लिया था, कि शाके सवत् को ही राष्ट्रीय सम्वत् माना जाये। सरकार ने शाके संवत् को ही मान्यता दे दी जिसके फलस्वरूप आज दूरदर्शन व रेडियो पर सुबह शुरू होते ही शाके संवत् व तिथियां ही बताई जाती हैं किन्तु इससे फर्क नहीं पड़ता। जब तक सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, दूरसचार, रेलवे अनेक व्यवहारो संस्थानों में उसका प्रचलन नहीं होता, तब तक दिखावा मात्र ही है। तब सोचा कि आगे अब राष्ट्रीय सवत् के तिथि सूचक (कलेण्डर) छाप कर सभी कार्यालयों व संस्थानों में भेज देंगे, ताकि सरकारी काम में भी यही तिथि चलने लगेंगी और सभी पचांग भी इस शाके सवत् का ही आधार होगे। उस पर भी अभी तक कोई अमल नहीं किया था, पता नहीं सरकारी लोगों की कुम्भ-कर्णा नीन्द कब खुलेगी? ये सब योजना हमारी प्राचीन् संस्कृति को समूल नष्ट करने की रची जा रही है, किसी भी तरह से किसी भी तरकीब से व हथकन्डे से हमारी (आर्यों की) सस्कृति मिटानी है, कारण सरकारी मशीनरी में अभी काले अग्रेज विराजमान है जो इस व्यूह की रचना कर रहे हैं, जिसका एक नमूना यह भी है कि हम भी इनकी हां मे हां मिलाने मे अपना गौरव तक भूल गये जैसे हमारा तो कोई अस्तित्व भी न हो। हमारा बहुमत होते हुए भी कोई अस्वित्व नहीं क्योंकि हम तो एक टेपरिकार्ड बन गए जैसे बजावें वैसा ही सुने, वैसा ही करें। हमारे प्राचीम इतिहास को हमसे बिल्कुल अनभिज्ञ कर दिया है। ये भी एक गम्भीर चुनौति ही समझनी चाहिए, और विचार करना चाहिए।

भाइयो! अगर हमको अपनी इस धरोहर को सुरक्षित करना है, तो हमको अपने प्राचीन विक्रम सवत् तिथि, वार को ही अपनाना चाहिए, अगर सरकार समर्थन न भी देवें तो हिन्दी की तारीखें साथ-साथ चलने देवें, दुकानों संस्थानो, कार्यालयो, बहियों व पत्रों मे विक्रम सवत् को अपनाना चाहिए, याद रहे कि अक भी हिन्दी के हों। लेकिन प्राथमिकता विक्रम सवत् को ही देनी चाहिए। कई लोग जन्म दिन (वर्ष गाठ) पर्व सस्कार अग्रेजी तारीखों पर मनाते हैं, यह भी ठीक नहीं। हमारा ज्योतिष शास्त्र पूर्ण है, अधूरा नहीं। इसमें सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, रात दिन, घड़ी-पल तक का हिसाब है। जैसा हमारे ज्योतिष में है, अन्य में नहीं, कम्प्यूटर आदि में भी ज्योतिष का आधार है, राजस्थान के व्यापारी भी बहियों में विक्रम संवत् ही लिखते हैं।

किन्तु सरकार कहती है कि मार्च से वर्ष चालु रखे। चैत्र में बहियों को बदलना चाहिए। ऐसा दबाव देते हैं, सो अनुचित है। मार्च-अप्रैल से हमारा क्या लेना देना है, एक विदेशी मामूली आदमी के नाम से चलने वाले सन् का बहिष्कार करना चाहिए और भारत के सभी मानवीय ज्योतिष वेदों से निवेदन है, कि एक धरोहर सस्कृति को बचाने के लिए एक ऐसा पचांग की रचना करें जिसमें फलित ज्योतिष न हो। एक शुद्ध आर्य वैदिक पचांग लिखा जाये जो सभी सम्प्रदायों को मान्य हो और एक ऐसा कलेन्डर निकाला जायें जिसमें प्रमुखता हिन्दी महिने, वार, तिथियो की हो। हमारा सार्वदेशिक सभा और प्रादेशिक सभाओं से निवेदन है कि इस पर गम्भीरता से विचार करके देश व विदेश के विश्व विद्यालयों डी० ए० वी० कालेजों में, स्कूलों मे व कार्यालयों व सस्थानों के नाम से परिपत्र भेजें और समाचार पत्रों को भी लिखें जिसमें विक्रम सवत्, को ही प्रधानता दी जायें और हिन्दी अकों को भी प्राथमिकता दी जाये। एक प्रस्ताव पास करके सन्ध्या व यज्ञ में संकल्प करना, श्लोक जोड़ दिया जाए तो उससे सृष्टि संवत्, दयानन्दाब्द व तिथि, वार, नक्षत्र नाम रखने में सहायता मिले। सभी समाचार पत्रों मे सृष्टि संवत् विक्रम सवत् दयानन्दाब्द लिखे जायें। एक प्रणाली हो जिसमे सभी अंक देव नागरी भाषा में हों। अग्रेजी वर्ष बन्द करते ही कई आर्य भी खुशियों मे झूमेंगे, प्रथम जनवरी को घरों में जाकर मुब्बारक देते हैं और बढ़िया कविता बनाते हैं इतना ही नहीं धर्म ध्वजी कहलाने वाले संस्कृत में कविता व श्लोक रचते, ऐसा नहीं होना चाहिए। अपना सवत् चैत्र सुदी 1 को ही नया वर्ष मानना चाहिए इस पर विचार करने की आवश्यकता है, आर्य तो विचारशील होते हैं।

आशा है कि देश-विदेश के आर्य (हिन्दू) कहलाने वाले सभी सज्जन इस पर विचार करेंगे और अपना नैतिक कर्त्तव्य व दायित्व समझकर इसे अपनाएगे, जिससे परिणाम अच्छा ही होगा। अगर समय रहते भी इस समय पर निद्रा खोलकर सचेत नही होंगे। तो आगे आने वाली पीढी इसे बिल्कुल भूल ही जायेगी और धीरे धीरे अपना गौरव भी समाप्त हो जायेगा और हम सब मिलकर यह व्रत लें कि हम विक्रम सवत् को प्रमख स्थान देंगे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फिर भी लोग क्यों इतना धन सम्पत्ति संचय करने मे जुटे हैं? कार-कोठियों की होड़ लगी हुई है। किसी उर्दू के कवि के शब्दों मे कहा जा सकता है—

आगाह मौत से अपनी कोई बसर नही।
सामान सौ बसर का पल की खबर नहीं॥

यदि हम मेरा क्या है! के स्थान पर मेरा क्या रहेगा—यह सोचें तो बात बने। यज्ञ के मन्त्रार्थों पर कभी-कभी विचार करता हूं। किस प्रयोजन से प्रत्येक आहुति के पश्चात् 'ईद न मम' कहा जाता है? लेकिन अब कुछ-कुछ यह रहस्य मुझे आत्मसात् हो रहा है। आहुति का अर्थ दान है और वह दान भी इस घोषणा के साथ कि मैं जो कुछ भी द्रव्य आहुति में दे रहा हूं वह मेरा नहीं है और उसी के लिए मैं इसको स्वेच्छपूर्वक अग्नि को सौंप रहा हूं 'यह मेरा नहीं'—इसमे दो बातें ही हैं एक तो राग मोह और लोभ का त्याग और दूसरे परोपकार की वृति परिचय। हम जब सभी चीजों को अपना मान लेते हैं या उन पर अधिकार उचित या अनुचित तरीके से करने की चेष्टा करते ह तभी हम मे राग द्वेष क्रोध लोभ और मोह उत्पन्न होते हैं।

जैसे ही यह यज्ञीय दृष्टि उत्पन्न होती है हमारे सारे मनोविकार विलुप्त होने लगते हैं। इसलिए यज्ञ करते समय हम बार-बार समवेत स्वर से आहुति के आवसान पर बोलते है—इन न मम अर्थात यह मेरा नही है प्रभु का है। तब मुझे देते या त्यागते समय कष्ट और क्लेश क्यों हो। क्लेश तो उसे होगा जो अपने धन को अपनी बपौती मान बैठा हो। कबीर के शब्दों में—

मेरा मुझ में कुछ नही जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर॥

वास्तव मे यही सेवा है यही परोपकार है और यही धर्म है। त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ही यज्ञ की वास्तविक कल्याणमयी कामना है। यही मानव जीवन का सार है।

गढ़शंकर में विशाल यज्ञ

4 नवम्बर रविवार को गढ़शंकर के आर्य समाज की ओर से हसराज आर्य हाई स्कूल में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें सैंकड़ों स्त्री, पुरुष और बच्चों ने भाग लिया। मुझे भी वहां जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत ही खुशी हुई कि हमारे जिला सभा के प्रचार मन्त्री श्री मगन बिहारी जी, श्री सुरेन्द्र मोहन कृपाल और उनके साथियों ने सभी समाजों के अधिकारियों को वहां बुलाया हुआ था, मुकेरियां से श्री अमर सिंह जी और श्री जियालाल जौहली, तलवाड़ा से श्री सुखदेव सिंह भजनीक, आर्य समाज बलाचौर के प्रधान श्री गुरदेव सिंह जी धीमान, आर्य समाज गढ़दीवाला से वैद्य हसराज जी, और भी इलाके के पुराने आर्य समाजी वहां पहुंचे हुए थे। पहले यज्ञ किया गया उसके बाद वहां पहुंचे हुए आर्य समाजों के अधिकारियों और स्कूल के अध्यापकों ने वेद और मानव धर्म और यज्ञ के ऊपर लोगों के समक्ष अपने विचार रखे। यह प्रोग्राम बहुत ही सफल रहा जिसका प्रभाव लोगों पर बहुत अच्छा पड़ा। मैं सभी आर्य समाजों से प्रार्थना करता हूं कि सभी ऐसे यज्ञों का आयोजन करें जहां सभी को इकट्ठा किया जाए और जहां भी पुराने आर्य समाजी मिलें उन्हें वहां जरूर बुलाया जाए ताकि जिला में वेद प्रचार का कार्य और भी अच्छे ढंग से किया जाए। गढ़शंकर के आर्य भाईयों ने स्कूल में चाय पान और भोजन का अच्छा प्रबन्ध किया था।

मैं अपनी ओर से उन सभी आर्य भाईयों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस कार्य को सफल करने में बहुत मेहनत की है।

—मनोहर लाल आर्य
प्रधान जिला आर्य सभा
होशियारपुर

रायकोट में विशाल होम्योपैथिक कैम्प

तिथि 4-11-90 को आर्य समाज रायकोट द्वारा महर्षि दयानन्द फ्रीहोम्योपैथिक कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प का उद्घाटन श्री अमरजीत सिंह जवंदा ने किया। जिस में इलाके के बीमारों ने लाभ उठाया, 300 से ज्यादा रोगियों ने लाभ उठाया। भारतीय महावीर दल रायकोट शाखा ने काम में पूरा सहयोग दिया। लार्डमहावीर होम्यो कालेज एण्ड हास्पीटल के प्रि० श्री राविन्द्र कोछड़ तथा सुयोग्य डाक्टरों की योग्यता की इलाके में बहुत प्रशंसा हो रही है। आर्य समाज ने सारे रोगियों को मुफ्त दवाई तथा एक महीना आर्य समाज में लगातार दवाई देने का आयोजन किया है।

—अशोक कन्नोजिया, मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश से प्रेम

लुधियाना के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा सजिल्द सत्यार्थ प्रकाश का वितरण बड़ी श्रद्धा और लग्न से कर रहे हैं। जो भी सज्जन सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की इच्छा प्रकट करता है। वह उसे तुरन्त यह पुस्तक पहुंचा देते हैं। सैंकड़ों सत्यार्थ प्रकाश वह बांट चुके हैं।

आप सच्चे ऋषि भक्त हैं, आज कल जिला आर्य सभा द्वारा संचालित झुग्गी झोंपड़ियों के स्कूल का प्रबन्ध आप बड़ी लग्न से कर रहे हैं। इस पवित्र कार्य में श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा तन मन धन से उनका सहयोग दे रहे हैं। श्री मा० राधा कृष्ण जी बड़े परिश्रम तथा लग्न से इस स्कूल के बच्चों को पढ़ा रहे हैं। ऐसे ऋषि भक्तों की आज महती आवश्यकता है।
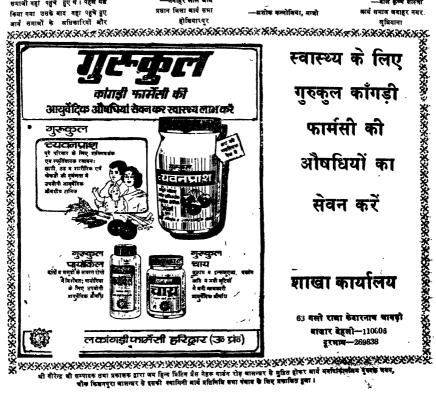
—बाल कृष्ण शास्त्री
आर्य समाज जवाहर नगर
लुधियाना

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड़ जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 36, मार्गशीर्ष—17 सम्वत् 2047 तदनुसार 29 नवम्बर/2 दिसम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये प्रति अंक 60 पैसे

परमेश्वर के गुणकर्मस्वभाव

ले०—स्व० आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

परमात्मतत्व का विचार करते समय उसके गुणों पर विशेष विचार करना पड़ता है। गुणों के विचार से ही गुणी का विचार हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने परमात्मतत्व की प्रत्यक्षता को इसी आधार सिद्ध किया है और वैशेषिक तथा न्याय के प्रत्यक्ष लक्षण के द्वारा ही परमेश्वर को भी प्रत्यक्ष सिद्ध किया है। परमेश्वर की क्रिया का फल और उसके गुणों की महत्ता का ससार का प्रत्येक पदार्थ दिग्दर्शन करा रहा है—अत: वह एक प्रत्यक्ष सत्य ही है। वेद मे हमे परमेश्वर के अनेक गुणों का वर्णन मिलता है ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रंथों मे परमात्मा के जिन गुणों का वर्णन किया है वे वस्तुत: वेदादि सत्य शास्त्रों से ही लेकर संगृहीत किए गये हैं। परमात्मा के कुछ प्रसिद्ध गुणों का दिग्दर्शन हमें सामवेद के इस मन्त्र से मिलता है। मन्त्र इस प्रकार है—अधत्विषीमा अभ्योजसा कवि युधा भवदारोदसी अपृणदस्य मज्मना प्रवावृधे। अधत्तान्य जठरे प्रेमरिच्यत प्रचेतय सैनम् सश्चद्देवो देव सत्य इन्दु: सत्यमिन्द्रम् ॥ सा० उ० 13।6 अन्तिम मन्त्र ॥ इस मन्त्र के क्रमश: सात वाक्य बनते हैं जो क्रमश: इस प्रकार हैं—1 वह स्वय प्रकाश तथा अपने तेजों से समस्त तेजों को दबाने वाला है। 2...अपनी व्यापकता से संसार के समस्त लोकों को पूर्ण कर रहा है। 3—बल में सब से बड़ा हुआ है। 4—प्रकृति और जीवों को अपने अन्दर धारण करता है। 5—धारण करते हुए भी इनसे पृथक्-अतिरिक्त रहता है। 6—सबको सर्वथा जानता है 7—अविनाशी जीव को शरीर के साथ युक्त करता है॥ इसका दार्शनिक प्रक्रिया के अनुसार संक्षेप कर परमेश्वर मे निम्न गुण, कर्म स्वभाव की कल्पना की गई। पहले वाक्य के अर्थ का संक्षेप कर "स्वय प्रकाश" शब्द को स्थान दिया गया। दूसरे से 'सर्व व्यापक' तीसरे से सर्वशक्तिमान्, चौथे से सर्वाधार पाचवें से निर्लेप, निर्विकार, अजन्मा आदि का भाव निकाला गया। छठे वाक्य से 'सर्वज्ञ' और सातवें मे सृष्टिकर्त्ता तथा कर्मफलप्रदाता एव न्यायकारी का अर्थ ग्रहण हुआ। इस प्रकार परमेश्वर स्वयं प्रकाश सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, निर्लेप, निर्विकार, अजन्मा सर्वज्ञ, सृष्टिकर्त्ता और न्यायकारी है—यह भाव इस वेद मन्त्र का निकलता है। इन गुणो का पल्लवन कर के ही परमात्मा के भिन्न कर्म और स्वभाव का हमे दर्शनो मे वर्णन दृष्टिगोचर होता है। इस मन्त्र के साथ यदि ऋग्वेद के दो मन्त्रो को भी मिला दिया जावे तो परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव में और भी व्यापकता आ जाती है। वे मन्त्र है—'तिस्रोवाच ईरयति प्रवह्नि: ऋतस्य धीरतिम् ब्रह्मणों मनीषां गावो यन्ति गोपति पृच्छमाना: ॥ सोमं यन्ति मतयो वावसाना: तथा ऋतस्य गोपा न दभाय सक्रतुस्त्रीं: पवित्रा हृद्यन्तर दधे ।......

इत्यादि इनका क्रमश: भाव यह है कि ऋग्, यजु:, साम, सभी तीनों वाणियों अर्थात् चारों वेदों की प्रेरणा परमात्मा करता है। ये वाणियें सृष्टि के नियम और समस्त ब्रह्माण्ड के ज्ञान हैं। इन की शब्दमयी वाणियां तो वाणी के पालक विद्वान् को प्राप्त होती है परन्तु ज्ञान मनन करने वाले मनस्वी मुनि को मिलता है। परमेश्वर वस्तुत: ससार जिन नियमों पर नियन्त्रित है उनका पालक है। उसमें जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने के तीन कर्म विद्यमान हैं और उसे कोई दबा नही सकता। इन मन्त्रों से परमात्मतत्व के कुछ कर्म और भी बढ़ गये। वेद का प्रकाश करना, ससार के समस्त नियमों का सचालन करना और जगत की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय बिना किसी की सहायता के करना आदि कर्म भी परमेश्वर के हैं। यदि इसके साथ अथर्ववेद के इस मन्त्र—अकामो धीरोअमृत: स्वयम्भू: रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन:। तमेव विद्वान्न विभाय मृत्योरात्मानधीरमजरं युवानम् ॥ को भी जोड देने पर लगभग वे सभी गुण परमात्मा के पूरे हो जाते हैं। जो श्री स्वामी जी महाराज ने अपने द्वारा निर्मित आर्य समाज के द्वितीय नियम मे दिये हैं। इस मन्त्र में अकाम, धीर, अमृत, स्वयम्भू, रससे तृप्त, अन्यून, अजर, युवा आदि विशेषण आते हैं। जिनके अर्थ क्रमश: आप्त काम, अकुतोभय, अनादि, अनन्त, अकार्य-नित्य, आनन्द-स्वरूप, पूर्ण, अजर और एकरस होते हैं। इन सारे पूर्वकथित विशेषणों को परमात्मा में घटता देख कर उसके भिन्न भिन्न तदाशयी धर्मों का प्रतिपादन दार्शनिकों ने किया है। प्रत्येक आर्य विद्वान को परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति के विषय मे दार्शनिकों के दिखलाये मार्ग से विचार करते समय वेद को ध्यान मे रखना चाहिए क्योकि वह "ऋतस्य धीति:, ब्रह्मणो मनीषा" है और परमेश्वर 'ऋतस्य गोपा:' है बिना ऐसा किये केवल किसी दर्शन की प्रक्रिया मे उलझने पर एताद्विषयक समस्याओं का सुलझाना कठिन है। ऋषिदयानन्द ने यह ही इस विषय मे प्रशस्त मार्ग बतलाया है। यदि इसका अनुसरण किया जावे तो दर्शनों का विविध कल्पित प्रक्रिय विरोध दृष्टिपथ से सर्वदा के लिए लुप्त हो जाता है। परमात्मतत्व का रहस्य बडा ही गूढ है उसका उद्घाटन वेद के बिना सम्भव नहीं। वेद के अनुसार परमात्मा की सिद्धि के विषय में जो तर्क किये जा सकते हैं वे सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति सहार और भाषा तथा ज्ञान त विकास सम्बन्ध को लेकर वेदांन्त मे व्यास ने भी इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया है। 'जन्माद्यस्य यत:' और 'शास्त्रयो-नित्वात्' ये प्रधान तर्क इसी पक्ष के पोषक हैं। आज के दार्शनिक जगत मे भी परमेश्वर के अस्तित्व की सिद्धि मे इससे उत्तम और कोई तर्क नही हो सकते। परमेश्वर के इन गुण, कर्म और स्वभावों को जान कर मनुष्य उसके वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयत्न करे—यही सत्य शास्त्रों का उद्देश्य है। यही वेदों का निर्देश है।

(वेद पथ से साभार)

भारतीयता का मूल आधार कर्मफल व्यवस्था

ले० —श्री आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर

संसार के साहित्य मे प्रारम्भ मे ही भारत की चर्चा प्राप्त होती है[1]। हां, समय के साथ उस की सीमाओं और नाम मे परिवर्तन आते रहे हैं[2]। भारत का भू-भाग अनेकविध पहाडी, मैदानी, रेतीले, पठार और समुद्र तटीय प्रदेशों वाला है। अतएव यहा छ: की छ: ऋतुए समय और स्थान की अपेक्षा से अपना योगदान देती है। भारत की धरती उर्वरापन से जहा अनेकविध अन्नों, फूलो, फलो, वनस्पतियो को उत्पन्न करती है, वहा विविध खनिजों, धातुओं से अपने वसुन्धरापन को भी चरितार्थ करती है।

भारत मे रहने वाले या नागरिक सामान्यत: भारतीय कहलाते हैं, पर वस्तुत: भारत को अपना मानने वाले ही भारतीय हैं। ऐसे भारतीयो की जो उपलब्धि, पहचान, प्रभाव, छाप है। उसी को ही भारतीयता शब्द से अभिहित किया जा सकता है। वह चाहे बुद्धि, विद्या से अर्जित की गई हो या श्रम, बल, कला, प्रतिभा से। भारतीयों के इतिहास का परिशीलन करने से स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी सभ्यता संस्कृति, साहित्य, धर्म और परम्परा के क्षेत्र में हर तरह से भारतीयता को भरपूर किया है। इसीलिए ही भारत जगत गुरु के पद से गौरवान्वित हुआ है[3]।

भारतीयता का सबसे पहला पहलू है, 'पवित्रता' इस की पुष्टि सभ्यता, संस्कृति आदि से भी होती है, क्योंकि इन सब का मूलभाव सर्वविध स्वच्छता ही है।

सभ्यता—जैसे कि सभ्यता शब्द सभ्य से ता प्रत्यय लगने पर बनता है, जिस का क्रमश: अर्थ है—सभा के योग्य तथा ऐसी योग्यता से युक्तपन, योग्यता की भावना। सभ्य वही कहलाता है, जो किसी सभा समूह, सगठन मे कैसा बोला, बैठा, बर्ता जाता है, की योग्यता रखता है अर्थात कहीं कैसे रहना, बर्तना चाहिए कि योग्यता से जो युक्त होता है, वही सभ्य है। सभा शब्द स+भा का मेल है, जिस का भाव है, जो साथ-साथ चमकें[4], रहे, बर्ते, जीयें। जिस को समाज शब्द से भी सकेतित कर सकते हैं। अत: सभ्यता शब्द विशेषत: रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र-धारण, आपस के बोल-चाल, बर्ताव जैसे शिष्टाचार को निर्दिष्ट करता है। अत: स्वयं को तत्सम्बद्ध संयम से जोड कर दूसरों की असुविधाओं का ध्यान रखना ही सभ्यता की कसौटी है।

संस्कृति—सस्कृति शब्द समपूर्वक कृ धातु से ति, क्तिन्, प्रत्यय के मेल से बनता है। सम् पूर्वक कृ धातु सफाई शुद्धि, निखारने के अर्थ मे आती है। अत: किसी को अच्छा बनाने, ऊचा उठाने, उदात्तीकरण की प्रक्रिया का नाम ही सस्कृति है। जो कि विशेषत: आन्तरिक गुणों, नैतिक मूल्यों को अभिहित करती है, जिस को सदाचार भी कह सकते है।

भारतीय साहित्य मे इस भावना को अभिव्यक्त करने वाला एक अन्य शब्द है—संस्कार। जो कि गर्भाधान मे लेकर अन्तिम सस्कार तक के लिए प्रसिद्ध है। ये संस्कार धर्म के अग अर्थात कर्मकाण्ड के अश रूप ही हैं। अत: धार्मिक कर्मकाण्ड की दृष्टि से संस्कार शब्द का विशेष तात्पर्य है कि किसी के दोषों को हटाकर उसमे गुणों का आधान करना है[5]। तभी तो नामकरण अन्नप्राशन आदि सस्कार जीवन की मूलभूत जरूरतों की प्रक्रिया को सिखाकर बालक के जीवन को अच्छा बनाने की पद्धति के अंग होने से भारतीय धर्म मे अपना विशेष ध्यान रखते हैं। जैसे कि—अन्न प्राशन में जीने के लिए अन्न के महत्त्व को दर्शाते हुए बताया जाता है कितना अन्न, किस रूप में, कब, कैसे लेना चाहिए।

सस्कार शब्द व्यवहार में प्राय: अच्छा बनाना, सफाई इस सामान्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे कि वस्त्रों का सस्कार, भवन का सस्कार करना अर्थात सफाई, सफेदी, रग, रोगन कर के अच्छा बनाना।

सस्कार शब्द प्रभाव, छाप के अर्थ में भी चलता है। जैसे कि दाल का सस्कार अर्थात उसमें छौंक लगाने पर यह भाव स्पष्ट रूप मे सामने आता है। ऐसे ही चमेली के फूलों या फरनाइल की गोलिया कुछ समय वस्त्र में रखकर पुन: हटा लेने पर वस्त्र में उस-उसकी छाप। वासना छा जाती है। ऐसे ही दूसरों के संग, क्रियाकलाप और पुस्तकों का व्यक्ति पर सूक्ष्म प्रभाव होता है। उसको भी भारतीय परम्परा, साहित्य, अर्थ में संस्कार कहा जाता है[6]। तभी तो कहा जाता है, कि जिस व्यक्ति के जैसे संस्कार होते हैं, वह वैसा ही बनता है।

संस्कार-संस्कृति शब्द आकार-आकृति, स्वीकार-स्वीकृति की तरह एक ही अर्थ के वाचक हैं। इन तीनों जोड़ों में परस्पर केवल प्रत्यय का ही भेद है, पर मूल धातु एक ही है। अत: संस्कृति का जो अर्थ है, वही संस्कार का भी है संस्कार शब्द विवाह आदि के लिए रूढ़ हो जाने के कारण सदाचार (आन्तरिक गुणों) के लिए केवल संस्कृति शब्द ही प्रचलित हो गया है। हां, अंग्रेजी मे संस्कृति के अर्थ में कल्चर शब्द प्रयुक्त होता है। जिस का एक अर्थ खेती भी है और यहां भी निखार, विकास की भावना ही तात्पर्य रूप में सामने आती है।

इस विवेचन से परिपुष्ट होता है, कि संस्कृति-संस्कार, सदाचार-शिष्टाचार, धर्म, संयम, तप, तीर्थ आदि सारे के सारे शब्द भारतीयता की पवित्रता, शुचिता, शुद्धि, सफाई के महत्त्व को ही दर्शाते हैं। इसी लिए भारतीयता में स्नात, स्नातक, शुद्धि, शौच सदृश और क्रियाओं का विशेष महत्त्व है। प्रत्येक धार्मिक कर्मकाण्ड, व्रत, संस्कार के प्रारम्भ में स्नान, आचमन का एक आवश्यक विधान है और हर पर्व पर स्नान, स्वच्छ वस्त्र धारण का विशेष स्थान है। स्वच्छता की बात केवल शरीर, बर्ताव की वस्तुओं तक ही सीमित नहीं है[7]। अपितु इस के साथ आन्तरिक शुचिता के लिए अपेक्षित सत्य-धृति-क्षमा सदृश धर्म के लक्षणों और यम-नियमों का विशेष महत्त्व है[8]। पवित्रता की यह भावना भारतीय जीवन के प्रत्येक पहलू में पाई जाती है। तभी तो पति-पत्नी के और दूसरे सम्बन्धों में पवित्रता बर्तने पर विशेष बल दिया गया है[9]। हां, इसी आन्तरिक-बाह्य पवित्रता के कार्य-कारणपन पर विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि भारतीयतर का मूल आधार कर्मफल व्यवस्था ही है। यतोहि स्वच्छता एक कर्म है, जिसका फल अच्छा लगना, प्रसन्नता सामने आती है। इसी लिए सभी भारतीय शास्त्र एक स्वर से इस पर विशेष बल देते हैं, क्योंकि कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास होने पर या यह विश्वास रखने वाला ही प्रत्येक पवित्रता का पालन करता है। जैसे कि सफाई का फल आरोग्य और गन्दगी का फल रोग मानने पर ही व्यवहार मे इनको दिल से अपनाया जा सकता है।

साहित्य—सहित के भाव को साहित्य कहते हैं। सहित शब्द और अर्थ के क्रमात्मक मेल का वाचक है[10]। इसी अर्थ में साहित्य का एक अन्य नाम काव्य है और इसी दृष्टि से ही साहित्य दर्पण, काव्य प्रकाश आदि इसी विषय के विशेष ग्रन्थों के नाम हैं। पर आजकल हर विषय के ग्रन्थ को साहित्य कहा जाता है, क्योंकि सभी विषयों की पुस्तकों में शब्दों द्वारा ही उस-उस क्षेत्र के अर्थ, भाव को कहा जाता है। भारतीय साहित्य भी भारत की तरह प्राचीन और विशाल है।

भारतीय साहित्य की प्रथम भाषा संस्कृत है, क्योंकि यह एक सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि संसार के पुस्तकालय की प्रथम पुस्तक (ऋग्) वेद है, जोकि संस्कृत भाषा में है। संस्कृत भाषा के साथ लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व प्राकृत पाली और पुन: आधुनिक भारतीय भाषाएं व्यवहार में आईं। संस्कृत भाषा ही अन्य भारती भाषाओं का मूल आधार है। यतो हि उनकी शब्द राशि व्यकरण प्रक्रिया, कथा वस्तु, काव्यतत्त्व संस्कृत के ही आधार पर हैं।

1. गायन्ति देवा: किल गीतकानि,
   धन्यास्तु भारत भूमि भागे।
   स्वर्गापव र्गस्य फलार्जनस्य,
   भवन्ति भूय: पुरुषा: सुरत्वात्॥
   गरुड पुराण 2, 1, 6
2. उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रश्चैव दक्षिणम्।
   वर्षं यद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति॥
   (विष्णु पुराण)
3. एतद् देशप्रसूतस्य सका शादग्र जन्मन:।
   स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:॥
   मनुस्मृति 2, 20
   'हा वृद्ध भारत वर्ष ही संसार का सिरमौर है।
   भारत-भारती—16
4. न सा सभा यत्र न भाति कश्चित्,
   न सा सभा यत्र विभाति चैक:।
   सभा तु सैवास्ति यथार्थ रूपा,
   परस्परं यत्र विभान्ति सर्वे॥
5. संस्कार विधि से—
6. यन्नवे भाजने लग्नो न संस्कार-स्तदन्यथा भवेत्।
7. अद्‌भि र्गात्राणि शुध्यन्ति—यह सारा अध्याय ऐसे वर्णन से भरपूर है।
8. मन: सत्येन शुध्यति।
9. अन्योऽन्यस्या व्यभिचारो भवेदामरणान्तिक:।
10. तभी कहा जाता है—अदोषौ शब्दार्थौ काव्यम् (साहित्य दर्पण) तथा वागर्थाविव संपृक्तौ।
    रघुवंश 1, 1
    उक्तंहि काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरम् रसादिश्चात्मा, गुणा: शौर्यादिवत् दोषा: कामत्वादिवत् रीतयोऽवयव सस्थान विशेषवत्, अलंकारा: करक कुण्डलादिवत्।

(क्रमश:)

सम्पादकीय :—

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का कार्यक्रम

23 से 26 दिसम्बर 1990 तक दिल्ली के राम लीला मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन हो रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती यह चाहते हैं कि इस सम्मेलन के लिए एक ऐसा कार्यक्रम बनाया जाए जो हम जनता के सामने रख सकें। देश के सामने इस समय कई प्रकार की समस्याएं हैं, उन सब के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण देशवासियों के सामने आना चाहिए। पाठक जानते हैं कि गत दिनों मैंने भी आर्य मर्यादा में यह लिखा था कि जो सम्मेलन दिल्ली में हो रहा है, उसके द्वारा हम अपने देशवासियों को क्या सन्देश देना चाहते हैं? इस पर हमें विचार करना चाहिए। केवल एक स्थान पर इकट्ठे होकर और कुछ भाषण देने से आजकल कुछ नहीं बनता। जिन परिस्थितियों में से हमारा देश गुजर रहा है, उनमें आर्य समाज से यह आशा की जाती है कि वह जनता का मार्ग दर्शन करे। श्री स्वामी जी ने मुझे लिखा है कि इस विषय में मैं अपने सुझाव दूं। परन्तु मैं समझता हूं यह काम ऐसा नहीं, जो एक व्यक्ति कर सके।

हमें यह न भूलना चाहिए कि आर्य समाज की स्थापना हुए 110 वर्ष हो गए है और आज की परिस्थितियां वह नहीं, जो 1875 में थी। अब नई परिस्थितियों के अनुसार आर्य समाज का नया कार्यक्रम जनता के सामने आना चाहिए। हमें जनता को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि आर्य समाज एक जागरूक संस्था है और वह उन चुनौतियों को समझती है जो इस समय हमारे देश के सामने हैं। उनका वह अपने देशवासियों को क्या समाधान बताना चाहती हैं यह इस सम्मेलन के द्वारा हम जनता के सामने रख सकेंगे। मैंने आर्य समाज के कुछ बुद्धिजीवियों को इस विषय में पत्र भी लिखे हैं, परन्तु मैं यह भी चाहता हूं कि वह आर्य समाजी जो विचारक हैं और समय समय पर समस्याओं के विषय में अपनी सम्मति देते रहते हैं, वह भी अपने सुझाव मुझे भेजें ताकि उन पर विचार करके आर्य समाज का घोषणा पत्र तैयार किया जा सके। मेरे विचार में निम्न विषयों पर विचार करने की आवश्यकता है :—

1. साम्प्रदायिकता और धर्म निरपेक्षता।
2. धर्म और राजनीति।
3. मण्डल कमीशन और वर्ण व्यवस्था।
4. वर्तमान शिक्षा प्रणाली और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली।
5. स्वदेश व स्वदेशी की भावना।
6. संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। देश की एकता संस्कृत के द्वारा सुदृढ हो सकती है, अंग्रेजी के द्वारा नहीं।
7. हिन्दी के साथ-साथ दक्षिण भारत की भाषा भी अनिवार्य हो।
8. दूसरे देशों से विलासिता के लिए जो वस्तुएं मंगवाई जाती हैं, उन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।
9. दूरदर्शन पर जो चित्रहार दिखाया जा रहा है, उस से युवा पीढ़ी पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है, वह बन्द होना चाहिए।
10. साम्यवाद का हमारे समाज पर जो प्रभाव पड़ रहा है, उसे कैसे दूर किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त कुछ राजनैतिक समस्याओं के विषय में भी आर्य समाज का दृष्टिकोण सामने आना चाहिए। जिनमें से एक यह है कि कश्मीर व पंजाब को सेना के हवाले किया जाए, कश्मीर के विस्थापितों की वैसे ही सहायता की जाए जैसे 1947 में पाकिस्तान से आए विस्थापितों की की गई थी। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध दिन प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं। इस लिए यह भी आवश्यक है कि हम अपने देश को उसके लिए तैयार करें, इस लिए प्रत्येक युवक के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाए।

मैंने यह कुछ सुझाव दिए हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई सुझाव व समस्याएं हो सकती हैं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए। कई सामाजिक समस्याएं भी हैं जैसे अधिक से अधिक दहेज लेने की प्रवृत्ति और दहेज न मिलने पर लड़कियों को जला देने की समस्या, जिसके विषय में आर्य समाज को अवश्य कुछ कहना चाहिए। वास्तविक स्थिति तो यह है कि आज समस्याएं इतनी पैदा हो गई है कि कई बार यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि किस समस्या को पहले हल किया जाए। जो सुझाव मैंने उपर दिए हैं यह आवश्यक नहीं कि वह सब स्वीकार कर लिए जाए। जो महानुभाव आर्य समाज का घोषणा पत्र तैयार करेंगे, वही यह फैसला कर सकते हैं कि कौन सी समस्याएं अधिक गम्भीर हैं। हो सकता है कुछ और भी सुझाव सामने आ जाए। इसलिए आर्य मर्यादा के पाठक महानुभावों से मेरी यह प्रार्थना है कि वह इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके हमें लिखें कि इस सम्मेलन मे आर्य समाज को किन किन समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और उनके क्या समाधान जनता के सामने रखने चाहिए। —वीरेन्द्र

एक अत्यन्त उपयोगी पुस्तक

समय समय आर्य समाजी अपने विचारों को जनता के सामने रखते रहते हैं। यह देखा गया है कि बड़ी बड़ी पुस्तकों के द्वारा इतना प्रचार नही होता जितना छोटी छोटी पुस्तकों के द्वारा। इसी प्रकार की एक छोटी सी पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में केन्द्रीय आर्य सभा शक्ति नगर अमृतसर के प्रधान श्री भोलानाथ जी दिलावरी और श्री नन्द किशोर जी महामन्त्री ने प्रकाशित की है। इसमें महर्षि दयानन्द जी का सक्षिप्त जीवन और ससार के महान व्यक्तियों के महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में उद्गार व शान्ति के सिद्धान्त दिए गए हैं। यद्यपि इस पुस्तिका का मूल्य पाच रुपये रखा गया है, परन्तु आर्य समाजों को प्रचारार्थ यह केवल दो रुपये दी जाएगी। मेरी पजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक को अधिक से अधिक खरीद कर प्रचार के लिए काम में लाएं। इसको कुछ प्रतियां सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर मे भी रखी गई हैं। जो महानुभाव वहां से लेना चाहें ले सकते हैं जो सीधा मगवाना चाहें वह "केन्द्रीय आर्य सभा शक्ति नगर अमृतसर से मगवा सकते हैं। 16 दिसम्बर 1990 को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में जो सम्मेलन हो रहा है वहां भी यह पुस्तक मिल सकेगी। आजकल जब उत्सवों आदि के द्वारा हम अपना प्रचार नहीं कर पा रहे तो हमें ऐसे साहित्य द्वारा अपना प्रचार अवश्य करना चाहिए। वीरेन्द्र

लुधियाना में कार्यकर्त्ता सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की गत अन्तरंग सभा में निश्चय किया गया था कि सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन 15, 16 दिसम्बर 1990 को लुधियाना में किया जाए। पंजाब की वर्तमान स्थिति को देखते हुए 25-11-90 को सभा की कार्यकारिणी की बैठक में इस विषय पर पुनः विचार किया गया और निश्चय किया गया कि यह सम्मेलन दो दिन के स्थान पर एक दिन का किया जाए। इस लिए सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह 16 दिसम्बर रविवार को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में कम से कम अपने साथ तीन कार्यकर्त्ताओं को लेकर प्रातः 9 बजे तक वहां पहुंचने का यत्न करे। यह कार्यकर्त्ता सम्मेलन 16-12-90 को प्रातः 9 बजे से दोपहर बाद तक चलेगा। इस सम्मेलन में निश्चय किया जाएगा कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में वेद प्रचार का कार्य किस प्रकार किया जाए और आर्य समाज का भावी कार्यक्रम क्या हो।

हमने इससे पूर्व भी दो कार्यकर्त्ता सम्मेलन जालन्धर में किए थे, जिनका परिणाम अच्छा निकला था और उन में कुछ सुझाव भी आर्य बन्धुओं ने दिए थे। इस सम्मेलन में पुनः इस विषय पर विचार किया जाएगा कि किस प्रकार उन सुझावों को क्रियान्वित किया जाए। इस लिए आप अपनी आर्य समाज के बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर इस सम्मेलन में पधारें। यदि आप सभा कार्यालय को शीघ्र अति शीघ्र यह सूचित कर दें कि आप कितने कार्यकर्त्ताओं के साथ लुधियाना पधार रहे हैं तो इससे हमें भोजन आदि की व्यवस्था करने में आसानी होगी। इस लिए अपने पधारने की सूचना सभा कार्यालय को अवश्य दें।

—अश्विनी कुमार शर्मा, सभा महामन्त्री

आर्य समाज में साहित्य की स्थिति

ले० श्री डा० भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़।

किसी विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार मे साहित्य के माध्यम को सर्वोपरि वरीयता दी जाती है। महात्मा बुद्ध ने चाहे अपने विचारों का प्रचारक मौखिक उपदेशों से ही किया, किन्तु कालान्तर मे उन्ही उपदेशों को त्रिपिटको के रूप में लेखबद्ध किया गया है। मध्यकालीन भक्त कवि कबीर ने चाहे 'मसि और कागद' को हाथ से छुआ तक नही और कलम को भी नही पकडा था, किन्तु बाद मे उनके शिष्यो ने ही उनकी वाणी और शब्द को 'कबीर बीजक' का रूप दिया। स्वामी दयानन्द ने भी आर्य समाज की स्थापना के पूर्व ही अपने सिद्धान्तों को निर्धारित करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण को प्रकाशित किया था।

जब हम आर्यसमाज के विगत इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो हमे ज्ञात होता है कि गत शताब्दी के अन्तिम दशक से लेकर भारत के स्वतन्त्र होने के वर्ष तक आर्य समाज मे साहित्य लेखन को सदा ही प्रमुखता दी जाती रही। इस युग मे अनेक महान् लेखकों की सास्वत साधना ने आर्य विचार-धारा को सर्वत्र फैलाया। किन्तु गत चालीस वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य विद्वानों ने अपनी लेखनी को प्राय: विराम सा दे रखा है और जिस कोटि के ग्रंथ लिखे जाने चाहिएं, वैसी ग्रथ रचना नही हो रही है। साहित्य निर्माण में की जाने वाली उपेक्षा निश्चय ही घातक होगी। बुद्धि जीवी वर्ग को तो इस बारे मे और अधिक जागरूक रहना है।

विगत पीढ़ी के आर्य नेता स्वयं अच्छे चिन्तक, विचारक और लेखक होते थे। यही कारण है कि स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, महात्मा नारायण स्वामी जैसे महान् नेताओं ने यदि आर्य समाज को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया तो साथ ही उच्च कोटि का साहित्य भी दिया। आज स्थिति सर्वथा विपरीत है। हमारे नेताओं की दृष्टि समारोहों, सम्मेलनों, पद यात्राओं, जलसों और जलूसों तथा उनमे पास किये जाने वाले प्रस्तावों तक ही सीमित रहती है। वे शायद यह सोच भी नही पाते कि किसी विचारधारा को स्थायित्व देने वाला तो साहित्य ही होता है।

आज हम देखते हैं कि क्या तो राजनैतिक और क्या धार्मिक, सभी सगठन साहित्य लेखन और प्रकाशन को अपने विचारों के प्रयास का शक्ति-शाली माध्यम स्वीकार करते हैं और तदनुकूल ही उनके ग्रंथ एवं पत्र पत्रिकाएं जन-जन तक उनके विचारों को फैलाती हैं। हम राष्ट्रीय स्वयं-सेवक सघ का उदाहरण ले सकते हैं। सघ की विचारधारा को लेकर चलने वाले दैनिक, साप्ताहिक तथा अनेक मासिक पत्र आज विभिन्न राज्यो से, विभिन्न भाषाओ मे प्रकाशित हो रहे हैं। पत्र तो आर्य समाज के भी अनेक निकलते हैं। मैं गत पैंतालीस वर्षों से आर्य समाज के सभी पत्रो को बिना नागा नियमित रूप से पढता रहा हूं। मैंने अनुभव किया है कि आर्य पत्रों के स्तर मे निरन्तर ह्रास हो रहा है। पहले आर्य समाज के पत्रों का सम्पादन विद्वान्, सिद्धान्तज्ञ, लेखनी के धनी लोग करते थे। अब यह काम सभाओं के लिपिकों के जिम्मे डाल दिया जाता है। उन्हे तो इतना ही आदेश रहता है कि वे सभा के अधिकारियो के भाषणों और वक्तव्यों को प्रमुखता देकर छाप दें। अवशिष्ट सामग्री को देने में इन साधारण योग्यता वाले लिपिकों को छूट रहती है। परिणाम हमारे सामने हैं। सार्वदेशिक का सम्पादक पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति तथा पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक ने जब तब किया तब उस पत्र का एक स्तर था। यही बात आर्यमित्र के लिए कही जा सकती है। प० हरिशंकर शर्मा तो सिद्धान्त लेखक और पत्रकार ही थे, प० उमेशचन्द्र स्नातक के सम्पादन का कतल आर्य मित्र ने अपने स्तर को बनाये रखा।

पत्रों के बारे मे एक अन्य बात भी विचारणीय है। पत्रों के प्रति पाठकों की अभिरुचि जागृत तो तभी होगी, जब उनमे कुछ विशेष पठनीय सामग्री रहेगी। आज हम अपने पत्रों को रोचक, ज्ञानवर्धक तथा बौद्धिक वर्ग के लिए तोषदायक बनाने के लिए क्या कर रहे हैं, रही हमें विचारना है। वस्तुस्थिति तो यह है कि आर्य समाज के पत्रों को आम पाठक की तो बात ही रहने दें, आर्य समाजों के सदस्य तथा पदाधिकारी भी नही पढते।

अब मैं गम्भीर साहित्य के बारे मे कुछ कहता उचित समझता हूं। आर्य समाज की विचारधारा वेदादि सत्य शास्त्रों पर आधारित है। महर्षि दयानन्द ने जिन सिद्धान्तों का परिवर्तन किया था वे वेदों के सर्व स्वीकृत उपदेशों पर आधारित थे। आज हम पदे-पदे वेदों की बात तो करते हैं, किन्तु वैदिक तथा इतर आर्ष साहित्य की अभिवृद्धि के लिए हमारे प्रयास सर्वथा नगण्य हैं। आज वेदों का अध्ययन किसी एक संस्था या समाज की बपौती नहीं रह गया है। देश विदेश के सैंकड़ों विश्वविद्यालयों में वैदिक अध्ययन एवं शोध का कार्य आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर किया जा रहा है। अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद् के जो द्विवार्षिक सम्मेलन विभिन्न स्थानों पर होते हैं, उसके वेद विभाग में पढे जाने वाले वैदिक शोध निबन्धों पर यदि हम दृष्टि डालें तो हमें निम्न बातों का पता चलता है—

1. इन शोध निबन्धों को प्रस्तुत करने वालों में आर्य विद्वानों की सख्या तो अंगुलियों पर गिने जाने लायक ही होती है।

2. ऋषि दयानन्द की आर्ष मान्यताओं के विपरीत वेद विषयक विभिन्न मतों की पुष्टि में जो विपुल सामग्री प्रस्तुत की जा रही है, उसके प्रतिकार के लिए हमारे प्रयत्न क्या हैं?

3. सहिताओं के अतिरिक्त वैदिक साहित्य के अन्तर्गत परिगणित ब्राह्मण ग्रंथ, सूत्र साहित्य, आरण्यक साहित्य जैसे विषयों पर हमने अब तक कौन सा उल्लेखनीय कार्य किया है।

उच्च स्तरीय शोध कार्य के लिए विश्वविद्यालय का वातावरण ही उप-युक्त होता है। आर्य समाज के पास भी कसम खाने के लिए एक विश्व-विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी का नाम है, किन्तु वहां उच्चस्तरीय शोध और अध्ययन की कितनी दयनीय स्थिति है, क्या इस पर हमने कभी विचार किया है। जहा के प्राध्यापकों को वैज्ञानिक शोध का क, ख भी नहीं आता, जो स्वयं शोध उपाधि से रहित हैं, क्या हम उनसे आशा कर सकते हैं कि वे वेद तथा शास्त्रीय साहित्य के क्षेत्र में उच्चस्तरीय लेखन, अनुसंधान या अध्यापन का कार्य कर सकते हैं। जिस विश्वविद्यालय की नकेल संस्थाओं के भाग्य विधाता पेशेवर नेताओं के हाथ मे हो, ऐसे लोगों के हाथों मे, जिनका शिक्षा से कोई लेना देना न रहा हो, भला उनके अधिकार में विश्वविद्यालय स्तर की संस्था को सौंप कर हम यह आशा रख सकते हैं कि वहा वैदिक सभ्यता, संस्कृति और आर्य धर्म की सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए कोई कार्य सम्भव है?

हमें गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय की कार्य पद्धति को देखना होगा। इन विश्वविद्यालयों में सिख और इस्लाम जैसे धर्मों तथा उनकी सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और परम्परा को समुज्ज्वल रूप से प्रस्तुत करने के जो साहित्यिक प्रयास हुए हैं, वे हमारी आंखें खोल देने वाले हैं। क्या हमारे गुरुकुलों तथा कांगड़ी विश्वविद्यालय में हम कोई ऐसी स्तरीय योजना को क्रियान्वित कर सके हैं, अथवा इसके लिए हमने वहां कोई समुचित वातावरण बनाया है।

ले दे कर अकेले पंजाब विश्व-विद्यालय में विगत 15 वर्षों से दयानन्द शोध पीठ के अन्तर्गत उच्चस्तरीय शोध एवं लेखन का कार्य हो रहा है। किन्तु इसका श्रेय तो विश्वविद्यालय के अधिकारियों का है न कि आर्य समाज को। हमारे नेता और आम आर्यसमाजी को तो यह पता भी नहीं है कि उक्त शोध पीठ में कौन क्या कर रहा है?

गम्भीर स्तरीय लेखन की अपेक्षा—

प्राय: हमारे नेता और सामान्य कार्यकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि हमे अपने प्रचार के लिए छोटे आकार वाले ट्रैक्टों के लेखन और प्रकाशन पर जोर देना चाहिए। किन्तु लघु पुस्तिकाओं की उपयोगिता भी सीमित ही होती है। उन्हें सामान्य पाठक तो मिल जाते हैं किन्तु प्रबुद्ध वर्ग के लोगों मे उनकी कोई मांग नहीं होती। जो ईसाई प्रचारक इस शताब्दी के आरम्भ तक मेलों में अपने ट्रैक्टों का वितरण करते थे, आज वे भी इस बात को समझ गए हैं कि इन ट्रैक्टों को लेकर लोग रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं। अत: हमें गम्भीर और स्तरीय साहित्य के लेखन और प्रकाशन की ओर भी ध्यान देना होगा।

हमारा साहित्य दूसरों तक क्यों नहीं पहुंचता?

यह एक गम्भीर प्रश्न है। आर्य समाज का साहित्य आर्यसमाजियों तक ही सीमित रह जाता है। ऐसा क्यों? आर्गेनाइजर और पांचजन्य तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भिन्न विचार रखने वाले भी पढ़ते हैं किन्तु सार्वदेशिक, परोपकारी और आर्यमित्र तो आर्य समाज के वाचनालयों की हद से बाहर ही नहीं जाते। हमारे लेखकों का साहित्य भी हमारे सिवाय कोई दूसरा नहीं पढ़ता। प० युधिष्ठिर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य समाज आरक्षण नहीं संरक्षण का हिमायती

ले०—श्री० शशिकान्त जी आर्य 4-5-753 "ज्ञान गंगा सुलतान" बाजार, हैदराबाद

(लेखक :—शशिकान्त आर्य—आर्य समाज के युवा विद्वान है। विज्ञान स्नातक, साहित्य में स्नातकोत्तर और विधि के अध्येता हैं। आर्य समाज की आर्य भारती संवाद समिति के मुख्य सम्पादक और आर्य युवा सम्मेलन दक्षिण भारत के संयोजक हैं। पीढियों से आर्य समाजी रहे निष्ठावान प्रतिष्ठित परिवार में उत्पन्न हुए और आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। पिछले कुछ समय मे आर्य समाज के सगठन को नई पहचान और नई शक्ति देने मे जुटे हैं। प्रस्तुत लेख में विचारशील युवा लेखक आरक्षण जैसे ज्वलन्त सामाजिक विषय पर आर्य समाज के वैचारिक और सैद्धान्तिक पक्ष को स्पष्ट किया है और आर्य समाज से नई भूमिका निभाने का आह्वान है।)

—सहसम्पादक

सरकारी नौकरियों मे मण्डल आयोग अनुशसा के आधार पर पिछडी जातियों को 27 प्रतिशत आरक्षण देने की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की राजनीतिक प्रपचपूर्ण घोषणा ने राष्ट्र को झकझोर दिया है। दो माह से सम्पूर्ण राष्ट्र और समाज तीव्र प्रतिक्रियात्मक आन्दोलन से उद्वेलित है। सरकार की कुटिल राजनीति ने समाज और राष्ट्र को जन्मगत जाति के खाचों मे बाट किया है। अंग्रेजो की विदेशी सत्ता ने देश के दो टुकडे धर्म के आधार पर किए थे। किन्तु आज के शासक देश को अनेक जाति और वर्गों में बांट देना चाहते हैं।

आर्य समाज का दृष्टिकोण—आर्य समाज जन्मगत जाति निर्धारण का विरोधी है। हम सम्पूर्ण मानव समाज को एक ही जाति मानते हैं। आर्य समाज दो ही वर्ग मानता है अच्छा और बुरा। यह वर्ग भेद भी जन्म से नहीं गुणों से है। वैदिक संस्कृति और परम्परा में आर्ष ग्रन्थों और साहित्य मे इसे ही आर्य अनार्य या सुर-असुर या देव—असुर के रूप में निरुपित किया गया है। उन्नति या अवनति से यह वर्ग भी परिवर्तनीय रहा है। कई ऋषियों के पुत्र पददलित होकर राक्षस असुर कहलाये और कई असुरों की सन्तानें आत्म उन्नति के सन्मार्ग पर चलकर ऋषि जैसे गरिमामय और पूज्य पद को प्राप्त हुई।

मनु की व्यवस्था—सामाजिक व्यवस्था मे जाति प्रथा के लिए मनु को दोषी ठहराया जाता है। परन्तु मनु ने जाति व्यवस्था नहीं वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। वर्ण का आधार ही व्यक्ति की योग्यता, कर्म, विशेषज्ञता को माना है न कि जन्म परिवार को। ब्राह्मण की श्रेष्ठता उसके बुद्धिजीवी होने से है। स्वास्थ्य या शारीरिक शक्ति भी बिना ब्रह्मचर्य के सम्भव नहीं नही अतः क्षत्रिय को ब्राह्मण के बाद रखा गया। वैदिक सस्कृति अर्थ प्रधान नही रही। भौतिकवादी अर्थ लोलुपता तो असुरों मे रही है। आज पाश्चात्य व्यक्ति केन्द्रित अर्थ प्रधान बहिर्मुखी भौतिकवादी प्रदर्शन और आर्थिक सम्पन्नता समृद्धि का मापदण्ड भी उसी का आधुनिक सस्करण है और उसी का ताडव और समाज का विघटन गला काट शोषण की संस्कृति असुर प्रवृत्ति की पहचान है। वर्ण व्यवस्था मे व्यापार, कृषि, पशुपालन उद्योग का तृतीय क्रम है। वैश्य के रूप मे शूद्र वह है जिसे कोई विशेष योग्यता दक्षता नहीं, न बुद्धि स्तर पर न चरित्र की न विशेष कर्म कौशल की जो केवल शारीरिक श्रम सेवा से ही समाज के लिए उपयोगी है।

आधुनिक समाज व्यवस्था—कम्युनिस्ट श्रमिक राज्य की बात करते है। वास्तव मे वे समाज मे शूद्र प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हैं। उस का परिणाम अंततः पिछड़ापन होता है। अतः जब भी मौका मिला, सम्भव हुआ बुद्धिजीवी ब्राह्मण घुटन को तोडकर वहा से भाग खडा हुआ। आज सत्तर वर्षों के बाद गोर्बाच्योव ने उस पद्धति की अप्रासगिकता स्वीकार कर ली है। जर्मनी का एकीकरण इतिहास का नवीनतम सबक है। चीन भी उन अर्थों मे कम्युनिस्ट नही है जिसमे माओ युग था। उसने पश्चिम के द्वार खोल दिए हैं। विकास के लिए, घुटन मे हल्का झोंका भी झरोखे से आकर राहत देता है। वहा भी मुक्ति की छटपटाहट है ध्यान मेन चौक गवाह है।

वैश्य प्रभुत्व के औद्योगिक विकास की एकांगिता सभी स्वीकारते हैं। अर्थ प्रधान समाज की दौड मे सबसे आगे रहने वाले अन्ततः नींद के लिए और भूख के लिए तरसते हैं और भाग खड़े होते हैं शान्ति की खोज में कभी दुस्साहिक कार्यों में तो कभी हिप्पी बन कर तो कुछ योग के सौदागरों के पास। कभी रजनीश तो कभी महेश योगी उन्हे ठगते हैं। मृगतृष्णा की भटकन, नशीली दवाए, असाध्य रोग, तनाव, कुंठा, अशान्ति, अपराध जीवन के अग होते हैं। क्षत्रिय प्रभुत्व या केवल शक्ति समाज को पशुता की ओर ले जाती है। महाभारत के कारण परिणाम मूलतः समाज मे शक्ति श्रेष्ठता की स्थापना ही है। कोई भी उनसे फिर साबका करना नही पसन्द करेगी।

बौद्धिक प्रभुत्व की शाश्वत आवश्यकता—वस्तुतः मनुष्य मे बुद्धि ही उसे प्राणी जगत मे सर्वश्रेष्ठ बनाती है। अतः मनुष्य समाज मे भी बौद्धिक प्रभुत्व ही के समर्थक है जो ब्राह्मणत्व का प्रतीक थी। कालान्तर मे ब्राह्मण जन्मना होने से आज लोग कथित ब्राह्मण विरोधी और मनु निन्दक हो गए हैं। आज बुद्धिजीवी इसे बतौर फैशन अपनाते हैं, वस्तु स्थिति अभिप्राय से अनभिज्ञ हो कर।

उनके प्रभाव से आर्य समाज भी ब्राह्मण विरोधी बनता है और अपनी स्थिति पर आसू बहाता है। वास्तव मे आर्य समाज को दृढता से स्पष्टतया ब्राह्मणवाद का सही अर्थों मे समर्थन व अनुगमन करना चाहिए। आर्य समाज की दुर्दशा का कारण भी ब्राह्मणों का अनादर अर्थात् विद्वानों, पुरोहितों, पण्डितों, विशानियो की अवमानना है। आर्य समाज भी एक तरह से अर्थ प्रधान या फिर सेवा प्रधान बन कर वैश्य-शूद्रों के प्रभुत्व वाला सगठन हो गया है जिस के दुष्परिणाम क्रमिक ह्रास ही हो सकता है। सभी इसे स्वीकार करेंगे।

आज आवश्यकता न केवल आर्य समाज मे अपितु मानव समाज मे ब्राह्मणवाद की पुनर्स्थापना है। तभी तो हम सही उन्नति उत्कर्ष पर पहुंच सकते हैं। बुद्धिजीवी नेतृत्व हमे चाहिए। बुद्धि का सम्मान होना चाहिए। प्रतिष्ठा अर्थ से नही बुद्धि प्रखरता से मिलनी चाहिए। चन्द्रगुप्त को चाणक्य का अनुगामी बनना होगा। भामाशाह को राणा प्रताप का सहयोगी बनना चाहिए। केवल अर्थ प्रभुत्व या सेवा प्रभुत्व हमे मैकाले का क्लर्क समाज दे सकता है जो परस्पर सघर्ष पैदा कर झूठे जाति प्रतिद्वंदिता से विघटन को ही निरन्तर बढ़ावा देगा।

महर्षि दयानन्द की स्पष्ट मान्यता है बल्कि निर्देशात्मक आदेश है कि एक विद्वान की बात को सभी अन्यों से अधिक मान्यता दी जाए। उसके पास वीटो का अधिकार है।

आज देश मे लोकतन्त्र की दुर्दशा हम देख रहे है। इसका कारण सब धान एक पसेरी होना है। योग्यता का कोई अतिरिक्त लाभ नही। अठारह वर्षीय अनपढ मूर्ख को भी एक वोट का अधिकार है। जबकि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और वैज्ञानिक और शिक्षाविदों जैसे योग्य विचारक, शिक्षित समझदार, दूरदर्शी व्यक्तियो को भी एक ही वोट का अधिकार है। जहा मूर्ख और विद्वान की राय को बराबर का महत्त्व मिलेगा, वहा स्वार्थी, सकुचित, पदलोलुप, कलुषित राजनीति ही होगी।

भारत के स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास को देखिए। मगल पाडे का 1857 का शस्त्र संघर्ष क्यो असफल रहा? उसका मूल कारण बुद्धिजीवी नेतृत्व या समर्थन नही था। यदि हिंसा ही आधार सामय हो तो नेता जी सुभाष चन्द्र बोस आदि सफल रहे। यदि हिटलर की हार और जपान पर अणु बम आक्रमण न होता तो परिणाम दूसरे होते। इस का कारण नेता जी सुभाष चन्द्र बोस स्वय बुद्धिजीवी रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी भारत के स्वतन्त्रता सग्राम का सफल नेतृत्व केवल इसीलिए कर सके क्योंकि वे बुद्धिजीवी ब्राह्मण थे। कांग्रेस के अग्रिम नेता नेतृत्व बुद्धिवादी था। उसे बुद्धिजीवी वर्ग का सहयोग समर्थन मार्गदर्शन मिला। अम्बेडकर जैसे लोग भी वस्तुतः ब्राह्मण अर्थात् बुद्धिजीवी रहे। परन्तु आज हमारे समाज में हम पत्रकार, शिक्षक, वैज्ञानिक, न्यायविद्, साहित्यकार आदि बुद्धिजीवी ब्राह्मणो को समुचित प्रतिष्ठा नही देते बल्कि उन्हें बाध्य करते हैं कि वे उद्योगपतियों श्रमिकों, कृषक, व्यापारी नेताओं के पिछलग्गू बने। इसके बावजूद यह सत्य है कि हाल ही मे 20 वर्षों के इतिहास मे देश मे जो भी परिवर्तन हुए, राजनीति में भी उसमे बुद्धिजीवी वर्ग ने हमेशा अग्रणी और निर्णायक भूमिका निभाई। फिर भी हम क्यों इस सच और तथ्य को नकारना चाहते हैं। क्यो बुद्धिजीवी के ऊपर पिछडों को लादना चाहते हैं। क्या ऐसे समाज मे विकास सम्भव है?

(क्रमशः)

श्री हरबंस लाल जी "हंस" को पौत्र प्राप्ति

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से भूतपूर्व भजनोपदेशक श्री हरबस लाल जी "हंस" के सुपुत्र श्री अश्विनी कुमार "हंस" जो आजकल लन्दन में रहते हैं, के घर 1-9-90 को पुत्र रत्न हुआ। जिस का नामकरण संस्कार बड़े समारोह से किया गया। श्री हस जी ने अपने पौत्र का नाम अभिषेक "हस" रखा। श्री हस जी लन्दन मे रह कर वैदिक धर्म का प्रचार गत कई वर्षों से कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सुधा—

सर-दर्द का कारण व इलाज

लेखक—डा० हर्बर्ट एम० शेल्टन

सिर दर्द आज एक आम रोग हो गया है बहुत लोग इससे पीड़ित हैं। कई लोग तो इसे रोग ही नहीं समझते परन्तु ऐसी बात नहीं यह एक रोग है। डा० हर्बर्ट एम. शेल्टन ने "स्वस्थ जीवन" पत्रिका में अपना एक लेख विस्तार पूर्वक विवेचन के साथ इस रोग पर दिया था जिसे पाठकों के लाभार्थ हम यहां दे रहे हैं।

—सह-सम्पादक

ऐसा कहा जाता है कि सर-दर्द गेग नही है, बल्कि किसी एक रोग का चिन्ह मात्र है। सर-दर्द शरीर के भीतर जो विकृति हुई होगी उसकी सूचना मात्र है। रक्त मे स्थित गन्दगी या विजातीय द्रव्य प्रमाण से अधिक हो जाता है, तब शरीर उस गन्दगी को बाहर फेंकने का प्रयास करता है। इस क्रिया में जो सम्वेदना या उथल-पुथल अनुभव मे आती है, वही रोग कहलाता है।

अगर हम यह समझ सकें कि विजातीय द्रव्य से हमारा क्या मतलब है, तो आगे की बात अपने-आप समझ मे आ जाएगी। शरीर मे चलने वाली पचापचय क्रिया (मैटाबौलिज्म) से जो गन्दगी निर्माण होती है, वह नियमित-रूप से शरीर के बाहर निकाल दी जाती है। इसे हम 'सहनीय-गन्दगी' मानते हैं। किन्तु जब इस गन्दगी का प्रमाण अधिक हो जाता है तब वह असहनीय-गन्दगी कहलायी जायेगी। हमे यह बताया गया है कि इलोपैथ इस प्रकार की गन्दगी को शरीर मे नही ढूंढ सकें हैं। मेरे ख्याल मे रोग की दृष्टि से डाक्टरो का उपरोक्त कथन विशेष महत्त्व नहीं रखता। शरीर के भीतर रहने वाली गन्दगी अकसर यकृत, गुर्दे और फेफडों द्वारा निकलने का प्रयत्न करती रहती है। प्रयोगशाला के लोग यह ढूंढने का प्रयास करते हैं कि शरीर मे उन्हे किसी विशेष प्रकार का जहर मिल जाए, परन्तु यह असम्भव बात है।

उम्दा स्वास्थ्य-काल मे भी शरीर के कोष गन्दगी का निर्माण करते हैं। हैं। और वह गन्दगी, रक्त और रस द्वारा, निष्कासनार्थ उत्सर्जक अगों के पास भेजी जानी है। यह बताना मुश्किल है कि किसके शरीर मे कितनी गन्दगी सहनीय मर्यादा में रह सकती है। कुछ शरीर-शास्त्रज्ञों ने इस दिशा मे खोजबीन करने का प्रयास किया, परन्तु कोई ठोस तथ्य हाथ नही लगा। इतनी बात ध्यान मे आती है कि विजातीय द्रव्य का परिणाम 'सहनीय-गन्दगी' की सीमा से अधिक होते ही, उसे उभार का रूप आ जाता है।

जिन-जिन क्रियाओं से शरीर पर दबाव या अतिरिक्त बोझ पडता है, उनसे शरीर के उत्सर्जक अंग भी थक जाते हैं। इस हालत मे पचापचयजनित गन्दगी का परिमाण शरीर में बढ़ने लगता है। भरपेट किया हुआ भोजन अनपेक्षित उत्तेजना, अधिक काम, गुस्सा चिडचिडाना, नींद का अभाव, चिन्ता या झगडे आदि अनेक कारणों से शरीर पर बोझ पडता है। इससे शरीर का शुद्धिकार्य शिथिल हो जाता है। परिणाम यह आता है कि अतिरिक्त गन्दगी रक्त में बढ़ कर रोग का रूप धारण करती है। हम यह देख चुके हैं कि सहनीय-गन्दगी का निष्कासन बिना तकलीफ के हो जाता है। किन्तु कई बार अतिरिक्त गन्दगी का भी निष्कासन बिना तकलीफ के हो जाता है। यह उस शरीर की विशेष अवस्था पर निर्भर करता है। उसका खान-पान, माता से प्राप्त शक्ति, उम्र आदि बातों के आधार पर हर एक की, गन्दगी सहन करने की, मर्यादा अलग हो सकती है।

दुर्बल शरीर मे उत्पादित गन्दगी की सफाई के निमित्त से शरीर का नियन्त्रण करने की क्रिया मे जो उथल पुथल होती है, वह सर-दर्द के रूप मे प्रकट होती है। सर-दर्द कई प्रकार के बताये जाते हैं। अर्ध-सर-दर्द, पूर्ण सर-दर्द, आंशिक-सर-दर्द आदि कई प्रकार के होते हुए भी प्रमुख दो ही हैं— तीव्र सर-दर्द और जीर्ण-सर दर्द। चाहे किसी भी प्रकार का सर-दर्द क्यों न हो उसका मूल कारण 'असहनीय-गन्दगी' ही हो सकती है। मस्तिष्क मे गांठ (ट्यूमर) होने से भी सर-दर्द होता है। परन्तु विकृत विज्ञान के क्रम को निहारने से पता चलता है कि सर-दर्द का मूल कारण वही हमारा पुराना दुश्मन गन्दगी या विजातीय द्रव्य होता है।

यह जरूरी नही कि हर एक को 'असहनीय-गन्दगी' के कारण सर-दर्द हो, सभी को एक जैसी ही शिकायत हो, यह भी अनिवार्य नही है। एक जैसा खान-पान करते हुए भी अलग-अलग लोगों को अलग-अलग बीमारी हो सकती है। किसी ब्लॅडप्रेसर होगा, किसी को निमोनिया होगा, उसी भोजन से किसी का वजन बढ़ जायेगा और किसी का वजन घट जायेगा। एक जैसे खान-पान के बावजूद यह देखा गया है कि पत्नी का वजन बढ़ गया है और पति को लो-ब्लडप्रेसर हो रहा है। इन सारी स्थितियों के अध्ययन से ध्यान में आता है कि रोग का कारण विजातीय द्रव्य होते हुए भी व्यक्ति की शारीरिक विशेषता के कारण रोग का स्वरूप शरीर के अलग-अलग हिस्सों मे प्रकट होता है या अलग-अलग नामों से पहचाना जाता है।

जो लोग आधी रात में भोजन करते हैं, रात में देर तक जागते हैं, ठूंस-ठूंस कर खाने के आदी हैं, ऐसे लोगों को तत्काल सर-दर्द होता है। जिन की स्नायविक शक्ति (नर्व इनैर्जी) अल्प प्रमाण में होती है। ऐसे लोगों को आंख पर पडने वाला थोडी देर का बोझ ही सिर दर्द का कारण बन जाता है। इस दर्द का सम्बन्ध प्राय: कब्ज से जोडा जाता है कि गन्दगी का प्रमाण शरीर के किसी एक हिस्से में है तो उसकी सूचना भी हमें शरीर के अन्य हिस्सों से भी दी जाती है। ऐसे मौके पर प्रचलित चिकित्सा-पद्धति में सर-दर्द का सम्बन्ध उपरोक्त कारणों को जोड कर पूरे शरीर का इलाज नहीं किया जाता है। इससे रोग का मूल विजातीय द्रव्य नष्ट नहीं हो सकता।

सभी प्रकार के सर-दर्द जिन्हे अलग-अलग नाम दिए जाते हैं। गलत आहार-विहार के कारण एकत्रित 'असहनीय-गन्दगी' के प्रमाण मात्र ही होते है। अगर खाने पीने की गलत आदत के कारण यकृत और पित्ताशय मे सूजन या प्रदाह की स्थिति होती है। अपच के कारण आमाशय की दीवार मे प्रदाह की स्थिति निर्माण होती है, तो सर-दर्द को भी प्रेरणा मिलती है।

कई बार यह देखा गया है कि चाय और काफी पीने वालों को समय पर चाय काफी न मिलने पर सर दर्द हो जाता है। चाय काफी में रहने वाली औषधि की आदत के अनुसार उस आदत की पूर्ति के अभाव में सर-दर्द प्रकट होता है। इस औषधि के कारण शरीर की स्नायविक शक्ति क्रमश: घटनी है। अन्त में यह नतीजा निकलता है कि रक्त में गन्दगी का संचय बढ़ने लगता है और सरदर्द प्रकट होता है।

हर एक स्वास्थ्य-इच्छुक को अपने दिमाग में यह बिठा लेना चाहिए कि रोग स्वयं ही दुरुस्ती या मुरम्मत या रोग-मुक्ति का एक कुदरती मार्ग है। जो भी उपचार ऐसे मौके पर राहत या तत्काल आराम देते हैं, दीर्घ काल में उनसे नुकसान ही होता है। प्रकृति की इस स्वयं-मुरम्मत की क्रिया में अन्य बाह्य उपचारों द्वारा दखल देने से काम नही बनता। शारीरिक मानसिक अन्तरबाह्य आराम ही एक ऐसी चीज हो सकती है जो रोग के निष्कासन के साथ-साथ जीवन-शक्ति को बढ़ाती है। दर्द के समय सर पर रखा हुआ ठन्डा तौलिया उतना भयकर नुकसान नहीं करता जितना ये तीव्र औषधिया करती हैं। इसलिए हर हालत मे सर-दर्द से रोगियों को तीव्र औषधियों के प्रयोग से बचना चाहिए।

जीर्ण सर-दर्द से मुक्ति पाने का सही इलाज उपवास या लघंन ही हो सकता है। इससे जीवन की आदतें सही होती हैं और कुदरती कानून के अनुसार शरीर की क्रिया ठीक हो जाती है। ऐसे मौके पर शरीर को नुकसान पहुंचाने वाली सभी आदतें बन्द कर देनी चाहिए सर-दर्द मे भोजन सुधार अति आवश्यक है। सर-दर्द के दो दौरे के बीच का समय उपचार-काल के लिए उपयोगी साबित होता है। इस बीच अगर प्राकृतिक जीवन के अनुकूल आहार-विहार चलाया जाए तो अगला दौरा अपेक्षाकृत हल्का हो जाता है। तीव्र दर्द के समय सभी प्रकार के उपचार बन्द कर एकदम आराम और उपवास करना चाहिए। इतने इलाज से ही पुराने से पुराना दर्द भाग जाता है।

शान्ति यज्ञ व श्रद्धान्जली समारोह

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर की ओर से पूज्यमाता श्रीमति लज्यावती भारद्वाज जी की स्मृति में उनकी सुपुत्री श्रीमति वेद कुमारी जोशी जी ने विदेश से आकर शान्ति यज्ञ आर्य समाज मुहल्ला गोविन्द गढ़ में 11 नवम्बर को रखा। जिसके मान्य प० सालिग्राम जी पराशर द्वारा यज्ञ करवाया गया। प० मनोहर लाल जी ने वैराग्य के भजन जनता के सामने गाए। इस शान्ति यज्ञ में पं० किशन चन्द जी शर्मा, पं० हरबंस लाल जी शर्मा, श्री सरदारी लाल जी 'आर्य रत्न', माडल टाऊन समाज से मन्त्री श्री वीरेन्द्र मोहन जी बक्शी, बस्ती दानिशमन्दा से श्री ज्ञान चन्द जी, शहीद भगत सिंह नगर से श्री मुलख राज जी, भार्गव नगर से कमल किशोर जी, गांधी कैम्प से श्री बूटा राम जी, पक्का बाग से श्रीमति कमला जी आर्या, बस्ती गुजा से श्रीमति लक्मी देवी महेन्द्र, भार्गव कैम्प की विदुषी बहनें. गोबिन्द गढ के प्रधान। मन्त्री जी एवं बहुत सी बहनें और भाई सम्मिलित हुए। और सबने अपनी ओर से श्रद्धान्जलिया भेंट की। श्री प० किशन चन्द जी शर्मा ने बहन लज्यावती भारद्वाज के जीवन की कुछ घटनाएं सुनाई।

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोविन्द गढ की मन्त्री श्रीमति सन्तोष धवन और श्रीमति कृष्णा कोछड़ प्रधाना ने भी अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्त में मान्य प० हरबंस लाल जी शर्मा एवं श्री वेद प्रकाश जी भारद्वाज ने आई हुई सब समाजों की बहनों एवं भाईयों का आभार प्रकट किया। सबका जलपान से स्वागत किया गया।

श्रीमति वेद कुमारी जोशी ने ग्यारह सौ रुपये स्त्री आर्य समाज को दान में दिए।

—सन्तोष धवन.

लुधियाना में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना मे 12 से 18 नवम्बर, 1990 तक वेद सप्ताह बडे उत्साह-पूर्वक मनाया गया । प० बाल कृष्ण जी शर्मा पुरोहित के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद शतकम् यज्ञ हुआ । आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प० विद्याभानू जी जम्मू वाले ने प्रतिदिन प्रात. और रात्रि दोनो समय वेद कथा की । श्री जगत जी वर्मा (भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) के मधुर भजन होते रहे । वीरवार 15 नवम्बर को स्त्री सत्सग साय 3 से 5 बजे तक हुआ । जिसमे उपस्थिति बहुत ही उत्साह वर्धक थी। रविवार 18-11-1990 को समापन हुआ, प्रात 9-30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। इसके पश्चात श्री प० विद्या-भानु जी और प्रो० वेदव्रत जी के बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन हुए। श्री जगत जी वर्मा ने अपने मधुर भजनो द्वारा श्रोताओ को आनन्दित किया । लुधियाना की सभी आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, जिला आर्य सभा तथा आर्य युवक सभा के सदस्यो ने इस समारोह मे बढ चढ कर भाग लिया दोपहर 12-30 बाजे बृहद् ऋषि लगर हुआ। सारा कार्यक्रम बडी श्रद्धा व प्रेम के साथ सम्पन्न हुआ ।

—विजय सरीन मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता है

आर्यसमाज, बडा बाजार, पानीपत हरियाणा प्रान्त के पुराने समाज सग-ठनों मे एक अग्रणी स्थान रखता है। इसके आर्य समाज मन्दिर मे, एक सुयोग्य, निपुण तथा विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा यथा-योग्य तथा यथोचित दी जाएगी। इच्छुक सज्जन अपने जीवन परिचय तथा प्रार्थना पत्र को डाक द्वारा भेज कर सम्पर्क स्थापित कर सकते है।

राममोहन राय, एडवोकेट मन्त्री
आर्य समाज, बडा बाजार पानीपत

लुधियाना में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य युवक सभा पजाब की ओर से प० मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी शताब्दी समारोह का आयोजन स्थानीय आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे 11-11-90 को सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री एस० सी० [illegible]शा, प्रिंसीपल आर्य कालेज ने की ।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल आर्यरत्न ने युवको को अह्वान किया कि जाति-पाति को समाप्त करने, दहेज जैसी सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने के लिए सघर्ष करे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जे० बी० गोयल, पी० सी० एस० अतिरिक्त उपायुक्त लुधियाना ने कहा कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र मे, सामाजिक उत्थान एव अन्ध-विश्वास समाप्त करने, देश को आजाद कराने के लिए सराहनीय भूमिका निभाई है। आज की विषम परिस्थितियो मे आर्य युवको को रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए ।

श्री सतीश चन्द्र जी नन्दा प्रिंसीपल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर चलते हुए यदि सभी को शिक्षा के समान अवसर दिए जाये तो कमण्डल कमीशन की कोई आवश्यकता नही रह जाती है। उन्होने युवको को चरित्र निर्माण तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया ।

इस अवसर पर देश की एकता और अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने तथा युवको को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए अमृतसर से डा० हरभगवान आर्य, लुधियाना से गरीब दास, ललित जसवाल, महेन्द्रपाल आर्य, राजेन्द्र महेन्द्रु, वीरेन्द्र ढीगरा, बरनाला से रामशरण दास गोयल, सतीश सिंघवानी, फिरोजपुर से ललित बजाज, तपा से चाद राम विद्यालकार, मलेरकोटला से रमेश कौशल आदि ने युवको को सम्बोधित किया ।

इस समारोह मे आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने श्री सतीश नन्दा, श्री जे० बी० गोयल, अतिरिक्त उपायुक्त, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया ।

ऋषि ने अमृत पिलाया था

रचयिता—श्री हरवंश लाल जी "हस" लन्दन
(भू०पू० सभा भजनोपदेशक)

ऋषि ने विष पिया लेकिन हमे अमृत पिलाया था।
जिन्हे गफलत ने घेरा था उन्हे आ कर जगाया था ।।

था एकोकार को भूला यह भारत देश ऋषियो का।
वहा थी मुर्दनी छाई जहा था राज खुशियो का।
फैलाया ज्ञान वेदो का तो आलम जगमगाया था ।।

कही वृक्षो की पूजा थी, कही झुकते थे कबरो पर।
घिसी थी नाक लोगो की घिसाकर मील पत्थरो पर।
अमूर्त रूप ईश्वर का हमें दर्शन कराया था ।।

किसी पर भूत का हौवा किसी पर प्रेम काबिज था।
कही पडे की चलती थी या चलता दाव हाफिज का ।।
सहम गई मजहब की दुनिया ऋषि जब दनदनाया था।

दलित विधवा अनाथो की सुनी उस ने कहानी थी।
गऊ की आहोजारी की उसी ने सार जानी थी।
सभी के दुःख मिटाने के लिए बीडा उठाया था।

कहे "हरवश" सारा देश चलता था कुमार्ग पर
थी हालत रहबरो की यह कि उनकी थी मति अस्थिर
धर्म का डूबता बेडा किनारे पर लगाया था ।।

आर्य लेखक कोश का प्रकाशन शीघ्र

जिन महानुभावो ने आर्य लेखक कोश के लिए अग्रिम शुल्क भेजा है उन से तथा अन्य सभी बन्धुओ को सूचित किया जा रहा है कि कोश का मुद्रण कार्य गत अप्रैल से ही आरम्भ हो चुका है। छपाई वैदिक यन्त्रालय अजमेर मे हो रही है और प्रूफ मै स्वय चण्डीगढ मे मगा कर देखता हू ताकि मुद्रण शुद्ध तथा त्रुटि रहित हो। तथापि इधर आरक्षण विरोधी आन्दोलनो के कारण डाक व्यवस्था गडबडा रही है। अत ग्रन्थ के तैयार होने मे विलम्ब होना स्वाभाविक है। ग्रन्थ लगभग 500 पृष्ठो का सुन्दर सैट उपयुक्त तथा सजिल्द होगा। अग्रिम मूल्य मात्र 100 रु० ही है। जिसमे डाकव्यय भी सम्मिलित है। अपना शुल्क आज ही भेज दे ताकि समय पर ग्रन्थ आपको भेजा जा सके।

—डा० भवानीलाल भारतीय
कोठी न० 41, सैक्टर 15 ए चडीगढ

(पृष्ठ 4 का शेष)

मीमासक और प० उदयवीर शास्त्री जैसे एक दो विद्वानो को छोडकर बृहत्तर सास्वत समाज मे हमारे विद्वानों अथवा उनकी कृतियो को कोई सम्मान नही मिलता। इस स्थिति पर विचार करना भी आवश्यक है। आज रेलवे बुकस्टालो पर रामकृष्ण मिशन, गीता प्रेस, गायत्री वाले श्रीराम शर्मा आदि की पुस्तकें तो मिलेगी, किन्तु यदि कोई ग्राहक सत्यार्थप्रकाश या स्वामी दयानन्द का जीवनचरित खरीदना चाहे तो उसे निराश ही होना पडेगा।

हमारे प्रकाशको के पास जो पुस्तको के आदेश आते हैं, वे भी आर्यसमाजियो या आर्य समाजो के ही होते है। आखिर ऐसा क्यो होता है, कभी हमने इस पर विचार भी किया है? जब साहित्य के मच पर हमारी स्थिति इतनी दयनीय है, तो प्रसार के अन्य माध्यम भी यदि हमे अवहेलना की दृष्टि से देखे तो आश्चर्य ही क्या? ऋषि दयानन्द को तो आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर उतना भी समय (कवरेज) नही मिलता जितना रविदास, हरिजनो के तथाकथित गुरु वाल्मीकि अथवा दलितो के नये मसीहा डा० अम्बेडकर को दिया जाता है। निष्कर्षत: साहित्य सवर्धन के सभी पहलुओ पर गम्भीरता से विचार किया जाना बुद्धिजीवियो का प्रथम कर्तव्य है।

रजि० नं० Pb./J.L.55) 2 दिसम्बर, 1990
Post in N.D.P.S.O. 29 नवम्बर 1990

नांवशहर में वार्षिक पारितोषिक वितरणोत्सव

दिनाक 18-11-90 को डा. आसा नन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर नवाशहर का 34वां वार्षिक परितोषिक वितरणोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री गुरुदियाल वर्मा P. E. S. (Rtd) भूतपूर्व उपनिर्देशक शिक्षा विभाग पंजाब ने अपने कर कमलों से शैक्षणिक एवम् खेल प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहने वाले छात्र छात्राओं को पारितोषिक वितरण किए।

पण्डित देवेन्द्र कुमार जी प्रधान प्रबन्ध कर्त्तृ सभा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। श्रीमती बीना भल्ला जी प्रिंसीपल ने वार्षिक रिपोर्ट पढी।

छात्र छात्राओं ने पजाबी, हिन्दी ग्रुप गायन के अतिरिक्त गुजराती डास गिद्दा, भगड़ा तथा पजाबी नाटक 'सयापे दी जड सस' पेश किये। सभी आईटम्ज़ की लोगो ने भरपूर श्लाघा की। दर्शकों की भीड की कोई गणना नहीं थी।

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल ने सभी दर्शकों, प्रिंसीपल एवम् स्टाफ, तथा छात्र छात्राओं का इस वार्षिक उत्सव की सफलता के लिए धन्यवाद किया।

मुख्य अतिथि तथा उनके परिवार की ओर से स्कूल को 11000/- (ग्यारह हजार रुपये) दान के रूप मे दिये गये। दर्शकों की ओर से भी 5500/- रु० की राशि दान में प्राप्त हुई।

मैनेजर महोदय ने दो दिन स्कूल मे अवकाश की घोषणा की।

—सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मैनेजर

संस्कृत के साथ अन्याय क्यों

आर्य समाज मन्दिर चौक पटियाला में हवन के पश्चात् एक सभा हुई जिसमे आर्य समाज चौक पटियाला के भाई-बहिनों के साथ सरहिन्दी गेट आर्य समाज, घलौडीगेट आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज के सदस्यों ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता प्रिंसीपल श्री बलभद्र मल्होत्रा ने की।

बैठक मे पजाब शिक्षा बोर्ड की संस्कृत विरोधी नीति की कडे शब्दों मे में निन्दा की गई और सर्व सम्मति से पंजाब के राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा जी से प्रार्थना की गई कि वे दसवीं कक्षा मे स्कूल बोर्ड द्वारा संस्कृत को फालतू विषय घोषित करके, इस विषय में परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों से 30 रु० फालतू फीस लेने के निर्णय को बोर्ड के चेयरमैन को तुरन्त आदेश देकर वापिस करवाएं और बोर्ड को संस्कृत भाषा के प्रति अन्याय करने से रोकें।

कई सदस्यों ने बोर्ड के इस निर्णय की तुलना जजिया से की।

ईश्वर दास—मन्त्री
चौक आर्य समाज, पटियाला

गुरुकुल करतारपुर का चुनाव

विगत 4 नवम्बर रविवार को गुरु विरजानन्द भवन करतारपुर (जालन्धर) मे हुई साधारण सभा में सर्वसम्मति से से श्री प० हरिवंश लाल शर्मा को आगामी तीन वर्षों के लिए पुन: प्रधान तथा चतुर्भुज मित्तल को मन्त्री चुना गया। शेष अधिकारी मनोनीत करने के सर्वाधिकार साधारण सभा से प्रधान और मन्त्री को दे दिए।

—चतुर्भुज मित्तल मन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रेस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 73020

वर्ष 22 अंक 37, मार्गशीर्ष—24 सम्वत् 2047 तदनुसार 6/9 दिसम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये प्रति अंक 60 पैसे

ईश्वर-सिद्धि विषयक—ऋषि विचार

ले० व प्रेषक—श्री मांगेराम आर्य प्रधान आर्य समाज अहमद नगर

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने पूने के बुधवार पैठ मे केभिडे के बाडे मे तारीख 4 जुलाई सन् 1875 के दिन रात्रि समय मे व्याख्यान दिया था उसका साराश निम्नलिखित है—

ओ३म् शन्नोमित्र. शवरुण' शन्नो भवत्वर्य्यमा शन्न' इन्द्रोबृहस्पति, शन्नो विष्णुरुरुक्रम. ।

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्ष ब्रह्म वदिष्यामि । इत्यादि पाठ स्वामी जी ने प्रथम कहा—

ओ३म् यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योकि इसमे उसके सब गुणो का समावेश होता है ।

ईश्वर की सिद्धि प्रथम करनी चाहिए, पश्चात् धर्म्म-प्रबन्ध का वर्णन करने योग्य है, क्योकि "सतिकुड्ये-चित्रम्" इस न्याय से जब तक ईश्वर की सिद्धि नही हुई तब तक धर्म व्याख्यान करने का अवकाश नही ।

यजु: स० 40/8

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम स्नाविर शुद्धम् पापविद्धम्।कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूयाथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य: समाभ्य: ॥

न तस्य कार्यकरण च परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते । स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च ।

यह वाक्य कहकर स्वामी जी ने उसकी व्याख्या की । मूर्ति देवताओ मे ये गुण नही लगते इसलिये मूर्ति-पूजा निषिद्ध है । इस पर यदि कोई ऐसी शका करे कि रावणादिको के सदृश्य दुष्टो का पराभव करने के लिये और भक्तो की मुक्ति होने के अर्थ अवतार लेना चाहिये, परन्तु ईश्वर सर्वशक्तिमान् है इस से अवतार की आवश्यकता नही होती है, क्योकि इच्छा मात्र ही से वह रावण का नाश कर सकता था । इसी प्रकार भक्तो की उपासना करने के लिये ईश्वर का कुछ न कुछ अवतार होना चाहिये ऐसा भी बहुत से भोले-भाले लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना ठीक नही है, क्योकि शरीर-स्थित जो जीव है वह भी आकार-रहित है, यह सब कोई मानते है अर्थात् वैसा आकार न होते भी हम परस्पर एक-दूसरे को पहिचानते है और प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादो ही से सद्भावना और पूज्य-बुद्धि मनुष्य के विषय रखते हैं । उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध से नहीं हो सकना, यह कहना ठीक नही है । इस के सिवाय मन का आकार नही है, मन द्वारा परमेश्वर ग्राह्य है, उसे जडेन्द्रिय ग्राह्यता लगाना यह अप्रयोजक है । श्री कृष्ण जी एक भद्र-पुरुष थे । उन का महाभारत मे उत्तम वर्णन किया हुआ है परन्तु भागवत मे उन्हे सब प्रकार के दोष लगाकर दुर्गुणो का बाजार गर्म कर रक्खा है ।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, इससे शक्तिमान् का अर्थ क्या है ? "कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुम्" ऐसी शक्ति से तात्पर्य नही है, किन्तु सर्वशक्तिमान् का अर्थ न्याय न छोडते हुए काम करने की शक्ति रखना यही सर्वशक्तिमान् से तात्पर्य है । कोई कोई कहते है कि ईश्वर ने अपना बेटा पाप-मोचनार्थ जगत् मे भेजा । कोई कोई कहते है कि पैगम्बर को उपदेशार्थ भेजा, सो यह सब कुछ करने की परमेश्वर को कुछ भी आवश्यकता न थी क्योकि वह सर्वशक्तिमान् है ।

बल, ज्ञान और क्रिया ये सब शक्ति के प्रकार हैं । बल, ज्ञान और क्रिया अनन्त होकर स्वाभाविक भी है । ईश्वर का आदि कारण नही है । आदि कारण मानने पर अनवस्था का प्रसग आता है । निरीश्वरवाद की उत्पत्ति साख्य शास्त्र से हुई प्रतीत होती है, परन्तु साख्य शास्तकार कपिलमुनि भी निरीश्वरवादी न थे । उनके सूत्रो का आधार लेकर कपिल निरीश्वरवादी थे, ऐसा कोई कोई कहते है परन्तु उनके सूत्रो का अर्थ बराबर नही किया जाता । वे सूत्र निम्नलिखित है—

मुक्तबद्धयोरन्यतरा भावान्न तत्सिद्धि । उभययाप्यसत्करत्वम् मुक्तात्मन प्रशसा उपासादि सिद्धस्य वा ।

इत्यादि, परन्तु सूत्र सहचर्य से विचार करने पर ईश्वर एक ही है, ऐसा भगवान कपिल मानते थे, क्योकि उनका सिद्धान्त था कि पुरुष है, वही पुरुष सहस्र शीर्षादि सूत्रो मे वर्णन किया हुआ है, उसी के सम्बन्ध से—

वेदाहमेत पुरुष महान्तम् ।

इत्यादि कहा हुआ है प्रमाण बहुत प्रकार के है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इत्यादि । भिन्न भिन्न शास्त्र कार प्रमाणो की भिन्न भिन्न सख्या मानते है ।

मीमासा शास्त्रकार जैमिनि जी दो प्रमाण मानते है । गौतम न्याय शास्त्र कार आठ कोई कोई अन्य न्याय शास्त्रकार चार पातजलि योग शास्त्रकार तीन प्रमाण, साख्य शास्त्रकार तीन और चार, वेदान्त ने तो छ. प्रमाण स्वीकार किये हैं परन्तु भिन्न-भिन्न सख्या मानना यह उस शास्त्रकार के विषयानुरूप है । सारे प्रमाणो का अन्तंभाव करके तीन प्रमाण अवशिष्ट रहते है ।

प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द, इन तीन प्रमाणो की लापिका कर ईश्वर-सिद्धि विषय प्रयत्न करते समय प्रत्यक्ष लापिका करने के पूर्व अनुमान की लापिका करनी चाहिये, क्योकि, प्रत्यक्ष का ज्ञान बहुत ही कुसचित और क्षुद्र है । एक व्यक्ति के इन्द्रिय द्वारा कितना ज्ञान हो सकता है ? अर्थात् बहुत ही थोडा हो सकता है । इससे प्रत्यक्ष को एक ओर रखकर शास्त्रीय विषयो मे अनुमान प्रमाण हो विशेष गिना गया है, अनुमान के बिना भविष्यदाचरण के विषय हमारा जो दृढ निश्चय रहता है वह निरर्थक होगा । कल सूर्य उदय होगा यह प्रत्यक्ष नही तथापि इस विषय मे किसी के मन मे जरा भी शका नही होती । अत अनुमान के तीन प्रकार हैं—शेषवत, पूर्ववत् और सामान्यतोदृष्टम । पूर्ववत् अर्थात् कारण के कार्य का अनुमान शेषवत अर्थात् कार्य से कारण का अनुमान, सामान्यतोदृष्टम् अर्थात् ससार मे जिस प्रकार की व्यवस्था दिखलाई देती है उस पर से जो अनुमान होता है, वह इन तीनो अनुमानो की लापिका करने से ईश्वर परम पुरुष सनातन ब्रह्म सब पदार्थों का बीज है, ऐसा सिद्ध होता है, रचना रूपी कार्य दिखता है, इससे अनुमान होता है कि उसका रचने वाला अवश्य कोई है । पच भूतो की सृष्टि आप ही आप रची हुई नही है, क्योकि व्यवहार मे घर का सामान विद्यमान होने ही से केवल घर नही बन जाता, यह हम देखते है और यही अनुभव सर्वत्र है । मिश्रण नियमित, प्रमाण से और विशिष्ट कार्य उत्पन्न होने की सुगमता के बिना कभी भी आप स्वय घटना नही होती, तो इस से स्पष्ट है कि सृष्टि की व्यवस्था जो हम देखते हैं उसका उत्पादक और नियता ऐसा कोई श्रेष्ट पुरुष अवश्य होना चाहिये । अब किसी को यह अपेक्षा लगे कि ईश्वर की सिद्धि मे प्रत्यक्ष ही प्रमाण होना चाहिये, तो उसका विचार यू है कि प्रत्यक्ष रीति से गुण का ज्ञान होता है । गुण का अधिकरण जो गुणी द्रव्य उसका ज्ञान प्रत्यक्ष होता है । इसी से उस गुण का अधिकरण जो ईश्वर उसका ज्ञान होता है, ऐसा समझना चाहिये ।

हिरण्यगर्भ समवर्त्तताग्रे भूतस्य-जात पतिरेक आसीत । स दाधार पृथिवी द्यामुतेमा कस्मै देवाय हविषा_ विधेम ।

हिरण्यगर्भ का अर्थ शालिग्राम की बटिया नही है, किन्तु हिरण्य

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भारतीयता का मूल आधार कर्मफल व्यवस्था

ले०—श्री आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर

(गतांक से आगे)

संस्कृत भारतीय साहित्य की परिगणना वेद, उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, उपांग, दर्शन, स्मृति, महाकाव्य, पुराण, नीतिशास्त्र के भेद-उपभेद वाले ग्रंथों से होती है। जिनमें जीवन से सम्बद्ध सभी विषयों का वर्णन है। वह चाहे धर्म, आयुर्वेद, रसायन, भौतिक, जीव, भूगोल, खगोल, पुरातत्त्व, व्याकरण, काव्य, अर्थ, अस्त्र-शस्त्र, वस्तुकला, राजनीति या समाज से सम्बद्ध हो। और तो क्या संस्कृत मे कामसूत्र तथा चौर्यशास्त्र भी उपलब्ध होते हैं। इस सारे साहित्य के आधार पर ही हमें भारतीयता के विविध पहलुओं को जहां ज्ञान मिलता है, वहां यह भी पता चलता है कि भारतीयों ने कहा-कहां क्या-क्या सफलता प्राप्त की। अत: भारतीयों द्वारा अपनी विद्या, प्रतिभा, कला, श्रम से उपार्जित धर्म, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता ही भारतीयता है। भारत का गौरवपूर्ण इतिहास इस बात का साक्षी है, कि भारतीयो ने विविध क्षेत्रों मे अत्याधिक प्रगति की है। इन उपार्जित सर्वविध साधनाओं का भारतीय जनमानस पर जो अमिट प्रभाव पड़ा और इससे जो भारतीय भावनाएं बनीं, उन्हीं को ही भारतीयता कहा जा सकता है।

इस भारतीयता का मूल-आधार या केन्द्रबिन्दु क्या है? जब यह प्रश्न हमारे सामने उभरता है, तो विचार करने पर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि वह मूल-आधार-कर्मफल व्यवस्था पर 'विश्वास ही हैं। अर्थात् भारतीय भावनाओं के पवित्रतादि जितने भी मूलतत्त्व हैं, उन सबका केन्द्रबिन्दु कर्मफल व्यवस्था ही है। इसी केन्द्रबिन्दु की व्याख्या की ही अन्य सब तत्त्व कड़ियां हैं। जैसे कि 1. कर्मों के कर्ता के रूप मे जीव, क्योंकि बिना किसी कर्ता के कोई भी कर्म नहीं होता[1]। कर्म अपना फल स्वयं देने मे अक्षम है और फल देने के लिए कर्म के स्थल, समय, सीमा का ज्ञान होना आवश्यक है। यह सब सर्वव्यापक, सर्वथा, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तिर्यामी, न्यायकारी ईश्वर के बिना कठिन है। 2. अत: कर्मफलदाता के रूप में ईश्वर की सत्ता अनिवार्य हो जाती है।[2] 3. कर्म और उसके फल के फल क्षेत्र के लिए जगत जहां चाहिए[3], वहा कर्मों के कर्ता को सुकर्म की ओर प्रवृत्त करने के लिए या अच्छे संस्कार देने के लिए धर्म, संस्कृति, वर्ण-आश्रम आदि तत्त्व स्वत: अपेक्षित होते हैं।

भर्तृहरि ने इसी विषय का विवेचन करते ही कहा कि सब कुछ का मूलस्रोत कर्म ही है[4]। इस भर्तृहरि के भावों को कवितामय शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए गोपाल दास गुप्त ने लिखा है—

नमस्कार है सब देवों को,
पर वे भी हैं विधिवश दीन।
है वह विधि भी वद्य,
किन्तु है फल मे वह भी कर्माधीन।
है फल कर्माधीन तथा क्या,
विधि अरु देवों से काम।
जिन पर वश न विधाता का भी,
कर्मदेव को उन्हीं प्रणाम॥
नीति शतक 95

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के ये वाक्य विशेष पढ़ने योग्य हैं—

'कर्म और कर्म के फल का कर्ता, भोक्ता, जीव और कर्मों के फल भोगनेहारा परमात्मा है।' (स्वामी वेदानन्द सम्पादित) सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11, पृष्ठ—305।

'सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है।' 7, 164।

भारतीयता से जुड़े हुए जितने भी ग्रंथ हैं, उनमें यत्र-तत्र-सर्वत्र किसी न किसी रूप में कर्मफल व्यवस्था की चर्चा अवश्य ही मिलती है। इसीलिए ही भारत के सभी धर्मों, वर्गों, क्षेत्रों में, ऐसी अनेक श्रुतियां सुनाई देती हैं। जिनसे 'जैसी करनी-वैसी भरनी' की भावना परिपुष्ट होती है। भारतीय साहित्य के प्रभावों और जिन श्रुतियों के आधार पर प्रत्येक विचारक इसी परिणाम पर पहुंचता है कि भारतीयता का मूल-आधार—कर्मफल व्यवस्था ही है।

कर्मफल व्यवस्था के स्पष्टीकरण के लिए हमारा सबसे पहला कर्म शब्द पर ही ध्यान केन्द्रित होता है। इससे कर्म शब्द का अर्थ, परिभाषा, प्रक्रिया, प्रयोजन और कर्म के कर्ता (शरीर-इन्द्रिय-मन-आत्मा), कर्ता के सहायक प्रेरक,[5] तत्त्व, साधन, दिशा, तथा कर्म के भेद (क्रियमाण, सचित, प्रारब्ध) सामने आते हैं, क्योंकि ये सब कर्म के कर्म से जुड़े होने के कारण विचार्य श्रेणी में आते हैं।

कर्म शब्द कृ धातु से मन् प्रत्यय से बनता है, जो कि करने के (डुकृञ करणे) अर्थ में आता है। अत: कर्म शब्द का सामान्य अर्थ जहां जो किया जाए (क्रियते यत् तत्)। क्रिया भेद से वैशेषिक दर्शन में इसके पांच भेद— उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण अर्थात् ऊपर की ओर जाना, नीचे की ओर गति, सिकुड़ना, फैलना और गति जिसमें घूमना, दौड़ना सभी आ जाते हैं वैसे गमन—गति ही एक मुख्य रूप में कहा जा सकता है।

कर्मफल व्यवस्था में दूसरा शब्द फल है, जो कि कर्म पर सर्वथा निर्भर है[6]। आज तक जिसने जो भी फल प्राप्त किया है, वह सब कर्म के द्वारा ही प्राप्त किया है कर्म का फल सदा कर्म के सूक्ष्म-स्थूल रूप के अनुरूप ही होता है। अत एव मनुस्मृतिकार ने बड़े विस्तार से बताया है कि मन, इन्द्रिय, शरीर के अलग-अलग [illegible] के मेल से जैसा कर्म होता है उसका फल तदनुरूप किसी न किसी जन्मान्तर में अवश्य ही प्राप्त होता है।[7]

कर्म और फल में पूर्वा पर अनिवार्य सम्बन्ध है। फल शब्द अपने साथ सम्प्रत्ता फलदाता, भोक्ता और सर्वमान-भूत, भविष्यत प्रारब्ध आदि भावों को जहां उजागर करता है, वहां विशेष रूप से फल शब्द खेती—बागवानी की प्रक्रिया से प्राप्य रूप को भी स्मरण करता है। जो कि भूमि की सज्जा बीज, उसका वपन, सिञ्चन, सम्भाल, पुष्प-फल आगमन और परिपाक तक का प्रकरण सामने का देता है। इसीलिए हमारी भाषाओं मे कृषि प्रक्रिया के आधार पर अनेक वचन, लोकोक्तियां, मुहावरे मिलते हैं, जिनसे कर्मफल व्यवस्था के विविध पहलू प्रकाशित होते हैं। जैसे कि—

योग दर्शन में कर्मफल व्यवस्था की प्रक्रिया को स्पष्ट करने वाले दो सूत्र प्राप्त होते हैं जिनमें कृषि विज्ञान को उपजीव्य बनाया गया है। वहां कहा है कि कर्म रूपी मूल (जड़, कारण) के होने पर ही जाति, आयु और भोग रूपी फल होते हैं[8]। जाति शब्द यहां विविध योनियों के शरीरों का ही वाचक है। क्योंकि वैशेषिक दर्शन में आया सदृशता, समानता मूलक लक्षण[9] शरीर में ही घटता है। ऐसे ही न्याय दर्शन मे निर्दिष्ट जाति का लक्षण भी शरीर पर ही चरितार्थ होता है क्योंकि अपने समान को जन्म देना, या जन्म ही प्रक्रिया का समान होना शरीर से ही सम्बद्ध है। अत: योग के सूत्र के अनुसार उस-उस योनि का शरीर के बाद आयु शब्द है, जो इनके सम्बन्ध को स्पष्ट करती है। जीव विज्ञान के सारे विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं, कि हर प्राणी शरीर की अपनी आयु है यहां यह बात विशेष ध्यान देने वाली है, कि इस सूत्र में आयु अपनी-अपनी है। जैसे कि गाय, भैंस, घोड़ा की सामान्य आयु है। शरीर और उस-उस शरीर की अपनी-अपनी शरीरानुरूप आयु तथा उस-उस शरीर से सम्बद्ध भोग अर्थात् खान-पान, रहन-सहन और उससे सम्बद्ध वस्तुएं या इन पदार्थों के बर्ताव से होने वाला सुख-दु:ख ये सब कर्मों के ही फल के रूप में ही सामने आते हैं।

योग के दूसरे सूत्र में कहा है, कि सुख-दु:ख या इनको देने वाले पदार्थों का भोग प्रसन्नता या अप्रसन्नता रूपी अनुभव, परिणाम पुण्य या पाप, के कारण होता है। अर्थात् हम जो सुख-प्रसन्नता का अनुभव करता है, वह पुण्य कर्मों का फल होता है और दुःख या अप्रसन्नता पाप-अशुभ कर्मों का परिणाम होता है।

ते ह्लादपरिताप फला: पुण्यापुण्य-हेतुत्वात्।

यह फल शब्द सभी प्रकार की प्राप्तियों, उपलब्धियों का स्मरण कराता है। जैसे कि हम सब अपने जीवन और संसार में यदा-कदा बहुत कुछ प्राप्त करते हैं। यह उपलब्धि कभी व्यवहार्य वस्तुओं के रूप मे भौतिक स्तर पर होती है तो कहीं यश, गौरव, सुख, आयु आदि के रूप में भावनात्मक या अनुभवात्मक हो सकती है।

---

1. फलमत उपपत्ते:—वेदान्त 3, 2, 38=फलमत ईश्वाद् भवितुमर्हति, कुत:—सहि सर्वाध्यक्ष: सृष्टिस्थिति संहारान् विदधान् विचित्रदेशकालविशेषाभिज्ञत्वात्कर्मिणां कर्मानुरूपं फलं संपादयतीत्युपपद्यते—शंकर भाष्यम्। इस प्रकार के अन्य सूत्र।
2. भोगापवर्गार्थम् दृश्यम् योग, 2, 18 श्रुतत्वाच्च 39= धर्म जैमिनिरत एव 40= पूर्वं तु बादरायणो हेतुव्यपदेशात् 41=
3. नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा:, विधिर्वन्द्य: सोऽपि प्रतिनियत कर्मैकफलद:। फलं कर्मायत्तं किममरगणै: किञ्च विधिना, नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्य: प्रभवति॥ नीति शतक-95
4. मनुस्मृतिकार ने मांस भक्षण के उदाहरण से बताया कि कौन-कौन कहां सहायक होते हैं—अनुमन्ता विशसिता।
5. कर्मैव कारणं चात्र सुगतिं, दुर्गतिं प्रति। शुकनीति—1, 37
6. कर्मणैव हि संसिद्धि मास्थिता जनकादय: एवं ज्ञात्वा कृत कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभि: कुरु कर्मैव तस्मात्वं—4, 15
7. सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा: 2, 13
8. समानानाम् भाव: सामान्यम्= जाति:।
9. समानप्रसवात्मिका जाति-न्याय।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

क्या हिन्दू होना भी अपराध है!

जब से श्री राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का विवाद विशेष रूप से हमारे सामने आया है हिन्दुओ पर कई प्रकार के आक्रमण शुरू हो गए हैं इस समय एक विचारधारा यह भी जोर पकड रही है कि धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहित किया जाए और हिन्दुओ को दबाया जाए। धर्मनिरपेक्षता की आड मे और कई कट्टरपथी गतिविधियो को तो सहन कर लिया जाता है परन्तु यदि हिन्दू अपने विषय मे अपने धर्म, अपनी सस्कृति या अपनी परम्पराओ के विषय मे कुछ कहे तो आपत्तिजनक समझा जाता है। हिन्दुओ की भावनाओ को यह कह कर दबाने का प्रयास किया जाता है कि यह साम्प्रदायिक हैं कुछ लोग यह भी कहते है कि अल्पसख्यक समुदाय की साम्प्रदायिकता को सहन किया जा सकता है परन्तु बहुसख्या को नही। यह अधिकतर वो लोग कहते है जो धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करते हैं। दूसरे शब्दो मे जिनका अपना कोई दीन ईमान नही होता, वो धर्मनिरपेक्ष होते हैं इसलिए उनके लिए दूसरों के धर्म या मजहब पर नुक्ताचीनी करना आसान हो जाता है। परन्तु नुक्ताचीनी अधिकतर हिन्दुओ पर होती है।

तात्पर्य यह कि हिन्दुओं के देश मे हिन्दुओ के लिए ऐसी कठिनाइया पैदा की जा रही हैं कि उनके लिए जीना भी दुर्भर हो जाए इसमे अभी तक सफलता प्राप्त नही हुई। उसका एक कारण यह भी है कि भारत एक धर्म प्रधान देश है। इसकी जनता को अपने धर्म मे इतनी अधिक श्रद्धा है कि उसके बिना यह एक कदम भी नही उठाते। जब मैं धर्म की बात करता हू तो उन सबको इनमे शामिल करता हू जो इस देश मे प्रारम्भ हुए थे। मेरा अभिप्राय सिख धर्म, जैन, बौध, रविदासिए, कबीरपथी अर्थात् वो सब जो इस धरती की उपज हैं उनका अपने-अपने अनुयायियो पर विशेष प्रभाव है। वो सब इस धर्म मे से ही निकले हैं जिसे हम चाहे वैदिक धर्म कहे या सनातन धर्म कहे या हिन्दू धर्म कहे। इन सबका आपस मे कोई न कोई सम्बन्ध जरूर है यही कारण है कि इस देश की जनता पर उनका प्रभाव है और वह किसी न किसी रूप मे उनके दिन प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव डालते हैं।

महात्मा गाधी के विषय मे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वो 20वी शताब्दी के सबसे बडे हिन्दू थे। आज तो राम भक्त होना एक जुर्म समझा जाने लगा है। रामभक्तो पर गोलिया चलाई जाती हैं। उन्हे साम्प्रदायिक कहा जाता है। कई मुख्यमन्त्री जिनकी अपनी दो कौडी भी कीमत नही रामभक्तो को कुचलने का निश्चय करके बैठे हैं उनकी दृष्टि मे राम की बजाय वोट की अधिक कीमत है इसलिए वह रामभक्तो को कुचलने पर तुले हुए हैं। वो भूल जाते है कि इस शताब्दी मे सबसे बडे रामभक्त तो महात्मा गाधी ही थे। उनकी हत्या की गई थी उनके मुँह से जो अन्तिम शब्द निकले थे वो थे हे राम। यदि आज गाधी जी जीवित होते तो मुलायम सिह यादव और लालू प्रसाद जैसे मुख्यमन्त्री उन्हे पकड कर जेल मे बन्द कर देते। हम कई बार अपने भाग्य पर आसू बहाते है कि हमारा नैतिक पतन हो रहा है। इससे बडा और क्या होगा कि गाधी से चल कर मुलायम सिह व लालू प्रसाद तक पहुच गए है गाधी जी ने अपनी सारी उम्र राम नाम का जाप करते गुजार दी थी प्रात और साय अपनी प्रार्थना मे वो "रघुपति राघव राजा राम" याद किया करते थे और आज यह मुलायम और लालू उन्ही व्यक्तियों पर गोलिया चला रहे हैं जो भगवान् राम के नाम को जीवित रखना चाहते हैं। श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या मे रामभक्तो का खून बहाया जाए यह एक धर्मनिरपेक्ष सरकार ही कर सकती है।

असली प्रश्न अब हमारे सामने यह आ खडा हुआ है कि क्या इस देश मे हिन्दू होना एक जुर्म हो गया है। मैं भली-भाति समझता हू कि हमारे देश मे लगभग 10 करोड मुसलमान भी रहते हैं और वो सब कुरान शरीफ के वैसे ही श्रद्धालु हैं जैसे हिन्दू वेदो, उपनिषदो और गीता के या हमारे सिख भाई गुरु ग्रथ साहिब के, मैं कुरान या बाइबल पर कोई प्रतिबन्ध लगाने के पक्ष मे नही। यद्यपि मैं जानता हू कि किसी इस्लामी देश मे मेरे धर्म ग्रथ वेद, गीता या उपनिषद को देखने की अनुमति भी नही है। यह भारत ही है जहा कोई मुसलमान चाहे तो खुले रूप से कुरान और इस्लाम के पक्ष मे जो कहना चाहे कह सकता है केवल मस्जिदो के अन्दर ही नही उससे बाहर भी। क्या कोई हिन्दू पाकिस्तान या किसी दूसरे इस्लामी देश मे जाकर वेदों का प्रचार कर सकता है। निश्चय ही नही। केवल हिन्दुओ और उनके धर्म ग्रथो की ही बात नही है। आज पाकिस्तान मे कोई अहमदी स्वतन्त्र रूप से अपने विचारो का प्रचार नही कर सकता यद्यपि वो भी अपने आपको कुरान शरीफ के वैसे ही अनुयायी समझते हैं जैसे कोई और मुसलमान। अहमदी भारत मे रह सकते हैं अपने धर्म का प्रचार कर सकते हैं। परन्तु पाकिस्तान मे उन्हे इसकी अनुमति नही है।

यह केवल भारत के हिन्दू ही हैं जो सब कुछ सहन करते हैं जितने भिन्न-भिन्न प्रकार के धार्मिक सम्प्रदाय इस देश में हैं शायद ही कही और चलते हो। बर्तानिया, अमेरिका, फ्रास, जर्मनी इन सब देशो मे ईसाइयत उनका राजधर्म है। साऊदी अरब ईरान इराक या पाकिस्तान इन सब मे इस्लाम राजधर्म है जापान और थाइलैण्ड के अपने-अपने राजधर्म हैं। यह केवल भारत ही है जहा कोई राज धर्म नहीं है क्योंकि यह एक धर्मनिरपेक्ष देश है। (क्रमशः) —वीरेन्द्र

अमृतसर में आर्य समाज का पुनर्जन्म

पजाब के आर्य जगत मे अमृतसर की आर्य समाज का अपना एक विशेष स्थान है। आर्य समाजे तो अमृतसर म कई है, परन्तु तीन अधिक सक्रिय रही है। आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार, आर्य समाज शक्तिनगर और आर्य समाज लारेंस रोड। इन मे भी आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार का अपना विशेष महत्व रहा है, क्योकि यह अमृतसर मे सबसे पुरानी आर्य समाज है। यह भी एक एतिहासिक तथ्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जब अन्तिम बार पजाब मे आये थे तो वह अमृतसर भी गये थे और उस समय उनके जो भाषण वहा हुए थे उसका जनता पर बहुत गहरा प्रभाव पडा था। यही कारण है कि अमृतसर मे आर्य समाज का एक शक्तिशाली सगठन रहा है और उस सगठन मे आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार का अपना एक विशेष स्थान रहा, परन्तु पिछले कुछ समय से इस समाज मे भी शिथिलता आ गई थी और इसकी छवि बिगड गई थी। इसके क्या कारण थे और कौन लोग इसके लिये जिम्मेदार थे इस विवाद मे पडने से अब कोई लाभ नही होगा। कुछ समय हुआ जब आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब ने आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर की एक तदर्थ समिति बना दी थी और उसके अध्यक्ष अमृतसर के एक पुराने और कर्मठ आर्यसमाजी डाक्टर राम नाथ जी शर्मा बनाए गये थे। उन्होन अपने साथ कुछ ऐसे व्यक्ति भी ले लिये जो अमृतसर के सामाजिक क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे। और उन सब ने मिल कर इस आर्य समाज मे एक नया जीवन और नया उत्साह पैदा करने का अथक प्रयास किया। आज मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि उसमे वह पूर्ण सफल हुए हैं। अब आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार का एक नया और उज्जवल स्वरूप हमारे सामने आ रहा है।

दो दिसम्बर का इस समाज मे उस यज्ञ का समापन समारोह था जो एक सप्ताह पहले प्रारम्भ किया गया था। इस अवसर पर मैं और मेरे साथ हमारी सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा, और कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न भी वहा गये। हम ने जो कुछ वहा देखा उसने एक बार फिर इस विचार की सम्पुष्टि कर दी है कि प्रत्येक सस्था का भविष्य उसके अपने कार्यकर्त्ताओ के हाथ मे होना है। वह उसे जैसा भी बनाना चाहे बना सकते हैं। हम ने जो कुछ 2 दिसम्बर को अमृतसर मे देखा वह अत्यन्त उत्साह जनक था। बहुत से पुराने आर्य समाजी जो आर्य समाज को छोड गये थे वह भी वहा आए हुए थे और प्राय सभी यही कह रहे थे कि बहुत समय के पश्चात इस आर्य समाज मे वह जागृति दिखाई दी है जिसके लिए यह पहले प्रसिद्ध थी। इस अवसर पर दो महत्वपूर्ण कार्यक्रम किये गय। एक तो लगभग एक दजन पुराने और कर्मठ उन आर्य समाजियो को सम्मानित किया गया जो एक बहुत लम्बे समय तक आर्य समाज की सेवा करते रहे है। इनमे प्राय सभी वह थे जिसकी आयु अब 80 वर्ष से ऊपर हो गई है। जब ऐसे व्यक्तियो को सम्मानित किया जाता है तो उनमे नये जीवन का सचार होता है। एक ऐसी महिला को भी सम्मानित किया गया जिसके विषय मे कहा गया कि उनकी आयु अब सौ वर्ष के लगभग है। कुछ वह व्यक्ति भी थे जो 90-95 वर्ष के थे। जब आर्य समाज अपने पुराने और कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित करती है तो उस का प्रभाव दूसरो पर भी बहुत अच्छा पडता है जैसा कि इस समारोह का पडा है। और इस प्रकार आर्य समाज को नये कार्यकर्त्ता भी मिल जाते है।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम यह था कि जो भाई और बहिने अमृतसर के एक गाव भिखी विंड से पलायन करके शहर मे आ गये हैं उनमे कई ऐसे भी हैं जो अपना सब कुछ अपने घरो मे छोड आए हैं। और कई ऐसे हैं जिनके पास आज की सर्दी मे एक भी गर्म कपडा नही है। ऐसे 50 के लगभग परिवारो को इस अवसर पर कम्बल और स्वेटर बाटे गये हैं। कुछ दूसरे निर्धन और निस्सहाय व्यक्तियो को भी कम्बल और स्वेटर दिये गये। इस योजना का सारा श्रेय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उप प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा को जाता है। यह सारा कार्यक्रम बहुत ही उत्साहजनक रहा जिसकी सभी लोगो ने सराहना की।

इस अवसर पर आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए मुझे 11 हजार रुपये की एक थैली भी भेंट की है। आजकल जो परिस्थितिया अमृतसर मे चल रही है, जबकि आजकल लोगो का कारोबार भी आतकवाद के कारण बन्द हो रहा है ऐसे समय मे भी समाज श्रद्धानन्द बाजार ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए वेद प्रचारार्थ जो 11 हजार रुपए की राशि दी है उसके लिए मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हू।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज आरक्षण नहीं संरक्षण का हिमायती

ले०—श्री० शशिकान्त जी आर्य 4-5-753 "ज्ञान गंगा सुलतान" बाजार, हैदराबाद

(गतांक से आगे)

आरक्षण नीति और आर्य समाज :

हाल ही में राजनीति कुचक्र षड्यन्त्र में निहित स्वार्थ के कारण पिछड़ी जातियों को जन्म के आधार पर सरकारी नौकरियों में आरक्षण देने की घोषणा ने राष्ट्र मे विस्फोटक स्थिति बना दी है। उसी संदर्भ मे बुद्धिजीवी आशंकित, कुंठित हो उठे हैं। पहले से ही राष्ट्र प्रतिभा पलायन से चिन्तित है, यह कदम उस प्रवृत्ति को तीव्र करेगा और खामियाजा देश को भुगतना पड़ेगा।

अतः आर्य समाज को इस आरक्षण नीति का पुरजोर विरोध कर राष्ट्र के प्रहरी के कर्त्तव्य को निभाना चाहिए। यदि सरकारी नौकरी पुरस्कार है तो वह योग्य को मिलनी चाहिए योग्यता के आधार पर न कि खैरात मे जन्मगत जाति के कारण।

आर्य समाज में एक छोटा समूह आरक्षण का समर्थन इस आधार पर करता है कि जातीय व्यवस्था समय का सत्य है। जातीय भेदभाव तथ्य है और शिक्षा में समान अवसर, एकरूपता, सुविधा नहीं है। हम उस समूह की बात नहीं कर रहे जो केवल इससे होने वाले व्यक्तिगत लाभ के कारण आरक्षण को सही ठहराता है।

आरक्षण के समर्थन में दिये जाने वाले ये तर्क खोखले, सतही और भ्रामक हैं। यह जातीय व्यवस्था और भेदभाव यदि वर्तमान का सच है तो क्या उसे सही मान कर मजबूत किया जाना चाहिए या उसके निर्मूलन के प्रयास होने चाहिए। यदि प्रचलित प्रथा को आधार मानकर समर्थन किया जाए तो बाल विवाह, सती, मूर्ति पूजा पाखण्ड, साम्प्रदायिकता छुआछुत सभी को स्वीकार कर सारे निर्णय लेने चाहिए। तब धर्म के आधार पर पाकिस्तान का निर्माण, खालिस्तान का विरोध क्षेत्रीय भाषायी प्रान्तीय संघर्षों का विरोध आर्य समाज किस आधार पर कर सकता है? फिर कल को जातीय सूबे बने राजपूताना, मराठा जाटयाणा तो आर्य समाज भी क्या दो चार ग्राम को लेकर आर्य राष्ट्र या आर्यावर्त्त बनायेगा या फिर जाटों—मराठों की तरह आर्य सामाजियों को भी पिछड़ी जाति में शामिल कर आरक्षण लाभ देने की मांग करेगा? अतः आर्य समाज कभी यथास्थिति के कारण किसी नीति का समर्थन विरोध नहीं करता। बल्कि अपने उद्देश्य ससार के उपकार अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सन्दर्भ में नीति निर्धारण करता है फिर भले ही तात्कालिक अस्थायी हानि, अलोकप्रियता, विरोध सहना पड़े। आर्य समाज का इतिहास इस तरह के संघर्ष का ही इतिहास रहा है।

अतः जन्मगत जातीय आधार पर आरक्षण का समर्थन अवसरवादी राजनीति प्रेरित है या स्वार्थवश। उसका कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं है। आर्य समाज के अनथक प्रयासों से समाज मे जन्मगत जातीय व्यवस्था का प्रभाव 20-30 प्रतिशत कम हुआ था वह सरकार के इस अदूरदर्शी निर्णय से समाप्त होकर पुनः समाज मे जन्मगत जाति प्रथा को नई शक्ति से स्थापित करने में सहायक बनेगा। लोग जो अपनी जाति नही जानते (आर्य समाजी भी) वे अपनी जाति का पता कर उसे 3700 की मण्डल सूची मे ढूढेंगे या शामिल कराने के प्रयत्न करेंगे। उन जातीयों में अन्तर्जातीय विवाह बन्द हो जायेंगे और लोग उन्हीं में कैद हो जायेंगे। अफीम के नशे की लत की तरह आरक्षण सुविधा है जो एक बार मिलने पर कोई खोना नही चाहता और वोटों की राजनीति कभी उसे समाप्त करने का साहस नहीं कर सकती। इन पिछड़ी जातियों का अन्य अनारक्षित अगली जातियों से संघर्ष होगा जो देश मे छिट-पुट स्तर पर ही सही खुलकर पिछले दिनों आरम्भ हो गया है।

और जहा तक शिक्षा में सामान्य अवसर, एकरूपता, सुविधा, स्तर की बात हैं या समान अनिवार्य शिक्षा की दुहाई और आरक्षण समर्थन का सम्बन्ध है वह हास्यास्पद इसलिए भी है कि सरकारी घोषणा स्पष्टतया केवल सरकारी नौकरियों में आरक्षण से सम्बन्धित हैं और स्पष्टीकरण में साफ कहा गया है शिक्षा संस्थानों मे सेना वैज्ञानिकों के लिए यह लागू नहीं होगी। संसद—विधायिका न्यायालय के सम्बन्ध में मौन है सरकार। फिर इस आरक्षण से किस प्रकार अनिवार्य समान शिक्षा एकरूपता, सुविधा स्तर का लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा या यह कैसे परस्पर सम्बन्धित है?

वस्तुतः समाज में वर्ण व्यवस्था में शूद्र को भी आवश्यक सुविधाओं या विकास के अवसरो से वंचित नहीं रखा गया। ब्राह्मण और तथाकथित सवर्णों को केवल कुछ विशेषाधिकार दिये गए। यह विशेषाधिकार योग्यता विशेषज्ञता क्षमता के आधार और कसौटी पर है तथा अयोग्यता, अक्षमता के कारण उनमें कटौती तथा पूर्ण वंचित किया जाना सम्मिलित है। वैदिक समाज व्यवस्था में समाज में सही दिशा में स्वस्थ प्रतियोगिता को प्रोत्साहन मिलता है। महर्षि दयानन्द ने कहीं भी जन्मगत जातीय आधार को किसी स्तर पर किसी भी रूप में कहीं भी समाज व्यवस्था में शामिल नही किया हैं। हां मानवीय आधार पर मानवता के लिए दीन हीन दुःखियों की सहायता कर्त्तव्य माना है। वहां भी उनको बिना योग्यता अनुचित लाभ या आरक्षण नहीं अभिप्रेत है बल्कि न्यूनतम सुविधाओं की आपूर्ति ही भाव है।

संरक्षण ही सही मार्ग—आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से बढ़ कर वर्तमान इतिहास में कोई और पिछड़ों का हमदर्द और मसीहा नही है। महर्षि का पूरा जीवन और आर्य समाज का पूरा इतिहास पिछड़ों के कल्याण का गवाह है। लेकिन वह क्षणिक, राजनैतिक या बनावटी नहीं है और अन्यायपूर्ण नहीं है। न्याय का पथ कभी भी नहीं छोड़ा जा सकता। न्याय ही समाज का आधार होता है। न्याय में भी कल्याण की भावना को हमारे शास्त्रों में आवश्यक माना गया है। हम बड़ी लाइन को मिटाकर छोटी करने या योग्य को अक्षम बना कर समानता लाने के घोर विरोधी है। आर्य समाज हमेशा छोटी को बड़ी लाइन बनाकर अक्षम को योग्य बनाकर असमर्थ को समर्थ बना कर सकारात्मक ढंग से समानता का समर्थक रहा है।

अतः आर्य समाज पिछड़ों को आरक्षण नही सरक्षण देना चाहता है। जिस प्रकार माता पिता शिक्षक अपनी सन्तानों छात्रों में कमजोर पर विशेष ध्यान देते हैं। परन्तु उन्हें अन्य योग्यों पर वरीयता नहीं देते बल्कि हर सम्भव उपाय से उसे भी योग्य बनाने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार आर्य समाज में पिछड़ों के उत्थान विकास, कल्याण के लिए उन्हें वही संरक्षण देने का हिमायती है। हम किसी से छीन कर उसे वंचित कर किसी अन्य को देने के विरोधी हैं परन्तु वंचित को उत्पादन और अवसर बढ़ा कर उसकी क्षमता बढ़ा कर उसे विकसित के साथ लाना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज न्याय के मार्ग पर चलते हुए अहिंसा परिवर्तन से अनुगामी हैं। आर्य समाज विश्व में समानता एवम् मानव समुदाय में एकता का समर्थक है। वह समाज और राष्ट्रों की विघटन-कारी प्रवृत्ति का विरोधी है।

भारत में गरीबी, पिछड़ापन, असमानता, भेदभाव आदि विकट समस्याएं एक वास्तविकता है। इनका हल आर्य समाज वर्तमान जाति व्यवस्था को समाप्त कर, सभी को जीवन की न्यूनतम सुविधाएं प्रदान कर स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय, सूचना के समान अवसर दे कर, अनिवार्य निशुल्क समान शिक्षा, त्वरित सुलभ न्याय, जीवन में सत्य, सहिष्णुता अहिंसा और नैतिकता जैसे चारित्रिक मूल्यों की स्थापना से करना चाहता है। जीवन पद्धति में बदलाव समाज में आश्रम व्यवस्था और बुद्धि की श्रेष्ठता या ब्राह्मणवाद प्रभुत्व को लाकर सभी समस्याओं का निराकरण करने का समर्थक है।

अतः सरकार को तथाकथित पिछड़ी जातियों के विकास कल्याण और समान अवसर उनकी भागीदारिता बढ़ाने और सामाजिक न्याय के लिये सरकारी नौकरियों में आरक्षण जैसे स्टैण्टों से बचना चाहिए और उनके लिए छात्रवृत्ति, छात्रावास, विशेष शिक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अतिरिक्त तैयारी पाठ्यक्रम के अलावा शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, सूचना के के लिए बेहतर कार्यक्रम योजना बना कर क्रियान्वित करनी चाहिए। किसी के साथ न्याय करने के नाम पर अन्य से अन्याय या योग्यता बुद्धि को नजर-अन्दाज कर स्तर के मापदण्डों को घटाना या दोहरे मापदण्ड अपनाना विनाशकारी घातक मार्ग है।

अतः आर्य समाज सभी बुद्धिजीवियों को आह्वान करता है कि राष्ट्रीय संकट में जबकि हम पंजाब, कश्मीर, असम में विघटन आतंकवादी समस्याओं से तथा देश मे साम्प्रदायिक संघर्ष जैसे दानवी चुनौती से जूझ रहे हैं आर्थिक क्षेत्र में विकास और महंगाई के संकटों मे घिरे हैं ऐसे में टकराव की और कलुषित क्षुद्र स्वार्थी राजनीति की शिकार आरक्षण रोग से देश को मुक्त कराने के लिए आगे आ कर न्यायोचित सही मार्ग के लिए संघर्ष का नेतृत्व करें। और राष्ट्र को इस मुठभेड़ हिंसक विषाक्त वातावरण से उबारने के लिए एकजुट होकर कार्य करें। और समाज हिंसक आन्दोलन का विरोधी है और आत्मदाह तथा आत्महत्या जैसे कायरता-पूर्ण कार्यों की निन्दा करता है। अहिंसक शान्तिपूर्ण गांधीवादी जन आन्दोलन से जनचेतना से और बुद्धि द्वारा विचारों से ही हर समस्या का समाधान सम्भव है। 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य' यह तथ्य है। श्रीकृष्ण की बुद्धि बल से ही पाण्डव संख्या शक्ति में कम हो कर भी महाभारत में विजयी रहे। विचार और नीति से ही सब कुछ पाया जा सकता है।

विषयों से अपने आपको बचाओ

ले०—स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

इन्द्रियाणां प्रसगेन दोषमृच्छत्य-
संशयम् ।
सनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धि
नियच्छति ॥
—मनु० 2193

आत्मा स्वभाव से दर्पण की तरह स्वच्छ है। जिस दर्पण को जितना अधिक स्वच्छ किया जाए उसी प्रकार अधिक सफाई के साथ उसमे वस्तुओं की शक्लें ठीक-ठीक दिखाई देंगी, या जिस प्रकार मैलापन उन पर आ जावे उसी प्रकार वस्तुओं के रूप दिखने के व दिखाने के अयोग्य हो जाता है, इसी तरह आत्मा की अवस्था है। यदि नियम आदि साधनों से आत्मा को साफ किया जावे तो उसकी बुद्धि ऐसी उग्र अर्थात् सूक्ष्म हो जाती है कि वह ब्रह्म-धाम तक जाने के योग्य बन जाता है। किन्तु अगर उस पर विषयों का मैल जम जावे तो उसमें वस्तुओं के यथार्थ रूप प्रकाश की शक्ति नहीं रहती। जीवात्मा का जीवन-उद्देश्य क्या है? इसका विचार उसे हर समय करना चाहिए, तब वह विषयों की दासता से बड़ी सुगमता से स्वतन्त्र हो सकता है। विषयों में फंसने का परिणाम ही सब प्रकार के दोष हैं। यह इसलिए कि विषयों में इन्द्रियों के द्वारा खिंचा हुआ पुरुष, विषयों को ही अपना आदर्श समझता है। यथार्थ में न केवल विषय, बल्कि इन्द्रियां भी जीवात्मा को ज्ञान पहुंचाने के लिए साधनमात्र का काम देती हैं। कल्पना करो कि एक बड़े योग्य पदार्थवेत्ता को एक बड़े रसक्रिया-भवन में नियत किया गया है। इसके आधीन न केवल इस भवन के सम्बन्ध में बहुत से सहायक दिए गए हैं, बल्कि उसकी अपनी सेवा के लिए भी दस-बारह सेवकादि नियत हैं। क्या बिना बताये वह पदार्थ ज्ञानी यह नहीं समझ सकता कि उसको पदार्थों का तत्त्वज्ञान प्राप्त करके दूसरों पर प्रकाश करने की इच्छा से उस रसक्रियाभवन में भेजा गया है? अगर फिर वह अपने वास्त-विक लक्ष्य को भुलाकर दिन भर सेवकों से आनन्द-लेने में ही फंसा रहे तो उसे कौन बुद्धिमान् समझेगा?

मनुष्य-रचना में परमात्मा ने अपनी अपार दया से बुद्धि का एक विशेष पद रखा है। शरीर पच्चीस वर्ष की आयु तक बढ़ता है और चालीस तक अपनी उन्नति को स्थिर रख सकता है, उसके पश्चात् ह्रास आरम्भ हो जाता है। यह अवस्था उन पुरुषों की है जो साधारणतः अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे पुरुष अन्त में सौ बरस में चल बसते हैं विशेष नेकी में पुरुषार्थ करने वाला पुरुष तीन सौ साल तक जीवित रह सकता है। इससे बढ़कर जीना मनुष्य की हिम्मत से बाहर है। परन्तु जो असाधारण रूप मे पाप का जीवन व्यतीत् करते हैं उन का जीवन बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है और उनके लिए युवावस्था और बुढ़ापे की आयु में कोई भेद नहीं रहता। चाहे कोई अवस्था हो मनुष्य ने अवश्य नाश होना है। यह बनावट अन्तिम समय तक स्थिर नही रह सकती। न शरीर, न इन्द्रिया रहने वाली हैं, हा, इन सबके जीवात्मा के अन्दर उपस्थित रहते हैं। ये इन्द्रिया किसी नियत सीमा तक उन्नति कर सकती हैं, उसके बाद उन्हें नीचे गिरना पड़ता है। किन्तु बुद्धि ही है जिसकी उन्नति मरणपर्यन्त बन्द नही होती और फिर मरने के पश्चात् दूसरे जन्म मे भी स्थिर रहकर आगे चलती है, इसलिए बुद्धि को उन्नत करना ही मनुष्य का परम धर्म है। इन्द्रियां और विषय आदि इस परम उद्देश्य के अन्दर केवल साधन हैं, परन्तु मनुष्य कैसा मूर्ख है कि इन साधनों का दास बन जाता है! आंखें हमे इसलिए दी गई हैं कि हम सारे ससार के रूप की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को समझ सकें, और उनका ज्ञान प्राप्त करके उसकी बुद्धि की उन्नति का साधन बनावें। परन्तु हममे से कितने मनुष्य हैं जो रूप के दास नहीं बन रहे? इसको छिपाने के लिए हजारों पाप-कर्म किये जाते हैं। इसी तरह प्रत्येक इन्द्रिय जीवात्मा की दास बनाई गई है। परन्तु वही दास जीवात्मा को अपने वश मे करके नाशवान विषयों के दास उसे बना रहे हैं। इसी कारण मनुष्य को ससार में क्लेश दिखाई देते हैं।

परमात्मा ने स्वभाव से इस ससार को स्वर्गधाम बनाया था। मनुष्य को कर्म-योनि देकर उस स्वर्गधाम से पूरा लाभ लेने के योग्य बनाया था हम मनुष्यों ने स्वयं इसे अपने कर्मों से नरकधाम बना रखा है। विषय-संग से ही सारे दोष पैदा होते हैं। जिसके सेवक उसके वश में हैं वही सुखी है। जिसके सेवक उसके वश मे हैं वही सुखी है। जिसके मालिक बने हुए हैं उससे बढ़कर कोई दुःखी नहीं है। अतः इन दोषों से छूटने के के लिए मनुष्य को विषयों से स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि इन्द्रियों का विषयों के साथ जो सम्बन्ध हो जाता है उसे मनुष्य छोड़ सकता है और इसलिए वह उसे फौरन छोड़ देवे। अगर यह सम्बन्ध टूट जावे तो प्रत्यक्ष ज्ञान ही पैदा नहीं होता। प्रत्यक्ष ज्ञान के न होने से अनुमान इत्यादि की समाप्ति हो जाती है। तब जब प्रमाण ही स्थिर न रहे तो प्रमेय वस्तु कैसे जानी जा सकती है? इन्द्रियों का विषयों के साथ सम्बन्ध बराबर रहता है और इन्द्रियों के सम्बन्ध से जीवात्मा इस जीवन में जुदा नहीं हो सकता। परन्तु हा, वह सम्बन्ध मालिक और सेवक का होना चाहिए। ऐसा न हो कि सेवक स्वामी बन जाए और स्वामी सेवक बन जायें।

प्रिय पाठकगण! हम सब अपने परम उद्देश्य को भूले हुए हैं। विषयों की वास्तविकता को न जानते हुए उनके भोग ही में सुख मान बैठ हैं। इसलिए हमारे पीछे बीसों दोष लगे हुए हैं और हमको पीडित कर रहे हैं। विषयो से छुटकारा प्राप्त करने का यत्न आज से ही प्रारम्भ कर दो जिससे जब जीवातम शरीर से पृथक् होने लगे उस समय हमारी कोई भी वासना सासारिक पदार्थों मे बाकी न रहे, ताकि हम अपने परम उद्देश्य का ध्यान करते हुए ही प्राण त्यागकर मुक्ति के भागी बन सकें।

शब्दार्थ—(इन्द्रियाणा) इन्द्रियों के (प्रसगेन) विषयों मे फसने से मनुष्य (असशयम्) निश्चय से (दोषम् ऋच्छति) दोष का भागी होता है। किन्तु (तानि एव तु) उन्ही इन्द्रियों को (संनियम्य) संयम करके (ततः सिद्धि) बाद मे सफलता को (नियच्छति) प्राप्त कर लेता है।

लेखक महानुभावों की सेवा में

हमारी आर्य मर्यादा के लेखक महानुभावों की सेवा मे प्रार्थना है कि वह अपने लेख हमें समय पर भेजने की कृपा करें। अब आर्य मर्यादा का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अक 20 दिसम्बर को प्रकाशित होगा। इस अक के लिए हमें जो लेख 13 या 14 दिसम्बर तक प्राप्त हो जाएगे वह आर्य मर्यादा मे प्रकाशित करने मे हमें आसानी होगी। क्योंकि एक सप्ताह पूर्व मैटर दे दिया जाता है। कई बार देरी से लेख आने के कारण हम उन्हे प्रकाशित करने मे असमर्थ होते हैं। अक्सर जब कोई विशेषांक छप जाता है तब कई उच्चकोटि के लेखकों के लेख आ जाते हैं जो हमे फिर साधारण अंको मे प्रकाशित करने पडते हैं और कई बार देर हो जाने कारण उन्हे प्रकाशित भी नही कर पाते। इस लिए हजारी सभी लेखक महानुभावो से प्रार्थना है कि वह अपने अमूल्य लेख शीघ्र अतिशीघ्र हमे भेजने की कृपा करें।

हमारी लेखक महानुभावों से यह भी प्रार्थना है कि वह साधारण अकों के लिए भी अपनी रचनाए हमें अवश्य भेजे किसी वेद मन्त्र की व्याख्या या वर्तमान समस्याओं का वेदानुसार समाधान विषय पर लेख भेज कर आर्य जनता का मार्ग दर्शन करें। इस के लिए हम आपके अभारी होंगे। —सह-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्य महोदय,
सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने एक कार्यकर्ता सम्मेलन करने का फैसला किया है जिस मे हम सब बैठ कर वर्तमान परिस्थितियों पर विचार कर सकें। दो बार इसकी तिथि निश्चित की गई परन्तु किसी न किसी कारण उसे स्थगित करना पड़ा। अब यह निर्णय लिया है कि एक दिन का कार्यकर्ता सम्मेलन रविवार 16 दिसम्बर को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सब्जी मण्डी लुधियाना मे होगा। आप से निवेदन है कि इस सम्मेलन के लिए अपनी आर्य समाज के कुछ प्रतिनिधि अवश्य भेजे। जितने आपने भेजने हैं इस का निर्णय तो आप स्वयं कर सकते हैं परन्तु वह पाच से अधिक नही होने चाहिए। इस सम्मेलन का वास्तविक उद्देश्य केवल यह है कि हम सब मिल कर पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करें और सोचें कि हमे क्या करना चाहिए। आपके जो भी प्रतिनिधि महानुभाव आए वह भी इस समस्या पर विचार करके ही आएं ताकि अपने सुझाव वहा रख सकें।

यह सम्मेलन 16 दिसम्बर को प्रातः 9 बजे प्रारम्भ हो जाएगा और हमारा यह प्रयास होगा कि 4 बजे तक समाप्त कर दें ताकि सब भाई समय पर अपने अपने घरों को पहुंच सकें। 9 बजे यज्ञ शुरू हो जाएगा और दस बजे के लगभग सम्मेलन प्रारम्भ हो जाएगा। आप से यह निवेदन है कि आपकी आर्य समाज से कितने प्रतिनिधि आने हैं इसकी सूचना आप श्री ओम प्रकाश जी पासी मैनेजर आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सब्जी मण्डी लुधियाना को अवश्य दे दें ताकि भोजनादि का प्रबन्ध करने में आसानी हो सके आशा है आप अपने प्रतिनिधि इस सम्मेलन में अवश्य भजेंगे। स्थिति अत्यन्त गम्भीर है इस पर गम्भीरतापूर्वक बैठकर विचार करने की आवश्यकता है।

भवदीय,

वीरेन्द्र	योगेन्द्र पाल सेठ	ब्रह्मदत्त शर्मा	अश्विनीकुमार शर्मा
सभा प्रधान	वेदप्रचार अधिष्ठाता	सभा कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

स्वास्थ्य के 27 नियम

—स्व० कविराज हरनाम दास, बी० ए०

यदि आपका स्वास्थ्य होगा तो आप अपने परिवार और स्वय अपनी भी भली प्रकार सेवा कर सकेगे। आपका जीवन सुखमय और आनन्दमय होगा। सच पूछो तो स्वस्थ मनुष्य अपने कारोबार मे अधिक सफल, अधिक निडर और जीवन का अधिक सुख उठाने वाले होते है। जब आप स्वस्थ और प्रसन्न मुख से मुस्कराएगे तो सारा संसार आपके साथ मुस्कराएगा। इस संसार मे स्वास्थ्य जैसी कोई वस्तु नही। इसलिए अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखे।

गत अनेक वर्षों मे मुझे लगभग पाच लाख रोगियो की चिकित्सा करने का अवसर मिला और इन सबके रोगो की खोज से मैं इस परिणाम पर पहुचा कि सब रोग स्वास्थ्य (सेहत) के किसी न किसी नियम का उलघन करने से ही होते है। आपके पथ प्रदर्शन करने के लिए मैं यहा स्वास्थ्य के 17 नियम लिखता हू और आपको विश्वास दिलाता हू कि इन पर आचरण करने से आप सब प्रकार के रोगो से बचे रहेगे।

स्वास्थ्य के 17 नियम

1 रात को शीघ्र ही सो जाया करे—10 बजे या अधिक से अधिक 11 बजे। प्रात जल्दी उठे—5 बजे या अधिक से अधिक 6 बजे।

2 प्रतिदिन दातुन और स्नान करें। तल की मालिश बहुत लाभदायक है।

3 प्रात खुली हवा मे सैर और व्यायाम करे। इस काम के लिए अवश्य समय निकाले।

4. आपका भोजन हल्का, शक्ति-प्रद तथा नियमित हो। खाना चबा-चबा कर खाए। चस्के या स्वाद की खातिर या किसी के अतिथि बन कर लज्जावश ऐसी वस्तुए न खाए, जिनकी बाबत आपको पता है कि वे हानि कारक हैं।

5. तम्बाकू और शराब से बचे।

6. चाय अच्छी नही, दूध अच्छा है। पीनी पडे तो बहुत थोडी और इसके के साथ मिठाई आदि कुछ न हो यदि हो तो बहुत थाडी।

7. सायकाल भोजन के बाद मील भर घूम आया करे। बहुत से रोग खाना खाते ही सो जाने से होते है।

8. मन मे कोई बुरा विचार न आने दे। इन्द्रियो को विषयो का दास न बनने दे।

9 चिन्ता मनुष्य को जीते जी जला देती है।

10. स्वास्थ्य एक विशेष सम्पत्ति है, जिसे कार्य की अधिकता या धनोपार्जन मे जुटे रहकर नष्ट नही करना चाहिए।

11. सप्ताह मे एक समय उपवास करे, कुछ न खाए।

12. पोशाक का स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पडता है। वस्त्र साफ-सुथरे, सादा और ऋतु के अनुकूल होने चाहिए। पहरावा फैशन और दिखावे के लिए नही होना चाहिए।

13. पुरुषार्थ करते जाये और अपने भाग्य पर सन्तुष्ट रहे। सन्तोष मे ही सुख है।

14. पति, पत्नी, माता, पिता, भाई बहिन, लडके, लडकिया, पडोसी—ये सब मधुर सम्बन्ध हैं। इनसे अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करे। सब कुछ आप पर निर्भर है। सबके साथ अच्छा बर्ताव करो और सदा प्रसन्न रहो। यह प्रसन्नता आपके लिए बहुमूल्य सिद्ध होगा।

15. मुस्कराओ, हसो और कहकहे लगाओ। समय पर सोओ, समय पर खाओ। हल्का भोजन हो, हल्का व्यायाम हो। कामकाज के साथ आराम भी अवश्य हो।

16 विवाहित जीवन मे सयम की आवश्यकता है। भोग-विलास से स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है।

17. रोग की उपेक्षा मत करो। अभी तो काम चल ही रहा है, ऐसा कहकर मत टालो। यह बडी भारी भूल है।

अच्छे स्वास्थ्य के लक्षण

अच्छे दात, अच्छी दृष्टि, अच्छी भूख, अच्छी नीद, ठीक शौच, चौडी छाती, सीधी कमर, अपनी आयु के अनुसार दूर तक बोझ उठा ले जाने की शक्ति, बिना थके पर्याप्त लिखाई-पढाई कर सकने की शक्ति, चुस्त बदन ठीक शरीर-भार, दिल-दिमाग-फेफडे-जिगर और सन्तानोत्पादक अगो के कार्य का ठीक होना, बुखार, खासी, जुकाम, कब्ज और सिरदर्द कभी न होना।

पंजाब में संस्कृत पर जजिया

पजाब सरकार इस समय तक पजाब मे हिन्दी के महत्व को करने के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयास करती रही है। अब उसने संस्कृत के विरुद्ध भी एक अभियान प्रारम्भ कर दिया है। इस बार मैट्रिक की परीक्षा मे बैठने वाले संस्कृत के विद्यार्थियो से 30% का अतिरिक्त शुल्क लिया गया है। यह क्यो लिया गया है यह तो सरकार ही जानती है। परन्तु किसी और विषय की परीक्षा मे बैठने वालो पर जुर्माना नही किया गया। यह तो एक प्रकार से संस्कृत के विरुद्ध जजिया है। और पजाब मे संस्कृत को समाप्त करने के लिए पजाब सरकार का एक प्रयास है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे संस्कृत प्रेमी किसी भी तरह सहन नही कर सकते। हम सब को मिलकर इसके विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए और यदि सरकार हमारी बात न माने और अपना यह आदेश वापिस न ले तो हमे एक सघर्ष के लिए भी तैयार रहना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजो से मेरा यह निवेदन है कि वह रविवार 2 व 9 दिसम्बरको अपने साप्ताहिक सत्सग मे संस्कृत रक्षा दिवस मनाए। और उस दिन पजाब सरकार से यह माग करें कि वह संस्कृत के विरुद्ध अपने इस आदेश को वापिस ले। उस दिन सब उन व्यक्तियो को भी जो संस्कृत की रक्षा करना चाहते है उन्हे इस सभा से बुलाया जाए उनका सम्बन्ध चाहे किसी संस्था या साम्प्रदाय से हो यह एक ऐसा सघर्ष है जो हम सबने मिल कर करना है इसलिए अधिक से अधिक व्यक्तियो का सहयोग इस मे लेने की आवश्यकता है। उसी दिन पजाब के राज्यपाल को तारें दी जाएं और उनसे कहा जाए कि संस्कृत के विरुद्ध अपना यह आदेश वापिस ले।

वीरेन्द्र (सभा प्रधान)

नवांशहर में जन कल्याण दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार आर्य समाज नवाशहर मे 25-11-90 को जन कल्याण दिवस बडे समारोह से मनाया। यज्ञ के यजमान सपत्निक श्री सुरेन्द्र कुमार जी मालिक किसान सीड स्टोर बने। उन्होने 30 स्वेटर वितरण हेतु दिए तथा श्रीमती आदर्श भल्ला धर्म पत्नि स्व० जितेन्द्र भल्ला ने 1100 रुपए दिए। 125 कम्बल तथा स्वेटर जरूरत मन्दो को बान्टे गए। आर्य समाज के अधिकारियो ने एक सप्ताह लगातार गली-गली मोहल्ला मोहल्ला घम कर जरूरतमन्दो का पता किया और उन्हे बुला कर श्रीमती आदर्श भल्ला के कर कमलो से यह गर्म वस्त्र दिए गए।

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होने लग-भग 60 हजार रुपए के कम्बल व स्वेटर इस बार आर्य समाजो को जरूरतमन्दो मे बान्टने के लिए दिए। सभा ने जितने गर्म कपडे हमे दिए है हम उससे दो गुणे अधिक बान्ट रहे हैं।

इस अवसर पर प्रि. एस. के. स्याल ने दो सारगर्भित कविताए पढी। प्रधान श्री वेद प्रकाश जी लडोइया तथा उप-प्रधान प० देवेन्द्र कुमार जी ने श्री सुरेन्द्र कुमार बब्बी, व श्रीमती आदर्श भल्ला का आर्य समाज का साहित्य तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया इसके साथ ही प्रिंसीपल एस० के० स्याल जी को उनकी हिन्दी के प्रति सेवाओ के लिए उन्हे भी स्मृति चिन्ह तथा साहित्य देकर सम्मनित किया।

स्त्री आर्य समाज चौक, पटियाला में वस्त्र वितरण समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार स्त्री समाज चौक पटियाला की सरक्षिका श्रीमति सत्यवती चोपडा ने कुष्ट आश्रम मे जाकर कुष्ट रोगियो का हालचाल पूछा तथा उन्हे आर्य समाज मन्दिर मे अपने सत्सग मे आमन्त्रित किया। 24-11-90 शनिवार को सत्सग के बाद उन्हे 15 नए कम्बल तथा 50 अन्य गर्म कपडे परिवारो से एकत्रित करके दिए गए। अपनी आवश्यकता की पूर्ति होने पर तथा सम्मान मिलने पर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए।

इसके अतिरिक्त स्त्री समाज पूर्णमासी तथा अमावस्या को मोहल्लो मे जाकर किसी भी सार्वजनिक स्थान पर हवन-यज्ञ तथा वेद-प्रचार का कार्य कर रही है। इसमे आस पास के सभी धर्मों के लोगो को आमन्त्रित किया जाता है जिसमे विचारों का आदान प्रदान होता है। सभी को यह समझाने का प्रयत्न किया जाता है कि आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म के वास्तविक रूप को ही मानता है। 3-11-90 को आरक्षण के विरोध मे तथा राम जन्म भूमि के सघर्ष मे शहीद होने वालो की आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई थी तथा देश मे शान्ति के लिए गायत्री यज्ञ किया गया था।

—[illegible] मन्त्राणी

प्रशासनिक अत्याचार सम्बन्धी तथ्यों का संग्रह

भारत के संविधान में नागरिकों को देश के एक भाग से दूसरे भाग में आने जाने, अपने विचार व्यक्त करने अपनी-अपनी मान्यताओं के साथ पूजा पाठ करने आदि के मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। इन अधिकारों का हनन वर्ष 1990 के अक्तूबर तथा नवम्बर महीनों में जितने व्यापक और उग्र रूप से श्री राम कार-सेवकों तथा साधारण नागरिकों के साथ शासन द्वारा हुआ है। वह सभी के लिए चिन्ता का विषय है। लगातार कई दिनों तक घोषित तथा अघोषित कर्फ्यू लगाकर समस्त नागरिकों को भीषण कष्ट उठाने को बाध्य किया गया। कर्फ्यू उल्लंघन के नाम पर अनेक संभ्रान्त व निर्दोष नागरिकों का उत्पीड़न किया गया। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश तथा देश के अनेक नगरों इत्यादि की जनता को एक प्रकार से कृत्रिम कारावास में बन्द कर दिया गया। इस बात का भी ध्यान नहीं रखा गया कि नागरिकों को जीवन निर्वाह के लिए दैनिक आवश्यक वस्तुएं, दूध, तरकारी, दवा आदि भी कैसे उपलब्ध होगी और उनके दैनिक जीवकोपार्जन की क्या व्यवस्था होगी। अनेक विद्यार्थियों आदि को परीक्षाओं से वंचित किया गया। कृषकों, व्यापारियों, श्रमिकों, व्यावसायियों तथा विभिन्न स्तर के कर्मचारी एवं अधिकारी वर्गों के हितों की अपूर्ण क्षति हुई। समाचार पत्रों तथा संवाददाताओं को भी इस दमनचक्र से नहीं बख्शा गया। उत्तर प्रदेश शासन ने जिस बर्बरता का परिचय दिया, निहत्थे तथा अहिंसक श्रीराम कार सेवकों पर जिस निर्ममता से अश्रु गैस का प्रयोग तथा लाठी चार्ज किया और गोलियों की अन्धाधुन्ध वर्षा की, शवों को पोस्टमार्टम कराए बिना गायब करा दिया, अथवा नदी में फेंकवा दिया, उसकी मिसाल स्वतन्त्र भारत के इतिहास में नहीं मिलती।

इन अत्याचारों तथा अवैध दमन के तथ्य संग्रह करने के लिए केन्द्रीय श्री राम कार सेवा समिति ने न्यायमूर्ति श्री गोपीनाथ जी (उ० प्र० जस्टिस इलाहाबाद हाईकोर्ट) की अध्यक्षता में एक जांच समिति की नियुक्ति की है। यह समिति अपना कार्य एक महीने के भीतर पूरा करने का प्रयास करेगी। अतः सभी नागरिकों एवं पाठकों से अनुरोध है कि उनकी अथवा उनके मित्रों की जानकारी में राम भक्तों तथा साधारण नागरिकों के साथ देश में तथा विशेषतः अयोध्या व उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में शासन तन्त्र एवं शासन द्वारा प्रेरित अराजक तत्त्वों द्वारा दुर्व्यवहार, अनुचित दमन, हिंसा, हत्या, नागरिकों के मौलिक अधिकारों के हनन तथा अन्य किसी गैर कानूनी कार्यवाही के जो तथ्य हों उनका (यथासंभव प्रमाणों सहित) तुरन्त इस पते पर भेजने की कृपा करें—

केन्द्रीय श्रीराम कार सेवा समिति
संकट मोचन आश्रम
(श्री हनुमान मन्दिर)
सैक्टर—6, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली—110022
दूरभाष : 678992

प्रजातन्त्र की रक्षा तथा स्वस्थ परम्पराओं को बनाए रखने की दृष्टि से इन तथ्यों का एकत्रित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इनके आधार पर आवश्यक वैधानिक कार्यवाहियां की जा सकेंगी तथा पीड़ित व्यक्तियों को आर्थिक सहायता एवं क्षतिपूर्ति की व्यवस्था किए जाने का प्रयास किया जायेगा। जनता द्वारा प्राप्त सूचना जितनी तथ्यपूर्ण, प्रमाणिक, नाम, पता, स्थान, पीडक अधिकारी का नाम व पद (यदि ज्ञात हो तो) का विवरण जितना विस्तृत होगा, समिति को अग्रिम कार्यवाही सुनिश्चित करने में उतनी ही अधिक सुविधा होगी।

—श्रीशचन्द्र दीक्षित
उपाध्यक्ष—विश्व हिन्दू परिषद

मा० दिलाराम जी नहीं रहे।

आर्य जगत को बड़े दुःख के साथ सूचित किया जा रहा है कि आर्य समाज रोपड़ के कर्मठ कार्यकर्त्ता, समाज सुधारक मा० दिलाराम जी अचानक दिल का दौरा पड़ने से 1-11-90 को अकाल मृत्यु का शिकार हो गए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मास्टर जी कई दशकों से आर्य समाज की निःस्वार्थ सेवा कर रहे थे। उनके चले जाने से हुई आर्य समाज की क्षति का अनुमान लगाना मुश्किल है। आप एक प्रसिद्ध डाक्टर भी थे तथा रोपड़ भिखारी सभा के प्रधान भी थे। आप नगरपालिका के सदस्य तथा पालिका प्रधान भी रह चुके थे। आर्य कन्या पाठशाला की प्रबन्धकर्ती सभा के एक प्रतिष्ठित सदस्य भी थे। इसके बावजूद भी आप बहुत ही सादा तथा नम्र थे।

गत 16-11-90 को आप का अन्तिम शोक दिवस सम्पन्न हुआ इसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थनाएं व दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित की गई।

—योगेश आ० स० रोपड़

विदेशी और विधर्मी लोगों ने हमारे इतिहास को बिगाड़ दिया

हिमाचल के मुख्यमन्त्री शान्ता कुमार से इतिहास की पुस्तकों में संशोधन की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विशेष पत्र

हिमाचल प्रदेश के स्कूल शिक्षा बोर्ड की छठी कक्षा में इस समय प्राचीन भारत नामक जो पुस्तक पढ़ाई जा रही है, उसमे वैदिक युग का जीवन नामक अध्याय में गोमास तथा नशीले पदार्थों के उपयोग का वर्णन करते हुए लिखा है—"विशिष्ट अतिथियों के लिए गोमांस परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाना था। मांस खूब खाया जाता था। मधु और सुरा जैसे पेय भी पीते थे।"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री शान्ता कुमार को विरोध प्रकट करते हुए लिखा है कि विदेशी और विधर्मी लोगों ने हमारी गुलामी की कड़ियों को मजबूत करने के लिए इस प्रकार के बीभत्स वर्णन लिखकर आर्य (हिन्दू) जाति के धार्मिक विश्वासों पर कुठाराघात किया था। लेकिन आज स्वतन्त्रता के 44 वर्ष बाद भी हमारी नई पीढ़ी को यही प्रसग पढाए जावें यह बड़ी ही लज्जा की बात है। स्वामी जी ने मुख्य मन्त्री जी से माग की है कि उक्त पुस्तक मे तुरन्त संशोधन कर दिया जाये अन्यथा सरकार उसे जब्त करले।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिवरात्री पर ऋषि मेला 12, 13, 14 फरवरी 1991 को समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप तथा आपकी आर्य समाज के सदस्य टंकारा ऋषि मेले में चलें। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप अपने साप्ताहिक सत्संग मे इसकी सूचना दे दें कि वे सभी यह तिथियां अंकित कर लेवें और जो लोग टंकारा रेल द्वारा आना चाहें उनके आने जाने की सीटें उनकी स्वीकृति आने पर सुरक्षित करवा दी जाएंगी। यदि आप की आर्य समाज अपनी बस लेकर टंकारा चलना चाहे तो भी आपका स्वागत है। उनके ठहरने तथा भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज के अधिकारियों एवं सदस्यों की सूची हमे भिजवाने की कृपा करें ताकि हम उन्हें टंकारा ऋषि मेले के लिए अपनी ओर से आमन्त्रित कर सकें। यदि सदस्यों के नाम पतों की सूची न हो सके तो अपने अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के नाम पतों की सूची अवश्य भिजवाने की कृपा करें। यह सूची आप अधिक से अधिक 15-12-90 तक अवश्य भिजवा देवें। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूगा।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

वानप्रस्थियों के लिए आवश्यक सूचना

"महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, रातानाडा, जोधपुर में स्थित है, यह भवन स्वामी दयानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक भवन है। इस भवन में आर्य विचारधारा के वानप्रस्थियों एवं सन्यासियों के आवास व भोजन की निःशुल्क व्यवस्था है। जो भी वानप्रस्थी या सन्यासी यहा रहना चाहें, कृपया मन्त्री से पत्र व्यवहार करे या रहने हेतु सीधे पहुचे।

—जगदीशसिंह आर्य मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अर्थात् "ज्योति जिस में है, वह ज्योत-रूप परमात्मा" ऐसा अर्थ है। मूर्तिपूजा का पागलपन लोगों में फैला हुआ है, इसे क्या करना चाहिये। यह एक प्रकार की जबरदस्ती है। मूर्तिपूजा का आडम्बर जैनियों से हिन्दू लोगों ने लिया है।

यत्रनान्यत पश्यति नान्यच्छृणोति। नान्यद्विजानाति स भूमा परमात्मा॥

वह अमृत है और वही सबके उपासना करने योग्य है और उस से जो भिन्न है वह सब झूठ है, वह अपना आधार नहीं है।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

(उपदेश मंजरी से उद्धृत श्री 108 दयानन्द सरस्वती जी का प्रथम व्याख्यान)

रोपड़ में पत्र पाठन प्रतियोगिता

गत दिनों रोपड के सामाजिक तथा सास्कृतिक सगठन आर्य युवा दल द्वारा पत्र पाठन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता आर्य कन्या पाठशाला मिलमिल नगर में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता मे शहर के छः हाई स्कूलों ने भाग लिया।

पत्र पाठन प्रतियोगिता के विषय थे :—

1. दहेज-कुप्रथा
2. नशा—धीमा आत्म दहन
3. विद्यार्थी चरित्र—गिरावट की ओर।

सभी स्कूलों की टीमे अच्छी तैयारी के साथ आई थी।

समारोह की अध्यक्षता लायन्स क्लब रोपड़ के प्रधान श्री रणवीर गुप्ता ने की। समारोह के समय आयोजन के लिए 'आर्य युवा दल' के सदस्यों को बधाई देते हुए श्री रणवीर ने कहा, समाज में व्याप्त दहेज तथा बुराइयों के उन्मूलन के लिए युवाओं को ही आगे आना होगा तथा उन्हें रास्तों की मुश्किलों तथा बाधाओ से घबराना नहीं चाहिए बल्कि दृढता से इनका मुकाबला करना चाहिए।

इसी अवसर पर बोलते हुए आर्य युवा दल के प्रधान श्री योगेश ने बताया कि ऐसी प्रतियोगिताएं बच्चों तथा युवाओं में चेतना पैदा करती हैं। बच्चे कल के कर्णधार हैं। इसलिए इन्हें सभ्य तथा सुसंस्कृत बनाना हमारा फर्ज हैं।

संकलन—योगेश प्रधान
आर्य युवा दल रोपड़

आर्य समाज दानिशमन्दा जालन्धर का वार्षिकोत्सव

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर का वार्षिकोत्सव अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस के रूप में 17-12-90 से 23-12-90 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस उत्सव में पधार कर कृतार्थ करें।

—फकीर चन्द मन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर लाखों की संख्या में आर्य जनता के दिल्ली पहुंचने की आशा

नई दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक विज्ञप्ति के अनुसार आगामी 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को विशाल पैमाने पर आयोजित करने की सभी बुनियादी तैयारियां की जा चुकी हैं। लाखों की संख्या में देश-विदेश से आर्य जनता के दिल्ली पहुंचने की आशा है, जिसके लिए दिल्ली प्रशासन के 180 विद्यालयों तथा लगभग 100 आर्य समाज मंदिरों में आगन्तुकों के आवास की व्यवस्था हो चुकी है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के कार्यकर्त्ता दिल्ली के मुख्य रेलवे स्टेशनों, अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डों आदि पर सम्मेलन मे आने वाले लोगों का स्वागत तथा सम्मेलन स्थल के लिए मार्ग दर्शन करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश के उच्च नेता तथा महानुभाव भी भाग लेंगे। सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डा० कर्ण सिंह जी करेंगे। एक अन्य समारोह में जम्मू-काश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन के भाग लेने की भी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूची आर्य जनता से अपील की है कि इस विशाल कुम्भ में वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार को एक नई गति देने का संकल्प लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

—रविन्द्र
प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 22 अंक 38, पौष—1 सम्वत् 2047 तदनुसार 13/16 दिसम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये प्रति अंक 60 पैसे

जीवन और उसकी सफलता

यजुर्वेद के अन्तिम (चालीसवें) अध्याय में जीवन की बहुत सी समस्याओं की ओर संकेत है, और उन पर प्रकाश भी डाला है है। इस अध्याय में केवल 17 मन्त्र है, परन्तु जो ज्ञान इनमें भरा है, उसकी मात्रा इस अध्याय को बहुत महत्वपूर्ण बना देती है। उपनिषदों में वेद के कुछ भागों पर व्याख्यान हैं। कहीं कही उनमें वेद मन्त्र भी उद्धत हुए हैं, परन्तु बहुधा वेद मन्त्रों के आशय पर आचार्यों ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय की विशेषता यह है कि किसी आचार्य ने अपनी शिक्षा और पाठन के लिए केवल इन मन्त्रों पर ही निर्भर किया, और अपनी ओर से कोई व्याख्या नही की। इसलिए यह अध्याय भी एक उपनिषद गिना जाने लगा, और, अपने प्रारम्भिक शब्द 'ईश' पर, ईशोपनिषद' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उपनिषदों के रचयिता आचार्यों के नाम बहुधा अपरिचित ही हैं। इस आचार्य ने तो वेद के अध्याय को ही अपने व्याख्यानों का आधार बनाया था; इसके नाम का पता न होना साधारण बात है। स्वय वेद का अध्याय होने का कारण ईशोपनिषद' सर्वोपरि है। छापा न होने और बहुत काल बीत जाने के कारण, ईशोपनिषद के पाठ में, जैसा यह हमे वर्तमान में मिलता है, वेद मन्त्रों के पाठ से थोड़ा सा भेद है। इसे हम यों बयान कर सकते हैं:—

(क) वेद मन्त्रों की संख्या 17 है; उपनिषद में 18 मन्त्र है।

(ख) वेद के 9-11 और 12-14 मन्त्रों का क्रम उपनिषद में बदला हुआ है। इन मन्त्रों का विषय एक ही है, और इसलिए इस क्रम-भेद का कुछ महत्व नहीं है।

(ग) 7 में से 4 मन्त्रों—6, 15, 16, 17 में कुछ पाठ भेद हो गया है। चारों स्थानों पर मन्त्र के प्रथम भाग मे भेद नहीं, दूसरे मे है।

(घ) वेद के मन्त्र 15, 16, 17, उपनिषद में 17, 18. और 15 मन्त्र बने हैं। उपनषिद का 16वा मन्त्र वेद में नहीं, वेद मन्त्र 17 के कुछ शब्द इसमें आते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वेद के मन्त्र 17 का कुछ विस्तार करके उपनिषद्कार ने 15 और 16 दो मन्त्र बना दिए हैं।

जैसा ऊपर कहा गया है, यह भेद बहुत मामूली है। नीचे जो कुछ लिखा जा रहा है उसका आधार मूल पाठ ही है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च
जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध:
कस्य स्विद्धनम्॥
कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतं
समा:।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म
लिप्यते नरे॥
असुर्या नाम ते लोका अन्धेन
तमसावृता:।
तांस्ते प्रत्याभि गच्छन्ति ये के
चात्महनो जन:॥

(1—6)

1. इस चलायमान संसार मे जो कुछ चलता हुआ है, वह सब ईश्वर से आच्छादित है।'

'संसार को भोगो, परन्तु ईश्वर की देन समझ कर भोगो। किसी अन्य पुरुष के धन का लालच मत करो।'

2. 'संसार में कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करो, तभी तुमसे कर्म का लगाव छूट सकेगा। इसके अतिरिक्त कर्म-बन्धन से छूटने का अन्य उपाय नहीं है।'

3. जो लोग आत्मघात करते हैं वे शरीर छोड़ने पर ऐसे लोकों मे जाते हैं, जो प्रगाढ अन्धकार से ढके हुए है, और असुरों के योग्य हैं।

हितकारी मनोवृत्ति

हमारा जीवन शून्य मे व्यतीत नही होता। हम एक वातावरण में जन्म लेते हैं, उसी में जीवन व्यतीत करते हैं; और समय आने पर समाप्त हो जाते हैं। यह वातावरण निरन्तर हम पर क्रिया करता है, और हम प्रतिक्रिया करते है। इस क्रिया और प्रतिक्रिया की कहानी ही मानव की जीवन-कथा है। जीवन व्यक्ति और उसके वातावरण मे अनुकूलता का ही नाम है। यह सम्बन्ध व्यक्ति और वातावरण के एक भाग मे होता है, और वह भाग भी बदलता रहता-है। इसलिए मनुष्य का आचरण भी बदलता रहता है। आचरण की नीव आचार व चरित्र पर होती है, और ज्यों-ज्यों समय बीतता है, यह चरित्र एक निश्चित आकार ग्रहण करता जाता है। इसे हम व्यक्ति की मनोवृत्ति का नाम भी दे सकते हैं। वह पदार्थों और घटनाओ को एक विशेष दृष्टिकोण से देखने लगता है। व्यक्ति के जीवन मे उसका दृष्टिकोण सबसे बडे महत्व की चीज है।

पहले मन्त्र में ही उस दृष्टिकोण की ओर सकेत किया गया है, जिसे जीवन को सफल बनाने के लिए अपनाना चाहिए।

हमारा वातावरण क्या है? प्रथम तो प्रकृति की दुनियां है, जिससे हम घिरे हैं। इसमें एक विशेष भाग अन्य मनुष्यों का है, जिनके साथ हम रहते हैं। हमारा सारा जीवन समाज मे व्यक्ति होता है। जिस अनुकूलता का ऊपर जिक्र किया गया है, उसका एक बड़ा भाग तो अन्य मनुष्यों के सम्बन्ध में ही होता है। विचार करने पर पता लगता है कि प्रकृति की दुनियां स्वाधीन नहीं, वरन् नियम के अधीन चलती है। मनुष्य भी पूर्ण रूप से स्वाधीन नहीं। इन दोनों की बाबत विचार करने पर हमारा ध्यान एक तीसरी सत्ता की ओर जाता है, जिस पर यह दोनों आश्रित हैं। वह सत्ता, जो सबका सहारा है, ईश्वर है। जब हम मानव के ठीक दृष्टिकोण की बाबत विचार करते हैं, तो वास्तव में हमारे समाने तीन प्रश्न होते हैं।

1. परमात्मा की ओर हमारी वृत्ति कैसी हो?

2, प्रकृति की दुनिया की ओर कैसी हो?

3. अन्य मनुष्यो के सम्बन्ध मे यह वृत्ति कैसी हो?

पहले मन्त्र मे, इन तीनों प्रश्नों का उत्तर इसी क्रम मे दिया गया है। परमात्मा के सम्बन्ध मे समझने की प्रमुख बात तो यह है कि वह सदा हमारे पास है। जहा कहीं हम हों, वह हमारे साथ है। उसकी सहायता की आवश्यकता हो, तो उस तक पहुंचने के लिए कही भी जाना नही होता। कोई बुरा काम उससे छिप कर करना चाहे, तो यह सम्भव ही नही। जहा दो पुरुष एक दूसरे के कान मे कुछ कहते हैं, वहां उनके पास एक तीसरा, ईश्वर, विद्यमान होता है, कुछ लोग समझते हैं कि यह पृथ्वी एक कारागार है, जहा हमे बहिश्त से निकाल कर फेंका गया है; और यह परमात्मा के निवास के योग्य नहीं। वह परमात्मा को किसी आसमान या अर्श पर बिठाते हैं, हम से बहुत दूर। इसका प्रभाव मनुष्य के आचार और आचरण पर बहुत पड़ा है। वेद की शिक्षा के अनुसार सारा संसार ईश्वर से आच्छादित है। यह विश्वास आस्तिक भाव की जान है, यही धर्म की नींव है।

ससार की ओर हमारा भाव क्या होना चाहिये? (वेदोपदेश से)

इस प्रश्न के दो परस्पर विरोधी उत्तर दिए जा सकते हैं— (क्रमश:)

अयोध्या में रामजन्म मन्दिर या मस्जिद

—ले० श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद

सन् 1986 में हमने एक अभ्यर्थना बिरादराने वतन मुसलमान बन्धुओं के प्रति इन शब्दो मे "मुसलमान बन्धुओ विचार करो, अयोध्या मे रामजन्म मन्दिर या मस्जिद" प्रकाशित कर प्रसारित की थी। हमारे इस निवेदन पर सद्भावना से विचार करके किसी मुसलमान नेता अथवा विद्वान ने कोई न्याय नैतिकता और सद्भावना का वक्तव्य तो क्या देना था ? हां, एक धमकी भरा पत्र हमे प्राप्त हुआ, जिसके अन्त में लिखने वाले ने अपने हस्ताक्षर और पते के स्थान पर "बाबरी मस्जिद का एक सिपाही" केवल मात्र इतना लिखा था।

इस अभ्यर्थना को हमने एक लघु पुस्तक रूप मे प्रकाशित कर प्रसारित किया था, जिसमें चार लघु लेख थे। उनमे प्रथम श्री अमरेश आर्य का था, जिसमे उन्होंने अयोध्या के उस भवन की स्वय निरीक्षण की हुई जानकारी दी थी। श्री अमरेश आर्य का जन्म दक्षिण भारत के एक मुस्लिम परिवार मे हुआ था। आपका जन्म का नाम श्री अमीर बेग था तथा शिक्षाके क्षेत्र मे उन्होंने "अफजल उल्मा, एम० ए०, पी० एच० डी० की उपाधियां प्राप्त की थी।

सन् 1980 मे तामिलनाडू के मीनाक्षीपुरम् ग्राम के दलित बन्धुओं को बलात् इस्लाम में दीक्षित किये जाने के अवसर पर आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले (अब श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) का वहां भाषण सुना, उसे सुनने के पश्चात् आपने वैदिक सिद्धान्त ग्रंथों का अध्ययन किया, उससे आपके विचार परिवर्तित हुए। उसके पश्चात् आप 21 दिसम्बर, 1980 को दिल्ली आये तथा रामगोपाल जी शालवाले से मिल कर अपने विचार परिवर्तन की बात कही और वैदिक धर्म मे दीक्षित होने की इच्छा प्रकट की। 23, दिसम्बर को आपको वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई, तब आपने अपना जन्म नाम परिवर्तित कर अमीर बेग के स्थान पर अमरेश आर्य स्वीकार किया। 25, दिसम्बर, 1980 को वैदिक धर्म मे दीक्षित होने के 2 दिन बाद आपने प्रथम बार आर्यो की उस महती सभा मे...जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द दिवस के अवसर पर गांधी मैदान दिल्ली मे मेरी ही अध्यक्षता मे आयोजित की गई थी एक संक्षिप्त वक्तव्य दिया था।

श्री अमरेश आर्य के उक्त लेख को हम ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं। यह एक अहले कमीशन की रिपोर्ट से कुछ कम नहीं है। हमारा विश्वास है कि बुद्धिमानों को इस से उक्त भवन की वास्तविकता का पता लगेगा। लेख निम्नांकित है।—

रामजन्म भूमि मस्जिद नहीं हो सकती "प्रमाणित आधार"

आज कल रामजन्म भूमि के सम्बन्ध में उसको मस्जिद सिद्ध करने हेतु तथा मस्जिद का रूप देने के लिए बड़े पैमाने पर कोशिशे चल रही हैं। हगामी जुलूस, जेल भरो आन्दोलन निरन्तर क्रियाशील है। साधारण जनता अधिकांशत: शिक्षित नही होती और जो मजहब के बहुत बड़े दिलदादा लोग हैं, ऐसी अशिक्षित और सीधी-सादी जनता को रामजन्म भूमि को मस्जिद का रूप दिलाने के लिए अपना कीमती खून बहाने को भड़का रहे हैं। हजारों मुस्लिम नवजवानों को अपने खून से हस्ताक्षर कराते हुए एक महीना पूर्व हैदराबाद मे बाबरी सेना के नाम से एक सेना भी तैयार की गई है। इन सब हालतों को देखते हुए हमें यह भय और आशंका है, कि यह बाबरी मस्जिद की समस्या हमारे पवित्र देश मे एक नई बर्बरी समस्या को जन्म देने जा रही है।

मैंने 24, अप्रैल, 1986 से लेकर 28 अप्रैल, 1986 तक अयोध्या तथा फैजाबाद मे रहकर" कथित बाबरी" मस्जिद, वास्तविक रूप में श्री रामचन्द्र जी का जन्म स्थान है, का बड़े गम्भीर रूप से अध्ययन किया है और उसी के आधार पर यह रिपोर्ट प्रकाशित करने को दे रहा हू।

रामजन्म भूमि पर किसी आधार से एक मस्जिद का रूप लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि—

1. इस इमारत का रुख स्वयं बता रहा है कि सचमुच यह इमारत मस्जिद के रूप में निर्मित ही नहीं है, क्योंकि इसमे "मेहराब" (वह स्थान जहां पर नमाज मे इमाम साहब खड़े होते हैं) का रुख ठीक तरह से "किबला" मक्के का वह घर जिस की तरफ नमाजी को नमाज के समय अपना मुंह करना अत्यन्त आवश्यक है) की ओर नहीं है।

2. इस इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारों पर जो दस्तकारी पाई जा रही हैं, वह किसी भी रूप में नहीं पाई जातीं, यह दस्तकारी तो सिर्फ हिन्दू मन्दिरों में पाई जाती है।

3. इस इमारत के आस पास "वजू" करने के लिए वह स्थान नहीं है और न ही ऐसे स्थान का कोई निशान है।

4. इस इमारत के आस पास की आबादी, उपासना-गृह तथा अन्य इमारतें यह साबित कर रही है कि यहां पर किसी मस्जिद का वजूद ही नहीं था।

5. इस इमारत में लगे पत्थर मे खुले रूप में नक्श किया गया है कि "इस इमारत को मस्जिद में रूपान्तर करने से पूर्व यह ऐसा उपासना गृह था, जहां पर श्री राम, सीता और हनुमान की पूजा की जाती थीं। किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिए इस इमारत के ऊपरी हिस्सों मे थोड़ा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है।"

6. इस इमारत में पाई जाने वाली दस्तकारियों और अन्य तमाम प्रमाणों से यह साफ जाहिर है कि बाबरी मस्जिद का नाम जिस इमारत को दिया गया था वह वास्तव मे एक मन्दिर था, जो जबरदस्ती मस्जिद मे रूपान्तरित किया गया है। इसलामी शरीयत के प्रमाणिक पुस्तकों में लिखा गया है कि जबरदस्ती कब्जा किये हुई इमारत को यदि मस्जिद में रूपान्तरित किया जाये तो ऐसे मस्जिद में नमाज पढ़ना निषेध है। ऐसी इमारत को किसी भी आधार पर मस्जिद की पवित्रता नही दी जायेगी। (आलमगीरिया में मुजमरात व बहरुल शईक के हवाले से)।

इसलामिक शरीयत के नियमों के अनुसार "बाबरी मस्जिद" का दावा जिस इमारत पर किया जा रहा है वह मस्जिद बन ही नहीं सकती। यदि किसी के अन्दर यह हिम्मत है कि वह खुले मन्च पर इस इमारत को मस्जिद के रूप में सिद्ध कर सके तो हमारी तरफ से उसे खुला चैलेन्ज है, कि वह आये और अपनी सफाई जनता के सामने रखे। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक साधारण मुस्लिम जनता को मजहब नाम से भड़काना एक ऐसा अत्याचार है जिसको न खुदा, न रसूल और न ही नेक लोग कभी पसन्द करते हैं।

इस लेख में श्री अमरेश आर्य द्वारा इस प्रकार खुले मन्च पर सार्वजनिक रूप से अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए किसी मुस्लिम नेता तथा विद्वान का—वह इमाम अब्दुला बुखारी हों या सैयद शहाबुद्दीन—इस चैलेन्ज को स्वीकार न करना और बाद में इमाम बुखारी का यह कहना कि न्यायालय का निर्णय भी नहीं मानेंगे, पूरी हठधर्मी और दुराग्रह है।"

इस लेख को उद्धृत करने के पश्चात उसी अभ्यर्थना मे छपे श्री सीताराम गोयल नई दिल्ली के "रामजन्म भूमि की ऐतिहासिकता" लेख की भी हम इतनी सी चर्चा कर देना उचित समझते हैं कि कि उन्होंने अपने लेख में "दी रिपोर्ट आफ दी आर्क्योलौजीकल सर्वे आफ इन्डिया न्यू सीरीज वोल्यूम—1" की पृष्ट-6-68 पर अंकित की चर्चा की है तथा "दी इम्पीरियल गजेटियर आफ इन्डिया, यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ इन्डिया, यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा ऐण्ड अवध वोल्यूम—1" में लिखे हुए रामकोट अथवा राम का किला के एक कोने पर वह पवित्र स्थान है, जहां उस वीर नायक का जन्म हुआ था उसका अधिकांश भाग बाबर द्वारा निर्मित मस्जिद ने घेर लिया है। पुराने मन्दिर के कुछ खण्डहर और एक छोटे से मन्च का बाहरी भाग तथा मूर्तिगृह जन्म स्थान के रूप में विद्यमान है।" (पृ० 388) पर यह वर्णन उद्धृत किया गया है।

गुरुकुल बठिण्डा द्वारा धर्म प्रचार

19-11-90 गिदड़बाहा मण्डी में मार्कफैड कार्यालय के भवन में हवन यज्ञ किया। श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी का प्रवचन हुआ।

× × ×

21-11-90—श्री सोहन लाल जी गोयल मानसा मण्डी वालों ने अपने प्रिय पुत्र श्री विनोद कुमार जी गोयल (एम०ए० का विद्यार्थी था—पिछले वर्ष उग्रवादियों की गोलियों से शहीद हुआ) की आत्मा की शान्ति के लिए अपने परिवार में हवन कराया।

× × ×

25-11-90—ट्रक यूनियन मोनियाना मण्डी ने प्रति वर्ष की भान्ति इस बार भी ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी द्वारा हवन यज्ञ कराया—इस अवसर पर 101/- रु० आर्य समाज मोनियाना एवं 101/- रु० आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिंडा को दान दिया गया।

सम्पादकीय—

क्या हिन्दू होना भी अपराध है-2

आज एक शब्द जो धर्मनिरपेक्षता का दावा करने वाले लोगों की नुकता-चीनी का शिकार हो रहा है, वे हिन्दुत्व है। मैं पहले भी लिख चुका हूं कि धर्म निरपेक्ष वो होते हैं जिन का कोई दीन-ए-अमान न हो, दूसरे शब्दों मे पे पैंदे के लोटे। यह लोग हिन्दुत्व के विरुद्ध इसलिए हैं क्योंकि इनकी सम्मति में यह सम्प्रदायिकता का दूसरा रूप है यदि उनसे पूछा जाए कि सम्प्रदायिकता क्या है तो उनका उत्तर होगा हिन्दुत्व और यदि पूछा जाए कि हिन्दुत्व क्या है तो वह कहेंगे साम्प्रदायिकता। इन परिस्थितियों का सबसे दिलचस्प पक्ष यह है कि जिन व्यक्तियों को हिन्दुओं में साम्प्रदायिकता दिखाई देती है उन्हें न तो मुसलमानों मे यह दिखाई देती है, न सिखों मे, न किसी दूसरे सम्प्रदाय मे। उनकी दृष्टि में आर्य समाजी सबसे बड़े साम्प्रदायिक हैं।

कई बार मैं यह सवाल कर चुका हूं कि गांधी जी लगभग 50 वर्ष हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई कहते रहे फिर भी क्या कारण है कि मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या अपने आपको एक अलग कौम और अपने लिए एक अलग देश मागने को तैयार हो गई। जहां तक सिखों का सम्बन्ध है उनके तो गुरु साहिबान भी अपने आपको हिन्दू ही कहते थे। गुरु तेग बहादुर ने तो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था और गुरु गोबिन्द सिंह ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए खालसा पथ को सजाया था। वह तो कहते थे कि

"सकल जगत में खालसा पंथ गाजे,
जगे धर्म हिन्दू जगत द्वन्द भागे।"

गुरु महाराज खालसा पंथ और हिन्दू धर्म दोनों को एक ही स्तर पर रखते थे। यदि वह चाहते थे तो खालसा पंथ गाजे तो साथ ही चाहते थे कि हिन्दू धर्म भी जागे।

परन्तु आज न तो हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई का नारा सुनाई देता है, न हिन्दू सिख भाई-भाई का। पंजाब में जो कुछ आज हो रहा है उसके पश्चात तो हिन्दू सिख भाई-भाई के आदर्श का कोई महत्त्व नही रहता। मैं यह जानता हू कि सब सिख इस विचार के नहीं है परन्तु यह भी एक वास्तविक स्थिति है कि जो आज गोलियां चला रहे हैं वो भी सिख होने का दावा करते हैं वह भी आज उसी प्रकार आज अपने लिए अलग देश माग रहे हैं जिस प्रकार कभी मुसलमान मांगते थे और जो सिख हिंसा के विरुद्ध हैं जो वर्तमान स्थिति के कारण दुखी हैं वह भी मौन बैठे हैं।

पजाब में निर्दोष व्यक्तियों का जो खून बहाया जा रहा है वे उनके विरुद्ध भी अपनी आवाज उठाने को तैयार नही। एक प्रकार से टोहरा, तलवण्डी, बादल और सिमरनजीत सिंह मान सब एक ही पंक्ति मे खड़े हैं। उनके पीछे मानोचाहल, जफ्फरवाल और सोहन सिंह जैसे लोग खडे हैं। वो उन्हें अपनी उगुलियों पर नचा रहे हैं और यह नाच रहे हैं।

यह है आज की परिस्थिति। जहा तक मुसलमानो का सम्बन्ध है। उनमे इमाम बुखारी और शहाबुद्दीन जैसे देश मे ऐसी परिस्थितिया पैदा कर रहे है जिन पर यदि समय पर ही काबू न पाया गया तो देश में एक नया गृह युद्ध आरम्भ हो सकता है।

परन्तु जो व्यक्ति राष्ट्रवादी और धर्म निरपेक्ष होने का दावा करते हैं। उन्हें न तो मुसलमानों की साम्प्रदायिकता कहीं दिखाई देती है, न सिखो के उस वर्ग की जो खालिस्तान की माग कर रहे हैं, उन्हें केवल हिन्दुओं का हिन्दुत्व ही परेशान कर रहा है।

हिन्दुत्व का अभिप्राय: क्या है? इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। जहां तक मैं समझ सका हूं कि हिन्दुत्व उस आदर व श्रद्धा को कह सकते हैं जो किसी एक व्यक्ति के दिल में हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू परम्पराओं के लिए हो। जिसे हम हिन्दू धर्म कहते हैं। वह 4, 5 सौ साल, दस पन्द्रह सौ साल या 19, 20 सौ साल पुराना नहीं है। वह हजारों वर्ष पुराना है। इसका सम्बन्ध वेदों से है जिनके विषय में कहा जाता है कि इस संसार में जो सबसे पुराने धर्म ग्रन्थ हैं वो वेद हैं। कुछ व्यक्ति उन्हें पांच हजार वर्ष पुराने और कुई बीस या पच्चीस वर्ष पुराने। पाश्चात्य इतिहासकार और बुद्धिजीवि कहते हैं कि वेद इस जगत में सबसे पुराने धर्म ग्रन्थ हैं। यह कितने पुराने हैं, इस विषय में मतभेद आवश्य हैं परन्तु इनके सबसे पुराने होने के विषय में मतभेद नहीं है और जिस काल में वेदों का प्रकाश हुआ था उस समय मनुष्य को भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों मे न बांटा गया था। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, यहूदी और दूसरे न होते थे। जिन लोगों ने दूरदर्शन पर पहले रामायण या महाभारत जैसे सीरियल देखे हैं। उन्होंने यह भी नोट किया होगा कि प्राचीन काल में एक दूसरे को आर्य या आर्य पुत्र कह कर सम्बोधित किया जाता था। अर्थात् उस युग में सब लोग एक ही विचार के थे और वह सब आर्य थे। भगवान राम और भगवान कृष्ण भी आर्य ही थे। उस युग में, इस देश में कोई हिन्दू भी न था हिन्दू शब्द तो बहुत देर के पश्चात् प्रयोग होना शुरू हुआ है।

परिस्थितियों की विडम्बना और क्या हो सकती है कि जो लोग अपने आप आपको राम या कृष्ण के वंशज कहते हैं और जो हिन्दुत्व को अपने जीवन का आधार समझते हैं वह तो साम्प्रदायक हो गए और जो बाहर से आए थे और जिनका मजहब बाहर से आया था जो आज भी अपना सीधा सम्बन्ध बाहर की दुनिया से रखते हैं वो राष्ट्रवादी या धर्मनिरपेक्ष हैं।

—वीरेन्द्र

लुधियाना पहुंचो

16 दिसम्बर को लुधियाना मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन हो रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती भी इस सम्मेलन मे आ रहे हैं। सामान्य परिस्थितियों मे भी ऐसे सम्मेलनो का बहुत महत्त्व होता है, क्योंकि एक स्थान पर बैठकर और आपस मे विचार करके अपनी समस्याओं का कोई समाधान ढूढने का अवसर मिलता है। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में इस सम्मेलन का बहुत अधिक महत्त्व है। आज तो सारा पंजाब ही एक बहुत बडे संकट मे से गुजर रहा है। हम कल तक यही समझते रहे हैं कि हमारे सामने कुछ राजनैतिक समस्याएं हैं जिनका हमें कोई समाधान करना है। परन्तु अब तो हमारे धर्म और सस्कृति पर सीधा आक्रमण किया जा रहा है। पंजाब के राज्य प्रबन्ध मे हिन्दी को पूर्णत: समाप्त करने का जो अभियान आज आरम्भ किया गया है, उसकी अवहेलना नही की जा सकती। अधिक सोचनीय स्थिति तो यह है कि इस विषय में हमारी सरकार ने आतकवादियों के आगे अपने हथियार डाल दिए है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर हिन्दी को पूर्णत: समाप्त करने का जो आदेश आतंकवादियों की तरफ से दिया गया है सरकार उसके आगे झुक गई है। ऐसी स्थिति में हमें भी सोचना पड़ेगा कि हम क्या करें? यदि इस प्रवृति को रोकने का प्रयास न किया गया तो इसका प्रभाव धीरे-धीरे हमारी शिक्षा सस्थाओ पर भी पड सकता है और कई स्थानों पर तो यह प्रारम्भ भी हो गया है। इस विषय मे हमें भी सोचना है कि अब हम क्या करें? इसी के साथ यह भी विचारणीय विषय है कि आर्य समाज के प्रचार की व्यवस्था क्या हो? आज हमारी सभा के पास अब केवल एक उपदेशक और एक भजनोपदेशक है। सारे प्रयास करने पर भी कोई अच्छा उपदेशक बाहिर से पजाब मे आने को तैयार नही है। इस स्थिति मे भी हमे यह सोचना पडेगा कि पजाब में वेद प्रचार कैसे हो। जो महानुभाव इस सम्मेलन मे आ रहे हैं, मेरा उनसे यह निवेदन है कि वह इन सब समस्याओं पर विचार करके आए ताकि हम सब मिल बैठकर अपने भविष्य का कोई निर्णय ले सकें। आज जबकि पजाब की सारी हिन्दू जाति के लिए एक बहुत बडा सकट पैदा हो गया है। आर्य समाज अकेला तो उसके लिए कुछ नही कर सकता परन्तु आर्य समाज हिन्दू जाति का नेतृत्व कर सकता है। लोगो को बता सकता है कि अब हमे क्या करना चाहिए।

इस लिए यह आवश्यक है कि इस सम्मेलन मे आने वाले भाई और बहने इन सब ससस्याओं के विषय मे कुछ सोचकर अपने सुझाव इस सम्मेलन मे रखने के लिए लाएं ताकि जो बाहिर से आ रहे हैं वह कुछ न कुछ तो उत्साह, धैर्य और साहस लेकर वापिस जाए।

आज साहित्य ही केवल हमारे प्रचार का साधन रह गया है, सभा की ओर से वहा साहित्य भी दिया जाएगा ताकि उसके द्वारा कुछ न कुछ प्रचार हो सके। हमे यह समझ लेना चाहिए कि वर्तमान परिस्थितियों मे अब हमे अपनी प्रचार प्रणाली को पूर्णत: बदलना पडेगा। इसलिए कोई ऐसी योजना बनानी चाहिए कि हमारा प्रचार भी होता रहे, सगठन भी शक्तिशाली बना रहे और हम उन चुनौतियों को भी स्वीकार कर सकें जो इस समय हमारे सामने हैं।

आर्य समाज कोई राजनैतिक सस्था तो नही है परन्तु वह अपने आपको देश की राजनैतिक समस्याओं से अलग नही रख सकती। हमे भी इसी देश मे रहना है, पंजाब मे रहना है और लोग तो पजाब छोड सकते हैं परन्तु हम नहीं छोड सकते। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अपने सगठन को शक्तिशाली बनाएं और यही वह समस्या है जिस पर विचार करने के लिए पंजाब की आर्य समाजों के कार्यकर्त्ता लुधियाना मे इकट्ठे हो रहे हैं। यह सम्मेलन 16-12-90 रविवार को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल (समीप पुरानी सब्जी मण्डी) लुधियाना में प्रात: 10 बजे आरम्भ होगा और तीन बजे समाप्त कर दिया जाएगा ताकि बाहिर से आने वाले भाई अपने-अपने घरों को वापिस जा सकें।

—वीरेन्द्र

जीवन एक संग्राम है

लेखक—स्व० पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

यह लेख पंडित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की लघु पुस्तक जीवन ग्राम में से दिया जा रहा है पाठकों के लाभार्थ क्रमश: हम इसे आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर रहे हैं इस पुस्तक की भूमिका मे उन्होंने स्वय लिखा है :—

"बीमारी बहुत दु:खदायी वस्तु है। यदि ससार मे बीमारी का प्रवेश न होता तो बहुत उत्तम होता, परन्तु इतना कह देने से समस्या हल नही हो जाती। बीमारी का अस्तित्व तब से है, जब से मनुष्य जाति का अस्तित्व है। दूरदर्शी मनुष्य बीमारी को बुरा कहकर सन्तोष नही कर लेते। वह बीमारी का कारण, उसके प्रकार और रोकने के साधनों पर विचार करते हैं। रोग स्वय कोई आकस्मिक घटना नहीं, वह मनुष्य के शरीर में रहने वाले विकार का प्रत्यक्ष चिन्ह है। कभी कभी रोग आन्तरिक विकार को शरीर से बाहर निकाल फैंकने का साधन होने से उपयोगी भी हो जाता है। बुद्धिमान् वैद्य रोग के कारणों की निवृति के साथ-साथ रोग का सामना करने के उपायों पर भी विचार करते हैं और मनुष्य को उनका बोध कराते हैं।

युद्ध भी एक सामाजिक रोग है। वह दु:खदायी है, बुरा है, और मनुष्य की ऊंची भावनाओं को ठेस पहुचाने वाला है, परन्तु केवल इतनी सम्मत्ति दे देने से युद्ध की समस्या हल नही हो जाती। जब से मनुष्य जाति का सामाजिक इतिहास मिलता है, तभी से हम उसे युद्धो से ओत-प्रोत पाते हैं। सदा से व्यक्तियों और व्यक्ति-समूहों की प्रतिस्पर्धा सघर्ष के रूप मे परिणत होकर युद्ध को जन्म देती रही है। उसे न ऋषि-मुनियों के सदुपदेश मिटा सकें हैं, और न धर्माचार्यों तथा नये-नये धर्म-सस्थापको के प्रयत्न नष्ट कर सके हैं। महत्त्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा की भावना जनुष्य की प्रवृत्ति का एक आवश्यक अंग है, जिसे सीधे रास्ते पर लगाना ही सम्भव है, सर्वथा मिटाना सम्भव नहीं। युद्ध का भी मार्गदर्शन किया जा सकता है, और उसमें विजय प्राप्त करने के उपाय बतलाए जा सकते हैं, उसे सर्वथा निर्मूल नहीं किया जा सकता। यह आशा रखना कि कोई ऐसा दिन आएगा जब मनुष्य जाति मे युद्ध न होंगे, एक मृग-मरीचिका की आशा रखने के बराबर है। उस मृगमरीचिका की आशा रख कर जो जाति सघर्ष मे जीतने की तैयारी करना छोड़ देती है, वह या तो जड-मूल से नष्ट हो जाती है, अथवा ऐसी पतित पराधीन दशा को प्राप्त हो जाती है, जो मृत्यु से अधिक निन्दनीय है।

इस छोटी सी पुस्तिका में मैंने इसी दृष्टिकोण से मनुष्य जीवन के आवश्यक सभी जीवन-संग्राम का विवेचन किया है। मैं जानता हू कि कुछ महानुभावों को मेरे विचार भारतीय आदर्श की भावना के प्रतिकूल प्रतीत होंगे। ऐसे महानुभावों से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि वह कृपा करके उस समय के भारतीय साहित्य को पढें जब आर्य जाति के सपूत कमर मे तलवार और हाथों मे धनुष-बाण लेकर, पर्वतो को लाघते और समुद्रों की छाती को चीरते हुए पृथ्वी पर आधिपत्य स्थापित कर रहे थे। ऋग्वेद से भगवद्गीता और भगवद्गीता से रघुवश तक का भारतीय साहित्य जीवन-संग्राम मे विजय प्राप्त करने की कामनाओं से भरपूर है। उसमे युद्ध पर आसू नहीं बहाये गये, युद्ध में जीतने के उपाय बतलाए गए हैं। हमारी जाति को हरेक अप्रिय चीज पर आसू बहाने की आदत पड गई है। आसू बहाने वालों पर ससार दया कर सकता है, पर उन्हे क्षमा नही कर सकता। प्रकृति की शक्तिया उसे कुचल कर रख देती हैं। आवश्यक है कि हम ससार की वास्तविकता को देखें। मिथ्य आर्तनाद को छोडकर जिस अन्याय से कोई नहीं बच सका, उसका सामना करने और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए सन्नद्ध हों। यही इस पुस्तिका को लिखने का उद्देश्य है।"

—इन्द्र

जीवन एक निरन्तर संग्राम

जब तक मनुष्य जीवित रहता है, प्रकृति और मनुष्यों की शक्तियों से उसका सघर्ष जारी रहता है। जब तक वह उस संघर्ष में विजयी होता रहता है तब तक जीवित रहता है, परन्तु जिस समय वह उस संघर्ष में खडा रहने योग्य नहीं रहता या हार जाता है तब वह मर जाता है।

आंख उठा कर चेतन संसार की की ओर देखा। उसमें संघर्ष की सत्ता ओत-प्रोत मिलेगी। एक छोटे-से बच्चे को जिन शत्रुओं से लडना पड़ता है उनके नाम हैं भूख, गर्मी, सर्दी, बीमारी। यदि बच्चा अपने अभिभावकों की सहायता से इन शत्रुओं का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सके तो वह जीवित रह जायेगा, परन्तु यदि वह दुर्भाग्यवश इन सबका या इनमे से किसी एक का भी अच्छी तरह मुकाबला न कर सके तो वह जीवित नहीं रह सकता।

मनुष्य का बच्चा ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, त्यों-त्यो उसके संग्राम का क्षेत्र भी विस्तृत होता जाता है। युवा मनुष्य को अपनी निजी भूख-प्यास से ही नहीं लडना पड़ता, उसे अपने बाल-बच्चों के प्राकृतिक शत्रुओं का भी सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं, उससे लड़ने वाली शक्तियां भी बढ़ जाती हैं। खेती हो या व्यापार—किसी तरह का रोजगार हो, उसमें एक नया युद्ध खड़ा हो ही जाता है, जिसका नाम है प्रतिस्पर्धा की लड़ाई जारी है। कोई रोजगार कीजिए, आपको प्रतिस्पर्धियों से मुकाबला करना पड़ेगा। यदि प्रतिस्पर्धी जबर्दस्त है तो वह हमें कुचल देगा, पर यदि हम जबर्दस्त हैं तो हम जिंदा रह जायेंगे और प्रतिस्पर्धी नष्ट हो जाएगा।

वनस्पति, पशु, पक्षी और मनुष्य इन सभी में यह सिद्धात लागू होता है कि जीवन के संघर्ष मे, बलवान और समर्थ ही फलते-फूलते और शान से जीवित रहते हैं और कमज़ोर या तो बिल्कुल मर जाते हैं अथवा ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं, जो जलालत के कारण मौत से भी बुरा होता है। इसी सिद्धात को महाभारत मे 'जीवो जीवस्य भोजनम्' इस वाक्य मे सार रूप से बतला दिया है। बलवान निर्बल को खाकर जीवित रहता है, यह प्रकृति का अटल नियम है।

जीवन एक निरन्तर संग्राम है, जिसमे बलवान जीवित रह जाते हैं और निर्बल मर जाते हैं। इसी का नाम 'जीवन-सग्राम में योग्यतम की विजय' है।

योग्यतम की विजय

जब जीवन एक निरन्तर सग्राम है तब यह आसानी से समझ में आ सकता है कि उसमें जीत किसकी होगी? जो अधिक बलवान है वही विजयी होगा और जो निर्बल है वह हार जाएगा। संग्राम-भूमि में उतरे हुए सब लड़ाकों में से अन्त में वही मैदान का मालिक रहेगा जो सबसे अधिक बलवान तथा योग्यतम होगा।

मान लीजिए कि किसी साल बहुत कड़ी सर्दी पड़ी। पाले से बहुत से पेड़ सूख गए। सोचिये कि कौन से पेड़ सूखेंगे? जो कमज़ोर होंगे, जिनमें सर्दी का मुकाबला करने की शक्ति कम होगी, वे मर जाएंगे। शेष जीवित रह जाएंगे।

किसी देश में अकाल पड़ गया। कौन लोग भूख से मरेंगे? जो गरीब होंगे वे या वे जिनके पास दूर देश से अन्न खरीदने के लिए धन और घर छोड़कर दूर जाने के लिए शक्ति होगी? स्पष्ट है कि दुर्भिक्ष में कमजोर मर जाएंगे और शक्ति-सम्पन्न अधिक संख्या में बच जाएंगे।

जब कोई संक्रामक बीमारी फैलती है तब भी यही देखने में आता है। जिनके शरीर में रोग का सामना करने की शक्ति है वे पहले तो रोग से बचे रहते हैं और यदि रोगी हो भी गए तो रोग के आक्रमण से बच निकलेंगे; परन्तु निर्बल और शक्तिहीन मनुष्य रोग के शिकार हुए बिना नहीं रहते।

शारीरिक रोगों की तरह आर्थिक रोगों के शिकार भी वे ही लोग होते हैं जो कमज़ोर होते हैं। जब कभी किसी देश में व्यापारिक बेचैनी बढ़ जाती है तब वहा के महाजनों या बैंकों पर भीड़ पड़ती है। उस भीड़ के समय मे उन महाजनों या बैंकों का दिवाला निकल जाता है, जिनके पास थोड़ी पूजी होती है या जिनका सगठन निर्बल होता है। जिनके पास पुष्कल पूजी है और दृढ़ सगठन है, वे बच निकलते हैं।

यही 'योग्यतम की विजय' या 'योग्यतम के बचाव' का सिद्धांत है।

(क्रमश:)

सभा कार्यालय से कलैण्डर मंगवाएं

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वर्ष 1991 के नए कलैण्डर छपवा लिए हैं जो दिल्ली से सभा कार्यालय में आ गए हैं। इनका मूल्य लागत मात्र 150 रु० सैंकड़ा रखा गया है। डाक से कलैण्डर नहीं भेजे जाते क्योंकि उन पर मूल्य से भी अधिक डाक व्यय आ जाता है। इस लिए सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वह सभा कार्यालय से कलैण्डर मंगवा लें। लुधियाना कार्यकर्ता सम्मेलन के समय भी वहां कलैण्डर मिल सकेंगे।

—अश्विनी कुमार शर्मा
सभा महामन्त्री

देवभाषा संस्कृत का महत्त्व

ले०—डा० सावित्री देवी जी शर्मा एम० ए० वेदाचार्य 10 केला बाग (सावित्री सदन) बरेली उ० प्र०

'संस्कृत हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति का प्रतीक है। जिसमे आज भी जीवन्तत्व है, जिजीविषा है शक्ति और सामर्थ्य है। यह संसार की प्राचीनतम भाषा है किन्तु उसकी ताजगी उसका तारुण्य निरन्तर बना हुआ है। उसमें नवीनतम सद्‌भावनाएं हैं, शक्ति का अजस्र स्रोत है। उसका नित नवीन साहित्य पुष्पित पल्लवित होता रहता है। आज भी काव्य, कथा, प्रबन्ध, निबन्धादि सारे देश मे संस्कृत मे लिखे जाते हैं। संस्कृत भाषा वैदिक ऋषियों की 'पुराणी युवतिः' उषा की भाति वैदिक युग से अब तक अनवरत मुखरित है। सस्कृत का सन्देश वेद, पुराण, दर्शनों से हमे निरन्तर प्राप्त होता रहता है जो आज भी प्रासगिक है। यदि हम इसकी उपेक्षा करेंगे तो अपना ही सर्वनाश करेंगे।" यह हैं हमारे देश के महामहिम राष्ट्रपति श्री आर० वेंकट रमन के सस्कृत विषय विचार। वस्तुतः देश विदेश के सभी विद्वान् उपर्युक्त भावनाओं का समर्थन करते हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू इस सुर-भारती के साहित्य को भारत की शानदार विरासत स्वीकार करते हैं। जब तक यह जीवित है भारत की मूल प्रतिभा भूतकालीन परम्पराओं की सजीव निधियों को लेकर दृढ़तापूर्वक खड़ी रहेगी। कामधेनु के सदृश समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली संस्कृत भाषा स्वराज्य वैभव सम्पन्न स्वतन्त्र भारत की तो राष्ट्रभाषा थी ही आज भी सास्कृतिक विचारों की आधार-शिला बनकर हमारी धार्मिक मातृभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है।

विश्व कल्याण, सदाचरण की प्रतिष्ठा, सार्वभौम विश्व प्रेम, कलात्मक "सत्यं शिवं सुन्दरम्" से परिपूर्ण संस्कृति का सन्देश तथा पावन आध्यात्मिक जीवन को सम्बल प्रदान करने वाली दिव्या सुरभाषा पंचायतन देव मन्दिर सी प्रतीत होती है। अन्तः सलिला तरंगिणी के समान हमारी देवभारती सृष्टि के अनादि प्रवाह से सकल विश्व को अपने औदार्य जल से सींचती हुई विमल सात्त्विक ज्योतिः पुञ्ज का प्रसारण करती आ रही है। यही विश्व भाषाओं की जननी है। शब्दकोष का विशाल सागर है। जिससे निरन्तर परिवर्तनशील साहित्य जगत् में अभिनव शब्द रत्नों की उत्पत्ति सम्भव है विविध विषयों के पारिभाषिक शब्दों की नवनिर्माण प्रक्रिया केवल संस्कृत भाषा ही जानती है। यौगिक शब्दों को नैरुक्त निर्वचना शैली का आधार संस्कृत धातु कोष है। अतः असीम धातु सम्बल ने इसे अपरिमित शब्दार्थ शक्ति प्रदान की है।

किसी भाषा का सही शब्दानुवाद करने के लिए हमें इसकी आख्यातज शक्ति का सहारा लेना होगा। प्रचलित शब्दानुवाद हमारी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम नही है। महर्षि पाणिनि की व्याकरण प्रक्रिया का सस्कृत साहित्य अत्यधिक ऋणी है। किसी एक धातु की समस्त प्रक्रियाओ, सभी लकारो के पदरूपों की संख्या 1200 के लगभग सिद्ध होती है। उन पदरूपों में भी उपसर्गों का योग, कृत्प्रत्यय योग तथा तद्धित समासादि से निष्पन्न एक ही धातु के रूपों की संख्या सवा लाख के करीब बैठती है। गण, सौत्र तथा कण्ड्वादि रूपों मे विभक्त धातुओं की सख्या हजारो मे गणनीय है। इस प्रकार प्रकृति प्रत्यय की अपवाद रहित विधि से सम्पन्न, समृद्ध पदावली देवभाषा संस्कृत को छोडकर अन्यत्र अप्राप्य है।

अर्थ सम्पदा का आधार भी हमारा अति प्राचीन वेदांग निरुक्त ग्रन्थ है। इस विद्या का वैभव नाट्य, काव्य, पुराण, ब्राह्मण, आयुर्वेदादि सभी विषयों मे पूर्णतया प्रतिष्ठित है। एक शब्द के अनेकार्थों का प्रकाशन इसी निर्वचन प्रक्रिया मे सर्वत्र देखा जा सकता है। स्वरव्यञ्जनों की वैज्ञानिक व्यवस्था, अतुलनीय शब्दकोष के साथ विविध शब्द निर्माण सामर्थ्य, अर्थगाम्भीर्य, एक ही शब्द मे विभिन्न अर्थों और परस्पर विरोधी रसों का समावेश, छन्द योजना के विस्तार का सौन्दर्य सस्कृत को संसार की सभी भाषाओं में अद्वितीय सिद्ध करता है।

विश्व की सभी भाषाओं में संस्कृत के ही तत्सम या अपभ्रंश शब्दों का भण्डार दिखाई देता है। प्राकृतादि सभी स्वदेशी भाषाएं संस्कृत का ही रूपान्तर हैं। कुछ भाषा वैज्ञानिक संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण कल्पित प्राग्भारोपीय भाषा को मूल प्रकृति मानकर संस्कृत को उसी का विकसित रूप स्वीकार करते हैं किन्तु प्रकृति प्रत्यय के संयोग से बनी संस्कृत ही वस्तुतः सभी भाषाओं की प्रकृति परिलक्षित हो रही है। विदेशी भाषाओं में सर्वप्रथम फारसी भाषा को ही लीजिए यह सस्कृत से निकली एक अपभ्रंश भाषा है। इसके प्राचीनतम ग्रन्थ 'अवेस्ता' (छन्दोऽवस्था) या जेन्दावस्था की भाषा पालि-प्राकृत के समान ही संस्कृत का अपभ्रंश रूप है। इसके शब्दार्थों का शुद्ध स्वरूप वैयाकरण पाणिनि आदि ऋषियों के आधार पर ही निष्पन्न होता है। पौरस्त्य तथा पाश्चात्य विद्वान् भी जेन्दावस्ता की गाथाओं को संस्कृतमय ही मानते आए हैं। इसी प्रकार लैटिन भाषा के शब्दों की प्रकृति भी संस्कृत को स्वीकार करने में किसी भाषा वैज्ञानिक को कोई आपत्ति न होगी। उदाहरणार्थ कुछ शब्द प्रस्तुत किए जाते हैं—

लैटिन	वैदिक-लौकिक संस्कृत शब्द
Datum	दत्तम् दत्तः दत्ता
Data	दत्ताः, दत्तानि आदि
Twice	द्विषः
Dozen	द्वौदशन्
Decimal	दशम=लव
Royal / Loyal	राजन्
Two	द्वौ
Three	त्रि
Dental / Dentist	दन्त के आधार पर ही बने हैं।

उपरिलिखित सक्षिप्त शब्दकोष हमारी सुरभारती को विश्व भाषाओं का मूल सिद्ध कर रहा है।

संस्कृत साहित्य द्वारा ही भारतीय एकता तथा विश्व सगठन सम्भव है। विष्णु पुराण मे भारतवर्ष की परिधि का वर्णन है—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं यद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

मार्कण्डेय पुराण मे भी यही सीमा निर्धारित की गई है—

दक्षिणा परितो ह्यस्य पूर्वेण च महोदधिः।
हिमवानुत्तरेणास्य कार्मुकस्य यथा गुणः॥
तदेतत् भारतं वर्षम्॥

उपर्युक्त दोनों पुराणों तथा अन्य भारत के ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णित भारतीय सीमाएं समान ही हैं।

मनुस्मृति में वर्णित वर्णाश्रम व्यवस्था, राजधर्म तथा मानव सस्कार पद्धति समस्त भारत मे ही नहीं, अपितु सारे विश्व मे ही कुछ विकृत रूप में प्रचलित है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले सारे भारत में मातृभाषा के समान देववाणी का प्रचलन था। नाटकों में प्रयुक्त संस्कृत संभाषण शैली से इस देश की राष्ट्रभाषा तथा मातृभाषा संस्कृत ही सिद्ध हो रही है।

भारत के सभी भागों मे स्थित गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी आदि नदियां, महेन्द्र, मलय, विन्ध्य, ऋक्ष, सुमेरु, सह्याद्रि, आदि पर्वत मालाएं—वाराणसी, मथुरा, उज्जयिनी, अवन्तिका, हरिद्वार, द्वारिका आदि प्रसिद्ध नगरियां, हमारे सभी सांस्कृतिक ग्रन्थों मे वर्णित हैं। इस शस्य श्यामला भारत भूमि के सम्पूर्ण भागों में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, शास्त्रीय गतिविधिया समानरूपेण प्रचलित हैं। हिमालय से कन्याकुमारी तक एक ही गौरव गाथा के शिशिर जलकणों से यह भू-भाग आप्यायित हो रहा है। प्रत्येक भारतीय के कटि प्रदेश मे निबद्ध मेखला सी विन्ध्य श्रेणियों तथा आर्यावर्त का पूर्वाञ्चल और पश्चिमाञ्चल इसकी दो सशक्त भुजाएं प्रतीत होती हैं।

अतः देशकाल जयी सुरभाषा अपने विशिष्ट गुणों से समस्त विश्व को अपनी वात्सल्यमयी छत्रछाया मे सर्व-विध ऐश्वर्य प्रदान करती हुई एकता के स्नेह सूत्र मे बांध सकती है। सस्कृत की रक्षा निखिल सस्कृति की प्राणरक्षा का प्रतीक है। यही साम्प्रदायिक एकता व सौहार्द की जननी है। इसका प्रत्येक शब्द अर्थपरक गुणबोधक होने के भौतिक विज्ञान की विलक्षणता का प्रकट करता है। इसकी वैज्ञानिक देवनागरी ब्राह्मी लिपि, वाक्यार्थ की विचित्रता, सृष्टि तत्त्वों के साथ समरसता आदि गुण इस अमरवाणी को सकल विदेशी भाषाओं की दिव्य संजीवनी घोषित कर रहे हैं। यही रहस्य इस देवगिरा मे विश्व सघटन की अपार क्षमता को व्यक्त करता है।

नई शिक्षा नीति और हमारी देवभाषा

भारतीय प्रशासन ने इस भाषा के विनाशार्थ नई शिक्षा नीति की योजना 1986 में बनाई है जिसके अनुसार कोई भी छात्र प्रारम्भिक कक्षाओं में संस्कृत का अध्ययन नहीं कर सकता। उच्चतम श्रेणियों में पहुंचने पर किसी भी विद्यार्थी में इस उपेक्षित भाषा के प्रति न रुचि ही रहेगी न अवकाश मिल सकेगा। अतः भारत के सभी प्रान्तों मे बहुलता से बोली, लिखी जाने वाली विद्वज्जन सम्मानित भाषा के सरक्षणार्थ आर्यावर्तीय जन मानस भारत सरकार

(शेष पृष्ट 7 पर)

अमृतसर का गायत्री यज्ञ समारोह

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द मे विश्व कल्याण हेतू गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। 26 नवम्बर 1990 से दो दिसम्बर 90 तक पूरा सप्ताह भर गायत्री की महिमा से वातावरण गूंजता रहा। प्रति दिन सुबह 8 बजे से गायत्री यज्ञ शुरू होता रहा और यज्ञ वेदो पर चार दम्पति प्रति दिन यजमान के स्वरूप उपस्थित रहते थे और वैदिक गर्ल्ज सीनियर सैकेन्डरी स्कूल और श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की समस्त छात्राए और अध्यापिकाएं और अमृतसर के प्रतिष्ठित पुरुषो और महिलाओ ने और स्त्री समाज की सदस्याओं ने गायत्री महायज्ञ में उपस्थित रहकर और गायत्री का मन्त्रोचारण कर समस्त वातावरण को अति हर्षोल्लादित कर दिया प्रतिदिन सैकडों की सख्या मे महिलाए और पुरुष इसमे भाग लेते रहें और वातावरण इस प्रकार आनन्द पूर्ण था कि प्रतिदिन कई-कई दाम्पति जो कि यजमान के स्वरूप यज्ञ मे उपास्थित होना चाहते थे, इन्तजार ही करते रह गए और अगले वर्ष मनाने हेतू गायत्री महायज्ञ मे अभी से यजमान बनने के लिए अपने-अपने नाम लिखवा कर ही उन्हे सतोष करना पडा गायत्री महा मन्त्र का उच्चारण सभी उपस्थित गण बड़े जोश और उच्चे स्वर मे कर रहे थे आतकवाद के घुटन वाले वातावरण मे आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द द्वारा आयोजित गायत्री महायज्ञ जिसे कि विश्व कल्याण हेतू मनाया गया मे गायत्री महा मन्त्र की महिमा ने अमृतसर के लोगों को इतना प्रभावित किया कि नागरिको ने आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द के अधिकारियो से इस यज्ञ को एक माह तक नियमित चलने देने का आग्रह किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आये श्री प० निरन्जन देव जी इतिहास केसरी के इस विषय पर प्रवचन हुए। सभी उपस्थित गण और स्कूल और महाविद्यालय की छात्राओ पर गहरी छाप छोड गए और उनके प्रवचन इतनी सरल भाषा मे हुए कि छात्राओं और उपस्थित समूह ने प्रतिदिन कुछ अधिक समय तक प्रवचन जारी रखने का आग्रह किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा भेजे गए भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा के मधुर भजनो ने इस अवसर पर वो समय बांधा कि अगर यह कार्यक्रम निरन्तर एक सप्ताह तक चलता तो भी शायद कोई भी उपस्थित बन्धु, माताए आदि आर्य समाज मे ही दिन रात बैठे इनके भजनो से आत्मविभोर होते रहते अन्तत: दो दिसम्बर 90 के दिन इस गायत्री महायज्ञ के समापन समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वारेन्द्र जी सर्व विश्व कल्याण हेतू इसमे शामिल हुए उनके साथ श्री हरवस लाल जी शर्मा उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और श्री सरदारी लाल जी आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब भी थे।

श्री वीर जी, जिन्हें अपनी सुदृढ़ लेखनी के लिए शूरवीर जी कहना न्यायोचित होगा, ने गायत्री महायज्ञ की महत्ता बारे उपस्थित समूह को बतलाया और साथ ही पजाब की वर्तमान हालात के बारे मे भी विस्तार से चर्चा की इस उपलक्ष्य में उन्होंने गांवों से पलायन करके आए और बिना छत के खुले मैदान मे सोने वाले पीडितों मे कम्बल बाटे और आर्थिक रूप से पिछड़े (स्कूल और महाविद्यालय) की छात्राओं को स्वैटर इत्यादि बाटे गए।

गायत्री महायज्ञ के समापन के अवसर पर आर्य समाज के गणमान्य सदस्यो को सम्मानित भी किया गया इनमें 90 वर्षीय श्री विशेशर नाथ सेठ और 100 वर्षीय श्रीमति सरस्वती देवी उल्लेखनीय है, जिन्होंने आर्य समाज द्वारा संचालित पजाब आन्दोलन में कैद भी काटी है।

इस अवसर पर आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द के प्रधान श्री राम नाथ जी शर्मा ने श्री वीरेन्द्र जी प्रधान, श्री सरदारी लाल जी मन्त्री और श्री हरबस लाल जी शर्मा उप-प्रधान (आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) को आतकवाद से ग्रस्त वातावरण मे आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर मे पधारने पर उन का हार्दिक धन्यवाद किया और उन्हे ग्यारह हजार (11000/-) रुपये की थैली और ओ३म् श्लाका प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

इस अवसर पर आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द के सभी अधिकारियों ने यह निश्चिय किया कि हर वर्ष इसी प्रकार गायत्री महायज्ञ का आयोजम किया जाएगा।

अन्त मे ऋषि लंगर किया गया और सभा सम्पन्न हुई।

—अविनाश भाटिया महामन्त्री

ज्ञान ग्रहण विधिमाला

रचयिता—श्री देवनारायण जी भारद्वाज
एफ० 82, मान सरोवर कालोनी रामघाट मार्ग, अलीगढ़

सब भक्ति कर्म का ताला, बस ज्ञान खोलने वाला।
दी ज्ञान ग्रहण विधिमाला, क्या इसे हृदय में डाला॥

1—प्रिय ज्ञान ग्रहण या दर्शन का
श्रुति सम्मत बोध विधान दिया।
प्रत्यक्ष दिया, अनुमान दिया,
उपमान, शब्द विज्ञान दिया॥
ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव
अभावयुत अष्ट प्रमाण दिया॥
हो ज्ञान सृष्टि-सर्वेश्वर का,
पथ प्रगति बोध अभियान दिया॥

यह तर्क प्रमाण उजाला, क्यों कुतर तर्क कर डाला।
दी ज्ञान ग्रहण विधिमाला, क्या इसे हृदय में डाला॥

2—पाच वृत्ति मम की बतलाई
पहली प्रमाण सकल्प कहो।
स्मृति निद्रा और विपर्य्य की
पचम वृत्ति विकल्प कहो॥
व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, या
आलस्य अविरति भ्रान्ति दर्शन।
होते अलब्धि अस्थिरता के
नौ मुक्ति मार्ग के विघ्न गहन॥

लो पकड आत्म दृढ माला, मन नही विचलने वाला।
दी ज्ञान ग्रहण विधिमाला, क्या इसे हृदय मे डाला॥

3—आभास लक्ष्य का होने पर
आवेश हृदय मे आता है।
गुरु का सत्सग छूटने पर
आवेश सुप्त हो जाता है॥
स्वय बोध स्वाध्या ध्येय से
आवेग वही बन जाता है।
आवेग यही सकल्प रूप
साधना धन्य कर जाता है॥

आवेग उदय उजियाला, शिव ने सकल्प सभाला।
दी ज्ञान ग्रहण विधिमाला, क्या इसे हृदय मे डाला॥

आर्यसमाज सरदारपुरा, जोधपुर का चुनाव

दिनाक 2-12-90 रविवार को प्रात: 10 बजे श्री मुकन्द दास जी वानप्रस्थी उप-प्रधान आर्य प्रतिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में आर्य समाज सरदारपुरा के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमे सर्व-सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

1. प्रधान : श्री रमेश चन्द्र भाटिया।
2. उप-प्रधान : श्री मोती लाल टाक।
3. उप-प्रधान : श्री वैद्य ऋषिदेव सोलंकी।
4. मन्त्री : श्री सुखदेव आर्य।
5. उप-मन्त्री : श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता एवं श्याम सुन्दर आर्य।
6. कोषाध्यक्ष : श्री दाउलाल आसेरी।
7. पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मंशाराम शर्मा।
8. आय-व्यय निरीक्षक : श्री पारस चन्द पंवार।
9. अधिष्ठाता आर्य वीर दल : श्री ओम प्रकाश टाक।

अन्तरंग सदस्य—(1) श्री इन्द्र चन्द्र शर्मा, (2) श्री [illegible], (3) श्री रामचन्द्र शर्मा, (4) श्री मदन लाल गेहलोत, (5) डा० आर० पी० माथुर, (6) श्री दुली चन्द, (7) श्री रामचन्द्र लाल, (8) श्री हरेन्द्र गुप्ता, (9) श्री मदन लाल शर्मा।

'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्'

लेखक—श्री प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) 146021

ऋग्वेद 10, 53, 6 के इस मन्त्रांश का अर्थ है, कि बुद्धिपूर्वक बनाए गए जगमगाते (स्पष्ट, सुनिश्चित) रास्तों की रक्षा कर, उनको अपना। क्योंकि रास्ते पर चल कर ही लक्ष्यसिद्धि होती है, पर इसके लिए रास्ते का स्पष्ट, सुनिश्चित होना बहुत जरूरी है, अन्यथा व्यक्ति ईधर-उधर भटकता रह जाता है। वैसे तो हर रास्ता आने-जाने का साधन होता है और उसका बनाने वाला समझदार, प्रकाश-ज्ञानयुक्त होता है, क्योंकि बनाने वाला बनाने से पहले सोचता है, उसकी योजना बनाता है। तब उस रूपरेखा के अनुरूप अभीष्ट को बनाता है, पर यह जरूरी नहीं कि वह संगत भी हो, जैसे कि ग्रामों की सड़क।

इस बात का दूसरा उदाहरण है—पुस्तकें। वैसे तो प्रत्येक पुस्तक का लेखक समझदार, विचारशील और विद्वान् होता है। तभी तो वह अपनी सूझ-बूझ के अनुरूप यथाशक्ति भाषा, भाव, कल्पना का समन्वय करके उस-उस रचना को रचता है। अतः हर पुस्तक मे दर्शाई गई बातें प्रकाशवत ज्ञानयुक्त होती हैं। पर 10, 53, 6 मन्त्र का यह अंश ज्योतिष्मान पथ का एक और विशेषण देता है कि बुद्धिपूर्वक बनाए गए अर्थात् हमारा पथ सुसगत भी हो। हां, हर पथ प्रकाशमय हो सकता है, पर यह जरूरी नहीं कि वह बुद्धिपूर्वक भी हो। जैसे कि अनेक सम्प्रदायों से जुड़ी हुई पुस्तकें, परम्परायें हैं। उनके लेखक विद्वान्, प्रकाश-ज्ञानयुक्त हैं। उनकी रचनाओं में भाषा, व्याकरण, भाव, कल्पना का अच्छा पुट होता है, पर अधिकतर अपनी मान्यता की पुष्टिमात्र के लिए ही लिखते हैं। अतएव ऋषिवर ने लिखा है—'जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिये विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य छोड़ असत्य मे झुक जाता है।'

'यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों मे हैं वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर मे डुबो दिया है।'

'यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश मे उत्पन्न हुआ और वसता हू तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्त्तता हू। —क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने मे तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है।' सत्यार्थ० भूमिका

इस भावना और मन्त्रांश के अनुरूप उदाहरण के लिए नमस्ते के प्रसंग पर विचार कीजिए। सभी यह स्वीकार करते हैं कि हम सबको परस्पर अभिवादन करना चाहिए। अतः सभी वर्गों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द, शरीर चेष्टा होती है। पर यह जरूरी नहीं कि वह सुसंगत हो। महर्षि दयानन्द ने इस प्रसंग में प्राचीन भारतीय परम्परा को बुद्धिपूर्वक जताते हुए कहा है, कि अभिवादन के लिए नमस्ते ही सर्वथा उपयुक्त है। एतदर्थ महर्षि का कथन है कि नमस्ते शब्द प्रसंग के अनुरूप, तर्कसंगत और शास्त्रसम्मत है। अतः कार्य-कारण के नियम के अनुसार नमस्ते की परम्परा जहां प्रकाशमय है, वहां वह मन्त्रांश के अनुरूप बुद्धिपूर्वक भी है।

नमस्ते के उदाहरण की तरह ही महर्षि ने जीवन के हर क्षेत्र में अपेक्षित—ईश्वर, धर्म, भक्ति, जगत-व्यवहार आदि बातों की चर्चा की है। जो कि सर्वथा मन्त्रांश के अनुरूप जीवन का सुसंगतपथ हैं। आज के वैज्ञानिक युग में जरूरत इस बात की है कि आर्य समाज की समृद्ध सभायें और समाजें आगे आएं और वे इस प्रकार की रचनाओं को प्रकाशित कराएं। जिससे महर्षि दयानन्द द्वारा दर्शाया गया। सुसंगत पथ सामने आ सके।

मैंने नन्हा दीप जलाया

ले०—श्री धर्म विशाल मुनि जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

मैंने नन्हा दीप जलाया।
हर घर ने यह दीप जलाया॥

मेरी ऊंची आशाएं हैं,
हर घर की अभिलाषाएं हैं,
मीठी मीठी मस्त जवानी
की लहराती भावाएं हैं।
मैंने नन्हा........

इनको कौन बुझाने आया?
धूल धूसरित करने आया?
उसको हम सब भस्म करेंगे।
इसी भाव से इसे जलाया॥
मैंने नन्हा........

रावण मार अयोध्या आए,
विजय सत्य की, हम हर्षाए।
उनका स्वागत करने के हित,
सुन्दर सुरभित दीप जलाया॥
मैंने नन्हा........

विजय सत्य का एक ओर था,
घना अन्धेरा चहु ओर था,
अपना जीवन दीप जलाकर,
दयानन्द ने हमे जगाया।
मैंने नन्हा दीप जलाया।
हर घर में यह दीप जलाया॥

(पृष्ठ 5 का शेष)

माध्यम से अनेक विश्वविद्यालयों मे से अनुरोध करता है कि जिस भाषा मे अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। अनेक आयुर्वैदिक विद्यालयों मे शासन की ओर से चरक सुश्रुतादि संस्कृत के ग्रन्थों के द्वारा चिकित्सा शास्त्र का अभ्यास कराया जाता है। विभिन्न प्रान्तों में सरकारी अनुदान पत्र-पत्रिकाओं का संस्कृत में प्रकाशन किया जाता है उस भाषा की उपेक्षा न करके नवीन शिक्षा नीति में इसे राज भाषा के रूप में स्वीकार करें।

देववाणी के प्रसारण से ही भ्रष्टाचार का निवारण

सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यदि हमारे प्रशासन द्वारा संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जाता तो आज राष्ट्र का चरित्र कुछ और ही होता। उत्तरोत्तर गिरता हुआ चारित्रिक स्तर सामाजिकों को कष्ट न पहुचाता। पदलिप्सा, धनान्धता, स्वार्थपरता के कारण प्रत्येक विभाग में उत्कोच का बोलबाला है है जिससे हमारी कर्मभूमि धर्मक्षेत्र न होकर अधर्म-अन्याय का केन्द्र बन गई है।

'धार्यते यः स धर्मः', 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः', 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः'। आदि आचार शिक्षाएं तो संस्कृत के द्वारा ही प्राप्त होती हैं। उस सुशिक्षा के अभाव मे नागरिक कर्मचारी धनागम के अनुचित साधनों का अहर्निश मानस जप करता हुआ पारस्परिक मित्रदृष्टि का त्याग कर शत्रुवत् दुःखद व्यवहार कर रहा है। आज हम दीन-हीन-क्षीण हुए उस अनादि निधना दैवी वाक् के कृपा प्रसाद से वञ्चित होकर अपने स्वरूप को भूल चुके हैं।

हम कौन थे क्या हो गए और
क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याएं सभी॥

इस विषम परिस्थिति मे भारत के प्रत्येक संस्कृतज्ञ विद्वान् का परम धर्म है कि वह इस सुरवाणी की रक्षार्थ अपना तन, मन, धन समर्पित कर यथाशक्ति हर सम्भव प्रयास करें। तभी हमारा भारतवर्ष वेदोक्त सत्य सनातन धर्म के सांस्कृतिक आदर्शों का पालन कर पुनः जगद्गुरु की प्रशस्त पदवी प्राप्त कर सकेगा।

(1)

रोदधु वैदिकसंस्कृतेः निपतन
श्रोतुञ्च मन्त्रध्वनिम्।
द्रष्टुं दर्शनवैभवं सुविततं
लब्धु गुरो गौरवम्॥
नेतुं नीतिमयाञ्चता स्वमपि
च ज्ञातु स्वदेश तथा।
चित्तं चेत् कुरुते विहाय सकलं
त्रायस्व भोः संस्कृतम्॥

(2)

समस्तज्ञानमन्दिरेषु
संस्कृतामृतं शुभम्।
पिबन्तु छात्रबालकाः
सुयोग्यशिक्षकैः सह॥
बालिका भवन्तु पण्डिताः
सरस्वती-प्रियाः।
प्रचारयन्तु शारदीय-
वैभव स्वतः परम्॥

आर्य युवक सभा अमृतसर की गतिविधियां

आर्य युवक सभा अमृतसर की ओर से प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह 11 नवम्बर 1990 को मनाया गया।

(1) अप्रैल 1990 मे कश्मीर के पलायन कर्त्ताओं की यथासम्भव आर्थिक सहायता की गई, उन्हे आटा, चावल, दालें तथा दवाईया इत्यादि लेकर दी। इसके अतिरिक्त दस मरीजो को फ्री डाक्टरी सहायता एवम् दवाईया इत्यादि लेकर दी। अठारह जरूरतमन्दो को राशन भी लेकर दिया गया।

(2) मई 1990 मे नौ टी०बी० के मरीजों, आठ अन्य रोगियों को नि:शुल्क दवाईया तथा महीने भर के लिए दूध व राशन इत्यादि भी लेकर दिया। तीन आंखों के रोगियो को आप्रेशन के लिए पैसे तथा आंखों की ऐनकें लेकर दी गई।

(3) जून 1990 मे हमने 12 जरूरतमन्द विद्यार्थियों के लिए किताबें कापिया, दाखिले और स्कूल की फीसें इत्यादि दी गई, इसके अतिरिक्त छ: जरूरतमन्दों को घर का राशन इत्यादि सभा की तरफ से लेकर दिया।

(4) जुलाई 1990 मे हमने एक गरीब विधवा के लिए सूट, 4 लाचार वृद्धों व जरूरतमन्दों को कम्बल, दरी इत्यादि लेकर दिए। 4 गरीब लड़कियों की शादी मे शगुन तथा कम्बल इत्यादि लेकर दिए।

(5) अगस्त 1990 में बारह सदस्यो तथा पाच अन्य लोगों को गीता का सार तथा गायत्री मन्त्र जिल्द लगवा कर दिया तथा लायब्रेरी के लिए 8 किताबें लेकर रखी तथा तीन अन्य जरूरतमन्दों को चावल, आटा, राशन, दवाई तथा डाक्टरी सहायता नि:शुल्क दी गई।

(6) सितम्बर 1990 मे सभा के पन्द्रह सदस्यों तथा 8 अन्य युवकों के घर हवन, सत्सग तथा नामकरण सस्कार कराए गए।

नवम्बर 1990 मे तीन जरूरतमन्दो को पन्द्रह दिनों का राशन लेकर दिया गया।

इसी महीने दीवाली के शुभ पर्व पर नवाकोट अमृतसर मे (ऋषि बोध) उत्सव मनाया गया। जिसमे बच्चों ने धार्मिक गीत तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए। डा० हरभगवान जी की अध्यक्षता मे यह कार्यक्रम हुआ।

—विजय ढींगरा

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की यह धार्मिक एव साप्ताहिक सभा श्री प० आत्माराम जी मू. पू. पुरोहित आर्य समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ़, तथा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान एवं कर्मठ कार्यकर्ता परिवारों तथा समाज को प्रेरणा देने वाले, पिछले दिनों हृदयगति रुकने से इस ससार की यात्रा अपूर्ण छोड़कर स्वर्ग सिधार गये। यह सभा उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परमपिता परमात्मा उनको अपने चरणों में स्थान दें, और जन्म-मरण बन्धनों से छुटकारा दें, की प्रार्थना करती है, और उनके सभी परिवारीजनों एव इष्टमित्रों तथा सम्बन्धियों को इस अकस्मात् कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करें।

आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सम्मानित किया था। क्योंकि आप वेदों के पण्डित तो थे ही, और आपने वेदों का अर्थ उर्दू भाषा में किया। इस लिए आपके रिक्त स्थान व शुभ कार्यों की पूर्ति असम्भव है।

हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि अन्य सभी समाजों और अधिकारियों को आपके बताये हुए मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

हम हैं आपके इस असहनीय कष्ट में भागीदार, सभी अधिकारीगण एवं सभी सदस्य तथा अन्तरंग सभासद।

—गुरदयाल सिंह आर्य प्रधान

शोक समाचार

स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्द गढ़ जालन्धर की मन्त्राणी श्रीमती सन्तोष भवन जी पूज्य माता (सास) विद्यावती जी का देहावसान गत दिनों हो गया। वह कुछ दिनों से रुग्ण चल रही थी। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।
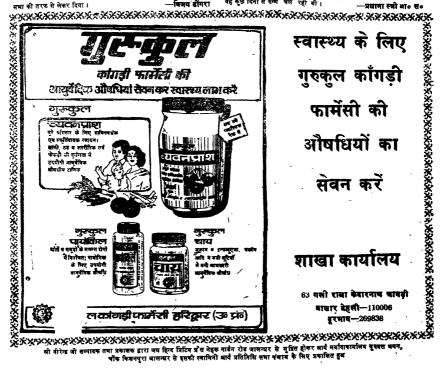
—प्रधाना स्त्री आ० स०

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रेस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादाकार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 22 अंक 40, पौष—15 सम्वत् 2047 तदनुसार 27/30 दिसम्बर 1990 दयानन्दाब्द 166, वार्षिक शुल्क 30 रुपये प्रति अंक 60 पैसे

30-12-90 को जिन का जन्म दिवस है

आदर्श ब्रह्मचारी, आदर्श संन्यासी, आदर्श नेता लौह पुरुष

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

ले०—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेद सदन अबोहर—152116

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने 55 वर्ष लगातार आर्य समाज की सेवा की। आर्य जगत् 30 दिसम्बर को उनका जन्म दिवस मना रहा है। महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा में जिस विद्वान्, नेता व बाल ब्रह्मचारी ने सर्वप्रथम सन्यास लेकर वैदिक धर्म के लिए अपना जीवन भेंट किया, वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही थे। आपका पूर्व नाम केहर सिंह था। एक समृद्ध जाट सिख कुल मे आपका जन्म हुआ। सन्यास लेकर प्राण पुरी नाम पाया फिर स्वतन्त्रानन्द कहलाए। मोही ग्राम मे जन्मे इस निर्मोही साधु ने अपने रक्त की धार देकर ऋषि-उद्यान को सींचा।

ऋषि मिशन के लिए ऐसा कौन करणीय कार्य है जो उस पुण्यात्मा ने नहीं किया? आजीवन ब्रह्मचारी रहे। देश-विदेश में वेद प्रचार किया। पैदल घूम-घूम कर ग्राम, ग्राम, नगर, डगर, डगर और पर्वतों की चोटियों तक वेद सन्देश सुनाया। संस्कृत भाषा का प्रचार किया। महाशय राजपाल जी के बलिदान पर विषम परिस्थितियों में जान जोखिम में डालकर इतिहासकार के लिए [illegible] मे पहुंचे। शोध कार्य किया व करवाया। साहित्य सृजन किया व करवाया। शुद्धि कार्य में सदा आगे आगे। दस वर्ष तक शिक्षा के क्षेत्र पर निर्वाह करते हुए श्रीमद् दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य पद को सुशोभित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के [illegible] [illegible] का आसन ग्रहण किया। इन दिनों इस सभा के इतने प्रचारक थे कि आज सारी सभाओं के पास भी इतने उपदेशक नहीं।

लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

रचयिता —श्री प्रा० राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु'

जिनको था वेद प्यारा, ईश्वर के थे जो प्यारे।
वह बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव थे हमारे।
निबलो के थे सहारा, दलितो के दिल की बस्ती।
सब इन्द्रियो को जीता, ऐसी महान् हस्ती॥
मोही मे जन्म पाया निर्मोही सन्त न्यारे॥
सबके भले की खातिर, दुख कष्ट सब उठाए।
जब सामने वह आए, अंग्रेज लडखडाये॥
स्वामी कौपीनधारी, राजो के मद उतारे.
ऐ देश के जवानो, भूलो न यह कहानी।
कैसे तुम्हे सुनाए, नयनो से बहता पानी॥
जिसने सहे कुल्हाडे, स्वामी वह थे हमारे ..
ब्रह्मचारियो मे नामी, ज्ञानी गुणी सुनामी।
वह एकता के हामी, भारत की शान स्वामी॥
ऋषियो के नाम लेवा, वह देव के दुलारे

आर्य समाज के इतिहास मे सर्वाधिक सन्यासी व वानप्रस्थी दिए, सर्वाधिक उपदेशक व विद्वान् दिए, अनेक शास्त्रार्थ महारथी व ब्रह्मचारी दिए। किस किस का नाम लें और किस किस का छोड़ें? वैदिक तोप-प० मनसाराम जी, स्वामी [illegible] जी, श्री प० शान्ति प्रकाश जी, श्री प० मुनीश्वर देव जी, श्री प० ज्ञानेन्द्र जी गुजरात, श्री प० नरेन्द्र जी हैदराबाद, श्री प० प्रियदर्शन जी गुजरात, स्वामी पूर्णानन्द जी उ० प्र०, प० हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण, प० [illegible] जी सिद्धान्त भूषण देहली, श्री प० [illegible] जी, श्री प० नरदेव जी आदि सब आपकी देन है।

आपके सन्यासी शिष्यो की सूची बहुत लम्बी है। आर्य समाज पर जब जब विपत्ति आई आपके संकेत मात्र पर आपके शिष्य शीश तली पर धर कर आगे निकले। देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी व श्री प० चमूपति जी के घर सुरक्षित नही थे। लाहौर मे दंगा हो गया। पूज्य स्वामी जी ने अपने शिष्यो से कहा कि इन दो महापुरुषो की रक्षा के लिए उनके निवास पर पहरा देना है। श्री प० जगदेव सिंह सिद्धान्ती सरीखे, रणबांकुरे उनके प्रति अटूट श्रद्धा रखते थे। वे इन दोनो विभूतियो के हां उनकी रक्षा के लिए पहुचे। यह क्या कोई साधारण सी बात है? स्वामी जी महाराज स्वयं कर्फ्यू मे टेढे मेढे मार्गों में से होकर सिद्धान्ती जी को भाई जी के घर छोड कर आए।

वैदिक धर्म ग्रहण करके स्वामी जी वैधानिक रूप से आर्य समाज से अभी नही जुडे थे। बिना किसी सभा संस्था की सहायता के आप एशिया के कई देशो मे तीन चार वर्ष तक वेद प्रचार के लिए भ्रमण करते रहे। वहा से लौटे तो फिर देशभर मे पैदल भ्रमण करके वेद प्रचार की ठानी। सन् 1906 से 1909 तक लगातार तीन वर्ष तक फिर किसी सभा संस्था के सहयोग के बिना देश के सब भागो म विचरण करके ऋषि का सन्देश दिया। श्री महाराज साधु मण्डली मे ही घूमा करते थे। इसी काल मे आपने गुजरात मे ऋषि के जन्म स्थान, माता पिता के नाम की खोज करने का कार्य किया। जहा-जहा ऋषि गए थ, उन उन नगरो व ग्रामो की यात्रा की। य सब काम स्वयं स्फूर्ति से किए थे।

दीनानगर के स्वर्गीय ला० देवदत्त जी एक अनुभवी पुरुष थे। आपने एक बार हमे बताया कि आर्य समाज मे जितना स्वामी जी महाराज ने भ्रमण किया इतना सम्भवत किसी भी और संन्यासी महात्मा ने नही किया। यातायात की सुविधाओ के कारण अब तो अनेको ने बहुत भ्रमण कर लिया है। स्वामी जी के जीवन काल में ही मेहता जैमिनी जी ने सारे विश्व का भ्रमण किया परन्तु स्वामी जी ने तो वेद प्रचार के लिए पैदल लम्बी-लम्बी यात्राए की। केरल के श्री प० [illegible] दत्त जी ने बताया कि चार बार तो आपने केरल की यात्राए कीं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

निडर बनो

ले०—डा० श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० आर्य समाज गोरखपुर

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं
द्यावा पृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्ताद्
उत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥

(नः) हम सबके लिए (अन्तरिक्ष) अन्तरिक्ष (अभय करति) अभय साधक हो और (इमे उभेद्यावा पृथिवी) ये दोनो द्यावा पृथ्वी (अभेयम्) अभय दायी हों (पश्चात् अभय) पीछे से अभय (उत्तरादभयम्) ऊपर से अभय और (अधराद् अभय) हम सबके लिए नीचे से अभय हो।

मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु भय है। यह सदा मनुष्य के मन को विकृत करता रहता है। याद रखिए इस भय ने लाखो मनुष्यो को असमय ही मे वृद्ध कर दिया है। हजारो मनुष्य भय के वश मे होकर काल कवलित हो गए हैं। यदि हम ससार मे आयु, विद्या, बल और धन चाहते हैं तो इस भयकर रोग को, भय को अपने मन से हमे दूर कर देना होगा। ससार मे किसी भी क्षेत्र मे हमारी असफलता का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह भय ही कारण होता है।

अभय मन्त्रो की प्रार्थना मे भय को दूर कर अभय या निर्भय बनने की प्रार्थना एव कामना की गई है। कहा गया है कि अन्तरिक्ष लोक, द्युलोक पृथ्वी लोक हमारे लिए अभय हों। अन्तरिक्ष मे विचरण करते हुए हमे किसी प्रकार के भय की शका न हो अर्थात अन्तरिक्ष से हमे किसी प्रकार की हानि न हो। हम निडर होकर अन्तरिक्ष मे विचरण करें। हम निडर होकर अन्तरिक्ष के नीचे आपन कार्यो को करते चले। फिर इसके बाद कहा गया है कि यह द्युलोक अर्थात सूर्यादि लोक हमे किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित न करे। यह पृथ्वी भी हमे भयभीत न करे। अपने चारो ओर अभय की कामना करता हुआ व्यक्ति कहता है कि मेरे आगे पीछे, ऊपर नीचे, सामने और चारो ओर अभय रहे। वास्तव मे जब मनुष्य के मन मे भय का सचार हो जाता है, तब ससार की कोई शक्ति उसे आगे नही बढा सकती। उसका कार्य नही करवा सकती। जीवन मे आगे बढने के लिए निर्भयता प्रथम वस्तु है। आनन्द की श्रेणी मे वही स्थान उत्साह का है, दुखी श्रेणी वही स्थान भय का है। हम भविष्य मे आनन्द की प्राप्ति की आशा कर किसी कार्य को करने को प्रवृत्त हो जाते हैं, परन्तु भविष्य में किसी कार्य को करने मे दुःख सम्भावना होती है तो उस दशा मे हम भयभीत होकर कार्य करना बन्द कर देते हैं। अर्थात् जिस प्रकार उत्साह कार्य को आगे बढाकर मनुष्य को विकसित करता है, वैसे ही भय कार्य को अविरुद्ध कर मनुष्य के जीवन मे उसके विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर कर देता है। यही कारण है कि इस मन्त्र मे चारो ओर अभय का वातावरण निर्माय करने की प्रार्थना की गई है।

आज से कुछ साल पूर्व एक छोटे से देशी राज्य की जेल से एक कैदी भाग निकला। वह आजीवन कैद का कैदी था। एक दिन न जाने कैसे जेल के दरवाजे के निकट बने जेल के पहरेदार के कमरे मे, जहा जेल की चाबिया थी पहुचा और पहरेदार और उनके अन्य साथियो की ओर पिस्तौल तान बोला "हाथ ऊपर" करो।

वे जानते थे कि आदमी खतरनाक है उसे हत्या करने मे सकोच नही होगा, अत उन्होने उसकी आज्ञानुसार ही किया और चाबियो का गुच्छा भी सामने पर दे दिया उसने उनको जेल की काल कोठरियो मे बन्द कर दिया और सरदार से बोला चलो, फाटक खोलो और सरकारी मोटर पर बाहर ले चलो, सरदार उसे लेकर चला तो जेलर को पेड के नीचे टहलते देखा। जेलर ने एक कैदी को आराम के साथ सरदार के साथ बैठे देखा तो उसे कोई सन्देह नही हुआ इस समय डाकू पिस्तौल को कपडे मे छिपाए हुए था पर, वह तब भी सरदार की ओर ही थी।

कुछ दूर जाकर सरदार को उसने मोटर से उतार दिया और मोटर चलाने लगा। अब वह हसा। सरदार को नमस्ते की। पिस्तौल उसके सामने फैंक कर मोटर स्टार्ट कर दी। सरदार ने थोडी देर बाद उस पिस्तौल को देखा वह लकडी की पिस्तौल थी। यह बनावटी पिस्तौल थी पर उसने भय के कारण असली पिस्तौल का रूप धारण कर लिया था। उस पिस्तौल मे जीवन तथा मृत्यु की शक्ति आ गई।

जहा तक भय का प्रश्न है, ससार मे वीरता प्रदर्शन में ही साहस की आवश्यकता नहीं। ईमानदार होने के लिए निर्भीक होना आवश्यक है। प्रलोभनों से बचने के लिए भी साहस और निर्भीकता आवश्यक है। अपने विचारो को सबके सामने रखने के लिए भी निर्भीक होना आवश्यक है और जो कुछ सही है उसे स्वीकार करने के लिए निर्भीक होना आवश्यक है।

इस प्रकार जीवन मे आगे बढने के लिए भी निर्भयता और साहस पहली वस्तु है।

भय क्या वस्तु है? यदि हम भय का विश्लेषण करें तो हमे पता लगेगा कि क्लेश, अनिष्ट और आशकाओं की कल्पना ही भय है। हम सोचते हैं कि ये आपत्तिया हम पर कम या निकट भविष्य में आएगी और उनके आने की चिन्ता से हम सूखते रहते हैं। पर, वे कभी नहीं आती। हमारा निर्बल मन बहुत सी घटित, ज्ञात, अज्ञात बातों को अनिष्टकारी मानकर उनसे तो भय ग्रस्त होता ही है, वैसे भी बहुत सी आशकाओ से भयभीत रहता है। इस लिए कहा गया है कि जीवन में सफलता के लिए सबसे अधिक आवश्यक निर्भयता है। स्वामी रामतीर्थ ने लिखा है, "एक ही दृष्टि से शेरों को वश मे किया जा सकता है। एक नजर मात्र कर शत्रु को परास्त किया जा सकता है। निर्भयता के एक ही प्रहार से विजय पाई जा सकती है।

लोकफैलों ने कहा है कि अपने दरवाजे पर लिख कर टाग दो "दृढ बनो, दृढ बनो और हर क्षेत्र मे दृढ बनो।"

स्वामी दयानन्द के जीवन मे एक घटना आती है, जब वे नर्मदा नदी के स्रोत की ओर गिरि गह्वरो मे एकान्तवासी योगियो से मिलने की आशा से जा रहे थे। विकट जगल था। जगल मे रास्ता न मिलने के कारण वे खडे कुछ सोच रहे थे कि सामने से मुँह फैलाए मृत्यु रूप बडा काला रीछ आता दिखाई दिया। वह गर्ज कर उनके सामने पिछली टागो के बल खडा हो गया। पर, स्वामी दयानन्द जरा भी नही घबराए, न विचलित हुए और उस पर उन्होने सीधी निर्भय नजर डाली। दृष्टि से दृष्टि का मिलन हुआ। हिंस्र पशु डर गया। स्वामी जी ने अपना डण्डा उसे भगाने के लिए उठाया। रीछ डर कर चीखता हुआ वहां से भाग खड़ा हुआ। रीछ की आवाज सुनकर बहुत से लोग वहां आ गए। उन्होंने स्वामी जी को आगे जाने से रोका पर वे नहीं माने और आगे बढने का निश्चय किया। महाराज ने स्वय अपनी आगे की यात्रा का वर्णन किया है, "कुछ दूर असख्य वृक्षों और अनेक प्रकार की कटीली झाड़ियों से वह जंगल भरा हुआ था। किसी ओर भी उसमें से निकलने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लहू-लुहान हो गए, जैसे शिशु कठिन हो गया। कुछ दूर तक [illegible] बूटों के बल चलना पड़ा। थोड़ी देर बाद अचानक मैं इस नई विपत्ति से मुक्त हो गया परन्तु मेरे वस्त्र धज्जी-धज्जी हो गए। काँटे चुभने से मेरे शरीर के बहुत से स्थानों से रक्त की धारा बहने लगी। थकावट और भूख से अवसन्न शरीर, पृथ्वी पर अन्धकार का प्रभुत्व, वन-मार्ग, एकान्त विषय, परन्तु मृत्यु का भय [illegible], मैं चलता ही रहा।"

निर्भयता क्या है? आत्मा की शक्ति को समझना निर्भयता है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप का सच्चा ज्ञान और उस पर निश्चल विश्वास निर्भयता है। हमारे में समीप जब [illegible] आता है जब हम अपने को डर का घर या शरीर मानते हैं। शरीर सदा ही विनाशी कीटो का भक्ष है। हर प्रकार के कष्ट और पीड़ाए उसे बींध सकती हैं। जब हम तुच्छ शरीर से ऊपर उठ जाते हैं, उसी समय हम भय से छुटकारा पाते हैं, परमेश्वर में अटूट श्रद्धा उत्पन्न कीजिए, उसका विश्वास हृदय में लाइए, तब आपको ससार का कोई कष्ट सता नहीं सकता। हृदय से भय दूर हो जाएगा। स्वामी दयानन्द पर इसीलिए इन विपत्तियों का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

याद रखिए "आपत्ति के भय से बढ़कर कोई आपत्ति नहीं। मौत के डर को मन में जगह देने के स्थान पर इसे मर जाना बेहतर है।" ऐसी कवि के शब्दों मे हम भी कहेंगे—

पग पग काटे रोडे पत्थर,
पल पल महायुद्ध गर्जन स्वर,
बस बिना सहारे इकले ही
बढ़ना, करते युद्ध निरन्तर,
चलना सरल नही इस पथ पर।
नहीं किसी पर हो तुम निर्भर,
जाओ अपने घर से बाहर,
इस पथ के यात्री चलते हैं [illegible]
सब उठा उठा कर अपना [illegible],
चलना सरल नहीं इस पथ पर।
निर्भयता के इस शुभ पथ पर,
जब पथ जीवन का गुजरित स्वर,
[illegible] उसका [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
जहां किसी से हाथ [illegible] कर,
[illegible] सरल नहीं इस पथ पर।

क्या हिन्दू होना अपराध है—4

हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति और हिन्दू समाज के विरुद्ध कभी भी इस प्रकार का अभियान न चला था जैसा कि हम आजकल देख रहे हैं। और यह सब कुछ धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हो रहा है। वर्तमान परिस्थितियों का [illegible] [illegible] [illegible] है, वह यह कि हमारे जिन नेताओं ने इस देश को स्वतन्त्र कराया था उन्होंने कभी भी हिन्दू कहलाने पर लज्जा अनुभव न की थी। अपितु उनमें से कई गर्व अनुभव करते थे। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति से उनका प्रेम, मुसलमानों के साथ उनका मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध [illegible] में न रोकता था। यही कारण था कि हिन्दू, हिन्दू रहते हुए और मुसलमान, मुसलमान रहते हुए एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतन्त्रता प्राप्ति की लड़ाई लड़ते रहे। जिन हिन्दुओं ने आजादी की लड़ाई में अपना [illegible] बलिदान किया था, उनमें लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर भाई परमानन्द और दूसरे कई थे। श्री राजगोपालाचार्य और डा० राधाकृष्ण संस्कृत के प्रमुख पंडित थे। दोनों ने गीता और [illegible] पर किताबें भी लिखी थीं। बंगाल के क्रान्तिकारी युवकों के विषय में कहा जाता है कि उनमें से कई फांसी पर चढ़ते समय हाथ में गीता लेकर फांसी पर झूल जाया करते थे। अमृतसर के [illegible] मदन लाल धींगरा ने बर्तानिया के न्यायालय में वक्तव्य देते हुए कहा था कि अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान देना मैं अपना धर्म समझता हूं। उनका यह भी विश्वास है कि देश की सेवा भगवान् राम की सेवा है। देश के प्रेम भगवान् कृष्ण से प्रेम है और उन्होंने अन्त में यह प्रार्थना की थी कि [illegible] जन्म बार-बार अपने ही देश में हो और वह अपनी मातृभूमि के लिए ही बलिदान देता रहे।

मैंने जो कुछ ऊपर लिखा है उससे स्पष्ट हो जाता है कि आज जिस धर्मनिरपेक्षता का जितना चर्चा था आजादी से पूर्व उसका इतना उल्लेख न होता था। और जब हमारे देश का नया विधान बनाया गया था उस समय भी धर्मनिरपेक्षता पर किसी ने बल न दिया था। सब लोगों को चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान सिख या ईसाई या कोई और सबको एक जैसे अधिकार दिए गए थे। इसलिए हिन्दू मुसलमान का कभी प्रश्न पैदा नहीं हुआ था। उस विधान का [illegible] आधार ही यह था कि इस देश के सब लोग बराबर हैं। धर्म या जाति के आधार पर उनमें किसी प्रकार का भेदभाव न होगा। जब विधान बनाया गया था, उसमें धर्मनिरपेक्षता का शब्द सम्मिलित न किया गया था। विधान में यह संशोधन 1981 में कराया था। वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बढ़ते हुए प्रभाव से चिन्तित थे। इसलिए विधान में यह संशोधन करा कर धर्मनिरपेक्षता का शब्द उसमें जोड़ दिया। हिन्दी में उसका नाम धर्मनिरपेक्ष [illegible] रखा गया था।

धर्मनिरपेक्षता का विचार इस धारणा से अनुकूल किया था कि इस देश के भिन्न भिन्न सम्प्रदायों में एकता रहे परन्तु हो इसके विपरीत रहा है। धर्मनिरपेक्षता के नाम से हिन्दुओं को कमजोर करने का प्रयास हो रहा है इस समय सिवाय भारतीय जनता पार्टी के शेष सब पार्टियां हिन्दुओं को गिराने और अल्पसंख्यकों [illegible] का प्रयास कर रही हैं। हमारे भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ [illegible] को धर्मनिरपेक्षता के मसीहा बनने का प्रयास कर रहे हैं। अब भाषण [illegible] है कि वह धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की स्थापना [illegible] इसलिए उन्हें हटना चाहिए। वास्तविक स्थिति यह है कि इस [illegible] के लिए सबसे बड़ा खतरा अगर कोई है तो वह वी० पी० सिंह [illegible] के नाम पर उन्होंने देश में एक ऐसी आग लगाई है जिसमें [illegible] और संगठन के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा कर [illegible]

[illegible] एक प्रश्न यह भी किया जा रहा है कि पिछले [illegible] हिन्दी और [illegible] [illegible] देश में यह तूफान क्यों उठा है? [illegible] यह उनका उत्तर है। जो [illegible] करना चाहते हैं। हिन्दू इस देश [illegible], उनकी संस्कृति और उनकी

परम्पराएं इस देश के इतिहास का आधार है और यह इतनी प्राचीन है कि इसे कोई मिटा नहीं सकता। लोगों के [illegible] भी कई महापुरुषों के नाम रहते हैं परन्तु राम और कृष्ण के लिए हिन्दुओं में विशेष श्रद्धा है। जो लोग जो दल और जो सरकार राम और कृष्ण को मिटाने का प्रयास करेगी वह स्वयं मिट जाएगी। यही कारण है कि इस देश में मुगलों का शासन भी न चल सका। अंग्रेज ने भी शासन किया परन्तु अन्त में समाप्त हो गया। 1947 में कांग्रेस का शासन हुआ कांग्रेस सरकार गांधीजी के सहारे चलती रही है। उनका नाम लेकर चलती रही है। जब इन्दिरा गांधी ने धर्मनिरपेक्षता का सहारा लिया तो उनका पतन हो गया। अन्तत न वह स्वयं रही न उनकी सरकार। उनके बाद धर्मनिरपेक्षता के और दावेदार राजीव गांधी का शासन प्रारम्भ हुआ। वह भी पांच वर्ष के बाद न चल सके। उनका स्थान धर्मनिरपेक्षता के एक और ठेकेदार विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लिया। वह भी एक वर्ष में साफ हो गए।

तात्पर्य यह कि इस धर्म प्रधान देश में धर्म के विरुद्ध कोई आन्दोलन नहीं चल सकता।

आज जो समस्या सबसे अधिक तीव्रता धारण कर गई है वह साम्प्रदायिकता है। समझा जाता है कि इससे पहले हमारे देश में साम्प्रदायिकता का कभी भी इतना जोर न हुआ था जितना आज है इसे रोकने के लिए कुछ लोग धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देने लगते हैं और कहते हैं कि हमारे देश की सभी बिमारियों का इलाज है धर्मनिरपेक्षता।

साम्प्रदायिकता क्या है और धर्मनिरपेक्षता क्या है? इसकी कभी भी व्याख्या नहीं की गई। साम्प्रदायिकता के बारे में केवल यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति केवल अपने सम्प्रदाय की बात करता है वह साम्प्रदायक है और धर्मनिरपेक्षता के बारे कहा जाता है कि जो सबकी बात करता है और किसी धर्म को पाबन्द नहीं वह धर्मनिरपेक्ष है। लेकिन इतिहास हमारे सामने एक भिन्न चित्र प्रस्तुत करता है। जो लोग कई बार राष्ट्रीयवादिता का बाना ओढ़ते हैं वे भी फिर साम्प्रदायिक बन जाते हैं। हमारे सामने मुख्य उदाहरण डा० मुहम्मद इकबाल का है। इसी व्यक्ति ने लिखा था—

> मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
> हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तान हमारा।

और इसी इकबाल ने कहा था—

> सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा।
> हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलिस्तां हमारा।

और फिर यह सब कुछ कहने वाले इकबाल ने पाकिस्तान का झण्डा उठा लिया। वह पाकिस्तान को स्थापित होता तो न देख सके लेकिन मुसलमानों के दल में यह विचार बढाने वाले तो डा० इकबाल थे

इसी प्रकार मुहम्मद अली जिन्नाह के बारे में कहा जाता था कि वह इस देश में सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष था सरोजिनी नायडू मुहम्मद अली जिन्नाह को हिन्दू मुस्लिम एकता का सन्देशवाहक कहा करती थीं आखिर में इसी जिन्नाह ने पाकिस्तान बनवा कर ही दम लिया। जिन्नाह को इस्लाम का कुछ भी पता न था। उसने कभी कुरान शरीफ न पढ़ा था न कभी नमाज अदा की थी। कई बड़े बड़े मौलवी और मौलाना जिन्नाह को कायदे आजम नहीं काफरे-आजम कहा करते थे। लेकिन वही व्यक्ति फिर मुसलमानों का कायदे-आजम बन गया। आज पाकिस्तान में उसकी वैसे ही पूजा होती है जैसे भारत में महात्मा गांधी की। हम गांधी जी को राष्ट्रपिता कहते हैं। पाकिस्तान में जिन्नाह को बाबा-ए-पाकिस्तान कहते हैं। गांधी जी तो किसी न किसी रूप में हिन्दुत्व के पाबन्द समझे जाते थे। जिन्नाह तो इस्लाम के निकट भी न फटकता था। अपने आपको मुसलमान प्रकट करने के लिए उसने कोट पतलून की जगह शेरवानी और सलवार पहननी शुरू कर दी थी इससे अधिक उसका इस्लाम से कोई सम्बन्ध न था। लेकिन वह मुसलमानों का कायदे आजम था। भारत के मुसलमान भी गांधी जी का वह सम्मान नहीं करते जो मुहम्मद अली जिन्नाह का करते हैं।

इस समस्या के कुछ और पक्ष भी हैं। जिनके विषय में आगामी अंक में लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

शान्ति प्रयास की एक सही दिशा

ले०—श्री सुशील कुमारजी शर्मा बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर

किसी भी राष्ट्र मे स्थापित राजनैतिक व्यवस्था की सफलता या असफलता बहुत कुछ उस राष्ट्र के आर्थिक विकास पर निर्भर करती है। जो राष्ट्र आर्थिक विकास की दृष्टि से पीछे रह जाते हैं वहा सामाजिक असतोष तथा राजनैतिक उथल-पुथल को प्रोत्साहन मिलता है। सोवियत सघ सहित पूर्वी यूरोप मे होने वाले अविश्वसनीय परिवर्तन इसका ताजा-तरीन उदाहरण हैं। वास्तव मे पूर्वी यरोपीय देशो की बिगडती हुई आर्थिक दशा ने इन देशो को अपने दृष्टिकोण मे परिवर्तन लाने पर विवश किया है जिससे साम्यवादी व्यवस्था पर भी प्रश्न चिन्ह अकित हो गया है। द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व दोनो महा-शक्तियों के बीच दो परस्पर विरोधी गुटों मे बट गया। कालातर मे पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी यूरोप के मध्य सैनिक अस्त्र शस्त्रो की अधी प्रति-स्पर्धा बन्ध गई जिसने विश्वशान्ति को गहरे सकट मे डाल दिया। आर्थिक विकास की कीमत पर भारी रकम खर्च करते हुए शस्त्रीकरण को बढावा दिया गया जिसमे आखिर पूर्वी यूरोप बहुत घाटे मे रहा। सोवियत सघ मे राष्ट्रपति मिखाईल गर्बाच्योव के सत्ता सम्भालने के बाद पूर्वी यूरोप मे इस बात को बल मिलने लगा कि अस्त्र शस्त्रो की अन्धाधुंध प्रतिस्पर्धा यूरोप के हित मे कतई नही है। मिखाईल गर्बाच्योव द्वारा खुलेपन की नीतियो का समर्थन करने के परिणामस्वरूप पूर्वी यूरोप मे आश्चर्यजनक राजनैतिक परिवर्तन प्रारम्भ हुए। पूर्वी तथा पश्चिमी जर्मनी के एकीकरण को इस शताब्दी की महानतम घटना माना जा सकता है, जिसने यूरोप मे कई दशको से छिडे शीत युद्ध को लगभग समाप्त कर दिया है। नि शस्त्रीकरण के पहले चरणो मे सोवियत सघ तथा पश्चिमी यूरोप के मध्य परमाणु हथियारो तथा प्रक्षेपास्त्रो की एक सीमा निश्चित की गई। तदुपरात वारसा सधि तथा नाटो देशों के सदस्यो की बैठक मे दोनो पक्षों द्वारा अपनी सैनिक क्षमता पर अकुश लगाने की बात स्वीकार की गई। दोनो पक्षो द्वारा दिखलाई गई ईमानदारी तथा राजनायिक सूझ-बूझ से यूरोप मे शान्ति का एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ है जिसका लाभ अन्ततः पूरे यूरोप को मिलेगा। निश्चित रूप से अब यूरोपीय देश अपने ससाधनो का अधिक उचित उपयोग करके दृढता के साथ आर्थिक विकास के मार्ग पर आगे बढ सकेंगे। इस समय सोवियत सघ एक बडे आर्थिक सकट से गुजर रहा है लेकिन अमेरिका तथा उसके सहयोगी राष्ट्र इस सुधार वादी प्रक्रिया को बनाए रखने के उद्देश्य से उसकी हर सम्भव आर्थिक सहायता करने के लिए तैयार हैं। इस बात की भी प्रबल सम्भावनाए है कि निकट भविष्य मे सोवियत सघ यूरोपीय आर्थिक समुदाय में अपना एक महत्व पूर्ण स्थान बना ले जिसके लिए पश्चिमी देश उसकी व्यापक रूप से सहायता कर रहे हैं। वैसे भी अब सोवियत सघ के लिए यूरोपीय आर्थिक समुदाय से जुडना आर्थिक रूप में अधिक लाभदायक है। इस सारे प्रकरण मे सोवियत राष्ट्र पति मिखाईल गर्बाच्योव के राजनायिक परिपक्वता की जितनी प्रशसा की जाये कम है। उन्हे उनके विश्वशान्ति की दिशा मे किए गये शानदार प्रयासो के लिए इस वर्ष के नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है जिसके वे पूरे-पूरे हकदार हैं। यहा गौरतलब बात यह है कि यूरोप मे इन बदली हुई परिस्थितियो तथा बनते हुए नये समीकरणो के दृष्टिगत दोनों महा-शक्तियो की प्राथमिकता तथा प्रतिबद्धता मे भी अन्तर आना स्वाभाविक है। बहुत सम्भव है कि भारत सोवियत सम्बन्ध भी अब व्यवहारिक कम और औपचारिक अधिक बन कर रह जायें। वैसे भी अब सोवियत सघ किसी दूसरे राष्ट्र को आर्थिक सहायता देने की स्थिति मे नही है। दूसरी ओर अमेरिका ने पाकिस्तान को मिलने वाली सैनिक तथा आर्थिक सहायता स्थगित कर दी है। अमेरिका ने पाकिस्तान की परमाणु नीति तथा कार्यक्रम को लेकर चिन्ता व्यक्त की है और अब वह इस पर अपनी पूरी निगरानी चाहता है। लेकिन अमरीकी प्रशासन द्वारा व्यक्त की गई यह चिन्ता हास्यास्पद है क्योंकि इससे पहले तक अमरीकी प्रशासन जानबूझ कर पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम को को दृष्टि विगत करता रहा है। सच्चाई यह है कि सोवियत सघ के साथ सम्बन्धो मे आये सुधार तथा अफगानि-स्तान से सोवियत सेना की वापसी के बाद अब अमेरिका के लिए पाकिस्तान उतना महत्वपूर्ण नहीं रह गया है। अब यदि अमेरिका पाकिस्तान की सहायता बहाल भी करता है, तो [illegible] शर्तों के अनुसार ही [illegible]। एशियाई देशो को अब यह कठोर सत्य जान लेना चाहिए कि यूरोप के तिजारती राष्ट्र केवल मानवीय आधार पर किसी दूसरे राष्ट्र की सहायता नही करते। चाहे अप्रत्यक्षरूप मे ही सही उनसे प्राप्त होने वाली प्रत्येक सहायता सशर्त होती है। बहरहाल इस समय अमेरिका तथा सोवियत सघ खुलकर एक दूसरे से सहयोग कर रहे हैं और ऐसी आशा की जानी चाहिए कि इससे विश्वशान्ति के प्रयासों को और अधिक बल मिलेगा। साथ ही इस बात से भी इन्कार नही किया जा सकता कि भविष्य मे तीसरी दुनिया के अर्ध-विकसित राष्ट्रों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मे यूरोप के विकसित तथा संगठित राष्ट्रो के साथ प्रतिस्पर्धा मे टिक पाना और कठिन हो जायेगा।

आज विश्व के अधिकाश राष्ट्र अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए क्षेत्रीय सगठनों से जुड रहे हैं। यदि क्षेत्रीय सहयोग की भावना को पूरी ईमानदारी से स्वीकार किया जाये तो यह किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते है। इसी का अनुसरण करते हुए सात दक्षिण एशियाई देशो (भारत, पाकिस्तान, बगला देश, श्री लका, नेपाल, भूटान तथा मालदीप) द्वारा दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग सगठन (दक्षेस) की स्थापना की गई जिसका पहला शिखर सम्मेलन 1985 मे बगला देश की राजधानी ढाका मे सम्पन्न हुआ। पाकिस्तान के अनावश्यक राजनैतिक उपक्केपन के कारण फिलहाल अफगानिस्तान दक्षेस की सदस्यता से वचित है। अफगानिस्तान के अविलम्ब दक्षेस की सदस्यता प्रदान की जानी चाहिए। दक्षेस का मुख्य उद्देश्य दक्षिण एशिया के देशों में परस्पर आर्थिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक सहयोग को बढावा देना है, जिससे इस पिछडे हुए क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो सके। जहा तक दक्षेस की अब तक की उपलब्धियों का प्रश्न है। वे केवल कागजों तक ही सीमित हैं अभी तक कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया। इस क्षेत्र के राष्ट्रों की आर्थिक दशा काफी चिन्ताजनक है तथा किसी भी राष्ट्र को आर्थिक शक्ति के रूप में नहीं माना जा सकता। इन राष्ट्रों के [illegible] साधन अत्यन्त सीमित हैं। [illegible] कारण यहां [illegible] को व्यापक रूप से क्रियान्वित करना बहुत कठिन है। नेपाल, भूटान, श्रीलंका मालदीप [illegible] की [illegible] पर निर्भर है [illegible] [illegible] है। [illegible] जिस राष्ट्र की उत्पादकता का तीस प्रतिशत या उससे अधिक विदेशी ऋण तथा ब्याज की किश्त चुकाने मे व्यय हो रहा हो, उस राष्ट्र को विदेशी ऋण के जाल मे फसा हुआ माना जा सकता है। लगभग यही स्थिति अब भारत की बन चुकी है। मौजूदा हालात मे भारत को विदेशी ऋण पर ब्याज चुकाने के लिए भी अतिरिक्त ऋण लेने की आवश्यकता है। ऐसे गम्भीर आर्थिक सकट में आज देश को कठोर वित्तीय अनुशासन तथा प्रबन्ध की आवश्यकता है लेकिन हमारे गैर जिम्मेदार नेता अपनी लीडरी चमकाने के चक्कर मे कर्ज-माफी के जरिए देश का दिवाला पिटवाने पर तुले हैं। ऐसी राष्ट्र घाती प्रवृत्ति को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिए दक्षिण एशियाई देशों मे फैली हुई भयकर गरीबी को दूर करने के लिए आर्थिक विकास की गति तेज करने तथा जनहित कार्यक्रमों को सुचारु ढग से चलाए जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए उपलब्ध साधनो का उचित प्रयोग किया जाना बहुत जरूरी है। इन देशों मे स्त्रियों तथा बच्चों की स्थिति बहुत खराब है। गरीबी कुपोषण तथा चिकित्सा सम्बधी आधारभूत सुविधाओ के अभाव में लाखों की सख्या में मासूम बच्चे अत्यन्त छोटी आयु मे ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। इन देशो मे लाखों की संख्या मे काम करने वाले बाल श्रमिकों का बुरी तरह आर्थिक तथा शारीरिक शोषण किया जाता है। इन मासूम बाल श्रमिको को अत्यन्त असुरक्षित अवस्थाओ मे बारह से पन्द्रह घण्टे तक काम करना पडता है जिसके बदले मे उन्हें मात्र सात आठ रुपये दैनिक मजदूरी दी जाती है। जनकल्याण के नाम पर इन देशों में कागजी घोडे ही दौडाए जाते हैं जबकि वास्तविकता इसके ठीक विपरीत होती है। आज भारत पाकिस्तान तथा श्रीलंका जैसे राष्ट्र आतंकवाद की गम्भीर समस्या से जूझ रहे हैं जिसके कारण इन राष्ट्रों के [illegible] का बहुत बडा भाग देश में कानून व्यवस्था बनाए रखने पर खर्च हो रहा है। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों मे राजनैतिक अस्थिरता भी एक बडी समस्या है [illegible]

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

ले०—आचार्य [illegible] श्री वेद वाचस्पति आर्य नगर, ज्वालापुर हरिद्वार

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी थे। वे त्यागी, तपस्वी, संयम और ब्रह्मचर्य के मूर्त रूप थे। सन्यासी होने के कारण उनमें पुत्रैषणा तो थी ही नहीं, वित्तैषणा और लोकैषणा भी उनको छू नहीं गई थी। वे पूर्ण वीतराग थे। किसी से किसी प्रकार की लाग-लपेट वे नहीं रखते थे। संयम और वीतरागता आदि सन्यासी के आदर्श गुण तो उनमें पराकाष्ठा के थे ही, उनका स्वाध्याय भी बड़ा विस्तृत था। इतिहास के वे बड़े भारी ज्ञाता थे। सिक्खों के इतिहास के तो वे अद्वितीय विद्वान् थे। जब गुरुकुल कांगड़ी गंगा के उस पार चण्डी पर्वत की तलहटी मे स्थित था तब कितनी ही बार स्वामी जी महाराज को सिक्ख धर्म व सिक्ख इतिहास एवं राजनीति पर व्याख्यान देने के लिए गुरुकुल मे बुलाया था और इन विषयों पर उनके व्याख्यान बड़े पसन्द किए गए थे। संस्कृत साहित्य के इतिहास, पुराण और दर्शन आदि विषयों के भी वे बड़े मार्मिक ज्ञाता थे। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों का उनका ज्ञान भी अद्वितीय और बड़ा सुलझा हुआ था। वेदों का उनका स्वाध्याय भी बड़ा गहरा और व्यापक था। ऋग्वेद की मन्त्र संख्या पर उन्होंने जो पुस्तक लिखी थी वह उनके गहरे वैदिक स्वाध्याय का परिचय देती है।

मैं जब गंगा के उस पार गुरुकुल कांगड़ी मे पढ़ता था तभी से स्वामी जी महाराज को जानता हू। उसी समय से स्वामी जी महाराज का स्नेह मुझ पर बना रहा और उनका आशीर्वाद मुझे प्राप्त होता रहा। वे जब भी गुरुकुल के वार्षिक उत्सवो पर अथवा बीच में भी कभी गुरुकुल मे पधारते थे तो मुझे बुला कर अवश्य हाल चाल पूछा करते थे। मैं पढ़ने लिखने मे अच्छे छात्रो मे था, मेरा स्वास्थ्य भी बहुत उत्तम था और गुरुकुल के उत्सवो के अवसर पर होने वाले सम्मेलनो आदि मे बोला भी करता था, इस कारण स्वामी जी महाराज मुझ से स्नेह करते थे। जब भी वे मुझ से मिलते थे तो मुझे समाज के क्षेत्र मे कार्य करने की प्रेरणा किया करते थे। उनकी और अन्य पूज्य गुरुजनों की प्रेरणा से ही मैंने आर्य समाज के क्षेत्र में काम करने का निश्चय किया था। जब मैं सन् 19[illegible] में गुरुकुल से [illegible] की उपाधि प्राप्त करके आर्य [illegible] [illegible] में आया, [illegible] के लिए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होती थी। उन दिनों स्वामी जी महाराज लाहौर में [illegible] [illegible] महाविद्यालय के आचार्य थे

और प्रतिनिधि सभा मे वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भी थे। आरम्भ में मैंने वेद प्रचार विभाग मे ही कार्य करना शुरू किया था। अधिष्ठाता के रूप मे स्वामी जी द्वारा दिए गए प्रोग्रामो पर मुझे आर्य समाजो के उत्सवो पर व्याख्यान देने के लिए जाना होता था। उन दिनों की एक बात स्वामी जी महाराज की मुझे अभी तक याद है। यदि कभी कोई उपदेशक या भजनीक अपने प्रोग्राम से किसी कारण पहले स्वीकृति लिए बिना लाहौर आ जाता था तो स्वामी जी उसी समय उसे उसी स्थान पर वापिस भेज देते थे जहां से वह आया होता, चाहे वह स्थान लाहौर से कितना ही दूर क्यों न होता। कभी-कभी तो ऐसे व्यक्तियो को मरदान, कोहाट और पेशावर जैसे दूर स्थानों पर भी वापिस जाना पड़ता था। जब स्वामीजी की लिखित स्वीकृति उन्हें वहां मिल जाती तभी वे वापिस लाहौर या अपने निवास स्थानो पर आ पाते थे।

इन दिनों उपदेशक महाविद्यालय मे स्वामी वेदानन्द जी महाराज वेद पढ़ाया करते थे। स्वामी वेदानन्द जी किसी कारण उपदेशक महाविद्यालय छोड़कर चले गए थे। तब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महाशय कृष्ण जी और प्रधान दीवान बदरीनाथ जी से कह कर मुझे स्वामी वेदानन्द जी के स्थान पर उपदेशक विद्यालय मे वेद का उपाध्याय नियुक्त कराया था। वेद के साथ-साथ मुझे उपदेशक विद्यालय मे अष्टाध्यायी पढ़ाने का काय भी दिया गया था। तब तो मुझे स्वामी जी महाराज को बहुत ही समीप से देखने का अवसर मिला था। स्वामी जी महाराज की दिनचर्या, स्वभाव, काय क्षमता और स्वाध्याय शीलता आदि को इतने समीप से देख कर स्वामी जी प्रति मेरी श्रद्धा और आदर मे वृद्धि बहुत बढ़ गई थी। सचमुच वे आर्य समाज मे अपनी किस्म के एक ही सन्यासी थे।

उपदेशक विद्यालय में स्वामी जी के साथ रहते हुए मैंने स्वामी जी से एक बार पूछा था कि स्वामी जी क्या आपने कभी योग का अभ्यास भी किया है? स्वामी जी ने कहा कि योग का कोई और विशेष अभ्यास तो नहीं किया है। कुछ समय अपने भ्रमण काल मे प्राणायाम का विशेष अभ्यास मैंने अवश्य किया था। मैंने उनसे पूछा कि प्राणायाम के अभ्यास से क्या आपको भी कोई किसी तरह की सिद्धि या विशेष उपलब्धि भी प्राप्त हुई थी? स्वामी जी ने बताया था कि इन दिनों मुझे अपने शरीर में से एक विशेष प्रकार की सुगन्ध आने लगी थी, मैं जहां भी बैठता था मुझे वह सुगन्ध घेर लेती थी।

स्वामी जी महाराज के व्याख्यान भी बड़े सुलझे हुए और रोचक हुआ करते थे। मैंने स्वामी जी के सैकड़ो व्याख्यान सुने होंगे। आर्यसमाजों के उत्सवों पर मैं और स्वामी जी प्रायः इकट्ठे हो जाया करते थे। स्वामी जी के व्याख्यानो का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। उनके व्याख्यानो मे उनके अपने अनुभव पर आधारित और इतिहास के अध्ययन से संगृहीत शिक्षाप्रद और रोचक कहानियो का पुट रहता था। न जाने कितनी कहानियां वे अपने व्याख्यानो मे सुना देते थे। उनके पास कहानियो का अटूट भण्डार था। मैंने स्वामी जी से अनेक बार प्रार्थना की थी कि आप इन कहानियो को अपने व्याख्यानो मे पिरो कर लिख डालिए, आर्य समाज के साहित्य मे यह बहुत निराली वस्तु हो जाएगी और आगे आने वाले लोगो के लिए बड़े काम की चीज होगी। स्वामी जी ऐसा करने की बात कह तो देते थे पर वह ऐसा कर नहीं सके। मैंने तो स्वामी जी से यहां तक भी कह दिया था कि आप प्रतिनिधि सभा से मुझे माग लीजिए, मैं आपके साथ रहूगा। मुझे उनकी ये कहानिया और इनसे ओत प्रोत उनके व्याख्यान बड़ पसन्द आते थे।

व्याख्यानो के सम्बन्ध मे स्वामी जी महाराज का एक स्थिर नियम यह था कि वे व्याख्यान के लिए नियत समय से अधिक एक मिनट भी नहीं लेते थे। कई बार ऐसा भी हो जाता था कि स्वामी जी से पहले बोलने वाले वक्ता अपने निर्धारित समय से बहुत अधिक समय ले लेते थे और स्वामी जी का अपना समय बहुत कम रह जाता था स्वामी जी उसी बचे हुए थोड़े समय मे ही अपना व्याख्यान समाप्त कर देते थे। कभी-कभी तो स्वामी जी के अपने नियत समय मे 5 10 मिनट ही शेष रह जाते थे। स्वामी जी उन्हीं 5 10 मिनटों मे अपना वक्तव्य समाप्त कर देते थे। उत्सव के प्रबन्धक व जनता कितना ही कहते रहें स्वामी जी नियत समय से आगे बोलने के लिए उद्यत नहीं होते थे।

भोजन के सम्बन्ध मे भी स्वामी जी महाराज का ऐसा ही अटल नियम था। वे दिन में 12 बजे के बाद कभी भोजन नहीं करते थे। शाम को तो वे भोजन करते ही नहीं थे। दिन मे एक बार ही भोजन करते थे। यदि कभी ऐसा हो जाता था कि उन्हें दिन में 12 बजे से पूर्व भोजन नहीं मिल सका तो वे फिर उस दिन भोजन ही नहीं करते थे चाहे कितना भी आग्रह किया जाए। फिर वे उस दिन भोजन न करके अगले दिन ही भोजन करते थे।

स्वामी जी का डील डौल बहुत बड़ा था। उनका स्वास्थ्य भी आश्चय जनक रीति से उत्तम था। इसलिए उनकी भूख और भोजन की मात्रा भी पर्याप्त अधिक थी। फिर वे खाते भी दिन मे एक बार ही थे। इसलिए वे भोजन पर्याप्त मात्रा मे करते थे जब मेरा नया नया विवाह हुआ तो मैंने स्वामी जी को एक दिन अपने घर भोजन करने के लिए प्राथना की। स्वामी जी ने प्राथना स्वीकार कर ली स्वामी जी नियत समय पर भोजन करने आये। मेरी पत्नी ने स्वामी जी के प्रति हमारी श्रद्धा के अनुरूप अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम भोज्य पदाथ बनाये पत्नी ने बड़े पतले पतले फुलके बनाए स्वामी जी ने मेरी पत्नी का नाम लेकर हसते हुए कहा, इन फुलकों से तेरा छुटकारा नहीं होगा, यदि अपना छुटकारा चाहती है तो मोटी मोटी रोटी बना कर भेज, इन कागज के टुकड़ो से मेरा पेट नहीं भरेगा। यह घटना जब कभी याद आ जाती है तो हम दोनो को अब भी हसी आ जाया करती है।

स्वामी जी महाराज कई बार बातचीत मे व्याख्यानो मे भी प्रसग वश सेना के पारिभाषिक शब्दो का प्रयोग कर दिया करते थे। मैंने एक बार स्वामी जी से पूछा कि स्वामी जी! आपको ये सेना के पारिभाषिक शब्द कैसे आते हैं? स्वामी जी ने बताया था कि वे वैरागी होने से पहले सेना मे काय कर चुके थे। उन्होने यह भी बताया था कि व चीन के युद्ध म लड़ने के लिए चीन भी गये थ।

स्वामी जी के परिचित मेरे एक मित्र ने बताया था कि वैरागी होन से पहले जब स्वामी जी अपन गाव मे रहा करते थे तो गाव म एक चाल चलन की बुरी स्त्री रहती थी। वह दुष्टा स्त्री गाव के युवको के चरित्र को भ्रष्ट किया करती थी। लोगो ने उसे बहुत समझाया। पर वह अपना रवैया नहीं छोड़ती थी। जब हालत बहुत बिगड़ गई और वह दुष्टा ठीक ही न हुई तो स्वामी जी ने एक दिन अवसर पाकर उस स्त्री को उसका गला घोटकर इस ससार से विदा कर दिया और गाव के युवको को उसके बुरे प्रभाव से बचा लिया। इस घटना से पता चलता है कि स्वामी जी के सन्यस्त जीवन मे जो अलौकिक संयम, ब्रह्मचर्य और चरित्र की पवित्रता दिखाई देती थी। उसका बीज उनके वैराग्य से पूर्व के जीवन मे भी विद्यमान था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हृदय और मस्तिष्क के रोगों से बचाव

लेखक—श्री प्रो० इन्द्रदेवसिंह आर्य, एम० एस० सी०, एम० एस० डी०, साहित्यरत्न

हमारे शरीर मे रक्त का सुचारु रूप से सचार सुस्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है। परन्तु आधुनिक युग मे मनुष्य के अनियमित एव कृत्रिम जीवन के कारण उसे अनेक प्रकार के हृदय एव मस्तिष्क रोग आक्रान्त कर रहे हैं। रक्त सचार शिराओ और धमनियो के द्वारा निरन्तर चलता रहता है। पर इनके अवरुद्ध होने के कारण हृदय और मस्तिष्क के भयकर रोग होते हैं। धमनिया के अवरोध से ऐथिरोस्क्लेरोसिस नामक रोग हो जाता है इससे मुख्यत बडी और मझौले आकार की रक्तवाहिनिया प्रभावित होती हैं हालांकि यह रोग मुख्यत पुरुषों मे ही पाया जाता है। यह विशेषत उन व्यक्तियों को प्रभावित करता है जिन्हे मधुमेह है जो धूम्रपान करते है जिन्हे पुराना उच्च रक्तदाब या जिनमे उच्च कालेस्टेराली अवस्था उत्पन्न हो गई है। ऐथिरोस्केलेरोसिस मे रक्त वाहिनियो की भित्तियो मे तन्तु या वसा के थक्के जमने लगते हैं जिससे वे सकरी हो जाती है। साधारणत ऐथिरोस्केलेरोसिस प्रौढ या वृद्धो म ही पाई जाती है। रक्त वाहिनियो मे अवरोध उत्पन्न होने स छाती मे दर्द पैदा हो सकता है। आराम करने से यह दर्द कम हो जाता है। मस्तिष्क के सम्बन्धित रक्त वाहिनियो मे अवरोध उत्पन्न होने पर स्थिति गम्भीर बन सकती है जिसके कारण दृष्टि वाणी और हाथ-पैरो का सतुलन भी प्रभावित होता है। जब कोई धमनी पूर्णत अवरुद्ध हो जाती है तब छाती मे भारी दर्द होता है जो आराम से भी कम नही होता व बेहोशी भी हो सकती है।

यदि आपके परिवार मे पैत्रिक मधुमेह हृदय रोग या रक्तसचार के रोग रहे हैं, तो अच्छा होगा कि प्रौढावस्था म प्रवेश करने पर आप डाक्टरी परामर्श प्राप्त कर। साधारणत पशु चर्बीयुक्त भोजन घी मक्खन क्रीम आदि सतृप्त वसायुक्त पदार्थों का सेवन यथाशक्ति कम कर और तले हुए पदार्थ या ज्यादा मिठाई खाने से बचे। इस दृष्टि से सामान्यत शाकाहारियो का स्वास्थ्य मासाहारियों की अपेक्षा सदा अच्छा रहता है। आपके भोजन मे जितना अधिक शाक, भाजी और ताजे फल होंगे उतना लाभकारी होगा। आजकल शराब का प्रयोग बढ रहा है, यह अत्यन्त हानिकारक है। नियमित व्यायाम करें और चिन्ताओ से अपने को दूर रखें। क्रोध, चिन्ताए और मानसिक तनाव सुस्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं। उनसे रक्तदाब बढता है जो घातक हो सकता है।

भगवान ने हृदय के रूप मे रक्त को सुदृढ पम्पिंग यन्त्र शरीर मे निर्माण किया है। हृदय प्रति मिनट 5 लीटर रक्त का शरीर मे सचालन करता है। शरीर मे बिछे सूक्ष्म रक्त वाहिनियो को कोशिका कहते हैं। इन कोशिकाओ के जाल मे विद्यमान रक्त वाहिनियो की लम्बाई दस सहस्र कोटि मीटर रहती है। इतनी लम्बी वस्तु की कल्पना करना भी हमारे लिए कठिन है।

हृदयरोग को उत्पन्न न होने देने के उपाय

(1) हम ऊपर कह चुके हैं कि रक्तमिश्रण मे शिथिलता या अवरोध से हृदय रोग होते हैं एव रक्तमिश्रण सुव्यवस्थित होते रहने के लिए सभी आयु के व्यक्तियो को व्यायाम करना चाहिए या कम से कम ऐसी क्रियाए करनी चाहिए जिनसे शरीर के स्नायुओ को गति मिले, परन्तु यह ध्यान रहे कि व्यायाम अपनी शारीरिक शक्ति के अनुसार हो व्यक्ति प्रौढ एव वृद्धो की अपेक्षा अधिक व्यायाम कर सकते हैं। प्रौढो के लिए आसन या धीरे धीरे दौडने का या तैरने का व्यायाम या खुली हवा मे दो तीन मील भ्रमण पर्याप्त होगा।

(2) रुधिराभिसरण यथोचित होने के लिए मालिश बहुत लाभदायक है। मालिश से हृदय तथा रक्त वाहिनियों की हलचल के कारण रक्तप्रवाह बढकर शरीर को शक्ति व स्फूर्ति प्राप्त होती है। यदि प्रतिदिन मालिश सम्भव न हो तो कम से कम सप्ताह में दो बार अवश्य करें। इससे भी बहुत लाभ होगा।

(3) चिन्तामुक्त रहें—मस्तिष्क और मन को शांत रखें। कौटुम्बिक व्यक्तियों की भलाई पर भी [illegible] को [illegible] में [illegible] कार्यों में [illegible], [illegible] सारीरिक परेशानियों में डूबे न रहें। [illegible] से रहें और स्निग्धहास्य आपके मुख मण्डल की शोभा बढाता रहे।

(4) जीवन की जो भी समस्याए आयें उनका समाधान सबके लिए सुखदायक हो ऐसा प्रयत्न करें। सबके सुख मे अपना सुख देखने की प्रवृत्ति बनाए।

(5) जीवन मे गौरीव रहने की इच्छा हो तो आपके विचार सबको पसन्द हो ऐसा प्रयत्न करें, इसके लिए स्वार्थ बुद्धि त्याग कर लोकोपकारी भावना धारण करें।

(6) तथा तम्बाकू धूम्रपान आदि व्यसनों से मुक्त रहें।

(7) कार्यरत रहें—रोग अस्वस्थता आदि से बचने के लिए काम करते रहें, परन्तु काम ऐसा चुनें जो अपनी शक्ति और योग्यता के अनुरूप हो।

(8) काम धन्धे से बचे समय को अपने या आस-पडोस के बच्चों को पढाने, सेवा, चिकित्सा प्रचार प्रसार आदि सामाजिक सेवा के कार्यों मे लगायें।

(9) जीवन का कुछ समय आत्म चिन्तन और ईश्वरोपासना के लिए निश्चित [illegible] [illegible] होती है।

(10) हृदय रोग से बचने वालों की अमेरिका के राष्ट्रपति आइजनहॉवर का उदाहरण स्मरणीय है। उन्हें हृदय-विकार का एक आक्रमण हो चुका था, पर देश के उत्तरदायित्वपूर्ण काम-काजों मे वे इतने व्यस्त रहे कि पूर्व हृदय विकार के बावजूद भी वे 10 वर्ष तक जीवन प्राप्त कर सके। प्रत्येक को व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए अपने को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करना चाहिए। सृष्टि का नियम है कि शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से स्वस्थ की विजय होती है। ऐसे सुयोग्य व्यक्ति को देखकर प्रसन्नता होती है। ऐसे व्यक्ति ही पृथ्वी पर स्वर्ग निर्माण के स्वप्न को पूर्ण करते हैं, उन्हें ही हम आर्य मानव के नाम से स्मरण करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, स्वामी विवेकानन्द, अब्राहम लिंकन, विन्स्टन चर्चिल आदि का उल्लेख किया जाता है, जो संसार और विश्व के कल्याण में तत्पर रहते हैं।

ओ३म् प्रतिष्ठा

लेखक—श्री हरबंस लाल जी 'हंस' [illegible]।

एक ओ३म् ब्रह्म को सुमिर, जिसका न पारावार है।
गर याद न उसको किया, तो जिन्दगी बेकार है॥
उसकी नहीं है मूर्ति, उसका कभी न है नहीं।
हर मूर्ति मे है मगर, दिखता नहीं आकार है॥
क्यो भूल कर उस ईश को दर दर भटकता फिर रहा।
तेरे पास है प्रीतम-मिलन, बिन ज्ञान के दुश्वार है॥
कभी वन मे डारी राख तू, कभी धूनिया तपता रहा।
कभी जगलो कभी पर्वतों में, ढूढता दातार है॥
अज्ञान मे फस कर रहा सिर पर मुसीबतें झेलता।
अफसोस न छटका सका, ज्ञानी गुरु का द्वार है॥
वेदों की आला राह पर, चिकया न वैसा 'हंस' तू।
पायेगा आनन्द घन प्रभु, होगा तेरा उद्धार है॥

तलवण्डी साबो में पारिवारिक सत्संग

6 12 90 दिन वीरवार को प्रात 9 बजे श्री सुदर्शन कुमार जी आर्य ने अपने पूज्य पिता श्री [illegible] [illegible] लाल जी की स्मृति में श्री [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] की [illegible] ने जीवन एवं मृत्यु [illegible] पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री सुदर्शन कुमार जी [illegible] (1) [illegible] एक श्री [illegible] आर्य [illegible] [illegible] तलवण्डी साबो की (50) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (31) [illegible] [illegible] तलवण्डी साबो की [illegible]।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

समृद्ध परिवार मे जन्मे श्री स्वामी जी महाराज ने आजीवन भिक्षा वृत्ति का आदर्श सामने रखकर परोपकार मे जीवन दे दिया। अनेक बार भिक्षा करते हुए बहुत तिरस्कार हुआ। आप की सहनशीलता ऐसी थी कि मान-अपमान से किञ्चित न डोले। आप कहा करते थे कि हम किसी का दिया हुआ नहीं खाते, किसी का कार्य नही करते। हम परमेश्वर का दिया हुआ खाते हैं और परमेश्वर का ही कार्य करते हैं।

श्री महाराज मे बलिदान का भव्य भाव था। स्वर्गीय श्री ला० हरदेव सहाय जी ने हमें एक बार कहा था कि हिन्दू जाति मे अब स्वामी स्वतान्त्रानन्द जी महाराज जैसा अडिग, साहसी, अद्वितीय शूर बलिदानी नेता कोई भी नही। जब लोहारू में आप पर प्राणघातक आक्रमण हुआ तो सिर पर कुल्हाडा भी चलाया गया और लाठियो की तो भीषण वर्षा की गई। तब दीना नगर के ला० अग्रसेन जी आपका पता करने देहली इर्विन हस्पताल मे गए। लाला जी आपको देखकर रो पडे। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि इस आजन्म ब्रह्मचारी पर दानव दल कैसे टूट पडा होगा। स्वामी जी ने तब वीरों व फकीरों वाली मस्ती से कहा, "मार खाई है और खूब खाई है।"

सैंकडों लाठिया खाकर भी ब्रह्मचारी खडा रहा। 65 वर्षीय बाल ब्रह्मचारी की इस शूरता पर किस आर्य को अभिमान नही होगा?

महाशय राजपाल जी पर छुरे का वार करने वाला पहलवान खुदा बख्श को लाहौर मे ऐसे कस कर पकडा कि दुष्ट हत्यारा वहा छटपटाता ही रह गया। ब्रह्मचारी के पंजे उसकी कलाई पर कील की भाति गड गए। आर्य जगत् मे शूरता के लिए सर्वप्रथम आप ही का अभिनन्दन किया गया। महामना मालवीय जी आपकी शूरता से आपका बडा सम्मान किया करते थे।

हैदराबाद सत्याग्रह के सफल सूत्रधार फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का उपकार किन शब्दों मे कहा वर्णन करें? चारपाई त्याग दी, जेल जैसा भोजन लेते रहे, वस्त्र त्याग दिए और क्षौर करवाना भी छोड दिया। जेल जाने का निश्चय कर लिया तो आर्य नेताओं ने महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की मृत्यु-इच्छा (Death will) की दुहाई देकर आपको जेल जाने से रोका। महात्मा जी की मृत्यु इच्छा में ऐसा लिखा था कि मेरे पश्चात् स्वतन्त्रानन्द जी किसी भी स्थिति में जेल न जावें। ऐसे [illegible] को पाकर [illegible] के [illegible] को इतनी कीर्ति प्राप्त हुई।

आप अपने कुल, परिवार, जाति [illegible], जन्म स्थान आदि की कभी भी चर्चा नहीं किया करते थे परन्तु [illegible] की [illegible] पर जब देहली में आपका अभिनन्दन किया गया तो उसके उत्तर में [illegible] उनके हृदय से ये शब्द कहे थे— "पिता जी ने कभी कहा था कि तू ने सन्यास लेकर कुल को कलंकित कर दिया है। हम तो तुझे जरनैल करनैल बनाना चाहते थे।"

स्वामी जी ने कहा, "परिवार के लोग तो सम्भवतः मुझे जरनैल करनैल न बना पाते परन्तु आर्य समाज ने तो मुझे फील्ड मार्शल बना कर दिखा दिया।"

कितना प्यार था महाराज को समाज से! देश के स्वाधीनता सग्राम मे 1930 ई० मे काग्रेस के सत्याग्रह के पंजाब मे डिक्टेटर बनाए गए। सत्याग्रह के सूत्रधार बनकर इसका सफल सचालन किया। स्वय जेल गए। हमारे उपदेशक विद्यालय की पुलिस ने तलाशी (Search) ली। यह सौभाग्य केवल आर्य समाज को ही प्राप्त है। किसी भी अन्य सस्था के उपदेशक विद्यालय की अंग्रेज ने कभी तलाशी न ली। भारत छोडो आन्दोलन मे आप वायसराय के आदेश से पकडे गए। सेना मे विद्रोह फैलाने का आप पर दोष लगाया गया।

मानव-कल्याण के इस शिल्पी ने आर्य समाज को ऐसे-ऐसे रत्न दिए कि जिनके नाम व काम की चर्चा करके हम आज फडक उठते हैं। पूजनीय श्री स्वामी सर्वानन्द सरीखे तपस्वी, विद्वान् वीतराग सन्यासी के रूप मे आपने समाज को अपना उत्तराधिकारी दिया है। आज आपके दयानन्द मठ की दो शाखाएं हिमाचल मे वैदिक धर्म प्रचार के सुदृढ केन्द्र हैं। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की परमेश्वर व उस की पवित्र वाणी वेद मे अखण्ड निष्ठा थी। आज तो नेता लोग व काषाय वस्त्रधारी भी पद व प्रतिष्ठा के लिए अपवित्र गठजोड करके घटिया समाज द्वेषी लोगो का सहयोग लेकर (और उन्हें सहयोग देते भी है) अपनी गद्दी पक्की करते हैं। गढ मुक्तेश्वर के गगा स्नान के मेले पर एक विशाल कृषक सम्मेलन मे आपको हाथी पर बिठा कर शोभा यात्रा निकालने का निर्णय किया गया। आप ही को हाथी पर बिठाने से कृषकों का परस्पर का विवाद मिट सकता था। उनका विवाद मिटाने के लिए श्री स्वामी जी ने हाथी पर बैठना मान लिया। कृषको ने अपना किसान मजदूर पार्टी का झण्डा स्वामी जी के हाथ मे देना चाहा। आपने किसी भी पार्टी का झण्डा हाथ मे लेने से इन्कार कर दिया। आपने कहा कि हम तो साधु हैं। केवल परमेश्वर से ओ३म् नाम का झण्डा ही हाथ में ले सकते हैं। शोभा यात्रा निकले या न, हाथी पर बैठना मिले या पैदल चलना पडे। इस की मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं। इतिहास साक्षी है कि पूज्य स्वामी जी ने कृषक नेताओं के प्रबल आग्रह पर भी उनकी पार्टी का झण्डा हाथ मे न लिया। आज के समाज को ऐसे ही तेजस्वी सन्यासी [illegible] की आवश्यकता है।

(पृष्ठ 4 का शेष)

कोई दो राय नही कि केवल शान्तिपूर्ण परिस्थितियो में ही आर्थिक विकास किया जा सकता है। शान्ति के बिना तो आर्थिक विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज आवश्यकता है कि इस क्षेत्र के राष्ट्र राजनैतिक सूझबूझ तथा दूरदर्शिता का परिचय दे तथा एक जुट होकर पूरी ईमानदारी से इस क्षेत्र को शान्ति क्षेत्र बनाने का प्रयास करें। इस सम्बन्ध मे यूरोप एक उदाहरण के रूप मे हमारे सामने है। इस क्षेत्र के गरीब राष्ट्रो के लिए अब अनुपयोगी शस्त्रीकरण के बोझ को उठा पाना सम्भव नही है, लेकिन निःशस्त्रीकरण प्रक्रिया की शुरूआत तभी हो सकती है जब इन राष्ट्रो मे आपसी विश्वास तथा सद्भावना का वातावरण तैयार हो। दक्षेस राष्ट्रों को एक दूसरे की स्वतन्त्रता तथा प्रभुसता का सम्मान करते हुए दूसरो के अन्दरूनी मामलो मे हस्तक्षेप करने से गुरेज करना चाहिए। उग्रवाद की समस्या बडी जटिल समस्या है जिसे आपसी सहयोग तथा तालमेल से बहुत हद तक दूर किया जा सकता है। भारत पाकिस्तान सहित अपने सभी पडोसी देशो के सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाने का इच्छुक है लेकिन इस सम्बन्ध मे पाकिस्तान का रवैया सदैव से हठ धर्मितापूर्ण रहा है। पाकिस्तान की कथनी तथा करनी मे बडा अन्तर है केवल एक पक्षीय प्रयासो द्वारा सुखद वातावरण तैयार नही किया जा सकता। शान्ति स्थापना की पूर्व व्यवस्था इस सारे महाद्वीप की उन्नति के लिए अपरिहार्य है, जिसके लिए सबको मिल कर प्रयास करना होगा। यह लगभग निश्चित है कि यदि समय रहते इस क्षेत्र के राष्ट्रो मे बिगडती हुई परिस्थितियो पर काबू नही पाया गया तो वह दिन दूर नही जब इन राष्ट्रो के लिए अपने अस्तित्व की लडाई लडना भी कठिन हो जायेगा। इति।

(पृष्ठ 5 का शेष)

स्वामी जी महाराज जो भी काय करते थे उसे पूर्ण निरासक्त भाव से किया करते थे। दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य का कार्य भी वे निरासक्त भाव से करते थे। 10-15 वर्षों तक दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय का आचार्य रहने पर भी भी उनके मन मे इस पद के लिए कोई मोह या आसक्ति नही थी। उन्होने प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो से कह दिया था कि तुम लोग किसी अन्य व्यक्ति का प्रबन्ध कर लो, मैं किसी दिन भी उपदेशक विद्यालय छोड कर चला जाऊगा। सभा के अधिकारी उनसे विद्यालय के आचार्य पद को सम्भाले रहने का आग्रह करते रहते थे। 1935 मे स्वामी जी महाराज बिना किसी को बताए कमण्डलु उठा कर विद्यालय से चले गये। बहुत समय तक तो यही नही पता चला कि स्वामी जी कहा गये हैं। उनके इस प्रकार विद्यालय के आचार्य का पद त्याग देने पर सभा ने मुझे उपदेशक विद्यालय का आचार्य नियुक्त किया था।

मैं ऐसे महान् सन्यासी की स्मृति मे अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हू।

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आज यहा आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया। समारोह यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसकी अग्नि आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाला आर्य ने प्रज्ज्वलित की और इसके साथ 11 दम्पतियो ने यजमान पद को ग्रहण किया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी सुमना यति जी ने की।

इस समारोह मे प० वेदप्रकाश शास्त्री, प० राजेश्वर शास्त्री पुरोहित, ज्ञानी गुरदायल सिंह आर्य एव आर्य नेताओ ने अपनी श्रद्धांजलि भेन्ट की। बहन जनक रानी तथा श्री किरपा राम आर्य ने भजन पेश किए।

इस अवसर पर पारित प्रस्ताव मे कहा गया कि आर्य समाज राष्ट्र मे एकता और अखण्डता को कायम रखने के लिए कार्य करता रहेगा। समाज का मत है कि देश मे केवल राष्टीय पर्व पर सार्वजनिक अवकाश होना चाहिए। किन्तु परिस्थितियो मे सरकार छुट्टियो को समाप्त करने मे असमर्थ प्रतीत होती है। इसलिए आर्य समाज यह माग करता है कि दोहरा मापदण्ड भेदभाव समाप्त करके 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर पंजाब मे सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाये।

आर्यसमाज गौशालारोड़ फगवाड़ा का चुनाव

आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा का वार्षिक चुनाव 1990-91 के लिए निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—डाक्टर कैलाश नाथ भारद्वाज।
उप-प्रधान—1. श्री सत्यदेव सरल।
2. श्री अमर नाथ सोनी।
3. श्री बालकृष्ण सब्बरवाल।
मन्त्री—श्री धर्मवीर नारग।
उपमन्त्री—श्री राजीव पाहवा।
कोषाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण तिवारी।

अन्तरग सदस्य

श्री मनोहर लाल चोपडा, श्रीमती विमला छावडा, श्री हरिमित्र बिलगा, श्री बरैती राम गुप्ता, श्री विश्वबन्धु सुधीर।

प्रधान आर्य युवक सभा फगवाडा: श्री सुरेन्द्र चोपडा।

—कैलाश भारद्वाज प्रधान

जालन्धर मे वस्त्र वितरण समारोह

आय समाज शास्त्री नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 6 से 9 दिसम्बर तक बड समारोह स मनाया गया। श्री प० निरन्जन देव जी श्री प० वेदप्रकाश जी, श्री जगन वर्मा जी भजनोपदेशक और श्री महेन्द्रपाल जी के उपदेश तथा भजन होने रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति 7 हवन कुण्डो म 28 यजमानो न एक साथ 9 12 90 रविवार को प्रात 9 30 बज डाली। बहन कमला आर्या (लुधियाना) श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार शर्मा| डावा कालेज जालन्धर, श्री अश्विनी कुमार शर्मा सभा महामन्त्री के भी व्याख्यान हुए। आय कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल बस्ती नौं के बच्चो ने स्वागत गीत गाया। इस अवसर पर बहन कमला आर्या, श्री हरबस लाल जी शर्मा, श्री आशा नन्द जी आय (लुधियाना) श्री बूटाराम जी आय, श्री वेदप्रकाश जी आय, श्री नौतनदास भाटिया और श्री महेन्द्र पाल जी भजनोपदेशक को आय समाज की ओर से सम्मानित किया गया।

वस्त्र वितरण

इस अवसर पर आय प्रतिनिधि सभा पजाब के निर्देशानुसार 30 कम्बल, 40 स्वेटर 10 शाल और 20 रजाईया निधन परिवारो के लोगो मे बाटी गइ। यह सब काय सभा महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उन का प्रभावशाली अध्यक्षीय भाषण भी हुआ। इस सारे कायक्रम का आई हुई जनता पर बहुत ही गहरा प्रभाव पडा। 1 30 बजे दोपहर बृहद ऋषि लगर हुआ जिसमे सैकडो लोगो ने प्रीति भोज किया। इस सब काय मे श्री देव जी अरोडा तथा श्रीमती हव जी प्रिंसीपल आय कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल बस्ती नौ जालन्धर का पूर्ण सहयोग मिला।

[—राम लुभाया नन्दा
प्रधान।

संस्कृत पर एक और प्रहार

2 12 90 को आय समाज दीना नगर मे सस्कृत रक्षा दिवस मनाया गया जिसमे प्रो० बनी सिंह, प्रिंसीपल मन्धव राज जी, सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ब्र० सिकन्दर जी, ब्र० राज कुमार जी, श्री कमचन्द जी भारद्वाज मैनेजर आय सीनीयर सकण्डरी स्कूल दीना नगर आदि वक्ताओ ने शिक्षा बोड द्वारा मैट्रिक परीक्षा शुल्क के अतिरिक्त सस्कृत छात्रो पर 30 रुपये जजीये के रूप मे वसूल किए हैं उसकी निन्दा की, इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि सरकार सस्कृत को समाप्त करना चाहती है अत वक्ताओं ने शिक्षा बोड के अधिकारियों से इस जजीये को समाप्त करने की माग की। साथ ही सस्कृत अध्यापको से प्रार्थना की गई है कि स्कूल मे अधिक से अधिक छात्रो को सस्कृत पढाने की प्रेरणा दें ताकि बोड को इस बात का ज्ञान हो जाए कि सस्कृत प्रेमी किसी भी अवस्था मे सस्कृत पढना बन्द नहीं होने देंगे।

—रघुनाथ सिंह मन्त्री
आर्य समाज दीना नगर।

बठिण्डा मे परिवारिक सत्संग

5 12 90 दिन बुधवार को प्रात 8 बजे श्री अमर नाथ जी गोयल ने अपने पोते के जन्म दिन पर अपने परिवार मे श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी से हवन यज्ञ कराया। सभी ने फूलो से बालक को आशीर्वाद दिया। उपस्थित भाई बहिनो का मिठाई एव चाय से सत्कार किया गया।

—ओम् प्रकाश वानप्रस्थी
बठिण्डा।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा ... मुद्रित होकर ... कार्यालय ... से प्रकाशित